हिन्दी-असमीया कोश

(हिन्दी-असमीया-हिन्दी का एक मात्र शब्द कोश)

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी

प्रथम प्रकाशन
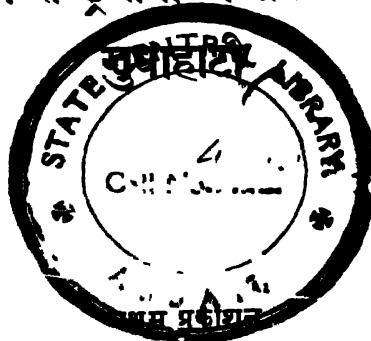
3 नवम्बर, 1965

प्रकाशक—
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
गुवाहाटी

प्रथम संस्करण
तीन हजार
3 नवम्बर '65

मुद्रक—
राष्ट्रभाषा प्रेस,
गुवाहाटी

प्रकाशक की ओर से

भाषा शिक्षण और अध्यापन में कोश का महत्व बहुत अधिक है। विशेष तर असम जैसे अहिन्दी प्रान्त में हिन्दी शिक्षण और अध्यापन में इसकी आवश्यकता अपरिमित है। इसी दृष्टिकोण से समिति ने बहुत पहले से ही कोश-निर्माण की योजना ले रखी है। परिस्थितिवश इस योजना को आगे बढाने में समिति के सामने कितनी ही अड़चने आयी। फिर भी लम्बी प्रतीक्षा के बाद यह कोश प्रकाशित करने में समिति सफल हुई है। इसकी हमें प्रसन्नता है। इस हिन्दी असमीया-कोश के अलावा समिति की कोश-योजना के अन्तर्गत वृहत-हिन्दी-असमीया-अंग्रेजी और असमीया-हिन्दी-कोश निर्माण की आयोजनाएँ भी हैं।

शब्दों का चुनाव

प्रस्तुत कोश में अहिन्दी भाषी हिन्दी विद्यार्थियों तथा विद्वानों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए हिन्दी-शब्दों का चुनाव किया गया है। इस दृष्टि से हिन्दी के प्राचीन व अर्वाचीन पाठ्य तथा व्यावहारिक शब्दों का ही संग्रह इसमें अधिकतर किया गया है। संस्कृत के कठिन शब्दों और हिन्दी तथा असमीया के समानार्थक बहु-प्रचलित शब्दों से बचने का प्रयत्न किया गया है। अरबी, फारसी और उर्दू के बोल चाल में आनेवाले शब्दों का चुनाव भी किया गया है। अर्थ स्पष्टीकरण के उद्देश्य से कुछ पारिभाषिक शब्दों के असमीया और हिन्दी अर्थों के अतिरिक्त देवनागरी-लिपि में अंग्रेजी प्रतिशब्द भी दिये गये हैं। अधिकतर हिन्दी शब्दों के समानार्थी असमीया प्रतिशब्द देने की कोशिश की गयी है; पर प्रति-शब्द के अभाव में कहीं कहीं व्याख्यात्मक रूप भी निरूपित करना पड़ा है।

लिंग निर्णय तथा मुहावरे आदि

शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ विचार कोश निर्माण के महत्वपूर्ण अंग माने जाते हैं। पर आकार बढ़ने के ख्याल से इस कोश में उन दोनों अंगों को न देना ही ठीक जान पड़ा। वैसे हर भाषा के कोश में शब्द व्युत्पत्ति तो रहती ही है। पर कोश सम्पादन में पद-विन्यास की महत्ता और हिन्दी भाषा में लिंग विचार की विचित्रता को महसूस करते हुए पाठको की सुगमता हेतु हर शब्द का पद-परिचय और प्रत्येक संज्ञा-शब्द का लिंग-निर्णय दिया गया है

कोश सम्पादन

कोश के सम्पादन में श्री नवारुण वर्मा ने हिन्दी-शब्दों का चुनाव किया तथा चुने हुए शब्दो के हिन्दी-अर्थ दिये। श्रीरमेन्द्र नाथ शर्मा तथा श्रीपरेश चन्द्र देव शर्माने उनके असमीया अर्थ और प्रति शब्द दिये। इन लगनशील सहयोगियो के प्रयत्न से ही यह कोश इतने थोड़े समय में प्रस्तुत हो सका है। इस हेतु हम उनके आभारी हैं।

कोश सम्पादन का यह हमारा पहला प्रयास है। इसलिये कुछ त्रुटियों का रहना असम्भव नहीं। विद्वानों से उनके संशोधन विषयक सुझाव प्राप्त कर हम आभार मानेंगे।

राष्ट्रभाषा भवन, गुवाहाटी
3 नवम्बर, 1965
समिति-प्रतिष्ठा दिवस

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
की ओर से
महेश्वर महन्त
साहित्य सचिव

संकेताक्षरों की सूची

सं पुं—	संज्ञा पुंलिग
सं स्त्री—	संज्ञा स्त्रीलिंग
क्रि वि—	क्रिया विशेषण
वि—	विशेषण
अव्य०—	अव्यय
प्रेरणा०—	प्रेरणार्थक
मु०—	मुहावरा
सर्वं०—	सर्वनाम
क्रि स—	क्रिया सकर्मक
क्रि अ—	क्रिया अकर्मक
वि स्त्री—	विशेषण स्त्रीलिंग
विभ०—	विभक्ति चिह्न
प्रत्य०—	प्रत्यय
उप०—	उपसर्ग
अं०—	अंग्रेजी

हिन्दी-असमीया कोश

अ

अ—বৰ্ণমালাৰ প্ৰথম আখৰ। অভাৱ, অপকৰ্ষ, ন্যূনতা।
वर्णमाला का पहला अक्षर, अभाव, अपकर्ष, न्यूनता।

अंक—(सं पुं) চিহ্ন, সংখ্যাৰ চিন, ভাগ্য, দাগ, নাটকৰ পৰিচ্ছেদ, কোলা, পাপ, দুঃখ।
चिह्न, संख्याका चिह्न, भाग्य, डिठौना, दाग, नाटक का परिच्छेद, गोद, पाप, एक प्रकार का रूपक।

अंक गणित—(सं पुं) পাটীগণিত

अंकटा—(सं पुं) সৰুশিলগুটি
छोटा कंकड़, पत्थर का छोटा टुकड़ा।

अंकवार—(सं स्त्री) আলিঙ্গন, কোলা। आलिंगन, गोद।

अंकुड़ा (सं पुं)
লোহাৰ বেঁকোৱা কাঁটি, পশুৰ পেটৰ বাথি, ভাঁজ খোৱা গজাল।
लोहेका कांटा, पशुओं के पेट की पीड़ा, मुड़ी हुई कील। (स्त्री-अंकुड़ी)

अंकुर—(सं पुं) নতুন গজালি ওলোৱা বীজৰ চিকোণ আগ, নোম, পানী।
उगा हुआ नया बीज, नोक, रोम, जल।

अंकुश—(सं पुं) হাতী চালনা কৰা, লোৰ আংকাৰা মাৰি, কন্ট্ৰোল, নিয়ন্ত্ৰণ।
लोहे का कांटा जिससे हाथी को चलाया जाता है। कंट्रोल प्रतिबंध।

अंग—(সং পং শৰীৰ, শৰীৰৰ অঙ্গ ও ভাগ, অংশ, প্ৰকাৰ ভেদ, যোগ সাধন।
शरीर, अवयव, भाग, टुकड़ा, भेद, योग के साधन।

अंगड़ाई--(সং স্ত্ৰী) এঙামুৰি।
जम्हाई के साथ अंग फैलाना।

अंग रक्षक— সং পুং) গা-ৰখীয়া সেনা।
शरीर सुरक्षा के लिये रखे गये सैनिक।

अंग रखा—(সং পুং) এবিধ দীঘল চোলা, চাপকণ।
मर्दाना पहनावा, चपकन।

अंगराग—(সং পুং) চন্দন আদিৰ লেপন সুগন্ধি প্ৰসাধন সামগ্ৰী।
चन्दन, केशर आदि का उबटन।

अंगार, अंगारा—(সং পুং) জুইৰ আঙঠা।
जलता हुआ कोयला।

अँगिया—(सं स्त्री) কাঁচুলি, বদিজ।
चोली, कंचुकी।

अंगी—(वि.) শৰীৰী, নেতা, देहयुक्त, नेता, (सं पुं) প্ৰধান পাত্ৰ, নায়ক, মুখ্য ৰস।
प्रधान पात्र, प्रधान रस।

अंगीठी, अंगेठी—(সং পুং) জুই ৰখা পাত্ৰ, জুইশাল।
आग रखने का पात्र।

अंगुली—(সং পুং) আঙুলি, হাতীৰ শুঁড়ৰ আগ ভাগ, এটা নদীৰ নাম।
उँगली, हाथी के सूंड का अग्रभाग, एक नदी का नाम।

अंगूठा—(সং পুং) বুঢ়া আঙুলি।
तर्जनी के पास की सबसे मोटी उँगली।

अंगूठी—(সং স্ত্ৰী) আঙঠি।
मुन्दरी, उँगली में पहनने का आभूषण।

अंगोछा—(सं पुं गামোচা;
तौलिया, गमछा।

अँचरा—(सं पुं) বিচা, শাড়ী, চাদৰ আদিৰ আঁচল। आँचल, साड़ी, धोती, दुपट्टे आदि का छोर जा छाती पर रहता है।

अंचल—(सं. पुं) অঞ্চল, কোনো দেশৰ সীমান্তৱৰ্ত্তী প্ৰদেশ বা অঞ্চল, আঁচল ।
आँचल, प्रान्त या देश की सीमा के समीप का हिस्सा, किनारा ।

अंचवन, अचवन—(सं पुं) আচমন্ , শুচি হবৰ বাবে হাতৰ তলুৱাত পানী লৈ তিনিবাৰ মুখত দি নাক, কাণ, চকু আদি ছোৱা কাৰ্য্য । খোৱাৰ পিচত হাত মুখ ধোৱা কাৰ্য্য ।
आचमन, खाने के बाद हाथ मुँह धोना ।

अंजन—(सं. पुं) কাজল, চিয়াহী ।
सुरमा, स्याही ।

अंजनी—(सं. स्त्री.) হনুমানৰ মাক, এবিধ ঔষধ, মায়া, আজিনাই, আটিনাই ।
हनुमान की माँ, एक औषधि, माया, आँख की पलकों पर होने वाली फुन्सी ।

अंजल, अंजलि—(सं स्त्री) আঁজলি, আঁজলিৰ ভিতৰত থকা সামগ্ৰী সমূহ ।
कर सम्पुट, हथेलियों के बीच आने वाला अन्न ।

अंजाम—(सं. पुं) ফল, সমাপ্তি, পৰিণাম, समाप्ति ।

अंजीर—(सं पुं) এবিধ ফল, ডিমৰু
एक प्रकार का फल ।

अंजुमन—(सं. पुं) সভা, মণ্ডলী ।
सभा, मंडली ।

अँजोर, अँजोरा—(सं. पुं) উজ্বল, আলোক, পোহৰ ।
उजाला, प्रकाश ।

अँटना—(क्रि अ) আঁটি-জুৰি যোৱা, যিমান লাগে সিমান হোৱা ।
समाना, पूरा होना, पूरा पड़ना ।

अंटा—[सं पुं] ডাঙৰ গুলা, ডাঙৰ কড়ী, বিলিয়াৰ্ড খেল ।
बडी गोली; बड़ी कौड़ी; बिलियार्ड का खेल ।

अंटाचित—[क्रि. वि] চিৎ হৈ পৰা, স্তম্ভিত, মদৰ বাগী বেছিকৈ লগা ।
पूरी तरह चित, स्तंभित, नशे में चूर ।

अंटिया—[सं. स्त्री] ঘাঁহৰ সৰু বোজা । দাঁতোন আদিৰ সৰু মুঠা ।
घास आदिका मुट्ठा, पूला, गट्ठा

अंटी—[सं. स्त्री] আঙুলিৰ মাজৰ ফাঁক, গাঁঠি, সূতাৰ লেছেৰী ।

उंगलियों के बीच का स्थान, कमर पर धोती की लपेट, लच्छी

अंठी—[सं. स्त्री] আঁঠি, গাঁঠি, শৰীৰৰ সন্ধিস্থলৰ গাঁঠি বা জোৰা। गुठली, गांठ, गिलटी

अंठली—[सं. स्त्री] গাভৰুৰ পীনোন্নত পিয়াহ।
नवयौवना के उभरे हुए स्तन

अंड—(सं. पुं) কণী, ডিম্ব, অণ্ডকোষ, বিশ্ব ব্ৰহ্মাণ্ড, কামদেৱ।
अंडा, अंडकोश, विश्व ब्रह्माण्ड, कामदेव

अंडज—(सं. पुं) কণীৰ পৰা উৎপন্ন প্ৰাণী।
अंडे से उत्पन्न प्राणी

अंडी—(सं. स्त्री) এৰা গছ, এৰা গছৰ গুটি, এৰী কাপোৰ।
रेंड का बीज, एरण्ड वृक्ष, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र

अंतक—(सं. पुं) নষ্টকাৰী, যমৰাজ, শিৱ, সন্নিপাত জ্বৰ।
नाश करनेवाला, यमराज, शिव, सन्निपात

अँतड़ी—(सं. पुं) আঁত, পেটৰ নাড়ী।
आँत, अंत्र

अंतर—(सं. पुं) পাৰ্থক্য, প্ৰভেদ, হৃদয়, অন্তৰ, দূৰত্ব, আঁৰ, ঢাকনী।
भेद, विभिन्नता, दूरी, मध्यवर्ती समय, आड़, परदा, हृदय

अंतर अयन—(सं. पुं) কোনো তীৰ্থস্থানৰ ভিতৰত থকা ঠাই সমূহৰ পৰিক্ৰমা, অন্তৰ্গ্ৰহী।
अन्तर्ग्रही, तीर्थ की विशेष प्रकार की परिक्रमा।

अंतरण—(सं. पुं) এজনে আন এজনক বস্তু বিক্ৰী কৰা ক্ৰিয়া, পদাধিকাৰীৰ বিভাগ পৰিবৰ্ত্তন।
एक से दूसरे के हाथ बिकना, किसी कार्यकर्ता या अधिकारी का अन्य विभाग में बदली, तबादला, धन का एक खाते से दूसरे में जाना।

अंतरतम—(सं. पुं) কোনো বস্তুৰ আটাইতকৈ অন্তৰতম প্ৰদেশ, হৃদয়ৰ নিভৃত কোণ,
किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग, हृदय का भीतरी भाग, अन्तःकरण,

अंतरस्थ—(वि.) ভিতৰুৱা, ভিতৰত থকা
भीतर का

अँतरा—(सं पुं) চুক, দূৰত্ব. ব্যৱধান
कोना, अन्तर, नागा ।
अंतरा—(क्रि. वि) মাজত, ওচৰত, নিকট, অতিৰিক্ত, পৃথক, বাহিৰে
मध्य, पास, निकट, अतिरिक्त, अलग, पृथक, बिना ।
अंतराय—(सं पुं) বাধা-বিঘিনি
विघ्न-बाधा.
अंतराल—(सं. पुं) মধ্যবৰ্ত্তী স্থান অথবা সময়, অন্তৰাল ।
मध्यवर्त्ती समय या काल, भीतर का भाग,
अंतरिक्ष— (सं. पुं) আকাশ, পৃথিৱী আৰু অন্য গ্ৰহৰ মাজৰ খালি ঠাই
पृथ्वी और अन्य ग्रहों के बीच का स्थान, स्वर्गलोक,
अंतरिक्ष-विज्ञान--- (सं पुं)
আকাশ সম্বন্ধী বিজ্ঞান ।
आकाश संबंधी विज्ञान,
अंतरित—(वि.) লুকাযিত (লুকাই থকা); ভিতৰলৈ অহা বা অনা, নষ্ট. অদৃশ্য।
भीतर रखा या छिपाया हुआ, स्थानान्तरित ।
अंतरिम—(वि.) মধ্যবৰ্ত্তী।
मध्यवर्ती ।

अंतरिम-काल—(सं. पुं) মধ্যবৰ্ত্তী কাল ।
मध्यवर्ती काल ।
अंतरीप—(सं. पुं) অন্তৰীপ ।
भूखंड का वह भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो ।
अंतरीय—(सं पुं) তলত পিন্ধা কাপোৰ,
भीतर का वस्त्र, बनियान
[वि.] ভিতৰৰ । भीतर का,
अंतर्गत—(सं पुं) অন্তৰ্গত, অধীন, ভিতৰত সোমাই থকা, হৃদয়ত স্থিত ।
शामिल, भीतर समाया हुआ, गुप्त, अधीन, हृदय में स्थित ।
अंतर्ज्योति—(सं पुं) পৰমাত্মা, হৃদয়ৰ জ্ঞান ।
परमात्मा, हृदय का ज्ञान ।
अंतर्ज्ञान—(सं. पुं) দিব্যজ্ঞান ।
दिव्य ज्ञान,
अंतर्दशा— (सं स्त्री) গ্ৰহৰ অন্তৰ্দশা ।
ग्रह सम्बन्धी महा दशा के भीतर की दशा ।
अंतर्देशीय— (वि.) দেশৰ আভ্যন্তৰীন ভাগৰ লগত সম্বন্ধিত।

किसी देश के भीतरी भागों से सम्बन्धित ।

अंतर्धान—(वि.) অন্তৰ্দ্ধান হোৱা, অদৃশ্য হোৱা ।
अदृश्य हो जाना ।

अंतर्निहित— (वि.) ভিতৰত লুকাই থকা ।
अन्दर छिपा हुआ ।

अंतर्भाव—(सं. पु) আশয়, ভিতৰত থকা অৰ্থ তিৰোভাৱ ।
सम्मिलित या समाविष्ट होना, भीतरी आशय नाश या अभाव ।

अंतर्भुक्त— (वि.) অন্তৰ্ভুক্ত ।
अन्दर समाया हुआ ।

अंतर्यामी—(वि.) অন্তৰৰ কথা জানোতা, ঈশ্বৰ, অন্তৰ্যামী, ভগৱান ।
सबके हृदय की बात जाननेवाला, ईश्वर ।

अंतर्राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रिय—(वि.) আন্তৰ্জাতিক ।
सब या कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धित

अंतर्वर्ती—(वि.) অন্তৰ্গত ।
अन्तर्गत ।

अंतर्वेदना— (सं. स्त्री) হৃদয়ৰ বেদনা ।
हृदय में होनेवाली वेदना ।

अंतिम— (वि.) অন্তিম, শেষ, চৰম ।
सबके पीछे का, सबके बाद का अपरिवर्तनीय निर्णय ।

अंतेवासी—(सं पु) শিষ্য ।
शिष्य ।

अंत्यज - (वि) শূদ্ৰ, অস্পৃশ্য ।
अछूत जातियाँ ।

अंत्येष्टि— (सं स्त्री) মৃত্যুক-কৰ্ম্ম (মৰা কাজ) অন্ত্যেষ্টি ক্ৰিয়া ।
मरने के बाद का संस्कार ।

अंदर—(क्रि. वि.) ভিতৰত, ত
भीतर, में

अंदाज—(सं पु) অনুমান, ধাৰণা । মধুৰ চাৱনি ।
अनुमान मोहक ढंग ।

अंदेशा—(सं. पु) চিন্তা, আশঙ্কা, সন্দেহ, দোধোৰ-মোধোৰ ।
चिन्ता, संशय, आशंका ।

अंधड़, अंधर—(सं. पु) ধুমুহা, বা-মাবলী ।
आँधी ।

अंध-विश्वास—(सं. पु) অন্ধ বিশ্বাস, বিবেচনা নকৰাকৈ কৰা বিশ্বাস ।
बिना समझे किया हुआ विश्वास, वहम ।

अंधा—(सं पुं) অন্ধ।
जिसे आँख से कुछ भी दिखाई नहीं देता।

अंधा धुंध—[क्रि. वि.] নভৰা-निचिन्ताकै ।
बिना सोचे समझे तेजी से करना, बेहिसाब ।

अंधेर—[सं पुं] অন্যায়, অনীতি।
अन्याय, अत्याचार गडबडी, अव्यवस्था।

अंधेरा—[स पुं] অন্ধকাৰ, এন্ধাৰ, নৈৰাশ্য, উদাসীনতা।
अन्धकार, परछाई, निराशा।

अंब—[सं पुं] আম গছ, आम का पेड़

अंबा—[सं स्त्री] মা, আই, দুৰ্গা।
माता, दुर्गा।

अंबर—[सं पुं] কাপোৰ, আকাশ, মেঘ, তিমি মাছৰ পেটৰ পৰা ওলোৱা একবিধ সুগন্ধি দ্ৰব্য।
कपड़ा, आकाश, बादल, व्हेल मछली की आँत से निकला एक सुगंधित द्रव्य।

अंबार—[सं पुं] স্তূপ, ৰাশি, ঢেৰ, প্ৰচুৰ।
राशि. ढेर।

अंबारी—[सं स्त्री] হাতীৰ হাওদা।
हाथी का हौदा ।

अंबु—[सं पुं] পানী।
जल।

अंबुज—[वि.] পদুম ফুল, শঙ্খ, ব্ৰহ্মা।
कमल, शंख, ब्रह्मा।

अंश—[सं पुं] অংশ, চতুৰ্থাংশ, চন্দ্ৰকলা, ভগ্নাংশ।
टुकडा खंड भाग, चौथाई हिस्सा, चाँद का सोलहवा हिस्सा।

अंशु—[सं पुं] কিৰণ, সূৰ্য্যৰ ৰশ্মি।
किरण, सूर्य की किरण

अंशुमाली—[सं पुं] সূৰ্য্য
सूर्य

अंक—[सं पुं] কষ্ট দুখ, পাপ
कष्ट, दुःख, पाप।

अकड़—[सं स्त्री.] অহংকাৰ, দেমাক, অভিমান
तनाव, ऐंठन. घमंड, अभिमान

अकड़ना—[क्रि अ.] অৰিয়া অৰি কৰা, অহংকাৰ কৰা, ওফন্দি উঠা,
तनना, ऐंठना, घमंड या हठ करना

अकथनीय—[वि] অকথ্য,
जो कहा न जा सके।

অকথ-বক—(সং. স্ত্রী) আঁটি গুবি লোহোবা কথা, প্রলাপ।
व्यर्थ-बात, प्रलाप

অকরণীয় : (বি) নকবিবলগীয়া
जिसे करना ठीक नहीं।

অকর্ম-(সং পুং) নিষ্ক্রিয়তা, কুকর্ম বেয়া কাম।
कार्य का न होना, अनुचित काम

অকর্মণ্য (বি) এলেহুৱা, অযোগ্য।
निकम्मा।

অকলংক—(বি) নিকলঙ্ক, নির্দ্দোষ।
निर्मल, कलंकहीन।

অকসর—(ক্রি বি) অকলে, প্রায়, সাধাৰণতে।
अकेले, प्रायः।

অকসীর—(বি) অব্যর্থ গুণ বিশিষ্ট, গম্ভীয়া ধাতুক সোণৰ নিচিনা কৰিব পৰা দ্ৰব্য।
अव्यर्थ गुणवाला, रसायन।

অকস্মাৎ—(ক্রি বি) হঠাৎ, ভাগ্য-ক্রমে, আচম্বিত ৰূপে।
अचानक, सहसा।

অকাজ—(সং পুং) বেয়া কাম, হানি, ক্ষতি।
अनुचित काम, हानि।

অকাম—[বি] কামনা ৰহিত, ইচ্ছা-বিহীন।
कामना हीन।

অকারণ—(ক্রি বি) অকাৰণে, অনাৱশ্যকীয়।
बिना कारण।

অকাল—(সং পুং) অ-সময়, অনুপ-যুক্ত সময়, দুৰ্ভিক্ষ, শাশ্বত।
असमय, जो ठीक या उचित समय नहीं, दुर्भिक्ष, अविनश्वर।

অকিঞ্চন—[ত্রি] ডাল-দৰিদ্র, নিচলা।
दीन, दरिद्र, बिलकुल मामूली।

অকিঞ্চিৎ—(বি.) অতি সামান্য, নগণ্য।
नगण्य, तुच्छ।

অকুণ্ঠ—(বি.) তীক্ষ্ন, চোকা, দ্বিধাহীন
तीव्र तीखा, द्विधाहीन।

অকুলানা-(ক্রি. অ.) আকুল হোৱা, বিৰক্ত হোৱা, খৰ-খৰ লগোৱা।
व्याकुल होना, ऊब जाना, जल्दी करना।

অকূত— (বি.) অমোঘ, অসংখ্য, বেছি।
अमोघ, असंख्य, अधिक।
(ক্রি. বি) নিজে নিজে, হঠাৎ।
आप से आप, अकस्मात्।

अकृतज्ञ—(वि) অকৃতজ্ঞ, গুণলাগী।
কৃতঘ্ন।

अकेला— (वि) সঙ্গীহীন, অকল-
শৰীয়া।
बिना किसी साथी के, अद्वितीय,
एकान्त।

अक्खड़—(वि) জেদি, দম্ভুৰা।
जिद्दी, झगडालू।

अक्ल— (सं स्त्री) বুদ্ধি, জ্ঞান।
बुद्धि ज्ञान।

अक्लमंद--(वि) চতুৰ, বুদ্ধিমান।
बुद्धिमान, समभदार।

अक्लमंदी--(स स्त्री) চতুৰী, নিপু-
ণতা বিজ্ঞতা।
बुद्धिमत्ता समझदारी।

अक्ष —(स पुं) পশা খেল,
গাড়ীৰ চলাব ধুৰা, বিষুব
ৰেখাৰ ভূযোফালৰ দূৰত্বমাপক
অক্ষৰেখা, ৰুদ্ৰাক্ষৰ বীজ,
जुआ खेलने का पासा, मेरु, धूरा,
पृथ्वी पर पड़ी समान्तर कल्पित
रेखाएं, रुद्राक्ष के वीज।

अक्षत —(वि.) নভঙা, নিখুঁত,
নিখুঁণ, অখণ্ড, সম্পূৰ্ণ।
जिसे चोट न लगी है, अखंड,
पूरा।

अक्षम -(वि) অসমৰ্থ, অপাৰগ।
असमर्थ, अयोग्य।

अक्षय — (वि.) অবিনাশী, শেষ
নোহোৱা, চিৰকলীয়া।
जिसका क्षय या नाश न हो।

अक्षर — (स पुं) আখৰ, আত্মা,
ব্ৰহ্ম, মোক্ষ।
वर्ण, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष।
(वि.) শাশ্বত নিত্য, অবিনাশী।

अक्षरशः — (क्रि. वि.) আখৰে
আখৰে।
ज्यों का त्यों।

अक्षुण्ण —(वि.) অখণ্ড, অটুট,
অক্ষিত।
ज्यों का त्यों, समूचा।

अखंडित — (वि.) অখণ্ডিত,
সম্পূৰ্ণ।
पूरा, समूचा।

अखबार — (स पुं) বাতৰি
কাকত খবৰৰ কাগজ।
समाचार पत्र।

अखरना—(क्रि. अ.) ভাল নলগা,
অনুচিত বুলি প্ৰতীত হোৱা,মনত
আঘাত দিয়া।
बुरा लगना, खलना।

अखाड़ा -(स पु) ব্যায়াম শালা,
আখৰা, আড্ডা, সাধু-সন্ন্যাসীৰ

দল বা মঠ। নাচশালা, নৃত্য শালা আদি।
व्यायाम शाला, मल्लों की मण्डली और निवास स्थान, म०, लोगों के कौशल दिखाने की जगह।

अखाड़िया — [वि] কৌশল দেখুওৱা, পালোৱান।
कौशल दिखाने वाला, पहलवान।

अखिल—(वि) সম্পূৰ্ণ, সমো, নিখিল জগৎ।
सारा जग, समस्त।

अख्तियार —(सं पुं) অধিকাৰ
अधिकार।

अग —(वि.) স্থাবৰ, গছ
अचल, टेढा चलनेवाला, स्थावर।

अगड़ बगड़—(वि) অৰ্থহীন, লাগবান্ধ নোহোৱা, নিৰৰ্থক।
व्यर्थ का, उल्टा पल्टा।

अगण्य — (वि.) অসংখ্য, তুচ্ছ।
असंख्य, तुच्छ।

अगम—(वि) দুৰ্গম, কঠিন, অথাউনি, অসংখ্য।
दुर्गम, कठिन, अथाह, विकट।

अगम्य—[वि] দুৰ্গম, দুৰ্বোধ।
दुर्गम, दुर्बोध।

अगर—[अव्य] যদি, यदि, जो
[सं पुं]—অগৰু গছ। अगरू वृक्ष

अगल-बगल—[क्रि वि] ইকালে-সিকালে, আশে-পাশে।
इधर उधर, आसपास।

अगला—[वि] আগৰ, সম্মুখৰ, প্ৰথমৰ, পুৰণি, আগামী, পিছৰ।
आगे का, पहले का, पुराना, आनेवाला, बाद का।

अगवानी—[सं स्त्री] আদৰণি।
स्वागत।

अगहन—[सं पुं] আঘোণ (মাহ)।
कार्तिक के बाद का महीना।

अगाऊ-[वि] অগ্ৰিম, আগতীয়াকৈ।
पेशगी, अग्रिम।

अगाध —[वि] অথাউনি গভীৰ।
बहुत गहरा, अथाह।

अगिन—[सं स्त्री] জুই, এবিধ চৰাই, অগণন।
आग, एक प्रकार की चिड़िया, असंख्य।

अगियारी—[सं स्त्री] ধূপৰ নিচিনা আহুতি দিয়া বস্তু।
धूप की तरह अग्नि में डालने की वस्तुएँ।

अगुआ—[सं पुं] আগৰণুৱা, মুখিয়াল, পথ-প্ৰদৰ্শক।

आगे चलने वाला, मुखिया, पथ-प्रदर्शक ।

अगेह—[वि] अघरी, गृहहीन ।
जिसका घर न हो ।

अगोचर—(वि) অজ্ঞাত, অগোচৰ, চুকি নোপোৱা ।
जो देखा नही जा सके ।

अग्नि—(सं स्त्री) জুই, বেদৰ তিন প্ৰধান দেৱতাৰ ভিতৰৰ এজন, দক্ষিণ আৰু পুব দিশৰ মাজৰ কোণ, জঠৰানল ।
जलने पर प्रकाश युक्त ताप, अग्नि देवता, भोजन पचाने की शक्ति, दक्षिण और पूर्वके बीच का कोण ।

अग्नि-कर्म—(सं पुं) শব-দাহ ।
मृत व्यक्ति को जलाने की क्रिया

अग्नि-परीक्षा—(सं स्त्री) কঠিন পৰীক্ষা, অগ্নিত প্ৰবেশ কৰি নিজক নিৰ্দ্দোষী প্ৰমাণ কৰা (সীতাৰ অগ্নি পৰীক্ষা) ।
कठिन परीक्षा, आग में बैठकर निर्दोष बनने का प्रमाण ।

अग्नि-मांद्य—(सं पुं) অজীৰ্ণ ৰোগ হজম শক্তি কম হোৱা অৱস্থা ।
अजीर्ण रोग ।

अग्र—(वि) আগ, প্ৰথম ।
आगे का, प्रधान ।

अग्रगण्य—(वि) যাৰ লেখ প্ৰথমে লোৱা হয়, সৰ্ব্বশ্ৰেষ্ঠ ।
जिसका नाम सबसे पहले आता हो, सबसे श्रेष्ठ ।

अग्रगामी—(वि) যি সকলোৰে আগত যায়, নেতা ।
सबके आगे चलने वाला ।

अग्रज—(सं पुं) ককাই, শ্ৰেষ্ঠ, উত্তম ।
बड़ा भाई, श्रेष्ठ, उत्तम ।

अग्रणी—(सं पुं) নায়ক, নেতা ।
नायक, नेता अगुआ ।

अग्रदूत—(सं पुं) আগন্তুক খবৰ দিওঁতা, আগবাঢ়ি খবৰ দিওঁতা ।
किसीसे पहले आकर उसके आने वाले की सूचना दे ।

अग्रसर—(वि) প্ৰগতিশীল ।
प्रगतिशील ।
(सं पुं) নেতা, আগবঢ়ুৱা । आगे बढ़ा हुआ, नेता, अगुआ ।

अग्रासन—(सं पुं) সকলোৰে আগত সম্মানপূৰ্ণ আসন ।
मान्य व्यक्ति के सम्मान के लिये सबसे पहला आसन ।

अग्रिम-[वि] অগ্ৰিম, আগতীয়াকৈ ।
अगाऊ, पेशगी आगामी ।

अघ—[सं पुं] পাপ, দুঃখ, দুষ্কৃতি।
पाप, दुःख, व्यसन।

अघट—[वि] যি ঘটা নাই বা যি একেদৰেই থাকে, কঠিন, অমিল, কম নোহোৱা।
कठिन, जो घटे नहीं, जो एक सा बना रहे, बेमेल, कम न होनेवाला।

अघाना—[क्रि अ] কোনো বস্তু খুব বেছি পোৱাৰ বাবে প্ৰসন্ন হোৱা তৃপ্ত হোৱা।
कोई वस्तु अधिक पानेपर परम प्रसन्न और संतुष्ट होना, तृप्त होना, अघाना या थकना।

अघोरी—[स पु] লেতেৰা বস্তু খোৱা লোক অঘোৰ মতাৱলম্বী লোক, ঘৃণিত লেতেৰা।
अघोर पंथ के अनुयायी, घिनौनी चीजे खाने पीनेवाले, घृणित, गन्दा।

अचंभा—[स पं] আশ্চৰ্য্য, আচৰিত কথা।
विस्मय, आश्चर्य की बात।

अचकन—[सं स्त्री] এবিধ দীঘল চোলা, চাপকন্।
बड़ा कुरता सा एक लम्बा पहनावा।

अचर—[वि] অলব-অচৰ, অটল।
गति-रहित, स्थावर।

अचरज—[सं पुं] আচৰিত।
आश्चर्य।

अचला—(सं स्त्री) পৃথিৱী।
पृथ्वी (वि) অচল হৈ থকা।
न चलनेवाली

अचवना—(क्रि स) খোৱাৰ পিছত মুখ ধুই শুদ্ধ হোৱা।
आचमन करना, कुल्ली करना

अचानक—(क्रि वि) হঠাৎ।
अकस्मात्

अचार—(सं पुं) আচাৰ।
तेल और मसालेमें डुबो कर रखी स्वादिष्ट वस्तु।

अचिंतनीय—(वि) যাৰ বিষয়ে চিন্তা কৰিব নোৱাৰি, অপ্ৰত্যাশিত, অজ্ঞেয়।
जिसका चिन्तन न हो सके, अज्ञेय, अप्रत्याशित।

अचूक—(वि) অব্যৰ্থ।
अव्यर्थ।

अचेत, अचेतन—(वि) অচেতন, সংজ্ঞাহীন, মূৰ্চ্ছিত, জড়।
संज्ञा रहित, बेहोश, जड़।

अच्छा—(वि) ভাল, উত্তম,
उत्तम, स्वस्थ

अच्छाई (सं स्त्री) **अच्छापन** (सं पुं)
—বিশেষতা, সুন্দৰতা।
उत्तमता

अच्छे— (क्रि वि) ভাল ধৰণে,
ঠিক ৰকমে।
ठीक तरह से। [सं पुं] ডাঙৰ
লোক, ডাঙৰীয়া জন। बड़े
आदमी ।

अच्युत— (वि) অটল, স্থিৰ,
নিৰ্বিকাৰ
अपने स्थान से न हटने वाला,
अटल । (सं पुं)পৰমেশ্বৰ, বিষ্ণু,
শ্ৰীকৃষ্ণ । ईश्वर, विष्णु, कृष्ण

अछूत— (वि) স্পৰ্শৰ, অযোগ্য,
ব্যক্তি, অস্পৃশ্য ; অশুচি ।
न छूने योग्य, हरिजन, अंत्यज
अस्पृश्य ।

अछूता—(वि) সুচুৱা বস্তু,
যাক ব্যৱহাৰ কৰা নাই, নতুন ।
बिना छुआ हुआ, कोरा,
नया ।

अछेद्य—(वि) অভেদ্য ।
जिसे छेदा न जा सके ।

अज—(वि) অজন্মা ; যাৰ জন্মই
নাই, স্বয়ম্ভু ; ব্ৰহ্মা ; ঈশ্বৰ
ছাগলী ।
जिसका जन्म नहीं हुआ, ईश्वर,
ब्रह्मा, बकरा ।

अजगर—(सं पुं) অজগৰ ; এবিধ
ডাঙৰ সাপ ।
एक प्रकार का विषैला साँप

अजनबी—(वि) অপৰিচিত, অচিনা,
বিদেশী ।
अपरिचित, परदेशी ।

अजपा—(सं स्त्री) উশাহ নিশাহৰ
লগে লগে কৰা মন্ত্ৰ-জপ ।
एक मंत्र जिसका उच्चारण
सांसके भीतर बाहर आने जाने
मात्र से किया जाता है ।

अजब—(वि) অদ্ভুত, আচৰিত ।
अद्भुत, अनोखा ।

अजर—(वि) বুঢ়া নোহোৱা, চিৰ
যৌৱন, চিৰন্তন ।
जरा रहित, जो सदा जवान रहे,
शाश्वत,

अजवायन, अजवाइन— (सं स्त्री)
আজনি ।
दवा और मसाले के काम में आने
वाला एक प्रकार का पौधा ।

अजहुँ(हूँ)—(क्रि वि) আজিলৈকে৷ ।
आज तक भी

অজাত—(বি) যাৰ জন্ম হোৱা নাই, অজন্মা, অনুৎপন্ন, অবিকশিত।
जिसका जन्म नही हुआ। अविकसित।

अजान—(बि) নজনা, অচিনাকি অবোধ, অপৰিচিত
(স স্ত্ৰী) নমাজ পঢ়িবলৈ মতা মাত বা জাননী।
नमाज के समय में दी जानेवाली पुकार

अजायब-घर—(स पुं) যাদুঘৰ সংগ্ৰহালয়।
संग्रहालय, [म्यूजियम]

अजिर—(स पुं) চোতাল, বায়ু, শৰীৰ, ভেকুলী।
आगन, वायु, शरीर, मेढक।

अजी—(अव्य) (মান্যার্থে ব্যৱহৃত) সম্বোধন সূচক শব্দ, হেৰা।
[सम्मानार्थ] सम्बोधन सूचक शब्द।

अजीब—(बि) বিচিত্ৰ, আশ্চৰ্য্য অদ্ভুত।
विचित्र, विलक्षण, अद्भुत।

अजीबो गरीब—(बि) আচৰিত, দুষ্প্ৰাপ্য।
अनोखा, दुष्प्राप्य

अजीर्ण—(स पुं) অজীৰ্ণ ৰোগ, যি পুৰণি নহয়, নতুন।
बद-हजमी, अपच, जो पुराना न हो नया।

अजीव—(स पु) নিৰ্জীৱ, অচেতন জড পদাৰ্থ, अचेतन [वि]मृत। मृत

अजेय—(बि) জিকিব নোৱাৰা, দুৰ্জ্জয়।
जिसे कोई जीत न सके

अजौं—(क्रि. वि.) আজিও,এতিয়ালৈকে।
आज भी, अब तक।

अज्ञ—(बि) মূৰ্খ।
मूर्ख।

अज्ञात-(बि)অজ্ঞাত, নজনা, অগোচৰ
बिन जाना, गुप्त, अगोचर

अज्ञान— (स. पुं) মূৰ্খতা, জ্ঞান হীন
मूर्खता, ज्ञान का अभाव। (बि.) মূৰ্খ, অবোধ। मूर्ख, अबोध।

अज्ञेय—(बि.) বুজিব নোৱাৰা, জ্ঞানাতীত।
जो समझ में न आ सके।

अटकना—(क्रि. अ.) বৈ যোৱা (কথা কওঁতে অথবা পঢ়িথাকোঁতে) আবদ্ধ হৈ পৰা,

গলত পৰা ওলাই নহা।
चलते चलते रुकना, फँसकर रुकना।

अटकल -(सं. स्त्री) অনুমান, আন্দাজ।
अंदाजा, अनुमान।

अटकल पच्चू—(वि.) আন্দাজত, অনুমানতে, অনুমানাশ্ৰিত।
अंदाजी, अटकल के सहारे।

अटकाना—(क्रि. स) বাধা দিয়া, আবদ্ধ কৰি ৰখা, পলম কৰি ৰখা।
रोकना, फँसाना, देर लगाना।

अटपट—(वि.) ঠানথিত নোহোৱা কঠিন, লাগবান্ধ নোহোৱা।
बेठिकाने का, विकट, कठिन, असंबद्ध।

अटल—(वि.) অটল, অলব-অচৰ, স্থিৰ।
दृढ़, स्थिर, अवश्य होने वाला।

अटारी—(सं. स्त्री) ঘৰৰ ওপৰৰ খোঁটালি। অট্টালিকা।
घर का ऊपरी भाग, कोठा, अट्टालिका।

अटूट—(वि.) ভাঙিব নোৱাৰা দৃঢ়, মজবুত, অখণ্ড, অত্যধিক
न टूटने वाला, दृढ़, मजबूत, अखंड, लगातार, बहुत अधिक।

अटेरन—(सं पुं) উঘা বা চেৰেকী যত সূতা লোৱা হয়। ঘোঁৰাক বৃত্তাকাৰে ঘুৰোৱাৰ এক নিয়ম।
सूत की आँटी बनाने का एक यंत्र, घोड़े को चक्कर देने की रीति।

अट्टहास-(सं पुं) অট্টহাস্য, অন্তৰ খোলা-হাঁহি। बड़े जोर की हँसी, ठहाका।

अठखेली-(सं. स्त्री) খেল-ধেমালী ঠাট্টা-মস্কৰা।
विनोद, क्रीड़ा, छेड़-छाड़, चपलता।

अड़ंगा—(सं स्त्री) প্ৰতিৰোধ, বাধা।
रुकावट, बाधा।

अड़—(सं. स्त्री) জিদ, কোনো কথাত দৃঢ় ভাবে লাগি থকা।
जिद, हठ।

अड़चन—(सं. स्त्री) বাধা, সংকট
बाधा, कठिनाई।

अड़ना—(क्रि अ) থমকি ৰোৱা, আকোঁৰ গোজালিকৈ কোনো বিষয়ত লাগি থকা।
रुकना, हठ करना।

अड़हुल—(सं पुं) জবাকুসুম ফুল।
जवा कुसुम।

अड़ाना—(क्रि स) আটক কৰি ৰখা, বাধা দিয়া।
रोकना, बाधा देना।

अड़ार—(सं पुं) সমূহ, খৰি আদিৰ দ'ম বা খৰি আদিৰ দোকান।
समूह, लकड़ी की ढेर या दूकान।

अडिग—(वि) অবিচলিত, স্থিৰ।
अटल, अविचल।

अड़ियल—(वि) খমকি খমকি চলোতা, এলেহুৱা, জেদি।
चलते जलते रुक जानेवाला, सुस्त, हठी।

अडूसा—(सं पुं) এবিধ ঔষধি।
एक पौधा जिसके फूल और पत्ते दवा के काम में आते हैं। अट-रूष।

अड़ोस-पड़ोस—(सं पुं) ওচৰ-পাঁজৰ।
आसपास, करीब।

अड्डा—(सं पुं) জিৰণি লোৱা ঠাই, কেন্দ্ৰস্থান, আড্ডা, চৰাই আদি বহা কাঠৰ বা লোৰ শলা।
टिकने की जगह, केन्द्रस्थान, चिड़ियों के बैठने के लिये बनाया गया छड़, कबूतर की छतरी, करघा

अढ़तिया—(सं पुं) কমিচন খোৱা বেপাৰী, দালাল।
आढ़ती व्यापारी, दलाल

अणु—(सं पुं) পদাৰ্থৰ দুই এক পৰমাণুৰ সংযোগত উৎপত্তি হোৱা অতি ক্ষুদ্ৰ কিন্তু বিভাজ্য কণা, অতি ক্ষুদ্ৰ বস্তু, পৰমাণু।
सात परमाणुओं का मान, किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा, रजकण, सूक्ष्म मात्रा।

अतनु—[वि] বিনা শৰীৰে বা দেহে দেহৰহিত, (পুং সং) কামদেৱ।
कामदेव।

अतर—[सं पुं] আতৰ। इत्र।

अतर्कित—[वि] অতৰ্কিত, আকস্মিক, হঠাৎ, তৰ্কিব নোৱাৰাকৈ
अनसोचा, अकस्मात, आकस्मिक, अचानक आनेवाला।

अतल—[सं पुं] সাত পাতালৰ প্ৰথম পাতালখন, তলিহীন, অগাধ।
सात पातालों में पहला पाताल, तलहीन, अत्यन्त गहरा।

अतस—[सं पुं] বায়ু, আত্মা, শণৰ আঁহেৰে বোৱা কাপোৰ।

वायु, आत्मा, अतसी के रेशों से बना हुआ कपड़ा।

अतसी–[सं स्त्री] শণপাট।
अलसी, पटसन।

अता—[सं पुं] দান, বকচিচ।
दान, बख्शिश।

अतिक्रमण—[सं पुं] লঙ্ঘন, সীমাৰ বাহিৰ হোৱা কাৰ্য্য।
नियम-उल्लंघन, विपरीत व्यवहार।

अतिचार—[सं पुं] ব্যতিক্ৰম, এক ৰাশিৰ ভোগকাল সমাপ্ত নোহোৱাকৈ কোনো গ্ৰহৰ আন ঠাইলৈ গমন।
अपने अधिकार को पारकर अनुचित रूप से दूसरे को बाधा पहुँचाना।

अतिथि–(सं पुं) আলহী, অতিথি, কোনো ঠাইত এৰাতিতকৈ বেছি নথকা সন্ন্যাসী। অগ্নি। যজ্ঞত সোমলতা আনোতা।
अभ्यागत, मेहमान, कहीं भी एक रात से अधिक न ठहरनेवाला संन्यासी, अग्नि, यज्ञ में सोमलता लानेवाला।

अतिदेव—(सं पुं) সকলো দেৱতাতকৈ শ্ৰেষ্ঠ দেৱতা, শিৱ, বিষ্ণু।
सब देवताओं से बड़ा देवता, शिव, विष्णु।

अतिपात— (सं पुं) অতিক্ৰম, ব্যতীত হৈ যোৱা, অতিমাত্ৰা। অব্যৱস্থা, বাধা।
अतिक्रम, व्यतीत हो जाना, अव्यवस्था, बाधा।

अतिपुरुष—[सं पुं]বীৰ পুৰুষ।
वीर पुरुष।

अतिमोदा–(सं स्त्री) অত্যন্ত সুগন্ধি, নবমল্লিকা ফুল।
अत्यधिक सुगंधित, नवमल्लिका फूल

अति रंजन— (सं पुं) অত্যুক্তি, অতিৰঞ্জন।
अत्युक्ति।

अतिरिक्त— (वि) আৱশ্যকতকৈ বেছি, ওপৰঞ্চি, অতিৰিক্ত, উপকৰা।
जरूरत से अधिक बचा हुआ, शेष, अलग, भिन्न, आवश्यकतानुसार नियमित से ज्यादा कुछ जोड़ना, जैसे—अतिरिक्त कर।

अतिरेक—(सं पुं) বাহুল্য, অনাহক বৃদ্ধি, প্ৰয়োজনতকৈ বেছি।
अधिकता, व्यर्थ की वृद्धि या विस्तार, आवश्यकता से अधिक,

किसी बात पर अधिक गम्भीर होने का भाव ।

अति वृष्टि—(सं स्त्री) অতিবৃষ্টি, আৱশ্যকতকৈ অধিক বৰষুণ ।
बहुत अधिक वर्षा ।

अतिवेला—(सं स्त्री) অসময়, সময় পাৰ হৈ যোৱা ।
अबेर, वेला का अतिक्रम ।

अतिशय— (वि) খুব বেছি, অত্যধিক ।
बहुत ज्यादा, अत्यधिक ।

अतिशयोक्ति—(सं स्त्री) অতিৰঞ্জিত কথা, সাহিত্যৰ এবিধ অৰ্থালংকাৰ ।
बहुत बढ़ा चढ़ा कर कही हुई बात । एक अर्थालंकार ।

अतिसार—(सं पु) অজীৰ্ণ ৰোগ, পেটৰ অসুখ ।
अजीर्ण या दस्त सम्बन्धी रोग ।

अतीन्द्रिय—(वि) যাৰ অনুভৱ ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা নহয় । অগোচৰ । অব্যক্ত ।
अगोचर ।

अतीत—(वि) অতীত হৈ যোৱা, পূৰ্বৰ কাল, বেলেগ ।
गत । अलग ।

अतीव—(वि) বৰ বেছি, অত্যন্ত ।
बहुत ।

अतुकांत —(वि) অমিলিতান্ত,
जिस छन्द के तुक न मिलते हों ।

अतुल—(वि) অতুলনীয়, অনুপম, যাৰ তুলনা নাই ।
जिसकी तोल या अंदाज न हो सके, असीम, बेजोड ।

अतुलनीय—(वि) যাৰ তুলনা নাই, অনুপম ।
अपरिमित, अनुपम ।

अतृप्त—[वि] অতৃপ্ত, পেট নপলোৱা ।
जो तृप्त या संतुष्ट न हो । भूखा ।

अत्यन्त—[वि] বহুত বেছি, অত্যধিক ।
बहुत अधिक ।

अत्यय—[सं पुं] মৃত্যু, বিনাশ, সীমাৰ বাহিৰ হৈ যোৱা, হ্ৰাস হোৱা ।
मृत्यु, नाश, सीमा के बाहर जाना, कम या ह्रास होना ।

अत्याचार—[सं पुं] অত্যাচাৰ, অন্যায়, উৎপীড়ন ।
जुल्म, आचार का अतिक्रमण, उत्पीड़न ।

अत्युक्ति—[सं स्त्री] অত্যুক্তি, বঢ়াই কোৱা কথা। সাহিত্যৰ এবিধ অলঙ্কাৰ।
कोई बात बढ़ा-चढ़ाकर कहना । बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात, एक अलंकार ।

अथ—[अव्य] এতিয়া, তাৰ পাছত, আৰম্ভ ।
अब, अनन्तर, प्रारंभ ।

अथक—[वि] অক্লান্ত ।
जो न थके ।

अथाई—[सं स्त्री] বৈঠক, গোষ্ঠী, গাঁৱবাসী একেলগ হোৱা ঠাই ।
बैठक, चौपाल, गोष्ठी ।

अथाह—[वि] অথাউনি, বৰ দ ।
जिसकी थाह न मिले, अगाध ।

अदंड—[वि] শাস্তিৰ অযোগ্য, কৰ বা মাচুল নলগা, স্বেচ্ছাচাৰী
जो दंड देने के योग्य न हो, निष्कर (भूमि), स्वेच्छाचारी ।

अदंत—[वि] দাঁত হীন, দাঁত নগজা, শিশু ।
जिसके दांत न हों, शिशु ।

अदत्त—[वि] নিদিয়া (বস্তু) ।
जो दिया न गया हो ।

अदद—[सं स्त्री] বস্তুৰ সংখ্যা, সঙ্কেত ।
संख्या, संख्या का चिह्न ।

अदना—[वि] তুচ্ছ, সাধাৰণ ।
बहुत ही साधारण ।

अदब—[सं पुं] শিষ্টাচাৰ, মান-সম্মান, নীতি-নিয়ম ।
शिष्टाचार, सम्मान ।

अदम्य—(वि) অদম্য, অদমনীয়, অত্যন্ত প্ৰবল ।
जिसका दमन न होसके,बहुत प्रबल ।

अदय—(वि) নির্দয়, নিষ্ঠুৰ ।
निर्दय, दयाहीन ।

अदरक—(सं पुं) আদা ।
मसाले और दवा के काम आने वाली एक पौधे की जड़ ।

अदराना—(क्रि अ) আদৰ পাই অহংকাৰী হোৱা ।
आदर मे इतराना या अहंकारी होना ।

अदल-बदल—(सं पुं) সাল-সলনি, অদল বদল, বিনিময় ।
उलट-पुल्ट, परिवर्तन ।

अदला-बदली—(सं स्त्री) বিনিময়, এঠাইৰ বস্তু অইন ঠাইত ৰখা ।
विनिमय, चीजों को हटाकर एक दूसरी जगह रखना ।

अदलीय—(वि) নির্দলীয় ।
बिना दलवाला ।

অদহন—(সং পুং) চাউল, দাইল আদি সিজাবলৈ কৰা গৰম পানী, উতলা পানী।
दाल, चावल पकाने के लिये उबलता हुआ पानी।

অদা—(সং স্ত্ৰী) আনক মোহিত কৰিবলৈ কৰা তিৰোতাৰ চাল-চলন, स्त्रियों का हाव भाव, नखरे
(বি) আদায় দিয়া, পৰিশোধ কৰা, পালন কৰা, কৰি দেখুৱা।
चुकाया हुआ, पालन किया हुआ करके दिखलाया हुआ।

অদাগ—(বি) চেকা নলগা, নিষ্কলঙ্ক, বিশুদ্ধ, নির্দ্দোষ।
जिसमें दाग न लगा हो, निष्कलंक, विशुद्ध।

অদায়গী—(সং স্ত্ৰী) ধাণ বা ধাৰ পৰিশোধ কৰা ক্ৰিয়া।
ऋण चुकाने की क्रिया या भाव।

অদালত—(সং স্ত্ৰী) ন্যায়ালয়, আদালত।
न्यायालय।

অদাৱত—(সং স্ত্ৰী) শত্ৰুতা, বিৰোধিতা।
शत्रुता।

অদিন—(সং পুং) দুৰ্দিন।
बुरा दिन, अभाग्य।

অদীন—(বি) যি দুখীয়া নহয়, উগ্ৰ, নিৰ্ভীক, উদাৰ।
दीनता रहित, उग्र, निडर, उदार

অদুজা—(বি) অদ্বিতীয়।
अद्वितीय।

অদূৰদৰ্শী—(বি) অদূৰদৰ্শী, দূৰ-ভৱিষ্যতৰ চিন্তা কৰিব নোৱাৰা।
जो दूरतक न सोचे, नासमझ।

অদৃশ্য—(বি) অদৃশ্য, যাক দেখা পোৱা নাযায়, মনিব নোৱাৰা।
जो दिखाई न दे, अगोचर,लुप्त।

অদৃষ্ট—(বি) অদৃশ্য, অজ্ঞাত, ভাগ্য।
अदृश्य, अज्ञात, भाग्य।

অদৃষ্ট-পূৰ্ব—(বি) আগেয়ে নেদেখা।
जो पहले कभी न देखा गया हो।
अद्भुत।

অদেয়—(বি) দিয়াৰ অযোগ্য, দিব নোৱাৰা। जो दिया न जा सके।

অদোষ—(বি) দোষশূন্য, নিৰপৰাধ।
दोष रहित, निरपराध।

অদ্য—(অব্য) আজি, আজিকালি, এতিয়া।
आज, आजकल, अब।

অদ্যাপি—(ক্ৰি বি) এই পৰ্য্যন্ত।
इस समय तक।

अदूयूत्य—(वि) পাশাৰে নহয়, ন্যায়পূৰ্ণ উপায়ে পোৱা।
जूए से नहीं, न्याय से प्राप्त।

अद्रि—(सं पुं) পাহাৰ, পৰ্ব্বত।
पहाड़, पर्वत।

अद्वंद्व—(वि) বৈৰীবিহীন।
शत्रुताहीन।

अद्वैत-वाद—(सं पुं) বেদান্তৰ এটা সিদ্ধান্ত—আত্মা আৰু পৰমাত্মাক একেবুলি ধৰি লৈ এই সংসাৰখনক মিথ্যা বা মায়া বুলি কয়।
वेदान्तका वह सिद्धान्त, जिसमें आत्मा, परमात्मा को एक मानते हुए संसार को मिथ्या या माया माना जाता है।

अध:—(अव्य) তললৈ।
नीचे।

अध:पतन—(सं पुं) তললৈ গমন, অৱনতি, দুৰ্দ্দশা।
नीचे की ओर गिरना, अवनति, दुर्दशा।

अधकचरा—(वि) অপৰিপক্ক, কেঁচেলুৱা, আধাখুন্দা।
अधूरा, अपूर्ण। अकुशल। आधा कूटा या पीसा हुआ।

अधकपारी-(सं स्त्री) আদ্কপালী, মূৰৰ বিষ।
आधे सिर का दर्द।

अधकहा-(वि) আদ্‌খনীয়া। আধা কোৱা কথা। पूरा न कहना, अस्पष्ट।

अधखिला—(वि) আধাফুলা।
आधा खिला हुआ।

अध-बुध—(वि) অল্পজ্ঞানী।
अर्द्ध शिक्षित।

अधम—(वि) অধম, নীচ, অত্যন্ত পাপী।
बिलकुल निकृष्ट, बहुत बड़ा पापी या दुराचारी।

अध-मरा—(वि) আধামৰা, মৃতপ্ৰায়।
मृत प्राय।

अधमर्ण—(सं पुं) ধৰুৱা।
कर्जदार।

अधर—(सं पु) ওঠ, খালি ঠাই, কোনো সহায় নোহোৱাকৈ।
होंठ, शून्य या आकाश, बिना किसी सहारे का। [वि]
নীচ, বেয়া।
नीच, बुरा, घटिया।

अधिकतर—(सं पु) কিবা বস্তুৰ তুলনাত অধিক, কোনো বস্তুৰ অধিকাংশ।

किसीकी अपेक्षा अधिक। किसीमें का अधिक अंश।

अधिकता—(सं स्त्री) অধিকতা, আধিক্য, বৃদ্ধি।
बहुतायत, वृद्धि।

अधिकर—(सं पुं) বিশেষ কৰ।
विशिष्ट कर [अं-सुपर टैक्स]

अधिकरण—(सं पुं) আধাৰ, সহায়। ব্যাকৰণৰ এটা কাৰক। বিশেষ ৰকমৰ বিচাৰৰ কাৰণে বহুওৱা বিচাৰালয়।
आधार, सहारा, व्याकरणमें कर्त्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार। अदालत।

अधिकाई- (सं स्त्री) আধিক্য। अधिकता।

अधिकार—(सं पुं) ক্ষমতা, অধিকাৰ, আধিপত্য, স্বত্ব, গৰাকী, সম্পূর্ণ জ্ঞান।
विधि मर्यादा आदि के द्वारा प्राप्त शक्ति (अं-अर्थोरिटी) प्रभुत्व, शक्ति,वह शक्ति जिससे किसी पर स्वामीत्व या प्रभुत्व प्राप्त हो। (अं-राइट) किसी वस्तु पर स्वत्व जताने का भाव (अं-क्लेम) पूरी जानकारी, किसी वस्तु या सम्पत्ति आदि पर होनेवाला स्वामीत्व (अं-पोजेशन)

अधिकार-पत्र—(सं पुं) অধিকাৰ পত্ৰ, যি পত্ৰৰ দ্বাৰা কোনো কাৰ্য্য কৰাৰ অধিকাৰ দিয়া হয়।
वह पत्र जिससे किसी को कोई कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो।

अधिकारिक—(सं पुं) অধিকাৰী, অধিকাৰী, [বি] অধিকাৰীৰ দ্বাৰা কৃত, অধিকাৰ পূর্ণ।
अधिकारीद्वारा किया या कहा हुआ। अधिकारपूर्ण, अधिकार युक्त।

अधिकारी—(सं पुं) অধিকাৰী, মালিক, পদাধিকাৰী।
प्रभु, स्वामी, वह जिसे कोई अधिकार या स्वत्व प्राप्त हो। अफसर। [বি] অধিকাৰ ৰাখোতা, अधिकार रखनेवाला, जिसे कुछ पाने या करने का अधिकार हो।

अधिकृत-(वि) অধিকাৰ কৰা বস্তু, উপলব্ধ, যাক অধিকাৰ দিয়া হৈছে।
जिसपर अधिकार कर लिया गया हो। जो किसी के अधिकार

में हो, जिसको अधिकार दिया गया हो।

अधिक्षेत्र—(सं पुं) অধিকাৰৰ ক্ষেত্ৰ।
किसी के अधिकार या कार्य का क्षेत्र (अं-ज्यूरिसडिक्सन)

अधिगत—(सं पुं) প্ৰাপ্ত, জ্ঞাত।
प्राप्त, ज्ञात।

अधिगम—(सं पुं) পৰিগৱ, উপদেশৰ দ্বাৰা প্ৰাপ্ত জ্ঞান, বিচাৰকৰ চৰম সিদ্ধান্ত।
पहुँच, गति, उपदेश से प्राप्त ज्ञान। न्यायालय का वह निष्कर्ष जो पूरी सुनवायी के बाद प्राप्त हो।
(अं-फाइंडिंग)

अधिग्रहण—(सं पु.) অধিকাৰপূৰ্বক কোনো সম্পত্তি আদি হাত কৰা।
अधिकारपूर्वक किसी की सम्पत्ति या और कोई चीज ले लेना।
(अं-अक्विजिशन)

अधित्यका—(सं स्त्री) পাহাৰৰ ওপৰৰ সমতল ভূমি।
पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि।

अधिनायक—(सं पुं) মুখিয়াল, ৰৰমূৰীয়া, সৰ্ব প্ৰধান অধিকাৰী।
सरदार, मुखिया, विशेष . अवस्थाओं में नियत पूर्ण अधिकार प्राप्त शासक। तानाशाह।
[अं—डिक्टेटर]

अधिनायक-तंत्र—[सं पुं] ৰৰমূৰীয়াৰ কথামতে চলা শাসনতন্ত্ৰ।
अधिनायक के आदेशानुसार होने वाला शासन। तानाशाही।

अधिनियम—[सं पुं] আইনৰ নিয়ম বা ধাৰা। বিশেষ পৰিস্থিতিত কৰা নিয়ম।
वह नियम जो किसी विशेष आज्ञा या निश्चय के अनुसार किसी विशेष प्रकार की व्यवस्था के लिये बना हो। [अं-रेगुलेशन]

अधिपति—[सं पु.] অধিপতি, ৰাইজৰ ... স্বামী।
स्वामी, प्रधान अधिकारी, न्यायालय आदि का प्रधान विचारक या अधिकारी।
(अं-प्रिमाईडिंग अफसर)

अधिपत्र—[सं पुं] কোনো কাম কৰিবলৈ দিয়া আদেশ-পত্ৰ।
वह पत्र जिसमें किसी को काम करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। [अं-वारंट]

अधिमूल्य—[सं पुं] বিশেষ পৰিস্থিতিত লোৱা অধিক মূল্য।
विशेष परिस्थिति में लिया गया अधिक मूल्य।

अधिया—[सं पुं] আধি, উৎপন্ন বস্তুৰ আধা অংশ লোৱা ৰীতি।
आधा हिस्सा। एक रीति जिससे उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करने वाले को मिलता है।

अधियाना—[क्रि. स] সমানে সমানে ভাগ কৰা।
समान समान या आधा आधा बाटना।

अधियुक्त—[वि] বেতন বা পাৰিশ্ৰমিক লৈ কাম কৰোঁতা।
वेतन पर किसी काम में लगा हुआ। [अं-एमप्लायड]

अधिरक्षी—[सं पुं] দাৰোগা, পুলিচ কৰ্ম্মচাৰী।
पुलिस विभाग का वह कर्मचारी जिसके अधीन कुछ सिपाही होते हैं। दारोगा।
[अं-हेड कान्स्टेबल]

अधिराज—[सं पुं] অধিৰাজ, ওপৰঞ্চি ৰজা।
महाराज।

अधिलाभ—[सं पुं] বেতনৰ ওপৰঞ্চি পয়চা।
साधारण लाभांश या वेतन के अलावा मिलनेवाला लाभ का अंश। (अं-बोनस)

अधिवास—[सं पुं] বাসস্থান, এখন ঠাইৰ পৰা অইন ঠাইত বসবাস কৰা। সুগন্ধ।
रहने का स्थान, एक देश से चल कर दूसरे देश में बस जाना।
[अं-डोमिसाइल], सुगन्ध।

अधिवासी—[सं पुं] অধিবাসী, বাসিন্দা, অইন দেশত গৈ বাস কৰোঁতা।
निवासी, दूसरे देश में जाकर बसनेवाला [अं-डोमिसाइल्ड]

अधिवेशन—[सं पुं] অধিবেশন, সভা বা মেল বহা কাৰ্য্য।
सभा सम्मेलन आदि की बैठक।
[सेशन]

अधिष्ठाता—[सं पुं] অধ্যক্ষ, মুখিযাল, ভাৰপ্ৰাপ্ত কৰ্ম্মচাৰী, ঈশ্বৰ।
अध्यक्ष, प्रधान। वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो। ईश्वर।

অধিষ্ঠান—[সং পুং] বাসস্থান, নগৰ, স্থিতি, আশ্রয়, ভ্রমযুক্ত বস্তু, শাসন।
वासस्थान, नगर, पड़ाव, सहारा, वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। शासन। संस्था। व्यापार आदि में लाभ के लिये धन लगाना।

অধিষ্ঠিত-[বি] স্থাপিত, নিযুক্ত।
स्थापित, स्थित, नियुक्त।

অধিসূচনা-[সং স্ত্ৰী] কাৰ্য্য-ৰীতি সম্বন্ধীয় জাননী।
कार्य-रीति संबंधी सूचना। (अं-इन्स्ट्रक्सन)

অধীক্ষক-- [সং পুং] বিভাগীয় অধিকাৰী।
कर्मिओं के कार्यों की देख भाल करने वाला उच्च अधिकारी (अं-सुपरिन्टेन्डेन्ट)

অধীন- [বি] অধীন, তলতীয়া, আশ্রিত, বশীভূত, বশ হৈ থকা, নিৰুপায়।
किसीके अधिकार, शासन, निरीक्षण या वश में रहनेवाला, आश्रित, किसी नियम या निर्देश से बंधा हुआ। वशीभूत। लाचार।

অধীনতা—[সং স্ত্ৰী] অধীনতা, আনৰ বশ হৈ থকা অৱস্থা।
परतंत्रता।

অধীৰ—[বি] অধীৰ, অস্থিৰ, উদ্বিগ্ন, আতুৰ।
धैर्य रहित, उद्विग्न, बेचैन, आतुर।

অধীশ্বৰ—[সং পুং] গৰাকী, ৰজাৰ ওপৰৰ ৰজা।
मालिक, राजा।

অধুনা-[ক্রি. বি] এতিয়া, বৰ্ত্তমান।
आजकल, वर्तमान समय में।

অধূৰা—[বি] অসম্পূৰ্ণ, আধৰুৱা।
अपूर्ण, जो पूरा न हो।

অধেৰ—[বি] বয়সস্থ।
प्रौढ़ उम्रका।

অধোগতি— [সং স্ত্ৰী] পতন, অৱনতি, দুৰ্দ্দশা।
पतन, अवनति, दुर्दशा।

অধোমুখ—[বি] তলমুৱা, উল্টা।
नीचे मुंह किए हुए, उलटा।

অধ্যক্ষ—[সং পুং] স্বামী, নায়ক, অধিষ্ঠাতা, সভা-সমিতিৰ-অধ্যক্ষ।
स्वामी, नायक, अधिष्ठाता, सभा समिति आदि का प्रधान।

অধ্যয়ন—[সং পুং] অধ্যয়ন, পঢ়ন, পাঠ অভ্যাস।
पठन-पाठन।

অধ্যবসায়—[সং পুং] অধ্যবসায়, নিৰন্তৰ চেষ্টা, নেৰানেপেৰা চেষ্টা, উৎসাহ ।
लगातार उद्योग, उत्साह ।

अध्यात्म—[सं पुं] আত্মা আৰু পৰমাত্মা-বিবেচন, ব্ৰহ্ম বিচাৰ, পৰমাত্মা সম্পৰ্কীয় ।
आत्मा और ब्रह्म का विवेचन, आत्मज्ञान ।

अध्यादेश—[सं पुं] চৰকাৰী জৰুৰী ঘোষণা ।
राज्य द्वारा जारी किया हुआ कोई आधिकारिक आदेश [अं० आर्डिनेन्स]

अध्यापक—[सं पुं] অধ্যাপক, শিক্ষক, পঢ়োৱা ওজা ।
शिक्षक ।

अध्याय--[सं पुं] অধ্যায়, আধ্যা, প্ৰকৰণ, পুথিৰ এভাগ ।
पुस्तक का खण्ड या प्रकरण ।

अध्यास—[सं पुं] মিথ্যাজ্ঞান, ভ্ৰম, ভ্ৰান্তি, অসাধাৰণীয় ।
मिथ्या ज्ञान, भ्रम ।

अनंग—[वि] অশৰীৰী बिना देह का [सं पुं] কামদেৱ, कामदेव ।

अनंत—(वि) অনন্ত, অশেষ, অন্ত নথকা, বৃহৎ ।
बहुत अधिक या बहुत बड़ा ।
असीम । (सं पुं) বিষ্ণু, শেষ নাগ লক্ষ্মণ, এবিধ অলঙ্কাৰ ।
विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण, एक गहना ।

अनन्तर—(क्रि वि) অনন্তৰ, পাছে, একে লানিযে, একে লেখাৰিয়ে
पीछे, बाद, लगातार ।

अनकहा—(वि) অকথিত, নোকোৱা ।
अकथित ।

अनक्षर—(वि) নিৰক্ষৰ, বোবা
निरक्षर, गूंगा (पुं) গালি गाली

अनखाना— (क्रि अ) খং উঠা, বিৰক্ত হোৱা
रुष्ट होना, खीझना (क्रि स) খং তোলা, বিৰক্ত কৰা ।
रुष्ट करना, खीझाना ।

अन खुला—(वि) নোখোলা, বন্ধ,
बिना खुला ।

अनगढ़—(वि) নগঢ়া, স্বয়ম্ভু, কুৰূপ, উদণ্ড ।
बिना गढ़ा हुआ । जिसे किसीने न बनाया हो । बेढंगा । उजड्ड ।

अनगिनत—(वि) অগণন, অসংখ্য ।
असंख्य ।

अनघ—(वि) নির্দ্দোষ, নিষ্পাপী, পৱিত্ৰ।
निर्दोष, निष्पाप, पवित्र।

अन-चहा—(वि) নিৰিচৰা, অপ্ৰিয়, অনিশ্চিত।
जिसकी चाह या इच्छा न की गयी हो। अप्रिय, अनिश्चित।

अन-जान—(वि) অজ্ঞানী, অবুজ, অপৰিচিত, অচিনাকি।
अज्ञानी, नासमझ, अपरिचित, अज्ञात।

अ-नत—(वि) চিধা, পোন, बिना झुका हुआ (क्रि वि) অইন ঠাই।
दूसरी जगह।

अन-देखा—(वि) নেদেখা।
न देखा हुआ।

अनधिकार-(सं पुं) অনধিকাৰ, স্বত্বহীনতা।
अधिकार का न होना, लाचारी, अयोग्यता।

अनधिगत--(वि) অজ্ঞাত, অপ্ৰাপ্ত
अज्ञात, अप्राप्त।

अनधिगम्य—(वि) পাব নোৱাৰা, অপ্ৰাপ্য, অজ্ঞেয়।
पहुंच के बाहर, अप्राप्य, अज्ञेय।

अननुमत--(वि)স্বীকৃতি নোপোৱা, অযোগ্য।
जिसकी स्वीकृति न मिली हो, अयोग्य।

अनन्य—(वि) অভিন্ন, একনিষ্ঠ,
अन्य से सम्बन्ध न रखनेवाला, एक निष्ठ।

अनन्याश्रित--(वि)কাৰো আশ্ৰয়ত নথকা, স্বাধীন।
जो किसी दूसरे के आश्रय में न हो, स्वाधीन।

अन-पच—(सं पुं) অজীৰ্ণ, বদ-হজম।
अजीर्ण, बद हजमी।

अनपढ़—(वि) অপঢ়ুৱৈ, নিৰক্ষৰ।
बे पढ़, निरक्षर।

अनपत्य—(वि) নিঃসন্তান, উত্ত-ৰাধিকাৰী নথকা ব্যক্তি।
सन्तानहीन, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

अनपेक्षित, अनपेक्ष्य—(वि) অপ্ৰত্যাশিত, যাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰা নহয়।
जिसकी चाह या परवाह न हो।

अन-बन—(सं स्त्री) মনোমালিন্য, বিবাদ।

বিৰোধ, (বি) অমিল, বিবিধ।
अनमेल, विविध।

অনবুজ—(বি) অজ্ঞানী, অবুজ।
अज्ञानी, जो समझ में न आ सके

অনব্যাহা—(বি) অবিবাহিত।
अविवाहित।

অনভল—(सं पुं) হানি, অহিত।
बुराई, अहित।

অনভিজ্ঞ—(বি) অজ্ঞ, অনভিজ্ঞ, নজনা।
अज्ञ, मूर्ख, अपरिचित।

অনভিপ্ৰেত—(বি) ভৱা কথাৰ বিৰোধী, অনিষ্ট, ইচ্ছা নথকা।
सोचे हुए के विरुद्ध. जो अभीष्ट नहीं।

অনভীষ্ট—(বি) অনভীষ্ট, অবাঞ্ছিত।
जो अभीष्ट न हो, अवांछित।

অনভ্যস্ত—(বি) যিটো অভ্যাস কৰা হোৱা নাই। যিয়ে অভ্যাস কৰা নাই।
जिसका अभ्यास न किया गया हो। जिसने अभ्यास न किया हो।

অনভ্ৰ—(বি) মেঘহীন।
बिना बादल का।

অনমনা—(বি) অন্যমনস্ক, উদাস, অসুখী।
उदास, खिन्न, अस्वस्थ।

অনমিল, অনমেল—(বি) অমিল।
बेमेल, असंबद्ध।

অনমোল—(বি) অমূল্য, অত্যন্ত মূল্যবান।
अमूल्य, मूल्यवान।

অনয় - (सं पुं) অমঙ্গল, বিপদ, অন্যায়।
अमंगल, अन्याय, अनीति।

অনৰীতি—(सं स्त्री) কু-ৰীতি, বেয়া আচৰণ।
बुरी रीति, अनुचित व्यवहार।

অনৰ্গল—(বি) অনৰ্গল, একেবাহে, থকজা নলগাকৈ ওলোৱা।
बे रोक, अंड-बंड, लगातार।

অনৰ্থ—(सं पुं) অনৰ্থ, উল্টা অৰ্থ।
उल्टा अर्थ।
(বি) নিকৰ্মা, দুৰ্ভগীয়া, অৰ্থহীন, ভিন্ন অৰ্থযুক্ত।
निकम्मा, भाग्यहीन, अर्थ हीन, भिन्न अर्थवाला।

অনৰ্থক—(বি) অনৰ্থক, নিৰৰ্থক, ব্যৰ্থ।
निरर्थक, व्यर्थ।

অনল—(সং পুং) জুই।
आग।

অনলস—(বি) এলাহহীন, তত্‌-পৰীয়া, চৈতন্য।
आलस्य रहित, चतन्य।

অনলহক—(সং পুং) ময়েই ব্ৰহ্ম।
मैं हक, अहं ब्रह्मास्मि।

অনবকাশ—(বি) যিহৰ বাবে কোনো সুবিধা বা সুৰুঙা নাই।
जिसके लिये कोई गुंजाइश या मौका न हो, अयोज्य, (सं पुं) সময় নথকা। अवकाश का अभाव, फुरसत का न होना।

অনবগত—(বি) অজ্ঞাত, নজনা।
अज्ञात, न जाना हुआ।

অনবচ্ছিন্ন—(বি) অখণ্ডিত, অটুট
अखंडित, अटूट, संयुक्त।

অনবদ্য—(বি) নিৰ্দ্দোষ, নিখুঁট।
दोष रहित, निर्दोष।

অনবধান—(বি) অসাৱধানতা, কেৰেপ নকৰা।
असावधानी, लापरवाही।

অনবৰত—(ক্রি বি) একেবাহে, অনবৰত, সদায়।
लगातार, अविराम।

অনশন—(সং পুং) অনশন, উপবাস, কোনো বিশেষ সঙ্কল্প লৈ উপ-বাস কৰা।
उपवास, किसी विशेष संकल्प के साथ आहार-त्याग।

অনসানা—(ক্রি অ) মনে মনে বেয়া পোৱা বা খং কৰা।
मन में नाराज होना, चिढ़ना।
(ক্রি স) আনক অসন্তুষ্ট কৰা।
किसी को अप्रसन्न या नाराज करना।

অনসুনী-(বি)শুশুনা, যি শুনা নাই।
न सुनी हुई।

অনস্তমিত-(বি)যি অস্ত যোৱা নাই।
जो अस्त न हुआ हो।

অনস্তিত্ব-(সং পুং) অস্তিত্ব নথকা।
अस्तित्व का अभाव।

অনহিত—(সং পুং) অহিত, অশুভ কামনা।
बुराई, अशुभ कामना।

অনহোনী—(সং স্ত্ৰী) অসম্ভাব্য, অঘটন, অলৌকিক।
न होनेवाली, अलौकिक।

অনাক্ৰমণ—(সং পুং)আক্ৰমণ নকৰা।
आक्रमण न करना।

অনাগত—[বি] অনাগত, ভবি-ষ্যতলৈ হবলগীয়া, অপৰিচিত, অনাদি, অদ্ভুত।
जो न आया हो, भावी,

अपरिचित, अनादि, अद्भुत ।
(क्रि. वि) हठात् सहसा ।

अनाघ्रात—(वि) যাৰ আগেয়ে
ঘ্ৰাণ লোৱা হোৱা নাই ।
जो सूँघा न गया हो ।

अनाचार— (सं पुं) অনাচাৰ,
কুব্যৱহাৰ, আচাৰৰ বিৰোধী ।
नीति या आचार के विरुद्ध,
दुराचार ।

अनाज—(सं पुं) শস্য ।
अन्न, धान्य ।

अनाड़ी—(वि.) অকৰা, অপটু,
অবুজ, অনভিজ্ঞ ।
नासमझ, मूर्ख, अनिपुण ।

अनाथालय—(सं पुं) অনাথাশ্ৰম,
য'ত পিতৃ-মাতৃহীন নিৰাশ্ৰয়
শিশু সকলৰ পালন পোষণ হয় ।
वह स्थान जहां दीन-दुखियों का
पालन हो ।

अनादर—(सं पुं) অনাদৰ, আও-
হেলা, এবিধ অলঙ্কাৰ ।
आदर न होना, अपमान, एक
अलंकार ।

अनादि—(वि.) অনাদি, আদিহীন,
আঁত-নোপোৱা ।
जिसका आदि न हो, चिरन्तन ।

अनाप शनाप— (वि.) বকনি,
অবাবত বকা ।
व्यर्थ का उल्टा सीधा कथन ।

अनायास—(क्रि. वि) অনায়াসে,
বিনা পৰিশ্ৰমে, আকস্মিক ভাৱে
बिना आयास के । अकस्मात् ।

अनार—(सं पुं) ডালিম ।
एक फल, दाड़िम ।

अनावृत—(वि.) অনাবৃত, মুকলি ।
जो ढका न हो, खुला हुआ ।

अनाश्रित— (वि.) অনাশ্ৰিত,
নিৰাশ্ৰয় ।
निराश्रित, जिसे सहारा न हो ।

अनासक्त—(वि.) অনাসক্ত, নিৰ্লিপ্ত
ৰতি বা অনুৰাগ নথকা ।
जो आसक्त न हो, निर्लिप्त ।

अनाहत— (वि.) আহত
নোহোৱা,
जिस पर आघात न हुआ हो ।
(सं पुं)—যোগমত অনুসাৰে
বুঢ়া আঙুলিৰে দুয়ো কাণ বন্ধ
কৰিলে শুনা শব্দ ।
योग में वह शब्द जो
दोनों कानों को अंगूठों से
बन्द करने से सुनायी देता है ।

अनाहार— (सं पुं) অনাহাৰ, নিৰাহাৰ,
भोजन का त्याग, जिसने कुछ खाया न हो।

अनाहूत— (वि.) অনিমন্ত্ৰিত,
जो बुलाया न गया हो।

अनिंद्य—(वि.) অনিন্দনীয়, ভাল।
जो निन्दा के योग्य न हो, उत्तम।

अनित्य—(वि.) অনিত্য, ক্ষন্তেকীয়া, অস্থায়ী, ক্ষণ ভঙ্গুৰ।
जो सदा न रहे, नश्वर, अमत्य।

अनिमिष, अनिमेष—(क्रि वि) একেথিৰে, নিৰন্তৰ, অপলক।
एकटक, लगातार।

अनियारा—(त्रि) জোঙা, চোকা, তীক্ষ্ণ।
नुकीला, पैना।

अनिर्वचनीय—(वि.) অনিৰ্ব্বচনীয়, বৰ্ণনাৰ অতীত।
जो कहा न जा सके।

अनिर्वाच्य— (वि) নিৰ্ব্বাচনৰ অতীত, বৰ্ণনাৰ অতীত।
जो चुना न जा सके, जो कहा न जा सके।

अनिल—(सं. पुं) বতাহ, বায়ু।
वायु, हवा।

अनिवार्य--(वि.) অনিবাৰ্য্য, নিবাৰণ কৰিব নোৱাৰা, সলনি কৰিব নোৱাৰা, অত্যাৱশ্যক।
जिसका निवारण न हो, अत्यावश्यक।

अनिष्ट—(वि.) অনিষ্ট, অপকাৰক
जो इष्ट न हो। (सं पुं) অপকাৰ, হানি। अमंगल, हानि,

अनी—(सं स्त्री) আগভাগ, জোঙ, সমূহ, সৈন্য, লাজ, গ্লানি।
अग्रभाग, नोक, समूह, सेना, लज्जा, ग्लानि।

अनीक—(सं पुं) বোৰ, বিলাক, সৈন্য, যুঁজ।
समूह, सेना, युद्ध।

अनीति—(सं स्त्री) অনীতি, নীতি বিৰুদ্ধ আচৰণ, অত্যাচাৰ।
नीति का न होना, अन्याय, अत्याचार।

अनुकंपा—(सं स्त्री)কৃপা, অনুগ্ৰহ।
दया, कृपा, अनुग्रह।

अनुकरण— (सं पुं) অনুকৰণ, আনক দেখি কৰা ব্যৱহাৰ।
नकल, पीछे चलने का भाव।

अनुकारक— [वि] অনুকৰণকাৰী।
नकल करनेवाला।

अनुकूल—[बि] অনুকূল, হিত, সহায় সাপেক্ষ, উপকাৰী, ইষ্ট
अनुरूप, मुआफिक, सहायता करनेवाला, विचारों आदि में समान होने या मेल खानेवाला, प्रसन्न। [सं पुं] কেৱল এজনী বিবাহিতা স্ত্ৰীৰ লগত সম্বন্ধ ৰাখোঁতা, এবিধ অলঙ্কাৰ।
एकही विवाहिता स्त्री से सम्बन्ध या प्रेम रखने वाला। एक अलंकार।

अनुकृति—(सं स्त्री) নকল, প্ৰতিৰূপ, এবিধ অলঙ্কাৰ।
नकल, किसी चीज को देखकर ज्यों की त्यों बनायी गयी चीज। एक अलंकार।

अनुक्त—(वि) নোকোৱা, অকথিত।
न कहा हुआ।

अनुक्रम—(सं पुं) অনুক্ৰম, শৃংখলা, ক্ৰমবদ্ধ।
सिलसिला, लगातार एक के बाद एक होने की क्रिया या भाव, क्रमबद्ध।

अनुगमन—(सं पुं) অনুগমন, অনুসৰণ, পতিৰ মৃত্যুত সতী হোৱা প্ৰথা।
अनुसरण, समान आचरण, मृत पति के साथ जल मरना।

अनुगामी—[वि] অনুগামী, পাছত যোৱা, সমআচৰণ কৰোঁতা, আজ্ঞাকাৰী।
पीछे चलनेवाला, समान आचरण करने वाला, आज्ञाकारी।

अनुचर—[सं पुं] অনুচৰ, লগুৱা, আল ধৰা
दास, साथी।

अनुच्छेद—(सं पुं) পৰিচ্ছেদ অনুচ্ছেদ।
लेख आदि का भाग या अंश, प्रस्तर, पैराग्राफ।

अनुज—(सं पुं) অনুজ, সৰুভাই, छोटा भाई। (वि) বয়সত সৰু।
जो पीछे जन्मा हो।

अनुज्ञा--[सं स्त्री] অনুজ্ঞা, অনুমতি, এবিধ অৰ্থালঙ্কাৰ।
आज्ञा, इजाजत, एक अर्थालंकार।

अनुज्ञा-पत्र—(सं पुं) [illegible]মতি-পত্ৰ।
वह पत्र जिसमें अधिकारी से किसी को कुछ करने या लेने की इजाजत मिली हो। (परमिट)

अनुताप—(सं पुं) অনুতাপ, বেয়া কামৰ পাছত কৰা শোক, অনু-

शोचना।

दाह्, जलन, दुःख, पछतावा।

अनुत्तर—(वि) অনুত্তৰ, নিৰুত্তৰ, উত্তৰ দিব নোৱাৰি মনে মনে থকা।

जो उत्तर न दे सके।

(सं पुं) উত্তৰ নিদিয়া বা দিবলৈ ইচ্ছা নকৰা।

उत्तर का अभाव, उत्तर या जवाब न देना।

अनुत्तीर्ण—(वि) অকৃত কাৰ্য্য, অনুত্তীর্ণ

जो परीक्षामें उत्तीर्ण न हुआ हो।

अनुदग्र—(वि) চাপৰ, কোমল, দুৰ্ব্বল, নিস্তেজ।

ऊँचा नहीं, कोमल, कमजोर, निस्तेज।

अनुदात्त-(वि) সৰু, তলখাপৰ, লঘু (উচ্চাৰণ)

छोटा, नीचा, लघु (उच्चारण)

अनुदान—(सं पुं) চৰকাৰ বা অনুষ্ঠান, আদিৰ পৰা কোনো বিশেষ কামৰ বাবে সহায়তা ৰূপে পোৱা ধন।

राज्य, शासन, संस्था आदि को किसी विशेष कार्य के लिये सहायता के रूप में मिलने वाला धन। (ग्रांट)

अनुदार—(वि) অনুদাৰ, ঠেক-মনা, নীচ-মনা, কৃপণ।

जो उदार न हो। कृपण, कंजूस।

अनु-धावन—(सं पुं) অনুসৰণ, পিছত গমি-পিতি চোৱা কাৰ্য্য, বিবেচন।

पीछे चलना, अनुसरण करना।

अनुनय—(सं पुं) অনুনয়, বিনয় ভাব প্রদর্শন, নম্রতা, স্তুতি, কাকুতি।

प्रार्थना, रूठे हुए को मनाना।

अनुनासिक--(वि) অনুনাসিক, নাকৰ সাহায্যত উচ্চাৰণ কৰা।

नाक से उच्चरित।

अनुपम-(वि) অনুপম, অতি সুন্দৰ, যাৰ তুলনা নাই।

उपमा रहित, बे-जोड़, बहुत अच्छा।

अनुपयोगी—(वि) অনুপযোগী, উপযোগী নোহোৱা, অনুপযুক্ত।

बे काम का।

अनुपस्थित—(वि) অনুপস্থিত, আগত নথকা, অসাক্ষাৎ।

गैर-हाजिर।

अनुपहत-(বি) ক্ষতিপূণ নোহোৱা, নতুন।
अक्षत, कोरा, नया।
अनुपात—(सं पुं) অনুপাত, এক ৰাশীৰ লগত আন ৰাশীৰ সম্বন্ধ, ত্ৰৈৰাশিক।
गणित का त्रैराशिक नियम, तुलनात्मक स्थिति।
अनुपान—(सं पुं) অনুপান, দৰবৰ লগতে মিহলাই খোৱা বস্তু।
वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खायी जाय।
अनुपूरक—(वि) আনৰ লগ হৈ পূৰা কৰোঁতা, ত্ৰুটি-বিচ্যুতিৰ কাৰণে পিছত সংযুক্ত (শব্দ)।
किसी के साथ मिलकर उसकी पूर्ति करने वाला। छूट, त्रुटि आदि की पूर्ति के लिये बाद में लगाया, मिलाया, या बढ़ाया गया।
अनुप्राप्त—(वि) একত্ৰিত।
इकट्ठा किया या उगाहा हुआ।
अनुबंध—(सं पुं) অনুবন্ধ, বন্ধন, বাধ্যবাধকতা, কোনো কাম কৰিবলৈ দুই পক্ষৰ মাজত হোৱা বন্দোবস্ত।
बन्धन, कोई काम करने के लिये दो पक्षों में समझौता, किसी भावी कार्य के लिये होनेवाला आपसी निर्णय, घनिष्ठ पारस्परिक सम्बन्ध। (कनट्राक्ट)
अनुभव—(सं पुं) অনুভৱ, বোধ, উপলব্ধি, প্ৰমাণিত জ্ঞান।
प्रत्यक्ष ज्ञान, उपलब्धि।
अनुभाव—(सं पुं) মনোভাব প্ৰকাশ কৰাৰ অঙ্গি-ভঙ্গি।
चित्त का भाव प्रकट करनेवाली चेष्टाएँ।
अनुभूति—(सं स्त्री) অনুভূতি, অনুভৱ, জ্ঞান, বোধ, উপলব্ধি।
अनुभव, मनमें होनेवाला ज्ञान।
अनुमति—(सं स्त्री) অনুমতি, আজ্ঞা, আদেশ, সম্মতি।
आज्ञा, अनुज्ञा, स्वीकृति।
अनुमान-(सं पुं) অনুমান, আন্দাজ, মনেৰে ভাবি ঠিক কৰা, যুক্তিৰে কৰা নিৰ্ণয—'ধোঁৱা দেখি কৰা জুইৰ অনুমান', চাৰিবিধ ন্যায়ৰ এবিধ।
अंदाज, मोटा हिसाब, न्याय के चार भेदों में एक भेद।
अनुमित—(वि) অনুমিত, যিটো অনুমান কৰা হৈছে।
जो अनुमान से सोचा गया हो।

अनुमोदन—(सं पुं) অনুমোদন, সন্তুষ্ট হোৱা, আজ্ঞা দিয়া।
प्रसन्नता प्रकट करना, किसी के किये काम या प्रस्तुत सुझाव को सही मानकर स्वीकृति देना या समर्थन करना।

अनुयायी—(वि) অনুযায়ী, অনুগামী, পাছত যোৱা, অনুৰূপ, অনুসৰি।
अनुगामी, अनुकरण करनेवाला, किसी के सिद्धान्त को मानने या उसके अनुसार चलनेवाला।
(सं पुं) অনুচৰ, সেৱক।
अनुचर, सेवक।

अनुरंजन—(सं पुं) অনুৰাগ।
अनुराग, दिल बहलाव।

अनुरक्त—(वि) অনুৰক্ত, কোনো বস্তুত অতিকৈ মন লগা, আসক্ত, প্ৰেমিক।
प्रेमी, आसक्त, वफादार।

अनुरणन—(सं पुं) শব্দ, ধ্বনি, প্ৰতিধ্বনি।
किसी चीज का बोलना या बजना।

अनुरूप—(वि) অনুৰূপ, সদৃশ বা তুল্য, যোগ্য, উপযুক্ত, আন্দাজ মতে কৰা পৰিমাণ।
तुल्य रूप का, समान, योग्य।

अनुरोध—(सं पुं) বাধা, অনুৰোধ খাটনি, বিনয়পূৰ্ব্বক প্ৰাৰ্থনা, প্ৰেৰণা।
रुकावट, बाधा, प्रेरणा, आग्रह, विनय पूर्वक हठ।

अनुलंबित—(वि) অপৰাধৰ অভিযোগৰ বিচাৰৰ অন্তিম নিৰ্ণয়লৈকে পদৰ পৰা বৰ্খাস্ত।
जो अन्तिम निर्णय तक के लिये अपने कार्य या पद से हटा दिया गया हो। मुअत्तल।

अनुलेख—[सं पुं] কোনো ৰচনা বা পত্ৰত নিজৰ স্বীকৃতি আদি লিখি তাৰ দায়িত্ব নিজৰ ওপৰত লোৱা কাৰ্য্য।
किसी लेख या पत्र पर अपनी सहमति लिखकर उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना।
(अं–एंडोर्समेंट)

अनुलेखन— (सं पुं) কোনো ঘটনাৰ প্ৰকৃত বিৱৰণৰ লেখন কাৰ্য্য, ৰচনাৰ অবিকল প্ৰতিলিপিকৰণ।
घटना या कार्य का लेखा आदि लिखना, अनुलेख।

अनुलोम— (सं. पुं) অৱৰোহণ, তললৈ নমা কাৰ্য্য, সঙ্গীতৰ নিম্ন সুৰ, নিম্ন বৰ্ণ।
उतार, संगीत में सुरों का उतार, निम्न वर्ण।

अनुवर्ती—(सं पुं) অনুবৰ্ত্তী, অপৰৰ মতে চলা, অনুসৰণ কাৰী, কোনো কামৰ পৰিণাম স্বৰূপে হ'বলগীয়া।
अनुयायी, किसी काम के परिणाम स्वरूप होनेवाला।

अनुवृत्ति—(स. स्त्री)অৱসৰ প্ৰাপ্ত কৰ্ম্মচাৰীক বুঢ়া কালত দিয়া বেতনৰ অংশ।
अवसर प्राप्त कर्मचारी को वृद्धावस्था में दिये जानेवाले वेतन का भाग। (पेन्सन)

अनुशंसा—(सं. स्त्री) অনুকূল পৰিবেশ সৃষ্টিৰ কাৰণে কৰা উক্তি, গুণ কীৰ্ত্তন।
सिफारिश।

अनुशासन— (सं. पुं) অনুশাসন, আদেশ, উপদেশ বা শিক্ষা, ঠিক ৰকমে কাম চলাবলৈ কৰা নিৰ্দ্দেশ।
आज्ञा, उपदेश, ठीक तरह से कार्य करने को बाधित करनेवाला विधान।

अनुसरण—[सं पुं] অনুসৰণ, পাছত যোৱা বা গমন, আজ্ঞা বা উপদেশমতে চলা।
अनुकरण, कोई बात या निर्णय मानकर उसके अनुसार काम करना।

अनुसार—[वि] অনুকূল, সদৃশ।
जो किसी के अनुकूल या अनुसरण पर हो।
(क्रि. वि) অনুসাৰে, মতে, অনুযায়ী।
किसी की तरह पर। वैसे ही, जैसे कोई प्रस्तुत या सामने हो।

अनुसूची—[सं स्त्री] তালিকা, ফৰ্দ্দ।
किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अन्त में रहनेवाली कोष्ठक आदि के रूप में नामावली। (अं-शेड्यूल)

अनुहार—(वि) সদৃশ, সমান, অনুসৰি।
सदृश, समान, अनुसार,

[सं पुं] প্ৰকাৰ, সাদৃশ্য, প্ৰতিকৃতি
प्रकार, चेहरे की बनावट, सादृश्य, प्रतिकृति।

अनूठा—[वि विচিত্ৰ, অদ্ভুত, আচৰিত, ভাল, অসাধাৰণ।
विचित्र, अद्भुत, अच्छा, असाधारण।

अनूढ़ा—[सं स्त्री] পুৰুষৰ লগত প্ৰেম কৰা অবিবাহিত স্ত্ৰী।
वह बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूप—(सं पुं) প্ৰচুৰ পানীৰ দেশ, সুজলা স্থান।
अधिक जल वाला देश।
(वि) অনুপম, সুন্দৰ। जिसकी उपमा न हो, सुन्दर।

अनृत—[वि] মিথ্যা, অন্যথা, বিপৰীত।
मिथ्या, अन्यथा, विपरीत।

अनैक्य-[सं पुं] অনৈক্য, মতভেদ, এক নোহোৱা, অমিল।
मतभेद, एकता न होना।

अनैतिक--[वि] নীতি বিৰুদ্ধ।
नीति के विरुद्ध।

अनोखा—(वि) বিচিত্ৰ, আচৰিত, নতুন, সুন্দৰ।
विचित्र, विलक्षण, नया, सुन्दर।

अनौचित्य—(सं. पुं) অনুচিত ভাব।
अनुचित होने का भाव।

अन्न—(सं पुं) শস্য, ভাত, অন্ন।
पौधों से उत्पन्न [चावल गेहूँ आदि] दाने जो खाने के काममें आते हैं।

अन्न कूट-(सं पुं) কাতি মাহৰ শুক্ল-প্ৰতিপদত হোৱা এবিধ উৎসৱ।
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होनें वाला एक उत्सव।

अन्न-सत्र—[सं पुं] য'ত দুখীয়া ভিকহুক অন্ন-দান দিয়া হয়।
जहाँ गरीबों को अन्न बाँटा या खिलाया जाता है।

अन्ना—(सं. स्त्री) ধাই, ধাঈ।
धाय, दाई।

अन्यतम—(वि) অন্যতম্, বিশিষ্ট, বহুতৰ ভিতৰত এজন।
सर्वश्रेष्ठ, बहुतों में एक।

अन्यत्र— (क्रि वि) অন্যত্ৰ, আন ঠাই।
कहीं दूसरी जगह।

अन्यथा—(अव्य) অন্যথা, নতুবা
नहीं तो, दूसरी अवस्था में
[वि] বিপৰীত, লবচৰ, অধে-মধে।
विपरीत, मिथ्या, झूठ

अन्यमनस्क—(वि) অন্যমনস্ক, যাৰ মন আন বিষয়ত ৰত।
अन-मना, खिन्न।

अन्योन्य—(सर्व) আন-আন, ইটো-সিটো, পৰস্পৰ, অন্যোন্য, সাহিত্যৰ এবিধ অলঙ্কাৰ।
एक दूसरे के साथ, परस्पर, साहित्यमें एक अलंकार।

अन्वय—(सं. पुं) অন্বয়, পৰস্পৰ সম্বন্ধ, বাক্যৰ কৰ্ম, কৰ্ত্তা, ক্রিয়াদিৰ পৰস্পৰ সম্বন্ধ, পৰ্য্যায়।
दो वस्तुओं के आपस का सम्बन्ध, पद्य को गद्य की भाँति ठीक कर बैठाने की प्रक्रिया। शब्दावली के अनुसार किसी वाक्य का ठीक और संगत अर्थ लगाना। कार्य कारण का पारस्परिक संबंध।

अन्वीक्षण-(सं पुं)ভালদৰে চোৱা বা বুজি লোৱা, বিচাৰ-খোচাৰ, অনুসন্ধান
भली भाँति देखना या सोचना समझना, खोज, अनुसंधान।

अन्वेषण—[सं पुं] অন্বেষণ, তথ্যৰ অনুসন্ধান, বিচাৰ কাৰ্য্য।
छानबीन करके बीती हुई बात के तथ्य, इतिहास आदि का पता लगाना।

अन्वेषी—(वि) অন্বেষণকাৰী।
अन्वेषण करनेवाला।

अपकर्म—(सं पुं) কু-কৰ্ম্ম, বেয়া কাম, অপকৰ্ম্ম।
बुरा अनुचित या निन्दनीय काम।

अपकर्ष—(सं पुं) অপকৰ্ষ, তললৈ টানি অনা, হীনতা, বেয়া হৈ যোৱা।
पीछे या नीचे खींचना,गुण योग्यता आदि का कम होना।

अपकर्षण—(सं पुं) অৱনতি, পদ-মৰ্য্যাদা হানি, মূল্য হ্রাস।
नीचे की ओर जाना, अवनति प्राप्त होना, पदमर्यादा घटना, मूल्य आदि कम होना, किसी वस्तु में से कुछ अंश कम हो जाना।

अपकार— [सं पुं] অপকাৰ, অনিষ্ট, অহিত, ক্ষতি।
हानि, अहित, नुक्सान।

अपकीर्ति— (सं. स्त्री) অপযশ, অপকীৰ্ত্তি, কুকীৰ্ত্তি।
अपयश, बदनामी।

अपक्रमण—(सं पुं) অসন্তুষ্ট হৈ ওলাই যোৱা।
असन्तुष्ट होकर निकल जाना (अं-वॉक आउट)

অপক্ক— (বি.) অপক্ক, নপকা, কেঁচা ।
कच्चा, जिसके ठीक होनेमें कसर हो ।

अपगत—[বি] পৃথক, মৃত, নষ্ট ।
भागा या हटा हुआ, मृत, नष्ट ।

अपघात-(সং পুং)আত্মহত্যা, অপঘাত, অকস্মাৎ হোৱা ডাঙৰ আঘাত বা দুৰ্ঘটনা, অবৈধ ভাবে হত্যা বা বধ ।
आत्म हत्या, किसी को मार डालना । हत्या,वध या हिंसा ।

अपच—(সং পুং) অজীৰ্ণ ।
अजीर्ण ।

अपचय— (সং পুং) কম, হ্ৰাস, অপচয়, অপব্যয় ।
कम या थोड़ा होना। कमी, घटाव या ह्रास । नाश । गँवाना ।

अपकार—(সং পুং) অনুচিত কাম, নিন্দা, অনধিকাৰ প্ৰৱেশ, স্বাস্থ্য হানিকৰ কাম ।
अनुचित कार्य । निन्दा । बुराई। अनधिकार क्षेत्र में प्रवेश। स्वास्थ्य नष्ट करनेवाला काम ।

अपजस—[সং পুং] অপযশ, কলঙ্ক ।
अपयश, कलंक ।

अ-पढ़—[বি] অশিক্ষিত, লেখা-পঢ়া নজনা, অপঢ়ুৱা ।
अशिक्षित ।

अ-पत—[বি]পাত নথকা, নিলাজ ।
जिसमें पत्ते न हों । निर्लज्ज, बेहया । (सं. स्त्री) अपमान । अप्रतिष्ठा, बेइज्जती ।

अपत्य—[সং পুং] অপত্য, সন্তান সন্ততি ।
सन्तान ।

अपनपौ—(সং পুং) আত্মীয়তা । মৰ্য্যাদা, জ্ঞান, অভিমান, অহঙ্কাৰ
आत्मीयता, सुध, ज्ञान, अभिमान ।

अपनयन—[সং পুং] দূৰী কৰণ, এঠাইৰ পৰা আন ঠাইলৈ লৈ যোৱা ক্ৰিয়া ।
दूर या अलग करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, किसी ओर भगा ले जाना ।

अपना—(সৰ্ব) নিজা । ব্যক্তিগত ।
निजका, व्यक्तिगत ।
(সং পুং) আত্মীয় । নিজা সম্বন্ধী ।
आत्मीय, स्वजन ।

अपनाना—(ক্রি স) আপোন কৰা, নিজৰ অধিকাৰলৈ অনা, নিজৰ কৰা ।

अपना बनाना, अपने अधिकार, शरण आदि में लेना।

अपनापा—(सं पुं) আত্মীয়তা। आत्मीयता।

अपभ्रंश—(सं पुं) বিকৃত ৰূপ, মূল শব্দ সাল-সলনি হৈ হোৱা শব্দ।
पतन, विकृति, मूल शब्दसे विकृत शब्द का नया रूप।
(सं स्त्री) প্ৰাকৃত ভাষাৰ এটা ৰূপ,।
हिन्दी के पहले और प्राकृत भाषा के बाद की प्रचलित भाषा।

अपमान—(सं पुं) অপমান, অৱমাননা, মানৰ লাঘৱ, মান বা গৌৰৱ হানি।
अनादर, बेइज्जती, वह काम या या बात जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा कम हो।

अपमृत्यु—(सं स्त्री) অপ-মৃত্যু, আকস্মিক মৃত্যু। অস্বাভাৱিক মৃত্যু।
दुर्घटना आदि के कारण आकस्मिक मृत्यु।

अपयश—(सं पुं) অপযশ, দুৰ্নাম, কলঙ্ক, কুৎসা।
अपकीर्ति, बदनामी।

अपरंपार—[सं पुं] অসীম, অত্যধিক, বৰ বেছি।
असीम, बहुत अधिक, अनन्त।

अपर—(वि) প্ৰথমৰ, পিছৰ, অন্য, ভিন্ন, বেলেগ। আৰু অধিক।
पहले का, पिछला, अन्य, जितना हुआ हो उससे और आगे या अधिक।

अपरा—(सं स्त्री) ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ বাহিৰে অন্য বিদ্যা। পশ্চিম দিক্।
ब्रह्म विद्याके अलावा अन्य विद्याएँ पदार्थ विद्या, पश्चिम दिशा।

अपराग-(सं पुं) বিদ্বেষ, অসন্তোষ। वैर, द्वेष, असन्तोष।

अपराध—(सं पुं) অপৰাধ, অন্যায়, দোষ, পাপ।
कोई ऐसा अनुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचे (अं— आफेन्स) विधि विधान विरुद्ध दंडनीय कार्य (क्राइम) पाप, भूलचूक।

अपराह्न—(সং পুং) অপৰাহ্ণ, আবেলি, পাছ বেলা, ভাটিবেলা।
दिनका तीसरा पहर।

अपरिग्रह—(সং পুং) দান নোলোৱা, আৱশ্যকতকৈ বেছি ধন-ত্যাগ।
दान न लेना, आवश्यकता से अधिक धन का त्याग।

अपरिमित—(বি) অপৰিমিত, যাৰ পৰিমাণ নাই।
असीम, असंख्य।

अपरिमेय—(বি) অপৰিমেয়, যাৰ পৰিমাণ জুখিব নোৱাৰি।
बेअन्दाज, असंख्य।

अपरूष—(বি) নৰম, কোমল, খং-বিহীন।
क्रोधरहित, मृदुल।

अपरूप—(বি) অপৰূপ, কুৰূপ, অদ্ভুত, আশ্চৰ্য্য।
बद-सूरत, भद्दा। अद्‌भुत, अपूर्व।

अपलक—[বি] একে থিৰে।
जिसकी पलकें न गिरें। (ক্রি বি) এক দৃষ্টিৰে ৰ লাগি চাই থকা।
एकटक।

अपलाप—(সং পুং) অপলাপ, বক্-বকনি।
व्यर्थ की बक-बक।

अपवर्ग—(সং পুং) মোক্ষ, নিৰ্ব্বাণ, মুক্তি, ফল।
मोक्ष, निर्वाण।

अपवाद—(সং পুং) বিৰোধ, খণ্ডন, অপবাদ, কলঙ্ক ৰটা, চৰিত্ৰ সম্পৰ্কে দোষাৰোপ, নিয়মৰ বাহিৰ।
विरोध या खंडन, बदनामी। दोष, पाप। व्यापक या सामान्य नियम के विरुद्ध बात।

अपव्यय—(সং পুং) অপব্যয়, অপৰি-মিত খৰচ, বেয়া কামত বা অতিৰিক্ত খৰচ।
व्यर्थ किया जानेवाला व्यय।

अप-शकुन—[সং পুং] কুলক্ষণ, অমঙ্গলৰ চিন।
बुरा शकुन, असगुन।

अपसरण—[সং পুং] দায়িত্বপূৰ্ণ কাম এৰি পলোৱা।
कार्य या उत्तरदायित्व छोड़ कर भाग जाना।

अपहरण—[সং পুং] অপহৰণ। অন্যায় ৰূপে বা বলপূৰ্ব্বক পৰৰ বস্তু গ্ৰহণ।
छीनकर या बलपूर्वक ले लेना। किसी व्यक्ति को बलपूर्वक उठा ले जाना। छिपाव।

অপাংগ— [বি] অঙ্গহীন, চকুৰ কোণ।
जिसका कोई अंग टूटा हो या न हो। आँख का कोना।

অপাকৰণ(অপাকৃতি)—[সং পুং]ঋণ-পৰিশোধ।
ऋण परिशोधन। (अं—लिक्वि-डेशन आफ डेट)

অপাদান— [সং পুং] পৃথক, ব্যাকৰণৰ পঞ্চম কাৰকে বুজোৱা অৰ্থ।
हटाना, अलग करना, व्याकरण में पाँचवाँ कारक।

অপান—(সং পুং) পাঁচটা বা দহোটা প্ৰাণৰ এটা। যি উশাহ গুহ্য দ্বাৰেদি বাহিৰ কৰি দিয়া যায়, পাদ। মলদ্বাৰ, কটি, পোকৰ।
पाँच या दस प्राणों में से एक, वह वायु जो गुदा से निकले। गुदा-द्वार

অপায়—[সং পুং] পৃথক, অপায়, অমঙ্গল, হানি, বিনাশ, জ্ঞান বিহীন।
अलगाव, नाश, अन्यथाचार, बिना पैरका।

অপাৰগ— (বি) অপাৰগ, অসমৰ্থ, অযোগ্য, অক্ষম।
जो पारगामी न हो। अयोग्य, असमर्थ।

অপাৱন— [সং পুং] অপবিত্ৰ।
अपवित्र।

অপাহিজ[অপাহজ]--[বি]অঙ্গহীন, অকামিলা, এলেহুৱা।
अंगहीन, काम करने के अयोग्य, आलसी।

অপিতু—[অব্য] কিন্তু, বৰং।
किन्तु, बल्कि।

অপীল— [সং স্ত্ৰী] নিবেদন, পুনৰ্বিবেচনাৰ বাবে প্ৰাৰ্থনা। পুনৰ্বিচাৰ-প্ৰাৰ্থনা-পত্ৰ।
निवेदन, विचारार्थ प्रार्थना, अभियोग। प्रार्थना-पत्र।

অপূৰ্ব— (বি) আগেয়ে নোহোৱা, অদ্ভুত, আশ্চৰ্য্য, উত্তম।
जो पहले न रहा हो, अद्भुत, उत्तम।

অপেক্ষা—[সং স্ত্ৰী] অপেক্ষা, আশা কৰি বৈ থকা, ভৰষা, সম্বন্ধ, তুলনা।
आकांक्षा, इच्छा, आवश्यकता, भरोसा, आशा। कार्यकारण का अन्योन्य संबंध, तुलना।

अपेय—(वि) পিখোৱাৰ অযোগ্য, অপেয় ।
न पीने योग्य ।

अप्रतिदेय—(वि) যি ঋণ কোনো দিনে পৰিশোধ কৰিবলগীয়া নহয় ।
जिसे कभी चुकाना न पड़े ऐसा ऋण ।

अप्रतिभ—(वि) নিষ্প্ৰভ, প্ৰতিভা-হীন, উদাস, নিৰানন্দ, মতিচ্ছন্ন ।
प्रतिभा शून्य, उदास, स्फूर्ति रहित । मतिहीन ।

अप्रतिम—(वि) অপ্ৰতিম, নিৰুপম, অতুলনীয় ।
अद्वितीय ।

अप्रतिष्ठा—[स ं स्त्री] অনাদৰ, অপযশ ।
अनादर, अपयश ।

अप्रत्यक्ष—(वि) অপ্ৰত্যক্ষ, নেদেখা, অনুমানৰ পৰা হোৱা, অনুমান-সিদ্ধ ।
जो प्रत्यक्ष या सामने न हो, जो प्रत्यक्ष रूप या सीधे मार्ग से न हो कर किसी दूसरे मार्ग से या हेरफेर से हो ।

अप्रमेय—(वि) জুখিব নোৱাৰা, তৰ্কেৰে ঢুকি নোপোৱা ।
जो मापा न जा सके, अनन्त, जो तर्क या प्रमाण से सिद्ध न हो ।

अप्सरा—[स ं स्त्री] স্বৰ্গৰ নৰ্তকী, পৰম ৰূপৱতী স্ত্ৰী, পৰী, অপে-শ্বৰী ।
स्वर्ग की नर्तकी, परम रूपवती स्त्री, परी ।

अफरना—(क्रि अ) ভোজনেৰে তৃপ্ত হোৱা, পেট উখহি উঠা, আৰু অধিক পাবৰ ইচ্ছা নোহোৱা ।
पेट पूरी तरह भर जाना, पेट फूलना, और अधिक की इच्छा न रहना ।

अफवाह—(स ं स्त्री) উৰা বাতৰি, জনৰৱ ।
उड़ती खबर, जनरव, किंवदन्ति ।

अफसर—[स ं पु ं] বিষয়া, প্ৰধান ।
प्रधान, अधिकारी, हाकिम ।

अफसोस—(स ं पु ं) আফচোচ, শোক, অনুতাপ ।
शोक, दुख, पश्चाताप, खेद ।

अफीम—(स ं स्त्री) কানি, আফিং ।
पोस्त के पेड़ का गोंद जो मादक और विष होता है ।

अफीमची—[वि] কানীয়া ।
अफीम खानेवाला ।

अब—(ক্রি বি) এতিয়া ।
इस समय ।

अबध्य—(বি) অবধ্য, বধৰ অযোগ্য, যাক কোনোৱে মাৰিব নোৱাৰে ।
जिसे मारना उचित नहीं, जिसे प्राण दण्ड न दिया जा सके, जिसे कोई मार न सके ।

अबरक-[স ं পু ं] বালিচন্দা, কাঁচৰ নিচিনা এবিধ ফুট-ফুটীয়া বস্তু ।
कांच की तरह चमकीली तह वाली एक धातु । एक प्रकार का पत्थर ।

अबला-[স ं স্ত্ৰী] অবলা, তিৰোতা ।
औरत, स्त्री ।

अबाध-[বি] অবাধ, বাধা নথকা, অত্যধিক, পূৰ্ণ ।
जिसके लिये कोई बाधा न हो, बहुत अधिक, पूर्ण, परम ।

अबाध्य-[বি] অবাধ্য, উচ্ছৃংখল, হাক-বচন শুনা ।
जो रोका न जा सके । अनिवार्य ।

अबीर—[স ं পু ं] ফাকু ।
रंगीन चूर्ण जिसे होली के अवसर पर डाला जाता है ।

अबे—[अव्य] হেৰা (সৰুলৈ সম্বোধন)
हे, अरे (छोटों के लिये संबोधन)

अबेर—(সং স্ত্ৰী) পলম, বিলম্ব ।
विलम्ब ।

अबोध—(বি) অবোধ, অঁজলা, अनजान, मूर्ख ।
(স ं পু ं) অবোধ বা অজ্ঞান মানুহ ।
अज्ञान, मूर्खता ।

अब्ज—[স ं পু ं] অজ, পদুম, শঙ্খ, চন্দ্ৰ, ধন্বন্তৰী ।
जल से उत्पन्न वस्तु, कमल, शंख, चन्द्रमा, अरब की संख्या ।

अब्द—(স ं পু ं) বছৰ, মেঘ,আকাশ ।
वर्ष, साल, मेघ, आकाश ।

अब्द कोश—(সং পু ं) প্ৰতিবছৰে প্ৰকাশিত জানিব লগীয়া কথাৰ সংগ্ৰহিত পুথি ।
जानने योग्य बातों का संग्रह कर प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाला कोश । (अं—इयरबुक)

अब्धि—(স ं পু ं) সমুদ্ৰ, সৰোবৰ, সাত ।
समुद्र, सरोवर, सातकी संख्या ।

अभंग—(বি) অখণ্ড,নচিৰ নোৱাৰা, এবিধ অলংকাৰ (কাব্য)

अखंड, पूर्ण, न मिटने वाला, लगातार ।

अभक्ष्य—(वि) অভক্ষ্য, অখাদ্য, খোৱাৰ অযোগ্য ।
अखाद्य, जिस वस्तुको खानेमें निषेध हो ।

अभय—(वि) অভয়, ভয় নথকা ।
निर्भय, निडर ।

अभय-पद—(सं पुं) মুক্তি, ভগৱন্তক পোৱা অৱস্থা ।
मुक्ति, मोक्ष ।

अभागा—(वि) দুৰ্ভগীয়া, অভাগীয়া, দুৰ্কপলীয়া ।
भाग्यहीन, बदकिस्मत ।

अभाग्य—(सं पुं) অভাগ্য, ভাগ্য-হীন অৱস্থা, দুৰ্কপাল ।
भाग्य हीनता, बदकिस्मती ।

अभिकरण—(सं पुं) কোনো মানুহৰ সম্বন্ধে নিশ্চিত প্ৰমাণ নথকা দোষাৰোপ । এজেন্সী ।
किसी ओर से अभिकर्ता के रूपमें काम करना । वह स्थान जहाँ अभिकर्ता रहता या काम करता हो । (अं—एजेन्सी)

अभिकर्ता—(सं पुं) প্ৰতিনিধি ।
वह जो किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से प्रतिनिधि के रूप में काम करने के लिये नियुक्त हो । (अं—एजेंट)

अभिगमन—(सं पुं) কোনো বস্তুৰ কালে গতিকৰণ, ৰতি-ক্ৰিয়া, তিৰোতাৰ সৈতে গুপুত সংসৰ্গ ।
पास जाना, सहवास, संभोग ।

अभिचार—(सं पुं) তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰৰ দ্বাৰা অনিষ্ট-সাধন ।
तंत्र-मंत्र द्वारा मारण आदि हिंसा कर्म ।

अभिजात—(वि) অভিজাত, ভাল বংশত জন্মা, বুদ্ধিমান, যোগ্য, উপযুক্ত, মাননীয, পুজ্য, সুন্দৰ ।
अच्छे कुल में उत्पन्न, बुद्धिमान, योग्य, मान्य, पूज्य, सुन्दर ।

अभिजात—तंत्र—(सं पुं) অভি-জাত-তন্ত্ৰ, উচ্চবংশীয লোকে চলোৱা শাসন–তন্ত্ৰ ।
वह शासन पद्धति जिसमें राज्यका सारा प्रबन्ध थोड़े से उच्च कुल के और सम्पन्न लोगों के हाथ रहता है । (अं—एरिस्टोक्रेसी, एलीगार्की)

अभिज्ञ—(वि) অভিজ্ঞ, সম্যক জ্ঞান থকা, নিপুণ, পাৰ্গত ।
जानकार, निपुण ।

अभिद्वान—(सं पुं) যাৰ বস্তু তাক দিয়া।
किसी की वस्तु उसके पास पहुं-चाना या देना (अं—डेलवरी)

अभिधा—(सं स्त्री) যথাযথ অৰ্থ প্ৰকাশ কৰা শব্দ-শক্তি ।
शब्दों की वह शक्ति जिससे उनके नियत अर्थ ही प्रकट होते हैं ।

अभिधान—(सं पुं) নাম, কোনো পদৰ বিশেষ নাম বা সূত্ৰ, অভি-ধান, শব্দাৰ্থ-কোষ ।
नाम, संज्ञा, किसी पदका विशेष नाम या संज्ञा (अं—डेजिग्नेशन) शब्द कोश ।

अभिनन्दन—[सं पुं] আনন্দ, সন্তোষ, অভিনন্দন, শলাগ, বিনীত নিবেদন ।
आनन्द, सन्तोष, प्रशंसा, विनीत प्रार्थना ।

अभिनय—[सं पुं] আনৰ ধৰণ কৰণৰ অনুকৰণ বা নকল, নাট-কত লিখা লোক বিলাকৰ ভাও ধৰি—সেই বিলাকৰ ভাব, প্ৰকৃতি আচৰণ আদি দেখুওৱা কাৰ্য্য, অভিনয় ।
दूसरे की चेष्टा का अनुकरण करना, नकल, नाटक का खेल ।

अभिनव—[वि] অভিনৱ, একে-বাৰে নতুন ।
नया, ताजा ।

अभिनीत—[वि] ওচৰ সম্পৰ্কিত, সুসজ্জিত। ভাওনা কৰি দেখুৱা ।
निकट लाया हुआ, सुसज्जित, जिसका अभिनय हुआ हो ।

अभिनेय—[वि] অভিনয়ৰ যোগ্য, ভাওনাৰ যোগ্য ।
अभिनय करने योग्य ।

अभिप्राय-[सं पुं] আশয়, তাৎপৰ্য্য, অৰ্থ, উদ্দেশ্য, কোনো ছবি আঁকিবৰ নিমিত্তে কৰা কাল্পনিক বস্তুৰ আকৃতি।
आशय तात्पर्य, उद्देश्य, किसी चित्रमें सजावट के लिये बनायी जानेवाली प्राकृतिक या काल्पनिक वस्तु, किसी रचना का विषय जिसपर उसका ढाँचा बनता है ।

अभिप्रेत—(वि) অভিপ্ৰেত, মনেৰে ভৰা বা ইচ্ছা কৰা, বুজাব খোজা ।
अभिप्राय का विषय, अभिलषित ।

अभिभूत—(वि) অভিভূত, পৰাস্ত, বিহ্বল, বিচলিত, বশীভূত, পৰা-

भूत, স্তব্ধ ।
पराजित, पीडित, वशीभूत, चकित ।

अभिमत—(वि) অভিমত, মনত লগা ।
मनोनीत, वाञ्छित, सम्मत (सं पु) मत, कामना, इष्ट, वाञ्छित, भाव ।
मत, राय, सम्मति, विचार, मनचाही बात ।

अभिमान—(सं पु) অভিমান, মই বৰ ভাব, গপ, গৰ্ব ।
अहंकार, गर्व, घमंड ।

अभिमुख—(क्रि वि) অভিমুখ, সমুখ, দিশ ।
सामने, सम्मुख ।

अभियाचन—[सं पुं] দাবী (অধিকাৰ সূত্ৰে)
अधिकार बताते हुए कुछ मागना ।
मांग (अं—डिमाड)

अभियान—[सं पुं] যুদ্ধ আদিৰ কাৰণে সৈন্য । আক্রমণ ।
सैनिक कार्य के लिये होनेवाली यात्रा, आक्रमण ।

अभियुक्त—(सं पु) অভিযুক্ত, অপৰ বা অপৰাধত পৰা ।
जिसपर अभियोग लगाया गया हो, मुलजिम ।

अभियोग—(सं पुं) অভিযোগ, গোচৰ, আদালতত আইনৰ বিৰুদ্ধে কৰা আপত্তি, মোকৰ্দমা ।
फरियाद, अदालत में किसी के अपराध की शिकायत, अभियुक्त को दण्ड दिलाने के हेतु अदालत में चलनेवाला वाद या व्यवहार, किसी प्रकार की नालिश या मुकदमा ।

अभिराम—(वि) অভিৰাম, সুন্দৰ, ৰম্য ।
मनोहर, सुन्दर ।

अभिरुचि—(सं स्त्री) অভিৰুচি, ইচ্ছা, প্রবৃত্তি ।
चाह, पसन्द ।

अभिलषित—(वि) বাঞ্চিত, আকাঙ্ক্ষিত ।
वाञ्छित, चाहा हुआ ।

अभिलाषा—(सं स्त्री) অভিলাষ, ইচ্ছা ।
इच्छा । कामना, आकांक्षा ।

अभिलेख—[सं पुं] অভিলেখ, কোনো বিষয়ৰ লিখিত বিৱৰণ ।
किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी सब बाते (अं—रेकार्ड)

अभिवंदन—(सं पुं) প্ৰণাম, স্তুতি, প্ৰশংসা।
प्रणाम, स्तुति, प्रशंसा।

अभिवादन—(सं पुं) অভিবাদন, প্ৰণাম, নমস্কাৰ।
प्रणाम, स्तुति।

अभिव्यंजन—(सं पुं) ভাৱ-প্ৰকাশ।
भाव व्यक्त करना।

अभिव्यक्ति—(सं स्त्री) স্পষ্টীকৰণ, প্ৰকাশন, সূক্ষ্ম বা অপ্ৰত্যক্ষ ফল স্পষ্টভাবে ওলাই পৰা (গুটিব পৰা গজালি)
प्रकाशन, अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना।

अभिशाप—(सं. पुं) অভিশাপ, শাও, শপনি।
शाप।

अभिषेक—(सं पुं) তিওৱা কৰ্ম, স্নান, পৱিত্ৰ পানীৰে বিধিপূৰ্ব্বক গা-ধুৱাই ৰাজপাটত স্থাপন, ঝাৰী, লোটাৰ নলেৰে শিৱ-লিঙ্গৰ ওপৰত পানী দিয়া কাৰ্য্য।
जलसे सींचना। स्नान। बाधा शान्ति के लिये मंत्र पढ़कर जल छिड़कना। राजगद्दी पर बैठना। घड़े के छिद्र से शिव लिंगपर पानी टपकाना।

अभिसंधि—(सं स्त्री) অভিসন্ধি, অভিপ্ৰায়, ষড়যন্ত্ৰ, কুমন্ত্ৰণা।
धोखा, षड़यंत्र।

अभिसार—(सं पुं) আশ্ৰয়, অভি-সাৰ, প্ৰেমিক-প্ৰেমিকাৰ গুপ্ত স্থানলৈ গমন কৰা কাৰ্য্য।
सहायता, सहारा, प्रियसे मिलने के लिये संकेत स्थलपर जाना।

अभिहार—(सं पुं) যুদ্ধ ঘোষণা, দণ্ড।
युद्ध घोषणा, दण्ड।

अभी—(क्रि वि) এতিয়া।
इसी समय, इसीक्षण।

अभीप्सा—(सं स्त्री) হেঁপাহ।
कुछ पाने की प्रबल इच्छा।

अभीष्ट—(वि) অভীষ্ট, বাঞ্ছিত, আকাঙ্ক্ষিত, মনোনীত, অভিপ্ৰেত।
वांछित, मनोनीत, अभिप्रेत।

अभुक्त—(वि) যাক খোৱা নাই, নোখোৱাকৈ থকা, নভজা।
जो न खाया या न भोगा गया हो। जो भुनाया नहीं गया हो। (अं—अन कैश्ड)

अभूतपूर्व—(वि) অভুতপূৰ্ব, আগেয়ে নোহোৱা, অপূৰ্ব।
जो पहले न हुआ हो, अपूर्व।

अभ्यंतर—(सं पुं) অভ্যন্তৰ, ভিতৰ, অন্তঃপুৰ, অন্তৰ, হৃদয়।
मध्य, बीच। हृदय।

अभ्यर्थना—(सं स्त्री) প্ৰাৰ্থনা, আদৰ, সমাদৰ।
प्रार्थना, स्वागत, अगवानी।

अभ्यर्पित—(वि) সমৰ্পিত।
जो किसी को सौंप या दे दिया गया हो।

अभ्यस्त—[वि] পুনঃ পুনঃ আচৰণ কৰি শিক্ষিত হোৱা, অভ্যস্ত, কৰোঁতে কৰোঁতে স্বভাৱ-গত হোৱা, নিপুণ, পাৰ্গত।
जिसका अभ्यास किया गया हो, जिसने अभ्यास किया हो; निपुण।

अभ्यागत—(वि) অভ্যাগত, সন্মুখত উপস্থিত, আলহী, সাধু সন্ন্যাসী।
सामने आया हुआ, अतिथि, साधु-संन्यासी आदि।

अभ्युत्थान—[सं पुं] অভ্যুত্থান, উঠা কাৰ্য্য, ওচৰলৈ অহা, মানুহক সন্মান দেখুৱাবৰ অৰ্থে আসনৰ পৰা উঠা কাৰ্য্য, উন্নতি, শ্ৰীবৃদ্ধি, আৰম্ভ, প্ৰতাপ।
उठना, खड़े होकर स्वागत करना, समृद्धि, आरंभ।

अभ्युदय—[सं पुं] অভ্যুদয়, উদয়, দেখা দিয়া, মনোৰথ পূৰণ, শ্ৰীবৃদ্ধি, নতুন উন্নতি।
ग्रहों का उदय, उत्पत्ति, मनोरथ की सिद्धि, वृद्धि, नवीन उन्नति।

अभ्र—(सं पुं) মেঘ, আকাশ।
बादल, आकाश।

अमन—(सं पुं) শান্তি।
शान्ति।

अमर पद—(सं पुं) মুক্তি।
मुक्ति।

अमरबेल—(सं स्त्री) আকাশী লতা।
आकाश बेल।

अमराई—(सं स्त्री) আম-বাগান।
आमका बाग।

अमर्ष—[सं पुं] ক্ৰোধ, খং, শত্ৰুৰ অপকাৰ সাধন কৰিব নোৱাৰাত হোৱা খং।
क्रोध, वह द्वेष या दुःख जो शत्रु का अपकार न कर सकने पर हो।

अमल—(वि) অমল মল নথকা, বিশুদ্ধ, নির্দোষ। निर्मल, निर्दोष
(सं पुं) শাসন কাল, নিচা, আচৰণ।
शासन काल, नशा, व्यवहार, कार्य।

अमलदारी— (सं स्त्री) শাসন, ৰাজত্ব কাল।
शासन, राज्यकाल।

अमला—(सं स्त्री) লক্ষ্মী।
लक्ष्मी।

अमली—(वि) কাৰ্য্যকৰী।
अमल या कार्य रूपमें
[सं पुं]মদাহী, মদপী, নিচাখোৰ।
नशेबाज।

अमा—(सं स्त्री) চন্দ্ৰৰ ষোল কলাৰ প্ৰধান কলা, ঘৰ, মৰ্ত্তলোক।
अमावस्या की कला, घर, मर्त्यलोक।

अमात्य—(सं पुं) অমাত্য, মন্ত্ৰী, সচিব।
मंत्री, वजीर।

अमान— [सं पुं] সুখ-শান্তি, আশ্ৰয়।
सुख शान्ति, आश्रय।

अमानत—(सं स्त्री) বন্ধক, বন্ধকী বস্তু।
अपनी वस्तु दूसरे के पास कुछ काल तक रखना, दूसरे के पास रखी हुई वस्तु।

अमानी—(वि) নিৰহঙ্কাৰ।
अहंकार रहित।
(सं स्त्री) চৰকাৰৰ অধীনত থকা মাটি, শস্য কম হোৱা কাৰণে দিয়া খাজনা-ৰেহাই, দিন হাজিৰা কাম।
सरकारी खास जमीन, लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रियायत हो, दैनिक मजदूरी का काम।

अमावट—(सं स्त्री) পকা আমৰ ৰস শুকাই কৰা পিঠা।
आमके सुखाये रसकी परत या तह।

अमिट—[वि] মচিব নোৱাৰা, স্থায়ী, অৱশ্যম্ভাবী।
जो न मिटे, स्थायी, अवश्य-म्भावी।

अमीर—[सं पुं] বিষয়া, চৰ্দ্দাৰ, চহকী, ধনী, উদাৰ।
सरदार, धनी व्यक्ति, उदार।

अमूलक—(বি) নির্মূল, অমূলক, ভিত্তিহীন।
निर्मूल, मिथ्या।

अमृत—(সং পুং) অমৃত, যাক খালে মৰণ নহয়, পানী, ঘিউ, ৰব সোৱাদ বস্তু।
वह वस्तु जिसे पीने से जीव अमर हो जाता है, जल, घी, मीठी और स्वादिष्ट वस्तु।

अमेय—(বি) অসীম, অজ্ঞেয়।
असीम, अज्ञेय।

अमोघ—(বি) অমোঘ, অব্যর্থ নিষ্ফল নোহোৱা।
निष्फल न होने वाला, अव्यर्थ।

अम्ल—[সং পুং] টেঙা।
खटाई, तेजाब।

अम्लान—(বি) অম্লান, বিবর্ণ নোহোৱা, নিকা।
जो उदास न हो, निर्मल।

अयन—[সং পুং] গতি, চলন, সূৰ্য্য আৰু চন্দ্ৰৰ উত্তৰ আৰু দক্ষিণ ফাললৈ যোৱা গতি, আশ্ৰয়, স্থান, ঘৰ, কাল।
गति, चाल, सूर्य और चन्द्रमा की उत्तर और दक्षिण गति। आश्रम, स्थान, घर, काल, गाय-भैंस के थन का ऊपरी भाग।

अयस्कान्त—(সং পুং) চুম্বক পাথৰ
चुम्बक।

अयाल—[সং পুং] ঘোঁৰা, সিংহ আদিৰ কান্ধৰ চুলি, কেশৰ।
घोड़े और सिंह आदि की गरदन के लम्बे बाल, केसर।

अरक—[সং পুং] কোনো বস্তুৰ ৰসভাগ, ঘাম।
किसी वस्तु का रस तत्व। रस, पसीना।

अरकाटी—(সং পুং) বনুৱা, বনুৱা বন্দোবস্ত কৰি পঠিওৱা ঠিকাদাৰ
मजदूर, कुली भेजने वाला ठीकेदार।

अरगजा—(সং পুং) চন্দন।
एक सुगन्धित द्रव्य।

अरज, अर्ज—(সং স্ত্ৰী) নিবেদন, পুতল।
विनय, चौड़ाई।

अरजी, अर्जी—(সং স্ত্ৰী) আবেদন পত্ৰ, দৰখাস্ত, প্ৰাৰ্থী।
आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र। प्रार्थी।

अरणी—(সং স্ত্ৰী) এবিধ সৰু কাঁইটীয়া দৰব জাতীয় গছ। সূৰ্য্য। যজ্ঞৰ কাৰণে জুই উলিয়াবলৈ লগা এবিধ কাঠৰ যন্ত্ৰ, টিঙিৰি কাঠ।

एक प्रकार का वृक्ष, सूर्य, काठ का एक यंत्र-जिससे यज्ञ के लिये अग्नि निकालते थे।

अरथी—(सं स्त्री) চাং, মৰা মানুহ কঢ়িয়াই নিয়া বাঁহৰ চাঙী।
शवाधार।

अरदली—(सं स्त्री) চুৰৰী,
अधिकारियों के साथ या उनके दरवाजे पर रहने वाला चपरासी।

अरना—(सं पुं) বনৰীয়া ম'হ।
जंगली भैंसा।

अरब—[सं पुं] এক শ কোটি, ঘোঁৰা, ইন্দ্ৰ, আৰব দেশ।
सौ करोड़, घोड़ा, इन्द्र, अरब देश।

अरमान—(सं पुं) লালসা, ইচ্ছা, বাসনা।
लालसा, चाह, वासना।

अरविन्द—(सं पुं) নীলা বা ৰঙা পদুম, সাৰেং পক্ষী, বিষ্ণু।
कमल, सारस।

अरसना-परसना—(क्रि. स) আলিঙ্গন কৰা।
आलिंगन करना।

अरसा—[सं पुं] সময়, পলম।
समय, काल, देर।

अराजक—(वि) ৰজা নোহোৱা বা সোপাচিলা শাসন।
जिसमें राजा या शासन न हो।
(सं पुं) ৰজা নাইবা শাসনক প্ৰভুত্ব নিদিয়া, উপদ্ৰৱ অশান্তিৰ কাল।
जो राज्य या शासन का प्रभुत्व न मानता हो। जो उपद्रव आदि के द्वारा शासन व्यवस्था तोड़ता हो। (अं०—अनार्किस्ट)

अराल—(वि) কুটিল, বেঁকা।
टेढ़ा, वक्र।
(सं पुं) মূৰৰ চুলি।
सिर के बाल।

अरि—[सं पुं] অৰি, শত্ৰু, প্ৰতিদ্বন্দ্বী, চকা, কাম-ক্ৰোধ আদি, ছয় সংখ্যা।
शत्रु, चक्र, चक्कर, काम, क्रोध आदि। छह की संख्या।

अरिष्ट—[सं पुं] দুখ-কষ্ট, আপত্তি, দুৰ্ভাগ্য, অমঙ্গল, দুষ্ট গ্ৰহৰ যোগ, এবিধ মদ্য, ভূমিকম্প আদি উৎপাত
दुःख, कष्ट, आपत्ति, दुर्भाग्य, अपशकुन, दुष्ट ग्रहों का मरण कारक योग। एक प्रकार का मद्य। भूकम्प आदि अनिष्ट उत्पात।

अरुणिमा—(सं स्त्री) লালিমা, ৰঙা বৰ্ণ ।
लाली, लाल वर्ण ।

अरे—(अव्य) খং বা নিন্দা কৰি মানুহক মতা মাত, আশ্চৰ্য্য-বোধক শব্দ ।
सम्बोधन का शब्द, आश्चर्य बोधक ।

अर्क—[सं पुं] সূৰ্য্য, ইন্দ্ৰ, তাম, বিষ্ণু, আৰক, আকন, বাৰ সংখ্যা, বস্তুৰ ৰস ।
सूर्य, इन्द्र, तांबा, विष्णु, आक, बारह की संख्या । किसी वस्तु का रस तत्व ।

अर्गला—(सं स्त्री) দুৱাৰ-দাং, হাতী বন্ধা শিকলি, পুৱা গধূলিৰ নানা বৰ্ণৰ মেঘ, মাংস ।
अगरी, ब्योड़ा, किवाड़, अवरोध, कल्लोल, प्रात: संध्या के रंग बिरंगे बादल, मांस ।

अर्घ—(सं पुं) অৰ্ঘ্য, দেৱতালৈ জল অৰ্পণ, হাতধোৱা পানী, মূল্য ।
एक पूजा-द्रव्य । देवता के सामने जल गिराना, हाथ धोने का जल । मूल्य, वस्तु की उपयोगिता सूचक तत्व । (अं०—वैल्यू)

अर्घ-पतन—(सं पुं) মূল্য-হ্ৰাস ।
भाव का गिरना (अं-डेप्रिसियेशन)

अर्चन—(सं पुं) পূজা, সেৱা-সৎকাৰ ।
पूजा, आदर सत्कार ।

अर्जन—(सं पुं) উপাৰ্জন, সংগ্ৰহ ।
कमाना, संग्रह ।

अर्जित—(वि) উপাৰ্জিত, সংগ্ৰহীত ।
कमाया हुआ, संगृहीत ।

अर्थ—(सं पुं)অৰ্থ, মতলব, অভিপ্ৰায়, শব্দগত অভিপ্ৰায়, হেতু, ধন-সম্পত্তি, টকা-পয়চা ।
मतलब, माने । वह अभिप्राय जो किसी शब्द से निकलता है । हेतु, धन सम्पत्ति, दौलत ।

अर्थ-विधि—(सं पुं) চৰকাৰৰ তৰফৰ পৰা জনতাৰ অধিকাৰ ৰক্ষাৰ কাৰণে কৰা আইন ।
वह विधि या कानून जो राज्य की ओर से जनता के अधिकारों की रक्षा के लिये बनाया गया हो । (अं-सिविल ला)

अर्थ-शास्त्र—(सं पुं) ধন বিজ্ঞান, য'ত সংসাৰৰ চলিবৰ উপায়ৰ কথা লিখা আছে ।
वह शास्त्र जिसमें अर्थ या धन

सम्पत्ति की उत्पत्ति, उपयोग, विनिमय और वितरण का विवेचन होता है। राज्य के प्रबन्ध, वृद्धि आदि की विद्या। (अं-इकानामिक्स)

अर्दन—(सं पुं) পীড়া, যোৱা, খোজা।
पीड़न, हिंसा, जाना, मांगना।

अर्द्धांग—(सं पुं) আধা অঙ্গ, পক্ষাঘাত ৰোগ।
आधा अंग, पक्षाघात या लकवा रोग।

अर्द्धांगिनी—(सं स्त्री) অৰ্দ্ধাঙ্গিনী, সহধৰ্মিণী, ভাৰ্য্যা।
स्त्री, पत्नी।

अर्पण—(सं पुं) অৰ্পণ, শোধাই বা গতাই দিয়া, উপঢৌকন।
देना, दान, भेंट, उपहार।

अर्भक—(वि) সৰু, মূৰ্খ, ক্ষীণ।
छोटा, मूर्ख, दुबला-पतला।
(सं पुं) ল'ৰা।
बालक।

अर्यमा—[सं पुं] সদায় গমন কৰে ৰি, সূৰ্য্য।
सूर्य।

अर्वाचीन—[वि] আধুনিক।
आधुनिक।

अलंकार—(सं पुं) অলঙ্কাৰ, আভৰণ, ভাষা ধুনীয়া কৰিবৰ নিয়ম বা উপায়, নায়িকাৰ সৌন্দর্য্য-বৰ্দ্ধনকাৰী ভাব-ভঙ্গী।
आभूषण, साहित्य में वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आती है। नायिका के सौन्दर्य बढ़ाने वाले हाव भाव।

अलक—(सं स्त्री) কপালত ওলমি থকা চুলি, কেঁকোৰা চুলি।
इधर उधर लटकते हुए सिर के बाल। केश, छल्लेदार बाल।

अलक्त (क)—[सं पुं] আলতা।
अलता, जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं।

अलक्ष्य—(सं पुं) নেদেখা, অদৃশ্য, অগোচৰ।
जो दिखाई न पड़े। अगोचर।

अलग—(वि) বেলেগ, পৃথক, ভিন্ন।
जुदा, पृथक, भिन्न।

अलगनी—(सं स्त्री) ডাৰ (কাপোৰ আদি মেলি দিয়া বা থোৱাৰ কাৰণে)
कपड़े टांगने के लिये घर में बंधी रस्सी या बाँस।

अल-गरजी–(वि) স্বাৰ্থী, অসাৱধান।
स्वार्थी, लापरवाह।

अलगाव—(सं पुं) পাৰ্থক্য, বেলেগ হোৱা ভাৱ।
पार्थक्य, अलग होनेका भाव।

अलबत्ता—[अव्य] নিশ্চয়, নিঃসন্দেহ, কিন্তু।
निस्संदेह, बहुत ठीक, लेकिन।

अलबेला–(वि) সাঁজি-কাচি, বিচিত্ৰ, সুন্দৰ, নিজ ইচ্ছামতে কৰা কাম।
बना ठना, छैला, अनोखा, सुन्दर, बेपरवाह।

अलमस्त—[वि] মতলীয়া, উন্মত্ত, বাতুল, সুনিশ্চিত।
मतवाला, निश्चिंत, बेफिक्र।

अलसाना—(क्रि अ) এলাহ বা শিথিলতা অনুভৱ কৰা।
शिथिलता अनुभव करना।

अलहदा—(वि) বেলেগ।
अलग।

अलहदी—(वि) এলেহুৱা।
आलसी।

अलात—[सं पुं] জুই লাগি থকা খৰি।
जलती हुई लकड़ी।

अलान—[सं पुं] হাতী বন্ধা খুঁটা বা শিকলি, বন্ধন।
हाथी बांधने का खूँटा या सिक्कड़। बन्धन।

अलापना—(क्रि अ) কথা কৈ থকা।
बोलना।

अलाव—(सं पुं] হাত ভৰি সেকিবলৈ ধলোৱা জুই।
तापने के लिये जलायी हुई आग।

अलावा—(क्रि वि) উপৰি, বাহিৰে।
अतिरिक्त, सिवा।

अलि—[सं पुं] ভোমোৰা, কুলিচৰাই, বিছা।
भौंरा, कोयल, बिच्छू।

अलीक— (वि) মিছা, অলীক, অসাৰ।
मिथ्या, सारहीन।

अलोना—(वि) লোণ হীন।
जिसमें नमक न पड़ा हो।

अल्हड़—(वि) অসাৱধান, স্বেচ্ছাচাৰী
बेपरवाह, उद्धत।

अवकाश—(सं पुं) খালী ঠাই, আকাশ, অৱসৰ সময়। আজৰি, বিশ্ৰাম।
खाली जगह, आकाश, छुट्टी।

अवकाश ग्रहण–(सं पुं) অৱসৰ গ্ৰহণ।

नौकरी या कार्य छोड़कर अलग होना ।

अवनत—(वि) অৱগত, বিদিত, বুজ পোৱা ।
विदित, नीचे गिरा हुआ ।

अवगाढ़— (वि) বৰ দ, কঠিন, টান. बहुत गहरा. कठिन ।
(सं पुं) পানীত নামি গা ধোৱা কাৰ্য্য । जल में उतर कर स्नान ।

अवगाहन—(सं पुं) পানীত গা জুবুৰিয়াই ধোৱা কাৰ্য্য ।
स्नान ।

अवगुंठन—(सं पुं) ওৰণি ঢাকনি ।
घूँघट, ढकना ।

अवगुण—[सं पुं] খুঁত, বেয়াগুণ, দোষ, ক্রটি ।
दुर्गुण, दोष, बुराई ।

अवघट—[वि] দুৰ্গম, কঠিন
दुर्गम, मुश्किल ।

अवचेतन—[वि] আংশিক চেতনাযুক্ত, অৱচেতন ।
जिसमें पूरी चेतना न हो ।

अवज्ञा—[सं स्त्री] অৱজ্ঞা, অসম্মান, উপেক্ষা ।
किसी के प्रति उचित मान या आदर का अभाव ।

अवढर—[वि] বিনা কাৰণে প্ৰসন্ন বা অনুৰক্ত হওঁতা ।
अकारण प्रसन्न या अनुरक्त होने वाला ।

अवतंस—(सं पुं) অলঙ্কাৰ, মুকুট, শ্ৰেষ্ঠ ব্যক্তি ।
भूषण, मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति ।

अवतरण—[सं पुं] নামি অহা কাৰ্য্য, পাৰ হোৱা কাৰ্য্য, উদ্ধৃতি ।
उतरना, पार होना, उद्धरण ।

अवतरित— (वि) অৱতাৰী, উদ্ধৃত, উল্লিখিত ।
जिसने अवतार धारण किया हो ।
उद्धृत ।

अवतार— (सं पुं) প্ৰাদুৰ্ভাৱ, অৱৰোহণ ।
उतरना, शरीर धारण करना ।

अवदात—(वि) উজ্জ্বল, নিৰ্ম্মল ।
उज्वल, निर्मल ।

अवदान—(सं पुं) ভাল কাম, খণ্ডন, শক্তি, ক্ষমতা ।
अच्छा काम । खंडन, शक्ति, देन।

अवधान—(सं पुं) মনোযোগেৰে শুনা ।
मनोयोग, देखरेख ।

অবধারণ—(सं पुं) নির্দ্ধারণ।
अच्छी तरह विचार कर निर्णय करना।

অবধি—(सं स्त्री) সীমা, মিয়াদ, ম্যাদ।
सीमा, मियाद, काल।

অবধূত—(सं पुं) সংসার-মায়ামুক্ত লোক, সন্ন্যাসী।
संन्यासी, योगी।

অবনত—(वि) চাপরা, পতিত, নম্র।
झुका हुआ, पतित, कम, नम्र।

অবনতি—(सं स्त्री) হ্রাস, অধোন্নতি, নম্রতা।
घटती, हीन दशा, नम्रता।

অবয়ব—(सं पुं) অংশ, শরীরের অঙ্গ।
अंश, शरीर का अंग।

অবর—(वि)অলপ তল খাপর,নিকৃষ্ট।
कुछ नीचा या छोटा, अधम, अन्य, और।

অবরুদ্ধ—(वि) আবদ্ধ, বেড়ি বধা।
रुका हुआ, बन्द किया हुआ, गुप्त।

অবরোধ—(सं पुं) বাধা, পরিবেষ্টন।
घेरा, रुकावट, निरोध।

অবলম্বন—(सं पुं) আশ্রয়, আধার।
आश्रय, धारण।

অবলোকন—(सं पुं) নিরীক্ষণ, অবলোকন।
अच्छी तरह जाँच पड़ताल के लिये देखना।

অবশেষ—[वि] বাকী।
बचा हुआ, समाप्त।

অবশ্যম্ভাবী—(वि) অনিবার্য্য।
अवश्य होनेवाला, अनिवार्य।

অবশ্য—(क्रि वि) নিশ্চয়।
जरूर।

অবসন্ন—(वि) বিষাদ গ্রস্ত।
दुःखी, सुस्त।

অবসর—[सं पुं] সময়, সুযোগ।
समय, सुयोग।

অবসাদ—[सं पुं] বিষাদ, ভাগর।
विषाद, थकावट।

অবসান—(सं पुं) বিরাম, সমাপ্তি, মৃত্যু।
विराम, समाप्ति, मृत्यु।

অবস্থান—(सं. पुं) স্থিতি।
स्थान, ठहराव, स्थिति।

অবহেলনা—[सं स्त्री] অবহেলা।
अवज्ञा, बे-परवाही।

अवहेलित—[वि] অনাদৃত।
उपेक्षित।

अवांतर—[वि] মধ্যৱৰ্ত্তী।
किसी के बीच में या अन्तर्गत होनेवाला।

अविकारी—(वि) অপৰিবৰ্ত্তনশীল
जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो।

अविचल—[वि] স্থিৰ।
अचल।

अविनय—[सं पुं] উদ্ধত ভাৱ।
उद्दंडता।

अविनश्वर—(वि) অবিনাশী।
चिरस्थायी।

अविनाशी—(वि) অক্ষয়।
जिसका नाश न हो।

अविलम्ब—(क्रि वि) শীঘ্ৰে।
तुरंत।

अवेक्षा-[सं स्त्री] অনুসন্ধান।
जाँच पड़ताल।

अवैध—(वि) আইন বিৰুদ্ধ।
कानून या नियम विरुद्ध।

अव्यक्त—(वि) অপ্ৰকাশিত, অপ্ৰত্যক্ষ, বিষ্ণু।
अनिर्वचनीय, अप्रत्यक्ष, विष्णु।

अशक्त—[वि] দুৰ্বল।
निर्बल, असमर्थ।

अशरण—(वि) অনাথ।
अनाथ।

अशौच—[सं पुं] নিজৰ বা বংশ পৰিয়ালত সন্তান উপজিলে বা কোনোবা মৰিলে চুৱা লগা।
अपवित्रता, अशुद्धता।

अश्म— [सं पुं] পাহাৰ, মেঘ।
पहाड, पत्थर, बादल।

अश्रु—(सं पुं) চকু-লো।
आँसू।

अश्व—[सं पुं] ঘোঁৰা।
घोडा।

अश्वत्थ—[सं पुं] আঁহত গছ।
पीपल।

अश्वमेध—(सं पुं) ঘোঁৰা বলি দিয়া যজ্ঞ।
एक प्रकार का यज्ञ, जिसमें घोड़े की बलि दी जाती है।

अश्वारोही—(वि) ঘোঁৰা আৰোহী।
घोड़े का सवार।

अष्ट— (वि) আঠ।
आठ।

अष्टांग—(सं पुं) শৰীৰৰ আঠ অঙ্গ (দুই হাত, দুই ভৰি, দুই আঁঠু, বুকু আৰু কপাল) যোগৰ আঠ বিধ নিয়ম।

योग, आयुर्वेद आदि के आठ भाग या अंग। शरीरके आठ अंग।

असंग—(वि) अकलশবীয়া, কু-সঙ্গ। अकेला, अलग, विरक्त।

असंगत—(वि) যুক্তিবিরুদ্ধ। बे-ठीक, अनुचित, बे-मेल।

असंदिग्ध—[वि] সন্দেহ-হীন। जिसमें कोई सन्देह न हो।

असंबद्ध—(वि) বেলেগ। पृथक, बे-मेल।

असबाब—[सं पुं] সামগ্রী। सामग्री, सामान।

असमंजस—(सं स्त्री) দোধোৰ-মোৰ। द्विविधा, अड़चन।

असर—(सं पुं) প্ৰভাৱ। प्रभाव।

असल—[वि] আচল। सच्चा, शुद्ध।

असलियत—[सं स्त्री] সত্যতা। वास्तविकता, तथ्य।

अस्तु—(अव्य) এতেকে। चाहे जो हो। खैर।

अस्तेय—(सं पुं) চোৰ-কৰ্ম্ম-ত্যাগ। चोरी न करना।

अस्त्र—(सं पुं) কটা-ছিঙা, কাম-বন কৰা সঁজুলি বা যন্ত্ৰ,অস্ত্ৰ। কাঁড়, বন্দুক আদি। जो हथियार शत्रु पर फेंक कर चलाया जाता हो—जैसे बाण, शक्ति, बन्दूक आदि।

अस्त्रचिकित्सा—(सं स्त्री). ব্যাধি কাটি ৰোগ গুচোৱা চিকিৎসা। অস্ত্ৰোপচাৰ। चीड़ फाड़ की चिकित्सा।

अस्थि—(सं स्त्री) হাড়। हड्डी।

अस्पताल—(सं पुं) ডাক্তৰখানা। चिकित्सालय, दवाखाना।

अस्पृश्य—(त्रि) অশুচি। जिसे छूना नहीं चाहिये, अछूत।

अस्वस्थ—(वि) অসুস্থ। रोगी, अनमना।

अस्वीकार—(सं पुं) আনৈ-মতা; মিছা বুলি কোৱা, অস্বীকাৰ। इनकार।

अहं—(सर्व) মই। मैं। (सं पुं) মই বৰ ভাব। अभिमान।

अहंकार—(सं पुं) মই বৰ ভাব। गर्व, अभिमान।

अह्—(सं पुं) দিন। दिन, सूर्य।

अहदी—(वि) এলেহুৱা ।
आलसी ।

अहरह—(क्रि वि) সদায় ।
प्रतिदिन, निरन्तर ।

अहाता—[सं पुं] চাৰিসীমা ।
घेरा, चहारदीवारी ।

अहि—(सं पुं) সাঁপ, সূৰ্য্য ।
साँप, सूर्य ।

अहित—(सं पुं) অপকাৰ ।
अपकार, शत्रु ।

अहिवात—(सं पुं) নাৰীৰ সৌভাগ্য, সধবা । स्त्री का सौभाग्य, सोहाग ।

अहेर— [सं पुं] চিকাৰ ।
शिकार, शिकार का जन्तु ।

अहोरात्र—[सं पुं] দিন-ৰাতি ।
दिन रात ।

अहोरिन—(सं स्त्री) এবিধ চৰাই ।
एक प्रकार की चिड़िया ।

आ

आ—স্বৰ বৰ্ণৰ দ্বিতীয় আখৰ ।
वर्ण माला का दूसरा अक्षर ।

आँक—(सं पुं) অঙ্ক, সংখ্যাৰ চিন অংশ, ৰেখা ।
अंक, संख्या का चिह्न, अंश, रेखा ।

आँकड़ा—(सं पुं) সংখ্যাৰ চিন ।
संख्या का चिह्न ।

आँकड़े—(सं पुं) সংখ্যা আৰু আয়-ব্যয় আদি সম্বন্ধীয় তথ্যাৱলী । পৰিসংখ্যা ।
किसी विषय या विभाग की स्थिति को सूचित करने वाली संख्या या हिसाब । परिसंख्या [अं—स्टेटिस्टिक्स]

आँकना—(क्रि स) আঁকা, যোগ-কৰা, অনুমান কৰা ।
अंकन करना, जोड़ लगाना, अनुमान करना ।

आँख—(सं स्त्री) চকু,
नेत्र, नयन, दृष्टि ।

—का काँटा = শত্ৰু, दुश्मन ।

—की पुतली = অতি মৰমৰ, परम प्रिय ।

—का तारा=অত্যন্ত প্রিয়, बहुत प्यारा।

—दिखाना=ক্রোধ মূৰ্ত্তিধৰি চোৱা, क्रोध से देखना।

—फेरना=কৃপা দৃষ্টি হেৰুওৱা, कृपा या स्नेह दृष्टि न रखना।

—लगना=টোপনি আহিব ধৰা, প্ৰেম ভাব ওপজা, नींद आना, प्रेम होना।

—लड़ना=দেখাদেখি হোৱা, देखा-देखी होना।

आँख मिचौनी—(सं स्त्री) লুকা-ভাকু।
लड़कों का एक खेल।

आँगन—(सं पुं) চোতাল। घर के सामने की खुली जगह, सहन।

आँच—(वि) তাপ, জুইৰ শিখা।
गरमी। आग की लौ।

आँचल, आँचर—(सं पुं) আঁচল, আগভাগ।
पल्ला, छोर।

आँजन—(सं पुं) কাজল।
आँख में लगाने का सुरमा।

आँजना—(क्रि स) কাজল সনা।
आँख में अंजन लगाना।

आँटी—[सं स्त्री] কোচা, ঘাঁহৰ সৰু আটি, সূতাৰ লেছা, আঙুঠি।
घास का छोटा पुला। सूत का लच्छा, धोती की टेंट।

आँत—(सं स्त्री) নাড়ী।
अंत्र।

आँधी—(सं स्त्री) ধুমুহা।
अंधड़, तूफान।

आँव—(सं पुं) সাঁও।
पेचिश का सफेद लसदार मल।

आँवला—(सं पु) আমলখী।
आमलक फल।

आँवाँ—(सं पुं) মাটিৰ পাত্ৰ পোৱা কুমাৰৰ গাঁত।
वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

आँसू—(सं पुं) চকুলো।
आँखों से झरनेवाला पानी।

—पोंछना=সান্ত্বনা দিয়া।
सांत्वना देना।

आइन्दा—(क्रि वि) ভবিষ্যতে।
भविष्य में।

आकर—[सं पुं] খনি।
खान, खजाना, प्रकार।

आकलन—(सं पुं) গ্ৰহণ, সঞ্চয়, গণনা।
ग्रहण, संग्रह। गिनती करना।

आकुल—[वि] আকুল, কাতৰ
व्यग्र, विह्वल।

আক্ষেপ—(সং পুং) নিক্ষেপ, অসন্তোষ ।
फेंकना, दोष लगाना, कटु उक्ति ।

আখির—(বি) শেষত, পরিণাম ।
अन्तिम, परिणाम, अन्त में ।

আখিরী-[বি] একেবারে শেষৰ ।
बिलकुल अन्त का ।

আখেট—(সং পুং) চিকাৰ ।
शिकार ।

আখ্যান—(সং পুং) বৰ্ণনা, কাহিনী ।
वर्णन, कथा ।

আখ্যায়িকা—(সং স্ত্ৰী) কাহিনী ।
कथा ।

আগ—(সং স্ত্ৰী) জুই, ঈৰ্ষা ।
अग्नि, ईर्ष्या ।
[বি] প্ৰজ্বলিত । जलता हुआ ।

আগম—(সং পুং) আগমন, ভবিষ্যতকাল, বেদ ।
आगमन, भविष्यत् काल, वेदशास्त्र ।

আগম জানী—(বি) সৰ্বজ্ঞান ।
भविष्य जानने वाला ।

আগার—(সং পুং) সমূহ, ভঁৰাল, ঘৰ,
समूह, खजाना, घर ।
[বি] শ্ৰেষ্ঠ, চতুৰ ।
श्रेष्ठ, चतुर ।

আগা—(সং পুং) আগ, মুখ ।
अग्रभाग, मुँह ।

আগা পীছা—(সং পুং) ভাব, চিন্তা, পৰিণাম ।
सोचविचार, परिणाम ।

আগামী—(বি) ভাবী ।
भावी, आनेवाला ।

আগার—(সং পুং) ঘৰ ।
घर, खजाना ।

আগে—(ক্রি বি) সন্মুখত, ভৱিষ্যতে, পিছত ।
सामने, भविष्यमें, बादमें ।

আগ্ৰহ—(সং পুং) হেপাহ ।
अनुरोध, जिद, जोर ।

আগ্ৰহী—(বি) উদ্যোগী ।
आग्रह करनेवाला, जिद्दी ।

আচমন-(সং পুং) শুচি হবৰ উদ্দেশ্যে সন্ধ্যা পূজা আদিৰ আগতে হাত মুখ ধোৱা কাৰ্য্য ।
पूजाके समय मंत्रपूत जल पीना

আচৰণ- (সং পুং) ব্যৱহাৰ ।
कोई कार्य करना, व्यवहार ।

আচাৰ-(সং পুং) নিয়ম-নীতি
चाल चलन, चरित्र ।

আজ—[ক্রি বি] আজি ।
वर्तमान दिनमें ।

आजकल--[क्रि वि] আজি কালি।
इस समय वर्तमान दिनों में

आजमाइश—(सं स्त्री) পৰীক্ষা।
परीक्षा।

आजमाना—(क्रि स) পৰীক্ষা লোৱা।
परीक्षा करना।

आजाद्—(वि) স্বাধীন।
स्वतंत्र।

आजादी—[सं स्त्री] স্বাধীনতা
स्वतंत्रता।

आज्ञा-पत्र—[सं पुं] আদেশ পত্ৰ
वह पत्र जिसमें कोई आज्ञा लिखी हो।

आड़—[सं स्त्री) আঁৰ, চেনু, চল
ओट, आवरण, रक्षा, सहारा, स्त्रियों के सिरपर का गहना।

आड़ना—(क्रि स) বাধা দিয়া,
रोकना, मना करना।

आढ़त—(सं स्त्री) দালালী
माल की बिक्री कराने के एवज में मिलनेवाला कमीशन।

आतंक—(सं पुं) ভয়।
रोब, भय।

आतप—(सं पुं) ৰ'দ।
धूप, गर्मी।

आत्मज—[सं पुं] পুত্ৰ, কামদেৱ
पुत्र, कामदेव।

आत्मा—(सं स्त्री) সৰ্ব্বব্যাপী, চৈতন্য, জীৱাত্মা, পৰমাত্মা
जीवात्मा, मन, हृदय।

आत्मिक—(वि) আত্মা সম্বন্ধীয়
आत्मा संबंधी।

आदत—(सं स्त्री) অভ্যাস।
स्वभाव।

आदर—(सं पुं) শলাগ, সম্ভাষণ
सम्मान, प्रतिष्ठा।

आदान-प्रदान—(सं पुं) লেন-দেন
लेन-देन।

आदाय—(वि) সাধি উলিওৱা।
प्राप्त।

आदि—(वि) প্ৰথম, গুৰি।
प्रथम, बिल्कुल।
[अव्य] इत्यादि वगैरह।

आदिवासी—(सं पुं) আদিম অধিবাসী।
आदिम निवासी।

आदी—(वि) অভ্যস্ত।
अभ्यस्त।

आधि—(सं स्त्री) মনৰ কষ্ট, বন্ধন।
मानसिक रोग या चिन्ता बन्धन।

आन—(सं स्त्री) मর্য্যাদা, শপত।
मर्यादा, शपथ।

आनन—(सं पुं) মুখ।
मुख।

आन-बान—[सं स्त्री] চমক-জমক।
सजधज, अंगभंगी।

आना—[सं पुं] টকাৰ পুৰণি হিচাপ মতে এটকাৰ ষোল ভাগৰ এভাগ।
रुपये का सोलहवाँ हिस्सा।
[क्रि अ] অহা।
आगमन करना।

आनाकानी—(सं स्त्री) আওকাণ।
न ध्यान देने का कार्य, टाल मटोल।

आप—[सर्व] আপুনি, নিজ।
स्वयं। तुम और वे के आदरार्थक प्रयोग।

आप-काज—(सं पुं) স্বাৰ্থ।
स्वार्थ।

आपत्काल—(सं पुं) বিপত্তি।
विपत्ति, दुःसमय।

आपत्ति—[सं स्त्री] আসোঁৱাহ।
दुःख, इतराज।

आपदा—[सं स्त्री] দুঃখ, বিপত্তি।
दुःख, विपत्ति।

आपद्धर्म—(सं पुं) দুৰ্দিনৰ কাৰণে সাৱধানতা।
आपत्काल के लिये किया कर्म।

आपस—(सं पुं) পৰস্পৰ।
भाईचारा, परस्पर।

आपा—(सं पुं) অহঙ্কাৰ।
अपनी सत्ता, अहंकार।

आपात—(सं पुं) পতন, আৰম্ভ, আকস্মিক ঘটনা।
पतन, आरंभ, अकस्मात उपस्थित घटना या कार्य। [अं.- इमर्जेन्सी]

आपा-धापी— [सं स्त्री] নিজৰ স্বাৰ্থৰ প্ৰতি টনা-আঁজোৰা।
खींचा-तानी, अपने अपने स्वार्थ की चिन्ता।

आपेक्षिक— [वि] নিৰ্ভৰশীল, অপেক্ষাকৃত।
सापेक्ष, अपेक्षा रखने वाला।

आप्त—[वि] দক্ষ,
प्राप्त कुशल [सं पुं] ঋষি।
ऋषि, शब्द प्रमाण।

आफत— [सं स्त्री] বিপদ
विपत्ति, कष्ट।

आब— [सं स्त्री] চিকিমিকি, শোভা।
चमक, शोभा।

आबकारी—[सं स्त्री] আবকারী বিভাগ, মদের ভাটি।
मादक वस्तुओं से सम्बन्ध रखने वाला सरकारी विभाग। शराब खाना।

आब-दाना—[सं पुं] দানা-পানী, জীবিকা।
दाना पानी, जीविका।

आब-दार—[वि] জকমকীয়া।
चमकीला।

आबनूस—[सं पुं] এবিধ গছ। আবনুস কাঠ
एक प्रकार का पेड जिसकी लकडी बिलकुल काली होती है।

आबरू—[सं स्त्री] আবুৰ।
इज्जत, प्रतिष्ठा।

आब हवा—(सं स्त्री) जल-वायु
जलवायु।

आबाद—(वि) জন বসতি থকা, সাব্ব্যা
बसा हुआ, उपजाऊ।

आबादी-[सं स्त्री] গাওঁ, জনসংখ্যা, কৃপিত মাটি।
बस्ती, जनसंख्या, खेती लायक जमीन।

आभरण— [सं पुं] অলংকাৰ, কানি-কাপোৰ। ভৰণ-পোষণ।
गहना, पालन—पोषण।

आभा—(सं स्त्री) জেউতি
चमक, झलक, हल्की या [illegible] छाया [अं—शेड]

आभार—[सं पुं] কৃতজ্ঞতা
बोझ, एहसान, कृतज्ञता।

आभारी—(वि) কৃতজ্ঞ।
उपकृत, कृतज्ञ।

आभास—[सं पुं] ইঙ্গিত, সংকেত,
प्रतिबिम्ब, सकेत, मिथ्या ज्ञान।

आभूषण—(सं पुं) অলংকাৰ।
गहना।

आभ्यन्तर— (वि) ভিতৰুৱা।
अन्दर का।

आमद—(सं स्त्री) আয়, অহা।
आना, आय।

आमदनी—(सं स्त्री) আয়, বেহা-বেপাৰত আনদেশৰ পৰা বস্তু অনা কাৰ্য্য।
आय, आयात।

आमना-सामना— (सं पु) মুখা-মুখি, সাক্ষাৎ।
मुकाबला, भेंट।

आमने-सामने—[क्रि वि] মুখা-মুখিকৈ।
एक दूसरे के मुकाबले में।

आमुख—(सं पुं) পাতনি।
पुस्तक के आरंभ में दी जाने वाली भूमिका या प्रस्तावना।

आमोद—(सं पुं) বং-ধেমালি।
आनन्द, मन बहलाव।

आयत—(वि) বহল, আয়ত ক্ষেত্ৰ (জ্যামিতি)।
विस्तृत, चारो कोण समान वाला क्षेत्र।
[सं पुं] কোৰাণ বা ইঞ্জিলৰ কোন বাক্য বা শ্লোক।
कुरान या इंजिल का कोई वाक्य।

आयात—[सं पुं] বেহা-বেপাৰৰ কাৰণে বিদেশৰ পৰা মগাই অনা বস্তু, আমদানি।
व्यापार के लिये विदेश से मँगाया गया माल [अं—इम्पोर्ट]

आयाम—[सं पुं] দীৰ্ঘতা, নিয়মানুবৰ্ত্তিতা।
लम्बाई, नियमन।

आयास—[सं पुं] চেষ্টা, শ্ৰম।
परिश्रम।

आयुक्त—(वि) আয়ুক্ত, কমিচনাৰ, কোনো আয়োগৰ অধ্যক্ষ।
राज्य की आज्ञा से विशेष कार्य के लिये नियुक्त व्यक्ति।
[अं—कमिशनर]

आयुध—[सं पु] অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ।
हथियार'।

आयोग—[सं पुं] কোনো বিবাদাদিৰ মীমাংসাৰ কাৰণে চৰকাৰৰ দ্বাৰা নিযুক্ত এজন বা ততোধিক ব্যক্তি বৰ্গ। [কমিচন]
राज्य की आज्ञा से किसी विशेष कार्य के लिये नियुक्त व्यक्ति या व्यक्तियो का समूह। (कमीशन)

आर-[सं स्त्री] জেদ, বিছাৰ দংশন।
जिद, बिच्छू आदि का डंक।
[सं पुं] পাৰ।
किनारा

आरक्षिक—[वि] শান্তি নিয়ন্ত্ৰণ সম্বন্ধী।
पुलिस विभाग से संबंधित।

आरक्षी—[सं पुं] পুলিচ বিভাগ।
पुलिस विभाग।

आर-पार—(सं पुं) দুয়ো পাৰ।
दोनों छोर।
[क्रि. वि.] ইপাৰৰ পৰা সিপাৰলৈ।
एक किनारे से दूसरे किनारे तक।

आरा, आरी—[सं पुं] করত।
लोहे की वह दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी चीरी जाती है।

आराम—(सं पुं) বিশ্রাম, শান্তি, বাগিচা।
विश्राम, चैन, बाग।
[वि] আৰোগ্য।
आरोग्य।

आरूढ़—(वि) আৰোহণ কৰা, দৃঢ়।
चढ़ा हुआ, दृढ़।

आरोप—(वि) স্থাপিত, অভিযোগ,
स्थापित करना, अभियोग।

आरोह—(सं पुं) ওপৰলৈ উঠা, সংগীতৰ উচ্চ স্বৰ, আক্ৰমণ।
ऊपर की ओर चढ़ना, आक्रमण, संगीत का ऊंचा स्वर।

आर्ष—[वि] ঋষি বিষয়ক।
ऋषि संबंधी,

आलंब, आलंबन—[सं पुं] আশ্রয়, অবলম্ব।
आश्रय, सहारा।

आलजाल—(वि) ফাকি দি গা এৰাবৰ চেষ্টা।
व्यर्थ का।

आलय—(सं पुं) ঘৰ।
घर।

आलाप—(सं पुं) কথোপকথন।
कथोपकथन, तान।

आली—(सं स्त्री) সখী।
सखी।

आलेख -(सं पुं) লেখা, চিত্ৰ-পট।
लिखावट, प्राकृतिक व्यापार तथा लौकिक व्यवहारों में समय समय होनेवाले परिवर्तनों का रेखांकित नक्सा।—(अं०—ग्राफ)

आलेखक--[वि] চৰ্চা কৰোঁতা।
समालोचना करनेवाला।

आव-भाव—(सं स्त्री) আদৰ সম্মান।
आदर सत्कार।

आवर्तक—(सं पुं) ঘুৰি থকা কাৰ্য্য।
निश्चित समय पर होनेवाले परिवर्तन, चक्कर।

आवागमन—(सं पुं) অহা-যোৱা।
आना जाना।

आवाज—[सं स्त्री] শব্দ, ধ্বনি।
ध्वनि, बोली।

आवारा—(वि) অঁকৰা।
निकम्मा, बदमाश।

आवाहन—[सं पुं] নিমন্ত্ৰণ।
बुलाना, निमंत्रित करना।

আবেগ—(সং পুং) ব্যাকুলতা ।
चित्त की प्रबल वृत्ति, मनोविकार ।

আবেশ—(সং পুং) ভাবেৰে ভৰ-পূৰ হৈ থকা উত্তেজনা ।
जोश, मनकी प्रेरणा, संचार ।

আশয়—(সং পুং) অভিপ্ৰায়; মত ।
अभिप्राय, उद्देश्य ।

আশিক—(বি) প্ৰেমিক ।
प्रेम करनेवाला, आसक्त ।

আসিষ, আসীষ—(সং স্ত্ৰী) আশীৰ্ব্বাদ ।
आशीर्वाद ।

আশু—(ক্রি বি) শীঘ্ৰে ।
शीघ्र ।

আশুতোষ—(বি) সোনকালে সন্তুষ্ট হওঁতা, ।
जल्दी प्रसन्न होनेवाला,
(সং পুং) মহাদেৱ ।
शिव ।

আশ্বাসন—(সং পুং) সান্ত্বনা, আশ্বাস ।
सांत्वना, दिलासा ।

আসক্ত—(বি) অনুৰক্ত ।
अनुरक्त, मोहित ।

আসপাস—(ক্রি বি) আশেপাশে, চাৰিওকালে ।
चारों ओर ।

আসমান—(সং পুং) আকাশ ।
आकाश ।

আসৰা—(সং পুং) আশ্ৰয়, ভৰসা ।
सहारा, भरोसा ।

আসৱ—(সং পুং) ফলৰ পৰা প্ৰস্তুত মদ ।
फल के रस से बननेवाली मदिरा या औषधि ।

আসান—(বি) সহজ, সৰল ।
सहज, सरल ।

আসাৰ—(সং পুং) লক্ষণ ।
लक्षण, चिह्न ।

আসীন—(বি)উপবিষ্ট, বহি থকা ।
बैठा हुआ ।

আস্তীন—(সং স্ত্ৰী) চোলাৰ হাত ।
कमीज की बाँह ।

আহট—(সং. স্ত্ৰী.) ভৰিৰ শব্দ ।
आने का शब्द, पदध्वनि ।

আহিস্তা—(ক্রি বি) লাহে লাহে ।
धीरे धीरे ।

इ

इ—স্বর বর্ণের তৃতীয় অক্ষর।
वर्णमाला का तीसरा स्वर।

इंगला—[सं स्त्री] ইড়া নাড়ী (হঠযোগ)
इड़ा नामकी नाड़ी।

इंतजाम—[सं पुं] বন্দোবস্ত।
प्रबंध, व्यवस्था।

इंदिरा—[सं स्त्री] লক্ষ্মী।
लक्ष्मी।

इन्दीवर—[सं पुं] নীল পদ্ম
नील कमल।

इंदु—[सं पुं] চন্দ্র।
चन्द्रमा।

इंद्रजाल—(सं पुं) ভেলেকী।
जादू विद्या।

इंद्र धनुष—(सं पुं) রাম-ধেনু।
आकाश में दिखाई देनेवाला सात रंग का अर्धवृत्त।

इकट्ठा—(वि) একত্রিত।
एकत्र, जमा।

इकबाल—(सं पुं) প্রতাপ, গৌরব।
प्रताप, वीरता।

इकरार—(सं पुं) প্রতিজ্ঞা।
प्रतिज्ञा, काम करने का वचन।

इकतालीस—(वि) একচল্লিশ।

इकतीस—(वि) একত্রিশ।

इकलौता—(वि) একমাত্র।
एक मात्र।

इकसठ—(वि) একষট্টি।

इकहत्तर—(वि) একাত্তর।

इक्कानबे—(वि) একানবৈ।

[illegible]—(वि) একল-দুকল।
अकेला, दुकेला।

इक्कीस—(वि) একুশ।

इक्यावन—(वि) একান্ন।

इक्यासी—(वि) একাশী।

इख्तियार—(सं पुं) অধিকার, প্রভুত্ব।
अधिकार, प्रभुत्व।

[illegible]—(सं पुं) জাহির, জারি।
[illegible] या जाहिर करना, काममें लाना।

इजलास—(सं पुं) ন্যায়ালয়, অধিবেশন, আদালত।
[illegible], कचहरी।

[illegible]—(सं पुं) এজাহার, [illegible]
बयान, गवाही।

इजाजत—(सं स्त्री) আদেশ, অনুমতি।
आज्ञा, स्वीकृति।

इजाफा—(सं पुं) বৃদ্ধি, বঢ়োৱা।
वृद्धि।

इजारा—(सं पुं) ঠিকা, অধিকাৰ।
ठेका, अधिकार।

इज्जत—(सं स्त्री) মান, মৰ্য্যাদা।
मान-मर्यादा।

इठलाना, इतराना—[क्रि अ] গপ মৰা।
घमंड करना।

इतना—(वि) ইমান।
इस मात्रा का।

इतमीनान—[सं पुं] সন্তোষ।
सन्तोष।

इत्तफाक—(सं पुं) মিলন, ভাগ্য-ক্ৰমে।
मेल, संयोग।

इत्तला, इत्तिला—(सं स्त्री)—জাননী।
सूचना।

इत्र—(सं पुं) আতৰ।
फूलों का सुगन्धित सार।

इधर—(क्रि वि) এইফালে।
इस ओर।

इनाम—(सं पुं) পুৰস্কাৰ।
पुरस्कार।

इनेगिने—(वि) মুষ্টিমেয়, লেখত লবলগীয়া।
कतिपय, चुने चुने।

इन्कार—(सं पुं) অস্বীকাৰ।
अस्वीकृति।

इन्सान—(सं पुं) মানুহ।
मनुष्य।

इमली—[सं स्त्री] তেতেলী।
एक तरह की खटाईदार फल।

इमाम—(सं पुं) নেতা, পথ-প্ৰদৰ্শক।
अगुवा, पथ प्रदर्शक।

इमारत—(सं स्त्री) অট্টালিকা।
पक्का बड़ा मकान।

इम्तहान—(सं पुं) পৰীক্ষা।
परीक्षा।

इयत्ता—[सं स्त्री] সীমা।
सीमा।

इरादा—(सं पुं) সংবাদ, উদ্দেশ্য।
विचार, संकल्प।

इर्द गिर्द—(क्रि वि) আশে-পাশে, চাৰিওপিনে।
चारों ओर, आसपास।

इलजाम—(सं पुं) অভিযোগ।
अभियोग।

इलहाम—[सं पुं] দৈৱ-বাণী।
आकाश वाणी, देववाणी।

इलाका—(सं पुं) এলাকা।
अंचल।

इलाज—(सं पुं) চিকিৎসা, ঔষধ।
चिकित्सा, दवा।

इलायची—(सं स्त्री) এলাচি।
एक प्रकार सुगंधित बीजवाला मसाला।

इलाही—(सं पुं) ঈশ্বৰ;
ईश्वर।

इल्म—(सं स्त्री) বিদ্যা।
विद्या, ज्ञान।

इल्लत—[सं स्त्री] বেমাৰ, কেঁচাল।
जञ्जाल।
रोग, झंझट।

इशारा—[सं पुं] সংকেত।
संकेत।

इश्क—[सं पुं] প্ৰেম। प्रेम।

इश्तहार—[सं पुं] ঘোষণা পত্ৰ।
विज्ञापन।

इस्तीफा—[सं स्त्री] ত্যাগপত্ৰ।
त्यागपत्र।

इस्तेमाल—[सं पुं] প্ৰয়োগ।
उपयोग।

ई

ई—স্বৰ বৰ্ণৰ চতুৰ্থ অক্ষৰ।
वर्णमाला का चौथा अक्षर।

ईंगुर—(सं पुं) সেন্দুৰ, সিন্দুৰ।
सिन्दूर।

ईंट—(सं. स्त्री) ইটা।
मिट्टी का पकाया हुआ चौकोर टुकड़ा, धातु का चौकोर टुकड़ा।

ईंधन—[सं पुं] খৰি
जलावन।

ईख—(सं स्त्री) কুঁহিয়াৰ।
गन्ना, ऊख।

ईजाद—(सं स्त्री) আবিষ্কাৰ।
आविष्कार।

ईति—(सं स्त्री) উপদ্ৰৱ।
उपद्रव, बाधा।

ईद—(सं स्त्री) এটা মুচলমান পৰ্ব্ব
मुसलमानों का एक त्योहार।

ईमान—(सं पुं) ধৰ্ম্মবিশ্বাস, সদ্‌-বৃত্তি, সত্য।
धर्मपर विश्वास, सद्वृत्ति, सत्य।

[illegible]—(বি) বিশ্বাসী, বিবেক-
শীল।
अच्छी नीयत रखने वाला।

[illegible]মাৰত—(সং স্ত্ৰী) ভৱন।
भवन।

[illegible]—(সং পুং) স্বামী, ঈশ্বৰ।
स्वामी, ईश्वर, राजा।

ईशान—(সং পুং) স্বামী, মহাদেৱ,
ঈশান কোণ।
स्वामी, शिव, पूरब और उत्तर
के बीच का कोना।

ईषत्—(বি) কিঞ্চিত।
थोड़ा, कुछ।

ईसवी—(বি) যীশু সম্বন্ধীয়, খৃষ্টীয়।
ईसा से सम्बन्धित, ईसा की।

ईसाई—(বি) খৃষ্টিয়ান।
ईसा के धर्म पर चलनेवाला,
क्रिस्तान।

ईहा—(সং স্ত্ৰী) চেষ্টা।
प्रयत्न, लोभ, इच्छा।

ईहामृग—(सं पुं) সংস্কৃত ৰূপক
(নাটক) ৰ এক ভেদ।
एक प्रकार का नाटक।

उ

उ—স্বৰ বৰ্ণৰ পঞ্চম আখৰ।
वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ण।

उँगली—(सं स्त्री) আঙুলি, अंगुली,
—उठाना=লাঞ্ছিত কৰা, लाञ्छित करना
—पर नचाना=হাতৰ পুতলা কৰি
লোৱা, নাকত ধৰি পাকত
ঘুৰোৱা। इच्छानुसार काम
करवाना।

उँघाई—(सं स्त्री) যোঁবা-বাগৰ।
नींद।

उड़ेलना—(क्रि स) ঢালি দিয়া।
तरल पदार्थ को ढालना।

उँह—(अव्य) উহুঁ, নহয়।
अस्वीकार, घृणा, बेपरवाही सूचक
शब्द।

उऋण—(वि) ঋণমুক্ত।
ऋण मुक्त।

उकटना, उघटना—(क्रि अ) উখালি
দিয়া।
दबी बात उभाड़ना. खोलना.

उपकार की बात कह कर ताना देना ।

उकड़ूँ--(सं पुं) আঠুকাড়ি বহা ।
घुटने के बल बैठने की मुद्रा

उकताना--(क्रि अ) বিৰক্ত হোৱা ।
ऊबजाना, जल्दी मचाना ।

उकसना—(क्रि अ) ফুটি ওলোৱা, গজালি মেলা ।
निकलना, अंकुरित होना ।

उकसाना-(क्रि. स) উচটাই দিয়া ।
उभाड़ना ।

उखड़ना—(क्रि. अ) শিপাৰে সৈতে উভালা ।
जमी हुई या गड़ी हुई चीज का अपने स्थान से अलग होना ।

उखली, ऊखल--(सं स्त्री) উৰাল ।
चावल आदि कूटने का काठ का बना हुआ पात्र ।

उगना—(क्रि अ) গজালি মেলা ।
उदित होना, अंकुरित या उत्पन्न होना ।

उगलना—(क्रि. स) উগাৰ মৰা, গুপ্ত কথা বেকত কৰা ।
पेट की खायी हुई वस्तु मुँह से बाहर निकालना, गुप्त बात प्रकट कर देना ।

उगाहना--(क्रि स) ধন গোটোৱা ।
धन आदि इकट्ठा करना, वसूल करना ।

उचक्का—(सं पुं) প্ৰতাৰক, ঠগ ।
ठग, कोई चीज ले भागने वाला, चोर ।

उचाट—[सं पुं] উদাসীনতা ।
मन की विरक्ति, उदासीनता ।

उच्चाटन—[सं पुं] আন-মনা ।
किसी का चित्त कहीं से हटाना ।
अनमनापन, विरक्ति ।

उच्छन्न—(वि) উছন, ওৰ পৰা ।
दबा हुआ, लुप्त ।

उच्छिन्न—(वि) কটা, নষ্ট ।
कटा हुआ, नष्ट ।

उच्छ्वास--(सं पुं) উৰ্দ্ধশ্বাস, ভাবেৰে ভৰপূৰ ।
सांस, ऊपर को खींची हुई सांस ।

उछलकूद--(सं स्त्री) লম্প-জম্প ।
लम्फ-झम्प, खेलकूद ।

उछलना—(क्रि. अ) জঁপিওৱা, অত্যধিক আনন্দিত হোৱা ।
कूदना, बहुत खुश होना ।

उछालना—(क्रि. स) ওপৰলৈ দলিওৱা, ऊपर की ओर फेंकना ।

कीचड़ उछालना— বদনাম কৰা । बदनामी करना ।

उजड़ना—(क्रि अ) ভাঙি-ছিঙি নষ্ট হোৱা।
टूट फूट कर नष्ट होना।

उजड्ड—[वि] অধামূৰ্খ।
मूर्ख, असभ्य।

उजबक—[सं स्त्री] মূৰ্খ।
मूर्ख।

उजरत—(सं स्त्री) পাৰিশ্ৰমিক।
पारिश्रमिक।

उजला—(वि) বগা, উজ্বল।
सफेद, साफ, निर्मल।

उजागर—(वि) উজ্বল, প্ৰসিদ্ধ।
प्रकाशित, प्रसिद्ध।

उजाड़—[सं पुं] ছন পৰি থকা ঠাই, নিৰ্জন।
उजड़ा हुआ स्थान, निर्जन, वन।

उजाड़ना—(क्रि स) ধ্বংশ কৰা।
ध्वस्त करना, नष्ट करना।

उजाला, उजेला—(सं पुं) উজ্বলতা। পোহৰ।
प्रकाश, चांदनी।

उज्र—(सं पुं) আপত্তি।
आपत्ति।

उठना—[क्रि, अ] উঠা, থিয় হোৱা, জাগি উঠা।
ऊँचा होना, खड़ा होना। जागना, पैदा होना।

उठ जाना—মৰা, मर जाना।

उठते बैठते—উঠোঁতে-বহোঁতে, খাওঁতে-শোওঁতে। प्रतिक्षण।

उड़न-खटोला—(सं पुं) উৰা-জাহাজ।
उड़नेवाला खटोला, विमान।

उड़न-छू—[वि] নাইকিয়া হোৱা।
गायब।

उड़ाई—(सं स्त्री) উৰণ।
उड़ने की क्रिया, उड़ने का पारिश्रमिक।

उड़ाका—(वि) উৰণীয়া, বিমান-চালক।
जो उड़ता हो। विमान चलाने वाला।

उडु—(सं पुं) তৰা, পক্ষী।
तारा, पक्षी।

उडुपति—(सं पुं) জোন।
चन्द्रमा।

उड्डयन—(सं पुं) উৰণ।
उड़ना।

उतना—(वि) সিমান।
उस मात्राका।

उतरना—(क्रि अ) নামি অহা।
ऊँचे स्थान से नीचेकी ओर आना

—चेहरा उतरना = উদাস হোৱা।
उदासी आना।

उतराना—[क्रि अ] পানীত ভাহি থকা ।
पानी के ऊपर आना ।

उतार—(सं पुं) অৱৰোহণ, কম ।
उतरने की क्रिया, घटाव, कमी ।

उतार-चढ़ाव—(सं पुं) কম-বেছি, ওখ-চাপৰ ।
कभी उतरने और कभी चढ़ने का भाव ।

उतारू—(वि) উদ্যত ।
किसी काम को करने के लिये उद्यत ।

उतावला—[वि] ব্যগ্ৰ, উত্ৰাৱল ।
जल्दबाज, व्यग्र ।

उतावली—[सं स्त्री] খৰ-খেদা, হাকু-বিকু ।
शीघ्रता, जल्दबाजी ।

उत्कंठा—(सं स्त्री) উগুল-থুগুল ।
किसी बात की प्रबल इच्छा ।

उत्कट—(वि) তীব্ৰ ।
तीव्र, उग्र ।

उत्तरदायी—(वि) দায়ী ।
जवाब देह, जिम्मेदार ।

उत्तरीय—[सं पुं] গামোচা ।
गमछा, दुपट्टा ।

उत्तुंग—(वि) বৰ ওখ ।
बहुत ऊँचा ।

उत्तेजक—[वि] উত্তেজক, উত্তেজনা-কাৰী, উদ্দীপক ।
मनोवेगों को उभाड़ने या तीव्र करनेवाला ।

उत्तेजना—(सं स्त्री) উদ্গনি, উদ্দীপন, প্ৰবলপ্ৰেৰণা ।
प्रेरणा, मनोवेगों को तीव्र करने का भाव ।

उत्थान—(सं पुं) উঠা কাৰ্য্য, শ্ৰীবৃদ্ধি ।
उठने का कार्य, उन्नति ।

उत्पल—(सं पुं) পদুম ।
कमल ।

उत्पीड़न—[सं पुं] অত্যাচাৰ, উপদ্ৰৱ ।
किसीको पीड़ा या कष्ट पहुँचाना ।

उत्फुल्ल—(वि) প্ৰফুল্লিত, বিকশিত ।
प्रसन्न, विकसित ।

उत्सर्ग—[सं पुं] সদুদ্দেশ্যে কৰা দান, উচৰ্গা, ত্যাগ ।
किसी के नाम पर या किसी उद्देश्य से छोड़ना । कुर्बानी, त्यागना ।

उत्साह—[सं पुं] উৎসাহ । কামৰ প্ৰতি হোৱা আগ্ৰহ । প্ৰচেষ্টা । উদ্যম ।
उमंग, प्रचेष्टा, उद्यम ।

उत्सुक—(वि) উৎসাহী, বিশেষ যত্নবান, ব্যগ্ৰ।
उत्कंठित।

उथलना—(क्रि अ) থৰক-বৰক কৰা। ওলট-পালট হোৱা।
डगमगाना, उलट पलट होना।

उथल-पुथल—(सं स्त्री) ওলট-পালট।
उलट पुलट, आमूल परिवर्तन।

उथला—(वि) বাম।
कम गहरा।

उदक—[सं पुं] পানী।
पानी।

उद्गार—[सं पुं] অন্তৰত থকা কথা প্ৰকাশ হোৱা। দুঃখ, আনন্দ আদি সূচক শব্দ। বমি, উগাৰ।
मुँह से बाहर आना। वमन। डकार। दिल में भरी हुई बात बाहर निकलना। कंठगर्जन। हर्ष, शोक आदि सूचक शब्द।

उदजन—(सं पुं) হাইড্ৰোজেন।
एक प्रकार का वाष्प।
(अं-हाइड्रोजन)

उदधि—(सं पुं) সাগৰ, মেঘ।
समुद्र, मेघ।

उदयाचल—(सं पुं) এখন কাল্পনিক পৰ্ব্বতৰ নাম, য'ৰ পৰা ৰাতি পুৱা সূৰ্য্য উদয় হয়।
एक पर्वत जहाँ से सूर्य का उदय माना जाता है।

उदात्त—(वि) উচ্চ স্বৰে উচ্চৰিত, শ্ৰেষ্ঠ, মহান।
ऊँचे स्वर से उच्चरित। ऊँचा। महान।

उदार-चेता—(वि) উদাৰ-চিতীয়া।
ऊँचे दिल का।

उदास—(वि) বিষয়ৰ প্ৰতি বিৰাগ, বৈৰাগ্য, সন্ন্যাস।
विरक्त तटस्थ, संन्यास।

उदासी—(सं पुं) কেৰলীয়া ভকত, বিৰক্ত, সংন্যাসী।
(सं स्त्री) দুখ-বেজাৰ।
खिन्नता, दुख

उदीची—(वि) উত্তৰ দিশ।
उत्तर दिशा।

उदीच्य—(वि) উত্তৰৰ, সৰস্বতী নদীৰ উত্তৰ পশ্চিমৰ দেশ।
उत्तर का, उत्तर का रहनेवाला, सरस्वती नदी के उत्तर पश्चिम का देश।

उदुम्बर—(सं पुं) डिमरु गछ, नপুংসক ।
गूलर, नपुंसक ।

उद्दंड—(वि) উচ্ছৃংখল ।
अक्खड़, उद्धत ।

उद्दाम—[वि] বন্ধনহীন, নিৰঙ্কুশ, মুক্ত, অসাধাৰণ, ভীষণ ।
बन्धन रहित, निरंकुश, स्वतंत्र, असाधारण, भयंकर ।

उद्दिष्ट—(वि) লক্ষিত, অভিপ্ৰেত অভীষ্ট ।
दिखाया हुआ, अभिप्रेत, अभीष्ट ।

उद्दीपन—(सं पुं) উত্তেজিত কৰা ভাব, উচটনি দিয়া, জাগৃত কৰা আদি ভাব ।
उत्तेजित करने की क्रिया या भाव

उद्धत—[वि] উতনুৱা ।
उग्र, प्रगल्भ ।

उद्धरण—(सं पुं) ওপৰলৈ উঠোৱা কাৰ্য্য, উদ্ধৃতি ।
ऊपर उठना, उद्धृति ।
(अं—कोटेशन, एक्सट्रेक्ट)

उद्बुद्ध—(वि) বিকশিত, জাগ্ৰত ।
विकसित । जाग्रत । चेतना युक्त ।

उद्भट—(वि) প্ৰবল, শ্ৰেষ্ঠ, প্ৰচণ্ড ।
प्रबल, बहुत बड़ा, श्रेष्ठ ।

उद्भावना—[सं स्त्री] কল্পনা, উদ্ভাৱনা ।
कल्पना, उत्पत्ति ।

उद्भ्रांत—(वि) উদ্‌বাউল, বাট হেৰুৱা ।
उन्मत्त, चकित, भूला भटका हुआ ।

उद्यम—(सं पुं) উদ্যোগ, ব্যৱসায়, প্ৰচেষ্টা ।
प्रयास, मेहनत, पेशा ।

उद्यमी—[वि] উদ্যোগী, পৰিশ্ৰমী ।
प्रयत्नशील, परिश्रमी ।

उद्योग—(सं पुं) চেষ্টা, পুৰুষাৰ্থ, উদ্যোগ, শিল্প
प्रयत्न, मेहनत,काम धंधा । शिल्प

उद्विग्न—[वि] উৎকণ্ঠিত, চিন্তিত ।
आकुल, घबराया हुआ ।

उधड़ना—(क्रि अ) মুকলি হোৱা, উদ্ধাৰ হোৱা ।
उद्धार होना ।

उधम, ऊधम—(सं पुं) হটগোল, উৎপাত, হাহাকাৰ ।
उपद्रव, उत्पात, शोरगुल ।

उधर—[क्रि वि] সিফালে ।
उस ओर ।

उधार—(सं पुं) ধাৰ ।
कर्ज, ऋण ।

উধেৰ-বুন—[সং স্ত্রী] ভাব-চিন্তা।
সোচ বিচার, যুক্তি বাঁধনা।

উনচাস-(বি) উনপঞ্চাশ।

উনতালীস—(বি) উনচল্লিশ।

উনতীস—(বি) উনত্রিশ।

উনসঠ—(বি) উনষাঠি।

উনহত্তর-(বি) উনসত্তৰ।

উনীঁদা, উন্নিদ্র—[বি] নিশা জাগৰণৰ বাবে অবসাদ প্ৰস্ত বা ক্লান্ত।
বহুত জাগনে কে কারণ থকা-সা।

উন্নাসী-(বি) উনাশী।

উন্নীস—(বি) উনৈশ।

উন্মদ—(বি.) মতলীয়া, পাগল, উন্মত্ত কৰা।
মতবালা, পাগল, উন্মত্ত করনে বালা।

উন্মন—[বি] অন্যমনস্ক, উদাসীন।
অন্যমনস্ক, উদ্বিগ্ন, উদাস।

উন্মীলন— (সং পুং) খোলা, চকু-মেলা কার্য্য।
খুলনা (আঁখ কা), বিকসিত হোনা।

উন্মীলিত—(বি.)খোলা, বিকশিত, অঙ্কিত, এবিধ কাব্যালঙ্কাৰ
খুলা হুআ, খিলা হুআ, অংকিত, এক কাব্যালংকার।

উন্মূলন—(সং পুং) নির্মূল কৰা, গুৰীৰে পৰা উভালি দিয়া।
জড় সে উখাড়না, অস্তিত্ব মিটা দেনা।

উন্মেষ—(সং পুং) চকুমেলা, বিকাশ, স্ফুৰণ।
আঁখোং কা খুলনা, বিকাস, স্ফুরণ।

উপকরণ— (সং পুং) সামগ্ৰী।
সামগ্ৰী, সাধন।

উপক্ষেপ—[সং পুং] কাৰো প্ৰতি দলিওৱা, চৰ্চ্চা, সঙ্কেত, ইঙ্গিত, আক্ষেপ, আৰম্ভ, অভিনয়ৰ আৰম্ভণিতে নাটকৰ কথাবস্তু সংক্ষেপে কোৱা কাৰ্য্য।
কিসী কী ওর ফেঁকনা, চর্চা, সংকেত, আক্ষেপ, আরম্ভ।

উপক্ষেপন-[সং পুং] দলিওৱা, আক্ষেপ কৰা।
ফেঁকনা, আক্ষেপ করনা।

উপগত— [বি] ওচৰলৈ অহা, ঘটিযোৱা, অনুভূত হোৱা, প্ৰাপ্ত, মৃত।
পাস আয়া, গয়া হুআ, ঘটিত, অনুভূত, প্রাপ্ত, মৃত।

উপগুপ্ত (বি.) লুকোৱা, বৌদ্ধ ভিক্ষু এজন (অশোকৰ গুৰু)
ছিপায়া হুআ।

उपग्रहण—[सं पुं] धৰা, চন্ডালা, নিয়মমতে বেদাধ্যযন কৰা, বন্দী কৰা।
पकड़ना, सम्भालना, वेदाध्ययन करना, कैद करना।

उपचार— (सं पुं) ব্যৱহাৰ, চিকিৎসা, নৈবেদ্য।
व्यवहार, चिकित्सा, वाहरी आचरण, पूजा के अंग।

उपचेतना— (सं स्त्री) অন্তঃসংজ্ঞা।
अंत:संज्ञा।

उपज — (सं स्त्री) উৎপত্তি, উৎপন্ন।
उत्पत्ति, पैदावार, नयी सूझ।

उपजाऊ—(वि) সাৰুৱা।
उर्वर।

उपटन—(सं पुं) প্ৰলেপ।
राग, शरीर पर मलने का लेप।

उपढौकन—(सं पुं) উপহাৰ।
उपहार, भेंट।

उपदंश— (सं पु) গৰ্ম্মী বেমাৰ; স্ত্ৰী সঙ্গম জনিত বেমাৰ।
लिंग पर घाव पड़ जाने का रोग, आतशक, फिरंग रोग।

उपदान—(सं पुं) আনক সন্তুষ্ট কৰিবলৈ দিয়া ধন।
वह धन जो किसी को उसे संतुष्ट या प्रसन्न करने के लिए दिया जाय।

उपधा— (सं स्त्री) ছল, ফাকিত উপাধি, ব্যাকৰণৰ কোনো শব্দৰ শেষ আখৰটোৰ আগৰ আখৰ।
छल, धोखा, उपाधि, व्याकरण में किसी शब्द के अन्तिम अक्षर के पहले का अक्षर।

उपधान—[सं पुं] গাৰু, বিশেষত্ব, প্ৰেম।
तकिया, विशेषता, प्रेम।

उपधि—(सं पुं) ছল, ফাকতি, ভয়, সংশয়।
छल, कपट, डर, भय।

उपनद्ध—(वि) বান্ধি থোৱা, গাঁঠি দি থোৱা।
बंधा हुआ, नथा हुआ।

उपनयन—[सं पुं] লগুণ দিয়নী, গুৰুৰ ওচৰলৈ নিয়া।
यज्ञोपवीत संस्कार, गुरु के पास ले जाना।

उपनीत—(वि) ওচৰলৈ আনা, উপনয়ন হৈ যোৱা।
पास लाया हुआ, जिसका उपनयन हुआ हो।

उपपति—(सं पुं) আনৰ বিবাহিতা পত্নীৰ লগত প্ৰেম কৰা

পুৰুষ, বিয়া নকৰা বা দেশাচাৰ মতে নভজা স্বামী।
. दूसरे की विवाहिता पत्नी से प्रेम करनेवाला पुरुष।

উপপত্তি—(सं स्त्री) সিদ্ধান্ত; যুক্তি
युक्ति, सिद्धान्त, प्रतिपादन।

উপপত্নী--(सं स्त्री) পৰ পুৰুষৰ লগত সম্বন্ধ ৰখা তিৰোতা।
किसी पुरुष से फँसी हुई दूसरे की पत्नी या स्त्री।

উপপদ—(सं पुं) সমাস বিশেষ, উপ-পদ বা পূৰ্ব্ব পদৰ লগত কৃদন্ত পদৰ সমাস।
एक प्रकार का समास, उपपद या पूर्व पद के साथ कृदन्त पद का समास।

উপপ্লৱ—(सं पुं) উৎপাত;বানপানী, ভূমিকম্প।
उत्पात, बाढ़, भूकम्प।

উপৰত—[वि] বিৰক্ত
विरक्त।

উপৰতি—(सं स्त्री) উদাসীনতা, ভোগ-বাসনা হীন। মৃত্যু। বুদ্ধি।
विषय-वासना के भोग से विराग। उदासीनता। मृत्यु, बुद्धि।

উপলম্ভ, উপলম্ভন—(सं पुं) লাভ, প্ৰাপ্তি, জ্ঞান, অনুভৱ।
लाभ, प्राप्ति, ज्ञान, अनुभव।

উপল—(सं पुं) শিল, ৰত্ন।
पत्थर, ओला, रत्न।

উপলা—(सं पुं) শুকান গোবৰ, যাক খৰি হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হয়।
कंडा, सूखा गोबर।

উপবেশন—(सं पुं) বহা।
बैठना, स्थित होना।

উপবেষ্টিত—(सं पुं) আকোৱালি ধৰা, মেৰাই ধৰা।
लिपटा हुआ, घिरा हुआ।

উপশম—(सं पुं) ইন্দ্ৰিয় নিগ্ৰহ, শান্তি, চিকিৎসা।
इन्द्रिय-निग्रह, शान्ति, इलाज।

উপহত—(वि) বিনষ্ট, নষ্ট হোৱা, আঘাত পোৱা, বজ্ৰপাত পৰা জন।
नष्ट या बरबाद किया हुआ। घायल। जिसपर वज्रपात हुआ हो।

উপাংগ—(सं पुं) সৰু অঙ্গ। দাঢ়ি, গোঁফ, চুলি, নখ।
अंगका भाग, अवयव।

উপাদান—(सं पुं) কোনো বস্তুৰ মূল কাৰণ বা সামগ্ৰী বা

पदार्थ, গ্ৰহণ, প্ৰাপ্তি, স্বীকাৰ কৰা।

प्राप्ति, ग्रहण, किसी वस्तुके निर्माण में लगनेवाली सामग्री।

उपादेय-(वि) উপযুক্ত, গ্ৰহণ কৰাৰ উপযোগী।

उत्तम, ग्रहण करने योग्य।

उपानह्—(सं पुं) জোতা।

जूता।

उपालंभ-(सं पुं) নিন্দা। অভিযোগ।

शिकायत, निन्दा।

उपास—(वि) উপবাস, নিৰাহাৰে থকা।

उपवास, फाका।

उपोद्घात—(सं पुं) কিতাপৰ পাতনি, উদ্বোধন।

पुस्तक की भूमिका, कोई काम आरंभ करने का कृत्य।

उफान–(सं पुं) উতলা।

भरकर या गरमी पाकर ऊपर उठना। जोश में भरकर ऊपर उठना।

उबटन—(सं पुं) শৰীৰত ঘঁহিবৰ কাৰণে কৰা সৰিয়হ, তিল আদিৰ লেপ। প্ৰলেপ।

शरीर पर मलने के लिये सुगंधित लेप।

उबरना—(क्रि अ) উদ্ধাৰ পোৱা।

उद्धार पाना, शेष रहना।

(क्रि स) উদ্ধাৰ কৰা।

उद्धार करना। उबारना।

उबलना—(क्रि अ) উতলি উঠা, খং উঠা।

उत्तप्त तरल पदार्थ का उफनना, क्रोधित होना।

उबालना–(क्रि स) উতলোৱা।

तरल पदार्थ को खौलाना।

उभड़ना—(क्रि अ) ভুমুকি দি উঠা, উচতনি পোৱা।

ऊपर निकलना, उत्तेजित होना।

उभाड़ना—(क्रि अ) উচতাই দিয়া, গধুৰ বস্তু ওপৰলৈ তোলা।

भारी वस्तु ऊपर उठाना, उत्तेजित करना।

उमंग—(सं स्त्री) উল্লাস, আনন্দ।

उल्लास, उत्साह।

उमड़ना–(क्रि अ) প্লাবিত হোৱা।

उतराकर या भरकर बह चलना, ऊपर उठकर फैलना।

उमर, उम्र—(सं स्त्री) বয়স।

अवस्था, आयु।

उमस—(सं स्त्री) বতাহ নবলিলে হোৱা উম বা গৰম।

हवा न चलने की गरमी।

उमेठना—(क्रि अ) মোহাৰি দিয়া।
एँठना, मरोड़ना।

उम्दा—(वि) ভাল।
अच्छा, भला।

उम्मीद, उम्मेद—(सं पुं) আশা।
आशा, भरोसा।

उम्मेदवार—(सं पुं) প্ৰাৰ্থী।
आशा रखनेवाला, पदके लिये प्रार्थी।

उर—(सं पुं) বুকু, হৃদয়।
छाती।

उरद—[सं पुं] মাটি মাহ।
एक प्रकार की दाल, माष।

उरमाल—[सं पुं] ৰুমাল।
रुमाल।

उरसिज—[सं पुं] পিয়াহ, স্তন।
स्तन।

उरु— (सं पुं) কৰঙণ।
जाघ।
(वि) ডাঙৰ দীঘল।
लम्बा चोडा।

उरोज—(सं पुं) পিয়াহ, স্তন।
स्तन, कुच।

उर्वी—[सं स्त्री] পৃথিৱী।
पृथ्वी।

उलझन—[सं स्त्री] আটক, গাঁঠি, সমস্যা।
अटकाव, गाँठ, समस्या।

उलझाना—(क्रि स) পাকত পেলোৱা।
फँसाना, लगाये रखना।

उलटना—[क्रि अ] উলটোৱা, নষ্ট হোৱা।
पलटना, मुडना, बरबाद होना, गिरना।
[क्रि स] তল-ওপৰ কৰা, পেলাই দিয়া।
ऊपर-नीचे करना, मोडना, गिराना।

उलट-पुलट (पलट)—(सं स्त्री) উলট-পালট, গাল সলনি।
अदल बदल, अव्यवस्था।

उलट-फेर—(सं पु) হেৰ-ফেৰ, পৰিৱৰ্ত্তন।
परिवर्तन, हेर फेर।

उलटा-पुलटा- (वि) ইফাল-সিফাল।
इधर का उधर।

उलटे—[क्रि वि] বিপৰীত ৰূপে।
विपरीत क्रम से।

उलाहना—(सं पुं) আপত্তি, তিৰস্কাৰ, কটূক্তি প্ৰয়োগ।
शिकायत, उपालम्भ।

उलीचना—[क्रि स] পানী ছটিওৱা,
पानी सिंचा।
पानी उछालकर फेंकना।

उल्था—(सं पुं) অনুবাদ।
अनुवाद, भाषान्तर।

उष्णता—(सं स्त्री) উত্তাপ।
गरमी, ताप।

उष्मा—[सं स्त्री] গৰম, খং।
गरमी, गुस्सा।

उसाँस—[सं पुं] হুমুনিয়াহ।
दुःख का दीर्घ श्वास।

उसारा—[सं पुं] চোতাল।
छाजन, घर के सामने का हिस्सा।

उसूल—(सं पुं) সিদ্ধান্ত।
सिद्धांत।

उस्ताद—(सं पुं] ওস্তাদ, পণ্ডিত।
गुरु, पण्डित।
(वि) চতুৰ, ধূৰ্ত্ত।
चालाक, धूर्त।

उहै—[सर्व] সেই।
वही (प्राचीन प्रयोग)।

ऊ

ऊ—স্বৰ বৰ্ণৰ ষষ্ঠ আখৰ।
वर्णमाला का छठा अक्षर।
(सं पुं) শিৱ, চন্দ্ৰমা, ৰক্ষক
शिव, चन्द्रमा, रक्षक।

ऊँघना—(क्रि अ) টোপনিয়া, কলা ঘুমটি অহা।
नीद में झूमना।

ऊँच, ऊँचा—(वि) ওখ।
उठा हुआ, उन्नत।

ऊँच-नीच—(वि) ওখ-চাপৰ। উচ্চ-নীচ জাতিৰ। छोटी जाति और बड़ी जाति का, भला बुरा।

ऊँचाई—(सं स्त्री) উচ্চতা।
उच्चता, गौरव।

ऊखड़—[सं पुं] পাহাৰৰ নামনিৰ শুকান মাটি।
पहाड़ के नीचे की रूखी भूमि।

ऊखल—[सं पुं] উৰাল।
ओखली।

ऊजड़—[वि] জনপ্ৰাণী শূন্য।
वीरान।

ऊट पटांग—[वि] অসংলগ্ন, নিৰৰ্থক
अटपट, टेढ़ा मेढ़ा, निरर्थक।

ऊत—(वि) পুত্ৰহীন, মূৰ্খ।
निपूता, बेवकूफ।

ऊद, ऊद बिलाव—[सं पुं] উদ্।
एक तरह का जन्तु।

ऊधम-(सं पुं) গোলমাল, হাহাকাৰ, উৎপাত।
शोरगुल, हंगामा, उत्पात।

ऊपर-(क्रि वि] ওপৰত।
ऊँचे स्थान में, सहारे पर।

ऊपरी—[वि] উপৰুৱা, ওপৰৰ
ऊपर का।

ऊब—(सं स्त्री) আমনি।
उद्वेग, घबराहट, उकताना।

ऊबड़-खाबड़—(वि) খলা-বমা
ऊँचा नीचा।

ऊबना—(क्रि अ) ব্যাকুল হোৱা।
घबराना, अकुलाना।

ऊमस—[सं स्त्री] বায়ুপ্ৰবাহ নচলা বাবে অনুভৱ হোৱা গৰম।
हवा न चलने से मालूम होनेवाली गरमी।

ऊर्ज—(वि) বলৱান, শক্তি, উৎসাহ।
शक्तिमान, शक्ति, उत्साह।

ऊर्जस्वित—(वि) আৰূঢ়, ভৰিথকা।
चढा हुआ।

ऊर्द्ध्व, ऊर्ध्व—(क्रि वि) ওপৰত
ऊपर।

ऊर्ध्वरेता—(वि) নৈষ্ঠিক ব্ৰহ্মচাৰী, জিতেন্দ্ৰিয়।
वीर्यपात न होने देनेवाला नैष्ठिक ब्रह्मचारी।

ऊर्ध्वश्वास-(सं पु) উৰ্দ্ধশ্বাস। অতিশয় পৰিশ্ৰম বা লৰ ধৰাত উধাতু হোৱা।
ऊपर को चढनेवाली साँस, उलटी साँस।

ऊर्मि—(सं स्त्री) ঢৌ।
तरंग, पीड़ा।

ऊर्मिल—(वि) কম্পিত, ঢৌ ভৰা।
तरंगित।

ऊल जलूल—(वि) অসংবদ্ধ,
असंबद्ध, वाहियात।

ऊष, ऊसर—(सं पुं) খেতিৰ অনুপযোগী অধিক বালি থকা মাটি
खेती के अयोग्य, अनुर्वर जमीन।

ঊহ—(সং পুং) পবিবৰ্ত্তন, সংস্কাৰ, অনুমান, তৰ্ক-যুক্তি।
परिवर्त्तन, सुधार, अनुमान, तर्क-युक्ति।

ঊহাপোহ—(সং পুং) তৰ্ক-বিতৰ্ক, বিবেচনা।
सोच विचार।

ঋ

ঋ—স্বৰবৰ্ণৰ সপ্তম বৰ্ণ।
(সং পুং) অদিতি, উপহাস, নিন্দা।
वर्णमाला का सातवाँ वर्ण।
अदिति, उपहास, निन्दा।

ঋক—বেদ-মন্ত্ৰ।
वेदों की ऋचा।

ঋক্ষ—[সং পুং] ভালুক, তৰা।
भालू, तारा।

ঋজু—(বি) পোনপটীয়া, সৰল, কুটিলতাহীন।
सीधा, सरल।

ঋত—(সং পুং) সত্য, ব্ৰহ্ম, কৰ্ম্ম-ফল, অনুকূল কথা।
सत्य, सृष्टि का आदि और धारक तत्व, ब्रह्म, अनुकूल वचन।

ঋত্বিজ—[সং পুং] যজ্ঞ কৰাওঁতা, ঋত্বিকিৰ সংখ্যা ১৬ জন। তাৰ ভিতৰত হোতা, অধ্বর্যু, উদ্গাতা আৰু ব্ৰহ্মাই মুখ্য।
यज्ञ करानेवाला।

ঋদ্ধি—[সং স্ত্ৰী) সম্পন্নতা, গৌৰব, সফলতা।
सम्पन्नता, वृद्धि, गौरव, सफलता।

ঋষ্যকেতু—(সং পুং)অনিৰুদ্ধ, কামদেৱ।
अनिरुद्ध, कामदेव।

ঋশ্য, ঋষ্য—[সং পুং] এক প্ৰকাৰৰ হৰিণ। एक तरह का हिरन।

ए

ए—স্বৰ বৰ্ণৰ অষ্টম বৰ্ণ, [সং পুং] স্মৃতি, অনুকম্পা, আহ্বান, বিষ্ণু।
वर्णमाला का आठवाँ वर्ण।
स्मृति, अनुकम्पा, आह्वान, विष्णु

एँच-पेँच—(सं पुं) জঞ্জাল।
उलझन।

एंजिन—(सं पुं) ইঞ্জিন।
इंजन।

एक-तरफा—[वि] একপক্ষীয়।
एक पक्ष का।

एक-बारगी—(क्रि वि) এবাৰতে, হঠাতে, একেবাৰে।
एक ही बार में, अचानक, बिलकुल।

एकला—(वि) অকলে।
अकेला।

एकहरा, इकहरा—(वि) এক-তৰপীয়া।
एक परत का या एक लड़ी का।

एकांग—(वि) এক অংগৰ, বিকলাঙ্গ।
एक अंगवाला, विकलांग।

एकांगी—(वि) একপক্ষীয়।
एक पक्षीय।

एकान्त—(वि) অকলে, অত্যন্ত, নিৰ্জন, পৃথক।
अत्यन्त, अलग, निर्जन, अकेला।

एकाएक—(क्रि वि) হঠাতে।
अकस्मात्।

एकाकी—[वि] অকলশৰীয়া।
अकेला।

एकाह—(वि) দিনত এবাৰ হোৱা।
दिन में एक बार होनेवाला।

एकीभूत—(वि) মিলি একহোৱা, মিহলি হোৱা।
मिला हुआ, मिलकर एक हुआ।

एक्का—(वि) অকলে, अकेला
(सं पुं) এবিধ ঘোঁৰা গাড়ী।
एक घोड़े की गाड़ी।

एड़, एड़ी—(सं स्त्री) গোৰোৱা বা গোৰোহা।
पैर का निचला भाग।

एतबार—(सं पुं) বিশ্বাস।
विश्वास।

एतराज,(इतराज)-[सं पुं] আপত্তি।
आपत्ति। विरोध।

एलची—(सं पुं) ৰাজদূত।
राजदूत।

एवज—(सं पुं) সাল-সলনি, পৰিবৰ্ত্তন, প্ৰতিশোধ।
प्रतिफल, बदला।

एषणा—(स पुं) ইচ্ছা, পাবলৈ কৰা প্ৰচেষ্টা।
इच्छा,चाह। पानेका यत्न करना।

एहतियात—[सं स्त्री] সাৱধান, ৰক্ষাপৰা।
परहेज, बचाव, होशियार।

एहसान—(सं पुं) কৃতজ্ঞতা, উপকাৰ।
कृतज्ञता, नेकी, उपकार।

एहसान-फरामोश—(वि) কৃতঘ্ন।
एहसान भूल जानेवाला।

एहसान-मंद—(वि) কৃতজ্ঞ।
कृतज्ञ।

ऐ

ऐ—বৰ্ণমালাৰ নৱম অক্ষৰ।
वर्णमालाका नवाँ अक्षर।

ऐंचा-ताना—(वि) টেকা-বেঁকা, কেৰাহীকৈ।
टेढ़ा देखनेवाला। भेंगा।

ऐंचा-तानी—(सं स्त्री) টনা-টনি।
खींचातान।

ऐंठ, ऐंठना—(सं स्त्री) গৰ্ব্ব, অহংকাৰ।
ऐंठने की क्रिया या भाव, अकड़, गर्व।

ऐंठना—(क्रि स) পেঁচ দিয়া, পেঁচ লগাই দি লোৱা।
मरोड़ना। दबाव डालकर लेना।

ऐंड़—(सं स्त्री) গৰ্ব্ব।
गर्व।

ऐन—(वि) ঠিক।
ठीक। बिलकुल।

ऐनक-(सं स्त्री) চশমা। चश्मा।

ऐनस—(सं पुं) পাপ। पाप।

ऐब—(सं पुं) দোষ, লাঞ্ছনা।
दोष, अवगुण।

ऐयार—(सं पुं) চতুৰ, ঠগ, धूर्त।
चालाक। वेश बदलकर विलक्षण कार्य करनेवाला।

ऐयाश—[वि] বিলাসী।
बहुत ऐश या आराम करनेवाला।
विषयी, लम्पट।

ऐरा-गैरा—(वि) অপৰিচিত, তুচ্ছ [মানুহ]
अजनबी, तुच्छ (आदमी)।

ऐश—[सं पुं] আমোদ-প্ৰমোদ, ভোগ-বিলাস।
आराम, भोगविलास।

ऐसा—[वि] এনেকুৱা।
इस प्रकार का।

ऐहिक—(वि) সাংসাৰিক, জাগতিক।
लौकिक, सांसारिक।

ओ

ओ—স্বৰ বৰ্ণৰ দশম আখৰ, ব্ৰহ্মা, সম্বোধন সূচক শব্দ।
वर्णमालाका दसवाँ अक्षर। ब्रह्मा, सम्बोधन सूचक शब्द।

ओंठ, होंठ—(सं पुं) ওঁঠ, ঠোঁট।
मुँह के बाहर का अंश।

ओक—(सं पुं) ঘৰ, আশ্ৰয়, বিলাস।
घर, आश्रय, विलास।

ओकाई—(सं स्त्री) বমি, বাঁতি।
वमन। वमनका भाव।

ओखली—[सं स्त्री] উৰাল, । ऊखल।

ओघ—[सं पुं] সৰ্ব্বমুঠ, প্ৰবাহ, প্লাবন।
समूह, धारा, फलावन।

ओछा—(वि) নগণ্য, অগভীৰ, পাতল।
तुच्छ, छिछला, हलका।

ओज—(सं पुं) তেজ, বল, কবিতাত বীৰত্ব বা উৎসাহবৰ্দ্ধক গুণ।

प्रताप, उजाला। कविता में वीरता, उत्साह वाला गुण।

ओजस्वी—(वि) শক্তিশালী, প্ৰভাৱশালী।
शक्तिशाली, प्रभावशाली, तेजपूर्ण।

ओझल—(सं पुं) আঁৰ।
ओट, आड़।

ओट—[सं स्त्री] ব্যৱধান; পৰদা।
व्यवधान, शरण।

ओटना—(क्रि स) কপাহৰ পৰা গুটি গুচোৱা।
चरखी में रूई और बिनौले अलग करना। बराबर अपनी बात कहते जाना।

ओटनी—[सं स्त्री] নেওঠনী।
कपाससे बिनौले अलग करनेका यंत्र

ओढ़ना—[क्रि स] পৰিধান কৰা, পিন্ধা, ওৰণি, দায়িত্ব গ্ৰহণ কৰা
शरीर के किसी भाग को कपड़े से ढंकना, अपने जिम्मे लेना।
(सं पुं) চেলেং কাপোৰ।
चादर।

ओढ़नी-(सं स्त्री) ওৰণি, চেলেং কাপোৰ। चादर।

ओदा-[वि] ভিজা, তিতা, সেমেকা।
गीला।

ओघारना-[क्रि सं] বিদ্ধা কৰা, নষ্ট কৰা।
विदीर्ण करना, नष्ट करना।

ओनामासी—(सं स्त्री) অক্ষৰাৰম্ভ, আৰম্ভ, ['ওঁ নমঃ সিদ্ধম্'ৰ বিকৃত ৰূপ]
अक्षरारम्भ, आरम्भ।

ओप—(सं स्त्री) চাক-চিক্য, চিকমিকনি।
चमक, शोभा।

ओबरी-(सं स्त्री) খোটালী।
कोठरी।

ओर—[सं स्त्री] ফাল।
तरफ, दिशा, पक्ष।
(सं पु) পাৰ, তীৰ।
किनारा, छोर।

ओल—(सं पुं) ওল-কচু, আঁৰ, আশ্ৰয়, কোলা।
जिमीकन्द, सूरन। आड़, आश्रय, गोद।

ओलती—(सं स्त्री) পানী পচা বা পানী পতা।
छप्पर का किनारा।

ओला—(सं पुं) বৰষুণৰ শিল, তুষাৰ।
वर्षा में गिरते हुए जलके जमे गोले। बिनौरी। (वि) বৰফৰ

निचिना चেঁচা। ओलेके समान ठंडा।

ओषधि.ओषधी-(सं स्त्री) বনস্পতি। লতা-পতা, বনৌষধি। वनस्पति, जड़ी बूटी।

ओष्ण— (सं पुं) কুসুমীয়া, অলপ-গৰম। थोड़ा गरम, कुनकुना।

ओस—(सं स्त्री) নিয়ৰ, হিম। शबनम, शिशिर-बिन्दु।

ओसाना—[ক্রি স] ধানৰ বা শস্যৰ পতান আদি গুচোৱা। अनाजसे भूसा अलग करना।

ओहदा—(सं पुं) পদ, চাকৰি। अधिकारी का पद।

ओहदेदार—(सं पुं) পদাধিকাৰী। पदाधिकारी।

ओहार- (सं पुं)পাল্কী, গাৰু, লেপ আদিৰ গিলিপ। पालकी, तकिया, रजाई आदि के ऊपर आड़ का कपड़ा।

औ

औ—স্বৰবৰ্ণৰ একাদশ আখৰ, অনন্ত নাগ। वर्णमाला का ग्यारहवाँ वर्ण, शेषनाग।

औंटना, औटना—(क्रि स) পগোৱা, গৰম কৰা। दूध आदि तरल पदार्थ आगपर उबालकर गाढ़ा करना।

औंधना—(क्रि अ) লুটিখোৱা, उलट जाना [क्रि स] লুটিয়াই দিয়া। उलट देना।

औंधा— (वि) উণ্টা। उलटा, पट।

औकात—(सं स्त्री) সময়, যোগ্যতা, সামৰ্থ্য। समय, हैसियत, अर्थ-सामर्थ्य।

औघट—(বি) কঠিন, দুৰ্গম, দুৰ্গম-পথ।
कठिन, दुर्गम, दुर्गम-मार्ग।

औजार—[सं पुं] যন্ত্ৰ-পাতি, অস্ত্ৰাদি (মিস্ত্ৰী)।
हथियार, उपकरण।

औद्वाहिक—(वि) বিয়া সম্বন্ধীয়, বিয়াত পোৱা।
विवाह सम्बन्धी, विवाह में मिला हुआ।

औपचारिक—(वि) নিয়মৰ, গৌণ, দেখুৱাবৰ বাবে।
उपचार सम्बन्धी, रस्मी, दिखाऊ, गौण।

औपल—(वि) শিলা সম্বন্ধীয়, শিলেৰে তৈয়াৰী। শিলৰ বাবে পোৱা খাজনা।
प्रस्तर सम्बन्धी, पत्थर का बना हुआ, पत्थर से मिलनेवाला (कर)

औपस्थिका—(सं स्त्री) বেশ্যা।
वेश्या, वारांगना।

औपस्थ—(सं पुं) সহবাস, ভোগ।
सहवास, भोग।

और—(अव्य) আৰু, তথা। (वि) ভিন বেলেগ। दूसरा। भिन्न।

औरत—[सं स्त्री] তিৰোতা।
स्त्री, पत्नी।

औरस—(वि) ঔৰস, বিবাহিতা তিৰোতাৰ গৰ্ভত উৎপন্ন। वैध विवाहिता स्त्रीसे उत्पन्न (संतान)

औलाद—(सं स्त्री) সন্তান।
सन्तान।

औलिया—[सं पुं] মুচলমান ফকিৰ।
मुसलमान फकीर या सन्त।

औवल, औव्वल—(वि) সৰ্ব্ব প্ৰথম
पहला, प्रधान, सर्व श्रेष्ठ।

औसत—(स पुं) অনুপাত।
बराबर का परता। सामान्य (अं—एवरेज)
(वि) মধ্যম শ্ৰেণীৰ।
मध्यम कोटिका। साधारण।

औहत—(संस्त्री) অপমৃত্যু।
अपमृत्यु, कुगति।

क

क—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ প্ৰথম আখৰ।
वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण।

कंकड़-(सं पुं) সৰু সৰু শিলগুটি।
पत्थर का छोटा टुकड़ा, तम्बाकू का सूखा पत्ता।

कंकड़ीला, कंकरीला—(वि) শিল-গুটি থকা, শিলগুটিযুক্ত।
जिसमें कंकड़ हो।

कंकण, कंगन—(सं पुं) খাৰু।
हाथ में पहनने का एक गहना।

कंकाल—(सं पुं) জঁকা, কঙ্কাল।
अस्थि पंजर।

कंगाल—(वि) কঙাল, দুখীয়া, দৰিদ্ৰ।
दरिद्र, बहुत ही गरीब।

कँगूरा—(सं पुं) চূড়া, টিং।
चोटी, किले का ऊँचा हिस्सा।

कंघा—(सं पुं) কাঁকৈ, ফণি।
सिर के बाल सवाँरने की चीज। कंघी (सं स्त्री)।

कंचन, कांचन—[सं पुं] সোণ, ধন, ধতুৰা।
सोना, धन, धतूरा।

कंचनी—(सं स्त्री) বেশ্যা।
वेश्या।

कंचुक—[सं पुं] চাপকন, কবচ।
चोली, वस्त्र, कवच, (सं स्त्रा-कंचुकी)

कंचुकी—[सं पुं] অন্তঃপুৰ-ৰক্ষক।
अन्तःपुर का रक्षक।

कंज—[सं पुं] ব্ৰহ্মা, পদুম, চুলি।
ब्रह्मा, कमल, केश।

कंजूस—(वि) কৃপণ।
कृपण।

कँटिया—[सं स्त्री] সৰু কাঁইট, বঁৰশী।
छोटा काँटा, बंशी।

कंठा—[सं पुं] গল-পতা।
गले की हँसली, एक गहना।

कंडा-[सं पुं] শুকান গোবৰ-যাক খৰি হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হয়, গোবৰ-শুঠা।
उपला, सूखा मल।

कंडील, कंदील—(सं स्त्री) এক প্ৰকাৰৰ চাকি।
एक प्रकार की बत्ती।

कंत, कंथ, कांत—(सं पुं) পতি, স্বামী।
पति, स्वामी।

कंद—(सं पुं) আলু আদি গছৰ মূল, মেঘ।
मोटी और गूदेवाली जड़, बादल।

कंदरा—(सं स्त्री) গুহা, গহ্বৰ।
गुफा।

कंदुक—(सं पुं) ব'ল, টুপুৰা গাৰু।
गेंद, छोटा गोल तकिया।

कंधा—(सं पुं) কান্ধ।
गले और बाँह के बीच का भाग।

कंबख्त, कम्बख्त—[वि] দুৰ্ভগীয়া, অভাগা।
अभागा, भाग्यहीन।

कई—(वि) অনেক।
एक से अधिक, अनेक।

ककड़ी—(सं स्त्री) কাকৰী। তিয়ঁহৰ নিচিনা সোৱাদৰ এবিধ দীঘলীয়া ফল।
एक प्रकार का लम्बा फल।

कक्षा—[सं स्त्री] গ্ৰহ-নক্ষত্ৰৰ পথ, শ্ৰেণী, মেৰ।
घेरा, ग्रहों का मार्ग, श्रेणी।

कगार—(सं पुं) ঠিয় গৰা, ওখ টিলা।
ऊँचा किनारा, नदी का कगारा, टीला।

कच—(सं पुं) চুলি, দল, মেঘ।
बाल, झुण्ड, बादल।

कचनार—(सं पुं) এবিধ ফুল।
एक प्रकार का फूल।

कचपची—[सं स्त्री] কৃত্তিকা নক্ষত্ৰ- ইয়াত ছয়টা তৰা গোট খাই থাকে।
कृत्तिका नक्षत्र।

कचर-कूट—(सं पुं) খুব মাৰ-ধৰ, পেট-পুৰাই ভোজন।
खूब मारना-पीटना, इच्छा भोजन।

कचरा—(सं पुं) জাবৰ-জোঁথৰ। কেচা কাকৰী।
कूड़ा करकट, कच्ची ककड़ी।

कचहरी—(सं स्त्री) আদালত, কাছাৰী।
जमावड़ा, दरबार, न्यायालय।

कचालू-[सं पुं] এবিধ আলু বা কচু, আলুৰ চাটনি।
एक प्रकार की अरवी या कच्चू। आलू की चाट।

कचूमर—(सं पुं) ভৰিৰে পিহি গুৰা কৰা।
कुचला हुआ।

—**निकालना**—চূৰমাৰ কৰা, গুৰি খুন্দা।
चूर चूर करना।

কচ্চা–(বি) কেঁচা, অপটু (লিখা-পঢ়াত) ।
जो पका न हो । अपुष्ट, कमजोर ।

কচ্চা চিট্ঠা—(सं पुं) গুপ্ত ৰহস্য । খচৰা হিচাব ।
गुप्त भेद, आय-व्ययका बिना जाँचा लेखा ।

কচ্চী বহী--(सं स्त्री) হিচাপ-পত্ৰৰ সাধাৰণ বহী ।
वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो ।

কচ্চূ—(सं पुं) কচু ।
अरुई, बंडा ।

কছাৰ–(सं पुं) সাগৰ বা নদীৰ, পাৰৰ সেমেকা ঠাই ।
नदी या समुद्र के तट की तर और नीची भूमि ।

কছুৱা, কচ্ছপ–[सं पुं] কাছ ।
एक जल जन्तु ।

কজৰাৰা—[वि] কাজল সনা (চকু), ক'লা ।
काजल लगा हुआ (नेत्र), काला ।

কজলী, কজৰী–(सं स्त्री) কজলা, বাৰিষা কালত গোৱা এক-প্ৰকাৰৰ গীত ।
कालिख । एक तरह का बरसाती गीत ।

কজিয়া—[सं पुं] কাজিয়া ।
झगड़ा ।

কট—(सं पुं) হাতীৰ গণ্ডস্থান ; মৰাশ ।
हाथी का गण्डस्थल, खस की टट्टी, लाश ।

কটক—(सं पुं) সৈন্য ।
सेना, राजशिविर ।

কটকটানা—[क्रि अ] খঙতে দাঁত কামুৰি উঠা ।
क्रोध में दाँत पीसना ।

কটঘৰা—[सं पुं] পিঁজৰা বা কাঠৰ ঘৰ ।
बड़ा पिजड़ा, काठ का वह कमरा जिसमें खिड़की लगी हो ।

কটনী—(सं स्त्री) দা, কটা ক্ৰিয়া ।
काटने का औजार, काटने का काम ।

কটহা—(वि) দংশনকাৰী ।
काटखानेवाला ।

কটাই—[सं स्त्री) ধান আদি কটাৰ মজুৰি ।
फसल काटने की मजदूरी ।

কটাৰ—(सं स्त्री) দুই ফালে ধাৰ থকা ছুৰী বা ডেগাৰ ।

लगभग एक बित्ते का दुधारा हथियार ।

कटाव—[सं पुं] কটা ।
काट छाँट, बाढ से जमीन का कटना ।

कटाह—[सं पुं] কেৰাহী, মহৰ পোৱালি ।
कडाही, भैंस का पाडा ।

कटिबन्ध—(स पुं) টঙালি বা কঁকালি । জলবায়ু অনুসৰি পৃথিৱীৰ এক মণ্ডল ।
कमरबन्ध, कमर में बाँधने का कपडा । सरदी गरमी के विचार से पृथ्वी के विभागों में मे एक ।

कटिबद्ध— (वि) দৃঢ় সংকল্প ।
तैयार, दृढ संकल्प ।

कटोरा—(सं पुं) বাটি ।
एक प्रकार का बरतन । प्याला । (स्त्री कटोरी)

कटौती—[सं स्त्री] কৰ্ত্তন । পইচা আদি দিওঁতে কমোৱা ।
कोई रकम देने हुए किसी कारण वश कुछ अंश निकाल देना ।

कट्टर—(वि) গোড়া, অন্ধবিশ্বাসী ।
अन्धविश्वासी, दुराग्रही ।

कट्ठा—(सं पुं) কঠা (মাটিৰ হিচাপ)
जमीन की माप ।

कठपुतली—(सं स्त्री) কাঠৰ পুতলা । আনৰ ইংগিতমতে চলা মানুহ ।
काठ की गुडिया । दूसरों के इशारे पर चलनेवाला ।

कड़क—(स स्त्री) কড্ কড্ শব্দ । চিকমিকনি (বিজুলী) ।
कडकने की क्रिया या भाव । डपट, पीडा ।

कड़कना—[क्रि अ] কড কড শব্দ হোৱা, বিজুলী-ঢেৰেকনি ।
कड कड शब्द होना ।

कड़वा, **कड़ुवा**— [वि] তিতা ।
स्वाद में उग्र और अप्रिय । (स्त्री-कडवी)

कड़ा—(सं पुं) বালা (হাতত বা ভৰিত পিন্ধা) हाथ या पैर में पहनने का गहना । [वि] কঠিন, টান । कठोर, कठिन, उग्र, दृढ ।

कड़ाई—(सं स्त्री) কঠোৰতা, দৃঢ়তা
कठोरता, दृढता ।

कड़ाहा—(सं पुं)কেৰাহী । एक प्रकार का लोहे का बरतन । (स्त्री-कड़ाही)

कड़ी—(सं स्त्री) শিকলিৰ আঙুঠি, গীতৰ পদ ।

सिकडी का छल्ला, गीत का एक पद ।

कढ़ना—(क्रि अ) উদয হোৱা ।
निकलना, उदय होना ।

कढ़ाई—[सं स्त्री] কেৰাহী, কাপোৰত ফুল তোলা ।
कपडे पर बेल बूटे बनाना ।

कढ़ी— (सं स्त्री) বুট,মাহ আৰু দৈৰ ঘোলেৰে তৈযাৰ কৰা এবিধ আঞ্জা ।
बेसन की बनी गाढी दाल ।

कतरन—(सं पुं) কাগজৰ টুকুৰা ।
कागज के कटे टुकडे ।

कतरना—(क्रि स) কেঁচীৰে কটা ।
कैंची आदि से काटना ।

कतरा—(सं पुं) কটা টুকুৰা, টোপাল ।
कटा हुआ टुकडा ।
बूंद ।

कतराना-(क्रि अ) ফালৰি কটা ।
किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना ।

कतल, कत्ल—[सं पुं] হত্যা ।
वध । हत्या ।

कतलाम, कत्लेआम—[सं पुं]
সামূহিক হত্যাকাণ্ড, নৰ-সংহাৰ
जनसाधारण की हत्या ।

कताई— (सं स्त्री) সূতা কটা কাৰ্য্য ।
सूत कातने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

कतार—(सं स्त्री) শাৰী ।
पंक्ति, श्रेणी ।

कथ क्कड़—(वि) সাধুকথা-কওঁতা ।
कथा कहनेवाला ।

कथनी—[सं स्त्री] কথা, মান-মৰ্য্যাদা ।
कथन, हुज्जत, बकवाद ।

कथरी—(सं स्त्री) কঁথা (ফটা কাপোৰেৰে তৈযাৰী) ।
गुदडी ।

कथानक—(सं पुं) কথা বস্তু ।
मूल कथा ।

कद—(सं पुं) আকাৰ উচ্চতা, ।
आकार, ऊँचाई ।
(सं स्त्री)-হিংসা-দ্বেষ ।
द्वेष, हठ ।

कदम-[सं पुं] কদম গছ; খোজ ।
कदम्ब का पेड । पैर की चाल ।

कदर—(सं स्त्री) মাত্ৰা, খাতিৰ ।
मात्रा, मान प्रतिष्ठा, आदर ।

কদ্ৰদান, কদ্ৰদাঁ—(বি) মান কৰোঁতা, গুণগ্ৰাহী ।
गुण ग्राहक ।

কদাকাৰ—(বি) কুৎসিত, কদাকাৰ ।
बुरे आकार का ।

কদাপি—(ক্ৰি বি) কেতিয়াও ।
कभी, हरगीज ।

কদ্দু—[সং পুং] পানী লাউ ।
लौकी ।

কনকটা—[বি] কাণকটা, দুষ্ট, ঠগ ।
जिसका कान कटा हो, ठग ।

কন-কৌআ—(সং পুং) চিলা (কাগজৰ) ।
कागज की पतंग ।

কনখজুরা—(সং পুং) বিছা ।
एक प्रकार का कीड़ा । गोजर ।

কনখী-(সং স্ত্ৰী)কেৰাহিকৈ চোৱা ।
तिरछी नजर, आँख का इशारा ।

কন-টোপ—(সং পুং) কাণ-ঢকা-টুপী, বান্দৰ টুপী ।
कान तक ढँकनेवाला टोप ।

কনপটী—(সং স্ত্ৰী) কুম, কাণ টহা ।
कान और आँख के बीच का स्थान ।

কনস্তৰ-(সং পুং) টিন, চাপা ।
टीन का बड़ा पात्र ।

কনাত—(সং স্ত্ৰী) ডাঠ পোৰৰ পৰদা ।
घेरे वाला बड़ा परदा ।

কনী—[সং স্ত্ৰী] টুকুৰা, কণা ।
छोटा टुकड़ा, हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा ।

কনেঠী—[সং স্ত্ৰী] কানমলা ।
कान मड़ोरने की सजा ।

কপড়া—(সং পুং) কাপোৰ ।
वस्त्र ।

কপাট—[সং পুং] দুৱাৰ ।
दरवाजा ।

কপাল-ক্ৰিয়া—(সং স্ত্ৰী) শৱ দাহৰ সময়ত মূৰ ফুটোৱা কাৰ্য্য ।
सिर फोड़ डालना ।

কপাস—[সং স্ত্ৰী] কপাহ গছ ।
रूई का पौधा ।

কপিঞ্জল—[সং পুং] চাতক, পানী পিয়া চৰাই, পিপা চৰাই [কানকপ]
चातक, पपीहा ।

কপিলা—[সং স্ত্ৰী] বগী গাই ।
सफेद रंग की गाय ।

কপূত—(সং পুং) কু-পুত্ৰ ।
बुरा लड़का ।

कपूर— [सं पुं] কর্পূৰ।
सफेद रंग का सुगंधित द्रव्य।

कपोत—[सं पुं] কপৌ চৰাই।
कबूतर। (स्त्री-कपोती)

कपोल—(सं पुं) গাল।
गाल।

कपोल-कल्पना—(सं स्त्री) মনে-গঢ়া কথা।
मनगढन्त या बनावटी बात।

कफन—[सं पुं] শ ঢকা কাপোৰ।
शवाच्छादन।

कबंध—[सं पुं] মূৰ নথকা গঁাৰি, মেঘ।
बिना सिर का धड़, बादल।

कब—[क्रि वि] কেতিয়া।
किस समय।

कबरी—(सं स्त्री) খোপা।
स्त्रियों के सिर की चोटी।
(वि) चितकबरी।

कबाड़- [सं पुं] ভঙা-চিঙা বস্তু।
काम में न आनेवाली चीजे।
व्यर्थ का काम।

कबाड़ा- [सं पुं) জঞ্জাল।
झंझट।

कबाड़िया, कबाड़ी—(वि) খুচুৰা বস্তু বেচা বেপাৰী, দম্বুৰা।
टूटी फूटी चीजे बेचनेवाला।
झगड़ालू।

कबाब—(सं पु) ভজা মংস।
भूना हुआ मांस।

कबायली—(सं पुं) পাহাৰী জাতি
पहाड़ी जाति।

कबीला—(सं पुं) দল, কোনো বংশৰ লোকসকল।
झुंड। एकवंश के लोगों का वर्ग।

कबूल—(सं पुं) স্বীকাৰ।
स्वीकार।

कबूलना—(क्रि स) স্বীকাৰ কৰা।
स्वीकार करना।

कब्जा—(सं पुं) অধিকাৰ। বাকচ, দুৱাৰ-খিড়িকী আদিত লগোৱা লো বা পিতলৰ কব্জা।
अधिकार, इख्तियार, पीतल या लोहे का सन्दूक या किवाड़ में लगाने का पेच।

कब्जियत— [सं स्त्री]· শৌচ খোলোচা নোহোৱা।
पाखाना साफ न आना।

कब्र—[सं स्त्री] কবৰ।
जिस गड्ढे में शव गाड़ा जाता है।

कभी— (क्रि. वि.] কেতিয়াবা।
किसी समय।

कमंडल—(सं पुं) কমণ্ডলু।
सन्यासियों का जलपात्र।

कमखाब—(सं पु) এবিধ ৰেচমী কাপোৰ।
एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कमजोर— (वि) দুৰ্ব্বল।
दुर्बल।

कमजोरी—(सं स्त्री) দুৰ্ব্বলতা।
दुर्बलता।

कमनीय—(वि) সুন্দৰ।
सुन्दर।

कमर-बंद—[सं पुं] পেটি, মেঠনি।
कमर पर बाँधने की पेटी या कपडा।

कमरा—[सं पुं] কোঠা, খোটালী।
कोठरी,

कमल-नाल— [सं पुं] পদুমৰ ঠাৰি।
मृणाल।

कमली—(सं स्त्री) সৰু কম্বল।
छोटा कम्बल।

कमाई—(सं स्त्री) আয়।
कमाया हुआ धन। कमाने का काम।

कमाऊ—[सं पुं] উপাৰ্জন কৰোঁতা।
कमाने वाला।

कमान -(सं स्त्री) ধনু।
धनुष, फौजी आज्ञा।

कमाना—(क्रि. अ.) অৰ্জা।
उपार्जन करना।

कमानी—(सं स्त्री) ঘড়ী আদিৰ স্প্ৰিং।
लोहे की लचीली तीली।

कमाल—(सं पुं) পাৰদৰ্শিতা, আচৰিত।
निपुणता, अनोखा काम।

कमीना—(वि) নীচ।
नीच।

कयाम—[सं पुं] আশ্ৰয় স্থল, নিশ্চয়।
ठहरने की जगह, निश्चय।

कयामत—(सं पुं)
সৃষ্টিৰ অন্তিম দিন, প্ৰলয়।
सृष्टि का अन्तिम दिन, प्रलय।

कयास – (सं पुं) অনুমান।
अनुमान।

करकट—(सं पुं) আবৰ ।
कूड़ा ।

करका—(सं पुं) শিল-বৰষুণ ।
ओला, शिलावृष्टि ।

करघा—(सं पुं) উঘা-চেৰেকী ।
कपड़ा बुनने का यन्त्र ।

करतब—(सं पुं) কাৰ্য্য, কৰ্ত্তব্য ।
कार्य, कला ।

करतार-कर्त्तार-(सं पुं) ঈশ্বৰ ।
ईश्वर ।

करतूत-(सं स्त्री) কাম, হস্তবিদ্যা ।
कर्म, करनी, हुनर ।

करधनी-(सं स्त्री) কৰ্দ্ধনি, সোণৰ বা ৰূপৰ ককালত পিন্ধা হাৰ ।
कमर में पहनने का एक गहना ।

करनी—(सं स्त्री) কাম, মৃতক-সংস্কাৰ, ৰাজমিস্ত্ৰীৰ এবিধ খুপী ।
कार्य, मृतक संस्कार, एक औजार ।

करभ—(सं पुं) হাতৰ পাছ-তলুৱা, হাতী বা উটৰ পোৱালি
हथेली के पीछे का भाग, ऊँट या हाथी का बच्चा ।

करम-कल्ला-(सं पुं) বঁধা কবি ।
बंद गोभी ।

करवट-(सं स्त्री) কাতিকৈ শোৱা মুদ্ৰা ।
हाथ या पार्श्व के बल लेटने की स्थिति या मुद्रा ।

करवत—(सं पुं) কৰত্‌ ।
आरा ।

करवाल—(सं पुं) নখ, তৰোৱাল
नाखून, तलवार ।

करवीर—[सं पुं] কৰবীৰ গছ, তৰোৱাল, শ্মশান ।
कनेर का पेड़, तलवार, श्मशान ।

करश्मा, करिश्मा—(सं पुं) আচৰিত কাম ।
अद्‌भुत काम । करामात ।

करामात—(सं स्त्री) চমৎকাৰ, আলৌকিক কাৰ্য্য ।
चमत्कार, अलौकिक कार्य ।

करार—(सं पुं) স্থিৰতা, ধৈৰ্য্য ।
स्थिरता, धैर्य, वादा ।

करारा— (वि) কঠোৰ, দৃঢ় ।
कठोर, तेज, बहुत कड़ा ।

कराहना-(क्रि अ) কেঁকা ।
व्यथा सूचक शब्द करना ।

करि-[सं पुं] হাতী ।
हाथी । [स्त्री—करिणी]

करीना- (सं पुं) ধৰণ, উপায় ।
ढंग, तरीका ।

करीब—(क्रि वि) ওচৰ, প্ৰায়।
समीप, लगभग।

करेजा, कलेजा—(सं पुं) কলিজা
हृदय, हृद्पिण्ड।

करैत—[सं पु] এবিধ বিষাক্ত
সাঁপ। ফেটীসাঁপ।
काल' साँप।

करोड़—(वि) কোটি।
सो लाख की संख्या।

कर्ज—[सं पुं [ধাৰ, ঋণ।
ऋण।

कर्तरी—(सं स्त्री) কেঁচি।
कैंची, कटारी।

कर्दम—[सं पुं) বোকা।
कीचड़, पाप।

कर्मकार- [सं पुं] কমাৰ।
लोहे का काम करनेवाला, नौकर

कर्षक—(सं पु) খেতিয়ক।
किसान, (विन) खींचनेवाला।

कलंदर—(सं पुं) মুচলমান সাধু,
ভালুক, বান্দৰ আদি নচুৱাওঁতা।
मुसलमान फकीर, भालू और
बन्दर नचाने वाला।

कल—(सं पुं) মধুৰ ধ্বনি, কালি
मधुर ध्वनि।

कलई—[सं स्त्री] বগিতাম।
मुलम्मा, चमक-दमक।

कल-कंठ—(सं पुं) কুলি চৰাই
कोयल, हंस [वि] कलकंठ।
मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलगी—[सं स्त्री] টুপী, পাগুৰী
আদিত লগোৱা চৰাইৰ পাখি।
टोपी, पगड़ी आदि में लगाया
जानेवाला पक्षियों के पर या
गुच्छे।

कलदार—(सं पुं) পেঁচ থকা, টকা
जिसमें कल या पेंच लगा हो।
रुपया।

कलधौत—(सं पुं) সোণ-ৰূপ।
सोना, चाँदी।

कलप—(सं पुं) গছৰ ছাল,
সাঁপৰ মোট।
कलफ, खिजाब।

कलमुँहा—(वि) কলঙ্কিত।
कलंकित, अभागा।

कलरव—[सं पुं] মধুৰ ধ্বনি;
কুলি চৰাই।
मधुर शब्द, कोयल।

कलवार—(सं पुं) এক মদ ব্যৱসায়ী
জাতি।
एक जाति जो शराब बनाती
और बेचती है।

কলস, কলসা—[সং পুং] কলহ, মন্দিৰৰ চূড়া ।
घड़ा, मन्दिर का शिखर ।

কলহ—[সং পুং] কাজিয়া ।
झगड़ा ।

কলা–(সং স্ত্ৰী) অংশ, চন্দ্ৰৰ ষোল ভাগৰ এভাগ; কৌশল, নিপুনতা, বিভূতি ।
अंश, चन्द्रमा या सूर्य का भाग, कौशल, निपुणता, विभूति, कौतुक ।

কলাই—(সং স্ত্ৰী) আস্তিন, মণিবন্ধ
हाथ का गट्ठा । मणि बंध ।

কলাকংদ—(সং পুং) বৰফী, এবিধ মিঠাই । बरफी मिठाई ।

কলাধর—(সং পুং) জোন, চন্দ্ৰমা ।
चन्द्रमा ।

কলাপ— (সং পুং) সমূহ, ময়ুৰৰ পাখি, তূণীৰ ।
समूह, मोर की पूँछ, तूणीर ।

কলাপী—(সং স্ত্ৰী) ময়ুৰ, কুলি চৰাই ।
मोर, कोयल ।

কলাম–(সং পুং) বাক্য, কথোপকথন, আপত্তি ।
वाक्य, बातचीत, एतराज ।

কলাবা–(সং পুং) সূতাৰ লেছা, লেছেৰা, হাতীৰ গল ।
सूत का लच्छा, हाथी की गरदन

কলি—(সং পুং) কাজিয়া, যুঁজ, কলিযুগ ।
कलह, पाप, संग्राम, कलियुग ।

কলিয়া— (সং পুং) মাংসৰ আঞ্জা ।
पकाया हुआ मांस ।

কলী—(সং স্ত্ৰী) ফুলৰ কলি ।
बिना खिला फूल ।

কলুষ—(সং পুং) পাপ, অধৰ্ম্ম ।
मलीनता, पाप, क्रोध (वि) मलिन, বেয়া । मलिन, बुरा ।

কলেজী—(সং পুং) ছাগলীৰ কলিজাৰ মাংস ।
बकरे के कलेजे का मांस ।

কলেবর—[সং পুং] দেহ, শৰীৰ, আকৃতি, আকাৰ ।
शरीर, ढाँचा, आकृति ।

কলেবা—(সং পুং) জলপান ।
जलपान, विवाह का एक रस्म ।

কলৈয়া—(সং স্ত্ৰী) কুস্তী ।
कलाबाजी ।

কলোল—(সং পুং) আমোদ-প্ৰমোদ ।
आमोद प्रमोद ।

কলৌঁজী—(সং পুং) কালজিৰা, বিশেষ ধৰণে বন্ধা তৰকাৰী ।

मंगलौर, भूनी हुई मसालेदार तरकारी ।

कल्प-(सं पुं) সময়ৰ বিভাগ, ব্ৰহ্মাৰ এদিন আৰু এৰাতি অৰ্থাৎ ১০০০ যুগ বা ৪,৩২০,০০০,০০০বছৰ। विधान; वेदों के छ: अंगों में से एक, काल का एक विभाग ।

कल्पांत--[सं पुं] প্ৰলয় ।
प्रलय ।

कल्मश-(सं पुं) পাপ, মল ।
पाप, मैल ।

कल्लर-(सं पुं) লুণীয়া মাটি ।
लोनी मिट्टी. ऊसर भूमि ।

कल्लोल—[सं पुं] ঢৌ, ৰং-ধেমালি ।
तरंग, आमोद-प्रमोद ।

कवच—(सं पुं) ৰণুৱাই গাত পিন্ধা লোৰ-আবৰণ, মাদলী, তাবিজ । किसी चीज का ऊपरी कड़ा आवरण, लोहे का वह आवरण जो योद्धा पहनते, तावीज ।

कवर—(सं पुं) চুলিৰ খোপা । আচ্ছাদন । केश पाश, गुच्छा, आवरण ।

कवलित—(वि) গ্ৰসিত, কৱলত পৰি থকা ।
खाया या निगला हुआ ।

कवायद—(सं स्त्री) নিয়ম, ব্যাকৰণ, কুচ-কাৱাজ ।
नियम, व्याकरण, सैनिकों के युद्ध अभ्यास की क्रिया ।

कश [सं पुं] চাবুক, শোহা কাৰ্য্য ।
चाबुक; खिचाव, हुक्के या चिलम का दम ।

कशा—(सं स्त्री) জৰি, চাবুক ।
कोड़ा ।

कष—(सं पुं) শান্, কষটি ।
सान कसौटी, जांच ।

कस—(सं पुं) টনা-টনি, বিবেচনা
खींच-तान, जांच बम, रोक ।

कसक—(सं स्त्री) মৃদু মনোবাণ, দ্বেষ, অভিলাষ ।
हलका सा दर्द, द्वेष, अभिलाषा ।

कसकना— [क्रि अ] দিন্‌-বিষকৈ বিষোৱা ।
हलका दर्द करना ।

कसना-(क्रि अ) খুব টানি বন্ধা, হেঁচি হেঁচি ভৰোৱা ।
खींचकर बांधना, ठूँसकर भरना ।

कसबा, कस्बा--(सं पुं) ডাঙৰ উন্নত গাঁৱ ।
शहर से छोटी और गाँव से बड़ी बस्ती ।

कसर—[सं स्त्री] ক্রটি ।
न्यूनता, अभाव ।

कसरत – (सं स्त्री) ব্যাযাম ।
व्यायाम ।

कसार—[सं पुं]পিঠাগুৰিৰ লাডু ।
चावल-चूर्ण का बना लड्डू ।

कसीदा – (सं पुं) কাপোৰত ফুল তোলা কাম ।
कपड़े पर बेल बूटे का काम ।

कसूर—[सं पुं] দোষ, অপৰাধ ।
अपराध, दोष ।

कसेरा—[सं पुं] কঁহাৰ ।
काँसे का बरतन बनाने वाला ।

कसैला—(वि) কেহা ।
जिसके स्वाद में कसा-पन हो ।

कसैली—(सं स्त्री) তামোল ।
सुपारी ।

कसौटी—(सं स्त्री) কষটি, পৰীক্ষা ।
एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की उत्तमता परखते हैं । जांच, परख का तत्व

कहँ—[क्रि. वि] ক'ত ।
कहाँ ।

कहना— (क्रि सं) কোৱা ।
बोलना । सूचना देना ।

कहर—(सं पुं) বিপত্তি ।
विपत्ति (वि) भीषण ।
भीषण, अपार ।

कहवा—(सं पुं) যথেষ্ট ।
काफी ।

कहाँ—(क्रि. वि) ক'ত ।
किस जगह ।

कहानी—(सं स्त्री) গল্প ।
कथा, झूठी मनगढ़न्त बात ।

कहार—(सं पुं) এক নীচ জাতি ।
एक नीच जाति ।

कहावत—(सं स्त्री) কিম্বদন্তী, কথিত কথা ।
लोकोक्ति, कही हुई बात ।

कहा-सुनी-[सं स्त्री] বাদ-বিবাদ ।
वाद-विवाद ।

कही – [सं स्त्री) উপদেশ, কোৱা কথা ।
उपदेश, कथन ।

काँइयाँ—(वि) চতুৰ ।
चालाक, धूर्त ।

काँख - (सं स्त्री) কাষলতি ।
बगल ।

काँखना – (क्र अ) দুখতে উহ-আহ কৰা ।
श्रम या पीड़ा से उँह-आँह आदि शब्द करना ।

काँच—[सं स्त्री] धুতীৰ মুচ।
धोती का वह भाग जो पीछे खोंसा जाता है। (सं पुं) আৰ্চি। शीशा।

कांची—(सं स्त्री) ঘুনুচা।
करधनी, घुँघची।

काँजी—[सं स्त्री] দৈৰ পানী বা ঘোল।
पीसी राई आदि डालकर बनाया गया खट्टा रस। मट्ठा।

काँटा—(सं पुं) কাঁইট, গজাল।
कंटक, लोहे की कील, लम्बी नुकीली वस्तु।

कांड—(सं पुं) শাখা, খণ্ড।
पोर, वृक्ष का तना, शाखा, झगड़ा, विवाद।

कांत—(सं पुं) পতি, জোন, এক প্ৰকাৰৰ লো।
पति, चन्द्रमा, एक प्रकार का लोहा (वि) সুন্দৰ। सुन्दर, प्रिय।

कांता—(सं स्त्री) সুন্দৰী ৰমণী, পত্নী।
सुन्दरी स्त्री, पत्नी।

कांतार—(सं पुं) হাবি।
वन।

कांति—[सं स्त्री] দীপ্তি, শোভা।
दीप्ति, शोभा।

काँपना—(क्रि अ) কঁপা।
कंपित होना।

काँवर—(सं स्त्री) বাওঁকা।
बहँगी।

काँस—[सं स्त्री] কুশ্।
एक प्रकार की लम्बी घास।

काँसा—[सं पुं] কাঁহ, টিন, আৰু তাম মিহলাই কৰা এবিধ ধাতু।
एक प्रकार की मिश्र धातु।

कांस्य—[वि] কাঁহেৰে তৈয়াৰী।
काँसे का बना हुआ।

का—(वि) সম্বন্ধ কাৰক বা ষষ্ঠী বিভক্তিৰ চিন।
सम्बन्ध कारक का चिह्न।

काई—(सं स्त्री) শেলুৰৈ।
पानी में होनेवाली एक प्रकार छोटी घास, मैल। सं पु काउवी. कौवा

काक-तालीय—(वि) কাকো পৰিল, তালো সৰিল।
केवल संयोगवश होनेवाला।

काक-पक्ष—(सं पुं) শাৰীত লিখিব নৈ যোৱা শব্দৰ ওপৰত লিখিলে কৰা চিন, কাণ সঁতা।

कान के ऊपर रखे जानेवाले बाल के पट्टे ।

काकु—(सं पुं) ব্যঙ্গ ।
व्यंग्य, वक्रोक्ति ।

काछ—(सं स्त्री) কাচ, কঁকালৰ তলৰ পৰা উৰুলৈকে কিছু অংশ । ধুতিৰ লেংটি ।
पेड़ू और जाँघ तथा उसके नीचे का भाग । धोती का पीछे खोसा जानेवाला भाग ।

काछना—(क्रि. स) তৰল পদাৰ্থ হাতেৰে আঞ্জলি মাৰি উঠোৱা ।
तरल पदार्थ हाथ से पोछकर उठाना ।

काट—(सं पुं) কাটন ।
काटने की क्रिया या भाव ।

काटना—(क्रि सं) চুৰি আদিৰে টুকুৰা টুকুৰি কৈ কটা ।
छूरी आदि से खड खंड करना ।

काठी—(सं स्त्री) ঘোঁৰাৰ জীন ।
घोड़े की जीन ।

काढ़ना—(क्रि स) টানি উলিওৱা, কাপোৰত বেজি সূতাৰে ফুল তোলা ।
निकालना, बेलबूटे कपड़े पर बनाना

काढ़ा—[सं पुं] কথ্, ৰস ।
क्वाथ । रस ।

कातना—(क्रि अ) সূতা কটা ।
चरखे, तकली आदि पर सूत बनाना ।

कातिब—(वि) লিখক ।
लेखक ।

कातिल—(वि) হত্যাকাৰী ।
घातक, हत्यारा, भयंकर ।

कादंबरी—(सं स्त्री) কুলি চৰাই, সৰস্বতী, মদ ।
कोयल, सरस्वती, मदिरा ।

कादंबिनी—(सं स्त्री) ক'লা ডাৱৰ ।
काले बादलो का समूह ।

काना—(वि) কণা ।
जिसकी एक आँख फूट गयी हो ।

काना-फूसी [सं स्त्री] ফুচ-ফুচনি
कानो मे धीरे कही गयी बात ।

कानि—[सं स्त्री] লোকলাজ ।
लोक लज्जा ।

कानून—[सं पुं] আইন ।
राज नियम, विधि ।

कानून दाँ—(वि) আইনজ্ঞ ।
कानून का ज्ञाता ।

कापी—(सं स्त्री) প্ৰতিলিপি, বহী
नकल, प्रतिलिपि लिखने की बही

काफिया—(सं पुं) মিল. মিত্রাক্ষরী পদ্য ।
तुक ।

काफिर—(वि) বিধর্ম্মী, নাস্তিক ।
विधर्मी, नास्तिक ।

काफिला—(सं पुं) যাত্রীর দল ।
यात्रियों का दल ।

काफी—(वि) যথেষ্ট ।
यथेष्ट, पूर्ण ।

काबिल—(वि) সুযোগ্য ।
योग्य, विद्वान ।

काबू—(सं पुं) বশ ।
वश, अधिकार ।

काम-चलाऊ—(वि) নিদানত চলা ।
जिससे किसी भाँति काम निकल सके ।

काम-चोर—(वि) এলেহুৱা ।
आलसी ।

कामदार—[सं पुं] কর্ম্মচাৰী, कर्मचारी, अमला (वि) ফুল তোলা কাপোৰ । बेल-बूटे वाला (कपड़ा)

कामयाब—(वि) সফল ।
सफल ।

कामयाबी—(सं स्त्री) সফলতা, কৃতকাৰ্য্যতা । सफलता ।

कामर, कामरी—(सं स्त्री) কম্বল ।
कम्बल ।

कामला—(सं पुं) পাণ্ড-ৰোগ ।
कमल या पांडु रोग ।

कामांध—(वि) কাম-বাসনাত অন্ধ ।
जिसे काम वासना में भले बुरे का ज्ञान न हो ।

कामायिनी—(सं स्त्री) শ্ৰদ্ধা ।
श्रद्धा ।

कामारि—(सं पुं) মহাদেৱ ।
शिव ।

कामिल—(वि) পূৰ্ণ ।
पूर्ण योग्य ।

कायदा-[सं पुं] কৌশল, ৰীতি ।
विधि, चाल, रीति ।

कायम—স্থাপিত, নিৰ্দ্ধাৰিত ।
स्थिर, स्थापित, निर्धारित ।

कायर—(वि) ভীৰু ।
डरपोक, भीरु ।

कायल—(वि) মহত্ব স্বীকাৰ কৰোঁতা ।
जिसने प्रभावित होकर बात मान ली हो ।

काया—(सं स्त्री) শৰীৰ, কায়া ।
शरीर ।

কায়াপলট—(সং পুং) আমোল পৰিবৰ্ত্তন ।
बहुत बड़ा परिवर्तन ।

কার-কুন—(সং পুং) কাৰ্য্য-কৰ্ত্তা ।
प्रबंध कर्ता, कारिन्दा ।

কারগুজার—(বি) সুনিপুণ ।
अच्छी तरह काम पूरा करनेवाला ।

কারণিক—(বি) কাৰণ সম্বন্ধী ।
कारण संबंधी ।

কারতুস—(সং পুং) টোটা, বন্দুকৰ গুলি ।
बन्दूक की गोली ।

কার্রবাই—(সং স্ত্রী) কাৰ্য্য-তৎপৰতা, কৰ্ম্ম, কোনো অভিযোগৰ বিচাৰত সমুচিত দণ্ড বিধান ।
काम, कृत्य, कार्य तत्परता, चाल, किसी अभियोग पर विचार कर उचित विधान करना ।

কার-সাজ—(বি) চালাক-চতুৰ ।
बिगडा काम बनाने की युक्ति निकालनेवाला ।

কারস্তানী—(সং স্ত্রী) প্ৰতাৰণা ।
कारसाजी, चालबाजी ।

কারা—(সং স্ত্রী) বন্ধন, কাৰাগাৰ, দুঃখ-কষ্ট ।
बन्धन, कारागार, पीड़ा ।

কারাগার,কারাগৃহ—(সং পুং) বন্দী-শাল, ফাটক ।
बन्दी गृह ।

কারাবাস—[সং পুং] বন্দী হৈ থকা, অৱস্থা কাৰাবাস ।
बन्दी रहना ।

কারিंदা—[সং পুং] গোমস্তা, কৰ্ম্মচাৰী ।
गुमास्ता ।

কারীগর—(সং স্ত্রী) কাৰিকৰ, শিল্প কার (বি) শিল্প কাৰ্য্যত নিপুণতা । हस्त शिल्प में निपुण ।

কারু—[সং পুং] শিল্পী ।
शिल्पी ।

কারুণিক—[বি] দয়ালু ।
जिसे देखकर करुणा उत्पन्न हो, कृपालु ।

কারুঁ—(সং পুং) ধনী, কিন্তু কৃপণ ।
बहुत बड़ा धनी, पर कंजूस [मु] कारू का खजाना অতুল-সম্পত্তি । अनन्त सम्पत्ति ।

কার্মুক—(সং পুং) ধেনু, বাম-ধেনু ।
धनुष, इन्द्र-धनुष ।

কার্য্যবাহী—(সং পুং) কোনো কামৰ দায়িত্ব লওঁতা ।
कार्य का उत्तर दायित्व लेनेवाला

(सं स्त्री) कार्य्यविधि । कोई कार्य करनेकी प्रक्रिया [अं-प्रोसीडिंग) ।

कार्यान्वित—(वि) কামত লাগি থকা, কামত পৰিণত কৰা । कार्य या काममें लगा हुआ । (अं-एन फोर्स्ड) प्रत्यक्ष कार्य के रूपमें किया हुआ (अं-कैरिड आउट) ।

कालकूट—[सं पुं] গৰল, যাক খালে প্ৰাণ যায় । भयंकर विष ।

काल-कोठरी—(सं स्त्री) কাৰা-গাৰৰ সৰু কোঠা । जेल खाने की छोटी कोठरी ।

काल-चक्र—[सं पुं] কালৰ চকৰি কাল (মৃত্যু) ৰূপ অস্ত্ৰ । समय का हेर फेर, एक अस्त्र ।

काल-बंजर—[सं पुं] ছন্‌মাটি । वह भूमि जो बहुत दिनों से जोती न गयी हो ।

काल-रात्रि—(सं स्त्री) অন্ধকাৰ, ভয়াবহ, ৰাতি, ব্ৰহ্মাৰ ৰাতি । अन्धेरी और भयावनी रात, ब्रह्मा की रात ।

काला—(वि) ক'লা । कोयले के रंग का ।

काला-कलूटा— (वि) অত্যন্ত ক'লা । बहुत ही काला ।

कालापानी—[सं पुं] নিৰ্বাসন দণ্ড, মদ । देश निकाले का दण्ड, शराब ।

काला भुजंग—(वि) বৰ ক'লা । बहुत काला ।

कालिंदी—[सं स्त्री] যমুনা নদী, আফিং । यमुना नदी, अफीम ।

कालिका— (सं स्त्री) কালী গোসানী । काली देवी ।

कालिख-(सं स्त्री) চিমঁাহা, এলান্ধু, धूएँ के जमने से बनने वाला काला अंश ।

कालिमा—(सं स्त्री) কলঙ্ক । कालापन, अन्धेरा, कलंक ।

कालीन—(सं पु) সমগ, দলিচা । गलीचा ।

कालीमिर्च—জালুক । गोल मिर्च ।

काश, कास-(सं पुं) কুশ, কঁহি । एक प्रकार की घास, खाँसी ।

काशी-फल-(सं पुं) কোমোৰা । कुम्हड़ा ।

काश्त—(सं स्त्री) খেতি, জমিদাৰক খাজনা দি খেতি কৰাৰ অধিকাৰ।
खेती, जमीदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व।

काश्तकार—(सं पुं) খেতিয়ক।
किसान, काश्त लेने वाला।

काषाय—[वि] গেৰুৱা।
गेरुआ।

कासा—(सं पुं) বাটি, সাধু সন্ন্যাসীৰ নাৰিকলৰ খোলা।
प्याला, फकीरों का नारियल का पात्र।

काहिल—(वि) দুৰ্বল।
सुस्त।

काहु, काहू—(सर्व) কোনো।
किसी, किसी को।

काहे—(क्रि वि) কিয় ?
क्यों ? किसलिये।

किंकर—(सं पुं) দাস।
दास, राक्षसों का एक वर्ग।

किंकिणी—(सं स्त्री) কৰ্ধনি, সোণ বা ৰূপৰ ককালত পিন্ধা হাৰ।
छोटी घंटिका, करधनी।

किंगरी—(सं पुं) দোতাৰা।
छोटी सारंगी।

किंजल्क—(सं पुं) পদুমৰ, কেসৰ
कमल का केसर, कमल (वि) পদুম বৰণীয়া। कमल के केसर के रंग का।

किंशुक—(सं पुं) পলাশ।
पलाश।

कि—(सर्व) কিয়, কেনেকৈ।
क्या, किस प्रकार।
(अव्यय) যে নাইবা।
एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओ के बाद विषय वर्णन के पहले आता है। इतने में, या।

किच किच—(सं स्त्री) অনৰ্থক বাক্-বিতণ্ডা।
व्यर्थ का वाद-विवाद।

किचकाना—(क्रि अ) চকুত কেটাৰ [কেঁচকুৰি] পৰা।
आँख कीच से भरजांना।

किट किटाना—[क्रि अ] খঙতে দাঁত কামোৰা।
क्रोध से दांत पीसना।

किट्ट—(सं पुं) মলি।
मैल।

कितना—(वि) কিমান।
किस परिमाण,—मात्रा या संख्या का, अधिक (क्रि वि) किस परिमाण-मात्रा या संख्या में? अधिक।

किता—(सं पुं) চিলাই কৰিবলৈ কটা কাপোৰ, ধৰণ, সংখ্যা।
सिलाई के लिये कपड़े की काट। ढंग, संख्या।

किताब—(सं स्त्री) কিতাপ।
पुस्तक।

किताबी—(वि) কিতাপৰ আকাৰৰ, কিতাপ সম্বন্ধীয়।
किताब के आकार का, किताव सम्बन्धी।

कितिक, कितेक, केतिक—(वि) কিমান। कितना।

किधर—[क्रि वि] কোন ফালে? किस ओर?

किधौं—[अव्य] নাইবা, কিজানি। अथवा, न-जाने।

किन—[सर्व] কোনবোৰ,। किस शব্দৰ বহুবচন। 'किस' का बहु वचन। (क्रि वि) কিয় নহয়, যদি। क्यों नहीं, चाहे।

किनारदार—[वि] পাৰিযুক্ত।
जिसमें किनारा बना हो।

किनारा—(सं पुं) পাৰ, তট।
किसी वस्तु का अन्तिम सिरा, तट।

किनारे—(क्रि वि) পাৰত।
सिरे पर, तट पर।

किन्नर—(सं पुं) কুবেৰৰ পৰিষদ, দেৱলোকৰ গায়ন।
एक प्रकार के देवता, गाने बजाने वाली एक जाति।

किफायत—(सं स्त्री) মিতব্যয়।
मितव्यय।

किफायती—(वि) মিতব্যয়ী।
मित व्ययी, सस्ता।

कियारी, क्यारी—(सं स्त्री) খন্দা।
खेत की पौधे रोपे जानेवाली पंक्ति।

किरकिरा—(वि) খৰ-খৰীয়া, কৰকৰীয়া।
जिसमें महीन और कड़े बालू के रवे पड़े हों।

किर-किरी—(सं स्त्री) কুটা, কণিকণা।
धूल या तिनके के कण। अपमान।

किरच, किरचा—[सं स्त्री] এবিধ দীঘল তৰোৱাল।

एक प्रकार की सीधी तलवार।
छोटा नुकीला टुकड़ा।

किरणमाली—(सं पुं) সূৰ্য্য।
सूर्य।

किरमिच— (सं पुं) এবিধ ডাঠ কাপোৰ (ইয়াৰে জোতা, তম্বু আদি তৈয়াৰ কৰা হয়)।
एक प्रकार का मोटा कपड़ा (अं—कैन्वस)

किरना—(सं पुं) হালধী, জলকীয়া, নিমখ আদি মচলা।
हल्दी, मिर्च आदि मसाले।

किराया—(सं पुं) ভাড়া।
भाड़ा।

किरायेदार— (सं पुं) ভাডাত বস্তু লওঁতা।
किराये पर कोई चीज लेनेवाला।

किरिया—(सं पुं) শপত।
शपथ।

किरीट—(सं पुं) কিৰীটি।
सिरपर पहनने का एक आभूषण।

किलकना—(क्रि. अ) হৰ্ষধ্বনি কৰা
हर्ष ध्वनि करना।

किलकारी—(सं. स्त्री) হৰ্ষধ্বনি।
हर्ष ध्वनि।

किलनी—(सं पुं) চিকৰা।
पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक छोटा कीड़ा।

किला—(सं पुं) দুৰ্গ।
दुर्ग।

किलेबन्दी—(सं स्त्री) দুৰ্গ সজা কাম।
किले बनाने का काम।

किल्लत—[सं स्त्री] কম।
कमी, तंगी।

किल्ली—(सं स्त्री) খুঁটা; খিলা।
खूँटी, सितकिनी।

किवाड़—(सं पुं) দুৱাৰ।
दरवाजा।

किशलय—(सं पुं) গছৰ কুঁহিৰাত।
नये कोमल पत्ते।

किश्ती—[सं स्त्री] নাও, কিস্তি দবব পিহা পাত্ৰ।
नौका।

किस—(सर्व) কোন।
'कौन' और 'क्या' का विभक्ति युक्त रूप।

किसान—(सं पुं) খেতিয়ক।
खेतिहर।

किसी—(सर्व) কোনো।
'कोई' का विभक्ति युक्त रूप।

क़िस्त—(सं स्त्री) কিস্তি।
कई बार करके ऋण आदि चुकाने का ढंग। ऋण का वह भाग जो इस तरह चुकाया जाय।

क़िस्म—(सं स्त्री) প্ৰকাৰ।
प्रकार, ढंग।

क़िस्मत—(सं स्त्री) ভাগ্য।
भाग्य।

क़िस्सा—[सं पुं] কাহিনী, বৃত্তান্ত।
कहानी, वृत्तान्त।

कीचड़—(सं पुं) বোকা।
पंक, किसी चीज का गाढा मैल।

कीड़ा—(सं पुं) পোক, সাপ।
कीट, साँप।

कीमत—[सं स्त्री] দাম।
मूल्य, महत्व।

कीमती—(वि) মূল্যবান।
बहुमूल्य।

कीमिया—(सं स्त्री) ৰসায়ন।
रसायन।

कीर—(सं पुं) ভাটৌ।
तोता।

कील—(सं स्त्री) গজাল।
लोहे या काठ का बना काँटा।

कीलाल—[सं पुं] পানী, তেজ, অমৃত।
पानी, रक्त, अमृत।

कीली—[सं स्त्री] খিল।
चक्र के बीच की कील। ध्योड़ा।

कीश—(सं पुं) বান্দৰ।
बन्दर।

कुआँरा, कुवाँरा—(वि) অবিবাহিত।
अविवाहित।

कुंकुम— (सं पुं) কাশ্মীৰ দেশত হোৱা এবিধ সুগন্ধি হালধীয়া ফুলৰ শুকান কেশৰ বা গুৰি।
केसर, रोली।

कुँजड़ा—(सं पुं) শাক-পাচলি বেচা জাতৰ মানুহ।
तरकारी बेचनेवाली एक जाति।

कुंजर, कुंजल—(सं पुं)হাতী।
हाथी।
[वि] শ্ৰেষ্ঠ।
श्रेष्ठ।

कुंजी—(सं स्त्री চাবি টীকাৰ পুথি।
चाबी, टीका-पुस्तक।

कुंडल—(सं पुं) কেঁৰিয়া। কাণত পিন্ধা অলঙ্কাৰ
कान में पहनने का एक गहना।
वृत्त का घेरा

कुंडली—(सं स्त्री) গ্ৰহৰ স্থিতি-সূচক চক্ৰ, সোঁৱৰণী, সাপে কুণ্ডলী কৰি থকা মুদ্ৰা।
ग्रह-स्थिति सूचक चक्र। साँप के गोलाकार बैठने की मुद्रा।

कुंडा—(सं पुं) ডাঙৰ মাটিৰ কলহ। শিকলি।
बड़ा मटका, दरवाजे की चौखट में सांकल लगाने का कोंढा।

कुंतल [सं पुं] মূৰৰ চুলি।
सिर के बाल।

कुंद—(सं पुं) খৰিকা জাঁই, পদুম। जूही की तरह का एक पौधा, कमल, (वि) কুণ্ঠিত।
कुंठित।

कुंदन—(सं पुं) বিশুদ্ধ সোণ।
शुद्ध सोना।
(वि) নিৰোগ। नीरोग।

कुंभ—(सं पुं) মাটিৰ কলহ।
मिट्टी का घड़ा।

कुंभी पाक—[सं पुं] নৰক।
नरक।

कुंवर, कुँअर -(सं पुं) কোঁৱৰ।
लडका, पुत्र राजपुत्र।

कुकुर मुत्ता—(सं पुं) কাঠফুলা। বেংছাতা।
एक प्रकार की बदबूदार खुमी।

कुक्कुट—(सं पुं) কুকুৰা।
मुरगा।

कुक्कुर—(सं पुं) কুকুৰ।
कुत्ता।

कुक्षि—(सं स्त्री) পেট।
पेट, उदर।

कु-घात—(वि) কু-অৱসৰ, বেয়াকৈ আহত।
बेमौका, बुरी तरह से किया हुआ घात।

कुच—[सं पुं] পিযাহ, স্তন।
छाती, स्तन।

कुचक्र—[सं पुं] ষড়যন্ত্ৰ।
षड़यन्त्र।

कुचलना—(क्रि अ) ভৰিৰে গচকি পেলোৱা।
पैर से रौंदना।

कुचाल—(सं स्त्री) অসৎ আচৰণ।
बुरा आचरण, शरारत।

कुचैला - (वि) লেতেৰা, মলিযন।
मैले कपड़ोवाला, मैला।

कुछ—(वि) কিছুমান, অলপমান।
थोडी संख्या या मात्रा का। थोड़ा-सा। मान्य।
(सर्व) কোনোৱা। कोई।

कुजाति—(सं स्त्री) অজাতি।
बरी जाति।

[स ं पु ं] अजातिৰ বা জাতি বহিষ্কৃত মানুহ। बुरी जाति का या जातिसे बहिष्कृत आदमी।

कुट— (स ं पु ं) ঘৰ, দুৰ্গ, কলহ। घर, गढ़, कलस। कूटकर बनाया हुआ खंड।
(स ं स्त्री) এবিধ গছৰ পুলি। एक पौधा।

कुटना—[क्रि अ] খুক-খুককৈ কটা। कूटा जाना (स ं पु ं) খুন্দনি মাৰি, ঢেঁকী ঠোৰা। कूटने का ओजार।

कुटनी, कुट्टनी— (स ं स्त्री) বেশ্যাৰ দালাল; খৰিয়াল লগোৱা তিৰোতা। स्त्रियों को बहकाकर परपुरुषसे मिलानेवाली। झगड़ा करानेवाली।

कुटिया, कुटी, कुटीर—(स ं स्त्री) কুটীৰ, পঁজা ঘৰ। झोंपड़ी।

कुटिलाई—(स ं स्त्री) কুটিলতা। कुटिलता।

कुटेव—(स ं स्त्री) বেয়া অভ্যাস। बुरी आदत।

कुट्टी—(स ं स्त्री) কুটা ঘাঁহ। ফটা কাগজ-পত্ৰ। चारेके छोटे छोटे टुकड़े। कूटा और सड़ाया हुआ कागज।

कुठला(स्त्री·कुठली)-(स ं पु ं) ডুলি। अनाज रखनेका मिट्टी का बड़ा बरतन

कुठाँव—[स ं स्त्री] অশল। बुरी ठौर।

कुठाली—(स ं स्त्री) মচী। সোণাৰীৰ সোণ, ৰূপ আদি গলোৱা পাত্ৰ। सोना चाँदी गलाने की मिट्टी की घरिया।

कुठौर—(स ं पु ं) বেয়া ঠাই; কুঅৱসৰ। बुरी जगह, बेमौका।

कु-डौल—(स ं पु ं) কুৰূপ। वेढंगा।

कु-ढंग—(स ं पु ं) বেয়া গঢ়-গতি; কুৰুচ। बुरा ढंग।

कु-ढंगा—(वि) বেয়া ধৰণৰ; কুৰুচ। जो काम करने का ढंग न जानता हो, भद्दा।

कु-ढंगी—(वि) কু-আচৰণৰ। बुरे चाल चलन का।

कुढ़(न)—(सं पुं) অন্তৰৰ জ্বালা ।
मन ही मन होनेवाला दुःख ।

कुढ़ना—(क्रि. अ) ভিতৰি ভিতৰি জ্বলি-পুৰি মৰা ।
मन ही मन दुख करना या खीझना ।

कुतरना—(क्रि स) দাঁতেৰে কুটা ।
दाँतों से छोटा टुकड़ा काटना ।

कुतुब—[सं पुं] ধ্ৰুৱ-তৰা ।
ध्रुवतारा ।

कुतुबनुमा—(सं पुं) দিগ্‌দৰ্শকযন্ত্ৰ ।
दिग्दर्शक यन्त्र ।

कुतूहल-(सं पुं) কৌতূহল,নেদেখা বস্তু দেখিবলৈ বা নুশুনা কথা শুনিবলৈ ইচ্ছা ।
किसी चीज का देखने या सुनने की प्रबल इच्छा । आश्चर्य ।

कुत्सा—(सं स्त्री) নিন্দা ।
निन्दा ।

कुदरत—(सं स्त्री) প্ৰকৃতি; ঐশ্বৰিক শক্তি ।
प्रकृति, शक्ति । ईश्वरी शक्ति ।

कुदान—(सं पुं) বেয়া দান ।
बुरा दान ।
(सं स्त्री) জপিওৱা কাৰ্য্য ।
कूदने की क्रिया या भाव ।

कुधर-(सं पुं) পাহাৰ, অনন্ত নাগ ।
पहाड़, शेषनाग ।

कुनबा—(सं पुं) আত্মীয় স্বজন ।
कुटुम्ब; परिवार ।

कु-पंथ—[सं पुं] কু-পথ ।
बुरा मार्ग, बुरा मत ।

कु-पात्र—(वि) কু-পাত্ৰ; অলায়ক; অপাত্ৰ ।
बुरा पात्र, नालायक ।

कुप्पा—(सं पुं) তেল, ঘিউ আদি ৰখা বাচন—কুপা ।
घी, तेल रखने का बरतन ।

कुफ्र—(सं पुं) ইচলাম ভিন্ন মত ।
इस्लाम से भिन्न मत ।

कुबड़ा—(वि) কুঁজা ।
जिसकी पीठ टेढ़ी या झुकी हुई हो ।

कुबड़ी—[सं स्त्री] আঁকোৰা টোকোন ।
वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो ।

कु-बोल—(सं पुं) অসৎ-কথা ।
बुरी, अनुचित या अशुभ बात ।

कुभाव—[सं पुं] কু-চিন্তা ।
बुरा या दुष्ट भाव ।

कुमक—[सं स्त्री] সহায়তা ।
सहायता, सैनिक कार्य के लिये

या सैनिक आदि के रूप में मिलनेवाली सहायता।

कुमाच—[सं पुं] এবিধ বেশমী কাপোৰ।
एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कुमार्ग, कुमारग — (सं पुं) অপথ।
बुरा मार्ग, अधर्म।

कुमुद—[सं पुं] ভেঁট ফুল।
कमल जो रातको खिलता है

कुम्हलाना—(क्रि अ) মৰহি যোৱা।
मुरझाना, सूखने पर होना, कांति हीन होना।

कुम्हार— (वि) কুমাৰ।
मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

कुरंग—(सं पुं) হৰিণ।
हिरन।

कुरकुरा— (वि) খাওঁতে হোৱা মৰ্-মৰ্ শব্দ।
जिसे खाने पर कुरकुर शब्द हो।

कुरता—(सं पुं) কামিজ।
कमीज।

कुरबान, कुर्बान—(वि) উৎসর্গ।
निछावर।

कुरबानी, कुर्बानी—(सं स्त्री) বলি-দান, আত্মদান।
बलिदान।

कुररी—(सं स्त्री) এবিধ চৰাই।
एक पक्षी।

कुरसी—(सं स्त्री) চকী।
बैठने की चौकी।

कु-राह—(सं स्त्री) কু-পথ, অসৎপথ
बुरी राह।

कुरेदना— (क्रि अ) খান্দ।
खुरचना, खोदना।

कुर्क—(वि) কুৰুক, কোৰোক।
जिसकी कुर्की हुई हो। जब्त।

कुर्की-(सं स्त्री) কোৰোকী, কুৰুকী।
ऋण आदि न चुकाने पर राज्य द्वारा होनेवाला किसी की सम्पत्ति पर अधिकार।

कुर्मी, कुरमी—(सं पुं) কৃষিজীৱী এক জাতি।
तरकारी बोनेवाली एक जाति।

कुल—(सं पुं) জাতি বংশ, সমূহ।
वंश, जाति, समूह।
(वि) সৰ্ব্বমুঠ। समस्त, सारा।

कुल-कानि— [सं स्त्री] কুল-মৰ্য্যাদা।
कुल की मर्यादा।

कुलटा—(वि स्त्री) অসৎ-আচৰণ কাৰিনী। बदचलन। (सं स्त्री) বেশ্যা। कई पुरुषों से प्रेम रखनेवाली, वेश्या।

कुल-तारन— (বি) বংশ গৌৰৱ বৰ্দ্ধনকাৰী ।
वंश गौरव बढ़ानेवाला ।

कुलथी— (सं स्त्री) বগা মাহ, লেছেৰা মাহ ।
एक प्रकार के उर्द का अन्न ।

कुलफी— (सं स्त्री) টিনৰ গৰু পাত্ৰত ভৰাই বৰফৰ সংযোগত গোট মৰোৱা এবিধ গাখীৰৰ সোৱাদৰ মিঠাই ।
बर्फ की तरह जमाया दूध या शरबत ।

कुलबुलाना— (क्रि अ) লৰচৰ কৰা, চুচৰি যোৱা ।
कीडो का इधर उधर हिलना-डुलना । चंचल होना ।

कुलबोरन—(वि) বংশ মৰ্য্যাদা-বিনষ্টকাৰী ।
वंश मर्यादा नष्ट करनेवाला ।

कुलाचार—(सं पुं) বংশত প্ৰচলিত ৰীতি ।
वंश में प्रचलित आचार ।

कुलिश— (सं पुं) হীৰা, বজ্ৰ, কুঠাৰ ।
हीरा, वज्र, कुठार ।

कुलीन—(वि) উত্তম-কুলজাত ।
उत्तम कुल में उत्पन्न ।

कुल्ला, (स्त्री कुल्ली) (सं पुं)—মুখত পানী ভৰাই কুল-কুল কৰা কাৰ্য্য ।
मुँह साफ करने के लिये पानी मुँह में लेकर फेकने की क्रिया ।

कुल्हड़—(सं पुं) মাটিৰ গিলাচ ।
मिट्टी का गिलास जैसा पात्र ।

कुल्हाड़ा, —(सं पुं) কুঠাৰ ।
कुठार ।
[सं स्त्री] कुल्हाडी ।

कुवलय— [सं पुं] নীলা পদুম, ভূ-মণ্ডল ।
नील कमल, भू-मंडल ।

कु-विचार—(सं पुं) অবিচাৰ ।
बुरा विचार ।

कुश—[सं पुं] কুশ বন, শ্ৰীৰামচন্দ্ৰৰ পুত্ৰ ।
एक तरह की घास ।

कुशल-क्षेम— [सं पुं] কুশল মঙ্গল ।
राजी-खुशी ।

कुशलाई, कुशलात, कुसलई, कुसलाई, कुसलात— (सं स्त्री) নিপুণতা, কুশল মঙ্গল।
कुशलता ।

कुशाग्र—[वि] সুতীক্ষ্ণ, চোখা।
कुश के अग्र भाग की तरह तीव्र, तेज ।

कुसंगति—(सं स्त्री) কুসঙ্গ।
बुरों का संग या साथ ।

कुसगुन—[सं पुं] অমঙ্গল। লক্ষণ।
बुरा सगुन ।

कु-समय— [सं पुं] অসময়।
बुरा समय ।

कु-साइत— (सं स्त्री) অশুভ মুহূর্ত।
अशुभ मुहूर्त ।

कुसुंभ—(सं पुं) ফুল।
कुसुम, केसर ।

कुसुंभो—[वि] রঙা।
कुसुम के रंग का । केसरिया, लाल ।

कुसुम बाण, कुसुमशर, कुसुमायुध-[सं पुं] কামদেব।
कामदेव ।

कुसुमाकर— [सं पुं] বসন্ত ঋতু, ফুলের বাগিচা।
वसन्त ऋतु, फुलवारी ।

कुसेस[य]— (सं पुं) পদ্ম।
कमल ।

कुहक, कुहुक—(सं पुं) মায়া, ঠগ।
माया, धूर्त, जादूगर
(सं स्त्री) কোকিল ডাক।
कोयल की कूक ।

कुहर—[सं पुं] ছিদ্র।
छेद सूराख ।

कुहराम—(सं पुं) বিলাপ; উথলপাথাল।
विलाप, हलचल ।

कूँचना—(क्रि स) গচকি দিয়া।
कुचल देना ।

कूँचा [स्त्री कूँची]–(सं पुं) ঝাঁটা তুলিকা।
झाड़ू, तूलिका ।

कूक—(सं स्त्री) কোকিল ডাক।
कोयल का कूजन ।

कूच—(सं पु) প্রস্থান, যাত্রা।
प्रस्थान, रवाना ।

कूचा—(सं पुं) সরু রাস্তা।
संकरा रास्ता, गली ।

कूजन—(सं पुं) মধুর ধ্বনি।
मधुर शब्द (पक्षियों का)

कूट–(सं पुं) শৃঙ্গ, জন্তুর শিং, ছল।
पहाड़ की ऊँची चोटी । जानवर का सींग । ढेर । छल, रहस्य ।

कूटना—(क्रि स) খুন্দা, মৰা ।
किसी भारी चीजसे आघात कर, चूर चूर करना । मारना ।

कूड़ा, कूरा—(सं पुं) জাবৰ-জোথৰ ।
आवर्जना, रद्दी चीज ।

कूत—[सं स्त्री] আন্দাজমতে কৰা হিচাপ ।
अन्दाज से हिसाब लगाने की क्रिया या भाव ।

कूतना—(क्रि स) অনুমান কৰা ।
अनुमान करना ।

कूद—[सं स्त्री] জঁাপ ।
कूदने की क्रिया या भाव ।

कूदना—(क्रि अ) জঁপিওৱা ।
उछलना, फाँदना ।

कूनना, कुनना-(क्रि अ) আঁচোৰ্ ।
खरोंचना ।

कूबड़—(सं स्त्री) কুঁজ ।
पीठ का टेढ़ापन ।

कूर—(वि.) নিষ্ঠুৰ, মূৰ্খ ।
क्रूर ।. जड़, मूर्ख ।

कूरी [सं स्त्री] সৰু টিলা ।
छोटा टीला ।

कूल्हा—(सं पुं) তপিনা-হাড ।
कमर के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ ।

कूवत—[सं स्त्री] শক্তি ।
शक्ति ।

कृतयुग—(सं पुं) সত্যযুগ ।
सत्य युग ।

कृतांत—(सं पुं) যমৰজা ।
यमराज ।

कृत्य-(सं पु) ধাৰ্মিক কাৰ্য্য, কাৰ্য্য ।
कार्य, धार्मिक कार्य ।

कृपया – (क्रि वि) অনুগ্ৰহ কৰি ।
अनुग्रह पूर्वक ।

कृपाण—(सं पुं) তৰোৱাল ।
तलवार ।

कृश, कृशित-(वि) ক্ষীণ ।
दुबला पतला ।

कृशान, कृशानु—(सं पुं) জুই ।
अग्नि ।

कृष्णाभिसारिका=[सं स्त्री]
গভীৰ আন্ধাৰ ৰাতি নিৰ্দিষ্ট স্থানত প্ৰেমিকক লগ পাবলৈ যোৱা নায়িকা ।
अंधेरी रात में प्रेमी से मिलने के लिये संकेतस्थान पर जानेवाली नायिका ।

केंचुआ—(सं पुं) কেঁচু ।
सूत की तरह लम्बा एक कीड़ा ।

केंचुली, कंचुल—(सं स्त्री)
মোট, চকলা।
सर्प आदि के शरीर का ऊपरी चमड़ा जो हर साल उतर जाता है।

के—(वि भ) সম্বন্ধ কাৰকৰ বহুবচনৰ চিন।
सम्बन्ध सूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप।
(सर्व) কোন। कौन।

केकड़ा—[सं पुं] কেঁকোৰা।
पानी में रहनेवाला एक छोटा जन्तु।

केकी—(सं स्त्री) ময়ূৰ।
मयूर।

केत—(सं पुं) ঘৰ, ঠাই, পতাকা।
घर, स्थान, पताका।

केतन (सं पुं) নিমন্ত্ৰণ; পতাকা।
निमंत्रण, ध्वजा।

केतु—(सं पुं) জ্ঞান; পতাকা, নেজাল তৰা।
ज्ञान, ध्वजा, एक राक्षस, पुच्छल तारा।

केयूर—(सं पुं) বাজু।
बाजू बन्द।

केर—(प्रत्य) অৰ।
का।
(क्रि वि) নিচিনা
की तरह।

केराव—(सं पुं) মটৰমাহ।
मटर।

केरी—(प्रत्य) অৰ।
की।
(सं स्त्री) আমৰ কুঁহি।
आम का छोटा कच्चा फल।

केला—(सं पुं) কল।
एक प्रकार का फल।

केवट-[सं पुं] কেওট; নাৱৰীয়া।
मल्लाह।

केवल-ज्ञानी—[सं पुं) শ্ৰেষ্ঠ-জ্ঞানী।
विशुद्ध ज्ञानी।

केवा-(सं पुं) পদুম; কেতেকী।
कमल, केतकी, बहाना।

केश-पाश—[सं पुं] চুলিৰ কোছা।
बालों की लट।

केशर, केसर—[सं पुं] কেশৰ, ফুলৰ মাজত থকা সৰু চুলি বা আঁহ। ঘোঁৰা, সিংহ আদিৰ ডিঙিৰ নোম।
फूलों के बीच के पतले सीके।

एक पौधा जिसके फूलों के सींके सुगन्धित होते हैं। घोड़े, सिंह आदिके अयाल।

केसरिया—(वि) গেৰুৱা, কেশৰ-যুক্ত।
केसर के रंग का। गेरुआ, जिसमें केसर पड़ा हो।

केसरी—(सं पुं) সিংহ, ঘোঁৰা।
सिंह, घोड़ा।

केहि—(वि) কাক।
किसको, किसे।

केहू—(सर्व) কোনো।
कोई।

कैंचा—(वि) বেঁকা-বেঁকী।
ऐंचा-ताना।
(सं पुं) ডাঙৰ কেঁচী।
बड़ी कैंची।

कैंची—[सं स्त्री] কেঁচী।
कतरनी, आड़ी, तिरछी रखी हुई दो तिलियाँ या खूँटियाँ।

कै—(वि) কেইটা। कितना, कई। [अव्य] নাইবা। या, अथवा
(सं स्त्री) বাঁতি।
वमन।

कैतव—(सं पुं) ফাকি, জুৱা,।
धोखा, जूआ।
(वि) ঠগ, জুৱাৰী।
धोखेबाज, जुआरी।

कैथी—(सं स्त्री) বিহাৰত প্ৰচলিত এবিধ লিপি।
बिहार में प्रचलित एक लिपि।

कैद—(सं पुं) বন্ধন, কাৰাবাস।
बन्धन, कारावास।

कैद-खाना—(सं पुं) বন্দীশাল।
कारागार।

कैदी—(वि) বন্দী।
बन्दी।

कैधों—(अव्य) নাইবা।
या।

कैरव—(सं पुं) বগা পদুম, শত্ৰু, জুৱাৰী।
सफेद कमल, शत्रु।

कैवल्य—(सं पुं) মোক্ষ।
मुक्ति।

कैसा, कैसी—(वि) কেনেকুৱা।
किस प्रकार का, किसी प्रकार का नही (प्रश्नमें निषेधार्थक), जैसा

कैसे—[क्रि वि] কেনেকৈ।
किस प्रकार से।

कोंचना—(क्रि अ) বিন্ধি দিয়া।
नुकीली चाज गड़ाना।

कौंढ़ा—[सं पुं] হাঁকোটা।
धातु का वह कड़ा या छल्ला जिस को बाँस या छड़ीपर लटकाया जाय।

कौंपल—(सं स्त्री) কুঁহিপাত।
नयी और मुलायम पत्ती, अंकुर।

कौंहड़ा—(सं पुं) বঙা লাউ।
कुम्हड़ा।

कौंहार—(सं पुं) কুমাৰ।
कुम्हार।

को—[विभ] 'অক'। কৰ্ম্ম আৰু সম্প্ৰদান কাৰকৰ চিন।
कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति।

कोआ, कोया—(सं पु) এবী পলুৰ মোট; কঠালৰ কোঁহ।
रेशम के कीड़े का कोश, कटहल के पके बीज-कोष, आँखका डेला।

कोइरी—[सं पुं] এক জাতি।
एक जाति।

कोइली—(सं स्त्री) আমঠু।
आमकी गुठली।

कोई, (कोउ, कोऊ, कोय)—[सर्व]
(वि) কোনোবা:
ऐसा, जो अज्ञात हो। न जाने कौन सा, बहुतों में चाहे जो, एक भी।
[क्रि वि] প্ৰায়। लगभग।

कोक—(सं पुं) চকোৱা চৰাই; ভেকুলী।
चकवा, मेंढक।

कोकनद—(सं पुं) বঙা-পদুম।
लाल कमल।

कोकशास्त्र—(सं पुं) কামশাস্ত্ৰ।
काम शास्त्र।

कोकाबेली—(सं स्त्री) নীলা-ভেঁটফুল।
नीली कुमुदिनी

कोको—(सं स्त्री) কাউৰী।
मादा कौवा

कोख—[सं स्त्री] পেট; গৰ্ভাশয়।
उदर, पेटके दोनों तरफ का स्थान, गर्भाशय।

कोगी—(सं पुं) কুকুৰৰ নিচিনা এবিধ চিকাৰী জন্তু।
एक प्रकार का जानवर।

कोच—(सं पुं) চাৰি চকাৰ এবিধ ধুনীয়া ঘোঁৰা গাড়ী, কোমল গাদীযুক্ত পালেং বা চকী।
एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी।
गद्देदार पलंग या कुरसी।

कोचवान—[सं पुं) ঘোঁৰা-গাড়ী চালক।
घोड़ा गाड़ी हाँकने वाला।

কোআগর—(সং পুং) শৰৎ-পূৰ্ণিমা, লক্ষ্মী-পূৰ্ণিমা।
शरद पूर्णिमा।

কোট-(সং পুং) দুৰ্গ; মহল; সমূহ; এবিধ চোলা।
दुर्ग, प्राचीर, महल, समूह, एक पहनावा।

কোটৰ—(সং পুং) গছৰ খোৰোং।
पेड़ का खोखला भाग।

কোটি—(সং স্ত্ৰী) ধনুৰ মূৰ, অস্ত্ৰৰ জোং, শ্ৰেণী,।
धनुष का सिरा, अस्त्र की नोक, वर्ग, श्रेणी। उत्कृष्टता।

কোটি-বন্ধ—[সং পুং] শ্ৰেণী।
নিৰ্দ্ধাৰণ।
कोटियाँ स्थिर करना।
(अं—ग्रेडेशन)

কোটিশঃ—[ক্ৰি. বি.] অনেক উপায়ে।
अनेक प्रकार से।
(বি) অত্যধিক।
बहुत अधिक।

কোঠ—(বি) টেঙাৰ কাৰণে মুখত দিব নোৱাৰা।
ऐसा खट्टा जो चबाया न जा सके।
बासों की कोठी।

কোঠৰী—(সং স্ত্ৰী) খোঁটালী।
छोटा कमरा।

কোঠাৰ—[সং স্ত্ৰী] ভাণ্ডাৰ।
भंडार।

কোঠী—(সং স্ত্ৰী) হাউলী, ডাঙৰ দোকানঘৰ; ডুলি।
हवेली, बड़ी दूकान, अनाज रखने का कुठला।

কোড়না—(ক্ৰি স) মাটি খন্দা।
मिट्टी खोदना।

কোড়া—(সং পুং) চাবুক, উত্তেজনা ভৰা কথা।
चाबुक, उत्तेजक या मर्मस्पर्शी बात।

কোঢ়—(সং পুং) কুষ্ঠ ৰোগ।
कुष्ट रोग।

কোঢ়ী—[বি] কুষ্ঠ ৰোগী।
कुष्ट रोग से पीड़ित व्यक्ति।

কোতৱাল—(সং পুং) দাৰোগা।
पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी।

কোতৱালী—[সং স্ত্ৰী] থানা, পদবী।
कोतवाल का पद या काम या कार्यालय।

কোতা,কোতাহ—(বি) অলপ, সৰু।
थोड़ा, छोटा।

कोताही—(सं स्त्री) ত্রুটি ।
त्रुटि ।

कोदंड—(सं पुं) ধনু ।
धनुष ।

कोदों—[सं पुं] একবিধ নিকৃষ্ট শস্য ।
एक प्रकार का मोटा अनाज ।

कोना—(सं पुं) কোন, চুক্ ।
दो रेखाओं के मिलन बिन्दु के बीच का स्थान । एकान्त स्थान ।

कोप—(सं पुं) খং ।
क्रोध ।

कोप-भवन—(सं पुं) ৰোষ-ঘৰ ।
वह स्थान जहाँ कोई रूठ कर पड़ा रहे ।

कोपीन, कौपीन—(सं पुं) সন্ন্যাসীৰ লেংটি ।
संन्यासियों आदि के पहनने की लंगोटी ।

कोयर—(सं पुं) সেউজীয়া ঘাঁহ ।
हरा चारा ।

कोयल, (पुं कोकिल)—(सं स्त्री) কুলি চৰাই ।
एक काला पक्षी ।

कोर—(सं स्त्री) মূৰ, কোণ, দ্বেষ, অস্ত্ৰৰ ধাৰ ।
सिरा, कोना, द्वेष, हथियार की धार ।

कोरक—(सं पुं) কলি ।
कली ।

कोर-कसर—(सं स्त्री) দোষ-ত্ৰুটি ।
दोष-त्रुटि ।

कोरमा—(सं पुं) ভজা মাংস ।
भुना हुआ मांस ।

कोरा—(वि) অব্যৱহৃত; নতুন ।
जो काम में नही लगाया गया हो । नया ।
(क्रि वि) কেৱল । केवल ।
(सं पुं) পাৰি নথকা ধুতি ।
बिना किनारे की धोती ।

कोल्हू—[सं पुं] ঘানী, তেল-শাল ।
बीजों का तेल या रस निकालने का यंत्र ।

कोविद—(वि) পণ্ডিত, জ্ঞানী ।
पंडित, विद्वान ।

कोश, कोष—কণী, ভঁৰাল, অভিধান, আবৰণ ।
अंडा, गोलक, संचित धन, अभिधान, खजाना, आवरण ।

कोशिश—[सं स्त्री] চেষ্টা ।
प्रयत्न, चेष्टा

कोष्ठ—[सं पुं] পাকস্থলী।
पेटका भीतरी भाग। कोठरी, अन्न, भंडार।

कोष्ठक—(सं पुं) বন্ধনী।
खाना, कोठा।

कोस— (सं पुं) ক্রোশ।
दो मील की दूरी।

कोसना—[क्रि. स] অভিশাপ দিয়া।
शापके रूपमें गालियाँ देना।

कोह—(सं स्त्री) পাহাৰ, খং।
पहाड़, क्रोध।

कोहनी—(सं स्त्री) কিলাকুটি।
हाथके बीच का जोड़।

कोहबर—(सं पुं) গোঁসাই ঘৰ।
वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुल देवता स्थापित किये जाते हैं।

कोहरा—(सं पुं) কুঁৱলী।
कुहासा

कोहान—(सं पुं) উটৰ পিঠিৰ কুঁজ।
ऊँट की पीठ का कुबड़।

कौंधना-[क्रि. अ] বিজুলী চিক্-মিক্ কৰা।
बिजली का चमकना।

कौआ, कौवा—[सं पुं] কাউৰ।
एक प्रकार का काला पक्षी।

कौड़ा— [सं पुं] ডাঙৰ কড়ি।
बड़ी कौड़ी।

कौड़ी—[सं स्त्री] ধন, টকা-কড়ি।
धन, रुपया पैसा। एक कीड़ा या उसका अस्थिकोश।

कौतुक—[सं पुं] কৌতুহল ; ৰং-ধেমালি।
कुतूहल, अचंभा, खेल-तमाशा।

कौतुकी-(वि) ৰং-তামচা কৰোঁতা।
कौतुक करनेवाला।

कौन—(सर्व) কোন।
एक प्रश्न वाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है।

कौम—(सं स्त्री) জাতি।
जाति।

कौमी—(वि) জাতীয়, ৰাষ্ট্ৰীয়।
जातीय, राष्ट्रीय।

कौमुदी— (सं स्त्री) জোনৰ পোহৰ।
चाँदनी।

कौर—(सं पुं) গৰাহ।
ग्रास।

कौल—[सं पुं] উত্তম বংশৰ, প্ৰতিজ্ঞা।
उत्तम कुल का, वाम मार्गी।

कौवाली—[सं स्त्री] এবিধ গীত।
एक प्रकार का, गीत।

कौषेय—(वि) পাটৰ, ৰেশমী।
रेशम का, रेशमी।

क्या—(सर्व) कि ?
कौनसी वस्तु या बात ?
(वि) কিমান ?
कितना ?
[क्रि वि] কিয় ?
क्यों ? किस लिये ?
[अव्य] প্ৰশ্নবোধক শব্দ।
प्रश्न सूचक शब्द।

क्यारी—(सं स्त्री) খন্দা, চাপ।
खेतों, बगीचों आदि में पौधे रोपने की पंक्तियाँ।

क्यों—(क्रि वि) কি কাৰণে, কিয় ?
किस लिये ?

क्रतु—(सं पुं) যজ্ঞ; নিশ্চয়।
यज्ञ, निश्चय।

क्रमेलक—(सं पुं) উট।
ऊँट।

क्रांत—(वि) আবৃত, অভিভূত।
दबा या ढँका हुआ, अभिभूत।

क्रान्ति—(सं स्त्री) গতি, বিপ্লৱ, ক্ৰান্তি।
गति,विप्लव।

क्रान्तिकारी—(वि) বিপ্লৱী।
विप्लवी, सम्पूर्ण उलट फेर कर देनेवाला।

क्रियात्मक—(वि) ব্যৱহাৰিক।
क्रियायुक्त, व्यावहारिक।

क्रिस्तान—(सं पुं) খৃষ্টান, খৃষ্টীয়ান।
ईसाई।

क्रोड़ पत्र—(सं पु) অতিৰিক্ত-পত্ৰ; পৰিশিষ্ট।
अतिरिक्त पत्र [अं सप्लिमेंट]

क्रोशिया—[सं पुं] চুৰেটাৰ আদি বোৱা শলা।
गंजी-मोजे आदि बुनने की तीली या सलाई।

क्रौंच—(सं पुं) ক্ৰৌঞ্চ পক্ষী।
एक पक्षी।

क्लिष्ट—(वि) দুঃখী, কঠিন।
दुखी, कठिन, जिसका अर्थ कठिनता से निकले।

क्लीव—[वि] নপুংসক। ভীৰু।
नपुंसक, डरपोक।

क्लेद—(सं पुं) ভিজা, তিতা, ঘাম।
गीलापन, पसीना।

क्वणित—(वि) বাজি থকা।
बजता हुआ।

क्वाथ—[सं पुं] কথ্।
काढ़ा, गाढ़ा रस।

क्षणदा—(सं स्त्री) ৰাতি।
रात।

क्षति-पूर्ति-(सं स्त्री) ক্ষতিপূৰণ।
क्षति को पूर्ण करने का काम या धन।

क्षत्रप—(सं पुं) প্ৰাচীন শক ৰজা সকলৰ উপাধি।
प्राचीन शक राजाओं की उपाधि।

क्षपणक—(वि) নিলাজ।
निर्लज्ज।
(सं पुं) নাঙঠ সন্ন্যাসী।
नंगा रहनेवाला संन्यासी।

क्षपा—(सं स्त्री) ৰাতি।
रात।

क्षयी—(वि) খীনাই যোৱা।
ক্ষয় ৰোগ।
क्षीण होनेवाला, क्षय रोगी।
[सं पुं] জোন।
चन्द्रमा।

क्षर—(वि) যি নষ্ট হয়।
नष्ट होनेवाला।
(सं पुं) পানী।
जल, अज्ञान।

क्षाम—[वि] খীণ।
दुबला-पतला।

क्षार—[सं पुं] খাৰ।
राख का नमक, खार।

क्षालन—(सं पुं) প্ৰক্ষালন।
धोना।

क्षितिज—[सं पुं] দিগন্ত আকাশ, মঙ্গল-গ্ৰহ, ভূমিৰ পৰা উৎপন্ন।
दिगन्त, मंगल ग्रह, भूमिसे उत्पन्न

क्षीर—[सं पुं] গাখীৰ; পানী।
दूध, जल, खीर।

क्षुण्ण—(वि) অভ্যস্ত, খণ্ডিত, অসন্তুষ্ট।
अभ्यस्त, खंडित, असन्तुष्ट।

क्षुधा—(सं स्त्री) ভোক।
भूख।

क्षुर—(सं पुं) খুৰ, জন্তুৰ ঠেঙৰ খুৰা।
छूरा। पशुओं के पाँव का खुर।

क्षेत्रज-(वि) ক্ষেত্ৰৰ পৰা উৎপন্ন।
जो क्षेत्र में या क्षेत्र से उत्पन्न हो।
(सं पुं) পৰ-পুৰুষৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা।
दूसरे पुरुषके संयोगसे उत्पन्न पुत्र।

क्षेत्रिक—(वि) ক্ষেত্ৰ সম্বন্ধীয়।
क्षेत्र सम्बन्धी।

क्षेप, क्षेपण—[सं पुं] নিক্ষেপ।
फेंकना, गिराना, बिताना।

क्षेपक—(वि) নিক্ষেপ কৰোঁতা।
फेंकनेवाला।
(सं पुं) গ্ৰন্থৰ প্ৰক্ষিপ্ত ভাগ।
मूलग्रंथ में बाद में जोड़ा या मिलाया हुआ।

क्षेम—(सं पुं) বিপদৰ হাত সৰা, সুখ-সম্পদ।
संकट से बचाना। कुशल-मंगल, सुख।

क्षोणि—(सं स्त्री) পৃথিবী।
पृथ्वी।

क्षौम—[सं पुं] পাটৰ কাপোৰ। (বিশেষকৈ শণ সুতাৰ)
सन आदिसे बुना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

क्षौर—[सं पुं] ডাড়ি-মূৰ আদি খুৰোৱা কাৰ্য্য, ক্ষৌৰকৰ্ম।
हजामत।

ख

ख—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ দ্বিতীয় আখৰ।
व्यंजन वर्णो में दूसरा अक्षर।

खंग, खड्ग, खड़्ग—(सं पुं) তৰোৱাল।
तलवार, गेंडा।

खँगालना—(क्रि स) পানীৰে ধোৱা, খালি কৰা।
धोना, सब कुछ उड़ा ले जाना।

खँचिया, खाँची—(सं स्त्री) খৰাহি, পাচি।
टोकरी। (सं पुं—खाँचा)

खंज—(सं पुं) খঞ্জন চৰাই।
खंजन पक्षी।
(वि) খোৰা।
लंगड़ा।

खंजर—(सं पुं) কটাৰী।
कटार।

खंजरी—(सं स्त्री) খঞ্জৰী, এক-প্ৰকাৰৰ বাদ্য।
एक तरह का बाजा।

खंड—[सं पुं] ডোখৰ, বিভাগ, আইনৰ ধাৰা-উপধাৰাৰ খণ্ড অংশ বিশেষ। খণ্ড।

टुकड़ा, कुछ विशेष कार्यके लिये व्यवस्थित रूपसे किया हुआ विभाग, विधि विधान में कोई धारा या उपधारा का स्वतन्त्र अंग।

(वि) বিভাজিত, আংশিক। खंडित, छोटा।

खंड-पाल—(सं पुं) মিঠাইৱালা। हल्वाई।

खंड-प्रलय—(सं पु) ক্ষুদ্র প্ৰলয়। एक चतुर्युगी के अन्त में होने वाला प्रलय।

खंडहर—(सं पुं) ভগ্নাৱশেষ। टूटे या गिरे हुए मकान का बचा अंश।

खंडिता-(सं स्त्री) সেই তিৰোতা যাৰ স্বামী আন তিৰোতাৰ লগত ৰাতি কটাই পুৱা তেওঁৰ ওচৰলৈ আহে। वह स्त्री जिसका नायक किसी अन्य स्त्री के पास रहकर सबेरे उसके पास आवे।

खंडी—(सं स्त्री) ৰাজহ। राज कर।

खंता—(सं पुं) খন্তা, খুৰ্পী जमीन खोदने के लिये लोहे का लम्बा औज़ार। (सं स्त्री-खंती)

खंदक, खाई—(सं स्त्री) গড়-খাৱৈ। वह छोटी नहर जो किलेके चारों ओर रक्षा के लिये बनायी जाती है।

खँधना—(क्रि अ) মাটি খন্দা। मिट्टी खोदना।

खंधार—(सं पुं) ছাউনি, তম্বু। छावनी, डेरा।

खंभ, खंभा-(सं पुं) স্তম্ভ, আধাৰ। स्तंभ, आश्रय, आधार।

खँभार—(सं पु) ভয়, আশঙ্কা। आशंका, घबराहट।

खखार—(सं पुं) খেঁকাৰ। खाँसी से निकलनेवाला कफ।

खखारना—(क्रि अ) গল খেকাৰি-মৰা। गले से शब्द करते हुए थूक या कफ बाहर निकालना।

खग—(सं पुं) চৰাই, বাণ, গ্ৰহ, তৰা আদি। पक्षी, बाण, ग्रह-तारे आदि।

खगेश, खगनाथ-(सं पुं) গৰুড়। गरुड़।

खगोल—(सं पुं) আকাশ-মণ্ডল। आकाश मंडल।

खगोल-विद्या-[सं स्त्री] জ্যোতিষ-শাস্ত্র ।
ज्योतिष शास्त्र ।

खग्रास—(सं पुं) পূর্ণ গ্রহণ ।
वह ग्रहण जिसमें चन्द्र या सूर्य का पूरा बिम्ब ढँक जाय ।

खचरा—(वि) খেচেৰা, অভদ্ৰ ।
दुष्ट ।

खचाखच—(क्रि. वि) ঠাহ্-খাই ভৰি থকা ।
पूरा कस कर भरा हुआ ।

खचेरना—(क्रि स) জোৰ জবৰ-দস্তিকৈ বশ কৰা ।
दबाकर वश में करना ।

खच्चर—[सं पुं] খচ্চৰ ।
एक पशु ।

खजानची—(सं पुं) ধন-ভৰালী ।
खजाने का अधिकारी ।

खजाना, खजीना—(सं पुं)
খাজনা, ৰাজহ ।
धन आदि का कोष । राजस्व ।

खजूर—[सं स्त्री] খাজুৰ ।
एक प्रकार का फल ।

खट—(सं पुं) ভাঙি বা খুন্দা খাই হোৱা শব্দ ।
टूटने या टकराने का शब्द

खटसे—[मु.]—তৎক্ষণাৎ ।
तुरन्त ।

खटक—(सं स्त्री) মনৰ সঙ্কোচ ভাৱ ।
मन की वेदना, खेद आदि ।
आशंका ।

खटकना—(क्रि अ) মনত পীড়া-হোৱা । সন্দেহ হোৱা, কাজিয়া হোৱা ।
रह रह कर हल्की पीड़ा होना ।
खलना । झगड़ा होना ।

खटका—(सं पुं) আশঙ্কা ।
आशंका, फिक्र ।

खट खट—(सं स्त्री) খট্‌-খট্ শব্দ ।
হাই কাজিয়া ।
ठोंकने पीटने का शब्द । बखेड़ा ।
लडाई झगडा ।

खट खटाना—(क्रि स) খট্-খট্ শব্দ কৰা ।
खट खट शब्द करना ।

खटाना—(क्रि स) ধন উপাৰ্জন কৰা ।
धन कमाना ।
(क्रि अ) পৰিশ্ৰম কৰা ।
काममें लगना । परिश्रम करना ।

खटपट—(सं स्त्री) কাজিয়া ।
झगड़ा ।

खटमल—(सं पुं) छারপোকা।
एक कीड़ा जो खाटों, कुर्सियों आदि में रहता है।

खटराग—[सं पुं] কাজিয়া—পেচাল।
झगड़ा। झंझट।

खटाई—(सं स्त्री) টেঙাগুণ, টেঙা বস্তু।
खट्टापन। खट्टी चीज।

खटाखट-(क्रि वि) ততা-তৈয়াকৈ।
जल्दी जल्दी।

खटाना—(क्रि स) খটোৱা।
परिश्रम का काम करवाना।
(क्रि अ) টেঙা হোৱা।
खट्टा करना।

खटिक—(सं पु) শাক-পাচলি বেচা এটা জাতি।
तरकारी बेचनेवाली एक जाति।

खाट, खटोला—(सं पुं) খাট।

चारपाई। (सं स्त्री—खटिया)

खट्टा—(वि) টেঙা।
अम्ल।

खड़खड़िया—[सं स्त्री] এবিধ দোলা।
पालकी।

खड़ा—(क्रि वि) থিয়, সাজু।
ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ।
प्रस्तुत।

खड़ाऊ—[सं स्त्री] খৰম।
पादुका।

खड़िया—(सं स्त्री) খড়ীমাটি।
एक प्रकार की सफेद मिट्टी।

खड़ीबोली—(सं स्त्री) বৰ্ত্তমান সাহিত্যিক হিন্দীৰ পূৰ্ব্ব-ৰূপ।
वर्तमान साहित्यिक हिन्दी का पूर्व रूप।

खड्ड—(सं पुं) গাঁত।
गड्ढा।

खत—[सं पुं] ঘা, চিঠি।
घाव। जख्म। चिट्ठी।

खतम, खत्म—(वि) শেষ।
समाप्त।

खतरा—[सं पुं] বিপদ।
आशंका। भय।

खता—(सं स्त्री) দোষ, ফাকি, ভুল।
कसूर, धोखा, भूल।

खतियाना—(क्रि स) খতিয়নি।
अलग अलग खातों या मदों में हिसाब लिखना।

खत्ता—[सं पुं] গাঁত। শস্য বখা ঠাই।
गड्ढा। अन्न रखने का स्थान।

खदेड़ना (रना)–(क्रि अ) ডাবি-ধমক দি খেদি দিয়া।
डरा धमका कर दूर हटाना।

खद्दर (ड़)—(सं पुं) খদ্দৰ।
खादी।

खद्योत—(सं पुं) জোনাকী পৰুৱা।
जुगनूँ।

खपची—(सं स्त्री) কাঠ বা বাঁহৰ সৰু চেপেতা খণ্ড।
पतली तीली।

खपड़ा, खपरा-[सं पुं] খাপৰি।
मिट्टी का पका टुकड़ा जो छप्पर छाने के काम में आता है।

खपत—[सं स्त्री] বিক্ৰী, সুবিধা
मालकी कटती या बिक्री।
गुंजाइश।

खपना-(क्रि अ) কামত লগা।
काम में आना या लगना।
गुजारा होना।

खपाना—(क्रि स) কামত লগোৱা।
काम में लगाना।

खप्पर—[सं पुं] ভিক্ষা-পাত্ৰ, লাউ-খোলা।
भिक्षा पात्र। मरे हुए प्राणी की खोपड़ी।

खफा—(वि) অসন্তুষ্ট, ক্ৰুদ্ধ।
अप्रसन्न, क्रुद्ध।

खफीफ—(वि) অলপ, কম।
थोड़ा, हलका।

खबरदार— (वि) সাৱধান।
सावधान।

खबीस—(सं पुं) ভয়ঙ্কৰ, দুষ্ট।
पुराना दुष्ट।

खब्त—(वि) পাগলামি।
सनक।

खम—(सं पुं) টেৰেচীয়া।
टेढ़ापन, झुकाव।

खमीर—(सं पुं) গাপ লাগি উঠা ফেন।
गूँथे हुए आटे या फल आदि का सड़ाव।

खयानत—(सं स्त्री) দিবলগীয়াতকৈ কম দিয়া।
धरोहर या अमानत में से कुछ दबा रखना।

खयाल—[सं पुं] ধ্যান, মনোযোগ।
ध्यान, स्मृति, मत। एक प्रकार का संगीत।

खर—(सं पुं) গাধ, ঘাঁহ।
गधा, तृण।

खरक—(सं पुं) গোহালি।
पशुओं को रखने का बाड़ा।

खरका—(सं पुं) তৃণ।
तिनका।

खरगोश, खरहा—(सं पुं)
শহাপহু।
एक जन्तु। शशक

खरक्क—(सं पुं) এবিধ পোচাক।
एक प्रकार की पोशाक।

खरब—[सं पुं] এক হাজাৰ লাখ।
सौ अरबकी संख्या।

खरबूजा—(सं पुं) খৰ্মুজা।
एक प्रकार का फल।

खर-मास, खरवाँस— (सं पुं) পুহ আৰু চ'ত মাহ যেতিয়া সূৰ্য্য ধনু আৰু মীন ৰাশিত থাকে।
पूस या चैत के महीने।

खरल—(सं पुं) কিস্তি।
पत्थर की खल।

खरसान—(सं स्त्री) শান।
हथियार तेज करने की सान।

खरा—[वि] ভাল, বিশুদ্ধ, নগদ।
अच्छा, विशुद्ध, नगद।

खराद— [सं स्त्री] कुन्द।
धातु, लकड़ी आदि चिकना करने का एक औजार।

खराब—(वि) বেয়া।
बुरा, पतित।

खरी खोटी— (सं स्त्री) গালি-শপনি।
गुस्से में कही जानेवाली कटु बातें।

खरीता, खलीता—[सं पुं] থৈলা।
थैली। जेब। बड़ा लिफाफा।

खरीफ—(सं स्त्री) বৰ্ষা আৰু শৰৎ কালতে হোৱা খেতি।
आसाढ़ से अगहन तक काटी जानेवाली फसल।

खरोचना, खरोंचना—(क्रि स)
আঁচোৰ।
नाखून से नोचना।

खर्चीला—(वि) অমিতব্যয়ী।
बहुत खर्च करनेवाला।

खर्राटा—(सं पुं) নাকৰ ঘোৰ্ঘোৰণি।
सोते समय नाक से निकलनेवाला शब्द।

खल— [वि] টুটকীয়া, নীচ।
क्रूर, नीच, दुष्ट।

खलक—[सं पुं] সংসাৰ।
सृष्टिके प्राणी या लोग। दुनिया।

खलकत—(सं स्त्री) সংসাৰৰ সমস্ত প্ৰাণী ।
संसार के सब लोग । जनसमूह ।

खलबली—(सं स्त्री) তোল-পাৰ, উখল মাখল ।
हलचल, घबराहट ।

खलल --(सं पुं) বাধা বিঘিনি ।
विघ्न । बाधा।

खलास—[वि] মুক্ত ।
छूटा हुआ । समाप्त ।

खलासी—(सं पुं) খালাচী । ৰেল-জাহাজ আদিত কাম কৰা কুলী ।
जहाज पर छोटे मोटे काम करने वाला कर्मचारी ।

खलियान (हान)— [सं पुं] শস্য-ভৰাল ।
वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी जाती है ।

खली, खरी—(सं स्त्री) খঁলিহৈ ।
तेल निकल जानेपर बची हुई तेलहन की सीठी ।

खलीफा— [सं पुं] অধ্যক্ষ, দৰ্জী, নাপিত ।
अध्यक्ष । दरजी । नाई

खल्वाट—(सं पुं) তপা হোৱা বেমাৰ ।
गंजा रोग ।
(वि) তপা ।
जो गंजा हो ।

खवास—[सं पुं] ৰজা-জমিদাৰৰ খাচ ভৃত্য ।
राजाओं और रईसों के खिदमतगार ।

खवैया—(सं पुं) ভক্ষক ।
खानेवाला ।

खस—(सं स्त्री) এবিধ ঘঁাহৰ সুগন্ধি শিপা ।
गाँडर घास की सुगंधित जड़ ।

खसकना—[क्रि अ] আঁতৰি যোৱা ।
सरकना ।

खस खस—(सं पुं) পেষ্টা-গুটি ।
पोस्ते का दाना ।

खसम—(सं पु) স্বামী ।
पति, स्वामी ।

खसरा—[सं पुं] হিচাপ-পত্ৰৰ পাণ্ডুলিপি । সোঁচৰা ৰোগ ।
हिसाब का कच्चा चिट्ठा । एक प्रकार की खुजली ।

खसाना—(क्रि स) পেলাই দিয়া ।
नीचे गिराना ।

खखोटना—[क्रि. स] টনা আজোৰা কৰা।
नोचना, छीनना।

खस्ता—(वि) ঠুন্নকা।
भुर भुरा।

खस्सी, खसी, खसिया—(सं पुं) খাশী।
बधिया किया हुआ बकरा।

खाँग—(सं पुं) কাঁইট।
काँटा। गैंड़े का सीग।
(सं स्त्री) ত্রুটি।
त्रुटि।

खाँचना—[क्रि स] খাঁজ দিয়া। খৰকৈ লিখা।
चिह्न बनाना। जल्दी जल्दी लिखना।

खाँचा—(सं पुं) পাচি, খৰাহী।
बड़ा टोकरा।

खाँड़—(सं स्त्री) অপৰিষ্কাৰ চেনি
बिना साफ की हुई चीनी।

खाँसना—[क्रि अ] গলৰ পৰা কফ উলিয়াবলৈ জোৰেৰে গল খেকাৰা।
गले से कफ आदि निकालने के लिये जोर से हवा निकालना।

खाँसी—(सं स्त्री) কাহ।
काश रोग। खाँसने का शब्द या भाव।

खाक—(सं स्त्री) মাটি, ধুলি-বালি।
मिट्टी। धूल। राख।

खाकसार—(वि) নম্র, নগন্য।
धूलमें मिला हुआ। तुच्छ।

खाका—(सं पुं) খৰণ, মচা-বিদা।
ढाँचा, मसौदा।

खाज—(सं स्त्री) খজুৱতি।
खुजली।

खाड़ी—(सं स्त्री) উপসাগৰ।
उपसागर।

खातमा—(सं पुं) শেষ।
अन्त।

खाता—[सं पुं] জমা-খৰচৰ বহী।
आय व्यय का अलग लेखा।

खातिर—(सं स्त्री) আদৰ।
आदर।
[अव्य] কাৰণে।
वास्ते।

खातिरजमा—(सं स्त्री) সন্তোষ।
संतोष।

खातिरदारी—[सं स्त्री] আতিথ্য সৎকাৰ।
आये हुए का सम्मान।

खाद्—[सं स्त्री] সাৰ ।
उर्वरक ।

खादर—[सं पुं] চাপৰ ঠাই ।
नीची जमीन ।

खान—(सं पुं) ভোজন ।
भोजन ।
[सं स्त्री] খনি ।
आकर । जहाँ कोई चीज अधिकता से पायी जाती हो ।

खानगी—(वि) ঘৰুৱা, নিজা, পৰম্পৰৰ ।
घरेलू । अपना ।आपस का ।
(सं स्त्री) নটী । कसबी ।

खानदान—[सं पुं] বংশ ।
वंश, कुल ।

खानपान—(सं पु) খোৱা-লোৱা ।
खाना-पीना ।

खाना—(क्रि सं) খোৱা ।
भोजन करना, हड़प जाना ।
(सं पुं) ঘৰ, স্থান ।
घर, स्थान ।

खाना तलासी—(सं स्त्री) খানা-তালাচ ।
खोई हुई या चुराई हुई चीज किसी के घर खोजना ।

खाना-बदोश—(वि) অঘৰী ।
यायावर ।

खामखाह—(क्रि वि) মিছাতে, এনেয়ে, খামখিয়ালিকৈ ।
व्यर्थ ।

खामोश—(वि) নিস্তব্ধ, চুপ ।
मौन, चुप ।

खार-(सं पुं) খাৰ, ধূলি, ঈৰ্ষা ।
सज्जी, रेह, डाह ।

खारा—(वि) খাৰুৱা ।
नमक के स्वाद का ।

खारिज—(वि) বাতিল, বদ ।
बहिष्कृत ।

खाला—(वि) চাপৰ ।
नीचा ।
(सं स्त्री) মাহী ।
मौसी ।

खालिस—(वि) বিশুদ্ধ ।
विशुद्ध ।

खाविंद—(सं पुं) গৰাকী ।
पति, मालिक ।

खास—(वि) বিশেষ , নিজা , বিশুদ্ধ ।
विशेष ' प्रधान, निजका, विशुद्ध ।

खासियत-[सं स्त्री] বিশেষত্ব, গুণ ।
विशेषता, स्वभाव, गुण ।

खिंचना—[क्रि अ] টনা, আকর্ষিত হোৱা ।
घसीटा जाना । आकृष्ट होना ।

खिचड़ी—(सं स्त्री) খিচিৰী ।
একলগ হোৱা বস্তু ।
दाल, चावल एक ही में मिलाकर पकाया भोजन। एक ही में मिले हुए पदार्थ ।

खिजलाना—[क्रि अ] জোকা ।
चिढ़ना ।

खिताब-(सं पुं) খিতাপ, খ্যাতি ।
पदवी, उपाधि ।

खिदमत—(सं पुं) আল-পৈচান ।
सेवा ।

खिदमतगार—(सं पुं) আল-পৈচান ধৰোঁতা ।
छोटी सेवाएँ करनेवाला । सेवक

खिन्न—(वि) উদাসীন ।
उदासीन । अप्रसन्न ।

खियाना— (क्रि अ) ক্ষয় যোৱা ।
घिसकर क्षय होना ।

खिलकत, खलकत— (सं स्त्री)
সৃষ্টি, মনুষ্য জাতি ।
सृष्टि, भीड़ ।

खिलखिलाना— (क्रि अ) খিল্-খিলাই হঁহা।
जोर से हँसना ।

खिलना – (क्रि अ) প্ৰস্ফুটিত হোৱা । প্ৰসন্ন হোৱা,
फूल का विकसित होना । प्रसन्न होना ।

खिलवत—(सं स्त्री) নিৰ্জন ঠাই
एकान्त स्थान ।

खिलवाड़, खेलवाड़— (सं पुं)
খেল, ঠাট্টা-মস্কৰা ।
खेल । दिल्लगी । तुच्छ या साधारण ढंग से किया हुआ काम ।

खिलाड़ी, खेलाड़ी, खेलवाड़ी—[वि]
খেলুৱৈ, যাদুকৰ ।
खेलनेवाला, बाजीगर ।

खिलाना— (क्रि स) খুওৱা । প্ৰসন্ন কৰোৱা ।
भोजन कराना । प्रसन्न करना ।

खिलाफ—(वि) বিপৰীত ।
विरुद्ध, प्रतिकूल ।
[क्रि वि] তুলনাত ।
तुलना में । मुकाबले में ।

खिलौना—(सं पुं) পুতলা । খেলৰ সঁজুলি । खेलनेकी चीज ।

खिल्ली— [सं स्त्री] ইতিকিং । খিলিপান ।
हँसी-ठट्ठा । दिल्लगी ।पानका बीड़ा ।

खिसकना—(क्रि अ) আঁতৰি যোৱা
सरकना । भाग जाना ।

खिसाना, खिसियाना— (क्रि अ) লাজ পোৱা ׀ অসন্তুষ্ট হোৱা ׀
लज्जित होना । नाराज होना ।

खींच-तान, खींचातानी—[सं स्त्री] টনা-টনি ।
व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग । शब्द या वाक्य का जबर्दस्ती भिन्न अर्थ करना ।

खींचना—(क्रि स) টনা । অঁকা ।
बलपूर्वक अपनी तरफ लाना । लकीरोंसे आकार या रूप बनाना ।

खीजना—(क्रि अ) খং কৰা ।
दुखी होकर क्रोध करना ।

खील— (सं स्त्री) আখৈ ।
भुना हुआ धान । लावा ।

खीस— (सं स्त्री) জোঙা দীঘল দাঁত । অসন্তুষ্টি ।
नुकीले लम्बे दाँत । अप्रसन्नता, क्रोध ।

खुक्ख— (वि) দাল দৰিদ্ৰ ।
परम निर्धन ।

खुखड़ी—(सं स्त्री) খুকুৰী, টাকুৰীত লোৱা সূতা । नेपाली छुरा । तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत ।

खुजलाना—[क्रि स] খজুওৱা । खुजली मिटाने के लिये अंग रगड़ना ।
[क्रि अ] খজুৱতি ।
खुजली मालूम होना ।

खुजली—(सं स्त्री) চৰ্ম ৰোগ ।
खुजलाहट का रोग ।

खुट चाल—(सं स्त्री) খিতিঙালি ।
दुष्टता । खराब चाल चलन ।

खुद— (अव्य) নিজ, স্বয়ং ।
स्वयं । आप ।

खुद-काश्त—(सं स्त्री) গৰাকীয়ে নিজে খেতি কৰা মাটি ।
वह जमीन जिसका मालिक उसे स्वयं जोते ।

खुद-गरज—(वि) স্বাৰ্থপৰ ।
स्वार्थी ।

खुद-मुख्तार—(वि) স্বাধীন ।
स्वतन्त्र ।

खुदरा—(सं पुं) খুচুৰা ।
फुटकर चीजें ।
(वि) जो छोटे छोटे टुकड़ों या अंशों के रूप में हो ।

खुदाई—[सं स्त्री] খনন কাৰ্য্য, সৃষ্টি ।
खोदे जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी । ईश्वरता । सृष्टि ।
(वि) ঐশ্বৰিক ।
ईश्वरीय ।

खुदावंद— (सं पुं) পৰমেশ্বৰ।
মহাশয়।
ईश्वर। हुजूर।

खुदी—(सं स्त्री) মই বৰ ভাব।
अहंकार।

खुफिया—(वि) গুপ্ত, গুপ্তচৰ।
गुप्त। छिपा हुआ। जासूस।

खुमारी—(सं स्त्री) নিচা। নিচাৰ পৰা হোৱা ক্লান্তি।
नशा। नशा उतरने और रात जगने की थकावट।

खुरचन—(सं स्त्री) চোৰোকা বস্তু।
खुरच कर निकाली हुई वस्तु।
गाढी रबड़ी।

खुराक—(सं स्त्री) খোৰাক।
भोजन। मात्रा।

खुराफात—(सं स्त्री) অমূলক বা যুক্তিবিহীন কথা। কাজিয়া।
बेहूदा और वाहियात बात। झगड़ा।

खुर्राट— [वि.] বুঢ়া, অনুভৱী, চতুৰ
बूढ़ा। अनुभवी, चालाक।

खुलना—[क्रि. अ] খোলা, মুকলি হোৱা, ভেদ ভাঙি যোৱা।
बन्द न रहना। फटना। प्रचलित होना। रहस्य प्रकट होना।

खुला— (वि) খোলা, উন্মুক্ত, আৱৰণহীন।
आवरण हीन। अवरोधहीन। प्रकट।

खुलासा—(सं पुं) সাৰাংশ।
सारांश।
(वि) খোলোচা।
साफ। अवरोध रहित।

खुल्लम खुल्ला—(क्रि वि.) প্ৰকাশ্যে
प्रकाश्य रूप से।

खुश— [वि] আনন্দিত।
आनन्दित, अच्छा।

खुशखबरी—[सं स्त्री] সুসংবাদ।
शुभ समाचार।

खुशबू—(सं स्त्री) সুগন্ধ।
सुगन्ध।

खुशामद—(सं स्त्री) তোষামোদ।
चापलूसी।

खुशामदी—(वि) তোষামোদকাৰী।
खुशामद करनेवाला।

खुशी—(सं स्त्री) প্ৰসন্নতা।
प्रसन्नता।

खुश्क—(वि) শুকান, নীৰস।
सूखा, नीरस।

खूँट—[सं पुं] পাৰ, কোণ
सिरा, कोना।

[सं स्त्री] কণা-মাকৰি।
कान का मैल।

खूँटा— [सं पुं] খুঁটি।
खंभा। [सं स्त्री–खूंटी]

खूँदना—(क्रि अ) খচকা।
पैरों से रौंदकर खराब करना।

खून—(सं पुं) তেজ, হত্যা।
रक्त, हत्या।

खून-खराबी—(सं स्त्री) কটা-কটি।
मारकाट।

खूब—(वि) খুব, বহুত।
अच्छा, बहुत।

खूब-सूरत—(वि) ধুনীয়া।
सुन्दर।

खूबसूरती—(सं स्त्री) ৰমণীয়তা।
সৌন্দৰ্য্য।
सुन्दरता।

खूबी—(सं स्त्री) বিশেষত্ব।
भलाई, गुण, विशेषता।

खूसट—(सं पुं) ফেঁচা।
उल्लू।
(वि) মূৰ্খ।
अरसिक। मूर्ख।

खेचर—(सं पुं) বায়ু–চৰ।
आकाश चारी।

खेटक—(सं पुं) চিকাৰ।
शिकार।

खेत—(सं पुं) পথাৰ, যুদ্ধক্ষেত্ৰ।
क्षेत्र। समतल भूमि, युद्धभूमि।

खेतिहर—(सं पुं) খেতিয়ক।
किसान।

खेदा—[सं पुं] চিকাৰ।
शिकार।

खेना—(क्रि स) নাও বোৱা।
অতিবাহিত কৰা।
डाँड़ों से नाव चलाना। समय बिताना।

खेमा—[सं पुं] তম্বু, শিবিৰ।
तम्बू, शिविर।

खेवनहार—(सं पुं) ঘাটৈ, ঘাটোৱাল। পাৰ কৰোঁতা।
मल्लाह। संकटसे पार करनेवाला।

खेवा—(सं पुं) নদী আদিৰ পাৰ কৰা ভাড়া বা কাৰ্য্য।
খেপ।
नाव का किराया। नाव द्वारा नदी पार करने का काम। बार।

खेस-(सं पुं) মোটা সূতাৰ চাদৰ।
मोटे सूत की एक प्रकार की लम्बी चादर।

खेह (र)—(सं स्त्री) ছাই, ধুলি।
राख, धूल।

खैनी—(सं स्त्री) চূণৰ লগত পিহি খোৱা চাধাপাতৰ গুৰা।

मलकर खाया जानेवाला तम्बाकू के पत्ते का चूर्ण।

खैर—(सं पुं) খৈৰা গছৰ বসৰ পৰা তৈয়াৰ কৰা কথ।
कत्था। एक प्रकार का बबूल।
(सं स्त्री) কুশল-মঙ্গল।
कुशल क्षेम।
[अव्य] বাৰু, যি নহওক।
कुछ चिन्ता या परवाह नहीं, जो हो।

खैरख्वाह—(वि) শুভাকাঙ্খী।
शुभ चिन्तक।

खैरात—(सं स्त्री) দান।
दान।

खैरियत—(सं स्त्री) কুশল, মঙ্গল।
कुशल क्षेम, भलाई।

खोंच—(सं स्त्री) খোঁচ। খোঁচা-খাই কাপোৰ ফলা। মোনা।
खरोंच। काँटे आदि में लगकर कपड़े का फट जाना। झोली।

खोंचा—(सं पुं) দীঘল বাঁহৰ চৰাই ধৰা ফান্দ।
चिड़िया फँसाने का लम्बा बाँस।

खोंड़र—(सं पुं) গছৰ খোৰোং।
वृक्ष का कोटर।

खोंसना—(क्रि अ) গুজি দিয়া, খুচি দিয়া।
जोरसे गड़ाना।

खोंपा—(सं पुं) খোপা।
बालों का बंधा जूड़ा।

खोंसना—(क्रि अ) খোহা মাৰ্, अटकाना।

खोआ, खोया—(सं पुं) পগাই ডাঠ কৰা গাখীৰ।
गाढ़ा किया हुआ दूध।

खोई—[सं स्त्री] আখৈ।
भुने धान आदि की खील।

खोखला—(वि) কোঁপোলা।
शून्य। पोला।

खोज—(सं स्त्री) ভৰিৰ খোজ।
अनुसन्धान।
पैर का चिह्न। अनुसंधान। पता।

खोजना—(क्रि स) বিচৰা।
अनुसंधान करना।

खोजा—(सं पुं) বাদশাহৰ কাৰেঙত থকা নপুংসক চাকৰ। চৰদাৰ।
मुसलमानी महलों में रहने वाला नपुंसक नौकर। सरदार।

खोजी, खोजू—(वि) অনুসন্ধানকাৰী।
पता लगानेवाला।

खोट—(सं स्त्री) দোষ।
दोष, बुराई।

खोटा—(বি) বেয়া ।
बुरा ।
खोटाई—(सं स्त्री) দুষ্টামি, ধূৰ্ত্তালি ।
बुराई । दुष्टता । छल ।
खोदना—(क्रि स) গাঁত খন্দা, খোদিত কৰা ।
गड्ढ़ा खनना । नक्काशी करना ।
खोना—(क्रि स) হেৰুওৱা, নষ্ট কৰা ।
गवांना । नष्ट करना ।
खोनचा, खोमचा—[सं पुं]
মিঠাই বিক্রেতাৰ মিঠাইৰে পৰিপূৰ্ণ ডাঙৰ থাল ।
बड़ी परात या थाल जिसमें रख कर फेरीवाले मिठाई वाले मिठाई आदि बेचते हैं ।
खोपड़ी—(सं स्त्री) (মূৰৰ) লাউ-খোলা । মূৰ, মগজু ।
सिरकी हड्डी । सिर । गोलाकार कठिन आवरण ।
खोभार—[सं पुं] চুৰনি, চুৰা-পাতনি ।
कूड़ा करकट फेंकने का गड्ढ़ा ।
खोर—(सं स्त्री) সৰুবাট, ঠেক ঠাই ।
संकरी गली । स्थान ।

(বি) বেয়া, অকামিলা, পেটুক ।
खराब । निकम्मा । खानेवाला ।
खोल—(सं पुं) আবৰণ ।
आवरण, ऊपरी चमड़ा । मोटी चादर ।
खोलना—(क्रि स) খুলি দিয়া ভেদভাঙি দিয়া ।
ढँकने, बाँधने, जोड़ने या रोकने वाली वस्तु को हटाना
गुप्त या गूढ़ बात प्रकट कर देना ।
खोली—(सं स्त्री) আবৰণ, পঁজা ।
आवरण । झोपड़ी ।
खोह—(सं स्त्री) গুহা ।
गुफा ।
खौफ—(सं पुं) ভয়, আশঙ্কা ।
डर, आशंका ।
खौफनाक—(वि) ভয়ঙ্কৰ ।
भयंकर ।
खौरा—(सं पुं) পশুৰ ৰোগ বিশেষ ।
पशुओं का एक रोग जिसमें बाल झड़ जाते हैं ।
खौलना—(क्रि अ) উতলোৱা ।
उबलना ।

ख्याल—(सं पुं) খেল-ধেমালী, ধ্যান-ধাৰণা ।
खेल । दिल्लगी । ध्यान ।

ख्वाजा—(सं पुं) গৰাকী । মুচলমান । ফকিৰ ।
मालिक । सरदार । मुसलमान फकीर ।

ख्वार—(वि) বেয়া । তিৰস্কৃত ।
खराब, तिरस्कृत ।

ख्वारी—(सं स्त्री) বেয়া গুণ, দুৰ্দশা ।
खराबी । दुर्दशा ।

ख्वाह—(अव्य) নাইবা, বা ।
या ।

ख्वाह मख्वाह—(अव्य) এনেয়ে, বলপূৰ্বক ।
जबर्दस्ती ।

ख्वाहिश—(सं स्त्री) ইচ্ছা বাঞ্ছা, আকাঙ্খা ।
इच्छा, आकांक्षा ।

ग

ग—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ তৃতীয় আখৰ ।
व्यंजन वर्ण का तासरा अक्षर ।

गंग— (सं स्त्री) গঙ্গা নদী ।
गंगा नदी ।

गंगा गति, गंगायात्रा,—[सं स्त्री] মৃত্যু ।
मृत्यु । (सं पुं—गंगालाभ)

गंगा-जमनी-[वि] সঙ্গম, সম্মিলিত ।
मिला जुला ।

गंगोदक—(सं पुं) গঙ্গা-জল ।
गंगा जल ।

गंजन—(सं पुं) অবজ্ঞা, পীড়া ।
अवज्ञा, पीड़ा ।

गंजा—(वि) মূৰ তপা হোৱা বেমাৰ
जिसके सिर के बाल झड़ गये हों ।

गंजीफा— (सं पुं) তাচ খেল ।
तास का खेल ।

गँजेड़ी—(वि) গাঁজেৰু, ভঙুৱা ।
गांजा पीनेवाला ।

गंठ जोड़ा (बंधन)-(सं पुं) লগুণ গাঁঠি।
विवाह की एक रीति। दो चीजों या व्यक्तियों का प्रायः बना रहने वाला साथ।
गंड—[सं पुं] গাল।
गाल।
गंडा—(सं पुं) গাঁঠি। এক গণ্ডা
गाँठ। चार का समूह।
गँड़ासा—[सं पुं] ঘাঁহ কটা দা।
फरसे की भाँति का एक औजार।
गंदगी—(सं स्त्री) লেতেৰা। অপবিত্ৰতা।
मलीनता, अपवित्रता।
गंदला, गंदा—(वि) মলিযন, অশুদ্ধ
मैला, अशुद्ध।
गंदुमी—[वि]গোম ধানেৰে তৈযাৰী বা গোম ধানৰ বৰণৰ।
गेहूँ का बना, गेहुँआ।
गंधवह—(सं पुं) বায়ু।
वायु।
गंधाना—[क्रि अ] দুৰ্গন্ধ কৰা।
दुर्गंध करना।
गंवई—[सं स्त्री] চুবুৰি, সৰু গাওঁ।
छोटा ग्राम।
(वि) গাঁৱৰ সম্বন্ধীয়।
ग्राम सम्बन्धी।
(सं पुं) গাঁৱলীয়া।
देहाती।
गँवाना, गमाना-[क्रि स] হেৰুওৱা,
खोना।
गँवार-[सं स्त्री] হোজা। গাঁৱলীয়া, মূৰ্খ।
देहाती, असभ्य, मूर्ख।
गँवारी—(सं स्त्री) মূৰ্খামি। গাঁৱৰ।
मूर्खता। गाँव का, भद्दा।
गँवारू—[वि] মূৰ্খ, গাৱঁৰ।
देहाती। मूर्ख।
गऊ—[सं स्त्री] গাই।
गाय।
गगन-धूल—(सं पुं) এবিধ কাঠ-ফুলা।
एक प्रकार का कुकुर मुत्ता।
गगरा—(सं पुं) ঘাগৰী, গাগৰী।
कलसा।
गच—[सं स्त्री] পকা মজিয়া। বিলাতী মাটি আৰু বালি মিহলি মচলা।
पक्का फर्श। चूने सुर्खी का मशाला
गछना—(क्रि अ) জমা বখা।
गच्छित रखना।

गजक—(सं स्त्री) চাটনি, জলপান
शराब के साथ खाई जानेवाली
कवाब आदि । जलपान ।

गजब—(सं पुं) শং। আচৰিত কথা।
আপত্তি।
कोप, विलक्षण बात, आपत्ति ।

गजमणि—(सं स्त्री) গজমুক্তা
(হাতীৰ মূৰৰ পৰা উৎপন্ন
মণি)
हाथियों के मस्तक से निकलने
वाली मणि ।[सं पुं] **गजमोती**

गजर-दम—[क्रि वि] প্ৰভাত,
প্ৰাতঃকাল।
प्रभात के समय ।

गजरा—(सं पुं) ঘনকৈ গঁঠা
ফুলৰ মালা। এবিধ হাতৰ
অলঙ্কাৰ ।
फूलो की बड़ी माला ।

गझिन—[वि] ডাঠ, ঘন।
सघन बुना हुआ ।

गटकना-[क्रि स] গিলিখোৱা,
আত্মসাৎ কৰা।
निगलना, हड़पना ।

गट-पट-[सं स्त्री] घनिष्ठता, সহবাস
घनिष्ठता, सहवास ।

गट्टा—(सं पुं) আঙ্কিন।
कलाई ।

गट्ठर, गट्ठा—[सं पु] টোপোলা।
बड़ी गठरी ।

गठना—(क्रि स) গঁঠা।
जुड़ना ।

गठरी—[सं स्त्री] টোপোলা, বস্তু।
बड़ी पोटली, माल ।

गठिया—(सं स्त्री) গঁঠিয়া-বাত ।
सूजन का एक रोग ।

गठीला—(वि) গঁঠিযুক্ত, দৃঢ় ।
गठा हुआ, मजबूत ।

गड़गड़ा—(सं पुं) হোকা।
बड़ा हुक्का ।

गड़गड़ाना—[क्रि स] গৰ্-গৰ্
শব্দ হোৱা।
गड़गड शब्द होना ।

गड़दार—(सं पुं) মাউত ।
महावत । हाथी के साथ भाला
लेकर चलने वाला रक्षक ।

गड़ना—(क्रि अ) বিন্ধি যোৱা,
দুখ পোৱা, গাড়ি দিয়া ।
चुभना, दुखना, मिट्टी के नीचे
दबना ।

गड़बड़ — (वि) বিশৃঙ্খলা।
अव्यवस्थित । (सं स्त्री)गड़बड़ी ।

गड़रिया, गड़ेरिया, गड्डरी —
(सं पं) ভেড়া পালক জাতি,

গৰীয়া ।
भेंड़ पालनेवाली एक जाति ।

गड़ाना—(क्रि अ) বিন্ধি দিয়া ।
चुभाना ।

गड़ारी—[सं स्त्री] ঘিলা । ঘূৰণীয়া ৰেখা ।
घिरनीगो ; लघेग या गहरी लकीर

गड़ुआ—(सं पुं) ঝাৰী ।
टोंटीदार लोटा ।

गडड-मडड—(सं पुं) অমিল, সান-মিহলি ।
बे-मेलकी मिलावट ।

गढ़न्त—(वि) কল্পিত ।
कल्पित ।

गढ़—(सं पुं) গড, খাৱৈ ।
दुर्ग, खाई ।

गढ़ना—(क्रि स) গঢ়োৱা, গঢ় দিয়া । কথা সাজি কোৱা ।
रचना करना । सुडौल बनाना । बात बनाना ।

गढ़ी—(सं स्त्री) সৰু দুৰ্গ ।
छोटा किला ।

गणिका--[सं स्त्री] বেশ্যা ।
वेश्या ।

गतका, गद्का--(सं पुं) ভাটা খেল । টাংগুটি খেল ।
एक प्रकार का खेल । वह डंडा जिससे यह खेल खेला जाता है ।

गत्ता--(सं पुं) কাঠ-বকলা ।
कागज की दफ्ती ।

गत्यवरोध--[सं पुं] বুজা-বুজিৰ ক্ষেত্ৰত বাধা ।
समझौते की बात-चीत में बाधा पड़ना ।

गथ--(सं पुं) পুঁজি, মাল-বস্তু ।
पूँजी, माल ।

गदर--[सं पुं] উখল মাখল, বিদ্ৰোহ ।
खलबली, विद्रोह ।

गदराना--(क्रि अ) আধা পকা, যৌবনত অঙ্গ পুষ্ট হোৱা ।
पकने पर होना, जवानी के समय अंगों का भरना ।

गदहा, गधा—[सं पुं] গাধ, মূৰ্খ ।
एक जानवर ।

गदेला, गद्दा--(सं पुं) গাদী ।
मोटी तोशक ।

गद्दार—(वि) দেশদ্ৰোহী, বিশ্বাস-ঘাটক ।
देश-द्रोही, विश्वास घात ।

गद्दारी—(सं स्त्री) দেশদ্ৰোহিতা। বিশ্বাস ঘাটকতা।
. देशद्रोहिता। विश्वासघात।

गद्दी—(सं स्त्री) সৰু গাদী, ঘোঁৰাৰ জীন, সিংহাসন।
छोटा गद्दा। घोड़े आदि की जीन। सिंहासन, बड़ा पद।

गद्दी-नशीन--(वि) সিংহাসনত অধিষ্ঠিত উত্তৰাধিকাৰী।
सिंहासन पर बैठा हुआ। किसी का उत्तराधिकारी।

गनगनाना--(क्रि अ) থক্ থক্কৈ কঁপা। ৰোমাঞ্চিত হোৱা।
जाड़े से काँपना। रोमांचित होना।

गनना, गिनना--(क्रि स) হিচাপ কৰা। গণনা কৰা।
गिनती करना।

गनीम-[सं पुं] ডকাইত, শত্ৰু।
डाकू, शत्रु।

गनीमत—(सं स्त्री) সুখৰ কথা। আশীৰ্ব্বাদ। এনেয়ে পোৱা বস্তু।
लूट का माल, मुफ्त का माल।

गन्ना—(सं पुं) কুঁহিয়াৰ।
ईख।

गपकना—(क्रि स) টপ কৰে গিলি খোৱা।
चटपट खा' जाना।

गपोड़ा—(सं पुं) মিছা কথা, বাজে কথা।
मिथ्या बात, गप।

गप्प—(सं. स्त्री) গপ।
गप।

गप्पी—(वि) গপাল, অহঙ্কাৰী।
गप मारने वाला।

गफलत-(सं स्त्री) গাফিলি, ভুল।
बेपरवाही, भूल।

गबन--(सं पुं) আনৰ সম্পত্তি আত্মসাৎ কৰা কাৰ্য্য।
दूसरे का धन हड़प लेना।

गब्बर-(वि) অহঙ্কাৰী, দামী।
घमंडी, कीमती।

गभस्ति-[सं पुं] কিৰণ।
किरण।

गभस्तिमान्—(सं पुं) সূৰ্য্য।
सूर्य।

गम - (सं स्त्री) প্ৰৱেশ; গতি।
प्रवेश, गति।
(सं पुं) দুখ, আভাস।
दुख, शोक। फिक्र

गमक—(सं पुं) যাওঁতা।
जानेवाला।
(सं स्त्री) গোন্ধ। তবলাৰ শব্দ।
तबले की आवाज, सुगन्ध।

गमकना—(सं पुं)গোন্ধ ওলোৱা।
महकना।
गम-खोर—(वि) সহিষ্ণু।
सहनशील ।
गमी—(सं स्त्री) মৃত্যু শোক।
मृत्यु-शोक
गया-बीता—(वि) অলায়ক।
नालायक ।
गरक, गर्क—[वि] ডুবগৈ থকা।
বেয়া।
डूबा हुआ। नष्ट।
गरजना—(क्रि अ) তৰ্জন গৰ্জন
কৰা।
गर्जन करना।
गरज मंद, गरजी, गरजू—[वि]
অভাৱত পৰা।
जिसे गरज या आवश्यकता हो।
गरद, गर्द—(सं स्त्री) ছাই।
ধূলি ।
धूल, राख।
गरदन—[सं स्त्री] গল। ডিঙি।
गला। बरतन आदि में गले के
नीचे का भाग।
गरदनियाँ-(सं स्त्री)গঁতা। গলতি ।
गरदन पकड़ कर धक्का देना।
गरदा—(सं पुं) ছাই ।
धूल, गुबार।

गरबीला-(वि) গৰ্ব্বী। অহংকাৰী।
घमंडी।
गरमाई, गरमी, गरमाहट-[सं स्त्री]
উষ্ণতা। খং। আৱেশ।
उष्णता, क्रोध, जोश।
गरमाना—[क्रि अ] গৰম হোৱা।
गरम होना।
(क्रि स) গৰম কৰা।
गरम करना।
गराँव—(सं पुं) পঘা।
पगहा।
गरारा-[वि] অহঙ্কাৰী। প্ৰবল।
गर्व युक्त, प्रवल।
(सं पुं) কুলকুলিযা। ডাঙৰ
মোনা।
कुल्ला। बड़ा थैला।
गरियाना—[क्रि अ] গালি দিযা।
गालियाँ देना।
गरियार—(वि) এলেহুৱা।
सुस्त।
गरी—(सं स्त्री) নাৰিকলৰ শাহ।
नारियल फल के अन्दरका गूदा।
गरीब— [वि] দুখীযা।
निर्धन।
गरीब-निवाज—(वि) দযালু।
दयालु।

गरीब परवर—(वि) দৰিদ্ৰ-প্ৰতি-পালক।
दीन-प्रतिपालक।

गरीबी—[सं स्त्री] দৰিদ্ৰতা।
दरिद्रता।

गरुआना—(क्रि अ) গধুৰ হোৱা
भारी होना।

गरुता,गरुवाई—(सं स्त्री) গধুৰতা
गुरुता।

गरूर—(सं पुं) অহঙ্কাৰ।
घमण्ड।

गरेरा—(सं पुं) বেঢ়।
घेरा।
(वि) ঘিলা।
चक्करदार।

गर्द-गुबार—(सं स्त्री) ধূলি-মাকতি
धूल-मिट्टी।

गर्दिश—(सं स्त्री) বিপাক, বিপত্তি
घुमाव, विपत्ति।

गर्भांक—(सं पुं) নাটকৰ অঙ্কৰ
এটা দৃশ্য।
एक नाटक में किसी अंक का
दृश्य।

गर्विष्ट—(वि) অহঙ্কাৰী।
घमण्डी।

गर्हण—(वि) গৰিহণা।
निन्दा।

गलकंबल—(सं पुं) গল-বিচনী।
गौ के गले के नीचे की झालर।

गलका—(सं पुं) একবিধ ফোঁহা।
एक प्रकार का फोड़ा।

गलगंज—(सं पुं) হাই-উৰুমি।
शोर गुल।

गलगलाना—(क्रि. अ) ডাঙ্কোপ মৰা।
আনন্দিত হোৱা।
डींग मारना। हर्षित होना।

गलत- (वि) অশুদ্ধ, অসত্য।
अशुद्ध, असत्य।

गलती—(सं स्त्री) অশুদ্ধি, ভুল।
अशुद्धि, भूल।

गलना—(क्रि. अ) গলা বা দ্ৰবিত
হোৱা। অকামিলা হোৱা।
द्रव या कोमल होना। क्षीण
होना। बेकाम होना।

गलफड़ा—(सं पुं) জলজন্তুৰ উশাহ
লোৱা ইন্দ্ৰিয়। গলৰ ছাল।
जल जन्तुओं के साँस लेने का
अवयव। गलका चमड़ा।

गलबहियाँ (बाँही)-- (सं स्त्री)
আলিঙ্গন।
आलिंगन।

गलगुच्छा, गल-मुच्छा—(सं पुं)
ডিঙিত হোৱা দীঘল নোম।
गालों पर के बढ़े हुए बाल।

गलशुंडी--[सं स्त्री] জিভাৰ গুৰিৰ ঘণ্টিকা ।
जीभ की जड़ के पास की छोटी घंटी ।

गलही—(सं स्त्री) নাওৰ কঢ়ী ।
नावका अगला उठा हुआ कोना ।

गला—(सं पुं) ডিঙি, গল ।
কণ্ঠস্বৰ ।
कण्ठ । कण्ठ का स्वर ।

गलियारा-[सं पुं] ঠেক ৰাস্তা ।
छोटी गली की तरह तंग रास्ता ।

गलीचा—(सं पुं) দলিচা ।
कालीन नामक मोटा बिछौना ।

गलीज - (वि) লেতেৰা, অশুদ্ধ ।
गंदा । अशुद्ध ।
[सं पुं] লেতেৰা ।
गन्दगी ।

गले-बाज—(सं पुं) ওফাইডাং মাৰি কথা কোৱা মানুহ ।
অসফল গায়ক ।
बहुत बढ़ चढ़कर बातें करने वाला । वह गवैया जिसके गाने में रस कम हो ।

गलेबाजी —(सं स्त्री) ওফাইডাং ।
डीग । गाना गाते समय ज्यादा तानें आदि लेना ।

गल्ला—[सं पुं] পশুৰ জাক, গোলা-মাল, শস্য ।
पशुओं का झुण्ड । अनाज ।

गवन—[सं पुं] গমন, প্ৰস্থান ।
गमन ।

गवना, गौना-[सं पुं] পতিগৃহলৈ প্ৰথম যাত্ৰা ।
द्विरागमन ।

गवारा—(सं पुं) মনঃপুত সহ্য ।
मन भाता । अनुकूल । सह्य ।

गवाह—(सं पुं) সাক্ষী, (সাক্ষী) ।
साक्षी, प्रत्यक्षदर्शी ।

गवाही—[सं स्त्री] সাক্ষ্য ।
साक्ष्य ।

गवैया—(वि) গায়ক ।
गायक ।

गश—(सं पुं) মূৰ্চ্ছা ।
मूर्च्छा, बेहोशी ।

गश्त—[सं पुं] টহল দি থকা ।
टहलना । पहरा देने के लिये चक्कर देना ।

गश्ती—(वि) ঘূৰি ফুৰোঁতা, ভ্ৰাম্যমান ।
घूमने वाला । चलता फिरता हुआ ।

गस्सा—(सं पुं) গৰাহ ।
ग्रास, कौर ।

गह—(सं स्त्री) ধৰা কাৰ্য্য ।
पकड़ । हथियार की मूठ ।

गह गहा – (वि) প্ৰফুল্লিত; ধুমধামকৈ বজা ঢোল, নাগৰা আদি ।
उमंग से भरा हुआ । धूमधाम वाला बाजा ।

गहगहे—(ক্রি বি) প্ৰসন্ন মনেৰে, ধুমকৈ ।
बहुत प्रसन्नता से । धूम से ।

गहना—(ক্রি স) ধৰা , গ্ৰহণ কৰা ।
पकड़ना । ग्रहण करना ।

गाँजना—(ক্রি স) দ'ম লগোৱা ।
ढेर लगाना ।

गाँजा—(सं पुं) গাঁজা, ভাং ।
एक नशीला द्रव्य ।

गाँठ—(सं स्त्री) গাঁঠৰি ।
गिरह ।

गाँठना—(ক্রি স) গাঁথা, জোৰা দিয়া । মিলোৱা ।
जोड़ना, मिलाना । गूँथना ।

गाँसना - (ক্রি স) গাঁথা, বশ কৰি ৰখা ।
गूँथना, छेदना । वश या शासन में रखना ।

गाँसी—(सं स्त्री) ধনুশৰ, বল্লম আদিৰ জোং, গাঁঠি, কপট ।
हथियार और तीर आदि की नोक । गाँठ, कपट ।

गागर—(सं पुं) ডাঙৰ ঘাগৰী ।
बड़ी गगरी ।

गाज—(सं स्त्री) বজ্ৰ, বিজুলী । গৰ্জন ।
वज्र । बिजली । गर्जन ।

गाजना—(ক্রি অ) গৰ্জন কৰা, প্ৰসন্ন হোৱা ।
गरजना, प्रसन्न होना ।

गाजा-बाजा—(सं पुं) নানা ৰকমৰ বাদ্য যন্ত্ৰ ।
अनेक प्रकार के बाजों का समूह ।

गाजी—(सं पुं) বীৰ পুৰুষ ।
बहादुर, वीर ।

गाड़ना—(ক্রি স) পুতি থোৱা । খুঁটা আদি মাটিত গাঁতত পুতি থিয় কৰা ।
गड्ढा खोद कर कोई चीज मिट्टी से ढँकना । खंभा आदि का एक सिरा गड्ढे में जमाकर खड़ा करना ।

गाड़ीवान—[सं पुं] গাড়োৱান ।
गाड़ी हाँकने वा ।

गाढ़—(वि) দৃঢ়।
मजबूत। गाढ़ा। विकट (स्थिति)
गाढ़ा—(वि) ঘন বা ডাঠ, ঘনিষ্ঠ।
घना, घनिष्ट।
गात—[सं पुं] শৰীৰ, গা।
शरीर।
गाती—[सं स्त्री] গাঁতি। গলত ওলোমাই লোৱা চাদৰ।
वह चादर जो गले में बाँधी जाती है।
गाथ—(सं पुं) যশস্যা, সুখ্যাতি।
यश, प्रशंसा।
गाद—(सं स्त्री) গেদ।
गाढ़ी मैल।
गादा— (सं पुं) আধা পকা শস্য।
अधपकी फसल।
गादुर—(सं पुं) বাদুলি।
चमगादर।
गाफिल— (वि) গাফিলি।
बेसुध, असावधान।
गाभा— (सं पुं) কুঁহিপাত।
कोमल नया पत्ता। कोंपल।
गामी— [वि] যাওঁতা। সম্ভোগ কৰোতা।
चलनेवाला संभोग करनेवाला।
गाय—(सं स्त्री) গাই। সৰলমানুহ।
गौ। सीधा मनुष्य।

गाय-गोठ—(सं पुं) গোশালা।
गोशाला।
गायब— [सं स्त्री] লুপ্ত।
लुप्त।
गारद—(सं स्त्री) পহৰা। থানা।
पुलिस-पहरा। पुलिस चौकी।
गारना—(सं स्त्री) আটি পেলোৱা।
निचोड़ना।
गारा—(सं पुं) চূণ চুৰ্কী মিহলোৱা লেও। চিমেণ্ট-বালি মিহলোৱা মচলা।
ईंटे जोडने का सिमेंट आदि का मसाला।
गारुड़ी—(वि) সাপৰ ওজা।
मंत्र से साँपका विष उतारनेवाला
गालन—(सं पुं) গলোৱা কাৰ্য্য।
गलाने की क्रिया।
गाला—(सं पुं) কপাহৰ পাঁজি।
रूई का पूनी।
गाव-तकिया—(सं पुं) দীঘল গাঁৰু।
কল গাঁৰু।
लम्बा और मोटा तकिया।
गावदी—(वि) অকৰা।
अबोध।
गाहक, गाँहक—(सं पुं) গ্ৰাহক।
खरीददार।

गाहना—[क्रि स] থাউনি পোৱা। মথ্ থাহ লেনা। मथना।

गिंजना—[क्रि. अ] মতৰি-মচৰি বেযা কৰা।
किसी चीज के उलट पलटकर या मानकर खराब करना।

गिच पिच—[वि.] অস্পষ্ট।
अस्पष्ट।

गिज गिजा—(वि) সেৰেকা।
बहुत ही गीला जो खाने में अच्छा न लगे।

गिट पिट—(सं स्त्री) আং-বাং।
निरर्थक शब्द।

गिट्टी— (सं स्त्री) সৰু শিলগুটি।
पत्थर के छोटे छोटे टुकडे।

गिड़गिड़ाना—(सं स्त्री) অনুনয় কৰা।
अत्यन्त नम्र होकर कोई बात कहना।

गिद्ध—(सं पुं) শগুণ।
एक पक्षी। गृद्ध।

गिनती—[सं स्त्री] গণনা হিচাপ।
गणना, संख्या।

गिरगिट—(सं पुं) তেজপিয়া।
छिपकली की भाँति एक प्राणी।

गिरना—(क्रि अ) পৰি যোৱা। হ্ৰাস হোৱা। অৱনতি হোৱা।
ऊपर से नीचे आ जाना। जमीन पर पड़ या लेट जाना। अवनति होना। मूल्य का ह्रास होना।

गिरफ्त—(सं स्त्री) ধাৰণ। দোষ বা অপৰাধৰ অনুসন্ধান কৰা ৰীতি।
पकड़, दोष या भूल का पता लगाने का ढंग।

गिरफ्तार—(वि) গ্ৰেপ্তাৰ। ধৰা-পৰা।
पकडा हुआ। बन्दी।

गिरफ्तारी—(सं स्त्री) অৱৰোধ। গ্ৰেপ্তাৰী। বন্দীকৰণ।
गिरफ्तार होनेकी क्रिया या भाव

गिरबान—[सं पुं] গল। ডিঙি।
गर्दन।

गिरमिट—(सं पुं) গিৰ্মিট, পাক-ভোহৰ, চুক্তি।
बड़ा वरमा। शर्तनामा।

गिरवी—(वि) বন্ধক
बन्धक।

गिरह—[सं स्त्री] টোপোলা। গিৰা এক গজৰ ষোল্ল ভাগৰ এভাগ
गाँठ। एक गज का सोलहवां भाग।

गिरहकट—(वि) জেপকটা চোৰ।
पाकिट-मार।

गिरा—(सं स्त्री) বাক্শক্তি। জিভা। বাণী।
वाणी। जिह्वा। सरस्वती।

गिराना- (क्रि सं) পেলোৱা। মূল্য কম কৰা।
किसी चीज को नीचे डाल देना। मूल्य आदि घटाना।

गिरावट— [सं स्त्री] পতন। হ্রাস।
पतन। ह्रास।

गिरि— [सं पुं] পাহাৰ। এটা উপাধি।
पहाड़। एक उपाधि।

गिरिजा— (सं स्त्री) পাৰ্ব্বতী, গঙ্গা।
पार्वती, गंगा।

गिरी— [सं स्त्री] গুটিৰ ভিতৰৰ শাহ।
बीजके अन्दर का गूदा।

गिर्द— (अव्य) আশে-পাশে, চাৰিওফালে।
आसपास। चारों ओर।

गिलकार—(वि) ফুল কটা মিস্ত্ৰী।
गारे से दीवारों पर बेलबूटे बनाने वाला कारीगर।

गिलटी—(सं स्त्री) টেমেকা, টেমুনা।
शरीर के अन्दर की छोटी गोल गांठ। (ग्लैंड।)

गिलहरी—(सं स्त्री) কেৰ্কেটুৱা।
चूहे की तरह मोटी रोयेंदार पूँछवाला एक जन्तु।

गिला—(सं पुं) আপত্তি, নিন্দা।
शिकायत। निन्दा।

गिलाफ—[सं पुं] গিলিপ, খাপ।
लिहाफ आदि की खोल। म्यान।

गिलास— (सं पुं) গিলাচ।
एक प्रकार का बर्तन।

गीतकार—(सं पुं) গীতিকাৰ।
गीत लिखने वाला।

गीदड़—(सं पुं) শিয়াল
शृगाल।

गीध—[सं पुं] শগুণ।
गिद्ध।

गीर्वाण—(सं पुं) দেৱতা।
देवता।

गीला—(वि) ভিজা, তিতা।
भींगा हुआ।

गुंजाइश— (सं स्त्री) অৱকাশ, সুবিধা।
अवकाश। सुविधा।

गुंजार—(सं पुं) ভোমোৰাৰ গুঞ্জন।
भौंरों की गूँज।

गुंडई, गुंडापन—(सं स्त्री) গুণ্ডামি।
ठुंडे सा-आचरण और व्यवहार।

गुँथना, गुथना—(क्रि अ) গাঁথ।
उलझना।

गुंधना—(क्रि स) মৰ্দিত হোৱা, আটা-ময়দা আদি সনা।
माड़ा या गूँथा हुआ आटा।

गुंफन—[सं पुं] গোঁঠা।
गूँथना।

गुंबज (द)—(सं पुं)। গুম্বজ মন্দিৰ আদিৰ ওপৰৰ কলচীৰ নিচিনা অংশ।
गोल। ऊँची और उभरी हुई छत।

गुग्गुल—(सं पुं) সৰল গছ।
एक पेड़ जिसकी गोंद सुगन्ध के लिये जलाते हैं।

गुच्छा—(सं पुं) থোপা, গোছা, কোছা।
एकमें लगे या बँधे हुए पत्तों और फूलों का, या सूत और छोटी वस्तुओं का समूह।

गुजर, गुजरान, गुजारा-(सं पुं) निर्वाह। চুকি পোৱা।
निर्वाह। निकास। पहुँच।

गुजरना—(क्रि अ) অতিবাহিত হোৱা। মৰা।
बीतना या कटना। *मरना।

गुजर-बसर—(सं पुं) निर्वाह।
निर्वाह।

गुजारना—(सं स्त्री) অতিবাহিত কৰা, দাখিল কৰা।
बिताना, पेश करना।

गुजारिश—(सं स्त्री) আবেদন, প্ৰাৰ্থনা।
निवेदन। प्रार्थना।

गुझिया—(सं स्त्री) এবিধ মিঠাই।
एक प्रकार का पकवान या मिठाई।

गुट, गुट्ट—(सं पुं) সমূহ, দল।
समूह, दल।

गुटकना-(क्रि स) গিলি খোৱা।
निगलना।
(क्रि अ) পাৰ চৰাইৰ দৰে বুক বুক কৰা।
कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।

गुटका—(सं पुं) পুস্তিকা।
छोटे आकार की पुस्तक।

गुठली—(सं स्त्री) আমঠি।
आम आदि फलों के बड़े बीज।

गुड़गुड़ाना-[क्रि अ] গোৰ-গোৰণি শব্দ হোৱা।

गुड़ गुड़ शब्द होना ।
(क्रि स) গোৰ-গোৰ শব্দ
কৰা ।
गुड़ गुड़ शब्द करना ।

गुड़गुड़ी—(सं स्त्री) হোকা ।
हुक्का ।

गुड़िया—(सं स्त्री) কাপোৰৰ
পুতলা ।
कपड़े की पुतली ।

गुड्डा—(सं पुं) কাপোৰৰ
পুতলা ।
कपड़े का बना हुआ पुतला ।

गुड्डी—(सं स्त्री) চিলা ।
कागज की पतंग, कन कौआ ।

गुणग्राहक, गुणग्राही—(वि) গুণৰ
বা গুণীৰ যশ গোৱা ।
गुण या गुणियों का आदर करने
वाला ।

गुत्थम-गुत्था—(सं पुं) আউল,
হতাহতি ।
उलझाव, हाथाबाँही ।

गुत्थी—(सं स्त्री) আউল । সমস্যা ।
গাঁঠি ।
उलझन । समस्या । गाँठ ।

गुदगुदा—(वि) মঙহাল । কোমল ।
मांस से भरा हुआ । मुलायम ।

गुदगुदाना—[क्रि स] কাইকুতি
বা ভাকুটকুটনি দিয়া ।
किसी को हँसाने के लिये बगल
आदि सहलाना ।

गुदगुदी—(सं स्त्री) কাইকুটি ।
ভাকুটকুনি ।
बगल आदि कोमल अंगों को
सहलाने से होने वाला कोमल
अनुभव । उमंग ।

गुदड़ी—[सं स्त्री] কাথা ।
चिथड़ों का बना कन्या ।

गुदा–(सं स्त्री) গুহ্যদ্বাৰ । শৌচদ্বাৰ ।
मलद्वार ।

गुदाना—(सं स्त्री) টিকা বা ছিটা
দিয়া ।
गोदने का काम करना ।

गुदारा—(सं पुं) নাৱেৰে নদী
পাৰ কৰা কায্য ।
नाव से नदी पार करनेका काम ।

गुद्दी—(सं स्त्री) গুটিৰ শাহ ।
পাছ-মূৰ ।
बीज के अन्दर का गुदा । सिर
का पिछला भाग ।

गुनगुना— (वि) কুহুমীয়া ।
जरा सा गर्म ।

गुन-गुनाना—(क्रि अ) গুণগুণ শব্দ
কৰা ।

अस्पष्ट स्वर में गाना या शब्द करना ।

गुनना—(ক্রি স) গুণ বা পূৰণ কৰা । মুখস্থ কৰা ।
गुणा करना । मानना । रटना ।

गुनहगार—(वि) পাপী । অপৰাধী ।
पापी, अपराधी ।

गुना—(সং পুং) গুণ, বাৰ ।
संख्या का उतनी बार सूचित करनेवाला एक प्रत्यय ।

गुनावन—(सं स्त्री) ভবা-চিন্তা ।
सोच विचार ।

गुनाह—(सं पुं) পাপ । অপৰাধ
पाप । अपराध ।

गुपचुप—(क्रि. वि) গোপনে ।
गुप्त रूप से । चुपचाप ।

गुप्ती—(सं स्त्री) ভিতৰত তৰোৱাল সোমাই থকা লাঠি ।
वह छड़ी जिसके अन्दर किर्च या तलवार छिपी हो ।

गुफा—(सं स्त्री) গুহা ।
गुहा ।

गुबार—(सं पुं) ধূলি । মনৰ খং বা দুখ ।
गर्द, धूल । मन का क्रोध, दुख आदि ।

गुब्बारा—(सं पुं) বেলুন ।
बैलून ।

गुम—[वि] গুপ্ত । লুপ্ত ।
छिपा हुआ । अप्रसिद्ध । खोया हुआ ।

गुमटा—(सं पुं) মূৰত খুন্দা খাই টেমেকা ৰান্ধি উঠা ।
सिर पर चोट लगने से होनेवाली सूजन ।

गुमटी—(सं स्त्री) সৰু কোঠা ।
छोटा कमरा या घर ।

गुमना—[क्रि अ] হেৰাই যোৱা ।
खो जाना ।

गुमनाम—(वि) অজ্ঞাত ।
अज्ञात ।

गुमर—(सं पुं) অহঙ্কাৰ ।
घमंड ।

गुमराह—(वि) পথহাৰা । বিপথগামী । পথভ্ৰষ্ট ।
रास्ता भूला हुआ । कुमार्ग गामी ।

गुमान—[सं पुं] অহঙ্কাৰ ।
অনুমান ।
घमंड । अनुमान ।

गुमानी—(वि) অহঙ্কাৰী
घमण्डी ।

गुर—(सं पुं) উপায় । যুক্তি ।
उपाय, युक्ति ।

गुरगा—(सं पुं) চাকৰ। গুপ্তচৰ। চেলা। জাসুস।

गुरची—[सं स्त्री] শোটোবা। আউল।
निकुड़न। उलझन।

गुरदा—(सं पुं) মূত্ৰাধাৰ। মূত্ৰস্থলী। সাহস।
कलेजे के पास का एक भीतरी अंग। साहस।

गुरमुख, गुरुमुख—(वि) দীক্ষিত।
जिसने गुरुसे धार्मिक दीक्षा ली हो।

गुरमुखी, गुरुमुखी— (सं स्त्री) গুৰু নানক প্ৰবৰ্ত্তিত এক প্ৰকাৰৰ আখৰ আৰু ভাষা।
पंजाब में प्रचलित एक लिपि।

गुराई, गोराई— (सं स्त्री) বগা গুণ বিশিষ্ট।
गोरापन।

गुरिया—(सं स्त्री) দানামণি। মাছ বা মাংসৰ টুকুৰা।
माला में का मनका या दाना।
मछली, माँस का टुकड़ा।

गुरुआई—[सं स्त्री] গুৰুৰ পদ। চাতুৰী।
गुरुका पद। चालाकी।

गुरुकुल—[सं पुं] গুৰুৰ আশ্ৰম বা গুৰুৰ বংশ।
गुरुका आश्रम। गुरुका वंश।

गुरुच—(सं स्त्री) এবিধ কেহা লতা।
एक प्रकार की कड़वी लता।

गुरुडम—[सं पुं] গুৰু-আড়ম্বৰ।
स्वयं गुरु बनकर दूसरों से अपनी पूजा करवाना। आडम्बर।

गुरुत्वाकर्षण— (सं पुं) মাধ্যাকৰ্ষণ।
पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति।

गुरुद्वारा—(सं पुं) শিখসকলৰ ধৰ্ম্ম-মন্দিৰ।
सिखों का धर्म मन्दिर।

गुरेरना—(क्रि स) খংভাবে চোৱা।
क्रोध से देखना।

गुर्जर— [सं पुं] গুজৰাট। গুজৰ জাতি।
गुजरात। गूजर जाति।

गुर्राना—(क्रि अ) গেঙেৰিয়া।
कुत्ते आदि का-घुर घुर बोलना। क्रोध में बोलना।

गुल—[सं पुं] ফুল গোলাপ।
फूल। गुलाब का फूल।

गुल-गपाड़ा—[सं पुं] গোল-মাল।
शोर गुल।

गुलगुला—[सं पुं] এবিধ মিঠাই ।
एक प्रकार का मीठा पकवान ।

गुलचा—(सं पु) মৰমতে গালত থপৰিওৱা ।
प्रेम पूर्वक गालों पर किया धीमा आघात ।

गुलछर्रा—(सं पुं) ভোগবিলাস ।
स्वच्छन्दता पूर्वक किया जानेवाला भोग विलास ।

गुलजार—(सं पुं) বাগিচা ।
बाग ।
(वि) উৎফুল্ল ।
हरा भरा । आनन्द पूर्ण ।

गुलदस्ता—[सं पुं] ফুলৰ থোপা ।
फूलों का गुच्छा ।

गुलदान—(सं पुं) ফুল-দানী
फूलों का गुच्छा रखने का पात्र ।

गुलनार—[सं पुं] ডালিমৰ ফুল ।
अनार का फूल ।

गुल-बकावली—[सं स्त्री] এবিধফুল
एक प्रकारका फूल ।

गुल-बदन—(सं पुं) এবিধ পাট-কাপোৰ । গোলাপৰ নিচিনা শৰীৰ ।
एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

गुलशन—(सं पुं) বাগিচা ।
बाग ।

गुलाब—(सं पुं) গোলাপ ।
एक प्रकार का सुगंधित फूल ।

गुलाब-जल—(सं पुं) গোলাপ জল ।
गुलाब के फूलों का अर्क ।

गुलाबी—(वि)গোলাপী । গোলাপ-সম্বন্ধীয় ।
गुलाब के रंग का । गुलाब सम्बन्धी ।

गुलाम—(सं पुं) ক্রীতদাস, বান্ধা, চাকৰ ।
क्रीत दास । नौकर ।

गुलामी—(सं स्त्री) দাসত্ব, পৰাধীনতা ।
दासता । पराधीनता ।

गुलाल—[सं पुं] ফাকু ।
एक प्रकार का लाल चूर्ण ।

गुलिस्ताँ—(सं पु.) বাগিচা ।
बाग ।

गुलूबंद—(सं पुं) গল-বন্ধা । গলত পিন্ধা অলঙ্কাৰ ।
सिर पर या गले में लपेटने की एक लम्बी पट्टी ।

गुलेल—(सं स्त्री) বাটলু গুটীয়া ধনু ।
छोटा धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती है ।

गुल्फ—(सं पुं) খাৰ গাঁঠি ।
एडी पर की गाँठ ।

गुल्म—(सं पुं) জোপোহা গছ। সৈন্য দল ।
एक जड़से कई तनों के रूप में निकलने वाला पौधा। सेना की टुकड़ी ।

गुल्ली-डंडा—(सं पुं) ডটাগুটি বা টাংগুটি খেল ।
लडकों का एक खेल ।

गुस्ताख—(वि) অশিষ্ট, ধৃষ্ট, অভদ্ৰ ।
धृष्ट । अ-शालीन ।

गुस्ताखी—(सं स्त्री) ধৃষ্টতা ।
उद्दण्डता ।

गुस्सा—(सं पुं) খং ।
क्रोध ।

गुस्सैल—(वि) খঙাল ।
क्रोधी ।

गुह—(सं पुं)কাৰ্ত্তিক, ঘোঁৰা, বিষ্ণুৰ এটা নাম, গুহা, হৃদয়, মলি ।
कार्तिकेय । घोड़ा । विष्णु । एक निषाद । गुफा । हृदय । मल, मैला ।

गुहना—[क्रि. स] গঁথা ।
गूँथना ।

गुहराना—[क्रि स] চিঞৰি মতা ।
पुकारना ।

गुहांजनी, गुहेरी—(सं स्त्री) আচিনাই (আজনি) ।
आँख की पलक पर होनेवाली फुन्सी ।

गुहा-[सं स्त्री] গুহা, গহ্বৰ ।
कन्दरा । गुफा ।

गुहारना—(क्रि स) ৰক্ষাৰ কাৰণে চিঞৰা ।
रक्षा के लिये पुकार मचाना ।

गुह्य—(वि) গুপ্ত, গোপনীয় ।
छिपाने योग्य । गोपनीय ।

गूँगा—[वि] বোবা ।
जिसमें बोलने की शक्ति न हो ।

गूँज—(सं स्त्री) গুণ্‌গুণনি ।
भौरों के गूँजने का शब्द । गुंजार । प्रतिध्वनि । छोटे छोटे छल्ले के रूप में लपेटा या घुमाया हुआ तार ।

गूँजना—[क्रि अ] গুণ গুণ কৰা । প্ৰতিধ্বনিত হোৱা ।
भौरों का मधुर ध्वनि करना । प्रतिध्वनि से व्याप्त होना या भरना ।

गूँथना—(क्रि स) গঁথা । আটা মাৰা ।
आटा अच्छी तरह माँड़ना । सूत पिरोकर माला आदि बनाना ।

गूजर-(सं पुं) গুৱাল।
ग्वाला [सं स्त्री—गूजरी]

गूढ़—(वि) গুপ্ত, ভিতৰুৱা, কঠিন।
छिपा हुआ। गहरे या गम्भीर आशयवाला। जिसका आशय समझना कठिन हो।

गूदड़—[सं पुं] ফটাকানি।
फटे पुराने कपड़े। चिथड़ा।

गूदा—(सं पुं) ফলৰ শাহ।
फल के भीतर का खाद्य अंश। खोपड़ी का सार भाग। नारियल आदि की गिरि।

गून—(सं स्त्री) নাও টনা জৰি।
नाव खींचने की रस्सी।

गूलर—(सं पुं) ডিমৰু ফল।
एक प्रकार का फल। उदुंबर।

गूह—(सं पुं) মলি বিষ্ঠা।
विष्टा। मैला।

गृध्र—(सं पुं) শগুন।
गिद्ध पक्षी।

गृहपति—(सं पुं) ঘৰৰ গৰাকী। জুই।
घर का मालिक। अग्नि।

गृही—(सं पुं) গৃহস্থ, যাত্ৰী।
गृहस्थ। यात्री।

गृह्य—(वि) ঘৰ সম্বন্ধীয়।
गृह सम्बन्धी।

गेंडुआ, गेंदुआ—[सं पुं] গোল গাৰু। বল।
गोल तकिया। गेंद।

गेंडुरी-(सं स्त्री) কথৰা, আথাৰি।
गोल चक्कर। कुण्डली।

गेंद, गेंदुक—(सं पुं) বল।
कपड़े, चमड़े आदि का गोला। कन्दुक।

गेंदा—(सं पुं) গেন্ধেমালতী ফুল।
पीले रंग का एक फूल।

गोड़ना—(क्रि स) বোঢ় ধৰা।
लकीर आदि से घेरना। परिक्रमा करना। खेत की मेड़ बनाना। रहट चलाना

गेय—(वि) গোৱাৰ উপযোগী।
गाने के योग्य।

गेरना—(क्रि स) পেলোৱা, পেলাই দিয়া, পিন্ধা।
गिराना। डालना। पहनना।

गेह—(सं पुं) ঘৰ।
घर। मकान।

गेहुँअन—(सं पुं) গোম সাপ।
एक जहरीला साँप।

गेहुँआँ—(वि) ঘেহুঁ বৰণীয়া ।
गेहूँ के रंग का ।

गेहूँ—[सं पुं] ঘেহু ।
एक अनाज जिसके आटे की रोटी बनती है ।

गैंड़, गैंड़ा—(सं पुं) গঁড় ।
भैंसे के आकार का एक जंगली पशु ।

गैब—(सं पुं) পৰোক্ষ ।
परोक्ष ।

गैबर—(सं पुं) প্ৰকাণ্ড হাতী । এবিধ চৰাই ।
बड़ा हाथी । एक प्रकार की चिड़िया ।

गैया—(सं स्त्री) গাই ।
गाय ।

गैर—(वि) ভিন্, পৰ ।
अन्य । दूसरा ।

गैरजिम्मेदार—(वि) দায়িত্বহীন ।
अपनी जिम्मेदारी न निभानेवाला ।

गैरत—(सं स्त्री) লাজ ।
लज्जा । शरम ।

गैर मामूली—[वि] অসাধাৰণ ।
असाधारण ।

गैरमुनासिब, गैरवाजिब—(वि)
অনুচিত ।
अनुचित ।

गैर सरकारी-(वि) বে-চৰকাৰী ।
जो सरकारी न हो ।

गैरहाजिर—(वि) অনুপস্থিত ।
अनुपस्थित ।

गैरहाजिरी--(सं स्त्री) অনুপস্থিতি ।
अनुपस्थिति ।

गैरिक—(वि) গেৰুৱা মাটিৰে বোলোৱা । गेरूसे रंगा हुआ ।

गैल—(सं स्त्री) সুৰুসুৰীয়া বাট ।
छोटा रास्ता ।

गोंठ—[सं स्त्री] কঁকালত মেৰ খাই থকা ধুতিৰ অংশ ।
कमर पर धोती की लपेट ।

गोंड़—[सं पुं] মধ্যপ্ৰদেশৰ এটা বনৰীয়া জাতি ।
मध्य प्रदेश की एक जंगली जाति ।

गोंद-(सं पुं) গম্ এঠা ।
पेड़ के तनों से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार स्राव । लस्सा ।

गोंदरी-(सं स्त्री) শেগুনৈ ।
पानी में होनेवाली एक घास या उस घास की बनी चटाई ।

गो—[सं स्त्री] গাই গৰু । বাণী, কিৰণ, ব্ৰজবাণি ।

गाय। किरण। वृष राशि। इन्द्रिय। वाणी। सरस्वती। आँख। बिजली। दिशा। माता। जीभ। दूध देनेवाले पशु।

(सं पु) গৰু, নান্দী, সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ, বাণ। ষেঁৰা।

बैल। नन्दी। घोड़ा। सूर्य। चन्द्रमा। वाण।

(अव्य) যদিও।

यद्यपि।

गोइँठा—(सं पुं) গোবৰ গুঠা। उपला।

गोइंदा—(सं पुं) গুপ্তচৰ, চোৰাং-চোৰা। गुप्तचर। जासूस।

गोइयाँ—(सं पुं) সঙ্গী, লগ। साथी।

(सं स्त्री) সখী। सखी। सहेली।

गोई—(सं स्त्री) বলদ গৰুৰ হাল। সখী। गाड़ी, हल आदि में जोतने की बैलों की जोड़ी। सखी।

गोऊ—(वि) লুকাওঁতা। छिपानेवाला।

गोकर्ण—(वि) গৰুৰ নিচিনা কাণ যুক্ত। गौ के से लम्बे कानों वाला।

गोकुल—(सं पुं) গৰুৰ দল, গোশালা। गायों का झुण्ड। गोशाला।

गोखरू—(स पुं) কাঁইটীয়া লতা। एक कंटीले फलवाली झाड़ी। कपड़ों पर लगने वाला एक साज। एक गहना।

गो-चर—(स पुं) ইন্দ্ৰিয়েৰে বুজ পোৱা। जिसका ज्ञान इन्द्रियोंसे हो सके।

गोचर—(स पु) চৰণীয়া পথাৰ। चरागाह।

गोजर—[सं पुं] বিছা। कन खजूरा कीड़ा।

गोजी—(सं स्त्री) ডাঙৰ লাঠি। बड़ी लाठी।

गोट—(सं स्त्री) কপৰ গুণাৰ পাৰি। মণ্ডলী। গোষ্ঠী। পাশাখেলৰ গুটি। वह पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है। मंडली। गोष्ठी। चौपड़ आदि खेलनेका मोहरा।

गोटा—(सं स्त्री) কপৰ গুণাৰ পাৰি। ধনিয়া মচলা। নাৰিকলৰ শাহ।

बादले का वह पतला फीता जो कपड़ों पर लगाया जाता है। धनिका। नारियल की गरी। सूखा हुआ मल।

गोटी—(स ं स्त्री) ল'বা-ছোৱালীয়ে খেল খেমালা কৰা শিলগুটি।
पत्थर या मिट्टी का छोटा टुकड़ा। चौपड़ खेलनेका मोहरा। गोटियों का खेल। लाभ का योग।

गोठ–(स ं स्त्री) গোশালা, মণ্ডলী, শ্ৰদ্ধা। ভ্ৰমণ।
गोशाला। गोष्ठी। श्रद्धा। सैर

गोड़—(स ं पु ं) ভৰি।
पैर।

गोड़इत—(सं पु ं) গাঁৱত পহৰা দিয়া চকিদাৰ।
गाँवमें पहरा देनेवाला चौकीदार।

गोड़ना–(क्रि स) গছ পুলিৰ গুৰি খুচৰি দিয়া।
पौधे के बढ़ने के लिये चारों ओर की मिट्टी कोड़ना।

गोड़ा—(स ं पु ं) খাট আদিৰ খুৰা।
पलंग आदि का पाया।

गोड़ाई—(सं स्त्री) খুচৰি দিয়া কাৰ্য্য বা তাৰ বানচ।
गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गोड़ा पाई—(स ं स्त्री) ঘনে ঘনে আহ-যাহ।
बार बार आना जाना।

गोड़ारी—(स ं स्त्री) জোতা।
ভৰি পথান। पैताना। जूता।

गोत—(स ं पु ं) গোত্ৰ, বংশ। সমূহ।
खानदान। वंश। समूह। जत्था।

गोतना—(क्रि स) ডুবোৱা।
पानीमें डुबाना। नीचे की तरफ ले जाना।
[क्रि अ] তললৈ দোঁ খুওৱা, টোপনি নাইবা তন্দ্ৰা লগা।
नीचेकी तरफ झुकना। निद्रा, तंद्रा आदिके वशमें होना।

गोता—[स ं पु ं] ডুব।
डुबकी।

गोताखोर—(स ं पु ं) পানীত ডুব দি বস্তু বিচাৰোঁতা।
पानीमें डुबकी लगानेवाला। पन डुब्बी नाव।

गोतिया, गोती—(स ं पु ं) সম-গোত্ৰীয়।
गोत्रीय। भाई बन्द।

गोत्र—(स ं पु ं) সন্তান, নাম, বজাৰ ছত্ৰ, দল, বংশ।

सन्तान । नाम । राजाका छत्र । दल । वंश ।

गोद, गोदी—(सं स्त्री) কোলা। উৎসংগ। ক্রোড়।
उछंग । क्रोड़ ।

—लेना—তোলনীয়া পো ।
किसीको अपना दत्तक पुत्र बनाना ।

गोदना—(क्रि स) বিন্ধি দিয়া, উচটাই দিয়া, বিদ্রূপ কৰা ।
चुभाना । उसकाना । ताना देना ।

गो-दान—(सं पुं) ব্ৰাহ্মণক গৰু দান কৰা কাৰ্য্য, চূড়াকৰণ ।
ब्राह्मण को गाय दान करने की क्रिया । मुण्डन संस्कार ।

गोदाम—(सं पुं) গুদাম, বস্তু গোটাই ৰখা ঘৰ। বস্তু থোৱা ভঁৰাল ।
वह स्थान जहाँ बहुत सा माल या सामान इकट्ठा रखा जाता है ।

गोधन-(सं पुं) গৰুবোৰ, গোৰূপী সম্পত্তি। গোবৰ্দ্ধন পৰ্ব্বত ।
गौएँ गौ रूपी सम्पत्ति । गोवर्द्धन पर्वत ।

गोधूम—(सं पुं) ঘেহু ।
गेहूँ ।

गोना—(क्रि स) লুকোৱা ।
छिपाना ।

गोप—[सं पुं] গৰুৰ ৰক্ষক, গোৱাল। ডিঙিত পিন্ধা অলঙ্কাৰ ।
गौ का रक्षक । ग्वाला । गले में पहनने का एक गहना ।

गोपना-[क्रि स] গোপন কৰা । লুকোৱা ।
छिपाना ।

गोपांगना, गोपी—[सं स्त्री] গুৱালিনী বা গুৱালনী ।
ग्वालिनी । गोप पत्नी ।

गोपी चन्दन—[सं पुं] এবিধ হালধীয়া মাটি ।
एक प्रकार की पीली मिट्टी ।

गोप्ता—(वि) ৰক্ষক ।
रक्षक ।

गोप्य—(वि) গোপন কৰিব লগীয়া ।
छिपाने योग्य ।

गोबर गणेश—[सं पुं] কুৰূপ, মূৰ্খ ।
भद्दा । मूर्ख ।

गोभी—(सं स्त्री) কবি ।
एक प्रकारकी घास । एक प्रकार का फूल या पत्तेदार गोला जो तरकारी के रूपमें खाया जाता है ।

गो मुख—(सं पुं) গৰুৰ মুখ। এবিধ বাদ্য যন্ত্ৰ।
गौका मुँह। एक प्रकार का बाजा।

गोमुखी—(सं स्त्री) মালা জপিবলৈ মোনা।
माला जपने की थैली।

गोमेद (क)—(सं पुं) এবিধ ৰত্ন।
एक प्रकार का रत्न।

गोमेध—(सं पुं) যি যজ্ঞত গৰু বলি দিয়া হয়।
एक प्रकार का यज्ञ जिसमें गौ की बलि दी जाती थी।

गोया—(क्रि वि) যেন বা যেনে।
मानो। जैसा।

गोर—(वि) বগা।
गोरा।
(सं स्त्री) কবৰ।
कब्र।

गोरख धंधा-[सं पुं] ইন্দ্ৰজাল, জঞ্জাল।
इन्द्रजाल। बहुत उलझन की कोई बात या काम जिसे समझना या करना कठिन हो।

गोरख पंथ—[सं पुं] গোৰখনাথৰ দ্বাৰা প্ৰৱৰ্ত্তিত পন্থ।
गोरखनाथ का चलाया हुआ एक सम्प्रदाय।

गोरखा—[सं पुं] নেপালৰ অন্তৰ্গত এখন প্ৰদেশ বা তাৰ বাসিন্দা।
नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश या वहाँ का निवासी।

गो रज—[सं पुं] গোধূলি, গৰুৰ খুৰাৰ পৰা উৰা ধূলি।
गौओं के खुरसे उड़नेवाली धूल।

गोरस—[सं पुं] গাখীৰ। দৈ।
गा का दूध। दही। मठा।
इन्द्रियों का सुख।

गोरा- (वि) বগা।
गौर वर्ण का।
[सं पुं] ফিৰিঙ্গী।
फिरंगी।

गोराई—(सं स्त्री) বগা গুণ বিশিষ্ট। সৌন্দৰ্য্য।
गोरापन। सुन्दरता।

गोरिल्ला—[सं पुं] গৰিলা।
एक प्रकार का बन-मानुस।

गोरी—(सं स्त्री) ৰূপৱতী স্ত্ৰী।
रूपवती स्त्री।

गोरू—[सं पुं] চাৰিঠেঙীয়া জন্তু।
मवेशी।

गोरोचन—[सं पुं] এবিধ হাল-ধীয়া বৰণৰ সুগন্ধি দ্ৰব্য ।
एक पीला सुगन्धित द्रव्य ।

गोलंदाज [सं पुं] কামান চলোৱা সৈন্য । গোলন্দাজ ।
तोप चलानेवाला । तोपची ।

गोलक—[सं पुं] ঘূৰণীয়া বস্তু । চকুৰ গহ্বৰ । কোটৰ ।
गोल पिंड । आँख का डेला । गुंबद ।

गोलगप्पा—[सं पुं] এবিধ পিঠা ।
एक प्रकार की छोटी फुलकी (पूरी) ।

गोलमिच—[सं स्त्री] জালুক ।
काली मिर्च ।

गोला—(सं पुं) গোলাকাৰ বস্তু । গুলি ।
बड़ी गोल चीज । लोहे का गोल पिंड जो तोपों से शत्रुओं पर फेंका जाता है । रस्सी, सून आदि की लपेटी हुई गोल पिंडी ।

गोलाई—(सं स्त्री) গোলাকাৰ ।
गोलापन ।

गोला बारूद—(सं पुं) খাৰ-বাৰুদ ।
युद्धमें काम आनेवाले अस्त्र शस्त्र आदि ।

गोलार्द्ध—(सं पुं) পৃথিবীৰ আধাভাগ ।
पृथ्वी का आधा भाग ।

गोली—(सं स्त्री) গুলি ।
छोटा गोलाकार पिंड । औषध की बटिका । मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड । बन्दूक में भर कर छोड़ने की सीसे की गोल पिंडी ।

गो-लोक—(सं पुं) বৈকুণ্ঠ, গোলোক ধাম ।
वैकुण्ठ ।

गोश—(सं पुं) কাণ ।
कान ।

गोशवारा—(सं पुं) কাণ-ফুল, কঁৰিয়া, ফুলাম পাগুৰি ।
कान का बाला । कुण्डल । सिर पेंच ।

गोशा—[सं पुं] কোণ, চুক, ধণুৰ জোঙা মূৰ ।
कोना । नोक । धनुषकी कोटि ।

गोश्त—(सं पुं) মাংস ।
मांस ।

गोष्ठी—[सं स्त्री] মণ্ডলী, কথা-বতৰা, পৰামৰ্শ ।
सभा । बात-चीत । परामर्श ।

गोसाईं—(सं पुं) গোস্বামী, ঈশ্বৰ, সাধু-সন্ন্যাসী, গৰাকী।
गौओंका स्वामी। ईश्वर। विरक्त साधु। मालिक। प्रभु।

गोह -[सं स्त्री] গুঁই।
छिपकली की तरह का एक जानवर।

गोहरा—(सं पुं) শুকান গোবৰ।
सुखाया हुआ गोबर।

गोहराना—(क्रि स) মতা।
पुकारना।

गोहार—(सं स्त्री) ৰক্ষাৰ্থে চিঞৰ। গোলমাল।
रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाना।

गौं—[सं स्त्री] সুযোগ, অভিপ্ৰায়, স্বাৰ্থ।
मौका। सुयोग। प्रयोजन। गरज। ढंग। तरह।

गौख-[सं स्त्री] জালী, বাৰান্দা।
गवाक्ष। खिड़की। आला। ताक।

गौगा -[सं पुं] হাই-উৰুমি। উৰা-বাতৰি।
शोर। गुल गपाड़ा। अफवाह।

गौड़ी—(सं स्त्री) গুড়ৰ পৰা তৈয়াৰী মদ।
गुड़ से बनी शराब। काव्य में एक रीति।

गौन—[सं पुं] গমন।
गमन।

गौनहर—[सं पुं] কইনাৰ যতক; গান গাই জীৱিকা অৰ্জন কৰা তিৰোতা।
वह स्त्री जो वधू के साथ उसके ससुराल जाती है। गानेका पेशा करनेवाली स्त्री।

गौना—(सं पुं) বিয়াৰ কইনা অনা প্ৰথা।
द्विरागमन।

गौर—(वि) বগা।
गोरा। सफेद।
(सं पुं) ৰঙা বৰণ চন্দ্ৰ, সোণ, ভাব-চিন্তা।
लाल रंग। पीला रंग। चंद्रमा। सोना। केसर। सोच-विचार। खयाल।

गौरा—(सं पुं) মতা ঘৰচিৰিকা চৰাই।
मादा गौरैया पक्षी।

गौरिया—(सं स्त्री) মাছ-ৰোকা চৰাই। মাটিৰ সৰু হোকা।
एक काला जल पक्षी। मिट्टी का छोटा हुक्का।

गौरी—[सं स्त्री] পাৰ্বতী। আঠ বছৰীয়া কন্যা। তুলসী। বগী গাই।
पार्वती। आठ-वर्ष की कन्या। तुलसी। सफेद गौ।

गौरैया—(सं पुं) কুকুৰা চৰাই।
चटक या चिड़ा नामक पक्षी।

गौहर—[सं पुं] মুক্তা।
मोती

ग्यारस·(सं स्त्री) একাদশী তিথি।
एकादशी तिथि।

ग्रंथन—[सं पुं] গম এঠা লগাই জোৰা লগোৱা। গঁথা।
गोंद लगाकर चिपकाना, जोड़ना या बाँधना। गूँथना।

ग्रंथि—(सं स्त्री) গাঁঠি, বান্ধ, মায়াজাল।
गाँठ। बन्धन। मायाजाल।

ग्रंथित, ग्रथित—(वि) গাঁঠি লগা। আনৰ লগত যুক্ত।
जिसमें गाँठ लगी या लगाई गयी हो। किसी के साथ गूथा हुआ।

ग्रंथि बन्धन—(सं पुं) লগুণ গাঁঠি।
गँठ-बंधन।

ग्रसना, ग्रासना—(क्रि स) গ্ৰাস কৰা। আক্ৰোশেৰে ধৰা। উৎপীড়ন কৰা।
निगलना। बुरी तरह से पकड़ना। सताना।

ग्रसित ग्रस्त—(वि) গ্ৰস্ত পীড়িত।
पकड़ा हुआ। पीड़ित। खाया हुआ।

ग्रह दशा—(सं स्त्री) গ্ৰহ-দশা। গ্ৰহৰ স্থিতি অনুসৰি মানুহৰ ভাল-বেয়া দশা।
ग्रहोंकी स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की अच्छी या बुरी दशा। अभाग्य।

ग्रांडील—[वि] ওখ।
ऊँचे कद का।

ग्रामदेवता—(सं पुं) গাঁৱৰ ৰক্ষক স্বৰূপ প্ৰধান দেৱতা।
किसी ग्रामका रक्षक माना जाने वाला प्रधान देवता।

ग्राम-सुधार—(सं पुं) গাঁও হিতকৰ কাম। গ্ৰাম সংস্কাৰ।
गाँवों की अवस्था सुधारने का काम।

ग्रामीण—(वि) গাঁৱলীয়া।
देहाती।

ग्राव—(सं पुं) শিল। বৰষুণৰ শিল। পাহাৰ।
पत्थर। ओला। पहाड़।

ग्राह—(सं पुं) ঘঁৰিয়াল। গ্ৰহণ, ধৰা।
मगर, घड़ियाल। ग्रहण। पकड़ना।

ग्राहना—[क्रि स] লোৱা।
लेना।

ग्राह्य—(वि) গ্ৰহণীয় বা গ্ৰহণৰ যোগ্য। মানিব লগীয়া।
लेने योग्य। मानने योग्य।

ग्रीवा—[सं स्त्री] গল বা ডিঙি।
गर्दन।

ग्रीष्मावकाश—[सं पुं] গৰম বন্ধ।
गरमी की छुट्टी।

ग्वार—(सं स्त्री) বজৰা। कुलथी।
(सं पुं) গুৱালা। ग्वाला।

ग्वार पाठा—(सं पुं) ঘৃতকুমাৰী নামৰ গছ।
घी कुवाँर। धृत कुमारी का पौधा।

ग्वाला—[सं पुं] গুৱাল, অহিৰ।
अहीर।
ग्वालिन (स्त्री सं) গুৱালিনী।
ग्वालिन।

घ

घ—বৰ্ণমালাৰ চতুৰ্থ আখৰ।
वर्णमाला का चौथा व्यंजन वर्ण।

घँघोना, घँघोरना, घँघोलना—(क्रि स) ঘোদাল্।
पानीमें हिलोकर घोलना या मिलाना। पानी को हिलाकर मैला करना।

घंट—(सं पुं) মাটিৰ ঘট।
वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल में बाँधा जाता है।

घंटा—[सं पुं] ঘণ্টা। ঘণ্টা কোবাই দিয়া জাননী। দিন ৰাতিৰ ২৪ অংশ।

घड़ियाल। घड़ियाल बजाकर दी हुई सूचना। दिन रात का चौबीसवाँ भाग।

घंटिका—(सं स्त्री) সৰু ঘণ্টা, ঘুগুৰা।
छोटा घंटा। घुँघरू। कमरमें पहनने की करधनी।

घंटी—(सं स्त्री) সৰু ঘণ্টা। ঘেগ বা মাদলীয়া।
पीतल या फूल की छोटी लुटिया। छोटा घंटा। घंटा बजनेका शब्द। गरदन की आगे निकली हुई हड्डी। गलेके अन्दर जीभ की जड़के पास उभरा हुआ मांस।

घई—(सं स्त्री) পানীৰ ঘূৰণীয়া সোঁত। ঢোকা।
पानी का चक्कर। भँवर। थूनी या टेक।
बहुत गहरा।

घट—(सं पुं) টেকেলি, শৰীৰ, মন বা হৃদয়।
घड़ा। शरीर। मन या हृदय।
(वि) निकृष्ट।
घटा हुआ। कम।

घटक—[सं पुं] মধ্যস্থ ব্যক্তি, দালাল, চতুৰ ব্যক্তি।
मध्यस्थ। विवाह सम्बन्ध ठीक कराने वाला। दलाल। चतुर व्यक्ति।

घटका—[सं पुं] মৃত্যুৰ সময়ৰ গলৰ ঘেৰ্ ঘেৰণি।
मरने के समय की गले की घरघराहट।

घट-घाट—(वि) ঘাটি, আধকৰা।
घटकर।

घटती—(सं स्त्री) খাটি। ন্যূনতা।
न्यूनता। कमी।

घट-बढ़—(सं स्त्री) বঢ়া-টুটা, পৰিবৰ্ত্তন।
परिवर्तन। कमी बेशी।

घटवार(ल)—(सं पुं) ঘাটোৱাল।
घाटका महसूल लेनेवाला। मल्लाह।

घटा—[सं स्त्री] মেঘৰাশি।
मेघोंका घना समूह। मेघ-माला।

घटाई—[सं स्त्री] হীনতা, অপ্ৰতিষ্ঠা, অমৰ্য্যাদা।
हीनता। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटा-टोप—(सं पुं) ঘোৰ অন্ধকাৰ।
पालकी आदि ঢাকিবৰ

कापोৰ ।
घनघोर घटा । गाड़ी या पालकी को ढँकने का परदा ।

घटाना—(क्रि स) কমোৱা ।
कम करना । बाकी निकालना । प्रतिष्ठा कम करना । घटित करना ।

घटाव—(सं पुं) ঘাটি, অৱনতি ।
न्यूनता । अवनति । नदी के पानी का उतार ।

घटिया—(वि) নিকৃষ্ট, সস্তা, তুচ্ছ ।
अपेक्षाकृत खराब या सस्ता । तुच्छ ।

घटी—(सं स्त्री) ২৪ মিনিটৰ সময়, ঘড়ী ।
चौबीस मिनट का समय । घड़ी । कमी । हानि । मूल्य या महत्व आदि में होनेवाली कमी ।

घटोत्कच—(सं पुं) ভীমৰ পুত্ৰ ।
भीमसेन का पुत्र ।

घट्ट—[सं पुं] নদীৰ ঘাট ।
नदी का घाट ।

घट्टा—(सं पुं) খুন্দা খাই টেমেকা বান্ধি উঠা, শৰীৰত থকা মাহ তিল আদিৰ চিন ।
किसी चीज की रगड़ से शरीर पर उभरा हुआ कड़ा चिह्न ।

घड़घड़ाना—(सं स्त्री) ঘেৰ-ঘেৰ শব্দ কৰা ।
घड़घड़ शब्द करना ।

घड़घड़ाहट—[क्रि अ] ঘেৰ-ঘেৰ শব্দ । ঘেৰ-ঘেৰণি ।
बारबार घड़घड शब्द होने की क्रिया या भाव ।

घड़नई—(सं स्त्री) মাটিৰ কলহেৰে সজা ভেল ।
बासोंमें घड़े बाँध कर बनाया हुआ ढाँचा जिसपर चढकर नदियाँ पार करते हैं ।

घड़ा—(सं पुं) ডাঙৰ কলহ ।
बड़ी गगरी ।

घड़ियाल—(सं पुं) ডাঙৰ ঘন্টা।
घँৰিয়াল ।
बड़ा घंटा । ग्राह ।

घड़ी—(सं स्त्री) ঘড়ী । দিন ৰাতিৰ ষাঠি ভাগৰ এভাগ সময়। অৱসৰ । সময় নিৰূপক যন্ত্ৰ ।
दिन रात का साठवाँ भाग । समय । अवसर । समय का पता देनेवाला यंत्र । कपड़ों आदिमें लगायी जानेवाली तह ।

घड़ीसाज—(सं पुं) ঘড়ী মেৰামত কৰোঁতা ।
घड़ी मरम्मत करनेवाला ।

घड़ौआ—[सं पुं] डাণ্ডব কলহ।
बड़ा घड़ा।

घड़ौंची—(सं स्त्री) কধ্বা।
আধাবি।
घड़ा रखनेका आधार।

घतियाना—(क्रि स) বাটত খাপ দি ধকা, চোবাং ভাবে বা লুকাই অনা।
अपनी घात या दाँव में लाना।
चुराँया छिपाकर लेना।

घन—[सं पुं] মেঘ, কমাবৰ প্ৰকাণ্ড হাতুৰি। ঘন পদাৰ্থ।
बादल। लोहारोंका बड़ा हथौड़ा। समूह। कपूर। लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई का सम्मिलित विस्तार। शरीर।
(वि) ঘন, মৌলিক, দৃঢ়, বেছি।
घना। ठोस। दृढ़। ज्यादा।

घनक—(सं स्त्री) গিৰ-গিৰণি।
गड़गड़ाहट।

घनकना—(क्रि अ) গৰজি উঠা, গিৰ-গিৰাই উঠা।
गरजना।

घनघनाना—(क्रि अ) ঘণ্টাৰ নিচিনা শব্দ হোৱা।
घंटे की ध्वनि निकलना।
(क्रि स) টং টং শব্দ কৰা।
घन घन शब्द करना।

घनघोर—(सं पुं) মেঘৰ গিৰ-গিৰণি।
बादल की गरज। भीषण ध्वनि।
(वि) অত্যন্ত ডাঠ বা গভীৰ, ভীষণ।
बहुत घना या गहरा। भीषण।

घन चक्कर—[सं पुं] চঞ্চল মতি। মূৰ্খ, অকৰ্মা, কাম-বন নকৰি গা মেলাই ফুৰা লোক।
चंचल बुद्धिवाला। मूर्ख। आवारा।

घनत्व—(सं पुं) ঘনত্ব, ডাঠ, গুণ বা অৱস্থা।
घनता। घना होने का भाव।

घन-श्याम—(सं पुं) কলা মেঘ, শ্ৰীকৃষ্ণ।
काला बादल। कृष्ण।

घनसागर, घनसार—(सं पुं) কৰ্পূৰ।
कपूर।

घना—(वि) ডাঠ, নিকট, নিকটৱৰ্ত্তী, অত্যধিক।
सघन। बहुत पास का। पास पास बसा हुआ। बहुत अधिक।

घनाली—(सं स्त्री) মেঘৰাশি।
बादलों की पंक्ति या समूह।

घने—(वि) বহুতো।
एक साथ बहुत से।

घनेरा-(वि) বহুত, অধিক, ডাঠ।
बहुत। अधिक। घना।

घपला—[सं पुं] কোনো ক্ৰম নোহোৱাকৈ কৰা মিল। গোলমাল।
बिना क्रम की मिलावट। गोलमाल।

घपलेबाजी—(सं स्त्री) কোনো পৰিপাটি নোহোৱাকৈ কৰা কাম।
घपला या गड़बड़ी उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

घबराना-(क्रि अ) ব্যাকুল হোৱা। ভয় পোৱা। মন নলগা।
व्याकुल होना। भौचक्का होना। मन न लगना।
(क्रि स) ব্যাকুল কৰা, ব্যতিব্যস্ত কৰা।
व्याकुल या अधीर करना। हैरान करना।

घबराहट—(सं स्त्री) ব্যাকুলতা, উদ্বিগ্নতা, উগুল-থুগুল।
व्याकुलता, उद्विग्नता। उतावली।

घमंड—(सं पुं) অভিমান, গৌৰৱ, অহঙ্কাৰ।
अभिमान। शेखी। किसी का भरोसा।

घमंडी—(वि) অহঙ্কাৰী। অভিমানী।
अभिमान करनेवाला। अभिमानी।

घमकना—(क्रि अ) ধুম-ধুম শব্দ হোৱা, গম্ভীৰ শব্দ হোৱা।
गंभीर शब्द होना।
(क्रि स) ভুকু মৰা।
घूँसा मारना।

घमघमाना—(क्रि अ क्रि स) ধুম-ধুম শব্দ হোৱা বা ধুম-ধুমকৈ কিলোৱা।
घम घम शब्द होना या घमघम शब्द करके मारना।

घमर—(सं पुं) নাগেৰা, ঢোল, আদিৰ ধুম-ধুম শব্দ।
नगाड़े, ढोल आदि का घोर शब्द।

घमस—(सं स्त्री) খুন্দা খাই হোৱা শব্দ। তাপ, উম।
किसी चीज के बजने का शब्द। गरमी की उमस।

घमाका—(सं पुं) গদাৰ প্ৰহাৰ। ভীষণ খুন্দা খাই হোৱা শব্দ।

गदा या घूँसे का प्रहार। मारी आघात का शब्द।

घमाघम—(सं स्त्री) धুম-ধুম শব্দ, ধুম-ধাম ।
घमघम की ध्वनि। धूमधाम।
[क्रि वि] ধুম-ধামেৰে ।
घमघम आवाज के साथ।

घमासान—(वि) প্ৰচণ্ড, ভয়া মগ্না (.ৰণ) ।
बहुत गहरा या भीषण।

घर-घालक—(वि) নিজৰ বা আনৰ ঘৰ উজাৰ কৰোঁতা ।
अपना या दूसरों का घर बिगाड़ने वाला।

घरद्वारी-(सं स्त्री) গৃহস্থীৰ সকলো কাম কাজ ।
गृहस्थी के सब काम धन्धे।

घरनी-(सं स्त्री) পত্নী, ঘৈণী ।
पत्नी। गृहिणी।

घर-फोरा-(सं पुं) শকুনি। ঘৰ ভাঙি. কুৰা মানুহ।
दूसरों के परिवार में कलह फैलाने वाला।

घरबार—(सं पुं) ঘৰ-বাৰী ।
निवास स्थान। गृहस्थी।

घरवाला—(सं पुं) গিৰিহঁত, গৰাকী। মালিক ।
घर का स्वामी। मालिक।

घरसा—(सं पुं) ঘঁহনি ।
रगड़।

घराती—[सं पुं] কন্যাপক্ষ ।
विवाहमें कन्या पक्षके लोग।

घराना—(सं पुं) বংশ, গোষ্ঠি ।
खानदान। वंश।

घरिया—(सं स्त्री) মাটিৰ বাটি ।
मिट्टी का प्याला। वह पात्र जिसमें रखकर सोना चाँदी आदि गलाते हैं।

घरीक—[क्रि वि] ক্ষন্তেক। অলপ পৰ ।
घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरू,घरेलू-(वि) ঘৰুৱা, ঘৰচীয়া, পোহনীয়া। কুটিৰ শিল্প সম্বন্ধীয়।
घरसे सम्बन्ध रखनेवाला। पालतू घर का। घरमें बना हुआ या होने वाला।

घरौंदा (धा)—(सं पुं) মাটি আদিৰে সজা সৰু ঘৰ—য'ত লৰা-ছোৱালীয়ে খেলা কৰে।
मिट्टी आदि का छोटा घर जिससे बच्चे खेलते हैं।

घर्म—(सं पुं) घाम, ৰ'দ ।
धूप । पसीना ।

घर्रा—[सं पुं] গলৰ ঘেৰ্-ঘেৰণি, ঘেৰ্-ঘেৰকৈ হোৱা শব্দ ।
गले की घरघराहट । जेलमें कोल्हू पेरने और कुएँ से चरसा खींचने का कठिन काम ।

घर्षित-[वि] ঘহনি খোৱা ।
रगड़ा हुआ । रगड़ खाया हुआ ।

घलाघली-[सं स्त्री] মৰা-মৰি, কটা-কটি ।
मारकाट । खून खराबी ।

घलुआ (वा)—(सं पुं) কিনোতে ওজনতকৈ অধিক পোৱা বস্তু ।
खरीदने में तौलसे कुछ अधिक मिली हुई वस्तु ।

घसखुदा-(सं पुं) ঘাঁহ কাটোঁতা, মূৰ্খ ।
घसियारा । मूर्ख ।

घसना—(क्रि अ) ঘহি বা পিহি দিয়া ।
घिसना ।

घसिटना—(क्रि अ) নিজে টানি বা ঠেলি বাহিৰ হোৱা ।
घसीटा जाना ।

घसियारा- (वि) ঘাঁহ তোলোঁতা ।
घास छीलकर बेचनेवाला ।

घसीटना—[ক্রি স] চোঁচৰাই নিয়া । খৰ-খৰকৈ অস্পষ্ট ভাবে লিখা, টানি আজুৰি লগ কৰা ।
किसी वस्तु को इस तरह खींचना जिससे वह भूमि से रगड़ खाती हुई आवे । जल्दी जल्दी अस्पष्ट लिखना । किसी काममें बलपूर्वक शामिल करना ।

घहराना—[क्रि अ] ভীষণ শব্দ কৰা । ধুমকৈ পৰা, হঠাৎ উপস্থিত হোৱা ।
गंभीर ध्वनि करना । भारी आवाज के साथ गिरना । सहसा उपस्थित होना ।

घाँटी—[सं स्त्री] ঘণ্টিকা, ডিঙি ।
गले के नीचे की घटी । गला ।
(क्रि वि) ঘাটি, আধৰুৱা ।
अपेक्षाकृत कम । घट कर ।

घाईं—(सं स्त्री) ফাল, গাঁঠি, পানীৰ চাকনৈয়া ।
ओर । तरफ । जोड़ । बार । पानी का भँवर ।

घाई—(सं स्त्री) দুই আঙুলিৰ মাজৰ ঠাই, ঘা, ফাকি ।
उंगलियों के बीच की जगह । घाव । धोखा ।

ঘাঘ—(सं पुं) অতি চালাক।
भारी चालाक।

ঘাঘৰা—[सं स्त्री] সৰযূ নদী।
सरयू नदी।

ঘাঘস—(सं पुं) এবিধ কুকুৰা চৰাই।
एक प्रकार की मुरगी।

ঘাট—(सं पुं) নদী আদিৰ ঘাট, উঠা নমা কৰা পাহাৰী বাট, ফাল, তৰোৱালৰ ধাৰ, ন্যূনতা। ঘাটি।
नदी या सरोवर के तट का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते या नावपर चढ़ते हैं। उतार चढाव का पहाडी मार्ग। ओर। रंग-ढंग। तलवार की धार न्यूनता। कमी।
[वि.] অলপ, বেয়া, নিকৃষ্ট। थोड़ा। घटिया। दूसरेकी अपेक्षा कम या हलका।

ঘাটা—(सं पुं) ঘাটি, হানি।
घटने की क्रिया या भाव। हानि।

ঘাটি—(वि) ঘাটি।
घटकर।
(सं स्त्री) নীচ কাম, পাপ।
नीच कर्म। पाप।

ঘাটী—[सं स्त्री] দুই পৰ্বতৰ মাজৰ ঠেক বাস্তা। উপত্যকা
दर्रा। दो पर्वतों के बीच का रास्ता।

ঘাত—(सं पुं) প্ৰহাৰ, বধ, আহত।
प्रहार। वध। आहत।
(सं स्त्री) সুযোগ, টনা-আজোৰা।
सुयोग। दाँव-पेंच।

ঘাতী—(त्रि) ঘাতক, নাশ কৰোতা, কপট।
घातक। नाश करनेवाला। छली।

ঘান—(सं पुं) ঘানী, যিমানখিনি এবাৰত দাঙ্কিব বা তৈয়াৰ কৰিব পৰা যায়।
जितना एक बार कोल्हू में डाल कर पेरा या चक्कीमें पीसा जाय, उतना अंश। जितना एक बारमें पकाया या बनाया जाय, उतना अंश।

ঘানী—[सं स्त्री] ঘানী।
कोल्हू।

ঘাম—(सं स्त्री) ৰ'দ, কষ্ট।
धूप। कष्ट।

ঘামড়-(वि) ৰ'দত জুৰুলা, মূৰ্খ।
घाम या धूपसे व्याकुल (चोपाया) मूर्ख।

घायल—(वि) আহত ।
आहत । जख्मी ।

घाल—(सं पुं) বিনা মূল্যই পোৱা বস্তু, কিনোতে ওজন-তকৈ বেছি পোৱা বস্তু ।
बिना मूल्य की मिली चीज । घलुआ ।

घालना—(क्रि. अ) নাশ কৰা, ৰখা, পেলোৱা, অস্ত্র আদি চলোৱা, মাৰি পেলোৱা ।
नाश करना । रखना । फेंकना । अस्त्रादि चलाना । मार डालना ।

घाल-मेल—(सं पुं) খেলি-মেলি, মিলাপ্ৰীতি ।
गड्ड-मड्ड । गड़बड़ी । मेल-जोल ।

घाव—(सं पुं) ঘা, আঘাত, খুন—জখম ।
चोट । आघात । क्षत ।

घास—(सं स्त्री) ঘাঁহ । तृण ।

घासलेट—(सं पुं) কেৰাচিন, মাটিয়া তেল ।
तुच्छ, निन्दनीय बा अग्राह्य पदार्थ । मिट्टी का तेल । तुच्छ, निन्दनीय या अग्राह्य पदार्थ ।

घासलेटी—(वि) तुच्छ, तलखापव, अश्लील ।
तुच्छ । निम्न कोटिका । अश्लील ।

घिग्घी—(सं स्त्री) হিকঁটি । হিঁকটিৰ কাৰণে কথা কওঁতে বাধা পৰা ।
हिचकी । डर के कारण बोलनेमें रुकावट ।

घिघियाना—(क्रि अ) অনুনয় কৰা ।
गिड़गिड़ाना । करुण स्वर में प्रार्थना करना ।

घिचपिच-(सं स्त्री) হেঁচা-হেঁচি । थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं का जमाव ।
(वि) অস্পষ্ট লিখনি ।
वह लिखावट जो अत्याधिक अस्पष्ट हो ।

घिनाना—(क्रि. अ) ঘৃণা কৰা ।
घृणा करना ।

घिनौना—(वि) ঘৃণনীয় ।
जिसे देखने से मनमें घृणा उत्पन्न हो ।

घिरना—(क्रि अ) ঘেৰি ধৰা, চাৰিও ফালৰ পৰা আগুৰি ধৰা ।
आवृत्त होना । चारों ओरसे एक साथ आना ।

घिरनी—(सं स्त्री) টাকুৰী ।
गराड़ी । चरखी ।

घिराई—(सं स्त्री) খেৰি ধৰা কাৰ্য্য ... । চৰোৱা বানচ ।
घेरने की क्रिया या भाव । पशुओं को चराने की मजदूरी ।

घिस घिस—(सं स्त्री) কাৰ্য্যত শিথিলতা বা অনুচিত পলম ।
कार्य में शिथिलता या अनुचित विलम्ब ।

घिसना—(क्रि स) ঘহনি খোৱা, ঘহনি খাই ক্ষয় যোৱা ।
रगड़ना । रगड़ खाकर कम होना ।

घिसपिस—(सं स्त्री) অত্যাধিক মিলাপ্রীতি বা পাৰস্পৰিক সম্বন্ধ ।
बहुत अधिक मेल-जोल या पारस्परिक सम्बन्ध ।

घिसाई—[सं स्त्री] ঘহনি খোৱা কাৰ্য্য ।
घिसनेकी क्रिया, भाव या मजदूरी

घी—(सं पुं) ঘিউ ।
तपाया हुआ मक्खन ।

घी-कुँआर—(सं पुं) ঘৃত কুমাৰী নামৰ গছ ।
घृतकुमारी का पोधा ।

घीया—[सं स्त्री] পানী লাও ।
कद्दू ।

घीयतोरी—(सं स्त्री) ভোল ।
एक प्रकार की तोरी या फली ।

घुँघनी—(सं स्त्री) তিয়াই ভজা বুট-মাহ আদি ।
भीगोकर तला हुआ चना, मटर आदि ।

घुँघराला—(वि) কেঁকোৰা (চুলি) ।
घूमा हुआ और बल खाया हुआ ।

घुँघरू—(सं पुं) নূপুৰ, ঘূগুৰা ।
नूपुर । मंजीर ।

घुंडी—(सं स्त्री) কাপোৰৰ ঘূৰণীয়া বুটাম, টুপুৰা গাঁঠি ।
कपड़े का गोल बटन । कोई गोल गाँठ ।

घुग्घू, घुघुआ—(सं पुं) ফেচা ।
उल्लू पक्षी ।

घुटना—(सं पुं) আঠুৰ জোৰা ।
टांग और जांघ के बीचकी गाँठ ।
(क्रि अ) উশাহ বন্ধ হোৱা, আবদ্ধ হোৱা, অত্যন্ত ঘনিষ্ঠ হোৱা ।
सांस रुकना । फंस जाना । बहुत घनिष्ठता होना ।

घुटाई—(सं स्त्री) মোহাৰি দিয়া, কাৰ্য্য বা তাৰ বানচ ।
घोटने की क्रिया या भाव या मजदूरी ।

घुटरुअन-(क्रि वि) আঠু কাঢ়ি।
घुटनों के बल।

घुट्टी, घूँटी—(सं स्त्री) নবজাত শিশুক খুওৱা ঔষধ।
बच्चों को पिलाई जानेवाली जनम घूँटी।

घुड़कना—(क्रि स) ধমকি দিয়া।
कड़क कर डाँटना।

घुड़की—(सं स्त्री) ডাবি-ধমকি।
डाँट-डपट। फटकार।

घुड़दौड़—(सं स्त्री) ঘোঁৰা দৌৰ, প্ৰতিযোগিতা।
घोड़ों की दौड़ की प्रतियोगिता।

घुड़-सवार-(सं पुं) অশ্বাৰোহী।
अश्वारोही।

घुड़साल—[सं पुं] ঘোঁৰা শাল।
अश्वशाला।

घुनना-(क्रि स) ঘুনে ধৰা; ভিতৰে ভিতৰে ক্ষীণ হোৱা।
घुन लगना। अन्दरसे क्षीण होना।

घुमक्कड़—[वि] ভ্ৰমণকাৰী।
बहुत घूमनेवाला।

घुमटा—(सं पुं) মূৰ ঘূৰণি। মূৰৰ বিষ।
सिर का चक्कर।

घुमड़ना—[क्रि अ] মেঘাচ্ছন্ন হোৱা।
बादलों का घिरना।

घुमड़ी, घुमरी—(सं स्त्री) মূৰৰ বিষ।
सिर का चक्कर।

घुमाना — (क्रि स) ঘূৰোৱা, ঘূৰোৱা।
चारों ओर फिराना। सैर कराना। मोड़ना।

घुमाव—[सं पुं] ভাঁজ।
चक्कर। मोड़।

घुरना—(क्रि अ) ক্ষীণাই যোৱা, শব্দ হোৱা, ঘূৰা।
क्षीण होना। शब्द होना। घूमना (आँख) झपकना।
(क्रि स) শব্দ কৰা।
शब्द उत्पन्न करना।

घुलना—(क्रि अ) ভাল দৰে মিহলি হোৱা। পকি গুল-গুলীয়া হোৱা। দুৰ্বল হোৱা।
किसी द्रव वस्तुमें अच्छी तरह मिल जाना। हल होना। पिघलना। पक कर घुलघुला होना। रोग या चिन्ता से दुर्बल होना।
(क्रि स)—घुलाना।

घुसड़ना, घुसना—(क्रि अ) প্ৰৱেশ কৰা। অনধিকাৰ প্ৰৱেশ।
प्रवेश करना। बिना अधिकारके

कहीं पहुँचना। बात की तह तक पहुँचना।
(क्रि स) घुसाना।

घुस-पैठ—(सं स्त्री) প্ৰৱেশ।
पहुँच। प्रवेश।

घूंघट—(सं पुं) ওৰণি, অৱগুণ্ঠন।
साड़ी का वह भाग जो मुँह ढँके रहता है। परदा।

घूंट—(सं पुं) ঘোঁট, ঢোক।
उतना द्रव पदार्थ जितना एकबार में गले के नीचे उतारा जाय।

घूँसा—(सं पुं) ঘোচা, ভুকু।
मारने के लिये तानी हुई मुट्ठी। मुट्ठी का प्रहार।

घूमना—(क्रि अ) ঘূৰি ফুৰা, ভ্ৰমণ কৰা।
चारों ओर फिरना। किसी ओर मुड़ना। टहलना। यात्रा करना।

घूर, घूरा—(सं पुं) জাবৰৰ দ'ম।
कूड़े का ढेर।

घूरना—[क्रि अ] কু-অভিপ্ৰায়েৰে দৃষ্টিপাত কৰা।
बुरे भाव से आँख गड़ाकर देखना।

घूस—(सं स्त्री) নিগনি জাতীয় প্ৰাণী। ভেটি।
चूहे की तरह का एक जन्तु। रिश्वत।

घेंड़ी—(सं स्त्री) ঘিউ ৰখা বাচন।
घी रखने का बरतन।

घेघा—(सं पुं) ডিঙিৰ নলী, ডিঙি উখহি উঠা বেমাৰ।
गले की नली। गला फूलने का रोग।

घेर घार—[सं स्त्री] ঘেৰি ধৰা কাৰ্য্য, ঘেৰ, হেঁচি ধৰি কোনো কাম কৰিবলৈ বাধ্য কৰা।
घेरने की क्रिया या भाव। घेरा। दबाव डालकर कोई काम करने के लिये विवश करना।

घेरना—(क्रि स) চৌপাশে ঘেৰী ধৰা। তোষামোদ কৰা।
चारों ओर से रोकना या घेरे में लाना। बहुत आग्रह या खुशामद करना।

घेरा—(सं पुं) চাৰিসীমা, পৰিধি. সৈন্যৰ দ্বাৰা দুৰ্গ আদি অৱৰোধ।
किसी चीज को घेरने वाली रेखा या कोई चीज। सीमा या परिधि का मान, घिरा हुआ स्थान। सेना द्वारा दुर्ग आदि घेरना।

घैला—(सं पुं) মাটিৰ কলহ।
मिट्टी का घड़ा।

घोंघा—(सं पु) শামুক ।
शम्बूक ।
(वि) অসাৰ, মূৰ্খ ।
जिसमें कुछ सार न हो । मूर्ख ।

घोंघा-बसन्त–(वि) গজ মূৰ্খ ।
परम मूर्ख ।

घोंघी, घोघी—(सं स्त्री) জাপি, দালাল, শামুকৰ খোলা ।
पत्तों का बना हुआ. छाता । दलाल । घोंघे का ऊपरी छिलका।

घोंसला—(सं पुं) চৰাইৰ বাহ ।
पक्षी का नीड़ ।

घोखना—(क्रि स) মুখস্থ কৰা ।
रटना ।

घोटना—(क्रि स) পিহি দিয়া, ঘঁহি দিয়া, অভ্যাস কৰা, টেঁটুত চেপি ধৰা, খুৰেৰে মূৰ খুৰোৱা ।
रगड़ना । मशीन पीसना । हल करना । अभ्यास करना । गला दबाकर साँस रोक देना । उस्तरे से बाल साफ करना ।
[सं पुं] ঘোটণি ।
चीज घोंटने का औजार ।

घोटाला—(सं पु) বিশৃঙ্খল ।
गड़बड़ी ।

घोड़ा—(सं पुं) ঘোঁৰা, বন্দুকৰ ঘোঁৰা, দবা-খেলৰ ঘোঁৰা ।
अश्व । बन्दूक का वह खटका जिसे दबाने से गोली छूटती है । शतरंज का एक मोहरा ।

घोरिला–[सं पुं] লৰা-ছোৱালীয়ে খেলা কৰা কাঠৰ ঘোঁৰা ।
खेलने का काठ का घोड़ा ।

घोल—(सं पुं) কিবাকিবি বস্তু মিহলি পানী । দৈৰ পানী ।
वह पानी जिसमें कोई चीज घोली गयी हो, मट्ठा ।

घोलना—[क्रि स] মিহলোৱা ।
पानी या अन्य तरल पदार्थ में चूर्ण आदि अच्छी तरह मिलाना।

घोष—(सं पुं) গুৱাল,শব্দ, মাত, ঘোষণা ।
अहीर । शब्द । चिल्लाहट या घोर गर्जन । नारा ।

घौद, घौर—(सं पुं) থোপা ।
एक डण्ठल में फलने वाले बहुतसे फलों का गुच्छा ।

घ्राण—[सं पुं] গোন্ধ, নাক ।
सूंघने की शक्ति । नाक । सुगन्ध ।

ङ

ङ—ব্যঞ্জন বৰ্ণ মালাৰ পঞ্চম আখৰ। वर्ण माला का पाँचवाँ व्यंजन।

च

च—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ ষষ্ঠ আখৰ।
वर्णमाला का छठा व्यंजन।

चंक—(सं पुं) সকলো, পুৰা।
सारा। पूरा।

चंग—(सं स्त्री) খঞ্জৰীৰ নিচিনা কিন্তু তাতকৈ ডাঙৰ এবিধ বাদ্য। কাগজৰ চিলা, বদনাম।
एक प्रकार का बाजा। कागज की पतंग। बदनामी।

चंगा—(वि) সুস্থ, ভাল।
नीरोग। अच्छा।

चंगुल—(सं पुं) হাতোৰা, খামোচ।
पशुओं या पक्षियों का मुड़ा हुआ पंजा। हाथ से पकड़ने की मुद्रा। कोटा।

चंगेर, चंगेली—[सं स्त्री] পাচি।
बाँसकी टोकरी।

चंचरी-(सं स्त्री) মাইকী ভোমোৰা, এবিধ ছন্দ।
भ्रमरी। एक प्रकार का छन्द।

चंचरीक—[सं पुं] ভোমোৰা।
भौंरा।

चंचला-[सं स्त्री] লক্ষ্মী, বিজুলী।
लक्ष्मी। बिजली।

चंचु—[सं पुं] হৰিণ, ঠোঁট।
मृग। चिड़ियोंकी चोंच।

चंट—(वि) চতুৰ, টেঙৰ।
चालाक। धूर्त।

चंड-(वि) চোকা, উগ্ৰ, কঠোৰ, খঙাল।
तेज। उग्र। कठोर। क्रोधी।
(सं पुं) উত্তাপ, এটা দৈত্যৰ নাম।
ताप। एक दैत्य का नाम।

चंडकर, चंडांशु—[सं पुं] সূৰ্য্য।
सूर्य।

चंडालिका—[सं स्त्री] এবিধ বীণা। চণ্ডী বা দুৰ্গা।
एक प्रकार की वीणा। दुर्गा।

चंडू—[सं पुं] কানিৰ টিকিৰা।
तम्बाकू की भाँति पीयी जाने वाली अफीम।

चंडूखाना-(सं पुं) কানিৰ অড্ডা।
वह स्थान जहाँ लोग चंडू पीते हैं।

चंडूल—[सं पुं] অধা মূৰ্খ, এবিধ চৰাই।
परम मूर्ख। एक चिड़िया।

चंद—[सं पुं] চন্দ্ৰ।
चन्द्र।
(वि) অলপ, কিছুমান।
थोड़े से। कुछ।

चंदन गिरि—(सं पुं) মালয়পৰ্বত
मलय पर्वत।

चंदला—(वि) তপা।
गंजा।

चंदवा, चँदोआ—(सं पुं) চন্দ্ৰ-তাপ, চন্দোৱাব।
कपड़े फूलों आदि का छोटा मंडप।

चंदा—(सं पुं) চন্দ্ৰ, চান্দা, বৰঙণি।
चन्द्रमा। दान रूपमें ली गयी आर्थिक सहायता। पत्र पत्रिका का वार्षिक मूल्य। सदस्योंसे नियमित मिलनेवाला धन।

चन्द्रकांत—(सं पुं) এবিধ মণি।
एक मणि।

चन्द्रचूड़, चन्द्रभाल, चन्द्रमौली, चन्द्र शेखर—(सं पुं) মহাদেব।
शिव।

चन्द्रतप—(सं पुं)জোনাক, চন্দ্ৰতাপ।
चाँदनी। चँदवा।

चंपई—(वि) চম্পা ফুল বৰণীয়া।
चम्पाके फूलके रंग का।

चंपत—(वि) অন্তৰ্দ্ধান।
गायब। अन्तर्द्धान।

चंपाकली—(सं स्त्री) এবিধ ডিঙিত পিন্ধা অলঙ্কাৰ।
गले में पहनने का एक आभूषण।

चंपू—(सं पुं) গদ্য-পদ্য মিশ্ৰিত কাব্য।
गद्य पद्य मिश्रित एक काव्य।

चँवर—(सं पुं) চোঁৱৰ, চামৰ।
सुरा गाय की पूँछके बालों का गुच्छा जा राजाओं या देवमूर्तियों पर डुलाया जाता है। झालर।

चक—(सं पुं) চাকৈ চৰাই, চকা, চুবুৰি।
चकवा पक्षी। जमीन का बड़ा टुकड़ा।

(बि) ভৰপুৰ, যথেষ্ঠ, চকিত।
भरपूर। यथेष्ठ। चकित।

चकई—(सं स्त्री) মতা চাকৈ চৰাই, এবিধ পুতলা।
मादा चकवा। गड़ारी के आकार का एक खिलौना।

चकती—(सं स्त्री) চামৰা, কাপোৰ আদিৰ টুকুৰা।
चमड़े, कपड़े आदि का टुकड़ा। पैबन्द।

चकत्ता—[सं पु] তেজৰ দোষত শৰীৰত পৰা দাগ। বাদশাহ।
शरीर पर पड़नेवाला गोल दाग या सूजन। बहुत बड़ा राजा। बादशाह।

चकनाचूर—(बि) চূৰমাৰ, অত্যন্ত ক্লান্ত। चूरचूर। बहुतथका हुआ।

चक बन्दी—[सं स्त्री] মাটিৰ সৰুসৰু টুকুৰা সালসলনি কৰি বৃহত কৰা কাৰ্য্য।
आस पास के कई खेतोंको एकमें मिलाकर बडा चक बनाना।

चकमा-[सं पुं] ফাঁকি।
धोखा। भुलावा।

चकराना—(क्रि अ) মূৰ আচন্দ্ৰাই কৰা। মূৰ ঘূৰা। মতি-ভ্ৰম হোৱা।
चक्कर खाना या घूमना। धोखे में पड़ना। चकित होना।

चकरी—[सं स्त्री] সৰু জাঁত।
एक प्रकार की छोटी चक्की।

चकला—(सं पुं) বেলুন, ভূমি-খণ্ড, বেশ্যাৰ বজাৰ।
रोटी, पूरी बेलनेका गोल पाटा। भूमिखंड। वेश्याओंका बाजार।

चकल्लस—[सं स्त्री] জঞ্জাল, গাজা-খুৰি গল্প।
बखेडा। झंझट। मित्रोंमें बैठकर गप्पें उडाना।

चकवा—(सं पं) চকোৱা চৰাই।
चक्रवाक पक्षी।

चका चक—(बि) আনন্দজনক।
चटकीला। मजेदार।
(क्रि बि) চিক্ মিকাই। সৰ-হকৈ।
बहुत। भरपूर।

चकाचौंध—(सं स्त्री) চিক্-মিকণি, তিৰবিৰণি।
तेज चमक से आंखों में होनेवाली झपक। तिलमिली।

चकित-(बि) বিস্মিত, শঙ্কিত।
विस्मित। सशंकित।

चकेवा—(क्रि अ) চকোৱা ।
चकवा ।

चकैया—(वि) কুমাৰৰ চাকৰ নিচিনা ঘূৰণীয়া ।
चाक या चकई की तरह गोल ।

चकोटना—(क्रि स) চিকুটি দিয়া ।
चुटकी या चिकोटी काटना ।

चकोर—[सं पुं] ডবিক জাতীয় এবিধ চৰাই ; ই জোনাক ভাল পায় ।
एक प्रकार का पक्षी ।

चक्र—(सं पुं) চাকৈ-চকোৱা । কুমাৰৰ চাক, দিশ ।
चक्रवाक पक्षी । कुम्हारका चाक । दिशा ।

चक्कर—(सं पु) পাক, ঘূৰণ । চকাৰ দৰে ঘূৰা, হায়ৰাণ ।
चाक । मंडल । घूमना । पहिये की तरह घूमना, हैरानी ।

चक्का—[सं पुं] চকা ।
पहिया ।

चक्की—(सं स्त्री) জাঁত ।
आटा आदि पीसनेका यंत्र । जाँता ।

चक्रक्रम—(सं पुं) চক্রাকাৰে নির্দ্ধাৰিত ক্রম ।
चक्रकी तरह घूमकर आनेवाला क्रम ।

चक्रधर,चक्रपाणि—(सं पुं) বিষ্ণু, কৃষ্ণ ।
विष्णु, कृष्ण ।

चक्रवाक-(सं पुं) চাকৈ চকোৱা ।
चकवा पक्षी ।

चक्रवात—(सं पुं) বা'মাৰলি ।
बवंडर ।

चक्षु—(सं पुं) চকু ।
आँख ।

चख-चख—(सं स्त्री) কাজিয়া ।
कलह । झगड़ा ।

चखना—(क्रि स) চাকি চোৱা ।
थोड़ा खाकर स्वाद लेना ।

चखाचखी—(सं स्त्री) প্ৰতিযোগিতা, অৰিয়া-অৰি ।
प्रतियोगिता । झगड़ा ।

चखाना—[क्रि स] সোৱাদ লব দিয়া ।
स्वाद का परिचय कराना ।

चचा,चाचा—(सं पुं) খুৰা ।
पिता के छोटे भाई ।

चचेरा—(वि) খুৰাৰ পৰা উৎপন্ন ।
चाचा से उत्पन्न ।

चट—(क्रि वि) সোনকালে, তুৰন্তে ।
जल्दी से । तुरंत
(वि)চেলেকি খাই নাইকিয়া কৰা ।
चाट पोंछ कर खाया हुआ ।

चटक—(सं पुं) ঘৰচিৰিকা পক্ষী ।
गौरेया पक्षी ।
(सं स्त्री) চাক-চমক, ফুৰ্ত্তি-বালা, বেগী ।
चमक-दमक । फुर्तीला । तेजी ।
(वि) সুস্বাদু ।
स्वादिष्ट ।

चटक-मटक—(सं स्त्री) ধুন-পেচ, অঙ্গ সঞ্চালন ।
बनाव शृंगार । नाज नखरा ।

चटकीला-(वि) জাক-জমক পূৰ্ণ ।
भड़कीला रंगवाला । चमकीला ।
चटपटा ।

चटनी—(सं स्त्री) চাট্‌নি ।
चाट कर खायी जानेवाली चीज ।
अवलेह ।

चटपट—(क्रि वि) সোনকালে ।
तुरंत ।

चटाई—(सं स्त्री) ঢাৰি, কঠ ।
फूँस, सींक आदि का बना बिछावन ।

चटाना—(क्रि स) চেলেকা ।
थोड़ा थोड़ा खिलाना ।

चटावन–[सं पुं] অন্ন প্ৰাশন ।
अन्न-प्राशन ।

चटुल—(वि) চঞ্চল । মধুৰ ভাষী ।
चंचल । मधुर भाषी ।

चटोरा—[वि] লুভীয়া ।
स्वाद-लोलुप ।

चट्टान—[सं स्त्री] ডাঙৰ শিল ।
भारी और बड़ा पत्थर ।

चट्टाबट्टा—(सं पुं) এবিধ কাঠৰ পুতলা । একেধৰণৰ মানুহ ।
एक प्रकार का काठका खिलौना ।
एकही तरहके लोग ।

चट्टी—(सं स्त्री) চটি-জোতা ।
पड़ाव । चप्पल ।

चढ़ना—[क्रि अ] আৰোহণ কৰা ।
উঠা ।
ऊपर की ओर जाना । सवार होना । उन्नति करना ।

चढ़ाई—(सं स्त्री) ক্ৰমে ওখ ঠাই । এঢলীয়া ঠাই । আক্ৰমণ ।
ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि, आक्रमण ।

चढ़ा-ऊपरी-(सं स्त्री) হেতা-ওপৰা ।
प्रतियोगिता । होड़ ।

चढ़ाना—(क्रि स) উঠোৱা, তোলা, উন্নতি কৰা, সম্পূৰ্ণ কৰা ।
ऊपर की ओर ले जाना । सवार करना । उन्नति करवाना । भेट के रूपमें देना । अभिमान उत्पन्न करना ।

चढ़ाव—[सं पुं] আৰোহণ, বৃদ্ধি । নৈৰ উজান
चढने या चढाने की क्रिया या भाव । महंगी । वृद्धि । वह दिशा जिधर से नदी की धारा बहकर आती हो ।

चढ़ावा—(सं पुं) জোৰণ । সমৰ্পিত অৰ্ঘ্য ।
विवाह के दिन दुलहिन को दिये जाने वाले गहने । पूजा-द्रव्य, उत्तेजना ।

चतुरंग—(सं पुं) চতুৰঙ্গ সেনাদল-হাতী, ঘোঁৰা, ৰথ আৰু পদাতিক । দবা-খেল ।
सेना के हाथी, घोडे, रथ, पैदल ये चार अंग । शतरंज ।

चतुराई-(सं स्त्री) চাতুৰ্য্য, চালাকি ।
चतुरता । चालाकी ।

चतुर्मुख—[सं पुं] ব্ৰহ্মা ।
ब्रह्मा ।

(क्रि वि) চাৰিও ফালে ।
चारो ओर ।

चतुर्वर्ग—(सं पुं) ধৰ্ম্ম, অৰ্থ, কাম আৰু মোক্ষ এই চাৰি পদাৰ্থ ।
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पदार्थ ।

चतुष्पथ—(सं पुं) চাৰি বস্তুৰ সমূহ ।
चार चीजो का समूह ।

चत्वर—(सं पुं) চক্ ।
चौराहा । चबूतरा ।

चना—(सं पुं) বুট-মাহ ।
एक अन्न । बूट ।

चपकन—(सं स्त्री) চাপকন-এবিধ দীঘল চোলা ।
अंगरखा ।

चपड़ा—(सं पुं) লাৰ চপৰা ।
लाख का पत्तर ।

चपत—(सं पुं) চৰ (গালত মৰা)। আৰ্থিক হানি ।
तमाचा । आर्थिक हानि ।

चपला—(वि) লক্ষ্মী, বিজুলী ।
लक्ष्मी । बिजली ।

चपाती—(सं स्त्री) পাতল ৰুটি ।
पतली रोटी ।

चपेट—(स ं स्त्री) চাপৰ, হেঁচা, চাপ ।
थप्पड़ । झोंका । संकट । [सं पुं- चपेटा]

चप्पल—[स ं स्त्री] চটি জোতা, চেণ্ডেল ।
ऊपर खुला हुआ एक प्रकार का जूता, चट्टी ।

चप्पा—(स ं पुं) পোৱা । সৰু ভূ-খণ্ড ।
थोड़ा या छोटा भाग । छोटा भूखण्ड ।

चबाना—(क्रि स) চবোৱা ।
दाँतों से कुचलना या कुचल कर खाना ।

चबूतरा—(स ं पुं) পিৰালী, মঞ্চ ।
बैठने की चौरस ऊँची जगह ।

चबेना—[स ं पुं] ভজা চাউল, বুট-আদি ।
भूना हुआ अनाज ।

चमक—[सं स्त्री] জেউতি, পোহৰ, মোচকা ।
प्रकाश । आभा । कमर या पीठमें अचानक उठा दर्द ।

चमक-दमक—(स ं स्त्री) ৰং-চং, সাজ-সজ্জা ।
आभा । तड़क-भड़क ।

चमकना—[क्रि अ] উজলি উঠা, জক-মকাই উঠা ।
जगमगाना । उन्नति करना । चौकना ।

चमकीला—(वि) উজ্জ্বল, ফট্-ফটীয়া ।
जिसमें चमक हो ।

चमगादड़—(स ं पुं) বাদুলী ।
एक प्रकार उड़नेवाला जन्तु ।

चमड़ा—(स ं पुं) ছাল, বাকলি ।
ऊपरी आवरण । चर्म । त्वचा ।

चमन—(सं पुं) বাগিচা, ফুল-বাৰী ।
हरी क्यारी । बगीचा ।

चमार—[स ं पुं] মুচিয়াৰ ।
एक जाति ।

चमू—(स ं स्त्री) সেনা ।
सेना ।

चमेली—[स ं स्त्री] মালতী লতা ।
सुगंधित फूलोंवाला एक पौधा ।

चमोटी—(स ं स्त्री) চাবুক, বেঁত ।
चाबुक । बेंत ।

चम्मच—(सं पुं) চামুচ ।
हलकी छोटी सी कलछी ।

चय—[सं पुं] বোৰ, বিলাক, সকল ।
समूह ।

चयन—(सं पुं) সঞ্চয়, সংগ্ৰহ ।
संग्रह या चुनने का काम ।

चर—[सं पुं] চৰ, দূত, বালিচৰ ।
भेदिया । जासूस । दूत । नदियों के बीच का टापू ।
(वि) চৰি ফুৰিব পৰা ।
चलनेवाला ।

चरका—(सं पुं) অলপ ঘা, হানি, ফাকি ।
हल्का घाव या जख्म । हानि । धोखा ।

चरखा—(सं पुं) যঁতৰ, জটিল কাম ।
घूमने वाला बड़ागोल चक्कर । सूत कातने का एक यंत्र । झंझट का काम ।

चरखी—(सं स्त्री) চকৰি , সৰু যঁতৰ, খিলা (কুঁৱাৰ পানী তুলিবলৈ) ।
छोटा चरखा । कपास ओटने का यंत्र, कुएँ से पानी खींचने की गड़ारी ।

चरचा—(सं स्त्री) চৰ্চ্চা, আলোচনা ।
चर्चा । आलोचना ।

चरण-दासी—(सं स्त्री) পত্নী, জোতা ।
पत्नी । जूता ।

चरण पादुका—[सं स्त्री] খৰম ।
खड़ाऊँ ।

चरणोदक—(सं पुं) পদ্-জল ।
चरणामृत ।

चरना—(क्रि अ) চৰি ফুৰা ।
पशुओं का उगी हुई घास आदि खाना ।

चरपरा—[वि] তিতা, বেজবেজীযা, জলা ।
तीक्ष्ण स्वाद वाला । तीता ।

चरपराहट—[सं स्त्री] সোৱাদৰ তীক্ষ্ণতা । ঈৰ্ষ্যা ।
स्वाद की तीक्ष्णता । ईर्ष्या ।

चरबाँक—(वि) চতুৰ, উদ্ধত ।
चतुर । उद्धत ।

चरबी—(सं स्त्री) চৰ্ব্বী, মেদ ।
मेद । बसा ।

चरमराना—(क्रि अ) চৰ্-চৰ্ শব্দ হোৱা।
चरमर शब्द होना या करना।

चरवाहा—[सं पुं] গৰখীয়া।
गाय, भैंस, आदि चरानेवाला।

चरस—(सं स्त्री) পানী তোলা চামৰাৰ ডাঙৰ মোনা। গঞ্জা।
कुएँ से पानी निकालने का चमड़े का बहुत बड़ा थैला। मोट। गाँजे के पेड़का गोंद या चेप।

चरागाह—(सं पुं) চৰণীয়া পথাৰ।
पशुओं के चरने का मैदान।

चराना—(क्रि स) চৰা, কথাৰে ভুলোৱা।
चरने के लिये छोड़ना। बहकाना।

चरी—[सं स्त्री] চৰণীয়া পথাৰ।
चरागाह।

चरु—[सं पुं] হবিষৰ ভাত।
হবিষৰ ভাত ৰন্ধা টৌ।
हविष्यान्न। हविष्यान्न पकाने का पात्र।

चर्पट—(सं पुं) চাপৰ (গালত), চৰ।
तमाचा। थप्पड़।

चर्मकार—[सं पुं] মুচিয়াৰ।
चमार जाति।

चर्म-पादुका—(सं स्त्री) জোতা।
जूता।

चर्या—(सं स्त्री) আচৰণ, বৃত্তি, সেৱা।
कार्य। आचरण। रहन-सहन, वृत्ति। सेवा।

चर्राना—(क्रि अ) পিৰ পিৰোৱা, গাৰ চৰ্-চৰি উঠা।
टूटने के समय चर चर शब्द होना। इच्छा प्रबल होना।

चर्री—(सं स्त्री) ব্যঙ্গ পূর্ণ উক্তি।
व्यंग्य पूर्ण उक्ति।

चल - (वि) গতিশীল।
अस्थिर। एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जानेवाला।

चलता, चलतू—[वि] চলি থকা, প্রচলিত।
गति युक्त। प्रचलित।

चलन - (सं पुं) গতি, প্রথা।
चाल। प्रथा।

चलन-सार—(वि) প্রচলিত, যি টিকে।
व्यवहार में प्रचलित। टिकाऊ।

चलनी—(सं स्त्री) চালনী।
आटा आदि चालने की छाननी।

चलविचल—(वि) বিশৃঙ্খল, অস্থিৰ।
अस्त व्यस्त। अस्थिर।
[सं पुं] নিয়মৰ ক্ৰম-ভঙ্গ।
नियम या क्रम का भंग।

चल संपत्ति—(सं स्त्री) অস্থাবৰ সম্পত্তি।
अस्थावर सम्पत्ति।

चलाऊ—[वि] কাম চলা।
चलने वाला। टिकनेवाला

चलान, चालान-[सं स्त्री] চালান, পঠোৱা কাৰ্য্য।
माल आदि भेजे जाने का कार्य। अपराधी का न्याय के लिये भेजा जाना।

चलावा—(सं पुं) ৰীতি, প্ৰথা।
रीति। रिवाज।

चवाई—(सं पुं) নিন্দক।
निन्दक।

चश्म, चश्म—(सं स्त्री) চকু।
आँख।

चश्मदीद—(वि) চকুৰে দেখা।
आँख से देखा हुआ।

चसका, चस्का—[सं पुं] চখীন, অভ্যাস।
शौक। आदत।

चस्पाँ—(वि) লাগি থকা।
चिपका हुआ।

चह—(सं पुं) নাওত উঠিবলৈ অস্থায়ী ভাবে সজা সাঁকো।
नाव पर चढ़ने के लिये तटपर बना चबूतरा। नदी पर बना अस्थायी पुल।

चहक—(सं स्त्री) কলৰব।
पक्षियों का कलरव।

चहकना—(क्रि अ) চিঁচিয়ঁনি, কলৰব, কিৰিলি পৰা।
पक्षियों का मधुर कलरव करना। प्रसन्न होकर खूब बोलना।

चहचहाना—(क्रि अ) চৰায়ে কিৰিলিওৱা।
पक्षियों का चह चह शब्द करना।

चह-बच्चा—[सं पुं] চৌবাচ্চা।
पानी जमा करने का हौज।

चहल—[सं स्त्री] উলহ-মালহ।
পক্ষীৰ কলৰব।
आनन्द की धूम। पक्षियों का कलरव।

चहल कदमी—(सं स्त्री) লাহে লাহে ফুৰা।
धीरे धीरे टहलना।

चहल पहल—(सं स्त्री) धूमधाम, আড়ম্বৰ ।
धूम धाम । रौनक ।

चहार-दीवारी—[सं स्त्री] প্ৰাচীৰ, ইটা বা মাটিৰ গড়, বেৰ ।
प्राचीर । दीवार । घेरा ।

चहुँ, चहूँ—(वि) চাৰিও ।
चारो ।

चहेता—(वि) প্ৰিয়, আপোন ।
प्यारा । प्रिय ।

चाँई—[सं पुं] ঠগ, ধূৰ্ত্ত ।
ठग । उचक्का ।

चाँटा—[सं पुं] চাপৰ ।
थप्पड़ ।

चाँड़—(वि) প্ৰবল, প্ৰচণ্ড ।
प्रबल । उद्दंड । प्रचंड ।

चाँड़ना— (क्रि स) জোৰেৰে উভালা বা টনা ।
जोर से उखाड़ना या दबाना ।

चाँद [सं पुं] চন্দ্ৰ ।
चन्द्रमा ।
(सं स्त्री) মূৰৰ মাজ ভাগ ।
खोपड़ी का बिचला भाग ।

चाँदनी (सं स्त्री) জোনাক, চন্দ্ৰতাপ, চন্দোৱাৰ ।
चन्द्रमा का प्रकाश, बिछाने या ऊपर तानने की चादर ।

चाँदी—(सं स्त्री) ৰূপ ।
रजत धातु ।

चाँपना—(क्रि स) হেঁচা দিয়া ।
दबाना ।

चाक— (सं पुं) কুমাৰৰ চাক, চকা ।
कुम्हार का बर्तन बनाने का पहिया । पहिया । दरार ।
(वि) দৃঢ়, হৃষ্ট-পুষ্ট ।
दृढ़ । हृष्ट पुष्ट ।

चाक चक—(वि) মজবুত ।
मजबूत ।

चाक-चक्य—[सं पुं] জাক-জমক, সৌন্দৰ্য্য ।
चमक दमक । सुन्दरता ।

चाखना—(क्रि स) চাকি চোৱা, সোৱাদ পৰীক্ষা কৰা ।
चखना ।

चाचर (रि)—(सं स्त्री) হোলীৰ গীত । কোলাহল ।
होली का एक गीत । हल्लागुल्ला ।

चाट—(सं स्त्री) জলা আৰু টেঙা মিহলি এবিধ ভজা বস্তু । চখ ।
खानेकी चटपटी और नमकीन चीजें । शौक । लत ।

चाटुकार—(सं पुं) তোষামোদ-কাৰী ।
खुशामदी ।

चाटुकारी—(सं स्त्री) তোষামোদ
खुशामद ।

चातुरी— (सं स्त्री) চাতুৰ্য্য, চালাকি ।
चतुरता । चालाकी ।

चातुर्मास्य—[सं पुं] আহাৰৰ শুক্লা দ্বাদশীৰ পৰা কাতিৰ শুক্লা দ্বাদশীলৈ কৰা এক ব্ৰত ।
वर्षा कालमें किया जाने वाला एक व्रत ।

चाप—[सं पुं] ধনু, বৃত্তৰ পৰিধি ।
धनुष । वृत्तकी परिधि का भाग । घर का मेहराब ।
(सं स्त्री) চাপ, হেঁচা, ভৰিৰ শব্দ ।
दबाव । पैर की आहट ।

चापलूस—(वि) তোষামোদী ।
खुशामदी ।

चापलूसी—(सं स्त्री) তোষা-মোদ ।
खुशामद ।

चाभना—(क्रि स) খোৱা ।
खाना ।

चाम—(सं पुं) চামৰা, ছাল ।
चमड़ा ।

चाय—(सं स्त्री) চাহ ।
एक प्रकार का पौधा । उसकी पत्तियों से बना पेय पदार्थ ।

चार-कर्म-(सं पुं) চোৰাংচোৰা-গিৰী ।
जासूसी ।

चारदीवारी—(सं स्त्री) প্ৰাচীৰ, বেৰ ।
प्राचीर । दीवार ।

चारपाई—(सं स्त्री) খাট, চাল-পীৰা ।
छोटा पलंग । खाट ।

चारा—(सं पुं) ঘাঁহ, খেৰ, উপায় ।
पशुओं का खाद्य । उपाय ।

चाराजोई—(सं स्त्री) গোচৰ ।
फरियाद ।

चाल—(सं स्त्री) গতি, আচ-ৰণ, প্ৰথা, উপায় ।
गति । आचरण । प्रथा । तरकीब ।

चाल-चलन—(सं पुं) আচাৰ-ব্যৱহাৰ ।
आचरण । व्यवहार ।

चाल-ढाल—(सं स्त्री) আচৰণ।
आचरण ।

चालबाज—(वि) धूৰ্ত্ত, ঠগ, কপট।
धूर्त । छली ।

चालबाजी—(सं स्त्री) धूৰ্ত্তালি, চালাকি।
धूर्तता । चालाकी ।

चालीस—(वि) চল্লিশ।

चालू—(वि) চলি থকা, প্ৰচলিত।
प्रचलित । जो चल रहा हो ।

चाव—(सं पुं) বাসনা, অনুৰাগ, চখ।
वासना । अनुराग । शौक । उमंग ।

चाशनी—(सं स्त्री) পগাই ঘন কৰা চেনি, গুড় আদিৰ ৰস।
आँच पर गाढ़ा किया हुआ चीनी, गुड़ आदि का रस ।

चाह—(सं स्त्री) ইচ্ছা, প্ৰীতি, আদৰ।
इच्छा । प्रीति । आदर ।

चाहिए, चाहिये—(अव्य) উচিত, লাগে।
उचित है । आवश्यक है ।

चाहे—(अव्य) যদি, অথবা, নাইবা, বা, লাগিলে।
यदि इच्छा हो । अथवा । या

चिआँ—(सं पुं) তেঁতেলীৰ গুটি।
इमली का बीज ।

चिउँटी, च्यूँटी—(सं स्त्री) পিঁপৰা।
पिपिलिका ।

चिंघाड़ना—[क्रि अ] হাতীৰ চিঞৰ।
हाथी का बोलना । चीखना ।

चिंतना—(क्रि अ) চিন্তা কৰা।
चिन्तन या ध्यान करना ।

चिंदी—(सं स्त्री) অত্যন্ত সৰু টুকুৰা।
बहुत छोटा टुकड़ा ।

चिक—(सं स्त्री) পদা।
परदा । चिलमन ।

चिकट—(वि) মলিন।
मैल से गंदा ।

चिकना—(वि) চিকুণ, মিহি।
साफ और बराबर । जो खुरदुरा न हो ।

चिकनाई—[सं स्त्री] চিকুণতা, মিহিগুণ।
चिकनाहट ।

चिकनाना—[क्रि स] চিকুণ কৰা। তোষামোদ কৰা। কথা সাজি-কাচি কোৱা।
चिकना बनाना। खुशामद करना। बनावटी बातें करना।
[क्रि. अ] শকত হোৱা।
मोटा होना।

चिकनाहट—[स ं स्त्री] চিকুণ হোৱা ভাব।
चिकना होने का भाव।

चिकरना—[क्रि स] চিঞৰা।
चिंघाड़ना।

चिकार—(सं पुं) চিঞৰ-বাখৰ।
चिंघाड़।

चिकुर—(सं पुं) চুলি, সাপ আদি সৰীসৃপ।
केश। बाल। साँप आदि सरीसृप।

चिकोटी—(सं स्त्री) চিকোট।
चुटकी।

चिट—(सं स्त्री) কাগজ বা কাপোৰৰ টুকুৰা।
कागज का छोटा टुकड़ा जिसमें कुछ लिखा जाय।

चिटकना—(क्रि अ) মৰ-মৰ শব্দ কৰি ভঙা। ফুলৰ কলি ফুলি উঠা।
चिट् आवाज कर टूटना। कली का खिलना।

चिट-नवीस, चिटनीस—(सं पुं) লিখক, লিপিকাৰ।
लेखक। लिपिक।

चिट्टा—[वि] বগা।
सफेद।
[सं पुं] অনাহক বৃদ্ধি।
झूठा बढ़ावा।

चिट्ठा—(सं पुं)জমা-খৰছৰ বহী।
आय व्यय का हिसाब।

चिट्ठी—(सं स्त्री) চিঠি।
पत्र। खत।

चिट्ठी-पत्री—(सं स्त्री) চিঠি-পত্ৰ, পত্ৰ ব্যৱহাৰ।

चिट्ठी-रसाँ—[सं पुं] ডাকোৱাল, ডাক-পিয়ন।
डाकिया।

चिड़चिड़ा—(वि)খিংখিঙীয়া।
जरा सी बात पर चिढ़ जाने वाला।

चिड़वा—(सं पुं) চিৰা।
चिउड़ा।

चिड़ा—[सं पुं] ঘনচিৰিকা।
गौरैया पक्षी।

चिड़िया—(सं स्त्री) চৰাই ।
पक्षी ।

चिड़िया खाना— (सं पुं) পশু-পক্ষীৰ সংগ্ৰহালয়, চিৰিয়াখানা ।
वह स्थान जहा बहुत से पशु-पक्षी देखने के लिये रखे जाते हैं ।

चिड़िहार, चिड़ीमार— [सं पुं] চৰাই-চিকাৰী, ব্যাধ ।
बहेलिया । व्याध ।

चिढ़ना—[क्रि अ] অপ্ৰসন্ন হোৱা ।
अप्रसन्न होना ।

चिढ़ाना—(क्रि स) অপ্ৰসন্ন কৰা, বিৰক্ত কৰা ।
ऐसा काम करना जिससे कोई चिढ़े ।

चित्—[सं पुं] চৈতন্য, জ্ঞান ।
चैतन्य, ज्ञान ।

चित—[सं पुं] চিত্ত, মন ।
चित्त । मन ।

चितकबरा, चितला—(वि) পখৰা ।
भिन्न भिन्न रंगों के धब्बों वाला

चित चोर—(सं पुं) প্ৰিয়, মন-চোৰ ।
प्यारा ।

चितवन—(सं स्त्री)দৃষ্টি, চাৱনি ।
दृष्टि ।

चिताना—(सं स्त्री) সাৱধান বাণী শুনোৱা, উপদেশ দিয়া ।
सावधान या होशियार करना । उपदेश देना ।

चितावनी—[सं स्त्री] সতৰ্কবাণী ।
चेतावनी ।

चिति— (सं स्त्री) চিতা, সমূহ, চৈতন্য ।
चिता । समूह । चैतन्य । चित् शक्ति ।

चितेरा—[सं पुं] চিত্ৰকাৰ ।
चित्रकार ।

चित्ती—(सं स्त्री) চেকা ।
छोटा धब्बा ।

चित्रसारी—(सं स्त्री) চিত্ৰশালা, চিত্ৰ বিস্থা, প্ৰমোদ-ভৱন ।
चित्रशाला । चित्रकारी । विलास महल ।

चित्राधार—(सं पुं) এলবাম, চিত্ৰ সংগ্ৰহ ।
अलबम । चित्र-संग्रह ।

चिथड़ा—(सं पुं) ফটা-চিতা কাপোৰ ।
फटा पुराना कपड़ा ।

चिद्रूप—(सं पुं) জ্ঞানৰূপ পৰমাত্মা ।
ज्ञानरूप परमात्मा ।

चिद्विलास—(सं पुं) চৈতন্য ঈশ্বৰৰ মায়া।
चैतन्य ईश्वर की माया।

चिनगारी—(सं स्त्री) ফিৰিঙতি, স্ফুলিঙ্গ।
आग का छोटा कण। स्फुलिंग।

चिनगी—(सं स्त्री) ফিৰিঙতি।
चिनगारी।

चिनिया बदाम—(सं पुं) চীনা-বাদাম।
मूंगफली।

चिन्हानी—[सं स्त्री] স্মাৰক, চিন।
याद दिलाने वाली वस्तु।

चिन्हारी—(सं स्त्री) পৰিচয়।
परिचय।

चिपकना—(क्रि अ) লাগি থকা।
गोंद आदि से जुड़ना।
लिपटना।

चिपकाना—(क्रि स) আঠা লগোৱা।
लसीली वस्तु से जोड़ना।

चिपचिपा—(वि) এঠা-এঠি, আলতীয়া।
लसीला।

चिपटा—[वि] চেপেটা।
दबा हुआ। जिसकी सतह उठी हुई न हो।

चिप्पी—(सं स्त्री) টাপলি।
कागज, रबर आदि का छोटा टुकड़ा जो किसी वस्तु पर चिपकाया जाय।

चिबुक—(सं पुं) থুঁতৰি।
ठोढ़ी।

चिमटना—(क्रिअ) কামোৰ খাই লাগি থকা।
चिपकना। कसकर लिपटना। पीछा न छोड़ना।

चिमटा—(सं पुं) চিমটা।
दबाकर पकड़ने या उठाने का एक औजार।

चिमनी—[सं स्त्री] চুঙি, চিম্নি।
मकान का धुआँ निकालनेवाला छेद। लालटेन का शीशा।

चिरकुट—(सं पुं) ফটা-কাপোৰ।
चिथड़ा।

चिरना—(क्रि अ) ছিৰ, ফলা।
सीधे में फटना।

चिरमिटी, चिरमी—(सं स्त्री) এবিধ বেলজাতীয় ফল।
घुँघुची।

चिरवाना—[क्रि स] পোনে-পোনে ফলোৱা ।
सीधे में फडवाना ।

चिराई—[सं स्त्री] ছিৰা বা ফলা বানচ ।
चीरने की मजदूरी ।

चिराग- (सं पुं) চাকি ।
दीपक ।

चिराग दान—(सं पुं) গছা ।
दीयट ।

चिरायँध—(सं स्त्री) চামৰা, চুলি, ৰবৰ আদি পুৰিলে ওলোৱা দুৰ্গন্ধ ।
चमडा, बाल, मांस आदि जलने की दुर्गंध ।

चिरौरी—(सं स्त्री) দীনতা-পূৰ্ব্বক কৰা প্ৰাৰ্থনা ।
दीनता पूर्वक की जाने वाली प्रार्थना ।

चिलकना—(क्रि अ) বৈ-বৈ উজলি উঠা । বিষোৱা ।
रह-रहकर चमकना । दर्द होना ।

चिलगोजा—(सं पुं) এবিধ ফল ।
एक प्रकार का फल ।

चिलबिला (ल्ला)—(वि) চঞ্চল ।
चंचल । चपल ।

चिलम—(सं स्त्री) চিলিম ।
तम्बाकू पीने के लिये मिट्टी की नलीदार कटोरी ।

चिलमन—[सं स्त्री] পৰ্দা ।
चिक । परदा ।

चिल्लड़ (र)—(सं पुं) এবিধ বগা ওকণী । जूँ के आकार या एक सफेद कीड़ा ।

चिल्ल-पों—[सं पुं] চিএৰ-বাখৰ ।
चिल्लाहट । शोरगुल ।

चिल्लाना—(क्रि अ) চিএৰা ।
चीखना । हल्ला करना ।

चिल्लाहट—(सं पुं) চিএৰ ।
चिल्लाने की क्रिया या भाव ।

चिल्ली-(सं स्त्री) জিলী । বিজুলী ।
झींगुर नाम का कीडा । बिजली ।

चिहुँकना-(क्रि अ) উচপখাই উঠা, শিয়ঁৰি উঠা ।
चौंकना ।

ची-चपड़—(सं स्त्री) মৃদুভাৱে বিৰোধ কৰি কোৱা কথা ।
विरोध में बहुत दबते हुए कुछ कहना ।

चींटी—(सं स्त्री) পৰুৱা।
च्यूँटी।

चीकट—(सं पुं) তেল চিকটি।
तेल की मैल।

चीख—[सं स्त्री] চিঞৰ, আটাহ।
चिल्लाहट ।

चीखना—(क्रि स) চিঞৰা ।
चिल्लाना ।

चीज—[सं स्त्री]বস্তু ।
वस्तु । सामान।

चीड़—(स पुं) সৰল গছ ।
एक प्रकार का पेड़ ।

चीता—[सं पुं] নাহৰ ফুটুকা বাঘ।
एक हिंसक जंगली पशु।
(वि) মনে-ভবা।
मन में सोचा हुआ।

चीनी—[सं स्त्री] চেনি।
शक्कर ।
[वि] চীন দেশীয়।
चीन देश का।

चीनी मिट्टी—[सं स्त्री]চীনা-মাটি।
एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसके बरतन आदि बनते हैं।

चीर—[सं पुं] কাপোৰ। ফটা-কানি। वस्त्र। चिथड़ा।
[सं स्त्री] বিদীৰ্ণ কৰা কাৰ্য্য বা ফলা অংশ।
चीरने की क्रिया। चीरने से बनी हुई दरार।

चीरना—(क्रि स) বিদীৰ্ণ কৰা ।
तेज धारवाले हथियार से बीचमें से काटना।

चीरफाड़—[सं स्त्री] অস্ত্ৰোপচাৰ ।
अस्त्र चिकित्सा। आपरेशन।

चील—[सं स्त्री] চিলা।
एक तरह की चिड़िया।

चीवर-(सं पुं) সন্ন্যাসী, ভিক্ষুক আদিৰ বস্ত্ৰ।
संन्यासियों, भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा।

चुंगी—[सं स्त्री] আমদানী কৰ ।
बाहर से आनेवाले माल पर लगने वाला महसूल।

चुंदी—(सं स्त्री) টিকনি ।
शिखा। चोटी।

चुकंदर—[सं पुं] বীট-পালং।
गाजर की तरह का एक कन्द।

चुकता (ती)—(वि) আদায় ।
जो चुका दिया गया हो।

चुकना—(क्रि अ) বাকী নৰখা।
बाकी न रहना। निपटना।

चुकाना-(क्रि स) আদায় দিয়া।
बाकी न रखना। निपटाना।

चुक्कड़-(सं पुं) মাটিৰ সৰু গিলাচ।
मिट्टी का छोटा गिलास।

चुगना-(क्रि स) ঠোঁটেৰে বুতলি খোৱা।
चिड़ियों का चोच से दाने आदि उठाकर खाना।

चुगलखोर—[सं पुं] টুটকীয়া।
चुगली खानेवाला या शिकायत करनेवाला।

चुगली-(स स्त्री) টোটক, লগনীয়া কথা।
परोक्षमें की जानेवाली शिकायत।

चुटकना-(क्रि स) খুম্‌তামাৰি চিঙা, সাপে খুটিওৱা।
चुटकी से तोड़ना। साँप का काटना।

चुटकी—(सं स्त्री) চিমটা।
पकड़ने के लिये अंगूठे और तर्जनी का योग।

चुटकी लेना— হাঁহি উৰুৱাই দিয়া।
हँसी उड़ाना।

चुटकुला—(सं पुं) হাঁহি উঠা, কিন্তু উপদেশ মূলক কথা। ঔষধ প্ৰয়োগৰ গাৱলীয়া ব্যৱস্থা।
चमत्कार पूर्ण हँसी की या छोटी मजेदार बात। दवा का छोटा और गुणकारी नुसखा।

चुटिया—(सं स्त्री) টিকনি।
शिखा। चोटी।

चुड़िहारा—[स पुं] চুৰী বা খাৰু বেচোঁতা।
चूडियों का व्यापारी।

चुड़ैल—(सं स्त्री) ডাকিনী, দজ্জুৰী তিৰোতা।
डायन। क्रूर और लड़ाकी स्त्री।

चुनचुनाना—(क्रि अ) চেক্‌-চেকনি উঠা। कुछ जलन लिये हलकी खुजली होना।

चुनट, चुनन-(सं पुं) ভাঁজ।
कपड़े आदिमें बनाई हुई सिलवट।

चुनना—(क्रि स) নিৰ্ব্বাচন কৰা, বুটলা, ভালৰ পৰা বেয়াক পৃথক কৰা।
चयन करना। छोटी-छोटी चीजों को हाथ आदि से उठाकर संग्रह करना। निर्वाचित करना। अच्छी चीज में से खराब चीज निकालना। कपड़ेमें तह लगाना।

चुनरी, चूनरी— (सं स्त्री) फুল বছা এবিধ ওৰণি কাপোৰ।
स्त्रियों के पहनने या ओढ़ने का एक रंगीन कपड़ा।

चुनाव – [सं पु] বাছনি।
निर्वाचन ।

चुनिंदा—(वि) বাছকবনীয়া।
चुना हुआ। बढ़िया।

चुनौती — (सं स्त्री) ৰণাহ্বান, ৰণ-হুঙ্কাৰ।
शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी को दी जाने वाली ललकार। आह्वान।

चुन्नी—(सं स्त्री) খুদ, কণ ৰত্নকণ।
बहुत छोटा रत्न। अनाज या लकड़ी का चूरा।

चुप— (वि) অবাক, মৌন।
अवाक। मौन।

चुपचाप—(वि) মনে-মনে, হাতত সাবে ভবিত সাবে।
बिना कुछ कहे सुने। छिपे-छिपे।

चुपड़ना—(क्रि स) মালিচ কৰা, মিঠা কথা কোৱা।
लेप करना। चिकनी चुपड़ी बातें कहना।

चुप्पी—[सं स्त्री] নিস্তব্ধতা।
मौन।

चुभना—(क्रि स) বিন্ধি যোৱা, মনত কষ্ট পোৱা।
गड़ना। धँसना। बुरा लगना। मनमें दुख लगना।

चुभाना—(क्रि स) বিন্ধি দিয়া। মনত আঘাত দিয়া।
धँसाना। मनमें कष्ट लगनेवाली बातें या काम करना।

चुमकारना—[क्रि स] নিচুকোৱা।
प्रेमपूर्वक पुचकारना।

चुम्मा—[सं पुं] চুমা।
चुम्बन ।

चुरमुरा— (वि) তাজা, যি ঠনৰ কৈ ভাঙি যায়।
ताजा। चुरचुर शब्द करके टूटने वाला।

चुराना— [क्रि स] চোৰ কৰা।
चोरी करना।

चुलचुलाना— (क्रि अ) অলপ খজুৱতি।
हलकी खुजली होना।

चुलबुला—(वि) চঞ্চল, উৎপতীয়া।
चंचल। नटखट।

चुल्लू—[सं पुं] চলু, আঁজলি।
अंजुलि।

चुसकी—[सं स्त्री] শোহা।
सुरक कर पीनेकी क्रिया। घूँट।

चुसना—(क्रि अ) শোহা মাৰি খোৱা। ৰসহীন হোৱা।
चूसा जाना। रसहीन होना।

चुस्त—[वि] আট খোৱা, স্ফুৰ্ত্তি-বান, নোদোকা।
कसा हुआ। फुरतीला। मजबूत।

चुस्ती—[सं स्त्री] স্ফুৰ্ত্তি, দৃঢ়তা।
फुरती। कसावट। दृढ़ता।

चुहचुहाना—[क्रि अ] আনন্দতে ৰৰকৈ কথা কোৱা।
चटकीला होना। सरस होना।

चुहड़ा—[सं पुं] মেতৰ, ডোম।
भंगी। चांडाल।

चुहल, चुहुल—[सं स्त्री] হাঁহি ধেমালি।
हँसी। ठठोली।

चुहिया—(सं स्त्री) মাইকী নিগনি।
मादा चूहा।

चूँ—(स स्त्री) চীঁ চিয়নি।
छोटी चिड़ियों की बोली। धीमा शब्द।

चूँकि—[क्रि वि] যিহেতু, কিয়নো।
क्योंकि।

चूक—(सं स्त्री) ভুল, ভ্ৰান্তি।
भूल। गलती। गलतीसे छूटा या हुआ काम।
[वि] অত্যধিক টেঙা।
बहुत अधिक खट्टा।

चूकना—[क्रि अ] ভুল কৰা, সুযোগ নষ্ট কৰা।
भूल करना। अवसर खो देना।

चूची—(सं स्त्री) স্তন।
स्तन।

चूजा—(सं पुं) কুকুৰা পোৱালি।
मुरगी का बच्चा।

चूड़ा—(सं स्त्री) শীৰ্ষ।
चोटी। शिखा। मोरकी कलंगी।
(सं पुं) খাৰু।
हाथमें पहनने का कड़ा।

चूड़ाकर्म—(सं पुं) চূড়া কৰণ।
मुण्डन संस्कार।

चूड़ी—[सं स्त्री] খাৰু।
हाथमें पहनने का गहना। वृत्ता-कार वस्तु।

चूतड़—(सं पुं) তপিনা, নিতম্ব।
नितंब।

चून—(सं पुं) আটা-গুড়ি।
चूर्ण। आटा।

चूना—(सं पुं) চূণ।
एक सफेद क्षार।
(क्रि अ) টোপাল ধৰি পৰা।
बूँद बूँद गिरना।

चूमना—(क्रि स) চুমা খোৱা।
चुम्बन करना।

चूर, चूरा—[सं पुं] গুড়ি।
चूर्ण।
(वि) ক্লান্ত।
थका हुआ।

चूरन—(सं पुं) গুড়ি।
चूर्ण।

चूरना—(क्रि स) গুড়ি কৰা।
चूर्ण करना।

चूल्हा—(सं पु) চৌকা, আখা।
आग का वह पात्र जिसपर भोजन पकाते है।

चूसना—(क्रि स) শুহি খোৱা, অনুচিত ভাবে টকা আদায় কৰা।
कोई चीज मुँहमें दबाकर उसका रस पीना। अनुचित रूप से रुपये वसूल करना।

चूहा—(सं पुं) এন্দুৰ।
मूसा।

चूहेदानी—[सं स्त्री] এন্দুৰ মৰা ফান্দ।
चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

चेचक—[सं स्त्री] বসন্ত ৰোগ।
शीतला रोग।

चेट—(सं पुं) দাস, পতি।
दास। पति।

चेटक—[सं पु] দাস, দূত।
दास। दूत। जादू।

चेटी—(सं स्त्री) দাসী।
दासी।

चेत—[सं पु] চেতনা, জ্ঞান, স্মৃতি।
चेतना। ज्ञान। स्मृति।

चेतक—(वि) চেতনা প্ৰদায়ক।
चेतना उत्पन्न करनेवाला।

चेता—(वि) চেতনশীল।
चेतना वाला।

चेताना—(क्रि स) সতৰ্ক কৰি দিয়া, উপদেশ দিয়া।
सावधान या होशियार करना। उपदेश देना।

चेतावनी—[सं स्त्री] সতৰ্কবাণী।
सावधान करने के लिये कही जानेवाली बात। उपदेश।

चेहरा—[सं पुं] চেহেৰা, আকৃতি।
मुख। बदन।

चैत—[सं पुं] চ'ত মাহ।
चैत्र महीना।

चैती—[सं स्त्री] চ'তত কাটিব লগীয়া শস্য, এবিধ গীত।
चैतमें कटनेवाली फसल। एक गाना।
[वि] চ'ত মাহ সম্বন্ধীয়।
चैत्र सम्बन्धी।

चैत्य—[सं पुं] ঘৰ, দেৱতাৰ মন্দিৰ, বৌদ্ধ মঠ।
मकान। देव मन्दिर। बौद्ध मठ।

चैन—[सं पुं] শান্তি, সুখ।
आराम। सुख।

चोंच-[सं स्त्री] ঠোঁট।
पक्षी का मुँह।

चोंथना—(क्रि स) আঁচোৰা, খোঁচৰা।
नोचना। खसोटना।

चोआ—[सं पुं] কেবাবিধ সুগন্ধি দ্ৰব্যৰ সাৰভাগ।
सुगन्धित वस्तुओं का सार या रस।

चोकर—[सं पुं] চোকোৰা।
गेहूँ आदि की भूसी।

चोखा—(वि) শুদ্ধ, উত্তম, চোকা।
शुद्ध। उत्तम। पैना।
[सं पुं] জুইত পুৰি বা পানীত উহাই লোণ তেল আদি সানি কৰা এবিধ তৰকাৰী।
आलू आदि का भरता।

चोगा-(सं पुं) চাপকণ।
पैरों तक लटकता ढिला अंगा।

चोचला—(स पु) লাহ-বিলাহ।
जवानी की उमंग की चेष्टाएँ।

चोट—[सं स्त्री] আঘাত, আঘাত পাই হোৱা অনিষ্ট।
आघात। आघात से होनेवाला अनिष्ट। जखम।

चोटी—(सं स्त्री) টিকনি, বেণী, কুকুৰাৰ মূৰৰ খোপা। পৰ্ব্বতৰ টিং
शिखर। एकमें गूँथे स्त्रियों के सिर के बाल। मुर्गे की कलगी।

चोब—[सं स्त्री] ৰভাৰ খুঁটা, ঢোলমাৰি।
शामियाने का बड़ा खम्भा। नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चोबदार—(सं पुं) দুৱৰী।
द्वारपाल। नौकर।

चोर दरवाज़ा—(सं पु) গুপ্ত-দুৱাৰ।
गुप्त द्वार।

चोर बाज़ार—(सं पुं) চোৰাং-বজাৰ।
वह स्थान जहाँ चोरी से वस्तु अधिक मूल्य पर बेची जाती है।

चोर बाज़ारी—(सं स्त्री) চোৰাং-বজাৰ।
चोरी से कोई चीज ज्यादा या कम दामपर बेचना।

चोरा चोरी (क्रि वि) গোপনে, মনে-মনে।
छिपे छिपे। चुपके चुपके।

चोल—(सं पुं) ঢিলা চোলা, কৱচ।
ढीला कुरता। कवच। चोली।

चोला—(सं पुं) সাধু সন্ন্যাসীৰ দলো চোলা বা তেনে কাপোৰ, শৰীৰ।
साधुओं का लम्बा कुरते सा पहनावा। शरीर।

चोली—(स पुं) কাঁচুলি।
अंगिया की तरह का स्त्रियों एक पहनावा।

चौंकना—[क्रि अ] চমকি উঠা, ভিতৰ খোৱা।
भय आदि से अचानक काँप उठना। चकित होना।

चौंध—(सं स्त्री) চমক।
चमक।

चौंधियाना—[क्रि अ] চকু চাট মাৰি ধৰা।
तेज चमक के सामने आँखे झिलमिलाना। चकाचौंध होना।

चौ—(वि) চাৰি।
चार।

चौक—[सं पु] চক, চোতাল।
चौकोर खुली भूमि। आंगन।
वह स्थान जहाँ कई रास्ते मिलते हैं।

चौकड़ी—(स स्त्री) জঁাপ বা লাফ, মণ্ডলী।
छलांग। मंडली या गुट।

चौकन्ना—(वि) সাৱধান।
सावधान चौका हुआ।

चौकस—[वि] সাৱধান, উপযুক্ত।
सावधान। ठीक।

चौकसी—(स स्त्री) সতর্কতা, ৰখীয়া।
सावधानी। रखवाली।

चौका—(स पु) চাৰিচুকীয়া শিল, চোকা, আখা।
पत्थर का चौकोर टुकड़ा।
रसोई का स्थान।

चौका बरतन—(सं पुं) ভাত খোৱাৰ পিছত চোকা আদি পৰিষ্কাৰ কৰা ক্ৰিয়া ।
रसोई के बाद बरतन आदि साफ करने का काम ।

चौकी—[सं स्त्री] চকী, পহৰা দিয়া ঠাই ।
छोटा तख्त । पड़ाव । रक्षा के लिये सिपाहियों के रहने का स्थान । पहरा ।

चौकीदार—[सं पुं] পহৰাদাৰ, চকীদাৰ ।
पहरा देनेवाला ।

चौकोर—(वि) চাৰিচুকীয়া ।
जिसके चारों कोण बराबर हो ।

चौखट—[सं स्त्री] দুৱাৰ ডলি ।
देहली ।

चौखटा—[सं पुं] আয়না বা ফটো খুৱাবলৈ ফ্ৰেম ।
चित्र या शीशा जड़ने का चौकोर ढाँचा ।

चौगान—[सं पुं] পলোখেল বা পলো খেল-পথাৰ ।
गेंद बल्ले का खेल या उसका मैदान ।

चौगुना—[वि] চাৰিগুণ ।
चतुर्गुण ।

चौगोड़ा—[सं पुं] চাৰিঠেঙীয়া জন্তু, শহাপহু ।
चतुष्पद जन्तु, खरगोश ।

चौड़ा—[वि]. বহল ।
जिसमें चौड़ाई हो । विस्तृत ।

चौड़ाई—[सं स्त्री] পথালি ।
पनहा ।

चौताल—[सं पुं] হোলীৰ গীত, মৃদঙ্গৰ এবিধ তাল ।
होली में गाये जानेवाला एक गीत । एक प्रकार का ताल ।

चौथ—(सं पुं) চতুৰ্থী তিথি ।
चतुर्थी तिथि ।

चौथाई—(वि) এক চতুৰ্থাংশ ।
चौथा भाग ।

चौपट—[क्रि वि] চাৰিও ফালে ।
चारों ओर से ।
(वि) ধ্বংশ ।
बरबाद ।

चौपड़—[सं स्त्री] এবিধ খেল ।
चौसर नामक खेल ।

चौपाई—[सं स्त्री] এবিধ ছন্দ ।
एक प्रकार का छंद ।

चौपाया—[सं पुं] চাৰি ঠেঙীয়া জন্তু ।
चार पैरों वाला पशु ।

चौपाल—[सं पुं] সভা ঘৰ।
खुला हुआ बैठक खाना।

चौमास, चौमासा— (सं पुं) বৰ্ষা কালৰ চাৰিটা মাহ—আহাৰ, শাওন, ভাদ, আহিন। বৰ্ষা সম্বন্ধীয় এবিধ গীত।
वर्षा ऋतु के चार महीने। वर्षा सम्बन्धी गीत।
(वि) চাৰি মহীয়া। চাৰি মাহৰ অন্তৰে অন্তৰে।
हर चार महीने पर होनेवाला।

चौमुहानी— (सं स्त्री) চাৰি-আলিৰ চক্।
चौराहा। चौरास्ता.

चौरंगा—[वि] চাৰি ৰঙীয়া।
चार रंगोंवाला।

चौरस—(वि) সমতল, সমান।
चारों ओर से समान वस्तु। समतल।

चौरा—(सं पुं) মঞ্চ। কোনো দেৱ-দেৱীৰ নামত সজা বেদী।
चबूतरा। किसी देवा देवता के नाम पर बनाया हुआ चबूतरा।

चौराई, चौलाई— (सं पु) খুতৰা শাক।
एक प्रकार का साग।

चौरासी— [सं पुं] চোৰাশী।
अस्सी और चार की संख्या।

चौराहा—[सं पुं] চাৰি আলিৰ চক্।
चौमुहानी।

चौसर— [सं पुं] পলো খেল।
गोटियों से खेला जानेवाला एक खेल। चौपड़।

चौहट्टा— [सं पुं] বজাৰ। চাৰি আলিৰ মূৰ।
बाजार। चौमुहानी।

चौहद्दी—(सं स्त्री) চৌহদ।
चार सीमा।

चौहरा—(वि) চাৰি তৰপীয়া।
चार तहोंवाला।

च्यूँटा, च्यूँटी— [सं पुं] উঁই, পিঁপৰা।
चींटी। पिपिलिका।

छ

छ—ব্যঞ্জন বর্ণমালাৰ সপ্তম আখৰ।
देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा वर्ण।

छँटना—[क्रि अ] বাদ দিয়া। বিচ্ছিন্ন হোৱা।
चुनकर अलग कर लिया जाना। छिन्न होना।

छँटनी—[सं स्त्री] বাছনি।
छँटाई। कर्मियों या मजदूरों को हटाने के लिये छाँटने का काम।

छँटा—[सं पुं] পৰিষ্কাৰ, ধূৰ্ত্ত, চতুৰ।
साफ। धूर्त। चालाक।

छँटाई—[सं स्त्री] বাছনি।
चुनकर अलग करने का काम। छाँटने की मजदूरी।

छः, छह—[वि] ছয়।

छकड़ा—[सं पु.] বলদ গাড়ী।
बैलगाड़ी।

छकना—[क्रि अ] তৃপ্ত হোৱা, ঠগ খোৱা।
खा पीकर या सौन्दर्य देखकर तृप्त होना। धोखा खाना।

छकाना—[क्रि स] ঠগোৱা। ফাকি দিয়া।
धोखा देना।

छछून्दर—[सं पुं] চিকা।
चूहे की तरह का एक जन्तु।

छज्जा—[सं पुं] আওলা ? আগচালি।
कोठे का दीवार से बाहर निकला हुआ भाग।

छटकना—[क्रि अ] ছিটিকি যোৱা, বেলেগে থকা, জঁপিয়াই যোৱা।
किसी वस्तु का वेग से दूर जाना। अलग रहना। कूद जाना।

छटपटाना—(क्रि अ) ধৰ-ফৰ কৰা। অস্থিৰ হোৱা।
तड़फड़ाना। बेचैन होना।

छटपटी—(सं स्त्री) অস্থিৰতা, আকুলতা।
बेचैनी। आकुलता।

छटा—[सं स्त्री] শোভা, বিজুলী
शोभा। बिजली।

छठा—(বি) ষষ্ঠ।
षष्ठ।

छठी—[सं स्त्री] জন্মৰ ষষ্ঠ দিনা কৰা বিশেষ অনুষ্ঠান।
बालक के जन्म के छठे दिन होनेवाले कृत्य।

छड़—[सं पुं] মাৰি, শলা।
धातु, लकड़ी का पतला लम्बा टुकड़ा।

छत—[सं पुं] পকীঘৰৰ চাল। ওপৰৰ আবৃত ভাগ।
चूने, कंकड़ आदि से बना घर का छाजन। ऊपर का ढँकाभाग।

छतरी—(सं स्त्री) ছাতি।
छाता। पैराशूट।

छतीसा—(वि) চতুৰ, ধূৰ্ত্ত।
चालाक। धूर्त।

छत्ता—(सं पुं) মৌচাক, ছাতি।
मधुमक्खी का घर। छाता। कमल का बीजकोष।

छत्रक—[सं पुं] বেং-ছাতা। মৌ-চাক।
कुकुरमुत्ता। मधुमक्खियों का छत्ता।

छत्री—(सं पुं) ক্ষত্রিয় জাতি।
क्षत्रिय जाति।

छद—(सं पुं) আৱৰণ। চৰাইৰ পাখি।
आवरण। चिड़ियों का पंख।

छनकना—(क्रि अ) চেন্-চেন শব্দ হোৱা। ভয়তে পলোৱা।
चौकन्ना होकर भागना। छन् छन् भागना।

छनक-मनक—(सं स्त्री) সাজ-সজ্জা। অলঙ্কাৰৰ জন্-জননি, লাহ-বিলাহ।
सज-धज। गहनों की झंकार। नखरा।

छनना—(क्रि अ) ছেকা। যুজ হোৱা। মিলাপ্ৰীতি হোৱা।
किसी चूर्ण या तरल पदार्थ का कपड़े आदि से इस प्रकार गिरना जिससे मैल ऊपर रह जाय। लड़ाई होना। मेलजोल होना।

छपका—(सं पुं) ছিটিকনি।
पानी का छींटा।

छपना—(क्रि अ) ছপোৱা ।
मुद्रित होना । चिह्नित या अंकित होना ।

छपाई—(सं स्त्री) মুদ্রণ, ছপা-খৰচ ।
छापने या छपाने की क्रिया । मुद्रण । छापने की मजदूरी ।

छपाका—(सं पुं) ধুপুহ কৰে হোৱা শব্দ ।
पानी पर जोरसे गिरनेका शब्द ।

छप्पर—(सं पुं) ঘৰৰ চাল ।
फूस आदि की छाजन ।

छबिमान, छबीला—[वि] সুন্দৰ, ধুনীয়া ।
सुन्दर । छबिवाला ।

छमकना—[(क्रि अ) ঘুগুৰাৰ শব্দ । জিলিকি উঠা । আনন্দতে নচা ।
घुँघुरुओं की झंकार होना । चमकना । खुशी से नाचना ।

छमा छम—(क्रि वि) ঝন-ঝননি ।
जोर से छम छम शब्द करते हुए ।

छमासी—(सं स्त्री) ছয়মাহিলী শ্ৰাদ্ধ ।
मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला श्राद्ध ।
(वि) ছয় মহীয়া ।
छः महीने का ।

छट-छटाना—(क्रि अ) চেৰ্-চেৰ্ কৰা ।
घाव पर नमक आदि लगने से जलन या चुनचुनी होना ।

छरहरा—(वि) গা-পাতল । খৰ-তকীয়া ।
दुबला पतला और हलका । तेज ।

छर्रा—(सं पुं) খুদ, কণ, বন্দুকৰ সৰু গুলি ।
कंकड़ी या कण । बन्दूक की छोटी गोली ।

छल—[सं पुं] ছলনা, কপট, ফাঁকি ।
कपट । धोखा । बहाना ।
[वि] ভেজাল । কৃত্রিম ।
नकली ।

छलकना—(क्रि अ) উচাল খাই পৰা, জলক খাই পৰা ।
तरल पदार्थ का उछलकर बाहर गिरना । भरे होने के कारण उमड़ना ।

छल-कपट, छलछिद्र—[सं पुं] ঠগ, প্ৰতাৰণা, প্ৰবঞ্চনা ।
धोखेबाजी ।

छलछलाना—(क्रि अ) উপচি পৰা ।
भर जाने के कारण पानी गिरने को होना ।

छलना—[क्रि स] ঠগোৱা, প্ৰতাৰণা কৰা ।
धोखे में डालना । मोहित करना ।
(वि) ফাঁকি ।
धोखा ।

छलनी—(सं स्त्री) চালনী ।
चलनी ।

छलांग—(सं स्त्री) জাঁপ, লাফ ।
कूदान ।

छलावा—(सं पुं) ইন্দ্ৰজাল বা যাদুবিদ্যা ।
इन्द्रजाल या जादू । भूत प्रेत आदि की छाया ।

छलिया, छली—[वि] কপটী, ছলাহী ।
धोखेबाज ।

छल्ला—[सं पुं] ঘূৰণীয়া বস্তু, আঙঠি ।
मंडलाकार वस्तु । वलय ।

छवाई—[सं स्त्री] চাল চেৰা বান্ধ ।
छप्पर आदि छाने या छवाने की मजदूरी ।

छवि—[सं स्त्री] শোভা, জেউতি ।
शोभा । कान्ति ।

छवी—[सं स्त्री] শিখসকলৰ সৰু তৰোৱাল । কৃপাণ ।
सिक्ख लोगों का छोटा कृपाण ।

छहरना—(क्रि अ) সিচঁৰতি হৈ পৰা ।
बिखरना ।

छाँट—(सं स्त्री) বাছনি, কাটি-পেলোৱা কাগজৰ টুকুৰা ।
छाँटने या चुनकर अलग करने की क्रिया । छाँटकर अलग की हुई बेकार वस्तु ।

छाँटना—[क्रि स] কাটি উলিওৱা, চালি জাৰি উলিওৱা ।
काटकर अलग करना । अनाज में से कण या भूसी कूटकर अलग करना । अच्छी या काम की चीजें चुनना । जानकारी का अहंकार करना । कै करना ।

छाँड़ना—[क्रि स] কুলাৰে ধান জৰা, পৰিত্যাগ কৰা ।
सूप से अनाज फटकना । कै करना । छोड़ना ।

छाँदना—(क्रि स) বন্ধা ।
बाँधना ।

छाँदा—(सं पुं) ভোজ আদিৰ পৰা কাঁহীত ভৰাই ঘৰলৈ নিয়া আহাৰ, অংশ।
भोज आदि से थाली में परोसकर अपने घर ले जाया जानेवाला भोजन। हिस्सा।

छाँव—(सं स्त्री) ছাঁ, ছায়া।
छाँह। छाया।

छाँह—(सं स्त्री) ছাঁ, আশ্রয়।
छाया। ऊपर से छाया हुआ स्थान। आश्रय।

छाक—(सं स्त्री) তৃপ্তি, দুপৰীয়াৰ জলপান, মাদকতা।
तृप्ति। दोपहर का जलपान। शराब के साथ खायी जानेवाली चटपटी चीजें। मस्ती।

छाग—(सं पुं) ছাগলী।
बकरा।

छाछ—(सं स्त्री) দৈৰ ঘোল।
मट्ठा।

छाज—[सं पुं] কুলা। ঘৰৰ ছাল। সজাপৰা।
सूप। छप्पर। सजावट। स्वांग।

छाजन—(सं पु) কাপোৰ।
कपड़ा।
(सं स्त्री) চাল চেৰা কাম বা বানচ।
छानेका काम या मजदूरी। छाया के लिये ऊपकी बनावट।

छाता—(सं पुं) ছাতি।
छतरी।

छाती—[सं स्त्री] বুকু, হৃদয়, স্তন, সাহস।
वक्षःस्थल। हृदय। स्तन। साहस।

छादन—[सं पुं]আৱৰণ, কাপোৰ।
आवरण। छिपाव। कपड़ा।

छानना—(क्रि स) ছেকা, চালি-জাৰি চোৱা।
चलनी से तरल पदार्थ वा चूर्ण चालना। परखना। कोई चीज ढूँढने के लिये अच्छी तरह देखना भालना। नशा पीना।

छानना—(सं स्त्री) চালনী।
चलनी।

छानबीन—(सं स्त्री) বিচাৰ-খোঁচৰ, অনুসন্ধান।
अच्छी तरह जाँच पड़ताल। गहरी खोज।

छाना—(क्रि स) ঢাকন দিয়া।
ढकना। छाया के लिये कोई वस्तु तानना या फैलाना।
[क्रि अ] বিয়পি পৰা, তম্বু তৰি থকা।
फैलना। डेरा डालकर रहना।

छानी—(सं स्त्री) চাৱনা ।
छप्पर ।

छाप— (सं पुं) চাব, চিহ্ন, মনৰ ওপৰত প্ৰভাৱ ।
मुद्रा । छापने से पड़ा हुआ चिह्न । मन पर प्रभाव । निशान, चिह्न । कविता के अन्त में रहनेवाला कवि का उपनाम ।

छापना— (क्रि स) ছপা কৰা ।
मुद्रित करना ठप्पे से निशान डालना ।

छापा— (सं पुं) সাঁচ, মোহৰ, অতৰ্কিতে হোৱা আক্ৰমণ ।
ठप्पा । मुहर । ठप्पे या मुहर से अंकित चिह्न । अचानक बेखबर लोगों पर होनेवाला आक्रमण ।

छापामार— [सं पुं] অতৰ্কিতে আক্ৰমণকাৰী ।
अचानक हमला करनेवाला ।

छाबड़ी— [सं स्त्री] মিঠাইবালাৰ ডাঙৰ কাঁহী ।
खोमचा ।

छायापथ—(सं पुं) হাতীপটি ।
आकाश गंगा ।

छायावाद—[सं पुं] হিন্দী কবিতাৰ এটি ধাৰা ।
हिन्दी कविता की वह धारा जिसमें प्रकृति में चेतनता का दर्शन करते हुए उससे अखण्ड आत्मीय सम्बन्ध की स्थापना हो ।

छार—(सं पुं) ছাই, খাৰ, কলাখাৰ ।
राख । खारा नमक । वनस्पतियों या धातुओं की राख का नमक । धूल ।

छाल—[सं स्त्री] গছৰ বাকলি ।
वृक्ष का बल्कल ।

छाला— (सं पुं) মাখি ছাল ।
पानी फोला ।
ऊपरी छाल या चमड़ा । फफोला ।

छावनी— [सं स्त्री] ঘৰৰ চাল, সৈন্যৰ ছাউনি ।
छप्पर । पड़ाव । सैनिक पड़ाव या अड्डा ।

छि, छी— [अव्य] ছিঃ ছিঃ [ঘৃণা সূচক শব্দ]
घृणा तिरस्कार आदि सूचक शब्द ।

छिगुनी—(सं स्त्री) কেঞা আঙুলি
कनिष्ठिका उँगली ।

छिछला—[वि] তৰাং, অগভীৰ ।
कम गहरा । उथला ।

छिछोरा—(বি) ক্ষুদ্ৰ, সংকীৰ্ণ, লোভী।
क्षुद्र। ओछा। लालची।

छिटकना—(ক্রি অ) সিচঁৰতি হৈ থকা, ছিটিকি পৰা।
बिखरना।
(ক্রি স) সিচঁৰতি কৰি দিয়া।
बिखेरना।

छिड़कना—(ক্রি স) ছটিয়াই দিয়া।
पानी आदि के छींटे डालना।

छिड़काव—(সং পুং) ছিটিকনি, সিঞ্চন।
पानी आदि छिड़कने की क्रिया या भाव।

छिड़ना—(ক্রি অ) আৰম্ভ হোৱা।
आरम्भ होना।

छितराना—[ক্রি. অ] সিচঁৰিত হোৱা।
बिखरना।
(ক্রি স) বিয়পি পাই পেলোৱা।
फैलाना।

छिदना—[क्रि अ] ছিদ্ৰ কৰা, বিন্ধা কৰা, ফুটোৱা।
छेदा जाना। घायल होना। चुभना।

छिनकना—[ক্রি স] সেঙুন পেলোৱা।
जोर से सांस छोड़कर नाक साफ करना।

छिनाल—(বি) ব্যভিচাৰিণী, বেশ্যা।
व्यभिचारिणी। कुलटा। व्यभिचारी।

छिनाला—[सं पुं] ব্যভিচাৰ।
व्यभिचार।

छिपकली—(সং স্ত্ৰী) জেঠী।
छोटा गिरगिट। बिस्तुइया।

छिपना—(ক্রি অ) লুকাই থকা।
दिखाई न पड़ना।

छिपाना—(ক্রি स) লুকাই থোৱা।
गुप्त करना।

छिपाव—(सं पुं) লুকাই থোৱা কাৰ্য্য।
छिपाने की क्रिया या भाव।

छिलका—(সং পুং) বাকলি।
फल आदि का आवरण। ऊपरी परत।

छिलना-(ক্রি অ) বাকলি এৰোৱা।
छिलका अलग होना। ऊपरी चमड़ा उठ जाना।

छींक—[सं स्त्री] হাঁচি।
नाक में कुछ अटकने पर वायु का जोर से निकलने की क्रिया।

छींकना—(क्रि स) হাঁচি মৰা।
छींक निकालना ।

छींका—[सं पुं] শিকিয়া, মুখ-খৰা ।
सिकहर । बैलों के मुँहपर बंधा जानेवाला जाल ।

छींटा—[सं पुं] পানীৰ কণিকা, সাধাৰণ বৰষুণ, ব্যঙ্গ কথা ।
जल-कण । हलकी वृष्टि । व्यंगपूर्ण उक्ति । बूंद की तरह दाग ।

छीमी—[सं स्त्री] মটৰৰ ছেঁই।
मटर की फली ।

छीछालेदर—(सं स्त्री) দুৰ্দশা, লটি-ঘটি ।
दुर्दशा ।

छीजना—(क्रि अ) ঘহঁনি খাই ক্ষয় হোৱা ।
काम में आने या रगड़ खाने से वस्तु का कम होना ।

छीनना—(क्रि स) কাঢ়ি লোৱা।
जबर्दस्ती लेना । हरण करना ।

छीनाझपटी—[सं स्त्री] টনা আঁজোৰা ।
लीन कर लेने की क्रिया या भाव ।

छीपा—(सं पुं) বাঁহৰ ডাঙৰ মাৰি, গছৰ ডাল ।
बाँस आदिका बड़ा डला । थाली ।

छीर—[सं पुं] খীৰ, গাখীৰ, পানী ।
क्षीर । दूध । जल ।

छीलना—[क्रि स] বাকলি গুচোৱা ।
छिलका उतारना ।

छुआना—(क्रि स)স্পর্শ কৰোৱা।
छुलाना स्पर्श करवाना ।

छुट—[अव्य] বাহিৰে, বাজে ।
छोड़कर । सिवा ।

छुटकारा—(सं पुं)ৰেহাই, মুক্তি ।
रिहाई । छुट्टी ।

छुट्टा—[वि] মুকলি, অকল-শৰীয়া, খুচুৰা ।
जो बंधा न हो । अकेला । स्वतंत्र ।

छुट्टी—(सं स्त्री) ছুটি, আজৰি, বন্ধৰ দিন ।
छुटकारा । अवकाश । काम बन्द रहने का दिन ।

छुड़वाना—[क्रि स] এৰুৱা ।
छोड़ने में प्रवृत्त करना ।

छुड़ाना—[क्रि अ] সকৰাই অনা, পদচ্যুত কৰা, দিওঁতে কম কৰা ।
बंधन या उलझन से मुक्त करना । साफ करना । पद या अधिकार से अलग करना । कुछ देते समय उसमें कमी कराना ।

छुतहा—(वि) সংক্ৰামক ।
संक्रामक (रोग) ।

छुतिहा—[वि] সংক্ৰামক, অস্পৃশ্য ।
संक्रामक । अस्पृश्य ।

छुपना—[क्रि अ] লুকোৱা ।
छिपना ।

छुरा—(सं पुं) ডাঙৰ ছুৰী, খুৰ ।
बड़ी छुरी । उस्तरा ।

छुरी—(सं स्त्री) ছুৰী ।
चाकू ।

छुलाना, छुवाना—[क्रि स] স্পৰ্শ কৰা ।
स्पर्श कराना ।

छुहारा—(सं पुं) এবিধ ডাঙৰ খেজুৰ ।
एक प्रकार का खजूर ।

छू—[सं पुं]মন্ত্ৰ মাতি ফু মাৰোতে হোৱা শব্দ ।
मंत्र पढ़कर फूँ मारनेका शब्द ।

छूआ-छूत—(सं स्त्री) অস্পৃশ্যতা ।
अस्पृश्यता ।

छुई मुई—[सं स्त्री] লাজুকী-লতা ।
लज्जावती नामक पौधा ।

छूछा—(वि) শূণ্য, অসাৰ ।
खाली । निस्सार । निर्धन ।

छूट—(सं स्त्री) মুক্তি, ৰেহাই, ভুল কোনো কাৰণে পোৱা স্বাধীনতা ।
छुटकारा । गलती, चूक । किसी बात या कार्य की स्वतन्त्रता । रियासत ।

छूटना—(क्रि स) মুক্ত হোৱা, পৃথক হোৱা, অব্যাহতি পোৱা ।

मुक्त होना । अलग होना ।

छूत—(सं स्त्री) সংসৰ্গ, অস্পৃশ্য, সংসৰ্গ বা সোঁচৰা ৰোগ ।
स्पर्श । गन्दी वस्तु या रोग का संस्पर्श ।

छूना—(क्रि स) স্পৰ্শ হোৱা ।
स्पर्श होना ।
(क्रि स) স্পৰ্শ কৰা ।
स्पर्श करना ।

छेंकना— (क्रि. स) বোড় ধবা। আগচি ধবা।
स्थान घेरना। न जाने देना।

छेड़—(सं स्त्री) আমনি, চুপতা-চুপতি।
किसी को चिढ़ानेवाली बात। झगड़ा। कोई कार्य आरम्भ करना।

छेड़खानी, छेड़छाड़— (सं स्त्री) চুপতা-চুপতি। ভেঙুচালি।
किसी को छेड़ने या चिढ़ाने की क्रिया या भाव।

छेड़ना—(क्रि स) আমনি দিয়া। ঠাট্টা কবা।
तंग करना। विरोधी को चिढ़ाना। मजाक करना।

छेत्र—(सं पुं) ক্ষেত্র, পথাব।
क्षेत्र। खेत।

छेद— [सं पुं] ছেদন, বিনাশ, বিন্ধা, দোষ।
छेदन। विनाश। छिद्र। बिल। दोष।

छेदना—(क्रि सं) বিন্ধা কবা, ঘা কবা, কটা।
छेद करना। घाव कर देना। काटना।

छेना—(सं पुं) ছেনা।
फाड़ा गया दूध जिससे पानी निकाल कर मिठाइयाँ बनती है।

छेनी— [सं स्त्री] শিল, লো, আদি কাটিবৰ অস্ত্র।
पत्थर, लोहा आदि काटनेका एक औजार।

छेरी—(सं स्त्री) ছাগলী।
बकरी।

छेव—(सं पुं) খুন-জখম।
क्षत। नाश। जोखिम।

छेह—(सं पुं) ধ্বংশ, বিয়োগ, অন্ত।
ध्वंस। वियोग। अन्त।

छैल, छैल-चिकनिया, छैल छबीला, छैला—(सं पुं) আটক ধুনীয়া লোক।
बना ठना सुन्दर युवक।

छैलाना— (क्रि अ) বাল-সুলভ ব্যৱহাৰ কবা।
लड़कों का कोई चीज लेने के लिये हठ करना।

छोकरा, छोकड़ा—(सं पुं) ল'বা।
लड़का।

छोकरी, छोकड़ी— (सं स्त्री) ছোৱালী।
लड़की।

छोटा-- (वि) সৰু ।
क्षुद्र । आकार में कम । उम्रमें कम ।

छोड़ना--(क्रि स) এৰি দিয়া । পৰিত্যাগ কৰা । বন্দুক মৰা আদি
बंधन से मुक्त करना । परित्याग करना । न लेना । चल पड़ना । गोला दागना ।

छोड़वाना, छोड़ाना--[क्रि स] মুক্ত কৰোৱা । পৰিত্যাগ কৰোৱা । বন্দুক আদি মৰোৱা ।
मुक्त करवाना । परित्याग करवाना । गोला दगवाना ।

छोपना--[क्रि स] ডাঠ বস্তুৰ প্ৰলেপ দিয়া ।
गाढ़ा वस्तु लेप करना ।

छोभना-- [क्रि अ] ক্ষুব্ধ বা ক্ৰুদ্ধ হোৱা ।
क्षुब्ध होना ।
(क्रि स) খং তোলা ।
क्षुब्ध करना ।

छोर--(सं पुं) পাৰ, মূৰ, ঢাঙি ।
सिरा । किनारा । नोक ।

छोरा-छोरी-- (सं स्त्री) টনা-আঁজোৰা ।
छीना-झपटी ।

छोह--(सं पुं) প্ৰেম, দয়া ।
प्रेम । दया ।

छौंकना--[क्रि स] তেলনি মৰা । সম্ভাৰ দিয়া ।
तेल आदि से बधारना ।
[क्रि अ] আক্ৰমণ হেতু জপিয়াই পৰা ।
वार करने के लिये झपटना ।

छौना--(सं पुं) জন্তুৰ পোৱালি ।
पशु का बच्चा ।

छौलदारी--(सं स्त्री) একবিধ সৰু তম্বু ।
एक प्रकार का छोटा तम्बु ।

छौर-- (सं पुं) ক্ষৌৰ-কৰ্ম্ম, মুণ্ডন ।
क्षौर क्रिया । मुण्डन ।

ज

ज—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ অষ্টম আখৰ।
च वर्ग का तीसरा अक्षर।

जंग—[सं स्त्री] যুদ্ধ।
युद्ध।
(सं पुं) মামৰ।
लोहे का मुरचा।

जंगम—(वि) অস্থাৱৰ, চৰ।
चलने फिरनेवाला।

जंगला—(सं पुं) খিড়িকী।
खिड़की।

जंगली—(वि) বনৰীয়া।
जंगलमें रहनेवाला या होनेवाला।
जिसमें जंगल हो।

जंगी-(वि) যুদ্ধ সম্বন্ধীয়, সামৰিক।
लड़ाई से सम्बन्ध रखनेवाला।
फौजी।

जंघा—(सं स्त्री) কৰঙণ।
जाँघ।

जँचना—(क्रि अ) নিৰীক্ষণ কৰা, মনত লগা।
जाँचा जाना। अच्छा लगना।

जंजाली—(वि) আহুকলীয়া।
झंझट उत्पन्न करनेवाला।

जंजीर—[सं स्त्री] শিকলি।
कड़ियों की लड़ी, बेड़ी, सिकड़ी।

जंतर—[सं पुं] যন্ত্ৰ, তাবিজ।
यन्त्र। गले या हाथ में पहनने का पीतल आदि की छोटी सी डिब्बी जिसमें तांत्रिक विधि की कोई चीज भरी रहती हो।

जंतर-मंतर—(सं पुं) যন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ, যাদুবিদ্যা।
यन्त्र-मन्त्र। जादू-टोना। वेध-शाला।

जँतरी—(सं स्त्री) সোণাৰিৰ এবিধ অস্ত্ৰ, পঞ্জিকা।
पतला तार खींचने का औजार।
पंचाग।

जँतसार—(सं पुं) জাঁত থকা ঠাই।
वह स्थान जहाँ जाँता गड़ा रहता है।

जंद—(सं पुं) পাৰচী ধৰ্ম্ম গ্ৰন্থ ।
पारसियों का धर्म ग्रन्थ ।

जंबु, जंबू—(सं पुं) জামু ।
जामुन ।

जंबुक—(सं पु) ডাঙৰ জামু, শিয়াল ।
बड़ा जामुन । शृगाल ।

जंबूरा—[सं पु] এবিধ হিলৈ, এবিধ অস্ত্ৰ ।
एक प्रकार की छोटी तोप । चिमटी की तरह का एक औजार ।

जँभाई—(सं स्त्री) হামি ।
उबासी ।

जँभाना—(क्रि अ) হামিয়া ।
जँभाई लेना ।

जई—(सं स्त्री) যৱ ধান ।
जौ की तरह का एक पौधा ।

जकड़—[सं स्त्री] টানি বন্ধা কাৰ্য্য ।
जकड़ने की क्रिया या भाव ।

जकड़ना [क्रि स] টানি বন্ধা ।
कसकर बाँधना या पकड़ना ।
(क्रि अ) জঠৰ হোৱা ।
अंगों में तनाव होना ।

जकात—(सं स्त्री) দান, কৰ ।
दान । कर ।

जखमी—(वि) আহত ।
घायल ।

जखीरा—(सं पुं) সমূহ, যথেষ্ট ।
ढेर । समूह ।

जग—(सं पुं) জগত ।
संसार ।
(वि) জাগ্ৰত ।
जाग्रत ।

जगत—(सं पुं) সংসাৰ, পৃথিৱী ।
संसार ।
(सं स्त्री) নাদৰ ওপৰৰ চাল ।
कुएँ के ऊपर का चबूतरा ।

जगना—[क्रि अ] সাৰ পোৱা, সাৱধান হোৱা, চক্ খাই উঠা ।
जागना । सावधान होना । चमकना ।

जगमग (ा)—(वि) জক-মকীয়া
चमकीला ।

जगमगाना—(क्रि वि) জক-মক কৰা ।
खूब चमकना ।

जगह—(सं स्त्री) ঠাই, সুবিধা, পদ ।
स्थान । मौका । पद ।

जगाना—(क्रि. स) জগোৱা, জগাই দিয়া।
जाग्रत करना।

जघन—(सं पुं) নিতম্ব, তলপেট।
पेडू। चूतड़।

जच्चा—(सं स्त्री) প্ৰসূতি।
प्रसूता स्त्री।

जजिया –[सं पुं] দণ্ড, জিজিয়া কৰ।
दण्ड। मुसलमानी राज में अन्य धर्मावलम्बियों पर लगानेवाला एक प्रकार का कर।

जटना—[क्रि अ] ঠগোৱা।
ठगना।
(क्रि स) বাখৰ খটোৱা, খচিত কৰা।
जड़ना।

जठर—(सं पुं) পেট।
पेट का भीतरी भाग।
[वि] বুঢ়া, কঠিন।
बूढ़ा। कठिन।

जठराग्नि—(सं स्त्री) পেটৰ খাদ্য বস্তু জীর্ণ কৰা শক্তি।
पेट की अन्न पचानेवाली गरमी।

जड़कना—[क्रि अ] স্তব্ধ হোৱা।
स्तब्ध हो जाना।

जड़ना—(क्रि स) খচিত কৰা।
एक चीज में दूसरी चीज इस तरह बैठाना जिससे वह जल्दी उखड़ या निकल न सके। मारना। चुगली खाना।

जड़ाई—(सं स्त्री) খচিত কৰা বাবদ বানচ।
जड़ने की मजदूरी।

जड़ाऊ—(वि) বাখৰ বা ৰত্ন খচিত
जिसपर नगीने या रत्न जड़े हों।

जड़ी— (सं स्त्री) দৰবত ব্যৱহৃত লতা, শিপা আদি।
वनस्पति की वह जड़ जो औषधि के काम आती हो।

जड़ीभूत—(वि) অচেতন হোৱা, ঠেৰেঙা লগা।
जो जड़के समान हो गया हो।

जड़ैया—[सं स्त्री] মেলেৰীয়া। কঁপি কঁপি উঠা জ্বৰ।
शीत लगकर आनेवाला बुखार। मलेरिया।

जतलाना, जताना—(क्रि स) কোৱা, জনাই থোৱা।
बतलाना। पहले से सूचना देना।

जत्था—(सं पुं) সম্প্ৰদায়, দল।
मनुष्यों का झुण्ड। दल।

जनुराई (य)—(सं पुं) श्रीकৃষ্ণ।
श्रीकृष्ण।

जनखा—(वि) নপুংসক।
नपुंसक।

जनना—(क्रि स) জন্ম দিয়া।
जन्म देना।

जनमना—(क्रि स) জন্ম লোৱা।
जन्म लेना।

जनम-संघाती—(सं पुं) জন্মসঙ্গী।
जन्म साथी।

जनवासा—(सं पुं) অতিথিশালা।
लोगोंके या बरातियों के ठहरने या टिकने का स्थान।

जनस्थान—(सं पुं) দণ্ডকাৰণ্য, বসতি ভূমি।
दण्डकारण्य। मनुष्यों का निवास स्थान।

जनाजा—[सं पुं] মৰা শ নিয়া চাঙী।
अरथी। शवाधार।

जनानखाना—(सं पुं) অন্তেষপুৰ।
अन्तःपुर।

जनाना—(क्रि स) প্ৰসৱ কৰোৱা, জাননী দিয়া।
सन्तान प्रसव कराना। सूचना देना।
(वि) স্ত্ৰী সম্বন্ধীয়।
स्त्री-सम्बन्धी।
(सं पुं) নপুংসক, অন্তেষপুৰ, পত্নী।
नपुंसक। अन्तःपुर। पत्नी

जनाब—(सं पुं) মহোদয়।
महोदय।

जनु—(क्रि वि) যেন।
मानो।

जनून— (सं पुं) পাগলামি, উন্মাদনা।
पागलपत। उन्माद।

जनेऊ—(सं पुं) লগুণ।
यज्ञोपवीत।

जन्म-कुंडली, जन्म पत्री–(सं स्त्री) জন্মপত্ৰ, কোষ্ঠি।
जन्म के समय ग्रहों की स्थिति सूचक चक्र।

जन्म पंजी–[सं स्त्री] জন্ম সংখ্যাৰ হিচাপ-বহী।
जन्म का हिसाब दर्ज करने की पंजी।

जन्म सिद्ध–(वि)প্ৰাকৃতিক, জন্ম-মাত্ৰে প্ৰাপ্য। जन्म मात्र में प्राप्त।

जन्य—(सं पुं) ৰাষ্ট্ৰ, জন-সাধাৰণ।
राष्ट्र। साधारण मनुष्य।
(वि) ৰাষ্ট্ৰীয়, জনসাধাৰণ-সম্পৰ্কীয়।

जनसम्बन्धी। राष्ट्रीय। किसीसे उद्भूत।

जपना—(क्रि स) জপ কৰা। जप करना।

जपनी—(सं स्त्री) জপ মালা। जपमाला

जपा—(सं स्त्री) জবা ফুল। अड़हुल ।
(सं पुं) জপ–কৰোঁতা। जपनेवाला।

जब—(क्रि वि) যেতিয়া । जिस समय।

जबड़ा—(सं पुं) দাঁতৰ আলু। मुंह में ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिसमें दाँत लगे रहते हैं।

जबरदस्त—(वि) বলৱান, মজবুত बलवान। मजबूत।

जबरदस्ती— (सं स्त्री) জোৰ-পূৰ্ব্বক কৰা কাম। বলৎকাৰ। बलप्रयोग। अत्याचार।
(क्रि वि) জোৰ পূৰ্বক। बलप्रयोग करते हुए।

जबह—(सं पुं) হালাল। गला काटकर प्राण लेनेकी क्रिया।

जबान— (सं स्त्री) জিভা, কথা, ভাষা। जीभ। बात। भाषा।

जबान दराज—(वि) কথকী, কথাৰ চহকী। बढ़ चढ़कर बातें करनेवाला।

जबानी— [वि] মৌখিক। मौखिक।

जब्त—(वि) বাজেয়াপ্ত, আটক। सरकार द्वारा छीना हुआ।

जब्ती—[सं स्त्री] বাজেয়াপ্ত কৰা কাৰ্য্য। जब्त होने की क्रिया या भाव।

जभी— [क्रि वि] যেতিয়াই। जिस समय ही। ज्योंही।

जमघट— (सं पुं) মানুহৰ সমাগম, লোকাৰণ্য। मनुष्यों की भीड़-भाड़।

जमना—[क्रि अ]গোট মৰা। গোট খোৱা, সুকলমে সমাধা হোৱা। तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। स्थिर या निश्चल होना। जमा होना। काम अच्छी तरह सम्पन्न होना।
[क्रि अ] অঙ্কুৰিত হোৱা। उगना। उपजना।

जमाई— (सं पुं) জোৱাই। दामाद।
[सं स्त्री] গোট মৰোৱা কাৰ্য্য

বা পাৰিশ্ৰমিক ।

जमाने की क्रिया या मजदूरी ।

जमात— [सं स्त्री] জন-সমূহ, শ্ৰেণী ।

मनुष्यों का समूह । श्रेणी ।

जमानत [सं स्त्री] জামিন ।

जामिन होने की क्रिया या धन ।

जमाना—[क्रि स] জমোৱা, গোট-মৰোৱা ।

'जमना' का प्रेरणार्थक ।

(सं पुं) সময়, কাল, যুগ ।

समय । काल । मुद्दत । गौरव के दिन ।

जमीन— [सं स्त्री] মাটি ।

पृथ्वी । भूमि । आधार पृष्ठ ।

जमुहाना— [क्रि अ] হামিয়া ।

जम्हाई लेना ।

जमोगना [क्रि स] আয়-ব্যয় নিৰীক্ষণ কৰা ।

आय व्यय की जाँच करना ।

जमौआ (वि) সূতা বা উলৰ (কম্বল বিশেষ)

सूत या ऊन जमाकर बनाया हुआ [कम्बल आदि ।]

जम्हाना—[क्रि स] হামিয়া ।

जम्हाई लेना ।

जयमाल— [सं स्त्री] জয় মাল্য, বৰ-মাল্য ।

विजय माला ।

जरठ—(वि) কঠোৰ, বুঢ়া, পুৰণি

कठोर । बुड्ढा । पुराना ।

जरद, जर्द— (वि) হালধীয়া ।

पीला । पीत ।

जरब— (सं स्त्री) আঘাত, ঘা গুণ ।

आघात । चोट । गुणा ।

जरबीला—(वि) ধুনীয়া, সুঠাম ।

भड़कीला ।

जरर—(सं पुं) হানি ।

हानि । आघात ।

जरा—(सं स्त्री) বুঢ়া-কাল ।

बुढ़ापा ।

[वि] অলপ ।

थोड़ा । कम ।

जरूरत—[सं स्त्री] আৱশ্যকতা ।

आवश्यकता ।

जर्जर (वि) জৰ্জৰিত, জীৰ্ণ, বৃদ্ধ ।

जीर्ण । खण्डित । वृद्ध ।

जल-कर—(सं पं) পানীত উৎপন্ন বস্তুৰ ওপৰত লগোৱা কৰ ।

पानीमें उत्पन्न होनेवाले वस्तुओं पर का कर ।

जल-डमरू मध्य—(सं पुं) प्रणाली ।
दो समुद्रों या खा : के बीच की प्रणाली ।

जलतरंग—(सं पुं) এবিধ বাদ্য যন্ত্র ।
एक प्रकार का बाजा ।

जलद-(सं पुं) মেঘ । মৃতাত্মাৰ জলদান ক্রিয়া কৰোঁতা বংশজ।
मेघ । वाला वंशज ।

जलधि, जलनिधि—(सं पुं) সাগৰ ।
समुद्र ।

जलन-(सं पुं) দাহ, পোৰণি ।
दाह । ईर्ष्या के कारण मानसिक कष्ट ।

जलना—[क्रि अ] দগ্ধ হোৱা, ঈৰ্ষান্বিত হোৱা ।
दग्ध होना । अग्निमे अंग झुलस जाना । ईर्ष्या के कारण मनमें दुखी होना ।

जलपना-[क्रि अ] বক্ বক্ কৰা ।
बकवाद करना ।

जलमार्ग—(सं पु) জল পথ ।
नदियों, नहरों आदि के रूपमें बना हुआ रास्ता ।

जलयान—(सं पुं) নাও, জাহাজ আদি ।
जलमें चलनेवाला यान ।

जलवाना-[क्रि स] দগ্ধ কৰোৱা ।
दग्ध करवाना ।

जल विहार—(सं पुं) জল-কেলি ।
जल क्रीड़ा ।

जल-समाधि—(सं स्त्री) পানীত ডুবি মৰা ।
पानी में डूबकर मर जाना ।

जलसा—(सं पुं) বিচিত্ৰানুষ্ঠান ।
गाने बजाने का समारोह । सभा-समिति का बड़ा अधिवेशन ।

जलसाई—(सं पुं) শ্মশান ।
श्मशान ।

जलसेना—(सं स्त्री) নৌ-সেনা ।
समुद्र में जहाजों पर से लड़ने वाली फौज ।

जलांक—[सं पुं] কাগজত পানীৰে অঙ্কিত বিশেষ প্ৰকাৰৰ চিত্ৰ ।
जलकी सहायता से कागज पर बनाया विशिष्ट प्रकार का चिह्न या अंकन ।

जलातंक—[सं पुं] जल तौति। बलिया कुकुर, শিয়াল আদিয়ে খোৱাৰ পৰা হোৱা ৰোগ।
पानी देखकर डर लगनेवाली बीमारी जो कुत्तेके काटने से होती है।

जलाना—[क्रि स] দগ্ধ কৰা। প্ৰজ্বলিত কৰা, ঈৰ্ষা জন্মোৱা।
दग्ध करना। प्रज्वलित करना। मनमें सन्ताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलावन—[सं पुं] খৰি।
ईंधन।

जलावर्त—[सं पुं] পানীৰ চাকনৈয়া।
पानी का भँवर। नाल।

जलूस, जुलूस—[सं पुं] শোভাযাত্ৰা।
शोभा यात्रा।

जलेबी—(सं स्त्री) জিলাপি।
एक प्रकार की मिठाई। कुंडली।

जलोदर—[सं पुं] শোথ, এবিধ পেটৰ বেমাৰ।
पेट की एक बीमारी।

जलौका—[सं पुं] জোক।
जोंक।

जल्द, जल्दी—(सं पुं) ততাতৈয়া।
शीघ्रता।
(क्रि वि.) সোণকালে, ততাতৈয়াকৈ।
शीघ्र। तेजीसे।

जल्प—(सं पुं) কথকী, কথাচহকী।
बहुत अधिक बोलना। बकवाद। प्रलाप।

जवान—(वि) যুৱক, বীৰ।
युवा। वीर।

जवानी—[सं स्त्री] যৌবন।
यौवन।

जवाब—(सं पुं) উত্তৰ, তুলনা, চাকৰি যোৱাৰ আজ্ঞা।
उत्तर। तुलना। जोड़।

जवाबदेह—(वि) উত্তৰদায়ী।
उत्तरदायी। जिम्मेदार।

जवाबी—[वि] প্ৰত্যুত্তৰ।
जवाब का।

जवारा—(सं पुं) যৱধানৰ গঁজালি।
जौ के नये निकले अंकुर।

जवाल—(सं पुं) অৱনতি, জঞ্জাল।
अवनति। जंजाल। झंझट।

जवाहर—(सं पुं) ৰত্ন, মণি ।
रत्न । मणि ।

जवाहरात—[सं पुं] ৰত্নৰাজি ।
रत्नों का समूह ।

जशन—(सं पुं) বিচিত্ৰানুষ্ঠান ।
नृत्य गीत का समारोह । जलसा ।

जसोदा—(सं स्त्री) যশোদা, নন্দ ৰজাৰ পত্নী ।
यशोदा ।

जँह, जहाँ—(क्रि वि) যত, যি ঠাইত ।
जिस स्थानपर । जिस जगह ।

जहँड़ना—[क्रि अ] লোকচান হোৱা । ঠগ খোৱা ।
घाटा उठाना । ठगा जाना ।
[क्रि स] ঠগোৱা, ফাঁকি দিয়া ।
धोखा देना । ठगना ।

जहतिया—[सं पुं] কৰ আদায় কৰোঁতা ।
जगात या कर वसूल करनेवाला ।

जहन्नुम—[सं पुं] নৰক ।
नरक ।

जहमत—[सं स्त्री] বিপদ, বিলৈ ।
मुसीबत । झंझट ।

जहर—(सं स्त्री) বিষ ।
विष । बहुत अधिक अप्रिय बात या काम ।
(वि) ঘাতক, হানিকাৰক ।
घातक । बहुत हानि पहुँचानेवाला ।

जहरबाद—(सं पुं) কোঁহোৰা ।
एक तरह का फोड़ा ।

जहरी (ला)—(वि) বিষাক্ত ।
विषैला ।

जहाजी—(वि) জাহাজ সম্বন্ধীয় ।
जहाज सम्बन्धी ।

जहाद, जिहाद—[वि.] ধৰ্ম্ম যুদ্ধ ।
धर्मयुद्ध ।

जहान—[सं पुं] সংসাৰ ।
संसार ।

जहीं—(अ व्य) য'তেই ।
वहीं ही ।

जाँगर—[सं पुं] শাৰীৰিক শক্তি ।
शरीर का बल, बूता ।

जाँघ—(सं स्त्री) কৰঙণ ।
जंघा । रान ।

जाँघिया—[सं पुं] জাঙিয়া ।
काछा । पैंट ।

जाँच—(सं स्त्री) পৰীক্ষা, নিৰীক্ষণ, অনুসন্ধান ।
जाँचने की क्रिया या भाव ।
अनुसन्धान । परीक्षा । छानबीन ।

जाँचक—[सं पुं] পৰীক্ষক ।
जांच या परीक्षा करनेवाला ।

जाँचना-(क्रि स) পৰীক্ষা কৰা ।
ভিক্ষা কৰা ।
परीक्षा करना । मांगना ।

जाँता—[सं पुं] জাত ।
आटा पीसने की बड़ी चक्की ।

जा—[सं स्त्री] জা । देवरानी ।
(वि) উৎপন্ন, সম্ভূত, লাভ-দায়ক ।
उत्पन्न । संभूत । मुनासिब ।
(सर्व) যি ।
जिस ।

जाग—[सं पुं] যজ্ঞ ।
यज्ञ ।
(सं स्त्री) ঠাই, জাগৰণ ।
जगह् । जागने की क्रिया या भाव । जागरण ।

जागना—[क्रि अ] জাগ্ৰত হোৱা, সজাগ হোৱা ।
जाग्रत होना । सजग या सावधान होना ।

जाजिम—[सं स्त्री] ফুলাম দলিচা ।
फर्श पर बिछानेकी छपी चादर ।

जाट—[सं पुं] এটা জাতি ।
एक जाति ।

जाठ—(सं पुं) কুঁহিয়াৰ শাল আদিৰ মোটা কাঠৰ চকৰি ; পুখুৰীৰ মাজত পোতা ডাঙৰ খুঁটা ।
वह मोटा डंडा जो कोल्हू की कूँड़ी में लगा रहता है । तालाबके बीच गड़ा हुआ मोटा डंडा ।

जाड़ा—[सं पुं] জাৰকালি জাৰ ।
शीतकाल । शीत ।

जातक— [सं पुं] শিশু, বুদ্ধ-জাতক ।
बच्चा । बुद्धदेव के पूर्व जन्म सम्बन्धी कथाएँ ।

जात-पाँत, जाति पाँति-[सं स्त्री]
জাতিভেদ ।
जाति भेद ।

जातरूप—[सं पुं] সোণ ।
सोना ।

जाती—[सं स्त्री] এবিধ ফুল ।
एक तरह का चमेली फूल ।
(वि) ব্যক্তিগত ।
व्यक्तिगत ।

जातुधान—(सं पुं) ৰাক্ষস ।
राक्षस ।

जाद्दा—[वि] সন্তান ৰূপে জন্মা ।
सन्तान के रूपमें उत्पन्न ।

जादूगर—(सं पुं) যাদুকৰ ।
वह जो जादूके खेल करता हो ।

जादूगरी— (सं स्त्री) যাদুকৰৰ বিদ্যা।
जादूगर का काम या उसकी वृत्ति।

जान— (सं स्त्री) জীৱন, জ্ঞান, পৰিচয়, সাৰ-পদাৰ্থ ।
ज्ञान । परिचय । प्राण । सार, तत्व ।

जानकार—[वि] জ্ঞাতা, বিজ্ঞ ।
जाननेवाला । विज्ञ ।

जानदार— [वि] সজীৱ, বলবান।
जिसमें जान हो । बलवान ।

जानना— (क्रि स) জনা, বুজা।
ज्ञान प्राप्त करना । समझना ।

जानवर—(सं पुं) প্ৰাণী, পশু ।
प्राणी । पशु ।

जानहु—[अव्य] যেন ।
मानो ।

जाना— (क्रि अ) যোৱা, লুপ্ত হোৱা ।
गमन करना । गायब होना । नष्ट होना ।
[क्रि स] জন্ম দিয়া ।
जन्म देना ।

जानी—[वि] প্ৰাণৰ। জীৱনৰ লগত সম্বন্ধ ৰাখোঁতা।
जान का । जान से सम्बन्ध रखनेवाला ।

जानु—(सं पुं) আঁঠু, কৰঙণ ।
घुटना । जांघ ।

जापी—(सं पुं) জপোঁতা ।
जपनेवाला ।

जाब्ता—(सं पुं) নিয়ম, কায়দা-কৌশল ।
नियम । कायदा ।

जाम—[सं पुं] প্ৰহৰ, পিয়লা, জামু ।
प्रहर । प्याला । एक प्रकार का फल ।
(वि) গোট মৰা, গেদ পৰা ।
जमा हुआ । भीड़ के कारण बंद ।
मैल आदि के कारण दृढ़तापूर्वक जमा हुआ ।

जामा—(सं पुं) পোচাক, শৰীৰ ।
पोशाक । शरीर ।

जामाता—(सं पुं) জোঁৱাই ।
दामाद ।

जामुन—(सं पुं) জামু ।
बैंगनी या काला रंग का एक प्रकार का फल ।

जायका—(सं पुं) সোৱাদ ।
स्वाद ।

जायज—[वि] উচিত ।
उचित । मुनासिब ।

জাৱজা—(সং পুং) সূক্ষ্ম পৰীক্ষা। উপস্থিতি।
जांच पड़ताल। हाजिरी।

জায়দাদ—[সং স্ত্ৰী] সম্পত্তি।
सम्पत्ति।

জায়া—(সং স্ত্ৰী) পত্নী।
पत्नी।
(সং পুং) পুত্ৰ।
बेटा।

জাৰ—[সং পুং] পৰ-স্ত্ৰীৰ লগত অনুচিত সম্বন্ধ ৰাখোঁতা।
पर स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखनेवाला पुरुष।

জাৰজ—(সং পুং) অহবা সন্তান।
पर पुरुष से उत्पन्न सन्तान।

জাৰণ—(সং পুং) জলোৱা।
जलाना।

জাৰন—(সং পুং) খৰি।
जलाने की लकड़ी। इंधन।

জাৰী—[বি] প্ৰবাহিত, প্ৰচলিত।
बहता हुआ। प्रचलित। चलता हुआ।
(সং স্ত্ৰী) দুশ্চৰিত্ৰা স্ত্ৰী।
दुश्चरित्रा स्त्री।

জালসাজ, জালিয়া— [সং পুং] প্ৰবঞ্চক, জাল।
धोखा देने के लिये झूठी कार्रवाई करनेवाला।

জাল-সাজী—(সং স্ত্ৰী) প্ৰবঞ্চনা কৰাৰ চেষ্টা।
धोखा देने के लिये झूठी कार्रवाई करना या लेख तैयार करना।

জালা—[সং পুং] মকৰাৰ জাল। কুত জাল বন্ধা। মাটিৰ ডাঙৰ কলহ
मकड़ी का जाल। आँख का एक रोग। पानी रखने का मिट्टी का बड़ा घड़ा।

জালিম—[বি] অত্যাচাৰী।
जुल्म या अत्याचार करनेवाला।

জালী—(সং স্ত্ৰী) জালী।
जाल जैसा छेदवाला कपड़ा या चीज।
[বি] নকলী, ভেজাল।
नकली। बनावटी।

জাসু—(বি) যাক।
जिसको।

জাসুস—(সং পুং) গুপ্তচৰ।
गुप्तचर।

জাসুসী— (সং স্ত্ৰী) গুপ্তচৰৰ কাম।
जासूस का काम या भाव।
(বি) গুপ্তচৰ সম্বন্ধীয়।
जासूस का। जासूस सम्बन्धी।

जाहिर-(वि) প্রকাশিত, প্রচাবিত।
प्रकट। स्पष्ट। विदित। प्रसिद्ध।

जाहिरा—[क्रि वि] প্রকাশ্যে।
प्रकट रूपसे। प्रत्यक्ष में।

जाहिरी—[वि] প্রত্যক্ষ, প্রকট।
प्रकट।

जाहिल—[वि] মূর্খ, অজ্ঞান।
मूर्ख। अनपढ़।

जिंदगानी, जिंदगी—[सं स्त्री]
জীবন।
जीवन। आयु।

जिंदा—(वि) জীবিত।
जीवित।

जिंदा-दिल—(वि) বঙিয়াল, বাংঢালী।
सदा प्रसन्न रहने और हँसने-हँसानेवाला।

जिअरा, जियरा—(सं पुं)
হৃদয়, অন্তৰ।
हृदय। प्राण।

जिउतिया, जिताष्टमी—(सं स्त्री)
এক ব্ৰত।
एक व्रत।

जिक्र—[सं पुं] উল্লেখ।
चर्चा।

जिगर—[सं पुं] কলিজা, সাহস।
कलेजा। चित्त। साहस।

जिगरी—[वि] আন্তৰিক, নলে-গলে লগা।
आन्तरिक। अभिन्न। हृदय।

जिच (च)—[सं स्त्री] নিৰুপায় অৱস্থা।
बेबसी। समझौते का मार्ग बन्द होना।
[वि] নিৰুপায়।
विवश। मजबूर।

जितना—(वि) যিমান।
जिस मात्रा या परिमाण का।
(क्रि वि) যিমানকৈ।
जिस मात्रा या परिमाण में।

जिद्दी—(वि) জঁাকোৰ-গোঁজা, ডেমাকি।
हठी। दुराग्रही।

जिधर-(क्रि वि) যিফালে।
जिस ओर। जिस तरफ।

जिन—(वि, सर्व) যি বিলাক।
'जिस' का बहु वचन।
(सं पुं) জৈন ধৰ্মৰ তীৰ্থঙ্কৰ, বুদ্ধ, বিষ্ণু, ভূতপ্ৰেত।

जैनों के तीर्थंकर। विष्णु। बुद्ध।
भूत, प्रेत।

जिनिस, जिन्स—[सं स्त्री] প্রকার, বস্তু, শস্য।
प्रकार। चीज। सामान। अनाज।

जिप्सी—(सं पुं) এটা জাতি।
एक यायावर जाति।

जिमाना—(क्रि स) ভোজন কৰোৱা।
भोजन कराना।

जिमि—(क्रि वि) যেনেকৈ।
जैसे।

जिम्मा—(सं पुं) দায়িত্ব, চোৱা-মেলা।
दायित्व। देख-रेख। संरक्षा।

जिम्मेदार [वार]-[सं पुं] উত্তৰদায়ী।
उत्तरदायी।

जियान-[सं पुं] হানি, লোকচান।
हानि। नुकसान।

जियारी—(सं स्त्री) জীৱন, জীৱিকা।
जिन्दगी। जीविका। वृत्ति।

जिरह—[सं स्त्री] জেৰা, কবচ।
हुज्जत। सत्यता की जांच के लिये की जानेवाली पूछ-ताछ।
कवच। बख्तर।

जिलाना—[क्रि स] জীৱিত কৰা।
जीवित करना। पालन।

जिल्द—(सं स्त्री) বকলা, কিতাপৰ খণ্ড।
चमड़ा। पुस्तकका मोटा आवरण। पुस्तकका भाग या खण्ड।

जिल्द-बंद—(सं पुं) দপ্তৰী।
पुस्तकों का जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्लत—(सं स्त्री) অপমান, দুৰ্দশা।
अपमान। दुर्दशा।

जिस—(वि, सर्व) যি।
'जो' का विभक्ति युक्त रूप।

जिस्म—(सं पुं) শৰীৰ।
शरीर।

जिहाद—(सं पुं) ধৰ্ম-যুদ্ধ।
धर्म युद्ध।

जिह्वा—(सं स्त्री) জিভা।
जीभ।

जी—(सं पुं) মন, হৃদয়, সাহস, সঙ্কল্প।
मन। दिल। हिम्मत। संकल्प।
(अव्य) মহাশয়।
आदर सूचक शब्द।

मुहा०—अच्छा होना—শৰীৰ সুস্থ হোৱা।
शरीर स्वस्थ होना।

-खट्टा होना—বিৰক্তি ভাব জন্মা।
मन में विरक्ति होना।

-चलना—ইচ্ছা হোৱা।
इच्छा होना।

-दुखना—মনত কষ্ট পোৱা।
मनमें कष्ट होना।

-भरना—সন্তোষ পোৱা, হেপাহ পলোৱা।
संतोष होना।

जीजा—(सं पुं) ভিনিহী।
बड़ी बहन का पति।

जीजी—(सं स्त्री) বাইদেউ।
बड़ी बहन।

जीत—[सं स्त्री] বিজয়, লাভ।
विजय। लाभ।

जीतना—(क्रि स) জয়লাভ কৰা।
विजय प्राप्त करना। प्रतियोगिता में विजयी होना।

जीता—(वि) জীৱিত। जीवित।

जीन—(सं स्त्री) ঘোঁৰাৰ জীন। মোটা কাপোৰ।
घोड़े की पीठ पर की गद्दी। एक प्रकारका मोटा सूती कपड़ा।

जीना—(क्रि अ) জীয়াই থকা।
जीवित रहना।

जीभ—(सं स्त्री) জিভা।
जिह्वा।

मु०—चलना—সোৱাদ চাবৰ ইচ্ছা হোৱা, কথা সজাই-পৰাই কোৱা।
स्वाद लेने की इच्छा होना। बढ़ चढ़ कर बातें निकलना।

-हिलाना—কৈ পেলোৱা।
मुँह से कुछ कहना।

-पकड़ना—মুখ চম্ভালি কথা কোৱা।
बोलने न देना।

जीमना—(क्रि स) ভোজন কৰা।
भोजन करना।

जीवट—(सं पुं) সাহস।
साहस। हिम्मत।

जीवधारी—[सं पुं] প্ৰাণী।
प्राणी।

जीवन-बूटी, जीवन मूरी—(सं स्त्री) মৃত সঞ্জীৱনী।
संजीवनी।

जीवनोपाय—(सं पुं) জীৱিকাৰ উপায়।
आजीविका।

জীবন্মুক্ত—(বি) সংসারব বন্ধনব পবা মুক্ত।
आत्मज्ञान होने के कारण संसार-बन्धनों से मुक्त।

জীবন্মৃত—(বি) জীৱিত যদিও মৃতকব সমান।
जीवित रहने पर भी मरे के समान।

जीवावशेष, जीवाश्म—[सं पुं] প্রাণীৰ প্রস্তরীভূত অঙ্গ বিশেষ।
जमीन के अन्दर प्राचीन युग के प्राणियों के अवशेष।

जीवी—(वि) কিবা ব্যৱসায় কবি জীয়াই থাকোঁতা- কৃষিজীৱী, চাকবি-জীৱী।
किसी जीविका से अन्न संस्थान करनेवाला। प्राणधारी।

जुकाम—(सं पुं)পানী লগা অসুখ।
सरदी।

जुग—(सं पुं) যোবা, যুগ বা কাল।
जोड़ा। युग।

जुग जुग—(क्रि वि) কেবা যুগলৈ, চিবকাললৈ।
अनेक युगों तक। चिरकाल तक।

जुगजुगाना—(क्रि अ) চিমিক-চামাক কবা।
टिम टिमाना। उभरना।

जुगत—[सं स्त्री] যুগুত, সুপবামর্শ।
बन्धी युक्ति।

जुगती—[सं पुं] পবামর্শদাতা, চতুৰ।
युक्तियाँ निकालनेवाला।
चालाक।

जुगनूँ—[सं पुं]জোনাকী পৰুৱা।
खद्योत।

जुगवना, जुगाना— (क्रि. स) গোটোৱা, সঞ্চয় কবা। সাৱধানে ৰখা।
संचित या इकट्ठा करना।
सम्भाल कर रखना।

जुगाली—[सं स्त्री]পাগুলা, বোমন্থন।
पागुर।

जुगुप्सा—(सं स्त्री) নিন্দা, অশ্রদ্ধা, ঘৃণা।
निन्दा। अश्रद्धा। घृणा।

जुज—(सं पुं) অঙ্গ, অংশ।
अंग। अंश। कागज का पूरा तख्ता।

जुझाऊ— (वि) যুদ্ধ সম্বন্ধীয়। সৈনিক।
युद्ध सम्बन्धी। सैनिक।

जुझार—[सं पुं] যোদ্ধা, যুদ্ধ।
योद्धा। लड़ाकू। युद्ध।

जुटना—(ক্রি অ) লগ্ন লগা, একত্র হোৱা। একাপশটীয়াকৈ কামত ধৰা।
जुड़ना। लिपटना। एकत्र होना। मिलना। दृढ़ता पूर्वक काम में लगना।

जुटाना—(ক্রি স) লগ লগোৱা, একত্র কৰা।
जोड़ना। लिपटाना। एकत्र करना। मिलाना। दृढ़ता पूर्वक काम में लगाना।

जुठारना—(ক্রি স) চুৱা কৰা। অপবিত্র কৰা।
जूठा या उच्छिष्ट करना।

जुड़ना—(ক্রি অ) সংযুক্ত হোৱা। একত্র হোৱা। চেঁচা হোৱা।
संबद्ध होना। एकत्र होना। मिलना। ठंडा होना।

जुड़वाँ—[বি] যঁজা।
यमज (बच्चे)

जुड़वाना—[ক্রিস] চেঁচা কৰোৱা। যোৰা দিওৱা। যোগ কৰোৱা।
ठंडा करना। शान्त और सुखी करना।

जुड़ाना—(ক্রি অ) চেঁচা হোৱা। শান্ত হোৱা। জুৰ পৰা।
ठंडा होना। शान्त होना। तृप्त होना।
(ক্রি স) যোৰা দিয়া।
जोड़ने का काम करना।

जुतना—[ক্রি অ] জুৰি দিয়া। গাড়ু বি দিয়া।
बैल आदि का गाड़ी आदि में जोता जाना। किसी काम में परिश्रम पूर्वक लगना।

जुतियाना—[ক্রি স] জোতাৰে মৰা, অনাদৰ কৰা।
जूते से मारना। अनादर करना।

जुदा—[বি] বেলেগ, পৃথক।
अलग। भिन्न।

जुदाई—(সং স্ত্রী) পাৰ্থক্য।
अलगाव। वियोग।

जुन्हाई—[সং স্ত্রী] জোন।
चाँदनी। चन्द्रमा।

जुमला—[বি] সকলো।
सब।
(সং পুং) সম্পূৰ্ণ বাক্য।
पूरा वाक्य।

जुरमाना—(সং পুং) জৰিমনা।
अर्थ दंड।

जुर्म—(সং পুং) অপৰাধ।
अपराध।

जुर्रा—(সং পুং) বাজ চৰাই।
शिकारी नरबाज पक्षी।

জুৰাব—[সং স্ত্রী] মোজা, পায়-
জামা। मोजा। पायजामा।

জুলাব, জুল্লাব—[সং পুং] জুলাপ।
গোলাপ ফুল।
गुलाब। दस्तावर दवा।

জুলাহা— [সং পুং] তাঁতী।
कपड़ा बुननेवाला।

জুল্ফ, জুল্ফী— [সং স্ত্রী] দীঘল
চুলি।
सिर के लम्बे बाल। पट्टा।

জুল্ম-[সং স্ত্রী] জুলুম।
अत्याचार।

জুল্মী—[বি] জুলুম বাজ।
अत्याचारी।

জুহানা--[ক্রি স] সঞ্চয় কৰা।
संचित करना। संयोजन।

জুহাৰ— (সং স্ত্রী) অভিবাদন,
প্রণাম ।
अभिवादन। प्रणाम।

জুঁ—(সং স্ত্রী) ওকণী।
बालों में होनेवाला एक कीड़ा।

জু-[অব্য]মহাশয়।
जी (सम्मान सूचक)।
(বি) যি, যে।
जो।
[ক্রি বি] যেনেকৈ।
जैसे।

জুআ—[সং পুং] যুৱলি, জুৱাখেল।
बैलों के कन्धे पर रहनेवाली
गाड़ी आदि की लकड़ी। द्यूत
क्रीड़ा।

জুজু— [সং পুং] কাণখোৱা।
[শিশুক ভয় খুওৱা নাম]
एक कल्पित जीव।

জুঝনা--[ক্রি অ] কাজিয়া কৰা।
लड़ना।

জুট—(সং পুং)মূৰৰ জটা, মৰাপাট।
जटा बंधन। लट। पटसन।

জুঠন—(সং স্ত্রী) উচ্ছিষ্ট বা
এৰেহা আহাৰ।
उच्छिष्ट भोजन।

জুঠা—(বি) এৰেহা, চুৱা, মুক্ত।
उच्छिष्ट। मुक्त।

জুড়া, জুৰা—(সং পুং) খোপা,
টিকনি।
लपेट कर बंधी हुई सिर का
चोटी। पूला।

জুড়ী—(সং স্ত্রী) মেলেৰিয়া জ্বৰ।
मलेरिया बुखार।

জুতী—[সং স্ত্রী] চেণ্ডেল।
चप्पल।

জুন—(সং পুং) সময়, মাহ।
समय। मास।

जूथ—(सं पुं) স্তূপ, সমূহ ।
यूथ । समूह ।

जूटना—(क्रि स) যোৰা আক্ৰমণ কৰা ।
गड्डी या थाक लगाना ।

जूस—अं(सं पुं) জোল বস ।
पकी हुई चीज का रस । रसा ।

जूसी—(सं स्त्री) লালী ।
ईख के रस की गाढी तलछट ।

जूही—(सं स्त्री) যুতি ফুল ।
एक सुगन्धित फूल ।

जूभ—[सं पुं] হামি ।
जम्भाई ।

जेंवना—(क्रि स) আহাৰ কৰা, আত্মসাৎ কৰা ।
भोजन करना । हड़पना ।

जे–(सर्व) যিবোৰ ।
'जो' का बहु वचन ।

जेइ, जेहे, जो—(सर्व) যি ।
एक सम्बन्ध वाचक सर्वनाम ।
(अव्य) যদি ।
यदि ।

जेठ—(सं पुं) জেঠ মাহ, জেঠা-দেউ ।
ज्येष्ठ महीना । पतिका बड़ा भाई ।

जेठा—(वि) অগ্ৰজ, সৰ্বোত্তম ।
अग्रज । सबसे अच्छा ।

जेठानी—(सं स्त्री) ডাঙৰ-জা ।
पतिके बड़े भाई की पत्नी ।

जेतिक, जेतो—[क्रि वि] যিমান ।
जितना ।

जेते—(वि) যিমানবোৰ ।
जितने ।

जेब—(सं स्त्री) জেপ, মোনা ।
कुरते आदि की पाकिट ।

जेब कट—(सं पुं) জেপ-কটা-চোৰ ।
पाकिटसार ।

जेबी—[वि] জেপত লব পৰা (সৰু) ।
जेब में रखने लायक छोटा चीज ।

जेर—(वि) পৰাস্ত ।
परास्त । दबाया हुआ आदमी ।

जेवर—(सं पुं) অলঙ্কাৰ ।
गहना ।

जेहन—[सं पुं] বুদ্ধি, বুজা শক্তি ।
बुद्धि । समझ ।

जेहि—[सर्व] যাক, যাৰ দ্বাৰা ।
जिसको । जिससे ।

जैनी—[सं पुं] জৈন মতাবলম্বী ।
जैन मतावलम्बी ।

जैसा—(वि] যেনেকুৱা, তুল্যাৰ্থত ।
जिस प्रकार का । जितना ।
तुल्य ।

(क्रि वि) যিমান ।
जितना ।

जैसे— (क्रि वि) যি দৰে ।
जिस तरह ।

जोंक—(सं स्त्री) জোক ।
पानी में रहनेवाला खून, चूसने वाला एक कीड़ा ।

जोइ—[सं स्त्री] পত্নী ।
पत्नी ।
[सर्व] যি ।
जो ।

जोखना—[क्रि. अ] জোখা, ওজন কৰা ।
तोलना । जाँचना ।

जोखिम—(सं स्त्री) আশঙ্কা ।
विपद ।
खतरा । खतरे की सम्भावना की स्थिति ।

जोग—(सं पुं) যোগ-ধ্যান ।
योग ।
[अव्य) ওচৰত ।
को । के निकट ।

जोगड़ा—[सं पुं] ভণ্ড যোগী ।
पाखंडी । नकली योगी या साधु ।

जोगिन, जोगिनी—[सं स्त्री]
সন্ন্যাসিনী ।
साधुनी । पिशाचिनी ।

जोगी—(सं पुं) সাধু, বাবাজী ।
साधू ।

जोट, जोटा—[सं पुं] যোৰা প্ৰতিপক্ষী ।
जोड़ा । प्रतिपक्षी ।

जोड़—(सं पुं) যোৰা, সৰ্বমুঠ, গাঁঠি, সমানতা ।
जोड़ने की क्रिया । ठीक । कुल योग । सन्धि स्थान । बराबरी । दांव पेंच ।

जोड़-तोड़—(सं पुं) মেৰপাক, উপায় ।
दाँव पेंच । तरकीब ।

जोड़ना—[क्रि स] সংযোগ কৰা, সঞ্চয় কৰা, যোগফল উলিওৱা ।
दो वस्तुओं को मिलाकर एक करना । संचित या इकट्ठा करना । योगफल निकालना ।

जोड़ा—(सं पुं) যোৰ, দম্পতি ।
एक ही तरह की दो चीजें ।
स्त्री और पुरुष या नर और मादा का जोड़ा ।

जोड़ाई—(सं स्त्री) জোৰা দিয়া কাম বা তাৰ বানচ ।
जोड़ने की या दीवार आदि बनाने

में ईंटों पर ईंटें रखने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ो—(सं स्त्री) যোৰ, যুগ্ম।
जोड़ा। युग्म।

जोत—[सं स्त्री] জ্যোতি, মাটিৰ মালিকী স্বত্ব জোঁটনি।
ज्योति। जोतने, बोनेवाले को भूमि का अधिकार। तराजू में बँधे हुए धागे।

जोतना—(क्रि स) জোঁতা বা যাওৰা। বলেৰে কামত লগোৱা।
घोड़े, बैल आदि को गाड़ी, हल आदि में बाँधना। जबरदस्ती कड़ी मिहनत कराना। खेत में हल चलाना।

जोन्ह(न्हाई), जोन्हैया—[सं स्त्री] জোন।
ज्योत्स्ना। चाँदनी।

जो-पै—(अव्य) যদি, যদিও।
यदि। यद्यपि।

जोबन—(सं पु) যৌৱন, স্তন।
यौवन। स्त्रियों का स्तन। बहार।

जोम—(सं पुं) উলাহ, আনন্দ। অভিমান।
उमंग। जोश। अभिमान।

जोरदार—(वि) বলবান।
बलवान।

जोर-शोर—[सं पुं] বল-শক্তি, শক্তি-সামৰ্থ্য।
बहुत अधिक प्रबलता या तेजी।

जोरावर—(वि) বলবান।
बलवान।

जोरू—(सं स्त्री) পত্নী।
पत्नी।

जोलहा, जोलाहा—(सं पु) তাঁতী।
जुलाहा।

जोश—[सं पुं] আৱেগ, আবেশ, উত্তেজনা।
उफान। मनोवेग। उत्तेजना।

जोशीला—(वि) উত্তেজনা পূৰ্ণ, আবেগময়ী।
जोशवाला। आवेश पूर्ण।

जोषिता (ा)—(सं स्त्री) নাৰী।
नारी।

जोहना—(क्रि स) চোৱা। লক্ষ্য-কৰা, অপেক্ষা কৰা।
देखना। पता लगाना। प्रतीक्षा करना।

जौरां-भौंरा—(सं पुं) ৰাজ অট্টালিকাৰ মাটিৰ তলত থকা গুপ্ত ধনৰ ভঁৰাল।

राज महलों या किलों में खजाना रखने का तहखाना।

जौ—[सं पुं] যৱধান।
गेहूँ की तरह का एक पौधा। एक तौल।
(अव्य) যদি।
यदि।
[क्रि वि] যেতিয়া।
जब।

जौक—(सं पुं) সেনা, দল।
सेना। झुण्ड।

जौ-पै—[अव्य] যদি।
यदि।

जौहर—[सं पुं] ৰত্ন, সাৰভাগ, বিশেষত্ব, বৈশিষ্ট্য। জহৰব্ৰত।
रत्न। सार, तत्व। हथियार की चमक, धार। उत्तमता। सम्मान की रक्षा के लिये चिता में जल मरने का व्रत।

जौहरी—(सं पुं) জহৰী।
रत्न परखने या बेचने वाला। गुण दोष की परीक्षा करनेवाला।

ज्ञ—[प्रत्यय] জ্ঞাতা, জানোঁতা।
ज्ञाता।

ज्ञात—(वि) জনা-শুনা।
जाना हुआ।

ज्ञापक—(वि) সূচক, বাতৰি দিওঁতা।
सूचक। जतानेवाला।

ज्या—(सं स्त्री) ধনুৰ ডোল, বৃত্তৰ জ্যা, পৃথিৱী।
धनुष की डोरी। किसी वृत्तचाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा। पृथ्वी।

ज्यादती—[सं स्त्री] আধিক্য, অত্যাচাৰ।
अधिकता। अत्याचार।

ज्यादा—[वि] অধিক, বহুত।
अधिक। बहुत।

ज्यूँ—[अव्य] যেনেকৈ।
ज्यों। जैसे।

ज्यों—[क्रि वि] যিদৰে, যি প্ৰকাৰে, যি ক্ষণত।
जिस प्रकार। जिस ढंग से। जिस क्षण।
[अव्य] যেন।
मानो। जैसे।

ज्योतिरिंगण—(सं पुं) জোনাকী পৰুৱা।
जुगनूँ।

ज्योतिर्लिंग—[सं पुं] মহাদেৱ।
शिव। शिव के प्रधान लिंग।

ज्योत्स्ना—[सं स्त्री] জোন ।
चाँदनी ।

ज्योनार—(सं स्त्री) ভোজ, বক্কা-বঢ়া ।
भोज । रसोई ।

ज्वलन—[सं पुं] দাহ, ঈৰ্ষা ।
जलने की क्रिया या भाव । दाह ।

ज्वार—[सं स्त्री] বজ্ৰা, জোৱাৰ ।
एक प्रकार के अनाज का पौधा ।
'भाटा' का उलटा ।

ज्वार-भाटा—[सं पुं] জোৱাৰ-ভাটা ।
समुद्र के जल का लहराते हुए 'आगे बढ़ना' और पीछे हटना ।

झ

झ—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ নৱম আখৰ ।
वर्णमाला का नवाँ व्यंजन ।

झंकारना, झनकारना—[क्रि अ क्रि स]
জন্‌জন্ শব্দ কৰা বা হোৱা ।
झन झन शब्द होना या करना ।

झंखना—(क्रि अ) অনুতাপ কৰা, দুখ কৰা ।
पछताना और कुढ़ना । अपना दुखड़ा रोना ।

झंखाड़—(सं पुं) কাঁইটীয়া জোপোহা, জাবৰৰ দ'ম ।
काँटेदार पौधों की झाड़ी । आवर्जना का समूह ।

झंझट—[सं स्त्री] জঞ্জাল, লেঠা ।
बखेड़ा । प्रपंच ।

झंझरी—[सं स्त्री] জালি-কটা-সুৰুঙা ।
छोटे छोटे छेदों वाली जाली ।
झरोखा ।

झंझा—(सं स्त्री) ধুমুহা ।
तेज आँधी ।

झंझोड़ना—(क्रि स) জোকাৰি দিয়া ।
झकझोरना ।

झंडा—(सं पुं) পতাকা ।
ध्वजा ।

झंडा फहराना (मु०)—अधिकाৰ কৰা ।
किसी स्थान पर अपना अधिकार जमाना ।

झंडे के नीचे आना[मु०]—আধিপত্য স্বীকাৰ কৰা ।
अनुयायी बनना ।

झंडी—[सं स्त्री] সৰু পতাকা ।
छोटा झंडा ।

झंप—[स पुं] জাঁপ, লাফ ।
उछाल । कूद ।

झँपना—(क्रि अ) জাঁপ দিয়া, জপিওৱা ।
आड़ में होना । कूदना । टूट पड़ना । झेंपना ।

झँपोला—[सं पुं] সৰু পাচি ।
छोटा झाबा या टोकरी ।

झँवराना—[क्रि अ] মলিন হোৱা, মৰহি পোৱা ।
कुम्हलाना । फीका या मंद पड़ना ।

झँवाना—(क्रि अ) ধোঁৱা লগা, চিলিক-চমাককৈ জলি থকা ।
कुछ काला पड़ना । आग का मंद होकर बुझने को होना ।
(क्रि स) ক'লা পৰা, কান্তি-হীন হোৱা ।
काला पड़ना । चमक या आभा का घटना ।

झक—[सं स्त्री] জক ।
सनक ।
(वि) চক্‌চকীয়া ।
चमकीला ।

झक-झक—[सं स्त्री] কাজিয়া, গালাগালি ।
झगड़ा । तकरार । बकवाद ।

झकझोरना—(क्रि स) জোকাৰি লবে'ৱা ।
कोई चीज झटके से हिलाना ।

झकना—(क्रि अ) বক্‌বক কৰা ।
बकवाद करना ।

झकोरना—(क्रि अ) জোকাৰ খোৱা ।
हवा का झोंका मारना ।

झकोरा—[सं पुं] বতাহ ছাটি ।
हवा का झोंका ।

झकी—[वि] উতনুৱা ।
सनकी ।

झखना, झीखना—[क्रि अ] অনুতাপ কৰা, শোক কৰা ।
पछताना और कुढ़ना । अपना दुखड़ा रोना ।

झखमारी—(सं स्त्री) অনুতাপৰ ভাব ।

झख मारने की क्रिया या भाव ।

झगड़ना—[क्रि अ] কাজিয়া কৰা ।

झगड़ा करना ।

झगड़ालू, झगड़ू, झगरू—[वि] দন্দুৰা ।

हमेशा झगड़नेवाला ।

झझक—(सं स्त्री) জংক ।

झुंझलाहट ।

झझकना—(क्रि अ) জকি উঠা ।

ठिठकना । झुंझलाना ।

झट—(क्रि वि) তৎক্ষণাৎ, শীঘ্ৰে ।

तत्काल । झट पट ।

उसी समय ।

झटकना—[क्रि स] জোৰকৈ খুন্দা মৰা । ধামুহ দি বস্তু নিয়া ।

जोरसे झटका देना । धोखा देकर कुछ चीज ले लेना ।

(क्रि अ) খীনাই যোৱা ।

दुबला होना ।

झटका—(सं पुं) খুন্দা, মনঃকষ্ট, পশু আদি একে ঘাপে কটা কাৰ্য্য ।

हलका धक्का । आपत्ति, शोक आदि का आघात । पशुको एक ही बारमें काट डालनेकी क्रिया ।

झट-पट—(अव्य) তৎক্ষণাৎ, তুৰন্তে ।

बहुत शीघ्र । तुरन्त ।

झड़ना—(क्रि अ) নিজৰি পৰা, জাৰি জোকাৰি পৰিষ্কাৰ কৰা ।

किसी चीज के अंश का टूट-टूट कर गिरना । झाड़कर साफ किया जाना ।

झड़प—(सं स्त्री) সাধাৰণ কাজিয়া ।

सामान्य झगड़ा या तकरार ।

झड़पना—(क्रि अ) সাউত কৰে আক্ৰমণ কৰা ।

वेगसे किसीपर आक्रमण करना ।

झड़वाना—(क्रि स) জৰা-ফুঁকা কৰি ভূত-প্ৰেত খেদা ।

भूत-प्रेत को मंत्र आदि से उतरवाना ।

झड़ी—[सं स्त्री] লানি, সঁতা [বৰষুণৰ] ।

लगातार झरने की क्रिया । लगातार होनेवाली वर्षा । बहुत सी बातें करना ।

झनकना—(क्रि अ) জন্‌জনাই উঠা, খঙতে হাত ভৰি আফলিওৱা ।

झनकार का शब्द करना। क्रोध में हाथ पैर पटकना।

झन-झनाना—(क्रि अ क्रि स)জন্‌জন্ শব্দ কৰা বা হোৱা।
झन झन शब्द करना या होना।

झप—(क्रि वि) সোণকালে।
जल्दी से।

झपकना—(क्रि अ) নিনিষ পৰা, চিলমিল টোপনি অহা।
पलक गिरना। झपकी लेना।

झपकी—(सं स्त्री) চিলমিলীয়া টোপনি।
हलकी नींद। आँख झपकने की क्रिया या भाव।

झपटना—(क्रि अ) শত্ৰুৰ ওপৰত জপিয়াই পৰা।
आक्रमण करने के लिये तेजी से आगे बढ़ना।

झपट्टा—[सं पुं] জপিয়াই পৰা ক্ৰিয়া।
झपटने की क्रिया।

झपना—(क्रि अ) নিমিষ পৰা, হাৰাশাস্তি হোৱা।
पलक गिरना। झुकना। हैरान या परेशान होना।

झपाका—[सं पुं] শীঘ্ৰতা।
शीघ्रता।
(क्रि वि) শীঘ্ৰে।
चटपट।

झपाटा—(सं पुं) আঁজোৰ।
झपट। चपेट।

झपेटना—(क्रि स) থাপ মৰা।
दबोचना। झिड़कना।

झपेटा—(सं पुं) থাপ, গৰিহণা।
चपेट। भूत-प्रेतादि की बाधा। झिड़की।

झबरा—(वि) ভোবোৰা।
बहुत लम्बे लम्बे बिखरे बालों वाला।

झबिया--(सं स्त्री) সূতাৰ নেচা।
छोटा झब्बा।

झब्बा—[सं पुं] জঁটা।
तारों या सूतों का गुच्छा जो गहनों में शोभाके लिये लगाते हैं।

झमकना—[क्रि अ] তিৰ্‌বিৰাই উঠা, অস্ত্ৰৰ চিক্‌মিকনি।
रह रह कर चमकना। झनकार होना। अस्त्रों का चमकना।

झमकीला—(वि) উজ্জ্বল, চঞ্চল।
चमकीला। चंचल।

झमाका—[सं पुं] চম্‌চম্ শব্দ।
झम झम शब्द। नखरा।

झमेला—(सं पुं) আপদ, জঞ্জাল।
बखेड़ा। झंझट। भीड़-भाड़।

झरकना— [क्रि अ] শোভিত হোৱা, গালি দিয়া।
झलकना। झिड़कना।

झरना—[क्रि अ] নিজৰি পৰা, সৰি পৰা।
ऊँची जगह से पानी या और कोई चीज लगातार नीचे गिरना। झड़ना।
(सं पुं) সুঁতি, নিঝৰা।
सोता। निर्झर।
(वि) নিজৰি নিজৰি পৰি থকা। झरनेवाला।

झरप—(सं स्त्री) উখনা-উখনি, ক্ষিপ্ৰতা।
झकोर। तेजी। झड़प।

झरपना– [क्रि अ] পানী বা শৰ বৰষোৱা। তিৰস্কাৰ কৰা।
बौछार मारना। झड़पना।

झरा झर–(क्रि वि) জৰ্ জৰ্ শব্দেৰে। সদায়। বেগাই।
झरझर शब्दके साथ। लगातार। वेगपूर्वक।

झरी—(सं स्त्री) নিঝৰা, হাট-বজাৰৰ দৈনিক-কৰ।
निर्झर। झरना। हाट बाजार का दैनिक कर।

झरोखा—(सं पुं) বেৰৰ ফুটা, গবাক্ষ।
जालीदार छोटी खिड़की। गवाक्ष।

झलक— (सं स्त्री) জিলিকনি, চকামকাকৈ দেখা। আভা।
चमक। प्रतिबिम्ब। क्षणिक दर्शन। आभा।

झलकना—[क्रि अ] জিলিকি উঠা, আংশিক প্ৰকাশ হোৱা।
चमकना। कुछ कुछ प्रकट होना। आभास होना।

झलझलाहट—(सं स्त्री) চকমকনি, দীপ্তি।
झल झलाने की क्रिया या भाव।

झलना— [क्रि स] বিচনীৰে বা দিয়া।
पंखे आदि से हवा करना।
(क्रि अ) বিচনীৰ বা লোৱা। ইফাল-সিফাল কৰা।
झेलना। इधर उधर हिलना।

झलमलाना—(क्रि अ) জিলমিলাই থকা।
रह रहकर चमकना। प्रकाश को हिलाना-डोलाना।

झलराना—(क्रि अ) পটি লগোৱা।
झालर के रूप में फैलना।

(क्रि स) পাটিৰ আকাৰত লগোৱা।
झालर जैसे फैलाना।

झक्ष—(सं स्त्री) পাগলামি।
पागलपन।

झक्षाना—[क्रि अ] জঁকি উঠা। খঙতে মুখত যি আহে তাকে কোৱা।
क्रुद्ध या खिन्न होकर बोलना।

झष— (सं पुं) মাছ, ঘৰিয়াল।
मछली। मगर।

झषकेतु—(सं पुं) কামদেৱ।
कामदेव।

झरझराई— [क्रि अ] জৰ্-জৰ শব্দ কৰা। শিথিল হোৱা। চিঞৰ বাখৰ কৰা।
झर झर शब्द करना। शिथिल या ढीला होना। झल्लाना।

झाईं— (सं स्त्री) প্ৰতিচ্ছায়া, এন্ধাৰ।
परछाईं। अन्धेरा। छल।

झाँकना—(क्रि अ) জুমি চোৱা।
कुछ झुक या छिपकर देखना।

झाँकी— (सं स्त्री) জুমি চোৱা কাৰ্য্য। ভুমুকি।
झाँकने की क्रिया या भाव। दर्शन। दृश्य।

झाँखर—[सं पुं] জাবৰ। আবৰ্জনা।

झाँझ – [सं स्त्री] খুঁটি তাল।
बड़े मंजीरे की भाँति एक प्रकार का वाद्य।

झाँप—[सं स्त्री] ঢাকনী, সাঁফৰ, কাণৰ অলঙ্কাৰ।
ढँकनेका ऊपरी आवरण। झपकी। कान का एक गहना।

झाँपना—[क्रि स] জপাই থোৱা। ঢাকি থোৱা, লাজ কৰা।
ढँकना। लजाना। दबोचना।

झाँवला— (वि) মলিয়ন, ঈষৎ ক'লা।
कुछ कुछ काला। कुम्हलाया हुआ। मैला। मन्द।

झाँवली—[सं स्त्री] জিলিকনি, চকুৰ ঠাৰ।
झलक। आँखों से किया हुआ संकेत।

झावाँ, झामा— (सं पुं) পোৰা ইটা।
जली हुई ईंट।

झाँसा--[सं पुं] ফাঁকি।
धोखा।

झा—(सं पुं) ওজা, এটা জাতিৰ উপাধি।
ओझा। एक जाति की उपाधि।

झाग—[सं पुं] ফেন।
गाज। फेन।

झाड़—[सं पुं] জোপোহা গছ।
छोटा घनी डालियोंवाला पेड़।
(सं स्त्री) জাৰি-জোকাৰি পেলোৱা ক্রিযা, জৰা-ফুকা কৰা কার্য্য। তিৰস্কাৰ।
झाड़ने की क्रिया या भाव। फटकार। मंत्र पढ़कर फूँकने की क्रिया।

झाड़-झंखाड़—(सं पुं) কাঁইটনি, আবর্জনা।
काँटेदार या व्यर्थ के पेड़ पौधोंका समूह। निकम्मी टूटी फूटी चीजें

झाड़ना, झारना— (क्रि स) পৰিষ্কাৰ কৰা। জাৰি-জোকাৰি পেলোৱা। অনর্গল কথা কোৱা। ডাঙ্কোপ মৰা।
साफ करना। ऊपर पड़ी हुई धूल आदि को झटके से गिराना। गढ़ गढ़कर बातें करना। धन ऐंठना। फटकारना। प्रहार के लिये चलाना।

झाड़-फानूस--(सं पुं) আইনাৰ কলহ, ওলোমাই ৰখা দীপাধাৰ।
शीशे की हाँड़ियाँ, झाड़ आदि जो शोभा के लिये टाँगे जाते हैं।

झाड़-फूँक—[सं स्त्री] জৰা-ফুঁকা কৰা কার্য্য।
मंत्र पढ़कर झाड़ना फूँकना।

झाड़ा— (सं पुं) জৰা-ফুকা, শৌচ।
झाड़ फूंक। तलाशी। मल।

झाड़ी— [सं स्त्री] সৰু গছ পুলি।
छोटा झाड़ या पौधा।

झाड़ू— (सं पुं) বাঢ়নী।
कूँचा। बुहारी।

झापड़—(सं पुं) চাপৰ।
थप्पड़।

झाबा—(सं पुं) খাং।
टोकरा।

झार—(वि) কেৱল, সকলো।
केवल। समस्त।
(सं पुं) সমূহ, প্রচেষ্টা।
समूह। प्रयत्न।

झारी—[सं स्त्री] জাৰী বা ঝাৰী।
पानी रखने का टोंटीदार बर्तन।

झाल—(सं पुं) খুঁটি তাল।
झाँझ।

(सं स्त्री) জলা, ঢৌ, জ্বলন, ঈৰ্ষা ।
तीतापन । तरंग । जलन ।
ईर्ष्या । वर्षा की झड़ी ।

झालर—(सं स्त्री) শোভাযুক্ত পটি ।
शोभाके लिये बनाया या लगाया गया किनारा ।

झिझक—[सं स्त्री] চুচুক-চামাক ।
भय आदि के कारण संकोच ।

झिड़कना—(क्रि स) গৰিহণা দিয়া ।
अवज्ञा पूर्वक कड़ी बात कहना ।

झिड़की—(सं स्त्री) গৰিহণা, গালি ।
डाँट । फटकार ।

झिरना—(क्रिअ) নিজৰি পৰা ।
झरना ।

झिलम—(सं स्त्री) যুদ্ধৰ সময়ত পিন্ধা লোৰ টুপী । युद्ध के समय पहनी जानेवाली लोहे की टोपी ।

झिलमिला—(वि) জিল-মিল ।
चमकता हुआ । जो बहुत स्पष्ट न हो ।

झिलमिलाना—(क्रि अ) জিলমিলাই থকা ।
रह रह कर चमकना । प्रकाश का रह रह कर हिलना ।

झिल्ली—[सं स्त्री] জিলী, উঁই চিৰিঙা পতলা, বিলবিলা ।
झींगुर । ऐसी पतली तह जिसके आर पार वस्तुएँ दिखाई दें ।

झींगुर—(सं पु) জিলী ।
झीं झीं करनेवाला एक कीड़ा ।

झींसी—(सं स्त्री) পানীৰ উহ ।
वर्षा की धीमी फुहार ।

झीखना—(क्रि अ) অনুতাপ কৰা, দুখ কৰা ।
पछताना । कुढ़ना । अपना दुखड़ा रोना ।

झीना—[वि] ফিৰ-ফিৰিয়া, বৰ-মিহি, লেৰেলা ।
बहुत महीन । झँझरा । दुर्बल ।

झील—(स स्त्री) সৰোবৰ ।
लम्बा चौड़ा प्राकृतिक जलाशय ।

झुँझलाना—[क्रि अ] চুপতি মৰা ।
खिझलाना । चिड़चिड़ाना ।

झुंड—(सं पु) দল ।
गिरोह ।

झुकना—(क्रि अ) সেও মনা, হাৰ মনা । নতহোৱা ।
नत होना । हार मानना । मनका किसी ओर प्रवृत्त होना ।

झुकाना—(क्रि स) নত কৰা, প্ৰবৃত্ত কৰা ।

नवाना। प्रवृत्त करना। विनीत बनाना। बात मनवाना।

झुकाव—(सं पुं) ঢাল, প্ৰবৃত্তি। झुकने की क्रिया या भाव। मन का आकर्षण। प्रवृत्ति।

झुटपुटा—[सं पुं] কাল-সন্ধ্যা। ऐसा समय जबकि कुछ अन्धेरा और कुछ प्रकाश हो।

झुठलाना—(क्रि स) সঁচাক মিছা বুলি কোৱা। মিছা কথাৰে ঠগোৱা।
सच्चे को झूठा ठहराना। झूठा कहकर धोखा देना।

झुठाई—(सं स्त्री) অসত্যতা। झूठापन।

झुनझुनाना—(क्रि अ क्रि स) জুন-জুন শব্দ কৰা বা হোৱা। झुन झुन शब्द उत्पन्न होना या करना।

झुनझुनी—(सं स्त्री) জুন-জুনী। हाथ या पैर में रक्त संचार रुकने से उत्पन्न सनसनाहट।

झुमका-(सं पुं) কাণৰ অলঙ্কাৰ। कान का एक गहना।

झुरना—(क्रि अ) শুকোৱা। মনতে দুখ কৰা।

सूखना। मन ही मन अफसोस करना।

झुरमुट—(सं पुं) জোপোহা গছ। দল।
आस पास उगे हुए कई झाड़ों का समूह। गिरोह, दल।

झुर्री—(सं स्त्री) শোটৰা, কোঁচ। चमड़े की सिकुड़न।

झुलसना, झौंसना—(क्रि अ क्रि स) লেৰেলি পৰা বা মৰহি যোৱা। शरीर या किसी चीज के ऊपरी भाग का जलकर काला होना। जलाकर काला कर देना।

झुलाना—(क्रि स) ঢুলনি দিয়া। বিচাৰাধীন। অনিষ্পন্ন।
झुलने में प्रवृत्त करना। आश्वासन देकर किसी काम को पूरा न करना या बारबार आदमी को दौड़ाना। [अं-पेंडिंग]

झुल्ला- [सं पुं] এক বকমৰ কামিজ।
एक प्रकार की कुरती।

झूठ—(सं पुं) মিছা, অসত্য। मिथ्या। असत्य।

झूठ-मूठ— (क्रि वि) মিছা-মিছি, অযথা।
बिना किसी आधार के। यों ही।

झूठा— [वि] মিছা, মিছলীয়া, নকলী।
असत्य। मिथ्यावादी। बनावटी।

झूमक, झूमर— [सं पुं] এবিধ লোকগীত। এবিধ অলঙ্কাৰ।
एक प्रकारका गीत। एक गहना।

झूमना—(क्रि अ) ঢুলনি লোৱা।
झोंके खाना। मस्ती में शरीर हिलाना।

झूर, झूरा— [वि] শুকান, নীৰস।
सूखा। नीरस।
(सं पुं)খৰাং বতৰ। শুকান মাটি।
अनावृष्टि। सूखी जमीन।

झूलन— [सं पुं] ঢুলনি। শ্রীকৃষ্ণৰ ঝুলন যাত্রা।
हिंडोला। झूलनोत्सव।

झूलना—[क्रि. अ] ঢুলনি লোৱা।
लटकी हुई चीज का बार बार हिलना। किसी काम के आसरा-सन में बारबार दौड़धूप करना।
(वि) ঢুলনি লওঁতা।
झूलनेवाला।

झूला—(सं पुं) দোলন।
हिंडोला। झूलनेवाला पुल।

झेंपना— (क्रि अ) লাজতে মুচকচ যোৱা, লাজ কৰা।
लज्जित होना। शरमाना।

झेलना— (क्रि स) সহ্য কৰা। সাঁতোৰোতে পানী কাটি যোৱা কাৰ্য্য।
सहना। तैरते समय हाथ पैरसे पानी हटाना।
(क्रि अ) পানী বাই পাৰ হোৱা।
पानी में उतरकर पार करना।

झेलाझेली— (सं स्त्री) টনা-আঁজোৰা।
खीच तान। आवागमन।

झोंक— [सं स्त्री] ঢাল, বোজা, ক্ষিপ্রতা।
झुकाव। बोझ। तेजी।

झोंकना—(क्रि स) জুইত পেলোৱা। উধাই-মুধাই খৰচ কৰা।
कोई वस्तु जलाने के लिये आगमें फेंकना। अन्धाधुन्ध खर्च करना।

झोंका— (सं पुं) বতাহ-ছাটি। বৰষুণৰ পানীৰ সোঁত।
झटका। हवा के कारण वर्षा की धारा का इधर उधर जाना।

झोंकी—(सं स्त्री) দায়িত্ব।
उत्तरदायित्व। (अं-रिस्क)

झोंझ— [सं स्त्री] চৰাইৰ বাহ, কোলাহল ।
पक्षियों का घोंसला । कोलाहल ।

झोंटा—(सं पुं) চুলিৰ কোছা ।
स्त्रियों के बड़े बड़े बालों का गुच्छा ।

झोंटाझोंटी-[सं स्त्री] চুলিয়া-চুলি ।
आपस में बाल खींचकर लडाई ।

झोंपड़ा—(सं पुं) জুপুৰী, কুটীৰ, কুটী । पर्णशाला । (सं स्त्री-झोंपडी)

झोंपा—(सं पुं) কোছা ।
फल आदि का गुच्छा ।

झोंटिंग— (सं पुं) ভূত-প্রেত আদি ।
भूत-प्रेत या पिशाच आदि ।

झोरना— (क्रि स) জোৰেৰে জোকাৰি দিয়া ।
कोई चीज झटका देकर जोरसे हिलाना ।

झोरा, झोला—(सं पुं) খুন্দা, ঢৌ, চাঞ্চল্য, মোনা, গোলোক-ঢোলোক চোলা ।
झटका । धक्का । लहर । दुविधा । चंचलता । थैला । ढीला कुरता । पक्षाघात रोग ।

झोल- [सं पुं] জোল, ভস্ম, ঢিলা, দোষ । গৰ্ভাৱৰণ ।
शोरबा । भस्म, राख । झंझट या बखेड़े की बात । ढिलाई । दोष । आँचल । गर्भकी झिल्ली ।

झोलदार—[वि] জুলীয়া, গোলোক-ঢোলোক ।
जिसमें झोल या रसा हो । मुलम्मेदार । ढीला ढाला [कपड़ा] ।

झोली—(सं स्त्री) মোনা, ছাই ।
थैली । पानी सींचने का चमड़े का पुर । राख ।

झौंर—(सं पुं) জাক, ফুলৰ থোপা ।
झुण्ड । फूलों या फलोंका गुच्छा ।

झौंरना— [क्रि अ] গুণ-গুণ কৰা ।
गूँजना । झपटकर पकड़ना ।

झौंरा—[सं पुं] জাক ।
झुण्ड ।

झौंराना—[क्रि अ] লৰ-ফৰ কৰা, কলা পৰি যোৱা । বিবৰ্ণ হোৱা ।
झूमना । रंग काला पड़ जाना । कुम्हलाना ।
(क्रि स) আনক চুলনি দিয়াত প্ৰবৃত্ত কৰা ।
किसी को हिलने या झूमने में

प्रवृत्त करना । रंगतमें कालापन लाना । मुरझानेमें प्रवृत्त करना ।

ঞৌআ—(सं पुं) খাং ।
खँचिया ।

ঞৌৰ—[सं पुं] কাজিয়া, গালি-শপনি ।
हुज्जत । झगड़ा । डाँट फटकार ।

ঞৌৰে—(ক্রি বি) সমীপ, কাষত ।
समीप । साथ ।

ঞৌহানা—(ক্রি অ) খঙতে তিল-মিলাই উঠা ।
बहुत क्रोध से या बिगड़कर कुछ कहना ।

ঞ

ঞ—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ দশম আখৰ । वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन वर्ण ।

ট

ট—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ একাদশ আখৰ ।
वर्ण मालाका ग्यारहवाँ व्यंजन वर्ण ।

টংক—(সং পুং) এক তোলাৰ এক তৃতীয়াংশ ভৰ, ছেনা, কুঠাৰ, সুহাগা । পুখুৰী । টেঙ্ক
एक तौल । सिक्का । छेनी । कुल्हाड़ी । सुहागा । तालाब । टैंक ।

টংকক—(সং পুং) চিলাই কাম কৰোঁতা, টাইপ কৰোঁতা আদি ।

वह जो टंकण का काम करता हो (अं-टाइपिस्ट)

टंकण—(सं पुं) সুৱাগা. টাইপ কৰা কার্য্য, মুদ্রা তৈয়াৰ কৰা কার্য্য।

सुहागा। धातु का चीज में जोड लगाना। टंकण यंत्र से मुद्रित करने का काम। सिक्के बनाने की क्रिया।

टंकण-यंत्र—(सं पुं) টাইপ কৰা যন্ত্র ।

छापेका एक यंत्र(अं-टाइप राइटर)

टँकना—[क्रि अ] চিলাই কৰা (খুট খুটুকৈ কটা) জাত, পতা গুটি।

सी कर अटकाया जाना। दर्ज किया जाना। सिल, चक्की आदि कुटना।

टंकशाला—(सं स्त्री) টাকশাল, য'ত মুদ্রা তৈয়াৰ কৰা হয়।

टकसाल। जहाँ सिक्के बनते हैं।

टंकाई—(सं स्त्री) চিলাই মাচ।

टँकने का भाव या मजदूरी।

टंकारना—[क्रि स] ধেনুত টঙ্কাৰ দিয়া। धनुष की डोरी खीचकर शब्द उत्पन्न करना।

टंकी—(सं स्त्री) থালী, কুণ্ড।

पानी रखने का बड़ा कुंड या पात्र।

टँगना—(क्रि अ) ওলোমাই-থোৱা।

टाँगा या लटकाया जाना।

(सं पुं) ডাব। কাপোৰ মেলি-দিয়া বচি।

वह रस्सी जिस पर कपड़े टाँगे जाते है। कपड़े टाँगने के लिये काठ की अलगनी।

टँगारी—(सं स्त्री) কুঠাৰ।

कुल्हाड़ी।

टट-घट—(सं पुं) পূজা পাতলৰ আয়োজন। বেয়া বস্তু।

पूजा पाठ आदि का आडम्बर। रद्दी सामान।

टंटा—(सं पुं) জঞ্জাল, কাজিয়া।

व्यर्थ की झंझट। उपद्रव। झगड़ा।

टंटैल—[सं पुं] বনুৱাৰ নায়ক।

मजदूरों का सरदार।

टक-(सं स्त्री) একেথিৰে চোৱা।

स्थिर दृष्टि।

टकटका-[सं पुं] অপলক দৃষ্টি।

स्थिर दृष्टि। (सं स्त्री -टकटकी)

टकटकाना - [क्रि स] একেথিৰে চাই থকা ।
स्थिर दृष्टि से देखना ।

टकराना—(क्रि अ) খুন্দা খোৱা, গা-ঘেলাই ফুৰা ।
जोर से भिड़ना, टक्करें खाना ।
व्यर्थ इधर उधर घूमना ।
[क्रि स] খুন্দা মৰা ।
टक्कर मारना ।

टकसाल—[सं स्त्री] টাকশাল য'ত মুদ্ৰা তৈয়াৰ হয় ।
जहाँ सिक्के ढलते हैं ।

टकसाली—(वि) মুদ্ৰা সম্বন্ধী, বিশুদ্ধ, প্ৰামাণিক ।
टकसाल सम्बन्धी । खरा । प्रामाणिक ।
[सं पुं] টাকশালৰ অধ্যক্ষ ।
टकसाल का अधिकारी ।

टका—[सं पुं] দুই পইচা
एक सिक्का । अधन्नी ।

टकाही—[सं स्त्री] কু-চৰিত্ৰৰ তিৰোতা ।
दुश्चरित्रा स्त्री ।

टकुआ—(सं पुं) ডাঙৰ টাকুৰী ।
तकला ।

टकोर-(स स्त्री) টোকৰ, টঙ্কাৰ ।
গৰম সেঁক ।
हलकी चोट या आघात । ठेस ।
टंकार किसी अंग पर गर्म सेंक ।

टक्कर—(सं स्त्री) সংঘৰ্ষ । ক্ষতি
दो वस्तुओं के वेगपूर्वक भिड़ने से होनेवाला आघात । मुकाबला । घाटा ।

टखना—[सं पुं] খাৰ গাঁথি ।
पैर के नीचे के हिस्से का गुल्फ ।

टघरना—(क्रि अ) গলি যোৱা ।
पिघलना ।

टटका—[वि] টাট্‌কা, নতুন ।
ताजा ।

टटोलना, टटोरना—(क्रि स) খেপিয়াই চোৱা, উৰাদিহ লোৱা ।
मालूम करने के लिये उंगलियों से छूना । ढूँढ़ने के लिये हाथ फैलाना । थाह लेना

टट्टर—(सं पुं) বেৰ, চিলিঙি ।
बाँस की पट्टियाँ जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा या परदा ।

टट्टी, टाटी—[सं स्त्री] শৌচ, চিলিঙি ।
हलका और छोटा टट्टर । पतली दीवार । पाखाना ।

टट्टू—[सं पुं] টাটু ঘোঁৰা, সৰু ঘোঁৰা ।
छोटा घोड़ा ।

टनकना—(क्रि अ) টং-টং শব্দ হোৱা, মূৰ টিংটিং কৰা ।
टन टन शब्द करना । सिर में दर्द होना ।

टनटनाना—[क्रि स] টংটং শব্দ কৰা ।
टन् टन् शब्द उत्पन्न करना ।

टनमना—(वि) সুস্থ ।
स्वस्थ ।

टप—(सं पुं) ঢাকনী, ডাঙৰ কলহ, কাণফুল ।
किसी चीज के ऊपरका छाजन । पानी रखने का बड़ा बरतन । कानमें पहनने का फूल ।
(सं स्त्री) টপ্-টপ্ কৈ পৰা শব্দ ।
बूंद बूंद गिरने का शब्द ।

टपकना—(क्रि अ) টোপা-টোপে পৰা । অকস্মাৎ সৰি পৰা । খপ্ কৰে মনত পৰা । বৈ বৈ বিষোৱা
छत आदि का चूना या बूंद बूंद पानी गिरना । ऊपर से आकर सहसा पड़ना । कोई भाव प्रकट होना । रह रह कर दर्द होना ।

टपका—(सं पुं) টোপাল ।
टपकी हुई वस्तु या टपका हुआ फल ।

टपकाना—(क्रि स) টোপা-টোপে পেলোৱা ।
बूंद बूंद गिरना । चुआना ।

टपना—(क्रि स) চেৰাই যোৱা ।
लाँघना । कूदना ।

टपरी—(सं स्त्री) পঁজা ঘৰ ।
झोंपड़ी ।

टपाटप—(क्रि वि) টপৰাই ।
लगातार टप टप शब्द के साथ [गिरना] । जल्दी जल्दी ।

टपाना—(क्रि स) অনাহক কষ্ট দিয়া । পাৰ কৰোৱা ।
व्यर्थ आसरे में रखकर कष्ट देना । पार कराना ।

टप्पा—(सं पुं) আড্ডা, দূৰত্ব, এবিধ গীত ।
उछाल । दो स्थानों के बीच का मैदान । फर्क । एक प्रकार का गाना ।

टब—[सं पुं] থালী । পানী ৰাখি-বলৈ বহল মুখৰ পাত্ৰ ।
पानी रखने का बड़ा बरतन ।

टमटम -(सं स्त्री) দুচকীয়া ঘোঁৰা-গাড়ী ।
एक प्रकार की घोड़ा-गाडी ।

टमाटर-(सं पुं) বিলাহী বেঙেনা ।
विलायती बैंगन ।

टरकाना—[क्रि स] খেদি দিয়া ।
किसी को हटाना या टालना ।

टरटराना [क्रि अ] টোৰ্টো-ৰোৱা । কেতেৰাই মতা ।
टर टर शब्द करना । कठोर शब्द कहना ।

टर्रा [वि] দুষ্ট, উদ্ধত ।
उद्धत

टर्राना—(क्रि अ) কটুৱা মাত মতা ।
कठोर उत्तर देना ।

टलना—(क्रि. अ) আঁতৰি যোৱা, অতিবাহিত হোৱা । স্থগিত হোৱা।
सामने से हटना । जगहसे हटना । स्थ गत. होना । [किसी आदेश का] न माना जाना । समय बीतना ।

टसकना-[क्रि अ]লৰ-চৰ কৰা।চিৰিং চিৰিংকৈ বিষোৱা । জেদ এৰিদিয়া
टलना रह रह कर दर्द करना। हठ छोड़ना ।

टसकाना—(क्रि. स) আঁতৰাই নিয়া ।
खिसकाना ।

टसर—(सं पुं) এবিধ ডাঠ পাট কাপোৰ ।
एक प्रकार का रेशम ।

टसुआ—(सं पुं) চকুলো ।
आँसू ।

टहकना-[क्रि अ] বৈ বৈ বিষোৱা, গলি যোৱা ।
रह रहकर दर्द करना । पिघलना ।

टहनी—(सं स्त्री) সৰু ঠাল, ঠানী ।
पेड़ की छोटी डाली ।

टहल—(सं स्त्री) পৰিচৰ্য্যা, আলপৈচান ।
छोटी और हीन सेवा , खिदमत।

टहलना—(क्रि अ) ফুৰা ।
व्यायाम या मन बहलाव के लिये धीरे धीरे चलना ।

टहलनी--[सं स्त्री] পৰিচাৰিকা ।
दासी ।

टहलना—(क्रि स) ফুৰোৱা ।
धीरे धीरे घुमाना या चलाना ।

टहलुआ—(सं पुं) পৰিচাৰক, সেৱক।
सेवक। दास।

टाँकना—(क्रि स) চিলাই কৰা, টুকি থোৱা, মৰণা মৰা।
सूई डोरे से कोई छोटी चीज किसी बड़े चीज से जोड़ना। कोई बात याद रखने के लिये लिख लेना। खाते में चढ़ाना।

टाँका—(सं पुं) গিয়নি, টাপলি, খিলা। পানী থোৱা টৌ।
वह चीज जो दो चीजों को जोड़ कर एक करती हो। पैबन्द। सिलाई। पानी रखने का बड़ा बरतन।

टाँकी—(सं स्त्री) ছেনা।
पत्थर काटने की छेनी।

टांग—(सं स्त्री) ভৰি।
पैर।

टाँगना—(क्रि स) ওলোমাই থোৱা, ফাঁচ দিয়া।
लटकाना। फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा—[सं पुं] এবিধ দুচকীয়া ঘোঁৰা গাড়ী।
एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी।

टाँगी—(सं स्त्री) কুঠাৰ।
कुल्हाड़ी।

टाँचना—(क्रि स) চিলাই কৰা, জঁাত আদিত দাৰ দিয়া।
टाँकना। ठीक करने के लिये काटना या छीलना। काटकर कुछ अंश निकाल लेना।
[क्रि अ) আনন্দতে অধীৰ হোৱা।
बहुत प्रसन्न होकर फूले फूले फिरना।

टाँड़, टाड़—(सं स्त्री) আলনা, কোনো বস্তু থোৱা যতন।
चीजें रखने के लिये बनायी हुई पाटन। (अं-रैक)

टाँड़ा—(सं पुं) ভ্ৰাম্যমান সদাগৰ। এজাক পশু, কুটুম।
व्यापारियोंका काफिला। बिक्रीके माल की खेप। कुटुम्ब। पशुओंका झुंड

टाँयटाँय [सं स्त्री] কৰ্কশ মাত, কেটেৰা মাত।
कर्कश शब्द। व्यर्थ की बकवाद।

टाट—[सं पुं]থৈলা, চট বা পোৰ।
पाट का मोटा सा कपड़ा। जिससे बोरे बिछावन आदि बनते हैं।
महाजन की गद्दी।

टान—[सं स्त्री] টনা কাৰ্য্য।আকৰ্ষণ।
तानने की क्रिया। आकर्षण।
मुद्रण यंत्र में कागज हर बार छापे
जाने का भाव। (अं-इम्प्रेसन)

टानना—(क्रि स) টনা, ছপোৱা।
तानना। खींचना। छापना।

टाप—(सं स्त्री) ঘোঁৰাৰ খুৰা,
ঘোঁৰাৰ খুৰাৰ শব্দ।
घोड़े के पैर का अग्रभाग, खुर।
घोड़े के पैर पड़ने का शब्द।

टापना—[क्रि अ] ঘোঁৰাই খুৰাৰে
কৰা খট্-খট্ শব্দ। জঁপিওৱা।
আশাত থাকি কষ্ট ভোগ কৰা।
घोड़े का खड़ा खड़ा पैर पटकना।
व्यर्थ आसरेमें रहकर कष्ट पाना।

टापा—(सं पुं) আহল-বহল
পথাৰ, ঢাকনী যুক্ত পাচি।
लम्बा चौड़ा मैदान। ढक्कनवाला
टोकरा।

टापू—(सं पुं) দ্বীপ, মাজুলী।
द्वीप।

टारन—(वि) নাশকাৰী।
दूर करनेवाला।

टाल—(सं स्त्री) দ'ম, স্তূপ,
দোকান।
लकड़ी आदि की ढेर या दूकान।
टालने का भाव।

टाल-टूल, टाल-मटोल—[सं स्त्री]
ফাঁকি, ভুই, অস্বীকৃতি।
टालने के लिये बहाना।

टालना—(क्रि स) গুচোৱা,
আঁতৰোৱা, স্থগিত ৰখা, কিবা
অজুহাত দেখুৱাই গা এৰাদিয়া।
हटाना। मिटाना। स्थगित
करना। बहाना करके पीछा
छुड़ाना।

टाली—(सं स्त्री) গৰুৰ গলত
আৰি দিয়া ঘণ্টা। দামুৰি।
बैल आदि के गले में बाँधने की
घण्टी। बछिया।

टिकठी, टिखटी—(सं स्त्री)
কাঁচি কাঠ, চাঙী। শৱ আধাৰ
अपराधी पर कोड़े लगाने लिये
या फांसी का फंदा गलेमें डालनेके
लिये बनाया गया काठका ढांचा।
अरथी।

टिकड़ा—(सं पुं) ঘূৰণীয়া চেপেটা
বস্তু। জুইত সেকি তৈয়াৰ
কৰা ৰুটি।
चिपटा गोल टुकड़ा। आग पर
सेंकी रोटी।

टिकना—[क्रि अ] টিকি থকা,
কিছু সময়লৈ থিৰেৰে থকা।
कुछ समय के लिये रुकना या

ठहरना। कुछ दिनों तक काम देना। स्थित रहना।

टिकरी—(सं स्त्री) একবিধ লুণীয়া মিঠাই, টিকিৰা ।
एक प्रकार का नमकीन पकवान। टिकिया।

टिकली, टिकुली–(सं स्त्री) বৰি, সৰু টিকিৰা। এঠাবে কপালত লগাব পৰা ঘূৰণীয়া সৰু ফোট ।
छोटी टिकिया। औरतों के माथे पर लगाने की काँच आदि की बिंदी।

टिकाऊ—(वि) দৃঢ়, স্থায়ী।
मजबूत। ज्यादा दिन चलनेवाला।

टिकान—[सं पुं] টিকি থকা কাৰ্য্য, জিৰণি ঘৰ।
टिकने की क्रिया या भाव। पड़ाव।

टिकाना—(क्रि स) আশ্রয় দিয়া।
ठहराना। आश्रय देना।

टिकाव—(सं पुं) আশ্রয়, স্থিতি, স্থায়িত্ব।
ठहराव। स्थिति। स्थायित्व।

टिकिया—(सं स्त्री) টিকিৰা।
गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा।

टिकोरा—(सं पुं) আমৰ কলি।
आम का छोटा कच्चा फल।

टिक्कड़—(सं पुं) জুইত সেকা ডাঠ ৰুটি। ডাঙৰ টিকিৰা ।
सेंकी हुई मोटी रोटी। बड़ी टिकिया।

टिघलना—(क्रि अ) গলি যোৱা।
पिघलना।

टिचन—(वि) তৈয়াৰ, উদ্যত, ঠিক।
तैयार। उद्यत। ठीक।

टिटकारना—(क्रि स) টকলিয়াই খেদা (গৰু-ম'হ আদি)
टिक, टिक करके हाँकना।

टिटिहरी—[सं स्त्री] লৰিয়াল বা তিতিয়লি চৰাই ।
एक छोटी चिड़िया। टिट्टिभ पक्षी।

टिड्डी, टोड्डी—(सं स्त्री) কাকতি ফৰিং ।
एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा (अं—लोकस्ट)

टिपाई—[सं स्त्री] টিপি দিয়া বা মালিচ কৰা কাৰ্য্য। টোকা কাৰৰ বানচ।
टिपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टिपारा—(सं पुं) এবিধ টুপী।
एक प्रकार की तिकोनी टोपी।

टिप्पस [सं स्त्री] ঔদ্ধত্য,সহজযুক্তি।
काम निकालने के लिये लगाई जानेवाली सहज युक्ति।

टिमटिमाना—[क्रि अ] টিমিক-টামাককৈ জলি থকা।
[दीपक का]मन्द रूपसे जलना। बुझने पर होकर फिर जल उठना।

टीक—(सं स्त्री) গলপতা।
गलेमें पहनने का एक गहना।

टीकना [क्रि स] তিলক লগোৱা, ৰেখাঙ্কিত কৰা।
टीका या तिलक लगाना। चिह्न या रेखा बनाना।

टीका—[सं पुं]তিলক, শ্ৰেষ্ঠ পুৰুষ। ৰোগ প্ৰতিষেধক ছিটা।
तिलक। श्रेष्ठ पुरुष। सब बातों में बढ़ा चढ़ा। राज तिलक। किसी रोग का प्रतिषेधक चमड़े को चीरकर अन्दर प्रविष्ट करने की क्रिया।
(सं स्त्री) টীকা-টিপ্পনী, ভাষ্য, চিন।
गूढ़ शास्त्रों की व्याख्या। गुण दोष के सम्बन्ध में प्रकट किया जानेवाला मत।

टीकाकार—(सं पु) টীকা লিখক।
टीका लिखनेवाला।

टीप—(सं स्त्री) টুকি ৰখা কাৰ্য্য, টিপি দিয়া কাৰ্য্য, সঙ্গীতৰ কোনো দীঘল সুৰ সংকেতেৰে লিখা কাৰ্য্য।
टिपने की क्रिया या भाव। दबाव। संगीत की लम्बी तान झटपट संकेतसे लिख लेनेका काम।

टीपटाप-[सं स्त्री] আড়ম্বৰ, কৃত্ৰিম শৃঙ্গাৰ।
आडम्बर। बनावटी शृंगार।

टींपना-[क्रि स] টিপি দিয়া হেচি দিয়া, টুকি ৰখা।
दबाना। याद रखने के लिये टांक लेना।

टीम-टाम—(सं स्त्री) সাজন-কাচন।
बनाव शृंगार।

टीला—[सं पुं] টিলা, ওখ ঠাই।
मिट्टी पत्थर का उभरा हुआ ऊँचा भूभाग। छोटी पहाड़ी।

टीस—(सं स्त्री) টিং–টিঙিয়া বিষ, তীব্ৰ বেদনা।
रह रहकर उठनेवाला दर्द।

टुंडा—(स ं पु ं) মৰা গছ, হাত কটা মানুহ ।
ठूँठ । लूला आदमी ।

टुक—(वि) অলপ, কম ।
जरा ।

टुकड़खोर, टुकड़तोड़—(स ं पु ं) পৰাশ্ৰিত। নগণ্য মানুহ ।
पराश्रित । तुच्छ व्यक्ति ।

टुकड़-गदाई—(स ं पु ं) ভিকহু, ভিখাৰী ।
भिखारी ।

टुकड़ा, टुक्का, टूक—(सं पु ं) টুকুৰা, খণ্ড ।
ख ंड । भाग ।

टुकड़ी-(सं स्त्री) সৰু টুকুৰা । দল ।
छोटा टुकडा । दल ।

टुच्चा—(वि) তুচ্ছ, সংকীৰ্ণ ।
तुच्छ । ओछा ।

टुट-पुँजिया—(वि) আটম-টোকাৰী ।
जिसके पास बहुत थोडी पूंजी हो ।

टूँगना-(क्रि स) টাকি-টুকি খোৱা ।
थोड़ा थोड़ा काटकर खाना ।

टूँड़—[स ं पु ं] পৰুৱাৰ শুং ।
कीड़ो के मुँहपर की पतली लम्बी नली । लम्बी पतली नोक ।

टूटना - [क्रि अ] ভঙা বা ছিঙা, অতৰ্কিতে আক্ৰমণ কৰা ।
खण्डित होना । अचानक हमला करना । पृथक होना । शरीरमें ऐंठन सहित पीड़ा होना ।

टूम—(सं स्त्री) গহনা, আভৰণ শৃঙ্গাৰ ।
गहना । बनाव शृंगार ।

टेंट—(स ं स्त्री) কঁকালত মেৰোৱা ধুতীৰ অংশ বিশেষ ।
कमरमें धोती की लपेट ।

टेंटी—(सं स्त्री) এবিধ কাইটীয়া গছ ।
करील का पौधा या फल ।
[स ं पु ं] উদ্ধত ভাবে কথা কওঁতা ।
उद्दण्डता पूर्वक बकवाद करने वाला ।
[वि] উদ্ধত, উদ্দণ্ড ।
चपल । उद्दण्ड ।

टें टें—[सं स्त्री] ভাটৌৰ মাত, ফেচ-ফেচনি ।
तोते की बोली । व्यर्थ की बकवाद ।

टेक—(स ं स्त्री) ঢোকা, ঠেকা, আশ্ৰয়, সঙ্কল্প, গীতৰ প্ৰথম চৰণ ।

भारी वस्तु टिकाये रखनेकी थूनी। सहारा। संकल्प। हठ। गीत का पहला पद।

टेकना—(वि) আশ্ৰয় লোৱা বা ঠেকা দিয়া। আঘাত সহ্য কৰা। सहारा लेना या ढासना लगा देना। पकड़ना। (आघात) रोकना या सहना।

टेकान [सं स्त्री] ঠেকা। জিৰণি ঠাই।
थूनी। विश्राम का स्थान।

टेकी—(सं पुं)দৃঢ়মনা, ডাঠ মনা। हठी।

टेकुआ—(सं पुं) ডাঙৰ টাকুৰী। बड़ी तकली।

टेकुरी-[सं स्त्री]টাকুৰী। লোহাৰ কটা तकली। लोहे का एक औजार।

टेढ़—(सं स्त्री) ভাঁজ লগা। वक्रता।

टेढ़ा-[वि] বেঁকা, ভজীয়া, কঠিন, টেৰেচীয়া, উদ্ধত স্বভাৱৰ। वक्र। तिरछा। कठिन, मुश्किल। उद्धत प्रकृति का।

टेढ़ाई—(सं स्त्री) ভাজ, জটিলতা।
वक्रता।

टेढ़े—(क्रि वि) অকাই-পকাই। घुमाव फिराव के साथ।

टेना—(क्रि स) ধাৰোৱা বা ধাৰ দিয়া বা চোকা কৰা। तेज करने के लिये पत्थर आदिपर हथियार आदि रगड़ना। मूँछ उमेठना।

टेम—(सं स्त्री) জুইৰ শিখা,দীপ-শিখা।
दीपशिखा।

टेर-(सं स्त्री) উচ্চাঙ্গ সুৰ, চিঞৰ, আটাহ।
गानेमें ऊँचा स्वर। ऊँचे स्वर से पुकार।

टेव—(सं स्त्री) অভ্যাস। आदत। एक लोकगीत।

टेवा-(सं पुं) কোষ্ঠী, জন্ম- পত্ৰিকা। जन्म कुंडली।

टेसू-[सं पुं] পলাশ ফুল। শাৰদীয় নব ৰাত্ৰিত হোৱা উৎসৱ বা সেই উৎসৱত গোৱা গীত।
पलास। एक लोग-गीत।

टोंचना—[क्रि स] চিলাই কৰা, বিন্ধি দিয়া।
सिलाई करना। चुभाना।

टोंटा—(सं पुं) টোটা, নল।
कारतूस। पानी गिरने के लिये बरतन में लगाया नल।

टोंटी—[सं स्त्री] সৰু নলী।
तरल पदार्थ गिरने के लिये नल में लगाया छोटा मुँह।

टोकना—[क्रि स] বাধা দিয়া। কাম কৰাৰ মাজতে মাত দিয়া।
किसी काम करते वक्त किसी से बीच में पूछना या रोकना।
(सं पुं) ডাঙৰ পাচি বা বাচন।
बड़ा टोकरा या बरतन।

टोकरा—[सं पुं] পাচি, খৰাহি।
बाँस का बना हुआ बड़ा और गोल पात्र।

टोकरी—[सं स्त्री] সৰু পাচি।
छोटा टोकरा।

टोका—[सं पुं] জোং। কাপোৰৰ আঁচল।
सिरा। नोक। कपड़े आदिका पल्ला।

टोट—(सं स्त्री) ত্ৰুটি, বিচ্যুতি।
कमी। त्रुटि।

टोटका—[सं पुं] জৰা-ফুকা, তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ।
किसी अलौकिक शक्ति या भूत-प्रत पर विश्वास कर किया जाने वाला प्रयोग। जादू। टोना।

टोडिक—(सं पुं) খকুৱা।
पेटू।

टोडिस—[वि] দুষ্ট, উৎপতীয়া।
शरारती

टोडी—[सं पुं] নীচ প্ৰবৃত্তিৰ মানুহ।
नीच और तुच्छ वृत्तिका मनुष्य।

टोड़ी—(सं स्त्री) এক ৰাগ বিশেষ।
एक रागिनी।

टोना—(सं पुं) যাদু। এবিধ বিবাহ গীত।
जादू। एक विवाह गीत।

टोप—(सं पुं) চাহাবী টুপী।
बड़ी टोपी। (अं-हैट)

टोपी—[सं स्त्री] টুপী।
सिर का एक परिधान। धातु की पतली और गहरी ढकनी।

टोल—(सं स्त्री) সমিতি, মণ্ডলী, পঢ়াশালী।
मण्डली। पाठशाला।
[सं पुं] যাত্ৰীৰ ওপৰত লগোৱা বিশেষ কৰ।
यात्रियों पर लगानेवाला विशेष कर।

टोला—(सं पुं) পটি, পাৰা, চুবুৰী।
महल्ला।

टोली (री)—(सं स्त्री) সৰু চুবুৰী। দল।
छोटा महल्ला। समूह, दल।

टोह—[सं स्त्री] অনুসন্ধান, বাতৰি, ঠিকনা।
खोज। खबर, पता।

टोहना—[क्रि अ] ভু-লোৱা, অনুসন্ধান কৰা।
पता लगाना।

टोही-(वि) ভু-লওঁতা।
पता लगानेवाला।

टौरना—(क्रि स) বিচাৰ কৰা, অনুসন্ধান কৰা।
जाँच करना। पता लगाना।

ठ

ठ—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ দ্বাদশ আখৰ।
वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन वर्ण।

ठंठ—(वि) লঠা।
ठूँठा (पेड़)

ठंढ—(सं स्त्री) জাৰ, শীত।
शीत। सरदी।

ठंढई, ठंढाई-[सं स्त्री] ঘেঁটা, জুৰণি।
वे मसाले या शरबत जिनसे शरीर की गरमी शान्त होती और शीतलता आती है। पिसी हुई भांग।

ठंढक—(सं स्त्री) শীত, জাৰ, সন্তোষ, তৃপ্তি।
शीत। जाड़ा। सन्तोष। तृप्ति।

ठंढा(ढा)—(वि) চেঁচা, শীতল। শান্ত
सर्द। शीतल। धीर। शान्त।

ठंढा-युद्ध—[सं पुं] শীতল যুদ্ধ।
शीत युद्ध (अं-कोल्डवार)

ठकुर-सुहाती—(सं स्त्री) তোষামোদ।
खुशामद।

ठकुराइत[यत]-(सं स्त्री)প্ৰভুত্ব । শ্ৰদ্ধা
'ठाकुर' होने का भाव । बड़ों के प्रति होनेवाली श्रद्धा या प्रीति ।

ठकुराइन—(सं स्त्री) গৰাকিনী, ঠাকুৰ বা চৰ্দাৰৰ পত্নী ।
ठकुरानी । ठाकुर की पत्नी ।

ठकुराई-(सं स्त्री) প্ৰভুত্ব, ঠাকুৰৰ পদ, মহতালি ।
ठाकुर का अधिकार, पद या भाव । सरदारी। प्रधानता । बड़प्पन ।

ठगना—(क्रि सं) ঠগোৱা ।
धोखा देकर माल ले लेना । धोखा देना ।
(क्रि अ) ঠগ খোৱা, আচৰিত হোৱা ।
धोखा खाना । चकित रह जाना ।

ठग-पना—(सं पुं) ধূৰ্ত্তালি ।
धूर्तता ।

ठग-विद्या—(सं स्त्री) ধূৰ্ত্তালি, ঠগ-প্ৰবৃত্তি ।
धूर्तता ।

ठगाना—[क्रि अ] ঠগোৱা ।
ठगा जाना ।

ठगिन (नी)—(सं स्त्री) ঠগিনী ।
लुटेरिन । धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री ।

ठगी—(सं स्त्री) ধূৰ্ত্তালি, চালাকি ।
धूर्तता । चालबाजी ।

ठगोरी, ठगौरी—(सं स्त्री) ঠগ-বিদ্যা, যাদুবিদ্যা ।
ठगनेकी विद्या । जादू ।

ठट्ठा—[सं पुं] ঠাট্টা-মস্কৰা ।
परिहास । हँसी मजाक ।

ठठ-(सं पुं) জনসমূহ, জাঁকজমক ।
बहुत सी वस्तुओं का व्यक्तियों या समूह । ठाठ ।

ठठकीला—(वि) ঐশ্বৰ্য্যশালী ।
ठाठदार ।

ठठना—[क्रि स] ৰখা, সজোৱা, একাত্ৰিত কৰা ।
उहराना । सजाना । समूह या दल बनाना ।
(क्रि अ) খমকি ৰোৱা, অলঙ্কৃত কৰা ।
अड़ना । ठाठ बनाना ।

ठठरी—(सं स्त्री) জকা, সাঁচ ।
हड्डियों का ढाँचा । किसी वस्तु का ढाँचा । अरथी ।

ठठाना—[क्रि स] মৰা, কিলোৱা ।
मारना । पीटना ।
(क्रि अ) খিল-খিলাই হহাঁ ।
जोर से हँसना ।

ठठेरा—(सं पुं) কঁহাৰ।
बरतन बनानेवाला।

ठठेरी—(सं स्त्री) কঁহাৰনী, কঁহাৰৰ ব্যৱসায়।
ठठेरे की स्त्री। ठठेरे का काम।
[वि] কঁহাৰ-সম্বন্ধীয়।
ठठेरों का।

ठठोली—(सं स्त्री) ঠাট্টা-মস্কৰা।
हँसी-दिल्लगी।

ठनक—[सं स्त्री] ঢোলৰ শব্দ, মনত পুহি ৰখা বৈৰী ভাব বা দুখ
चमड़े से मढ़े हुए बाजेका शब्द।
टीस। कसक।

ठनकना—(क्रि अ) ঠন্-ঠন্ শব্দ হোৱা। অলপ অলপ বিষোৱা।
ठन ठन शब्द होना। हलकी पीड़ा होना।

ठन ठन गोपाल—(सं पुं) অকামিলা। দুখীয়া মানুহ, ঠন-ঠন মদন গোপাল।
निःसार वस्तु। निर्धन मनुष्य।

ठनना—(क्रि अ) আৰম্ভ হোৱা, যুদ্ধ লগা, তৈয়াৰ হোৱা।
कोई काम तत्परता से आरम्भ किया जाना। (लड़ाई) छिड़ना पक्का होना। उद्यत या तैयार होना।

ठप—(वि) থমকি ৰোৱা।
जो चलता चलता किसी कारण वश रुक गया हो।

ठप्पा—(सं पुं) সাঁচ, সাঁচত কটা লতা-ফুল আদি।
सांचा। सांचेसे बनाये बेल बूटे आदि की छाप।

ठमकना—[क्रि अ] ছেও ধৰা, থমকি ৰোৱা।
ठिठकना। कुछ रुकना।

ठमकाना (कारना)—[क्रि स] থমোৱা।
चलते हुए को रोकना।

ठरना—[क्रि अ] জাৰত ঠক্-ঠক্-কৈ কঁপা।
सरदी से अकड़ना या सुन्न होना।

ठर्रा—[सं पुं] বৰ মোটা সূতা, নিকৃষ্ট মদ।
बहुत मोटा सूत। निकृष्ट शराब।

ठवन—(सं स्त्री) থিয় হোৱা বা বহাৰ কাৰ্য্য বা ভাব।
खड़े होने या बैठने का भाव।

ठस—(वि) ডাঠ, মজবুত, গভীৰ, এলেহুৱা, কৃপণ।
ठोस। कड़ा। मजबूत। भारी। आलसी। कंजूस।

ठसक—(सं स्त्री) ঠেহ, অভিমান, লচপচনি।
गर्वपूर्ण चेष्टा। नखरा। ठाट-बाट।

ठसका—[सं पुं] ঢকা, খুন্দা।
धक्का। ठोकर।

ठसाठस—(क्रि वि) ঠাহ খাই (ভৰি থকা)।
खूब कसकर भरा हुआ।

ठहर—(सं पुं) ঠাই, পাক-ঘৰ।
स्थान। रसोई का स्थान।

ठहरना—(क्रि अ) ৰোৱা। ছাউনি সজা, থিতাপি লগা, ধৈৰ্য্য ধৰা। 'হোৱা' ভাৱ।
चलते चलते कुछ रुकना। डेरा डालना। स्थित रहना। टिकाऊ होना। धैर्य रखना। "है"का भाव।

ठहराना—(क्रि स) ৰখোৱা, ছাউনি সজোৱা, থিৰাং কৰা।
चलने से रोकना। डेरा देना। टिकाना। त करना।

ठहराव—(सं पुं) স্থিৰতা, নিশ্চয়তা, নির্ণয়।
ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिरता। समझौता।

ठहरौनी—(सं स्त्री) যৌতুক আদিৰ পৰিমাণ নিৰ্দ্ধাৰণ।
विवाह में दहेज आदि का निश्चय या करार।

ठहाका—(सं पुं) খিল-খিলনি, অট্টহাস্য।
जोरकी हँसी अट्टहास।

ठाँई—(सं स्त्री) ঠাই।
स्थान।
[वि] ওচৰ, কাষ।
समीप। पास।

ठाँठ—(वि) নীৰস, শুকান।
नीरस। सूखा हुआ।

ठाँयँ—(सं पुं, सं स्त्री) ঠাই।
स्थान।
[अव्य] ওচৰ।
समीप।
(सं स्त्री) বন্দুকৰ শব্দ।
बन्दूक छूटने का शब्द।

ठाँव, ठाँवँ—(सं पुं) ঠাই, নিৰ্দ্ধাৰিত ঠাই।
स्थान। ठिकाना।

ठाँसना—[क्रि स] হেঁচি হেঁচি ভৰোৱা।
ठूँस ठूँस कर भरना।

ठाकुर—[सं पुं] ঈশ্বৰ, দেৱতাৰ মূৰ্ত্তি, ব্ৰাহ্মণ, জমিদাৰ। ক্ষত্ৰিয়,

আৰু নাপিতৰ উপাধি।
देव मूर्ति। भगवान। पूज्य व्यक्ति। जमींदार। क्षत्रियों और नाइयोंकी उपाधि।

ঠাকুৰ-দ্বাৰা—[स पुं] দেৱতাৰ মন্দিৰ। জগন্নাথ মন্দিৰ।
देव मन्दिर। पुरीका जगन्नाथ मन्दिर।

ঠাকুৰ-বাড়ী—(स स्त्री) দেৱালয়, মন্দিৰ।
देव स्थान। मन्दिर।

ঠাকুৰা-[स स्त्री] প্ৰভুত্ব, স্বামিত্ব, শাসন।
स्वामित्व। शासन। ठकुराई।

ঠাঠ—(सं पुं) সাঁচ, সাজন-কাচন, আড়ম্বৰ। দল।
लकड़ी या बाँस का बना हुआ ढाँचा (अं—फ्रेम)। शृंगार। सजावट। आडम्बर। ढंग। सामग्री। समूह, अधिकता।

ঠাঠ-বাট-[सं पुं] সাজন-কাচন, আড়ম্বৰ।
सजावट। तड़क-भड़क।

ঠাঠৰ—(सं पुं) বাঁহৰ চিল্লিঙি, জঁকা, পাৱৰ-বাহ।
बाँस की टट्टा। अस्थि पंजर। कबूतर खाना। ठाट—बाट।

ঠাননা—[क्रि स] সংকল্প কৰা, আৰম্ভ কৰা।
अनुष्ठित करना। पक्का करना। दृढ़ संकल्प करना।

ঠাম—[सं पुं] স্থান, মুদ্ৰা।
स्थान मुद्रा।

ঠাৰ—[सं पुं] অত্যধিক জাৰ, বৰফ।
बहुत अधिक जाड़ा। हिम।

ঠালা-(सं पुं) নিবনুৱা অৱস্থা।
रोजगार का न होना। बिलकुल अभाव।
(वि) নিবনুৱা। এলেহুৱা।
बेकार या निठल्ला।

ঠালী-[वि] নিবনুৱা। শূন্য, খালি।
जिसे कुछ काम-धाम न हो। निठल्ला। खाली। रिक्त।

ঠাহনা—(क्रि स) সঙ্কল্প কৰা, নির্ণয় কৰা।
संकल्प करना। मनमें विचार पक्का करना।

ঠিগনা—(वि) চুটি চাপৰ।
नाटे कद या आकृति का।

ঠিকানা—(सं पुं) ঠিকনা, বাস-স্থান। স্থিৰতা।
जगह। निवास स्थान। स्थिरता

ठिठकना—(क्रि अ) থমকি ৰোৱা, স্তম্ভিত হোৱা।
चलते चलते अचानक रुक जाना। स्तंभित होना।

ठिठरना, ठिठुरना— (क्रि अ) জাৰতে কঁপা, ঠেঁটুৰা লগা।
सरदी से एंठना या सिकुड़ना।

ठिनकना—(क्रि अ) বৈ-বৈ কন্দা।
रुक रुककर रोना।

ठिलिया— [सं स्त्री] মাটিৰ টেকেলি।
मिट्टी का छोटा घड़ा।

ठिलुआ—[वि] নিবনুৱা। এলেহুৱা
निठल्ला।

ठिल्ला—[सं पुं] মাটিৰ কলহ।
मिट्टी का घडा।

ठीक—[वि] ঠিক, উচিত, উপযুক্ত।
यथार्थ। उपयुक्त सही। शुद्ध।
(क्रि वि) উচিত ভাবে।
उचित रूप से।
(सं पुं) পকা বন্দোবস্ত।
पक्की बात। स्थिर प्रबन्ध।

ठीक-ठाक— [सं पुं] নিশ্চিত ব্যৱস্থা।
निश्चित प्रबन्ध।
(वि) ভাল ৰকমে সাজু। সুসজ্জিত।
अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार।

ठीकरा—(सं पुं) খোলাকটি, ভিক্ষা-জুলি। নগণ্য বস্তু।
मिट्टी के बरतन का टुकड़ा। भिक्षा पात्र। तुच्छ वस्तु।

ठीका-(सं पुं) ঠিকা হিচাপ।
धन आदि के बदलेमें कोई काम करने की जिम्मेदारी लेना। इजारा। पट्टा।

ठीका-पत्र—(सं पुं) ঠিকা-পত্ৰ।
ठीके के सम्बन्धमें लिखी शर्तों वाला पत्र या कागज।

ठीकेदार—(सं पुं) ঠিকাদাৰ।
ठीका लेनेवाला।

ठीवन—(सं पुं) থু বা থুই।
थूक।

ठीहा—(सं पुं) পীৰা বা গাদী। সীমা।
बैठने के लिये ऊँचा स्थान या गद्दी। सीमा।

ठुकना-[क्रि अ] মৰা হোৱা (গজাল আদি)। আৰ্থিক ক্ষতি হোৱা।
ठोका जाना। आर्थिक हानि होना।

ठुकराना—[क्रि स] লথিওৱা, অনাদৰ কৰা।

ठोकर लगाना । तुच्छ समझकर दूर हटाना ।

ठुमकना—[क्रि अ] থুক-থাককৈ খোজ কঢ়া। ঘুগুৰা বান্ধি নচা।
बच्चों का उमंग पैर पटकते हुए चलना। नाच में घुघरू बजाते हुए चलना ।

ठुमकी—(सं स्त्री) থমকি থমকি যোৱা । এবিধ লুনীয়া কটী ।
रुक रुककर चलने की क्रिया या भाव । छोटी नमकीन पूरी ।

ठुमरी—[सं स्त्री] এবিধ-গীত ।
एक प्रकार का संगीत ।

ठुसना—[क्रि अ] হেঁচি হেঁচি ভৰোৱা ।
कस कर भरा जाना ।

ठुसाना—(क्रि स) পেট পুৰাই খুওৱা । ঠাহি ভৰোৱা ।
पेट भर खिलाना । कसकर भरवाना ।

ठूँठ—(सं पुं) শুকান গছ, মৰা গছ । হাত কটা মানুহ ।
सूखा पेड़ । जिसका हाथ कटा हो ।

ठूँठा—[वि] লঠা । হাত কটা মানুহ খালি ঠাই । बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़) । कटा हाथवाला । खाली ।

ठूँसना,ठूसना—[ক্রিস] পেট পুৰাই খোৱা,হেঁচি'হেঁচি ভৰোৱা । खूब कसकर भरना । पेट भर खाना ।

ठेंगा—[सं पुं] বুঢ়া আঙুলি ।
अंगूठा ।

ठेंठी—(सं स्त्री) কনামাকৰি । বোতল আদিত লগোৱা টিপা । कान की मैल । बोतल आदि की डाट ।

ठेक—[सं स्त्री] ঠেকা । বাচনৰ তিল । যোঁৱাৰ এবিধ চাল ।
चाँड़ । सहारे की टेक । पेंदा । घोड़ों की एक चाल ।

ठेकना—(क्रि स) ঠেকা দিয়া ।
सहारा लगाना ।
(क्रि अ) টিকি থকা । বৈ থকা ।
टिकना । ठहरना ।

ठेका—[सं पुं] ঠেকা, আশ্রয় স্থল । তবলাৰ তাল । ঠিকা । আঘাত।
सहारे की वस्तु । ठहरने या रुकने की जगह । तबले की ताल । ठोकर । ठीका ।

ठेठ— (वि) সকলো, বিশুদ্ধ, অকাত্রম, আৰম্ভ ।
बिलकुल । खालिस । अकृत्रिम । शुद्ध । शुरू ।

[सं स्त्री] সহজ সৰল ভাষা।
सीधी सादी बोली।

ठेलना—(क्रि स) ঠেলি নিয়া।
নিজৰ দায়িত্বৰ বোজা আনক দিয়া।
धक्का देकर आगे बढ़ाना। अपना दायित्व दूसरे पर रखना।
[क्रि अ] বলপূৰ্ব্বক কৰা।
बल प्रयोग या जबरदस्ती करना।

ठेला—(सं पुं) ঠেলা ক্ৰিয়া।
ঠেলা গাড়ী, ঠেলা-ঠেলি।
ठेलने की क्रिया या भाव।
ठेलकर चलाई जानेवाली गाड़ी।
धक्का। भीड़-भाड़।

ठेस—[सं स्त्री] আঘাত।
हलका आघात।

ठोंकना—(क्रि स) মৰা (গজাল আদি); কোবোৱা।
अन्दर घँसाने के लिये ऊपर से चोट लगाना। प्रहार करना।

ठोंक-पीट—(सं स्त्री)(গজাল আদি) মৰা ক্ৰিয়া।
ठोंकने, पीटने या मारने की क्रिया या भाव।

ठोकर—[सं स्त्री] উজুটি, গোৰ।
कंकड़ पत्थर आदि से पैर में लगनेवाली आघात। जूते के अग्रभाग से किया जानेवाला आघात।

ठोड़ी (ढ़ो)—(सं स्त्री) থুঁতৰী, দাড়ি।
चिबुक। दाढ़ी।

ठोँर—(सं पुं) এবিধ মিঠাই।
চৰাইৰ ঠোঁট।
एक प्रकार की मीठी पकवान।
पक्षियों की चोंच।

ठोस—(वि) মৌলিক, দৃঢ়, মজবুত।
जो खोखला न हो, दृढ़। मजबूत।

ठौर—(सं पुं) ঠাই, সুবিধা।
जगह। मौका।

ठौर-ठिकाना—[सं पुं] নিৰ্দিষ্ট স্থান। (কথাৰ) দৃঢ়তা বা নিশ্চয়তা।
रक्षित रूपसे रहनेका कोई स्थान। (बात में) दृढ़ता या निश्चय।

ড

ড—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ ত্ৰয়োদশ আখৰ।
वर्णमालाका तेरहवाँ व्यंजन वर्ण।

डंक-(सं पुं) শুং (বিছা, মৌমাখি, আদিৰ)। নাগেৰা।
बिच्छू, मधुमक्खी आदिका काँटा जिसे शरीर में घुसा कर वे जहर फैलाते हैं। डंका।

डंकना—[क्रि. अ] গৰ্জন কৰা।
गरजना।

डंका—(सं पुं) নাগেৰা।
एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा।

डंकिनी-[सं स्त्री] ডাইনী।
डाकिनी।

डंगर—(सं पुं) পশু, গৰু-ম'হ।
चौपाया। पशु।

डंगरी—(सं स्त्री)বাঙী জাতীয় ফল, ডাইনী।
ककड़ी। डायन।

डंगू ज्वर—(सं पुं) এবিধ জ্বৰ।
एक प्रकार का ज्वर।

डंठल-(सं पुं) ঠানি বা ঠালি।
छोटे पौधों को पेड़ी और शाखा।

डंठी-(सं स्त्री) ঠানি বা ঠালি।
डंठल। किसी चीजमें लगा हुआ कोई लम्बा अंश।

डंड—[सं पुं] ডাঁৰ, ব্যায়াম, অৰ্থ দণ্ড।
डंडा। बाँह। एक प्रकार की कसरत। अर्थ दण्ड।

डंडवत—(सं पुं) দণ্ডৱত, মাটিত দীঘল দি পৰি কৰা সেৱা।
साष्टांग प्रणाम।

डंडा-[सं पुं] লাঠী, টোকোন।
मोटी लाठी।

डँड़िया—[सं स्त्री] এবিধ শাৰী।
एक प्रकार की साड़ी।
[सं पुं] কৰ আদায়কাৰী।
कर बसूल करनेवाला।

डंडी-[सं स्त्री] ডাব, তুলাচনিৰ মাৰি, পদুমৰ ঠাৰি।
छोटी लम्बी पतली लकड़ी।

हत्था । तराजू की डांड़ी । कमल आदि की लम्बी नाल ।
[वि] टुटकीया ।
चुगलखोर ।

डँडोरना—[क्रि स] বিচৰা । खोजना ।

डंफना—[क्रि स] চিঞৰা বা ৰিঙিয়াই মতা আটাহ পাৰা । जोरसे चिल्लाना या रोना ।

डम्बर—[सं पुं] আড়ম্বৰ, বিস্তাৰ, এবিধ চন্দ্ৰতাপ । आडम्बर । विस्तार । एक प्रकार का चँदोवा ।

डंस, डाँस—(सं पुं) ডাঁহ । मक्खी जैसा एक प्रकार का मच्छर ।

डक—(सं पुं) পাল তৰি দিয়া কাপোৰ, জাহাজৰ ডেক । जहाजों के पाल का टाट । एक प्रकार का मोटा कपड़ा । जहाज की ऊपरी छत ।

डकरना—[क्रि अ] হেম্বেলিয়া । बैल या भैंसे का बोलना ।

डकारना—(क्रि स) উগাৰ, গৰ্জন । खाने के बाद पेट की वायु शब्द पूर्वक निकालना । किसी की चीज हड़प लेना । शेर आदिका दहाड़ना ।

डकैत—(सं पुं) ডকাইত । डाकू ।

डग—(सं पुं) খোজ । फाल । कदम ।

डगडगाना, डगडोलना डगमगाना —(क्रि अ) থৰক্-বৰক কৰা । लड़खड़ाना । विचलित होना । (क्रि स) ইফালে সিফালে লৰোৱা, বিচলিত কৰা । इधर उधर हिलाना या झूलना । विचलित करना ।

डगर—[सं स्त्री] বাট । मार्ग ।

डगरा—[सं पुं] কৰণি । बाँस की पट्टियों का बना छिछला पात्र ।

डगाना, डिगाना—(क्रि स) আতৰোৱা, বিচলিত কৰা । खिसकाना । विचलित करना । हिलाना ।

डटना—(क्रि अ) দৃঢ়ভাবে থিয় দি থকা । जमकर खड़ा होना । अपनी जगह पर अड़ना ।

(क्रि स) চোৱা ।
देखना ।

डढ़्ढारा—[वि] ডাঢ়ীয়া, বীৰ ।
लम्बी दाढ़ीवाला । वीर ।

डढ़ना—(क्रि स) দগ্ধ হোৱা ।
ঈৰ্ষা কৰা । जलना ।

डढ़ार (ा), **डढ़ियल**, **डढ्योरा**—(वि) ডাঢ়ীয়া ।
जिसकी डाढ़ें हों । जिसकी दाढ़ी हो ।

डपटना, डपेटना—(क्रि स) গালি দিয়া, ডাবি বা ধমক দিয়া ।
डाँटना । घुड़कना ।

डपोर शंख—[सं पुं] ওফাইড়াং মাৰোঁতা, কোৱাভাতুৰী ।
डींग मारनेवाला । बड़े डील डौल का, पर मूर्ख ।

डफ—[सं पुं] ঢোল ।
चमड़ा मढ़ा एक प्रकार का बड़ा बाजा ।

डफली—(सं स्त्री) সৰু ঢোল ।
छोटी डफ ।

डफाली, डफ्फाली—(सं पुं) ঢুলীয়া ।
डफ आदि बजानेवाला ।

डबकना—[क्रि अ] বিষ উঠা, চকুলো ওলোৱা ।
पीड़ा करना । टीस मारना ।
आँखों में आँसू आना ।

डबडबाना—(क्रि अ) চকু চল-চলীয়া হোৱা ।
आँसू से आँखें भर आना ।

डबरा—(सं पुं) ডোবা ।
पानी का छिछला गड्ढा ।

डबल-रोटी—[सं स्त्री] পাৰুটি ।
पावरोटी ।

डब्बा—(सं पुं) টেমা, ৰেলগাড়ীৰ ডবা ।
ढक्कनदार गहरा बरतन । रेलगाड़ी में की एक गाड़ी ।

डभकना—[क्रि अ] জুবুৰিয়া, চকু চল-চলীয়া হোৱা ।
पानी में डूबना, उतराना । आँखों में जल भर आना ।

डमरू—[सं पुं] ডম্বৰু ।
एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ छोटा बाजा ।

डमरू-मध्य—[सं पुं] প্ৰণালী, যোজক ।
जल या स्थल का वह पतला भाग जो दो बड़े खण्डों को आपस में मिलाता है ।

डर—[सं पुं] ভয় ।
भय । आशंका ।

डरना, डरपना—(क्रि अ) ভয় কৰা ।
भयभीत होना । आशंका करना ।
डरपाना, डरवाना, डराना—[क्रि स] ভয় দেখুওৱা ।
भयभीत करना ।
डरपोक—(वि) ভীৰু, কাপুৰুষ ।
भीरु । कायर ।
डरावना—(वि) ভয়ানক, ভয়ঙ্কৰ ।
भयानक । भयंकर ।
डरावा—(सं पुं) ভয় লগা কথা ।
डराने के लिये कही हुई बात ।
डला—[सं पुं] খণ্ড । চপৰা । টুকুৰা ।
खण्ड । ढेला । टोकरा ।
डलिया—[सं स्त्री] ডলা ।
छोटी टोकरी । एक प्रकार की तश्तरी ।
डली—(सं स्त्री)কটা তামোল । খণ্ড ।
कटी हुई सुपारी । खण्ड ।
डसना, (डँसना)—(क्रि अ)
দংশন কৰা ।
दंशन करना ।
डसाना—[क्रि स] দংশন কৰোৱা ।
বিছনা পাৰি দিয়া । बिछाना ।
दशन करवाना ।
डहकना—(क्रि. स) ঠগোৱা ।
ठगना ।
(क्रि अ) ঠগ খোৱা, বিলাপ কৰা, বিয়পি পৰা ।
धोखा खाना । विलाप करना । फैलना ।
डहकाना—[क्रि अ] ঠগ খোৱা ।
ठगा जाना ।
(क्रि स) ঠগোৱা, দিম দিম বুলি নিদিয়া ।
ठग लेना । कोई वस्तु ललचा कर न देना ।
डहडहा—(वि) ভৰপুৰ, প্ৰসন্ন ।
हरा भरा । प्रसन्न । ताजा ।
डह डहाना—[क्रि सं) নদন-বদন হোৱা, আনন্দিত হোৱা ।
पेड़ पौधों का हराभरा या ताजा होना । प्रसन्न या आनन्दित होना ।
डहना—(क्रि अ) দগ্ধ হোৱা, ঈৰ্ষা কৰা ।
जलना । द्वेष करना ।
(क्रि स) দগ্ধ কৰা, কষ্ট দিয়া ।
जलाना । कष्ट पहुँचाना।
डहर—[सं स्त्री] বাট, হাতী পটি ।
रास्ता । आकाश-गंगा ।
डहरना—(क्रि अ) গতি কৰা ।
चलना ।
डाँक—(सं स्त्री) এবিধ উজ্জল ধাতু । বমি বা বাঁতি ।

एक प्रकार का चमकीला पत्तर जो नगीनों की चमक बढ़ाने के लिये उनके नीचे लगाया जाता है या सजावट के लिगे फूल आदि में लगाया जाता है। कै या वमन।

डाँकना—(क्रि स) ডেং মেলি লগ পোৱা।
लाँघना।
(क्रि अ) বমি কৰা, বঁতিওৱা।
कै करना।

डाँगर—(सं पुं) পশু, মূৰ্খ।
पशु। मूर्ख।
[वि] লেবেলা, ক্ষীণ।
दुबला-पतला।

डाँट- डपट, डाँटफटकार—(सं स्त्री) ডাবি-ধমকি।
क्रोधपूर्वक और डाँट कर कही जानेवाली बात।

डाँटना—[क्रि स] ধমকি দিয়া।
घुड़कना।

डाँड़, डाँड़ा—[संपुं] ছৰী, সীমা, অৰ্থদণ্ড।
डण्डा। नाव खेलने का बल्ला। सीमा। अर्थ डंड।

डाँड़ी—(सं स्त्री) আঁচ, ৰেখা, নাৱৰীয়া, মৰ্য্যাদা।
लकीड़। डाँड खेनेवाला आदमी। मर्यादा।

डाँवाँ डोल—(वि) অস্থিৰ।
अस्थिर।

डाइन, डायन-(सं स्त्री) ডাইনী, ভূতুনী, যাদুবিদ্যা জনা তিৰোতা।
भूतनी। कुदृष्टि या जादू टोने वाली औरत।

डाकखाना—(सं पुं) ডাক-ঘৰ।
डाकघर।

डाकना—[क्रि अ] জঁপিয়াই পাৰ হোৱা।
कूदकर लाँघना।

डाकर—(सं पुं) নদীৰ চৰ।
नदी के किनारे की वह भूमि जहाँ नदी द्वारा लायी मिट्टी जमी रहती है।

डाका—(सं पुं) ডকাইতি, লুট-পাট।
बटमारी। लूट।

डाका-जनी—(स स्त्री) লুট-পাট ক্ৰিয়া।
डाका डालने का काम।

डाकिनी—(सं स्त्री) ডাইনী।
डाइन।

डाकू—[सं पुं] ডকাইত।
डाका डालनेवाला।

डाकोर—(सं पुं) ঠাকুৰ, ভগৱান, বিষ্ণু।
ठाकुर। विष्णु भगवान।

डाग—(सं स्त्री) ঢোলৰ মাৰি।
ढोल आदि बजाने की लकड़ी।

डाट—(सं स्त्री) ঠিলা, সোপা।
बोतल आदि बन्द करने की लकड़ी आदि की छिप्पी।

डाटना—(क्रि स) সোপা দিয়া, পেট-পূৰাই খোৱা।
एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कस कर बैठाना। छेद या मुँह बन्द करना। पेटभर खाना।
[क्रि अ] নিসঙ্কোচ ভাবে সম্মুখত আসন গ্ৰহণ কৰা।
डटकर सामने बैठना।

डाढ़—(सं स्त्री) জামি দাঁত।
चबाने के चौड़े दाँत। दाढ़।

डाढ़ना—(क्रि सं) দগ্ধ কৰা, দুখ বা কষ্ট দিয়া।
जलाना। संतप्त या दुखी करना।

डाढ़ा—[सं स्त्री] দাবানল, জুই।
दावानल। आग।
(सं पुं) দীঘল ডাড়ি থকা মানুহ।
बड़ी दाढ़ीवाला।

डाढ़ी—[सं स्त्री] ডাড়ি।
दाढी।

डाबर—[सं पुं] ডবা।
गन्दा पानी जमा हुआ गड्ढा।

डाभ—(सं पुं) কুশ, আমৰ কুঁহি-পাত, ডাব নাৰিকল।
कुश। आम का मञ्जरी। कच्चा नारियल।

डामर—(सं पुं) শিৱ-তন্ত্ৰ, হৈ-চৈ, আড়ম্বৰ। শালগছৰ এঠা।
शिव-तन्त्र। हलचल। आडम्बर। साल वृक्ष का गोंद।

डामल—[सं पु] আজীৱন কাৰা-বাস, নিৰ্বাসন। দণ্ড।
आजीवन कारावास। निर्वासन दण्ड।

डामाडोल, डाँवाडोल—(वि)
অস্থিৰ, বিচলিত।
चञ्चल। विचलित।

डायरी—(ग स्त्री) দিন পঞ্জী।
दैनिकी।

डार—[सं स्त्री] ঠানি, ডলা।
डाल। बाँसकी डलिया।

डाल—[सं स्त्री] ঠানি, ডলা, বিবাহাদিত ব্যৱহৃত সহস্ৰ

डला ।
पेड़ की शाखा । तलवार का फल । बाँस की डलिया । विवाह में डलिया में सजाकर दी जाने वाली दहेज आदि की वस्तु ।

डालना—(क्रि सं) পেলোৱা, মিলোৱা বিস্তৃত কৰা ।
किसी चीज में गिराना या छोड़ना । मिलाना । फैलाना । बिछाना ।

डाली—(सं स्त्री) ডলা, উপহাৰ, জৰা-চলা ।
बाँस की डलिया । उपहार की वस्तु । अनाज को भूसे से अलग करने की क्रिया या भाव ।

डावरा—[सं पुं] বেটা ।
बेटा ।

डासना—(क्रि सं] পাৰি দিয়া, দংশন কৰা ।
बिछाना । डँसना ।
(सं पुं) बिछना ।
बिस्तर ।

डाह—(सं स्त्री) দাহ ।
ईर्ष्या ।

डाहना—[क्रि सं] আনৰ মনত ঈৰ্ষাৰ সৃষ্টি কৰা ।
किसी के मन में दाह या ईर्ष्या उत्पन्न करना । कष्ट पहुँचाना ।

डाही—(वि) দাহকুৰীয়া ।
डाह या ईर्ष्या करनेवाला ।

डिंगर—(सं पुं) শকত মানুহ, নীচমানুহ, গুলাম, দাস ।
मोटा आदमी । पाजी । गुलाम ।

डिंगल—[वि] নীচ ।
नीच ।
[सं स्त्री] ৰাজস্থানৰ ভাট আৰু চাৰণ কবি সকলে ব্যৱহাৰ কৰা ভাষা ।
राजस्थानी भापा ।

डिंडम—[सं पुं] ডম্বৰু ।
डुग-डुगी ।

डिंब—(सं पुं) ডিমা, কণী, কন্দা-কটা, যুঁজ ।
जीव जन्तुओं में स्त्री जातिका वह जीवाणु जो वीर्य के संयोग से बच्चों का रूप धारण करता है । अंडा । रोना धोना । दंगा ।

डिंभ—(सं पुं) কেচুৱা, মূৰ্খ, আড়ম্বৰ, অভিমান ।
छोटा बच्चा । मूर्ख । आडम्बर । अभिमान ।

डिक्री, डिगरी–[सं स्त्री] পৰীক্ষাৰ উপাধি, অংশ, ডিক্ৰী
परीक्षाओं की उपाधि। अंश, कला। दीवानी अदालत का वादी के पक्ष में जयपत्र।

डिठौना, डिठौरा—[सं पुं] নজৰ নালাগিবলৈ কেচুৱাৰ কপালত দিয়া ফোট।
बच्चों के मस्तक पर लगाया जानेवाले काला काजल का टीका।

डिबिया—[सं स्त्री] টেমা বা টেমী।
छोटा डिब्बा।

डिमडिमी—(सं स्त्री) ঢোলোক, ঢুলকি।
डुग्गी बाजा।

डींग—(सं स्त्री) ওফাইডাং।
घमण्ड में कहीं जानेवाली बात।

डीठ—[सं स्त्री] দৃষ্টি, নজৰ।
दृष्टि। बुरी नजर।

डीठना—(क्रि अ) দৃষ্টিগোচৰ হোৱা।
दिखाई देना।

(क्रि अ) চোৱা, নজৰ কৰা।
देखना। नजर लगाना।

डील–[सं पुं]প্ৰাণীৰ শৰীৰৰ আকৃতি।
प्राणियों के शरीर की आकृति।

डीह—(सं पुं) গ্ৰাম-দেৱতা।
ग्रामदेवता।

डुंड, डुगडुगी, डुग्गी—[सं स्त्री] খঞ্জৰী নাইবা ডম্বৰু।
चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा।

डुक, डुक्का–(सं पुं) ভুকু।
मुक्का।

डुबकी—[सं स्त्री] ডুব, বুৰ।
पानीमें डूबने की क्रिया या भाव। गोता।

डुबाना, डुबोना–(क्रि अ) বুৰোৱা, নষ্ট কৰা।
पानी या तरल पदार्थ में समूचा डालना। नष्ट करना।

डुबाव—[सं पुं] ডুব মাৰিব পৰা গভীৰতা।
डूबने भर की गहराई।

डुलाना–[क्रि स] লৰোৱা, গুচোৱা।
डोलने में प्रवृत्त करना। हटाना।

डूँगर, डूँगा—(सं पुं) সৰু পাহাৰ, গাওঁ।
छोटी पहाड़ी। बस्ती।

डूबना—(क्रि अ) বুৰ দিয়া, অস্ত যোৱা, নষ্ট হোৱা। তল্লীন হোৱা।
पानी या किसी तरल पदार्थ में पूरा समा जाना। सूर्य चन्द्र आदि का अस्त होना। नष्ट होना। तल्लीन होना।

डेंड़सो—(सं स्त्री)ধুন্দুলি, নিলাজি।
ककड़ी जातीय सब्जी।

डेड़हा, डोरहा—(सं पुं) ঢোঁৰা-গা।।
पानी में रहनेवाला एक विषहीन सर्प।

डेढ़—(वि) ডেৰ।
एक ओर उसका आधा।

डेढ़ा, डेवढ़ा, ड्योढ़ा—(वि) ডেৰ গুণ।
डेढ गुना।

डेरा—(सं पुं) छाउनी, तम्बू।
टिकान। पड़ाव। खेमा।
(वि) बाउँफाल।
बाँया।

डेराना—[क्रि अ] ভয় পোৱা।
डरना।
(क्रि स) ভয় খুওৱা।
किसी को डर दिखाना।

डेला—(सं पुं) চকু কোত, কোনো বস্তুৰ টুকুৰা, চপৰা।
आँख का कोया। किसी चीजका टुकड़ा। ढेला।

डेहरी—(सं स्त्री) ভাত থবলৈ সৰু বাচন। বাটচ'ৰা।
अन्न रखने का छोटा बरतन। घर की दहलीज।

डैन, डैना—[सं पुं] ডেউকা, পাখি।
चिड़ियों का पंख।

डोंगर—(सं पुं) সৰু পাহাৰ, টিলা।
पहाड़ी। टीला।

डोंगा—[सं पुं] ডিঙ্গা, ডাঙৰ নাও।
बड़ी नाव।

डोंगी—(सं स्त्री) সৰু নাও।
छोटी नाव।

डोई—(सं स्त्री) হেঁতা, কৰচ।
घी निकालने या चासनी चलाने की करछी।

डोकी—(स ं स्त्री) কাঠৰ বাটি ।
काठ की कटोरी ।

डोम, डोमड़ा—[सं पु ं] ডোম,
চাড়াল ।
एक जाति का नाम ।

डोमनी—[सं स्त्रो] ডুমুনী ।
डोम जातीया स्त्री ।

डोर-[स ं स्त्री] সৰু সূতা, সহায় ।
पतला धागा । सहारा ।

डोरा—(सं पु ं) ডৰি, স্নেহপাশ,
কাজলৰ ৰেখা ।
मोटा धागा । स्नेह-सूत्र । काजल
या सुरमें की रेखा ।

डोरी —[स ं स्त्री] বচি, বন্ধন ।
रस्सी । बन्धन ।

डोरे—(क्रि वि) লগতে ।
साथ । संग ।

डोल-(सं पु ं) লৰ-চৰ কৰা কাৰ্য্য,
হুলস্থূল, ডাঙৰ কলহ ।
हिलने डोलने की क्रिया या भाव ।
हलचल । पानी रखने का बड़ा
बरतन । झूला । पालकी ।
(वि) চঞ্চল ।
चंचल ।

डोलची—(स ं स्त्री) সৰু পাত্ৰ ।
छोटा डोल ।

डोलना—(क्रि स) গতি কৰা,
লৰচৰ কৰা, বিচলিত হোৱা ।
गति होना । हिलना । चलना ।
विचलित होना ।

डोला—(सं पु ं) দোলা ।
बड़ी पालकी । झूले का झोंका ।

डोलाना—(क्रि स) চুলনি দিয়া,
লৰোৱা ।
डोलनेमें प्रवृत्त करना । हिलाना ।

डोली—(स ं स्त्री) সৰু দোলা ।
छोटी पालकी ।

डौंड़ी— (सं स्त्री) দবা বাদ্য,
ঘোষণা ।
डुग डुगी । घोषणा ।

डौल—(स ं पु ं) আকৃতি, গাঁচ,
যুক্তি তর্ক ।
आकृति । ढाँचा । युक्ति ।

डौलियाना—(क्रि स) ফুচুলিয়া,
গঢ় দিয়া ।
फुसलाकर अपने अनुकूल बनाना ।
गढ़कर ठीक करना ।

ड्योढ़ी—[स ं स्त्री] দুৱাৰ-ডলি ।
फाटक । बाहरी दरवाजा ।

ड्योढ़ीदार—(स ं पु ं) দুৱৰী, পহ-
ৰদাৰ ।
फाटक पर रहनेवाला । पहरेदार ।
दरवान ।

ढ

ढ—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ চতুৰ্দশ আখৰ।
वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण।

ढँकना, ढाँकना—(ক্রি স) ঢাকনি দিয়া।
ऊपर से कोई वस्तु रखकर ओट में करना।

ढँख—(सं पुं) পলাশৰ পুলি।
ढाक या पलास का पौधा।

ढंग— (सं पु) ধৰণ, ঠাঁচ, আচৰণ।
कोई काम करने की शैली। कोई काम करने का प्रकार। रचना। युक्ति। चाल-चलन।

ढँगलाना— (ক্রি স) বগৰাই পেলোৱা।
लुढ़काना।

ढँगी—(वि) কাঁকিদাৰ, চতুৰ।
चालबाज। चतुर।

ढँढोरना—(ক্রি স) বিচৰা।
ढूँढ़ना।

ढंढोरा—(सं पुं) ঢোল, ঢোল-পিটি শুনোৱা ঘোষণা।
ढोल। डौंडी। ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा।

ढँढोरिया—(सं पुं) ঢোলপিটি জাননী দিওঁতা।
मुनादी करनेवाला।

ढँपना, ढकना, ढपना— (ক্রি অ) ঢাকখাই থকা।
किसी वस्तु के नीचे या आड़में होने से दिखाई न पड़ना।
[सं पुं] ঢাকনি।
ढक्कन।
[ক্রি স] ঢাকনি দিয়া।
ढाँकना।

ढकनी—(सं स्त्री) ঢাকনি।
ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

ढकेलना— [ক্রি স] ঢকিয়াই নিয়া।
धक्के से या ठेल कर आगे गिराना या बढ़ाना।

ঢকোসলা— (সং পুং) কৌশল, আড়ম্বৰ। বাহিৰে বং-চং ভিতৰে কোৰাভাতুৰী।
कौशल। आडम्बर।

ঢক্কন— (সং পুং) ঢাকনি।
ढाकने की वस्तु।

ঢক্কা— [সং পুং] ঢাক-ঢোল্।
बड़ा ढोल।

ঢম্বৰ—[সং পুং] জঞ্জাল, আড়ম্বৰ।
झंझट। आडम्बर।

ঢড্ঢা—(বি) কুৎসিত, অশুৱনি
आवश्यकता से अधिक बड़ा और बेढंगा।
[সং পুং] ধাৰণ, সাজ-সজ্জা।
ढाँचा। आडम्बर।

ঢপোর শংখ—[সং পুং] ধূৰ্ত্ত, আড়ম্বৰ-পূৰ্ণ।
धूर्त। आडम्बर धारी।

ঢব— [সং পুং] ধৰণ, প্ৰণালী, স্বভাৱ।
कोई काम करने की विशेष प्रक्रिया। तरीका। बनावट। उपाय। स्वभाव। आदत।

ঢৰকনা, ঢলকনা, ঢুলকনা— (ক্ৰি স) ঢলি পৰা। বাগৰি পৰা।
ढलकना। लेटना।

ঢৰকা— (সং পুং) পশুক ঔষধ আদি খুৱাবলৈ বাহৰ চুঙা।
चौपायों को दवा आदि पिलाने के लिये बाँस का चोंगा।

ঢৰকানা, ঢলকানা, ঢুলকানা— [ক্ৰি স] ঢালি দিয়া। বোৱাই দিয়া।
ढलकने में प्रवृत्त करना।

ঢৰকী—(সং স্ত্ৰী) মাকো।
करघे का वह अंग जिससे सूत ताने के आरपार आता जाता है।

ঢৰ কোঁহা—(বি) বাগৰি যাওঁতা।
ढरकने या ढलनेवाला।

ঢৰনি— [সং স্ত্ৰী] বাগৰি যোৱা ক্ৰিয়া। হালি-জালি পৰা ক্ৰিয়া। ঢাল, দয়ালু গুণ।
ढलने की क्रिया या भाव। हिलने डोलने की क्रिया। झुकाव। दयालुता।

ঢৰহৰা, ঢৰাৰা—[বি] এঢলীয়া।
ढालुआँ।

ঢৰিআনা— (ক্ৰি অ) ঢালি দিয়া। বগৰাই দিয়া। চকুলো টোকা।

ढालना, गिराना या बहाना।
आँसू बहाना।

ढर्रा— (सं पुं) ধৰণ, পদ্ধতি, আচৰণ।
काम करने की बँधी हुई शैली। पद्धति। आचरण।

ढलकना— [क्रि अ] বৈ পৰা বা বাগৰি পৰা। কৃপাদৃষ্টিৰে চোৱা।
तरल पदार्थ का आधारसे नीचे की ओर जाना। लुढ़कना। किसी पर कृपालु होना।

ढलका— (सं पुं) সদায় চকুৰ পৰা পানী বৈ থকা বেমাৰ।
आँखों से पानी बहने का रोग।

ढलना— (क्रि अ) বৈ যোৱা। পাৰ হৈ যোৱা। আনৰ প্ৰতি আকৃষ্ট হোৱা। সাঁচত ঢলা।
बहना। विगत होना। उतार पर होना। किसी की ओर आकृष्ट या प्रवृत्त होना। साँचे में ढाला जाना।

ढलवाँ, ढालुआँ, ढालू— (वि) এচলীয়া, সাঁচত কটা।
जिसमें ढाल या नीचे की ओर उतार हो। साँचे में ढालकर बनाया हुआ।

ढलवाना—(क्रि स) ঢালোৱা।
ढालने में प्रवृत्त करना।

ढलाई—[सं स्त्री] ঢলা কাৰ্য্য বা তাৰ বানচ।
ढालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढलैत— (सं पुं) ঢাল ব্যৱহাৰ কৰা সৈনিক।
ढाल रखने वाला सिपाही।

ढवरी—(सं स्त्री) জুইৰ শিখা, আসক্তি।
लौ। लगन।

ढहना—(क्रि अ) বাগৰি পৰা, নষ্ট হোৱা।
(मकान आदि का) गिर पड़ना। नष्ट होना।

ढहरना—(क्रि अ) ঢলি পৰা, আকৃষ্ট হোৱা।
ढलना। आकर्षित होना।

ढहाना—(क्रि स) বগৰোৱা, ধ্বংশ কৰোৱা।
किसी से ढाने का काम कराना। ध्वस्त कराना।

ढाँचा—[सं पुं] সাঁচ, জঁকা, গঃ।
कोई चीज बनाने के पहले उसके

अंगों को जोड़कर तैयार किया हुआ पूर्व रूप । पंजर । गढ़न ।

ढाँढ़ा—(सं पुं) সৰু কুঁৱা ।
छोटा कुँआ ।

ढाँसी—(सं स्त्री) শুকান কাহ ।
सूखी खाँसी ।

ढाक—[सं पुं] পলাশৰ গছ, যুদ্ধত বজোৱা ঢোল ।
पलाश का पेड़ । लड़ाई का ढोल ।

ढाड़—(सं स्त्री) চিঞৰ, আটাহ ।
चिग्घाड । चिल्लाहट ।

ढाढ़स, ढारस—(सं पुं) সান্ত্বনা, আশ্বাস ।
सान्त्वना । आश्वासन । हिम्मत ।

ढाना, ढाहना—(क्रि स) ঘৰ আদি বগৰোৱা ।
मकान आदि गिराना । गिराना ।

ढारना, ढालना—(क्रि अ) ঢালি দিয়া, মদ খোৱা, সাঁচত কটা ।
पानी या कोई तरल पदार्थ नीचे गिराना । शराब पीना । बेचना । साँचे में ढालना ।

ढाल—(सं स्त्री) ঢাল, এঢলীয়া ।
तलवार आदि का वार रोकने का चमड़े का उपकरण । उतार । ढंग । ढालने की क्रिया या भाव ।

ढासना—(सं पुं) আউজিব পৰা বস্তু, আশ্ৰয় ।
वह चीज जिसपर पीठ का सहारा लगाया जाय । सहारा ।

ढिंढोरा—[सं पुं] ঘোষণাৰ বাবে বজোৱা ঢোল ।
वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है ।

ढिग—(क्रिवि) ওচৰত ।
पास ।
[सं स्त्री] সামীপ্য ।
निकटता । किनारा ।

ढिठाई—(सं स्त्री) ধৃষ্টতা, অনুচিত সাহস ।
धृष्टता । अनुचित साहस ।

ढिबरी—[सं स्त्री] মাটিৰ চাকি ।
डिबिया के आकार का दीपक ।

ढिलाई—[सं स्त्री] ঢিলা, শিথিল ভাব ।
ढीला होने का भाव । शिथिलता ।

ढिसरना—[क्रि. अ] পিছলি পৰা, প্ৰবৃত্ত হোৱা ।

फिसल या सरक पड़ना। प्रवृत्त होना।

ढींगर—(सं पुं) শকত-আবত, মানুহ, পতি বা উপপতি।

हट्टा कट्टा आदमी। पति। उप-पति।

ढींढ़ा—(सं पुं) ওলমি পৰা পেট, গৰ্ভ।
निकला हुआ पेट। गर्भ।

ढीठ—(वि) নিলাজ, নিৰ্ভীক।

धृष्ट। बे-अदब। निडर।

ढील—[सं स्त्री] ওকণি, ঢিলা।
सिर के बालों का कीड़ा। ढिलाई।

(वि) সোলোক-ঢোলোক। ढीला।

ढीलना—[क्रि स] ঢিলা কৰা।

ढील करना। बन्धन से अलग करना। थोड़ी स्वतंत्रता देना।

ढीला—(वि) ঢিলা, ভিজা, মষৰ, এলেহুৱা।

जो कसा हुआ या तना हुआ न हो। गीला। धीमा। सुस्त, आलसी।

ढीलापन—[सं पुं] শিথিলতা।
शिथिलता।

ढुँढ़वाना—(क्रि स) বিচৰোৱা।
संधान करवाना।

ढुकना—(क्रि अ) সোমোৱা, জঁপিয়াই পৰা, উপস্থিত হোৱা।

घुसना। टूट पड़ना। किसी के पास पहुँचाना।

ढुकाना—(क्रि स) আনৰ দ্বাৰা সোমোৱা।
घुसाना।

ढुरकना, ढुलकना—(क्रि अ) মূৰ আচৰ্‌াই কৰি বাগৰি পৰা, অনুৰক্ত হোৱা।
चक्कर खाते हुए नीचे गिरना। लुढ़कना। किसी पर अनुरक्त होना।

ढुलना—[क्रि अ]
মূৰ আচৰ্‌াই কৰা, কঢ়িয়াই নিয়া।
ढुलकना। ढोया जाना।

ढुलाई—(सं स्त्री) কঢ়িওৱা বানচ।

ढोने या ढुलाने का भाव या मजदूरी।

ढुलना—(क्रि स) বগবোৱা, নৰ্ত্ত কৰা, প্ৰসন্ন কৰা, আনৰ দ্বাৰা কৰিওৱা ।

लुढ़काना । झुकाना । प्रसन्न करना । ढोने का काम दूसरे से कराना ।

ढूँढ़ना—[क्रि स] বিচৰা ।

पता लगाना । खोजना ।

ढूह—[सं पुं] টিলা, স্তূপ ।

ढेर । टीला । मिट्टी का ऊँचा स्तूप ।

ढेंकली, ढेंकी— [सं स्त्री] ঢেঁকী ।

सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र । धान कूटने का एक यंत्र ।

ढेंढर— (सं पुं) আচিনাই বা আজিনাই ।

आँख के डेलेपर उभरा हुआ मांस । (आँख का एक रोग)

ढेंढ़ी—(सं स्त्री) কপাহ আদিৰ কৰ ।

कपास, रामतरोई आदि का बीज ।

ढेर—(सं पुं) ঢেৰ, দ'ম ।

एक जगह रखी हुई बहुत सी वस्तुओंका ऊँचा समूह ।

[वि] বহুত, বেছি ।

बहुत । ज्यादा ।

ढेरी—[सं स्त्री] দ'ম ।

ढेर । राशि ।

ढेला—(सं पुं) চপৰা, ডোখৰ ।

मिट्टी, ईंट आदि का छोटा टुकड़ा । टुकड़ा । एक प्रकार का धान या चावल ।

ढैया— (सं पुं) আঢ়ৈ সেৰী দগা ।

ढाई सेर का बटखारा ।

ढोंका— (सं पुं) শিল আদিৰ ডাঙৰ টুকুৰা ।

पत्थर या और किसी चीज का बड़ा अनगढ़ टुकड़ा ।

ढोंग—[सं पुं] আড়ম্বৰ, ধূৰ্ত্ততা ।

ढकोसला । पाखंड ।

ढोंगी —(वि) ভাও কৰোঁতা ।

ढोंग रचनेवाला । पाखंडी ।

ढोंढ़ी— [सं स्त्री] নাই বা নাভি । কপাহ আদিৰ গুটি ।

नाभि । कपास, पोस्ते आदि का डोडा ।

ढोटा— (सं पुं) বেটা, ল'ৰা ।

बेटा । लड़का ।

ढोना—(क्रि स) কাঢ়ওৱা ।
सिर या पीठ पर बोझ लाद कर ले जाना । दुखके दिन काटना ।

ढोर— (सं पुं) পশু ।
चौपाया । पशु ।

ढोरना—(क्रि स) চোঁৱৰ আদিৰ বা দিয়া । বগৰাই দিয়া ।
ढुलकाना । लुढकाना । (चँवर आदि) डुलाना ।
(क्रि अ) মাটিত বাগৰা ।
অনুসৰণ কৰা ।
जमीन पर लोटना या लुढ़कना । किसी का अनुयायी बनकर पीछे चलना ।

ढोलक—[सं पुं] সৰু ঢোল ।
छोटा ढोल ।

ढोलकिया— [बि] ঢুলীয়া ।
ढोल बजाने वाला ।

ढोलकी—[सं स्त्री] সৰু ঢোল ।
ढोलक ।

ढोलन— (सं पुं) পতি, দৰা, বৰ ।
पति । वर ।

ढोलना—(सं पुं) ঢোলৰ নিচিনা মাদুলি ।
ढोलक जैसा जंतर ।
(क्रि स) ঢালি দিয়া ।
ढालना । डोलाना ।

ढोला—[सं पुं] এবিধ সৰু কীট । সীমাৰেখা শৰীৰ, প্ৰিয়তম । এবিধ গীত ।
एक प्रकार का छोटा कीड़ा । सीमा चिह्न । शरीर । प्रियतम । एक प्रकार का गीत ।

ढोली—(सं स्त्री) দুইশ খিলা পানৰ মুঠা ।
दो सो पानों की गड्डी ।

ढोवा-(सं पुं) কাঢ়যাই নিয়া ক্ৰিয়া । ৰজা বা চৰদাৰক দিয়া উপহাৰ ।
ढोये जाने की क्रिया या भाव । दूसरे का माल उठा ले जाना । राजा या सरदार को प्रदत्त भेंट ।

ढौर—(सं पुं) ধৰণ ।
ढंग ।

ढौरना—(क्रि स) ইফালে-সিফালে ঘুৰোৱা ।
इधर उधर घुमाना ।

ढौरी—[सं स्त्री] পুনৰুক্তি ।
रट । धुन । ढंग या तरीका ।

ण

ण—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ পঞ্চদশ আখৰ। वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन वर्ण।

त

त—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ ষষ্ঠদশ আখৰ।
वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन।

तंग—[वि] সঙ্কীৰ্ণ, ঠেক, বিৰক্ত।
सँकरा। सकुंचित। कसा।
परेशान।

तंगी—(सं स्त्री) সঙ্কীৰ্ণতা' নিৰ্ধ-নতা, নাটনি।
तंग होनेका भाव। संकरापन।
आर्थिक कष्ट। कमी।

तंजेब—[सं स्त्री] এবিধ মখমল।
एक प्रकार की मलमल।

तंडुल, तंदुल—(सं पुं) চাউল।
चावल।

तंत—[सं पुं] তাঁৰ, তত্ত্ব, তন্ত্ৰ।
तन्तु। तत्व। तंत्र।

तंतु—(सं पुं) সূতা, সন্তান, বিস্তাৰ, তাঁত।
सूत। सन्तान। विस्तार। तांत।

तंतुवाय—[सं पुं] তাঁতী।
जुलाहा।

तंत्रकार—(सं पुं) বাদ্য বাদক।
बाजा बजाने वाला।

तंदुरुस्त—(त्रि) নীৰোগী।
नीरोग।

तंदुरुस्ती—(सं स्त्री) স্বাস্থ্য।
स्वास्थ्य।

तंदूर—[सं पुं] ৰুটি তৈয়াৰ কৰা ডাঙৰ চৌকা।
रोटी पकाने की बड़ी भट्ठी।

तंदेही—(सं स्त्री) পৰিশ্ৰম, চেষ্টা, সতৰ্কবাণী।
मेहनत। कोशिश। ताकीद।
तल्लीनता।

तंबाकू, तमाकू—(सं पुं) ধপাত।
सुरती। सुरती से बना हुआ

चिलमपर रखकर पीया जानेवाला गीला पदार्थ।

तँबीह—(सं स्त्री) নিৰ্দেশ, উপদেশ ।
नसीहत। चेतावनी।

तंबूर—(सं पुं) সৰু ঢোল।
एक प्रकारका ढोल।

तँबूरा—(स पुं) তান-পুৰা ।
तानपुरा ।

तई—(प्रत्यय) পৰা, প্ৰতি ।
से। प्रति।
(अव्य) কাৰণে।
लिये।

तई—(सं स्त्री) তাৱা, কাঁহীৰ দৰে তৰাং চৰু বা কেৰাহী।
छोटा तवा।

तउ—(अव्य) তেতিয়া, এইদৰে।
तब। त्यों।

तऊ—(अव्य) তথাপি, তদুপৰি।
तो भी। तथापि।

तक—[अव्य] লৈকে।
पर्यन्त।
(सं स्त्री) একেথিৰে চাই থকা ক্রিয়া।
ताकने की क्रिया या भाव।
टकटकी।

तकदमा—(सं पुं) আন্দাজ।
अन्दाज। कूत।

तकदीर—[सं स्त्री] ভাগ্য ।
भाग्य।

तकदीरवर—(वि) ভাগ্যবান।
भाग्यवान।

तकना—[क्रि अ] দৃষ্টিপাত কৰা।
दृष्टिपात करना।
[सं पुं] চাই-থাকোতা ।
ताकनेवाला।
(क्रि स) বাট চোৱা ।
आसरा देखना।

तकब्बर—[सं पुं] অভিমান ।
अभिमान।

तकरार—(सं स्त्री) সংঘৰ্ষ, বিবাদ।
हुज्जत। विवाद।

तकरीर—(सं स्त्री) কথা-বতৰা, বক্তৃতা।
बात-चीत। भाषण।

तकला, तकुआ—(सं पुं) শলা কাঠি।
सूत लपेटने का टेकुआ।

तकली—(सं स्त्री) টাকুৰী ।
सूत कातने का छोटा-सा औजार।

তকলীফ—(সং স্ত্রী) কষ্ট, অসুবিধা।
कष्ट। विपत्ति।

তকল্লুফ—(সং পুং) শিষ্টাচার।
शिष्टाचार।

তকসীম—[সং স্ত্রী] ভাগের ক্রিয়া, বিভাগ।
बाँटने का भाव या क्रिया।
विभाग।

তকসীর—(সং স্ত্রী) অপরাধ, দোষ।
अपराध। कसूर।

তকাজা, তগাদা—(সং পুং) তাগিদা।
किसी से प्राप्य धन पाने या आवश्यक कार्य करनेके लिये फिर से कहना या स्मरण दिलाना।

তকাবী—[সং স্ত্রী] কৃষি-ঋণ।
बीज आदि खरीदने के लिये दिया गया कृषि ऋण।

তকিয়া—(সং পুং) গাঁক, আশ্রয়।
बालिश। विश्राम का स्थान। आश्रय।

তকিয়া-কলাম—(সং পুং) কোনো ব্যক্তির প্রিয় শব্দ বা বাক্যাংশ, যার প্রয়োগ কথাই কথাই হোতে দেখা যায়।
सखुन-तकिया। वह शब्द या वाक्य जो किसी आदमी की बातचीत में हमेशा निकला करता है।

তক্র—(সং পুং) দৈব ঘোল।
मट्ठा।

তক্ষণ—(সং পুং) কাঠ, শিল আদিতে মূর্ত্তি তৈয়ার করা।
लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ बनाना।

তখমীনা—(সং পুং) আন্দাজ, অনুমান।
अन्दाज। अनुमान।

তখল্লুস—[সং পুং] উপনাম।
उपनाम।

তখ্ত—(সং পুং) রাজপাট, সিংহাসন, চালপীরা।
राज सिंहासन। बड़ी चौकी।

তখ্তী—(সং স্ত্রী) সরু তক্তা, ফলি।
छोटा तख्ता। पटिया (स्लेट)

তগড়া—[বি] বলবান, মজবুত, শকত-আরত।
बलवान। मजबूत। अच्छा और बड़ा।

তগমা, তমগা—[সং পুং] পদক।
पदक।

तगार—(सं पुं) अट्टालिका पাজেঁতে ইটা, শিলগুটি আদি তিওৱা গাঁত, শিলগুটি, বালি, চিমেণ্ট আদি সানি মচলা তৈয়াৰ কৰা ঠাই। উৱাল পোতা গাঁত।
उखली गाड़ने का गड्ढा। वह स्थान जहाँ इमारत बनाने का चूना, गारा आदि साना जाता है।

तगीर—[सं पुं] পৰিবৰ্ত্তন।
परिवर्तन।

तचना, तपना—(क्रि अ) গৰম হোৱা, অনুতপ্ত হোৱা।
गरम होना। जलना। संतप्त या दुखी होना।

तचा—(सं. स्त्री) छाल।
चर्म।

तजना—(क्रि स) ত্যাগ কৰা।
त्यागना।

तजरबा-[सं पुं] অনুভৱ, প্ৰয়োগ।
अनुभव। प्रयोग।

तजरबाकार—(सं पुं) অনুভৱী।
अनुभवी।

तजवीज—(सं स्त्री) সন্মতি, মীমাংসা, বন্দোবস্ত।
सम्मति। फैसला। बन्दोबस्त।

तट—(सं पुं) প্ৰদেশ, নদী বা সাগৰৰ পাৰ।
प्रदेश। क्षेत्र। नदी या समुद्र का किनारा।
(वि) ওচৰ।
पास।

तटस्थ—[वि] পাৰত থকা, নিৰপেক্ষ।
तट या किनारे रहनेवाला। निरपेक्ष।

तटस्थता-[सं स्त्री] নিৰপেক্ষতা।
निरपेक्षता।

तटिनी—(सं स्त्री) নদী। नदी।

तटी—[सं स्त्री] নদীৰ পাৰ। উপত্যকা।
नदी का किनारा। उपत्यका।

तड़कना—(क्रि अ) মৰ-মৰকৈ ভঙা বা ফাটি যোৱা।
'तड़' शब्द के साथ टूटना। किसी चीज का सूखकर फट जाना।

तड़क भड़क—(सं स्त्री) জাক-জমক।
ठाट-बाट। आडम्बर।

तड़का—(सं पुं) বোৱাবীপুৱা। দালি আদিত সম্ভাৰ দিয়া।
बहुत सबेरा। छौंक।

तड़पना—(क्रि अ) छाटি ফুটি কৰা, গৰ্জন কৰা।
अधिक पीड़ा के कारण छट-पटाना। गरजना।

तड़पाना—[क्रि स] আনক ছাটি-ফুটি কৰোৱা।
ऐसा काम करना जिससे कोई कष्ट पावे।

तड़ाक—(सं स्त्री) অনুকাৰ শব্দ।
'तड़ाके' का शब्द।
(क्रि वि) সোনকালে।
जल्दी से। तुरन्त।

तड़ाका—(सं पुं) মৰ্-মৰ্ শব্দ।
'तड़' शब्द।
(क्रि वि) তৎক্ষণাৎ।
तुरन्त।

तड़ाग—[सं पुं] পুখুৰী।
तालाब।

तड़ागना—(क्रि अ) চেষ্টা কৰা। ডাক্সোপ কৰা।
डींग हाँकना। प्रयत्न करना।

तड़ातड़—(क्रि वि) মৰ্-মৰ্ শব্দেৰে।
तड़ तड़ शब्द के साथ।

तड़ाना—(क्रि स) আঁৰত থাকি কৰা কাম, যাৰ দ্বাৰা লোক আকৰ্ষ্ট হয়।
अनजान से रहकर ऐसा काम करना जिसे लोग ताड़ लें या देखें।

तत्-[सं पुं] ব্ৰহ্ম, বায়ু।
ब्रह्म। वायु।
[सर्व] সেই। उस।

तत—[सं पुं] বায়ু, পিতা, পুত্ৰ, তাঁৰ যুক্ত বাদ্য, তত্ব।
वायु। पिता। पुत्र। तारवाले वाद्य। तत्व।
(वि) উত্তপ্ত, গৰম।
तप्त। गरम।

तदबीर—(सं स्त्री) দিশা-ভাবনা, উপায়।
तदबीर। उपाय।

तत्काल—(क्रि वि) তৎক্ষণাৎ।
तुरन्त। उसी काल।

तत्क्षण—(क्रि वि) তৎক্ষণাৎ।
उसी समय।

तत्त्वत:—(क्रि वि) তত্ত্বানুসৰি, মূলত:।
तत्व के विचार से।

तत्त्वमसी—(पद) তুমিয়েই সেই, অৰ্থাৎ ব্ৰহ্ম।
तू वही, अर्थात् ब्रह्म है।

तत्र—(क्रि वि) তাত।

उस जगह। वहाँ।

तथागत—[सं पुं] গৌতম বুদ্ধ।

गौतम बुद्ध।

तथैव—[अव्य] তেনেকুৱাই, সেইদৰে।

वैसा ही। उसी प्रकार।

तदंतर, तदनंतर—(क्रि वि) তাৰ পিছত।

उसके बाद।

तदपि—[अव्य] তথাপি।

तो भी। तथापि।

तदबीर—(सं स्त्री) দিহা-ভাৰসা, উপায়।

काम पूरा या ठीक करने का उपाय। तरकीब।

तदर्थ-समिति—(सं स्त्री) বিশেষ উদ্দেশ্যে গঠিত কমিটি।

किसी विशेष कार्य के लिये बनायी गयी समिति। (अं—एड-हॉक कमिटी)

तदाकार—[वि] সেই আকাৰৰ, লীন।

उसी आकार का। तल्लीन।

तदारुक—[सं पुं] বিচাৰ।

अभियुक्त आदि की खोज। दुर्घटना की जाँच।

तदीय—[सर्व] সেই সম্পৰ্কীয়।

उसका। उससे सम्बन्ध रखने वाला।

तद्वत्—(वि) তাৰেই সমান।

उसीके समान।

तन—[सं पुं] শৰীৰ।

शरीर।

(क्रि वि) ফাল।

तरफ।

[वि] অলপ।

तनिक। थोड़ा।

तनक, तनिक—[वि] অলপ, সৰু।

थोड़ा। छोटा।

तनकीह—[सं स्त्री] বিচাৰ।

जाँच। मुकदमे की वे मूल बातें जिन का विचार और निर्णय आवश्यक हो।

तनख्वाह—[सं स्त्री] বেতন।

वेतन।

तनज्जुल—(वि) অৱনত। অপদস্থ

अवनत। पद या महत्वसे घटाया या उतरा हुआ।

तनतनाना—(क्रि अ) খং দেখুৱা।
क्रोध दिखाना।

तनना—(क्रि अ) বিস্তাৰিত হোৱা, পাৰি দিয়া। নিৰ্ভয়ে থিয় হোৱা।
खिंचाव से पूरे विस्तार तक पहुँचना। ताना जाना। अकड़ कर सीधा खड़ा होना। अभि-मानपूर्वक रुष्ट होना।

तनहा—[वि] অকলশৰীয়া।
अकेला।
[क्रि वि] অকলে।
अकेले।

तनहाई—[सं स्त्री] নিৰ্জনতা, নিৰ্জন ঠাই।
अकेलापन। एकान्त स्थान।

तना—(सं पुं) গা-গছ।
वृक्ष का नीचेवाला भाग जिसमें डालियाँ नहीं होतीं।

तनाजा—(सं पुं) কাজিয়া।
झगड़ा।

तनाव—(सं स्त्री) টনিজৰী।
खेमें आदि खींचकर बाँधने की रस्सी।

तनाव—[सं पुं] বিস্তাৰ।
तनने की क्रिया या भाव।

तनिया—(सं स्त्री) কাঁচুলি, লংগোট।
लंगोटी। स्त्रियोंके पहनने की कुरती।

तनु—(वि) ক্ষীণ, অলপ, কোমল।
दुबला-पतला। थोड़ा। कोमल। बढ़िया।
(सं स्त्री) শৰীৰ, স্ত্ৰী।
शरीर। स्त्री।
[अव्य] ফাল।
ओर।

तनुजा, तनूजा—(सं स्त्री) বেটী।
बेटी।

तनूरुह, तनोरुह—[सं स्त्री]
নোম, বেটা।
रोम। बेटा।

तन्यक—[वि] স্থিতিস্থাপক।
जो खींचने पर लम्बा हो जाय।
(अ—इलैस्टिक)

तन्वांगी, तन्वी—(वि) কৃশাঙ্গী, পাতল শৰীৰৰ।
दुबले-पतले अङ्गोंवाली।

तपकना—[क्रि अ] ধপধপোৱা।
उछलना। चमकना।

तपना—[क्रि अ] তপ্ত হোৱা, প্ৰভুত্ব দেখুৱা। তপস্যা কৰা।

खूब गर्म होना। तप्त होना।
प्रभुत्व या अधिकार दिखाना।
बुरे कामोंमें अधिक खर्च करना।
तपस्या करना।

तपश्चरण, तपस—(स' पु') তপস্যা।
तपस्या।

तपश्चर्या—(स' स्त्री) তপস্যা।
तपस्या।

तपसी—(स' पु') তপস্বী।
तपस्वी।

तपाक—(स' पु') আবেশ আবেগ।
आवेश। तेजी।

तपाना—[क्रि स] গরম করা।
দুঃখ দিয়া।
गरम करना। दुख देना।

तपिश—(स स्त्री) গরম, উষ্ণতা।
गरमी। तपन।

तपेदिक—[स' पु'] যক্ষ্মা রোগ।
यक्ष्मा रोग।

तपोधन—(स' पु) তপস্বী।
बहुत बड़ा तपस्वी।

तफरीह—(स' स्त्री) রং-ধেমালি।
खुशी। दिल्लगी।

तफसील—(स' स्त्री) বিশদ বিবরণ, টীকা।
विस्तृत वर्णन या विवरण।
टीका।

तब—[अव्य] তেতিয়া, তেনেহলে।
उस समय। इस कारण से।

तबक—(स' पु') লোক ভাঁজ, স্তৰ, তবপ।
लोक। परत। तह। एक प्रकार
चौड़ी थाली।

तबका—(स' पु')বিভাগ, জনসমূহ।
भूमि का खण्ड या विभाग।
लोक। आदमियों का समूह।

तबदील—(वि)পৰিবৰ্ত্তিত। স্থানান্তৰিত
बदला हुआ। एक स्थान या पद
से हटाकर दूसरे स्थान या पद
पर भेजा हुआ।

तबर—(स' पु') কুঠাৰ।
कुल्हाड़ी।

तबलची, तबलिया—(स' पु')
তবলা-বাদক।
तबला बजानेवाला।

तबादला—(स' पु') পৰিবৰ্ত্তন, স্থানান্তৰ।
परिवर्तन। स्थान या पद परिवर्तन।

तबाह—(वि) সৰ্ব্বনাশ।
पूरी तरह से नष्ट।

तबाही—(स ं स्त्री) ধ্বংশ।
नाश। बरबादी।
तबीअत, तबीयत—(स ं स्त्री) मन, স্বাস্থ্য, বুদ্ধি বা জ্ঞান।
चित्त। बुद्धि। ज्ञान।
तबेला—(स ं पु ं) ঘোৰাঁ-শাল।
अस्तबल।
तभी—(অব্য) তেতিয়া, সেই কাৰণে।
उसी समय। इसी कारण।
तमंचा—(स ं पु ं) পিষ্টল। ছিটিকা
छोटी बन्दूक। वह पत्थर जो दरवाजे में खड़े बल में लगाया जाता है।
तम—(स ं पु ं) অন্ধকাৰ, পাপ, খং, অজ্ঞান।
अन्धकार। पाप। क्रोध। अज्ञान।
तमक— (स ं स्त्री) উত্তেজনা, উগ্ৰতা।
जोश। आवेश। तेजी।
तमकना—[क्रि अ] উত্তেজিত হোৱা।
क्रोध का आवेश दिखाना।
तमचर— [स ं पु ं] নিশাচৰ।
ৰাক্ষস।
राक्षस।
तमचुर— (स ं पु ं) মুৰগী, কুকুৰা চৰাই।
मुरगा।
तमतमाना—(क्रि अ) ৰ'দত বা খঙত ৰঙা পৰা।
धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।
तमन्ना—[स ं स्त्री] ইচ্ছা।
कामना। इच्छा।
तमस—(स ं पु ं) অন্ধকাৰ, পাপ।
अन्धकार। पाप।
तमस्सुक—(स ं पु ं) দলিল।
दस्तावेज।
तमा—(स ं पु ं) ৰাহু।
राहू।
(स ं स्त्री) ৰাতি লোভ-লালসা।
रात। लोभ-लालच।
तमाचा—(स ं पु ं) চৰ, চাপৰ।
चपत। थप्पड़।
तमादी—[स ं स्त्री] উকলি যোৱা।
किसी बात की विहित अवधि बीत जाना।
(वि) উকলি যোৱা।
विधि, नियम आदि के द्वारा जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो।
तमाम—(वि) সম্পূৰ্ণ, সমাপ্ত।
पूरा। समाप्त।

तमाल—[सं पुं]তমাল গছ। এবিধ তৰোৱাল, ধঁপাত।
तेजपात का वृक्ष। एक प्रकार की तलवार। तम्बाकू।

तमाशबीन—[सं पुं] তামাচা চোৱা লোক।
तमाशा देखने वाला। वेश्यागामी।

तमाशा,तमासा—(सं पुं) তামাচা।
वह खेल या कार्य जिसे देखने से मन प्रसन्न हो। बहुत बेढंगी, अनियमित और हास्यास्पद बात या चीज।

तमिस्र—[सं पुं] অন্ধকাৰ, খং।
अन्धकार। क्रोध।
(वि) অন্ধকাৰময়।
अन्धकार पूर्ण।

तमिस्रा—[सं स्त्री] এন্ধাৰ ৰাতি।
अंधेरी रात।

तमीचर—(सं पुं) ৰাক্ষস।
राक्षस।

तमीज—[सं स्त्री] বিবেক, বুদ্ধি, আদব-কায়দা।
भले बुरे का ज्ञान या परख। ज्ञान। बुद्धि

तमोली—(सं पुं) পান-বিক্ৰেতা। পনবাৰী।

तय, तै—(वि) নিশ্চয়।
निश्चित करना।

तरंग—(सं स्त्री) ঢৌ, বিজুলী।
पानी का हिलोर। बिजली, खूनी आदि का प्रवाह या लहर।

तरंगी—(वि) ঢৌযুক্ত, মই-মতলীয়া।
जिसमें तरंगे हों। मनमौजी।

तर—(वि) ভিজা বা তিতা, শীতল।
गीला। शीतल। मालदार।
(क्रि वि) তলত।
नीचे। तले।
(प्रत्य) দুটাৰ ভিতৰত পাৰ্থক্য বুজাবলৈ; যেনে—উচ্চতৰ, নিম্নতৰ।
दो वस्तुओं में से एक की श्रेष्ठता सूचित करनेवाला।

तरकना—[क्रि अ]তৰ্ক কৰা। ফাটিযোৱা
तड़कना। तर्क करना। मनमें सोच विचार करना। उछलना।

तरकश, तरकस—(सं पुं) তূণ, কাঁড় বা শৰ থোৱা চুঙা।
तीर रखने का चोंगा। तूणीर।

तरका—(सं पुं) উত্তৰাধিকাৰ-সূত্ৰে পোৱা সম্পত্তি।
मरे हुए व्यक्ति के उत्तराधिकारी को प्राप्त होनेवाली सम्पत्ति।

तरकीब—(सं स्त्री) উপায়, যুক্তি, ধৰণ।
बनावट। रचना प्रणाली। युक्ति। ढंग।

तरक्की—[सं स्त्री] বৃদ্ধি, উন্নতি।
वृद्धि। उन्नति।

तरखा—(सं पुं) প্ৰবল সোঁত।
नदी आदि के पानी का तेज बहाव।

तरजना—(क्रि अ) ধমক দিয়া, খং কৰা।
डाँटना। बिगड़ना।

तरजीला—[वि] খঙাল, প্ৰচণ্ড।
क्रोधपूर्ण। प्रचंड।

तरजुमा—(सं पुं) অনুবাদ।
अनुवाद।

तरणि, तरणी—(सं स्त्री) নাও।
नाव।

तरणिजा, तरणि तनुजा—(सं स्त्री) যমুনা নদী।
यमुना नदी।

तरतीब—(सं स्त्री) পৰিপাটি, অনুক্ৰম।
सिलसिला। क्रम।

तरद्दुद—[सं पुं] চিন্তা, উৎকণ্ঠা।
सोच। फिक्र। खटका।

तरन-तारन—[सं पुं] উদ্ধাৰ, উদ্ধাৰ কৰ্ত্তা, ত্ৰাতা।
उद्धार। संसार सागर से पार करने वाला ईश्वर।

तरना—(क्रि स) সাঁতোৰা। পাৰ কৰা।
तैरना। तैर कर या नाव आदि से पार करना।
[क्रि अ] মুক্ত হোৱা, সদ্‌গতি হোৱা।
मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना।

तरनी—[सं स्त्री] নাও, ওখ মূঢ়া।
नाव। खोलचा रखने का ऊँचा मोढ़ा।

तर-पर—(क्रि वि) এটাৰ পাছত এটা।
एक के बाद दूसरा।

তরফ— (সং স্ত্রী) কাল, দিশ, পক্ষ ।

ओर । दिशा । पार्श्व । पक्ष ।

তরফদার—[বি] পক্ষপাতী ।

पक्षधर । हिमायती ।

তর-বতর—(বি) ভিজা বা তিতা ।

भींगा हुआ ।

তররানা—(ক্রি অ) ভাঁজ দিয়া ।

मरोड़ना ।

তরলাই—[সং স্ত্রী] কোমলতা ।

कोमलता ।

তরবার—(সং স্ত্রী) তরোৱাল ।

तलवार ।

তরস—(সং পুং) দয়া, করুণা ।

दया । रहम ।

তরসনা—(ক্রি অ) উদ্বিগ্ন হোৱা ।

किसी वस्तु के लिये लालायित या विकल रहना ।

(ক্রি সং) ত্রস্ত বা পীড়িত করা ।

त्रस्त या पीड़ित करना ।

তরসানা—[ক্রি সং] আনক উদ্বিগ্ন করা । কষ্ট দিয়া ।

ऐसा काम करना जिसमें कोई तरसे । त्रस्त या पीड़ित करना ।

তরহ— [সং স্ত্রী] প্রকার, প্রণালী ।

प्रकार । भाँति । प्रणाली । युक्ति ।

তরহদার—(বি) চমক প্রদ ।

शौकीन ।

তরাইন—(সং স্ত্রী) তরা, নক্ষত্র আদি ।

आकाश के तारे नक्षत्र आदि ।

তরাঈ— (সং স্ত্রী) উপত্যকা অঞ্চল । পাদদেশ

पहाड़ के नीचे का प्रदेश या भूमि । नीची भूमि । तराई ।

তরাজু –[সং পুং] তর্জু ।

तुला दंड ।

তরানা—(সং পুং) একবিধ গীত ।

एक प्रकार का चलता गाना । गीत ।

তরাবোর—(বি) তিতি টপটপীয়া ।

पूरी तरह से भींगा हुआ ।

তরাভর—[সং স্ত্রী] তৎকাল কাৰ্য্য ব্যবস্থা ।

जल्दी होनेवाली कार्रवाई ।

তরারা— (সং পুং) জাপ, লাফ, নিজবি নিজবি পৰি থকা ।

उछाल। छलांग। कुछ समय तक लगातार गिरनेवाली धारा।

तरावट- (सं स्त्री) সিক্ততা। শীতলতা।

तर होने का भाव। गीलापन। शीतलता। स्निग्ध पेय या भोजन।

तराश—[सं स्त्री] কাটন।
काटने का ढंग या भाव। बनावट।

तराशना-(क्रि स) কটা, খোদিতকৰা।
काटना। कतरना।

तरियाना—[क्रि स] তল পেলোৱা, ঢাকন দিয়া। তিওৱা।
नीचे कर देना। ढाँकना। तर या गीला करना।
(क्रि अ) গেদ বহা।
तैल आदि का तले बैठ जाना।

तरीका-[सं पुं] ধৰণ উপায়। ব্যৱহাৰ।
ढंग। चाल। व्यवहार। उपाय।

तरुणाई, तरुनाई—[सं स्त्री] তৰুণ অৱস্থা।
युवावस्था।

तरुणिमा—[सं स्त्री] যৌৱন।
यौवन।

तरेंदा—(सं पुं) ভেল বা ভুৰ।
पानी पर तैरनेवाला काठ, बाँस आदि का बेड़ा।

तरेरना—[क्रि स] ৰঙা চকুৰে চোৱা।
क्रोध या असन्तोष की दृष्टि से देखना।

तरौंस—(सं पुं) পাৰ।
तट किनारा।

तरौना, तर्यौना—(सं पुं) কাণফুল।
कान में पहनने का गहना।

तर्कना—[क्रि अ] তৰ্ক কৰা।
तर्क या बहस करना।

तर्की—[सं पुं] তাৰ্কিক।
तर्क करनेवाला।

तर्ज—[सं पुं] প্ৰকাৰ, ঠাঁচ।
प्रकार। शैली। रचना प्रकार।

तर्जन—(सं पुं) তৰ্জন-গৰ্জন।
क्रोध पूर्वक या बिगड़ते हुए कुछ कहना। डाँटना-डपटना। डराना। फटकारना।

तर्जना—(क्रि अ) তৰ্জ্জন-গৰ্জ্জন কৰা।
डाँटना। धमकाना।

तर्जुमा—(सं पुं) তৰ্জমা, অনুবাদ।
अनुवाद।

तल—(सं पुं) তলি, সাত খন পাতালৰ এখন।
नीचे का पेंदा। जलाशय के नीचे की भूमि। पैर का तलवा। सतह। सात पातालों में से पहला।

तलक—[अव्य] লৈ।
तक।

तल-गृह, तल-घर—[सं पुं] ভেঁটিৰ তলত থকা কোঠালী।
तहखाना।

तलना—[क्रि अ] ভজা।
गरम घी या तेल में डालकर पकाना।

तलफना—(क्रि अ) কষ্ট পোৱা, ধৰ-ফৰোৱা।
कष्ट पाना। तड़पना।

तलब—(सं स्त्री) অনুসন্ধান, পোৱাৰ ইচ্ছা। বেতন।
खोज। पाने की इच्छा। आवश्यकता। बुलावा। वेतन।

तलबगार—(वि) ইচ্ছুক।
चाहनेवाला।

तलबी—(सं स्त्री) আৱশ্যকতা।
बुलावा। मांग।

तलबेली—[सं स्त्री] উৎকণ্ঠা।
बहुत अधिक उत्कंठा।

तलवा, तलुआ—(सं पुं) ভৰিৰ তলুৱা।
पैर के नीचे का भाग।

तलवार—(सं स्त्री) তৰোৱাল।
एक हथियार।

तलहटी—(सं स्त्री) উপত্যকা।
तराई।

तला—(सं पुं) তলি, জোতাৰ তলভাগ।
पेंदा। जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाक—[सं पुं] আইন সঙ্গত ভাবে পতি-পত্নীৰ সম্বন্ধ বিচ্ছেদ।
पति पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद।

तलाश—(सं स्त्री) অনুসন্ধান, বিচাৰ-খোচৰ।
अनुसंधान। खोज।

तलाशी—(सं स्त्री) হেৰুৱা বস্তুৰ অনুসন্ধান।

खोई या छिपायी चीज पाने के लिये किसी के शरीर, घर आदि की देखभाल।

तले—(क्रि वि) তলত।
नीचे।

तलैया—[सं स्त्री] খাল বা সৰু পুখুৰী।
छोटा तालाब।

तल्प—(सं पुं) বিচনা।
बिस्तर। सेज।

तल्लीन—(वि) নিমগ্ন।
निमग्न।

तवज्जह—[सं स्त्री] মনোযোগ, কৃপাদৃষ্টি।
ध्यान। कृपादृष्टि।

तवना—(क्रि अ) তপত হোৱা, খঙতে ৰঙা পৰা।
तप्त होना। गुस्से से लाल होना।
प्रताप दिखाना।

तवा—(सं पुं) তাৱা।
रोटी आदि सेंकने के लिये लोहे का गोल बरतन।

तवारीख—(सं स्त्री)বুৰঞ্জী।
इतिहास।

तवालत—[सं स्त्री] দীৰ্ঘতা।
लम्बाई।

तशरीफ—(सं स्त्री) মহত্ব, সম্মানিত ব্যক্তিত্ব।
महत्व। बड़प्पन। सम्मानित व्यक्तित्व।

तश्त—[सं पुं] ডাঙৰ কাঁহী।
बड़ा थाल।

तश्तरी—(सं स्त्री) সৰু কাঁহী।
रिकाबी (प्लेट)

तस—[वि] তেনে, তেনেকুৱা।
वैसा।

तसदीक—(सं स्त्री) সত্যতা, সাক্ষী।
सचाई। गवाही।

तसदीह—(सं स्त्री)মূৰ-কামোৰণি।
सिर दर्द। कष्ट।

तसमा—(सं पुं) চমৰাৰ ফিটা।
चमड़े का फीता।

तसला—(सं पुं) এবিধ বাচন।
एक प्रकार का बरतन।

तसलीम-(सं स्त्री)নমস্কাৰ। মান্যতা
सलाम। मान्यता।

तसल्ली—(सं स्त्री) সান্ত্বনা, ধৈৰ্য্য।
सान्त्वना। धैर्य।

तसवार, तस्वीर—[सं स्त्री] ছবি। ছবিব দবে ধুনীয়া।
चित्र। चित्र के समान सुन्दर।

तस्कर—(सं पुं) চোব।
चोर।

तस्करी—[सं स्त्री] চোব কবা কার্য্য, চুরুণী।
चोरी। चोर की स्त्री।

तँह—(क्रि वि) তাত।
वहाँ।

तह-[सं स्त्री] তবপ, তলি, স্তব।
परत। नीचे का तल। महीन झिल्ली।

तहकीकात-[सं स्त्री] অনুসন্ধান।
अनुसंधान।

तहखाना—[सं पुं] ঘবব ভেটিব তলত থকা ঘব বা কোঠালী।
मकान के नीचे बनाया हुआ कमरा।

तहमत—[सं स्त्री] লুঙি।
लूँगी।

तहरी—[सं स्त्री] চাউল আৰু মটৰ মাহৰ খিচিৰী। चाल कुमुबाब बड़ा। पेठे की बरी। चावल और मटर की खिचड़ी।

तहरीर—(सं स्त्री) লিখন, লিখনীব ঠাঁচ।
लिखावट। लेख-शैली। लिखाई।

तहलका—(सं पुं) লণ্ড-ভণ্ড, উখল-মাখল।
बरबादी। खलबली।

तहवील-[सं स्त्री] তহবিল জমা।
खजाना।

तहस नहस—(वि) নষ্ট, সম্পূর্ণ ধ্বংশ।
पूरी तरह से नष्ट भ्रष्ट।

तहसील-[सं स्त्री] খাজনা সংগ্ৰহ কৰা কাৰ্য্য; তহচীলদাৰৰ কাৰ্য্যালয়।
लोगों से रुपये वसूल करने की क्रिया। वसूल किया हुआ धन। तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलदार—[सं पुं] তহচীলদাৰ। খাজনা তোলা বিষয়া।
कर वसूल करनेवाला अधिकारी।

तहसीलना—(क्रि स) খাজনা আদায় কৰা।
कर लगान आदि वसूल करना।

तहाँ—(क्रि वि) তাত, তালৈ।
वहाँ।

तहाना, तहियाना—(क्रि स) ভাঁজ দিয়া ।
तह करना ।

तहीं–[क्रि वि]সেই ঠাঁইত, তাত।
उसी जगह ।

ताँत—(स ं स्त्री) ছাগলী, ভেড়া আদিৰ নাড়ীৰ পৰা কৰা জৰী ।
ধনুৰ ছিলা।
पशुओं की अँतड़ियों को बटकर बनाया धागा। धनुष की डोरी ।

ताँता—(सं पुं) শাৰি, লেথেৰি, শ্ৰেণী ।
कतार। श्रेणी ।

ताँबा–(स ं पु ं) তাম ।
ताम्र धातु।

ताँबूल—(स ं पु ं) তামোল। খিলি তামোল।
पान। पान का बीड़ा।

ताँसना—(क्रि स) ধমক দিয়া।
डाँटना। धमकाना। सताना।

ताई—(सं स्त्री) জেঠী ।
पिता के बड़े भाई की पत्नी।

ताऊ—(सं पुं) জেঠা ।
पिता का बड़ा भाई।

ताक—(स ं स्त्री) চাবনি, অপেক্ষা, অনুসন্ধান।
अवलोकन। टकटकी। अवसर की प्रतीक्षा। खोज।

ताक-झाँक–(सं स्त्री) জুমি-জুমি চোৱা।
छिपकर देखने की क्रिया।

ताकत—(स ं स्त्री) বল, জোৰ, শক্তি ।
जोर। बल। सामर्थ्य।

ताकतवर–(वि) শক্তিশালী, বলৱান ।
शक्तिशाली। समर्थ।

ताकना—(क्रि स) লক্ষ্য কৰা; অপেক্ষা কৰা ।
अवलोकन करना। अवसर की प्रतीक्षा करना।

ता कि—(अव्य) যাতে, গতিকে।
इसलिये कि। जिसमें।

ताकीद—[सं स्त्री] তাগিদা।
किसी काम या बात के लिये जोर देकर कहना। अच्छी तरह चेता कर कही जानेवाली बात।

ताखा—[स ं पु ं] কাঠ বকলাৰ ওপৰত মেৰাই থোৱা কাপোৰৰ থান। দেৱালত বস্তু থোৱা থাক
गत्ते पर लपेटा कपड़े का थान आला, ताक (दीवार में का)

ताग—(सं स्त्री) সূতা ।
सूत ।

तागना—(क्रि स) পাতলকৈ সিয়া ।
तागे से दूर दूर पर सिलाई करना ।

तागा—[सं पुं] বঁটিয়া । সূতা ।
डोरा । धागा । मोटा सूत ।

ताछना—[क्रि अ] শত্ৰুক আক্ৰমণ কৰিবলৈ চুপি চুপি আগবঢ়া ।
शत्रु पर वार करने के लिये बगल से आगे बढ़ना ।

ताज—(सं पुं) ৰাজ মুকুট, আগ্ৰাৰ তাজমহল । কিৰিটি ।
राजमुकुट । मोर, मुरगे आदि के सिर की चोटी । आगरे का ताज महल ।

ताजगी—(सं स्त्री) সজীৱতা, প্ৰফুল্লতা ।
ताजापन । प्रफुल्लता । पूर्ण स्वस्थता ।

ताजन—(सं पुं) চাবুক ।
चाबुक । कोड़ा ।

ताजा—(वि) টাটকা, নতুন, জিয়া ।
जो अभी बनकर तैयार हुआ हो । बिलकुल नया । हरा-भरा । (फल मूल) जो अभी पेड़ से तोड़ा गया हो ।

ताजिया—(सं पुं) মহৰমৰ সময়ত তৈয়াৰী কাগজৰ সমাধি ।
मुहर्रम के अवसर पर बनाया कागज का मकबरा ।

ताजीर—(सं स्त्री) দণ্ড, শাস্তি ।
दंड ।

ताजीरात—(सं पुं) অপৰাধী আৰু শাস্তি সম্বন্ধী আইন সমূহ ।
आपराधिक दंडों से सम्बन्ध रखनेवाले कानूनों का संग्रह ।

ताजीरी—(वि) শাস্তি ।
दण्ड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ ।

ताज्जुब—(सं पुं) আচৰিত ।
आश्चर्य ।

ताड़—(सं पुं) তাল গছ, প্ৰহাৰ ।
एक लम्बा पेड़ । प्रहार ।

ताड़ना—[सं स्त्री] প্ৰহাৰ, ডাবি-ধমক, শাস্তি, উৎপীড়ন ।
प्रहार । डाँट डपट । दण्ड । उत्पीड़न । झिड़की ।
[क्रि स] প্ৰহাৰ কৰা, ডাবি-

धमक दिয়া। গুপ্ত ৰহস্য জানি পেলোৱা।
मारना। कष्ट पहुँचाना। डाँटना-डपटना। छिपी हुई बात भाँपना।

ताड़ित—[वि] ताड़ना পোৱা।
जिसे ताड़ना की गयी या दी गयी हो।

ताड़ी—[सं स्त्री] তাড়ি। তাল বা খাজুৰ গছৰ ৰস বাহীকৈ ৰাখি কৰা এবিধ টেঙা মদ।
ताड़के डण्ठलों का नशीला रस।

तात—[सं पुं] পিতা। পূজনীয় ব্যক্তি।
पिता। बाप। पूज्य या मान्य व्यक्ति।

ताता—(वि) তপত, গৰম।
तपा हुआ। गरम।

तातारी—(त्रि) তাতাৰ দেশৰ।
तातार देश का।
[सं पुं] তাতাৰ দেশৰ নিবাসী।
तातार देश का निवासी।
(सं स्त्री) তাতাৰ দেশৰ ভাষা।
तातार देश की भाषा।

तातील—(सं स्त्री) বন্ধৰ দিন।
छुट्टी का दिन।

तादात्म्य—(सं पुं) এটাৰ আন-টোৰ লগত ঠিক ৰকমে মিল খোৱা। চিনাক্ত কৰণ।
एक वस्तु का दूसरी वस्तु से मिलकर एक हो जाना। पहचानना।
(अ,—आईडेंटिफिकेशन)।

तादाद—[सं स्त्री] সংখ্যা, পৰিমাণ।
संख्या।

तान—[सं स्त्री]টনা কাৰ্য্য। সঙ্গীতৰ তান।
तानने की क्रिया या भाव। खींच। संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार।

तानना—[क्रि स] টনা, বিস্তাৰিত কৰা, মাৰিবলৈ উদ্যত হোৱা।
कसने के लिये जोर से खींचना। खींचकर फ़ैलाना। मारने के हाथ या हथियार उठाना।

ताना—(सं पुं) দীঘ। আক্ষেপ লগা কথা, ব্যঙ্গ।
कपड़े की बुनावट में लम्बाई के बल के सूत। आक्षेपपूर्ण बात।

अंग ।
(क्रि स) গৰম কৰা, বিচাৰ কৰা ।
गरम करना । जाँचना ।

तानापाई, तानापाही—(सं स्त्री) বাৰে বাৰে অহা-যোৱা ।
बार बार आना जाना ।

ताना-बाना—[सं पुं] দীঘ-বাণি ।
कपड़े की बुनावटमें लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत ।

तानाशाह—[सं पुं] স্বেচ্ছাচাৰী শাসক । আইনৰ অধীনতা স্বীকাৰ নকৰা নেতা ।
वह शासक जो अपने अधिकारों का मनमाना दुरुपयोग करे ।
(अं—डिक्टेटर) ।

तानाशाही—(सं स्त्री) একনায়কত্ব ।
अधिकारों का मनमाना उपयोग । वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो ।
(अं—डिक्टेटरशिप)

तापक्रम—(सं पुं) কোনো ঠাঁই বা বস্তুৰ অৱস্থা ভেদে হোৱা তাপৰ তাৰতম্য ।
किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थका वह ताप जो विशेष अवस्थाओं में घटता बढ़ता रहता है ।

ताप-त्रय—[सं पुं] ত্ৰিতাপ—আধ্যাত্মিক, আধিদৈবিক আৰু আধিভৌতিক ।
आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनों ताप या कष्ट ।

तापना—[क्रि अ] জুইকুৱা ।
आग की आँच से शरीर गरम करना ।
(क्रि स) জুইৰ ওপৰত থৈ গৰম কৰা । ধন নাশ কৰা ।
आग पर रखकर गरम करना या तपाना । (धन) नष्ट करना ।

तापस—(सं पुं) তপস্বী ।
तपस्वी ।

ताब—[सं स्त्री] তাপ, জ্যোতি, শক্তি-সামৰ্থ্য ।
ताप । आभा । सामर्थ्य । ताकत ।

ताबड़तोड़—[क्रि वि] একেবাৰে তৎক্ষণাৎ ।
लगातार । तुरन्त ।

ताबूत—[सं पुं] বাকচৰ দৰে বনোৱা শৱাধাৰ ।
लाश बन्दकर रखनेवाली सन्दूक ।

ताबे—[वि] বশীভূত, আজ্ঞাবহ।
वशीभूत। आज्ञा माननेवाला।

ताबेदार—[वि] আজ্ঞাকাৰী, সেৱক।
आज्ञाकारी। सेवक।

ताम—[सं पुं] দোষ, আকুলতা, ক্লেশ, বাসনা, ভাগৰ, এন্ধাৰ।
दोष। व्याकुलता। क्लेश। वासना। थकावट। क्रोध। अँधेरा।

तामरस—(सं पुं) পদুম, সোণ, তাম, ধতুৰা।
कमल। सोना। तांबा। धतूरा।

तामस—(वि) তামসিক।
तमोगुणसे युक्त।
(सं पुं) সাঁপ, দুষ্ট, খং, অজ্ঞান।
सांप। दुष्ट। क्रोध। अज्ञान।

तामीर—[सं स्त्री] অট্টালিকা গঢ়া কাম।
इमारत बनाने का काम।

तामील—(वि) পালনীয়। প্ৰদত্ত।
जिसका पालन हो (आज्ञा)।
जो यथा स्थान पहुँचा या उद्दिष्ट व्यक्ति को दिया गया हो।

तामीली—[सं स्त्री] পালন। সমাধা।
(आज्ञा) पालन। (सूचना आदि) अभिष्ट स्थान पर पहुँचाना।

ताम्रचूड़—[सं पुं] মুৰগী (মতা)।
मुरगा।

ताम्रपर्णी—(सं स्त्री) পুখুৰী।
तालाब।

ताम्रलेख (ताम्र पत्र)—(सं पुं) তামৰ ফলি।
तांबेपर लिखे गये दान-पत्र आदि।

तायफा—[सं पुं] বেশ্যা বৃত্তিৰ লগত সম্পৰ্ক ৰখা লোক সকল।
वेश्या और उसके समाजियों की मण्डली।
(सं स्त्री) বেশ্যা।
वेश्या।

ताया—(सं पुं) জেঠা।
पिता का बड़ा भाई।

तार—(सं पुं) ৰূপ, তাঁৰ, টেলিগ্ৰাম। ক্ৰম নগ্নীৰা। পুখুৰী।
चांदी। धातु-तन्तु। बिजली की सहायता से समाचार भेजे जाने वाले तन्तु या ऐसे समाचार (टेलिग्राम)। सूत। सिलसिला।

কৰতোল সতহ। তালাব।
[বি] নির্মল।
निर्मल।

তাৰকেশ—[সং পুং] জোন।
चन्द्रमा।

তাৰকোল—(সং পুং)আলকাতৰা।
अलकतरा।

তাৰঘাট-(সং পুং) আচনি উপায়।
मतलब निकालने का सुभीता या अवसर।

তাৰনা—[ক্রি স] উদ্ধাৰ কৰা।
পানীত পৰা মানুহক বচোৱা।
उद्धार करना। पार लगाना।
डूबते को बचाना। उद्गति या मोक्ष देना।

তাৰপীন—(সং পুং) তাৰ্পিন।
चीड़ के वृक्ष से निकला तेल।

তাৰল্য—(সং পুং) তৰলতা, চঞ্চলতা।
तरलता। चंचलता।

তাৰা—(সং পুং) তৰা। চকুৰ মণি, ভাগ্য।
नक्षत्र। आँख की पुतली। भाग्य।
(সং স্ত্রী) দহবিধ মহাবিদ্যাৰ একবিধ। বৃহস্পতিৰ পত্নী।
दस महाविद्याओं से एक। बृहस्पति की स्त्री।

তাৰাধিপ, তাৰাধীশ—[সং পুং]
চন্দ্ৰ, মহাদেৱ, বৃহস্পতি।
चन्द्रमा। शिव। बृहस्पति।

তাৰাপথ - (সং পুং) আকাশ।
आकाश।

তাৰী-(সং স্ত্রী) ধ্যানমগ্ন অৱস্থা।
একেথৰে চাই থকা।
ध्यान में तन्मय हो जाना।
टकटकी।

তাৰীক—[বি] ক'লা, এন্ধাৰ।
काला। अँधेरा।

তাৰীখ—[সং পুং] তাৰিখ। তিথি।

তাৰীফ-(সং স্ত্রী) প্ৰশংসা, বৰ্ণনা, বিশেষত্ব।
वर्णन। प्रशंसा। विशेषता।

তাৰুণ্য—(সং পুং) যৌৱন, তৰুণ অৱস্থা।
जवानी।

তালু—[সং পুং] তালু।
तालू।

তাল—[সং পুং]হাতৰ তলুৱা। হাত চাপৰি। খুটি-তাল, সৰোবৰ, তাল গছ।

हथेली। करतल ध्वनि। जाँघ पर हथेली मारकर उत्पन्न किया जानेवाला शब्द। मंजीरा। तालाब।

ताल-बैताल—[सं पुं] দুটা ভূতৰ নাম।
दो कल्पित यक्ष।

ताल-मेल— [सं पुं] তাল-মান, তাল আৰু স্বৰৰ সামঞ্জস্য।
ताल और स्वर का सामंजस्य।

तालाब—[सं पुं] সৰোবৰ।
सरोवर।

तालिम—(सं स्त्री) বিচনা।
बिछौना।

ताली-[सं स्त्री] চাবি, হাতচাপৰি, সৰু পুখুৰী।
कुंजी। ताड़ी। करतल ध्वनि। छोटा तालाब।

तालीम—(सं स्त्री) শিক্ষা।
शिक्षा।

ताल्लुक—(सं पुं) সম্বন্ধ।
सम्बन्ध। वास्ता।

ताल्लुका-(सं पुं) বিস্তৃত এলেকা।
बड़ा इलाका।

ताल्लुकेदार—[सं पुं] তালুকদাৰ, জমিদাৰ।
किसी ताल्लुके का जमींदार।

ताव—[सं पुं] উত্তাপ, গৰম, কাগজৰ তাও।
उत्ताप। गरमी। शेखी या ऐंठ की झोंक। कागज का तख्ता।

तावत्—(क्रि वि) তেতিয়ালৈকে, তালৈকে।
तब तक। वहाँ तक।

तावना—(क्रि स) তাপ দিয়া, দুখ দিয়া।
तपाना। दुःख या कष्ट पहुँचाना।

तावरी—(सं स्त्री) তাপ, ৰ'দ, জ্বৰ, ঈৰ্ষা।
ताप। धूप। बुखार। ईर्ष्या।

तावान—[सं पुं] অৰ্থদণ্ড।
अर्थ दंड।

तासीर—(सं स्त्री) প্ৰভাৱ, ফল।
प्रभाव। किसी वस्तु की गुण सूचक प्रकृति।

तासु—(सर्व) তাৰ বা তেওঁৰ।
उसका।

तासों—(सर्व) তেওঁৰ দ্বাৰা বা তেওঁৰ পৰা।
उससे।

ताहि—(सर्व) তেওঁক ।
उसको । उसे ।

ताहूँ—(क्रि वि) তথাপিও ।
तिसपर भी ।

तिकड़म—[सं पुं] ষড়যন্ত্ৰ । চাতুৰী ।
गहरी या गुप्त युक्ति या चाल ।

तिकड़मी—[सं पुं] কৌশলী ।
चालबाज ।

तिकोना, तिकोनिया, तिखूँटा, तिर-खूँटा— (वि) তিনচুকীয়া ।
तीन कोनों वाला ।

तिक्का—(सं पुं) মাংস-পিণ্ড ।
मांस की बोटी ।

तिक्त—(वि) তিতা ।
तीता ।

तिग्म—(वि) তীক্ষ্ণ, কেহা ।
तीक्ष्ण । कड़ुवा ।

तिग्मता—(सं स्त्री) তীক্ষ্ণতা ।
तीक्ष्णता ।

तिखारना—(क्रि अ) নিষ্ঠাৰে কৰা
अनुसन्धान ।
ताकीद करना ।

तिगुना—(वि) তিনি গুণ ।
तीन गुना ।

तिच्छ तिच्छन—(वि) তীক্ষ্ণ ।
तीक्ष्ण ।

तिजरा— [सं पुं] পাল-জ্বৰ, ডোম-জ্বৰ, এৰৈকয়া ।
हर तीसरे दिन आनेवाला बुखार ।

तिजारत—(सं स्त्री) বাণিজ্য, বেহা বেপাৰ ।
वाणिज्य ।

तिजोरी— (सं स्त्री) লোৰ আলমাৰী ।
लोहे की आलमारी ।

तिड़ी—(सं स्त्री) টিকা (তাচৰ পাতৰ) ।
ताश का वह पत्ता जिसपर तीन बूटियाँ होती है ।
[वि] মনে মনে আঁতৰি যাওঁতা ।
जो चुपचाप गायब हो गया है ।

तिड़ी-बिड़ी, तितर-बितर—[वि] ছেদেলি-ভেদেলি ।
छितराया या बिखरा हुआ ।
अस्त व्यस्त ।

तित— [क्रि वि] তাত, সেই ঠাইত ।
वहाँ । उधर ।

तितना— [क्रि वि] সিমান।
उतना।

तितली—(सं स्त्री) পখিলা। এবিধ ঘাঁহ। एक उड़नेवाला पतिंगा। एक प्रकार की घास।

तितलौकी-(सं स्त्री) তিতা-লাও। कड़वा कद्दू।

तितारा—[सं पुं] এবিধ বাদ্য-যন্ত্র। দোতোৰা।
सितारों की तरह तीन तारोंवाला एक बाजा।

तितिक्षा—(सं स्त्री) সহিষ্ণুতা। सहिष्णुता। क्षमा।

तितिर, तित्तिर, तितर—(सं पुं) এবিধ চৰাই, মাছ বোকা। एक पक्षी।

तिते—(वि) সিমান।
उतने।

तितेक—(वि) সিমান।
उतना।

तितै— (क्रि वि) তাত, সেই ঠাইত।
उस स्थान पर।

तिथि-पत्र—[सं पुं] পঞ্জিকা।
पंचांग।

तिन, तिन्ह—(सर्व) সেইবোৰ।
'तिस' का बहु०।
[सं पुं] কুটা, তৃণ।
तिनका। तृण।

तिनकना, तिनगना— [क्रि अ] জকি উঠা।
कुछ नाराज होना।

तिनका, तिनुका—(सं पुं) কুটা।
सूखी घास आदि का टुकड़ा।

तिनका-तोड़—[सं पुं] কুটা-চিঙি এৰা।
चिरन्तन सम्बन्ध-छेद।

तिन-पहला—(वि) তিনিমুখীয়া।
जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

तिन्नी—(सं स्त्री) এবিধ জংলী ধান।
एक प्रकारका जंगली धान।

तिपाई, तिरपाई—(सं स्त्री) তিনি ঠেঙীয়া চকী।
तीन पायों की छोटी चौकी।

तिबारा—[वि] তৃতীয় বাৰ।
तीसरी बार।
(सं पुं) তিনিখন দুৱাৰ থকা ঘৰ।
वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे हों।

तिबासी—(बि) তিনি দিনৰ বাহী।
तीन दिनोंका बासी (खाद्य पदार्थ)।

ति-मंजिला— (बि) তিনি মহলীয়া ঘৰ।
तीन स्तरो का मकान।

तिमिंगिल—(सं पुं) তিমি মাছ।
एक बड़ा सामुद्रिक जन्तु।

तिमि—(अव्य) সেই দৰে।
उस प्रकार। वैसे।

तिमिर— (सं पुं) অন্ধকাৰ, ডাৱৰীয়া।
अन्धकार। धुँधला।

तिमिरारि—(सं पुं) সূৰ্য্য।
सूर्य।

तिमिरारी—(सं स्त्री) এন্ধাৰ।
अन्धकार।

तिमुहानो, तिरमुहानी-[सं स्त्री] তিনি আলিৰ চক।
जहाँ तीन रास्ते मिलते हों।

तिय—(सं स्त्री) তিৰোতা।
औरत। स्त्री।

तिया—(सं स्त्री) তিৰোতা। টিক্কা (তাচৰ)।
स्त्री। तीन मुहरोंवाला ताश का पत्ता।

तिरकना—[क्रि अ] চুলি পকা। ভাঙি যোৱা। बाल सफेद होना। 'तड़' शब्द कर टूटना।

तिरगुन—(सं पुं) ত্ৰিগুণ—সত্ব, ৰজ, তম।
सत्व, रज, तम ये तीन गुण।

तिरछई, तिरछाई—(सं स्त्री) হেলনীয়া।
तिरछापन।

तिरछा तिरौछा-(बि) টেৰা, বেঁকা।
वक्र। टेढा।

तिरना—(क्रि अ) সাঁতোৰা, পাৰ হোৱা বা মুক্ত হোৱা।
पानी पर तैरना या उतरना। पार होना। संसार सागर से पार होना या मुक्त होना।

तिरप—(सं पुं) নাচৰ এক বিশেষ ভঙ্গী।
नृत्य में तिहाई आने पर तीन बार पैर पटकना।

तिरपट—(बि) টেৰা।
तिरछा। मुश्किल। टेढा।

तिरपाल—(सं पुं) ত্ৰিপাল।
एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो धूप और वर्षा से रक्षा के लिये

चीजों पर ताना या डाला जाता है। (अं—टरपोलिन)

तिरपित—(वि) তৃপ্ত ।
तृप्त ।

तिरपौलिया—(सं पुं) তিনিখন বাহিৰ দুৱাৰ থকা ঠাই ।
तीन बाहरी दरवाजोंवाला स्थान।

तिरमिरा—[सं पुं] চকুৰ ৰোগ ।
आँखों का एक रोग। चकाचौंध ।

तिरमिराना—(क्रि अ) চকু চাট মাৰি ধৰা ।
प्रकाश के सामने (आँखों का) चौंधियाना ।

तिरलोक—(सं पुं) তিনিলোক— স্বৰ্গ, মৰ্ত্ত্য, পাতাল ।
तीनों लोक ।

तिरबाँहा—(सं पुं) নদীৰ পাৰ ।
नदी का किनारा ।

तिराना—(क्रि स) সাঁতুৰোৱা, পাৰ-কৰা । উদ্ধাৰ কৰা ।
पानी पर तैरना । पार करना । उद्धार करना ।

तिरहा—(सं पुं) তিনি আলিৰ চক ।
तिमुहानी ।

तिराहो—[क्रि वि] তলত ।
नीचे ।

तिरिया—(सं स्त्री) তিৰী, তিৰোতা ।
स्त्री । औरत

तिरोहित—[वि] লুকায়িত । লুপ্ত ।
छिपा हुआ । लुप्त ।

तिर्यक्—(वि) টেৰা ।
टेढ़ा ।
(सं पुं) পশু-পক্ষী ।
पशु पक्षी आदि जीव ।

तिर्यग् गति—[सं स्त्री] বক্র-গতি । পশুৰ গৰ্ভত জন্ম ।
टेढ़ी चाल । पशु योनि में जन्म लेना ।

तिलंगा—(सं पुं) দেশীয় চিপাহী ।
देशी सिपाही ।

तिलंगी—[वि] তেলেঙ্গানাৰ অধিবাসী ।
तिलंगाने का निवासी ।

[सं स्त्री] চিলা।
गुड्डी। पतंग।

तिलकना-[ক্রি. অ] পিছল খোৱা।
फिसलना।

तिलकुट—[सं पुं] তিল-পিঠা।
कूटे हुए तिल की बनी मिठाई।

तिलघटा—[सं पुं] পঁইতা চোৰা, তেলভকুৱা।
एक प्रकार का पतंगा।

तिल-चावला—[वि] কলা-বগা।
পখৰা।
काला और सफेद मिला हुआ।

तिलछना-[ক্রি অ] অধীৰ হোৱা।
विकल होना। छटपटाना।

तिलठी—[सं स्त्री] তিল গছৰ শুকান ঠাৰি।
तिल का सूखा डंठल।

तिलड़ा—(सं स्त्री) তিনিধৰীয়া বা তিনিগুণীয়া হাৰ।
तीन लड़ों की माला या हार।

तिलमिलाना—(ক্রি অ) চিকেহি মাৰি উঠা।
अचानक कष्ट या पीड़ा होने से विकल होना।

तिलस्म—(सं पुं) ভেল্কী।
जादू। अद्भुत या अलौकिक व्यापार। [वि–तिलस्मी]

तिलांजलि-(सं स्त्री) পৰিত্যাগ।
মৃতকক তিল পানী দিয়া ক্রিয়া।
किसी के मरने पर अंजुली में जल और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ना। सदा के लिये परित्याग करने का संकल्प।

तिला-(सं पुं) এবিধ তেল।
पुंसत्व की शक्ति बढाने के लिये जननेंद्रिय पर मालिश करने का एक प्रकार का तेल।

तिलाक—(सं पुं) বিচ্ছেদ।
तलाक।

तिलाम—(सं पुं) দাসানুদাস, দাসৰো দাস।
गुलाम का गुलाम। परम तुच्छ व्यक्ति या सेवक।

तिलेदानी—(सं स्त्री) বেজী, সূতা আদি থোৱা মোনা।
सूई धागा आदि रखने की थैली।

तिलोना, तिलौना—(वि) তেলীয়া, তেলযুক্ত।
जिसमें तेल हो या तेल लगा हो।

तिलौंछना— (क्रि स) তেল দি চিকণ কৰা।
तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौरी—[सं स्त्री] তিল মিহলী পিঠা।
तिल मिली हुई बरी।

तिल्ला— (सं पुं) শাৰী, চাদৰ আদিৰ পাৰি।
दुपट्टे या साड़ी आदिका बादले या बादले का काम।

तिल्ली—(सं स्त्री) প্লীহা, পিলাই। তিল।
पेट की पिलही। पिलही का रोग। तिल।

तिवान--[सं पुं] চিন্তা।
चिन्ता। फिक्र।

तिष्टना--[क्रि स] গঢ়োৱা।
बनाना।

तिष्ठना--(क्रि अ) ৰোৱা।
ठहरना।

तिस--(सर्व) সেই।
'ता' का विभक्ति युक्त रूप।

तिसरैत, तिहायत— [सं पुं] মধ্যস্থ। তৃতীয় অংশৰ গৰাকী।
तटस्थ तीसरा आदमी। तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना-(क्रि अ) তৃষ্ণাতুৰ হোৱা।
प्यासा होना।

तिहाई--[सं स्त्री] তৃতীয়াংশ।
तृतीयांश।

तिहारा (रो)—(सर्व) তোমাৰ।
तुम्हारा।

तिहिं, तेहि— (सर्व) তাক বা তেওঁক।
उसको, उसे।

तिहूँ—[वि] তিনিও।
तीनों।

ती, तीय, तीव—(सं स्त्री) ভাৰ্য্যা, পত্নী।
स्त्री। पत्नी।

तीक्षग, तीक्षन, तीछ्‌न, तीखन— (वि) তীক্ষ, চোকা।
तेज नोक या धारवाला। प्रखर। प्रचंड। तीखा या चरपरा स्वाद वाला। कर्ण कटु।

तीखा—[वि] সুতীক্ষ্ণধাৰ। শ্রুতি-কটু।

तेज धारवाला। प्रखर। सुनने में अप्रिय। बढ़िया।

तीक्ष्न, तीछा—[वि] তীক্ষ্ণ।
तीक्ष्ण।

तीज—(सं स्त्री) তৃতীয়া তিথি। তিৰোতাৰ এক ব্ৰত।
चान्द्र मास के पक्ष की तीसरी तिथि। भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया को होनेवाला नारियों का एक व्रत। हरितालिका।

तीजा—(सं पुं) তৃতীয়। মুচলমানৰ মৃত্যুত তৃতীয় দিনৰ কৃত্য।
मुसलमानों में किसी के मरने पर तीसरे दिन का कृत्य।

तीतर, तीतुल—(सं पुं) ডৰিক চৰাই।
एक प्रसिद्ध पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।

तीता—(वि) তিতা।
तीखे और चरपरे स्वाद वाला। मिर्च आदि के स्वाद का।

तीन—(वि) তিনি।

तीरंदाज—(सं पुं) কাঁড়ী।
तीर चलानेवाला।

तीर—(सं पुं)পাৰ, কাঁড়।
नदीका किनारा। बाण।
(क्रि वि) ওচৰ।
पास। निकट।

तीरथ, तीर्थ—(सं पुं) তীৰ্থস্থান।
वह पवित्र स्थान जहाँ लोग धर्म भाव से दान, दर्शन आदि के लिये जाया करते हैं। संन्यासियों का एक भेद। यज्ञ।

तीर्थंकर—(सं पुं) জৈন ধৰ্মাৱলম্বী সকলৰ প্ৰধান উপাস্য-দেৱতা।
जैन धर्मावलम्बियों के प्रमुख चोबीस उपास्य देवता।

तीर्थाटन—[सं पुं] তীৰ্থ-যাত্ৰা, তীৰ্থ-পৰ্য্যটন।
तीर्थ-यात्रा।

तीला—(सं पुं) চৰি।
बड़ा या लम्बा तिनका। सींक।

तीली—(सं स्त्री) শলা।
पतली सींक। मोजे आदि बुनने की सलाई।

तीवर—(सं पुं) সাগৰ, চিকাৰী, মাছ-মৰীয়া।
समुद्र। शिकारी। मछुआ।

तीसरा-(वि) তৃতীয়, নিৰপেক্ষ।
তৃতীয়। तटस्थ।

तीसी—(सं स्त्री) তিচি।
अलसी।

तुंग—[वि] উন্নত, ওখ।
उन्नत। ऊँचा। प्रचण्ड। प्रधान।
(सं पुं) পৰ্বত।
पर्वत।

तुंड-(सं पुं) মুখ, ঠোঁট, মহাদেৱ।
मुँह, चोंच। थूथन। महादेव।

तुंडी—(वि) ওফোন্দা মুখ বা ঠোঁট।
आगे निकले मुँह, चोंच या थूथनवाला।
(सं पुं) গণেশ দেৱতা।
गणेश।

तुंद -(सं पुं) পেট।
पेट।
(वि) ক্ষিপ্ৰ, ভয়ঙ্কৰ।
तेज। विकट।

तुंदिल, तुंदैल—(वि) পেটাল, পেটুৱা।
बड़े पेट वाला।

तुंबा, तूंबा—(सं पुं) তিতা-লাও, লাওখোলা।
तितलौकी। कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ पात्र।

तुंबुरु—(सं पुं) ধনিয়া।
धनिया।

तुअ—(सर्व) তোমাক, তোমাৰ।
तुम्हें। तुम्हारा।

तुअना-(क्रि अ) সৰিপৰা, গৰ্ভপাত হোৱা।
टपकना। गिर पड़ना। (गर्भ) गिरना।

तुक—(सं स्त्री) মিত্ৰাক্ষৰতা, সংগতি।
किसी कविता या गीत का कोई या पद। अन्त्यानुप्रास। सामंजस्य। संगति।

तुकबंदी-[सं स्त्री]ছন্দত কাব্য-গুণহীন শব্দ-যোজনা। নিকৃষ্ট কবিতা।
काव्य गुणों से रहित तुक जोड़कर पद्य रचने का काम। भद्दी या साधारण कविता।

तुकमा—(सं पुं) বুটাম-ঘাট।
बटन लगाने का छेद।

तुकांत—(सं पु) মিলিতান্ত, মিত্ৰাক্ষৰী।
अन्त्यानुप्रास युक्त।

तुकारनो—(क्रि स) তই, তই বুলি মতা, অভদ্র সম্বোধন।
'तू तू' करके बुलाना। अशिष्ट सम्बोधन।

तुक्कल—[सं स्त्री] ডাঙৰ চিলা।
बड़ी पतंग या गुड्डी।

तुक्का—(सं पुं) ভোটা-শৰ।
वह तीर जिसमें फल न हो।

तुखार-(सं पुं) এখন পুৰণি দেশৰ নাম। সেই দেশৰ ঘোঁৰা।
एक प्राचीन देश का नाम। इस देश का घोड़ा।

तुझ—[सर्व] তই।
'तू' शब्द का विभक्ति युक्त रूप।

तुझे—(सर्व) তোক। तुझको।

तुट—[वि] এখুদমান, এধানমান।
बहुत थोड़ा।

तुड़ाना—(क्रि स) ভঙোৱা। বেলেগ হোৱা। পইচা ভঙোৱা।
दूसरे से तोड़नेका काम कराना। सम्बन्ध छोड़कर अलग होना। बड़े सिक्कों को छोटे छोटे सिक्कों में बदलना।

तुतराना, तोतराना-(क्रि अ) খোকা-থুকিকৈ কোৱা।
तुतला कर अस्पष्ट बोलना।

तुतरौंहा, तोतला—(वि) খোকা-থুকি কৈ কথা কওঁতা।
तुतलाकर अस्पष्ट बोलनेवाला।

तुन—(सं पुं) হালধীয়া ফুল বিশিষ্ট এবিধ ফুল গছ।
एक पेड़ जिसके फूलों से बसन्ती रंग निकलता है।

तुनक—(वि) দুৰ্বল, কোমল।
दुर्बल। कोमल।

तुनीर, तूण, तूणीर—(सं पुं) তূণ।
तीर रखने का चोंगा।

तुपक—(सं स्त्री) পিষ্টল।
छोटी बन्दूक।

तुभना—[क्रि अ] অবাক হোৱা।
स्तब्ध होना।

तुम—(सर्व) তুমি।
'तू' का बहुवचन रूप।

तुमड़ी, तूंबी—(सं स्त्री) লাও-খোলা, লাও-টোকাৰী।
कद्दू का बना पात्र।

तुमुल—(सं पुं) যুদ্ধৰ কোলাহল, ঘোৰ-যুদ্ধ।
सेना या युद्ध का कोलाहल। घोर युद्ध।

तुम्ह—(सर्व) তুমি ।
तुम ।

तुम्हारा—(सर्व) তোমাৰ ।
'तुम' का सम्बन्ध कारक का रूप ।

तुम्हें—(सर्व) তোমাক ।
तुमको ।

तुरंग (म)—(सं पुं) ঘোঁৰা, মন ।
সাত ।
घोड़ा । चित्त । सात की संख्या ।

तुरंज—[सं पुं] ৰবাব টেঙা, ছুকমা টেঙা, ধপা টেঙা ।
चकोतरा नीबू ।

तुरंत—(क्रि वि) তুৰন্তে,ততালিকে ।
जल्दी से । तत्काल ।

तुर—(क्रि वि) ততালিকে ।
शीघ्र ।
(सं स्त्री) ততা-তৈয়া ।
शीघ्रता ।

तुरई, तोरई, तोरी—(सं स्त्री) ভোল; জিকা বা ঝিকা ।
एक प्रकार की तरकारी ।

तुरकटा—(सं पुं) মুচলমান ।
मुसलमान ।

तुरकाना—(सं पुं) তুৰ্কীস্থান, মুচলমান ।
तुर्किस्तान । मुसलमान ।

तुरकिन—(सं स्त्री) তুৰ্কী দেশৰ তিৰোতা । মুচলমান তিৰোতা ।
तुर्क की स्त्री । मुसलमान की स्त्री ।

तुरकी—(वि) তুৰ্কী দেশীয় ।
तुर्क देश का ।
(सं स्त्री) তুৰ্কীৰ ভাষা ।
तुर्कि स्तान की भाषा ।

तुरग तुरय—(सं पुं) ঘোঁৰা ।
घोड़ा ।

तुरही—[सं स्त्री] পেপা, শিঙা ।
एक प्रकार का लम्बा बाजा ।

तुरा-(सं स्त्री) ততালিকে, শিঙা ।
त्वरा, जल्दी । तुरही बाजा ।
[सं पुं] ঘোঁৰা ।
घोड़ा ।

तुराई—(सं स्त्री) কোমল গদি, ততালিকে ।
गद्दा । जल्दी ।

तुराना-(क्रि अ) আঁতুৰ হোৱা, উচ্-পিচ্ লগা ।
आतुर होना । जल्दी मचाना ।

(क्रि स) ভাঙি পেলোৱা ।
तोड़ देना ।

तुरस, तुर्श—(वि) টেঙা ।
खट्टा ।

तुरसि-(स स्त्री) বেগ, ক্ষিপ্ৰতা ।
वेग । जल्द बाजी । फुरती ।

तुरसी, तुर्शी—(सं स्त्री) টেঙা-গুণ, কেটেৰা-মাত ।
खट्टापन । बातचीत में दिखाई जानेवाली कटुता ।

तरित—(वि) ততালিকে ।
त्वरित, शीघ्रता से ।
[क्रि वि] তুৰন্তে ।
तुरंत ।

तुरीय—(वि) চতুর্থ ।
चौथा ।
(सं स्त्री) মোক্ষ । বাণী ।
वाणी की उच्चरित होनेवाली अवस्था । मोक्ष ।
(सं पुं) পৰম ব্ৰহ্ম ।
निर्गुण ब्रह्म ।

तुरुक, तुर्क—(सं पुं) মুচলমান, তুৰস্ক দেশৰ নিবাসী ।
मुसलमान । तुर्किस्तान का निवासी ।

तुर्रा—(सं पुं) ঝ ।
पगड़ी में लगाया जानेवाला पर या कलगी । पक्षियों के सिर पर की कलगी ।
[वि] অদ্ভুত , আগেয়ে , নোহোৱা ।
अनोखा । अद्भुत ।

तुलना—(सं स्त्री) তুলনা ।
कई वस्तुओं का तारतम्य । समानता । उपमा ।
[क्रि अ] দগা পাল্লাৰে ওজন কৰা । উদ্যত হোৱা ।
तराजू पर तोला जाना । तौल या मान में बराबर उतरना । नियमित होना । उद्यत होना ।

तुलवाना—(क्रि स) জোখা, গাড়ীৰ চকাত তেল দিয়া ।
तौल या वजन । गाड़ीके पहियों में तेल दिलाना ।

तुला—[सं स्त्री] সমানতা, তুলাচনী, ওজন, তুলাৰাশি – বাৰটা ৰাশিৰ ভিতৰত সপ্তম ।
तुलना । मिलान । तराजू । तौल । बारह राशियों में से सातवीं राशि ।

तुलाई—(सं स्त्री) জোখা কাৰ্য্য বা তাৰ বানচ ।
तोलनेका काम, भाव या मजदूरी ।

तुलादान-[सं पुं] ব্ৰাহ্মণক নিজ শৰীৰৰ সমান ওজনৰ দ্ৰব্য-দান ।
मनुष्य की तौल के बराबर अन्न या दूसरे पदार्थ का दान।

तुलाना - (क्रि अ) আহি পোৱা, ঢুকি পোৱা, নষ্ট হোৱা, জোখোৱা ।
आ पहुंचना । . पूरा उतरना । नष्ट हो जाना । किसीके बराबर होना । तुलवाना ।

तुव—(सर्व) তোমাৰ, তৱ ।
तव । तुम्हारा ।

तुष-[सं पुं] তুঁহ, কণীৰ খোলা ।
भूसी । अंडे का छिलका ।

तुषानल—(सं पुं) তুঁহ-জুই ।
भुसी या घास फूस की आग ।

तुष्टना—[क्रि अ] তুষ্ট হোৱা ।
तुष्ट या प्रसन्न होना ।

तुसी—(सं स्त्री) তুঁহ ।
भूसी ।
[सर्व, वि] আপুনি ।
आप ।

तुहिं—(सर्व) তোমাক ।
तुझको ।

तुहिन—(सं पुं) কুঁৱলী, বৰফ, জোনাক, শীত ।
कुहरा । हिम । चाँदनी । शीत ।

तुहिनाचल—(सं पुं) হিমালয় ।
हिमालय ।

तूँ, तू—[सर्व] তই ।
मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम (तुच्छार्थ)

तूअर—[सं पुं] ৰহৰ বা তাৰ গছ ।
अरहर का पौधा । उसके दाने या बीज ।

तूखना—(क्रि स) তুষ্ট কৰা ।
तुष्ट या प्रसन्न करना ।
(क्रि अ) তুষ্ট হোৱা ।
तुष्ट या प्रसन्न होना ।

तूती—(सं स्त्री) টিঁয়া চৰাই, এবিধ পেঁপা ।
छोटी जाति का तोता । मुँह से बजाने का एक बाजा ।

तूदा—(सं पुं) দ'ম, সীমাৰ চিন ।
राशि । हद बंदी । निशाना साधनेका मिट्टी का ढूह ।

तूफान—(सं पुं) धुमुहा,
तेज आँधी ।

तूफानी—[वि] উৎপতীয়া, মিছ-লীয়া, ধুমুহাৰ দৰে বেগী ।
उपद्रवी । झूठा अभियोग या कलंक लगानेवाला । तूफान की तरह तेज । उग्र ।

तूम-तड़ाक— [सं स्त्री] লাহ-বিলাহ ।
तड़क भड़क । ठसक ।

तूमना—[क्रि स] কপাহ বচা । হাতেৰে ঘঁহি পিহি দিয়া ।
रूई के रेशों का पहल अलग अलग करना । हाथसे मसलना ।

तूमार—[सं पुं] অদৰ্কাৰী বিস্তাৰ ।
साधारण बातका व्यर्थ विस्तार ।

तूर, तूरा—(सं पुं) নাগৰা, শিঙা । ভেৰী ।
नगाड़ा । तुरही ।

तूरज, तूर्य—(सं पुं) শিঙা, ভেৰী ।
नगाड़ा ।

तूरज (न)—[क्रि वि] ততালিকে ।
चट पट । शीघ्र ।

तूरना—[क्रि स] ভঙা ।
तोड़ना ।

(सं पुं) শিঙা, পেপা ।
तुरही ।

तूर्ण—[अव्य] তুৰন্তে ।
जल्दी ।

तूल—[सं पुं] আকাশ, কপাহ, ৰঙা সূতাৰ কাপোৰ ।
आकाश । रूई । लाल रंग का सूती कपड़ा । गहरा लाल रंग । लम्बाई ।
[वि] তুল্য, তুলনীয় ।
तुल्य ।

तूलना—[क्रि स] গাড়ীৰ ধুৰাত তেল দিয়া ।
पहिये की धूरी में तेल डालकर चिकना करना ।

तूलम-तूल—[क्रि वि] দীঘে-দীঘে, সমুখা সমুখিকৈ ।
लम्बाई के बल । आमने सामने ।

तूलिका, तूली—[सं स्त्री] তুলিকা, কলম ।
चित्र अंकित करने की कूँची ।

तूस— [सं पुं] তুহ, পচম, পচমী চাদৰ
भूसी । पशमीना ऊन । पशमीना ऊनकी बनी चादर ।

तूसना—(क्रि अ, क्रि स)তুষ্ট হোৱা বা তুষ্ট কৰা।
सन्तुष्ट, तृप्त या प्रसन्न होना या करना।

तृखा, तृषा—[सं स्त्री] তৃষ্ণা, পিপাসা।
प्यास। इच्छा। अभिलाषा। लोभ लालच।

तें—(प्रत्यय) দ্বাৰা। তকৈ।
से।

तेंदुआ—(सं पुं) নাহৰ ফুটুকী বাঘ।
चीते की तरह का एक हिंसक पशु।

तेंदू— (सं पुं) আবলুস গছ।
आबनूस का वृक्ष।

ते—(अव्य) পৰা। তকৈ।
से।
[सर्व] তেওঁলোক। তেখেত-সকল।
वे। वे लोग।

तेइ—[सर्व] তাক।
उसे।

तेउ—[सं पुं] জেউতি, জুই।
तेज। अग्नि।

तेऊ—(पद) তেখেত ও।
वे भी।

तेखना—(क्रि अ) ক্রুদ্ধ হোৱা।
क्रुद्ध होना।

तेग—(सं स्त्री) তৰোৱাল।
तलवार।

तेगा—(सं पुं) দা, খড়্গ।
खड्ग।

तेजना—[क्रि स] ত্যাগ কৰা।
এৰা।
त्यजना। त्याग करना।

तेजपत्ता, तेजपात—[सं पुं] তেজ-পাত।
एक पेड़ का पत्ता जो मसाले की तरह काम में आता है।

तेजसी, तेजस्वी—(वि) তেজস্বী, প্ৰতাপী।
जिसमें तेज हो। प्रतापी।

तेजाब—(सं पुं) এচিদ। ক্ষাৰ-জাতীয় টেঙা আৰক।
क्षार का तरल और अम्ल सार। (अं—एसिड)।

तेंजाबी—[वि] এচিদযুক্ত। এচিদেৰে শোধিত।
तेजाब सम्बन्धी। तेजाब की

सहायता से ठीक किया हुआ।
[सं पुं] এচিদৰ সহায়েৰে শোধিত সোণ।
तेजाब की सहायता से शुद्ध किया हुआ सोना।

तेजायवन—(सं पुं)অতি তেজস্বী।
परम तेजस्वी।

तेजी—[सं स्त्री] তীব্ৰতা, উগ্ৰতা। শীঘ্ৰতা, দুৰ্মূল্যতা।
तीव्रता। उग्रता। शीघ्रता। महँगी।

तेजोहत—[वि] শ্ৰীহীন, কুশ্ৰী।
श्री हत।

तेता, तेतिक, तेतो– (वि) সিমান।
उतना।

तेपि—[पद] তথাপি।
तो भी।

तेरस—[सं स्त्री] ত্ৰয়োদশী।
त्रयोदशी तिथि।

तेरह—[वि] তেৰ।

तेरहीं –(सं स्त्री) মৃতকৰ ত্ৰয়োদশ দিবসত দিয়া ভোজ।
मृतक के तेरहवें दिन किया जाने वाला श्राद्ध।

तेरा-(सर्व) তোৰ।
'तू' का सम्बन्ध कारक रूप।

तेलहन—[सं पुं] তেল-গুটি।
वे बीज जिनसे तेल निकाला जाता है।

तेलहा— [वि] তেল যুক্ত, তেল-তেলীয়া। তেলেৰে ভজা।
जिसमें तेल हो या तेल लगा हो। तेल के योग से बना हुआ या पका हुआ।

तेलिया—(वि) চক-চকীয়া। তেলৰ দৰে ক'লা। তেল তেলীয়া।
तेल की तरह काला, चिकना और चमकीला।
[सं पुं] ক'লা বৰণ, ক'লা-ঘোঁৰা।
काला रंग। काले रंगका घोड़ा।

तेलिया-परवान—[सं पुं] এবিধ চক্-চকীয়া শিল।
एक प्रकार का चिकना पत्थर।

तेवन—[सं पुं] আগ চোতাল, আমোদ-প্ৰমোদৰ দিন।
घर या महल के सामने का छोटा बाग। आमोद प्रमोद का स्थान। मनोविनोद।

तेवर—[सं पुं] দৃষ্টি বা চাৱনী। ভ্ৰূকুটি।
दृष्टि। चितवन। भृकुटी।

तेवान—[सं पुं] চিন্তা, ভাবনা।
चिन्ता। फिक्र। सोच विचार।

तेवाना—[क्रि अ] চিন্তা কৰা।
चिन्ता या फिक्र करना। विचार करना।

तेह—[सं पुं] খং, অভিমান, উত্তেজনা।
क्रोध। घमंड। तेजी। तीखापन।

तेहरा—[वि] তিনিকোণীয়া।
तीन परतों का। तिगुना।

तेहराना-[क्रि स] তৃতীয়বাৰ কৰা।
कोई काम तीसरी बार करना।

तेहा-[सं पुं] ক্ৰোধ, অভিমান, উগ্ৰতা।
क्रोध। अहंकार। उग्रता।

तेही-[सं पुं] খঙাল, অভিমানী, উগ্ৰ স্বভাৱৰ।
क्रोधी। अभिमानी। उग्र स्वभाव वाला।

तैं—(सर्व) তই।
तू। तूने।
(अव्य) পৰা। তকৈ।
से।

तै—(अव्य) সিমান।
उतना।
(सं पुं) মীমাংসা। কাম সম্পূৰ্ণ হোৱা।
निपटारा। फैसला। काम पूरा होना।
(वि) মীমাংসিত, নিশ্চিত।
निपटा हुआ। जो पूरा हो चुका हो। निश्चित।

तैनात—(वि) নিযুক্ত।
नियुक्त।

तैयो—(क्रि वि) তথাপি।
तिसपर भी।

तैरना—(क्रि अ) সাঁতোৰা।
संतरण करना।

तैराई—[सं स्त्री] সাঁতোৰা কাম বা তাৰ পুৰস্কাৰ।
तैरनेकी क्रिया, भाव या पुरस्कार।

तैराक—(वि) সাঁতোৰা বিদ্যাত পাৰ্গত।
बहुत अच्छी तरह तैरनेवाला।

तैराना—[क्रि स] সাঁতোৰোৱা। সোমোৱা।
तैरनेमें प्रवृत्त करना। घुसाना।

तैलचित्र-[सं पुं] তেলছবি তেল ৰঙেৰে অঁকা চিকচিকীয়া ছবি।
तेल मिले रंगों की सहायता से बना हुआ चित्र।

तैसा—(वि) তেনে ।
उस तरहका ।

तैसे—(क्रि वि) সেইদৰে ।
उस तरह से ।

तोंद—[सं स्त्री] ওফন্দা পেট ।
फूले हुए पेट का निकला हुआ भाग ।

तोंदल—[वि] পেটুৱা, পেটাল ।
तोंदवाला ।

तोंदी—(सं स्त्री) নাই, নাভি ।
नाभी ।

तोंहका—[सर्व] তোমাক ।
तुम्हें ।

तो—(अव्य) তেনেহলে ।
(किसी बात पर जोर डालने या ऐकान्तिकता प्रकट करनेवाला अव्यय) उस दशा में ।
(सर्व) তই, তোৰ ।
तुझ । तेरा ।

तोई—[सं स्त्री] পাৰি (কাপোৰৰ) ।
मगजी । गोट ।

तोड़क—(वि) খণ্ডনকাৰী । ভাঙোতা ।
तोड़नेवाला ।

तोड़ना—(क्रि स) ভঙা, খণ্ড-বিখণ্ড কৰা, নিয়ম উলঙ্ঘন কৰা । মাটিত পোনপ্ৰথমে হাল বোৱা ।
किसी पदार्थ के खंड या टुकड़े करना । खेतमें पहले पहल हल चलाना । क्षीण या अशक्त कर देना । संघटन, व्यवस्था आदि नष्ट भ्रष्ट करना । आज्ञा, नियम आदि उल्लंघन करना ।

तोड़फोड़—(सं पुं) চূৰ মাৰ । ধ্বংশ ।
किसी चीज को टुकड़े टुकड़े कर नष्ट करने की क्रिया या भाव ।

तोड़वाना, तुड़वाना—(क्रि स)
ভঙোৱা ।
दूसरे से तोड़नेका काम करवाना ।

तोड़ा—(सं पुं) টকাৰ মোনা, হাৰ জাতীয় ভৰিত পিন্ধা খাৰু । চেলা । ঘাটি ।
रुपये की थैली । जंजीर जैसा गहना । घटी । बन्दूक छोड़ने की रस्सी ।

तोण—(सं पुं) তূণ ।
तरकश ।

तोतई—(वि) টিঁয়া বৰণীয়া ।
तोते के रंग का ।

तोतक—[सं पुं] চাতক । পিয়ঁতী চৰাই ।
पपीहा ।

তোতা—[সং পুং] ভাটৌ।
शुक पक्षी।

তোতা-চশম-[সং পুং] অবিশ্বাসী, নিষ্ঠুৰ।
बे-मुरौवत। निष्ठुर।

তোদ—(সং পুং) কষ্ট, পীড়া।
कष्ट। पीड़ा।

তোদন-(সং পুং) চাবুক, বেদনা।
चाबुक। व्यथा। दर्द।

তোপখানা—(সং পুং) খাৰ-বাৰুদ ঘৰ। কামান ৰখা ঘৰ বা ঠাঁই।
वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं। युद्धके लिये प्रस्तुत तोपोंका समूह।

তোপচী—[সং পুং] কামান চলোৱা সৈন্য। গোলন্দাজ।
गोलंदाज।

তোবড়া—[সং পুং] দানাৰে সৈতে ঘোঁৰাৰ মুখত ওলোমাই দিয়া মোনা।
दाना भरकर घोड़े के मुँहपर बाँधनेवाली थैली।

তোবা, তৌবা—[সং স্ত্ৰী] মনে মনে কৰা প্ৰতিজ্ঞা। অনুশোচনা।
भविष्यमें कोई बुरा काम न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।

তোম—[সং পুং] দ'ম।
समूह।

তোমৰ—[সং পুং] যাঠি। তোমৰ বংশ। এবিধ ছন্দ।
एक पुराना अस्त्र। एक प्रकार का छन्द।

তোয়—(সং পুং) পানী।
पानी।

তোয়ধৰ—(সং পুং) মেঘ।
बादल।

তোয়ধি, তোয়নিধি— [সং পুং] সাগৰ।
समुद्र।

তোৰ—[বি] তোৰ।
तेरा।

তোৰনা—(ক্রি স) ভঙা।
तोड़ना।

তোৰা—[সর্ব] তোৰ।
तेरा।
(সং পুং) কিৰীটি।
कलगी।

তোৰাবান—[বি] বেগী।
वेगवान।

তোল—(সং স্ত্ৰী) ওজন, পৰিমাণ।
माप। परिमाण।

[वि] তুল্য ।
तुल्य ।

तोलना, तौलना—[क्रि स] জোখা, তুলনা কৰি চোৱা ।
वजन करना । अस्त्र आदि हाथ में लेकर चलाने के लिये ठीक स्थिति में लाना ।

तोला—(सं पुं) এক তোলাৰ ভৰ ।
बारह माशे की तौल ।

तोशक—[सं स्त्री] তোছক, তুলী ।
बिछाने का गद्दा ।

तोशदान-(सं पुं)খাদ্য বস্তু কঢ়িওৱা বাচন বা মোনা। বন্দুকৰ গুলী ৰখা মোনা।
यात्रा के समय जलपान आदि रखने की थैली । सिपाहियों की कारतूस रखने की थैली ।

तोशा, तोसा— (सं पुं) পথৰ সম্বল । খাদ্য বস্তু ।
पाथेय ।

तोशाखाना, तोसागार—(सं पुं) পোছাক ৰখা কোঠালি ।
वह स्थान जहाँ राजाओं या अमीरों के पहनने के कपड़े, गहने आदि रहते हैं ।

तोष, तोस— (सं पुं) সন্তুষ্টি, প্ৰসন্নতা ।
तृप्त होने का भाव । प्रसन्नता ।

तोषण, तोषन— (सं पुं) তৃপ্তি সন্তোষ ।
तृप्ति । सन्तोष ।
[वि] সন্তুষ্ট কৰোঁতা ।
सन्तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला ।

तोहफा—(सं पुं) উপহাৰ ।
सौगात ।
[वि]সুন্দৰ ।
बढ़िया ।

तोहमत— (सं स्त्री) ভিত্তিহীন দোষাৰোপ ।
झूठमूठ लगाया हुआ दोष । झूठा कलंक ।

तोही—[सर्व] তোক ।
तुझ को । तुझे ।

तौंकना, तौंसना—[क्रि अ] গৰমতে তৎ নোপোৱা ।
गरमी से झुलसना । ऊमस होना ।

तौ— (क्रि वि) তেনেহলে ।
तो ।
(क्रि अ) আছিল ।
था ।
(वि) তোৰ বা তোমাৰ ।

तेरा या तुम्हारा।
(अव्य) বাৰু, ঠিক আছে।
हाँ, ठीक है।

तौक—[सं स्त्री] গলপতা। অপৰাধীৰ গলত আৰি দিয়া লোৰ ঘণ্টা।
वह भारी गोल पटरी जो पागल के गले में पहनाई जाती है। इस आकार का गहना। पक्षियों के गलेमें होनेवाली हँसुली।

तौन—(सर्व) সি বা সেই।
वह।

तौनी—(सं स्त्री) সৰু তাৱা বা তেৱা, সৰু কেৰাহি।
छोटा तवा।

तौर—(सं पुं) উপায, প্ৰকাৰ, চাল-চলন।
तरीका। प्रकार। चालचलन।

तौरि—(सं स्त्री) মূৰঘূৰ্ণি।
सिरका चक्कर। घुमटा।

तौरेत—[सं स्त्री] ইহুদীসকলৰ প্ৰধান ধৰ্ম্ম-গ্ৰন্থ।
यहूदियों का प्रधान धर्मग्रन्थ।

तौलिया—(सं पुं) গামোচা।
एक विशेष प्रकार का मोटा अंगोछा।

तौहीन—(सं स्त्री) অপমান।
अपमान।

त्यागना—(क्रि स) ত্যাগ কৰা।
छोड़ना।

त्यों—[क्रि वि] সেই দৰে, সেই সময়ত।
उस प्रकार। उसी समय।
(सं पुं) ফাল, দিশ।
ओर। तरफ।
(अव्य) আৰু।
और। तथा।

त्योराना—(सं पुं) মাচমুৰাই, মূৰ ঘূৰণি।
सिरमें चक्कर आना।

त्योरी—(सं स्त्री) দৃষ্টি, চাৱনি।
दृष्टि। निगाह।

त्योहार—(सं पुं) উৎসৱ।
पर्व दिन।

त्योनार—(सं पुं) ধৰণ, ঠাঁচ।
ढंग। तर्ज, शैली।

त्योनारा—[वि] উত্তম।
बढ़िया।

त्रयी—(सं स्त्री) তিনিটা বস্তুৰ সমূহ। ত্ৰিমূৰ্ত্তি।
तीन वस्तुओं का समूह।

त्रसन—(सं पुं) ভয়।
भय।

त्रसना—(क्रि अ) ভয়তে হাত ভবি পেটতে লুকোৱা ।
भय से कांप उठना । कष्ट पाना ।

त्रसाना—(क्रि स) ভয় দেখুৱা ।
डराना ।

त्रासना—[क्रि स] ভয় দেখুৱা, কষ্ট দিয়া ।
डराना । कष्ट पहुँचाना ।

त्राहि—[अव्य] বচোৱা । ৰক্ষা কৰা । बचाओ ।

त्रिक—[सं पुं] ত্ৰিমূৰ্ত্তি । তিনিটা বস্তুৰ সমূহ । কঁকাল ।
तीन चीजों का समूह या वर्ग । कमर ।

त्रिकुटी—(सं स्त्री) ভ্ৰূকুটি ।
भौहों के बीच का ऊपरी भाग ।

त्रिकोण मिति—[सं स्त्री] তিনিচুকীয়া বস্তু জোখা অঙ্ক বিদ্যা ।
त्रिभुज के कोण, बाहु आदि का मान निकालने की प्रक्रिया ।

त्रिजामा, त्रियामा—(सं स्त्री) ৰাতি, নিশা ।
रात्रि ।

त्रिताप—[सं पुं] ত্ৰিতাপ । দৈহিক, দৈবিক, আধিভৌতিক ।
दैहिक, दैविक और भौतिक ताप या कष्ट ।

त्रिदोष—(सं पुं) ত্ৰিদোষ—বায়ু, পিত্ত, কফৰ বিকাৰ । সন্নিপাত ৰোগ ।
वात, पित्त और कफ ये तीनों रोग । सन्निपात रोग ।

त्रिदोषना—[क्रि अ] সন্নিপাতৰ দ্বাৰা আক্ৰান্ত । কাম, ক্ৰোধ লোভৰ বশৱৰ্ত্তী হোৱা ।
वात, पित्त और कफ के प्रकोप में पड़ना । काम, क्रोध और लोभ के फेर में पड़ना ।

त्रिधा—(क्रि वि) ত্ৰিবিধ উপায়ে । तीन प्रकार से ।
[वि] তিনি প্ৰকাৰৰ ।
तीन प्रकार का ।

त्रिपथगा—[सं स्त्री] গঙ্গা ।
गंगा ।

त्रिपिटक—[सं पुं] বৌদ্ধ ধৰ্ম-গ্ৰন্থ ।
बौद्धों का धर्मग्रन्थ ।

त्रिपिटाना—[क्रि अ क्रि स] সন্তুষ্ট হোৱা, সন্তুষ্ট কৰা ।
तृप्त या सन्तुष्ट करना या होना ।

ত্ৰিপুণ্ড—(सं पुं) শৈৱ সকলে কপালত লোৱা তিলক।
वह तिलक जो शैव लोग लगाते हैं।

ত্ৰিপুৰাৰী—(सं पुं) মহাদেৱ। শিৱ।

ত্ৰিবলী—(सं स्त्री) ত্ৰিবলি - পেট নাইবা ডিঙি আদি ঠাঁইত ছাল কোঁচ খাই হোৱা তিনিডাল ৰেখা বা শিৰ।
पेट के ऊपर दिखाई पडने वाले तीन बल या रेखाएँ।

ত্ৰিবিক্ৰম, ত্ৰিবিক্ৰম—[सं पुं] বামনৰ বিৰাট ৰূপ।
वामन का विराट रूप।

ত্ৰিবেনী, ত্ৰিবেণী—(सं स्त्री) গঙ্গা, যমুনা আৰু সৰস্বতীৰ সঙ্গম স্থল প্ৰযাগ। ইড়া, পিঙ্গলা আৰু সুষুম্না নাড়ীৰ মিলন।
गंगा, यमुना और सरस्वती का सङ्गम। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नदियों का सङ्गम स्थान।

ত্ৰিভংগ—(सं पुं) এক মুদ্ৰা—শৰীৰৰ তিনি ঠাইত ভাঁজ থকা।
खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें टाँग, कमर और गरदन ये तीनों अंग कुछ टेढ़े रहते है।

ত্ৰিয় (া)-[सं स्त्री] তিৰোতা। औरत।

ত্ৰিয়না—[ক্ৰি অ] ওপঙি থকা, সাঁতুৰি পাৰ হোৱা।
पानीके ऊपर तरना। तैरकर पार होना।

ত্ৰিলোচন—(सं पुं) মহাদেৱ। শিৱ।

ত্ৰিবৰ্গ-(सं पुं) ধৰ্ম্ম, অৰ্থ আৰু কাম; ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয় আৰু বৈশ্য জাতি।
धर्म, अर्थ और काम का समूह। सत्व, रज और तम ये तीनों गुण। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण।

ত্ৰিবেদী-(सं पुं) ঋক্‌বেদ, যজুৰ্বেদ আৰু সামবেদৰ জ্ঞান থকা। ব্ৰাহ্মণ সকলৰ এটা জাতি।
ऋक, यजु: और साम इन तीनों वेदों का ज्ञाता। ब्राह्मणों का एक वर्ग।

ত্ৰুটিত—(বি) ভঙা-চিঙা, ক্ৰটি পূৰ্ণ।

कटा या टूटा हुआ। आहत। त्रुटिपूर्ण।

त्रैकालिक—(वि) অতীত, ভবিষ্যত আৰু বৰ্ত্তমান বা পুবা, মধ্যাহ্ন আৰু গধূলি এই তিনিও কালত হোৱা [কাম]
भूत, भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालों में होनेवाला। प्रातः मध्याह्न और संध्या तीनों कालों में होनेवाला।

त्रोटक—[सं पुं] ৫, ৭, ৮ নাইবা ৯ টা অঙ্ক যুক্ত নাটক।
प्राचीन नाटक का एक भेद।

त्र्यंबक—(सं पुं) মহাদেৱ। शिव।

त्वक् (सं पुं) ছাল। পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্ৰিয়ৰ এটা।
छाल। चमड़ा। पाच ज्ञानेन्द्रियों में से एक।

त्वचा—[सं स्त्री] ছাল। সাপৰ মোট বা চকলা।
चमड़ा। छाल। सांपकी केंचुली।

त्वदीय-[सर्व] তোমাৰ। तुम्हारा।

त्वरा-(सं स्त्री) শীঘ্ৰতা। शीघ्रता।

त्वरित—[वि] ত্বৰিত। বেগী, দ্ৰুত-গামী।
जल्दी चलने, जाने या पहुँचाने वाला। जिसका जल्दी पहुँचना या जल्दी कार्रवाई आवश्यक हो। (एक्सप्रेस)

त्वेष-[सं पुं] উৎসাহ, ভাবাবেগ।
उत्साह। भाव का आवेग। आवेश।

থ

থ—ব্যঞ্জন বর্ণমালাৰ সপ্তদশ আখৰ।
देवनागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन।

থংডিল—(सं पुं) পূজাৰ বেদী।
यज्ञ की वेदी

থংব[ম],থংভা— [सं पुं] স্তম্ভ, খুঁটা, ঢোকা।
खंभा। सहारा।

থঁভনা—(क्रि अ) বোৱা।
थमना (रुकना)

থংভিত—[वि] থমকি বোৱা।
চকিত।
रुका या ठहरा हुआ। अचल।
थकित।

থকন, থকান—(सं स्त्री) ভাগৰ।
क्लान्ति। थकावट।

থকনা—(क्रि अ) ভাগৰি পৰা।
বেজাৰ লগা।
क्लान्त होना। ऊबना। बुढ़ापे के कारण अशक्त होना। मोहित होना।

থকাথক— (क्रि वि) থক্ থক্ কৰে। একেবাহে।
थक थक शब्द करते हुए।
लगातार।

থকামাঁদা— (वि) ভুকলা-ভুপুৰা।
बिलकुल श्रान्त।

থকাবট— [सं स्त्री] ভাগৰ লগা অৱস্থা। শিথিলতা, অৱসাদ।
थकने का भाव या परिणाम।
शिथिलता। क्लान्ति।

থকিত—(वि) ভাগৰুৱা, মোহিত।
थका हुआ। मोहित।

থকৌঁহা—(वि) ভাগৰুৱা, শিথিল।
थका हुआ। शिथिल।

থক্কর, থক্কা— (सं पुं) থলনা, ঢেকুৰা।
किसी चीज का जमा हुआ पिंड।
समूह।

थाति- (सं स्त्री) নিধি, সঞ্চিত পুঁজি।
थाती। जिम्मे में रखा हुआ धन।

थन—(सं पुं) বাঁট বা বাঁত।
गाय, भैंस आदि का स्तन

थनैला— [सं पुं] তিৰোতাৰ স্তনৰ বেমাৰ।
औरतों के स्तन की बीमारी।

थनैत—[सं पुं] গাওঁবুঢ়া।
गाँव का मुखिया। गावका लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी।

थपक, थपकी, थपथपी—[सं स्त्री] লাহেকৈ থপৰিয়া।
हथेली से धीरे धीरे ठोकने की क्रिया या भाव।

थपकना—(क्रि स) ধৰমতে লাহে লাহে থপৰিয়া।
प्यार से या आराम पहुँचाने के लिये किसी के शरीरपर धीरे धीरे हथेली से आघात करना।

थपका—[सं पुं] চেকুৰা, সৰুকৈ মৰা চাপৰ।
थपका , थपकी।

थपना—(क्रि स) স্থাপন কৰা।
स्थापित करना। थोपना।
[क्रि अ] স্থাপন হোৱা।
स्थापित होना, जमना।

थपेड़ना—(क्रि स) চাপৰ মৰা।
थपेड़ा या चपत लगाना।

थपेड़ा—(सं पुं) চাপৰ, আঘাত।
थप्पड। आघात। धक्का।

थपोड़ी—(सं स्त्री) হাত চাপৰি।
करतल ध्वनि।

थप्पड़—(सं पुं) চাপৰ, গুৰুতৰ আঘাত।
हथेली से किया हुआ जोर का आघात। तमाचा। भारी आघात।

थमना—(क्रि अ) ৰোৱা, অচল হোৱা। ধৈৰ্য্য ধৰা।
रुकना। ठहरना। बन्द हो जाना, धीरज धरना।

थर—[सं स्त्री] স্তৰ, থলপা।
तह। परत।
[सं पुं] ঠাই, হিংস্ৰ জন্তুৰ খুলি।
स्थल। हिंसक पशु की माँद।

थरकना— (क्रि अ) থক-থককৈ কঁপা।
भय से कांपना।

थरथर—(सं स्त्री) ভয়তে কঁপনি উঠা।
डर से कांपना।
(क्रि वि) কঁপি কঁপি।
डर से कांपते हुए।

थरथराना—(क्रि अ) ভয়তে কঁপা।
डरसे कांपना। कांपना।
[क्रि स] কঁপোৱা।
थर थर करके कांपने में प्रवृत्त करना।

थरथराहट, थरथरी—[सं स्त्री] থৰ-থৰি বা থৰ্থৰি।
थर थराने की क्रिया या भाव।

थरना—(क्रि स) হাতুৰী মৰা।
हथौरी से कूंचना।

थरसना—(क्रि अ) ভয় পোৱা বা কষ্ট পোৱা।
त्रस्त या पीड़ित होना। कष्ट भोगना।

थरिया—(सं स्त्री) কাঁহী।
थाली।

थरी—(सं स्त्री) বাঘৰ খুলি।
গুহা।
शेरोंकी मांद। गुफा।

थर्राना—(क्रि अ) ভয়ভীত হোৱা।
डरसे कांपना। भयभीत होना।

थल—[सं पुं] ঠাই, বাঘ ঠাই বনৰীয়া পশুৰ খুলি।
स्थान। जलसे रहित भूमि।
जंगली पशुओं की मांद।

थलकना—(क्रि अ) জোকাৰ খোৱা। আলোড়ন হোৱা।
भारी चीज का कुछ ऊपड़े नीचे हिलना। मोटाई के कारण शरीर का मांस हिलना।

थलचर—[सं पुं] স্থলচৰ।
स्थल में रहनेवाले जीव।

थलथलाना—[क्रि अ] খোজ কাঢোতে গাৰ মঙহাল অংশ লৰি উঠা।
मोटे शरीर का मांस झूल कर या ऊपर-नीचे हिलना।

थलरुह—(सं पु) স্থলজাত।
स्थल पर उत्पन्न होनेवाले (जीव, वृक्ष आदि।)

थली—(सं स्त्री) ঠাই, তলা বা তলি (নদী আদিৰ।)
स्थान। जल के नीचे की भूमि।
ठहरने या बैठने का स्थान।

थवई—[सं पुं] ৰাজ মিস্ত্ৰী।
मकान बनाने वाला कारीगर। राज।

थसरना—[क्रि अ] শিথিল হৈ বহি পৰা।
शिथिल होकर बैठ जाना।

थहना—[क्रि स] দ ৰ জোখ লোৱা, যিমান দ তাক জোখা।
थाह लेना।

थहरना—[क्रि अ] কঁপা।
दुर्बलता, भय आदि से काँपना।

थहाना-(क्रि स) পানীৰ গভীৰতা বিষয়ে নাইবা মানুহৰ গুণ সম্পৰ্কে অনুমান কৰা।
गहराई, गुण, आदि की थाह लेना या पता लगाना।

थाँग—(सं स्त्री) চোৰ-ডকাইতৰ গোপন আড্ডা। বিচাৰি উলিওৱা।
चोरों या डाकुओ के छिपकर रहने का स्थान। खोज, तलाश।

थाँगी-(सं पुं) চোৰি বস্তু কিনোতা বা ৰাখোতা। চোৰৰ চৰ্দাৰ, চোৰাংচোৱা।
चोरी का माल खरीदने वाला या अपने पास रखने वाला आदमी। चोरो का सरदार। जासूस।

थाँवला—(सं पुं) খোল। গছ-পুলি আদিত পানী দিয়াৰ সুবিধাৰ কাৰণে কৰা ঘেৰ।
किसी पेड़ या पौधे के चारों ओर का घेरदार गड्ढा जिसमें उसे सींचने के लिये पानी डाला जाता है।

था—[क्रि अ] আছিল।
'होना' क्रिया का भूत कालिक रूप।

थाई - (वि) স্থায়ী।
स्थाई।

थाक - (सं पुं) গাঁৱৰ সীমা, বস্তুৰ দ'ম।
गाँव की हद। एक पर एक रखी हुई चीजो का ढेर।

थाती—(स स्त्री) পুঁজি। বাপতি সাহন। বিপদৰ কাৰণে সঞ্চিত ধন।
जमा पूँजी। धरोहर। गाढ़े समय में काम आने के लिये बचाकर रखा हुआ धन।

थान—(सं पुं) স্থান, ঠাই, গোহালী, কাপোৰৰ থান।
जगह। स्थान। चौपायों के बाँधे जाने का स्थान। कुछ निश्चित लम्बाई का कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा। संख्या।

थाना—(সং পুং) থানা, জিৰণি ঠাই ।
टिकने या बैठने का स्थान । अड्डा । पुलिस की बडी चौकी ।

थानु-सुत-(সং পুং) গণেশ দেৱতা ।
गणेशजी ।

थानेदार—(সং পুং) দাৰোকা বা দাৰোগা ।
पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी ।

थानैत—(সং পুং) চকীৰ পহৰীয়া সকলৰ মুখিয়াল । গ্ৰামদেৱতা ।
चौकी या अड्डे का प्रधान । ग्राम देवता ।

थाप—(সং স্ত্ৰী) তবলা, মৃদঙ্গ, ঢোল , আদিত মৰা চাপৰ, ছাপ, শ্ৰদ্ধা, শপত ।
तबले, मृदङ्ग आदि पर पंजे से किया जानेवाला आघात । थप्पड़ । छाप । गुण, प्रधानता आदि की धाक । शपथ ।

थापना—(ক্রি স) স্থাপন কৰা, হাতেৰে বা সাঁচত গঢ়া ।
स्थापित करना । हाथ या साँचे से कोई चीज पीट या दबाकर कोई चीज बनाना ।

(সং স্ত্ৰী) স্থাপন, থাপনা ।
स्थापन । दुर्गापूजा के लिये घट—स्थापन ।

थापर—(সং পুং) চাপৰ ।
चपत । थप्पड़ ।

थापा—(সং পুং) হাতৰ তলুৱাৰ ছাৱ, মোহৰ, দ'ম ।
दीवारों आदि पर लगाई जाने-वाली पंजे की छाप । वह साँचा जिससे कोई चीज अंकित किया जाय । ढेर । राशि ।

थापी—(সং স্ত্ৰী) ধুম বা ধুৰমুচ ।
राज मजदूरों का मसाला जोड़ने का एक औजार । प्रशंसा, आशी-र्वाद आदि के रूपमें किसी की पीठ ठोंकने की क्रिया या भाव ।

थामना—[ক্রি স] ধৰা, গতিৰুদ্ধ কৰা, আশ্ৰয় দিয়া ।
पकड़ना । गिरती या चलती हुई चीज रोकना । सहारा देना । अपने ऊपर कार्य का भार लेना ।

थायी—(বি) স্থায়ী ।
स्थायी ।

थाल—(সং পুং) ডাঙৰ কাঁহী ।
बड़ी थाली ।

थाला—(सं पुं) খোল। গছ-পুলি আদিত পানী দিয়াৰ সুবিধাৰ কাৰণে কৰা যেৰ।
पेड़ या पौधों के चारों ओर पानी सींचने के लिये बनाया हुआ गड्ढा। पेड़ के चारों ओर बनाया चबूतरा। फोड़े, फुन्सी आदि के चारों ओर होनेवाली सूजन।

थाली—(सं स्त्री) কাঁহী।
भोजन करने की गोल तश्तरी।

थाह—[सं स्त्री] দ, গভীৰতা, তলা বা তলি, সীমা।
गहराई, ज्ञान, महत्व आदि की सीमा। गहराई, ज्ञान, महत्व आदि का पता या परिचय। सीमा।

थाहना—(क्रि स) গভীৰতা অনুমান কৰা। কিমান দ বুজি চোৱা।
गहराईका पता लगाना।

थाहरा—(वि) অগভীৰ, তৰাং।
कम गहरा। छिछला।

थिगली—[सं स्त्री] টাপলি।
चकती। पैबन्द।

थित—(वि) স্থিত, থকা।
स्थित।

थिति--(वि) স্থিতি।
स्थिति।

थिर—(वि) স্থিৰ।
स्थिर।

थिरकना—[क्रि अ] নৃত্যত ভৰিৰ চঞ্চল গতি।
नाचने के समय पैर धीरे धीरे उठाना और पटकना।

थिरता (ई)—(सं स्त्री) স্থিৰতা, স্থায়িত্ব।
ठहराव। स्थायित्व। शान्ति।

थिरथानी—(वि) স্থিৰ।
एक जगह जमकर रहनेवाला।

थिरना—(क्रि अ) স্থিৰ হোৱা, গেদ বহা।
पानी आदि का हिलना डोलना बन्द होना। स्थिर होना। निथरना।

थिराना—(क्रि स)
जल को स्थिर होने देना। स्थिर करना। निथारना।

थीता—(सं पुं) স্থিৰতা, শান্তি।
स्थिरता। शान्ति। चैन।

थुकाना—(क्रि स) থু পেলাবলৈ বাধ্য কৰা, আনৰ থুৱ নিন্দা কৰা।

किसीको थूकने में प्रवृत्त करना। उगलवाना। किसी की बहुत निन्दा करना।

थुक्का फजीहत—(सं स्त्री) উথনা-উথনি।
निकृष्ट कोटि का लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ी—(सं स्त्री) থুঃ ।
घृणा पूर्वक थूकने का शब्द। धिक्कार।

थुथुकारना—(क्रि स) থু ই-থু ই দিয়া।
परम घृणा प्रकट करना।

थू—(अव्य) থুঃ ।
थूकने का शब्द। घृणा या तिरस्कार का शब्द।

थूक—[सं स्त्री] খেঁকাৰ।
खखार। लार।

थूकना—[क्रि अ] থুই পেলোৱা।
मुँह से थूक निकाल कर बाहर फेंकना।
(क्रि स) মুখত ৰখা বস্তু উগলি দিয়া। मूँह में रखी वस्तु उगलना।

थूथन—(सं पुं) গাহৰি আদিৰ জোঙা নাক।
सूअर आदि का कुछ लम्बा निकला हुआ मुँह।

थून—[सं पुं] খুঁটা, ঢোকা, অবলম্বন।
खम्भा। टेक, सहारा।

थूनी-(सं स्त्री) খুঁটা, ঠেকা, ঢোকা।
खम्भा। चाँड़। टेक।

थूरना—[क्रि स] খুন্দা, কোবোৱা, হেঁচি-হেঁচি ভৰোৱা।
कूटना। मारना। कसकर भरना।

थूल—[वि] স্থূল, মোটা আৰু গধুৰ।
स्थूल। जो स्पष्ट दिखाई दे। मोटा और भारी। भद्दा।

थूहर—(सं पुं) সাগৰ-ফেনা, নাগ ফণা।
एक छोटा पेड़ जिसके डंठल डंडेके आकार के होते हैं।

थेई-थेई—[सं स्त्री] নাচৰ তাল বা মুদ্রা।
थिरक थिरक कर नाचने की मुद्रा। नाच का बोल।

थेथर—(वि) ভাগৰুৱা, ব্যতি-ব্যস্ত।
लस्त-पस्त। बहुत थका हुआ। परेशान।

थैला—[सं पुं] থৈলা ।
झोला ।

थोक—(सं पुं) থোক বা থোকা, পাইকারী ভাবে মাল কিনা-বেচা কৰা কাম ।
ढेर, झुण्ड । एक साथ बहुत सा या इकट्ठा माल खरीदने या बेचने का काम । सारी वस्तु ।

थोक—(सं स्त्री) মোণা, উপহাৰ স্বৰূপে দিয়া ধনৰ মোণা ।
छोटा थैला । किसी को भेंट किया जानेवाला धन ।

थोड़ा (वि) অলপ ।
न्यून । कम ।
(क्रि वि) অলপকৈ ।
जरा । तनिक ।

थोथा-(वि) সাৰহীন, কোঁপোলা ।
जिसमें कुछ सार या तत्व न हो ।
खोखला । व्यर्थ का । कुंठित ।

थोपना—(क्रि स) ডাঠ প্ৰলেপ দিয়া, মিছা অভিযোগ অনা ।
मोटा लेप चढ़ाना । झूठा अभियोग लगाना ।

थोरा—(वि) অলপ ।
थोड़ा । जरा ।

थोरिक—[वि] অকণমান ।
थोड़ा-सा ।

द

द—ব্যঞ্জন বৰ্ণৰ ওঠৰ সংখ্যাৰ আখৰ ।
वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन ।

दंग—(वि) বিস্মিত ।
विस्मित ।

दंगई—(वि) বিস্ময়কৰ, দম্ভুৱা ।
दंगा करनेवाला । प्रचण्ड ।

दंगल-[सं पुं] মল্ল যুদ্ধৰ আখৰা, মাল যুঁজ ।
जोड़ बन्धकर लड़ी जानेवाला

कुश्ती। कौशलकी प्रतियोगिता।
(वि) बृहৎ ।
बहुत बड़ा। भारी।

दंगा-(सं पुं) কাজিয়া, মাৰ-ধৰ।
मारपीट। उपद्रव।

दंडक-(सं पुं) টোকোন, শাসক, এবিধ ছন্দ ।
डण्डा। शासक। एक प्रकार का छन्द।

दंडना—(क्रि स) দণ্ড দিয়া।
दण्ड देना।

दंडनायक—[सं पुं] দণ্ড দিবৰ অধিকাৰী ।
सेनापति। दण्ड देनेवाला एक अधिकारी।

दंडपाणि—(सं पुं) যমৰাজ ।
यमराज। भैरव।

दंडप्रणाम, दंडवत—(सं पुं) দণ্ডৱত, সাষ্টাঙ্গ প্ৰণাম ।
जमीन पर लेटकर अभिवादन।

दंडविधि—[सं स्त्री] শাস্তিৰ ব্যৱস্থা লিখা থকা পুথি, ফৌজদাৰী আইন ।
वह विधान जिसमें अपराधों के लिये दण्डोंका विवेचन होता है।

दंडी—[सं पुं] হাতৰ পবিত্ৰ লাখুটি লৈ ফুৰা এক প্ৰকাৰৰ সন্ন্যাসী ।
दण्ड धारण करनेवाला। एक प्रकार के सन्यासी।

दँड्य(वि) দণ্ডণীয় ।
दण्ड पाने योग्य।

दंत कथा--(सं स्त्री) কিংবদন্তি, জন-শ্ৰুতি ।
किंवदन्ति।

दँतखोदनी—[सं स्त्री] খৰিকা ।
दाँत खोदने का छोटा औजार।

दन्तमूलीय—[वि] দাঁতৰ গুৰিৰ পৰা উচ্চৰিত (বর্ণ) ।
दाँतों के मूलसे उच्चरित होने वाला (वर्ण)।

दँतार, दँतुला—[वि] দঁতাল ।
बड़े दाँतोंवाला।

दँतिया दँतुरिया—[सं स्त्री] সৰু দাঁত ।
छोटा दाँत।

दंद—(सं पुं) কাজিয়া, দাঁত।
झगड़ा। दाँत।

दंभा—[सं पुं] বিজুলি ।
बिजली।

दंभ, दंभान—[सं पुं] অহংকাৰ, অভিমান।
घमण्ड। अभिमान।

दँवरी—(सं स्त्री) মৰণা।
बैलों द्वारा फसल की बालों से दाना अलग करने का काम।

दंश, दंस—(सं पुं) কামোৰ, খোঁট।
दन्त-क्षत। विषैले जन्तुओं का डङ्क। दाँत काटने की क्रिया।

दंशक—[वि] দংশনকাৰী।
डँसनेवाला। दाँत काटनेवाला।

दंष्ट्र—(सं पुं) দাঁত।
दाँत। (सं स्त्री दंष्ट्रा)।

दई—[सं पुं] ঈশ্বৰ, বিধাতা।
ईश्वर। विधाता। (अदृष्ट)।

दकन—(सं पुं) দাক্ষিণাত্য।
दक्षिण भारत।

दकियानूस—(वि) পৰম্পৰাবাদী, ৰূঢ়িবাদী।
परम्परावादी। रूढ़िवादी।

दकियानूसी—(सं स्त्री) সঙ্কীর্ণতা।
संकीर्णता।

दक्षिणापथ—(सं पुं) বিন্ধ্য প্ৰদেশৰ দক্ষিণৰ প্ৰদেশ।
विंध्य प्रदेशके दक्षिणका प्रदेश।

दक्षिणावर्त—(वि) সোঁ ফালে ঘূৰা।
जिसके घूमने की प्रवृत्ति या मुख दाहिनी ओर हो।

दखल, दिहानी—(सं स्त्री) আদালত মতে সম্পত্তিৰ দখল দিয়া কাম।
अदालत से किसी को किसी सम्पत्तिपर दखल दिलवाने का काम।

दखील—[वि] অধিকাৰী।
अधिकार रखनेवाला।

दगड़—(सं पुं) ডাঙৰ ঢোল।
बड़ा ढोल।

दगदगा—(सं पुं) ভয়, সন্দেহ।
डर। सन्देह। [सं स्त्री-दगदगी]

दगना—[क्रि अ] চিন দিয়া, দগ্ধ কৰা, বন্দুক মৰা।
दागा या चिह्नित किया जाना। दग्ध किया जाना। बन्दूक तोप आदि छोड़ा जाना। कलंकित होना।

दगहा—[वि] দাগ যুক্ত, পোৰা। মুখৰ চাই গুচোৱা।
दागवाला। मृतक का दाह कर अबतक श्राद्धादि द्वारा शुद्ध न होनेवाला। जलाया हुआ।

दगा—[सं स्त्री] ছল-চাতুরি, ফাকতি ।
छल-कपट । धोखा ।

दगाबाज—[वि] দগাবাজ, কপট ।
धोखा देनेवाला । छली ।

दगैल—[वि] দাগযুক্ত, যিযে জেল-জীৱন-যাপন কৰিছে ।
दागदार । जो कारागार का दण्ड भोग चुका हो ।

दग्ध—[वि] দগ্ধ, পীড়িত, তাপিত ।
जला या जलाया हुआ । पीड़ित ।

दचक—[स स्त्री] হেঁচা ।
झटका या ठोकर खानेका भाव ।
[सं पुं दचक]

दचकना—(क्रि अ) হেঁচা খোৱা ।
झटका, ठेस या हलकी ठोकर खाना । कुछ दब जाना ।
[क्रि स] হেঁচা দিয়া ।
ठेस या हलका धक्का लगाना । दबाना ।

दच्छिन—[सं पुं] দক্ষিণ ।
दक्षिण ।

दड़कना—[क्रि अ] ফাটি যোৱা ।
फट जाना ।

दढ़ियल—[वि] দাড়িৱালা ।
दाढ़ीवाला ।

दतवन, दतुअन (वन) दतौन—[सं स्त्री] দাঁতন ।
दाँत साफ करने की नीम आदि की टहनी । मुँह साफ करने की क्रिया ।

दत्तक—[सं पुं] তোলনীয়া ।
गोद लिया हुआ ।

दत्तचित्त—(वि) অত্যন্ত মনোযোগ ।
जिसका किसी काम में खूब जी लगा हो ।

ददिऔरा, ददिहाल—[सं पुं]
ককাদেউতাৰ বংশ বা ঘৰ ।
दादा का वंश । दादा का घर ।

ददोरा—(सं पुं) ঘোবোৰা, মাহ, তিল [গাত হোৱা] ।
चमड़े पर होनेवाली थोड़ी सूजन । चकत्ता ।

दद्रु—[सं पुं] খৰ [বেমাৰ] ।
दाद रोग ।

दधि-सुत—[सं पुं] চন্দ্ৰ ।
चन्द्रमा ।

दन-दनाना—[क्रि स] ধম্-ধম্ শব্দ কৰা । আনন্দ কৰা । নির্ভীক ভাবে কোনো কাম কৰা ।

दन दन शब्द करना। आनन्द करना। निश्शङ्क होकर कोई काम करना।

दनादन—(ক্রি বি) একেবাহে। ধম্-ধমাই।
लगातार। दन् दन् शब्द के साथ।

दपटना—[ক্রি স] গালি দিয়া।
डाँटना।

दफनाना—(ক্রি সং) পুতি থোৱা। কবৰ দিয়া।
गाड़ना (मृतशरीर)। कब्र देना।

दफा— [सं स्त्री] বাৰ, আইনৰ ধাৰা।
बार। विधान आदिका कोई अंश, धारा।
(বি) দূৰীভূত কৰা। আঁতৰোৱা তিৰস্কৃত।
दूर किया या हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफ्तर—(সং পুং) কাৰ্য্যালয়।
कार्यालय।

दबंग—[বি] প্ৰভাৱশালী।
प्रभावशाली।

दंब— [বি] निकृष्ट।
"किसी की तुलना में कम या घटिया।
[সং পুং] হেঁচা।
दबाव।

दबकना—[ক্রি অ] লুকোৱা, কোচ-মোচ খোৱা।
भय, संकोच आदि के कारण छिपना।
[ক্রি স] হাতুৰী মাৰি মাৰি ধাতুৰ গঢ় দিয়া।
धातु का पत्तर पीट कर बड़ा करना।

दबकाना—[ক্রি স] লুকাই থোৱা।
छिपाना।

दबदबा—(সং পুং) আতঙ্ক।
आतंक। रोब-दाब।

दबना— (ক্রিঅ) হেঁচা খোৱা। পিছ হোঁহকা। বিবশ হোৱা। তল পৰা।
बोझ के नीचे पड़ना। ऊपरी तलका कुछ नीचा होना। किसीसे विवश होकर कोई काम करना। किसी बातपर कोई कारंवाई न होना।

दबाना, दबोरना—[ক্রি সং] হেঁচা দিয়া। মাটিত পুতি থোৱা।
ऊपर से भार रखना। ज़मीनमें

गाड़ना । किसी बातको बढ़ने न देना । शान्त करना ।

दबाव—(सं पुं) হেঁচা, প্ৰভাৱ ।
दबाने की क्रिया या भाव ।

दबैल— [वि] হেঁচা পাওঁতা ।
প্ৰভাৱপাওঁতা ।
दबनेवाला ।

दबोचना-[क्रि स] হেঁচামাৰি ধৰা, লুকাই থোৱা ।
झट से पकड कर दबा लेना । छिपाना ।

दम—(सं पुं) শান্তি, ইন্দ্ৰিয় নিগ্ৰহ, উশাহ, জীৱনী শক্তি ।
वह दण्ड जो दमन के लिये किया जाता है । इन्द्रिय निग्रह । सांस । नशे आदि के लिये मुँहसे धुँआ खींचने की क्रिया । प्राण । जीवनी शक्ति । धोखा । एक प्रकार का पुराना हथियार ।

दमकना—[क्रि अ] চিকমিকোৱা ।
चमकना ।

दम-कल— [सं स्त्री] দম-কল, নলীনাদ ।
पानी जोर से फेंकनेका पंप । पानी डालकर आग बुझाने वाला यन्त्र ।

दम-कला— (सं पुं) গোলাপ জল আদি ছটিয়াই দিবলৈ ব্যৱহাৰ কৰা পিচকাৰী যুক্ত পাত্ৰ । চেৰেকা ।
गुलाब जल या रङ्ग छिड़कने का पिचकारी लगा बड़ा पात्र ।

दम-खम-(सं पुं) দৃঢ়তা, জীৱনী শক্তি । সুঠাম গঢ় ।
दृढता । जीवनी शक्ति । मूर्तिका सुडौल गठन ।

दमड़ी, दमरी- (सं स्त्री) এক পইচাৰ আঠ ভাগৰ এভাগ ।
पैसे का आठवाँ भाग ।

दमदमा— [सं पुं] বুৰুজ, দুৰ্গৰ কাষত কৰা ওখ গড় বা ভেটি ।
मोरचा ।

दमदार— [वि] শক্তিশালী । মজবুত ।
जिसमें पूरा दम या जीवनी शक्ति हो । मजबूत ।

दमदिलासा, दमबुत्ता—[सं पुं] কুচুলনি ।
केवल फुसलाने के लिये कही जानेवाली झूठी बात ।

दमना—[क्रि अ] শ্বাসৰ বেমাৰ হোৱা ।
सांस फूलना ।

दमनीय—(वि) যাক দমন কৰিব পাৰি। দমন কৰিব লগীয়া।
जिसका दमन किया जा सके। जिसका दमन आवश्यक हो।

दमबाज—(वि) মিছলীয়া, গাঁজৰু, ভণ্ডুৰা।
दम-बुत्ता या चकमा देनेवाला। गाँजा आदि पीनेवाला।

दमा—(सं पुं) শ্বাসৰ বেমাৰ।
साँस फूलने का रोग।

दमाद, दामाद—(सं पु) জোঁৱাই।
कन्या का पति। जामाता।

दमामा—(सं पुं) নাগেৰা।
नगाड़ा। डंका।

दयानत—[सं स्त्री] সত্যনিষ্ঠা, বিবেচনা।
सत्य निष्ठा। ईमानदारी।

दयार—[सं पुं] অঞ্চল, কাষ-কাষৰীয়া ঠাই।
प्रान्त। आस पास का स्थान।

दर—(सं पुं) পথ, গাঁত, গুহা, বিদীৰ্ণ কৰা কাৰ্য্য, দুৱাৰ, ৰাজ-দৰবাৰ।
राह। गड्ढा। गुफा। विदारण। द्वार। जगह। मकानकी मञ्जिल। राज दरबार।
[सं स्त्री] দাম, দৰ; প্ৰতিষ্ঠা, কুঁহিয়াৰ।
भाव, कीमत। प्रतिष्ठा। ईख।

दरकना—(क्रि अ) ফাটি যোৱা।
फटना।

दरका—(सं पुं) ফাট, খুব জোৰেৰে খুন্দা খাই মেলা ফাট।
दरार। ऐसी चोट जिससे कोई चीज फट जाय।

दरकिनार—(क्रि वि) সম্পূৰ্ণ পৃথক, দূৰ।
बिलकुल अलग। दूर।

दरख्त—(सं पुं) গছ।
पेड़।

दरजा—(सं पुं) শ্ৰেণী, বৰ্গ, পদ।
श्रेणी। वर्ग। पद।

दरमे—(सं पुं) ধ্বংস।
ध्वंस। विनाश।

दरद—(सं पुं) বেদনা, পীড়া।
वेदना। पीड़ा। करुणा।

दर-दर—[क्रि वि] দুৱাৰে-দুৱাৰে।
द्वार-द्वार।

दरदरा—(वि) খহটা।
जिसके कण महीन नहीं। मोटे हों।

दरपन, दर्पण—(सं पुं) দাপোণ, আৰ্চী।
आकृति देखने का ऐनक।

दरपना-(क्रि अ) গৰ্ব বা অহঙ্কাৰ কৰা।
दर्प या क्रोध करना। घमंड करना।

दरबंदी —(सं) বেলেগ-বেলেগ দাম।
अलग अलग दर या विभाग बनाना। चीजों की दर निश्चित करना।

दरबा—(सं पुं) পাৰ চৰাই আদিৰ বাহ।
पक्षियों के रहने के लिये काठका बना हुआ खानेदार घर।

दरबान —(सं पुं) দাৰোৱান, দুৱৰী।
द्वारपाल।

दरबारी -(सं पुं) দৰবাৰৰ সদস্য।
সভাসদ।
दरबार में रहनेवाला।
(वि) দৰবাৰৰ যোগ্য।
दरबार का। दरबार के योग्य।

दरभ,दर्भ—[सं पुं] কুশ, ডাব (নাৰিকল); বান্দৰ।
कुश। डाभ। बन्दर।

दरमियान—[सं पुं] মাজ।
मध्य। बीच।
(क्रि वि) মাজত।
बीच या मध्य में।

दरवाजा—[सं पुं] দৰজা, দুৱাৰ।
द्वार। किवाड़।

दरवेश—[सं पुं] ফকিৰ, বৈৰাগী।
फकीर, साधु।

दरसन—[सं पुं] দৰ্শন।
दर्शन।

दरसना—(क्रि अ) দৃষ্টিগোচৰ হোৱা।
दिखाई देना।
(क्रि स) চোৱা।
देखना।

दरसनी—(सं स्त्री) আৰ্চী, দাপোন।
दर्पण।

दरसाना—(क्रि स) দেখুওৱা।
दिखलाना। झलकाना।
(क्रि अ) দৃষ্টিগোচৰ হোৱা।
दिखाई देना।

दरांती—[सं स्त्री] কাচি ধৰণৰ অস্ত্ৰ।
हँसिया की तरह एक औजार।

दराज—(वि) গধুৰ, দীঘল।
बहुत। लम्बा।
(सं स्त्री) দেৰাজ।
टेबुल या मेज का वह खाना जो बाहर खींचा या खोला जा सकता हो। [अं—ड्राअर]

दरार—[सं स्त्री] ফাট।
किसी चीज के फटने पर बीच में पड़नेवाली खाली जगह।

दरिया—(सं पुं) নদী, সাগৰ।
नदी। समुद्र।

दरियाई—[वि] নদী বা সাগৰ সম্বন্ধীয়, নদী বা সাগৰৰ পাৰৰ।
समुद्र या नदी सम्बन्धी। नदी या समुद्र के पास या किनारे का।

दरिया-दिल—[वि] উদাৰ, দানী।
उदार। दानी।

दरियाफ्त—(वि) জ্ঞাত, জনা।
ज्ञात। मालूम।
(सं पुं) সোধ-পোছ।
पूछकर जाने की क्रिया या भाव।

दरी—(सं स्त्री) গুহা, গহ্বৰ, সতৰঞ্চি।
गुफा। पहाड़ी नीचा स्थान जहाँ कोई नदी या नाला गिरता हो। शतरंजी।

दरीबा—(सं पुं) পানৰ বজাৰ।
पान का बाजार।

दरेरना—[क्रि स] ঘহঁা, গুড়িকৰা, খুন্দি পিহি কৰা।
रगड़ना। मोटा या दरदरा पीसना।

दरेरा—[सं पुं] ঘহঁা ক্ৰিয়া।
रगड़ने की क्रिया या भाव।

दरेस—[सं स्त्री] এবিধ ফুলাম কাপোৰ।
एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा।

दरेसी—(सं स्त्री) সমান তৈয়াৰী, সংশোধন কৰা কাৰ্য্য।
ऊबड़ खाबड़ जमीन समतल या बराबर-करना।

दर्ज—[सं स्त्री] ফাট।
दरार।
[वि] লিখিত।
कागज या अपने स्थानपर लिखा या चढ़ा हुआ।

दर्जन (दरजन)—(सं पुं)
दजन ।
बारह वस्तुओं का समूह ।

दर्दमंद, दर्दी-[वि] दुखी, दयालु ।
दुखी । दयावान ।

दर्दुर—(सं पुं) ভেকুলী ।
मेंढ़क ।

दर्प -(सं पुं) অহংকাৰ, গৰ্ব, দৰ্প ।
घमंड । गर्व । अहंकार मिला हुआ क्रोध । अक्खड़पन । आतङ्क ।

दर्ब-(सं पुं) দ্ৰব্য, ধাতু [সোণ ৰূপ আদি] ।
द्रव्य । धातु [सोना, चांदी आदि] ।

दर्रा—(सं पुं) দুই পৰ্বতৰ মাজৰ ঠেক সমতল ভূমি, উপত্যকা ।
दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता । घाटी ।

दर्शित—[वि] দেখুওৱা, প্ৰকাশিত, দৰ্শিত ।
दिखलाया हुआ ।
[सं पुं] ন্যায়ালয়ত প্ৰমাণ স্বৰূপে দেখুওৱা কাগজ, বস্তু আদি ।
न्यायालय में प्रमाण के रूप में उपस्थित पत्र, लेख्य या वस्तुएं ।

दल—(सं पु) ফুট, মাহ আদিৰ এফাল । পাতল । ফুলৰ পাহি । দল, সৈন্যদল ।
किसी बीज या वस्तु का जुड़ा हुआ खण्ड । पौधों का पत्ता । फूलकी पँखुड़ी । समूह । लोगों का गुट्ट । सेना । भुना हुआ मैदा ।

दलक (न)—[सं स्त्री] আঘাত, কঁপনি, মাজে মাজে উঠা বিষ ।
आघात । थरथराहट, धमक । रह रह होनेवाली पीड़ा ।

दलकना-(क्रि अ) ফটা, কঁপা, চক্‌খাই উঠা, উদ্বিগ্ন হোৱা ।
फटना । काँपना, थर्राना । चौंकना । उद्विग्न या विकल होना ।
[क्रि स] ভয় দেখুওৱা ।
डराना ।

दलदल-(सं पुं) পিটনি, জলাহ ।
वह गीली जमीन जिसपर खड़े होनेपर पैर धँसता हो ।

दलना—[क्रि स] দলা, নষ্ট বা ধ্বংশ কৰা ।
चक्की आदिमें पीसकर छोटे छोटे टुकड़े करना । रौंदना । मसलना । नष्ट या ध्वस्त करना ।

दलबंदी-(सं स्त्री) স্বার্থ সিদ্ধিব কাৰণে কৰা দল ।
स्वार्थ सिद्धि के लिये लोगों का अलग दल बनाना ।

दलमलाना—[क्रि स] গচকি মোহাৰি বিধ্বস্ত কৰা ।
मसलना । कुचलना । नष्ट करना ।

दलहन—(सं पुं) দালি কৰিব পৰা শস্য ।
वह अन्न जिसकी दाल बनती है ।

दलाली—(सं स्त्री) দালালী ।
दलाल का काम या पारिश्रमिक ।

दलित—(वि) মৰ্দিত, মোহাৰী পেলোৱা, ধ্বংস কৰি পেলোৱা ।
मसला, रौंदा या कुचला हुआ । नष्ट किया हुआ ।

दलित-वर्ग—(सं पुं) নিম্ন শ্ৰেণীৰ লোক ।
समाज का निम्न वर्ग ।

दलिया-(सं पुं) আধা খুন্দা শস্য ।
मोटा या दरदरा पीसा हुआ अन्न ।

दलेल- (सं स्त्री) সৈন্যক শাস্তি স্বৰূপে কাৰৱ দিয়া শাৰীৰিক শ্ৰম ।
सिपाहियों को दण्ड के रूप में किया जानेवाला कवायद ।

दव—(सं पुं) বন, বন জুই ।
वन । जङ्गल में लगनेवाली आग ।

दवन—(सं पुं) নাশ ।
नाश ।

दवनी—(सं स्त्री) মৰণা ।
बैलोंसे रौदवा कर डण्ठलसे फसल अलग करने का काम ।

दवा, दवाई-(सं स्त्री) ঔষধ, চিকিৎসা ।
औषध । इलाज । ठीक या दुरुस्त करने की तरकीब । दावानल ।

दवाखाना-[सं पुं] ঔষধালয়, ডাক্তৰখানা ।
औषधालय ।

दवागि(गी), दवाग्नि, दवारी-(सं स्त्री) বনজুই দাবানল, দাবাগ্নি ।
दावानल ।

दवामी-[वि] চিৰস্থায়ী ।
जो सदा के लिये हो ।

दशन-[सं पुं] দাঁত, কবচ ।
दाँत । कवच ।

दशनाम-[सं पुं] সন্ন্যাসীৰ এটা শ্ৰেণী।
सन्यासियोंका एक वर्ग।

दशनावली--(सं स्त्री) দাঁতৰ শাৰী।
दाँतों की पंक्ति।

दशमलव-(सं पुं) দশমিক ভগ্নাংশ।
गणित का दस दस की ईकाई सम्बन्धी नियम।

दशहरा—(सं पुं) বিজয়া-দশমী।
विजया दशमी।

दशांग-[सं पुं] সুগন্ধি ধূপ।
सुगन्धित धूप।

दशा, दसा-[सं स्त्री] অৱস্থা, দশা, কাব্যত বিৰহী বা বিৰহিণীৰ দশা।
अवस्था। विशेष अवस्था। साहित्य में रस के अन्तर्गत विरही या विरहिणीकी अवस्था।

दशाह—(सं पुं) দহা।
मरने के दस दिन बाद होनेवाले श्राद्धादि।

दसना—(क्रि अ) পাৰি থোৱা।
बिछाया जाना।
(क्रि स) পাৰি দিয়া।
बिछाना।
(सं पुं) বিচনা।
बिस्तर।

दसाना—(क्रि स) পাৰি দিয়া।
बिछाना।

दस्त—(सं पुं) পনীয়া শৌচ, হাত।
पतला पाखाना। हाथ।

दस्तक—(सं स्त्री) দুৱাৰত টুকুৰিয়াই মতা কাৰ্য্য, মাচুল, কৰ।
बुलाने के लिये दरवाजे का कुंडा खटखटाने की क्रिया। महसूल। कर या प्राप्य के रूपमें लिया जानेवाला धन।

दस्तकार—[सं पुं] শিল্পী, কাৰিকৰ।
शिल्पी। कारीगर।

दस्तकारी—[सं स्त्री] কাৰিকৰী, শিল্প।
कारीगरी। शिल्प।

दस्ता—(सं पुं) নাল, সৈন্যৰ সৰু দল, কাগজৰ দিস্তা।
औजार, हथियार आदिकी मूँठ। बेंट। सिपाहियों का छोटा दल। कागज के चौबीस तावोंकी गड्डी।

दस्ताना—(सं पुं) হাত মোজা, এবিধ তৰোৱাল ।
हाथ में पहनने का मोजा । एक प्रकार की तलवार ।

दस्तावर—(वि) জুলাপ ।
दस्त लानेवाली (दवा) ।

दस्तावेज—(सं स्त्री) কৰ্জ্জ-খত ; দলিল
जिस कागज पर पारस्परिक लेन-देन की शर्तें लिखी रहती हैं ।

दस्ती—(वि) হাতৰ মুঠিত বা আয়ত্বত থকা ।
हाथमें रहनेवाला । किसी आदमी के हाथ आने या जानेवाला ।

दस्तूर—(सं पुं) নিয়ম, দস্তুৰ, প্ৰথা ।
रिवाज । प्रथा । विधि । कायदा ।

दस्तूरी-(सं स्त्री) দস্তুৰি, মাননী ।
वह धन जो मालिक की ओर से माल खरीदने वाले नौकर को पुरस्कारके रूपमें दिया जाता है ।

दस्यु—(सं स्त्री) দস্যু, ডকাইত, ক্ৰীতদাস ।
डाकू । दास ।

दह, दहर—(सं पुं) কুণ্ড (যেনে-পৰশুৰাম কুণ্ড)
कुण्ड ।

दहकना—(क्रि अ) দেই-পুৰি মৰা, উত্তপ্ত হোৱা, অনুতপ্ত হোৱা ।
जलना । उत्तप्त होना । संतप्त होना ।

दहकाना—[क्रि स] দপ্ দপ্ কৈ জলোৱা, খং তুলোৱা ।
आग धधकाना । क्रोध दिलाना ।

दहना—[क्रि अ] পুৰি যোৱা, ভস্ম হোৱা, ক্ৰোধান্বিত হোৱা ।
जलना । भस्म होना । क्रोध से संतप्त होना ।
(क्रि स) জলোৱা, সন্তপ্ত কৰা ।
जलाना । संतप्त या दुखी करना । भड़काना ।

दहपटना [क्रि स] ধ্বংস কৰা ।
ध्वस्त या नष्ट करना । कुचलना ।

दहलना—[क्रि अ] ভয়তে থমকি ৰোৱা ।
डरकर थम जाना ।

दहला—(सं पुं) তাচৰ 'দহ' পাত খন ।
ताश का वह पत्ता जिसपर दस बूटियाँ होती हैं ।

दहलाना—(क्र स) থমকিব কোৱত কামৰ পৰা বিৰত থকা ।

ऐसा डराना कि कोई काम करने से आदमी रुक जाय।

दहलीज, देहरी, देहली—[सं स्त्री] দুৱাৰ-গড়িয়া বা দুৱাৰ দলি। दरवाजे में चौखट के नीचे की लकड़ी या पत्थर।

दहशत—[सं स्त्री] ভয়। भय।

दहाई—[सं स्त्री] দহসংখ্যা, দহৰ মান। दस का मान या भाव।

दहाड़ना—[क्रि अ] গোঁজৰণি, চিঞৰি চিঞৰি কন্দা। शेर आदि का गरजना। चिल्ला कर रोना।

दहाना—[सं पुं] বহল মুখ, নদীৰ মোহনা। चौड़ा मुँह। नदी का मुहाना।

दहिना, दाहिना—[वि] সোঁফাল। दक्षिण पार्श्व।

दही—[सं पुं] দৈ। खटाई के योग से जमाया गया दूध।

दहेंड़ी—[सं स्त्री] দৈ জমাবৰ বাবে কাটা বা পাইলা। दही जमाने की हांड़ी।

दहेज, दाइज [।]—[सं पुं] যৌতুক। यौतुक।

दाँ—[सं पुं] বাৰ, পাল, জ্ঞাতা, জানোঁতা। दफा। बारी। ज्ञाता।

दाँग—[सं पुं] নাগেৰা, সৰু পাহাৰ। नगाड़ा। छोटी पहाड़ी।

दाँज—(सं स्त्री) সমতা। बराबरी।

दाँड़ना—(क्रि स) দণ্ড দিয়া, জৰিমনা কৰা। दंड देना, जुरमाना करना।

दाँत—(सं पुं) দাঁত। दन्त। दन्त जैसी उभरी हुई कोई पंक्ति।

=खट्टे करना—যুদ্ধত খুব জুলুম দিয়া। लड़ाई में बहुत परेशान करना।

=लगाना या गड़ाना—পাৰ বুলি আশা পালি থকা। कोई चीज पानेकी ताकमें रहना।

दाँता-(सं पुं) কৰত আদিৰ দাঁত, চকৰি আদিৰ দাঁতবি। आरा आदि का दांतों की तरह

उमरा हुआ भाग।

=किटकिट—সদায় হৈ থকা হাই কাজিয়া।

नित्य या बराबर होते रहनेवाला झगड़ा।

दांपत्य—[वि] দাম্পত্য, পতি-পত্নী সম্বন্ধীয়।

पति पत्नीसे सम्बन्ध रखनेवाला।

दाँव—[सं पुं] বাজি, পণ, খেলৰ পালি, অনুকূল অৱসৰ।

जूए में लगाया जानेवाला धन। बार। खेलने की पारी। अनुकूल अवसर। विपक्षी को हराने की युक्ति या पेंच। स्थान। चाल।

=पर चढ़ना—ঠেকত পৰা।

विवश स्थिति में होना।

दाँवनी—(सं पुं) শিৰোভূষণ।

मस्तक पर पहनने का एक अलंकार।

दाँवरी—[सं स्त्री] জৰী।

रस्सी। डोरी।

दाँई—[वि] সোঁফালে।

दाहिनी।

[सं स्त्री] বাৰ, দফা।

दफा। बार।

दाई—[सं स्त्री] ধাই, দাসী।

धाय। दासी।

दाऊ—(सं पुं) ককাইদেউ, বলদেৱ।

बड़ा भाई। बलदेव।

दाक्षायणी—[सं स्त्री] দক্ষৰ কন্যা, সতী, দুৰ্গা।

दक्ष की कन्या। सती। दुर्गा।

दाक्षिण्य—(सं पुं) অনুকূল, কৌশল।

अनुकूल होनेका भाव। कौशल।

(वि) দক্ষিণৰ, দক্ষিণা সম্বন্ধীয়।

दक्षिण का। दक्षिणा सम्बन्धी।

दाख—(सं स्त्री) আঙুৰ, কিচ মিচ।

अंगूर। किशमिश।

दाखिल—[वि] প্ৰবিষ্ট, হাজিৰ, দাখিল।

घुसा या पैठा हुआ। प्रविष्ट। पहुँचा या आया हुआ।

दाखिला—(सं पुं) প্ৰবেশ।

प्रवेश।

दाग—(सं पुं) পোৰা কাৰ্য্য, মৃতক-দাহন, দাগ বা চেকা, দোষ।

जलाने का काम। दाह। मुरदा

जलाने की क्रिया। धब्बा। ऐब, दोष।

दागना—(सं पुं) লক্ষ্য স্থিৰ কৰা, কলঙ্ক লগোৱা, দুখ দিয়া, গুলি মৰা।
निशान लगाना। दाग या कलंक लगाना। कष्ट या दुःख पहुँचाना। तोप या बन्दूक आदि छोड़ना।

दाघ—(सं पुं) গৰম, উত্তাপ।
गरमी। ताप।

दाजना—(क्रि अ) পোৰা, ঈৰ্ষান্বিত হোৱা।
जलना।
(**क्रि स**) জ্বলোৱা, ঈৰ্ষান্বিত কৰা।
जलाना।

दाढ़—(सं स्त्री) জামিদাঁত, দাঁতৰ আগুৰ হাড়।
जबड़े के अन्दरके बड़े चौड़े दाँत।

दाढ़ना—(क्रि स) জ্বলোৱা, দুখিত কৰা।
जलाना। दु.खी करना। किसी के मन में ईर्ष्या पैदा करना।

दाढ़ा—(सं पुं) বন-জুই, দাহ, দীঘল দাড়ি।
बन की आग। जलन। बहुत बड़ी दाढ़ी।

दाढ़ी—(सं स्त्री) থুতৰি, দাড়ি।
ठोढ़ी। ठोढ़ीपर उगनेवाले बाल।

दातव्य—(वि) দিয়াৰ উপযোগী।
दिये जाने योग्य। दान का।
(सं पुं) দান, দিব লগীয়া ধন।
दान। दानशीलता। जो धन देना या चुकाना आवश्यक हो।

दातार—[सं पुं] দাতা, দানী।
दाता।

दाद—(सं स्त्री) খৰ, ন্যায়।
एक प्रसिद्ध चर्म रोग। दद्रु।
न्याय।
=**देना**।
প্ৰশংসা কৰা।
प्रशंसा करना।

दादनी-[सं स्त्री] দান, বায়না।
আগধন।
देन। पेशगी।

दादरा—[सं पुं] এবিধ জনপ্ৰিয় গান।
एक प्रकार का चलता गाना।

দ্বাদ্বা—(সং পুং) ককা দেউতা, ককাইদেউ।
पिता का पिता, बड़ा भाई।

দ্বাদুৰ—(সং পুং) ভেকুলী।
मेंढ़क।

দ্বাঘনা—(ক্রি স) জলোৱা।
जलाना।

দ্বান-বাৰি—(সং পুং) হাতীৰ ক্রিমজু।
हाथी का मद।

দ্বানা—(সং পুং) দানা, অস্তক দিয়া খলিহৈ, ধান, মাহ শস্যৰ গুটি আদিৰ আহাৰ। চেনি, মিছিৰী আদি গোট মাৰি সৰু সৰু আকাৰ ধৰা গুটি বা খণ্ড।
अनाज का बीज या कण। सूखा भुना हुआ अन्न। कोई छोटा गोल उभार।
(বি) বুদ্ধিমান।
बुद्धिमान।

দ্বানাদেশা—(সং পুং) দেনা টকা পৰিশোধৰ আদেশ-পত্র।
देन चुकाने का आदेश पत्र।

দ্বানী—(বি) দানী, উদাৰ।
उदार।
(সং পুং) কৰ সংগ্রহকাৰী, দাতব্য সাহায্য লওঁতা।
कर उगाहने वाला। दान या भिक्षा लेनेवाला।
[সং স্ত্রী] পাত্র বা আধাৰ।
आधान या पात्र।

দ্বানেদাৰ—(বি) দানা যুক্ত।
जिसमें या जिसपर दाने या रवे हों।

দ্বাপ—(সং পুং) অভিমান, অহংকাৰ, শক্তি, উলাহ, আতঙ্ক, খং।
अभिमान। घमण्ड। शक्ति। उमङ्ग। आतङ्क। गुस्सा। जलन।

দ্বাপনা—(ক্রি স) হেঁচা দিয়া, বাধা দিয়া, অস্বীকাৰ বা বিৰোধিতা কৰা।
दबाना। रोकना।

দ্বাব—[সং পুং] বোজা, হেঁচা, ভাৰ, আতঙ্ক।
दबाने की क्रिया या भाव। भार। आतंक।

দ্বাবনা—[ক্রি স] হেঁচা দিয়া, চেপা দিয়া, নষ্ট কৰা।
दबाना। गाड़ना। हराना। नष्ट-भ्रष्ट करना।

दाबा—[सं पुं] গছত কলম দিয়া কাম ।
कलम लगाने के लिये पौधे की टहनी जमीन में गाड़ना ।

दाभ—(सं पुं) কুশ ।
कुश ।

दाम—[सं पुं] মূল্য, দাম, খৰচ, রুপয়া-পৈসা । मूल्य ।

दामन—(सं पुं) পোচাকৰ অধো-ভাগ, আউঁঠি, পাহাৰৰ পাদ-দেশ ।
पहने जानेवाले कपड़ों में कमर से नीचे का भाग । पहाड़ के नीचे की भूमि ।

दामाद—(सं पुं) জোঁৱাই ।
बेटी का पति ।

दामिनि, दामिनी—(सं स्त्री)
বিজুলী ।
बिजली ।

दामी—[वि] দামী, মূল্যবান ।
कीमती ।

दाय—(सं पुं) যৌতুক, পৈতৃক বিষয়, উত্তৰাধিকাৰী স্বত্ব ।
वह धन जो किसी को दिया जाने को हो । उत्तराधिकारियोंमें बँटने वाला पैतृकधन । जिम्मे-दारी । जवाबदेही ।

दायक—[सं पुं] দিওঁতা, দাতা ।
देनेवाला ।

दायज (।)—(सं पुं) যৌতুক ।
दहेज ।

दायर—(वि) চলিত, (আদালতত) দাখিল কৰা অভিযোগ ।
चलता । न्यायालय में उपस्थित किया हुआ (अभियोग) ।

दायरा—[सं पुं] ঘূৰণীয়া ঘেৰ, বৃত্ত ।
गोल घेरा । मण्डल ।

दायाँ— (वि) সোঁ ফাল ।
दाहिना ।

दाया—[सं स्त्री] দয়া, ধাই ।
दया । धाय ।

दायाद—(सं पुं) উত্তৰাধিকাৰী, সমান অংশীদাৰ, ওজৰদাৰ ।
किसी सम्पत्ति में हिस्सा पानेका अधिकारी ।

दार, दारा—(सं स्त्री) ঘৈণী, পত্নী ।
पत्नी ।
(प्रत्य०) ৰখীয়া ।
रखनेवाला ।

दारण—[सं पुं] फला-छिरा काम।
चीरने-फाड़ने का काम।

दारना—(क्रि स) फालि पेलोवा, नष्ट करा।
फाड़ना। नष्ट करना।

दार-मदार-[सं पुं] आश्रय, रक्षा, निष्पत्ति।
आश्रय। किसी कार्य या बात का किसी दूसरे कार्य या बात पर अवलम्बन।

दारिका—(सं स्त्री) वैणी, पत्नी, काठ-पुतला।
पत्नी। कठपुतली।

दारिद दारिद्र्य—[सं स्त्री] दारिद्य, निर्धनता।
निर्धनता। गरीबी।

दारु—(सं पुं) काठ, देवदारु गछ, बाढ़ै।
काठ। बढ़ई। कारीगर।

दारु-योषित—[सं स्त्री] काठ-पुतला।
कठपुतली।

दारू—(सं स्त्री) ঔষধ।
दवा।
(सं पुं) मद, बारूद।
मद्य। बारूद।

दारोगा - (सं पुं) दारोगा।
थानेदार।

दाल—(सं स्त्री) दालि।
दले हुए अरहर, मूँग आदि अनाज। अरहर, मूँग आदि को गाढ़ा कर उबाला हुआ रूप।
दाल के आकार की कोई चीज।
=**में काला होना**-सन्देह जनक।
खटके या सन्देह की जगह होना।
=**गलना**-अभीष्ट सिद्धि होवा।
प्रयोजन सिद्ध होना।

दालचीनी (दारचीनी)—(सं स्त्री)
डाल-चेनि।
एक प्रकारका सुगन्धित मसाला।

दालान— (सं पुं) बारान्दा।
आछुटीया कोठा।
बरामदा।

दाव—[सं पुं] हावि, बन-जुई, पोरणि, दा।
वन। वन की आग। आग। जलन। एक तरह का औजार।

दावत— (सं स्त्री) भोज, भोजन निमन्त्रण।
भोज। निमन्त्रण।

दावना—(क्रि स) दमन करा।
दमन करना।

दावा—[सं पुं] বন-জুই, অভিযোগ, আপত্তি, স্বত্ব, দৃঢ় উক্তি।
किसी चीजपर अपना हक बतलाना। स्वत्व। अधिकार प्राप्ति के लिये चलाया गया मुकदमा। अभियोग। जोर। दृढ़तापूर्वक कुछ कहना।

दावानल—[सं पुं] বন-জুই।
वन में आप ही आप लगनेवाली आग।

दावेदार—(सं पुं) ওজৰ দাৰ।
दावा करनेवाला या रखनेवाला।

दास—[सं पुं] দাস, চাকৰ, সেৱক, এটা উপাধি।
गुलाम। सेवक। एक उपाधि।

दासता—(सं स्त्री) দাসত্ব।
गुलामी।

दासा—[सं पुं] চ'ৰা ঘৰৰ ব্যৱহাৰত লগাবলৈ ঘৰৰ পৰা বাহিৰলৈ বঢ়োৱা অংশ।
दीवार से सटाकर बना हुआ चबूतरा दरवाजे के ऊपर का तख्ता या पत्थर।

दास्तान—(सं स्त्री) বৃত্তান্ত, কাহিনী, বিবৰণ।
वृत्तान्त। कहानी। वर्णन।

दास्य—(सं पुं) দাসত্ব, সেৱা।
दासता। सेवा।

दाह—[सं पुं] দাহ, শব-দাহ, তাপ, ঈৰ্ষা।
जलाने की क्रिया। शव जलाने की क्रिया। ताप। ईर्ष्या।

दाहना—[क्रि स] দাহ কৰা, জ্বলোৱা, খুব দুঃখ কৰা।
दाह करना। जलाना। बहुत दुःख करना।

दाहिने—[क्रि वि] সোঁ ফালে।
दाहिने हाथ की तरफ।

दिअना—[सं पुं] চাকি, বন্তি।
दीया। चिराग।

दियरी, दियली—(सं स्त्री) মাটিৰ সৰু চাকি।
मिट्टी का बहुत छोटा दीया।

दिक्—[सं स्त्री] দিক্, দিশ, ফাল।
दिशा। ओर।

दिक—[वि] আমনি, জঞ্জাল, হায়-বান।
जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित। हैरान। अस्वस्थ।
(सं पुं) যক্ষ্মা বা ক্ষয় ৰোগ।
तपेदिक या क्षय रोग।

दिक्कत—(सं स्त्री) দিগ, আমনি, অসুবিধা, কষ্ট ।
परेशानी । तकलीफ । कठिनता ।

दिखना—[क्रि अ] দৃষ্টিগোচৰ হোৱা ।
दिखाई देना ।

दिखलाई—(सं स्त्री) দেখা বা দেখুওৱাৰ পাৰিশ্ৰমিক ।
दिखलाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक ।

दिखलाना, दिखाना—(क्रि स) দেখুওৱা ।
दूसरे को कोई चीज प्रदर्शित करना ।

दिखावट—(स स्त्री) কৃত্ৰিম সাজ সজ্জা, বাহিৰে ৰং-চং ।
ऊपरी बनावट । दिखौआ, ठाट-बाट । ऊपरी तड़क-भड़क ।

दिखावटी—[वि] কৃত্ৰিম ।
केवल दिखाने के लिये रूप-रंग, ठाट-बाट आदि ।

दिखावा—(सं पुं) বাহ্যাড়ম্বৰ ।
ऊपरी तड़क-भड़क । आडम्बर ।

दिखौआ—[वि] বাহিৰে ৰং-চং, ভিতৰে কোৱাভাতুৰী ।
सिर्फ देखने भर का, मगर किसी काम का नहीं ।

दिगम्बर—(सं पुं) শিৱ, নাঙঠ, এন্ধাৰ ।
शिव । नंगा रहनेवाला । अन्धकार ।
[वि] নাঙঠ ।
नंगा ।

दिग्गज—(सं पुं) পৃথিৱীক ধাৰণ কৰি আঠোটা দিশত থকা হাতী ।
पृथ्वी की आठों दिशाओं में रहने वाले हाथी ।
(वि) বৰ ডাঙৰ ।
बहुत बड़ा या भारी ।

दिग्दर्शक-यंत्र—(सं पुं) দিগ্-দৰ্শক যন্ত্ৰ ।
दिशा निर्देशन करनेवाला यंत्र ।
कुतुबनुमा ।

दिग्दर्शन—(सं पुं) দিক্-দৰ্শন, নমুনা ।
नमूना । साधारण परिचय कराने का काम ।

दिठाना—(क्रि अ) কু-দৃষ্টি পৰা, নজৰ লগা, মুখ লগা ।
बुरी दृष्टि या नजर लगना ।

[ক্রি স] কু দৃষ্টিৰে চোৱা।

बुरी दृष्टि या नजर लगाना।

দিঠৌনা—(সং পুং) শিশুৰ ওপৰত কু দৃষ্টি নপৰিবলৈ দিয়া ফোট।

बुरी नजर से बचाने के लिये बालकों के माथे, गाल आदि पर लगायी जानेवाली बिन्दी।

দিঢ়ানা—(ক্রি স) দৃঢ় কৰা, নিশ্চয় কৰা।

दृढ़ या मजबूत करना। निश्चित करना।

[ক্রি অ] সুদৃঢ় হোৱা।

दृढ़ या पक्का होना।

দিৎসা—[সং স্ত্রী] দিয়াৰ ইচ্ছা, দান পত্র, উইল।

देने की इच्छा। वसीयत।

দিন কাটনা— দুখৰ দিন অতিবাহিত কৰা।

कष्ट का समय किसी प्रकार बिताना।

=**দিন চঢ়না**-গৰ্ভকাল পূৰ হোৱা। गर्भकाल पूरा होना।

=**দিন ফিৰনা**—দুখৰ পিছত সুখৰ দিন অহা।

दुख के बाद सुख या सम्पन्नता के दिन आना।

দিনকৰ—(সং পুং) সূৰ্য্য।

सूर्य।

দিনচৰ্যা—[সং স্ত্রী] দৈনিক কাৰ্যক্রম।

दिनभर में किये जानेवाले काम-धंधा।

দিনাই—(সং স্ত্রী) বিষাক্ত বস্তু।

वह जहरीली चीज जिसे खाने से तुरंत मृत्यु हो जाय। दाद (रोग)।

দিনিঅা, দিনিয়ৰ—(স পুং) সূৰ্য্য।

सूर्य।

দিনৌঁধী—[সং স্ত্রী] দিন-কণা, দিনত কম দেখা এবিধ চকু-ৰোগ।

दिनके समय न दिखाई देने का रोग।

দিপনা-[ক্রি অ] উজ্জ্বল হৈ উঠা।

चमकना।

দিপানা—(ক্রি স) উজ্জ্বল কৰা।

चमकाना।

দিমাগ—(সং পুং) মস্তিষ্ক, মেধা, মানসিক শক্তি, অহঙ্কাৰ।

मस्तिष्क। भेजा। मानसिक

शक्ति। घमंड।

—लड़ाना-চালি-জাবি চোৱা।

अच्छी तरह सोचना-समझना।

दिमागी—[वि] মস্তিষ্ক সম্বন্ধীয়, মানসিক, শক্তিসম্পন্ন, অহঙ্কাৰী।

दिमाग संबंधी। दिमाग का। अच्छी मानसिक शक्ति वाला। घमंडी।

दियना—(सं पुं) চাকি।

दीपक।

दियारा—(सं पुं) নদীৰ পাৰৰ মাটি, মৰীচিকা।

नदी के पास की जमीन। मृगतृष्णा। छलावा।

दिरमान—[सं पुं] ঔষধ, চিকিৎসা।

औषध। इलाज।

दिरमानो-(सं पुं) চিকিৎসক।

चिकित्सक।

दिल—(सं पुं) অন্তৰ, হৃদয়।

हृदय। चित्त।

—देना—প্ৰেমত পৰা।

किसी से प्रेम करना।

—से दूर करना-পাহৰি যোৱা।

भुला देना।

दिलगीर—[वि] ব্যথিত।

जिसके मनमें कोई दुख या कष्ट हो।

दिलगीरी—(सं स्त्री) ব্যথা।

मनमें होने वाला दुख या कष्ट।

दिलचस्प—(वि) মনোৰঞ্জক।

मनोरंजक।

दिलचस्पी—(सं स्त्री) মনোৰঞ্জন, অনুৰাগ।

मनोरंजकता। अनुराग।

दिलजला—(वि) অন্তৰ্দগ্ধ।

जिसे बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा हो।

दिलदार—[वि] উদাৰ, ৰসিক, ৰসাল, প্ৰেমী।

उदार। रसिक। प्रेमी।

दिलासा—[सं पुं] আশ্বাস।

आश्वासन।

दिली-(वि) অতি ঘনিষ্ঠ, হাৰ্দিক।

बहुत घनिष्ठ। हार्दिक।

दिलेर—(वि) সাহীয়াল, সাহসী।

बहादुर। साहसी।

दिलेरी—[सं स्त्री] সাহ, সাহস।

साहस। बहादुरी।

दिल्लगी—(सं स्त्री) ঠাট্টা-মস্করা।
परिहास। मजाक। दिल लगने की क्रिया या भाव।

दिव-[सं पुं] স্বর্গ আকাশ, দিন।
स्वर्ग। आकाश। दिन।

दिवाल—(वि) দাতা, দানী, দেৱাল।
जो देता हो। देनेवाला। दीवार।

दिवाला-(सं पुं) ধকুৱা, আৰ্থিক দুৰৱস্থা।
ऋण चुकाने में असमर्थ। आर्थिक हीन अवस्था। कोई चीज या गुण न रह जाना।

दिवालिया [वि] ধাৰত গলপোত হৈ থকা।
जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ भी न रह जाय।

दिवाली—(सं स्त्री) দীপান্বিতা।
दीपोत्सव। दीवाली।

दिवैया—(वि) দিওঁতা, দাতা।
देनेवाला।

दिव्य—(वि) অলৌকিক, শপত।
अलौकिक। शपथ।

दिव्यांगना—(सं स्त्री) দেৱী, অপেশ্বৰী।
देवता की स्त्री। अप्सरा।

दिव्या—(सं स्त्री) স্বৰ্গত থকা নায়িকা।
स्वर्ग में रहनेवाली नायिका।

दिव्यास्त्र—(सं स्त्री) দেৱতা প্ৰদত্ত অস্ত্ৰ।
देवता का दिया हुआ या मन्त्र से चलनेवाला अस्त्र।

दिश, दिशा, दिशी, दिसा,

दिसि—[सं स्त्री] ফাল, দিশ।
ओर। दिक्। दस की संख्या।

दिसावर—[सं पुं] বিদেশ।
दूसरा देश। विदेश।

दिहल—(क्रिस) দিলে।
दिया।

दीआ (सं पुं) চাকি।
दीपक।

दीक्षांत—(सं पुं) সমাবৰ্ত্তন, যজ্ঞৰ অন্ত্যক্ৰিয়া।
किसी महाविद्यालय की पढ़ाई का सफलतापूर्वक अन्त। यज्ञ के अन्त की क्रिया।

दीखना—[क्रि अ] দেখা পোৱা।
दिखाई देना।

दीघी—(सं स्त्री) পুখুৰী।
तालाब।

दीठ–[सं स्त्री] দৃষ্টি, কুদৃষ্টি ।
दृष्टि । निगाह । कु-दृष्टि ।

दीठबंदी–(सं स्त्री) যাদু ।
जादू ।

दीदार—[सं पुं] দৰ্শন ।
दर्शन ।

दीनार—(सं पुं) সোণৰ মুদ্ৰা ।
स्वर्ण मुद्रा ।

दीप—(सं पुं) চাকি ।
दीया ।

दीपक—(सं पुं) চাকি, এবিধ অৰ্থালঙ্কাৰ, এবিধ ৰাগ ।
दीया । एक अर्थालंकार । एक राग ।
[वि] উজ্জ্বল কৰোতা, হজম শক্তি বঢ়াওতা, উত্তেজক ।
प्रकाश या उजाला करनेवाला । पाचन शक्ति बढ़ानेवाला । उत्तेजक ।

दीपन–(सं पुं) প্ৰকাশন, ভোক বৃদ্ধি, উত্তেজনা ।
प्रकाशन । भूख तेज करना । उत्तेजना ।
[वि] হজমীকাৰক, উত্তেজক ।
पाचन शक्ति बढ़ानेवाला । उत्तेजक ।

दीपना—(क्रि स) উজলোৱা ।
चमकाना ।
[क्रि अ] উজলি উঠা ।
चमकना ।

दीपमालिका—(सं स्त्री) দীপান্বিতা ।
दीवाली ।

दीप-स्तंभ—[सं पुं] সাগৰত বাট দেখুৱাবৰ কাৰণে নিৰ্ম্মাণ কৰা চাকি ।
समुद्र में जहाजों को रास्ता दिखाने के लिये बना हुआ आलोक-स्तम्भ ।

दीपिका–[सं स्त्री] সৰু চাকি । অৰ্থপুথি ।
छोटा दीया । अर्थ बतलाने वाली पुस्तक ।
(वि) যিয়ে পোহৰ বিতৰণ কৰে ।
प्रकाश फ़ैलानेवाली ।

दीपित, दीप्त—(वि) জলি থকা উজ্জ্বল ।
जलता हुआ । चमकीला ।

दीप्ति–(सं स्त्री) পোহৰ, উজ্জ্বলতা, শোভা ।
प्रकाश । चमक । शोभा ।

दीमक—(सं स्त्री) উঁই পৰুৱা। কাঠ বাঁহ খাই নষ্ট কৰা এবিধ মাটিত থকা পোক।
एक तरह का कीड़ा जो लकड़ी आदि खा जाता है।

दीयट—[सं स्त्री] গছা।
दीपाधार।

दीया—[सं पुं] চাকি। दीपक।

दीयासलाई—(सं स्त्री) দিয়াচলাই, জুইৰ-বাহ।
आग जलाने की पतली तीलियों की डिब्बी।

दीर्घकाय—(सं पुं) ডাঙৰ-দীঘল, সুবৃহৎ।
बड़े डीलडौल वाला। बहुत बड़ा।

दीर्घसूत्रता—(सं स्त्री) বহুত দিন জুৰি লাহে লাহে হোৱা ক্রিয়া। দীৰ্ঘসূত্ৰতা।
हर काम बहुत धीरे धीरे और देर में करना। कार्यालयों में पेचीली, व्यर्थ की कार्रवाइयों के कारण होनेवाली व्यर्थ की देर।

दीर्घसूत्री—(वि) প্ৰত্যেক কামতে পলম কৰোঁতা।
हर काम में बहुत देर लगानेवाला।

दीर्घा—[सं स्त्री] গেলাৰী। খলপা। চালিৰে ঢকা বাট।
ऊपर से छाया हुआ मार्ग। भवनमें ऊंचाई पर दर्शकोंके बैठने का स्थान।

दीर्घिका—(सं स्त्री) সৰু পুখুৰী।
छोटा तालाब।

दीर्ण—[वि] ফটা।
फटा हुआ।

दीवान—(सं पुं) ৰাজ সভা, ৰাজ্যৰ মন্ত্ৰী। কোনো উৰ্দু কবিৰ সমস্ত গজল-সংগ্ৰহ।
राज सभा। राज्य का मंत्री। किसी शायर की सब गजलों का संग्रह।

दीवान-खाना—(सं पुं) বৈঠক খানা।
बैठक-घर।

दीवान-खास—(सं पुं) মূল দৰবাৰ।
खास दरबार।

दीवाना—[वि] পাগল, বিক্ষিপ্ত।
पागल। विक्षिप्त।

दीवानी—[सं स्त्री] মন্ত্ৰীৰ পদ বা কাৰ্য্য, দেৱানী আদালত।
दीवान का पद या कार्य। दीवानी न्यायालय।

दीवारी, दीवाल—(सं स्त्री) ওখ বেৰ।
प्राचीर। मिट्टी, पत्थर आदि का घेरा।

दीवाली—(सं स्त्री) দীপান্বিতা।
कार्तिक की अमावस्या को होनेवाला दीपोत्सव।

दीसना—(क्रि स) দেখা পোৱা।
दिखाई देना।

दीह—(वि) দীঘ, বৰ ওখ।
लम्बा और बड़ा। बहुत ऊँचा
(सं पुं) চাৰি সীমা।
चहारदीवारी।

दुंद—(सं पुं) দ্বন্দ্ব, খৰিয়াল, কাজিয়া। নাগেৰা।
उत्पात। झगड़ा-बखेड़ा। नगाड़ा।

दुंदुभि—(सं स्त्री) নাগেৰা।
नगाड़ा।

दुंदुह—(सं पुं) ঢোৰা সাপ।
डेड़हा साँप।

दुंबा—[सं पुं] শকত নেজাল ভেড়া।
एक प्रकार का। मोटी दुमवाला मेढ़ा।

दुआ—(सं स्त्री) ঈশ্বৰৰ ওচৰত কৰা প্ৰাৰ্থনা, আশীৰ্ব্বাদ।
ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना। आशीर्वाद।

दुआह—(सं पुं) প্ৰথম স্ত্ৰীৰ মৃত্যুত হোৱাত দ্বিতীয় বিবাহ।
पहली स्त्री मर जाने पर शादी न होनेवाला पुरुष का दूसरा विवाह।

दुइ—(वि) দুই।
दो।

दुइज, दूइज—(सं स्त्री) দ্বিতীয়া তিথি।
द्वितीया तिथि।

दुऊ, दुऔ—(वि) দুয়ো।
दोनों।

दुकड़ा—(सं पुं) যোৰা, এপইচাৰ চাৰিভাগৰ এভাগ।
जोड़ा। पैसेका चौथाई भाग।

दुकड़ी—(सं स्त्री) দুটকা, যোৰা, যোৰ।
दो रुपये। जोड़ी।

दुकना—(क्रि अ) লুকোৱা।
छिपना।

दुकान, दूकान—(सं स्त्री)
দোকান, পোহাৰ ।
चीजें खरीद बिक्री का स्थान।
हाट। इधर उधर फैली हुई चीजें।

दुकानदार, दूकानदार—(सं पुं)
দোকানী।
दुकान वाला।

दुकानदारी, दूकानदारी-(सं स्त्री)
দোকানী-ব্যৱসায় ।
दुकानदार का काम या भाव।

दुकाल— [सं पुं] দুৰ্ভিক্ষ, আকাল।
अकाल ।

दुकूल—(सं पुं) ধুনীয়া কাপোৰ।
आँचल। कपड़ा। स्त्रियों के पहनने की साड़ी। आँचल।

दुकेले—[सं पुं] আন কোনোবা লগত থকা, যি অকলশৰীয়া নহয়।
जिसके साथ कोई एक और आदमी हो।
(क्रि वि—**दुकेले**) (वि—**दुकेला**)

दुक्कड़—(सं पुं) একেলগে বান্ধি থোৱা দুখন নাওৰ যোৰা, এবিধ সৰু ঢোলৰ যোৰা।
एक में बंधी दो नावों का जोड़ा।
छोटे ढोलों का जोड़ा।

दुक्का—(वि) যঁজা, তাচৰ পাতৰ ফোটা ।
जो एक साथ दो हों।

दुखड़ा—[सं पुं] দুখৰ কাহিনী।
किसी के दुख या कष्ट का वर्णन, संकट।

दुखना—(क्रि अ)বিষোৱা, বিষ উঠা।
(शरीर के किसी अंगमें) पीड़ा होना ।

दुखाना—(क्रि स) দুখ দিয়া।
दुखी करना। कष्ट देना।

दुखिया—(वि) দুঃখিত।
दुःखित ।

दुग—[वि] দুই ।
दो ।

दुगई—(सं स्त्री) ঘৰৰ আগৰ মুকলি বাৰাণ্ডা।
मकान के आगे का उसारा। बरामदा ।

दुगदुगी—[सं स्त्री] বুকুৰ ধপ-ধপনি, মনৰ খুন্দুৰনি ।

हृदय का जोर से धुकधुक करने की क्रिया। भय।

दुग्ध—(सं पुं) এৰা গাখীৰ ।
दूध।

दुचंद—[वि] দুগুণ।
दुगुना।

दुचितई(ताई)—(सं स्त्री) দোধোৰ-মোৰ অৱস্থা, আশঙ্কা।
द्विविधा। आशंका।

दुचित्ता—(वि) দোধোৰ মোৰ।
जो द्विविधा या चिन्तामें हो। सन्देह में पड़ा हुआ।

दु-टूक—(वि) দুই ভাগত বিভক্ত।
दो टुकड़ों या खण्डों में बँटा हुआ।

दुतकारना, दुतकाना-(क्रि स) ডাবি দিয়া, তাড়না কৰা। দূৰ দূৰ কৰা। किसी को तिरस्कारपूर्वक हटाना, धिक्कारना।

दुतारा—[सं पुं] দোতোৰা।
दो तारोंवाला बाजा।

दुतारी—[सं स्त्री] এবিধ তৰোৱাল।
एक प्रकार की तलवार।

दुति—(सं स्त्री) জ্যোতি, পোহৰ, প্রকাশ, শোভা।
प्रभा। प्रकाश।

दुतिया—(सं स्त्री) দ্বিতীয়া তিথি।
द्वितीया तिथि।

दुतिवन्त-(वि) ধুনীয়া, চকচকীয়া।
चमकीला। सुन्दर।

दुद्धी—[सं स्त्री] খড়িমাটি।
खड़िया मिट्टी।

दुध मुँहाँ—[वि] পিয়াহ খোৱা, দাঁত নসৰা। পানী কেঁচুৱা।
जिसके दूध के दाँत न टूटे हों। जो शिशु माता के दूधपर ही पलता हो। बहुत छोटा बच्चा।

दुधार [रू]-(वि) খীৰতী, দুৱনী।
दूध देनेवाली।

दुधारा—(वि) দুয়োফালে ধাৰ থকা।
जिसके दोनों ओर धारें हों।
[सं पुं] এবিধ তৰোৱাল।
एक प्रकार की तलवार।

दुधारी—(वि) খীৰতী।
दूध देनेवाली।
(सं स्त्री) দুয়োফালে ধাৰ

থকা তৰোৱাল।
दोनो ओर धारोंवाली तलवार।

दुधिया—(वि) গাখীৰ যেন বগা।
दूध की भाँति सफेद।

दुनना·(क्रि स) গচকি পেলোৱা।
कुचलना।

दुनाली—(वि) দোনলীয়া বা দুনলীয়া।
दो नलियोंवाली।

दुनियाँ, दुनिया—(सं स्त्री) সংসাৰ, লোক।
संसार। संसार के लोग।

दुनियादार-(सं पुं) গৃহস্থ, গৃহস্থ ধৰ্ম্মত পাকৈত ব্যক্তি, সংসাৰী।
गृहस्थ। व्यवहार कुशल व्यक्ति।

दुनियाई—[वि] সাংসাৰিক।
सांसारिक।

दुपटा, दुपट्टा—(सं पुं) চাদৰ।
ओढ़ने की चादर। कन्धे पर रखने का कपड़ा। आँचल।
[सं स्त्री—दुपटी, दुपट्टी]

दुपहरिया, दुपहरी-(सं स्त्री) দুপৰীয়া, এবিধ সৰু ফুলৰ গছ।
दोपहर। एक छोटा फूलदार पौधा।

दुबधा, दुबिधा—(सं स्त्री) দ্বিধা, দুই ৰকমৰ ভাব, মনৰ সংশয়।
द्विधा। संशय। आगा पीछा। आशंका।

दुबरा, दुबला—[वि] খীণ, চেবেলা। कृश। अशक्त।

दुबारा, दोबारा—[क्रि वि] পুনৰ, আকৌ এবাৰ।
एकबार और।

दुभाषिया—(सं पुं) দোভাচী (দোভাষী)।
अलग अलग भाषाओंमें बातें करने वालों को एक दूसरे की बात समझानेवाला। (अं—इन्टर प्रेटर)

दुमंजिला—(वि) দুই মহলীয়া (অট্টালিকা)।
दो स्तरों का [मकान]

दुम—(सं स्त्री) নেজ, নেজৰ দৰে পাছফালে লাগি থকা, শেষ আৰু সূক্ষ্ম অংশ।
पूँछ। पूछ की तरह पीछे रहने वाला। किसी काम का अन्तिम और सूक्ष्म अंश।

दुमची—(सं स्त्री) ঘোঁৰাৰ নেজৰ তলেৰে বন্ধা গাদি সংলগ্ন জৰি বা ফিটা।
घोड़ेकी साजमें लगा रहनेवाला

वह तलवा जो उसकी पूँछके नीचे रहता है।

दुमदार—(वि) নেজাল, নেজ থকা।
पूँछवाला।

दुमाता—(सं स्त्री) মাহী-আই, বি-মাতৃ।
विमाता। सौतेली माँ

दुमुँहाँ, दोमुँहाँ—(वि) দুমুখীয়া।
जिसके दो मुँह हों।

दुरंगा, दुरंगी—(वि) দুৰঙীয়া, দুই ৰকমৰ, চোটকীয়া, প্ৰবঞ্চক।
जिसमें दो रङ्ग हों। दो तरह का। दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरन्त—[वि] দুৰ্দান্ত, প্ৰবল, কঠিন, ভীষণ, দুষ্ট।
बहुत बड़ा या भारी। कठिन। भीषण। दुष्ट।

दुरदुराना—(क्रि स) দূৰতে বিদূৰ কৰা।
तिरस्कारपूर्वक भगा देना।

दुरना—(क्रि अ) সম্মুখৰ পৰা আঁতৰ হোৱা, লুকোৱা।
सामने से दूर होना। छिपना।

दुरभेव—[सं पुं] দুৰ্ভাবনা, মনোমালিন্য।
बुरा भाव। मनो मालिन्य।

दुरमुस—[सं पुं] ধুৰমুচ, ধুম।
कंकड़ या मिट्टी पीटकर समान करने का एक उपकरण।

दुराग्रह—(सं पुं) দুৰাকাঙ্ক্ষা, নিন্দনীয় ইচ্ছা, দুৰ্লভ বস্তুলৈ কৰা ইচ্ছা।
अनुचित हठ। अपने मतके ठीक सिद्ध होनेपर भी उसपर अड़े रहना।

दुराचरण, दुराचार-[सं पुं]
কুস্বভাৱ, বেয়া আচৰণ।
बुरा आचरण। बदचलनी।

दुरादुरी—[सं स्त्री] লুক্-ঢুক্ (ঢাক)।
छिपाव। गोपन।

दुराधर्ष-(वि) দুৰ্দ্ধৰ্ষ, সহজে পৰাজয় নোহোৱা, মহা পৰাক্ৰমী।
जिसका दमन करना कठिन हो। प्रचण्ड।

दुराना—(क्रि अ) আঁতৰি যোৱা, লুকোৱা।
दूर होना। छिपाना।
(क्रि स) আঁতৰাই থোৱা,

লুকাই থোৱা, হাত, চকু আদি নচাই তোলা।
दूर करना। छिपाना। (हाथ, आँख आदि) नचाना या मटकाना।

দুভাৱ—(सं पुं) কপট ভাৱ, কথা গোপনে ৰখাৰ ভাব।
किसी से कोई बात गुप्त रखने या छिपाने का भाव।

দুৰিত—(सं पुं) পাপ, দুৰ্গতি।
पाप। पातक।
[वि] পাপী।
पापी। पातकी।

দুৰিয়ানা—(क्रि स) দূৰ কৰা।
दूर करना।

দুৰুৎসাহন—(सं पुं) বেয়া-কামৰ কাৰণে উৎসাহ দিয়া।
बुरे काम के लिये उकसाना।

দুৰুস্ত—(वि) সুস্থ, ভাল, ত্ৰুটি-হীন।
जो अच्छी या ठीक दशामें हो। जिसमें दोष या त्रुटि न हो। उचित।

দুৰুস্তী--(सं स्त्री) সংশোধন, মেৰামত।
संशोधन। मरम्मत।

দুৰূহ—(वि) কঠিন অৰ্থযুক্ত।
जल्दी समझ में न आनेवाला। कठिन।

দুৰ্ঘট—[वि] হবলৈ টান, সহজে নোহোৱা বা নঘটা।
जिसका होना कठिन हो।

দুৰ্জয়, দুৰ্জেয়—(वि) জয় কৰিবলৈ টান, পৰাক্ৰমী।
जो जल्दी जीता न जा सके।

দুৰ্জ্ঞেয়—[वि] জানিবলৈ বা বুজিবলৈ টান।
दुर्बोध।

দুৰ্দমনীয়,দুৰ্দম্য — (वि) দমন কৰিবলৈ টান।
जिसका दमन करना बहुत कठिन हो।

দুৰ্দ্ধৰ—[वि] ধৰিবলৈ টান।
जिसे पकड़ना कठिन हो। प्रचंड।

দুৰ্ধৰ্ষ--[वि] মহা পৰাক্ৰমী।
प्रचंड।

দুৰ্ভাৱ— [सं पुं] দুশ্চিন্তা, কু ভাব।
बुरा भाव। भीतरी वैर या द्वेष।

দুৰ্ভাবনা--(सं) দুশ্চিন্তা, আশঙ্কা।
बुरी भावना। आशंका।

दुर्भेद, दुर्भेद्य—(वि) সহজে ভেদ কৰিব নোৱাৰা ।
जो जल्दी भेदा न जा सके । जिसे पार करना बहुत कठिन हो ।

दुर्मति [वि] মন্দ স্বভাৱযুক্ত ।
दुष्ट बुद्धिवाला ।
[सं स्त्री] কু-বুদ্ধি ।
बुरी बुद्धि ।

दुर्मद—(वि) অহঙ্কাৰী ।
घमण्डी । मदमत्त ।

दुर्वचन-(सं पुं) গালি, তিৰস্কাৰ ।
गाली ।

दुर्वाद-(सं पुं) গালি, অপবাদ ।
गाली । अपवाद ।

दुर्विनीत—[वि] অশিষ্ট, হুঁতা ।
अशिष्ट । अक्खड़ ।

दुर्विपाक—(सं पुं) দুৰ্কপাল ।
दुर्घटना । बुरा परिणाम या फल ।

दुर्व्यसन—[सं पुं] উডুওালি, কু-আচৰণ ।
बुरा व्यसन । लत ।

दुलकना, दुलखना [क्रि स] পুনৰুক্তি কৰা, পুনৰ কোৱা ।
कोई बात दुबारा कहना या बतलाना ।
[क्रि अ] এবাৰকৈ পিছত অস্বীকাৰ কৰা ।
कहकर मुकरना ।

दुलड़ी, दुलरी—(सं स्त्री) দুধাৰ মালা একে লগে গাঁথি কৰা মালা ।
दो लड़ों की माला या हार ।

दुलत्ती—[सं स्त्री] ঘোঁৰা আদিয়ে দুয়োখন পাছ ঠেঙেৰে মৰা লাথি
घोडे आदि चौपायों का पिछले दोनों पैर उठाकर किसी को मारना ।

दुलराना—[क्रि अ] শিশুক মৰম দেখুৱা, প্ৰিয় শিশুৰ নিচিনা ব্যৱহাৰ কৰা ।
बच्चों को दुलार या प्यार करना । दुलारे बच्चों का सा व्यवहार करना ।
(क्रि स) শিশুৰ লগত লৰা-ধেমালী কৰা ।
बच्चों से दुलार या लाड़ करना ।

दुलहन, दुलही—[सं स्त्री] কইনা ।
नव-वधू ।

दुलहा—(सं पुं) দৰা, বৰ ।
वर । पति ।

दुलाई—(स' स्त्री) দুই তৰপীয়া চাদৰ। ওৰাৰ কাৰণে পাতল লেপ। हलकी रजाई।

दुलाना—(क्रि स) লৰাই দিয়া। हिलाना। डुलाना।

दुलार—[स' पुं] মৰম, চেনেহ। बच्चों को प्रसन्न रखने की प्रेम-पूर्ण चेष्टा। लाड़।

दुलारा, दुलारी—[वि] মৰমৰ। लाड़ला।

दुलीचा (लैचा)—[स' पुं] গলিচা বা দলিচা। गलीचा।

दुव—(वि) দুই। दो।

दुवन—(स' पुं) দুষ্ট, শত্ৰু, ৰাক্ষস। दुष्ट। शत्रु। राक्षस। [वि] বেয়া। बुरा।

दुशवार, दुश्वार—[वि] টান, কষ্টসাধ্য। कठिन। दुरूह।

दुश्मन—(स' पुं) শত্ৰু, বৈৰী। शत्रु। बैरी।

दुश्मनी—[सं स्त्री] শত্ৰুতা, বৈৰীভাব। बैर। शत्रुता।

दुष्प्रवृत्ति—(सं स्त्री) কুমতি, বেয়া আশয়। দুষ্প্ৰবৃত্তি। बुरी या दूषित प्रवृत्ति। (वि) কুমতি সম্পন্ন। दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुसूती—(स' स्त्री) দুই সূতী (মোটা কাপোৰ)। दोहरे सूतों की मोटी चादर।

दुसेजा—(स' पुं) পালং বা পালেং। पलङ्ग।

दुहत्थड़-(क्रि वि)দুয়ো হাতেৰে মৰা। दोनो हाथों से प्रहार। (स' पुं) দুয়ো হাতেৰে কৰা প্ৰহাৰ। दोनों हाथोंसे होनेवाला प्रहार।

दुहना—(क्रि स) গাখীৰ খীৰোৱা। শোষণ কৰা। पशुओं के स्तन से दूध निकालना। शोषण करना।

दुहनी, दोहनी—[स' स्त्री] কঁহীয়া, ভাড়া, খীৰোৱা কাৰ্য্য।

वह बरतन जिसमें दूध दुहते है।
दूध दुहने का काम।

दुहरा, दोहरा— (বি) দুখনীয়া, দ্বিতীয়বাৰৰ।
जिसमें दो परतें या तहे हों। दो बार या दूसरी बार का।
(সং পুং) "দোহা" ছন্দ।
दोहा नामक छन्द।

दुहाई—(সং স্ত্রী) ঘোষণা, দোহাই, শপথ, খীৰোৱা কাৰ্য্য বা তাৰ বানচ।
मुनादी। घोषणा। अपनी रक्षाके लिये किसीको चिल्लाकर बुलाना। शपथ। दुहनेका काम या मजदूरी।

दुहाग—(সং পুং) দুৰ্ভাগ্য, বৈধব্য।
दुर्भाग्य। वैधव्य।

दुहागिन—(সং স্ত্রী) বিধবা।
विधवा।

दुहिता—[সং স্ত্রী] বেটী, জী।
बेटी।

दुहूँ—[বি] দুয়ো।
दोनों।

दुहेला—(বি) দুঃখদায়ী, টান, দুঃখপূৰ্ণ।
दु:खदायी। कठिन। दु:खी। दु:खपूर्ण।
(সং পুং) বিকট বা দুঃখদায়ক কাৰ্য্য।
विकट या दु:खदायक कार्य।

दुहैया— (বি) গুৱাল, গাখীৰ খীৰোওঁতা।
दुहनेवाला।

दूँदना— (ক্রি অ) হাই-কাজিয়া বা উপদ্ৰৱ কৰা।
लड़ाई झगड़ा या उपद्रव करना।

दूक—[বি] দুই এটা, কিছুমান।
दो एक। कुछ।

दूखना—(ক্রি স) দায় লগোৱা।
दोष या ऐब लगाना।
[ক্রি অ] পীডা হোৱা, নষ্ট হোৱা।
पीड़ा होना। नष्ट होना।

दूज—[সং স্ত্রী] দ্বিতীয়া।
द्वितीया।

दूजा—[বি] দ্বিতীয়।
दूसरा।

दूतिका, दूती—(সং স্ত্রী) বাৰ্ত্তাবাহী তিৰোতা।
सन्देश पहुँचानेवाली। कुटनी।

दूध—[सं पुं] এধ্বা গাখীৰ।
दुग्ध । पय ।

दूध-पूत—(सं पुं) धन-জন।
धन और सन्तति ।

दून— [सं स्त्री] দুগুণ ।
दुगुना होने का भाव ।
(सं पुं) উপত্যকা ।
तराई । घाटी ।

दूना—[वि] দুগুণ ।
दुगुना ।

दूनौ—(वि) দুয়ো।
दोनों ।

दूब, दूबा—[सं स्त्री] দুবৰি ।
दूर्वा घास ।

दू-बदू— [क्रि वि] মুখা-মুখি।
সম্মুখত ।
मुकाबले में ।

दूभर—(वि) দুঃসাধ্য ।
कठिनता से सह्य जानेवाला ।

दूमना— (क्रि अ)লৰ-চৰ হোৱা।
हिलना ।

दूरदर्शक-यंत्र, दूरबीन—(सं पुं)
দূৰবীক্ষণ যন্ত্ৰ। দূৰবীণ।
दूर की चीजें पास और बड़ी
दिखाने वाला यंत्र ।

दूरी—(सं स्त्री) দূৰ, দূৰত্ব।
अन्तर । फासला ।

दूर्वा— —[सं स्त्री] দুবৰি ।
दूब घास ।

दूलह, दूल्हा—[सं पुं] দৰা, বৰ।
वर ।

दूषण—(सं पुं)বেয়াগুণ, দোষ ।
अवगुण । बुराई । दोष या ऐब
लगाना ।

दूषना, दूसना – [क्रि स] দোষ
দিয়া ।
दोष लगाना ।

दूष्य—[वि] দোষণীয়, নিন্দনীয়।
निन्दनीय ।

दूसर, दूसरा—[वि] দ্বিতীয় ।
द्वितीय ।

दृगंचल—[सं पुं] চকুৰ পটাৰ
নোম । পলক ।
पलक । कटाक्ष ।

दृग—[सं पुं] চকু, দৃষ্টি ।
आँख । दृष्टि । दो की संख्या ।

दृढ़—[वि] দৃঢ়, পুষ্ট, স্থায়ী,
নিশ্চিত ।
प्रगाढ़ । पुष्ट । कड़ा । हृष्ट-
पुष्ट । स्थायी । निश्चित ।

दृढ़चेता—[বি] দৃঢ় প্ৰতিজ্ঞ, সুক্ষ্ম বিবেচনা।
पक्के विचारोंवाला।

दृढ़प्रतिज्ञ—[বি] দৃঢ় প্ৰতিজ্ঞ, সংকল্প এৰি নিদিয়া।
अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला।

दृढ़ाई—[सं स्त्री] দৃঢ়তা।
दृढ़ता।

दृढ़ाना—[क्रि स] সুদৃঢ় কৰা।
दृढ़ या पक्का करना।
[क्रि अ] সুদৃঢ় হোৱা।
दृढ़ या पक्का होना।

दृप्त—[वि] গৰ্ব্ব যুক্ত। উগ্ৰ।
उग्र। तेज युक्त। अभिमानी।

दृप्ति—[सं स्त्री] গৰ্ব্ব, অভিমান, উগ্ৰতা, তেজস্বিতা, উজ্জ্বলতা।
चमक। तेजस्विता। प्रकाश। अभिमान। उग्रता।

दृष्टकूट, दृष्टिकूट–[सं पुं] সাঁথৰ।
पहेली।

दृष्टिगोचर—[वि] চকুৰে দেখা, চকুত পৰা।
जो देखने में आवे।

दृष्टि भ्रम—(सं पुं) মায়া, ভেলেকি।
आँखों से देख कर होनेवाला भ्रम।

देखनहारा—[सं पुं] চাওঁতা, দৰ্শক।
देखनेवाला।

देखना—(क्रि स) চোৱা, নিৰীক্ষণ কৰা, পৰীক্ষা কৰি চোৱা।
अवलोकन करना। जाँच या निरीक्षण करना। अनुभव करना।

देख-भाल, देखरेख—[सं स्त्री] তদাৰক, পৰিদৰ্শন।
जाँच पड़ताल। निगरानी।

देखादेखी—(सं स्त्री) দেখাদেখি, দেখা সাক্ষাৎ।
साक्षात्कार।
[क्रि वि] দেখাদেখিকৈ।
किसी को कुछ करते देख उसका अनुकरण।

देन—(सं स्त्री) দান, প্ৰদত্ত বা প্ৰাপ্তবস্তু। দিবলৈ বাকী থকা ধন।
दान। प्रदत्त या प्राप्त वस्तु। चुकाने को बाकी रकम।

देनदार—[सं पुं] धरूवা।
कर्जदार।

देन-लेन—[सं पुं] লেন-দেন।
देने और लेने का व्यवहार।

देना-[क्रि स] দিয়া, সমৰ্পণ কৰা।
दान करना। हवाले करना।
अनुभव करना। प्रहार करना।
(सं पुं) ধাৰলৈ অনা ধন,
দেনা।
उधार ली गयी रकम।

देय—[वि] দিবলগীয়া, দিবলৈ
বাকী থকা ধন। দিবৰ যোগ্য।
जो दिया जा सके। देन। जो
दिया जाने को हो।

देयादेश—(सं पुं) আদায় দিবলৈ
দিয়া আদেশ।
दानादेश। (अं—पेमेंट आर्डर)

देयासी—(वि) বেজ, মন্ত্ৰেৰে জৰা-
ফুকা কৰোঁতা।
झाड़ फूँक करनेवाला।

देर—(सं स्त्री) পলম, সময়, পৰ।
विलम्ब। समय। वक्त।

देवकार्य—(सं पुं) দেৱতাৰ পূজা
আদি, দেৱতাৰ উপকাৰ কৰা
কাৰ্য্য; যেনে—অসুৰ বধ।
होम, पूजा आदि धार्मिक कार्य।

देवदार—[सं पुं] দেবদারু গছ।
एक पेड़।

देवधुनि—(सं स्त्री) গঙ্গা নদী।
गंगा नदी।

देव-यान—(सं स्त्री) ব্ৰহ্মলোকলৈ
যোৱা বাট।
ब्रह्मलोक को जाने का मार्ग।

देवर—(सं पुं) দেৱৰ, স্বামীৰ সৰু
ভায়েক।
पति का छोटा भाई।

देवरानी—(सं स्त्री) যা।
पति के छोटे भाई या देवर की
स्त्री।

देवल—(सं पुं) দেৱতাৰ মন্দিৰ।
देव मंदिर।

देवलोक— [सं पुं] স্বৰ্গ।
स्वर्ग।

देव-वधू—[सं स्त्री] অপেশ্বৰী,
দেৱী।
अप्सरा। देवी।

देवांगना--(सं स्त्री) দেৱতাৰ পত্নী,
অপেশ্বৰী।
देवता की पत्नी। अप्सरा।

देवानीक—[सं पुं] দেৱতাৰ
সৈন্য।
देवताओं की सेना।

देवालय—(सं पुं) দেবালয়, মন্দিব।
मन्दिर।

देवैया-(वि) দিওঁতা।
देनेवाला।

देवोत्तर—(सं पुं) দেৱতাৰ পূজা-সেৱা চলাবৰ কাৰণে দান কৰা নিষ্কৰ ভূমি।
देवता को चढ़ाया हुआ धन या सम्पत्ति।

देशज-(वि) দেশীয়, দেশত উৎপন্ন।
देश से उत्पन्न।

देश-निकाला—(सं पुं)নির্বাসন।
निर्वासन।

देश-भाषा—(सं स्त्री) কোনো দেশ বা প্ৰদেশৰ ভাষা।
किसी देश या प्रदेश की भाषा।

देशान्तर—(सं पुं) দেশান্তৰ, দূৰৰ আন এক দেশ, বিদেশ।
दूसरा देश।

देशाचार—(सं पुं) দেশাচাৰ, দেশৰ আচাৰ-ব্যৱহাৰ।
वह आचार या रीति व्यवहार जो किसी देशमें प्रचलित हो।

देशाटन—[सं पुं] দূৰ দেশ ভ্ৰমণ।
दूर दूर देशों का भ्रमण।

देहत्याग—(सं पुं) মৃত্যু।
मृत्यु।

देहरा—(सं पुं) মন্দিৰ, মনুষ্য শৰীৰ।
देवालय। मनुष्य शरीर।

देहात—[सं पुं] গাঁও।
ग्राम।

देहाती—(वि) গাঁৱলীয়া।
ग्रामीण। गँवार।

देही-[सं पुं] আত্মা, শৰীৰ যুক্ত প্ৰাণী।
आत्मा। शरीरधारी प्राणी।

दैत्यारि—(सं पुं) বিষ্ণু, ইন্দ্ৰ।
विष्णु। इन्द्र।

दैनन्दिनी, दैनिकी—[सं स्त्री] দৈনিক হিচাপ, ডায়েৰী বহী।
दिन भर के कार्य आदि लिखने की पुस्तिका (अं—डायरी)

दैन्य—(सं पुं) দীনতা, দৰিদ্ৰতা, কাতৰ ভাব, অতিশয় বিনয় ভাব।
दीनता। कातरता।

दैया-[सं पुं] ভাগ্য, অদৃষ্ট, ঈশ্বৰ।
दैव। ईश्वर।
(सं स्त्री) মাতৃ।
माता।

दैव-(वि) দেৱতা সম্পৰ্কীয়, দেৱতা বা বিধাতা। হবি দান।
देवता सम्बन्धी। देवताका किया हुआ।
[सं पुं] ভাগ্য, অদৃষ্ট, ঈশ্বৰ।
प्रारब्ध। होनेवाली बात। ईश्वर, आकाश।

दैवगति—[सं स्त्री] অদৃষ্ট বা কপালৰ ফেৰত বা দেৱতাৰ ইচ্ছাত হোৱা আকস্মিক কাৰ্য্য।
ईश्वरी बात या घटना। भाग्य।

दैवज्ञ—[सं पुं] গণক, দশা গণিব পৰা লোক।
ज्योतिषी।

दैवयोग-(सं पुं) দৈৱ-ঘটনা, আকস্মিক ঘটনা।
इत्तफाक। संयोग।

दैववश [वशात्]—(क्रि वि) ভাগ্য-ক্ৰমে, অকস্মাৎ।
सयोग से। अकस्मात्।

दैवात् (क्रि वि) হঠাৎ, অকস্মাৎ।
अकस्मात्।

दैवी—(वि) দেৱতাৰ নিচিনা, দৈৱিক, আকস্মিক।
देवता सम्बन्धी। देवताओं द्वारा हुआ। आकस्मिक।

दैशिक—[वि] দেশীয়, দেশৰ।
देश सम्बन्धी। देश का।

दैहिक—[वि] গাত বা দেহত হোৱা, শাৰীৰিক, শৰীৰৰ।
देह सम्बन्धी। शारीरिक।

दो—[वि] দুই।

दोआब [।]-(सं पुं) দুই নৈৰ মাজৰ সমভূমি অঞ্চল।
दो नदियों के बीचका भू भाग।

दोउ[ऊ]—[वि] দুয়ো।
दोनों।

दोखना-(क्रि स) দোষ দিয়া।
दोष लगाना।

दोगला—[सं पुं] জাৰজ, জহৰা।
वर्णशंकर।

दोचना—(क्रि स) হেঁচি ধৰা।
दबाव डालना।

दोजख—[सं पुं] নৰক।
नरक।

दोज़की—[सं पुं] নাৰকী ।
नारकी ।

दो तरफा—(वि) দুই তৰপীয়া ।
दोनों तरफ होने या लगानेवाला ।
(क्रि वि) দুয়ো ফালেৰে ।
दोनों तरफ से ।

दोधारा(री)—(सं स्त्री) দুয়োফালে ধাৰ থকা তৰোৱাল ।
दोनों ओर धारवाली तलवार ।

दोन—[सं पुं] উপত্যকা ।
तराई । दो-आबा ।

दोना—[सं पुं] দনা বা দোনা, কল পটুৱাৰ খোল ।
पत्तों का बना कटोरे जैसा पात्र ।

दोनों-[वि] দুয়ো, উভয়ে ।
उभय ।

दोपहर—[सं पुं] দুপৰীয়া ।
मध्याह्न ।

दो-फसली-[वि] (আহু-শালী) দুয়োবিধ খেতি সম্বন্ধীয় ।
रबी और खरीफ दोनों फसलों से सम्बन्ध रखनेवाला ।

दोय—[वि] দুয়ো দুই ।
दोनों । दो ।

दो-रसा—(वि) দুই ৰকমৰ ৰস বা সোৱাদযুক্ত ।
दो प्रकारके रस या स्वादवाला ।

दोला-[सं स्त्री]দোলান, দোলা ।
झूला । डोली ।

दोलित-[वि] হালি-জালি থকা ।
हिलता या झूलता हुआ ।

दोषना-[क्रि स] দোষাৰোপ কৰা ।
दोष या अपराध लगाना ।

दोषारोपण-[सं पुं] দোষাৰোপ ।
दोष लगाना ।

दोस्त—[सं पुं] বন্ধু, মিত্র ।
मित्र । स्नेही ।

दोस्ताना—[सं पुं] বন্ধুত্ব ।
मित्रता ।
(वि) বন্ধুত্ব সম্পৰ্কীয় ।
दोस्ती का ।

दोस्ती—(सं स्त्री) বন্ধুত্ব, মিত্রতা ।
मित्रता ।
[सं पुं]এবিধ ৰুটি ।
एक प्रकार की रोटी या परांठा ।

दोहता—(सं पुं) নাতি ।
नाती ।

दोहद—(सं स्त्री) গৰ্ভৱতী জীৱ ইচ্ছা বা বাসনা , গৰ্ভাৱস্থা ,

গর্ভস্থিতির চিন ।

गर्भवती स्त्री की इच्छा या वासना । गर्भावस्था । गर्भ के चिह्न ।

दोहदवती—(सं स्त्री) গর্ভবতী ।
गर्भवती ।

दोहना--[क्रि स] দোষারোপ করা, হেয় প্রমাণিত করা ।
दोष लगाना । तुच्छ ठहराना ।

दोहरना-[क्रि अ] পুনরাবৃত্তি করা, দুজপীয়া করা ।
दोहराना । दोहरा करना ।

दोहराना—[क्रि स] পুনরাবৃত্তি করা, পুনর বিচার করা, দুজপীয়া করা ।
पुनरावृत्ति करना । किसी किये हुए कामको जाचने के लिये फिर से अच्छी तरह देखना । कपड़े, कागज आदि को दोहरा करना ।

दौड़—(सं स्त्री) দৌড়, লর, দৌড়-প্রতিযোগিতা । বহর ।
दौड़ने की क्रिया या भाव । चढाई । दौड़ने की प्रतियोगिता । विस्तार ।

दौड़धूप—[सं स्त्री] লরা-ঢপরা, খর খুন্দা ।
वह प्रयत्न जिसमें इधर उधर दौड़ना पड़े ।

दौड़ना—(क्रि अ) লরমরা ।
धावित होना ।

दौड़ाना-[क्रि स] আনক দৌৰোৱা ।
दूसरे को दोड़नेमें प्रवृत्त करना ।

दौर-[सं स्त्री] ভ্রমণ, শ্রীবৃদ্ধি বা সৌভাগ্যর দিন, পাল ।
चक्कर । भ्रमण । उन्नति या विकास के दिन । बारी ।

दौरा—(सं पुं) ভ্রমণ, চক্কৰী ভ্রমণ ।
भ्रमण । जांच पड़ताल के लिये भ्रमण ।

दौरान—[सं पुं] কাল, অৱধি, আৱৰ্ত্তন । ভ্রমণ ।
दो घटनाओं के बीच का समय । दौरा ।

दौलत—(सं स्त्री) ধন, দৌলত, সম্পত্তি ।
धन । सम्पत्ति ।

दौलत खाना-(सं पुं) বাসস্থান ।
निवास स्थान ।

दौलत मन्द—(वि) ধনী ।
धनवान ।

द्युति—(सं स्त्री) দীপ্তি, শোভা, জেউতি ।
दीप्ति । चमक । शोभा ।

द्यूत-(सं पुं) দ্যূতক্রীড়া, পাষটি বা কড়ি আদিৰে কৰা খেল ।
पाशा या जूए का खेल ।

द्योतक—(सं पुं) সূচক, বোধক, জ্ঞাপক ।
सूचक । प्रकाश करनेवाला ।

द्रव—(वि)পনীয়া, জুলীয়া, তৰল, পমিযোৱা ।
पतला । गीला । पिघला हुआ ।

द्रवना-(क्रि अ) পমি পানী হোৱা, বৈ যোৱা, দ্রবীভূত হোৱা ।
पिघलना । बहना । दयार्द्र होना ।

द्रवित,द्रवीभूत—[वि] গলি বা পমি যোৱা, জুলীয়া হোৱা ।
जो तरल हो गया हो । पिघला हुआ । दयार्द्र ।

द्रष्टा [वि] দেখোঁতা, যি দেখে ।
देखने वाला । दर्शक ।
[सं पुं] আত্মা ।
आत्मा, (सांख्य योग)

द्राक्षा-[सं स्त्री] আঙুৰ, এবিধ লতাৰ গুটি ।
अंगूर ।

द्रावक--(वि) দ্রৱকাৰী, গলাই পেলোৱা, বিগলিত কৰা ।
गलाने या बहानेवाला । हृदय को दयार्द्र करने वाला ।

द्राविड़ी-[वि] দ্রাবিড় দেশৰ(মাদ্রাজৰ পৰা কুমাৰিকা অন্তৰীপ পৰ্যন্ত জুৰি থকা ভাৰতৰ অংশৰ)
द्रविड़ सम्बन्धी ।

द्रुम—[सं पुं] গছ ।
पेड़ ।

द्रोणी-(सं स्त्री) এবিধ জলপাত্র : থলি, গিৰিসঙ্কট । সৰু নাও ।
छोटी नाव । छोटा दोना ।
पहाड़ी दर्रा ।

द्रोह—(सं पुं) অপকাৰ, হিংসা, দ্রোহ ।
दूसरे को हानि पहुंचाने की वृत्ति । वैर ।

द्रोही--(वि) হিংসুক, অপকাৰ বা শত্রুতা কৰোঁতা ।
द्रोह करने या हानि पहुंचाने वाला ।

द्वन्द्—(सं पुं) যোৰা, মিথুন, প্ৰতিদ্বন্দ্বী, কাজিয়া,কষ্ট, উপদ্ৰৱ।
युग्म। मिथुन। प्रतिद्वन्द्वी। झगड़ा। कष्ट। उपद्रव।

द्वन्द्व—(सं पुं) দুই, খৰিযাল, বিবাদ, দ্বন্দ্ব সমাস।
द्वन्द्व। एक प्रकार का समास।

द्वय—[वि] দুটা।
दो।

द्वयता—(सं स्त्री) দুটা বুজাবলৈ, ভেদ-ভাব।
दो का भाव। भेद-भाव।

द्वादश—(वि) দ্বাদশ, বাৰ।
बारहवा। बारह।

द्वादशाह—(सं पुं) মৃত্যুৰ বাৰ দিনৰ দিনা কৰা শ্ৰাদ্ধ,সপিণ্ডি।
मरने के बारह दिन पर होने वाला श्राद्ध।

द्वादशी—(सं स्त्री) দ্বাদশী: একাদশীৰ পাছৰ তিথি।
किसी पक्ष की बारहवी तिथि।

द्वापर—[सं पुं] তৃতীয় যুগ, সত্য আৰু ত্ৰেতাৰ পাছৰ যুগ।
चार युगों में से तीसरा युग।

द्वार—[सं पुं] বাট, দুৱাৰ।
मार्ग। दरवाजा।

द्वार-पटी—[सं स्त्री] পৰ্দা।
द्वार पर टाँगनेका परदा।

द्वारपाल—(सं पुं) দুৱাৰ-ৰক্ষক, দুৱৰী।
दरबान।

द्वारा—(सं पुं) দুৱাৰ।
दरवाजा।
(अव्य) দ্বাৰা, হতুৱাই।
जरिये से।

द्वि—[वि] দুই।
दो।

द्विज, द्विजन्मा, द्विजाति—[वि]
দুবাৰ জন্মা, দ্বিজ।
दो बार जन्मा हुआ।
(सं पुं) চৰাই, ব্ৰাহ্মণ, চন্দ্ৰ, দাঁত।
पक्षी। ब्राह्मण। चन्द्रमा। दाँत।

द्विजपति, द्विजराज—(सं पुं)
ব্ৰাহ্মণ, চন্দ্ৰ।
ब्राह्मण। चन्द्रमा।

द्वित्व—(सं पुं) দ্বৈত, দুই ভাব।
दोहरे का भाव। दो का भाव।

द्विधा—[क्रि वि]দুই প্ৰকাৰে দ্বিধা। দুইভাগে বিভক্ত।
दो प्रकार से। दो भागों में। द्विविधा।

দ্বিপদ—(সং পুং) মানুহ ।
মনুষ্য ।
(বি) দুখন ভৰি থকা ।
दो पैरोंवाला ।

দ্বিৰদ—[সং পুং] হাতী ।
हाथी ।
[বি] দুটা দাঁত থকা ।
दो दाँतोवाला ।

দ্বিৰাগমন—[সং পুং] বিয়াৰ কন্যাৰ পতিগৃহলৈ দ্বিতীয়বাৰ গমন ।
गौना ।

দ্বিৰুক্তি—(সং স্ত্ৰী) একে শব্দ বা কথাকেই আকৌ কোৱা কাৰ্য্য । পুনৰুক্তি ।
पहले या एकबार कही हुई बात फिर से कहना ।

দ্বিৰেফ—[সং পুং] ভোমোৰা ।
भ्रमर ।

দ্বিবিধ—(বি) দুই বিধ ।
दो तरह का ।

দ্বিবিধা—(সং স্ত্ৰী) দোধোৰ-মোৰ, সংশয় ।
दुविधा । संशय ।

দ্বিবেদী—[সং পুং] ব্ৰাহ্মণৰ এটা শ্ৰেণী ।
ब्राह्मणों की एक जाति । दूबे ।

দ্বীপ—(সং পুং) দ্বীপ, মাজুলী ।
टापू ।

দ্বেষ—(সং পুং) অমঙ্গলৰ বাঞ্ছা, হিংসা, শত্ৰুভাৱ ।
शत्रुता । चिढ़ ।

দ্বেষী—(বি) হিংসা কৰোঁতা, শত্ৰু ।
द्वेष रखने या करनेवाला ।
शत्रु ।

দ্বৈ—(বি) দুই, দুয়ো ।
दो । दोनों ।

দ্বৈত—(সং পুং) দুই ভাব, যুগ্ম, ভেদ ভাব ।
दो का भाव । युग्म । भेद भाव ।

দ্বৈতবাদ—(সং পুং) দ্বৈতবাদ, দাৰ্শনিক সিদ্ধান্ত-জীৱ আৰু ঈশ্বৰ ভিন্ন, এক ঈশ্বৰৰ বাজে আন দেৱতাও আছে ।
आत्मा और ब्रह्म को दो माननेवाला दार्शनिक सिद्धान्त ।

দ্বৈধ—(সং পুং) সংশয়, দোধোৰ-মোৰ । দ্বৈত শাসন
विरोध । कुछ शासक के और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों का शासन (डायार्की)

द्वैवार्षिक—(वि) দুই বছৰীয়া ।
दो दो वर्ष पर होनेवाला ।

द्वौ—(वि) দুয়ো, বন জুই ।
दोनों । दावानल ।

ध

ध—বৰ্ণ মালাৰ উনবিংশতম ব্যঞ্জনবৰ্ণ
वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन ।

धंधक—(सं पुं) ধান্দা, জঞ্জাল, আউল ।
संसार के काम धन्धोंका झगड़ा । जंजाल ।

धंधक-धोरी—(सं पुं) জঞ্জালত পৰা লোক, বহু ব্যৱসায়ী ।
जंजालों में फँसा हुआ आदमी । बहु धन्धी ।

धँधलाना—(क्रि अ) ফাকতি কৰা, মিথ্যাডম্বৰ দেখুৱা ।
छल कपट करना । आडम्बर या ढोंग रचना ।

धंधा—(सं पुं) ব্যৱহাৰ; উদ্যোগ, কাম-কাজ, জীৱিকা ।
उद्योग । काम काज । व्यवसाय । पेशा ।

धँसना-(क्रि अ) ভিতৰলৈ সোমোৱা কাৰ্য্য । বুৰ যোৱা । পোত যোৱা, নষ্ট হোৱা ।
पानी में या किसी कोमल वस्तु में प्रवेश करना । गड़ना । नीचे की ओर धीरे धीरे बैठना या जाना । नष्ट होना ।

धँसाना-(सं स्त्री) প্ৰবেশ কৰণ, সুমুৱা কাম ।
धँसने की क्रिया, भाव या ढंग । वह जगह जिसमें कोई चीज धँसे ।

धकधकाना-(क्रि अ) উগুল-থুগুল লগা । দহদহাই জুই জলি উঠা ।

भय, उद्वेग आदिसे हृदय की गति का तीव्र होना। आग दहकना।

धकधकी—(सं स्त्री) বুকুৰ ধপ্-ধপনি, ধুক ধুকি, উগুল থুগুল। हृदय की धड़कन। हृदय। किसी बात की आशंका या भय।

धकपकाना—(क्रि अ) মনত ধুক্-ধুক কৰা, উগুল থুগুল লগা। किसी बात की आशंका होना।

धकियाना—[क्रि स] গঁতিয়া, গঁতা মৰা। धक्का देना।

धकेलना-[क्रि स] ঢকিয়াই দিয়া, ঠেলি দিয়া। ढकेलना। किसी चीजको ठेलकर हटाना।

धक्कम-धक्का—[सं पुं] ঠেলা-ঠেলি, হেঁচা-হেঁচি। भीड़ में आदमियों का एक दूसरे को धक्का देना। बड़ी भीड़।

धक्का—(सं पुं) ঢকা, আঘাত, বিপত্তি, হানি। হেঁচা। टक्कर। झोंका। बड़ी भीड़। विपत्ति। हानि।

धक्का मुक्की—[सं स्त्री] ভুকুৱা-ভুকু। एक दूसरे को धक्का देना और मुक्के मारना।

धचका—(सं पुं) ঠেলা, হেঁচা। धचका। झटका।

धज—(सं स्त्री) ধুন-পেঁচ। সৌন্দর্য্য सजावट या बनावट का सुन्दर ढंग। शोभा।

धजा—[सं स्त्री] পতাকা। पताका।

धज्जी—[सं स्त्री] ডোৰা-কানি, এছিটা, ডোখৰ, টুকুৰা। कपड़, कागज आदि में कटकर निकली हुई पतली पट्टी।

धड़ंग—(वि) নাঙঠ বা নাঙঠা। नंगा।

धड़-(सं पुं) গা, গাও, গা-গছ। शरीर में गले से नीचे कमर तक का सारा भाग। पेड़ का तना। (सं स्त्री) খুন্দা খোৱা বা বাগৰি পৰা শব্দ। टकराने या गिरने का शब्द।

धड़कन—[सं स्त्री] বুকুৰ ধপ্-ধপনি, হৃদয়ৰ স্পন্দন। भय आदि के कारण हृदय का स्पन्दन।

धड़कना - [क्रि अ] ধপ্ ধপনি উঠা, স্পন্দিত হোৱা।
भय, दुर्बलता आदि के कारण हृदय का स्पन्दित होना [क्रि स— धड़काना]

धड़धड़ाना--[क्रि अ] খিপ্ খিপ্ কৰা, ধপ ধপোৱা, টুকৰিয়া।
भारी चीज गिरने का मा धड़-धड़ शब्द होना।

धड़ल्ला-(सं पुं) বিপদৰ আশঙ্কা নকৰি খৰকৈ কাম কৰা।
बेहिचक फुर्ती।

धड़ल्ले से--অবিৰাম বিনা বাধাই।
बिना रुके। बे-धड़क।

धड़ा—[सं पुं] ফেৰ, তুলাচনী।
বাট। तराजू के दोनों पलड़ों की ठीक स्थिति। तराजू।

धड़ाका—[सं पुं] বিস্ফোৰণৰ শব্দ, ধমধম্।
विस्फोट का शब्द। धमाका।

धड़ा धड़—(क्रि वि) ধুমধামেৰে।
लगातार और जल्दी जल्दी।

धड़ाम—(सं पुं) ধুমকৈ হোৱা শব্দ।
उँचाई से कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी—[सं स्त्री] পাঁচসেৰ, তামোল খালে ওঠত হোৱা ৰেখা।
पाँच सेर का तौल। पान खाने से ओठों पर पड़नेवाली लकीर।

धत्—(अव्य) ধেৎ।
धिक्कारने का तुच्छ सूचित करने का शब्द।

धतकारना - [क्रि स] ছেই-ছেই লেই-লেই কৰা।
दुतकारना 'धत' शब्द के साथ भगाना।

धतूरा—(सं पुं) ধতুৰা।
सफेद फूलोंवाला एक पौधा जिसके बीज विषैले होते हैं।

धधकना, धधाना-(क्रि अ) দপ্-দপকৈ জ্বলি থকা, প্ৰজ্বলিত হৈ থকা।
दहकना। भड़कना।

धनंजय—(सं पुं) অৰ্জুন, বিষ্ণু, অগ্নি, শৰীৰৰ বায়ু বিশেষ, বৰ ডাঙৰ।
अर्जुन। विष्णु। अग्नि। शरीर की पोषण-वायु।

धन-कुबेर—(सं पुं) বৰ ডাঙৰ ধনী।
बहुत बड़ा धनवान।

धनतेरस—[सं स्त्री] কাতিমাহৰ কৃষ্ণাত্ৰয়োদশী তিথি সিদিনা লক্ষ্মী পূজা কৰা হয়।
कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी।

धनद—(वि) ধন দিওঁতা।
धन देनेवाला।
(सं पुं) কুবেৰ দেৱতা।
कुबेर।

धनपक्ष—[सं पुं] জমাৰ ঘৰ, জমা-খৰচ।
हिसाब में जमावाला पक्ष।
[क्रेडिट साइड]

धनपति—(सं पुं) কুবেৰ, ধনী।
कुबेर। धनी।

धनवान, धनाढ्य—(वि) ধনী।
धनी। अमीर।

धनहीन—(वि) দুখীয়া, নিৰ্ধন।
निर्धन। गरीब।

धनाणु-(सं पुं) থিৰ (থিৰ-অথিৰ দুই প্ৰকাৰৰ বিদ্যুৎ শক্তি) ধন বিদ্যুৎ কণিকা।
वह अणु जो सदा धनात्मक विद्गुत् से आविष्ट रहता है। (अं-पाजिटिव)

धनात्मक—[वि] ধনাত্মক, ধন-পক্ষৰ।
धनवाले तत्व से युक्त। धन पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला।

धनि—(सं स्त्री) পত্নী, স্ত্ৰী।
पत्नी। वधू।
(वि) ধন্য।
धन्य।

धनिया—[सं पुं] ধনীয়া, এবিধ মচলা।
मसाले का एक पौधा। एक प्रकार का धान।
(सं स्त्री) যুৱতী স্ত্ৰী।
युवती स्त्री या वधू।

धनु—[सं पुं] ধেনু, নৱম ৰাশি। (ধনু ৰাশি)
धनुष। बारह राशियों में एक राशि।

धनुर्द्धर (र्धर), धनुर्द्धारी—(सं पुं) ধনুৰ্ধৰ, ধনুৰ্ধাৰী, ধেনুধাৰী। ধেনুৰে যুঁজ কৰা বীৰ।
धनुष धारण करनेवाला या धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति।

धनुर्वेद— [सं पुं] ধনুৰ্বিদ্যা

यजुर्वेद का वह भाग जिसमें धनु-विद्या का विवेचन है।

धनुष, धनुस—[सं पुं] ধেনু। দুই গজ পৰিমাণ।
कमान। चार हाथ की एक माप।

धनुष-टंकार— [सं पुं] ধেনুৰ টঙ্কাৰ। এবিধ ৰোগ।
धनुष की डोरी खीचने का 'टन्' शब्द। एक रोग।

धनुही—[सं स्त्री] ল'ৰা-ছোৱালীয়ে খেলা কৰা সৰু ধেনু।
लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धन्ना सेठ—(सं पुं) বৰ ধনী।
बड़ा धनी।

धन्या—(सं स्त्री) পত্নী, ধাই বা ধাত্ৰী।
पत्नी। धाय।

धन्वा—[सं पुं] ধেনু।
धनुष।

धपना—[क्रि अ] চাপলি মেলা। চেকুৰ দিয়া।
तेजी से आगे बढ़ना।
[क्रि स] মৰা, কোবোৱা।
मारना। पीटना।

धप्पड़, धप्पा—(सं पुं) চাপৰ।
थप्पड़।

धब्बा— [सं पुं] দাগ, কলঙ্ক, চেকা।
दाग। कलंक।

धमक—(सं स्त्री) ধুমকৰে পৰা শব্দ। হেন্দোলনি।
भारी वस्तु के गिरनेका शब्द। चलने मे या आघात आदि से होनेवाला कम्प।

धमकना—[क्रि अ] ধুমকৈ পৰা। ধিপ-ধিপ কৰা। মূৰ বিষোৱা।
धमाका करना।(सिर) दर्द करना।

धमकाना—[क्रि स] ধমকি দিয়া।
धमकी देते हुए डराना।

धमकी—(सं स्त्री) ধমক, ধমকি।
दण्ड देने या हानि पहुँचाने का भय दिखाना।

धम धमाना— (क्रि अ) ধুম-ধুম শব্দ কৰা।
धम धम शब्द उत्पन्न करना।

धमनी—[स स्त्री] ধমনী, গাৰ তেজ চলা শিৰ। নাড়ী।
वह नली जिसमें से हृदय का शुद्ध रक्त निकलकर सारे शरीर में फैलता है। नाडी।

धमा चौकड़ी—[स ं स्त्री] উখল-মাখল। উপদ্রৱ, হাই-উৰুমি।
उछल-कूद । उपद्रव ।

धमार—[सं स्त्री] উখল-মাখল। হোলী উৎসৱত গোৱা গীত। শুদা ভৰিৰে জুইৰ ওপৰেদি চলাকৌশল।
उछल कूद । एक प्रकारकी विशेष कला से साधुओं का दहकती हुई आग पर चलना । एक प्रकार का गीत ।

धर—[वि]ৰক্ষা বা ধাৰণ কৰোঁতা। ৰক্ষক।
रखने या धारण करनेवाला । रक्षक ।
(सं पु ं) পাহাৰ, শৰীৰ।
पहाड़ । शरीर ।
(स ं स्त्री) ধৰা, পৃথিৱী।
पकड़ने की क्रिया या भाव । पृथ्वी ।

धरकार–[सं पु ं] বাঁহৰ পাচি সাজি জীৱিকা উপার্জন কৰা জাতি।
बाँसों की टोकरियाँ बनानेवाली एक जाति ।

धरणि, धरणी—[सं स्त्री] ধৰণী, পৃথিৱী।
पृथ्वी ।

धरणी-धर—(सं पु ं) শেষনাগ।
शेषनाग ।

धरता— (स ं पु ं) ঋণী, ধৰুৱা, কামৰ ভাৰ লওঁতা, ঋণ।
ऋणी । किसी कार्यका भार लेने वाला । ऋण ।
[वि]ধাৰণ কৰোঁতা।
धारण करने वाला ।

धरती—(सं स्त्री) পৃথিৱী ।
पृथ्वी ।

धरन—[स ं स्त्री] ধৰি ৰখা কাৰ্য্য, চাঁতি। জেদ।
धरने की क्रिया, भाव या ढंग । हठ । जिद । मकान का मोटा शहतीर ।

धरना–[क्रि स] ধৰা, গ্ৰহণ কৰা।
पकडना । ग्रहण करना । रखना । अधिकारमें लेना । धारण करना ।
[स ं पु ं] হক, ধৰা কৰা।
कोई माग पूरी कराने लिये अड़ कर बैठना । [पिकेटिंग]

धर-पकड़–(स ं स्त्री) গ্ৰেফতাৰ কৰা। ধৰা কাম।
अपराधी, शत्रु आदिको पकड़ने की क्रिया या भाव ।

धरमाई—(सं स्त्री) ধাৰ্মিকতা।
धार्मिकता।

धरमी— [वि] ধৰ্মিষ্ঠ, ধাৰ্মিক।
धार्मिक।

धरपणा, धरसना—[क्रि अ]
ভয়ভীত হোৱা, হুহুৰি যোৱা।
डर जाना। दब जाना।
(क्रि स) অপমান কৰা। হেঁচি ধৰা।
अपमानित करना। दबाना।

धर-हर—(सं पुं)গ্ৰেফতাৰ কৰণ, ধৰা কাম, থকা-বধা।
धर पकड़। बीच बचाव। रोक-थाम।

धरहरा—[सं पुं] চূড়া।
मीनार।

धरा—(सं स्त्री) ধৰা, পৃথিৱী।
पृथ्वी। संसार।

धराऊ— [वि]সাঁচতীয়া। পুৰণি।
विशेष अवसरों के लिये सुरक्षित वस्तु। पुराना।

धरातल—[सं पुं] ধৰাতল: দীঘ আৰু পুতল থকা কিন্তু ঘনতা নথকা। ক্ষেত্ৰ-ফল।
सतह। क्षेत्रफल।

धराशायी— (वि) ধৰাশায়ী, ভূপতিত, মাটিত বাগৰি পৰা।
जमीन पर गिरा या लेटा हुआ।

धरित्री—(सं स्त्री) পৃথিৱী।
पृथ्वी।

धरी-- [सं स्त्री] নদীৰ সোঁত।
বৰষুণৰ পানীৰ ধাৰ।
नदी की धारा। पानी की धारा।
वर्षा की झड़ी।

धरेला [ली]—(सं स्त्री)উপপত্নী।
उपपत्नी। रखेली।

धरैया— [वि] ধাৰণ কৰা।
धारण करनेवाला।
(सं पुं) শেষ নাগ।
शेषनाग।

धरोहर—[सं स्त्री] পুঁজি, আমানত।
थाती। अमानत।

धर्मज्ञ— (वि) ধৰ্মজ্ঞ, ঈশ্বৰ, পৰকাল, ন্যায় বা অন্যায় আদি বিষয় জনা।
धर्म को जाननेवाला।

धर्मणा—(क्रि वि) ধৰ্মতে, ধৰ্ম বিচাৰ অনুসৰি।
धर्म-विचार के अनुसार।

धर्म-ध्वज—(सं पुं) ধৰ্ম্মৰ নামত বাহ্যিক আড়ম্বৰ দেখুৱা লোক।
धर्म आडम्बर खड़ा करनेवाला।

धर्मनिष्ठ— (वि) ধাৰ্ম্মিক, ধৰ্ম্মশীল, পুণ্যাত্মা।
धार्मिक।

धर्म-पत्नी— [सं स्त्री]ধৰ্ম্ম-পত্নী, সহধৰ্ম্মিনী।
विवाहिता स्त्री।

धर्मपिता— (सं पुं) বাপদায় দিয়া পিতা।
जो वास्तविक पिता न होने पर भी धार्मिक भाव से पिता बन गये हों।

धर्मपुत्र—[सं पुं] ধৰ্ম্মপুত্ৰ : ধৰ্ম্ম ৰক্ষাৰ নিমিত্তে পুত্ৰৰূপে গ্ৰহণ কৰা ল'ৰা।
जो औरस पुत्र न होने पर भी धार्मिक भाव से किसी का पुत्र बन गया हो।

धर्मप्राण—[वि] ধৰ্ম্মপ্ৰিয়, ধৰ্ম্মশীল।
धर्म को प्राणों के समान प्रिय समझनेवाला।

धर्मराज— [सं पुं] যুধিষ্ঠিৰ, যমৰাজ, ধৰ্ম্মপালনকাৰী ৰজা।
युधिष्ठिर। यमराज। धर्म का पालन करनेवाला राजा।

धर्मशाला— (सं स्त्री)পথিক আৰু নিৰাশ্ৰয় মানুহক খুৱাই-ধুৱাই ৰাখিবলৈ দিয়া ঘৰ।
यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मार्थ बनाया हुआ मकान।

धर्मशील-[वि]ধাৰ্ম্মিক।
धार्मिक।

धर्म-संकट—(सं पु)উভয় সঙ্কট। দুই নাও দুই ভৰি।
उभय संकट।

धर्मसभा—[सं स्त्री] বিচাৰালয়, ন্যায়ালয়।
न्यायालय।

धर्मान्ध, धर्मोन्मत्त—(वि) ধৰ্ম্মান্ধ, যুক্তিলৈ নেচাই নিজৰ ধৰ্ম্মহে ভাল আৰু পৰৰ ধৰ্ম্মক বেয়া বুলি বিশ্বাস কৰা।
धर्म के कारण संकीर्ण आचरण करनेवाला।

धर्माधिकरण—[सं पुं] বিচাৰালয়।
न्यायालय।

धर्मार्थ— (क्रि वि) ধৰ্ম্মৰ অৰ্থে, পৰোপকাৰাৰ্থে।
धर्म के लिये या परोपकार के लिये।

धर्मावतार—[स ं पुं] ধৰ্মাৱতাৰ, ন্যায় বিচাৰক,
লোকক সম্বোধন কৰা মাত।
अत्यन्त धर्मात्मा।

धर्मासन—(स ं पुं) ন্যায়াসন।
न्यायाधीश का आसन।

धर्मिष्ठ—[वि] ধাৰ্মিক।
धार्मिक।

धर्मोन्माद—[स ं पुं] ধৰ্মোন্মত্ততা, নিজৰ ধৰ্মক অতি প্ৰবল ৰূপে বিশ্বাস কৰি আন ধৰ্মৰ লোকক হিংসা কৰা।
धर्म के नाम पर भले बुरे का विचार छोड़ देने की मानसिक अवस्था।

धर्षण [स ं पुं] উৎপীড়ন। আক্ৰমণ
अपमान। दबोचना। दबाना। आक्रमण।

धर्षणी—(स ं स्त्री) ব্যভিচাৰিণী।
व्यभिचारिणी।

धव—(स ं पुं) স্বামী, এবিধ গছ।
पति। पुरुष। एक प्रकार का पेड़।

धवरी—[सं स्त्री] বগীগাই।
सफेद गाय।

धवल-[वि] বগা, নিৰ্মল।
श्वेत। निर्मल।

धवलाई— (सं स्त्री) ধৱলি, বগা বং বিশিষ্ট।
सफेदी।

धवलित—(वि) বগা, উজ্জ্বল।
सफेद। उज्वल।

धवलिमा— (क्रि स) উজ্জ্বলতা।
सफेदी। उज्वलता।

धवाना—(क्रि अ) দৌৰোৱা।
दौड़ाना।
[क्रि अ] ধ্বনিত হোৱা।
ध्वनित होना।

धसकना—[क्रि अ] হোঁহকা।
ভীত হোৱা।
नीचे की ओर धँसना या बैठना।
ईर्ष्या करना। डरना।

धसना—(क्रि अ) ধ্বংস হোৱা।
ध्वस्त होना।
(क्रि स) ধ্বংস কৰা।
नष्ट करना।

धाँधल [ा]-[স ं स्त्री] উৎপাত, উৎপীড়ন।
उपद्रव। शरारत। स्वेच्छाचारिता।

धा—(प्रत्य) দৰে, নিচিনা।
तरह। भाँति। (जैसे—नवधा, बहुधा)

धाक—[सं स्त्री] প্ৰভাৱ, খ্যাতি।
रोब। ख्याति।

धाकड़, धाकर—(क्रि म) খ্যাতি-বা প্ৰভাৱ শালী লোক।
जिसकी बहुत अधिक धाक हो। बहुत प्रबल।

धाकना—(क्रि अ) প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰা।
धाक या रोब जमाना।

धागा—(सं पुं) বটীয়া।
बटा हुआ सूत।

धाड़—[सं स्त्री] ডকাইতৰ আক্ৰ-মণ, দল, সেনা। গৰ্জ্জন।
डाढ़। दहाड़। डाकुओं का आक्रमण। झुण्ड। सेना।

धाता—[सं पुं] বিধাতা, জগত ৰক্ষা আৰু বিধান কৰোঁতা, ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু।
ब्रह्मा। विष्णु। महादेव। विधाता।
(वि) পালক, ৰক্ষক।
पालक। रक्षक। धारक।

धातुपुष्ट (बर्द्धक)-(वि) এবিধ ঔষধ-বীৰ্য্য শক্তি বঢ়াবৰ বাবে।
जिससे वीर्य बढ़ और गाढ़ा हो।

धातृका-[सं स्त्री] ধাই, ধাত্ৰী।
दाई।

धात्री—(सं स्त्री) ধাই, লোকৰ সৰু লৰা ছোৱালী আলপৈচান ধৰা মাইকী। পৃথিৱী, গাই।
माता। धाय। गंगा। पृथ्वी। गाय।

धान-पान—(वि) ক্ষীণ, লেৰেলা-চেপেতা, কোমল।
दुबला-पतला। कोमल।

धाना—[क्रि अ] দৌৰা, যত্ন কৰা, চেষ্টা কৰি চোৱা।
दौड़ना। दौड़-धूप या प्रयत्न करना।

धानी—[सं स्त्री] আধাৰ, থলী, খোঁকা, ভজা যেহু। ঈষৎ সেউ-জীয়া ৰঙ।
स्थान। वह जिसमें कोई चीज रखी जाय। हलका हरा रंग। भूना हुआ जौ या गेहूँ।
(वि) ঈষৎ সেউজীয়া ৰঙৰ।
हलके हरे रंग का।

धानुक—(सं पुं)ধেনুধৰ। কপাহ ধুনি লেপ আদি তৈয়াৰ কৰা মানুহ।
धनुर्धर। धुनिया।

धाप—(सं पुं) দূৰত্বৰ জোখ-প্ৰায় আধামাইল। আহল-বহল পথাৰ।
दूरी की एक नाप। लम्बा चौड़ा मैदान।
[सं स्त्री] তৃপ্তি, সন্তোষ।
तृप्ति।

धापना—(क्रि अ) সন্তুষ্ট হোৱা, দৌৰা।
सन्तुष्ट या तृप्त होना। दौड़ना।
(क्रि स) সন্তুষ্ট কৰা।
संतुष्ट या तृप्त करना।

धाबा-(सं पुं) আটাল বা আটালি।
अटारी।

धाम-(सं पुं) ঘৰ, শৰীৰ, শোভা, তীৰ্থস্থান।
मकान। किसी चीज के रहनेका स्थान। शरीर। शोभा। पवित्र तीर्थ।

धामिन—(सं स्त्री) এবিধ বিষাক্ত সাপ।
एक प्रकार का जहरीला सांप।

धाय—[सं स्त्री] ধাই, ধাত্ৰী।
दाई।

धार—(सं पुं) বৰষুণৰ পানীৰ ধাৰ, ধাৰ, ঋণ।
वर्षा का जल। ऋण। प्रान्त।
(सं स्त्री) পানীৰ প্ৰৱাহ, ভীষণ বৰষুণ, অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰৰ ধাৰ।
पानी का प्रवाह। जोरकी वर्षा। हथियार का तेज सिरा।

धारक—(वि) ধাৰক, আধাৰ ৰূপে ধৰি থাকোঁতা, ধাৰ কৰোঁতা।
धारण करनेवाला। उधार लेने वाला।

धारणा—[सं स्त्री] স্মৰণ শক্তি, কল্পনা, অনুভৱ, যোগাভ্যাসৰ অঙ্গ বিশেষ।
धारण करनेकी क्रिया या शक्ति। मनमें धारण करने की शक्ति। याद। योगके आठ अगों में से एक।

धारना-(क्रि स) ধৰা, ঠিৰাং কৰা, স্থাপন কৰা।
धारण करना। मनमें निश्चय करना। स्थापित करना।

धारा—[सं स्त्री] প্ৰবাহ, ধাৰ, লানী নিছিগা হৈ পৰা পানী বা

ৰৰষুণ।
प्रवाह। लगातार चलनेवाला किसी बात का क्रम। विधान आदिका विशेष या स्वतंत्र अंग। [अं – सेक्सन]

धारा प्रवाह—[वि] অবিৰাম গতিত চলা।
अविराम चलनेवाला कार्य।

धारा-यंत्र—(सं पुं) উহ্, ঝৰণা, চেঁৰেকা, পিচ্কাৰী।
फुहारा। पिचकारी।

धारा-सभा—(सं स्त्री) বিধান বা আইন তৈযাৰ কৰা সভা।
विधान या कानून बनाने वाली सभा।

धारी——(वि) ধাৰণ কৰোঁতা, পিন্ধোতা, সৈন্য, সমূহ, ৰেখা।
धारण करनेवाला। पहननेवाली। सेना। समूह। रेखा।

धार्य—(वि) ধাৰণ কৰিবৰ বা লবৰ যোগ্য।
धारण करने योग्य।

धावक—[सं पुं] বেগতে চিঠি পত্ৰ দিওঁতা, দূত।
दौड़कर चिट्ठी आदि ले जाने वाला। हरकारा।

धावन—[सं पुं] দূত।
दूत। धो कर साफ करना। वह जिससे कोई चीज साफ की जाय।

धावा—[सं पुं] আক্ৰমণ, যুদ্ধ, দৌৰ।
आक्रमण। दौड़।

धाह—(सं स्त्री) চিঞৰি চিঞৰি কন্দা।
जोरसे चिल्लाकर रोना।

धिक् [क], धिक्कार—(सं स्त्री) ধিক, ধিকাৰ, ধিক্কাৰ।
तिरष्कार या घृणा व्यंजक शब्द। लानत।

धिकना-[क्रि अ] তপ্ত বা গৰম হোৱা। तप्त होना।

धिय (I), धीय (I)-(सं स्त्री) জী, ছোৱালী।
पुत्री। लड़की।

धिराना—(क्रि स) আশ্বাস দিয়া। ধমক দিয়া।
आश्वासन देना। धमकाना।
[क्रि अ] লেহেম হোৱা, ধৈৰ্য্য ধৰা।
धीमा पड़ना। धैर्य रखना।

धींग, धींगड़ा (रा)-(सं पुं)
হৃষ্ট-পুষ্ট ।
हट्टा-कट्टा । बदमाश । पापी ।

धींगा-धींगी, धींगा-मुस्ती-(सं स्त्री)
দপ্‌দপনি ।
अनुचित बल प्रयोग या दबाव ।
जबर्दस्ती ।

धी—(सं स्त्री) बुद्धि, मन । জী ।
बुद्धि । मन । बेटी ।

धीजना—(क्रि स) স্বীকাৰ কৰা
বা অঙ্গীকাৰ কৰা ।
ग्रहण, स्वीकार या अंगीकार
करना ।
(क्रि अ) ধৈৰ্য্য ধৰা, সন্তুষ্ট
হোৱা, শান্ত হোৱা ।
धीरज धरना । सन्तुष्ट होना ।
स्थिर या शान्त होना ।

धीमा—(वि) লাহে লাহে, মন্থৰ ।
मन्द गतिवाला । मन्द ।

धीमान्—[सं पुं] বুদ্ধিমান ।
बुद्धिमान ।

धीरक, धीरज—[सं पुं] ধৈৰ্য্য ।
धैर्य ।

धीरना—(क्रि अ) ধৈৰ্য্য ধৰা ।
धैर्य धारण करना ।
(क्रि स , ধৈৰ্য্য ধৰা ।
धैर्य धारण करना ।

धीर-ललित (सं पुं) ৰংচঙিয়া ।
सदा बना ठना और प्रसन्न रहने
वाला ।

धीरा—(सं स्त्री) নায়িকাৰ এবিধ
ভেদ ।
नायिका का एक भेद ।
[वि] ধীৰ, মন্থৰ ।
मंद । धीमा ।

धीरोदात्त-(सं पुं) দয়ালু , বলবান,
ধীৰ আৰু যোদ্ধা নায়ক ।
दयालु, बलवान्, धीर और
योद्धा नायक ।

धीवर—[सं पुं] মাছ মৰীয়া ,
ডোম ।
मछुवा । मल्लाह ।

धुंगार—(सं स्त्री) সম্ভাৰ দিয়া ।
बघार । छौंक ।

धुंध—(सं स्त्री) ধুৱলী-কুৱলী,
চকুৰ এবিধ ৰোগ ।
धूल या भाप के कारण होनेवाला
अँधेरा । आँख का एक रोग ।

धुँधला—[वि] অস্পষ্ট, অন্ধকাৰ
পূৰ্ণ ।

कुछ काला या अन्धेरा सा ।
अस्पष्ट ।

धुँधाना धुँधुआना, धुँधुवाना—(क्रि अ) ধোৱাঁ দিযা, অস্পষ্ট হোৱা ।
धुआँ देना । धुँधला होना ।
[क्रि स] কোনো বস্তুত ধোৱাঁ লগোৱা ।
किसी चीज में धुआँ लगाना ।

धुंधुरि—(सं स्त्री) ধূৱলী কুৱলী ।
गर्द गुबार या धुँए से होनेवाला अंधेरा ।

धुआँ, धूआँ—(सं पुं) ধোৱাঁ, ধূম্র ।
धूम । उमड़ता हुआ भारी समूह ।

धुआँना—[क्रि अ] ধোৱাঁ লগা ।
धुआँ लगने के कारण पकवान का स्वाद बिगड़ जाना ।

धुआँयँध—(सं स्त्री) ধোৱাঁৰ দৰে গোন্ধ । উগাৰ ।
धूएँ की सी गंध । अपचमें आने वाला डकार ।

धुकड़-पुकड़-(सं स्त्री) উকমুকলি ।
भय के कारण घबराहट । आगा पीछा ।

धुकधुकी—(सं स्त्री) ধপ্‌ধপনি ।
भय के कारण हृद स्पन्दन ।
एक प्रकार का गहना ।

धुकना-[क्रि अ] নত হোৱা । পৰি-যোৱা । জপিওৱা ।
नीचे झुकना । गिर पड़ना । झपटना ।
(क्रि स) ধোঁৱা দিযা ।
धूनी देना ।

धुकरना, धुकारना—(क्रि अ) গল খেকাৰী মৰা ।
जोरसे शब्द करना ।

धुड़गा—[वि] ধূলি-ধূসৰিত ।
जिसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं, धूल ही हो ।

धुतकार—(सं स्त्री) ধিক্কাৰ ।
धिक्कार । 'दुत्' कर भगा देना ।

धुधुकार [सं स्त्री] জোৰেৰে শব্দ কৰা ।
जोर का धू धू शब्द ।

धुन—(सं स्त्री) একাগ্ৰতা । সংকল্প ।
लगन । उत्कट अभिलाषा ।

धुनकी—(सं स्त्री) কপাহ ধূনা তাঁত বা ধেনু ।
धुनियों की वह कमान जिससे वे रूई धुनते हैं ।

धुनना—(क्रि स) কপাহ ধুনা। অত্যধিক মৰা। আনৰ কথা নুশুনি নিজৰ কথাকে কৈ যোৱা।
धुनकी की सहायता से रूई में से बिनौले अलग करना। खूब मारना पीटना। दूसरे की बात बिना सुने अपनी बात कहते जाना।

धुनियाँ—[सं पुं] ধুনকৰ।
वह जो रूई धुननेका काम करता हो।

धुनी- [सं स्त्री] নদী। সন্ন্যাসীৰ ধুনি। नदी। धूनी।

धुप-धूप—(वि) পৰিষ্কাৰ, উজ্বল। साफ। उज्वल।

धुमिलाना—[क्रि अ] শেতা পৰা। धूमिल होना। काला पड़ना।

धुरंधर—(वि) ভাৰ লওঁতা, শ্ৰেষ্ঠ, প্ৰধান।
भार उठानेवाला। श्रेष्ठ। प्रधान।

धुर—(सं पुं) গাড়ীৰ ধুৰা, শীৰ্ষ-বিন্দু। আৰম্ভণি।
गाड़ी का धुरा। शीर्ष या उच्च स्थान। आरम्भ।
(अव्य) गन्तव्य, मन्तव्य।
बिलकुल ठीक या ठिकाने तक।
[वि] সুদৃঢ়, পোণে পোণে। বহুত দূৰ।
पक्का। दृढ़। सीधे। बहुत दूर।

धुरना—(क्रि स) মৰা। বজোৱা। मारना। बजाना।

धुरा—(सं पुं) গাড়ীৰ ধুৰা।
गाड़ी में वह लोहे का डण्डा जिसमें पहिये लगे रहते हैं। अक्ष। (सं स्त्री-धुरी)

धुरीण-(वि) প্ৰমুখ। দায়িত্ব লওঁতা।
बोझ सम्भालनेवाला। मुख्य। धुरंधर।

धुरेटना—(क्रि स) ধূলিৰে সানি দিয়া।
धूल से लपेटना। मारना।

धुर्री-(सं पुं) ধূলি, বালি, গুড়ি। धूल। चूर्ण।

धुलना—(क्रि अ) ধোৱা।
पानी से साफ किया जाना।

धुलाई-[सं स्त्री] ধোৱাৰ বানচ। धोने का काम या मजदूरी।

धुस्स—(सं पुं) দ'ম, টিলা, নদীৰ বান্ধ।
ढूह। टीला। नदी का बाँध।

धुस्सा—[सं पुं] উলৰ চাদৰ, ধুচা বা ধচা ।
ऊनकी मोटी लोई या चादर ।

धूसना—(क्रि अ) ডাঙৰকৈ শব্দ কৰা ।
जोर का शब्द करना ।

धूआँधार—(वि) ধোঁৱাৰে ঢাকি ধৰা । খুব জোৰেৰে । ভীষণ ।
धुएँ से भरा हुआ । गहरे काले रंग का । बहुत जोर का । घोर ।
(क्रि वि) খুব বেচিকৈ, খুব বেগেৰে ।
बहुत अधिक या बहुत जोर से ।

धूँई, धूनी—(सं स्त्री) গুগ্‌গুল, ধুনা আদিৰ ধোঁৱা । ধুনি (সন্ন্যাসীৰ) ।
गुग्गुल आदि सुगंधी द्रव्य जलाकर निकाला गया धूआँ । साधुओ के तापने की आग ।

धूजना—[क्रि अ] লৰচৰ হোৱা ।
हिलना । काँपना ।

धूत—(वि)লৰচৰ কৰি থকা অথবা কম্পিত । এৰা, চাৰিও পিনৰ পৰা বন্ধ কৰা অথবা আগুৰি থকা, দুষ্ট, চতুৰ ।
हिलता या काँपता हुआ । छोड़ा हुआ । चारों ओर से ढका या घिरा हुआ । धूर्त । चालाक । दगाबाज ।

धूतना—[क्रि अ] ধূৰ্ত্তালি কৰা ।
धूर्तता करना ।

धूताई—(स स्त्री) ধূৰ্ত্ততা ।
धूर्तता ।

धू धू—[सं पुं] জুই জ্বলাৰ শব্দ ।
आग के जलने का शब्द ।

धूप—(सं पुं) সুগন্ধি ধোঁৱা ।
सुगन्धित धूम ।
(सं स्त्री) ৰ'দ । ধূপ ।
घाम । एक गन्ध द्रव्य ।

धूप-छाँह–(सं स्त्री) একে ঠাইতে বেলেগ বেলেগ ৰঙ যেন দেখা এবিধ ৰঙিয়াল কাপোৰ । কেতিয়াবা ৰ'দ আৰু কেতিয়াবা ছঁ'য়া ।
एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एकही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है, कभी दूसरा । कभी धूप कभी छाया ।

धूपदान— [सं पुं] ধূপাধাৰ । ধূপদানি ।
धूप या गंध द्रव्य जलानेका पात्र।

ধূপনা—(ক্রি অ) ধূপ অথবা তেনে কোনো সুগন্ধি দ্ৰব্য জলাই ধোঁৱাময় কৰা। দৌৰা।
धूप या कोई गन्ध द्रव्य जलाकर उसका धुआँ उठाना। दौडना। हैरान होना।
[ক্রি স] ধূপ জলাই চাৰিওফালে সুগন্ধি কৰা।
धूप जलाकर वातावरण सुवासित करना।

धूम—[স' পুং] উগাৰ, ধূমকেতু।
अपच से उठनेवाला डकार। धूमकेतु।
[**সং স্ত্রী**] উপদ্ৰব, ধমক-জমক, উৎসৱ, কোলাহল, খ্যাতি।
हलचल। उपद्रव। ठाट बाट। समारोह। कोलाहल। ख्याति।
(বি) ধোঁৱাৰ নিচিনা, অসাৰ, মিছানিচি।
धूएँ की तरह का। जिसका कोई आधार न हो। झूठ-मूठ का और निस्सार।

धूम-केतु—(স' পুং) ধূমকেতু।
पुच्छल तारा। अग्नि।

धूम-धाम—(স' স্ত্রী) উৎসৱ, জাক-জমক।
समारोह। ठाट-बाट।

धूम-धामी—[বি] ধূমধাম কৰা, দুষ্ট, উপদ্ৰবী।
जिसमें धूमधाम हो। नटखट। उपद्रवी।

धूम-पट—(সং পুং) যুদ্ধ ক্ষেত্ৰত সৈন্য সকলক লুকুৱাবলৈ ধোঁৱাৰে সজা আঁৰ অথবা পৰ্দ্দা।
युद्ध क्षेत्र में सेना को छिपाने के लिये धूएँ से की जानेवाली आड या परदा।

धूमिल—(বি) ক'লা, ধোঁৱাবৰণীয়া, অস্পষ্ট।
धूएँ के रँग का। काला। धुंधला।

धूम्र—(সং পুং) ধোঁৱা।
धूआँ।
(বি) ধোঁৱা বৰণীয়া।
धूएं के रंग का।

धूर—(**সং স্ত্রী**) ধূলি।
धूल।
(**সং পুং**) এলোচা (ধুৰ)
जमीन की एक माप।

धूर-धुरेटा—[সং পুং] ধূলি বালিৰে ভৰা ঠাই।
वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो।

[वि] धूलिবে লাগি থকা।
धूलमें लिपटा हुआ।

धूर्जटि—(सं पुं) মহাদেৱ, শিৱ।
महादेव।

धूल, धूलि—[सं स्त्री] ধূলা, বালি, সামান্য বস্তু।
रज। गर्द। तुच्छ वस्तु।

—चटना—নষ্ট হোৱা, জেউতি নাইকীয়া হোৱা।
बरबादी होना। चमक नष्ट होना।

—उड़ाना—বদনাম কৰা।
बदनामी करना।

—फाँकना—বেয়া পৰিস্থিতিত ইফালে সিফালে ঘূৰি ফুৰা।
मारा मारा फिरना।

—में मिलना—বিনষ্ট হোৱা।
चौपट या नष्ट होना।

धूसर, धूसरित—[वि] ধূসৰ, ধূসৰিত, মলিয়ন।
मटमैला। धूल के रंग का। धूल से लिपटा।

धृति-(सं स्त्री) মনৰ দৃঢ়তা, ধৈৰ্য্য।
धारण करने या पकड़ने की क्रिया। मनकी दृढ़ता। धीरज।

धृती—[वि] ধীৰ, ধীৰবান, ধৈৰ্য-বান।
धीर। धैर्यवान।

धृष्ट—[वि] নিলাজ, উদ্ধত।
निर्लज्ज। उद्धत।

धेनु—[सं स्त्री] গৰু (মাইকী)।
गाय।

धेरी—(सं स्त्री) জীয়াৰী।
बेटी।

धोंधा—[सं पुं] কুৰূপ, মাটিৰ লদা।
बेडौल या मिट्टी आदिका लोदा।
(वि) মূৰ্খ, অশুৱণি।
मूर्ख। बे-ढंगा।

धोंधा-बसन्त-(सं पुं) মহামূৰ্খ।
निरा मूर्ख।

धोखा—[सं पुं] ছল, ফাঁকি, ভ্ৰান্তি, চৰাইক ভয় খুৱাবলৈ খেতি পথাৰত কৰি থোৱা মূৰ্ত্তি আদি, বেচনেৰে তৈয়াৰী এবিধ আঞ্জা।
छल। दगा। भुलावा। भ्रान्ति। भ्रम उत्पन्न करनेवाली बात या वस्तु। अज्ञानतासे होनेवाली भूल। जोखिम। चिड़ियों को डराने के लिये खेत में खड़ा किया हुआ

पुतला। बेसन का एक प्रकार का पकवान।

धोखेबाज—(वि) धূর্ত্ত, কপটী। कपटी। धूर्त।

धोती—(सं स्त्री) ধুতী, চুৰিয়া। एक प्रकार पहनने का वस्त्र।

धोना—(क्रि स) ধোৱা। पानी में प्रक्षालित करना। दूर करना।

धोपना—(क्रि स) মাৰ পিট কৰা। मारना-पीटना।

धोब—(सं स्त्री) ধোৱা কাম। धोये जाने की क्रिया।

धोबी—(सं पुं) ধোবা। कपड़ा धोने का काम करनेवाला।

—का कुत्ता—অকামিলা ব্যক্তি। निकम्मा आदमी।

धोवन—(सं स्त्री) ধোৱা কাম, কোনো বস্তু ধোৱাৰ পিছত বৈ যোৱা পানী।

धोने की क्रिया या भाव। किसी चीज को धोने से निकला या बचा हुआ पानी।

धोवाना—(क्रि स) ধোৱা। धुलना।

[क्रि अ] ধোৱা হোৱা। धोया जाना।

धौं-(अव्य) নেজানোঁ। কিয়? যে, অথবা, তেনে, বাৰু। न जाने क्या। कि, या। तो, भला।

धौंकना-(क्रि स) জুই জলাবৰ বাবে ফুওৱা, ওপৰত থোৱা, শাস্তি দিয়া। आग सुलगाने के लिये भाथी से हवा देना। ऊपर डालना। दण्ड आदि देना।

धौंकनी—(सं स्त्री) ভাতী। भाथी।

धौंजना—[क्रि अ] লৰা-ঢপৰা কৰা। दौड़ धूप करना।

(क्रि स) ভৰিৰে গছকা। पैरों से कुचलना।

धौंताल -[वि] বৰ্ডিয়াল, সাহসী, বলবান (বেয়া কামত) উপদ্ৰবী। फुरतीला। साहसी। हेकड़। उपद्रवी।

धौंस—[सं स्त्री] ধমক, প্ৰভাৱ। धमकी। धाक। झाँसा पट्टी।

धौंसना—(क्रि स) ধমক দিয়া, মাৰ ধৰ কৰা, দমন কৰা।
धमकाना। मारना–पीटना। दमन करना।

धौंसा-[सं पुं] নাগেৰা, সামৰ্থ্য।
नगाड़ा। सामर्थ्य।

धौत—[वि] পৰিষ্কাৰ ভাবে ধোৱা, উজ্জ্বল।
धोया और साफ किया हुआ।
उजाला।
(सं पुं) ৰূপ।
चाँदी।

धौरा—[वि] বগা।
सफेद।
(सं पुं) বগা বলদ, পণ্ডুক নামৰ চৰাই।
सफेद बैल। पंडुक पक्षी।

धौरी—[सं स्त्री] বগী গাই, এবিধ চৰাই।
सफेद गाय। एक प्रकारका पक्षी।

धौल—[सं स्त्री] লোকচান, মূৰত কান্ধত অথবা পিঠিত মৰা মাৰ।
सिर कंधे अथवा पीठ पर लगने वाला थप्पड़। नुकसान।
[वि] বগা।
उजला। सफेद।

धौला—[वि] বগা।
सफेद।

ध्याता - [वि] ধ্যান কৰোঁতা।
ध्यान करने या लगानेवाला।

ध्यान—(सं पुं) ধ্যান (মানসিক অনুভূতি বিশেষ]
मानसिक अनुभूति। किसी के चिन्तन में मन के लीन होने का भाव।

—दिलाना-আঙুলিয়াই দিয়া, উদ্গুকিয়াই দিয়া, মনত কৰি দিয়া।
चेताना। सुझाना।

—पर चढ़ना-মনত পৰা,স্মৰণ কৰা।
स्मरण कराना।

ध्याना—[क्रि स] ধ্যান কৰোৱা।
ध्यान कराना या लगाना।

ध्येय-[वि] ধ্যানৰ যোগ্য, উদ্দেশ্য।
ध्यान करने योग्य। उद्देश्य।

ध्रुव—[वि] স্থিৰ, অচল।
स्थिर। अचल। निश्चित।
[सं पुं] আকাশ, পাহাৰ, এক-প্ৰকাৰৰ নাকৰ গহনা, ধ্ৰুৱ নক্ষত্ৰ, পৃথিবীৰ উত্তৰ আৰু দক্ষিণ সীমা। মেৰু প্ৰদেশ।

आकाश । कील । पहाड़ । उत्तर आकाश का एक तारा । पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे ।

ध्रुवीय—(वि) ধ্রুব সম্বন্ধীয়, মেরু প্রদেশ ।

ध्रुव सम्बन्धी । ध्रुव प्रदेश का ।

ध्वंसक—(वि) নাশ কৰোঁতা ।

नाश करनेवाला ।

ध्वंसन—[सं पुं] ক্ষয়, বিনাশ, ভঙা-ছিঙা ।

क्षय । विनाश । तोड़ फोड़ ।

ध्वंसावशेष-(सं पुं) ধ্বংসাৱশেষ ।

खंडहर ।

ध्वज—(सं पुं) পতাকা, চিন, ধ্বজ ।

पताका । चिह्न ।

ध्वजा—(सं स्त्री) ধ্বজা, পতাকা ।

झण्डा ।

ध्वनि—(सं स्त्री) শব্দ, গূঢ়াৰ্থ ।

आवाज । गूढ़ अर्थ या आशय ।

ध्वनि क्षेपक यंत्र—[सं पुं] মাইক্ৰোফোন, শব্দক দূৰলৈ পঠিওৱা যন্ত্ৰ ।

ध्वनि को दूरतक फैलानेवालाएक यन्त्र । (अं-माइक्रोफोन)

ध्वनित—(वि) ধ্বনিত, নিনাদিত ।

शब्दसे युक्त । व्यंजित । घादित

ध्वन्यात्मक—[वि] ধ্বনি যুক্ত, ব্যঙ্গাৰ্থ প্ৰধান, ধ্বন্যাত্মক ।

ध्वनि युक्त । जिसमें व्यंगार्थ प्रधान हो ।

ध्वन्यार्थ—(सं पुं) ব্যঞ্জনা শক্তিৰে ওলোৱা অৰ্থ ।

व्यंजना शक्ति से निकलनेवाला अर्थ ।

ध्वान्त—(सं पुं) অন্ধকাৰ ।

अन्धेरा ।

ध्वान्तचर—[सं पुं] ৰাক্ষস ।

राक्षस ।

न

न—ব্যঞ্জন বৰ্ণৰ কুৰি সংখ্যাৰ আখৰ।
देवनागरी वर्णमाला का बीसवाँ वर्ण।
(अव्य) নহয়, নিষেধ অৰ্থত।
नहीं, मत। या नहीं।

नंग धड़ंग—(वि) সম্পূৰ্ণ উলঙ্গ।
बिलकुल नंगा।

नंगा—[वि] নাঙঠ, আবৰণ ৰহিত, নিলাজ।
वस्त्र हीन। जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। निर्लज्ज। लुच्चा।

नंगा झोली—(सं स्त्री) লুকাই ৰখা বস্তু বিচাৰি পিন্ধি থকা কানি-কাপোৰ আদি তালাচ কৰা।
पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

नंगा नाच-[सं पुं] নিলাজ ভাৱে দোষপূৰ্ণ অনুচিত কাম কৰা।
बहुत ही निर्लज्जता पूर्वक और बिलकुल मनमाने ढंगसे दोषपूर्ण अनुचित कार्य करना।

नंद—(सं पुं) আনন্দ, পৰমেশ্বৰ, বিষ্ণু, পুত্ৰ, কৃষ্ণৰ পালক পিতা, এজন ৰজা বিশেষ।
आनन्द। परमेश्वर। विष्णु। बेटा। कृष्ण के पालक पिता।

नंदन--(सं पुं) পুতেক, ইন্দ্ৰৰ বাগিছা, শিৱ, বিষ্ণু, মেঘ।
पुत्र। इन्द्र का उपवन। शिव। विष्णु। मेघ।
[वि] আনন্দ দিওঁতা।
आनन्द देनेवाला।

नंदना—(क्रि स) আনন্দিত কৰা।
आनन्दित करना।
(क्रि अ) আনন্দিত হোৱা।
आनन्दित होना।
(सं स्त्री) জী।
बेटी।

नंदा—(सं स्त्री) দুৰ্গা, কামধেনু, সম্পত্তি, ননদ।

दुर्गा। कामधेनु। सम्पत्ति।
ननद।

[वि] আনন্দ দিওঁতা (স্ত্রী)।
आनन्द देनेवाली।

नंदित—(वि) আনন্দিত, নিনাদিত।
आनन्दित। बजता हुआ।

नंदिनी—[सं स्त्री] জী, দুর্গা, গঙ্গা, ননদ, পত্নী, বশিষ্ঠ মুনিৰ কামধেনু।
बेटी। दुर्गा। गंगा। ननद। पत्नी। वसिष्ठ की कामधेनु।

नंदी-(सं पुं) শিৱৰ বাহন বলদটো, শিৱৰ গণ (নন্দী),বিষ্ণু।
शिव का बैल। शिव का गण। विष्णु।

(वि) আনন্দপূৰ্ণ।
आनन्द युक्त।

नंदोई,ननदोई—(सं पुं) ননদৰ গিৰীয়েক।
ननद का पति।

नंबरदार—(सं पुं) গাঁৱৰ মুখিয়াল ব্যক্তি, (গাঁওবুঢ়া)।
गाँव का मुखिया।

नंबरवार—[क्रि : वि] সংখ্যাৰ ক্ৰমানুসৰি।
संख्या के क्रम से।

नम्बरी चोर—(सं पुं) ডাঙৰ আৰু প্ৰসিদ্ধ চোৰ।
बहुत बड़ा और प्रसिद्ध चोर।

नम्बरी नोट—[सं पुं] এশ অথবা ইয়াতকৈ বেছি টকাৰ নোট।
सौ रुपये या इससे अधिक का नोट।

नई(यी)—(वि)নতুন(স্ত্রী),নীতিজ্ঞ।
नीतिज्ञ। 'नया' का स्त्री लिंग।

[सं स्त्री] নদী।
नदी।

नक-कटा—(वि) নাক-কটা, নিলাজ।
जिसकी नाक कटी हो। निर्लज्ज।

नकघिसनी—(सं स्त्री) অপৰাধ ক্ষমা কৰিবলৈ অথবা কোনো কাম কৰিবলৈ কৰা সানুনয় প্ৰাৰ্থনা।
अपराध क्षमा कराने या कोई काम कराने के लिये दीनतापूर्वक प्रार्थना करना।

नकटा—[स पुं] উত্তৰ ভাৰতৰ একপ্ৰকাৰ বিয়া নাম। যাৰ নাকটো কটা ।
विवाह आदिके अवसर पर गाया जानेवाला एक प्रकारका गीत। जिसकी नाक कटी हो।

नकद, नगद—(सं पुं) নগদ। वह धन जो सिक्कों के रूपमें हो।
(वि) সমুখত অথবা প্ৰস্তুত ধন। ভাল।
जो तैयार या सामने हो (रुपया), बढ़िया।
(क्रि वि) বস্তুৰ সলনি দিয়া নগদ ধন।
सामान के बदले में तुरन्त दिया हुआ रुपया। 'उधार' का उलटा।

नकदी, नगदी-(क्रि वि) মুদ্ৰা হিচাবে, নগদ-নগদ।
नगद या सिक्के के रूप में।

नकना-(क्रि स) পাৰহোৱা, ত্যাগ কৰা।
लाँघना। त्यागना।
[क्रि अ] বিৰক্ত হোৱা, হায়ৰান হোৱা।
नाक में दम होना। हैरान होना।

नकब—(सं स्त्री) সিন্ধি। সেঁধ।

नकबानी, नकबानी—(सं स्त्री) বিৰক্তি, হায়ৰান।
नाकमें दम। हैरानी।

नकबेसर—[सं स्त्री] সৰু নাক-ফুটা (নাকৰ সৰু অলংকাৰ)
छोटी नथ।

नकल नबीस—(सं पुं) নকল নবিচ।
जो दूसरा के लेखों आदि की नकल करता हो।

नकली—[वि] নকলী, অবাস্তৱ, আচলৰ বিপৰীত। জাল। কৃত্ৰিম।
नकल करके बनाया हुआ। बनावटी। जाली।

नकसा, नक्शा—(स पुं) চিত্ৰ, আকৃতি,অৱস্থা, গঠন মানচিত্ৰ।
रेखा चित्र। आकृति। ढंग। अवस्था। साँचा। मानचित्र।

नकसीर—(सं स्त्री) নাকৰ এবিধ বেমাৰ।
नाक के एक प्रकार का रोग।

नकाब-(सं स्त्री) মুখা, মুখ ঢাকিবলৈ ব্যৱহাৰ কৰা কাপোৰ, ওৰণি।

चेहरा छिपाने के लिये उसपर डाला कपड़ा । घूँघट ।

नकाबपोश—(सं पुं) মুখা পিন্ধা ।
जो नकाब पहने हुए हो ।

नकारना—[क्रि अ] অস্বীকাৰ কৰা । না-কৰা ।
अस्वीकृत करना ।

नकारात्मक—(वि) নিষেধাত্মক ।
जो बात न मानी गयी हो या जो करने से इन्कार किया गया हो ।

नकाशना—[क्रि स] ধাতু, শিল, আদি কাটি চিত্র অঁকা ।
धातु, पत्थर आदि खोदकर चित्र आदि बनाना ।

नकियाना—(क्रि अ) নাকে মতা, নাকেৰে উচ্চাৰণ কৰা, নাকী সুৰ ।
शब्दों को अनुनासिक उच्चारण करना ।
[क्रि स] খুব দিগ্দাৰী দিয়া ।
बहुत परेशान करना ।

नकीब—(सं पुं) চাৰণ । ভাট ।
भाट ।

नकेल—[सं स्त्री] নাকী (উটৰ নাকত লগোৱা জৰী)
ऊँट, बैल आदि की नाक में पिरोई रस्सी ।

नक्कारखाना—(सं पुं) নাগেৰা বজোৱা স্থান । নহবত বজোৱা স্থান ।
वह स्थान जहाँ नगाड़ा बजता हो ।

नक्कारखाने में तूती की आवाज—
ডাঙৰৰ আগত ক্ষুদ্ৰলোকৰ শুনিব নলগা কথা ।
बड़ो बड़ों के सामने छोटों की न सुनी जानेवाली बात ।

नक्काल—[सं पुं] নকল কৰোঁতা, বহুৱা ।
नकल करनेवाला । भाँड़ ।

नक्काशी [**नक्काशी**]—(सं स्त्री)
ধাতু, কাঠ, শিল আদি কাটি অঁকা নানা চিত্ৰ আদি, এনে-বিধৰ চিত্ৰ কলা ।
धातु, काठ, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र आदि बनाने की कला । खोदकर बनाये हुए चित्र या बेल बूटे ।

नक्की—[वि] পকা, দৃঢ়, নিশ্চিত ।
पक्का । दृढ़ । निश्चित ।

[सं स्त्री] গীতগোৱা সময়ত ওলোৱা নাকী-সুৰ।

गाने में नाक से स्वर निकालने का ढंग।

नक्कू—(वि) ডাঙৰ নাক থকা, নিজকে খুব বেয়া ভবা।

बड़ी नाक वाला। अपने आपको बहुत बुरा समझनेवाला।

नक्र—(सं पुं) মগৰ। ঘড়িয়াল।

'नाक' नामक जल जन्तु। मगर।

नक्श—(वि) অঙ্কিত, চিত্রিত, লিখিত।

अंकित, चित्रित या लिखित।

[सं पुं] ছবি, চিত্রকাৰী, তাবিজ।

तस्वीर। बेल बूटे। छाप। ताबीज।

नक्शा-नसबी—[सं पुं] চিত্র আকোঁতা।

नक्शा बनाने या अंकित करने वाला।

नक्षत्री, नछत्री—(सं पुं) চন্দ্ৰমা।

चन्द्रमा।

(वि) ভাগ্যবান।

भाग्यवान।

नख—(सं पुं) নখ, খণ্ড, এবিধ সুগন্ধি বস্তু।

नाखून। खण्ड। एक गंध द्रव्य।

[सं स्त्री] চিলা উৰোৱা সূতা বা জৰী।

गुड्डी उड़ानेकी डोर।

नखत [ट]-[सं पुं] নক্ষত্ৰ, তৰা।

नक्षत्र। तारा।

नखना—(क्रि अ) জপিয়াই পাৰ কৰোৱা।

लाँघकर पार किया जाना।

[क्रि स] জপিয়াই পাৰ হোৱা, নষ্ট কৰা।

लाँघकर पार करना। नष्ट करना

नखरा, नखरा-तिल्ला—(सं पुं) কাৰোবাক আনন্দিত বা আকৰ্ষিত কৰিবলৈ অথবা অস্বীকৃতি নাইবা বিনয়শীলতা দেখুৱাবলৈ কোনো নাৰীয়ে নাইবা নাৰীৰ নিচিনা কৰা চেষ্টা বা ভাব, নখৰা।

किसी को रिझाने या झूठमूठ अपनी अस्वीकृति या सुकुमारता सूचित करने के लिये स्त्रियों की अथवा स्त्रियों की सी चेष्टा।

नखरीला, नखरे बाज—(वि) ि.ছানিছি তোষামোদ কৰিবলৈ চেষ্টা কৰোঁতা।

बहुत नखरा करनेवाला।

नखशिख—(सं पुं) নখৰ পৰা শিখালৈ ৰূপ সৌন্দৰ্য্য।

नख मे शिख तक के सब अंग।

नखास -[सं पुं] জন্তু বিক্ৰী কৰা বজাৰ।

पशुओं, खास कर घोड़ो के विकने का वाजार।

नखियाना —[क्रि स] নখ বহুওৱা।

नाखून गडाना।

नखी—[सं पुं] দীঘল নখ থকা জন্তু, নৃসিংহ।

लम्बे नाखून वाले जानवर। नृसिह।

नखोटना-(क्रि स)নখেৰে আঁচোৰা।

नाखूनो से खरोंचना।

नग—[सं पुं]পৰ্ব্বত, বৃক্ষ, সাঁপ, সূৰ্য্য, সংখ্যা, বহুমূলীয়া মূল্যবান পাথৰ।

पर्वत। वृक्ष। साँप। सूर्य। संख्या। चमकने वाले जड़ाऊ पत्थर।

नगपति—(सं पुं) হিমালয়, শিৱ, সুমেৰু।

हिमालय। शिव। सुमेरु।

नगमा, नग्मा—[सं पुं] সংগীত, ৰাগ।

संगीत। राग।

नगरपाल-[सं पुं] নগৰপালিকাৰ অধিকাৰী।

नगर की रक्षा करनेवाला अधिकारी।

नगरपालिका—[सं स्त्री] নগৰ পালিকা (মিউনিচিপালিটি)

नगर की सफाई, पानी आदि की व्यवस्था करनेवाली नागरिकों द्वारा चुने हुए सदस्यो द्वारा बनी हुई संस्था। (अं—म्युनिसिपैलिटी)

नगराई—[सं स्त्री] নাগৰিকতা, চতুৰালি।

नागरिकना। चतुराई।

नगला—(सं पुं) সৰু গাওঁ, চুবা।

छोटी बस्ती। गांव।

नगाड़ा—(सं पुं) নাগেৰা।

डका।

नगाधिप, नगेन्द्र, नगेश—(सं पुं)

হিমালয়, সুমেৰু পৰ্ব্বত।

हिमालय। सुमेरु पर्वत।

नगीना—[सं पुं] ৰত্ন ।
रत्न ।

नचना—(क्रि अ) নচা ।
नाचना ।
(वि) নচা অথবা অঙ্গ চালনা কৰা ।
नाचने या अङ्ग हिलानेवाला ।

नचनियाँ—(सं पुं) নৰ্ত্তক, নটুৱা ।
नर्त्तक ।

नचाना—(क्रि स) নচুওৱা, কোনো বস্তু হাতত লৈ ঘূৰোৱা, কাম কৰিবলৈ কোনো ব্যক্তিক বাৰে বাৰে পঠিওৱা অথবা বিৰক্ত কৰা ।
किसीको नाचने में प्रवृत्त करना । कोई चीज हाथमें लेकर इधर उधर घुमाना । किसी को कोई काम करने के लिये बारबार दौड़ाना या तंग करना ।

नछत्र—[सं पुं] নক্ষত্ৰ ।
नक्षत्र ।

नजदीक—[वि] ওচৰত ।
निकट । पास ।

नजर—[सं स्त्री] দৃষ্টি, কৃপাদৃষ্টি, চকু দিয়া, ধ্যান, নজৰ লগা, উপঢৌকণ ।
दृष्टि । कृपादृष्टि । निगरानी ध्यान । परख । दृष्टि का बुरा प्रभाव । भेंट । उपहार ।

नजर बन्द—(वि) অন্তৰীণ ।
पहरे के अन्दर रखा हुआ ।
(सं पुं) ভেল্কিবাজী আদি খেল ।
जादू आदि का खेल ।

नजरा—(वि) যিযে দেখিলেই ভাল বেয়া বস্তু চিনি পায় ।
जो देखने ही अच्छी या बुरी चीज पहचान ले ।

नजराना— (क्रि स) নজৰ লগোৱা ।
नजर लगाना ।
(क्रि अ) নজৰ লগা ।
नजर लगना ।
(सं पुं) উপহাৰ, উপঢৌকন, পাগুৰী ।
भेंट । उपहार । पगड़ी ।

नजला—[सं पुं] পানী লগা [বেমাৰ ।]
जुकाम । सरदी ।

नजाकत—(सं स्त्री) সুকুমাৰতা ।
सुकुमारता ।

नजीक—[क्रि वि] ওচৰত ।
निकट ।

नजीर—(सं स्त्री) উদাহৰণ ।
उदाहरण ।

नट—[सं पुं] নট, নাটকৰ পাত্ৰ, খেল-তামচা দেখুওৱা জাতি বিশেষ ।
नाटक का पात्र । खेल तमाशे दिखानेवाली एक जाति ।

नटई—(सं स्त्री) গল, গলত দিয়া ঘণ্টা ।
गरदन । गले की घंटी ।

नटखट—(वि) দুষ্ট, চতুৰ ।
पाजी । चालाक ।

नटना—(क्रि अ) অভিনয় কৰা, স্বীকাৰ কৰি আসৈমতা ।
अभिनय करना । नाचना । कह कर मुकर जाना ।

नट नागर—[सं पुं] কৃষ্ণ, লীলা কৰোঁতাসকলৰ ভিতৰত শ্ৰেষ্ঠজন ।
लीला करनेवालों में श्रेष्ठ, कृष्ण।

नटनी, नटिन—(सं स्त्री) নাচনী, নট জাতিৰ তিৰোতা ।
नटकी या नट जातिकी स्त्री ।

नटराज, नटेश—(सं पुं) শিৱ, নটৰাজ ।
शिव ।

नटवर—[सं पुं] কৃষ্ণ ।
कृष्ण ।

नटी—[सं स्त्री] নট জাতিৰ তিৰোতা, নাচনী, অভিনেত্ৰী ।
नट जाति की स्त्री । नर्तकी । अभिनेत्री ।

नत—(वि) অবনত; বেকা হোৱা, নত ।
झुका हुआ ।

नतमस्तक—(वि) মূৰ দোঁৱাই, নতমস্তক ।
जिसका सिर किसीके आगे झुका हो ।

नतरु [रु]—(क्रि वि) নহলে, অন্যথা ।
नही तो । अन्यथा ।

नति—[सं स्त्री] নতি, মূৰ দোঁওৱা কাৰ্য্য, প্ৰণাম, বিনয় ।
'नत' होने की दशा । झुकाव । प्रणाम । विनय ।

नतीजा—[सं पुं] ফল, পৰিণাম ।
फल । परिणाम ।

नतु—(क्रि वि) নহলে ।
नहीं तो ।

नत्थी- (सं स्त्री) সংলগ্ন, সংলগ্ন কাগজ পত্ৰ ।
संलग्न । संलग्न कागजों का समूह ।

नथ—(सं स्त्री) নাকত পিন্ধা এবিধ অলঙ্কাৰ ।
नाक में पहनने का एक गहना ।

नथना—(सं पुं) নাকৰ আগভাগ (নাকৰ আগ)
नाक का अगला भाग ।
(क्रि अ) নাকৰ ফুটা কৰা, সংলগ্ন হোৱা বা কৰা ।
नत्थी होना या नाथा जाना । छेदा जाना ।

नदना—(क्रि अ) জন্তুৰ দৰে শব্দ কৰা, হেম্বেলিওৱা, গৰজা ।
पशुओं का सा शब्द करना । रंभाना । गरजना ।

नदारद -[वि] লুপ্ত হোৱা, নাই-কিয়া হোৱা ।
गायब । लुप्त ।

नदीश—(सं पुं) সমুদ্ৰ, সাগৰ ।
समुद्र ।

नधना—(क्रि अ) বলদ আদিক সাঙোৱা, সাঙোৱা, কোনো কাম আৰম্ভ কৰা ।
बैल आदि का जुतना । संयुक्त या सम्बद्ध होना । कार्य का आरम्भ होना ।

नकारना – [क्रि अ] অস্বীকাৰ কৰা ।
इनकार या अस्वीकार करना ।

ननद [दी] – (सं स्त्री) ননদ ।
पति की बहन ।

ननसार, ननिआउर, ननिहाल—
(सं पुं) মোমায়েকৰ ঘৰ ।
नाना का घर ।

नन्हा—[वि] সৰু ।
बहुत छोटा ।

नपाई—[सं स्त्री] জোখা কাম বা তাৰ বানচ ।
नापने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक ।

नपुंसक [सं पुं] নপুংসক, ক্লীব ।
हिजड़ा ।

नपुंसकता (सं स्त्री) নপুংসকতা ।
नपुंसक होने की अवस्था या भाव ।

नफर— (स ं पु ं) সেৱক, ব্যক্তি ।
सेवक, व्यक्ति ।

नफरत—(स ं स्त्री) ঘৃণা ।
घृणा ।

नफा—[स ं पु ं] লাভ ।
लाभ । फायदा ।

नफीरी—[स ं स्त्री] তুণ, টোন অথবা তূৰ্য্য বাদ্য ।
तुरही, बाजा ।

नफीस—(वि) ভাল, খুব ধুনীয়া ।
अच्छा । बढ़िया । सुन्दर ।

नबी—(स ं पु ं) নবী, পয়গম্বৰ, দেৱদূত [ইছলাম ধৰ্ম] ।
पैगम्बर ।

नब्ज-(स ं स्त्री) হাতৰ নাড়ী, নাড়ী ।
कलाई की नाड़ी ।

नभ— (स ं पु ं) আকাশ, মেঘ, বৰষুণ ।
आकाश । बादल । वर्षा ।

नभगामी, नभचर— (स ं पु ं) সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ অথবা তৰা, দেৱতা, পক্ষী ।
सूर्य, चन्द्र या तारा । देवता । पक्षी ।
[वि] আকাশত বিচৰণ কৰোঁতা ।
आकाश में चलने वाला ।

नभोवाणी— (स ं स्त्री) আকাশবাণী (ৰেডিও) ।
आकाशवाणी (रेडिओ) ।

नम – [वि] জেকা, তিতা, কোমল ।
भीगा हुआ । गीला । कोमल ।

नमक—(स ं पु ं) লোণ, নিমখ, লাৱণ্য ।
लवण । लावण्य ।

नमक-हराम— (स ं पु ं) কৃতঘ্ন, খাই পাত ফলা ।
कृतघ्न ।

नमक-हलाल – (स ं पु ं) কৃতজ্ঞ, স্বামী ভক্ত ।
कृतज्ञ । स्वामीभक्त ।

नमकीन—[वि] নুনীয়া, ধুনীয়া ।
नमक मिला हुआ या नमक के स्वादवाला । खूबसूरत ।
(स ं पु ं) নিমখেৰে বন্ধা আঞ্জা ।
नमक डालकर बनाया हुआ पकवान ।

नमना— (क्रि अ) মূৰ দোঁওৱা, প্ৰণাম কৰা ।
झुकना । प्रणाम करना ।

नमनीय—(वि) পূজনীয়, আদৰণীয়, ভাজ খুৱাব পৰা।
पूजनीय। लचीला।

नमनीयता—[সং স্ত্ৰী] কোমলতা।
लचीलापन।

नमाज—(সং স্ত্ৰী) মুছলমানসকলে খোদাক জনোৱা প্ৰাৰ্থনা।
मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना।

नमाना—(ক্রি স) মূৰ দোওৱা, বশ কৰা।
झुकाना। झुकाकर अपने अधीन करना।

नमी—(সং স্ত্ৰী) জেকা ভাব।
गीलापन।
[বি] বশ্যতা স্বীকাৰ কৰা জন।
झुकनेवाला।

नमूना—(সং পুং) নমুনা, উদাহৰণ, আদৰ্শ, আদি।
बानगी। उदाहरण। आदर्श ढाँचा।

नय—(সং পুং) নীতি, নম্ৰতা।
नीति। नम्रता।
(সং স্ত্ৰী) নদী।
नदी।

नयन—[সং পুং] চকু, লৈ অহা।
आँख। ले आना।

नयनी—[সং স্ত্ৰী] চকুৰ মণি।
आँख की पुतली।
[বি স্ত্ৰী] চকু থকা (স্ত্ৰী)।
आँखोंवाली।

नयशील—(বি) নীতিজ্ঞ, বিনীত।
नीतिज्ञ। विनीत।

नया—[বি] নতুন, অভিজ্ঞতাশূণ্য।
नवीन। हाल का। अनुभवहीन।

नर—[সং পুং] মানুহ, সেৱক, শিৱ, বিষ্ণু, অৰ্জ্জুন, এবিধ ছন্দ।
विष्णु। शिव। अर्जुन। पुरुष। सेवक। एक छंद।
(বি) পুৰুষ জাতি।
पुरुष जाति का।

नरकट—[সং পুং] বেতৰ দৰে এবিধ গছ, খাগৰি।
बेंतकी तरह का एक पौधा जिसके डण्ठलों से कलमें, चटाइयाँ आदि बनती हैं।

नरकुल, नरियर—[সং পুং]
নাৰিকল।
नारियल।

नरकेहरि, नरनाहर, नरहरि—
নৃসিংহ।
नर्सिंह।

नरगिस—[सं स्त्री] বগাফুল থকা এবিধ গছ।
सफेद फूलवाला एक पौधा।

नरदमा (हा)— (सं पुं) নলা, প্ৰণালী, নৰ্দ্দমা।
पनाला। मैला पानी का नल।

नर-देव— (सं पुं) বামুণ।
ब्राह्मण।

नर-पिशाच—(सं पुं) নৰপিশাচ, পিশাচৰ দৰে কাম কৰা মানুহ।
पिशाच जैसा काम करनेवाला आदमी।

नरमा—(सं स्त्री) এবিধ কপাহ, শিমলু তুলা, কাণৰ লতি।
एक प्रकार की कपास। सेमर की रूई। कान के नीचे का लटकता हुआ भाग।

नरमाना—[क्रि अ] নম্ৰ হোৱা।
नरम पड़ना, नम्र होना।
(क्रि स) নৰম অথবা কোমল হোৱা।
नरम या मुलायम करना।

नरमाहट, नरमी—(सं स्त्री) কোমলতা।
कोमलता।

नरमेध—(सं पुं) নৰমেধ, মানুহৰ মঙহেৰে কৰা যজ্ঞ।
मनुष्यों का संहार। प्राचीन काल का एक यज्ञ, जिसमें मनुष्य की बलि दी जाती थी।

नर-लोक—[सं पुं] জগৎ, পৃথিবী।
जगत्।

नरसिंघा— [सं पुं] তুৰৰ দৰে এক প্ৰকাৰৰ বাদ্য।
तुरही जैसा एक प्रकारका बाजा।

नराच, नाराच—[सं पुं] বাণ।
बाण।

नराट, नराधिप, नरिंद, नरेन्द्र, नरेश—[सं पुं] ৰজা।
राजा।

नरियाना—(क्रि वि) চিঞৰা।
पुकारना।

नरी— [सं स्त्री] মাকো। মছুৰা, ৰং দিয়া, ছাগলৰ চামৰা। সিজোৱা কোমল চামৰা নলী, নৰ্দ্দমা। সোণাৰীৰ জুই ফুউৱা পিতলৰ চুঙা।
सिझाया हुआ मुलायम चमड़ा। करघे की नार। नली। नाली। स्त्री।

नरेली—(स ं स्त्री) নাৰিকলৰ খোলা, অথবা নাৰিকলৰ হোকা, সৰু নাৰিকল।
नारियल की खोपड़ी। नारियल की खोपडी से बना हुआ हुक्का।

नर्त्तक—(स ं पु ं) নাচনী।
नाचनेवाला, नर्तकी [स्त्री]

नर्त्तना—(क्रि अ) নচা।
नाचना।

नर्त्तित—[वि] নাচি থকা।
नाचता हुआ।

नर्दन—[स ं स्त्री] গৰজা।
गरज।

नर्म—[स ं पु ं] পৰিহাস, খিজা, বিদূষক।
परिहास। विदूषक।
[वि] কোমল।
नरम।

नर्मद—[स ं पु ं] বহুৱা।
मसखरा।
(वि) ধেমেলীয়া, বিনোদপ্ৰিয়।
सुखद।

नर्मदेश्वर— [स ं पु ं] শিব, নৰ্মদা নদীত পোৱা এটি শিৱলিঙ্গ।
शिव।

नल—[स ं पु ं] নল খাগৰিৰ কলম। দময়ন্তীৰ স্বামী নলৰজা। ৰামৰ সৈন্য বাহিনীৰ এটা বান্দৰ, নল বন।
नरकट। कलम। दमयन्ती के पति। राम की सेना का एक बन्दर। चीज। नाली।

नलिका—(स ं स्त्री) এবিধ অস্ত্ৰ। অস্ত্ৰকোশ, তাঁতশালৰ এবিধ আহিলা।
'नाल' नामक अस्त्र। तूण।

नलिन—[स ं पु ं] পদুম, পানী, পক্ষী বিশেষ।
कमल, जल। सारस।

नलिनी—[सं स्त्री] ভেটফুল, কমলিনী, নদী।
मलिनी। नदी।

नली—(स ं स्त्री) সৰু নলী, বাঁহৰ চুঙা যাৰ এমূৰে বন্ধ কৰা থাকে, চুঙা।
छोटा या पतला नल। चोंगा। पैर की पिडली का अगला भाग।

नव—[वि] নতুন। ৯ সংখ্যা।
नवीन। 'नौ' की संख्या।

नवतन—(वि) নৱীন।
नवीन।

नवना— [क्रि अ] नूব দোওৱা। নম্ৰ অথবা বিনয়ী হোৱা।
झुकना। नम्र या विनीत होना।

नवनीत—(सं पुं) মাখন।
मक्खन।

नवम—(वि) নৱম।
नवाँ।

नव-मल्लिका- (सं स्त्री) নৱমল্লিকা ফুল। শেৱালি ফুল।
चमेली।

नवरात्र—(सं पुं) চ'ত আৰু আহিন মাহত দুৰ্গা পূজা হোৱা শুক্লপক্ষৰ প্ৰতিপদ তিথিৰ পৰা নৱমীলৈ দিন সমূহ।
चैत या आश्विन महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर नवमी तक की नौ तिथियाँ जिनमें दुर्गा का पूजन होता है।

नवल—[वि] নতুন, সুন্দৰ, যুৱক।
नवीन। सुन्दर। जवान।

नवससि, नवशशि— (सं पुं) দ্বিতীয়াৰ চন্দ্ৰ।
द्वितीया का चाँद।

नवाई-(सं स्त्री) বিনয়ী হোৱা বা নতহোৱা কাৰ্য্য অথবা ভাব।
नवने या विनीत होने की क्रिया या भाव।
[वि] নতুন।
नया।

नवागत--[वि] নবাগত, নতুনকৈ অহা।
नया आया हुआ।

नवाज-[वि] কৃপা কৰোঁতা।
कृपा करनेवाला।

नवाना—[क्रि स] নূব দোওৱা।
झुकाना। विनीत या नम्र करना।

नवान्न—(सं पुं) ন-খোৱা নবান্ন।
नया उपजा हुआ अनाज।

नवाबी—(सं स्त्री) নৱাবী, নৱাবৰ যোগ্য, নৱাবৰ শাসন কাল।
नवाब का पद, काम या शासन काल। नवाबों की सी अमीरी।

नवाह— [वि] ন দিনলৈ চলি থকা।
नौ दिनों तक चलता रहनेवाला।

नवीकरण - [सं पुं] নবীকৰণ, ন ৰূপ দিয়া।
नया रूप देना। जिसकी अवधि बीत चुकी हो उसे फिरसे आगेके

लिये वैध या नियमित करना।
(अं—रिग्यूअल)

नबीस— [सं पुं] নবিচ, লিখোঁতা।
लेखक। लिखनेवाला।

नवेला(सं पुं) যুবক, নতুন।
युवक। नया।

नवोढ़ा—(सं स्त्री) ন কইনা, যুৱতী, এবিধ নায়িকা।
नव-वधू। युवती स्त्री। नायिकाओं का एक भेद।

नवोदित - (वि) নতুনকৈ ওপজা, নবোদিত।
जो हालमें उत्पन्न हुआ हो या अस्तित्व में आया हो।

नव्य— (वि) নব্য, আধুনিক।
नया।

नशाना, नसना— [क्रि अ] নষ্ট হোৱা।
नष्ट होना।

नशा— [सं पुं] নিচা, ৰাগীয়াল বস্তু খোৱাৰ পিছত হোৱা মানসিক অৱস্থা। ৰাগীয়াল বস্তু, অহঙ্কাৰ।
मादक पदार्थो के सेवनसे ,उत्पन्न मानसिक दशा। मादक द्रव्य। घमण्ड।

नशाखोर, नशेबाज—(सं पुं)সদায় ৰাগীয়াল বস্তু খোৱা ব্যক্তি।
हमेशा नशेका सेवन करनेवाला।

नशाना, नसाना—[क्रि अ सं] নষ্ট হোৱা অথবা কৰা।
नष्ट होना या करना।

नशीला—[वि] মাদক, ৰাগীয়াল।
मादक। जिसपर नशेका प्रभाव हो।

नश्तर—[सं पुं] [ফোহা আদি কাটিবৰ বাবে] খুৱ, সৰু তীক্ষ্ণ-তৰ চুৰি।
फोड़े आदि चीरने का बहुत छोटा तेज चाकू।

नश्वर—[वि] নশ্বৰ, নষ্ট হবলগীয়া।
नष्ट हो जानेवाला।

नस— (सं स्त्री) তেজ চলাচল কৰা নাড়ী।
शरीर की रक्तवाहिनी नली।

नसल, नस्ल— (सं स्त्री) বংশ, জাতি।
वंश। कुल।

नसीब—(सं पुं) ভাগ্য।
भाग्य।

नसीहत—[सं स्त्री] উপদেশ।
भलाई का उपदेश।

सेनी—(सं स्त्री) জখলা।
सीढ़ी ।

स्थित—[वि] সংলগ্ন করা।
नत्थी किया हुआ।

स्य— [सं पुं] নস্য, নাকেৰে উজোৱা দৰব বা ধপাতৰ গুৰি।
सुँघनी ।

हछू—(सं पुं) বিযাৰ আগদিনা নখ কমাই জেতুকা পিন্ধোৱা একপ্ৰকাৰৰ পুৰণি প্ৰথা।
विवाह के पहले वरके नाखून काटने और मेंहदी लगाने की एक रीति ।

हर— (सं स्त्री)দোং, কৃত্ৰিম খাল।
सिचाई आदि के लिये बनाया कृत्रिम जल मार्ग ।

हरनी—[सं स्त्री] নখ কটা এবিধ সঁজুলি।
नाखून काटनेका एक औजार।

हलाना, नहवाना—(क्रि स) গা ধুউওৱা।
स्नान करवाना ।

हान—(सं पुं) গা ধোবা, স্নান-পৰ্ব্ব।
नहाने की क्रिया या भाव।
स्नान का पर्व ।

नहाना—(क्रि स) গা ধোৱা।
स्नान करना। तरल पदार्थ से सारे शरीर का तर होना।

नहारी—(सं स्त्री) জলপান।
जलपान ।

नहिक— [वि] নকাৰাত্মক, "ন" উত্তৰ।
नकारात्मक। ('अहिक' का विपर्याय)

नहीं—(अव्य) নাই।
निषेध या अस्वीकृति सूचित करने वाला एक अव्यय।

नहूसत—[सं स्त्री] অশুভ, অপ্ৰিয়।
मनहूसी ।

नाँ—(अव्य) নাই।
नही।

नाँधना— (क्रि म) জপিয়াই পাৰ হোৱা।
लांघना।

नाँद—[सं पुं] পোহনীয়া জন্তুক দানা-পানী দিয়া মাটিৰ অথবা কাঠৰ ডাঙৰ বাচন।
पशुओं को चारा खिलानेका बड़ा मिट्टी का बरतन ।

नाँदना—(क्रि अ) চিঞৰ বাখৰ কৰা, হাঁচি মৰা, আনন্দিত হোৱা।
शब्द करना। छींकना। आनन्दित या प्रसन्न होना, बुझने के पहले दीपक का भभकना।

नांदी—(स स्त्री) অভ্যুদয, কাব্য বা নাটকৰ আৰম্ভতে কোনো ৰজা বা দেৱতাক প্ৰশংসা বা স্তুতি কৰা শ্লোক।
अभ्युदय। मंगलाचरण।

नांदीमुख—(सं पु) নান্দীমুখ শ্ৰাধ, ন পুৰুষৰ শ্ৰাধ।
विवाहादि मंगल अवसरो पर होनेवाला मागलिक श्राद्ध।

नाँय, नाँव, नाँवरा, नाँउ—[स पुं] নাম।
नाम।

नाँह—(स पुं) স্বামী।
स्वामी।
[अव्य] নহয়।
नही।

नाइन, नाउन—(स स्त्री) নাপিতনী, নাপিতৰ স্ত্ৰী।
नाई की स्त्री।

नाई—[स स्त्री] একেদশা, সমান দশা, সদৃশ।
समानदशा।
[अव्य] সমান, নিচিনা।
समान। की तरह।

नाई, नाऊ—(सं पुं) নাপিত।
हज्जाम।

ना-उम्मेद—(वि) নিৰাশ।
निराश।

नाक—(स स्त्री) নাক, মৰ্য্যাদা, সন্মান, শ্ৰেষ্ঠ।
नासिका। नेटा। प्रतिष्ठा।
(स पुं) ঘৰিয়ালৰ নিচিনা এবিধ জল জন্তু, স্বৰ্গ, আকাশ, ইন্দ্ৰ।
मगर की भाँति एक जलजन्तु। स्वर्ग। आकाश। इन्द्र।
काटना— মৰ্য্যাদা হানি হোৱা। बेइज्जती होना।
—रखना— সন্মান অটুট ৰখা। प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

नाकना—(क्रि स) অতিক্ৰম কৰা, পৰাজিত কৰা।
लाँघना। मात करना।

नाका—[स पुं] মোহনা নদী মুখ, বাটৰ মুখ, বেজিৰ বিন্ধা।

रास्ते का मुहाना। दुर्ग, नगर आदि का प्रवेश द्वार। पहरे की चौकी। सूईमें का छेद।

नाकाबंदी-[सं स्त्री] পথ নিৰোধ, বাট বন্ধ কৰা কাৰ্য্য।

शत्रु को घेरने के लिये आनेजाने का मार्ग रोकना।

नाखना—(क्रि स) নষ্ট কৰা, পেলাই দিয়া, অস্ত্ৰ সঞ্চালন কৰা।

नष्ट करना। फेंकना। डालना। शस्त्र चलाना। रखना।

ना-खुश—[वि] অপ্ৰসন্ন।

अप्रसन्न।

नाखून—(सं पुं) নখ।

नख।

नाग—(सं पुं) ফণাযুক্ত সাপ, হাতী, বগি-তাম, পাণ, এখন দেশৰ নাম।

फन वाला साँप। एक प्राचीन जाति। हाथी। रांगा। सीसा। पान। ताम्बूल। बादल। आठ की संख्या।

नाग-झाग-(सं पुं) আফিং, কানি।

अफीम।

नागना-(क्रि स) নোহোৱা নাইবা পৃথক কৰা।

नागा या अन्तर करना।

नागफनी—(सं स्त्री) সাগৰ-ফেণা।

एक प्रकार काँटेदार पौधा। (अं)—कैक्टस।

नागबेल—(सं स्त्री) পাণ।

पान।

नागर—(वि) চতুৰ, নগৰৰ লগত সম্বন্ধিত।

नगर से सम्बन्ध रखनेवाला। चतुर।

(सं पुं) নগৰবাসী, সৎলোক।

नगर का निवासी। भला आदमी।

नागर-मोथा— [सं पुं] এক-প্ৰকাৰ বনৌষধি।

एक प्रकार की घास जिसकी जड दवा के काम में आती है।

नागराज—(सं पुं) ঐৰাৱত, অনন্ত নাগ।

ऐरावत। शेषनाग।

नागरी—(सं स्त्री) নগৰবাসী চতুৰ স্ত্ৰী, চতুৰ তিৰোতা; দেৱ-নাগৰী লিপি।

नगर की रहनेवाली चतुर स्त्री। औरत। देवनागरी लिपि। हिन्दीभाषा।

नागलोक—(सं पुं) নাগলোক, পাতাল।
पाताल।

नागवार-[वि] অসহ্য, অপ্ৰিয়।
अप्रिय।

नागा—[सं पुं] নাগা, নাগা জাতি, নাগাপাহাৰ, অন্তৰ বা বিৰাম।
नंगे रहनेवाला एक शैव सम्प्रदाय। एक पहाड़ी जाति। नियत समय पर होते रहनेवाले कामका किसी बार न होना।

नागिन—(सं स्त्री) নাগিনী।
नाग का मादा।

नागेसर (नागकेसर)–[सं पुं] নাহৰ, নাগেশ্বৰ।
एक प्रकार का गंधयुक्त बीज वाला पेड़।

नाचकूद—(सं स्त्री) নাচ-বাগ, যোগ্যতা প্ৰকাশৰ নিৰৰ্থক প্ৰয়াস।
नाच तमाशा। योग्यता, शौर्य आदि प्रकट करनेका निरर्थक प्रयत्न।

नाचना—(क्रि अ) নচা, গীত, বাজনাৰ স্বৰ আৰু তাল অনুসৰি ছেও ধৰি ধৰি হাত ভৰি লৰোৱা।
नृत्य करना। मँडराना। प्रयत्न में दौड़धूप करना। क्रोधमें उछलना-कूदना।

नाज—(सं पुं) গা-জোকাৰণি, অহঙ্কাৰ, গৰ্ব।
नखरा। घमण्ड, गर्व।

नाजायज-(वि) অবৈধ, অনুচিত।
अवैध। अनुचित।

नाजिम—[सं पुं] ৰাজ্যপাল (মুচলমান ৰাজত্বৰ)
न्यायालय सम्बन्धी कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता।

नाजिर–(सं पुं)নিৰীক্ষক, নাজিৰ–টেকেলাবিলাকৰ ওপৰৰ বিষয়া। বেশ্যাৰ দালাল।
निरीक्षक। न्यायालय के लिपिकों का अधिकारी। वेश्याओं का दलाल।

नाजी-(सं पुं)জাৰ্মানীৰ এটা দল।
जर्मनी की एक पार्टी (नात्सीपार्टी)

नाजुक—(वि) কোমল, পাতল, সূক্ষ্ম, মৰ্মস্থান।
कोमल। पतला। सूक्ष्म। गूढ़। जोखिमका।

नाजो—[वि स्त्री] মৰমৰ, প্ৰিয়তমা, কোমলাঙ্গী ।
दुलारी । प्रियतमा । कोमलांगी ।

नाटा—[वि] চুটি-চাপৰ, কঁটীয়া ।
छोटे डील डौलका । कम ऊँचा ।

नाट्य—(सं पुं) নাট্য-অভিনয়, ভাও ।
अभिनय । स्वाँग ।

नाठना—[क्रि स] নষ্ট কৰা ।
नष्ट करना ।
[क्रि अ] নষ্ট হোৱা, পলোৱা ।
नष्ट होना । भागना ।

नाड़—(सं स्त्री) ডিঙি ।
गर्दन ।

नाड़ा—(सं पुं) জৰী, দেৱতাৰ অৰ্থে অৰ্পিত ৰঙা সূতা, পেটৰ ভিতৰৰ নলী বা অন্ত্ৰ ।
इजार बन्द । देवताओंपर चढाया जानेवाला लाल सूत । पेटके अंदर की नली ।

नाड़ी—(सं स्त्री) নাড়ী, শিৰ ।
नली । धमनी । डोरी ।

नात—(सं पुं) সম্বন্ধ, সম্বন্ধীয়া, কুটুম্ব ।
नाता । नातेदार ।
[सं स्त्री] স্তুতি ।
स्तुति ।

नातरि, नातरु—(अव्य) অন্যথা, নহলে ।
अन्यथा ।

नाता—(सं पुं) সম্বন্ধ ।
सम्बन्ध ।

नाती—(सं पुं) নাতি লৰা ।
बेटी का बेटा ।

नाते—(क्रि वि) সম্বন্ধত, কাৰণে ।
सम्बन्ध से । वास्ते ।

नातेदार—[वि] কুটুম্ব ।
सम्बन्धी ।

नाथना—[क्रि स] গৰু ম'হৰ নাকী লগোৱা । সংলগ্ন কৰা ।
बल । भैंसे आदि की नाक छेद कर उसमें रस्सी पिरोना । नत्थी करना ।

नाद—(सं पुं) গৰ্জন, ধ্বনি, সঙ্গীত শব্দ । संगीत ।

नादना—(क्रि स) বজোৱা ।
बजाना ।
(क्रि अ) বাজি উঠা, গৰজি উঠা, প্ৰফুল্লিত হোৱা ।
बजना । गरजना । प्रफुल्लित होना ।

नाहान—[वि] মূৰ্খ । मूर्ख ।

नादिर—[वि] অদ্ভুত, আচৰিত ।
अद्‌भुत । अनोखा ।

नादिरशाही (सं स्त्री) ইচ্ছা-মতে আজ্ঞা জাৰি কৰা, দুৰ্ঘোৰ অত্যাচাৰ ।
मनमानी आज्ञाएँ प्रचलित करना। भारी अन्धेर या अत्याचार ।
[वि]অতি কঠোৰ বা বিকট ।
बहुत कठोर या विकट ।

नाधना-(क्रि स) বলদ, ম'হ আদিক গাড়ীত জোৰা, লগোৱা, কাম আৰম্ভ কৰা ।
बैल, भैंसा आदिको गाड़ी आदिमें जोतना । लगाना । आरंभ करना ।

नाना-(वि)নানাবিধ, অনেক প্ৰকাৰৰ ।
अनेक प्रकार के । अनेक ।
(सं पुं)মাতামহ । ককাদেউতা, পদিনা ।
मातामह । पुदीना ।
(क्रि स) অৱনত কৰা, প্ৰবেশ কৰোৱা ।
झुकाना । डालना या घुसाना ।

नानिहाल(ननिहाल)(सं पुं) মাতামহৰ ঘৰ ।
नाना नानी का घर ।

नानी—[सं स्त्री] মাতামহী ।
माता की माता ।

ना-नुकर—(सं पुं) অস্বীকাৰ ।
इन्कार ।

नाप—[सं स्त्री] মাপ, পৰিমাণ, জোখা কাৰ্য্য ।
परिमाण । माप । नापनेका काम। मान । लम्बाई नापने की वस्तु ।

नाप-जोख—(सं स्त्री) জোখ-মাখ ।
किसी चीज को नापने जोखने की क्रिया या भाव ।

नाप-तौल—(सं स्त्री) জোখ-মাখ ।
किसी चीज को तौलने की क्रिया या भाव ।

नापना—(क्रि स) জোখলোৱা, গভীৰতা, অনুমান কৰা, জ্ঞানৰ গভীৰতা বুজি চোৱা ।
मापना । किसी बातकी गहराई या किसी व्यक्ति की जानकारी आदि का पता लगाना ।

नापसंद—[वि] অপচন্দ, মনত নলগা ।
जो पसन्द न हो ।

नापाक—(वि) অপবিত্র, মলিয়ন।
अपवित्र। मैला-कुचैला।

ना-पास—[वि] উত্তীর্ণ নোহোরা ফেইল।
अनुत्तीर্ण।

नापित—(सं पुं) না[illegible]।
हज्जाम।

नाबदान—[सं पुं] মল-মূত্র আৰু মলি[illegible] পানী ওলাই যোৱা নলী।
मल-मूत्र और गन्देपानी की नली।

ना-[illegible]ालिग—(वि) নাবালক।
अ-वयस्क।

नाबूद—(वि) বেযা।
नष्ट।

नाभि—[सं स्त्री] নাভি, নাই, মাজভাগ, পৃথিবীৰ অভ্যন্তৰৰ এক কল্পিত অংশ।
केन्द्र। पेट का मध्य भाग। पृथ्वीके भीतरी मध्य भाग का कल्पित अंश।

ना-मंजूर—(वि) অস্বীকাৰ।
अस्वीकार।

नाम—[सं पुं] নাম, প্ৰসিদ্ধি।
संज्ञा। यश या कीर्ति सूचक प्रसिद्धि।

=**न[illegible]ाम उछालना**— বদনাম [illegible]ৰা।
बदनामी करना।

=**नाम लेना**—গুণ গোৱা।
गुणगान करना।

=**नाम पाना**— প্ৰসিদ্ধ হোৱা।
प्रसिद्ध होना।

नामकरण—(सं पुं) গণনি, নামকৰণ।
बच्चोंके नाम रखनेका संस्कार। नाम रखना।

नाम-जद—[वि] প্ৰসিদ্ধ, সব লোৱে ভালকৈ জনা।
नामांकित। प्रसिद्ध।

नामजदगी—(सं स्त्री) মনোনীত কৰণ।
चुनाव आदिमें खड़ होने के लिये किसी का नाम निश्चित करना।

नामदार, नामवर—(वि) প্ৰসিদ্ধ।
प्रसिद्ध।

नाम-धाम—[सं पुं] নাম, ঠিকনা আদি।
नाम और रहनेका पता ठिकाना।

नामनिशान—[सं पुं] চিন-চাব।
चिह्न।

नाम-पट्ट—[सं पुं] জাননী-তক্তা, नाम आदि लिखा थका तक्ता।

वह पट्ट जिसपर नाम आदि अंकित रहता है। (साइनबोर्ड)

नामर्द—[वि] নপুংসক, ভীৰু।
नपुंसक। डरपोक।

नामर्दी—[सं स्त्री] ভীৰুতা, দুৰ্বলতা।
नपुंसकता। कायरता।

नाम-लेवा—(सं पुं) নাম-লওঁতা, সতি-সন্তান।
नाम लेनेवाला। सन्तान-सन्तति।

नाम-शेष-(वि) নাম মাত্ৰ অৱশেষ, ভগ্নাৱশেষ।
जिसका केवल नाम रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। मृत।

नाम हँसाई-(सं स्त्री) লোক-নিন্দা, অপযশ।
लोक निन्दा। बदनामी।

नामांकित—(वि) নাম-লিখিত, নাম জলা, প্ৰখ্যাত।
जिसपर नाम लिखा या खुदा हो। नामजद। प्रसिद्ध।

नामांतर—[सं पुं] পৰ্য্যায়।
पर्याय।

नामावली—(सं स्त्री) নামৰ তালিকা, নামাৱলী—দেৱতাৰ নামৰ চাব থকা চেলেং।
नामों की सूची या तालिका। वह कपड़ा जिसपर राम-कृष्ण आदि नाम छपे रहते हैं।

नामी—(वि) নামজলা, প্ৰসিদ্ধ।
प्रसिद्ध।

ना-मुनासिब—[वि] অনুচিত।
अनुचित।

ना-मुमकिन—(वि) অসম্ভৱ।
असम्भव।

नायन—(सं स्त्री) নাপিতনী।
नाई की स्त्री।

नायब—(सं पुं) মুক্তিয়াৰ।
मुख्तार। सहायक।

नायाब—[वि] দুষ্প্ৰাপ্য, উৎকৃষ্ট।
जो जल्दी न मिले। अप्राप्य या दुष्प्राप्य। बहुत बढ़िया।

नारंगी—(सं स्त्री) কমলা টেঙা।
कमला नीबू।
[वि] পকা কমলাৰ বৰণীয়া।
पीलापन लिये कुछ लाल रंग का।

नार—(सं स्त्री) ডিঙি, নাল। স্ত্ৰী
गरदन। नाल। नारी।
(सं पुं) পানী, সমূহ, ভাণ্ডাৰ, ডাঙৰ জৰী।
जल। समूह। भण्डार। नाल। मोटा रस्सा। नाला।

नारकी—(वि) নাৰকী- নৰকৰ যোগ্য, পাপী ।
बहुत बड़ा पापी । नरकमें रहने योग्य या रहनेवाला ।

नारद—(सं पुं) ব্ৰহ্মাৰ পুতেক, দহজনা দেৱৰ্ষিৰ এজনা প্ৰসিদ্ধ ঋষি, টুটকীয়া কথা কৈ দ্বন্দ লগোৱা ।
ब्रह्माके पुत्र हरिभक्त देवर्षि । लोगों में झगड़ा करानेवाला व्यक्ति ।
[वि] পানীৰ অধিপতি, বংশজাত ।
जल देनेवाला । वंशज ।

नारा—(सं पुं) জয়গীত, নলা ।
জয়ধ্বনি ।
घोष । [स्लोगन] । नाला ।

नाराच—(सं पुं) লোৰ শৰ ।
लोहे का वाण ।

नाराज—[वि] অসন্মত, অপ্ৰসন্ন ।
अप्रसन्न ।

नाराजगी—[सं स्त्री] অসন্মতি, অপ্ৰসন্নতা ।

नाराजी—(सं स्त्री) अप्रसन्नता ।
नाराजगी ।
(वि) ৰাজী নোহোৱা ।
जो राजी न हो ।

नारि—(सं) তিৰোতা, সমূহ, ভাণ্ডাৰ ।
नारी । समूह । भण्डार ।

नाल—(सं स्त्री) নাল, কোনো বস্তুৰ হাতেৰে ধৰা ভাগ । পদুম আদিৰ ঠাৰি । ঘেঁহু, ধান আদিৰ খেৰ । ঘোঁৰাৰ খুৰাত লগোৱা লোৰ চটা ।
कमल, कुमुद आदि फूलों की पीली लम्बी डण्डी । पौधे का डण्ठल । गेहूँ, जौ आदि की बाल, जिसमें दाने होते हैं । बन्दूक की नली । घोड़े की टापमें लगाया जानेवाला अर्धचन्द्राकार लोहा ।

नालकी-[सं स्त्री] এবিধ দোলা ।
एक प्रकार का पालकी

नालायक-(वि) অলায়ক, অযোগ্য ।
अयोग्य ।

नालायकी—[सं स्त्री] অযোগ্যতা ।
अयोग्य ।

नालिश-[सं स्त्री] অভিযোগ, মোকৰ্দমা ।
अभियोग ।

नाली—[सं स्त्री] সৰু নলী । সৰু নলা ।
छोटा नाला । पतला नल ।

नाव—[सं स्त्री] নাও ।
नौका ।

नावक—(सं पुं) শৰ, নাৱিক ।
वाण । नाविक ।

नावना—(क्रि स) অৱনত কৰা ।
झुकाना । डालना ।

नाविक—(सं पुं) নাৱৰীয়া, নাও বা জাহাজ চলাওঁতা ।
मल्लाह । जहाज चलानेवाला या जहाज पर काम करनेवाला व्यक्ति ।

नाशन—(सं पुं) বিনাশ ।
नाश करना ।
(वि) নাশকাৰী ।
नाश करनेवाला ।

नाशना—[क्रि स] নাশ কৰা ।
नाश करना ।

नाशी-(वि) নাশকাৰী, নশ্বৰ ।
नाशक । नश्वर ।

नाश्ता—(सं पुं) জলপান ।
जलपान ।

ना-समझ-(वि) অবুজ, মূৰ্খ ।
मूर्ख ।

नासा, नासिका—[सं स्त्री] নাক ।
नाक ।

नासीर—[सं पुं] সৈন্যদলৰ প্ৰথম শাৰী ।
सेना का अगला भाग ।

नासूर—(सं पुं) বিহফোঁহা ।
शरीर में कुछ भीतर तक होने वाला व्रण या घाव ।

नाह—[सं पुं] নাথ ।
नाथ ।

नाहक—(क्रि वि) অনাহকতে ।
व्यर्थ ।

नाहर—(सं पुं) নাহৰ ফুটুকী ।
शेर ।

नाहीं—(अव्य) নহয়, নাই ।
नहीं । कभी नहीं ।

निंदक—(वि) নিন্দুক ।
निन्दा करनेवाला ।

निंदना—(क्रि स) নিন্দা কৰা ।
निंदा करना ।

निंदरिया—[सं स्त्री] টোপনি ।
नींद ।

निंदाना-[क्रि स] নিৰোৱা, নিৰাই দিয়া ।
पौधे को निराना ।

निंद्रालु—(वि) টোপনি গধুৰা ।
जिसे नींद आ रही हो ।

निंदिया (सं स्त्री) টোপনি ।
नींद ।

निंद्य—(वि) নিন্দনীয় ।
निंदनीय ।

नि:शंक—[वि] নিৰ্ভয় ।
निर्भय ।

नि:शुल्क—(वि) বিনামাচুলে ।
बिना शुल्क का ।

नि:श्रेयस-(सं पुं) মোক্ষ, কল্যাণ ।
मोक्ष । कल्याण ।

नि:संग—(वि) অকলশৰীয়া ।
निर्लिप्त । अकेला ।

नि:सत्व, नि:सार-অসাৰ, সাৰহীন ।
जिसमें कुछ भी तत्व या सार न हो ।

नि:सरण—(सं पुं) উলিওৱা, উলিওৱা বাট ।
निकलना । निकलने का मार्ग ।

नि:सारण—(सं पुं)নিস্থত হোৱা ।
कोई चीज या तरल पदार्थ का धीरे धीरे बाहर निकालना ।

नि:-सीम—(वि) অসীম, বৰ ডাঙৰ ।
असीम । बहुत बड़ा या अधिक ।

निस्पंद—(वि) স্পন্দনহীন ।
जिसमें किसी प्रकार का स्पन्दन न हो ।

नि:स्पृह—[वि] ইচ্ছা বা বাঞ্চা নকৰা ।
निर्लोभ ।

नि:स्वन—(वि) নিঃশব্দ ।
नि:शब्द ।
[सं पुं] ধ্বনি ।
ध्वनि ।

निअर—(अव्य) ওচৰত, সমান ।
निकट ।
(वि)
समान ।

निअराना—(क्रि स) ওচৰ পোৱা ।
पास पहुँचना ।
(क्रि अ) ওচৰলৈ অনা বা পোৱা ।
पास आना या पहुँचना ।

निकंदन—[सं पुं] নাশ, বধ ।
नाश, वध ।

निकंदना—(क्रि स) নষ্ট কৰা ।
नष्ट करना ।

निकट—[वि] ওচৰৰ ।
पास का । जिसमें अधिक अन्तर न हो ।

(क्रि वि) ওচৰ।
पास।

निकट-पूर्व—[सं पुं] এছিয়া মহাদেশৰ পশ্চিম ভাগ। ওচৰৰ পুব ঠাইৰ।
एशिया महादेश का पश्चिमी भाग।

निकटस्थ--[वि] ওচৰৰ।
पास का।

निकम्मा—[वि] অকৰ্ম্মা, নিকৰ্ম্মা, নিৰৰ্থক।
जो कोई काम न करता हो। निरर्थक।

निकर—(सं पुं) সমূহ, ৰাশি, ভড়াল, আণ্ডাৰ ওয়াৰ। (আধা পায়জামা)
समूह। राशि। कोश। आधा पायजामा।

निकलंक [की]—(वि) দোষ শূণ্য, কলঙ্ক বিহীন।
दोप रहित।

निकलना— (क्रि अ) বাহিৰলৈ অহা, পাৰ হোৱা। উদয় হোৱা, উৎপন্ন হোৱা। সিদ্ধ হোৱা। অতিবাহিত হোৱা। তলোৱা।
बाहर आना। पार होना। उदय होना। उत्पन्न होना। सिद्ध होना। व्यतीत होना।

निकलवाना— (क्रि स) বাহিৰ কৰাই দিয়া (উলিওৱা)।
'निकलना' का प्रेरणार्थक।

निकष—(सं पुं) তলোৱাৰৰ খাপ। কষটী শিল।
तलवारकी म्यान। कसौटी का पत्थर।

निकसना— (क्रि अ) বাহিৰ ওলোৱা।
निकलना।

निकाई—[सं स्त्री] উত্তমতা, সুন্দৰতা। উপকাৰ।
अच्छापन। सुन्दरता। भलाई।

निकाम—(वि) নিষ্কাম, খুব বেচি।
निष्काम। निकम्मा। बहुत अधिक।
(क्रि वि) ব্যৰ্থ।
व्यर्थ। बेफायदा।

निकाय—(सं पुं) সমূহ, নিকায়, অনুষ্ঠান [সমিতি], ঘৰ।
समूह। कोई विशेष कार्य करने के लिये बना हुआ कुछ व्यक्तियों

का संघटित समूह। (अं-बाडी) ढेर। मकान।

निकालना—[ক্রি স] বাহিৰলৈ অনা বা বাহিৰ কৰা। যাত্রা কৰা। নিশ্চয় কৰা। আৰম্ভ কৰা। সমাধান কৰা। কম কৰা। উলিওৱা।

बाहर करना या लाना। गमन कराना या चलाना। निश्चित करना। स्पष्ट करना। आरंभ करना। कम करना। हल करना। आविष्कृत करना। बरामद करना।

निकाला—[सं पुं] উলিওৱা অথবা বাহিৰ কৰা কাৰ্য্য অথবা ভাব। কালাপানীৰ শাস্তি।

निकालने की क्रिया या भाव। निर्वासन का दण्ड।

निकाश—(सं पुं) আকৃতি, সাম্য, ওচৰ, ক্ষিতিজ।

आकृति। समानता। समीपता। क्षितिज।

निकास—[सं पुं] বাহিৰ হোৱা বা কৰা কাৰ্য্য অথবা ভাব। পথাৰ, উদ্‌গম, আয়ৰ পথ। আয় সমানতা।

निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। मैदान। उद्‌गम। आमदनी का रास्ता। आय। बराबरी।

निकासना—(ক্রি স) উলিওৱা। বাহিৰ কৰা।

निकालना।

निकासी—(सं स्त्री) উলিওৱা বা বাহিৰ কৰা কাৰ্য্য নাইবা ভাব। যাত্রা কৰি ওলোৱা। আয়, সম্পত্তিৰ পৰা পোৱা লাভাংশ, লাভ; বিক্রী কৰিবৰ বাবে বস্তু বাহিৰলৈ পঠিওৱা, ৰপ্তানী।

निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। यात्रा के लिये निकलना। आय। किसी सम्पत्ति से लाभ के रूप में प्राप्त होनेवाला धन। लाभ। बिक्री के लिये माल का बाहर जाना। माल की खपत।

निकाह—(सं पुं) বিয়া। [মুছলমান সকলৰ]।

विवाह (मुसलमानी)

निकुंज—[सं पुं] নিকুঞ্জ, লতাচ্ছাদিত মণ্ডপ।

लता मंडप।

निकृष्ट—[वि] বেয়া, নিঃকিন।
खराब। बुरा।

निकेत [न]—(सं पुं) ঘৰ, ঠাই, ভঁড়াল।
घर। स्थान। भण्डार।

निक्षिप्त—[वि] দলিওৱা, পৰি ত্যক্ত, পঠিওৱা, জমা কৰা, নিক্ষিপ্ত।
फेंका हुआ। त्यक्त। भेजा हुआ। जमा किया हुआ।

निक्षेपण—[सं पुं] দলিওৱা, দিয়া, চলোৱা, এৰা।
फेंकना। डालना। चलाना। छोड़ना।

निखटक– (क्रि वि) নিঃসন্দেহে, নির্ভয়ে।
बेखटके। बेधड़क।

निखट्टू—[वि] নিকৰ্ম্মা, ধোদ।
जो कुछ कमाता न हो।

निखरना— [क्रि अ] ধুই নিকা হোৱা।
मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल होना।

निखरा—(वि) পৰিষ্কাৰ, উজ্জ্বল।
साफ। उज्वल। (स्त्री-निखरी)

निखरी—[सं स्त्री] ঘিউত ভজা।
घी में पकी हुई रसोई।

निखार—[सं पुं] নির্মলতা।
निर्मलता।

निखारना--(क्रि स) পৰিষ্কাৰ অথবা নিৰ্ম্মল কৰা।
साफ या निर्मल करना।

निखालिस--(वि) বিশুদ্ধ, ভেজাল নোহোৱা।
विशुद्ध। जिसमें मिलावट न हो।

निखिल--(वि) সম্পূৰ্ণ, অখিল।
सम्पूर्ण। सारा।

निखुटना- (क्रि अ) শেষ হোৱা।
समाप्त होना।

निखोट- (वि) নিখুট, স্পষ্ট অথবা উন্মুক্ত।
जिसमें खोटाई या दोष न हो।
स्पष्ट या खुला हुआ।
[क्रि वि] নিঃসংকোচে, নির্ভয়চিত্তে।
बिना संकोच के। बेधड़क।

निखोटना-- [क्रि स] নখেৰে আঁচোৰা।
नाखून से नोचना।

निगड़- (सं स्त्री) হাতীক বন্ধা শিকলি। কয়েদীৰ ভৰিত পিন্ধোৱা শিকলি।

हाथी के पैरमें बाँधनेका सिक्कड़। बेड़ी।

निगद (न)--(सं पुं) কথন।
कथन।

निगम--(सं पुं) পথ, বেদ, বজাৰ, মেলা, ব্যবসায়। কৰপোৰেচন, নিগম।
मार्ग। वेद। बाजार। मेला। व्यापार। व्यापारियों का संघ। नगर की व्यवस्था करनेवाली बड़ी संस्था (कॉरपोरेशन)।

निगमन—[सं पुं] ন্যায়ালয়ত প্রমাণিত কৰা কথা সম্পর্কে আন্তম কথন। কোনো মিউনিচিপালিটী অথবা ক্ষুদ্র নিকায়ক নিয়মৰ [কৰপোৰেচন] ৰূপ দিয়া কাৰ্য্য।
न्यायालय में सिद्ध की हुई बात के सम्बन्ध में अन्तिम कथन। किसी संस्था को निगम का रूप देने की क्रिया या भाव। (अं—इनकारपोरेशन)

निगरानी—(सं स्त्री)চোৱা-মেলা, চকু দিয়া।
निरीक्षण। देखरेख।

निगलना—(क्रि स) গিলি পেলোৱা, অইনৰ ধন আত্মসাৎ কৰা।
लीलना। दूसरेका धन दबा लेना।

निगहबान—(सं पुं) ৰখীয়া, ৰক্ষক।
रक्षक।

निगाली—(सं स्त्री) হোকাৰ কাঠৰ নলিচা।
हुक्के की काठकी नली।

निगाह—[सं स्त्री] দৃষ্টি, চাৱনী, কৃপাদৃষ্টি।
दृष्टि। चितवन। कृपा दृष्टि। परख।

निगुरा—(वि) গুৰুৰ দ্বাৰা দীক্ষা নোলোৱা জন।
जिसने गुरुसे दीक्षा न ली हो।

निगूढ़—(वि) গোপনীয়, নিগূঢ়।
अत्यन्त गुप्त।

निगोड़ा—(वि) দুৰ্ভগীয়া, দুষ্ট, বেয়া।
अभागा। दुष्ट। बुरा। (स्त्री—निगोड़ी)।

निग्रह—(सं पुं) অবৰোধ, নিয়ন্ত্ৰণ, দমন, শাস্তি, পীড়ন, বন্ধন।
अवरोध। नियन्त्रण। दमन। दण्ड। पीड़न। बन्धन।

নিগ্ৰহনা–[ক্রি স] ধৰা, থমোৱা, শাস্তি দিয়া ।
পকড়না । রোকনা । দণ্ড দেনা ।

নিঘংটু–[সং পুং] বৈদিক শব্দাৱলীৰ টীকা বিষয়ক গ্ৰন্থ বিশেষ ।
वैदिक शब्दों का कोश ।

নিঘটনা–[ক্রি অ] খুব বেছি অথবা নিশ্চিত ভাবে ঘটা ।
बहुत अधिक या निश्चित रूपसे घटना ।

নিঘৰ-ঘট—(বি) থান-থিতি নোহোৱা, নিলাজ, জেদী ।
जिसका कहीं घर घाट या ठौर ठिकाना न हो ।
निर्लज्ज । ढीठ ।

নিচয়—(সং পুং) সমূহ, নিশ্চয়, সঞ্চয়, পুঁজি ।
समूह । निश्चय । संचय । किसी विशेष कार्य के लिये जमा किया जानेवाला धन । (अं-फण्ड)

নিচলা—(বি) তলৰ, স্থিৰ, শান্ত, নিশ্চল ।
नीचे का । स्थिर । शान्त ।

নিচাই—[সং স্ত্রী] নীচতা, ঠেকমনা ।
नीचापन । नीचता ।

নিচুড়না–(ক্রি অ) অঁটা, কাপোৰ আদি ধুই পানীখিনি অঁাি উলিওৱা কাৰ্য্য ।
कपड़े, फल आदि को मरोड़ य दबाकर जल या रस निकलना

নিচোড়–(সং পুং) সাৰ, অঁটোৱা পিছত ওলোৱা বস্তু । অঁট কাৰ্য্য । বক্তব্য অথবা মন্তব্য সাৰাংশ ।
सार । निचोड़ने पर निकलनेवाल अंश । निचोड़ने की क्रिया य भाव । कथन या मत का सारांश

নিচোড়না–(ক্রি স) পুতি থোৱা কোনো বস্তুৰ সাৰ অংশ উলি ওৱা, বহুতো ধন হৰণ কৰা ।
गारना । किसी चीज का सा भाग निकालना । अधिकतम धन हरण कर लेना ।

নিচোল—[সং পুং] আচ্ছাদন, কাপোৰ ।
आच्छादन । वस्त्र ।

নিচৌঁহাঁ—(বি) তলমুৱা ।
नीचे झुका हुआ ।

নিছত্ৰ—(বি) ছাতি বা ছত্ৰ নোহোৱা ।
बिना छत्र का ।

निछावर—(सं स्त्री) উৎসর্গ, মঙ্গল কার্য্যৰ বাবে দেৱ-দেৱীলৈ আগবঢ়োৱা কার্য্য ।
किसी की मगल कामनाके उद्देश्य से कोई चीज उसके मस्तक पर से घुमाकर दान करने या कही रख आने का उपचार या टोटका । उतारा । उत्सर्ग ।

निछोह [ो]—(वि) নির্মোহী, নিষ্ঠুৰ, মোহহীন ।
जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम न हो । निष्ठुर ।

निज—(वि) নিজা ।
अपना । मुख्य । ठीक ।
(अव्य) নিশ্চিত ভাৱে । মুখ্যত: ।
निश्चित रूप से । मुख्यतः ।

निजाअ—[सं पुं] কাজিয়া, শত্ৰুতা ।
झगड़ा । शत्रुता ।

निजाई—(वि) বিবাদাস্পদ, কাজিয়া থকা ।
विवादास्पद ।

निजाम—[सं पुं] ব্যৱস্থা, হায়দৰাবাদৰ পূৰণি শাসকৰ উপাধি ।
व्यवस्था । हैदराबाद के भूतपूर्व शासकों की उपाधि ।

निजी—(वि)নিজৰ । ব্যক্তিগত ।
निजका । व्यक्तिगत । जिसके स्वामित्व, अधिकार आदि का औरोंसे कोई सम्बन्ध न हो ।

निजु—[अव्य] নিশ্চিত ভাবে
निश्चयपूर्वक ।

निजू—(वि) নিজৰ ।
निजका अपना ।

निझरना—(क्रि अ) ভাল ভাবে জৰি ওলোৱা (পানী) সাৰ-অংশ নোহোৱা হোৱা, নিজকে নির্দ্দোষী প্রমাণিত কৰা ।
अच्छी तरह झड़ना । सार भागसे रहित या वंचित होना । अपने आपको निर्दोष सिद्ध करना ।

निठल्ला, निठल्लू—(वि) নিষ্কর্ম্মা, অকর্ম্মণ্য ।
जिसके पास कोई काम धन्धा न हो । खाली ।

निठुर—[वि] নিষ্ঠুৰ ।
निष्ठुर ।

निठुराई—(सं स्त्री) নিষ্ঠুৰতা ।
निष्ठुरता ।

निडर—(वि) নিৰ্ভীক, সাহসী।
जिसे किसी का डर न हो।
निर्भय। ढीठ।

निढाल—(वि) পৰিশ্ৰান্ত, ক্লান্ত, ভাগকৰা।
थका मांदा। अशक्त।

नितंब—(सं पुं) পাছফালে কঁকালৰ তলৰ দুই তপিনাৰ মাজৰ ভাগ।
चूतड़। कन्धा।

नितंबिनी-(सं स्त्री)নিতম্বিনী, বহল আৰু সুন্দৰ নিতম্ব থকা তিৰোতা।
सुन्दर नितंबोंवाली स्त्री।

नित, निति—(अव्य) সদায়।
नित्य। हमेशा।

नितांत—(वि) খুব বেছি, সম্পূৰ্ণ, পৰম।
बहुत अधिक। बिलकुल। परम।

नित्य—(वि) নিত্য, চিৰন্তন।
शाश्वत।
(अव्य) প্ৰতিদিন, সদায়।
प्रतिदिन। सदा।

नित्यकर्म, नित्यक्रिया—[सं पुं]
নিত্যকৰ্ম।
नित्य का काम। प्रतिदिन आवश्यक रूपसे किये जानेवाले कार्य।

निथरना—[क्रि अ] গেদ পৰা।
तरल पदार्थ में घुली चीज या मैल आदिका नीचे बैठ जाना।
[क्रि स॰-निथारना]

निदरना—(क्रि स) অনাদৰ কৰা, হেঁচা দিয়া।
निरादर करना। दबाना।

निदर्शना—[सं स्त्री] নিদৰ্শনা অৰ্থালংকাৰ।
एक अर्थालंकार।

निदाघ—(सं पुं) গৰম, ৰ'দ, গ্ৰীষ্মকাল।
गरमी। धूप। ग्रीष्म ऋतु।

निदान—[सं पुं] মূল কাৰণ, ৰোগ চিনাক্ত কৰা শাস্ত্ৰ, শেষ।
मूल या आदि कारण। रोग की पहचान। रोग की पहचान विषयक विद्या या शास्त्र। अंत।
(अव्य) শেষত, এতেকে।
अन्त में। इसलिये।

निदिध्यासन—[सं पु] বাৰ বাৰ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰা।
बारबार ध्यानमें लाना।

निदेश—(सं पुं) বিধান, আদেশ, বিশেষ নিয়ম।
शासन। आज्ञा। कथन। किसी आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के

सम्बन्ध में लगाई हुई शर्त या बन्धन । (अं-प्राबिजन)

निदोष—[वि] নিৰ্দ্দোষ, দোষশূন্য
निर्दोष ।

निद्रालु—[वि] নিদ্ৰালু, টোপনি গধুৰা ।
जिसे नींद आ रही हो ।

निधन—(सं पुं) নিধন, মৃত্যু, মৰণ ।
विनाश । मृत्यु ।
[वि] নিৰ্ধনী, ধনহীন ।
निर्धन ।

निधान-(सं पुं) আধাৰ, ভঁৰাল ।
आधार । कोश । वह जिसमें किसी गुण की परिपूर्णता हो ।

निधि-(सं स्त्री) ভঁৰাল, ৯ সংখ্যাসূচক শব্দ, কুবেৰৰ ৯বিধ ৰত্ন, কোনো সংস্থাৰ বা বিশেষ কামৰ কাৰণে সঞ্চিত ধন ।
गड़ा हुआ खजाना । नौकी संख्या का सूचक शब्द । कुबेरके नौ रत्न । किसी विशेष कार्यके लिये नियत धन ।
किसी संस्था के आय व्यय के हेत रक्षित धन । समुद्र । आगार ।

निधिपाल—(सं पुं) যাৰ তত্বাৱধানত কোনো নিধি ৰখা হয় ।
जिसकी देख रेख में कोई निधि रखी गयी हो ।

निनादना—[क्रि अ] শব্দ কৰা, চিঞৰা ।
निनाद या शब्द करना ।

निनारा—(वि) অন্যতম, সৰ্বোৎকৃষ্ট ।
न्यारा । सबसे श्रेष्ठ या अलग ।

निनावाँ—[सं पुं] মুখৰ ভিতৰত ওলোৱা সৰু সৰু ফোহা ।
मुँह के भीतरी भाग में निकलने वाले छोटे छाले ।

निपजना-[क्रि अ] উৎপন্ন হোৱা, তৈয়াৰ হোৱা, পৰিপুষ্ট হোৱা ।
उत्पन्न होना । बनना । पुष्ट या पक्का होना ।

निपट—(अव्य) বিশুদ্ধ, কেৱল, একদম, সমুদায় ।
विशुद्ध । केवल । सरासर । बिलकुल ।

निपटना—[क्रि अ] নিবৃত্ত হোৱা, সমাপ্ত বা পূৰ্ণ হোৱা ।
निवृत्त होना । समाप्त या पूरा होना । खतम होना ।

निपटाना—(क्रि स) সম্পূৰ্ণ কৰা, আদায় দিয়া, শেষ বা স্থিৰ কৰা। पूरा करना। चुकाना। समाप्त या तै करना।

निपटारा—(सं पुं) সমাপ্তি, মীমাংসা।
निपटने की क्रिया या भाव। किसी बात के तै या निश्चित होने की क्रिया या भाव। अन्त। फैसला।

निपात—[सं पुं॰] নিপাত, পতন, বিনাশ, ক্ষয়, ব্যাকৰণৰ সূত্ৰ-মতে নহৈ আন বিধিৰে গঠিত হোৱা শব্দ।
पतन। विनाश। मृत्यु। क्षय। वह शब्द जो व्याकरणके नियमों के विरुद्ध बना हो और फलतः अशुद्ध हो।
(वि) লঠা, পাত নথকা। बिना पत्तों का

निपातना—(क्रि स) ধ্বংস কৰা, মাৰি পেলোৱা।
काटकर या योंही नीचे गिराना। नष्ट करना। मार डालना।

निपीड़ना—[क्रि स] উপদ্ৰৱ কৰা, কষ্ট দিয়া।
दबना। कष्ट पहुँचाना।

निपुणता, निपुणाई, निपुनाई—(सं स्त्री) নিপুণতা, দক্ষতা। दक्षता।

निपूत (ा)—[वि] অপুত্ৰক। जिसे पुत्र न हो। (स्त्री-निपूती)।

निफन—(वि) সম্পূৰ্ণ।
पूर्ण।
(क्रि वि) সম্পূৰ্ণ ৰকমে।
पूरी तरह से।

निफरना—[क्रि अ] বিন্ধি ইফাল-সিফাল ওলোৱা, স্পষ্ট হোৱা।
चुभ या धँसकर आर पार होना। खुलना। स्पष्ट होना।

निबंध—(सं पुं) লৰ-চৰ হব নোৱাৰাকৈ বন্ধা নিয়ম, প্ৰবন্ধ, ৰচনা।
अच्छी तरह बाँधने की क्रिया या भाव। बंधन। लेख।

निबंधन—(सं पुं) বন্ধন, কাৰণ, পঞ্জী কৰণ।
बाँधना। बंधन। कारण। पंजीकृत या रजिस्टरी होना।

निबटना (बड़ना)—(क्रि अ) নিবৃত্ত হোৱা, সমাপ্ত হোৱা।
निपटना। निवृत्त होना। समाप्त या खतम होना।

निबरना—[क्रि अ] পৃথক হোৱা, মুক্ত হোৱা, বাধা, আঁতৰি যোৱা, সমাপ্ত বা সম্পূৰ্ণ হোৱা।
अलग होना। मुक्त होना। अड़चन दूर होना। समाप्त या पूरा होना।

निबहना—(क्रि अ) অব্যাহতি পোৱা, নিৰ্বাহ হোৱা, সম্পাদন হোৱা।
निभना। निर्वाह होना।

निबहुरना—[क्रि अ] ক'ৰবালৈ গৈ প্ৰত্যাৱৰ্ত্তন নকৰা।
कहीं जाकर वहाँसे न लौटना।

निबाह—(सं पुं) নিৰ্বাহ, জীৱিকা, আদেশ পালন।
निर्वाह। गुजारा। आज्ञा आदि का पालन।

निबाहना—[क्रि स] নিৰ্বাহ কৰা, মুক্ত কৰা।
निर्वाह करना। छुड़ाना।

निबुकना—(क्रिअ) অব্যাহতি পোৱা, অৱসৰ পোৱা।
कामसे छुट्टी पाना।

निबेड़ना,निबेरना,निबेहना-[क्रि स] দাসত্ব পৰা মুক্ত কৰা, মুক্তি দিয়া।
बन्धनसे छुड़ाना। चुनना। हटाना।

निभ-(सं पुं) জ্যোতি, জোনাক।
प्रकाश। चमक। चन्द्रमा की चाँदनी। लपट।
(वि) নিচিনা, তুল্য।
तुल्य।

निभना—(क्रि अ) নিৰ্বাহ হোৱা, অব্যাহতি পোৱা, চলি থকা।
गुजारा होना। छुट्टी या छुटकारा पाना। जारी या चलता रहना। पूरा होना।

निभरम—[वि] শঙ্কাহীন।
शंका या भ्रम रहित।
(क्रि वि) নিৰ্ভয়ে, শঙ্কাহীন ভাবে।
बेधड़क।

निभरोसी—(वि) আশ্ৰয়বিহীন, নিৰাশ্ৰয়।
निराश्रय।

निभाना —(क्रि स) পালন কৰা, চৰিতাৰ্থ কৰা, নিৰ্বাহ কৰা।
सबंध व्यवहार आदि ठीक तरह से चलाये रहना। चरितार्थ करना। चलाना।

निभृत—(वि) নিভৃত, নিশ্চিত, অটল, স্থিৰ, শান্ত, ভৰা।
निश्चित। अटल। स्थिर। शांत। भरा हुआ।

निमंत्रण— (सं पुं) নিমন্ত্ৰণ, আহ্বান, মতা কাৰ্য্য।
आह्वान। न्योता। बुलावा।

निमंत्रना—(क्रि स) নিমন্ত্ৰণ দিয়া।
निमंत्रण देना।

निमज्जन—(सं पुं) পানীত গা জুবুৰিয়াই কৰা স্নান।
गोता लगाकर स्नान।

निमज्जना—(क्रि अ) বুৰ মৰা।
डुब दिया।
गोता लगाना। लीन होना।

निमान—(सं पुं)দ ঠাই, জলাশয়।
नीचा स्थान। जलाशय।

निमाना—(वि) এঢলীয়া, নম্ৰ, বিনীত।
नीचे की ओर गया हुआ। ढालुआँ। नम्र। विनीत।

निमानिया—[वि] স্বেচ্ছাচাৰী।
मनमानी करने वाला।

निमानी-[सं स्त्री] স্বেচ্ছাচাৰ।
मनमानी। स्वेच्छाचार।

निमि-(सं स्त्री) নিম গছ।
नीम वृक्ष।

निमिख, निमिष, निमेख-[सं पुं]
নিমিষ, নিমেষ।
निमेष।

निमीलन— [सं पुं] মুদ যোৱা।
জপোৱা।
मूँदना। सिकोड़ना।

निमुँहा—(वि) মুখহীন, নিমুৰা।
बिना मुँह का। जो बहुत बोलना न जानता हो।

निमेखना—(क्रि स) নিমিষ কঢ়া।
চকুৰ পলক পেলোৱা।
पलक गिराना।

निमेष— [सं पुं] চকুৰ পলক পেলোৱা। চকুৰ পচাৰৰ সমান সময়। মুহূৰ্ত্ত।
पलक गिराना या झपकना। पल भर का समय।

निम्नगा—[सं स्त्री] নদী।
नदी।

नियंता— (सं पुं) নিয়ামক, চলাওঁতা, শাসন কৰোঁতা।
नियम बनानेवाला। कार्य चलाने वाला। शासक।

नियत—(বি) কোনো নিয়মাদিৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট। কোনো পদ বা কাৰ্য্যত নিযুক্ত।
नियम प्रथा आदि के द्वारा निश्चित किया हुआ। पद, कार्य आदि पर नियुक्त किया हुआ।

नियति—[सं स्त्री] নিযতি-(ইয়াৰ কাম নিৰ্দ্ধাৰিত বা লৰচৰ নহয়), ভাগ্য, অদৃষ্ট। নিযুক্ত হোৱা ক্ৰিযা।
नियत होने की क्रिया या भाव। भाग्य। अदृष्ट।

नियमतः—(क्रि वि) নিযম মতে।
नियम के अनुसार।

नियमन—(सं पुं) নিযম বন্ধন।
नियम बद्ध करना।

नियराना—(क्रि अ) ওচৰ হোৱা।
नजदीक होना।
(क्रि स) ওচৰ চপোৱা।
निकट पहुँचना।

नियाज (सं स्त्री) ইচ্ছা, দীনতা, মুছলমানৰ প্ৰথানুসৰি মৃতকৰ উদ্দেশ্যে দিযা ভোজ।
इच्छा। दीनता। बड़ोंका प्रसाद। मुसलमानी प्रथा के अनुसार मृतक के उद्देश्य से दिया जानेवाला भोजन।

नियामक—(सं पुं) নিয়মৰ দ্বাৰা আবদ্ধ কৰি ৰাখোঁতা। নিয়ম কৰোঁতা।
नियम बनाने या नियमों में बाँध रखनेवाला। विधान बनाने वाला।

नियार— [सं पुं] সোণাৰীৰ দোকানৰ জাবৰ-জোথৰ।
जौहरियों की दूकान का कूड़ा-कर्कट।

नियोक्ता— [सं पुं] নিয়োগ কৰোঁতা।
नियोग करनेवाला।

नियोग—[सं पुं] নিযুক্ত, নিয়োগ, পতিৰ পৰা সন্তানোৎপত্তি নোহোৱা অৱস্থাত সন্তান উৎপত্তিৰ বাবে আন কোনো লোকক নিযুক্ত কৰা পুৰণি প্ৰথা।
नियोजित करना या किसी काम में लगाना। प्राचीन काल की वह प्रथा जिसमें पतिसे सन्तान न होनेपर देवर या पतिके गोत्रज दूसरे किसी व्यक्ति से सन्तान उत्पन्न कराया जाता था।

नियोजन—(सं पुं) নিযুক্তি।
नियुक्ति।

निरंकुश—(वि) বাধা বা দমন কৰোঁতা নথকা। মুকলি-মুৰীয়া।
जिसके लिये कोई अंकुश या रुकावट न हो। परम स्वच्छन्द।

निरंग—(वि) অঙ্গহীন, বৰ্ণহীন।
जिसके अंग न हो। वर्ण हीन।

निरंजन—[वि] নিৰ্মল, তেজোময়, জ্যোতিৰ্ময়, অবিনাশী।
बिना आँजन या काजल का। मायासे अलग। अविनाशी।
(सं पुं) পৰমেশ্বৰ।
परमात्मा।

निरजनो—[वि] নিৰঞ্জন সম্বন্ধী, ঈশ্বৰৰ নিৰঞ্জন ৰূপৰ উপাসক।
निरंजन सम्बन्धी। ईश्वरके निरंजन रूप का उपासक।
(सं स्त्री) আৰতিৰ পাত্ৰ।
आरती का पात्र।

निरक्ष-देश-(सं पुं)বিষুব ৰেখাৰ ওচৰৰ দেশ, য'ত দিন ৰাতি প্ৰায় সমান হয়।
निरक्ष रेखा के पास के देश जिनमें दिन और रात लगभग बराबर होते हैं।

निरक्षर-(वि) আখৰ চিনি নোপোৱা নিৰক্ষৰ।
जिसका अक्षर ज्ञान न हो। अपढ़।

निरक्ष रेखा-- (सं स्त्री) বিষুব ৰেখা।
पृथ्वी के मध्य की पूर्व पश्चिम विस्तृत कल्पित रेखा।

निरखना—(क्रि स) নিৰীক্ষণ কৰা।
देखना।

निरच्छ—[वि] অন্ধ।
अन्धा।

निरत—(वि) কামত লাগি থকা, লীন।
किसी काममें लगा हुआ। लीन।

निरतिशय—[वि] পৰম, চৰম, আটাইতকৈ।
परम। सबसे बढ़कर।

निरधार—[सं पुं] নিশ্চয়।
निश्चय।
[क्रि वि] নিশ্চিতৰূপে।
निश्चित रूप से।

निरधारना—[क्रि स] নিৰ্দ্ধাৰণ কৰা, মনতে বুজিলোৱা।
निर्धारण या निश्चय करना। मनमें समझना।

निरन्न—(वि) অন্নহীন, নিৰাহাৰ।
अन्न रहित। निराहार।

निरपना—(वि) লোকৰ, আনৰ।
पराया। गैर।

निरपवाद—(वि) নিষ্কলঙ্ক।
जिसमें कोई अपवाद या दोष न हो।

निरपेक्ष-(वि) নিৰপেক্ষ, পক্ষপাত ন থকা।
बे-परवा। तटस्थ।

निरपेक्षता-[सं स्त्री] নিৰপেক্ষতা, কাৰোফলীয়া নোহোৱা।
निरपेक्ष होने की अवस्था या भाव।

निरबंसो—(वि)বংশহীন, নিৰ্ব্বংশ।
वंश हीन। निर्वंश।

निरभिमान—[वि] নিৰহঙ্কাৰ।
अहंकार रहित।

निरभिलाष—[वि] কোনো অভি-লাষ নথকা।
जिसमें कोई अभिलाषा न हो।

निरभ्र—[वि] মেঘ শূন্য।
बिना बादल का।

निरमना, निर्मोना—(क्रि स)
निर्माण करा।
निर्माण करना।

निरमूलना—[क्रि स] নিৰ্মূল কৰা।
निर्मूल करना।

निरमोल (क) —[वि] অমূল্য।
अनमोल।

निरय—(सं पुं) নৰক।
नरक।

निरर्थ, निरर्थक— (वि) নিৰৰ্থক, অৰ্থহীন।
जिसका कोई अर्थ न हो। निष्फल।

निरवच्छिन्न—(वि) নিৰন্তৰ।
सिलसिलेवार।

निरवधि—[वि] যাৰ কোনো নিশ্চিত সময় নাই, অসীম।
जिसकी कोई अवधि न हो। असीम।
(क्रि वि) একেৰাহে।
लगातार।

निरवलम्ब—[वि] অৱলম্বন হীন, যাৰ কোনো সহায়ক নাই।
अवलम्ब हीन। जिसका कोई सहायक न हो।

निरवारना—[क्रि स] মুক্ত কৰা, এৰুৱা, নিৰ্ণয় কৰা।

मुक्त करना। हटाना। निणय करना।

निरबाहना-[क्रि अ] निर्ব্বাহ কৰা। निर्वाह करना।

निरशन-[सं पुं] উপবাস। उपवास।

निरस—(वि) नीৰস, ৰসহীন। नीरस। रसहीन।

निरसन-(सं पुं) দূৰ কৰা, পূৰ্ব্বৰ সিদ্ধান্ত বা আজ্ঞা নাকচ কৰা, নিৰাকৰণ।
दूर करना। पहले का निश्चय या आज्ञा आदि रद्द करना। निराकरण। परिहार। निकालना। पदच्युत करना।

निरस्त—[वि] ক্ষান্ত, বিমুখ। নাকচ বা ৰদ কৰা।
जिसका निरसन हुआ या किया गया हो। जो रद या व्यर्थ कर दिया गया हो।

निरस्त्रीकरण—(सं पुं) নিৰস্ত্ৰ বা অস্ত্ৰহীন কৰা কাৰ্য্য।
निरस्त्र करने की क्रिया या भाव।

निरा—(वि) সুকীয়া, বিশুদ্ধ, কেৱল, সমূদায়।
बिना मेल का। खालिस केवल। निपट। बिलकुल।

निराई [सं स्त्री] নিৰোৱা কাৰ্য্য। খেতিৰ বন গুচাই পৰিষ্কাৰ কৰা কাৰ্য্য।
निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

निराकरण—[सं पुं] পৃথকীকৰণ, ভাবি চিন্তি ঠিৰাং কৰা, নিৰ্ণয় কৰা, নাকচ কৰা। মতৰ খণ্ডন।
अलग अलग करना। सोच समझ कर ठीक निर्णय करना या परिणाम निकालना। रद्द करना। परिहार। किसी की युक्ति का खंडन।

निराट-[वि] বিশুদ্ধ, অকলশৰীয়া নিৰল, নিৰ্জন।
विशुद्ध। अकेला। निराला (स्थान) निर्जन।
(अव्य) সুকীয়া, কেৱল। निरा। केवल।

निराटा-[वि] আচৰিত। अनोखा।

निराधार—[वि] আধাৰ হীন, নিৰ্মূল, যি প্ৰামাণিক নহয়, যাৰ সহায়তা কৰোঁতা নাই।
जिसका कोई आधार न हो। निर्मूल। जो प्रमाणों से सिद्ध न

हो सके। जिसकी सहायता करनेवाला कोई न हो।

निराना—(क्रि स) নিৰোৱা, খেতিৰ বন গুচাই পৰিষ্কাৰ কৰা।
पौधों के आस पास की घास निकालना।

निरामय—[वि] নীৰোগ।
नीरोग।

निराल—[वि] বিশুদ্ধ, পবিত্ৰ।
विशुद्ध। खालिस।

निराला—(सं पुं) নিৰল ঠাই।
एकान्त स्थान।
[वि] নিৰ্জন, সম্পূৰ্ণ বেলেগ ধৰণৰ।
निर्जन। सबसे अलग तरह का। अद्भुत। विलक्षण। अनूठा।

निरावृत— (वि) অনাবৃত, ঢাকি নৰখা।
बिना ढँका हुआ।

निरासी—[वि] উদাস।
उदास।

निराहार—(वि) অনাহাৰ। ব্ৰত, উপবাস আদি।
जिसने भोजन न किया हो। जिसमें भोजन न किया जाता हो (व्रत आदि)।

निरीक्षक—(सं पुं) চাওঁতা, নিৰীক্ষণ কাৰী।
देखनेवाला। निरीक्षण या देख रेख करनेवाला। (इन्स्पेक्टर)

निरीक्षण—(सं पुं) চোৱা, চোৱা-মেলা, চোৱাৰ মুদ্ৰা বা ভঙ্গিমা।
देखना। देख रेख। देखने की मुद्रा या ढंग।

निरीश्वर—(वि) ঈশ্বৰ বিহীন।
ईश्वर से रहित।

निरुआरना— [क्रि स] নিবাৰণ কৰা। দূৰ কৰা।
निवारण करना। दूर करना।

निरुक्त— (वि) নিশ্চিত ভাবে কোৱা। নিশ্চিত।
निश्चित रूप से कहा हुआ। निश्चित किया हुआ।
[सं पुं] ছয় বেদাঙ্গৰ এবিধ—য'ত বৈদিক শব্দৰ ব্যাখ্যা পোৱা যায়। শব্দৰ ব্যুৎপত্তিৰ লগত সম্বন্ধিত ব্যাকৰণৰ অংশ।
छः वेदांगोंमें से एक जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है। शब्दों की व्युत्पत्ति वाला व्याकरणका अंश।

निरुक्ति—[सं स्त्री] শব্দৰ ব্যুৎপত্তি, এবিধ অলংকাৰ।

शब्द की व्युत्पत्ति । एक अलं-कार ।

निरुत्साह—(वि) উৎসাহহীন।
उत्साहहीन ।

निरुत्सुक— [वि] নিৰুৎসাহী।
নিৰুৎসুক।
जो उत्सुक न हो ।

निरुदन— (सं पुं) ৰাসায়নিক পদাৰ্থ নাইবা উদ্ভিদ আদিৰ পৰা পানী ভাগ উলিয়াই পেলোৱা।
रासायनिक तत्व या वनस्पति आदि में से जल का अंश निका-लना या सुखाना ।

निरुद्देश्य – [वि] উদ্দেশ্যহীন।
जिसका कोई उद्देश्य न हो ।
(क्रि वि) বিনা উদ্দেশ্যে।
बिना किसी उद्देश्य के ।

निरुद्यम — (वि) যাৰ কোনো উদ্যম বা কাম নাই, অকৰ্মা।
जिसके हाथमें कोई उद्यम या काम न हो । निकम्मा ।

निरुपम – (वि) যাৰ কোনো উপমা নাই। অনুপম।
उपमा रहित । बेजोड़ ।

निरुपाधि (क)—[वि] যি সকলো উপাধি, বন্ধন, বাধা, আদিৰ পৰা মুক্ত। সাংসাৰিক মায়া-জালৰ পৰা মুক্ত।
जो सब प्रकार की उपाधियों, बन्धनों और बाधाओं से रहित हो । सांसारिक माया जाल से मुक्त । निर्विघ्न ।
[सं पुं] ব্ৰহ্মা।
ब्रह्मा ।

निरुवरना-(क्रि अ) কঠিন সমস্যা দূৰ হোৱা।
कठिनता या उलझन दूर होना ।

निरुवार— [सं पुं] এৰোৱা, অব্যাহতি, সমাধান, প্ৰতিকাৰ, মীমাংসা।
छुड़ाना । छुटकारा । सुलझाने का काम । निपटाना । फैसला ।

निरूढ़—(सं पुं) উৎপন্ন, প্ৰসিদ্ধ, বিয়া নোহোৱা।
उत्पन्न । प्रसिद्ध । बिन ब्याहा ।

निरूपण— (सं पुं) ভাবি-চিন্তি কৰা নিৰ্ণয়।
सोच समझकर किया जानेवाला विचार या निर्णय ।

निरूपना—(क्रि अ) নিৰূপণ কৰা।
निरूपण करना।

निरेखना—(क्रि स) চোৱা।
निरखना। देखना।

निरोग (गी)—(सं पुं) নীৰোগ, সুস্থ, ৰোগহীন।
स्वस्थ। चंगा। आरोग्य प्राप्त।

निरोध—(सं पुं) বাধা, আটক, অবৰোধ, ঘেৰ, নাশ, চিত্তবৃত্তি দমন।
रोक। रुकावट। अवरोध। घेरा। नाश। चित्त वृत्तियोको रोकना।

निरोधक, निरोधी— [वि] আটক কাৰী।
रोकनेवाला।

निर्ख—(सं पुं) দৰ-দাম।
भाव। दर।

निर्खबंदी- (स स्त्री) দৰ-দাম ঠিক কৰা।
दर निश्चित करना।

निर्गंध—(वि) গন্ধহীন।
गंध रहित।

निर्गत—(वि) ওলোৱা, বাজহোৱা।
निकला या आया हुआ।

निर्गमना—(क्रि अ) ওলোৱা।
निकलना।

निर्गुण—(वि) সত্ব, ৰজ, তম এই তিনিগুণৰ বাহিৰ, গুণহীন।
सत्व, रज, तम इन तीनो गुणों से परे। गुण रहित।

निर्गुणिया—(वि) নিৰ্গুণী-নিৰ্গুণ ব্ৰহ্মৰ উপাসনাকাৰী।
निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने वाला।

निर्ग्रंथ—(वि) গ্ৰন্থৰ লগত যাৰ কোনো সম্পৰ্ক নাই।
जिसका ग्रन्थसे सम्बन्ध न हो।

निर्घात—[सं पुं] বিনাশ, ধুমুহা, ভূমিকম্প।
विनाश। आँधी। भूकम्प। आघात।

निर्घिन— (वि) অত্যন্ত নীচ প্ৰবৃত্তিযুক্ত।
बहुत ही नीच प्रवृत्तिवाला।

निर्जित—(वि) যাক সম্পূৰ্ণ ৰূপে জয় কৰা হৈছে।
जो पूरी तरह से जीत लिया गया हो।

निर्जीव— [वि] জীৱ নথকা, প্ৰাণশূণ্য, নিৰুৎসাহ।
जीव रहित। अशक्त। उत्साह हीन।

निर्झर—[सं पुं] निजৰা, সুঁতি।
पानीका झरना। सोता।

निर्झरिणी—(सं स्त्री) नदी, निजৰা।
नदी। झरना।

निर्णायक— (सं पुं) निৰ্ণয় কৰোঁতা।
वह जो निर्णय या फैसला करे।

निर्दंभ—(वि) নিৰহংকাৰ।
अहंकार शून्य।

निर्दई, निर्दयी–(वि) নিৰ্দয়, নিষ্ঠুৰ।
निर्दय। निष्ठुर।
পাত নথকা, যি কোনো দলবদ্ধ নহয়, নিৰপেক্ষ।
जिसमें दल या पत्र न हो। जो किसी दल में न हो। तटस्थ।

निर्दहना—(क्रि स) জলোৱা।
जलाना।

निर्द्वंद्व (द्व)—(वि) বিৰোধহীন, বিৰোধ ভাৱ শূন্য।
जिसका विरोध करनेवाला कोई न हो। स्वच्छन्द।

निर्धंधा—[वि] জীৱিকা নথকা।
बे-रोजगार।

निर्धारण-[सं पुं] নিৰ্ণয়, মীমাংসা।
कोई बात निश्चित करना।
न्याय में एक ही प्रकार के बहुत से पदार्थों में से गुण, कर्म आदि की समानता के आधार पर अलग अलग वर्ग बनाना।

निर्धारना—(क्रि अ) নিৰ্ণয় কৰা।
निश्चित करना।

निर्धूत—(वि) ভালকৈ ধোৱা, স্বচ্ছ। পবিত্ৰ।
अच्छी तरह धुला हुआ। स्वच्छ।

निर्निमेष—(क्रि वि) অনিমিষ বা অনিমেষ।
एकटक।
(वि) চকুৰ পচাৰ নপৰা।
जिसकी या जिसमें पलक न गिरे।

निर्बहना—(क्रि अ) পাৰ হোৱা।
पार होना। अलग या दूर होना।
पालन होना।

निर्बाध (धित)-[वि] বাধা হীন।
बाधा रहित।
(क्रि वि) বাধাহীন ভাৱে।
बिना किसी बाधा के।

निर्बोध—[वि] অজ্ঞান।
अज्ञान।

निर्भर—(वि) পূৰ্ণ, মিলিত, আশ্ৰিত।
पूर्ण। मिला हुआ। आश्रित।

निभ्रांत—[वि] ভ্ৰান্তিহীন, অভ্ৰান্ত।
जिसमें कोई भ्रम या सन्देह न हो। जिसको कोई भ्रम या सन्देह न हो।

निर्मत्सर—[वि] ঈৰ্ষাহীন।
जिसके मन में मत्सर या ईर्ष्या-डाह न हो।

निर्मम—(वि) নিষ্ঠুৰ, নিৰ্ম্মম, নিষ্কাম, নিৰ্দয়তাপূৰ্ণ।
जिसे ममता या मोह न हो। निर्मोही। निष्काम। निर्दयता-पूर्ण।

निर्मोना—[क्रि स] নিৰ্ম্মাণ কৰা।
बनाना।

निर्माल्य—(सं पुं) দেৱতাৰ উদ্দেশ্যে অৰ্পিত পদাৰ্থ।
किसी देवता पर चढ़ा हुआ पदार्थ।

निर्मोही—(वि) মায়ামোহ নোহোৱা।
जिसे मोह या ममता न हो।

निर्यात—(सं पुं) ৰপ্তানি বস্তু।
देश से बाहर जानेवाला माल।
[वि] ৰপ্তানি।
जो देशके बाहर भेजा गया हो।

निर्यातन—(सं पुं) পোটক, প্ৰতিহিংসা, উৎপীড়ন, ৰপ্তানি কৰা, মাৰি পেলোৱা।
बदला लेना। अत्याचार करना। मार डालना। निर्यात करना।

निर्यास—[स पुं] ৰস, সাৰ।
रस। गोंद।

निर्लिप्त—[वि] অনাসক্ত, লেঠা নথকা।
अनासक्त।

निर्वंश—[वि] বংশ নথকা। একেবাৰে বংশ লোপ বা উচ্ছন্ন হোৱা।
जिसका वंश नष्ट हो गया हो।

निर्वचन—(सं पुं) নিৰূপণ, শব্দৰ নিৰুক্তি বা ব্যুৎপত্তি।
निरूपण। शब्द की निरुक्ति या व्युत्पत्ति।
[वि] স্তব্ধ মৌন।
चुप। मौन।

निर्वसन—(वि) বস্ত্ৰহীন, উলঙ্গ।
वस्त्रहीन। नंगा।

निर्वहना-[क्रि अ] নিৰ্বাহ হোৱা।
निर्वाह होना।

निर्वाचक—(सं पुं) নিৰ্বাচনকাৰী।
चुननेवाला।

निर्वाण—[स ं पु ं] নুমুৱা কাৰ্য্য, সমাপ্তি, অস্ত যোৱা, মৃত্যু, মুক্তি ।
बुझना । समाप्ति । अस्त होना । मृत्यु । मुक्ति ।

निर्वापण—(स ं पु ं) নুমুৱা কাৰ্য্য, বিনাশ, সমাপ্ত কৰা ।
बुझने या बुझाने का काम । विनाश । अन्त या समाप्ति करना ।

निर्वासन—(स ं पु ं) দেশান্তৰ ।
मार डालना देश निकाला ।

निर्वाह—[स ं पु ं] ক্ৰম বা পৰম্পৰা নিৰ্বাহ, পালন, সমাপ্তি ।
क्रम या परम्परा का चलता रहना । पालन । समाप्ति ।

निर्विकल्प—(वि) জ্ঞাতা আৰু জ্ঞেয়ৰ ভেদ নোহোৱা, ব্ৰহ্মৰ লগত একীভূত ।
जिसमें विकल्प या भेद न हो । स्थिर । निश्चित ।

निर्विघ्न—(वि) নিৰ্বিঘ্ন, বাধাহীন ।
जिसमें विघ्न या बाधा न हो ।
(क्रि वि) নিৰ্বিঘ্নে, বাধাহীন ভাবে ।
बिना किसी विघ्न बाधा के ।

निर्विरोध - [वि] অবিৰোধ । বিৰোধহীন ।
जिसमें कोई बाधा, विरोध या रुकावट न हो ।
(क्रि वि)অবিৰোধে । বিনাবিৰোধে
बिना किसी बाधा या रुकावट के ।

निर्वीर्य्य—[वि]বীৰ্য্যহীন । দুৰ্বল ।
वीर्य्य हीन । अशक्त । कमजोर ।

निर्वेद—(सं पु ं) অপমান, খেদ, বৈৰাগ্য, মনৰ উদাসীনতা বা বিষণ্ণতা ।
अपमान । खेद । वैराग्य । मनकी उदासीनता या खिन्नता । विरक्ति।

निर्वैर—(वि) শত্ৰু নথকা ।
वैर या द्वेष से रहित ।

निर्व्याज—(वि) অকপট, বাধাবিঘ্নৰহিত ।
निष्कपट । विघ्न या बाधा से रहित ।

निलय—(सं पु ं) ঘৰ, ঠাই ।
मकान । स्थान ।

निवर्त्तन—[स ं पु ं] নিয়ম আদি উঠাই লোৱা বা বাতিল কৰা ।
विधान आदि का अन्त करना ।
कानून रद्द करना ।

निवसना—(क्रि अ) বাস কৰা ।
निवास करना ।

निवार—(सं स्त्री) পালেঙৰ ফিটা। पलंग बुनने की मोटे सूतकी पट्टी।

निवारना—[क्रि स] নিবাৰণ কৰা। निवारण करना।

निवारी—(सं स्त्री) যুতি ফুল। जूही की तरह सफेद फूलों का एक पौधा।

निवाला—[सं पुं] ভাতৰ গৰাহ। भोजन का कौर।

निविड़—[वि] ঘোৰ। বৰ ঘন বা ডাঠ। গম্ভীৰ। घोर। घना। गम्भीर।

निविष्ट—(वि) একাগ্ৰ, ৰখা, আবদ্ধ।

जिसका चित्त एकाग्र हो। ठहराया या रखा हुआ। बाँधा हुआ।

निवृत्ति—(सं स्त्री) মুক্তি, মোক্ষ, অব্যাহতি, ইস্তফা।

मुक्ति। मोक्ष। छुटकारा। पदसे सदा के लिये हट जाना।

निवेदना—(क्रि स) নিবেদন কৰা, অৰ্পণ কৰা।

निवेदन करना। अर्पित या भेंट करना।

निशंक—(वि) নিৰ্ভয়। निर्भय।

निशंग, निषंग—[सं पुं] খড়্গ, বলি কটা দা।

तरकश। खड्ग।

निशांत—(सं पुं) ৰাতিৰ অৱসান, ৰাতিপুৱা।

रात का अन्त। तड़का।

निशा—[सं स्त्री] নিশা, ৰাতি। रात।

निशाकर—(सं पुं) চন্দ্ৰ। चन्द्रमा।

निशा-खातिर—(सं स्त्री) নিশ্চিন্ততা, আশ্বস্ত হোৱা।

निश्चिन्तता। इतमीनान।

निशान—[सं पुं] চিহ্ন, বুঢ়া-আঙুলিৰ চিন। ঠিকনা, পতাকা, নাগেৰা।

बना या बनाया हुआ चिह्न। अंगूठे का चिह्न। पता। एक प्रकार का बहुत बड़ा झण्डा। नगाड़ा।

निशाना—(सं पुं) লক্ষ্য, আনক লক্ষ্য কৰি কৰা আক্ৰমণ।

लक्ष्य। किसी को लक्ष्यकर उस पर वार करने की क्रिया।

निशानाথ, নিশাপতি, নিশিকৰ, নিশিনাথ, নিশেশ.— [স ं पुं]
চন্দ্র।
चन्द्रमा।

निशानी—[सं स्त्री] স্মৃতি চিন।
স্মৃতি, চিহ্ন।
स्मृतिचिह्न। यादगार। चिह्न।
निशान।

निशास्ता—[सं पुं] ঘেহুঁৰ আৰক।
মাৰ, খলম, তাহোন।
गेहूँ या आटे का जमाया हुआ सत या गूदा। कलफ।

निशि—(सं स्त्री) ৰাতি।
रात।

निशिवासर—[क्रि वि] ৰাতি দিন।
সদায়।
रात दिन। सदा।

निशीथ—[सं पुं] মাজৰাতি।
रात।

निश्चल—[वि] স্থিৰ, অচল।
स्थिर। अटल।

निश्चेष्ट—(वि) চিন্তাশূন্য, অচল, স্থিৰ।
बेहोश। निश्चल। स्थिर।

निश्छल—(वि) সৰল প্ৰকৃতিৰ।
सरल प्रकृति का।

निश्शंक—(वि) নিৰ্ভয়।
निःशंक। निर्भय।

निश्शेष—(वि) সমাপ্ত, নিঃশেষ।
समाप्त। निःशेष।

निषाद—(सं पुं) প্ৰাচীন অনাৰ্য্য জাতি, সঙ্গীতৰ সপ্তম আৰু উচ্চতম স্বৰ।
एक प्राचीन अनार्य जाति। संगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी-[सं पुं] মাউত।
हाथीवान।

निषिक्त— (वि) যাৰ ভিতৰত কোনো বস্তু ভৰাই দিয়া হৈছে।
जिसके अन्दर कोई चीज भरी गयी हो।

निषेक—(सं पुं) ছটিয়াই দিয়া। ডুবোৱা, গৰ্ভধাৰণ কৰোৱা। অন্তৰত শক্তি সঞ্চাৰ কৰা।
छिड़कना। डुबाना। अरक उतारना। गर्भ धारण करना। किसी के अन्दर कोई चीज या शक्ति भरना।

निषेधात्मक-- [वि] নিষেধাত্মক, নিষেধ অৰ্থ সূচক।

जिसमें निषेध या मनाही की गयी हो। नकारात्मक।

निषेधाधिकार— (सं पुं) মানাহি। নামঞ্জুৰ কৰাৰ ক্ষমতা।
किसी प्रस्तावित कार्य को पहले से ही अमान्य या अस्वीकृत करके रोकने का अधिकार।

निष्कंप—(वि) স্থিৰ।
स्थिर।

निष्क (सं पुं) বৈদিক কালৰ এবিধ সোণৰ মুদ্রা।
वैदिक काल का सोने का एक सिक्का।

निष्कपट—(वि) অকপট, সৰল।
छल रहित। सरल।

निष्करुण—[वि] নিৰ্দয়, কৰুণা-বিহীন।
करुणारहित।

निष्कर्ष—(सं पुं) সাৰকথা। মূল কথা।
सारांश। सार।

निष्काम—(वि) কামনা নথকা, স্বাৰ্থ নথকা।
जिसके मनमें कोई कामना न हो। बिना किसी कामना के किया जानेवाला काम।

निष्कासन—(सं पुं) বাহিৰ কৰা কাৰ্য্য।
निकालना। बाहर करना।

निष्क्रमण—(सं पुं) বাহিৰ হৈ যোৱা কাৰ্য্য।
बाहर निकलना।

निष्क्रय—(सं पुं) বেতন, ক্ষতি-পূৰণ। দ্রব্য মূল্য।
वेतन। बदला। किसी वस्तु के बदले दिया जानेवाला धन।

निष्क्रांत—[वि] মুক্ত, বাহিৰ হৈ থকা।
मुक्त। निकाला हुआ।

निष्ठ—(वि) তৎপৰ, নিষ্ঠা বা শ্রদ্ধাযুক্ত।
ठहरा हुआ। तत्पर। किसी के प्रति निष्ठा, श्रद्धा या भक्ति रखनेवाला।

निष्ण, निष्णात—(वि) কোনো বিষয়ৰ অগাধ পণ্ডিত।
किसी विषय का पूरा पण्डित।

निष्पक्ष-[वि] পক্ষহীন, নিৰপেক্ষ।
तटस्थ। पक्षपात रहित।

निष्पन्न-(वि) সম্পন্ন, শেষ মীমাংসা।
जो आज्ञा, नियम, निश्चय आदि

के अनुसार पूरा किया जा चुका हो।

निष्प्रभ—(वि) পৰাক্ৰম বা শক্তি শূণ্য। নিষ্প্ৰভ। উজ্জ্বলতাহীন।
प्रभा रहित। शक्तिहीन।

निसंक—(वि) নিৰ্ভয়।
निःशंक। निर्भय।

निसँठ—(वि) দুখীয়া।
निर्धन।

निसतरना—(क्रि अ) নিস্তাৰ পোৱা, ৰক্ষা পৰা।
निस्तार या छुटकारा पाना।

निस-दिन, निसिदिन—(क्रि वि) দিনৰ'তি, অহ-ৰহ।
दिन और रात। सदा।

निसबत—(सं स्त्री) সম্বন্ধ, বৈবাহিক সম্বন্ধ, তুলনা।
सम्बन्ध। लगाव। मँगनी। तुलना। मुकाबला।

निसरना—(क्रि अ) উলিওৱা, নিঃসৃত। হোৱা।
निकलना। निःसृत होना।

निसरावन—[सं पुं] সিধা।
ब्राह्मण को दिया जानेवाला कच्चा अन्न।

निसर्ग—(सं पुं) প্ৰকৃতি, ৰূপ, দান, সৃষ্টি।
प्रकृति। रूप। दान। सृष्टि।

-निसाँस (।) निसास—(स पुं) দীৰ্ঘশ্বাস।
दीर्घश्वास।
(वि) শ্বাসহীন, মৃতপ্ৰায়।
जिसमें साँस न हो। मृतप्राय।

निसुका—(वि) দুখীয়া, হতভাগা।
गरीब। बेचारा।

निसृष्ट—(वि) এৰা বা উলিয়াই ৰখা, পঠোৱা, দিয়া।
छोड़ा या निकाला हुआ। भेजा हुआ। दिया हुआ।

निस्तंद्र—(वि) তন্দ্ৰাহীন, জাগ্ৰত।
जिसे तन्द्रा न आयी या न आती हो। जाग्रत।

निस्तरंग—[वि] তৰঙ্গহীন, শান্ত।
तरंग रहित। शांत।

निस्तरना—(क्रि अ) নিস্তাৰ পোৱা, উদ্ধাৰ হোৱা।
निस्तार या छुटकारा पाना।

निस्पृह—(वि) স্পৃহা নথকা, ইচ্ছা বা বাঞ্ছা নথকা।
निर्लोभ।

निस्फ—(वि) আধা।
आधा।

निस्वन—[सं पुं] ধ্বনি।
ध्वनि।

निस्संग—(वि) নিসঙ্গ, অকলশৰীয়া, বিষয়-বাসনাৰ পৰা বিৰত।
अकेला। विषय वासनाओं से रहित। निर्जन।

निस्सरण—(सं पुं) বাহিৰ ওলোৱা পথ, ওলোৱা।
निकलनेका मार्ग। निकलना।

निस्सार—(वि) অসাৰ, সাৰহীন।
सार रहित। जिसमें काम की बात न हो।

निहंग(म)—[वि] অকলশৰীয়া, স্ত্ৰীৰ লগত সম্পৰ্ক নাৰাখি অকলে থাকোঁতা, উলঙ্গ, নিলাজ।
एकाकी। स्त्री से सम्बन्ध न रखने और अकेला रहनेवाला। नग्न। निर्लज्ज।
(सं पुं) শিখসকলৰ এক সম্প্ৰদায়।
सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

निहंग-लाडला-[[वि] আদৰুৱা।
जो दुलार के कारण स्वेच्छाचारी हो गया हो।

निहकरमी—[वि] কৰ্মৰহিত, নিৰ্লিপ্ত।
जो कर्मों से रहित या अलिप्त हो।

निहत्था—[वि] হাত নথকা, হাতত কোনো অস্ত্ৰ নথকা, শুদা হাত।
जिसका हाथ न हो। जिसके हाथमें कोई हथियार न हो।

निहाई—(सं स्त्री) নিগাৰি।
लोहे का वह आधार जिसपर सोनार, लोहार आदि कोई चीज रखकर हथौड़े से पीटते हैं।

निहायत—[वि] অত্যন্ত, বহুত, নিতান্ত।
अत्यंत। बहुत।

निहार—(स पुं) কুঁৱলী, শীত, হিম, নিয়ৰ।
कुहरा। ओस। हिम।

निहारना—[क्रि स] চোৱা।
देखना।

निहाल—(वि) পূৰ্ণ কাম, সন্তুষ্ট।
पूर्ण काम।

निहाली—[सं स्त्री] গাদী, লেপ, নিয়াৰি।
गद्दा। रजाई। निहाई।

निहित (वि) নিহিত, যাক থোৱা হৈছে, ভিতৰত সোমাই থকা বা লুকাই থকা।
कहीं या किसी के अन्दर रखा, पड़ा या छिपा हुआ।

निहुरना—(क्रि अ) দোঁ খোৱা। झुकना।

निहोरना—[क्रि स] কোনো কাৰণে প্ৰাৰ্থনা কৰা, সন্তুষ্ট কৰা কৃতজ্ঞ হোৱা, খোচামতি কৰা।
किसी बात के लिये प्रार्थना करना। मनाना। कृतज्ञ होना। खुशामद करना।

निहोरा—[सं पुं] উপকাৰ, কৃতজ্ঞতা, আশ্ৰয়।
एहसान। कृतज्ञता। प्रार्थना। सहारा।
[क्रि वि] দ্বাৰা, কাৰণে, নিমিত্তে।
द्वारा। के लिये। वास्ते।

नींद-[सं स्त्री] টোপনি, ঘুমটি। निद्रा।

नींबू—[सं पुं] নেমু বা নেমুটেঙা।
एक प्रकार का खट्टा रसदार फल।

नींव—[सं स्त्री] ভেটি, আৰম্ভণি, মূল, আধাৰ।
भित्ति। किसी वस्तु या कार्य का प्रारंभिक भाग। मूल। आधार।

नीक (१)—[वि] ভাল, উৎকৃষ্ট।
उत्तम। बढ़िया।
[सं पुं] উৎকৃষ্টতা।
उत्तमता।

नीके—(क्रि वि) ভালদৰে।
अच्छी तरह।

नीच—[वि] নিকৃষ্ট, অধম, বেয়া, দুষ্ট মানুহ।
जाति, गुण आदि में घटकर या कम। अधम। बुरा।

नीचा— (वि) চাপৰ, নিম্ন, দোঁ-খোৱা, মন্থৰ, ক্ষুদ্ৰ।
गहरा। निम्न। झुका हुआ। धीमा। क्षुद्र।

नीचाशय— [वि] ক্ষুদ্ৰ, সংকীৰ্ণ।
क्षुद्र।

नीचे—[क्रि वि] তলফালে, তল খাপৰ, অধীনস্থ।

निम्न तल की ओर। तुलना में घटकर या कम। अधीनता या मातहती में।

नीड़— [सं पुं] চৰাইৰ বাহ, আশ্ৰয়স্থল।
चिड़ियों का घोंसला। ठहरने या रहने का स्थान।

नीतिज्ञ-(वि) ৰীতি বা দস্তুৰ জনা।
नीति जाननेवाला।

नीप—[सं पुं] কদম বা কদম্ব গছ।
कदम्ब का पेड़।

नीम—(सं पुं) নিম গছ।
एक पेड़ जिसके सभी अंग कड़वे होते हैं।
(वि) আধা।
आधा।

नीमा—[सं पुं] তলত পিন্ধা এবিধ সাজ বা পোচাক।
एक पहनावा।

नीयत—(सं स्त्री) উদ্দেশ্য, আশয়।
आशय। मंशा।

नीर—(सं पुं) পানী, তৰল পদাৰ্থ বা ৰস।
पानी। तरल पदार्थ या रस।

नीरज—(सं पुं) পানীত উৎপন্ন, পদুম, মুকুতা।
जल में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ। कमल। मोती।

नीरद—(सं पुं) মেঘ।
बादल।
[वि] পানী দিওঁতা, দাঁত নথকা।
जल देनेवाला। बे-दाँतका।

नीरधर—[सं पुं] মেঘ।
मेघ।

नीरांजन, नीराजन— (सं पुं) দেৱতাৰ আৰতি।
देवता की आरती।

नीरांजनी— [सं स्त्री] আৰতিৰ পাত্ৰ।
आरती का पात्र।

नीरा—(सं पुं) তালৰ ৰস, তাড়ি।
ताड़ का रस।
(क्रि वि) ওচৰতে, কাষতে।
समीप। पास।

नीराजना—(क्रि अ) আৰতি কৰা, অস্ত্ৰ আদি মচি-কাচি চিকুণ কৰা।
आरती करना। शस्त्र आदि साफ करके चमकाना।

नील—[वि] নীল বৰণীয়া।
नीले रंग का।

(सं पुं) नीला ৰং। এটা সংখ্যাৰ পৰিমাণ।
नीला रंग। एक पौधा। सौ अरब की संख्या।

नीलकंठ— (वि) নীলকণ্ঠ, যাৰ গল নীল বৰণীয়া।
नीले गलेवाला।
(सं पुं) মহাদেৱ। ময়ুৰ। নীলকণ্ঠ পখী।
शिव। मोर। एक प्रकार की चिड़िया।

नील-गाय—(सं स्त्री) নীলগাই; জঙ্গলী হৰিণা।
एक प्रकार का पहाड़ी हिरन।

नीलम— (सं पुं) নীলম, বহু-মূলীয়া মণি। নীলকান্ত মণি।
नील मणि।
(सं स्त्री) তৰোৱাল বিশেষ।
एक प्रकारकी तलवार।

नीलांबर—[सं पुं] নীলা ৰঙৰ কাপোৰ, নীলাকাশ।
नीले रंग का कपड़ा। नीला आकाश।

नीलांबुज, नीलोत्पल, नीलोफर—[सं पुं] নীলা পদুম।
नीला कमल।

नीला—(वि) নীলা।
नील के रंग का।

नीलिमा—(सं स्त्री) নীলা ৰঙীয়া।
नीलापन। श्यामता।

नीवि, नीवी— [सं स्त्री] পেণ্ট আদিৰ ককঁালত গাঠি দিয়া ৰচী বা জৰী।
कमर में लपेटी धोती की गाँठ। कमर पर कपड़े को बाँधने की डोरी।

नीहार–[सं पुं] বৰফ, কুঁৱলি।
कुहरा। पाला। हिम।

नीहारिका—(सं स्त्री) নীহাৰিকা।
आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ प्रकाश पुंज।

नुकता—(सं पुं) বিন্দু।
बिन्दी।

नुकता-चीनी— [सं स्त्री] দোষ-খোচৰা।
छिद्रान्वेषण। ऐब या दोष निकालना।

नुकसान— [सं पुं] লোকচান, হানি, শাৰীৰিক ক্ষতি।
हानि। कमी। घाटा। शारीरिक क्षति।

नुकीला— [वि] জোঙাল, জোঙ থকা।
जिसमें नोक हो। बाँका तिरछा।

नुक्कड़-(स ं पु ं) ঘৰ অথবা ৰাস্তাৰ আগলৈ ওলাই থকা কোণ।
मकान या गली का या रास्ते पर आगेकी ओर निकला हुआ कोन।

नुक्स—(स ं पु ं) দোষ।
दोष। ऐब।

नुत्फा—(स ं पु ं) বীৰ্য্য, সন্তান।
वीर्य। सन्तान।

नुमाइंदा—(स ं पु ं) প্ৰতিনিধি।
प्रतिनिधि।

नुमाइश— (स ं स्त्री) প্ৰদৰ্শনী, জাক-জমক, চাক-চিকা।
प्रदर्शन। तड़क भड़क। प्रदर्शनी।

नुसखा, नुस्खा—(स ं पु ं) বেমাৰীক ঔষধ আদি লিখি দিয়া কাগজ। কোনো বস্তু তৈয়াৰ কৰ, পদ্ধতি।
वह कागज जिसपर रोगी के लिये औषध और उसकी सेवन विधि लिखी रहती है। किसी चीज के बनाने की पद्धति या गुर। व्यय का अवसर या योग।

नुपूर—[स ं पु ं] নেপুৰ, নূপুৰ।
घुँघुरू। पंजनी।

नूर—[स ं पु ं] জ্যোতি প্ৰভা।
ज्योति। कान्ति।

नूह—(स ं पु ं) খৃষ্টান আৰু মুছলমান সকলৰ এজন পয়গম্বৰ অথবা দেবদূত।
ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार एक पैगम्बर।

नृत्त—[स ं पु ं] সুসংস্কৃত উচ্চ স্তৰৰ অভিনয়।
उच्च कोटि का सुसंस्कृत अभिनय।

नृपति(ति)नृपाल-(स ं पु ं) ৰজা।
राजा।

नृवंश—(स ं पु ं) মনুষ্য বংশ।
मानव वंश।

नृशंस—[वि] নিষ্ঠুৰ, অত্যাচাৰী
क्रूर। अत्याचारी।

नेक—[वि] ভাল।
भला। अच्छा।
[क्रि वि] অলপ।
तनिक।

नेक-चलन--[वि] সদাচাৰী, ভদ্ৰ।
सदाचारी।

नेक-नाम-[वि] কীৰ্ত্তিমান ।
कीर्तिशाली ।

नेक-नीयत—[वि] ভাল স্বভাৱৰ, সৎস্বভাবৰ ।
अच्छी नीयत या संकल्प वाला ।
उत्तम विचारोंवाला ।

नेकी—(सं स्त्री) মঙ্গল, সজ্জনতা ।
भलाई । सज्जनता ।

नेकु—(वि) অলপো ।
तनिक भी ।

नेग, नेगचार (जोग)— [सं पुं] বিয়া আদি মাঙ্গলিক কাৰ্য্যৰ সময়ত ইষ্ট কুটুম্বৰ আৰু আশ্ৰিত সকলক টকা পইচা দিয়া নিয়ম । সম্বন্ধ, ওচৰ সম্বন্ধীয় ।
विवाहादि शुभ अवसरों पर सम्बन्धियों और आश्रितों को कुछ धन देने की प्रथा । रीति । निकटता । सम्बन्ध ।

नेगी—(सं पुं) মাঙ্গলিক কাৰ্য্যৰ সময়ত ধন পোৱাৰ অধিকাৰী ।
नेग पानेका अधिकारी प्रबंधक ।

नेजा—(सं पुं) বল্লম, বৰ্শা, যাঠী ।
भाला । बरछा ।

नेत—[सं पुं] গাখীৰ মথিবলৈ ব্যৱহাৰ কৰা জৰী, নিৰ্দ্ধাৰণ । সংকল্প, ব্যৱস্থা, এবিধ অলঙ্কাৰ ।
मथानी की रस्सी । निर्धारण । सकल्प व्यवस्था । एक प्रकार का कहना ।
(सं स्त्री) ওৰণি, স্বভাৱ ।
ओढ़नी । नीयत ।

नेति--(सं पुं) [न इति] যাৰ অন্ত নাই পৰমাত্মা ।
जिसका अन्त नहीं हो । पर-मात्मा ।

नेत्र—(सं पुं) চকু ।
आँख ।

नेपथ्य [सं पुं] নেপথ্য ।
रंगमंच के पीछे का स्थान ।

नेम—(सं पुं) নিয়ম, ৰীতি. ধাৰ্মিক নিয়ম পালন ।
नियम । रीति । धार्मिक क्रियाओं का पालन ।

नेमि—[सं स्त्री] চকাৰ ঘুৰণ, নাদৰ পানী জুৰলি ।
पहिये का चक्कर । कुएकी जगत ।

नेमी—[वि] নিয়ম পালন কৰোঁতা, নিয়মিত ভাবে ধৰ্ম্ম কাৰ্য্য কৰোঁতা ।
नियम का पालन करनेवाला ।

नियमित रूप से धार्मिक कृत्य करनेवाला।

नेवतना—(क्रि स) নিমন্ত্রণ দিয়া। न्योता देना।

नेवर—(सं पुं) নেপুৰ। घुँघरू। पाजेब। (वि) বেয়া। बुरा।

नेवरना— [क्रि अ] নাইকীয়া হোৱা, নিবৃত্ত হোৱা। निवारण होना। समाप्त होना। निवृत्त होना, छूटना।

नेवला—(सं पुं) নেউল। गिलहरी की तरह का एक जन्तु।

नेवाज—(वि) কৃপা কৰোঁতা, দয়াশীল। निवाज। कृपा करनेवाला।

नेवाना—(क्रि स) মূৰ দোওঁৱা। झुकाना।

नेवारी—(सं स्त्री) শেৱালী। सफेद फूलवाला एक पौधा।

नेसुक—[क्रि वि] অলপ। तनिक। जरा। (वि) অলপমান। थोड़ा सा।

नस्त-नाबूद—[वि] সম্পূৰ্ণ ভাবে নষ্ট হোৱা। पूरी तरहसे नष्ट भ्रष्ट।

नेह—[सं पुं] স্নেহ, প্ৰেম, তেল। स्नेह। प्रेम। तेल।

नेहरा, नेहार—(सं पुं) স্নেহ, মৰম। स्नेह।

नेही—[वि] প্ৰেমী, মৰমী। स्नेही।

नै—(सं स्त्री) নিয়ম, নদী, বাঁহৰ নলা, হোকাৰ নলী, বাঁহী। नय। नीति। नदी। बांसकी नली। हुक्के की निगाली। बाँसुरी।

नैक (कु)—(क्रि वि) অলপ। तनिक। थोड़ा सा।

नैचकी—(सं स्त्री) ভাল গাই। बढ़िया गाय।

नैचा—[सं पुं] নলিচা। हुक्का पीने की लचीली नली।

नैत—(क्रि अ) ভাল সুবিধা বা সুযোগ। अच्छा मौका। सुअवसर।

नैन [सं पुं] চকু, অন্যায়, মাখন। नयन। नेत्र। अन्याय। मक्खन।

नैनूँ—(सं पुं) মাখন ।
मक्खन ।

नैपुण्य—[सं पुं] দক্ষতা ।
दक्षता ।

नैमित्तिक—(वि) যি কাৰো নিমিত্তে অথবা কোনো বিশেষ উদ্দেশ্য সিদ্ধিৰ বাবে কৰা হয়, নৈমিত্তিক ।
जो किसी निमित्त से या कोई विशेष उद्देश्य सिद्ध करने के लिये किया गया अथवा हुआ हो ।

नैया—(सं स्त्री) নাৱ ।
नाव ।

नैयायिक—[वि] ন্যায় শাস্ত্ৰত অভিজ্ঞ, নৈয়ায়িক ।
न्याय शास्त्र का ज्ञाता ।

नैऋर्त—(सं पुं) ৰাক্ষস, দক্ষিণ-পশ্চিম কোণ ।
राक्षस । दक्षिण पश्चिम कोण ।

नैर्मल्य—[सं पुं] নিৰ্মলতা ।
निर्मलता ।

नैवेद्य—(सं पुं) নৈবেদ্য, দেৱতাৰ কাৰণে উছৰ্গা কৰা ভোগ আদি ।
देवता को अर्पित किया जानेवाला खाद्य पदार्थ । भोग ।

नैश—[वि] ৰাতিৰ, ৰাতি সম্বন্ধীয় ।
रात का । निशा सम्बन्धी ।

नैष्ठिक—(वि) নৈষ্ঠিক, নিষ্ঠাবান ।
निष्ठा सम्बन्धी । निष्ठावान ।

नैसर्गिक—[वि] প্ৰাকৃতিক, স্বাভাবিক ।
प्राकृतिक । स्वाभाविक ।

नैहर—(सं पुं) পিত্ৰালয়, মাকৰ ঘৰ ।
पीहर । मायका ।

नोक—(सं स्त्री) জোঙ ।
बहुत पतला सिरा । आगे की ओर निकला हुआ पतला या सूक्ष्म भाग ।

नोक झोंक—(सं स्त्री) সাজোন-কাছোন, ব্যংগ, নিজৰ ভিতৰত হোৱা আক্ষেপ ।
बनाव सिंगार । तेज । व्यंग्य । आपस में होनेवाले आक्षेप ।

नोच-खसोट—[सं स्त्री] টনা,-আজোৰা ।
छीना झपटी ।

নোচনা— [ক্রি স] লাগি থকা বস্তু আজুৰি চিঙা। নখ অথবা দাঁতেৰে চিঙা।
लगी हुई वस्तु झटके से तोड़कर अलग करना। नाखूनों या दांतों से उखाड़ना।
[सं पुं] চুলি উভলা চিমটা।
बाल उखाड़ने का चिमटी।

নোট— (सं पुं) মনত থাকিবৰ বাবে চমুকৈ লিখি লোৱা টোকা। চিঠি। টিপ্পণী, চৰকাৰে উলিওৱা টকাৰ নোট।
ध्यान रखने के लिये टॉंकने या लिख लेनेका काम। पत्र। टिप्पणी। सरकार द्वारा चलाया हुआ अर्थ पत्र।

নোন— [सं पुं] নিমখ। লোণ।
नमक।

নোনা— [सं पुं] লোণা মাটি, আতেফল।
नोनी मिट्टी। शरीफा। सीता-फल।
[वि] লুণীয়া।
नमकीन।

নোনিয়া— [सं पुं] নিমখ তৈয়াৰ কৰা এটা জাতি।
नमक बनाने वाली एक जाति।

নোবনা— [ক্রি স] গাই খিৱাবৰ সময়ত পিছ ভৰিত বন্ধা।
गाय दूहते वक्त पिछले पैर बांधना।

নোহ্‌ৰা— (वि) দুৰ্লভ, বিলক্ষণ, বিচিত্ৰ।
अलभ्य। विलक्षण।

নৌ— (वि) নৱৰ সংখ্যা।
नौका या जल सम्बन्धी।

নৌকৰ— (सं पुं) চাকৰ।
वैतनिक कर्मचारी। सेवक।

নৌকৰী— [सं स्त्री] চাকৰি।
नोकर का काम। सेवा। वह पद या काम जिसके लिये वेतन मिलता हो।

নৌকা— [सं स्त्री] নাৱ।
नाव।

নৌগ্ৰহী— (सं स्त्री) নৱগ্ৰহৰ শান্তিৰ বাবে গলত পিন্ধা এবিধ অলঙ্কাৰ।
नौ ग्रहों की शान्ति के लिये गले में पहनने का एक गहना।

নৌছাৱৰ— (सं स्त्री) উছৰ্গা, উৎসৰ্গ।
उत्सर्ग।

नौज—(अव्य) ঈশ্বৰে নকৰক, নহওক।
ईश्वर न करे। न हो। न सही।

नौजवान—(वि) নৱযুৱক।
नवयुवक।

नौटंकी-(सं स्त्री) এক প্ৰকাৰৰ নাটক।
एक तरहका नाटक।

नौतरण—[सं पुं] জল-যাত্ৰা।
जल यात्रा।

नौता—[वि] নতুন।
नवीन। ताजा।
(सं स्त्री) নম্ৰতা।
नम्रता।

नौबत—(सं स्त्री) বাৰ, দশা, সংযোগ, মঙ্গলধ্বনি, নহবত।
बारी। दशा। संयोग। मंगल सूचक शहनाई आदि बाजे।

नौबत खाना— (सं पुं) নহবত বজোৱা ঠাই।
जहाँ नौबत बजती है।

नौमि—(पद) মই নমস্কাৰ জনাওঁ।
मैं नमस्कार करता हूँ।

नौरंग—(सं पुं) সুমথিৰা, নতুন ৰং অথবা আমোদ-প্ৰমোদ।
नारंगी। नया रंग या आमोद प्रमोद।

नौलखा-[वि] ৯ লাখ মূল্যৰ, বহুমূলীয়া।
नौ लाख मूल्य का। बहु मूल्य।

नौसर—[सं पुं] ধূৰ্ত্ততা।
धूर्त्तता। जालसाजी।

नौसरिया—[वि] ধূৰ্ত্ত।
धूर्त्त। जालसाज।

नौसिखुआ—(वि) ন শিকাৰু।
जिसे अभी नया नया का सीखा हो।

नौ-सेना—[सं स्त्री] নৌ-সেনা।
वह सेना जो जहाजों पर रहकर नदी या समुद्र में युद्ध करती है।

न्यस्त—(वि) ন্যস্ত, অৰ্পিত, স্থাপিত, বাছি সজোৱা।
रखा या धरा हुआ। स्थापित। चुनकर सजाया हुआ। छोड़ा हुआ। जमा किया हुआ।

न्याति—(सं स्त्री) জাতি।
जाति।

न्यामत—[सं स्त्री] খুব ভাল, বহুমূলীয়া অথবা দুৰ্লভ পদাৰ্থ।
बहुत अच्छा, बहुमूल्य या अलभ्य पदार्थ।

न्याय कर्ता—(सं पुं) ন্যায় কৰ্ত্তা।
न्याय करनेवाला अधिकारी।

न्यायत:—(क्रि वि) ন্যায়ানুসৰি, ঠিক।
न्याय के अनुसार। ठीक ठीक।

न्याय परता–[सं स्त्री] ন্যায়শীলতা।
न्यायशीलता।

न्याय-संगत–[वि] ন্যায়, উচিত।
न्याय, औचित्य, अधिकार आदि की दृष्टि से ठीक।

न्यायाधीश—(सं पुं) ন্যায়াধীশ, ন্যায়ালয়ৰ বিচাৰক।
न्यायालय का विचारक या जज।

न्यारा—(वि) পৃথক, অন্য, বিচিত্ৰ।
अलग। दूर। अन्य। निराला।

न्यास—(सं पुं) ৰখা, ন্যাস, কোনো বিশেষ কাৰ্য্যৰ বাবে গচ্ছিত সম্পত্তি বা ধন।
रखना। धरोहर। किसी विशेष कार्य के लिये निकाली या किसी को सौंपी हुई सम्पत्ति या धन। न्यास।

न्यून—(वि) কম, অলপ।
कम। थोड़ा। घटकर।

न्यूनतम—[वि] সকলোতকৈ কম, ন্যূনতম।
जितना कम हो सकता हो।

न्योछावर—(सं स्त्री) উৎসৰ্গ। বলি দিয়া।
निछावर। उत्सर्ग। बलिजाना।

न्योता—[सं पुं] নিমন্ত্ৰণ।
बुलावा। निमन्त्रण।

न्हाना—(क्रि अ) গা ধোৱা।
नहाना। स्नान करना।
[वि] সৰু, কেচুৱা।
नन्हा। छोटा।

प

प—দেবনাগৰী বৰ্ণমালাৰ ২১ নং আখৰ, শব্দৰ শেষত ব্যৱহাৰ হলে. [১] স্বামী অথবা ৰক্ষা কৰ্ত্তা আৰু (২) পান কৰোতা, খাওঁতা অৰ্থ হয়, যেনে :--ভূপ=ভূমি পালন কৰোঁতা। মদ্যপ=মদ খাওঁতা।

देवनागरी वर्णमाला का इक्कीसवाँ वर्ण। शब्दों के अन्त में इसका व्यवहार [1] पति अथवा रक्षा या पालन करनेवाला और (2) पीनेवाला, अर्थ में होता है। जैसे— भूप। मद्यप।

पंक—[सं पुं] বোকা।
कीचड़।

पंकज—(सं पुं) কমল, পদুম।
कमल।

पंकिल—(वि) বোকাযুক্ত, মলিন।
जिसमें कीचड़ हो। मलिन।

पंक्ति—(सं स्त्री) শাৰী, ৰেখা, একেলগে খাব বহা লোক সকল।

कतार। लकीर। साथ बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पंख—(सं पुं) পাখি। ডেউকা।
पर। डैना।

पंखड़ी, पंखुड़ी-(सं स्त्री) ফুলৰ পাহি।
पुष्प-दल।

पंखा—(सं पुं) বিছনি।
हवा करनेवाला बेना।

पंखी—(सं पुं) চৰাই।
पक्षी।

(सं स्त्री) পতঙ্গ, পাখি, সৰু বিছনি।

पतंग। पंख। छोटा पंखा।

पँखुड़ा—(सं पुं) মানুহৰ শৰীৰৰ কান্ধ আৰু হাতৰ জোৰা।
कंधे और बाँह का जोड़।

पंगत [ति]—[सं स्त्री] শাৰী, সমাজ, একেলগে খাব বহা লোক সকল।
कतार। एक साथ बैठकर भोजन करनेवालों का वर्ग। संमाज।

पंगु, पंगुल—[वि] খোৰা।
लंगड़ा।

पंच—(सं पुं) ৫ৰ সংখ্যা, সমূহ; পঞ্চায়ত, ন্যায় বিচাৰৰ বাবে নিযুক্ত কৰা ব্যক্তি।
पाँच की संख्या। समुदाय। न्याय करनेवाला। समाज हार-जीत औचित्य-अनौचित्य का निर्णय करने के लिये नियत किया हुआ व्यक्ति।

पंचकन्या—(सं स्त्री) অহল্যা, দ্রৌপদী, কুন্তী, তাৰা, মন্দোদৰীক পঞ্চকন্যা বুলি কয়।
अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी-ये पाँच स्त्रियाँ जो हमेशा कन्या के समान मानी

पंचगंगा—(सं स्त्री) গঙ্গা, যমুনা, সৰস্বতী, কিৰণা আৰু ধূতপাপা—এই পাঁচটা নদীৰ সঙ্গম।
गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा इन पाँच नदियों का संगम।

पंचगव्य—(सं पुं) গৰুৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা—দৈ, এৰাঁ-গাখীৰ, ঘিউ, গোবৰ আৰু গো-মূত এই ৫ বিধ বস্তু।
गौ से उत्पन्न होनेवाले-दूध, दही घी, गोबर और गो-मूत्र ये पाँच द्रव्य।

पंचतत्व—(सं पुं) পৃথিবী, পানী, তেজ (শক্তি) বায়ু আৰু আকাশ। পঞ্চভূত।
पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पंच भूत।

पंचत्व—[सं पुं] মৃত্যু, পঞ্চভূতত লয়।
पाँच का भाव। मौत।

पंचनद—(सं पुं) পঞ্জাবৰ শতদ্রু বিপাসা, ইৰাৱতী, চন্দ্ৰভাগা

पंजाब की सतलज, व्यास, रावी, चनाव और झेलम ये पाँच नदियाँ। पँजाब प्रदेश।

पंचनामा—[सं पुं] न্যায় বিচাৰক নিৰ্ব্বাচনৰ সময়ত বাদী আৰু বিবাদীৰ স্বীকৃতি পত্ৰ। পঞ্চায়তৰ দ্বাৰা সিদ্ধান্ত কৰা বা নিৰ্ণয় দিয়া আজ্ঞা পত্ৰ।

पँच चुनने के समय वादी प्रतिवादी का स्वीकृति पत्र। पंचों द्वारा फैसला लिखा हुआ कागज।

पंचपात्र—(सं पुं) পূজাৰ বাবে ব্যৱহৃত গিলাছ বা লোটাৰ দৰে সৰু পাত্ৰ।

पूजा के काम के लिये गिलास की तरह का एक छोटा पात्र।

पंचप्राण—[सं पुं] শৰীৰত থকা অপান, উদান, প্ৰাণ, ব্যান আৰু সমান, এই পাঁচ প্ৰকাৰৰ বায়ু।

शरीर में रहनेवाले-अपान, उदान प्राण, व्यान और समान, ये पाँच प्राण।

पंच-मकार—(सं पुं) ম আখৰেৰে আৰম্ভ বাম মাৰ্গৰ ৫ বিধ আহিলা—মদ, মাংস, মাছ, মুদ্ৰা আৰু মৈথুন।

वाम मार्ग में—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंचमांग—[सं पुं] শত্ৰুৰ ৰাজ্যত উপদ্ৰৱ কৰা চোৰাংচোৰা দল। शत्रु के राज्यमें उपद्रव आदि करने वाला जासूस वर्ग।

[वि] পঞ্চম বাহিনী।

पचमांगी।

पंचमेल—(वि) পাঁচবিধ বস্তু মিলি থকা, সকলো প্ৰকাৰৰ বস্তু মিহলি হোৱা।

जिसमें पाँच प्रकार की चीजें मिली हुई हों। जिसमें सब प्रकार की चीजें हों।

पंचरंग(ा)—[वि] পাচ ৰঙৰ, বহুৰঙী।

पाँच रंगों का। अनेक रंगों का।

पंचरत्न—(सं पुं) সোণ, হীৰা, নীলকান্ত, লাল আৰু মুক্তা এই পাঁচবত্ন।

सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती ये पाँच रत्न।

पंचलड़ा—(सं पुं) পাঁচ ধাৰ [মণি, হাৰ, আদি]

पाँच लड़ों का।

पंचवाण—(सं पुं) কামদেৱৰ পাঁচ শৰ, কামদেৱ ।
कामदेवके पाँच वाण । कामदेव ।

पंचशर—[सं पुं] কামদেৱ. কামদেৱে নিক্ষেপ কৰা শৰ।
कामदेव । कामदेव के पाँचवाण ।

पंचांग—[सं पुं] পাঁচ অঙ্গ বিশিষ্ট বস্তু, পঞ্জিকা ।
पांच अंगोंवाली वस्तु । पत्रा ।

पंचाग्नि—[सं स्त्री] এক প্ৰকাৰৰ তপস্যা, পাঁচ প্ৰকাৰ অগ্নিৰ সমূহ ।
एक प्रकार की तपस्या । पाँच प्रकार की अग्नियाँ ।

पंचानन-(वि) পাঁচ মুখীয়া, শিৱ ।
पाँच मुँहोंवाला ।
(सं पुं) শিৱ, সিংহ ।
शिव । सिंह ।

पंचामृत—(सं पुं) দৈ, এৰাঁ গাখীৰ, ঘি, চেনি আৰু মৌৰ সংমিশ্ৰণ ।
दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिलाकर देवताओं के स्नान के लिये बनाया जानेवाला पदार्थ जिसे पवित्र मानकर पीया जाता है ।

पंचायती—(वि) পঞ্চায়তৰ, ৰাজহুৱা ।
पंचायत का । साझे का ।

पंचाल—(सं पुं) হিমালয় আৰু চম্বলৰ মাজৰ উপত্যকাৰ প্ৰাচীন নাম, শিৱ ।
हिमालय और चम्बल के बीच के भू भाग का प्राचीन नाम । शिव ।

पंचालिका—(सं स्त्री) পুতলা, অভিনেত্ৰী, নটী ।
गुड़िया । अभिनेत्री । नटी ।

पंचाली-(सं स्त्री) পুতলা, দ্ৰৌপদী, পঞ্চাল দেশৰ তিৰোতা ।
गुड़िया । द्रौपदी । पंचाल देश की स्त्री ।

पंछा—(सं पुं) ঘা আদিৰ পৰা ওলোৱা বিষপানী ।
घाव आदि से पानी की तरह निकलनेवाला स्राव ।

पंछी—(सं स्त्री) চৰাই ।
चिड़िया ।

पंजर—(सं पुं) কঙ্কাল, শৰীৰ, পিঁজৰা ।
ठठरी । कंकाल । शरीर । पिंजड़ा ।

पंजा—(सं पुं) হাত অথবা ভৰিৰ পাঁচোটি আঙুলিৰ সমূহ, পঞ্জা, তাচৰ পাত—পাঁচটি বুটা বা চিন থকা।

हाथ या पैर की पाँचों उंगलियों का समूह। उँगलियों या हथेली का संपुट। ताश का वह पत्ता जिसपर पाँच बूटियाँ होती हैं।

पंजिका-पंजी—[सं स्त्री] পঞ্জিকা, হিচাব ৰখা বহী, ঘূৰণীয়াকৈ মেৰাই থোৱা দীঘল কাগজৰ মুৰা।

पंचांग। हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। गोलाई में लिपटा लम्बे कागज का मुट्ठा।

पंजीयन—[सं पुं] বহীত লিপি বদ্ধ কৰা, নামৰ তালিকাত নাম আদি লিখা।

पंजीमें लिखा जाना। नाम सूची में नाम लिखा या चढ़ाया जाना।

पंजीरी—(सं स्त्री) আটা ঘিউত ভাজি তৈয়াৰ কৰা এবিধ মিঠা গুৰি।

आटे को घी में भूनकर बनाया जानेवाला मीठा चूर्ण।

पंडा—[सं पुं] পাণ্ডা, তীৰ্থ, মন্দিৰ আদি দেখুওৱা ব্যৱসায়িক ব্যক্তি।

किसी तीर्थ या मन्दिर में यात्रियों को देव दर्शन करानेवाला व्यक्ति।

पंडाल—[सं पुं] চামিয়ানা, ডাঙৰ মণ্ডপ।

उत्सवादि के लिये बनाया गया बड़ा मंडप।

पंडिताई—(सं स्त्री) বিদ্বত্তা, পণ্ডিতালি, পণ্ডিতৰ ব্যৱসায়।

विद्वत्ता। पंडितों का काम या व्यवसाय।

पंडिताऊ—[वि] পণ্ডিতাভিমানী, পণ্ডিতৰ দৰে।

पंडितों की तरह या ढग का।

पंडुक—[सं पुं] পাৰ চৰাইৰ দৰে এবিধ চৰাই।

कबूतर की तरह का एक पक्षी। (स्त्री पंडुकी)।

पंथ—(सं पुं) পথ, সম্প্ৰদায়, আচাৰ ব্যবহাৰৰ ৰীতি।

मार्ग। आचार व्यवहार का ढंग। सम्प्रदाय।

पंथी—(सं पुं) পথিক, কোনো সম্প্ৰদায় অথবা মতাৱলম্বী।
पथिक। किसी सम्प्रदाय या पंथ का अनुयायी।

पंद—(सं स्त्री) শিক্ষা অথবা উপদেশ।
शिक्षा या उपदेश।

पंपा—(सं स्त्री) দক্ষিণ ভাৰতৰ এটি পুৰণি নদী বা তাৰ পাৰত থকা এখন নগৰ বা পুখুৰী।
दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी। इस नदी के तट का एक नगर या सरोवर।

पँवरिया—(सं पुं) মাঙ্গলিক কাৰ্য্যৰ সময়ত গীত গোৱা এটা জাতি।
मंगल अवसरों पर गीत गानेवाली एक जाति।

पँवाड़ा—(सं पुं) অনাহকত কৰা তৰ্ক, এক প্ৰকাৰৰ লোকগীত।
व्यर्थ की बकवाद। एक प्रकार का देहाती गीत।

पँसारी—(सं पुं) গেলামালৰ দোকানী।
मिर्च, मसाले बेचनेवाला बनिया।

पकड़—(सं स्त्री) ধৰ, ধৰ-পাকৰ, মালযুঁজ।
पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़ने का ढंग। भिड़न्त।

पकड़ना—(क्रि अ) ধৰা, গ্ৰহণ কৰা, খবৰ উলিওৱা, আক্ৰমণ কৰা।
धरना। ग्रहण करना। पता लगाना। आक्रान्त करना। किसी चलनेवाली चीज तक पहुँचकर चढ़ना।

पकना—(क्रि अ) পকা, সুপক্ক হোৱা, সিদ্ধি হোৱা, গিজা, দৃঢ় হোৱা।
फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य होना। आग पर सीझना। फोड़े में पीबभर आना। पक्का या दृढ होना। (क्रि स—पकाना)

पकवान—(सं पुं) ঘিউত ভজা অথবা ঘিউৰে তৈয়াৰী মিঠাই।
घीमें तला या घीसे पकाया हुआ कोई खाद्य पदार्थ।

पकौड़ा—[सं पुं] বৰ ভজা, বেচন আদিৰে তৈয়াৰী সৰু সৰু বৰ ভজাৰ দৰে খোৱা বস্তু।
बेसन आदि को छोटे छोटे टुकड़े

के रूपमें तलकर बनाया जाने वाला एक पकवान।

पक्का—(सं पुं) পকা, দৃঢ়, নিশ্চিত ক্রটিহীন, আইনৰ দৃষ্টিৰে প্ৰামাণিক ।

पुष्ट। जो आग पर पकाया गया हो। मजबूत। निश्चित। त्रुटिहीन। जिसे अभ्यास हो। कानून या विधि की दृष्टि से मान्य और प्रामाणिक। अटल।

पक्की रसोई—(सं स्त्री) ঘিউ তেল আদিৰে ৰন্ধা খাদ্য পদাৰ্থ।

खाद्य पदार्थ।

पक्व—(वि) সুপক্ক, দৃঢ়, পৰিপুষ্ট। पका हुआ। दृढ़। परिपुष्ट।

पक्वाशय—[सं पुं] পাকাশয়, পাকস্থলি ।

पेटके अन्दर का वह स्थान जहाँ पहुँचकर अन्न पचता है।

पक्षपात—[सं पुं] পক্ষপাত , কোনো এক পক্ষৰ ফলীয়া হোৱা, পৰস্পৰ বিপৰীত স্বাৰ্থযুক্ত মানুহৰ এদল বা এজনক এৰি আন দল বা জনক সহানুভূতি দেখুৱা।

औचित्य या न्याय का विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होनेवाली प्रवृत्ति या सहानुभूति और उस पक्ष का समर्थन।

पक्षपाती—(त्रि) পক্ষপাতী।

तरफदार।

पक्षाघात—(सं पुं) বাতব্যাধি, অৰ্দ্ধাঙ্গী।

अर्द्धांग होना।

पक्षी—[सं पुं]পখী, চৰাই। পক্ষপাতী ।

चिड़िया। तरफदार।

(वि) চৰাই সম্বন্ধীয়, পক্ষৰ।

पक्ष सम्बन्धी। पक्षका।

पख—(सं स्त्री) বাধা, ক্ৰটি।

अड़ंगा। बखेड़ा। त्रुटि।

पखवाड़ा—[सं पुं] পখ ।

पन्द्रह दिनों का समय।

पखारना—(क्रि स) ধোৱা।

धोना ।

पखावज—(सं स्त्री) মৃদঙ্গ ।

मृदंग।

पखेरू—[सं पुं] চৰাই ।

चिड़िया।

पग—(सं पुं) খোজ, ভৰি।

पाँव। कदम। डग।

पगडंडी—(सं स्त्री) সৰু ৰাস্তা, লীক ।
जगलों या खेतों में का पतला रास्ता ।

पगड़ी-[सं स्त्री] পাগুৰী, উপহাৰ নাইবা আগধন ৰূপে দিয়া ধন ।
सिरपर बांधा जानेवाला साफा । नजराना ।

पगतरी—(सं स्त्री) জোতা ।
जूता ।

पगना—(क्रि अ) প্ৰেম বা ৰসেৰে পূৰ্ণ, নিমগ্ন হোৱা, লীন হোৱা, পগা ।
शरबत या शीरे मे पागा जाना । प्रेम या रस में पूर्ण होना ।

पगार—(सं पुं) চৌহদৰ বেৰ, বেতন, জপিয়াই পাৰ হব পৰা নদী, মাটিৰ লেপ আদি, এবিধ মুকুট ।
चहार दीवारी । पैरों से कुचली हुई मिट्टी या गारा । सिरपेच ।

पगुराना—[क्रि अ] পাগুলিওৱা, ৰোমন্থ কৰা ।
पागुर या जुगाली करना ।

पघा—[सं पुं] পঘা, গৰু গাই বন্ধা জৰী বা ৰছী ।
गाय भैंस के गले में बांधी जाने वाली मोटी रस्सी ।

पचड़ा—(सं पुं) জঞ্জাল, একপ্ৰকাৰৰ গীত ।
झंझट । बखेड़ा । एक प्रकार का गीत ।

पचना—[क्रि अ] হজম হোৱা, সমাপ্ত হোৱা, আনৰ বস্তু নিজৰ কৰা, শ্ৰম কৰি ভাগৰি পৰা ।
हजम होना । समाप्त या नष्ट होना । पराया माल छिपाकर अपना कर लेना । परिश्रम कर हैरान होना । खपना ।
(क्रि स- पचाना)

पचास—[वि] পঞ্চাশ ।

पचासा—(सं पुं) ৫০ টা বস্তুৰ সমুহ, জৰুৰী কালীন অৱস্থাত চিপাহী অথবা পুলিচ আদিক মাতিবলৈ বজোৱা ঘণ্টা ।
एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह । जरूरी स्थितिमें सिपाहियों को बुलाने के लिये बजाया जानेवाला थाने का घंटा ।

पचीस—(वि) পঁচিশ ।
बीस और पांच ।

पचीसी—[सं स्त्री] পঁচিশবিধ বস্তুৰ সমূহ, বয়সৰ প্ৰাৰম্ভিক ২৫ বছৰ, পাশা খেলৰ গুটি।
पचीस वस्तुओं का समूह। आयु के प्रारंभिक पचीस वर्ष। चौसर खेलने की गोटी।

पचड़ (र) - [सं पुं] কাঠৰ বস্তু শালিবলৈ সজা বাঁহ অথবা কাঠৰ শলা।
लकडी की वह गुल्ली जो काठ की चीजों को कसने के लिये उनमें ठोंकी जाती है।

पच्ची—(सं स्त्री) হজম কৰা বা কৰোৱা কাৰ্য্য, অলঙ্কাৰ গঢ়াৰ এক প্ৰকাৰ নিয়ম।
पचने या पचाने की क्रिया या भाव। जड़ाव का एक प्रकार।

पच्चीकारी - (सं स्त्री) এক ৰকম বাখৰৰ ওপৰত অইন ৰঙৰ বাখৰ খটোৱা কলা। এনে ধৰণেৰে তৈয়াৰ হোৱা কাৰুকাৰ্য্য।
पच्ची करने की क्रिया या भाव। पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

पछड़ना - (क्रि अ) পিছপৰি যোৱা।
पछाड़ा जाना। पिछड़ जाना।

पछताना—(क्रि अ) অনুতাপ কৰা।
पश्चात्ताप करना।

पछतावा—(सं पुं) অনুতাপ।
पश्चात्ताप।

पछवाँ—(सं पुं) পছোৱা, পশ্চিমৰ পিনৰ।
पश्चिम की ओर का।

पछाड़—(सं स्त्री) অজ্ঞানহৈ বা (শোক আদিত) মূৰ্চ্ছিত হৈ পৰি যোৱা, মল্লযুদ্ধৰ এটা পেচ।
पछाडने या पछडने की क्रिया या भाव। बेसुध या मूर्छित होकर गिर पडना।

पछाड़ना—[क्रि स] মল্লযুদ্ধত বিপক্ষ যোদ্ধাক মাটিত পেলাই দিয়া, প্ৰতিযোগিতাত বিপক্ষদলক পৰাস্ত কৰা, কাপোৰ ধুবৰ সময়ত জোৰ জোৰকৈ আছাৰ মৰা।
कुश्ती में विपक्षी को जमीनपर पटकना या गिराना। प्रतियोगिता में विपक्षी को हराना। कपड़ा धोते समय जोर जोर से पटकना।

पछ्याबर—[सं पुं] ঘোলেৰে তৈয়াৰী এক প্ৰকাৰ চৰবত।

छाछ का बना एक प्रकार का पेय पदार्थ।

पछोड़न–(सं स्त्री)(কুলাৰে জাৰি উলিওৱা) धান আদি শস্যৰ জাবৰ-জোথৰ, পতান আদি।

अनाज आदि का कूड़ा-कर्कट, जो उन्हें पछोड़ने पर निकलता है।

पछोड़ना—(क्रि स) কুলাৰে জাৰা। सूप आदि से फटकना।

पजरना–[क्रि अ] জলা, জলি উঠা। जलना। (क्रि स– पजाड़ना)।

पटंबर—(सं पुं) পাটৰ কাপোৰ। रेशमी कपड़ा।

पट—(सं पुं) পট, কাপোৰ, পৰ্দা, দুৱাৰ, চিত্ৰকলাৰ বাবে সজা লেখনী আদি।

कपड़ा। परदा। लेख या चित्र आदि अंकित करने के लिये धातु आदि का लम्बा टुकड़ा। दरवाजे का किवाड़।

पटकना–[क्रि स] জোৰেৰে ঢকা দি পেলোৱা। মাটিত পেলাই দিয়া।

जोर से झोंका देते हुए गिराना। जमीन पर पछाड़ना।

(क्रि अ) অঙ্কুৰিত হোৱা, প্ৰকট হোৱা।

अंकुरित होना। प्रकट होना।

पटका—(सं पुं) টঙালি। कमर बन्द।

पटकान—[सं स्त्री] আছাৰি পেলোৱা কাৰ্য্য অথবা ভাৱ।

पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव।

पटतर—(सं पुं) সমানতা, উপমা। समानता। उपमा।

(वि) সমতল।
समतल।

पटना—[क्रि अ] খাল আদি মাৰি ওখ ঠাই সমান কৰা, কোনো ঠাইত কোনো বস্তু খুব বেছি ভাৱে লগ লগা। তৈয়াৰ কৰা। নিশ্চিত কৰা। সম্পূৰ্ণ আদায় কৰা (ধাৰ)। পানী সিচা।

गड्ढे आदि का भरकर ऊँचे तलका बराबर हो जाना। किसी स्थान में किसी वस्तु का बहुत अधिक

मात्रा में इकट्ठा होना। दीवारों पर छत बनाना। खेतका सींचा जाना। लेन-देन में मूल्य या शर्तें निश्चित होना। ऋण चुकाना।

पटपटाना—[क्रि अ] ভোক পিয়াহ অথবা গৰম আদিত কষ্ট পোৱা, পট্ পট্ শব্দ হোৱা, দুঃখ প্ৰকাশ কৰা।

भूख प्यास या गरमी आदि से कष्ट पाना। पट पट शब्द होना। खेद या दुख करना।

पटरा—(सं पुं) কাঠৰ তক্তা, পীৰা, চালপীৰা,

काठ का तख्ता। पीढ़ा।

पट-रानी--[सं स्त्री] পাটৰাণী পাটমাদৈ।

राजा की प्रथम विवाहित रानी जो सिंहासन पर उनके साथ बैठती हो।

पटरी-[सं स्त्री] সৰু আৰু পাতল তক্তা, কাঠৰ ফলি-ৰাস্তাৰ দুয়োকাষে মানুহ যাবৰ বাবে তৈয়াৰ কৰা পথ, ফিতা, চুৰী, ৰেল লাইন।

छोटा और हलका पटरा। लिखने की तख्ती। रास्तेके दोनों ओर पदल चलने के लिये बनाया गया भाग। सुनहले रुपहले तारों से बना हुआ फीता। हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी। लोहे के बे समानान्तर छड़ जिस पर रेलगाड़ी चलती है।

पटल—(सं पुं) ঘৰৰ চাল, আবৰণ, থাপ, থলপা, অধ্যায়, চানেকি চকুৰ পলক।

छप्पर। आवरण। परत। पहल। आँख की भीतरी बनावट के परदे। तख्ता। अध्याय। पंखड़ी। समूह।

पटवारी—(सं पुं) গাওঁবুঢ়া শ্ৰেণীৰ চৰকাৰী কৰ্ম্মচাৰী

वह सरकारी अधिकारी जो गाँव की जमीन, उपज और लगान आदि का हिसाब-किताब रखता है।

(सं स्त्री) ৰাণীক অলঙ্কাৰ, কাপোৰ আদি পিন্ধাই দিয়া দাসী।

रानियों को गहने, कपड़े आदि पहनानेवाली दासी।

पटसन—(सं पुं) মৰাপাট।
एक पौधा जिसके रेशे से रस्सी बोरे आदि बनते हैं। पाट।

पटह—(सं पुं) দুন্দুভি, নাগেৰা।
दुन्दुभी। नगाड़ा।

पटा—(सं पुं) তৰোৱালৰ আক্ৰমণৰ পৰা ৰক্ষা পাবলৈ ব্যৱহাৰ কৰা লোহাৰ কবচ। চাল। পীৰা, কাপোৰ, চাদৰ, পাগুৰি, দৰ-দাম ঠিক কৰা।
तलवार के वार से बचावके लिये लोहे की पट्टी। पीढ़ा। वस्त्र। दुपट्टा। पगडी। सौदा पटने की क्रिया या भाव।

पटाका (खा)—(सं पुं) ফট্‌কা, ফট্‌কাৰ শব্দ, চৰ।
पटाक का शब्द। एक प्रकार की आतशबाजी। थप्पड़।

पटाक्षेप—[सं पुं] দৃশ্য পৰিবৰ্ত্তন, কোনো ঘটনাৰ সমাপ্তি।
नाटक का दृश्य समाप्त होनेपर परदे का गिरना। किसी घटना की समाप्ति।

पटाना—(क्रि स) ঘৰ সজাৰ কাম কৰোৱা, ধাৰ পৰিশোধ কৰা, দৰ-দাম ঠিক কৰা, আনক নিজৰ অনুকূল কৰা।
पाटने का काम दूसरे से कराना। ऋण चुकाना। सौदा या उसका दाम ठीक करना। किसी को अपने ऊपर प्रसन्न या अपने अनुकूल करना।
[क्रि अ] শান্ত হৈ বহা।
शान्त होकर बैठना।

पटिया—(सं स्त्री) ফলি, চাল-পীৰাৰ চোকাঠৰ কাঠ।
फलक। खाट के चौखटे में बगल की लकड़ी।

पटी—[सं पुं] বেণ্ডেজ আদিৰ বাবে কৰা দীঘল কাপোৰ, পাগুৰি, নাটকৰ পৰ্দ্দা।
कपड़े आदि की लम्बी धज्जी। कमरबन्द। पगड़ी। नाटक का परदा।

पटीलना—(क्रि सं) ঠগা, ঠিক পথলৈ অনা।
ढंगपर लाना। ठगना।

पटु—(वि) পটু, কুশল, চতুৰ।
प्रवीण। कुशल। चतुर।

पटुआ—[सं पुं] পাট।
पाट।

पटेबाज—(बि) ব্যভিচাৰী, দুষ্ট।
व्यभिचारी और धूर्त।

पटेल—[सं पुं] গাঁৱৰ মুখিয়াল, ব্যক্তি।
गाँव का नम्बरदार या मुखिया।

पटोरी—(सं स्त्री) পাটৰ শাৰী বা চুৰীয়া।
रेशमी साड़ी या धोती।

पटोल—[सं पुं] একপ্ৰকাৰৰ পাটৰ কাপোৰ, পটল।
एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। परवल।

पटोसिर—(सं पुं) মূৰত বন্ধা কাপোৰ, মূৰ বন্ধা।
सिर पर बाँधने का कपड़ा।

पटौनी-[सं स्त्री] ঘৰ সজা কাৰ্য্য।
पटने या पाटने की क्रिया या भाव।

पट्ट—(सं पुं) পীৰা, তাম্ৰপত্ৰ আদি ৰাজাজ্ঞাৰ বাবে ব্যৱহৃত বস্তু, ঢাল, সিংহাসন, নাম আদি লিখা কাঠ বা টিনৰ টুকুৰা। (চাইনবোৰ্ড)
पीढ़ा। पटरी। धातु की वह चिपटी पट्टी जिसपर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। काठ या धातु का वह बड़ा टुकड़ा जिसपर नाम या सूचनाएँ लिखी या लगायी जाती है। ढाल। सिंहासन।

पट्टन—[सं पुं] নগৰ।
नगर।

पट्ट-महिषी—[सं स्त्री] পাটমাদৈ।
पटरानी।

पट्टा—(सं पुं) পট্টা, অধিকাৰ-পত্ৰ, একপ্ৰকাৰৰ তৰোৱাল, গলৰ দুয়ো কাষৰ দীঘল চুলি, চামৰাৰ ফিতা।
अधिकार पत्र। सनद। चमड़े का लम्बा तसमा या फीता। गले के दोनों ओर के लम्बे लम्बे बाल। एक प्रकार की तलवार।

पट्टी—(सं स्त्री) কাঠৰ টুকুৰা, ফলি, পাঠ, উপদেশ, বেয়া ভাবে দিয়া পৰামৰ্শ, মিঠাই, কোনো সম্পত্তিৰ অংশ।
पटिया। तख्ती। पाठ। उपदेश। बुरी नीयत से दी जानेवाली सलाह। एक प्रकार की मिठाई। किसी सम्पत्तिका भाग।

पट्टीदार—[सं पुं] অংশীদাৰ, সমভাগী।
हिस्सेदार। बराबरका अधिकारी

पट्टेदार—(सं पुं) পট্টা লিখাই মাটি লোৱা ব্যক্তি।
जिसने पट्टा लिखाकर कोई जमीन ली हो।

पट्ठा-(सं पुं) যুবক, যোদ্ধা, মল্ল যোদ্ধা, স্নায়ু, ডাঙৰ-দীঘল ব্যক্তি।
जवान। तरुण। अखाड़िया। स्नायु। लम्बा और दलदार मोटा पत्ता।

पठान—[सं पुं] এটি মুছলমান জাতি, পাঠান।
एक मुसलमान जाति।

पठार—[सं पुं] বেছি ওখৰ সমতল মাটি-মাল ভূমি, এটি পাহাৰী জাতি।
बहुत ऊंचाई पर की समतल जमीन। एक पहाड़ी जाति।

पठावन—(सं पुं) দূত।
दूत।

पठिया—[सं स्त्री] যুবতী, সবল সুস্থ তিৰোতা।
जवान और तगड़ी स्त्री।

पड़ताल—(सं स्त्री) অনুসন্ধান, বিচাৰ।
अनुसंधान। जाँच।

पड़ती—(सं स्त्री) খেতিৰ উপযোগী হৈ পৰি থকা মাটি।
जोतने-बोने योग्य वह जमीन, जो जोती-बोई न गयी हो

पड़ना-(क्रि अ) পতিত হোৱা। দুখ, কষ্টই ভুমুৰি দি ধৰা। জিৰোৱা, আৰাম কৰা, আৱশ্যক হোৱা।
पतित होना। दुःख, कष्ट का भार आदि ऊपर आना। ठहरना। आराम करना। रास्ते में होना। आवश्यकता या गरज होना।

पड़पोता, परपोता-(सं पुं) নাতিৰ ল'ৰা।
पोता या नाती का लड़का।

पड़वा—(सं पुं) মহৰ পোৱালী।
भैंस का नर बच्चा। (सं स्त्री—पड़िया)।

पड़ाव-[सं पुं]বাটকৰাৰ জিৰণি ঘৰ। পদযাত্ৰাৰ আশ্ৰয় স্থল। জিৰণি স্থল।
पैदल यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय के लिये ठहरना। यात्रियों के ठहरने का स्थान।

पड़ोस—(सं पुं) ওচৰ-পাঁজৰ, দাঁতি-কাষৰৰ ঠাই।
किसी स्थान के आस पास का स्थान।

पड़ोसी—[सं पुं] ওচৰ চুবুৰীয়া।
पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़ना—(क्रि स) পঢ়া, অধ্যয়ন কৰা। মন্ত্ৰ উচ্চাৰণ কৰা। ধাঁচু কৰা। মুখস্থ কৰা।
अध्ययन करना। बाँचना। मंत्र उच्चारण कर फूंकना। जादू करना। शब्दों को रटना।

पढ़ाई—[सं स्त्री] পঢ়ন, বিদ্যাভ্যাস, পঢ়া বা পঢ়োৱাৰ বাবে পোৱা ধন, অধ্যাপন।
विद्याभ्यास। पढ़ने के या पढ़ाने के बदले में मिलनेवाला धन। अध्यापन।

पढ़ाना—(क्रि स) পঢ়োৱা, শিক্ষা দিয়া।
शिक्षा देना। कोई कला सिखाना, समझाना।

पढ़ैया—[सं पुं] পাঠক, পঢ়ুৱৈ।
पढ़नेवाला।

पण—(सं पुं) জুৱা, ঠিকা আদিৰ চৰ্ত্ত বা চুক্তি। সম্পত্তি, বেপাৰৰ বস্তু।
जूआ। ठेके आदि की शर्तें। सम्पत्ति। व्यापार या व्यापार की वस्तु। दहेज आदि देने की करारें।

पण्य—(वि) বেচা কিনাৰ যোগ্য।
जो खरीदा-बेचा जा सके।
(सं पुं) বন্দোবস্ত, বজাৰ, দোকান। কিনা বেচাৰ বস্তু।
सौदा। व्यापार। बाजार। दूकान।

पतंग—[सं पुं] চৰাই, কীট-পতঙ্গ। সূৰ্য্য, এবিধ গছ। কাগজৰ চিলা।
पक्षी। फतिंगा। सूर्य। एक प्रकार का वृक्ष। गुड्डी।

पतंगम्—(सं पुं) চৰাই, পতঙ্গ।
पक्षी। फतिंगा।

पतंगा—(सं पुं) পখিলা, পতঙ্গ।
उड़नेवाला छोटा कीड़ा। फतिंगा।

पत—(सं पुं) পতি।
पति।
(सं स्त्री) প্ৰতিষ্ঠা, মৰ্য্যাদা।
प्रतिष्ठा। इज्जत।

पतझड़, पतझार—(सं स्त्री) শীত কালত গছৰ পাত সৰা সময়,

अৱনতিৰ সময়।
पेड़ों के पत्ते झरने का समय।
अवनति का काल।

पतला—(वि) পাতল, মিহি, পনীয়া। দুৰ্ব্বল।
कम मोटाईवाला। बारिक। अधिक तरल। अशक्त।

पतवार—[सं स्त्री] গুৰি-বঠা; গছৰ শুকান পাত।
जहाज या नाव को निश्चित दिशा में घुमाने फिरानेवाला यंत्र। पौधों की सूखी पत्तियाँ।

पता—(सं पुं) ঠিকনা, অনুসন্ধান, জ্ঞান, ৰহস্য।
ठिकाना। अनुसंधान। जानकारी रहस्य।

पताकिनी—(सं स्त्री) সৈন্য।
सेना।

पतिआना, पतियाना—(क्रि म) পতিয়ন যোৱা, বিশ্বাস কৰা।
विश्वास करना।

पतित-उधारन—(वि) পতিতক উদ্ধাৰ কৰোঁতা, পতিত-পাৱন।
पतितों का उद्धार करनेवाला।

पतियार—(वि) বিশ্বাস যোগ্য।
विश्वास करने योग्य।

पतिव्रता—(वि) সতী, সাধ্বী।
सती। साध्वी।

पतीला—[सं स्त्री] পীতল বা তামৰ সৰু হাড়ী।
पीतल या तांबे की एक प्रकार की छोटी बटलोई।

पतुरिया—[सं स्त्री] বেশ্যা।
वेश्या।

पतोखा—(सं पुं) জাপি, দোনা।
पत्ते का बना छोटा पात्र या छाता।

पतोह (हू)—[सं स्त्री] বোৱাৰী।
बेटे की पत्नी।

पत्तन—[सं पुं] নগৰ।
नगर।

पत्तर—[सं पुं] ধাতুৰ পাতল কিন্তু বহল টুকুৰা।
धातु का पतला चौड़ा टुकड़ा।

पत्तल—(सं स्त्री) গছৰ পাতেৰে তৈয়াৰী এক ৰকমৰ খাদ্য খোৱা সাজ।
पत्तों का बना हुआ गोलाकार आधार जिसपर खाना आदि परोसा जाता है।

पत्ता—(सं पुं) গছৰ পাত, কাণত পিন্ধা অলঙ্কাৰ।
वृक्ष का पत्र। कान में पहनने का एक गहना।

पत्ती—[सं स्त्री] সৰু পাত, ফুলৰ পাহি। কাঠ নাইবা ধাতু আদিৰ সৰু টুকুৰা।
छोटा पत्ता। साझे का अंश। फूल की पँखड़ी। भाँग। लकड़ी धातु आदि का कोई कटा हुआ छोटा टुकड़ा।

पत्थर - [सं पुं] শিল, শিলৰ টুকুৰা, বৰমূলৰ শিল, হীৰা আদি বস্তু।
प्रस्तर। शिला खंड। ओला। हीरा, नीलम आदि रत्न।

पत्र—(सं पुं) গছৰ পাত, কাগজ, চিঠি, বাতৰি কাকত, পৃষ্ঠা।
वृक्ष का पत्ता। वह कागज जिस पर कोई महत्व की बात हुई हो। चिट्ठी। अखबार।

पत्रकार—[सं पुं] খবৰৰ কাগজৰ সম্পাদক, বাতৰি যোগনিয়াৰ।
अखबार का सम्पादक। पत्रों में समाचार आदि भेजनेवाला।

पत्रपुष्प— (सं पुं) সৎকাৰ বা পূজাৰ সাধাৰণ সামগ্ৰী। সামান্য উপহাৰ।
सत्कार या पूजा की बहुत सामान्य सामग्री। सामान्य या तुच्छ उपहार।

पत्रवाह, पत्रवाहक— [सं पुं] ডাকোৱাল, পত্ৰবাহক।
डाकिया। पत्र पहुँचानेवाला।

पत्रा— [सं पुं] তিথি পত্ৰ, পৃষ্ঠা। পঞ্জিকা।
तिथि पत्र। पृष्ठ।

पत्राचार—(सं पुं) পত্ৰ ব্যৱহাৰ।
पत्र व्यवहार।

पत्रिका-[सं स्त्री] চিঠি, আলোচনী বাতৰি কাকত আদি।
चिट्ठी। नियत समयपर प्रकाशित होनेवाला कोई सामयिक पत्र पत्रिका या पुस्तक।

पत्री—(सं स्त्री) চিঠি, চুটি প্ৰবন্ধ; জন্ম পত্ৰিকা।
चिट्ठी। कोई छोटा लेख। जन्म पत्रिका।
[सं पुं] বাণ।
बाण।

पथरकला—[सं पुं] পুৰণি কালৰ এবিধ বন্দুক।
प्राचीन काल की एक प्रकार की बन्दूक।

पथराना—[क्रि अ] শিলৰ দৰে কঠোৰ হোৱা, নিৰ্জীৱৰ দৰে হোৱা।
पत्थर की भाँति कठोर हो जाना। नीरस और कठोर होना। सजीव न रहना।

पथरी—(सं स्त्री) শিলৰ বাটি, মূত্ৰাশয়ৰ এবিধ ৰোগ। এবিধ চকমকীয়া শিল।
पत्थर की बनी छोटी कटोरी। मूत्राशय का एक रोग। चकमक पत्थर।

पथरीला—(वि) শিলাময়।
पत्थरो से युक्त

पथरौटा—[सं पुं] শিলৰ বাটি।
पत्थर का कटोरा।

पथ्य—(सं पुं) ৰোগীয়াৰ লঘুপাকী আহাৰ। পথ্য।
रोगी को दिया जानेवाला सुपाच्य आहार।
(वि) পথ সম্বন্ধীয়।
पथ सम्बन्धी।

पदक—[सं पुं] গৌৰৱৰ নিদৰ্শন স্বৰূপে দিয়া এখণ্ড ধাতুৰ পুৰস্কাৰ। মোহৰ, পদক।
तमगा।

पदचार (ण)—(सं पुं) পদযাত্ৰা।
पैदल चलना।

पदचारी—(सं पुं) পদ যাত্ৰী।
पैदल चलनेवाला।

पदतल—[सं पुं] ভৰিৰ তলুৱা।
पैर का तलवा।

पददलित—(वि) ভৰিৰে মোহাৰি পেলোৱা, অধীনস্থ।
पैरोंसे रौंदा हुआ। जिसे दबाकर बहुत हीन बना दिया गया हो।

पदभार—(सं पुं) কোনো পদৰ দায়িত্ব।
किसी पद का उत्तर दायित्व।

पद-योजना—[सं स्त्री] কবিতাৰ পদ মিলোৱা কাৰ্য্য।
कविता में पदो के मिलाने की क्रिया या भाव।

पदवी—(सं स्त्री) উপাধি, খিতাপ।
उपाधि। ओहदा।

পদাক্রান্ত—[বি] ভৰিৰে গচকি পেলোৱা।
पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।

পদাতি (ক)—[সং পুং] ভৰিৰে খোজ কাঢ়ি ৰণ কৰা, সৈন্য বা চিপাহী।
पैदल चलनेवाला। नौकर। पदल सिपाही।

পদাধিকাৰ—(সং পুং) কোনো পদ বা খিতাপৰ অধিকাৰী।
किसी पद या ओहदे पर होने वाला अधिकारी।

পদানা—(ক্রি স) জুলুম কৰা।
बहुत परेशान या तंग करना।

পদাৰ্থবিজ্ঞান-(সং পুং) পদাৰ্থ সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞান দায়ক শাস্ত্ৰ, প্ৰকৃতিৰ বিজ্ঞান।
भौतिक विज्ञान।(फीजिक्स)

পদাৰ্পণ—[সং পুং] এঠাইত সৈ ভৰি দিয়া বা উপস্থিত হোৱা।
कहीं पैर रखने या आनेकी क्रिया। बड़ों के लिये आदर सूचक।

পদাৱলী-(সং স্ত্ৰী) পদৰ সংগ্ৰহ।
वाक्यों की श्रेणी। भजनों का संग्रह।

পদেন—(ক্রি বি) কোনো পদত অধিষ্ঠিত থকা অধিকাৰত।
किसी पद के या किसी पदपर आरूढ होने के अधिकार से। (एक्स-ऑफिसियो)

পদ্ধতি—[সং স্ত্ৰী] ৰীতি, নিয়ম, প্ৰণালী।
राह। रीति। प्रणाली।

পদ্ম—(সং পু) পদুম, এটা ডাঙৰ সংখ্যা।
১,০০,০০,০০,০০,০০,০০,০০০।
कमल। गणितमें सोलहवे स्थान की संख्या।

পদ্মজা, পদ্মা—[সং স্ত্ৰী] লক্ষ্মী।
लक्ष्मी।

পদ্মনাভ—(সং পুং) বিষ্ণু।
विष्णु।

পদ্মনাল—[সং স্ত্ৰী] পদুমৰ ঠাৰি।
कमल का डण्ठल।

পদ্মৰাগ—(সং পুং) ডালিমা বা ৰত্ন।
लाल माणिक।

পদ্মাসন—(সং পুং) বাঁও কৰঙনৰ ওপৰত সোঁ ভৰি আৰু সোঁ কৰঙনৰ ওপৰত বাঁও ভৰি থৈ কৰা আসন। যৌগিক মুদ্রা

योग साधन में एक प्रकार का आसन या मुद्रा ।

पद्मिनी—[सं स्त्री] পদ্মিনি, লক্ষ্মী, সুলক্ষণী তিৰোতা।
कमलिनी । लक्ष्मी । स्त्रियों में एक भेद ।

पद्यात्मक—[वि] ছন্দোবদ্ধ ।
छन्दोबद्ध ।

पधराना—(क्रि स) সসন্মানে বহুওৱা, প্ৰতিষ্ঠিত কৰা ।
आदर पूर्वक बैठाना । प्रतिष्ठित करना ।

पधारना—[क्रि अ] পদাৰ্পণ কৰা। (সন্মানীয় ব্যক্তিৰ ক্ষেত্ৰত)
आदरणीय व्यक्ति का आना ।

पन-(सं पुं) অৱস্থা, প্ৰতিজ্ঞা, মূল্য, এবিধ প্ৰত্যয় ।
अवस्था । प्रण । मूल्य । एक प्रत्यय ।

पनघट—(सं पुं) পানী অনা ঘাট ।
वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते हैं ।

पनचक्की—[सं स्त्री] পানীৰ সোঁতৰ দ্বাৰা চালিত চকা বা যন্ত্ৰ ।
पानी के वेग से चलनेवाली चक्की ।

पन-डब्बा—(सं पुं) বটা ।
पान दान ।

पन-डुब्बा—[सं पुं] পানী কাউৰী, পানীৰ তলে তলে যোৱা যুদ্ধ জাহাজ । ডুবিয়াল ।
गोताखोर ।

पनडुब्बी—[सं स्त्री]পানী কাউৰী । পানীৰ তলে তলে যোৱা যুদ্ধ জাহাজ ।
जलाशयों के पास रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया । पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाला एक प्रकार का आधुनिक जहाज (सबमैरिन ।

पनपना—[क्रि अ] ঠন ধৰি উঠা, লহ্-পহ্কৈ বাঢ়ি অহা, উঠা, সুস্থ ।
नये पौधों का पत्तों से युक्त और हरा भरा होना । नये सिरे से अथवा फिरसे तन्दुरुस्त, समर्थ या सशक्त होना ।

पनवाड़ी—[सं पुं] পান বেচোঁতা ।
पान बेचनेवाला । तमोली ।

पनवारी—[सं पुं] পানৰ বাৰী ।
पान के पौधोंका भीटा ।

पनस—[স' পু'] কঁঠাল গছ বা তাৰ ফল।
कटहल वृक्ष या उसका फल।

पनहरा—(স' পু') পানী ভাৰী, পানী যোগনিয়াৰ।
दूसरों के घर पानी भरनेवाला आदमी।

पनहा-(স' পু') পূতল, গূঢ় অৰ্থ।
कपड़े या दीवार की चौड़ाई। गूढ़ तात्पर्य।

पनाला—[স' পু'] নৰ্দমা, নলা।
गंदा पानी बहने की मोरी। नाबदान।

पनाह—(सं স্ত্ৰী) ৰক্ষা, আশ্ৰয়-স্থল, শৰণ।
रक्षा। रक्षा पाने का स्थान।

पनिया, पनिहा—[বি] পানীত থাকে যি, পানী মিহলোৱা।
पानी में रहनेवाला। पानी मिलाया हुआ।
(सं पुं) চোৰা;চোৱা।
भेदियां। जासूस।

पनीर—(স' পু') পনীৰ, ছানা।
छेना। पानी निचोड़ा हुआ दही।

पनीरी—(স' স্ত্ৰী) অইন ঠাইত ৰুবৰ বাবে গজোৱা পুলি।
वे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिये लगाये जाते हैं।

पनीला, पनैला—(বি) পানী যুক্ত, পানীত থকা।
जिसमें पानी मिला हो। जो पानी में रहता हो।

पन्नग—[স' পু'] সাপ, মৰকত মণি।
सांप। मरकतमणि।

पन्नगारि—(सं पुं) গৰুড়।
गरुड़।

पन्ना—(স' পু') মৰকত মণি, পৃষ্ঠা।
मरकत मणि। पुस्तक का पृष्ठ।

पपड़ी-[স' স্ত্ৰী] ঘাৰ চকলা, কোনো বস্তুৰ শুকাই যোৱা প্ৰথম খলপ, এবিধ মিঠাই।
सूखकर चिपड़ी हुई किसी वस्तु की पतली परत। घाव पर की जमी हुई परत। एक प्रकार की मिठाई।

पपीता—[স' পু'] মধুফল, অমিতা।
एक प्रकार का फल या उसका पौधा।

पपोहरा, पपीहा—[স' পু'] পানী পিয়া চৰাই, চাতক পখী।
चातक पक्षी।

पपोटा—[सं पुं] চকুৰ পিৰিকটি।
आँख के ऊपर की पलक।

पय—(सं पुं) গাখীৰ।
दूध।

पयस्विनी—(सं स्त्री) খিৰতী গাই, নদী, হঠযোগ মতে বাওঁ কাণৰ নাডী।
दूध देनेवाली गाय। नदी। हठ योग में बायें कान की नाड़ी।

पयहारी—(सं पुं) গাখীৰ খাই বৰ্ত্তি থকা সাধু।
केवल दूध पीकर रहनेवाला साधु।

पयान—(सं पुं) গমন।
गमन।

पयार (ल)—(सं पुं) নৰা [দাই নিয়া ধানৰ মূৰা]
धान आदिके पुयाल।

पयोद—(सं पुं) মেঘ।
मेघ।

पयोधर-[सं पुं] স্তন, মেঘ, পাহাৰ।
स्तन। बादल। पहाड़।

पयोधि (निधि)—[सं पुं] সাগৰ।
समुद्र।

परन्तु—(अव्य) কিন্তু, তথাপি।
तो भी। पर। किन्तु।

परंपरागत—(वि) পৰম্পৰা অনুসৰি।
परम्परा से चला आया हुआ।

पर—(वि) আন, অন্য, পিছৰ, দূৰ, উত্তম, বৈৰী।
अपने से भिन्न। गैर। पीछे या बाद का। दूर। उत्तम। बैरी।
(अव्य) পিচত, কিন্তু।
पश्चात्। परन्तु।
[सं पु] চৰাইৰ পাখি, ডেউকা।
पक्षी का पंख।
[प्रत्यय] ত, (সপ্তমী বা অধিকৰণৰ চিন)
सप्तमी या अधिकरण का चिह्न।

पर-कटा—(वि) পাখি কটা।
जिसके पंख कटे हों।

परकना—(क्रि अ)অভ্যাস হোৱা। সহজ হোৱা। লাই পোৱা।
हिलना-मिलना। आदत पड़ना।

परकाजी—(वि) পৰোপকাৰী।
परोपकारी।

परकार, परकाल-[सं पुं] আমিনী কাঁটা কম্পাচ।
वृत्त बनाने का एक औजार।

परकाला—[सं पुं] জখলা, খট-খটী, বাৰাণ্ডা, জলন্ত এঙাৰ, টুকুৰা।

. टुकड़ा। बड़ी चिनगारी।

परकीय—(वि) আনৰ ।
दूसरे का।

परकीया—(सं स्त्री) পৰ পুৰুষৰ লগত প্ৰেম কৰোঁতা স্ত্ৰী।
अपने पति के सिवा दूसरे पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री।

परकोटा—(सं पुं) গড, কোঁঠ।
रक्षा के लिये बनायी हुई ऊँची दीवार का घेरा। बाँध।

परख—(सं स्त्री) ভাল বেয়া চিনি পোৱা জ্ঞান, পৰীক্ষা।
गुण-दोष की ठीक ठीक जाँच। पहचान।

परखना—[क्रि स] সূক্ষ্ম দৃষ্টিৰে পৰীক্ষা কৰা, ভাল বেযা চিনি উলিওৱা।
सूक्ष्म परीक्षा करना। अच्छे बुरे की पहचान करना।
[क्रि स] প্ৰতীক্ষা কৰা।
प्रतीक्षा करना।

परगाछा—[सं पु] বনুমলা।
दूसरे पेड़ पौधों पर उगनेवाले कुछ छोटे पौधे।

परचना—(क्रि स) কাৰোবাৰ লগত থাকি লাহে লাহে মিলি জুলি যোৱা।
किसी के पास रहकर धीरे धीरे उससे हिलना मिलना। चसका लगना।

परचा—[सं पुं] কাগজৰ টুকুৰা, চিঠি, প্ৰশ্ন পত্ৰ, বাতৰি কাকতৰ কোনো এটা সংখ্যা, পৰীক্ষা, প্ৰমাণ।
कागजका टुकड़ा। पत्र। परीक्षा का प्रश्न पत्र। समाचार पत्रका कोई अंक। कोई छोटा विज्ञापन या सूचना पत्र। परिचय। जांच।

परचून—(सं पु)দোকানৰ চাউল দালি আদি বস্তু।
बनिये के यहाँ बिकनेवाली आटा, दाल, मसाले आदि वस्तु।

परछन—(सं स्त्री) বিবাহৰ এক ৰীতি–দৰাৰ চাৰিওফালে এটি চাকি ঘুৰোৱা হয ভুত–প্ৰেত আদি খেদিবলৈ।
विवाह की एक रीति।

परछांई—[स स्त्री] প্রতিচ্ছায়া, প্রতিবিম্ব

आकृति के अनुरूप पडी हुई छाया। प्रतिबिम्ब।

परजरना (जरना)—(क्रि अ) প্রজ্বলিত হোবা, জ্বলি উঠা।
प्रज्वलित होना। सुलगना।

परजात—[सं स्त्री] আন জাতি।
दूसरी जाति।

(वि) অন্য জাতিৰ।
दूसरी जाति का।

पर-जीवी—[सं पुं] আনৰ ওপৰত ভাবসা কৰি যি জীৱাই থাকে, বথুমলা আদি।

वह जो दूसरों के सहारे रहकर जीवन बिताता हो। कुछ पौधे या कीडे मकोड़ जो दूसरेके रस या खून चूसकर पीते है।

परतः—[अव्य] আনৰ দ্বাৰা, পিছত, আগত।

दूसरे से। पीछे। आगे। परे।

परत—(सं स्त्री) তৰপ, জাপ, চামনি।

सतह पर फैली हुई वस्तु की मोटाई। स्तर। तह।

परती—(सं स्त्री) চিঠা লিখা কাগজৰ বহী বা পেদ। ছন মাটি, খেতি নকৰা মাটি।

एकमें लगे हुए बहुत से कागजों को गड्डी। बिना जोती हुई खेती के उपयोगी जमीन।

परतीति—(सं स्त्री) প্ৰতীতি, বিশ্বাস।

प्रतीति। विश्वास।

परदा—(सं पुं) পৰ্দ্দা, আঁৰ, ওৰণি।

चिक। व्यवधान। आड। छिपाव। मर्यादा। लाज।

परदाज—(सं पुं) সজোৱা।
सजाना। चित्र आदि के चारों ओर बेल बूटे बनाना।

पर-दादा—(सं पुं) প্ৰপিতামহ, আজোককা।

दादा का बाप।

परदा-नशीन—[वि]আবুৰত থকা।
परदे में रहनेवाली स्त्री।

परधाम परम धाम—(सं पुं) বৈকুণ্ঠলোক।

वैकुंठ धाम।

परपंच—(सं पुं) প্ৰপঞ্চ জঞ্জাল।
प्रपंच। झंझट।

পৰপৰোনা—(ক্রি অ) জলকীয়া আদি লগালে জিভা আৰু মুখত হোৱা পোৰণি ।
मिर्च आदि लगकर चुनचुनाना ।

পৰ-পোৱা—(সং পুং)নাতিৰ ল'ৰা ।
पोते का लडका ।

পৰ-বস, পৰবশ—[বি] পৰাধীন ।
पराधीन ।

পৰ বোধনা—(ক্রি স) জগোৱা, জ্ঞানৰ উপদেশ দিয়া ।
जगाना । ज्ञान का उपदेश देना ।

পৰভৃত—[সং পুং] কাৰ্ত্তিকেয়, কুলি ।
कार्तिकेय । कोयल ।

পৰম তত্ব—(সং পুং) পৰম তত্ব যাৰ দ্বাৰা বিশ্বৰ উৎপত্তি আৰু বিকাশ হৈছে, ঈশ্বৰ ।
वह तत्व जिससे विश्वकी उत्पत्ति और विकास हुआ है । ईश्वर ।

পৰম পদ—(সং পুং) মুক্তি ।
मुक्ति ।

পৰম সত্তা—(সং স্ত্রী) পৰম সত্তা—যি শক্তিতকৈ কোনো শ্রেষ্ঠ সত্তা নাই ।
वह सत्ता या शक्ति जिससे बढ़ कर कोई सत्ता या शक्ति न हो ।

পৰম হংস—(সং পুং) মহাযোগী, সমস্ত ইন্দ্রিয়ক দমি সংসাৰ ত্যাগ কৰা যোগী ।
पूर्ण ज्ञानी संन्यासी । परमात्मा ।

পৰমাননা—(ক্রি স) প্রামাণিক স্বীকাৰ কৰা ।
प्रामाणिक समझना । स्वीकृत करना ।

পৰমায়ু—[সং স্ত্রী) জীয়াই থকা কাল ।
मनुष्य के जीवन काल की चरम सीमा ।

পৰমাৰ্থ-[সং পুং] শ্রেষ্ঠ জ্ঞান, পৰোপকাৰ, মুক্তি ।
सबसे बढकर वस्तु या सत्ता । परोपकार । मोक्ष ।

পৰমিনি-[সং স্ত্রী] চৰমসীমা বা শীৰ্ষ পদ ।
चरमसीमा या पद ।

পৰমোদনা-[ক্রি অ] তোষামোদ কৰা ।
मीठी मीठी बातें कर अपनी ओर मिलाना ।

পৰলা—(বি) সিফালৰ ।
उस ओर का । उधर का ।

परबरिश—(सं स्त्री) পালন-পোষণ।
पालन पोषण।

परवा, परवाह—[सं स्त्री] চিন্তা, খাতিৰ, আনৰ মহত্ব বা শক্তি আদিৰ প্ৰতি দৃষ্টি।
चिन्ता। फिक्र। किसी के महत्व, शक्ति आदिका ध्यान।

परवाना—(सं पुं)লিখিত আদেশ, ক্ষমতা, নিৰ্দিষ্ট জোখৰ পাত্ৰ। পতঙ্গ, পৰুৱা।
आज्ञापत्र। फतिगा। नापने का एक मान या पात्र।

परवाल—[पु सं]চকুৰ বেকা নোম।
आँख की पलक के अन्दर का वह बाल जिसमे आँख में बडी पीडा होती है।

परशु-(सं पुं)কুঠাৰৰ নিচিনা অস্ত্ৰ।
युद्धमें काम आनेवाला एक प्रकार का कुल्हाडी जैसा औजार।

परसना—[क्रि स] স্পৰ্শ কৰা, আহাৰ কৰোঁতে আলধৰা।
छूना। परोसना।

परस-पखान, परस-पत्थर, पारस—(सं पुं) পৰশ মণি (ইয়াৰ পৰশত লো ও সোণ হয়)
एक प्रकार की मणि जिसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है।

परसाल—[पद] যোৱা বছৰ।
पिछले वर्ष।
[सं स्त्री] ডাঙৰ খোটালী।
बडा कमरा।

परसों—(अव्य) পৰহি দিনা।
बीते कल या आनेवाले कल का परवर्ती दिन।

परस्व—[सं पुं] পৰাধীনতা, আনৰ সম্পত্তি
परायापन। दूसरे की सम्पत्ति। पराधीनता।

परहेज—[सं पुं] খোৱা-লোৱাত সংযম, বাচ-বিচাৰ।
खाने-पीने आदि का संयम। दोषों, पापों, बुराइयो आदि से दूर रहना।

पराँठा—[सं पुं] ডাঠ রুটি।
एक प्रकार की रोटी। परौठा।

परा—[सं स्त्री] ব্ৰহ্ম বিদ্যা
ब्रह्मविद्या।

(स ं पु ं) শাৰী ।
पंक्ति । कतार ।

पराकाष्ठा—(स ं स्त्री) চৰমসীমা ।
वह अन्तिम सीमा जहाँ तक कोई बात हो या पहुँच सकती हो ।

पराग—(सं पुं) ফুলৰ ৰেণু, চন্দন ।
पुष्परज । चन्दन ।

पराङ्मुख— [वि] বিমুখ, উদাসীন, বিৰোধ ।
मुँह फेरे हुए । उदासीन । विरुद्ध ।

परात—(स ं स्त्री) ডাঙৰ থাল ।
बड़ी थाली ।

परात्पर—(वि) সৰ্ব্বশ্ৰেষ্ঠ ।
सर्व श्रेष्ठ ।
(स ं पु ं) বিষ্ণু; পৰমাত্মা ।
विष्णु । परमात्मा ।

पराना—[क्रि अ क्रि स]আঁতৰি যোৱা, আঁতৰোৱা, নষ্ট কৰা ।
भाग जाना । भगा देना । नष्ट करना ।

पराभव—[स ं पु ं] পৰাজয়, তিৰস্কাৰ, অধীনস্থ কৰা ।
पराजय । तिरस्कार । दूसरे को दबाकर अपने अधीन करना ।

पराभूत—(वि) পৰাজিত, তিৰস্কৃত ।
हारा हुआ । तिरस्कृत ।

परायण—(वि) নিষ্ঠ, ৰত ।
गया हुआ । लगा हुआ । किसी विषय या बात पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ या स्थिर ।

पराया—[वि] আনৰ, ভিন্ন, পৰ ।
दूसरे का । जो आत्मीय न हो ।

परार्थ—[स ं पु ं] আনৰ হকে কৰা সৎকাম ।
दूसरे का उपकार या भलाई ।
[वि] আনৰ নিমিত্তে ।
जो दूसरे के लिये हो ।

परावर्त्तन—[स ं पु ं] পুনৰাগমন, ফিৰি অহা কাৰ্য্য ।
फिर अपने स्थान पर आना ।

परिंद (दा)—[स ं पु ं] চৰাই ।
चिड़िया ।

परिकर—[सं पु ं] পালেং, পৰিয়াল, সমূহ, দল, টঙালি ।
पलंग । परिवार । समूह । झुंड । कमरबन्द ।

परिक्रमण—(स ं पु ं) আৱৰ্ত্তন, ভ্ৰমণ-কৰা ।
दौरा करना ।

परिक्रमा—[सं स्त्री] প্ৰদক্ষিণ ।
देवता या पवित्र स्थान के चारों ओर घूमना ।

परिखा—[सं स्त्री] গড়খাৱৈ ; চাৰিওফালে থকা খাল ।
खाई । खंदक ।

परिगणित—(वि) লেখা, সংখ্যা কৰা, মানি লোৱা, গণ্য কৰা ।
जो गिनती में आया हो जिसका उल्लेख या गणना किसी अनुसूची आदि में की गयी हो ।

परिगत—[वि] পৰিবেষ্টিত, বিগত, জ্ঞাত । चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ । बीता हुआ । मरा हुआ । जाना हुआ ।

परिग्रहण—(सं पुं) গ্ৰহণ কৰা কাৰ্য্য ।
ग्रहण या स्वीकृत करने की क्रिया या भाव ।

परिघ—(सं पुं) দুৱাৰডাং, বিধি-পথালি, এবিধ অস্ত্ৰ, ঘোঁৰা, পদুলি মুখ । कलह ।
दरवाजा बन्द करने की अर्गल । रुकावट के लिये खड़ी की हुई कोई चीज । एक अस्त्र । घोड़ा । फाटक । पानी का घड़ा ।

परिचर—(स पुं) অনুচৰ, সেৱক ।
सेवक ।

परिचर्या—[सं स्त्री] সেৱা-শুশ্ৰূষা, আল-পৈচান ।
सेवा-शुश्रूषा ।

परिचारक—(स पुं) আলধৰা, চাকৰ ।
सेवक दास । (सं स्त्री-परिचारिका)

परिचालक—(सं पुं) অধ্যক্ষ, নেতা ।
चलानेवाला ।

परिच्छद—(सं पुं) আচ্ছাদন । সাজ-পাৰ ।
आच्छादन । पोशाक ।

परिच्छन्न—(वि) আবৃত, ভালকৈ সাজ পাৰ পিন্ধা ।
ढका या छिपा हुआ । स्वच्छ ।

परिच्छिन्न—(वि) সীমাবদ্ধ, বিভক্ত ।
परिमित । बँटा हुआ ।

परिजन—(सं पुं) অনুচৰ, ভৃত্য, পৰিয়াল । আশ্ৰিত ব্যক্তি ।
आश्रित लोग । परिवार ।

परিজ্ঞাত—[वि] ভাল ৰূপে জনা।
अच्छी तरह जाना हुआ।

পৰিণয়—(सं पुं) বিবাহ।
विवाह।

পৰিণীত-[वि] বিবাহিত, সমাপ্ত।
विवाहित। समाप्त।

পৰিতাপ—[सं पुं] অনুতাপ, খেদ, দুঃখ, শোক, পিছত কৰা বেজাৰ।
गरमी। दुःख। शोक। पश्चात्ताप।

পৰিতুষ্ট—[वि] অতিশয় সন্তুষ্ট।
परम सन्तुष्ट। प्रसन्न।

পৰিতৃপ্তি—(सं स्त्री) মনৰ সন্তুষ্টি, কামনা পূৰ্ণ হোৱাৰ বাবে লাভ কৰা মনৰ আনন্দ।
परितृप्त होने की क्रिया या भाव। अच्छी तरह तृप्त होना।

পৰিতোষ –(सं पुं) সম্পূৰ্ণ সন্তোষ।
तुष्टि। सन्तोष।

পৰিত্যক্ত—[वि] এৰা, ত্যাগ কৰা।
छोड़ा हुआ।

পৰিত্ৰাণ—(सं पुं) বিপদৰ পৰা মুক্তি বা ৰক্ষা।
रक्षा। बचाव।

পৰিদৰ্শন-[सं पुं] নিৰীক্ষণ।
निरीक्षण।

পৰিধান-(सं पुं) কাপোৰ, সাজ পাৰ।
वस्त्र। पोशाक।

পৰিধি—[सं स्त्री] ঘূৰণীয়া বস্তুৰ বেৰ বা সীমা।
वृत्त को घेरनेवाली गोल रेखा।

পৰিপক্ক—(वि) ভালকৈ পকা বা সিজা, সম্পূৰ্ণ পাৰ্গত।
अच्छी तरह पका या पचा हुआ। प्रौढ। अनुभवी। प्रवीण।

পৰিপাক—[सं पुं] ভালকৈ সিদ্ধ হোৱা বা জীৰ্ণ হোৱা।
पकना या पकाया जाना। पचना। प्रौढता। दक्षता।

পৰিপাটী—(सं स्त्री) সুশৃংখলা, নিয়াৰি।
क्रम। पद्धति।

পৰিপালন—(सं पुं) ৰক্ষণ, পালন।
रक्षा करना। बचाव।

পৰিপুষ্ট—[वि] নিপোটল।
भली-भांति पुष्ट।

परिपूरक—(वि) পূর্ণ কৰোঁতা।
पूर्ण करनेवाला।

परिप्लव—(सं पुं) সাঁতোৰা, বানপানী, অত্যাচাৰ।
तैरना बाढ। अत्याचार।

परिप्लुत—(वि) প্লাবিত, ডুবি থকা।
प्लावित। भीगा हुआ।

परिभाषा—(सं स्त्री) সূত্ৰ, কোনো এক বিশেষ ব্যৱসায় বা বিষ্যাত ব্যৱহৃত শব্দ।
व्याख्या। किसी एक कार्य, विचार या अर्थ का सूचक शब्द।

परिमल—(सं पुं) অতি উত্তম ঘ্ৰাণ, সুগন্ধ।
सुवास। सुगन्ध।

परिमार्जन—(सं पुं) ধুই-পখালি ঠিক কৰা, দোষ বা ত্ৰুটি আঁতৰোৱা।
माँज या धोकर साफ या ठीक करना। दोष-त्रुटियाँ दूरकर ठीक करना।

परिमित—(वि) জোখা, নিৰ্দিষ্ট পৰিমাণৰ, অলপ।
जिसकी नाप तौल की गयी हो। सीमित। थोड़ा।

परिमेय—(वि) পৰিমাণ কৰিব পৰা, জুখিব পৰা।
जो नापा या तौला जा सके। जिसे नापना या तौलना हो।

परिया—(सं पुं) এক অস্পৃশ্য জাতি, ক্ষুদ্ৰ, তুচ্ছ।
एक अस्पृश्य जाति। क्षुद्र, तुच्छ।

परियान- (सं पुं) নিজ দেশ এৰি স্থায়ী ভাবে আন দেশলৈ যোৱা।
अपना देश छोडकर स्थायी रूपसे दूसरे देश में जाना।

परिरम (ण)—(सं पुं) আলিঙ্গন।
आलिगन।

परिरूप—[सं पुं] চানেকি, নমুনা।
नमूना।

परिलेख—(सं पुं) চিত্ৰৰ আকৃতি, উল্লেখ, বৰ্ণনা, বিৱৰণ।
चित्र का ढाँचा। उल्लेख, वर्णन। विवरण.

परिवर्जन—[सं पुं] হকা-বধা।
मना करना।

परिवहन—(सं पुं) পৰিবহন—মানুহ বস্তু আদি ইঠাইৰ পৰা সিঠাইলৈ অনা নিয়া কাৰ্য্য।

कोई चीज उठाकर एक जगह से दूसरी जगह् ले जाना। माल या यात्री ढोनेका काम।

परिवाद—[सं पुं]নিন্দা, গৰিহণা।
निन्दा। शिकायत।

परिवार—[सं पुं] আৱৰণ, পৰিয়াল, বংশ, পৰিষদ।
आवरण। कुटुम्ब। खानदान। परिषद।

परिवृत्त—[वि] পৰিবেষ্টিত, বেৰি ধৰা।
घेरा या घिरा हुआ।
(सं पुं) বিৱৰণ।
विवरण।

परिवेश-[सं पुं] বেৰ, মণ্ডল।
घेरा। मण्डल।

परिवेष (ण)--[सं पुं] আহাৰ কৰোঁতে আল ধৰা কাৰ্য্য, বেৰ।
भोजन परोसना। घेरा।

परिव्रज्या -(सं स्त्री) ইফালে সিফালে ফুৰা, তপস্যা, সংসাৰৰ প্ৰতি বিৰক্ত হৈ ভিক্ষুকৰ দৰে জীৱন কটোৱা।
इधर उधर घूमना। तपस्या। संसार से विरक्त होकर भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना।

परिव्राज (क)-(सं पुं)সন্ন্যাসী, পৰম হংস, নানা ঠাই ভ্ৰমি ফুৰা মানুহ।
सन्यासी। परमहंस। घूमने फिरनेवाला।

परिशीलन—(सं पुं) অনুশীলন, চৰ্চ্চা।
मनन पूर्वक किया जानेवाला अध्ययन।

परिशोधन-[सं पुं] সম্পূৰ্ণ ৰকমে বিশুদ্ধ কৰা, ঋণ পৰিশোধ কৰা।
पूरी तरह साफ या शुद्ध करना। ऋण चुकाना।

परिष्करण—(सं पुं) নিৰ্মল বা বিশুদ্ধীকৰণ।
स्वच्छ य शुद्ध करना।

परिसर—(सं पुं) আশে-পাশে থকা মাটি, পথাৰ, ওচৰ-চুবুৰীয়া, স্থিতি।
आस पास की जमीन। मैदान। पड़ोस। स्थिति।

परिसीमा—[सं स्त्री] চৰম সীমা, চাৰি সীমা ।

अन्तिम या चरम सीमा । (अं—एक्स्ट्रीम)

परिस्तान—[सं पुं] পৰীৰ দেশ । परियों का कल्पित देश ।

परिस्फुट—(वि) অত্যন্ত স্পষ্ট, ফুট্-ফটীয়াকৈ ওলাই থকা, পূৰ্ণ প্ৰস্ফুটিত ।

अत्यन्त स्पष्ट । प्रकाशित । खूब खिला हुआ ।

परिहरना—[क्रि स] ত্যাগ কৰা । আঁতৰোৱা ।

त्यागना । छोड़ना । दूर करना ।

परिहार—[सं पुं] দোষ, অনিষ্ট আদি দূৰ কৰা । উপচাৰ, এৰি পেলোৱা ।

दोष, अनिष्ट आदि दूर करना । उपचार । छोड़ना । छूट ।

परिहास—(सं पुं) ঠাট্টা-মস্কৰা । ঈৰ্ষা, নিন্দা ।

हँसी । ईर्ष्या । निन्दा ।

परी— [सं स्त्री] অপেস্বৰী, পৰম ৰূপৱতী স্ত্ৰী ।

अप्सरा । परम रूपवती स्त्री ।

परीक्षित—(वि) পৰীক্ষা হোৱা । অৰ্জ্জুনৰ নাতিয়েক ।

जिसकी परीक्षा हो चुकी हो ।

परीखना—(क्रि स) পৰীক্ষা কৰা । परीक्षा करना ।

परु—(क्रि वि) পৰহি, যোৱা বছৰ, অহা বছৰ ।

परसों । बीता हुआ साल । परसाल । आनेवाला साल ।

परुष—[वि] কঠোৰ, কটু, নিষ্ঠুৰ । कठोर । कटु । निष्ठुर ।

परे—(अव्य) সেই ফালে, বেলেগ, ওপৰত, আগত ।

उस ओर । अलग । ऊपर । आगे ।

परेग-(सं स्त्री) সৰু গজাল । छोटी कील, कँटिया ।

परेड—[सं स्त्री] সৈন্যৰ কাৱাজ । सैनिकों की कवायद ।

परेता- (सं पुं) উঘা । सूत लपेटनेका तीलियोंका बना एक उपकरण ।

परेवा— [सं पुं] পাৰ চৰাই । কপৌ চৰাই ।

पंडुक पक्षी । कबूतर ।

परेशान—(वि) ব্যগ্র, ব্যাকুল। উদ্বিগ্ন।
. व्यग्र। व्याकुल। उद्विग्न।

परोसना [क्रि स]আহার বরোতে আল ধরা। বিলনীযাব।
भोजन सामग्री ला लाकर खाने वाले के सामने रखना।

परौठा—(सं पुं) এবিধ ডাঠ বন্টি।
. परांठा। एक प्रकार की रोटी।

पर्जन्य— (सं पुं) মেঘ।
बादल।

पर्ण— (सं पुं) গাছের পাত।
কিতাপের পাত।
पेड़ का पत्ता। पुस्तक आदिका कोई पृष्ठ।

पर्णकुटी [शाला]—(स स्त्री) পঁজা ঘর।
झोपड़ी।

पर्यंक— (सं पुं) ডাঙর খাট।
পালেং।
वडी खाट। पलंग।

पर्यटन—(सं पुं) ফুরা, ভ্রমণ করা।
घूमना-फिरना।

पर्यवसान—[सं पुं] শেষ, সমাপন, শেষফল।
अन्त। समावेश। ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्यवेक्षण—(सं पुं) নিরীক্ষণ, পরিদর্শন।
निरीक्षण। निगरानी।

पर्याप्त—[वि] প্রচুর, যথেষ্ট।
जितना चाहिये या जितना होना चाहिये।

पर्याय-[सं पुं] সমানার্থক, অনুক্রম, এবিধ অর্থালংকার।
समानार्थक। सिलसिला। एक अर्थालंकार।

पर्यायवाची— (वि) সমানার্থক।
किसी शब्द का अर्थ सूचित करने वाला दूसरा शब्द। समानार्थक।

पर्यालोकन, पर्यालोचन—(सं पुं) ভালদরে করা বিবেচনা।
किसी वस्तु के गुण दोष जानने के लिये उसे अच्छी तरह देखना।

पर्वरिश (परवरिश) —(सं स्त्री) পালন-পোষণ।
पालन-पोषण।

पलंग-[सं पुं] পালেং।
बड़ी चारपाई।

पलंगड़ी- [सं स्त्री] সৰু পালেং
छोटा पलंग।

पल--(सं पुं) একদণ্ড সময়ৰ ষাঠি ভাগৰ এভাগ। চকুৰ, নিমিষ।
समय का एक सूक्ष्म विभाग। तराजू। आँख की पलक।

पलक- (सं स्त्री) চকুৰ নিমিষ।
आंख के ऊपर के चमड़ का परदा।

पलटन- (सं स्त्री) সৈন্য, সমূদায়, দল।
सेना। समुदाय झुण्ड।

पलटना-(क्रि अ) घूरি যোৱা। দশা পৰিবৰ্ত্তন হোৱা। সম্পূৰ্ণ পৰিবৰ্ত্তন হোৱা।
उलट जाना। दशा बदलना। स्वरूप बिलकुल बदल जाना। वापस होना। उलटना। बदलना। लौटना

पलटनिया—(सं पुं) সৈনিক।
सैनिक।

पलटा- (सं पुं) ঘূৰি যোৱা কাৰ্য্য, ঘুৰণ।
पलटने की क्रिया या भाव। बदला।

पलटे- (क्रि वि) সলনি।
बदलेमें

पलड़ा- [सं पुं] তৰ্জুৰ পল্লা, কোনো বিৰোধী পক্ষ।
तराजू का पल्ला। विरोधियों में से कोई पक्ष।

पलथली-[सं स्त्री] আসন-ভিৰি বহা কাৰ্য্য।
दोनो पैरों की कुण्डला जैसा बना कर बैठने की मुद्रा।

पलना-(क्रि अ) পোহ-পাল যোৱা, খাই-বৈ হৃষ্ট-পুষ্ট হোৱা।
पाला पोसा जाना। खा पीकर हृष्ट-पुष्ट होना।

पलहा- [सं पुं) কুঁহিপাত, পল্লব।
वृक्ष की कोंपल।

पलान- (सं पुं) ঘোঁৰাৰ জীন।
घोड़े की जीन।

पलाश— (सं पुं) পলাশ গছ, পাত, ৰাক্ষস।
टेसू। पत्ता। राक्षस।

पलास--[सं पु]পলাশ গছ, বাজ পক্ষী।

ढाक या टेसू। एक मांसाहारी पक्षी। जमुरे की तरह का एक औजार।

पली–[सं स्त्री] घिउ आदि उलिओवा सरु हेता।

घी आदि निकालने की छोटी कलछी।

पलीता– (सं पुं) सलिता, शिहा, कलाइ खाब भवोवा बस्तत जुइ लगोवा शिहा।

बत्तीकी तरह लपेटा हुआ कागज। बन्दूक या तोप की रंजकमें आग लगाने की बत्ती। कपड़ा लपेट कर बनाई हुई जलाने की बत्ती।

पलीद–(वि) अपवित्र, नीच। अपवित्र। नीच।

पलेथन--(सं पुं) बेलिबब समयत मवा आटाब लगत दिया शुकान आटा। हानिब लगते होवा अतिबिक्त व्यय।

बेलने के समय आटे के पेड़े में लगाया जानेवाला सूखा आटा। हानि होने पर साथ में होनेवाला आवश्यक व्यय।

पलोटना--(क्रि स) भवि टिपि दिया। चटफटाइ इकाटि गिकाटि कवा।

पैर दबाना। तड़पते हुए इधर उधर लोटना।

पल्लव--(सं पुं) नतुनकै ओलोवा कुँहिपात।

नये निकले हुए कोमल पत्ते। कोंपल।

पल्लवग्राही--(वि) उपवबा ज्ञान लओता ब्यक्ति।

केवल ऊपर ऊपरसे थोड़ा ज्ञान प्राप्त करनेवाला।

पल्लवित—(वि पल्लवित, कुँहिपातेवे भवा, शस्य श्यामला, डाङब-दीघल।

नये पत्तों से युक्त। हरा भरा। लम्बा चौड़ा। कण्टकित।

पल्ला—(सं पुं) कापोवब आग बा मूब, तुलाचनी,। दूबत्व। धुती, दुवाब आदिब एफाल।

कपड़े का छोर या सिरा। तराजू का पलड़ा। दूरी। धोती, किवाड़ों आदि की जोड़ी में से कोई एक।

पल्ली—[सं स्त्री] सरु गाँउ।

छोटा गाँव।

पल्लू—[सं पुं] আঁচল ।
आंचल । चौड़ी गोट ।

पल्ले—(अव्य) অধিকাৰত, দায়িত্বত, মুঠিত ।
अधिकार या पासमें । गाँठमें ।

पवन—(सं पुं) বায়ু, পৱন ।
वायु ।

पवन-चक्की—(सं स्त्री) বতাহৰ জোৰেৰে চলা জাত বা কল ।
हवा के जोर से चलनेवाली चक्की ।

पवमान—(सं पुं) বায়ু, সোম দেৱতা, গাৰ্হপত্য অগ্নি ।
वायु । गार्हपत्य अग्नि ।
(वि) পবিত্ৰ কৰোঁতা ।
पवित्र करनेवाला ।

पवि-(सं पुं) বজ্ৰ, বিজুলী ।
वज्र । बिजली ।

पशम-(सं स्त्री) পছম, মিহি উল ।
मुलायम ऊन ।

पशमीना—(सं पुं) উলেৰে তৈয়াৰী সুন্দৰ কাপোৰ ।
पशम का बना हुआ बढ़िया कपड़ा ।

पशुपति—(सं पुं) শিৱ ।
शिव ।

पशुपाल—(स पुं) যিয়ে পশুপালন কৰে, গোৱাল, গৰখীয়া ।
जो पशुओं का पालन-पोषण करता हो । ग्वाला

पश्चात्—(अव्य) পাছত ।
पीछे । बाद ।

पश्चात्ताप-(सं पुं) অনুতাপ ।
अनुताप । पछतावा ।

पश्चिमी—(वि) পশ্চিমৰ ।
पश्चिम का ।

पसंद—(वि) পছন্দ, ৰুচিৰ অনু-কূলে, ভাল লগা ।
रुचि के अनुकूल । अच्छा लगने वाला ।
(सं स्त्री) ৰুচি ।
रुचि ।

पसर—(सं पु) অৰ্দ্ধাঞ্জলী, কোনো বাস্তৱে ভৰা মুঠা, বিস্তাৰ, আক্ৰ-মণ ।
आधी अंजली । किसी चीज से भरी हुई मुट्ठी । विस्तार । आक्र-मण ।

पसरना—(क्रि अ) প্ৰসাৰ, দীঘল দি অথবা বহল ভাবে বহা ।
फैलना । कुछ लेटकर या बहुत फैलकर बैठना ।

पसली—[सं स्त्री] মানুহ, পশু আদিৰ কামিহাড ।

मनुष्य, पशु आदि की छाती के पंजर में की आडी और कुछ गोलाकार हड्डी ।

पसाना—(क्रि स) সিজা ভাতৰ পৰা মাৰ চেকি উলিওৱা ।

भात पक जाने पर उसमें से माँड़ निकालना ।

पसारना—(क्रि अ) প্ৰসাৰিত কৰা ।

फैलाना ।

पसीजना—[क्रि अ] ৰস বৈ যোৱা, ঘামতে তিতি যোৱা, দয়াৰ উদ্ৰেক হোৱা ।

घन पदार्थ में से द्रव अंश का रस-रसकर बाहर निकलना । पसीने से तर होना । मनमें दया आना ।

पसीना—(स पुं) ঘাম ।

प्रस्वेद ।

पसेरी—[सं स्त्री] পাঁচ সেৰৰ মাপ ।

पांच सेर का मान ।

पसोपेश—[सं पुं] দ্বিধা, চিন্তা ।

असमंजस । सोच-विचार ।

पस्त—[वि] সাহস হেৰুৱা, হতাশ, পৰিশ্ৰান্ত ।

हिम्मत हारा हुआ । थका हुआ ।

पँहु—(अव्य) ওচৰ, পৰা ।

निकट । पास । से ।

पहचान, पहिचान—(सं स्त्री) চিনাকি, লক্ষণ, পৰিচয় ।

पहचानने की क्रिया या भाव । परख । लक्षण । जान पहचान ।

पहनना, पहरना—(क्रि स) পৰিচিত হোৱা, যোগ্যতা অথবা বিশেষত্ব জনা ।

परिचित होना । योग्यता या विशेषता को जानना ।

पहनाना, पहरना—[क्रि स] পিন্ধা ।

परिधान करना ।

पहनावा—(क्रि स) পিন্ধোৱা ।

धारण कराना ।

(सं पुं) পোছাক, সাজ-সজ্জা ।

पोशाक ।

पहर—[सं पुं] প্ৰহৰ, দিন ৰাতিৰ অষ্টমাংশ ।

दिन रात का आठवाँ भाग ।

पहरा—[सं पुं] পহৰা, চকী (পহৰা দিয়া স্থান)

रक्षा का प्रबन्ध। चौकी। रख-वाली।

पहरी, पहरुआ, पहरेदार—[सं पुं] প্ৰহৰী, পহৰা দিয়া ব্যক্তি। पहरा देनेवाला।

पहल—[सं पुं] দিশ, থলপ, নিজৰ পিনৰ কোনো কাম আৰম্ভ কৰা, কোনো বস্তুৰ তিনিকোণৰ মাজৰ খণ্ড আদি।

घन पदार्थ के सिरो या कोनो के बीच की समभूमि। पहलू। सतह। तह। किसी कार्य का अपनी ओर से आरम्भ।

पहलवान—[सं पुं] পালোৱান, হৃষ্ট-পুষ্ট ব্যক্তি।

कुश्ती लड़नेवाला पुरुष। मल्ल। बलवान और हृष्ट पुष्ट व्यक्ति।

पहला, पहिला—(वि) প্ৰথম। प्रथम।

पहलू—(सं पु) পক্ষ, দিশ। करवट। पक्ष।

पहले—[अव्य] আৰম্ভণিতে, প্ৰথম, আগৰ কালত।

शुरूमें। प्रथम। पूर्वकाल में।

पहले-पहल—(अव्य) প্ৰথমবাৰ। पहलीवार।

पहलौठा—(वि) কোনো স্ত্ৰীৰ প্ৰথম ল'ৰা সন্তান।

किसी स्त्री के गर्भ से पहले पहल उत्पन्न (लड़का)।

पहलौठी—[सं स्त्री] প্ৰথম সন্তান প্ৰসৱ কৰা।

पहली सन्तान प्रसव करना।

पहाड़—(सं पुं) সৰু পৰ্ব্বত, ওখ ঠাই, বৰ গধুৰ বস্তু, কঠিন কাম।

छोटा पर्वत। ऊँची राशि। बहुत भारी वस्तु। कठिन कार्य।

[वि] বৰ ডাঙৰ আৰু গধুৰ। बहुत बड़ा और भारी।

पहाड़ा—(सं पुं) নেওতা। गुणन सूची।

पहाड़ी—(वि) পাহাৰী, পাহাৰত বাস কৰা লোক।

पहाड़ पर रहनेवाला। जिसमें पहाड़ हो।

(सं स्त्री) সৰু পাহাৰ, টিলা। छोटा पहाड़।

पहिया—(सं पुं) চক্র, চকা।
चक्र। चक्का।

पहुँच—[सं स्त्री] পোৱা, উপনীত, কোনো স্থানত উপস্থিত হোৱা শক্তি বা সামৰ্থ্য, অভিজ্ঞতাৰ সীমা, জ্ঞানৰ সীমা।
पहुँचने की क्रिया या भाव। किसी स्थान या बात तक पहुँचने की शक्ति या सामर्थ्य। अभिज्ञता की सीमा। ज्ञान की सीमा।

पहुँचना—(क्रि अ) এঠাইৰ পৰা অন্য ঠাইলৈ অহা, প্ৰৱেশ কৰা, অভিপ্ৰায় অথবা মতলব বুজা।
एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान को आ जाना। प्रवेश करना। अभिप्राय या आशय समझना। (क्रि स—पहुँचाना।)

पहुँचा—(सं पुं) কিলাকুটিৰ ওপৰ আৰু কাৰলতিৰ তলৰ অংশ, কাম কৰাৰ শক্তি।
हाथ की कलाई।

पहुनाई—(सं स्त्री) অতিথি হোৱা, অতিথি সৎকাৰ।
पाहुना होना। अतिथि सत्कार।

पहेली—(सं स्त्री) ৰহস্য, সমস্যা, সাঁথৰ।
रहस्य। समस्या। घुमाव फिराव की बात।

पाँक—[सं पुं] বোকা।
कीचड़।

पाँख—(सं पुं) পাখি।
पंख। पर।

पाँखी—(सं स्त्री) চৰাই।
चिड़िया। पतिंगा।

पाँच—(वि) পাঁচ।
(सं पुं) কিছু মানুহ, পঞ্চ অথবা মুখীয়াল লোক।
कुछ लोग। पंच या मुखियालोग।

पाँजर—[सं पुं] পঞ্জৰ, কান্ধৰ তলৰ পৰা ককালৰ ওপৰৰ ভাগ।
शरीर में बगल और कमरके बीच का भाग। पसली। बगल।

पांडु—(सं पुं) ঈষৎ হালধীয়া বৰণ। শেঁতা, এবিধ ৰোগ, পাণ্ডৱৰ পিতৃ।
कुछ लाली लिये पीला रंग। सफेद रंग। पीलिया रोग। पांडवों के पिता।

पांडुर—(वि) পাণ্ডু বৰণীয়া। বগা।
पीला। सफेद।

पांडुलिपि—(सं स्त्री) হাতে-লিখা নকল। পাণ্ডুলিপি।
पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी हुई वह प्रति जो छपने के लिये हो।

पांडुलेख—[सं पुं] মচা-বিদা। मसौदा। खाका।

पाँति—[सं स्त्री] শাৰী, একেলগে বহি ভোজন কৰোঁতা।
पंक्ति। साथ बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पांथ—[वि] পথিক, বিযোগী। पथिक। वियोगी।

पाँयँचा— [सं पुं] পাযখানা আদিত ভৰি দিবৰ বাবে লগোৱা সৰঞ্জাম।
पाखानों आदि में बैठने के लिये बना हुआ पैर रखने का स्थान।

पाँयँता—(सं पुं) পথান, ভৰি-পথান।
पलंग आदि का पैताना।

पाँव—[सं पुं] ভৰি।
पैर।

पाँवड़ा—[सं पुं]সন্মানিত ব্যক্তিৰ আগমনত পদুলি মুখত পাৰি দিযা কাপোৰ। ভৰিৰ বা জোতাৰ ধুলি-মাকতি মচি আহিবৰ বাবে দুৱাৰ মুখত ৰখা যতন।
वह कपड़ा जो किसी सम्मानित व्यक्ति की अगवानी के लिये मार्ग में बिछाया जाता है। पैर पोछने का बिछौना।

पाँवड़ी—(सं स्त्री) খৰম, জোতা। खड़ाऊँ। जूता।

पाँस— (सं स्त्री) সাৰ, পচন সাৰ।
खेत में डाली जानेवाली खाद। किसी वस्तु को सड़ाकर उठाया जानेवाला खमीर।

पाइक—(सं पुं) দাস, পদাতিক সৈন্য।
पायक। दूत। दास। पैदल सिपाही।

पाई—(सं स्त्री) ভৰি, এটা পইচাৰ তিনি-ভাগৰ এক মূল্য-পাই। পূৰ্ণ বিৰামৰ চিন।
पैर। चक्कर। पैसे के तिहाई मूल्य का एक सिक्का। चौथाई का मान प्रकट करनेवाली सीधी [।] रेखा। पूर्णविराम की रेखा।

पाइक—[सं पुं] জুই।
पावक। अग्नि।

पाक—[सं पुं] বন্ধন, সিজোৱা কাৰ্য্য। জীণ যোৱা।
पकने या पकाने की क्रिया या भाव। रसोई। पकवान। भोजन पचने की क्रिया।
[वि] নিষ্পাপ, পবিত্ৰ, নিৰ্দোষ, निर्मल।
पाप रहित। पवित्र। निर्दोष। निर्मल।

पाकर—(सं पुं) জৰি গছ, পাকৰী।
एक प्रकार का बडा वृक्ष।

पाकशाला—(सं स्त्री) পাকঘৰ, ৰান্ধনি শাল। ৰান্ধনি ঘৰ।
रसोई घर।

पाक्षिक—(वि) পক্ষেকীয়া, (পক্ষেকীয়া পত্ৰ)
एक पक्ष या पन्द्रह दिनों का या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। पन्द्रह दिनों पर एक बार प्रकाशित होनेवाला पत्र।

पाखंड—(सं पुं) পাষণ্ড, অধৰমী, ফুৰাচানী, আড়ম্বৰ।
ढोंग। आडम्बर। छल। धूर्त्तता।

पाखंडी—(वि) কপটালি, ভণ্ডামি, ধূৰ্ত্তালি।
ढोंगी। धोखेबाज। धूर्त।

पाख—(सं पुं) পষ, একপক্ষ, ডেউকা।
पन्द्रह दिन। पखवारा। पंख।

पाखाना—[सं पुं] পায়খানা, শৌচালয, বিষ্ঠা।
शौच गृह। मल।

पागना—(क्रि स) পগোৱা।
सीरे या चाशनी में कोई चीज पकाना या लपेटना।

पागलखाना—(सं पुं) পগলা-ফাটক।
वह स्थान जहाँ चिकित्साके लिये पागल रखे जाते हैं।

पागलपन—[सं पुं] পাগলামি, উন্মাদনা, উন্মত্ততা।
उन्माद। विक्षिप्तता। पागलोंका सा मूर्खता पूर्ण आचरण।

पाचक—(वि) জীৰ্ণকাৰী বা সিজোৱা বস্তু।
पचाने या पकानेवाला।
[सं पुं] জীৰ্ণকাৰী বান্ধনী, ঔষধ।
पाचनशक्ति बढ़ानेवाली दवा। रसोइया।

पाचन—[सं पुं] সিদ্ধ কৰা, জীৰ্ণ যোৱা ক্ৰিয়া, জীৰ্ণকাৰী ঔষধ।
पचाना या पकाना। आहार के पचने या हजम होने की क्रिया। पाचक औषध।
(वि) জীৰ্ণকাৰী।
पचानेवाला (पदार्थ)।

पाचनशक्ति— [सं स्त्री] হজম শক্তি, জীৰ্ণ শক্তি।
हाजमा।

पाछ—(सं स्त्री) খেজুৰ আদি গছৰ পৰা ৰস উলিয়াবৰ বাবে গছত গাত কৰা বিন্ধা।
रक्त, रस आदि निकालने के लिये जन्तु या पौधे के शरीर पर छुरी आदिसे किया हुआ हल्का घाव।
[सं पुं] পিছ। অনুসৰণ।
पीछा।
(वि, क्रि वि) পিছৰ ফালে।
पीछे।

पाजी—[वि] দুষ্ট, লম্পট, দুৰ্জন।
दुष्ट। लुच्चा। शरारती।
(सं पुं) পদাতিক সৈন্য, অধিক, ৰক্ষক।
पैदल सिपाही। ज्यादा। रक्षक।

पाजेब—(सं स्त्री) নূপুৰ।
नूपुर।

पाटंबर—(सं पुं) পাটৰ কাপোৰ।
रेशमी कपड़ा।

पाटना—(क्रि स) জাবৰ-জোখৰেৰে ভৰোৱা, দ'ম কৰা।
मिट्टी, कूड़े आदिसे गड्ढा आदि भरना। ढेर लगाना। पाटन या छत बनाना।

पाटल—[सं पुं] গোলাপ। চকুৰ ৰোগ। গুলাব। आंख का कांचा।
(वि) গুলপীয়া।
गुलाब सम्बन्धी।

पाटव—[सं पुं] কৌশল।
कुशलता।

पाटा—[सं पुं] দলি-মাৰি বা দলি মাৰি।
वह लम्बी लकडी जिससे जोते हुए खेत की मिट्टी के ढेले तोड़े जाते है।

पाटी—(सं स्त्री)পাৰপাটি, নিয়াৰি, শাৰী, সেওঁতা।
परिपाटी। शैली। श्रेणी, पंक्ति।

सिर के बालों में निकाली जाने-
वाली मांग ।

पाठन (सं पुं) পঢ়োৱা কাৰ্য্য, অধ্যাপন ।
अध्यापन ।

पाठान्तर—[सं पुं] পুথিত লিখাৰ বাজে অন্য এক প্ৰকাৰে লিখা পাঠ বা শব্দ ।
पाठ-भेद ।

पाठा-(सं पुं) হৃষ্ট-পুষ্ট, পঠা, গোনা । तगड़ा । जवान बैल, भैंसा या बकरा ।

पाठी—(सं पुं) পঢ়ুৱৈ, পাঠক ।
पढ़नेवाला । पाठक ।

पाड़—[सं पुं] ধুতী আদিৰ পাৰি, কাঁচী কাঠ, চাং ।
धोती आदिका किनारा । मचान । कुएँ के मुँहपर रखने की जाली । बाँध । फांसी का तख्ता ।

पाड़ा—(सं पुं) পাৰা, চুবুৰী ।
मुहल्ला ।

पाढ़—[सं पुं] কাঠৰ পীৰা ; পাৰি-কাপোৰৰ দাঁতি । টঙি ।
पाटा । वह मचान जिसपर बैठ कर किसान खेती की रखवाली करते हैं । धोती; साड़ी आदिका किनारा ।

पाढ़ा— (सं पुं) ফুটুকা-ফুটুকি হৰিণ ।
एक प्रकार का हिरन ।

पाणि—(सं पुं) হাত ।
हाथ ।

पाणि ग्रहण—[सं पुं] বিবাহ ।
विवाह ।

पातक—(सं पुं) পাপ ।
पाप ।

पातकी—[वि] পাপী ।
पापी ।

पातर (ा)—[वि] পাতল, ক্ষীণ ।
पतला । दुबला ।

पाताब—(सं पुं) ভৰিত পিন্ধা মোজা ।
पैरों में पहनने का मोजा ।

पात्ती—(सं स्त्री) চিঠি, গছৰ পাত, প্ৰতিষ্ঠা ।
चिट्ठी । वृक्ष के पत्ते । प्रतिष्ठा ।

पातुर (री)—[सं स्त्री] বেশ্যা ।
वेश्या ।

पात्रता—(सं स्त्री) প্ৰাৰ্থী হবৰ যোগ্যতা ।

पात्र होने की अवस्था या भाव। किसी काम के लिये चुने जाने या किसी पदपर नियुक्त होने के लिये आवश्यक योग्यता या गुण।

पाथ—(सं पुं) পানী, বাট, পথৰ সামগ্ৰী, বাট-খৰছ।
पानी। मार्ग। पाथेय।

पाथना-(क्रि स) সনা, লেও দিয়া।
गीली मिट्टी या गोबर आदिको थाप-पीट या दबाकर उपले, ईंट आदि के आकार में लाना।

पाथर—(सं पुं) শিল।
पत्थर।

पाथेय—(सं पुं) পথৰ-সম্বল, বাট-খৰছ।
पथ या रास्ते में काम आनेवाला खाद्य पदार्थ। यात्राकी सामग्री और व्यय के लिये धन।

पाद—(सं पुं) ভৰি, চতুৰ্থাংশ, স্তবক। বহিৰ্দ্বাৰেদি ওলোৱা বায়ু।
पैर। श्लोक या पद्य का चरण। चौथाई भाग। अपान वायु।

पाद त्राण—[सं पुं] জোতা।
जूता।

पादना—(क्रि अ) বহিৰ্দ্বাৰেদি বায়ু ওলোৱা। পাদা।
गुदा से वायु त्याग करना।

पादप—(सं पुं) গছ।
वृक्ष।

पादरी—(सं पुं) খৃষ্টান ধৰ্মযাজক
ईसाई पुरोहित।

पादाकांत—[वि] পদদলিত, পৰাজিত।
पद दलित। पराजित।

पादुका—[सं स्त्री] খৰম, জোতা।
खड़ाऊँ। जूता। पैरोंमें पहनने का कोई उपकरण।

पादोदक—(सं पुं) পদ-জল।
चरणामृत।

पाद्य—[सं पुं] ভৰি ধুবলৈ গুৰুজনলৈ আগ বঢ়োৱা পানী।
पूजनीय व्यक्ति या देवता के लिये चरण धोने के दिया जानेवाला जल।

पान दान—(सं पुं) পান বটা।
पनडब्बा।

पाना—(क्रि स) পোৱা, ভোগকৰা
प्राप्त करना। अच्छा या बुरा फल भोगना। देख या जान लेना। बराबरी कर सकना। भोजन करना। प्राप्तव्य धन।

पानिप—(सं पु) শোভা, জাক-জমকতা, পানী।

कान्ति । चमक । शोभा या सुन्दरता । पानी ।

पानीदार—(सं पु) শ্ৰদ্ধাস্পদ, চিক্-মিকীয়া। সাহসী।
इज्जतदार । चमकदार । साहसी ।

पाप-ग्रह—(सं पु) বেয়া গ্ৰহ, কু-গ্ৰহ ।
शनि, राहु, केतु आदि अशुभ फल देनेवाले ग्रह ।

पापघ्न—(वि) পাপনাশক ।
पाप नाशक ।

पापड़—(सं पू) পাপৰ ।
उर्द या मूंग के आटे की मसाले-दार पतली चपाती ।

पाबंद—[वि] আবদ্ধ, নিয়মানু-বৰ্ত্তী ।
बंधा हुआ या बद्ध । नियम आदि का नियमित रूपसे पालन करनेवाला ।

पामर—[वि] দুষ্ট, পাপী, নীচ ।
खल । पापी । नीच ।

पामरी—(सं स्त्री) ডিঙিৰ ওপৰত লোৱা পাতল চাদৰ ।
दुपट्टा ।

पायंदाज—[सं पुं] ভৰি মচিবৰ বাবে দুৱাৰ মুখত ৰখা এবিধ সঁজলি বা কাপোৰ ।
पैर पोंछने का बिछावन । पांवड़ा

पायक—(सं पुं) দূত, চাকৰ, পদাতিক সৈন্য ।
दूत । दास । पैदल सिपाही ।

पायदार—(वि) মজবুত, দৃঢ় ।
बहुत दिनोंतक काम आने या टिकनेवाला । मजबूत ।

पायल—[स स्त्री] নূপুৰ, খাখুৰী ।
पाजेब नामका पैरका गहना । हथिनी ।

पाया—(सं पुं) খাট আদিৰ খুৰা, খট-খটি ।
पलंग चौकी आदिका गोड़ा । खंभा । पद । दरजा ।

पारंगत—[वि] সুনিপুণ । সুপণ্ডিত ।
पूर्ण पंडित ।

पार—(सं पुं) পাৰ, তট, সিপাৰ, দাঁতি ।
जलाशयों के तट । दूसरी तरफ । अन्त, सिरा ।
(अव्य) পিছত, আগত, দূৰ ।
परे । आगे । दूर ।

(वि) পালন কৰোতা। পাৰ কৰোতা।
पालन करनेवाला। पार लगाने वाला।

पारखी—(सं पुं) পৰীক্ষক। চিনোঁতা।
परख या पहचान रखनेवाला।

पारग—(वि) পাৰহৈ যোৱা। পটু, পাৰ্গত।
जो पार चला गया हो। अच्छा ज्ञाता।

पारण—[सं पुं] ব্ৰত বা উপবাসৰ অন্তত কৰা আহাৰ, পাৰ হোৱা কাৰ্য্য। পৰীক্ষাত সফল হোৱা।
पार करने या उतरने की क्रिया या भाव। परीक्षा या जाँचमें पूरा उतरना। उपवास के दूसरे दिन का पहला भोजन और तत्सम्बन्धी कृत्य।

पारणक—[वि] উপবাসৰ পিছত আহাৰ কৰোঁতা।
पारण करनेवाला।
(सं पुं) প্ৰমাণ পত্ৰ, অনুমতি পত্ৰ।
परीक्षा आदि में उत्तीर्णता का सूचक पत्र। पार-पत्र।

पारधी—(सं पुं) ব্যাধ, চিকাৰী, হত্যাকাৰী।
बहेलिया। शिकारी। हत्यारा।

पारद—(सं पुं) পাৰা, এটা প্ৰাচীন জাতি।
पारा। एक प्राचीन जाति।

पार दर्शक—[वि] স্বচ্ছ, ফট-ফটীয়া।
जिसके आरपार की मारी चीजे दिखाई पड़े।

पारदर्शी—(वि) দূৰদৰ্শী। স্বচ্ছ।
दूरदर्शी। पारदर्शक।

पारना—(क्रि स) পাৰি দিয়া। পেলোৱা, পিন্ধা, সাঁচত কটা।
डालना। गिराना। रखना या देना। दिलाना। पहनना। साँचे आदि में ढालना। पूरा करना।

पारस—(सं पुं) পৰশমণি। সজাই দিয়া ভোজন।
एक कल्पित पत्थर। स्पर्शमणि। खानेके लिये परोसा हुआ भोजन।
[अव्य] ওচৰ।
पास।

पारसी—(वि) পাৰস্য দেশসম্বন্ধীয়, পাৰস্য দেশৰ।
पारस देश सम्बन्धी। पारस देश

का।

[सं पुं] পাৰস্য দেশৰ বাসিন্দা।

पारस देश का निवासी।

पारायण— [सं पुं] সমাপ্তি, নিৰ্দ্দিষ্ট কালৰ ভিতৰতে সমাপ্ত হোৱা গ্ৰন্থ পাঠ আদি কাৰ্য্য।

समाप्ति। नियत या नियमित समय पर होनेवाला किसी धर्म ग्रंथ का आदिसे अन्त तक होने वाला पाठ।

पारावत—(सं पुं) পাৰ চৰাই, পাহাৰ।

परेवा। कबूतर। पहाड़।

पारावार—(सं पुं) ইপাৰ-সিপাৰ, সীমা, সাগৰ।

आरपार। सीमा। समुद्र।

पारिजात—[सं पुं] স্বৰ্গৰ পাৰিজাত ফুল।

नन्दन कानन का एक वृक्ष।

पारित—(वि) সমৰ্থিত, অনুমোদিত। স্বীকৃত।

जिसका पारण हो चुका हो। प्रस्ताव आदि जो पास हो चुके हों।

पारी—(सं स्त्री) পাল।

बारी।

पार्वण—[सं पुं] আউসী আৰু পূৰ্ণিমাত পূৰ্ব্বপুৰুষসকলক পিণ্ড দিয়া শৰাধ।

पर्वके अवसर पर किया जानेवाला विशेष प्रकार का श्राद्ध।

पार्वतीय—(त्रि) পৰ্ব্বতীয়া।

पहाड़ी।

पार्षद—(सं पुं) সমীপবৰ্ত্তী, ওচৰত থকা, সেৱক।

पास रहनेवाला। सेवक।

मुसाहब।

पाल—(वि) ৰক্ষী, ৰক্ষক।

पालन करनेवाला। कार्य विभाग आदि का प्रधान संचालक या अधिकारी।

(सं पुं) নাৱত তৰা পাল। তম্বু। গাড়ী আদিৰ ছৈ।

नाव के मस्तूलमें बाँधा जानेवाला बड़ा मोटा कपड़ा। तम्बू। गाड़ी या पालकी को ऊपर से ढंकनेका ओहार।

(सं स्त्री) পানী আবদ্ধ ৰাখিবলৈ দিয়া বান্ধ। পুখুৰী আদিৰ ওখ পাৰ।

पानी रोकनेवाला बाँध या मेंड़ । ऊँचा तट या किनारा ।

पालक—[वि] পালন কৰোতা ।
पालन करनेवाला ।
[सं पुं] তোলনীয়া পো, পালেং শাক ।
पाला हुआ, दत्तक पुत्र । एक प्रकार का साग ।

पालतू—(वि) পোহনীয়া ।
पाला या पोसा हुआ (जानवर) ।

पालना-[क्रि स]পালন কৰা। পোহা ।
पालन करना । (बात-आज्ञा आदि) भंग न करना ।
(सं पुं) শিশু নচুৱা দোলা ।
छोटे बच्चों के लिये एक प्रकारका झूला या हिंडोला ।

पाला— (सं पुं) বৰফ, শীত, সম্পর্ক, প্রধান স্থান, ডুলি, সীমাৰেখা ।
हिम । बरफ । सरदी । सम्पर्क । वास्ता । प्रधान स्थान । सीमा निर्द्धारित करनेवाली मेंड । अनाज भरने का मिट्टी का एक बडा पात्र । अखाडा ।

पालागन(नी)—[सं स्त्री] নমস্কাৰ, প্ৰণাম ।
प्रणाम । नमस्कार ।

पाली—(वि) অপভ্ৰংশৰ পূৰ্ববৰ্ত্তী ভাষা । পংক্তি । শ্ৰেণী । কামান ।
पंक्ति । श्रेणी । कतारी तरफ या भाग । एक प्राचीन भाषा । ताप।
(सं स्त्री) পাল ।
बारी ।

पाव—[सं पुं] চতুৰ্থাংশ, এক পোৱা ।
चौथाई भाग या अंश । एक सेर का चौथाई भाग ।

पावक— [सं पुं] জুই, শোভা, সদাচাৰ, সূৰ্য্য ।
आग । तेज । पवित्र । सदाचार । सूर्य ।
(वि) শুদ্ধ কৰোতা ।
शुद्ध या पवित्र करनेवाला ।

पावती—(सं स्त्री) ৰচিদ, প্ৰাপ্তি-স্বীকাৰ ।
रसीद । प्राप्ति स्वीकार ।

पावदान—[सं पुं] ভৰি ৰাখিবৰ স্থান । ভৰি মচিবৰ বাবে ছুৰ'ৰমুখত থকা গজুলি ।
गाड़ी आदिमें पैर आदि रखने के लिये बना हुआ स्थान रेशोंका बना हुआ वह खंड जिसपर पैर पोंछे जाते हैं । पांवड़ा ।

পাবন—[বি] পবিত্র ।
पवित्र करनेवाला । पवित्र ।
(সং পুং) জুই, প্রায়শ্চিত্ত, পানী, গোবৰ, রুদ্রাক্ষ ।
अग्नि । प्रायश्चित्त । जल । गोबर । रुद्राक्ष ।

পাবনতা, পাৱনতাই—[সং স্ত্রী] পবিত্রতা ।
पावन या पवित्र होने की दशा या भाव ।

পাবনা—(সং পুং) পাওনা, পাব-লগীয়া, প্রাপ্য ।
प्राप्य धन ।

পাবস—(সং পুং) বৰ্ষা ঋতু ।
वर्षा ऋतु ।

পাশ—[সং পুং] জাল, বন্ধন । ফান্দ ।
फंदा । किसी प्रकार का बन्धन ।
रस्सी, तार आदिका फंदा ।

পাশব—(বি) পাশৱিক, পশুৰ নিচিনা বা তুল্য ।
पशु सम्बन्धी । पशुओं का सा ।

পাশুপত—[বি] মহাদেৱৰ এপাত প্রধান অস্ত্ৰৰ নাম । পশুপতি বা শিৱ সম্বন্ধী ।
पशुपति या शिव सम्बन्धी ।
(সং পুং) মহাদেৱৰ উপাসক ।
पशुपति या शिव का उपासक ।

পাষাণ—[সং পুং] শিল ।
पत्थर ।
[বি] হৃদয়হীন, কঠুৱা, নিৰ্দ্দয় ।
हृदयहीन । निर्दय ।

পাসংগ—(সং পুং) ফেৰ তৰ্জ্জু আদিৰ দুয়োফালৰ গধুৰতা সমান কৰিবলৈ ৰখা ওজন ।
तराजू की डंडी बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ ।
(বি) কম, তুচ্ছ ।
बहुत थोड़ा । तुच्छ ।

পাস—[সং পুং] কাষ, ফালে, ওচৰ, অধিকাৰ ।
बगल । ओर । सामीप्य । अधिकार ।
(অব্য) নিকট, ওচৰ, আনৰ প্রতি ।
निकट । नजदीक । अधिकार में । किसी के प्रति ।
(বি) পৰীক্ষা আদিত উত্তীৰ্ণ । প্রস্তাৱ আদি গৃহীত ।
परीक्षा आदिमें सफल । (प्रस्ताव आदि) पारित ।

पासा—[स ं पु ं] পাশাখেলৰ গুটি, জুৱাখেল ।
चौसर खेलने की गोट । जुए का खेल । मोटी बत्तीके आकार की गुल्ली ।

पासी— (सं पु ं) চৰাইমৰীয়া, তাড়িৱালা, তাড়িৰ ব্যৱসায় কৰা জাতি ।
जाल या फंदा डालकर चिड़ियाँ पकड़नेवाला । ताड़ के पेड़ से ताड़ी उतारनेवाली एक जाति ।
(स ं स्त्री) ফান্দ,জাল, ঘোঁৰাৰ ভৰি বন্ধা জৰি ।
फंदा । पासा । घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी ।

पाहन—(स ं पु ं) শিল, কষটি শিল ।
पत्थर । कसौटी का पत्थर ।

पाहि—[अव्य] ওচৰ, আনৰ প্ৰতি, আনৰ দ্বাৰা, ৰক্ষা কৰা ।
पास । किसी के प्रति । किसीसे । 'रक्षा करो' ।

पाहुना--(स ं पु ं) অতিথি, জোৱাই ।
अतिथि । मेहमान । दामाद ।

पिंग—[वि] তাম বৰণীয়া ।
ताम्रवर्ण ।

पिंगल—[वि] হালধীয়া, ৰঙচুৱা মুগা বৰণ ।
पीला । ताम्रवर्ण ।
[स ं पु ं] ছন্দ শাস্ত্ৰ নিৰ্মাতা এজন মুনি, বান্দৰ, জুই, ফেঁচা ।
छन्दः शास्त्र के एक आचार्य । छन्दः शास्त्र । बन्दर । अग्नि । उल्लू पक्षी ।

पिंगला—(सं स्त्री) হঠযোগৰ লগত সম্বন্ধীয় এডাল নাড়ী, লক্ষ্মী ।
हठ योग के अनुसार शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक । लक्ष्मी ।

पिंजरापोल—(सं पु ं) গোশালা বা পশু শাল ।
गोशाला या पशुशाला ।

पिंड, पिंडा—(स ं पु ं) পিণ্ড, ঘূৰণীয়া গোটা বস্তু, শৰীৰ ।
गोल पदार्थ । अन्न आदि का गोला । शरीर ।

पिंड-दान—(स ं पु ं) মৃতকৰ অৰ্থে পিণ্ড দিয়া কাৰ্য্য ।
श्राद्ध आदि में पितरों को पिंड देने की क्रिया ।

पिंडरोगी—(सं पुं) চিৰৰুগীয়া।
जिसे हमेशा कोई न कोई रोग
लगा ही रहता हो।

पिंडी—(सं स्त्री) ভৰিৰ ডিমা,
কলাফুল।
घुटने के नीचे का पिछला मांसल
भाग।

पिंडली—(सं स्त्री) ঘূৰণীয়া সৰু
গোটা বস্তু, মছুৰা।
छोटा पिंड। सूत, रस्सी आदिका
गोल लच्छा।

पिअराई, पियराई—[सं स्त्री]
হালধীয়া বৰণ। চৰাই।
पीलापन।

पिक-[सं पुं] কুলি চৰাই। पापिया
कोयल। पपीहा।

पिघलना—[क्रि अ] গলি যোৱা,
দ্ৰব হোৱা, হিয়াত দয়া ওপজা।
धन, पदार्थ का गलकर तरल
होना। चित्तमें दया उपजना।

पिचकना—(क्रि अ) টোটোৰা
পৰা।
फूले या उभरे हुए तलका दबना।

पिचकारी—(सं स्त्री) চেৰেকা।
नली के आकार का एक उपकरण
जिससे तरल पदार्थ अन्दर
खींचे और बाहर फेंके जाते हैं।

पिचपिचा—[वि] নৰম, লাহী,
ভেপ-ভেপীয়া।
लसदार। दबा हुआ और गुल-
गुला।

पिच्छिल—(वि) পিছল,
फिसलनदार।

पिछड़ना- (क्रि अ) পিচ পৰা,
প্ৰতিযোগিতা আদিত পিছ পৰি
থকা।
साथ से छूटकर पीछे रह जाना।
प्रतियोगिता आदिमें पीछे रह जाना

पिछलगा—(सं पुं) অনুগামী,
সেৱক, আশ্ৰিত, অনুচৰ।
अनुगामी। सेवक। आश्रित।
पिछलग्गू।

पिछलग्गू—(सं पुं) অন্ধানুসৰণ-
কাৰী।
अन्ध अनुयायी।

पिछला—[वि] পিছফালৰ, পিছৰ,
অতীতৰ, শেষৰ।
जो पीछे की ओर हो। बादका।
बीता हुआ। अन्तिम।

पिछवाड़ा— (सं पुं) ঘৰৰ পাছ-
ফাল।

घर आदि के पीछे का भाग। पीछे की भूमि।

पिछेलना—[क्रि स] ঠেলি পিছু-ৱাই খোৱা, পিচ পেলাই খোৱা। धक्का देकर पीछे हटाना। पीछे छोड़ना।

पिटना—[क्रि अ] প্ৰহাৰ কৰা। पीटा जाना।

पिटाई—(सं स्त्री) প্ৰহাৰ কৰা কাৰ্য্য বা তাৰ বানচ। पीटने या पीटे जानेका काम या भाव। पीटने की मजदूरी।

पिटारा—[सं पुं] পেটাৰি, খাং। बाँस अदि की पट्टियो से बना ढकनेदार पात्र।

पिट्ठू—[सं पुं] গোপন ভাবে, সহায়কাৰী। गुप्त रूप से या पीछेसे छिपकर सहायता करनेवाला।

पितर—[सं पुं] স্বৰ্গীয় পূৰ্ব-পুৰুষ। मरे हुए पूर्वज।

पितृव्य (सं पुं) পিতাৰ ভাই-খুৰা, দদাই। चाचा।

पित्ता—(सं पुं) পিত্ত, সাহ-পিত, পিত্ত কোষ। पित्त। साहस। यकृत की वह थैली जिसमें पित्त रहता है।

पित्ती—(सं स्त्री) ঘামচি। अम्हारी। घमोरी।

पित्तेमार—[वि] ধৈৰ্য্য লগা [চেষ্টা বা কাম]। (वह काम) जिसमें बहुत ही धैर्य या अध्यवसाय से लगे रहना पड़े।

पिद्दी—(सं स्त्री) একবিধ ক্ষুদ্ৰ চৰাই, নগণ্য। एक प्रकार की छोटी चिड़िया। जो बहुत ही तुच्छ और नगण्य हो।

पिनक—[सं स्त्री] আফিঙৰ ৰাগিত আল-জাল, গোৰেউ-গোঠেউ। अफीम के नशे में सिरका झूमना।

पिनकना—(क्रि अ) আল-জাল কৰা, অলপ কথাতেই অসন্তুষ্ট হোৱা। पिनक लेना। थोड़ी सी बातपर झल्ला या नाराज हो उठना।

पिनपिनाना—[क्रि अ] পেন পেনকৈ সদায় কন্দা। बच्चों का हमेशा रोते रहना।

पिनाक—(सं पुं) মহাদেৱৰ ধনু, ত্ৰিশূল।
शिव का धनुष। त्रिशूल।

पिपासा—(स स्त्री) পিযাহ, বৰ ইচ্ছা বা লোভ।
प्यास।

पिपीलिका—[सं स्त्री] পিপৰা, পৰুৱা।
च्यूंटी।

पिय—(सं पुं) পতি।
पति।

पियराना—(क्रि अ) শেঁতা পৰা।
पीला पड़ना।

पियरी—[सं स्त्री] হালধীযা শাৰী বা ধুতী, হালধীযা গুণ।
पीली रंगी हुई धोती या साड़ी। पीलापन।

पियूख, पियूष—(सं पुं) অমৃত।
अमृत।

पिराना—(क्रि अ) বিষ উঠা, পীড়া হোৱা।
दर्द करना। दुखाना [किसी अंग का]

पिरोना—(क्रि स) বেজীত সূতা সুবোৱা, গঁথা।
सूत, तागे आदि में कुछ गूँथना। पोहना। सूई के छेद या नाकेमें तागा डालना।

पिलना—(क्रि अ) সাউৎকৰে অহা, অতৰ্কিতে আক্ৰমণ কৰা, চেপি ৰস উলিওৱা।
वेग से किसी ओर से टूट पड़ना। भिड जाना। रस या तेल निकालनेके लिये पेरा जाना।

पिलपिला—(वि) সুকোমল, অত্যন্ত কোমল।
अत्यन्त कोमल।

पिलाना--[क्रि स] পান কৰোৱা।
पीने का काम दूसरोसे कराना। अन्दर भरना।

पिल्ला—[सं पुं] কুকুৰৰ পোৱালি।
कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू—(सं पुं) পোক (গেলা পচা বস্তুত হোৱা), পেলু।
वह छोटा कीड़ा जो सड़े हुए फलों आदि में पड़ जाता है।

पिष्ट—(वि) বটন, বটা বস্তু। পিহি গুৰি কৰা।
पीसा या पिसा हुआ।

पिष्ट-पेषण—(सं पुं)চৰ্বিত, চৰ্বণ।
पिसे हुए को फिरसे पीसना।

कही हुई बात या किया हुआ काम फिरसे दोहराना।

पिसना—(क्रि अ) পিশা, গুৰি হোৱা, কষ্ট বা হানি সহ্য কৰা। पीसा जाना। कुचला जाना। बहुत कष्ट या हानि सहना।

पिस्ता—(सं पुं) পেস্তা, এবিধ বাদাম জাতীয় ফল। एक मेवा।

पिस्तौल—[सं स्त्री] পিষ্টল, বন্দুক জাতীয় এবিধ অস্ত্র। बन्दूक की तरह छोटा अस्त्र।

पिस्सू—(सं पुं) চেৰেপা। मक्खियों जैसा शरीर का रक्त चूसनेवाला एक कीड़ा।

पिहित—(वि) আবৃত, লুকায়িত। ढंका हुआ। छिपा हुआ।

पी—[सं पुं] প্ৰিয়। प्रिय।

(सं स्त्री) পাপিয়া চৰাইৰ মাত। पपीहे की बोली।

पीक—[सं स्त्री] তামোলৰ পিক। खाये हुए पान के रस की थूक।

पीच—[सं स्त्री] ভাতৰ মাড়। भात का मांड़।

पीछा—[सं पुं] পাছফাল, পিঠিৰ পিনে, আনক অনুসৰণ কৰা ক্ৰিয়া। पीछे की ओर का भाग। पीठका भाग। किसी के पीछे लगे रहने की क्रिया या भाव।

करना—গলগ্ৰহ, পাছে পাছে অনুসৰণ কৰা। गले पडना। किसी के पीछे पीछे लगे रहना।

पीछे—(अव्य) পাছকালে বা আনফালে, পিছত, শেষত। पृष्ठ भागमें या दूसरी ओर। पीछे की ओर, कुछ दूर पर। बाद। अन्त में। वास्ते।

पीटना—[क्रि स] মৰা, আঘাত কৰা। কোবোৱা। आघात करना। मारना। जैसे तैसे कोई काम समाप्त करना या किसी से कुछ ले लेना।

[सं पुं] আনৰ মৃত্যুত হোৱা শোক, কঠিনতা। किसी के मरनेपर होनेवाला शोक। कठिनता।

पीठ—[सं पुं] পীৰা, বিদ্যাপীঠ, বিশিষ্ট পবিত্ৰ স্থান, বেদী,

সিংহাসন।
लकड़ी, पत्थर आदिका बैठने का आसन या स्थान। विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान। सिंहासन। वेदी। कोई विशिष्ट पवित्र स्थान।
(सं स्त्री) পিঠি, পাছফাল।
शरीर के पीछेवाला भाग। पृष्ठ-भाग।

पीठिका—(सं स्त्री) আধাৰ, সৰু পীৰা, পৰিচ্ছেদ।
आधार। छोटा पीढ़ा। परिच्छेद।

पीठी—(सं स्त्री) দালি-বটা, পানীত তিয়াই পিহি গুৰি কৰি লোৱা দালি।
पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़न—[सं पुं] উৎপীডন, উপদ্ৰৱ, যন্ত্ৰণা।
कष्ट देना। दबाना। पेरना। अत्याचार करना।

पीढ़ा—[सं पुं] পীৰা, এবিধ বহা আসন।
बैठने के लिये काठका छोटा और कम ऊँचा आसन। सिहासन।

पीढ़ी–[सं स्त्री] পীৰি, সৰু পীৰা। পুৰুষ। किसी विशेष समयमें होने वाले व्यक्तियो की समष्टि। (अं- जेनरेशन) छोटा पीढ़ा।

पीत –(वि) হালধীয়া, পান কৰা, পিয়া।
पीला। भूरा। पीया हुआ।
(सं पुं) হালধীয়া বৰণ।
पीला रंग। भूरा रंग।

पीतम—(वि) প্ৰিয়তম।
प्रियतम।

पीतल—(सं पुं) পিতল (এবিধ ধাতু।
ताम्बे और दस्ते के मेल से बनी हुई धातु।

पीतांबर–(सं पुं) শ্ৰীকৃষ্ণ (শ্ৰীকৃষ্ণই প্ৰায় হালধীয়া কাপোৰ পিন্ধিছিল) হালধীয়া কাপোৰ।
पीला कपड़ा। श्रीकृष्ण।

पीन-(वि) স্থূল, শকত, হৃষ্ট-পুষ্ট।
स्थूल। मोटा। पुष्ट। भरा-पूरा।

पीनस—[सं पुं] এবিধ নাকৰ বেমাৰ।
नाक का एक रोग।

पीना—[क्रि स] পান কৰা, মনৰ ভাব মনতে দমাই ৰখা, মদ পান

कवा, धूमपान कवा।
पान करना। कोई विचार या मनोविकार मन ही में दबालेना। शराब पीना। धूम्रपान करना।

पीप, पीब—(सं स्त्री) পূঁজ ।
घावमें निकलनेवाला मवाद।

पीपल—(सं पुं) অঁহত। পিপলি।
अश्वत्थ वृक्ष। एक लता जिसकी चरपरी कलियाँ पाचक होती है।

पीपा—[सं पुं] পিপা ।
काठ या लोहेका बडा गोल पात्र।

पीयूष—[सं पुं] অমৃত।
अमृत ।

पीर—(स स्त्री) দুঃখ, কষ্ট, সহানুভূতি ।
पीडा। कष्ट। सहानुभूति।
(वि) বুঢ়া, মহাত্মা, মুছলমান সাধু ।
वृद्ध। महात्मा। गुरु।

पील—[सं पुं] হাতী ।
हाथी ।

पील-पाँव—[स पुं] গোধা-বেমাৰ ।
श्लीपद नामक रोग।

पील सोज—(सं पुं) গছা
चिराग दान।

पीला—(वि) হালধীয়া শেঁতা।
हल्दी के रंगका। कान्तिहीन।

पीलिया—(सं पुं) পাণ্ডু ৰোগ।
कमल रोग।

पीव—(स पुं) প্ৰিয়, পতি।
प्रिय। पति।

पीसना-(क्रि स) বাটা, পটাত পিহা, পৰিশ্ৰমৰ কাম কৰা।
रगड कर आटे या चूर्णके रूपमें करना। परिश्रमका काम करना।

पीहर—(सं पुं) মাকৰ ঘৰ।
मायका।

पुंगव—(सं पुं) বলদ বা বলধ।
बेल।
[वि] শ্ৰেষ্ঠ, অতি উত্তম।
श्रेष्ठ। उत्तम।

पुंगीफल—[सं पुं] তামোল ।
सुपारी।

पुंज—(सं पुं) ৰাশি, দ'ম।
राशि। ढेर।

पुंजित-(वि) স্তূপীকৃত, পুঞ্জীভূত।
जो धीरे धीरे जमा होकर बड़े

पैमान आकार के रूपमें हो गया हो ।

पुंडरीक—[सं पुं]পদুমফুল, সিংহ, ফোট, দিগ্‌গজ । জুই ।
कमल । सिंह । तिलक । सफेद रंग का हाथी । आग ।

पुंश्चली-(सं स्त्री) ব্যভিচাৰিণী ।
दुश्चरित्रा स्त्री । छिनाल।

पुंसत्व-(सं पुं) পৌৰুষ ।
पुरुषत्व ।

पुंसवन-[सं पुं] গাখীৰ, পুংস-ৱন, পুহন বিধা ।
दूध । गर्भाधान के तीसरे महीने होनेवाला एक संस्कार ।

पुआल—(सं पुं) নৰা, ধানৰ খেৰ ।
पयाल । सूखा हुआ धान, गेहूँ आदिका डठल ।

पुकारना-[क्रि स] মতা, প্ৰাৰ্থনা কৰা ।
आवाज देना । नाम रटना । फरियाद करना ।

पुखराज—[सं पुं] পদ্মৰাগ মণি ।
एक प्रकार का पीला रत्न ।

पुख्ता—[वि] দৃঢ় ।
पक्का । दृढ ।

पुचकारना—(क्रि स) নিচুকোৱা, মৰমেৰে হাত বুলোৱা ।
चूमने का सा शब्द करते हुए प्यार जताना ।

पुचारा—(सं पुं) ভিজা কাপোৰৰ পটি, পাতল প্ৰলেপ, অনাহক প্ৰশংসা, তোষামোদ ।
गीले कपडे से पोंछने या लेप करने का काम । हलका लेप । झूठी प्रशसा । खुशामद ।

पुच्छ—[सं स्त्री] নেজ, অন্তিম-ভাগ, পাছফাল ।
दुम । पिछला या अन्तिम भाग ।

पुच्छल—(वि) নেজাল ।
दुमदार ।

पुछल्ला—[सं पुं] নেগুৰ, চাটুকাৰ, পাছ ধৰা লোক ।
पूँछ की भांति पीछे लगी रहने वाली आवश्यक वस्तु । पीछा न छोडनेवाला ।

पुछवैया—[वि]সোধোতা, সন্ধানী ।
पूछनेवाला । खोज खबर करने वाला ।

पुजना—(क्रि अ) পূজিত হোৱা, সম্মানিত হোৱা, পূৰ্ণ হোৱা।

पूजा जाना। सम्मानित होना। पूरा होना [क्रि स] पुजाना।

पुजापा—[सं पुं] পূজাৰ সামগ্ৰী।

पूजा की सामग्री।

पुट—[सं पुं] আচ্ছাদন, ৰহণ, আভাস, বাটিৰ আকৃতিৰ পাত্ৰ।

मुलायम या तर करने अथवा हलका मेल मिलाने के लिये दिया जानेवाला छींटा। बहुत हलका मेल। भावना। आभा। ढकने वाली चीज। कटोरे के आकार का कोई पात्र।

पुटियाना—(क्रि स) ফুচুলোৱা।

फुसलाना।

पुटी—[सं स्त्री] সৰু দোনা বা বাটি, পুৰিয়া।

छोटा दोना या कटोरा। पुड़िया। लंगोटी।

पुट्ठा—(सं पुं) তপিনা, কিতাপৰ গাদি।

चूतड़ के ऊपर का भाग। पुस्तक की जिल्द बाँधने के लिये बिना-गत्ते का आवरण।

पुड़िया - (सं स्त्री) পুৰিয়া, ধন-সম্পত্তি, পুঁজি।

कागज मोड़ या लपेटकर बनाया हुआ वह संपुट जिसमें कोई चीज रखी हुई हो। धन-सम्पत्ति और पूँजी।

पुण्यश्लोक—(वि) পবিত্ৰ আচৰণৰ, শুদ্ধ বস্তু।

पवित्र आचरणवाला। शुद्ध चीज।

पुतना—(क्रि अ) লিপা হোৱা। মচা যোৱা, চাক খোৱা।

पोता जाना। पुताई होना।

पुतला—[सं पुं] পুতলা।

लकड़ी घास, कपड़े आदिका बना मनुष्य का आकार।

पुतली—(सं स्त्री) সৰু পুতলা। চকুৰ মণি।

छोटा पुतला। आँख के बीच का छोटा काला भाग।

पुताई—[सं स्त्री] মচা যোৱা বা লিপা কাৰ্য্য অথবা তাৰ পাৰিশ্ৰমিক।

पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुत्तलिका (त्ता)—[सं स्त्री] সৰু পুতলা।
पतली। गुड़िया।

पुदीना—[सं पुं] পদিনা।
सुगन्धित पत्तियोंवाला एक पौधा।

पुनः—(अव्य) পুনৰ, আকৌ, উপৰিও।
फिरसे। दोबारा। उपरान्त।

पुनरपि—(क्रि वि) পুনৰ।
फिरसे।

पुनरावर्तन—(सं पुं) প্ৰত্যাৱৰ্ত্তন, সংসাৰত বাৰ বাৰ জন্ম লোৱা।
लौटकर आना। बारबार संसार में जन्म लेना

पुनरीक्षण—(सं पुं) পুনৰ পৰীক্ষণ।
किसी देखे या किये हुए कार्य को फिरसे देखना (अ—रिन्यू)

पुनर्वसन—[सं पुं] পুনৰ্বসতি কৰোৱা কাৰ্য্য। পুনৰ সংস্থাপন কাৰ্য্য।
(उजड़े हुए लोगों को) फिरसे बसाना।

पुनर्विहित—(वि) পুনৰ ব্যৱস্থা হোৱা।
जिसका फिरसे विधान हुआ हो या किया गया हो।

पुनर्व्यक्त—[वि] পূৰ্ববৎ ব্যক্ত হোৱা।
किसी चीज को पहले की तरह ज्यों की त्यों फिरसे बनाकर सामने रखना।

पुनि—(क्रि वि) পুনৰ, আকৌ।
फिर। पुनः।

पुनीत—(वि) পৱিত্ৰ।
पवित्र।

पुन्न, पुण्य—(सं पुं) পুণ্য।
पुण्य।

पुरंदर—(सं पुं) স্বৰ্গৰ ৰজা, ইন্দ্ৰ, বিষ্ণু।
इन्द्र। विष्णु।

पुरः—[अव्य] সন্মুখত।
आगे।

पुरः कृत—(वि) পূৰ্ব্বৰ পৰাই দিয়া
पहले से दिया हुआ।
(अं-प्री पेड)

पुरःसर, पुरस्सर—(वि) আগবঢ়োৱা, লগ, মিলিত।
अगुवा। साथी। मिला हुआ।

पुर—[सं पुं] নগৰ, ঘৰ।
नगर। घर। लोक। राशि, ढेर।
(अव्य) সন্মুখত।
आगे। सामने।

(বি) ভৰপূৰ, পূৰ্ণ।
भरा हुआ। पूर्ण।

পুৰইন—[সং স্ত্ৰী] পদুমৰ পাত, পদ্ম।
कमलका पत्ता। कमल।

পুৰখা—(সং পুং) পূৰ্ব্বপুৰুষ, পূৰ্বজ।
बाप, दादा आदि पूर्वज।

পুৰজা—(সং পুং) টুকুৰা, খণ্ড, অঙ্গ, অংশ, যন্ত্ৰ-পাতিৰ কোনো ভাগ।
टुकडा। कनग्न। अवयव। अंश। यन्त्र आदिका कोई महत्व। पूर्ण अंश।

পুৰনা—[ক্ৰি অ] সমাপ্ত বা পূৰা হোৱা।
समाप्त या पूरा होना। पूरा पडना।

পুৰবট—[সং পুং] চামৰাৰ ডাঙৰ মোনা।
खेत सींचने के लिये चमड़े का बना बडा डोल। चरसा।

পুৰবনা—(ক্ৰি স ক্ৰি অ) আশা পূৰণ কৰা বা হোৱা। পৰিপূৰ্ণ কৰা বা হোৱা, প্ৰতিজ্ঞা আদি পূৰোৱা।
किसी की आशा या कामना पूर्ण करना या होना। परिपूर्ण करना या होना। [प्रतिज्ञा या वचन] पूरा करना या होना।

পুৰৱা—(সং পুং) চুবুৰী, পাৰা মাটিৰ গিলাচ। পূৰ্ব্বাষাঢ়া নক্ষত্ৰ।
छोटा गाँव। मिट्टी का कुल्हड़। पूर्वा-नक्षत्र।

পুৰৱাই (বৈয়া)—[সং স্ত্ৰী] পুৰুবা বতাহ।
पूरब से चलने या आनेवाली वायु।

পুৰশ্চৰণ—(সং পুং) কোনো কাৰ্য্যৰ বাবে প্ৰস্তুতি, মন্ত্ৰ আদি নিয়মানুসাৰে পাঠ কৰা।
किसी काम के लिये पहले से उपाय सोचना और प्रबन्ध करना। मन्त्रादि का नियमपूर्वक पाठ करना।

পুৰসা—[সং পুং] ৪॥ বা ৫ ফুট উচ্চতাৰ মাপ।
साढे चार या पांच हाथकी ऊँचाईकी एक माप।

পুৰাংগনা—(সং স্ত্ৰী) নগৰবাসী স্ত্ৰী।
नगरमे रहनेवाली स्त्री।

पुरा—[বি] প্ৰাচীন, পুৰণি।
प्राचीन। पुराना।
(सं पु) চুবুৰী।
छोटा गाँव।

पुरातत्व—[सं पुं] আগৰ কালৰ কথা, প্ৰত্ন-তত্ত্ব।
इतिहास के पूर्व काल की वस्तुओं द्वारा प्रागैतिहासिक इतिहास का पता लगानेवाली विद्या। (अं— आर्कियालोजी)

पुरातत्वज्ञ-(सं पुं) পুৰাতত্ত্বজ্ঞাতা।
वह जो पुरातत्वका अच्छा ज्ञाता हो।

पुरातन—(वि) প্ৰাচীন, পুৰণি।
प्राचीन। पुराना।
[सं पुं] বিষ্ণু।
विष्णु।

पुराना (वि) পুৰণি, প্ৰাচীন, জীৰ্ণ। অপ্ৰচলিত।
बहुत दिनोंका। प्राचीन। जीर्ण। जिसे बहुत दिनो का अनुभव या ज्ञान हो। जिसका प्रचलन उठ गया हो।
(क्रि स) পূৰ্ণ কৰা বা কৰোৱা, পালন কৰা বা কৰোৱা।
पूरा करना या कराना। पालन करना या कराना।

पुरारि—(सं पुं) শিব।
शिव।

पुरावृत्त—[सं पुं] বুৰঞ্জী, ঐতিহাসিক কথা।
प्राचीन काल का वृत्तान्त या हाल।

पुरी—(सं स्त्री) নগৰ, জগন্নাথপুৰী।
नगरी। जगन्नाथ पूरी।

पुरीष—(सं पुं) বিষ্ঠা, গু।
विष्ठा। मल।

पुरु—(सं पुं) দেৱলোক, ৰাক্ষস, শৰীৰ।
देवलोक। राक्षस शरीर।

पुरुषार्थ—(सं पुं) পৌৰুষ, পৰাক্ৰম, সামৰ্থ্য শক্তি।
पौरुष। पराक्रम। सामर्थ्य,शक्ति

पुरुषार्थी—[वि] পুৰুষাৰ্থ কৰোতা, উদ্যোগী, পৰিশ্ৰমী, পৰাক্ৰমী, বলৱান।
पुरुषार्थ करनेवाला। उद्योगी। परिश्रमी। बलवान्।

पुरुषोत्तम— (सं पु) পুৰুষৰ ভিতৰত প্ৰধান বা শ্ৰেষ্ঠ, বিষ্ণু,

নাৰায়ণ। মল-মাহ।
वह जो पुरुषों में श्रेष्ठ या उत्तम हो। विष्णु। नारायण। मल-मास।

पुरोगामी— (सं पुं) অগ্ৰগামী, আগবঢ়ুৱা।
अग्रगामी किसी विषय में उदार विचार रखने और अग्रसर रहने वाला।

पुरोडाश—[सं पुं] যজ্ঞাহুতি।
हवि।

पुरोधा, पुरोहित— [सं पुं]
পুৰোহিত, যাজক, বামুণ।
वह ब्राह्मण जो यजमान के यहाँ कर्म कांड के सब कृत्य और संस्कार कराता है। किसी धर्म के अनुयायियों के धर्म संस्कार और धार्मिक कृत्य करनेवाला।

पुलंदा, पुलिंदा—(सं पुं)
টোপোলা।
लपेटे हुए कपड़े, कागज आदिका मुठ्ठा। बण्डल।

पुल—[सं पुं] দলং, সেতু।
सेतु।

पुलक—(सं पुं) অতিশয় আহ্লাদ, আনন্দত ৰোমাঞ্চিত হোৱা।
रोमांच।

पुलकना—[क्रि अ]পুলকিত হোৱা।
पुलकित होना।

पुलकित-(वि) আনন্দত বিভোৰ হোৱা। गद्‌गद्।

पुलटिस—(सं स्त्री) ঘা আদি পকা-বলৈ দিয়া লেও।
फोड़े आदि पकानेके उनपर बाँधा जानेवाला दवाओं का मोटा लेप।

पुलाव—(सं पुं) পোলাও।
मांस और चावल एकमें पकाया हुआ व्यंजन।

पुलिन · [सं पुं] দাঁতি, পাৰ।
तट। किनारा।

पुश्त—(सं स्त्री) পিঠি, পীৰি।
पृष्ठ। पीठ। वंश परम्परा में कोई स्थान।

पुश्ता—[सं पुं] ওখ বান্ধ, গড়।
बाँध। ऊँची मेंड़।

पुश्तैनी—[वि] বাপতীয়া, বাপতি সাহোন, বংশানুক্ৰমিক।
कई पुश्तों या पीढ़ियों से चला आया हुआ। आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।

पुष्कर—(सं पुं)পুখুৰী, পদুম, বাণ, যুদ্ধ, সূৰ্য্য। এখন তীৰ্থস্থান।
जल। ताल। कमल। बाण। युद्ध। सूर्य।

पुष्कल—(वि) বহুত, অধিক, ভৰপূৰ, শ্ৰেষ্ঠ, পৱিত্ৰ।
बहुत। अधिक। भरापूरा। श्रेष्ठ। पवित्र।

पुष्ट—(वि) পালিত, হৃষ্ট-পুষ্ট, শকত-আৱত, নোদোকা।
पाला हुआ। मोटा-ताजा। दृढ। मजबूत।

पुष्टई—(सं स्त्री) পুষ্টিকাৰক দৰব।
ताकत की दवा।

पुष्टि—(सं स्त्री) পোষণ, আটিলতা, দৃঢতা, সমৰ্থন।
पोषण। बलिष्ठता। दृढ़ता। समर्थन।

पुष्टि मार्ग—(सं पुं) স্বামী বল্লভ আচাৰ্য্যৰ দ্বাৰা প্ৰচলিত এক ভক্তি মাৰ্গ।
बल्लभाचार्य का चलाया हुआ एक भक्ति मार्ग।

पुष्प वाटिका—(सं स्त्री) ফুলনি, ফুলনিবাৰী।
फुलवारी।

पुष्पबाण—(सं पुं) কামদেৱ, কামদেৱ।

पुष्पित—[वि] প্ৰস্ফুটিত।
फूला हुआ।

पुस्तिका—[सं स्त्री] সৰু কিতাপ।
छोटी पुस्तक।

पुहप (हुप)—(सं पुं) ফুল।
फूल।

पूँछ—(सं स्त्री) নেজ, নেগুৰ, পাছফাল।
पुच्छ। दुम। पुछल्ला। पिछलग्गू।

पूँजी—[सं स्त्री] পুঁজি, মূলধন, সম্পূৰ্ণ যোগ্যতা।
धन। जमा। मूल धन। किसी विषय में किसी का सारी योग्यता या ज्ञान।

पूँजीदार—(सं पु) পুঁজিপতি, মূল ধনৰ গৰাকী।
पूँजी पति।

पूआ—[सं पुं] মালপোৱা।
मालपूआ। एक प्रकार की पकवान।

पूग—[सं पु] তামোল গছ বা ফল, সমূহ, সঙ্ঘ।
सुपारी का पेड़ या फल। राशि। समूह। किसी विशेष कार्य या व्यापार के लिये बना हुआ संघ।

पूगना—(क्रि अ) পূৰ্ণ হোৱা, সময়মতে উপস্থিত হোৱা।
पूरा होना। नियत समय पर आ पहुँचना।

पूछताछ, पूछाताछी—[स ं स्त्री] জিজ্ঞাসা। অনুসন্ধান।
जिज्ञासा।

पूछना—[क्रि स] সোধা, জিজ্ঞাসা কৰা।
जानने के लिये प्रश्न करना। खोज खबर लेना। महत्व या मूल्य जानना या समझना।

पूजना—(क्रि स ं क्रि अ) পূজা কৰা, ভেটি দিয়া, পূৰা হোৱা।
पूजा करना। घूस या रिश्वत देना। पूर्ण या पूरा होना।

पूत—[वि] পৱিত্ৰ, শুদ্ধ।
पवित्र। शुद्ध।
(स ं पु ं) সত্য।
सत्य।

पूति—(स ं स्त्री) পৱিত্ৰতা দুৰ্গন্ধ।
पवित्रता। दुर्गन्ध। सड़ायंध।

पूती-(स ं स्त्री) গাঁঠিন নিছিনা শিপা, নহৰু, পিয়াজ আদি।
गाँठ के रूपमें होनेवाली जड़। लहसुन की गाँठ।

पूनी—(स ं स्त्री) কপাহৰ পাঁজি।
सूत कातने के लिये तैयार की हुई धुनी रूई की बत्ती।

पूप—[स ं पु ं] মালপোৱা।
मालपूआ।

पूय—(स ं पु ं) পুঁজ।
पीब। मवाद।

पूर, पूरन—[स ं पु ं] কচোৰী, শিঙাৰা আদি পিঠাইৰ ভিতৰত দিয়া মছলা, তৰকাৰী আদি। নদী আদিৰ বেগৱতী ধাৰা সমূহ।
कचौरी, समौसे, गुझिया आदि पकवानों में भरे जानेवाले ममाले। नदी आदि की तेज धारा या बाढ़। समूह झुण्ड।
[वि] পূৰ্ণ।
पूर्ण।

पूरक—[वि] সিহঁতে পূৰণ কৰা হয়
पूर्ति या पूरा करनेवाला।
(स ं पु ं) প্ৰাণায়ামৰ এক প্ৰণালী।
प्राणायाम की एक क्रिया। पूर्ण बनाने या करनेवाला अंग। गुणक अंक।

पूरण—(सं पुं) ভৰোৱা কাৰ্য্য, এটা সংখ্যাক আন এটা সংখ্যাৰে গুণ কৰা অঙ্ক।
पूरा करने या भरने की क्रिया या भाव। समाप्त करना। अंकोंका गुणा करना।

पूरना—(क्रि स क्रि अ) পুৰ কৰা, আচ্ছাদিত কৰা, সফল কৰা, সিদ্ধ হোৱা. পূজা আদিৰ বাবে মণ্ডল দিয়া।
पूरा करना या होना। आच्छादित करना या होना। भरना या भरा जाना। (मनोरथ) सफल करना या सिद्ध करना। पूजा आदि के लिये चौका बनाना। बँटना।

पूरब—[सं पुं] পুব দিশ।
पूर्व दिशा।

पूरबी—(वि) পুব দিশৰ।
पूर्व दिशा की।
[सं स्त्री]এক প্রকাৰৰ সংগীত।
एक् प्रकार का सगीत।

पूरा—[वि] পূর্ণ, সমগ্র, যথেষ্ট, সম্পূর্ণভাবে সম্পাদিত।
भरा हुआ। समूचा। पूर्ण। यथेष्ट। पूरी तरह से सम्पादित या सम्पन्न किया हुआ। पूर्णकाम।

पूर्णकाम—[वि] পূর্ণকাম, সকলো ইচ্ছা পূর্ণ হোৱা।
जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गयी हो।

पूर्णतः, पूर्णतया--(क्रि वि) সম্পূর্ণভাবে।
पूरी तरहसे। पूर्ण रूपसे। जितना हो, उन सबके विचार से।

पूर्णता—(सं स्त्री) পূর্ণতা।
पूरा पन।

पूर्णाहुति—[सं स्त्री] পূর্ণাহুতি, যজ্ঞ, হোম আদিৰ শেষত দিয়া আহুতি।
यज्ञ या होम समाप्त होनेपर दी जानेवाली आहुति।

पूर्त्त—[सं पुं] পালন, ঘৰ, নাদ আদি সজা কাম, গড়কাপ্তানী।
पालन। मकान, कुएँ, बगीचे आदि बनवाने का काम।
(वि) ঢাকি থকা, পূৰিত।
पूरित। ढँका हुआ।

पूर्त्त विभाग-(सं पुं) গড়কাপ্তানী বিভাগ।
तामीर का महकमा। (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट।)

पूर्ति—[सं स्त्री] পুৰ্ণতা, আৰম্ভ কৰা কামৰ সমাপ্তি, কোনো বহী বা ফৰম আদিৰ খালি ঠাইবোৰ পুৰণ কৰা।
पूर्णता। आरम्भ। किये हुए कार्य की समाप्ति। किसी बही या कोष्ठक में कुछ लिखने या खाना भरने की क्रिया या भाव।

पूर्व—(सं पुं) পুব।
वह दिशा जिधर सूरज उगता है।
[वि] আগৰ, পুৰণি।
पहले का। पहले से होनेवाला। प्राचीन। पिछला।

पूर्वज—(सं पुं) পুৰ্ব্বপুৰুষ, অগ্ৰজ, ডাঙৰ ভাই।
बड़ा भाई। पूर्व पुरुष।

पूर्व-राग, पूर्वाराग—[सं पुं] আৰম্ভিক প্ৰেম।
आरम्भिक प्रेम।

पूर्ववत्—(क्रि वि) আগৰ দৰে।
पहले की तरह।

पूर्वापर—(क्रि वि) আগৰ পিছৰ।
आगे पीछे।
[वि] আগৰ আৰু পিছৰ।
आगे का और पीछे का।

पूर्वार्द्ध—(सं पुं) পুৰ্ব্বাৰ্দ্ধ—আৰম্ভণিৰ আধা ভাগ।
शुरू का आधा हिस्सा।

पूला—(सं पुं) মুঠা, আঁটি, পোলা।
सरपत, मूँज आदिका बंधा हुआ मुट्ठा।

पूषा—(सं पुं) সূৰ্য্য।
सूर्य।

पूस—[सं पुं] পুহমাহ।
पौष महीना।

पृथुल—(वि) স্থূল, বিশাল।
स्थूल। विशाल। विस्तृत।

पृथ्वी—(सं स्त्री) পৃথিৱী, মাটি।
धरा। भूमि। मिट्टी।

पृष्ठ—(सं पुं) পৃষ্ঠা, পিঠা, পিছৰ ভাগ।
पीठ। पीछे का भाग। पन्ना।

पेंग—[सं स्त्री] দোলনাৰ এপিনৰ পৰা আনপিনলৈ যোৱা।
झूलने के समय झूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना।

पेंच,पेच—(सं पुं) চালাকী, চতুৰ মল্লযুদ্ধত প্ৰতিপক্ষীক পৰাস্ত কৰা, কৌশল, পেঁচ, জটিলতা।

घुमाव । फिराव । उलझन । चाल बाजी । यंत्र । कुस्ती में प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ने की चाल ।

पेंदा—[सं पुं] কোনো বস্তুৰ তলৰ অংশ ।
किसी वस्तु का निचला भाग, जिसके आधार पर वह ठहरी रहती है ।

पेखना—(क्रि स) চোৱা ।
देखना ।

पेचकश—(सं पुं) পেঁচ কচ-পেঁচ গভাল । আঁটি বা কচি সুমুওৱা লোহাৰ যতন ।
पेच जड़ने या निकालने का एक औजार ।

पेचिश—(सं स्त्री) গ্ৰহণী ।
पेटमें आँव होने के कारण होने वाला मरोड़ ।

पेचीदा, पेचीला—(वि) জটিল, মস্কিল ।
पेचदार । मुश्किल । विकट ।

पेज—[सं स्त्री] লাজ, প্ৰতিষ্ঠা । खीर । रबडी । लज्जा । प्रतिष्ठा ।
(सं पुं) পৃষ্ঠা ।
पुस्तक का पृष्ठ ।

पेटी—(सं स्त्री) সৰু বাকচ পিটাৰী, পেটৰ আগৰ পিনে ওলাই থকা অংশ, পেটী ।
छोटा सन्दूक । पेट का आगे निकला हुआ भाग । कमरबन्द ।

पेटू—[वि] পেটুক, খকুৱা ।
भुक्खड़ ।

पेठा—[सं पुं] বগা কোমোৰা, বগা কোমোৰাৰে তৈয়াৰী মিঠাই ।
सफेद कुम्हडा या उसमे बनी मिठाई ।

पेड़—[सं पुं] গছ ।
वृक्ष ।

पेड़—[सं पुं]মানুহৰ নাভি আৰু মুত্ৰাশয়ৰ মাজৰ অংশ, গৰ্ভাশয় ।
मनुष्य की नाभि के नीचे मूत्रेन्द्रियके ऊपरका भाग । गर्भाशय ।

पेय—[वि] পি খাব পৰা ।
पीने योग्य ।
(सं पुं)পি খাব পৰা, পনীয়া বস্তু, পানী, গাখীৰ ।
पीनेकी तरल वस्तु । जल । दूध ।

पेरना—(क्रि स) তেল পেৰা, তেল আদি উলিওৱাৰ বাবে সৰিয়হ আদিত দিয়া হেঁচা বা চাপ, কষ্ট দিয়া, প্ৰেৰণা

দিয়া, পঠিওৱা, পিহা বা মোহৰা কাৰ্য্য।

कोल्हू आदिमें डालकर किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। कष्ट देना। प्रेरणा करना। भेजना।

पेलना—[क्रि स] ঢকা মৰা, অবজ্ঞা কৰা, দূৰ কৰা, হেচুকি ভিতৰলৈ নিয়া।

दबाकर अन्दर घुसाना। धक्का देना। अवज्ञा करना। हटाना।

पेश—(क्रि वि) সমুখত, আগত। सामने। आगे।

—करना—উপস্থিত কৰা, হাজিৰ কৰা, সাক্ষাত কৰা।

उपस्थित करना। भेंट करना।

पेशकश—[सं पुं] সাক্ষাত। भेंट।

पेशगी—(सं स्त्री) আগধন, অগ্ৰিম।

अगाऊ

पेशवा—[सं पुं] নেতা, চৰদাৰ, মহাৰাষ্ট্ৰৰ দেশীয় প্ৰধান মন্ত্ৰীৰ উপাধি।

नेता। सरदार। महाराष्ट्र माम्रा-ज्यके प्रधानमंत्रियों की उपाधि।

पेशा—[सं पुं] উদ্যম, ব্যৱসায় পেছা।

उद्यम। व्यवसाय।

पेशाब—[स पु] মূত, পেচাব।

मूत्र।

पेशी—(सं स्त्री) সমুখত অথবা আগত হোৱা কাৰ্য্য, ন্যায়ালযত মোকৰ্দ্দমাত উপস্থিত হোৱা আৰু তাৰ শুনানী হোৱা কাৰ্য্য, মাংসপেশী।

सामने या आगे होने की क्रिया या भाव। न्यायालय में मुकदमें के पेश होने और उसकी सुनवायी होनेकी कार्वाई। शरीर के अन्दर मांस की गुत्थी।

पेशेवर—[सं पु] ব্যৱসায়ী।

वह जो कोई पेशा या व्यवसाय करता हो।

(सं स्त्री) ব্যভিচাৰ আদিৰ দ্বাৰাই জীৱিকা উপাৰ্জ্জন কৰোঁতা।

व्यभिचारके द्वारा अपनी जीविका चलानेवाली।

पेश्तर—[क्रि वि] আগেয়ে। पहले।

पेसना—(क्रि स) कचि सुमুৱা।
कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज के अन्दर धँसाना या घुसाना।

पैंजनी—(सं स्त्री) ভৰিত পিন্ধা এবিধ অলঙ্কাৰ।
पैरों में पहनने का झनझन बजने वाला एक गहना।

पैंतरा, पैतरा— [सं पुं]
আক্ৰমণৰ সময়ত থিয় হোৱা মুদ্ৰা বিশেষ, চতুৰালীৰে ভৰা চলন ফুৰণ অথবা যুক্তি।
वार करने या लड़नेके समय पैर जमा कर खड़े होने की मुद्रा या ढंग। चालाकी से भरी हुई चाल या युक्ति।

पै—(अव्य) কিন্তু, অৱশ্য, ওচৰত, প্ৰতি, নিশ্চয় আদি অৰ্থক অব্যয়।
परन्तु। अवश्य। पास। प्रति। ही। पर, ऊपर।
जोप – যদি।
यदि।
तोपै—তথাপি।
तो।
कापै—কাক, কাৰ ওচৰত।
किसपर।

(सं स्त्री) দোষ ত্ৰুটী।
दोष। त्रुटि।

पैकार—(सं पुं) ঘৰে ঘৰে গৈ বস্তু বিক্ৰী কৰা ব্যৱসায়ী।
घूम घूमकर फुटकर सौदा बेचने वाला व्यापारी।

पैगम्बर-(सं पुं) পয়গম্বৰ। দেৱদূত
देव दूत।

पैगाम—(सं पुं) বাতৰি, বাণী।
सन्देश।

पैजार—(सं स्त्री) জোতা।
जूता। जोड़ा।

पैठना—(क्रि अ) প্ৰবেশ কৰা।
प्रविष्ट होना (क्रि स-पैठाना)

पैड़ी, पैरी— (सं स्त्री) জখলা, খট-খটি।
सीढ़ी।

पैदल-(वि) পদযাত্ৰা। খোজ কাঢ়ি।
पैरोंसे चलकर कहीं जानेवाला।
(क्रि वि) খোজে খোজে।
पाँव-पाँव।
[सं पुं] খোজ কাঢ়ি যোৱা পদাতিক সৈন্য।
बिना किसी सवारी के पैरों से चलने की क्रिया। पदाति-सिपाही।

पैदा—[वि] জন্ম, উৎপন্ন, অৰ্জিত।
उत्पन्न। प्रकट। अर्जित।

पैदाइश—[सं स्त्री] উৎপত্তি, জন্ম।
उत्पत्ति। जन्म।

पैदावार—(सं स्त्री) উৎপন্ন।
उपज।

पैना—(वि) জোঙা, তীক্ষ্ণ, ধাৰ থকা।
पतली और चोखी धारवाला। नुकीला।

पैमाइश—[सं स्त्री] জোখ, মাটি আদিৰ জোখ-মাপ।
नाप। जमीन आदि की माप-जोख।

पैमाना—(सं पुं) বস্তু জোখা যন্ত্ৰ, মাপক, মদ্য পাত্ৰ।
वह चीज जिससे कुछ नापा जाय। मद्य पीने का पात्र।

पैर—[सं पुं] ভৰি, মাটি আদিত থকা পদচিহ্ন, ধানৰ দ'ম।
पाँव। धूल आदि पर पड़े पद चिह्न अन्न की राशि या ढेर।

पैरवी—(सं स्त्री) কাৰোবাৰ পিছে পিছে যোৱা, যত্ন, প্ৰচেষ্টা।
किसीके पीछे चलना। अनुगमन। प्रयत्न। कोशिश।

पैवंद—(सं पुं) চামৰাৰ টাপলি আদি, জোৰ. বেলেগ বেলেগ গছৰ দুটা ডাল বান্ধি কলম দিয়া কাৰ্য্য।
चकती। जोड़। किसी पेड़ की वह टहनी जो उसी जाति के दूसरे पेड़की टहनी में बंधी जाती है। (वि—पैवन्दी)

पैसा—[सं पुं] পইচা, ধন. টকাৰ এশ ভাগৰ মুদ্ৰা।
रुपये के सौवें भाग की मुद्रा।

पोंगा—(वि) অবুজ, মূৰ্খ।
ना-समझ। मूर्ख।

पोंछना—[क्रि स] মোচা, ঘঁহি-পিহি ভালকৈ ধূলি-মলা আদি পৰিষ্কাৰ কৰা।
काछना। रगड़ कर धूल या मैल साफ करना।
(सं पुं) মচা কাপোৰ।
पोंछने का कपड़ा।

पोखरा—(सं पुं) পুখুৰী।
तालाब।

पोय—(वि) তুচ্ছ, হীন, বেয়া, আশক্ত।
तुच्छ। हीन। बुरा। आशक्त।

पोटली—(सं स्त्री) সৰু টোপোলা।
छोटी गठरी।

पोटा—(सं पुं) পেটৰ মোনা, সামর্থ্য, চকুৰ পিৰিকটি, আঙুলিৰ আগ, চৰাইৰ পোৱালী।
पेटकी थैली। सामर्थ्य। औकात। आँख की ऊपरी पलक। उंगली का सिरा। चिड़ियाका बच्चा।

पोत—(सं पुं) জন্তু অথবা চৰাইৰ পোৱালী, কাপোৰ, ডাঙৰ নাও, প্রবৃত্তি, পাল, মাটিৰ খাজনা, জাহাজ
पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। कपड़ा। बड़ी नाव। प्रवृत्ति। ढङ्ग। वारी। जमीनका लगान। जहाज।

पोतना—[क्रि स] লিপা।
गीली वस्तु की तह चढ़ाना।
(सं पुं) যি কাপোৰেৰে লিপা যায়।
वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जाय।

पोता—(सं पुं) নাতি, মাটিৰ খাজনা, অণ্ডকোষ।
बेटे का बेटा। भूमि कर। अण्ड-कोष।

पोथा—(सं पुं) ডাঙৰ কিতাপ।
बड़ी पुस्तक।

पोथला—(वि) গোলা, লপা।
जिसमें दाँत न हो। पोला।

पोर—[सं स्त्री] আঙুলিৰ গাঁঠি, দুই গাঁঠিৰ মাজৰ অংশ, জুৱাত বাকী ৰোৱা অংশ।
उंगली की गांठ। दो गाँठों के बीच का अंश। जुए में किसी के जिम्मे बाकी पड़नेवाली रकम।

पोल— [सं स्त्री] খালী ঠাই, জিৰণি, ভিতৰ ফোপোলা, চোতাল, পদূলি।
खाली जगह। अवकाश। बाहरी आडम्बर के अन्दर की सार-हीनता। फाटक। आंगन।

पोला—[वि] ফোপোলা, অসাৰ।
जिसके अन्दर का भाग खाली हो। खोखला। नि:सार।

पोश—[सं पुं] ঢাকনি।
वह जिससे कोई चीज ढकी जाय।

...न्धा?।
...माला ।

पोश... स्त्री] পোচাক ।

पोश... [वि] গোপনীয়, ...।
... गुप्त ।

पो... व । পোহনীয়া, পুহিব ... रखने योग्य । पाला हुआ ।

पोस... [क्रि स] পালন অথবা ... কৰা, সংৰক্ষণত ৰখা ।
पालन या रक्षा करना । अपने पास अपनी रक्षा मे रखना ।

पोस्त—(सं पुं) বাকলি, আফুগছ, আফু গছৰ গুটি ।
छिलका । अफीम का पाधा । अफीम के पौधे का डोडा ।

पोहना— क्रि स) গাঁথা, বিন্ধা কৰা ।
पिरोना । गूँथना । छेदना । पीसना ।

पौ— सं स्त्री) প্রভাত পুৱা, পাশা খেলৰ এটি দান ।
प्रातः काल के सूर्य के प्रकाश की रेखा या मद्धिम ज्योति पासे के खेल में एक दाँव ।

(सं पुं) ভাৰ, মূল ।
पैर । जड ।

पौढ़ना—(क्रि अ) দোলা, বাগৰ দিয়া ।
झूलना । लेटना ।

पौत्र—[सं पुं] নাতি ।
पोता नाती ।

पौधा—[सं पु] নতুন আৰু সৰু গছ পুলি ।
नया आर छोटा वृक्ष । छोटे आकार का वृक्ष ।

पौन—(स य)বতাহ, প্রেত, পোনে ।
हवा । प्रेत । तीन चौथाई ।

पौनी—(सं स्त्री) মাঙ্গলিক কাৰ্য্যৰ সময়ত বস্তু বাটনি লোৱা নাপিত, ধোবা আদি,সকলো হেতা ।
नाई धोबी आदि जो मङ्गल अवसर पर नेग पाते है । छोटी कलछी ।

पौना—[वि] পোনে ।
तीन चौथाई ।

पौर— (वि) নগৰ সম্বন্ধীয় ।
पुर या नगर सम्बन्धी ।

पौरजन—[सं पुं] নাগৰিক ।
नागरिक ।

पौरव—(সং পুং) পুৰুৰ বংশধৰ।
पुरुका वंशज

पौरिया— [সং পুং] দৌবাৰিক, ডুৰৰী, মঙ্গলগীত গাওঁতাসকল।
द्वारपाल । मंगल अवसरोंपर द्वार पर मंगलगीत गानेवाला याचक ।

पौरुष—পৌৰুষ, পুৰুষাৰ্থ।
पुरुषका भाव । पुरुषार्थ । उद्योग।
(-वि) পুৰুষ সম্বন্ধী ।
पुरुष सम्बन्धी । पुरुष का ।

पौर्वात्य—(वि) প্ৰাচ্য ।
प्राच्य ।

पौर्वापर्य—(সং পুং) আগে পিছে হোৱা কাৰ্য্য ।
आगे पीछे होनेकी क्रिया या भाव।

पौष-(সং পুং) পুহ ।
पूस ।

पौष्टिक— [वि] পুষ্টিকৰ।
पुष्ट करनेवाला ।

पौसरा [ला]—(সং পুং)সৰ্ব্বসাধাৰণক পানী খুউৱা ঠাই ।
वह स्थान जहाँ सर्व साधारण को पानी पिलाया जाता है ।

पौहारी—(সং পুং) ভাত আদি এৰি গাখীৰ খাই জীয়াই থকা মানুহ ।
अन्न छोड़कर केवल दूध पीकर रहनेवाला ।

प्यादा—[সং পুং]পদাতিক সৈন্য, পদব্ৰজে ।
पैदल सिपाही । दूत । पैदल ।

प्यार— (সং পুং) মৰম, প্ৰেম, চেনেহ ।
मुहब्बत । प्रेम ।

प्यारा [वि] প্ৰিয় ।
प्रिय । भला मालूम हानेवाला ।

प्याला—(সং পুং) পিয়লা ।
छोटा कटोरा ।

प्यास—[स स्त्री] পিপাসা, পিয়াহ বাসনা ।
जल पीने की प्रवृत्ति या इच्छा । पिपासा । प्रबल वासना या कामना ।

प्यासा—[वि] পিয়াহত আতুৰ, তৃষ্ণাৰ্ত্ত ।
तृषित ।

प्रकंप (न)—[সং পুং] কম্পন, থক্ থক্ কৈ কঁপা ।
कँपकँपी । काँपना ।

प्रकट, प्रगट—(वि) প্ৰকট, ওলাই পৰা । প্ৰকাশ্য ।

प्रबंधक (कर्त्ता)—(सं पुं) বন্দোবস্ত কৰোঁতা।
प्रबंध या इन्तजाम करने वाला।

प्रबन्ध समिति--(सं स्त्री) আয়োজন কৰা সমিতি।
वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन का सारा प्रबंध करती हो।

प्रबुद्ध—(वि)জাগ্ৰত। সচেতন, জ্ঞানী
जागा हुआ। होशमें आया हुआ। ज्ञानी।

प्रबोध (न)- (सं पुं) জাগ্ৰত হোৱা, প্ৰকৃত আৰু পূৰ্ণজ্ঞান, বুজনি।
नींद खुलना। यथार्थ और पूरा ज्ञान। दिलासा।

प्रभंजन—[सं पुं] অত্যধিক ভঙা-চিঙা, প্ৰচণ্ড বতাহ, ধুমুহা বতাহ। বা-মাৰলি।
बहुत अधिक तोड़-फोड़। प्रचंड वायु। आँधी।

प्रभव—[सं पुं] উৎপত্তিৰ কাৰণ বা স্থল, জন্ম, সৃষ্টি।
उत्पत्ति का कारण या स्थान। जन्म। सृष्टि।

प्रभविष्णु—(वि) আনৰ ওপৰত প্ৰভাৱ বিস্তাৰকাৰী, বলৱান।
दूसरों पर प्रभाव डालने वाला। बलवान।

प्रभा—(सं स्त्री) দীপ্তি, জিকমিকনি।
आभा। चमक।

प्रभाकर—[सं पुं] সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ, অগ্নি, সমুদ্ৰ।
सूर्य। चन्द्रमा। अग्नि। समुद्र।

प्रभात—[सं पुं] ৰাতিপুৱা।
सबेरा।

प्रभाती—(सं स्त्री)ৰাতিপুৱা গোৱা এবিধ গীত। পুৱাৰ গীত।
एक प्रकार का गीत जो सबेरे गाया जाता है।

प्रभास—(सं पुं) দীপ্তি, দ্বাৰকাৰ ওচৰৰ এখন তীৰ্থস্থান।
दीप्ति। एक तीर्थ।

प्रभासना—[क्रि अ] প্ৰতীয়মান হোৱা।
भासित होना। जान पड़ना।

প্রভুতা, প্রভুতাই—[सं स्त्री]
প্রভুত্ব, আধিপত্য, গৰাকীৰ ক্ষমতা।
प्रभु या ईश्वर होने का भाव।
प्रभु या स्वामी होने का भाव।

প্রভুসত্তা—(सं पुं) সর্বাধিক, প্রভুত্ব, সর্বাধিক আধিপত্য।
देश, राज्य आदि की वह सबसे बड़ी सत्ता या अधिकार जिसके ऊपर और कोई बड़ी सत्ता या अधिकार न हो। (अं-सॉवरेन अथारिटी)

প্রভূত--[वि] প্রচুৰ, উন্নত, ওলাই থকা।
प्रचुर। उन्नत। निकला हुआ।

প্রমণ্ডল—(सं पुं) কেবাখনো জিলাৰ সমষ্টি।
प्रदेश का वह विभाग जिसमें कई जिले हो। (अं-डिवीजन)

প্রমত্ত—[वि] মতলীয়া, উন্মত্ত বলিয়া।
नशे में चूर। पागल। मस्त।
जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

প্রমথ—[सं पुं] মহাদেৱৰ সহচৰ, কামদেৱ।
शिव के एक प्रकार के गण। कामदेव।
(वि) মন্থনকাৰী, কষ্টদায়ক।
मथने वाला। पीड़ित करने या कष्ट देने वाला।

প্রমদ—(सं पुं) উন্মত্ততা।
मतवालापन। आनन्द।
(वि) উন্মত্ত, বলিয়া, প্রগল্ভ।
मतवाला। मस्त। प्रसन्न।

প্রমদা—(सं स्त्री) যুৱতী স্ত্রী।
युवती स्त्री।

প্রমাদ—[सं पुं] ভুল, ভ্রান্তি।
भूल। भ्रान्ति। अभिमान आदि के कारण कुछ का कुछ समझना या करना। ठीक तरह से ध्यान न देने के कारण कर्तव्य पालन में त्रुटि करना।

প্রমিত—(वि) পৰিমিত, উচিত পৰিমাণৰ।
परिमित। ठीक या निश्चित।

প্রমীত—[वि] মৃত।
मरा हुआ। [अं-डिसीज्ड]

প্রমুখ—[वि] প্রমুখ, মুখ্য, প্রথম।

प্রत्यवाय—[सं पुं] পাপ, বিৰোধ, অপকাৰ বাধা, নিৰাশা।

प्रत्यागमन—(सं पुं) উলটি, ঘুৰি অহা কাৰ্য্য।
लौट आना। दोबारा या फिरसे आना।

प्रत्यावर्तन—(स पुं) ঘুৰিঅহা। আদেশ আদি বদ কৰা। প্ৰত্যাবৰ্ত্তন।
वापस आना। रद्द करना।

प्रत्याशा— [सं स्त्री] প্ৰত্যাশা, আশা।
आशा। उम्मेद।
पाप। विरोध। अपकार। बाधा निराशा।

प्रत्यवेक्षण— [सं पुं] কোনো কথাৰ আগপিছ বিচাৰ কৰা।
अवधान।

प्रत्याक्रमण—(सं पुं) বিৰোধী পক্ষৰ আক্ৰমণৰ পিছত কৰা আক্ৰমণ।
जवाबी हमला।

प्रत्याख्यान— (सं पुं) অস্বীকাৰ, গ্ৰহণ ন কৰা।
कथन, सिद्धान्त आदिका खंडन। आपत्ति या विरोध। अवज्ञा या अनादरपूर्वक कोई चीज लौटाना या लेने से इन्कार करना।

प्रत्याहार—(स पुं) ইন্দ্ৰিয়সংযম, পিছলৈ টনা, গ্ৰহণ কৰাৰ কাৰ্য্য বিশেষ। আৰম্ভ কৰা।
इन्द्रिय निग्रह। प्रतिकार। किसी कामको न होनेके बराबर करना। फिर से ग्रहण या आरम्भ करना।

प्रत्युत—(अव्य) বৰং, ইয়াৰ উপৰি।
बल्कि। इसके विपरीत।

प्रत्युत्पन्न—[वि] পুনৰ ওপজা। সময় মতে মনলৈ অহা।
जो फिरसे उत्पन्न हो। जो ठीक समय पर सामने आवे।

प्रत्युपकार— (सं पुं) উপকাৰৰ সলনি কৰা উপকাৰ।
किसी उपकार के बदले में किया जानेवाला उपकार।

प्रत्यूष—(सं पुं) দোকমোকালিতে।
प्रभात। तड़का।

प्रथित— (वि) ডাঙৰ দীঘল, প্ৰসিদ্ধ।
लम्बा-चौड़ा। प्रसिद्ध।

प्रद—[वि] দিওঁতা।
देनेवाला। दायक।

प्रदक्षिणा— (सं स्त्री)) প্ৰদক্ষিণ।
চাৰিওপিনে ঘূৰি অহা কাৰ্য্য।
परिक्रमा।

प्रदत्त—(वि) প্ৰদত্ত।
दिया हुआ।

प्रदर—(सं पुं) এবিধ স্ত্ৰীৰোগ।
स्त्रियोंका एक रोग।

प्रदाह— [सं पुं] বিষ জ্বৰ। জ্বালা
ज्वर फोड़े आदि के कारण शरीर
में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदेय—[वि] দানৰ বা দিয়াৰ
উপযোগী।
प्रदान करने योग्य।

प्रदोष— [सं पुं] সন্ধ্যা, গুৰু
অপৰাধ, লোভ নাইবা স্বাৰ্থ
আদিৰ কাৰণে হোৱা নৈতিক
পতন।
संध्या। बहुत बड़ा दोष या अप-
राध। आर्थिक लोभ, स्वार्थ आदि
के कारण होनेवाला व्यक्ति का
नैतिक पतन।

प्रद्योत— (सं पुं) পোহৰ, ৰশ্মি।
किरण। दीप्ति।

प्रपंच—(सं पुं) সাংসাৰিক জঞ্জাল,
বিস্তৃতি, জঞ্জাল, বিকট সমস্যা,
ফাকি।
संसार और उसका जंजाल।
विस्तार। बखेड़ा। झमेला।
आडम्बर। छल।

प्रपंची—(वि) কপটী, ধূৰ্ত্ত।
ढोंगी। छली।

प्रपन्न— (वि) শৰণাগত, সেৱা-
পৰায়ণ।
आया हुआ। शरणागत।

प्रपात—(सं पु) সদায় পনীয়া
বস্তু বেগেৰে তললৈ পৰি থকা
ওখ ঠাই, জলপ্ৰপাত। নিজৰা।
वह बहुत ऊँचा स्थान जहाँ से
कोई वस्तु सीधे नीचे गिरे।
झरना।

प्रपितामह—(सं पु) আজোককা।
दादा का बाप।

प्रपौत्र—(सं पु) নাতিল'ৰা।
पोते का पुत्र।

प्रबन्ध—(सं पु) ব্যৱস্থা, বন্দোৱস্ত,
আয়োজন, ৰচনা, গৱেষণামূলক
নিবন্ধ।
इन्तजाम। बन्दोबस्त। आयोजन।
ऐसा बड़ा लेख या निबंध जिसमें
कोई शोध मूलक नया सिद्धान्त
प्रतिपादित हो। (अं--थीसिस)

प्रवाद—(सं पू) কথা-বতৰা, জন-
শ্ৰুতি বা কিম্বদন্তী, জনৱৰ ।
बात चीत । जनश्रुति । अफवाह ।
झूठी बदनामी ।

प्रवाल— [सं पुं] প্ৰবাল, মুক্তা
বিশেষ, গছৰ কোমল পাত ।
मूँगा (माणिक) । वृक्ष के नये
और कोमल पत्ते ।

प्रवास—(सं पु) প্ৰবাস, বিদেশ ।
अपना देश छोड़कर दूसरे देश में
जा बसना । यात्रा ।

प्रवासी—(वि) প্ৰবাসী, বিদেশত গৈ
বাস কৰোঁতা ।
विदेश में जाकर बसने या रहने
वाला ।

प्रवाह--(सं पु)পানীৰ ধাৰ বা সোঁত
কাম চলি থকা, লেঠাৰি । প্ৰবাহ
जल का बहाव । काम चलना
या जारी रहना । सिलसिला ।

प्रविष्ट—(वि)প্ৰবিষ্ট, সোমাই থকা ।
घुसा हुआ ।

प्रवीण—(वि) প্ৰবীণ, পাৰ্গত কুশল,
সাৱধান ।
कुशल । दक्ष । होशियार ।

प्रवेक्षा—(सं स्त्री) কোনো কাম
বা কথা হব বুলি আগেয়েই কৰা
আশা বা অনুমান ।
किसी काम या बात के होने के
सम्बन्ध में पहले से की जानेवाली
आशा या अनुमान । (अं–एंटि
सिपेशन)

प्रव्रज्या—[सं स्त्री] সন্ন্যাস ।
संन्यास ।

प्रशंसना—(क्रि स) প্ৰশংসা কৰা ।
प्रशंसा या तारीफ करना ।

प्रशंस्य-[वि] প্ৰসংসনীয় ।
प्रशंसनीय ।

प्रशस्त—(वि) প্ৰশংসনীয়, ভাল,
শ্ৰেষ্ঠ, বহল, উচিত, প্ৰশস্ত ।
प्रशंसनीय । अच्छा । श्रेष्ठ ।
लम्बा चौड़ा या बड़ा । उचित ।

प्रशस्ति— (सं स्त्री) স্তুতি, শিল
অথবা তাম্ৰফলিত লিখা ৰজাৰ
গুণ যশ আদি ।
स्तुति । प्राचीन कालके राजाओं
का एक प्रख्यापन जो चट्टानों या
ताम्र पत्रों आदि पर खोदे जाते
थे ।

প্ৰশান্ত— [वि] প্ৰশান্ত, গহীন ।
चंचलता रहित । शान्त ।
[सं पुं] (এছিয়া আৰু আমেৰিকাৰ মাজৰ মহাসাগৰ) প্ৰশান্ত মহাসাগৰ ।
एशिया और अमेरिका के बीच का महा सागर ।

प्रशान्ति—(सं स्त्री) প্ৰশান্ত অথবা নিশ্চল হোৱা ভাব, পূৰ্ণশান্তি ।
प्रशान्त या निश्चल होने का भाव । पूर्ण शान्ति ।

प्रशाखा— [सं स्त्री] ডাল, শাখা, প্ৰশাখা ।
टहनी ।

प्रशासक—[सं पुं] শাসক ।
वह जो राज्य का प्रशासन या प्रबन्ध करता हो ।

प्रशासन—(सं पुं) শাসন, শাসন ব্যৱস্থা ।
राज्य के परिचालन का प्रबन्ध या व्यवस्था ।

प्रश्रय—(सं पुं) আশ্ৰয়, আধাৰ ।
आश्रय । आधार ।

प्रश्रुति—[सं स्त्री] কোনো কাম কৰাৰ সময়ত কৰা প্ৰতিজ্ঞা বা কথা দিয়া ।
कोई कार्य करने के लिये की जानेवाली प्रतिज्ञा या दिया जाने वाला वचन ।

प्रसंग–(सं पुं) প্ৰসঙ্গ, সম্বন্ধ, বিষয়, মৈথুন, উচিত সংযোগ, প্ৰকৰণ, অধ্যায় ।
सम्बन्ध । विषय का लगाव या सम्बन्ध । मैथुन । उपयुक्त संयोग । प्रकरण, अध्याय ।

प्रसरण–(सं पुं) আগ বঢ়া, বিস্তাৰ ।
आगे बढ़ना या खिसकना । बढ़ना । विस्तार ।

प्रसव— [सं पुं] জন্ম দিয়া । প্ৰসৱ । মাতৃত্ব ।
जनन । प्रसूति । मातृत्व ।

प्रसाद, प्रसादी–[सं पुं] প্ৰসন্নতা, অনুগ্ৰহ, দেৱতালৈ উছৰ্গা কৰা বস্তু, খাদ্য । প্ৰসাদ ।
प्रसन्नता । मेहरबानी, अनुग्रह । वह खाने की वस्तु जो देवता पर चढ़ाया जाता है । भोजन ।

प्रसादन— (सं पुं) কাৰোবাক সন্তুষ্ট কৰি নিজৰ ফলীয়া কৰা ।

प्रथम। प्रधान। मुख्य।
[अव्य] ইত্যাদি।
इत्यादि। वगैरह।

प्रमुदित—[वि] হৰষিত, আনন্দিত।
हर्षित। प्रसन्न।

प्रमेय—(वि) প্ৰমাণৰ বিষয় হব পৰা, জুখিব পৰা।
जो प्रमाण का विषय हो सके। जो प्रमाणित किया जाने को हो। जो नापा जा सके।

प्रमेह—(सं पुं) পেচাব কৰাৰ সময়ত পোৰণিয়ে ধৰা আৰু পুঁজ ওলোৱা ৰোগ।
पुरुषों का वीर्य सम्बन्धी एक रोग

प्रयाण—[सं पुं] প্ৰস্থান, যাত্ৰা, যুদ্ধযাত্ৰা।
प्रस्थान। यात्रा। युद्ध-यात्रा।

प्रयास—(सं पुं) প্ৰচেষ্টা, পৰিশ্ৰম।
प्रयत्न। कोशिश। मेहनत।

प्रयुक्त—[वि] সম্মিলিত, কামত লগোৱা।
सम्मिलित। जो काम में लाया गया हो।

प्रयोक्ता—(सं पुं) প্ৰয়োগ বা ব্যৱহাৰ কৰোঁতা।
प्रयोग या व्यवहार करने वाला। उद्योग या काम में लाने वाला।

प्रयोजक—[सं पुं] প্ৰয়োজক, প্ৰয়োগ অথবা অনুষ্ঠান আদি কৰোঁতা, কামত লগাওঁতা।
प्रयोग या अनुष्ठान करने वाला। काम में लगाने वाला।

प्रयोज्य— (वि) প্ৰযোজ্য, প্ৰয়োগ কৰিব পৰা অথবা কৰিব লগীয়া, যাৰ দ্বাৰাই কোনো কাম কৰোৱা হয়।
जिसका प्रयोग किया जा सकता हो या किया जाने को हो। जो अधिकार के रूपमें काम में लाया जा सकता हो।

प्ररोह(ण)—(सं पुं) জন্মা, জন্ম হোৱা, উঠা।
चढ़ा। न उगना। जमना।

प्रलंब—[वि] দীঘল, আগলৈ ওলাই থকা।
लंबा। आगे निकला हुआ।

प्रलयंकर—(वि) প্ৰলয়ঙ্কৰ, প্ৰলয়ৰ দৰে সৰ্ব্বনাশী
प्रलय कासा सर्वनाश करनेवाला।

प्रलाप—(सं पुं) প্ৰলাপ, বলিয়াৰ দৰে বলকণি।

पागलों की तरह कहीं हुई व्यर्थ बातें ।

प्रलेख—(सं पं) দলিল, চুক্তি-মানা ।
शर्तनामा । अनुबन्ध-पत्र । [अं-डीड]

प्रलेप—[सं पुं] লিপি দিয়া বস্তু, ঘঁহি বা সানি দিয়া দৰৱ, লেপন ।
अंगपर लगाई जानेवाली कोई गीली दवा । लेप ।

'प्रलोभ (न)—(सं पुं) লোভ, লোভ দেখুৱা, পাবৰ ইচ্ছা ।
लोभ दिखाना । लोभ ।

प्रवंचना—(सं स्त्री) ছলকৰা, প্ৰতাৰণা ।
छल । ठगपना ।

प्रवक्ता—(सं पुं) বক্তা, মুখপাত্ৰ (কোনো বিভাগৰ বা অনুষ্ঠানৰ)
अच्छी तरह समझ कर कहने वाला । किसी संस्था या विभाग की ओर से आधिकारिक रूप में कोई बात कहनेवाला ।

प्रवचन—(सं पुं) ধৰ্মগ্ৰন্থৰ ওপৰত দিয়া ভাষণ, ধাৰ্মিক ভাষণ ।
अच्छी तरह समझाकर कहना । धर्म ग्रंथ आदि की जबानी की जानेवाली व्याख्या ।

प्रवण—(सं पुं) হেলনীয়া, চাপৰ, চাৰি আলিৰ চক, পেট ।
ढाल। उतार । चौराहा । उदर ।
(वि) হেলনীয়া, তললৈ ওলমি থকা, প্ৰবৃত্ত, বিনীত, নিপুণ, সমৰ্থ ।
ढालुआं । झुका हुआ । प्रवृत्त । विनीत । निपुण । समर्थ ।

प्रवर—(वि) অইনতকৈ ডাঙৰ অথবা শ্ৰেষ্ঠ ।
औरों की अपेक्षा बड़ा मुख्य या श्रेष्ठ ।
(सं पुं) প্ৰবৰ । গোত্ৰ বা গোষ্ঠীৰ প্ৰবৰ্ত্তক শ্ৰেষ্ঠ পুৰুষ বা মুনি, সন্তান-সন্ততি, অভিজ্ঞ ।
किसी विशेष गोत्र या वंश का प्रवर्तक कोई विशेष महत्व का मुनि । संतति । अच्छा जानकार ।

प्रवहमान—(सं पुं) প্ৰবাহমান, বেগেৰে বৈ যোৱা ।
जोरों से बहता या चलता हुआ ।

प्रज्ञाशील—(स ं पु ं) बुद्धिमान, বিবেচক ।
बुद्धिमान । समझदार ।

प्रज्वलन—(स ं पु ं) জলা ।
जलना ।

प्रज्वलित—[वि] প্ৰজ্বলিত । উজ্জ্বল ।
जलता हुआ । चमकता हुआ ।

प्रण—] स ं पु] প্ৰতিজ্ঞা । দৃঢ়তা ।
दृढ़ या पक्का निश्चय ।

प्रणत—(वि) শিৰ দোৱা, প্ৰণাম কৰা, বিনয় ।
झुका हुआ । झुक कर प्रणाम करता हुआ । नम्र ।

प्रणत-पाल—(स ं पु ं) দীন অথবা ভক্তক পালন কৰ্ত্তা, ভগবান ।
दीनों या भक्तों का पालन करने वाला ।

प्रणति—[स ं स्त्री] প্ৰণাম, মিনতি ।
प्रणाम । नम्रता । निवेदन ।

प्रणम्य – [वि] প্ৰণম্য, নমস্কাৰ যোগ্য, নমস্য ।
प्रणाम करने योग्य ।

प्रणय—(स ं पु ं) প্ৰেম-প্ৰাৰ্থনা, প্ৰেম ।
प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना । प्रेम । विश्वास ।

प्रणयन—[स ं पु ं]ৰচনা । নিৰ্মাণ ।
रचना । बनाना ।

प्रणयी—(स ं पु ं) প্ৰেমী, স্বামী, মৰম কৰোঁতা জন ।
प्रणय या प्रेम करनेवाला । प्रेमी। स्वामी । पति ।

प्रणव—(स ं पु ं) ওঙ্কাৰ মন্ত্ৰ, পৰমেশ্বৰ ।
ओंकार म ंत्र । परमेश्वर ।

प्रणामी—(स ं स्त्री) প্ৰণামী, সন্মান দেখুৱাৰ কাৰণে দিয়া ধন অথবা উপহাৰ । চেলামী ।
भेंट । उपहार ।

प्रणिधान—[सं पु ं] প্ৰণিধান, সমাধি, পৰম ভক্তি, মনৰ একাগ্ৰতা, ধ্যান ।
रखा जाना । समाधि । परम भक्ति । मनकी एकाग्रता । ध्यान ।

प्रणिपात—[सं पु ं] মূৰ দোওৱা, নমস্কাৰ ।
सिर झुकाना । नमस्कार ।

प्रतनु—(वि) ক্ষীণ, সূক্ষ্ম ।
दुबला पतला । सूक्ष्म ।

प्रताप—[सं पुं] পৌৰুষ, প্ৰতাপ বীৰত্ব।
पौरुष। वीरता। प्रभाव।

प्रतारक—(सं पुं) প্ৰতাৰক, ফাঁকি দিওঁতা।
धोखा देनेवाला। चालाक।

प्रतारणा—[सं स्त्री] বিশ্বাসঘাতকতা, প্ৰতাৰণা।
धोखा देना।

प्रतिकार—(सं पुं) প্ৰতিকাৰ, পোটক, অসুবিধা বা আপদ গুচাবলৈ কৰা উপায়।
रोकने के लिये मुकाबलेमें किया जानेवाला कार्य। कम करने या घटाने आदि का कार्य।

प्रतिकूल—[वि] বিৰুদ্ধ, প্ৰতিকূল বিপৰীত, অনিষ্ট কৰা (দৈৱ)
विपरीत।

प्रतिकृति—[सं स्त्री] প্ৰতিবিম্ব। অবিকল।
किसी के अनुकरण पर बनायी हुई मूर्ति या रूप। प्रतिबिम्ब।

प्रति ग्रह—[पुं सं] দান বা লোকে দিয়া বস্তু গ্ৰহণ।
दान ग्रहण या स्वीकृत करना।

प्रतिघात—[सं पुं] উলটি কৰা আঘাত, আঘাত পাই দিয়া আঘাত।
वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय।

प्रतिच्छवि—[सं स्त्री] প্ৰতিবিম্ব, চিত্ৰ। প্ৰতিচ্ছবি।
प्रतिबिम्ब। चित्र।

प्रतिज्ञ—[वि] প্ৰতিজ্ঞ, প্ৰতিজ্ঞাকাৰী।
प्रतिज्ञा करनेवाला।

प्रतिज्ञापत्र—[सं पुं] প্ৰতিজ্ঞা পত্ৰ, অঙ্গীকাৰ পত্ৰ।
इकरारनामा।

प्रतिदान—[सं पुं] দানৰ সলনি দিয়া দান, ওলটাই দিয়া প্ৰতিজ্ঞা।
लौटाना। परिवर्तन।

प्रतिध्वनि—(सं स्त्री) প্ৰতিধ্বনি।
प्रति शब्द। गूँज।

प्रतिपक्षी—[सं पुं] বিৰোধী দল, বিৰোধী।
विरुद्ध पक्षवाला। विरोधी।

प्रतिपत्ति—[सं स्त्री] প্ৰাপ্তি, গৌৰৱ, যশস্যা, প্ৰভুত্ব, স্বীকৃতি।
प्राप्ति। ज्ञान। अनुमान। मानना। स्वीकृति।

प्रतिपन्न—(वि) প্ৰতিপন্ন, নিশ্চয় কৰা, প্ৰমাণিত, নিশ্চিত, শৰণাগত।

जो सबके सामने हो। जाहिर।
आविर्भूत। स्पष्ट।

प्रकरण—(सं पुं) বৃত্তান্ত, প্ৰসংগ, অধ্যায, চৰ্চ্চা, এক প্ৰকাৰৰ নাটক।
उत्पन्न करना। चर्चा। वृत्तान्त। प्रसंग। अध्याय। नाटक का एक भेद।

प्रकाश—[सं पुं] প্ৰকাশ, পোহৰ, ৰ'দ। অভিব্যক্তি।
आलोक। अभिव्यक्ति। पुस्तक का खण्ड। धूप।

प्रकाश-गृह—(सं पुं) চাৰিওপিনে পোহৰ বিস্তাৰ কৰা ওখ ঘৰ।
वह ऊँची इमारत जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो।

प्रकाशमान—(वि) প্ৰকাশিত, উদ্দীপ্ত। উজ্জ্বল।
चमकता हुआ।

प्रकाश्य—[वि] মুকলি ভাবে, সকলোকে শুনাকৈ।
प्रकट करने योग्य। सबके सामने या सबको सुनाकर कहा हुआ।
[क्रि वि] সকলোৰে আগত, ৰাজহুৱা ভাবে।
सबके सामने। खुले आम।

प्रकीर्ण—(वि) সিঁচৰিত হোৱা।
बिखरा हुआ।

प्रकृष्ट—(वि) উত্তম, টনা।
उत्तम। खिंचा हुआ। जोता हुआ।

प्रकोष्ठ—(सं पुं) ঘাই দুৱাৰ মুখৰ ওচৰৰ সৰু কোঠালী, চ'ৰাঘৰ, ডাঙৰ চোতাল বা কোঠালী।
मुख्य द्वार के पास की कोठरी। बड़ा आगन। बड़ा कमरा।

प्रक्षालन—(सं पुं) ধোৱা।
धोना।

प्रक्षिप्त—(वि) খেলিমেলি হৈ থকা, পিছত যোগ দিয়া অংশ, ডাঙৰ কামৰ পৰিকল্পনা।
फेंका या छितराया हुआ। पीछे से किसी में मिलाया या बढ़ाया हुआ। किसी बहुत बड़े काम की योजना।

प्रखंड—[सं पुं] ৰাজ্যৰ কোনো এটা খণ্ড বা ভাগ।
प्रान्त का कोई खण्ड या विभाग।

प्रखर—[वि] প্ৰখৰ, তীক্ষ্ণ।
बहुत तीक्ष्ण या प्रचंड।

प्रख्यात—(वि) বিখ্যাত, প্ৰসিদ্ধ।
प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रगटना—(क्रि अ) প্ৰকাশ হোৱা।
ওলোৱা।
प्रकट होना।

प्रगल्भ—(वि) চতুৰ, টেঙৰ, মুখৰ, প্ৰতিভাশালী।
चतुर। होशियार। प्रतिभाशाली। निर्भय। उद्धत।

प्रगाढ़—(वि) গভীৰ, খুব বেছি।
बहुत गाढा या गहरा। बहुत अधिक।

प्रचुर—(वि) অধিক, খুব বেছি।
बहुत अधिक।

प्रच्छन्न—(वि) ঢকা অথবা মেৰাই থকা, লুকাই থকা, গুপ্ত।
ढका या लपेटा हुआ। छिपा हुआ। गुप्त।

प्रच्छाया—[सं स्त्री] গ্ৰহণৰ সময়ৰ সূৰ্য্য বা চন্দ্ৰৰ ছাঁ।
ग्रहण के समय सूर्यपर पड़नेवाली चन्द्रमा की छाया अथवा चन्द्रमा पर पड़नेवाली पृथ्वी की छाया।

प्रजनन—(सं पु) প্ৰজনন, ধাত্ৰী কৰ্ম, সন্তান উৎপন্ন কৰা।
सन्तान उत्पन्न करना। जन्म। धात्री कर्म।

प्रजापति–[सं पुं] প্ৰজাপতি, ব্ৰহ্মা, মনু, সূৰ্য্য, ঘৰৰ গিৰিহঁত।
सृष्टि उत्पन्न करनेवाला। ब्रह्मा। मनु। सूर्य। घरका मालिक या बड़ा।

प्रज्ञ—[सं पुं] বিদ্বান, জ্ঞানী।
विद्वान।

प्रज्ञा—(सं स्त्री) বুদ্ধি, জ্ঞান, সৰস্বতী।
बुद्धि। ज्ञान। सरस्वती।

प्रज्ञा चक्षु—[सं पुं] ডাঙৰ পণ্ডিত, জ্ঞানী, (সাধাৰণতে অন্ধ–বিদ্বানৰ ক্ষেত্ৰতহে ব্যৱহাৰ হয়)
बहुत बड़ा विद्वान और ज्ञानी। (साधारणतः अन्धे विद्वानों के लिये प्रयुक्त)

प्रज्ञापक—(सं पुं) জাননী দিওঁতা, বিজ্ঞাপন। জাননী।
सूचित करनेवाला। बड़े अक्षरोंमें छपा विज्ञापन। (पोस्टर)

प्रतिहत—(वि) আহত, আঘাত প্ৰাপ্ত।
चोट खाया हुआ।

प्रतिहार—[सं पुं] দুৱৰী। द्वारपाल। चोबदार। (सं स्त्री)—प्रतिहारी)

प्रतीक—[सं पुं] প্ৰতীক, চিহ্ন, লক্ষণ, আকৃতি।
चिह्न। लक्षण। मुख। आकृति। प्रतिमा। (अं—सिम्बल)

प्रतीकी—[वि] লাক্ষণিক।
लाक्षणिक।

प्रतीक्षा—[सं स्त्री] অপেক্ষা, বাটচোৱা, প্ৰতীক্ষা।
आसरा। इन्तजार।

प्रतीक्षालय—[सं पुं] প্ৰতীক্ষালয়, ৰেল মটৰ আদিৰ কাৰণে বাট চাই থকা সময়ত জিৰণি লোৱা ঘৰ।
जहाँ यात्री रेल, हवाई जहाज, बस आदि के आने की प्रतीक्षामें बैठते हैं—वह कमरा।

प्रतीची—(सं स्त्री) পশ্চিম দিশ।
पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य—(वि) পশ্চিমৰ, পশ্চিম দিশত।
पश्चिमी दिशा का।

प्रतीत—(वि) জ্ঞাত, জনা, প্ৰসন্ন।
ज्ञात। जाना हुआ। ऊपर से देखने पर जान पड़ने वाला। प्रसन्न।

प्रतीति—(सं स्त्री) জ্ঞান, বিশ্বাস, প্ৰসন্নতা।
ज्ञान। विश्वास। वचन। प्रसन्नता।

प्रतीती—[वि] বিশ্বাস কৰোঁতা, বিশ্বস্ত।
प्रतीति या विश्वास करनेवाला। विश्वसनीय।

प्रतीप—(सं पुं) প্ৰতিকূল,আশাৰ বিপৰীত, সাহিত্যৰ এবিধ অৰ্থালঙ্কাৰ।
आशाके विरुद्ध कोई बात होना, साहित्य का एक अलंकार।
(वि) প্ৰতিকূল, বিপৰীত।
प्रतिकूल। विपरीत। विमुख।

प्रतीयमान—(वि)বাহ্যতঃ যিটো বুজা বা জনা গৈছে।
(रूप) जो ऊपर से दिखाई देता या समझ में आता हो। ऊपर से दिखाई पड़ने या प्रतीत होने वाला।

प्रतोषना— [ক্রি স] সন্তুষ্ট কৰা।
परितुष्ट या सन्तुष्ट करना ।

प्रत्यंचा—[सं स्त्री] ধনুৰ গুণ।
धनुष की डोरी । चिल्ला ।

प्रत्यंत - (वि) একেবাৰে সীমাৰ।
শেষ সীমাৰ।
बिलकुल सीमा पर का । अन्तिम सिरेका ।

प्रत्यक्ष—(वि)প্ৰত্যক্ষ, পোনপটীয়া।
দেখা দেখিকৈ।
जो आँखों के सामने हो । जिसमें कोई घुमाव-फिराव न हो ।
(ক্রি वि)চকুৰে দেখা। সমুখত।
आँखोंके आगे । सामने ।

प्रत्यक्षदर्शी—[सं पुं] প্ৰত্যক্ষদৰ্শী, কোনো ঘটনা নিজ চকুৰে দেখা ব্যক্তি।
वह जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो ।

प्रत्यनंतर—[सं पुं] উত্তৰাধিকাৰী
उत्तराधिकारी ।

प्रत्यनीक—[सं पुं] শত্ৰু, বিৰোধী
একবিধ অৰ্থালঙ্কাৰ।
शत्रु । दुश्मन । विरोधी । एक अलंकार ।

प्रत्यपकार—[सं पुं] অপকাৰ পাই কৰা অপকাৰ।
अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार ।

प्रत्यभिज्ञान—(सं पुं) চিনাকি, স্মৃতিৰ সহায়েৰে হোৱা জ্ঞান।
स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान ।

प्रत्यभिदेश— [सं पुं] প্ৰত্যভিদেশ, অধিকাৰীৰ আদেশ আদি।
जिससे अभिदेश लेना या कुछ जानना हो उसका किसी दूसरे की ओर संकेत करना ।

प्रत्यय— [सं पुं] প্ৰত্যয়, বিশ্বাস প্ৰমাণ, বিচাৰ, বুদ্ধি, ব্যাখ্যা, ক্ৰিয়াৰ ধাতুৰ পিচত লগা শব্দ-খণ্ডবিশেষ।
विश्वास । साख । प्रमाण । विचार । बुद्धि । व्याख्या । आवश्यकता । प्रसिद्धि, चिह्न । व्याकरण में वह शब्द-खण्ड जो किसी धातु या शब्द के पीछे युक्त होकर उसके अर्थ में कोई विशेषता ला देते हैं ।

प्रत्यर्पण— (सं पुं) গ্ৰহণ কৰা বস্তু ফিৰাই দিয়া।
ली हुई वस्तु को लौटाकर ला देना या उसके स्थानपर वैसा ही चीज देना ।

अवगत । अङ्गीकृत । प्रमाणित ।
निश्चित । शरणागत ।

प्रतिपादन—(सं पुं) কোনো কথা ভালদৰে বুজি ব্যাখ্যা কৰা, নিজৰ মত সমৰ্থন কৰাবলৈ প্ৰমাণিত তথ্য উপস্থিত কৰা, প্ৰতিপাদিত কোনো বিষয় স্থাপিত কৰা ।
अच्छी तरह कोई बात समझकर कहना । अपना मत पुष्ट करने के लिये प्रमाणपूर्वक कुछ कहना ।

प्रतिपालना—[क्रि स] প্ৰতিপালন কৰা ।
पालन करना । रक्षा करना ।

प्रतिफलक—[सं पुं] প্ৰতিফলক, কোনো বস্তুৰ প্ৰতিবিম্ব অইন বস্তু এটাত প্ৰতিফলিত কৰিব পৰা যন্ত্ৰ বিশেষ ।
वह यन्त्र जो कोई प्रतिबिम्ब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो । (अं-रिफ़लेक्टर)

प्रतिबंध—[सं पुं] বাধা, বিঘিনি ।
रोक । रुकावट । किसी बात या काम में लगायी हुई शर्त ।

प्रतिभात—[वि] প্ৰকাশিত, আলোকিত । জ্ঞাত হোৱা ।
चमकता हुआ । प्रकाशित । सामने आया हुआ । ज्ञात ।

प्रतिभास—(सं पुं) প্ৰকাশ, আভাস, ভ্ৰম, মিছলিয়া ।
प्रकाश, आभास, भ्रम, मिथ्यापन

प्रतिभू—(सं पुं) প্ৰতিনিধি, সাক্ষী, জামীনদাৰ ।
जमानत करनेवाला । जामीन ।

प्रतिभूति—[सं स्त्री] জামিন দিয়া ধন ৰাশি, জামিনদাৰ চুক্তি পত্ৰ ।
जमानत की रकम । जमानत पत्र ।

प्रतिमा—(सं स्त्री) প্ৰতিমা, দেৱতা সকলৰ মূৰ্ত্তি ।
अनुकृति । देवताओं की मूर्ति ।
प्रतिबिम्ब ।

प्रतिमान—[सं पुं] প্ৰতিবিম্ব, সমানতা, উদাহৰণ । দগা ।
प्रतिबिम्ब । समानता । बटखार । दृष्टान्त ।

प्रतिमूर्ति—[सं स्त्री] প্ৰতিমূৰ্ত্তি, সাইলাখ, প্ৰতিকৃতি ।
किसी के अनुरूप की ज्यों के त्यों बनी हुई मूर्ति ।

प्रविरक्षा—[सं स्त्री] প্ৰতিৰক্ষা। বচাব।

प्रतिरूप—(सं पुं) প্ৰতিমূৰ্ত্তি। চিত্ৰ। আদি।
प्रतिमा। तस्वीर। नमूना।
(वि) নকল। নকলী।

प्रतिरोध—(सं पुं) বিৰোধ, বাধা।
विरोध। रुकावट।

प्रतिलोम—(वि) ওলটা, বিপৰীত, উচ্চজাতিৰ কন্যাৰ লগত নিম্ন জাতীয় দৰাৰ বিবাহ বিশেষ।
प्रतिकूल। उलटे क्रम वाला। विवाह का एक भेद।

प्रतिवर्तन—(सं पुं) ঘুৰি অহা, সলনি হোৱা, উলটি অহা।
लौटना। वापस जाना।

प्रतिवासी, प्रतिवेशी—(सं पुं) চুবুৰীয়া।
पड़ोसी।

प्रतिविधान—(सं पुं) প্ৰতিকাৰ।
किसी विधान के मुकाबले में किया जानेवाले विधान। प्रतिकार।

प्रतिशत—[पद] শতকৰা, প্ৰত্যেক একশত।
हर सौ पर। फी सदी।

प्रतिषेध—(सं पुं) নিষেধ, নিবাৰণ। খণ্ডন।
निषेध। कोई काम बिलकुल न करने का पूरा वर्णन या मनाही। खण्डन।

प्रतिषेधक—(सं पुं) নিবাৰক, প্ৰতিবোধক। वह जो प्रतिषेध करे।
(वि) যিহেৰে কোনো প্ৰকাৰৰ প্ৰতিৰোধ বা নিবাৰণ হয়। जिसमें या जिसके द्वारा किसी प्रकार का प्रतिषेध हो।

प्रतिष्ठान—[सं पुं] প্ৰতিষ্ঠান, স্থাপিত অথবা প্ৰতিষ্ঠিত কৰা, সংস্থাপন, থাপনা কৰা।
स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना या बैठाना। देव मूर्ति की स्थापना।

प्रतिसारण—(सं पु) দূৰ কৰা, অপসাৰণ, ঘাত মলম আদি লগোৱা, বেণ্ডেজ লগোৱা।
अलग या दूर करना। हटाना। किसी एक अंग पर दवा लगाकर मलना। मरहम पट्टी। (अ—ड्रेसिंग)

प्रतिस्पर्धा—(सं स्त्री) প্ৰতিযোগিতা।
प्रतियोगिता। होड़। (अं—राइवलरी)

किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना ।

प्रसार, प्रसारण— (सं पुं) বিস্তাৰ, বঢ়োৱা, প্ৰসাৰ, ৰেডিওৰ জৰীয়তে গীত-মাত আদি দুৰ-দুৰ ঠাইলৈ পঠিওৱা যান্ত্ৰিক কাৰ্য্য ।

फैलाना । बढ़ाना । किसी विषय या चर्चा का प्रचार करना । रेडियो द्वारा कोई बात, गीत आदि सुनने के लिये चारों ओर फैलाना । (अं-ब्राड कास्टिंग)

प्रसुप्त—(वि) ভবা, চিন্তা, বন্ধ হৈ অথবা হেচা খাই থকা ।

सोचा हुआ । रुका, थमा या दबा हुआ ।

प्रसुप्ति—[सं स्त्री] টোপনি ।

नींद ।

प्रसू— [वि] জন্ম দিওঁতা অথবা উৎপন্নকাৰী ।

जन्म देने या उत्पन्न करनेवाली ।

प्रसूता— [सं स्त्री] সদ্য সন্তান প্ৰসৱ কৰা তিৰোতা ।

जच्चा ।

प्रसूति - (सं स्त्री) প্ৰসৱ, উৎপত্তি, সন্তান, সন্তানৰ মাক ।

प्रसव । उद्भव ।

प्रसून— (सं पुं) ফুল ।

फूल ।

प्रस्तर—[सं पुं] শিল, বিছনা ।

पत्थर । बिछौना ।

प्रस्तार—[सं पुं] বিস্তাৰ, আধিক্য, খলপ ।

विस्तार । अधिकता । परत ।

प्रस्तावना— [सं स्त्री] আৰম্ভ, প্ৰস্তাৱনা, কিতাপৰ ভূমিকা ।

आरम्भ । उपोद्घात । पुस्तक की भूमिका ।

प्रस्तावित-(वि) প্ৰস্তাৱ কৰা । প্ৰস্তাৱিত ।

जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो ।

प्रस्तोता- (सं पुं) প্ৰস্তাৱক ।

प्रस्तावक ।

प्रस्थानित—(वि) যি গুছি গৈছে, প্ৰস্থান কৰি গৈছে ।

जिसने प्रस्थान किया हो ।

प्रस्फुटित—(वि) ফুলি উঠা, বিকশিত ।

फूटा या खुला हुआ । विकसित ।

प्रस्फुरण— (सं पुं) ওলোৱা, ফুলি উঠা, প্ৰকাশিত হোৱা।
निकलना। खिलना। प्रकाशित होना।

प्रस्रवण—(सं पुं) নিজৰা।
झरना।

प्रस्राव— (सं पुं) পেচাব, পানী আদি টোপ টোপ কৈ পৰা।
जल आदि का टपकना या रसना। पेशाब।

प्रस्वेद— [सं पुं] ঘাম।
पसीना।

प्रहर—(सं पुं) তিনি ঘণ্টাৰ সময়।
तीन घंटे का समय।

प्रहरी—[सं पुं] প্ৰহৰী, ৰক্ষক।
पहरेदार।

प्रहसन—[सं पुं] হাঁহি, তামচা, হাস্য ৰস প্ৰধান এবিধ নাটক।
हँसी। दिल्लगी। हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का रूपक।

प्रहार—(सं पुं) আঘাত, মাৰ।
आघात। मार।

प्रहारना—[क्रि स] মাৰিবৰ বাবে অস্ত্ৰ আদি চলোৱা, মাৰা।
मारने के लिये अस्त्र आदि चलाना। आघात करना।

प्रहेलिका—(सं स्त्री) সাঁথৰ। ৰহস্য। पहेली।

प्रांगण—(सं पुं) ঘৰৰ চোতাল, বা পদূলি।
घर का आंगन।

प्रांजल—(वि) সৰল, সহজ, বিশুদ্ধ।
सरल। सीधा। स्वच्छ और शुद्ध (भाषा)

प्रांत—[सं पुं] অন্ত, কাষ, দিশ ৰাজ্য।
अन्त। किनारा। दिशा। प्रदेश।

प्रांतर—[सं पुं] জঙ্গল, গছৰ খোৰোঙ।
उजाड़। जंगल। वृक्षका कोटर।

प्रांतिक, प्रांतीय—[वि] ৰাজ্যিক বা ৰাজ্য সম্বন্ধীয়।
प्रान्त से सम्बन्ध रखनेवाला।

प्रांतीयता—(सं स्त्री) ৰাজ্যৰ হোৱা ভাৱ, প্ৰাদেশিকতা।
प्रान्तीय होने का भाव। अपने प्रांत का विशेष या अतिरिक्त पक्षपात या मोह।

प्राक्—(वि) আৰম্ভিক, পূৰণি অথবা আগৰ কালৰ।

आरम्भिक । पुराना या पूर्वकाल का ।

प्राकृत—(वि) প্ৰকৃতিৰ পৰা জন্ম, স্বাভাৱিক ।
प्रकृति से उत्पन्न । स्वाभाविक ।
[सं स्त्री] প্ৰাকৃত ভাষা ।
किसी स्थान की बोलचाल की भाषा । एक प्राचीन भारतीय बोलचाल की भाषा ।

प्राक्कथन—[सं पुं] ভূমিকা ।
भूमिका ।

प्रागैतिहासिक—[वि] বুৰঞ্জীৰ আগৰ কালৰ ।
इतिहास-पूर्वकाल का ।

प्राची—[सं स्त्री] পূব দিশৰ ।
पूर्व दिशा ।

प्राचीन—(वि) প্ৰাচীন । পূবৰ ।
पूरब का । पुराना ।

प्राचीर—[सं पुं] চৌহদ, প্ৰাচীৰ ।
चहार दीवारी । परकोटा ।

प्राच्य—(वि) পূবদিশৰ, এচিয়া মহাদেশৰ লগত সম্বন্ধিত, প্ৰাচ্য । পূবণি ।
पूर्व दिशा का । एशिया महादेश के देशों से सम्बन्ध रखनेवाला । पुराना ।

प्राज्ञ—[वि] বুদ্ধিমান, বিদ্বান ।
बुद्धिमान । विद्वान ।

प्राण-प्यारा—[सं पुं] প্ৰিয়তম, স্বামী ।
प्रियतम । स्वामी ।

प्राण-प्रतिष्ठा—(सं स्त्री) বিধিবৎ কোনো মূৰ্ত্তিত প্ৰাণ প্ৰতিষ্ঠা কৰা ।
कोई नयी मूर्ति स्थापित करके उसका पूजा करने से पहले मंत्रों द्वारा उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा या आरोप करना ।

प्राणांत—(सं पुं) মৃত্যু ।
मृत्यु ।

प्राणाधार—[वि] প্ৰিয়তম ।
परमप्रिय ।
[सं पुं] স্বামী ।
पति ।

प्रातः, प्रातःकाल—[सं पुं] ৰাতিপুৱা ।
सबेरा ।

प्रातःस्मरणीय—(वि) প্ৰাতঃস্মৰণীয়, পুণ্যবান ।
सबेरे उठते ही स्मरण करने योग्य (परम श्रेष्ठ और पूज्य)

প্রাত—(অব্য) বাতিপুৱাই ।
सबेरे ।
(सं पुं) বাতিপুৱা ।
सबेरा ।

প্রাদুর্ভাৱ-(স পুং) আবির্ভাৱ,উৎপত্তি
आविर्भाव । उत्पत्ति ।

প্রাধান্য-(সং পুং) প্রাধান্য, মুখ্য ।
प्रधानता ।

প্রাধ্যাপক—[সং পুং] অধ্যাপক, কোনো বিষয়ৰ শ্রেষ্ঠ জ্ঞাতা ।
बड़ा अध्यापक । किसी विषय का अच्छा विद्वान ।

প্রাপক—[বি] পাওঁতা ।
प्राप्त करने या पानेवाला ।

প্রাপণ—(সং পুং) পোৱা, প্রাপ্তি ।
प्राप्ति । मिलना ।

প্রাবল্য—[সং পুং] প্রবলতা ।
प्रबलता ।

প্রামাণিক—[বি] প্রামাণিক, ঠিক ।
प्रमाण-सिद्ध । ठीक । सत्य । ठीक माना जानेवाला ।

প্রায়:, প্রায়শ:-(অব্য) প্রায়ে ।
अक्सर । करीब करीब ।

প্রায়োগিক, প্রায়ৌগিক—(বি)
প্রয়োগ সম্বন্ধীয়, ক্রিয়াত্মক, ব্যৱহাৰিক ।
प्रयोग संबंधी । जिसका अभी प्रयोग या परीक्षा हो रही हो । क्रियात्मक । व्यवहारिक ।

প্রাৰব্ধ, প্রাৰব্ধ—[বি] আৰম্ভ কৰা ।
आरम्भ किया हुआ ।
[সং পুং] ভাগ্য, যি কামৰ ফল পোৱা আৰম্ভ হৈছে ।
वह कर्म जिसका फल भोग आरभ हो चुका हो । भाग्य । किस्मत ।

প্রার্থিত—(বি)যাৰবাবে বা যিহৰ বাবে প্রার্থনা কৰা হৈছে । প্রার্থিত ।
जिसकी प्रार्थना की गयी हो ।

প্রালেখ—[সং পুং] খচৰা । ভুৰাৰ ।
मसौदा [अं--ड्राफ़्ट]

প্রালেয়—(স পুং) বৰফ ।
हिम । पाला । बरफ ।

প্রাবিট, প্রাবৃট—(সং পুং) বর্ষা ঋতু ।
वर्षाऋतु ।

প্রাশন-(সং পুং) খাদ্য, সোৱাদ লোৱা ।
भोजन । चखना ।

प्रासंगिक—(वि) প্রাসঙ্গিক, আনুষঙ্গিক।
प्रसंग सम्बन्धी। आनुषंगिक। किसी प्रसंग में आकस्मिक रूपमें आनेवाला व्यय आदि। [अं—कन्टिनजेंट]

प्रासाद—(सं पुं) ডাঙৰ অট্টালিকা, ৰজাৰ ভৱন আদি।
बड़ा और ऊँचा पक्का घर। महल।

प्रियंवद, प्रियभाषी, प्रियवादी—(वि) মিষ্ট ভাষী, মিঠা কথা কওঁতা।
मीठी बातें कहनेवाला।

प्रिया—[सं स्त्री] নাৰী, পত্নী, প্ৰেমিকা।
नारी। पत्नी। प्रेमिका।

प्रीत—[वि] প্ৰীত, সন্তুষ্ট।
प्रीति युक्त।
[सं पुं] প্ৰীতি।
प्रीति।

प्रीतम—[वि] প্ৰিয়তম।
प्रियतम।

प्रीति—(सं स्त्री) সন্তোষ, প্ৰসন্নতা, মৰম।
सन्तोष। प्रसन्नता। प्यार।

प्रेक्षण—(सं पुं) দেখা।
देखना।

प्रेक्षा—(सं स्त्री) চোৱা, নৃত্য, অভিনয় আদি চোৱা, প্ৰজ্ঞা।
देखना। नृत्य, अभिनय देखना। प्रज्ञा।

प्रेक्षागार (गृह)—[सं पुं] নাট্যশালা, নাটঘৰ, চিনেমা ঘৰ, মন্ত্ৰণা গৃহ।
मंत्रणा गृह। नाट्यशाला।

प्रेत—(सं पुं) প্ৰেত, ভূত, কৃপণ, দুষ্ট।
मरा हुआ मनुष्य या प्राणी। वह कल्पित शरीर जो मरने के बाद मनुष्य धारण करता है। पिशाचों की तरह एक कल्पित देवयोनि। बहुत ही कृपण, दुष्ट, स्वार्थी और धूर्त व्यक्ति।

प्रेत-कर्म (कार्य)—[सं पुं] মৰা কাম, অন্ত্যেষ্টি, ক্ৰিয়া।
मृत शरीर जलाने से सपिंडि तक के सब कार्य।

प्रेतगृह, प्रेतगेह—[सं पुं] শ্মশান।
श्मशान।

प्रेतनी—[सं स्त्री] পিশাচিনী, তিৰোতা ভূত।
भूतनी। चुड़ैल।

प्रेतात्मा—(सं स्त्री) মৃত ব্যক্তিৰ আত্মা ।
मरे हुए व्यक्ति की आत्मा ।

प्रेम-पात्र—(सं पुं) যাক ভাল-পোৱা হয় ।
वह जिससे प्रेम किया जाय ।

प्रेमालाप—(सं पुं) প্ৰেমৰ কথা-বতৰা, প্ৰেমালাপ ।
प्रेमपूर्वक होनेवाली या मुहब्बत की बातचीत ।

प्रेरक—(सं पुं) পঠাওঁতা, প্ৰেৰণ কৰোতা ।
प्रेरणा करनेवाला ।

प्रेषक—[सं पुं] পঠাওঁতা ।
जो किसी के पास कोई चीज भेजे ।

प्रेषण—[सं पुं] কোনো বস্তু পঠিওৱা ।
क़ोई चीज कहीं से किसी के पास भेजना ।

प्रोक्त—(वि) কোৱা ।
कहा हुआ ।

प्रोत्साहन—(सं पुं) উৎসাহ দিয়া, সাহস দিয়া ।
कोई क़ाम करने के लिये उत्साह बढ़ाना । हिम्मत बंधाना ।

प्रोषित—(वि) বিদেশলৈ যোৱা ।
विदेश गया हुआ ।

प्रोषित पति का—[सं स्त्री] প্ৰবাসী পতিৰ বিৰহিণী নায়িকা ।
(वह नायिका) जो अपने पति के परदेश जानेपर दुखी हो ।

प्रौढ़—(वि) যুবাৱস্থা অতিক্ৰম কৰি যোৱা, প্ৰৌঢ়, সুপক্ব ।
अच्छी तरह बढ़ा हुआ । जो युवावस्था पार कर चला हो । पक्का ।

प्रौढ़ता—(सं स्त्री) প্ৰৌঢ় হোৱা অৱস্থা বা ভাব ।
प्रौढ़ होने की अवस्था या भाव ।

प्लावन—(सं पुं) বানপানী ।
पानी की बाढ़ ।

प्लुत—[सं पुं]সঙ্গীত তিনি মাত্ৰাৰ স্বৰ, পানী আদিত ডুবি থকা ।
तीन मात्राओं का स्वर ।
जल आदि से व्याप्त ।

फ

फ—ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ বাইশ সংখ্যাৰ আখৰ।
वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन।

फंका—[सं पुं] গুড়ি দৰব, এগাল, এফাল (ফল আদিৰ)
फाँकने के लिए चूर्ण रूपमें कोई दवा। उतनी मात्रा जितनी एक बारमें फाँकी जाय। फल आदि का काटा लम्बोतरा टुकडा। (सं स्त्री—फंकी)

फंद—[सं पुं] বন্ধন, ফান্দ, ফাল, ছল, দুখ।
बधन। फन्दा। जाल। छल। दुख।

फंदना—(क्रि अ) ফান্দত পৰা, জপিযাই যোৱা।
फन्दे में फँसना। कूद जाना।

फंदा-(स पुं) ফান্দ, জাল, কষ্ট-দায়ক বন্ধন।
किसी को फँसाने के लिए रस्सी आदि का घेरा। पाश। कष्ट दायक बन्धन।

फंदाना—(क्रि स) ফান্দত পেলোৱা বা জালত পেলোৱা।
फन्दे या जाल में फंसाना। किसी को फादने में प्रवृत्त करना।

फँफाना—[क्रि अ] গাখীৰ আদি উতলি উপচি পৰা।
दूध आदि का गरम होकर उमडना।

फँसना—[क्रि अ] ফান্দত পৰা, লিপ্ত হোৱা।
बन्धनमें उलझना।(क्रि स-फंसाना)

फक—(वि) বিবৰ্ণ, নিস্তেজ, শেঁতা।
स्वच्छ। सफेद। जिसका रंग बिगड़ गया हो।

फकत—(वि) কেৱল, মাত্ৰ।
केवल। सिर्फ।

फक्कड़—(सं पुं) গালি গালাজ, দুষ্টলোক, ফচকুলোক।
गाली गलौज। गन्दी बातें। सदा दरिद्र परन्तु मस्त रहनेवाला

व्यक्ति। बाहियात और उद्दंड आदमी।

फक्कड़ बाजी—(सं स्त्री) ওফাইডাং মৰা কথা।
गन्दी ओर बाहियात बातें बकना।

फख्र, फख्र—(सं पुं) গৌৰব।
गौरव।

फगुआ—(सं पुं) ফাকুৱা, হোলী।
फाग। होली।

फगुनहट्ट—(सं स्त्री)পাচোৱা বতাহ।
फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फजर—[सं स्त्री] বাতিপুৱা।
सबेरा।

फजल—[सं पुं] অনুগ্ৰহ।
अनुग्रह।

फजीहत—(सं स्त्री) দুৰ্দশা, দুৰ্গতি।
दुर्दशा। दुर्गत।

फजूल—(त्रि) ব্যৰ্থ, নিৰৰ্থক।
व्यर्थ।

फजूल खर्च—[वि] অপব্যয়ী।
अपव्ययी। (सं स्त्री-फजूलखर्ची)

फटकन—(सं स्त्री) ভুঁহ আদি।
फटकने से निकली बेकार भूसी आदि।

फटकना—(क्रि स) ফট্ ফট্ শব্দ কৰা, নিক্ষেপ কৰা, জাবি চালি পৰিষ্কাৰ কৰা।
फट फट शब्द करना। मारने के लिये चलाना (अस्त्र आदि)। सूप में अन्न आदि रखकर उसे उछा-लते हुए साफ करना।
(क्रि अ) ওচৰ চপা, কপাহ আদি ধুনা।
कुछ पास जाना या पहुँचना। फड़ फड़ाना।

फटका—(सं पुं) কপাহ ধুনা ধনু, কাব্য গুণহীন মিলিতাক্ষ কবিতা।
रूई धुनने की धुनकी। काव्य के रस आदि गुणों से हीन कोरी तुकबन्दी।

फटकारना—(क्रि स) থেকেচা মৰা, অনুচিত ৰূপে ধন ঘটা, ডবিয়া।
इस प्रकार झटका मारना कि ऊपर की चीजें छितरा कर गिर जांय। कुछ अनुचित रूपसे धन प्राप्त करना। कपड़ा पटक पटक कर साफ करना। खरी और कड़ी बात कह कर चुप कराना।

फटना—(क्रि अ) ফটা, ফুটা, গাখীৰ ফটা।
ऊपर के तलमें इस प्रकार दरार

पड़ना कि कुछ भाग अलग हो जाय। अलग या पृथक हो जाना। द्रव पदार्थ में से पानी अलग हो जाना।

फट फटाना, फड़ फड़ाना-[क्रि स] ফট্ ফট্ কৰা, চেল বেল কৰা। फट फट शब्द करना। ज्यादा बकबक करना।

(क्रि अ) ধপ ধপ কৰা, কক্-বক্ কৰা, ছট্-ফটোৱা, ফট্ ফট্ শব্দ হোৱা।

(पंख)फड़ फड़ाना। कठिन स्थिति से निकलने के लिये जोर लगाना। फट फट शब्द होना।

फटहा—(वि) ফটা, গালি-গালাজ কৰোঁতা।

फटा हुआ। गाली गलौज करने वाला।

फटा-(वि) ফটা।

फटा हुआ।

फट्ठा-[सं पुं] বাঁহৰ কামি।

बांस का लम्बा फटा टुकड़ा।

फड़कना, फरकना-(क्रि अ) ধপধপনি উঠা, থৰ-ক্ৰৰণি উঠা। रह रहकर नीचे ऊपर या इधर उधर हिलना। कुछ करने केलिये व्यग्र होना। (क्रि स-फड़काना)

फड़िया-(सं पुं) খুচুৰা দোকানী। खुदरा अनाज बेचनेवाला।

फणधर, फणी-(सं पुं) সাপ। सांप।

फतवा-(सं पुं) মুছলমান শাস্ত্ৰৰ হুকুম বা ব্যৱস্থা।

किसी बात के उचित या अनुचित होने के सम्बन्ध में (विशेषतः मुसलमानों के धर्म शास्त्रानुसार) दी जानेवाली व्यवस्था।

फतह, फतेह-[सं स्त्री] বিজয়, সাফল্য।

विजय। सफलता।

फतिंगा-[सं पुं] পতঙ্গ, চগা।

पतंगा। उड़नेवाला छोटा कीड़ा।

फतूर-(सं पुं) বিকাৰ, উপদ্ৰৱ, হানি, বিঘিনি।

विकार। उपद्रव। कमी। घाटा।

फतूही--[सं स्त्री] হাত নথকা এবিধ চোলা।

बिना बांहकी एक प्रकार की कुरती।

फनना—(क्रि अ) আৰম্ভ কৰা।
कोई काम शुरू करना।

फनाना—(क्रि अ) তৈযাৰ কৰা বা কৰোৱা।
तैयार करना या कराना।

फफसा—(वि) কোঁপোলা,কুস্বাদু।
फूला हुआ और अन्दरसे पोला। बुरे स्वाद वाला।
[सं पुं] হাঁও কাঁও।
फेफड़ा।

फफोला— (सं पुं) বুৰবুৰণি।
পানী ফোলা।
शरीर पर पड़नेवाला छाला। पानी का बुलबुला।

फबती—(सं स्त्री) ব্যঙ্গ।
व्यंग।

फबना—[क्रि अ] সুন্দৰ হোৱা, খাপ খোৱা।
सुन्दर या सुहावना लगना। खिलना।

फबीला—[वि] ধুনীয়া।
सुहावना या सुन्दर दिखाई देने वाला।

फरक, फर्क—(सं पुं) পাৰ্থক্য, ভেদ, দূৰত্ব
पार्थक्य। भेद, अन्तर। दूरी।
(क्रि वि) বেলেগ, পৃথক।
अलग। पृथक।

फरजी—[वि] কৃত্রিম, কল্পিত।
नकली। कल्पित।
(सं पुं) ডবা খেলৰ মন্ত্ৰী।
शतरंज में 'वजीर, नाम का मोहरा।

फरद, फर्द—[सं स्त्री] তালিকা, কাগজৰ তাও।
स्मरण रखने के लिये लिखा हुआ लेख या सूची आदि। कागज का तख्ता या ताव।
(वि) অনুপম।
बेजोड़।

फरना, फलना—[क्रि अ] ফল উৎপন্ন কৰা। ফলযুক্ত হোৱা।
वृक्षों का फल उत्पन्न करना। फलों से युक्त होना।

फरफंद—[सं पुं] ছল-প্ৰপঞ্চ, ফাকি-ফুকা।
छल कपट। नखरा।

फरमाइश—[सं स्त्री] আজ্ঞা, অনুৰোধ।
कोई चीज बनाने, लाने या कोई काम करने की आज्ञा।

फरमान—(सं पुं) আজ্ঞা পত্ৰ, নির্দেশ পত্ৰ।
राज्य या राजा की आज्ञा। वह पत्र जिसपर इस प्रकार की आज्ञा लिखी हुई हो।

फरमाना—(क्रि स) আদৰপূৰ্বক, আজ্ঞা দিয়া।
किसी बड़े का कुछ कहना। (आदरार्थक)

फरश,फर्श—[सं पुं]পকা ওখ মজিয়া বা চোতাল, চোতালত পৰা দলিছা।
बैठने आदि के लिये समतल और पक्की भूमि। ऐसी भूमिपर बिछाया हुआ कपड़ा।

फरसा—(सं पुं) কোৰ, কোদাল, তীক্ষ্ণ ধাৰৰ কুঠাৰ।
फावड़ा। तेज धार की एक प्रकार की कुल्हाड़ी।

फरागत—(सं स्त्री) অব্যাহতি। মল ত্যাগ কৰা।
छुटकारा। निश्चिन्तता। पाखाना फिरना।

फरामोश—[वि] विस्मृत। भूला हुआ।

फरार—(वि) পলৰীয়া, পলাতক। भागा हुआ।

फरियाद—(सं स्त्री) গোচৰ, নিবেদন।
प्रार्थना। निवेदन।

फरियादी—(वि) গুচৰীয়া, ফৰিয়াদী।
फरियाद करनेवाला।

फरिश्ता—(सं पुं) ঈশ্বৰৰ দূত, দেৱতা।
ईश्वर का दूत।

फरेब—(सं पुं) ভণ্ডামি, কপট।
छल। कपट।

फरेबी—(सं पुं) কপটীলোক, ফাকিবাজ।
कपटी। धोखेबाज।

फरोश—(सं पुं) বেচোতা।
बेचनेवाला।

फर्ज—(सं पुं) কৰ্তব্য, কল্পনা।
कर्तव्य। मान लेना।

फर्राटा—[सं पुं] বেগ, ক্ষিপ্ৰতা।
बेग। तेजी।

फलक—(सं पुं) ফলি, তক্তা, পৃষ্ঠা, হাত-তলুৱা, আকাশ, স্বৰ্গ।
तख्ता। पट्टी। परत। पृष्ठ। हथेली। आकाश।

फलाँग—(सं स्त्री) लাফ, এক লাফৰ দূৰত্ব ।
कुदान । एक फलांग भरकी दूरी या अन्तर ।

फलाना—(বি) অমুক, কোনো ।
अमुक ।
[ক্রি স] ফল যুক্ত কৰা । ফল উৎপন্ন কৰা ।
फलों से युक्त करना । फल उत्पन्न करना ।

फलित—(বি) ফল যুক্ত, ফল ধৰা, উপচি পৰা ।
जिसका या जिसमें फल हो या हुआ हो । फल का ।

फलित ज्योतिष—গ্ৰহৰ শুভাশুভ ফল বিচাৰ কৰা জ্যোতিষ শাস্ত্ৰৰ এক অঙ্গ ।
ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विचार होता है ।

फली—(সং স্ত্ৰী) ছেঁই ।
छोटे बीजोंवाला लम्बा और चिपटा फल ।

फसल—(সং স্ত্ৰী) ঋতু, বতৰ, সময়, উৎপন্ন, শস্য ।
ऋतु । समय । खेत की उपज ।

फसली—(বি) বতৰ বা ।
फसल या ऋतु का ।
[সং স্ত্ৰী] হাইজা, মহনি ৰোগ ।
हैजा ।

फसाद—(সং পুং) বিকাৰ, উৎপাত, যুঁজ ।
विकार । उत्पात । लड़ाई ।

फहम—[সং স্ত্ৰী] বুদ্ধি, বোধ শক্তি ।
बुद्धि । समझ ।
आम फहम—সৰ্ব সাধাৰণৰ বোধ গম্য ।
सर्व साधारण की समझमें आने वाला ।

फहरना—[ক্রি অ] বতাহত উৰা ।
[झण्डा आदि] वायु में उड़ना या फर फराना । [क्रि स-फहराना ।]

फाँक—[সং স্ত্ৰী] ছিৰলা, ফাট ।
फल आदि का काटा लम्बोतरा टुकड़ा ।

फाँकना—(ক্রি স) গাল মাৰি খোৱা ।
दाने या चूर्ण खाने के लिये ऊपर से उन्हें मुँह में डालना ।

फाँट—[सं पुं] ক্বাথ। দবৰৰ বস্ত সিজোৱা পানী।
काढ़ा। क्वाथ।

फाँटना—(क्रि स) ক্বাথ বনোৱা।
काढ़ा बनाना।

फाँड़ा— [सं पुं] ধুতী আদিৰ ককালত মেৰ খাই থকা অংশ।
धोती आदि का वह अंश जो कमर पर लपेटकर बाँधा जाता है।

फाँदना—(क्रि अ) জপিওৱা।
उछलना।
(क्रि स) জপিয়াই পাৰ হোৱা, ফান্দত পেলোৱা, আবদ্ধ কৰা।
कूदकर किसी चीजके पार जाना। फँदे में फँसाना। बाँधना या बन्द करना।

फाँस—[सं स्त्री] জাল. ফান্দ।
पाश। पशु पक्षी फँसानेका फँदा।

फाँसना—(क्रि स) ফান্দত পেলোৱা।
फँसाना।

फाँसी—[सं स्त्री] ফাঁচি। ফাঁচি দিয়া জৰি। ফান্দ।
फँसाने का फन्दा। रस्सी का वह फन्दा जिसमें गला फँसानेसे दम घुटता और आदमी मर जाता है। इस प्रकार गला घोंटकर दिया जानेवाला प्राण दण्ड।

फाका— (सं पुं) উপবাস।
লঘোণ।
उपवास।

फाकेमस्त—(वि) খাবলৈ নোহোৱা সত্ত্বেও নিশ্চিন্ত আৰু আনন্দত থকা (মানুহ)।
खाने पीने का बहुत कष्ट उठाकर भी मस्त रहनेवाला।

फाग—[सं पुं] ফাকুৱা, ফাকুৱাত গোৱা গীত।
होली। होली में गाये जानेवाला गीत।

फाटक—[सं पुं] পদূলিমুখ।
बड़ा दरवाजा।

फाटना—(क्रि अ) ফটা।
फटना।

फाड़ना—(क्रि स) ফলা, বিদীর্ণ কৰা, জোৰা সোলোকোৱা।
विदीर्ण करना। चीरना। सन्धि या जोड़ फैलाकर खोलना।

फानूस—(सं पुं) ফানুচ।
छतमें टाँगने के लिये एक डण्डेके चारों ओर लगे हुए शीशेके कमल

या गिलास आदि जिनमें मोमबत्तियां जलती है।

फायदा—(सं पुं) লাভ, মঙ্গল, উপকাৰ।

लाभ । भलाई । अच्छा फल या प्रभाव ।

फायदेमंद—[वि] লাভদায়ক।

लाभदायक ।

फारसी—(सं स्त्री) ফাৰ্চী ভাষা।

फारस (पारस) देशकी भाषा ।

फाल—(सं पुं) নাঙলৰ ফাল, খোজ কাঢ়োতে এখন ভৰিৰ পৰা আনখনৰ দূৰত্ব। ভাৰৰ খোজ।

लोहे का वह फल जो लोहे के हलके नीचे लगा रहता है। चलने के लिये उठाया गया पैर। डग। चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक की दूरी।

फालतू- (वि) অতিৰিক্ত, ব্যৰ্থ, অলাগতিয়াল।

अतिरिक्त। व्यर्थ । निकम्मा ।

फावड़ा-(सं पुं) কোদাল, কোৰ।

कुदाल ।

फासला-(सं पुं) দূৰত্ব। অন্তৰ।

दूरी । अन्तर ।

फाहा— [सं पुं] তেল আদিত ভিজোৱা তুলা বা কাপোৰৰ টুকুৰা।

तेल। इत्र आदिमें तर की हुई रूई या कपड़े का टुकड़ा ।

फाहिशा— (वि) নটী, বেশ্যা। চৰিত্ৰহীনা।

छिनाल (स्त्री)

फिकर, फिक्र—[सं स्त्री] চিন্তা, ভাবনা, উপায়।

चिन्ता । सोच । ध्यान । उपाय ।

फिटकार-(सं स्त्री) ধিক্কাৰ।

धिक्कार।

फिटन—[स स्त्री] বাগী গাড়ী।

एक प्रकार की बड़ी और खुली घोड़ागाड़ी ।

फिरंगी—[वि]বিদেশী, ইউৰোপীয়।

फिरङ्ग देशका।

(सं स्त्री) বিলাতী তৰোৱাল।

बिलायती तलवार ।

[सं पुं] ফৰাচি জাতি। ইউৰোপ আদিৰ বগা মানুহ।

फ्रांसीसी । यूरोप या अमेरिकाका गोरा निवासी ।

फिरंट—(वि) বিৰোধী। অসন্তুষ্ট।

विरोधी । असन्तुष्ट।

फिर—[वि] পুনৰ, পিছত, তেতিয়া, ইয়াৰ উপৰিও।
दोबारा। पुनः। बादमें। उस दशामें, तब। इसके अतिरिक्त।

फिरका— (सं पुं) জাতি, দল; সম্প্ৰদায়।
जाति। दल। सम्प्रदाय।

फिरना-(क्रि अ) ফিৰি অহা, ঘূৰা, ভাঁজ লগোৱা। কথা দি কথা নৰখা।
वापस होना। घूमना। चलना। मरोड़ा या बटा जाना। मुड़ना। मुकरना। [क्रि स—फिराना]

फिराक-(सं पुं) বিয়োগ, চিন্তা, অনুসন্ধান।
बियोग। चिन्ता। खोज।

फिलहाल— (क्रि वि) সম্প্ৰতি, সদ্যহতে।
वर्तमान समय में।

फिसड्डी-[वि] আটাইতকৈ পিছ পৰি থকা।
सबसे पिछड़ा हुआ।

फिसलना-(क्रि अ) পিছল খোৱা, লোভত প্ৰবৃত্ত হোৱা।
गीली चिकनाहट के कारण पैर आदि रखनेपर अपने स्थान से आगे बढ़ या पीछे हट जाना। लोभ में प्रवृत्त होना।

फिहरिस्त-[सं स्त्री] তালিকা।
सूची।

फी—(अव्य) প্ৰত্যেক, হৰেক।
प्रत्येक। हरएक।

फीका—(वि) সেৰেকা, কান্তিহীন, ম্লান।
स्वाद-रस आदिके विचारसे हीन या निकृष्ट। रंग, कान्ति, शोभा आदि के विचार से हीन या तुच्छ।

फीता-(सं पुं) ফিতা।
सूत या कपड़े से बनी हुई चपटी या लम्बी धज्जी।

फीरोजा-(सं पुं) পান্না, মৰকত
हरापन लिये नीले रंगका एक रत्न। [वि—फीरोजी]

फील-[सं पुं] হাতী।
हाथी।

फीलवान-[सं पुं] মাউত।
महावत।

फुँकना, फुकना- (क्रि अ) ভস্ম হোৱা, নষ্ট হোৱা।

फूँका या जलाया जाना। नष्ट या बरबाद होना।

(सं पुं) শৰীৰৰ মূত্ৰাধাৰ।
शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है।

फुंसी—(सं स्त्री) ফেঁাহা, খহু।
छोटा फोड़ा

फुंकनी— [सं स्त्री] জুই ফুৰাবৰ নলী।
फूँककर आग सुलगाने की नली।

फुट—(वि) অকলশৰীয়া, পৃথক, বেলেগ।
जोड़े या युग्ममेंसे एक। अकेला। अलग।

(सं पुं) ফুট, (জোখ) बारह इंचकी एक नाप।

फुटकर, फुटकल—(वि) বিষম, অকলশৰীয়া, পৃথক, অলপ-অচৰপ, খুচুৰা।
विषम। अकेला। अलग। मिला जुला। थोड़ा थोड़ा। खुदरा।

फुटकी-(सं स्त्री) ফুট-ফুটিয়া দাগ বা ফোঁহা।
किसी चीजपर पड़ा हुआ कोई छोटा दाग या दाना।

फुट-मत—[सं पुं] মতভেদ, মতানৈক্য।
मतभेद। फूट।

फुदकना—(क्रि अ) দেও দি যোৱা, জপিয়াই জপিয়াই যোৱা।
चिड़ियों की तरह रह रहकर उछलते हुए चलना।

फुनगी—(सं स्त्री) গছৰ আগ।
पौधे की शाखाओं का ऊपरी भाग।

फुफकारना—(क्रि अ) সাপে ফোঁচ ফোঁচ কৰা।
साँप का फुत्कार करना।

फुफेरा—[वि] পেহাৰ লগত সম্বন্ধিত।
फूफा सम्बन्ध से सम्बद्ध।

फुर—[वि] সত্য।
सत्य।

[अव्य] প্ৰকৃততে, বস্তুতঃ।
सचमुच। वास्तवमें।

फुरती, फुर्ती—(सं स्त्री) ক্ষিপ্ৰতা, শীঘ্ৰতা, খৰ-খৰ।
चटपट काम करनेकी शक्ति या भाव। शीघ्रता।

फुरतीला—(वि) ক্ষিপ্ৰভাবে কামকৰোতা, খৰ-খৰকৈ কাম কৰোতা।
हर काम फुरतीसे करनेवाला।

फुरसत—[सं स्त्री] অৱসৰ, সকাহ, সুবিধা।
अवकाश। छुट्टी। रोगमे होने वाली कमी।

फुरहरी—[सं स्त्री] চৰাইয়ে পাখি কৰলা। ৰোমাঞ্চ।
चिड़ियों का पर फड़ फड़ाना। शरीरमें होनेवाला रोमांच।

फुरेरी—[सं स्त्री] ঔষধ বা তেল সিক্ত তুলাৰে মেৰুৱা খৰিকা, গাৰ শিহৰণ।
अतर, तेल, दवा आदि में डुबाई हुई वह सीक जिसके सिरे पर रूई लिपटी हुई हो। रोमांचके साथ होनेवाली कँप कँपी।

फुलका—(सं पुं) পাতল ৰুটী, পাতল ৰুটী।
चपाती।

फुलझरी—(सं स्त्री) ফুলজাৰি, লগনীয়া কথা।
एक प्रकार की छोटी-लम्बी आतशबाजी। झगड़ा लगाने वाली बात।

फुलवाई, फुलवारी—(सं स्त्री) ফুলনি, ফুলৰ বাগান, ল'ৰা-ছোৱালীবে সৈতে পৰিয়াল বৰ্গ।
पुष्प वाटिका। बगीचा। बाल-बच्चे और परिवार के लोग।

फुलहारा—[सं पुं] মালী।
माली।

फुलाना—(क्रि स) ফুলোৱা।
फूलने में प्रवृत्त करना।
मुँह फुलाना—ওফোন্দ পতা, ঠেহ লগা।
रोष प्रकट करनेवाली आकृति बनाना।

फुलावट—(सं स्त्री) ওফোন্দা অৱস্থা, ক্ৰিয়া বা ভাব।
फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फुलिंग—[सं पुं] ফিৰিঙতি জুইৰ কণিকা।
स्फुलिंग। आगका छोटा कण।

फुलेल—(सं पुं) সুগন্ধি তেল, গোন্ধ তেল।

फूलोंसे सुवासित किया हुआ तैल ।

फुलौरी—[सं स्त्री] দাইল বটি বা বেচনৰ সৈতে ভজা বৰি ।
पीसीं हुई दाल की पकौड़ी ।

फुल्ल—[वि] বিকশিত, প্ৰফুল্লিত ।
विकसित । प्रसन्न ।

फुसफुसा—(वि) ঠুনুকা ।
जल्दी टूटने या चूरचूर हो जाने वाला ।

फुसफुसाना—(क्रि स) ফুচ-ফুচাই কোৱা, কাণে কাণে কোৱা ।
बहुत ही धीमे स्वर से कान में कुछ कहना ।

फुसलाना—(क्रि स) ফুচুলোৱা ।
बहकाना ।

फुहार, फूही—(सं स्त्री) পানীৰ সৰু সৰু কণিকা, কিনকিনিয়া বৰষুণ ।
जलकी बहुत छोटी बूँदे या छींटे। हलकी वर्षा, झीसी ।

फुहारा—(सं पु)পানীৰ ফোৱাৰা ।
फव्वारा ।

फूँकना—(क्रि स) ফু দিয়া, শঙ্খ বজোৱা, ধন নাশ কৰা, জ্বলোৱা ।
मुँह बहुत थोड़ा खुला रखकर जोरसे हवा छोड़ना । शंख फूँक कर बजाना । जलाना । धन उड़ाना ।

फूट—[सं स्त्री] কাজিয়া মতভেদ, ছিৰাল বা বাঙী ।
फूटनेकी क्रिया या भाव । विरोध या वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद । एक प्रकार की बड़ी ककड़ी ।

फूटना—(क्रि अ) ভঙা, কুটি ওলোৱা, ব্যক্ত হোৱা ।
कडी या ठोस वस्तुका आघातसे टूटना । अंकुर शाखा आदि निकलना । एक पक्ष छोड़कर दूसरे पक्ष में हो जाना । व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होना ।

फूत्कार—(सं पु) মুখেৰে ফুঁ দি কৰা শব্দ ।
मुँहसे फू फू करते हुए हवा छोड़ने का शब्द ।

फूफा—(सं पु) পেহা ।
फूफी या बूआ का पति ।

फूफी—(सं स्त्री) পেহী ।
पिता की बहन । बुआ ।

फूल-दान—[सं पुं] ফুলদানী। फूलोंके गुच्छे रखनेका काँच, धातु मिट्टी आदि का लम्बा बरतन।

फूलना—(क्रि स) প্রস্ফুটিত হোৱা, ফুলি উঠা, শকত হোৱা, অত্যধিক প্রসন্ন হোৱা, অহঙ্কাৰ কৰা।
पुष्पित होना। खिलना। मोटा या स्थूल होना। कोई अंग सूजना। बहुत प्रसन्न होना। घमण्ड करना।

फूली—(सं स्त्री) চকুত ফুল পৰা ৰোগ।
एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर कुछ उभरा हुआ सफेद दाग पर जाता है।

फूस—(सं पुं) ঘাঁহ-বন, খেৰ। सूखा तृण। खर।

फूहड़—(वि) অশোভনীয়, বেযা, অশ্লীল, লেতেৰা। बे-शऊर। भद्दा। अश्लील। गंदा।

फेंकना—(क्रि स) দলিয়াই দিয়া, অৱজ্ঞাৰে ত্যাগ কৰা, অপব্যয় কৰা।
झोंके से दूर हटाना या डालना। तिरस्कारपूर्वक छोड़ना। व्यर्थ धन व्यय करना।

फेंट—[सं स्त्री] টঙালি, কঁকালৰ বেৰ, কেঁকুৰি।
कमर का घेरा या मंडल। धोती का वह भाग जो कमरपर लपेटा जाता है। कमरबन्द। घुमाव।

फेंटना—[क्रि स] ঘঁাটি দিয়া, ভালদৰে মিহলোৱা।
द्रव पदार्थ में कुछ डालकर अच्छी तरह मिलाने के लिये घुमा घुमा कर हिलाना।

फेंटा—(सं पुं) টঙালি, পাগুৰি। फेंट। छोटी पगड़ी।

फेकरना—[क्रि अ] জোৰেৰে চিঞৰা। কন্দা।
चिल्लाकर जोर से रोना।

फेन, फेना—[सं पुं] ফেন। झाग।

फेनिल—[वि] ফেনেৰে পৰিপূৰ্ণ। फेन या फाग से युक्त या भरा हुआ।

फेफड़ा—(सं पुं) হাঁও-ফাঁও। फुस्फुस।

फेर—[सं पुं] घुवण, पाक, पवि-वर्त्तन, जञ्जाल, भ्रम, युक्ति,

বাটি। কৌশল, ধূৰ্ত্তালি।
फिरने या फेरनेका भाव। चक्कर। परिवर्तन। झंझट। भ्रम। चालबाजी। युक्ति। अदला-बदला। घाटा। फरक। ओर
(अव्य) পুনৰ, আকৌ এবাৰ।
पुनः। एक बार और।

फेरना—[क्रि स] ঘূৰোৱা, ফিৰাই দিয়া, সলনি কৰা।
किसी ओर घुमाना। वापस करना। इधर उधर चलाना। तह चढ़ाना।

फेर-फार—(सं पुं) পৰিবৰ্ত্তন, হেৰ-ফেৰ, ধূৰ্ত্তালি।
परिवर्तन। पेच। धूर्तता।

फेरा—(सं पुं) প্ৰদক্ষিণ, পৰিক্ৰমণ, বাৰে-বাৰে অহা যোৱা, পাক, পৰিধি।
चारों ओर घूमने की क्रिया। परिक्रमण। लपेट। बार बार आना-जाना। घेरा, मण्डल।

फेरी—(सं स्त्री) প্ৰদক্ষিণ, পৰি-ক্ৰমণ।
फेरा। प्रदक्षिणा।

फेरीवाला—(सं पुं) ফেৰিৱালা—বাটে-বাটে ঘূৰি ফুৰি বস্তু বেচোতা।
घूम घूम कर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेरू—(सं पुं) ফেউৰা, শিয়াল।
गीदड़।

फेहरिस्त—[सं स्त्री] তালিকা।
सूची।

फैलना—[क्रि अ] বিয়পি পৰা, বৃদ্ধি হোৱা, সিচঁৰিত হোৱা।
कुछ दूर तक आगे बढ़कर और अधिक स्थान घेरना। मोटा होना। वृद्धि होना। बिखरना। मचलना
(क्रि स—फैलाना)

फैलाव—[सं पुं] বিস্তাৰ।
विस्तार।

फैशन—(सं पुं) ধৰণ, গঠন, গঢ়, আকৃতি, আহি, ভাও। ফেশ্যন।
ढंग। तर्ज। रीति। प्रथा। बनाव-सिंगार, सजावट आदि का नया अच्छा या शिष्ट सम्मत ढंग।

फैसला—[सं पुं] নিৰ্ণয়, মীমাংসা।
निर्णय। निपटारा।

फोकट—[वि] এনেয়ে পোৱা।
मूल्यहीन वस्तु।
निःसार।

फोकला–(सं पुं) বাকলি।
छिलका।

फोका–(वि) অসাৰ, সাৰহীন।
थोथा। तत्वहीन।

फोटा–(सं पुं) ফোট।
टीका। बिंदी।

फोड़ना, फोरना– (क्रि स) ভঙা, ৰহস্য উদ্‌ঘাটন কৰা।
तोड़ना। भेदभाव उत्पन्न करना।
(रहस्य) प्रकट करना।

फोड़ा–[सं पुं] ফোঁহা, ঘা।
व्रण।

फोता–(सं पुं) মাটিৰ কৰ বা খাজনা, টকাৰ মোনা, অণ্ড-কোষ।
भूमि-कर। रुपये रखने की थैली।
अण्डकोष।

फौज–(सं स्त्री) সৈন্যদল।
सेना। झुण्ड।

फौजदार–(सं पुं) সেনাপতি।
सेनापति।

फौजदारी–(सं स्त्री) ফৌজদাৰী। সেনাপতিত্ব।
सेनापतित्व। ऐसा लडाई झगडा जिसमें मार पीट भी हो और लोगो को चोट भी आवे।

फौजी–(वि) সৈনিক।
सैनिक।

ब

ब— বৰ্ণমালাৰ ত্ৰয়োবিংশতি আখৰ।
वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन।

बंक, बंका—(वि) বেঁকা, ভাঁজ লগা, দুৰ্গম, পৰাক্ৰমী।
टेढ़ा। तिरछा। दुर्गम। पराक्रमी।

बंकनाल—(सं पु) সোণাৰীৰ জুই ফুওৱা বেঁকা নলী।
वह टेढ़ी नली जिससे सुनार सोने के गहने आदि जोडते हैं।

बंगला—(सं पुं) বঙলা, চুটুপীয়া চাৰিখন চালৰ ঘৰ।

एक मंजिला सजा हुआ मकान ।
(सं स्त्री) বঙ্গদেশৰ ভাষা ।
बंगाल की भाषा ।

बंगाल—[सं पुं] বঙ্গদেশ ।
बंग देश ।

बंगाली—(सं पुं) বঙ্গালী, বঙ্গদেশ নিবাসী ।
बंग देश का निवासी ।

बंचक—(सं पुं) ঠগ, প্ৰতাৰক, যি ছল কৰে ।
ठग । घोखेबाज ।

बंचना—[सं स्त्री] ছল, ফাকি । ঠগী ।
(क्रि स) ফাকি দিয়া, পঢ়া ।
ठगना । पढना ।

बँचवाना, बँचाना—(क्रि स) পঢ়োৱা, পঢ়ুওৱা ।
पढ़वाना । पढाना ।

बंचित—[वि] বঞ্চিত, যি ঠগ খাইছে, বেলেগ কৰা, হীন, ৰহিত ।
जो ठगा गया हो । अलग किया हुआ । हीन, रहित ।

बंजर—[वि] ছন পৰি থকা মাটি, পতিত মাটি ।
वह जमीन जिसमें कुछ उपजता न हो । परती जमीन ।

बंजारा—[सं पुं] অযৰী, যাযাবৰ ।
वह जो बैलों, घोड़ों आदिपर माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर बेचता हो । यायावर ।

बंझा—(वि) বজা, বন্ধ্যা, উৎপাদন শক্তিহীন ।
उत्पादन शक्तिसे रहित । बाँझ ।

बँटना—[क्रि अ] বেলেগ বেলেগ অংশ কৰা, ভাগ কৰা ।
कुछ हिस्सोंमें अलग अलग होना ।

बँटवारा—[सं पुं] বিভাজন—ভাগ কৰা । विभाजन ।

बंटा—[सं पुं] কাঠৰ সৰু টেমা ।
छोटा डिब्बा । (सं स्त्री—बटी)

बंटाई—(सं स्त्री) ভগোৱা কাৰ্য্য অথবা ভাব ।
बाँटने की क्रिया या भाव ।

बंटाधार—(वि) নষ্ট, ধ্বংশ ।
विनष्ट । बरबाद ।

बँटाना—(क्रि स) ভাগ কৰা, ভগাই দিয়া ।
विभाजन करना ।

बटैया—[सं पुं] ভাগ কৰোঁতা।
बाँटनेवाला।

बंडल—(सं पुं) টোপোলা।
पुलिन्दा।

बंडा—(सं पुं) এবিধ ডাঙৰ কচু
अरुई की जाति का एक कन्द।

बंडेरी—(सं स्त्री) চালৰ সকলো-তকৈ ওখত লগোৱা শকত কাঠ ডাল—মূধৰ মাৰলী।
छाजन में सबसे ऊँची रहनेवाला मोटी लकड़ी।

बंद—[सं पुं] বান্ধ, যিহেৰে বন্ধা যায়।
वह चीज जिससे कुछ बाँधा जाय। बाँध। कैद।
[वि] চাৰিওপিনৰ পৰা বন্ধা, যি মুকলি নহয়, স্থগিত, বন্দী।
चारों ओर से रुका हुआ। जो खुला न हो। स्थगित। जो किसी तरह की कैद या बन्धन में हो।

बंदगी—[सं स्त्री] ঈশ্বৰৰ প্ৰাৰ্থনা। নমস্কাৰ।
ईश्वर की वन्दना। नमस्ते।

बंदन—(सं पुं) নমস্কাৰ, সিন্দুৰ।
नमस्कार। सेंदुर। रोली।

बंदनवार—(सं पुं) তোৰণ।
तोरण।

बंदना—[सं स्त्री] স্তুতি, অভিবাদন।
स्तुति। अभिवादन।
(क्रि अ) প্ৰণাম কৰা।
प्रणाम करना।

बंदर—[सं पुं] বান্দৰ। জাহাজৰ বন্দৰ।
कपि। मर्कट। बन्दरगाह।

बंदरगाह—[सं पुं] সমুদ্ৰ অথবা ডাঙৰ নদীৰ পাৰত জাহাজ খকা ঠাই, বন্দৰ।
समुद्र के किनारे जहाज ठहरने का स्थान।

बंदर-घुड़की, बंदर भबकी—
(सं स्त्री) কেৱল দেখুৱাবলৈ দিয়া ধমকি।
ऐसी धमकी जो दिखाने भर की हो।

बंदर-बाँट—(सं स्त्री) বাদী-প্ৰতিবাদীক একো নিদি ভগাই দিয়া জনেই সকলো অধিকাৰ কৰা, "মেকুৰীৰ পিঠা ভগোৱা" অৱস্থা।
ऐसा बँटवारा जिसमें वादी प्रति-वादी किसी को कुछ न मिले,

सब कुछ बाँटनेवाला अपने अधिकार में कर ले।

बंदिश—(सं स्त्री)বন্ধ কৰা কাৰ্য্য, আগেয়ে কৰি থোৱা ব্যৱস্থা, গীত কবিতা আদিৰ শব্দ বা ছন্দ যোজনা।

बंधने या बाँधने की क्रिया या भाव। पहले से किया हुआ प्रबंध, गीत, कविता आदि की शब्द योजना।

बंदी—(सं पुं) ভাট, চাৰণ, বন্দী। भाट। चारण। कैदी।

(स स्त्री) বন্ধন, জেল কাৰাগাৰ, বন্ধ, স্থিৰ নাইবা নিশ্চিত হোৱা কাৰ্য্য বা ভাব।

बन्धन। कारागार। बंदर स्थित, या निश्चित होने की क्रिया या भाव।

बंदीखाना, बंदीगृह—(सं पुं) কাৰাগাৰ, বন্দীশাল। कारागार।

बन्दोबस्त—[सं पुं] বন্দোবস্ত, ব্যবস্থা, মাটি খেতি আদি জুখি কৰ নিৰ্দ্ধাৰণ কৰা কাৰ্য্য।

प्रबन्ध। खेत आदि नापकर उनका कर निर्द्धारित करने का काम।

बंध—(सं पुं) বন্ধন, বন্দী কৰা, গাঁঠি।'

बन्धन। गाँठ। कैद।

बधक—[सं पुं] বান্ধোতা, বন্ধক বা ৰেহণ দিয়া।

बाँधनेवाला। रेहन।

बंधकी—(वि) যাৰ ওচৰত ৰেহণ অথবা বন্ধক ৰখা হয়।

वह जिसके पास कोई चीज बन्धक या रेहन रखी गयी हो।

बँधना—(क्रि अ) বন্ধা হোৱা, বন্দী হোৱা, শুধৰোৱা, ক্ৰম নিৰ্দ্ধাৰিত হোৱা।

बाँधा जाना। कैद होना। दुरुस्त होना। क्रम निर्द्धारित होना। (क्रि स—बाँधना)

[सं पुं] কোনো বস্তু বন্ধা সজুলি।

वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय।

बंधुआ—[सं पुं] বন্দী। कैदी। बंदी।

(वि) বান্ধ খোৱা। बंधा हुआ।

बंधुक—(सं पुं) ফুল, বিশেষ।
गुलदुपहरिया का फूल।

बंध्या—[सं स्त्री] বন্ধ্যা। সন্তানহীনা।
(वह स्त्री या मादा] जिसे संतान न होती हो।

बं-पुलिस—[सं पुं] ৰাজহুৱা পায়খানা।
सार्वजनिक पाखाना।

बंबा—(सं पुं) বোমা, পানীকলৰ আগ ভাগ।
बम। पानी के नल का अगला भाग।

बंबू—[सं पुं] দীঘল, শকত নল।
लम्बी मोटी नली।

बंस—[सं पुं] বাঁহ, বাঁহী, বংশ।
वंश। बाँस। बाँसुरी।

बंसलोचन—(सं पुं) ঔষধ রূপে ব্যৱহাৰোপযোগী বাঁহৰ ভিতৰত থকা থপথপীয়া বগা অংশ।
बाँस के सफेद सार भाग जो औषध के रूपमें काममें आता है।

बँसवाड़ी—(सं स्त्री) বাঁহবাৰী।
एक जगह उगे हुए बाँसों का झुरमुट या समूह।

बँसी—(सं स्त्री) বাঁহী, বৰশী।
बाँसुरी। मछली फँसाने का कँटिया।

बहँगी-(सं स्त्री) বিৰিয়া, বাঁওকা।
काँवर।

बक—[सं पुं] বগলী।
बगुला।
(सं स्त्री) অনর্থক কথা, বাক বিতাণ্ডা।
बकवाद।

बकतर, बख्तर—(सं पुं) যুদ্ধৰ সময়ত পিন্ধা কবচ বিশেষ।
युद्ध के समय पहनने का एक प्रकार का कवच।

बकना—(क्रि स) বকা, প্ৰলাপ বকা।
प्रलाप बकना।
(सं पुं) বেছিকৈ বলকা।
ज्यादा बकवाद करनेवाला।

बकबक—(सं स्त्री) অনর্থক তর্ক কৰা।
बकवाद।

बकरना—[क्रि अ] ভোৰভোৰোৱা।
बड़बड़ाना।

बकरा—(सं पुं) পঠা ছাগলী।
नर-छाग। (सं स्त्री—बकरी)

बकला, बकल—[सं पुं] গছ বা ফলৰ বাকলি।
पेड़की छाल। फल आदि के ऊपर का छिलका।

बकवाद (स)—(सं स्त्री) অনর্থক কথা।
व्यर्थ की बातें। बकबक।

बकसना बख्शना, बगसना—(क्रि स) দিয়া, ক্ষমা কৰা।
प्रदान करना। क्षमा करना।

बकसीस, बख्शिश—[सं स्त्री] দান, পুৰস্কাৰ।
दान। पुरस्कार।

बकाया—(वि) বাকী।
अवशिष्ट।
[सं पुं] কাৰোবাৰ ওচৰত বাকী থকা ধন।
वह धन जो किसी के जिम्मे बाकी रह गया हो।

बकारी—(सं स्त्री) মুখৰ পৰা ওলোৱা শব্দ।
मुँहसे निकलनेवाला शब्द।

बकुचना—[क्रि स] কোঁচ খোৱা।
सिकुड़ना।

बकुचा, बगुचा—[सं पुं] সৰু টোপোলা বা বাণ্ডিল।
छोटी पोटली या पुलिंदा। (सं स्त्री—बकुची)।

बकुला, बगला, बगुला—[सं पुं] বগলী।
वक।

बकेन—[सं स्त्री] পোৱালি দিয়াৰ এবছৰ পিচতো যি গাই বা ম'হে গাখীৰ দিয়ে, বকনা-গাই।
वह गाय या भैंस जो बच्चा देने के सालभर बाद भी दूध देती हो।

बकैंया—(क्रि वि) কেচুৱা ল'ৰা-ছোৱালীয়ে আঠু কাঢ়ি ফুৰা।
बच्चों का घुटनों के बल चलना।

बकोटना—[क्रि स] নখেৰে আঁচোৰা।
नाखूनों से नोचना।

बखत—(सं पुं) সময়, ভাগ্য।
समय। भाग्य।

बखरा—(सं पुं) অংশ, ভাগ।
भाग। हिस्सा।

बखान—[सं पुं] বৰ্ণনা, প্ৰশংসা।
वर्णन। प्रशंसा।

बखानना—(क्रि स) বৰ্ণনা কৰা, প্ৰশংসা কৰা।
वर्णन करना। प्रशंसा करना।

बखार—(सं पुं) ভঁৰাল ।
वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं ।

बखिया—(सं पुं) মিহি চিলাই ।
एक प्रकारकी महीन सिलाई ।

बखीर—[सं स्त्री] পোলাও, পায়স ।
दूध और चीनीमें पकाया हुआ चावल ।

बखूबी—(क्रि वि) খুব ভালকৈ ।
अच्छी तरह ।

बखेड़ा—(सं पुं) জঞ্জাল, কাজিয়া, কঠিনতা ।
झंझट । झगड़ा । कठिनता ।

बगदना—(क्रि अ) নষ্ট কৰা, ভ্ৰমত পৰা ।
नष्ट या बरबाद होना । भ्रममें पड़ना । (क्रि स—बगदाना)

बगरना—[क्रि अ] চাৰিওপিনে সিঁচৰতি হোৱা ।
चारों ओर फैलना । छितराना । बिखरना । क्रि स—बगराना

बगल—[सं स्त्री] কাষলতি, সোঁপিনে বা বাঁওপিনে ।
कांख । दाहिने बायें या इधर उधर का भाग ।

बगला-भगत—(सं स्त्री) ভণ্ড-সন্ন্যাসী ।
साधूके वेशमें रहनेवाला कपटी ।

बगली—[सं स्त्री] কাষৰ বা ওচৰৰ ।
बगल या पासका ।

बगाना—(क्रि स) ফুৰোৱা ।
टहलाना । घुमाना ।

बगारना—[क्रि स] বিস্তাৰিত কৰা । প্ৰসাৰিত কৰা ।
फैलाना । बिखेरना ।

बगावत—(सं स्त्री) বিদ্ৰোহ ।
विद्रोह ।

बगिया—(सं स्त्री) সৰু বাগিছা ।
छोटा बाग ।

बगीचा—[सं पुं] বাগিছা ।
छोटा बाग ।

बगूला— (सं पुं) ঘূৰ্ণ-বায়ু, বামাবলী ।
बवंडर ।

बगैर—(अव्य) বিনা, বিহীন, অবিহনে ।
बिना । विहीन ।

बग्घी—[सं स्त्री] বাগী ।
एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी ।

बघछाला, बाघम्बर—(सं पुं) বাঘৰ ছাল ।
बाघ की छाल ।

बघनहाँ, बघना—(सं पुं) বাঘ নখৰ নিচিনা এবিধ অস্ত্ৰ ।
बाघ के नख जैसा एक हथियार ।

बघारना—[क्रि स] নিজৰ যোগ্যতা প্ৰতিপন্ন কৰিবলৈ আৱশ্যক-তকৈ বেছি কোৱা, তেলনি মৰা ।
छौंकना । तड़का लगाना । योग्यता दिखाके लिये जरूरत से अधिक बोलना ।

बचकाना—(वि) কেচুৱাৰ দৰে, ল'ৰালি ।
बच्चों के योग्य । बच्चों का सा ।

बचत—(सं स्त्री) ৰক্ষাপৰাৰ ভাৱ, সঞ্চয়, সঞ্চিত হোৱা অংশ, লাভ ।
बचने का भाव । बचा हुआ अंश । लाभ ।

बचना—(क्रि अ) কুসঙ্গতি, দোষ, বিপদ, আদিৰ পৰা ৰক্ষা, দূৰতে থকা, কামত আহিও কিছু বাকী থকা ।
संगति, दोष, विपत्ति आदि से रहित, दूर या अलग रहना । काममें आनेपर भी कुछ बाकी रहना । (क्रि स-बचाना)

बचपन—[सं पुं] বাল্যকাল ।
बाल्यावस्था ।

बचाव—(सं पुं) ৰক্ষা ।
रक्षा ।

बच्चा—[सं पुं] শিশু ।
शिशु । (सं स्त्री-बच्ची)

बच्छल; बछल—(वि) বৎসল-মৰমৰ ভাৱ ।
वत्सल । सन्तान या छोटोंके प्रति बहुत अधिक ममता रखनेवाला ।

बछड़ा बछरू—[सं पुं] দামুৰি ।
गायका बच्चा । स स्त्री—बछिया

बछेड़ा, बछेरू—[सं पुं] গৰু, দামুৰি, ঘোঁৰাৰ পোৱালি ।
गायाका बच्चा । घोड़ेका बच्चा ।

बजट— [सं पुं] বাজেট, বছেৰেকীয়া আয়-ব্যয়ৰ আঁচনি ।
वार्षिक आय व्ययका अनुमानित लेखा-जोखा ।

बजना—(क्रि अ) বজা, শব্দ হোৱা অস্ত্ৰ চালনা ।

आघात आदि के कारण शब्द होना। बाजे आदिसे शब्द उत्पन्न होना। शस्त्रों का चलना। (क्रि स-बजाना)

बजरंग—(वि) বজ্ৰৰ সমান দৃঢ় অঙ্গৰ।
वज्रके समान दृढ़ अङ्गोंवाला।

बजरंगबली—[सं पुं] হনুমান।
हनुमान।

बजरा—(सं पुं) ডাঙৰ নাৱ।
एक प्रकार की बड़ी नाव।

बजवैया—(वि) বজাওঁতা, বাদক।
बजानेवाला।

बजाज—(सं पुं) কাপোৰ বিক্ৰেতা, বেচোঁতা।
कपड़ा बेचनेवाला।

बझना—(क्रि अ) বন্ধা, পাকত পেলোৱা, কাজিয়া কৰা, জেদ কৰা।
बन्धना। फँसना। झगड़ना। हठ करना।

बट—[सं पुं] বট গছ, বাট, জৰীৰ গাঁঠি।
बरगदका वृक्ष। गोला। मार्ग। रस्सी की ऐंठन।

बटखरा—[सं पुं] দগা।
बाट।

बटन—(सं पुं) বুটাম।
बुताम।
(सं स्त्री) বটা কাৰ্য্য।
बटने की क्रिया या भाव।

बटना—[क्रि स] মছলা পিহা, ৰচী বা জৰী বটা কাম।
तारों, रेशों आदिको एकमें मिला कर इस प्रकार मरोड़ना कि वे रस्सीके रूपमें एक हो जाँय। पीसना-मसाला आदि।

बटपरा, बटपार (मार)-[सं पुं] ডকাইত।
रास्ते में लोगों को लूटनेवाला। डाकू।

बटली, बटलोई—(सं स्त्री) বটলহি, দেগ্‌চি।
भात-दाल आदि पकानेकी डेगची।

बटा—(सं पुं) ঢোপগুটি, বল, খেল খেলাৰ বস্তু বিশেষ, যাত্ৰী, গণিতৰ ভাগ পৰ্য্যায়বাসী চিন।
गोला। गेंद। चकई नामका खिलोना। ढेला। यात्री। गणितमें भिन्न का स्वरूप सूचक बड़ी पाई।

बटाना—(क्रि अ) বন্ধহোৱা ।
बन्द होना ।

बटी—[सं स्त्री] সৰু বৰি ।
छोटी गोली ।

बटुआ, बटुवा—[सं पुं] বটুৱা, কেইবা খলপ থকা জোলোঙা ।
कई खानोवाली एक प्रकार की छोटी थैली । देगची ।

बटेर—(सं पुं) পক্ষী বিশেষ ।
तीतर की तरह की एक छोटी चिड़िया ।

बटोरन—(क्रि स) বুটলি জমা কৰা ।
समेटना । इकट्ठा या जमा करना ।

बटोही—[सं पुं] পথিক । যাত্রী ।
रास्ता चलने वाला । यात्री ।

बट्टा—(सं पुं) কোনো বিশেষ কাৰণত কমি যোৱা মূল্যমান দালালি, লোকচান, কলঙ্ক, সৰু ঘূৰণীয়া টেমা, পটা গুটি ।
किसी विशेष कारण से मूल्य में होने वाली कमी । दलाली । घाटा । कलंक । कूटने पीसने आदि का पत्थर । छोटा गोल डिब्बा ।

बट्टी—[सं स्त्री] পটা গুটি, ঘূৰণীয়া সৰু টুকুৰা ।
किसी चीज का गोल छोटा टुकड़ा । टिकिया ।

बड़—(सं पुं) বট গছ ।
बरगद का पेड़ ।
(वि) ডাঙৰ ।
बड़ा ।

बड़प्पन—[सं पु] শ্ৰেষ্ঠত্ব, মহত্ব ।
बड़ा होने का भाव । महत्व ।

बड़बड़ाना—[क्रि अ] ভোৰভোৰোৱা ।
बकवाद करना । धीरे धीरे अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना ।

बड़बोल (ा)—(वि) ওফাইদাংমৰা কথা ।
बहुत बढाकर बातें करनेवाला ।

बड़भाग [ी]—(वि) ভাগ্যৱান ।
भाग्यवान ।

बड़वाग्नि, बड़वानल—(सं पुं) কল্পিত অগ্নি, সমুদ্ৰত জলি থকা জুই, বাড়বানল ।
वह आग जो समुद्र में जलती हुई मानी जाती है ।

बढ़हार—(सं पुं) বিয়াৰ পিচত বৰ নাত্ৰীক খুউৱা ভোজ (উত্তৰ ভাৰতৰ ৰীতি)।
विवाह के बाद होने वाला बरा-तियों का भोज।

बड़ा—[वि] ডাঙৰ-দীঘল, বৃহৎ, বেচি বয়সৰ, শ্ৰেষ্ঠ, বেছি।
लम्बा-चौड़ा और विशाल। अधिक अवस्था या उमर का। श्रेष्ठ। महत्व का। बढ़कर। अधिक। (वि·स्त्री—बड़ी)
(सं पुं) বড়, বৰভজা।
उर्द की पीठी की तली हुई गोल टिकिया।

बड़ाई—[सं स्त्री] শ্ৰেষ্ঠ, উত্তম, মহিমা।
बड़प्पन। श्रेष्ठता। महिमा। प्रशंसा।

बड़ी, बरी—(सं स्त्री) বড়, বৰভজা।
दाल, आलू आदि पीसकर सुखाई हुई छोटी टिकिया।

बढ़, बढ़ती, बढ़ोतरी—(सं स्त्री) জোখ বা গনণাত হোৱা আধিক্য, সঞ্চিত, মূল্যবৃদ্ধি। तौल, गिनती, मान आदि मे होने वाली अधिकता, बचत। मूल्य की वृद्धि।

बढ़ना—(क्रि अ) বঢ়া, বিস্তাৰ, মূল্যবৃদ্ধি, জোখ-মাফ আদিত বেচি হোৱা, নুমোৱা (চাকি)।
विस्तार, मान आदि में पहले से अधिक होना। गिनती या नाप तौल में अधिक होना। मूल्य, अधिकार, सामर्थ्य आदि में वृद्धि होना। दीप के बुझना। (क्रि स—बढ़ना)।

बढ़नी—[सं स्त्री] বাঢ়নী। আগধন।
झाड़ू। पेशगी।

बढ़ाव—(सं पुं) বৃদ্ধিৰ ভাব, বানপানী, মূল্য আদি বৃদ্ধি হোৱা, বেছি হোৱা।
बढ़ने की क्रिया या भाव। बाढ़। मूल्य आदि का बढ़ना, चढ़ना या ऊँचा होना।

बढ़ावा—(सं पु) উত্তেজনা, উদ্‌গনি বা উৎসাহ দিয়া।
प्रोत्साहन। उत्तेजना।

बढ़िया—(वि) উত্তম, ভাল।
उत्तम। अच्छा।

बतंगड़—[सं पुं] তিলকে তাল কৰা, সৰু কথাকে ডাঙৰ কৰা।
किसी साधारण सी बात को दिया हुआ बहुत बड़ा या झगड़े बखेड़े का रूप।

बतकही—[सं स्त्री] কথা-বতৰা, তৰ্ক-বিতৰ্ক, সাজি কোৱা কথা।
वार्त्तालाप। वाद-विवाद। झूठ-मूठ-या मनसे बनाकर कही जाने-वाली बात।

बतक्कड़—(वि) খুবৰেছি, অনৰ্থক কথা কোৱা।
बहुत ज्यादा व्यर्थ की बातें करनेवाला।

बतरस—(सं पुं) কথা কোৱাৰ আনন্দ।
बातचीत का आनन्द।

बतलाना, बताना—(क्रि स) কৈ দিয়া, পৰিচয় দিয়া, দেখুৱা।
परिचित कराना। ज्ञान कराना। दिखाना।

बतक, बत्तख—(सं पुं) ঘিলা হাঁহ।
जल-हंस।

बतास—(सं स्त्री) বতাহ।
हवा।

बतासना—(क्रि स) বতাহ লগোৱা।
हवा करना।

बतिया, भतिया—(सं स्त्री) অপৈনত, কেঁচা ফল।
छोटा, कच्चा, लम्बा फल।

बतियाना—(क्रि स) কথা কোৱা।
बातें करना।

बतौर—(क्रि वि) নিয়মেৰে, সমান, নিচিনা।
तरह पर। रीति से। समान।

बत्तिस, बत्तीस—(वि) বত্ৰিশ।
बतीस।

बत्ती—[सं स्त्री] শলিতা, চাকি, ম'মবাতি।
पलीता। दीपक। मोमबत्ती।

बद—[वि] বেয়া, দুষ্ট, বেয়া প্ৰকৃতিৰ।
बुरा। दुष्ट।
(सं स्त्री) উলটা, প্ৰতিশোধ, পক্ষ, অনিষ্ট।
पलटा। बदला। पक्ष। जोखिम।

बदकिस्मत—[वि] দুৰ্ভগীয়া।
अभागा।

बद्‌चलन—[वि] দুশ্চৰিত্ৰ, অসৎ প্ৰবৃত্তি।
दुश्चरित्र।

बद्‌जात—(वि) নীচ, ধুৰন্ধৰ।
नीच। पाजी।

बद्‌तर—(वि) নিকৃষ্টতৰ।
निकृष्ट-तर।

बद्‌-दुआ—[सं स्त्री] অভিশাপ।
शाप।

बदन—(सं पुं) শৰীৰ।
देह।

बदनसीब—[वि]অভাগা, দুৰ্ভগীয়া।
अभागा।

बदना—(क्रि स) বৰ্ণনা কৰা, মানি লোৱা, বাজি মাৰা।
वर्णन करना। मानलेना। ठह-राना। बाजी या शर्त लगाना।

बदनाम—(वि) কুখ্যাত, বদনাম।
कुख्यात।

बदनामी—[सं स्त्री] কুখ্যাতি, অপবাদ, অপযশ।
कुख्याति। अपवाद।

बद्‌बू—(सं स्त्री) দুৰ্গন্ধ।
दुर्गन्ध।

बद्‌बूदार—(वि) দুৰ্গন্ধপূৰ্ণ।
दुर्गंध युक्त।

बद्‌मस्त—(वि) মতলীয়া, নিচাতে মত্ত।
नशे में चूर।

बद्‌रा—(सं पुं) মেঘ।
बादल।

बद्‌रिया, बद्‌री—[सं स्त्री] মেঘ।
बादल।

बदलना—(क्रि अ) পৰিবৰ্ত্তিত হোৱা। স্থানান্তৰ হোৱা।
परिवर्तित होना। एक की जगह दूसरा हो जाना।
[क्रि स] বদলি কৰা, এঠাইৰ বস্তু আন ঠাইত ৰখা, সলনা-সলনি কৰা।
परिवर्तित करना। एक चीज हटाकर उसकी जगह दूसरी चीज रखना। एक चीज देकर दूसरी लेना।

बद्‌ला—[सं पुं] বিনিময়, প্ৰতি-কাৰ, কৃতকৰ্ম্মৰ ফল, প্ৰতিফল।
विनिमय। पलटा। एवज। प्रति-कार। किये हुए काम का फल।

बद्‌ली—(सं स्त्री) মেঘ, বদলি।
मेघ। तबादला।

बद-हजमी—[स ं स्त्री] অজীৰ্ণ।
अजीर्ण।

बदहवास—[वि] উদ্বিগ্ন, অজ্ঞান, মূৰ্চ্ছিত।
जिसके होश ठिकाने न हों। उद्विग्न।

बदा—[वि] ভাগ্যত লিখা।
भाग्य में लिखा हुआ।

बदी—(स ं स्त्री) কৃষ্ণপক্ষ, বেযা, অন্যায, অপকাৰ।
कृष्ण पक्ष। बुराई।

बदौलत—[क्रि वि] অনুগ্ৰহত।
किसी की कृपा या अनुग्रह के द्वारा।

बद्दू—(स ं पु ं) আৰব দেশৰ জাতি বিশেষ।
अरब में रहनेवाली एक जाति।

बद्ध—[वि] বদ্ধ, নিৰ্দ্ধাৰিত।
बांधा या बँधा हुआ। निर्द्धारित।

बद्ध-परिकर—(वि) দৃঢ় প্ৰতিজ্ঞ, উদ্যত।
उद्यत।

बधाई—[स ं स्त्री] শুভ কামনা, মঙ্গল কাৰ্য্য।
बढ़ती। मंगलाचार। मुबारकबाद। शुभ कामना।

बधावा—(स ं पु ं) শুভকামনা, মাঙ্গলিক কাৰ্য্যত ইষ্ট কুটুম্বলৈ দিয়া উপহাৰ।
बधाई। सगे सम्बधियों के यहाँ मगल अवसरोंपर भेजा जानेवाला उपहार।

बधिक—[स ं पु ं] হত্যাকাৰী, চিকাৰী, ঘাতক।
हत्यारा। जल्लाद। बहेलिया।

बधिया—(स ं पु ं) বন্ধ্যা, খাহী, কণী কাটি নপুংসক কৰা জন্তু।
वह पशु जिसका अंडकोश निकाल दिया गया हो।

बधिर—(स ं पु ं) কলা, কাণে নুশুনা মানুহ।
बहरा।

बधू, बधूटी—(स ं स्त्री) বোৱাৰী, ন বোৱাৰী।
पुत्र की पत्नी। नयी आयी हुई बहू।

बनचारी—[वि]বনচাৰী, বনবাসী।
वन में रहने या घूमने फिरने वाला।

बनना—[क्रि अ] তৈয়াৰ হোৱা, সজা, ভাল অৱস্থা হোৱা, বৰ্ত্তা, মূৰ্খ অথবা হাস্যাস্পদ হোৱা, মিছাকৈয়ে গম্ভীৰ হোৱাৰ ভাৱ আদি কৰা।
तैयार होना। रचा जाना। अच्छी दशामें होना। निभना। मूर्ख या हास्यास्पद सिद्ध होना। अधिक योग्य या गम्भीर होने की झूठी मुद्रा धारण करना।

बन-मानुष—(सं पुं) বন মানুহ।
आकृति आदिमें मनुष्यसे मिलता जुलता जंगली जन्तु।

बनवारी—(सं पुं) শ্ৰীকৃষ্ণ।
श्रीकृष्ण।

बनात—(सं स्त्री) উলৰ কাপোৰ বিশেষ।
एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

बनाना—[क्रि स] তৈয়াৰ কৰা, সজা, কোনো পদ, খিতাপ অথবা অধিকাৰৰ অধিকাৰী কৰা, বুজিব নোৱাৰাকৈ কাকো ব্যঙ্গ অথবা বিদ্ৰূপ কৰা।
तैयार करना। रचना। किसी पद, मर्यादा या अधिकार में अधिकारी करना। किसी को इस प्रकार मूर्ख या उपहासास्पद बनाना कि वह समझ न सके। (प्रे०—बनवाना)

ब-नाम—(अव्य) নামত, বিৰুদ্ধে।
के नाम। के विरुद्ध।

बनावट—(सं स्त्री) কৃত্ৰিমতা, ৰচনা, আড়ম্বৰ।
कृत्रिमता। रचना। आडम्बर।

बनावटी— (वि) অস্বাভাবিক, কৃত্ৰিম, নকল।
नकली।

बनिज—(सं पुं) বণিজ, ব্যৱসায়, কিনা-বেচা সামগ্ৰী।
व्यापार। क्रय विक्रय की वस्तु।

बनिया—(सं पुं) ব্যৱসায়ী, গেলা মালৰ বেপাৰী, জাতি বিশেষ।
व्यापार करनेवाला व्यक्ति। आटा दाल आदि बेचनेवाला। वैश्य।

बनियाइन—[सं स्त्री] গেঞ্জী।
गंजी।

बनिस्बत— (अव्य) তুলনাত, অপেক্ষা।
तुलना में। अपेक्षा।

बनी—(सं स्त्री) बनस्थली, বাগিচা, কইনা, নায়িকা।

वनस्थली। वाटिका। दुलहिन। नायिका।

बनेठी—[सं स्त्री] সূৰত লোহা অথবা ৰূপ আদি খটোৱা লাঠি।
वह डंडा जिसके सिरपर लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला—(वि) বনৰীয়া [জন্তু]।
जंगली (पशु)

बन्ना—(সং পুং) দৰা, বিযা নাম বিশেষ।
दुल्हा। विवाह के अवसर पर गाये जानेवाला एक प्रकार का गीत।

बन्नो—(সং স্ত্ৰী) কইনা, বোৱাৰী।
दुलहिन। वधू।

बपु, बपुख—(সং পুং) শৰীৰ।
शरीर।

बपौती—[সং স্ত্ৰী] বাপতীযা।
बाप से मिली हुई सम्पत्ति।

बफरना—[क्रि अ] অভিমান কৰি কাজিয়াৰ নিমিত্তে জোৰে হুঙ্কাৰ দিয়া, উৎপাত কৰা।
अभिमान में भरकर लड़नेके लिये जोर का शब्द करना। उत्पात या उपद्रव करना।

बफारा—(सं पुं) ঔষধ মিহলি পানীৰে সেক দিয়া।
औषध मिले जलके भापसे शरीर का कोई अंग सेंकना।

बबर, बब्बर—[সং পুং] ডাঙৰ সিংহ।
बड़ा शेर। सिंह।

बबुआ—(সং পূ) 'বাপকণ' লেখীয়া ল'ৰাক মৰমতে মতা নাম।
लड़कों के लिये प्यारका सम्बोधन। (सं स्त्री—बबुई)

बबूल—(सं पुं) বনৰীয়া কাঁইটযুক্ত গছ বিশেষ।
कीकर का पेड़।

बबूला—[সং পুং] অগ্নিপিণ্ড, পানীৰ বুৰবুৰণি।
आगका गोला। पानीका बुलबुला।

बभूत—[সং স্ত্ৰী] ভস্ম, ছাই।
भस्म। राख। विभूति।

बम—[सं पुं] বোমা।
विस्फोटक पदार्थों का गोला।

बमकना—[क्रि अ] অতিশয়োক্তি পূৰ্ণ কথা কোৱা, ডাঙৰ ডাঙৰকৈ শব্দ কৰা।
डींग हांकना। जोर का शब्द करना।

बम-भोला—[स ं पु ं] শিৱ।
शिव। महादेव।

बय—[स ं स्त्री] বয়স।
उम्र।

बयन—(स ं पु ं) কথা।
वचन।

बया—(स ं पु ं) বুলবুলী জাতীয় পক্ষী বিশেষ, ধান চাউল আদি জোখা মানুহ।
एक प्रकार का पक्षी। बुलबुल। अनाज तोलने का काम करने वाला।

बयान—(स ं पु ं) বৰ্ণনা, বিৱৰণ।
वर्णन। विवरण।

बयाना-[स ं पु ं] বায়না, আগধন।
पेशगी।

बयार—(स ं स्त्री) বতাহ।
हवा।

बर—(सं पु ं) বট, ৰেখা,দৃঢ় ভাবে কৰা প্ৰতিজ্ঞা।
बरगद। रेखा। दृढ़तापूर्वक की हुई प्रनिज्ञा।
[अव्य] ওপৰ, বাহিৰৰ অথবা সমুখৰ, তথাপি।
ऊपर। बाहर या सामने। बल्कि।
(वि) শ্ৰেষ্ঠ, পূৰ্ণ আশা।
श्रेष्ठ। पूर्ण (आशा)।

बरई—(स ं पु ं) পানৰ খেতি কৰোঁতা আৰু বেচোঁতা।
पान उपजाने, बनाने और बेचने वाला। तमोली।

बरकंदाज—(सं पु ं) বৰকান্দাজ, বন্দুকধাৰী সৈন্য।
वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी या बन्दूक रहती है।

बरकत—(स ं स्त्री) বহুত পৰিমাণে, লাভ, অনুগ্ৰহ।
बहुतायत। लाभ। प्रसाद या कृपा।

बर-खिलाफ—(वि) বিৰুদ্ধে।
विरुद्ध।

बरगद—[स ं पु ं] বট গছ।
बड़ का पेड़।

बरच्छा—(स ं पु ं) বিয়াৰ নিয়ম বিশেষ, ন· চাই বিয়াৰ ঠিক কৰা লোকাচাৰ বিশেষ।
विवाह में तिलक से पहले कन्या पक्ष की ओरसे वर को देखकर विवाह निश्चित करनेकी रस्म।

बरछा—(सं पु ं) বৰ্শা, বল্লম, যাঠি। भाला।

बरजना—[क्रि अ] নিষেধ কৰা।
·मना करना।
(क्रि स) গ্ৰহণ নকৰা, ব্যৱহাৰ নকৰা।
सामने आनेपर भी ग्रहण न करना प्रयोग या उपयोग में न लाना।

बरजोर—(वि) বলবান, অত্যাচাৰী।
बलवान। अत्याचारी।
[क्रि वि] বলেৰে।
बलपूर्वक।

बरतन—[सं पुं] পাত্ৰ, বাচন-বৰ্ত্তন।
पात्र।

बरतना—[क्रि अ] আচৰণ কৰা, ব্যৱহাৰ কৰা।
व्यवहार या बरताव करना।
(क्रि स) কামত খটোৱা।
काम में लाना।

बर-तरफ—(वि) কাষত, বেলেগে, পদচ্যুত।
किनारे। अलग। बरखास्त।

बरताव—(सं पुं) ব্যৱহাৰ।
व्यवहार।

बरदाना, बरधाना,-[क्रि स, क्रि अ] গাই, ঘোঁৰা, বলদ অথবা ঘোঁৰাৰ, লগত ৰমণ ক্ৰিয়া অথবা এনে ৰমণ ক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা গৰ্ভ ধাৰণ কৰা।
गौ, घोड़ी आदि का उनकी जाति के पशुओं से संयोग कराना या संयोग द्वारा गर्भधारण करना।

बरदाश्त—(सं स्त्री) সহ্য।
सहन।

बरना—(क्रि स) বৰণ কৰা, দান দিয়া, বৰ্ণনা কৰা। সূতা বটা।
वरण करना। दान देना। वर्णन करना। (तागा) बटना।

बरफ, बर्फ—(सं पुं) বৰফ।
हिम। ओला।

बरफानी, बरफीला—(वि) বৰফেৰে পূৰ্ণ, বৰফময়।
जिसमें या जिसपर बरफ हो।

बरफी—(सं स्त्री) বৰ্ফি, মিঠাই বিশেষ।
एक प्रकार की मिठाई।

बरबंड—[वि] বলবান, উদণ্ড।
बलवान। उद्दण्ड। प्रचंड।

बरबस—[क्रि वि] অনাহকত, জোৰ-জুলুমকৈ।
व्यर्थ। जबर्दस्ती।

बरबाद—[वि] নষ্ট ।
नष्ट । चौपट ।

बरमा—(सं पुं) কাঠ আদিত ফুটা কৰা সজুলি বিশেষ—বৰমা ।
लकड़ी आदिमें छेद करनेका एक औजार ।

बरराना, बर्राना—[क्रि अ] অনাহকত কথা কোৱা, টোপনিত কথা কোৱা ।
व्यर्थ बकना । नीद या बेहोशीमे बकना ।

बरवै—[स पुं] ছন্দ বিশেষ ।
एक प्रकार का छन्द ।

बरषा, बरसा, बरसात - [सं स्त्री] বৰ্ষা, বৰ্ষা ঋতু ।
वर्षा । वर्षा, ऋतु ।

बरस, बरिस-(सं पुं) বছৰ ।
वर्ष, साल ।

बरसगाँठ, बर्षगाँठ— [सं स्त्री] জন্ম বাৰ্ষিকী, জন্মদিন ।
साल गिरह ।

बरसना—[क्रि अ] বৰষুণ দিয়া, চাৰিওপিনৰ পৰা খুব বেছিকৈ অহা অথবা পৰা ।
आकाश से जल गिरना । चारों ओरसे अधिक मात्रामें आना या गिरना । (क्रि स-बरसाना)

बरसाती-(वि) বৰ্ষা ঋতুত হোৱা, বৰ্ষা ঋতুৰ ।
बरसात मे होनेवाला । बरसातका ।
[स स्त्री] ঘৰ আদিৰ মুখ্য দুৱাৰ মুখ। পানীকোট আদি ।
कोठियो आदि इमारतो का प्रवेश द्वार । एक प्रकारका कपडा जिसे पहननेपर शरीर नहीं भीगता ।

बरसी— [स स्त्री] বছৰেকীয়া শ্ৰাদ্ধ ।
मृतक का वार्षिक श्राद्ध ।

बरही—[सं स्त्री] সন্তান জন্ম হবৰ বাৰ দিনৰ দিন। কৰা বিধি বিশেষ ।
सन्तान उत्पन्न होनेके बारहव दिन का उत्सव तथा कृत्य ।
[क्रि वि] বলেৰে ।
बलपूर्वक ।

बराक-(स पु) শিব, যুদ্ধ ।
शिव । युद्ध ।
(वि) নীচ, বেচেৰা ।
नीच । बेचारा ।

बरात, बरिआत, बारात—[सं स्त्री]
· बरयात्री ।
विवाह के समय वरके साथ कन्यावालों के यहाँ जाने का दल ।

बराना—(क्रि अ) गरसर वा समय हलेउ न । लोकोरा वा काम नकरा, वरा ।रा, जानि शुनि कारोबार कोनो काम वा कार्य्यर परा पृथक करा ।
प्रसंग या अवसर आने पर भी कोई बात न कहना या काम न करना । रक्षा करना । बचाना । जानबूझ कर किसी को किसी काम या बात से अलग करना । जलना ।
[क्रि स] निर्व्वाचन करा, जलोरा ।
चुनना । जलाना ।

बराबर—(वि) समान, समतल ।
समान । समतल ।
(क्रि वि) एकादिक्रमे, एकेलागे, सदाय ।
लगातार । एक साथ । हमेशा ।

बराबरी—[सं स्त्री] समानता ।
समानता ।

बरामद—(वि) सकलोरे आगत लुकाइ थका वस्तु उलियाइ अना । खानातल्लाचीत ओलोरा वस्तु-बाहानि ।
निकाल कर सब के सामने लाया हुआ । [छिपा हुआ माल]

बरामदा—(सं पुं) बाराण्डा ।
मकानों में आगे या कुछ बाहर निकला हुआ छायादार छज्जा ।

बरियाई—(क्रि वि) बलेरे ।
बलपूर्वक ।
(सं स्त्री)श्रेष्ठता, शक्तिमत्तु ।
श्रेष्ठता । बडप्पन । शक्तिमत्ता ।

बरी—(सं स्त्री) सरु घूरणीया बरि, बरि ।
छोटी गोल टिकिया ।
[वि] मुकलि होरा ।
छूटा हुआ । मुक्त ।

बरु [क]-(अव्य) यदिओ, किन्तु । बरं
भले ही । बल्कि ।

बरुनी, बरौनी-(सं स्त्री) पलकर नोम, पिरिकति ।
पलकों के आगे के बाल ।

बरेंड़ा—(सं पुं) मारली ।
वह लकड़ी जो खपरैल या छाजन

में लम्बाई के बल लगी रहती है ।

बरेखी—[सं स्त्री] হাতত পিন্ধা অলঙ্কাৰ বিশেষ। বিয়া ঠিক কৰিবলৈ বৰ অথবা কইনা চোৱা কাৰ্য্য।
बाँह पर पहनने का एक गहना . विवाह सम्बन्ध स्थिर करने के लिये वर या कन्या को देखना।

बर्बर—(सं पुं) নিষ্ঠুৰ, অসভ্য।
जंगली आदमी। उजड्ड ओर मूर्ख।

बर्रें—[सं पुं] বৰল।
भिड़ नामका उड़नेवाला कीड़ा।

बलंद, बुलंद—(वि) ওখ, ডাঙৰ।
ऊँचा। बड़ा

बल—(सं पुं) বল, সামৰ্থ্য,শক্তি, ভাৰসা, সেনা, সহায়, কোঁচ খোৱা, অন্তৰ, পিনে, ফালে, বক্রতা।
सामर्थ्य। भार उठाने की शक्ति। सहारा। भरोसा। सेना। पार्श्व। ऐंठन, फेंटा। टेढ़ापन। सिकुड़न। अन्तर। ओर, तरफ।

बलकना—[क्रि अ] উতলা হোৱা, আবেগ প্ৰবণ হোৱা।
उबलना। उमड़ना। आवेश में आना।

बलगम—(सं पुं) কফ।
कफ।

बलदाऊ, बलदेव—(सं पुं) বলদেৱ, বলৰাম।
कृष्णके बड़े भाई।

बलना—[क्रि अ] জ্বলা।
जलना।
[क्रि स] জৰী বটা।
(रस्सी आदि) बटना।

बलम, बालम—[सं पुं] পতি, প্ৰণয়ী, প্ৰেমী।
पति। प्रणयी, प्रेमी।

बल्मीक, बलमीक—[सं पुं] উঁই হাফলু।
दीमकों की बाँबी।

बलवा—[सं पुं] বিদ্ৰোহ, বিপ্লব।
विद्रोह। विप्लव।

बलवाई—[सं पुं] বিদ্ৰোহী।
विद्रोही।

बला—(सं स्त्री) গছ বিশেষ, পৃথিবী, লক্ষ্মী, দুঃখ, ভূত-প্ৰেত অথবা ইহঁতৰ পৰা পোৱা বাধা।

पौधों की एक जाति। पृथ्वी। लक्ष्मी। आपत्ति, दुःख। भूत-प्रेत या उनकी बाधा।

बलाका–(सं स्त्री) বগলীৰ জাক। बगलों की पंक्ति।

बलात्—[क्रि वि] বলপূৰ্ব্বক। बलपूर्वक।

बलात्कार—(सं पुं) বলপূৰ্ব্বক কাম কৰোৱা,বলেৰে স্ত্ৰী সম্ভোগ কৰা কাৰ্য্য।
किसी स्त्रीके साथ बलपूर्वक संभोग।

बलाधिकृत–[सं पुं] প্ৰাচীন ভাৰতৰ সেনাধ্যক্ষ আৰু ৰাজ-মন্ত্ৰীৰ উপাধি।
प्राचीन भारत में राज्य के सेना विभाग का प्रधान अधिकारी और राजमंत्री।

बलाहक—[सं पुं] মেঘ। मेघ।

बलि—(सं पुं) ৰাজকৰ, উপহাৰ, পূজাৰ সামগ্ৰী, নৈবেদ্য,দেৱতাৰ আগত কটা জন্তু, বলি।
राजकर। उपहार। पूजा की सामग्री। नैवेद्य। किसी देवता के नामपर मारा जानेवाला पशु।
(सं स्त्री) बान्धवी। सहेली।

बलिया, बलिष्ठ—[वि] বলবান। बलवान।

बलिहारी–[सं स्त्री] প্ৰেম, শ্ৰদ্ধা আদিৰ কাৰণে নিজকে সমৰ্পণ কৰা।
प्रेम, श्रद्धा आदिके कारण अपने आपको किसी के अधीन या किसी पर निछावर कर देना।

बलुआ—(वि) বালি থকা, বালিময়। रेतीला।

बलैया—(सं स्त्री) দুঃখ-কষ্ট, বিপদ-বিঘিনি।
बला। आपत्ति।
बलैया लेना—অইনৰ কষ্ট বা ৰোগ নিজে লবলৈ ইচ্ছা প্ৰকাশ কৰা।
किसी का रोग या कष्ट अपने ऊपर लेने की कामना प्रकट करना

बल्कि—(अव्य) নহলে, বৰং। अन्यथा। अच्छा यह कि।

बल्लम—(सं पुं) বল্লম, যাঠি। डंडा। बरछा।

बल्ला—[सं पुं] ডাঙৰ শকত আৰু দীঘল কাঠ বা লাঠি।
लम्बा और मोटा शहतीर या डण्डा।

बवंडर—[सं पुं] ধুমুহা, বতাহৰ ঘূৰ্ণী।
चक्कर की तरह घूमती हुई हवा। आँधी।

बवासीर—[सं स्त्री] অৰ্শ বেমাৰ।
अर्श रोग।

बसंती—(वि) বসন্ত ঋতুৰ, হালধীয়া ৰঙৰ।
वसन्त ऋतु का। पीले रंगका।

बस—(वि) যথেষ্ট, হৈছে।
यथेष्ट। भरपूर।
(अव्य) যথেষ্ট, কেৱল।
पर्याप्त। केवल।
(सं पुं) বল, জোৰ।
बल। जोर।

बसना—(क्रि अ) বাস কৰা।
जीवन बिताने के लिये कही निवास करना। रहना। आबाद होना।

बसर—[सं पुं] নিৰ্ব্বাহ, জীৱন-ধাৰণ।
गुजर। निर्वाह।

बसना—(क्रि स) ঠাই দিয়া, বাস কৰিবলৈ ব্যৱস্থা কৰি দিয়া, বহিবলৈ দিয়া।
बसने या रहने के लिये जगह देना या प्रवृत्त करना। आबाद करना। ठहराना। बैठाना। सुगन्ध से युक्त करना।
(क्रि अ) বাস কৰা, থকা, সুগন্ধি যুক্ত হোৱা, কোনো কাম কৰাত সফল হোৱা।
बसना। रहना। कुछ कर सकने में समर्थ होना। गन्ध से युक्त होना।

बसीठ—(सं पु) খবৰ লৈ যোৱা দূত।
समाचार भेजनेवाला दूत।

बसीठी—(सं स्त्री) দূতগিৰি।
दूतत्व।

बसुधा—(सं स्त्री) বসুন্ধৰা, পৃথিৱী।
पृथ्वी।

बसूला—(सं पुं) কাঠমিস্ত্ৰীৰ যন্ত্ৰ বিশেষ। বাচুলা।
लकड़ी गढ़ने का बढ़इयों का एक औजार।

बसेरा— [सं पुं] বাহৰ, চৰাই চিৰিকতিৰ বাহ ।
ठहरने या टिकने की जगह। वह जगह जहाँ पक्षी रात बिताते हैं। निवासी।

बस्ता—[सं पुं] কিতাপ, বহী আদি বান্ধি লৈ যোৱা কাপোৰ।
वह कपड़ा जिनमें पुस्तकें, बहियाँ आदि बाँधी जाती हैं। बेठन।

बहकना—(क्रि अ) পথ ভ্ৰষ্ট হোৱা, মদত মতলীয়া হোৱা, ছল-কপটৰ বশবৰ্ত্তী হোৱা।
पथभ्रष्ट होना। किसीके धोखेमें आ जाना। किसी प्रकारके मद या आवेश में चूर होना। (क्रि स-बहकाना)

बहन, बहिन—(सं स्त्री) ভনী।
माताकी कन्या। चाचा, मामा, बुआ की लड़की।
[सं पुं] বতাহৰ ছাতি।
झोंका।

बहना—(क्रि अ) বৈ যোৱা, অনবৰত বৈ যোৱা, ঘুৰি ফুৰা, নিৰ্ব্বাহ হোৱা।
प्रवाहित होना। निरंतर रसके रूप में प्रवाहित होना। मारा-मारा फिरना। निर्वाह होना।
[क्रि स] কঢ়িওৱা, কোনো প্ৰকাৰৰ বোজা বা দায়িত্ব গ্ৰহণ কৰা।
कोई चीज अपने ऊपर लाद या खींचकर ले चलना। किसी प्रकारका भार अपने ऊपर लेना।

बहनापा—(सं पुं) ভনী-সম্পৰ্ক।
बहन का सम्बन्ध।

बहनोई—(सं पुं) ভগ্নীপতি, বৈনাই।
बहन का पति।

बहनौरा— (सं पुं) ভনীয়েকৰ শহুৰৰ ঘৰ।
बहन का ससुराल।

बहरा, बहिर--(वि) কলা, কাণেৰে নুশুনা।
जो कान से न सुने या कम सुने।

बहराना - (क्रि स) ফাকি দিয়া, আনন্দ দিয়া, পৃথক কৰা, উলিওৱা।
बहलाना। बहकाना। बाहर की ओर ले जाना या करना। अलग करना।
(सं पुं) নগৰ বা গাঁৱৰ বহিভাগ।
शहर या बस्तीका बाहरी भाग।

बहरियाना-(क्रि स)উলিয়াই দিয়া।
बाहर करना।

बहरी-(सं स्त्री) বাজ জাতীয় চৰাই।
एक शिकारी चिड़िया।
(वि) বাহিৰৰ।
बाहर का। बाहरी।

बहलना—(क्रि अ) মনোৰঞ্জন হোৱা। ফাকিত পৰা।
मनोरंजन होना। भुलावेमें आना।

बहलाना—(क्रि स) মনোৰঞ্জন কৰা। ফুচলোৱা।
चित्त प्रसन्न करना। बहकाना।

बहली—(सं स्त्री) ৰথৰ নিচিনা গৰুগাড়ী।
रथकी तरह की बैलगाड़ी।

बहस—[सं स्त्री] তর্ক-বিতর্ক, বাদ-প্রতিবাদ।
तर्क-वितर्क। विवाद।

बहसना—[क्रि अ] তর্ক, বিবাদ কৰা।
तर्क या विवाद करना।

बहाऊ—[वि] বৈ যাব পৰা, বোৱাই দিওঁতা, বেয়া, অনাহকত ধন নষ্ট কৰোঁতা।
बहा देने के योग्य। बहा देनेवाला। बुरा। व्यर्थ धन नष्ट करनेवाला।

बहादुर—(वि) বীৰ, পৰাক্রমী।
शूरवीर। पराक्रमी।

बहाना-(क्रि स) প্রবাহিত কৰা, অনাহকত খৰচ কৰা।
प्रवाहित करना। पानी की धारा में डालना। व्यर्थ व्यय करना।
(सं पुं) নিজক বচাবৰ কাৰণে সজা মিছা কথা। টালিবাজি।
अपना बचाव करने या मतलब निकालने के लिये कही हुई झूठी बात। नाम मात्र का कारण।

बहार—(सं स्त्री) বসন্ত কাল, আনন্দ, ৰমণীয়তা।
वसन्त ऋतु। मजा, आनन्द। रमणीयता।

बहाल—(वि) নিজৰ ঠাইতে পুনৰ নিযুক্ত।
अपने स्थान पर फिर मे या पूर्ववत् स्थित।

बहाली—(सं स्त्री) পুনর্নিযুক্তি।
पुनर्नियुक्ति।

बहाव—[सं पुं] প্রবাহ, বৈ থকা পানী, খৰতৰ বেগ।

प्रवाह। बहता हुआ पानी। प्रबल बेग या प्रवृत्ति।

बहियाँ— [सं स्त्री] বাহু।
बाँह।

बहिरंग—[वि] বাহিৰৰ।
बाहरी। बाहर का।

बहिंजगत्–(सं पुं) বহিজগত।
बाहरी दृश्य या जगत्।

बहिर्मुख—(वि) বহিমুখ, বিপৰীত, বিমুখ।
विमुख। विपरीत।

बहिश्त—[सं पुं] স্বৰ্গ।
स्वर्ग।

बही— (सं स्त्री) বহী।
हिसाब किताब लिखनेकी पुस्तक।

बहुज्ञ, बहुविद्— (वि) বহু জনা, সুবিজ্ঞ।
अच्छा जानकार।

बहुतायत–(वि) খুব বেছি পৰিমাণে।
अधिकता। ज्यादती।

बहुतेरा-[वि] বহুতো।
बहुत-सा।
[क्रि वि] বিবিধ ধৰণেৰে। বহুপ্ৰকাৰে।
अनेक प्रकार से।

बहुधा— [क्रि वि] প্ৰায়ে। প্ৰায়ঃ।
अक्सर।

बहुभाषी—[वि] খুব কথা কওঁতা, বহুভাষী।
बहुत बोलनेवाला। बहुत-सी भाषाएँ जाननेवाला।

बहु-मत—(सं पुं) ভিন্ন ভিন্ন মত, মতানৈক্য। অধিক সংখ্যক লোকৰ মতৈক্য।
बहुत-से लोगो का अलग अलग मत। बहुतसे लोगोका एक मत या राय। (अं—मेजॉरिटी)

बहु-मूल्य—(वि) মূল্যবান, বহু-মূলীয়া।
कीमती। दामी।

बहु-रंगा—[वि] কেবা ৰঙৰ।
कई मिले जुले रंगो का।

बहुरना— (क्रि अ) কৰবালৈ গৈ ঘূৰি অহা।
कही जाकर वापस आना। लौटना।

बहुरि—(क्रि वि) পুনৰ, আকৌ।
पुनः। उपरान्त।

बहुरिया—(सं स्त्री) ন বোৱাৰী।
नयी बहू।

বহুল— [বি] বেছি।
अधिक।

বহূ— (সং স্ত্ৰী) বোৱাৰী, পত্নী, কইনা।
लडकेकी स्त्री। पत्नी। दुलहिन।

বহেড়া - [সং পুং] বনৌষধিৰ গছ বিশেষ। ভোমোৰা গুটি।
एक प्रकार का पेड जिसके फल दवा के काममें आते हैं।

বহেড়ুআ— [বি] ফটুৱা, চেল-বেলীয়া।
आवारा।

বহেলিয়া—[সং পুং] চৰাই চিকাৰী।
चिड़ीमार ।

বহোরনা—(ক্রি অ) ওভটা।
लौटना।

বহোরি—[অব্য] পুনৰ, আকৌ, পিছত।
पुन: । फिर।

বাঁক— [সং স্ত্ৰী] বাজুৰ নিচিনা এবিধ অলঙ্কাৰ। ধেনু। এক প্ৰকাৰৰ ছুৰী।
बाँहपर पहनने का एक गहना। धनुष। एक प्रकार की छुरी।

(বি) বেকা, ভাঁজ লগা।
टेढा। बाँका, तिरछा।

বাঁকড়ী—(সং স্ত্ৰী) সোনালী ফিটা বিশেষ।
एक प्रकार का सुनहला फीता।

বাঁকপন—(সং পুং) বেঁকা হোৱাৰ ভাৱ। শোভা।
बाँका होने का भाव। शोभा।

বাঁকা—(বি) ভাঁজুৱা ভঁজুৱা। সুন্দৰ সজা-কছা। বীৰ।
टेढा। सुन्दर और बना-ठना। बहादुर।

বাঁকুড়া, বাঁকুৰা—(বি) বেঁকা, তীক্ষ্ণ ধাৰৰ, মজবুত। প্ৰবল পৰাক্ৰমী।
बाँका। तेज धार का। कुशल।

বাঁগ—[সং স্ত্ৰী] আৱাজ, মতা, মোল্লাই দিয়া আজান, কুকুৰাৰ পুৱাৰ ডাক।
पुकार। मुल्ले की अजान। मुरगे का सबेरे बोलना।

বাঁগড়—(সং পুং) পঞ্জাব ৰাজ্যৰ হৰিয়ানা অঞ্চল।
पंजाबका हरियाना अंचल।

বাঁগড়ু—(সং স্ত্ৰী) ভাষা বিশেষ। হৰিয়ানা অঞ্চলত প্ৰচলিত ভাষা।

हरियानी बोली।
(वि) मूर्ख, উদণ্ড।
उजड्ड। मूर्ख।

बाँचना—(क्रि स) পড়া।
पाठ करना।
(क्रि अ) রক্ষা বা উদ্ধার পোৱা।
रक्षा या उद्धार पाना।

बाँझ— (सं स्त्री) বন্ধ্যা। বঁজা।
वंध्या।

बाँटना— (क्रि स) ভাগ কৰা, বিলাই দিয়া।
हिस्सा या विभाग करके देना।
वितरण करना।

बाँड़ा—[वि] নেজ কটা (জন্তু), অসহায়।
दुमकटा (पशु)। असहाय।

बाँदी—[सं स्त्री] দাসী, বান্দী।
दासी।

बाँध—[सं पुं] বান্ধ, নদী আদিৰ বান্ধ, বন্ধন, মথাউৰি, বাধা।
बाँधने की क्रिया या भाव। नदी या जलाशय का जल रोकने के लिये उसके किनारे या बीच में बना हुआ मिट्टी, पत्थर आदिका धुस्स। वह बन्धन जो किसी बात को रोकने के लिये लगाया जाता है।

बाँधना—(क्रि स) বন্ধা, ক্রম আদি ঠিক কৰা, অস্ত্র-শস্ত্র ধাৰণ কৰা। নিয়মিত কৰা।
रस्सी, कपड़े आदिमें घेरकर उसमें गाँठ लगाना। पकड़ कर बन्द या कैद करना। पाबन्द करना। क्रम, व्यवस्था आदि ठीक या नियत करना। अस्त्र-शस्त्र आदि धारण करना।

बाँबी—(सं स्त्री) উঁই হাফলু। সাপৰ গাঁত।
दीपकों के रहने का मिट्टी का ढूह। साँप का बिल।

बाँस—(सं पुं) বাঁহ।
एक लम्बी वनस्पति जिसमें पोलापन और बीच बीचमें गढ़े होते हैं।

बाँसा—(सं पुं) বাজহাড়।
रीढ़ की हड्डी।

बाँसुरी—[सं स्त्री] বাঁহী।
बंशी।

बाँह—[सं स्त्री] হাড়, বল, সহায়, কামিজ আদিৰ হাতৰ অংশ।
हाथ। बल। सहायक। सहारा। कमीज आदिकी आस्तीन।

बाई—(सं स्त्री) বাত বেমাৰ, স্ত্ৰীসকলৰ বাবে আদৰ সুচক শব্দ, বেশ্যা সকলৰ নামৰ লগত লগোৱা শব্দ বিশেষ, সৰু পুখুৰী ।
त्रिदोषों में वात नामक रोग, स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक शब्द । वेश्याओं के नामोंके साथ लगानेवाला एक शब्द । छोटा तालाब ।

बाईस—(वि) বাইশ

बाउर—[वि] পাগল, বলিয়া ।
बावला । पागल ।

बाएँ, बायें—(क्रि वि) বাওঁপিনে ।
बाईं ओर या तरफ ।

बाक—[सं पुं] কথা, বচন ।
बात । वचन ।

बाकी- [सं स्त्री] বাকী, অৱশিষ্ট ।
अवशिष्ठ । शेष ।
(अव्य) কিন্তু ।
लेकिन । परन्तु ।

बाग—(सं पुं) বাগিছা ।
उद्यान ।
[सं स्त्री] ঘোঁৰাৰ লেগাম ।
घोड़े की लगाम ।

बागडोर—(सं स्त्री) লেগাম ।
लगाम ।

बागवान—[सं पुं] মালী ।
माली ।

बागवानी—(सं स्त्री)) বাগিছাত ফুল গছ ৰোৱা বিদ্যা, শিক্ষা ।
बगीचों में पेड़ पौधे लगाने की कला या विद्या ।

बागा—(सं पुं) দীঘল চোলা ।
एक लम्बा पहनावा । जामा ।

बागी—[सं पुं] বিদ্রোহী ।
विद्रोही ।

बागीचा—(सं पुं) সৰু বাগিছা ।
छोटा बाग ।

बाघी —(सं स्त्री) ফোহা, গাওঠি ।
एक प्रकार का फोड़ा जो गर्मी या आतशा के रोगियों को जांघ की सन्धि में होता है ।

बाचा—(सं पुं) প্রতিজ্ঞা, সংকল্প ।
वचन ! संकल्प ।

बाछा—(सं पुं) দামুৰি, ল'ৰা ।
गौका बछड़ा । लड़का ।

बाज—(सं पुं) বাজ চৰাই, ঘোঁৰা, ধ্বনি, বাদ্য বজা ।
एक प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया । घोड़ा । ध्वनि । बाजा ।

(प्रत्यय) প্রত্যয় বিশেষ, শব্দৰ শেষত প্রয়োগ কৰিলে আসক্ত, অথবা তাত অনুৰক্ত আদি অর্থ কৰে।

एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर रखनेवाले, व्यसनी, शौकीन या कर्ता आदि का अर्थ देता है।

[वि] বঞ্চিত, কোনো কোনো।

वंचित। रहित। कोई कोई। कुछ विशिष्ट।

(अव्य) নহলে, বিনা।

बिना। बगैर।

बाजना—(क्रि स) বজা, কাজিয়া কৰা। আঘাত পোৱা, যুঁজা।

बजना। झगड़ा करना। लड़ना। आघात लगना।

बाजरा—[सं पुं] বজ্ৰা (শস্য বিশেষ)।

जोंधरी नामक मोटा अन्न।

बाजा—[सं पुं] বাদ্য-যন্ত্ৰ।

बजाने का यन्त्र। वाद्य।

बा-आब्ता—(क्रि वि)নিয়মানুসৰি।

जाबते या नियमके अनुसार।

(वि) নিয়মৰ অনুকূল।

जो नियम के अनुकूल हो।

बाजारी, बाज़ारू—[वि] বজাৰ সম্বন্ধীয়, সাধাৰণ, বজাৰত থকা, বজৰুৱা।

बाजार सम्बन्धी। बाजार का। मामूली। बाजार में बैठने या रहनेवाला।

बाजी—[सं स्त्री] বাজী লগাই খেলা খেল, বাজি লগা।

शर्त्त। बदान। ऐसा खेल जिसमें दाँव लगा हो।

[सं पुं] ঘোঁৰা।

घोड़ा।

बाजीगर—(सं पुं) বাজিকৰ।

जादूगर। नट।

बाजीगरी—[सं स्त्री] বাজিকৰৰ খেল।

बाजीगर का काम या खेल-तमाशा।

बाजू—(सं पुं) বাহু; বাজু (অলঙ্কাৰ বিশেষ)।

बाँह। बाँहपर पहननेका एक गहना।

बाजूबंद. बाजूबीर—[सं पुं] অলঙ্কাৰ বিশেষ।
बाँह पर पहननेका एक गहना।

बाट—(सं पुं) পথ, বাট, দগা, (মাল জোখা)
मार्ग। चीजें तौलनेका बटखरा। बट्टा।

बाटना—(क्रि स) পিহা।
पीसना।

बाटिका—(सं स्त्री) বাটিকা, সৰু বাগিছা।
छोटा बाग।

बाड़व—[सं पुं] সাগৰত লগা জুই, বাড়ৱাগ্নি।
बड़वानल। समुद्र में जलनेवाली अग्नि।

बाड़ा (बाड़)—(सं पुं) চাৰিও পিনে বেৰ দিয়া ডাঙৰ পথাৰ, গো-শালা।
चारों ओर से गिरा हुआ बड़ा मैदान। पशु शाला।

बाड़ी—(सं पुं) বাৰী।
छोटा बाग।

बाढ़—[सं स्त्री] বান পানী, যথেষ্ট।
वृद्धि। जल-प्लावन। प्रचुरता। भरमार।

बाणा—[सं पुं] তীৰ, বাণ।
तीर।

बाणिज्य—(सं पुं) বণিজ, ব্যবসায়।
व्यवसाय। व्यापार।

बात—[सं स्त्री] কথা, বাণী, পৰিস্থিতি, বাতাৰ, প্ৰতিজ্ঞা, সন্মান, উপদেশ, ৰহস্য, গোপণীয়তা, অভিপ্ৰায়, বিশেষত্ব।
कथन। वाणी। परिस्थिति। सन्देश। वार्तालाप। वादा। साख। इज्जत। उपदेश। भेद। अभिप्राय। खूबी। कथन का मर्म।

बात-चीत—[सं स्त्री] কথা-বতৰা।
कथोप कथन। वार्ता।

बातुल—(वि) পাগল।
पागल।

बातूनिया (नी)—[वि] কথকী।
बकवादी।

बाद—(अव्य) পিছত।
उपरान्त।
(বি) অতিৰিক্ত।
अलग हटाया या छोड़ा हुआ। अतिरिक्त।

[সং পুং] বাদ-বিবাদ, কাজিয়া-পেছাল কৰা। বাজি ধৰা।

वाद विवाद। हुज्जत करना। शर्त्त, बाजी।

বাদৰ, বাদল—(সং পুং) মেঘ।

बादल।

[বি] আনন্দিত।

प्रसन्न। खुश।

বাদৰিয়া — (সং স্ত্ৰী) মেঘ।

बदली (मेघ)

বাদলা— [সং পুং] সোণালী বা ৰূপালী, চিকমিকিয়া তাৰ।

एक प्रकार का सुनहला या रूपहला चमकीला तार।

বাদি—(অব্য) ব্যৰ্থ।

व्यर्थ।

বাদিত—[বি] বজোৱা, নিনাদিত।

बजाया हुआ।

বাদী—(বি) বায়ুৰ বিকাৰ সম্বন্ধীয়।

वायु विकार सम्बन्धी।

(সং স্ত্ৰী) শৰীৰত বায়ুৰ বিকাৰ বেছি হোৱা।

शरीरमें वायु विकारका प्रकोप।

(সং পুং) কাজিয়া কৰোঁতা, শত্ৰু।

वाद या झगड़ा करनेवाला। शत्रु।

বাদুৰ— [সং পুং] বাদুলী।

चमगादड।

বাধ— (সং পুং) বাধা, অসুবিধা, খাটিয়া (উত্তৰ ভাৰতৰ তক্তা-পোচ) সজা জৰী।

अडचन। कठिनता। दिक्कत। खाट बुनने की मूँजकी रस्सी।

বাধক—(সং পুং) বাধক, কষ্টদায়ক।

रुकावट डालनेवाला कष्टदायक।

বান - (সং পুং) শৰ, পানীৰ ওখ ঢৌ, ফটকাবাজী, চমক-দমক।

वाण। पानीकी ऊँची लहर। एक प्रकार की आतिश बाजी। वर्ण। चमक।

(সং স্ত্ৰী) সাজোন-কাচোন।

बनाव सिंगार। आदत।

বানক, বানিক—(সং উভয়) বেশ, সাজ-পাৰ।

वेश। सज-धज। सजावट। संयोग।

বানগী—[সং স্ত্ৰী] নমুনা, উদাহৰণ।

नमूना।

বানা—[সং পুং] পোছাক, স্থিতি, ৰীতি, অস্ত্র বিশেষ, বাণি, (দীঘ-বাণি) ।

पहनावा । वेश विन्यास । स्थिति । रीति । तलवार की तरह का या भाले की तरह का एक हथियार। भरनी ।

(ক্রি স) চুলি আচোৰা, সংকুচিত হোৱা, বস্তুৰ মুখ অথবা ফুটা বহল কৰা ।

सिकुडने वाली वस्तुका अपना मुँह या छेद फैलाना । बालोंमें कंघ करना ।

বানী-[সং স্ত্রী] বাণী, বচন, মিনতি ।

वाणी । वचन मनौती । चमक ।

বাপুৰা-(বি) বেচেৰা, দীন-হীন ।

बेचारा । दीन हीन ।

বাবত—(অব্য) বিষয়ে, বাবে ।

सम्बन्धमें । विषय में ।

বাবুক—[সং পুং] পিতা, বাবু ।

पिता । बाबू ।

বাবু—(সং পুং) বাবু, পিতাকৰ বাবে সম্বোধন ।

आदर सूचक शब्द । पिताके लिये सम्बोधन ।

বায়ন—(সং পুং) উপহাৰৰ মিঠাই, আগধন ।

उपहार का मिठाई । उपहार । पेशगी ।

বায়স—(সং পুং) কাউৰী ।

कौआ ।

বাওঁ—(বি) বাওঁপিনৰ, বিপৰীত, বিৰোধী অথবা শত্রু ।

बाम भाग का उलटा । विरोधी, दाहिने या शत्रु ।

(সং পুং) ডুগি, (তবলাৰ লগত থকা বাদ্য ।)

डुग्गी ।

বাৰবাৰ—(ক্রি বি) বাৰে বাৰে ।

बार बार ।

বাৰ—(সং পুং) দুৱাৰ, চিনা-পৰিচয়, ৰাজসভা, বোজা ।

दरवाजा । ठौर-ठिकाना । राज सभा । बोझ ।

(সং স্ত্রী) সময়, পলম, বাৰ ।

काल । बिलम्ब । दफा ।

বাৰন--(সং পুং) হাতী ।

हाथी ।

বাৰনা—(ক্রি অ) বাধা দিয়া।
मना करना।
[ক্রি স] জলোৱা।
बालना। जलाना।

বাৰহ—বাৰ।

বাৰহ-খড়ী—[সং স্ত্রী] স্বৰবৰ্ণৰ মাত্রা সমূহ ব্যঞ্জন বৰ্ণৰ লগত লগাই পঢ়া বা লিখা প্রক্রিয়া।
प्रत्येक व्यंजन वर्ण के साथ बारह स्वरों को मात्राओं के रूपमें लगाकर बोलने या लिखने की प्रक्रिया।

বাৰহ-(বি) চেদেলি-চেদেলি, নষ্ট-ভ্ৰষ্ট।
छिन्न-भिन्न। नष्ट भ्रष्ट।

বাৰহ—[সং পুং] বাৰমাহী গীত।
वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों के विरह का वर्णन होता है।

বাৰহ-মাসা—(বি) বাৰমহীয়া (বছৰটোৰ গোটেই কেই মাহতে ফলা বা ফুলা।)
सब ऋतुओं में फलने फुलनेवाला।

বাৰহ-সিংগা—[সং পুং] এবিধ হৰিণ, পহু।
एक प्रकार का बड़ा हिरन।

বাৰিজ—(সং পুং) পদুম।
कमल।

বাৰিশ—[সং স্ত্রী] বৰষুণ, বৰ্ষা-ঋতু।
वर्षा। वर्षा ऋतु।

বাৰী—[সং স্ত্রী] পাৰ, মাৰ্জিত বাগিছা, খিৰিকী, বন্দৰ, যুৱতী, সৰুছোৱালী, পাল।
किनारा। हाशिया। बाड़ा। बगीचा। खिड़की। बंदरगाह। पारी। छोटी लड़की। युवती।
[সং পুং] ঘৰ, মালী।
घर। माली।

বাৰীক—(বি) সূক্ষ্ম, মিহি, বৰ সৰু, গভীৰ।
महीन। बहुत छोटा। गम्भीर।

বাৰীকী—(সং স্ত্রী) পাতল ভাৱ, সূক্ষ্মতা।
पतलापन। सूक्ष्मता।

বাৰে—(ক্রি বি) শেষত।
अन्त को (या में)

বাৰে—(অব্য) বিষয়ে, সম্বন্ধে।
विषयमें।

বাল—(সং পুং) বালক, ল'ৰা, নজনা, অজ্ঞ, চুলি, হাতীপো-ৱালি।

बालक । अनजान । हाथी । केश।
(वि) কেচুৱা-শিশু, নবোদিত।
जो सयाना न हुआ हो । जो अभी निकला हो ।

बालक—(सं पुं) ল'ৰা, পুতেক ।
लड़का । पुत्र ।

बालचर—(सं पुं) স্কাউট, সামাজিক শিক্ষা আদিৰে শিক্ষিত ল'ৰা ।
वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाओं की शिक्षा मिली हो ।

बालधि –[सं पुं] নেজ ।
पूँछ ।

बालना—(सं पुं) জ্বলোৱা ।
जलाना ।

बालपन—[सं पुं] শিশুত্ব, ল'ৰালি ।
लड़कपन ।

बालबच्चे –(सं पुं) সন্তান, ল'ৰা-ছোৱালী ।
सन्तान ।

बाल-लीला–(सं स्त्री) ল'ৰা-ছোৱালীৰ খেল-ধেমালি ।
बालकों के खेल या क्रीड़ा ।

बाला—(सं स्त्री) যুৱতী, পত্নী, কইনা, কোমলাঙ্গী, সৰল ।
युवती स्त्री । पत्नी । कन्या ।
[सं पुं] বালা, হাতত আৰু কানত পিন্ধা অলঙ্কাৰ বিশেষ ।
कमसिन, सीधा-सादा ।
हाथमें पहनने का कड़ा । कानमें पहनने की बड़ी बाली ।

बालाई—(वि) ওপৰৰ অংশ, অতিৰিক্ত ।
ऊपरका । साधारण या नियत से भिन्न और अतिरिक्त ।
[सं स्त्री] চাৰনি, খাখীৰৰ সাৰ ভাগ, সৰ ।
मलाई ।

बाला-नशीन—(सं पुं) বহিবৰ বাবে শ্ৰেষ্ঠ আসন, সকলোতকৈ ওখ ঠাইত বহি থকা জন ।
बैठने का सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान । वह जो सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हो ।
[वि] সকলোতকৈ ভাল, শ্ৰেষ্ঠ ।
सबसे अच्छा ।

बालिका—[सं स्त्री] ছোৱালী ।
छोटी लड़की ।

বালিগ—[স ं পু ं] সাবালক।
বয়স্ক।

বালিশ, বালিস—[স ं স্ত্রী]গাৰু।
तकिया।
[বি] অজ্ঞান, মূৰ্খ।
अज्ञान। मूर्ख।

বালিশ্ত—[স ं পু ं] বেগেত,
ভালকৈ মেলা বুঢ়া আৰু মাজৰ
আঙুলিৰ মাজৰ জোখ, আধা-
হাঁত।
बित्ता। हाथकी उँगलियाँ पूरी
फैलानेपर अंगूठेके सिरेसे छिगुनी
सिरे तक की लम्बाई।

বালী—[স ं স্ত্রী] কানত পিন্ধা
ঘূৰণীয়া অলঙ্কাৰ বিশেষ।
कानमें पहनने का एक वृत्ताकार
गहना।

বালুকা—(স ं স্ত্রী) বালি।
रेत। बालू।

বালু—(স ं পু ं) কণ, বালি।
रेणुका। रेत।

বালেন্দু—(স ं পু ं) দ্বিতীয়াৰ চন্দ্ৰ।
द्वितीया का चन्द्रमा।

বাবজুদ—(ক্রি বি) স্বত্বেও।
इसपर भी।

বাবড়ী, বাবলী—(স ं স্ত্রী)
ডাঙৰ নাদ, সৰু দ পুখুৰী।
बड़ा और चौड़ा कुआँ। गहरा
छोटा तालाब।

বাবন—(স ं পু ं) বাওনা, কটীয়া
बहुत ठिगने या नाटे कद का
आदमी। बौना।
(বি) চুৰুঙ্গৰ দাৰ, বাওন।

বাবৰ্চী—(স ं পু ं) বান্ধনী।
रसोइया।

বাবৰা, বাবলা—(বি) পাগল,
মূৰ্খ।
पागल। मूर्ख।

বাশিন্দা—[স ं পু ं] নিবাসী।
निवासी।

বাস—(স ं পু ं) বাস, থকা ঠাই,
গোন্ধ, কাপোৰ।
रहने की क्रिया या भाव। रहने
का स्थान। गन्ध। कपड़ा।
[স ं পু ं] সুবাসিত কৰা, জুই।
वासना। आग।

বাসন—[স ं পু ं] বাচন।
बरतन।

বাসনা—(স ं স্ত্রী) গন্ধ।
गंध।

(क्रि स) সুগান্ধত কৰা।
सुगन्धित करना।

बासी—(वि) বাহী, আগেযে ৰন্ধা, আগদিনা খাবলগীয়া কিন্তু পাছ দিনালৈ ৰখা।
देरका पका हुआ। कुछ समय का रखा हुआ।

बाहर—(क्रि वि) সীমাৰ বাহিৰত, বাহিৰ, বেলেগ, পৃথক, আগলৈ ওলাই থকা।
सीमा के पार, अलग, परे या आगे निकला हुआ।

बाहरी—(वि) বাহিৰ, আনৰ, উপৰুৱা।
बाहरका। पराया। ऊपरी।

बाहु-बल—(सं पुं) শাৰীৰিক শক্তি, পৰাক্ৰম।
शारीरिक शक्ति। पराक्रम।

बाहुल्य—[सं पुं] বাহুল, ব্যৰ্থতা।
बहुतायत। व्यर्थता।

बाह्य—(वि) বাহিৰৰ।
बाहर का।

बिंग—(सं पुं) ব্যংগ।
व्यंग।

बिंदी—(सं स्त्री) কপালত লগোৱা সৰু ফোঁটৰ বস্তু, বিন্দু ফোঁট।
नुक्ता। माथे पर लगाया जाने-वाला छोटा गोल टीका।

बिंधना—[क्रि अ] বিন্ধা, ফুটা কৰা, লাগি ধৰা।
बींधा या छेदा जाना। उलझन।

बिंब—[सं पुं] প্ৰতিবিম্ব, ছাঁ, কোৱা ভাতুৰি, সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ আদিৰ মণ্ডল, আভাষ।
प्रतिबिम्ब। प्रतिकृति। कुदरूँ नामक फल। सूर्य चन्द्र आदि का मंडल। आभास।

बिंबा—[सं पुं] লতি ফল বা গৰখীয়া কঁঠাল।
कुदरूँ नामक फल।

बिंबित—(वि) যাৰ ছায়া পৰি আছে।
जिसका बिंब या छाया पड़ रही हो।

बिकना, बिकाना—[क्रि अ] বিক্ৰী হোৱা।
बेचा जाना। बिक्री होना।

बिकराार, बिकराल—(वि) ভয়ঙ্কৰ
भयंकर।

बिकलाई—(स ं स्त्री) ব্যাকুলতা।
व्याकुलता।

बिकसना—[क्रि अ] বিকশিত হোৱা।
विकसित होना। (क्रि स)-बिकासना।

बिकाऊ—[वि] বিক্ৰীৰ, বেচিব লগীয়া।
बिकनेवाला।

बिकारी—[स स्त्री] আলেফ, টকা পইচা বা মোণ সেৰ আদি বুজাবৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা চিন।
वह टेढ़ी पाई जो अङ्कों आदि के आगे रुपयों की संख्या या मन सेर आदि का मान (ऽ) सूचित करने के लिये लगाई जाती है।

बिखरना—(क्रि अ) সিঁচৰিত হোৱা, বিশৃঙ্খল হোৱা।
तितर बितर होना। छितराना।

बिखेरना—[क्रि स] ইপিনে সিপিনে পেলোৱা, ছটিওৱা।
इधर उधर फैलाना। छितराना।

बिगड़ना—(क्रि अ) বেয়া হোৱা, বেয়া অৱস্থা হোৱা, বেয়া চৰিত্ৰ হোৱা, অসন্তুষ্ট হোৱা।
खराब हो जाना। बुरी दशामें आना। बदचलन होना। नाराज होना।

बिगड़े-दिल—(वि) উগ্ৰ স্বভাৱৰ লোক, কু-পথত চলা জন।
उग्र या विकट स्वभाववाला। कु-मार्गपर चलनेवाला।

बिगड़ैल—[वि] কথাই কথাই কাজিয়া কৰোঁতা।
बात बातमें बिगड़ने या लड़ पड़ने वाला।

बिगाड़—(सं पुं) বেয়া হোৱা ক্ৰিয়া অথবা আসন্তুষ্টভাৱ, শক্ৰতা।
बिगड़ने की क्रिया या भाव। खराबी। वैमनस्य।

बिगाड़ना—(क्रि स) কোনো বস্তুৰ স্বাভাৱিক ৰূপ অথবা গুণৰ বিকাৰ ঘটা, অৱস্থা বেয়া হোৱা।
किसी वस्तु के स्वाभाविक रूप या गुणमें विकार उत्पन्न करना। बुरी दशामें लाना या पहुँचाना।

बिगुल-(सं पुं) বিকুল, বন্দুৰাই মুখেৰে বজোৱা এবিধ শিঙা।
सैनिकों को एकत्र करने के लिये बजाई जानेवाली तुरही।

বিগুৰনা-(ক্রি অ) দোধোৰ-মোধোৰত পৰা, হেঁচা দিয়া বা ধৰা পৰা।
असमंजसमें पड़ना। पकड़ा या दबाया जाना।

বিগোত (ऊ)—(स ं पुं) নষ্ট হোৱা, বেয়া।
नाश। खराबी।

বিগোনা—[ক্রি স] বেয়া কৰা, অপব্যৱহাৰ কৰা, লুকোৱা, কষ্ট দিয়া।
खराब करना। दुरुपयोग करना। छिपाना। तंग करना। बहकाना
(ক্রি অ) নষ্ট অথবা বেয়া হোৱা।
नष्ट या खराब होना।

বিঘটনা—(ক্রি স) বিঘটনা, নষ্ট কৰা, ভাঙি-চিঙি পেলোৱা।
विघटित करना। विनष्ट करना। बिगाड़ना। तोड़ना-फोड़ना।

বিচকনা—(ক্রি অ) মুখ বেঁকা কৰা, জ্বলি উঠা (খণ্ড)।
(मुँहका) टेढ़ा होना। भड़कना।

বিচকানা—(ক্রি স) মুখ ভেঙু-চালি কৰা, উচটনি দিয়া।
(मुँह) चिढ़ाना, (मुँह) टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना। भड़काना।

বিচৰনা—(ক্রি স) ঘুৰি ফুৰা বিচৰণ কৰা।
विचरण करना।

বিচলা—[वि] মাজু।
मध्य का।

বিচৱই, বিচৱানী—[सं स्त्री] মধ্যস্থতা।
मध्यस्थता।
(सं पुं) মধ্যস্থ।
मध्यस्थ।

বিচাৰনা—(ক্রি অ) ভবা, চিন্তা কৰা।
विचार करना। चिन्ता करना।

বিচাল—[सं पुं] বেলেগ কৰা, পাৰ্থক্য।
अलग करना। अलगाव। अन्तर।

বিচালী—(सं स्त्री) নৰা, ধান, গম আদিৰ শুকাই থকা গছ।
धान, गेहूँ आदि का सूखा हुआ डण्ठल।

বিচ্ছী, বিচ্ছু—বৃশ্চিক, বিছা।
वृश्चिक।

बिछड़ना, बिछुड़ना—(क्रि अ)
বেলেগ অথবা বিচ্ছেদ হোৱা ।
अलग या जुदा होना ।

बिछलना— (क्रि अ) পিছলা ।
फिसलना ।

बिछाना, बिछावना—(क्रि स)
বিছনাত অথবা মাটিত কাপোৰ পাৰি দিয়া, সিঁচি দিয়া বা ছটিয়াই দিয়া ।
बिस्तर या कपड़ा जमीनपर दूरी तक फैलाना । बिखराना ।

बिछावन, बिछौना—[सं पुं]
বিছনা, পাৰি-পাটী ।
बिस्तर ।

बिछोड़ा, बिछोड़, बिछोह—
(सं पुं) বিচ্ছেদৰ ক্রিয়া অথবা ভাব, বিয়োগ, বিচ্ছেদ ।
बिछुड़ने की क्रिया या भाव ।
वियोग ।

बिजन [I] —(सं पुं) সৰু বিছনী ।
छोटा पंखा ।
(**वि**) একান্ত স্থান, অকলে ।
एकान्त स्थान । अकेला ।

बिजली, बिजुरी—(सं पुं)
বিজুলী, চঞ্চল ।
विद्युत् । चपला ।
[वि] বৰ চঞ্চল অথবা উজ্জ্বল ।
बहुत अधिक चंचल या प्रकाशमान ।

बिजहन—(वि) যাৰ কঠিয়া বা বিধান পৰ্য্যন্ত অথবা বীজ পৰ্য্যন্ত নষ্ট হৈছে ।
जिसका बीज तक नष्ट हो गया हो ।

बिजूका, बिजूखा(वि) খেতি পথাৰত চৰাই আদিক ভয় খুৱাবলৈ সাজি থোৱা বস্তু বিশেষ।
पक्षियों आदि को डराने के लिये खेत में उलटी टांगी हुई काली हांड़ी या इसी तरह की कोई चीज ।

बिजोरा—[वि] দুৰ্ব্বল, নিশকতীয়া ।
कमजोर । दुर्बल ।

बिटिया—(सं स्त्री) ছোৱালী , জীয়ৰী ।
बेटी ।

बिठाना—[क्रि स] বহুওৱা ।
बैठाना ।

বিতৰনা—[ক্রি অ] ইফাল সিফাল হোৱা, সিঁচৰিত হোৱা, নষ্ট হোৱা ।
इधर उधर होना । बिखराना । बिचकना । नष्ट होना । खराब होना ।

বিতাৰনা—(ক্রি স) ভয় দেখুউৱা, ভয় দেখুৱাই খেদা ।
भयभीत करना । डराना । डरा कर भगाना ।

বিঢ়ৱনা—(ক্রি স) কাম কৰা, ঘটোৱা, সংগ্রহ বা একগোট কৰা ।
कमाना । संचित या इकट्ठा करना ।

বিতনা—(ক্রি অ) অতিবাহিত হোৱা, কটোৱা ।
व्यतीत होना । बीतना ।

বিতানা, বিতাৱনা—(ক্রি স) অতীত হোৱা, কটোৱা ।
गुजारना । काटना ।

বিতু, বিত্ত—[সং স্ত্রী] ধন-সম্পত্তি, সামর্থ্য ।
वित्त । धन सम्पत्ति । सामर्थ्य ।

বিত্তা—(সং পুং) বেগেত ।
बालिश्त ।

বিথৰনা—(ক্রি অ) সিঁচৰিত হোৱা ।
बिखरना ।
(ক্রি স) ইফালে-সিফালে সিঁচৰিত হোৱা, (সম্ভৱ বীজ) ছটিউৱা ।
इधर उधर बिखराना । (बीज) बोना ।

বিথা—(সং স্ত্রী) ব্যথা । দুঃখ, ব্যথা ।

বিথাৰনা—(ক্রি স) সিঁচৰিত হোৱা ।
बिखेरना ।

বিদকনা—(ক্রি অ) ফটা, দুৰ্ঘটনা প্রস্ত হোৱা, আঘাত পোৱা ।
फटना । घायल होना । भड़कना ।

বিদৰনা—(ক্রি অ) ফটা, নষ্ট হোৱা ।
फटना । नष्ट होना ।

বিদাৰনা—[ক্রি স] ফলা-ছিৰা কৰা, নষ্ট কৰা ।
चीरना-फाड़ना । नष्ट करना ।

বিদা, বিদাঅতী—(সং স্ত্রী) বিদায়, প্রস্থান, যোৱা ।
गमन । प्रस्थान ।

बिदूषना—[क्रि स] দোষ অথবা কলঙ্ক লগোৱা ।
दोष या कलङ्क लगाना ।

बिदोरना—[क्रि स] মুখ খুলি বা মেলি দেখুৱা ।
(मुँह) खोलकर दिखाना ।

बिध—(सं स्त्री) বিধ, প্ৰকাৰ উপায, ব্ৰহ্ম ।
प्रकार । भाँति । उपाय ब्रह्मा ।

बिधना—(सं पु) বিধাতা ।
विधाता ।
(क्रि अ) বিদ্ধ খোৱা ।
विद्ध होना ।

बिधानी—[सं पु] বিধান তৈয়াৰ কৰা ।
विधान बनानेवाला ।

बिन, बिना—(अव्य) নহলে ।
सिवा । न हो तो । बगैर ।

बिनति (ती)—[सं स्त्री] প্ৰাৰ্থনা নিবেদন ।
प्रार्थना । निवेदन ।

बिनना—[क्रि स] বছা, বাছি উলিওৱা ।
चुनना । छाँटकर अलग करना ।
(प्रे०—बिनवाना ।)

बिनवना—[क्रि स] মিনতি অথবা প্ৰাৰ্থনা কৰা ।
विनय या प्रार्थना करना ।

बिनसना—[क्रि अ] নষ্ট হোৱা ।
नष्ट होना । बरबाद होना ।

बिनाई—[सं स्त्री] বোৱা কাৰ্য্য, বোৱনীৰ বেচ, বছা ।
बुनने की क्रिया, भाव या मज-दूरी । चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

बिनावट—[सं स्त्री] বোৱাৰ ক্ৰিয়া বা ধৰণ ।
बुनने की क्रिया, भाव या ढंग ।

बिनुआ—(वि) বাছি বাছি সংগ্ৰহ কৰা ।
जो बीन या चुन चुन कर इकट्ठा किया गया हो ।

बिनौरी—[स स्त्री] ৰৰফৰ সৰু টুকুৰা ।
ओले के छोटे टुकड़े ।

बिनौला—[सं पुं] কপাহৰ গুটি ।
कपास का बीज ।

बिफरना—[क्रि अ] অপ্ৰসন্ন, বা অসন্তুষ্ট হোৱা, অসম্মত বা বিদ্রোহী হোৱা ।

विद्रोही या बागी होना, नाराज होना।

बिभोर—[वि] বিভোৰ, মুগ্ধ।
विभोर। मुग्ध।

बिमानी—(वि) নিৰাভিমানী।
जिसे अभिमान न हो। निरभिमान।

बियाना—[क्रि स] পিয়ন, প্ৰসৱ কৰা।
ब्याना। प्रसव करना।

बियाबान—(सं पुं) ভয়ানক জঙ্গল, নিৰ্জ্জন পথাৰ।
उजाड जगह। जङ्गल। सुनसान मैदान।

बियावर—[वि स्त्री] জগিব লগীয়া, প্ৰসৱ হবলগীয়া।
बियाने या बच्चा देनेवाली।

बिरंगा—[वि] কেৰা-ৰঙৰো।
कई रङ्गों का।

बिरचना—[क्रि अ] বিৰক্ত বা উদাসীন হোৱা, অসন্তুষ্ট অথবা নাৰাজ হোৱা।
किसी की ओर से विरक्त या उदासीन होना। अप्रसन्न या नाराज होना।
(क्रि स) সজা।
रचना बनाना।

बिरद—[सं पुं] কীৰ্ত্তিগাথা, প্ৰশস্তি।
यश वर्णन। प्रशास्ति।

बिरमना—[क्रि अ] পলম কৰা, বিৰক্ত হৈ ফালৰি কটা।
देर लगाना। विरक्त होकर अलग होना। क्रि स-बिरमाना

बिरवा—[सं पुं] গছ।
वृक्ष।

बिरहा—(सं पुं) বিহাৰ আৰু উত্তৰ প্ৰদেশত প্ৰচলিত বিৰহ প্ৰধান এবিধ লোকগীত।
एक प्रकार का लोक गीत।

बिराजना—[क्रि अ] বিৰাজ কৰা, শোভাবৰ্দ্ধন কৰা, বহা।
शोभित होना। बैठना। (आदर सूचक)

बिरादर—(सं पुं) ভাই, একে বংশ বা গোত্ৰৰ।
भाई। भ्राता।

बिरादरी—[स स्त्री] জ্ঞাতি, একে জাতিৰ মানুহৰ সমষ্টি।
एक जाति के लोगोंका समूह।

बिराना, बिरावना—[क्रि स] খং তোলা, জোকোৰা ।
चिढ़ाना ।

बिरिनॉं—(सं स्त्री) সময়, বাৰ, পাল ।
समय । वार । बारी ।

बिल—[सं पुं] গাঁত ।
विवर ।

बिलकुल—(क्रि वि) সম্পূৰ্ণ ।
पूरा पूरा ।

बिलखना—[क्रि अ] বিনাই কন্দা, দুখী হোৱা ।
बहुत रोना । दुखी होना । सिकुड़ना ।

बिलग—[वि] বেলেগ, নিন্দনীয় ।
अलग । निंदनीय ।
(सं पुं) পাৰ্থক্য, মিত্ৰতা অথবা সম্বন্ধ ত্যাগ কৰা ।
पार्थक्य । मैत्री या संपर्क का परित्याग ।

बिलगाना—[क्रि अ] বেলেগ হোৱা ।
बिलग होना ।
(क्रि स) বেলেগ কৰা ।
अलग करना ।

बिलगाव—(स पुं) অন্তৰ, পাৰ্থক্য ।
अलगाव । पार्थक्या ।

बिलनी—[सं स्त्री] বেৰত থকা ভ্ৰমৰী বা কুমাৰনী, অঁাজিনাই ।
मिट्टी की दीवारों पर रहनेवाली भौंरी । आँखों की पलकों पर होनेवाली छोटी फुन्सी ।

बिलपना— (क्रि अ) গুণবৰ্ণাই কন্দা ।
रोना ।

बिलमना—(क्रि अ) পলম কৰা, ৰোৱা ।
बिलम्ब या देर करना । ठहरना ।

बिलसना— (क्रि अ) (क्रि स) শোভা বঢ়োৱা, ভাল দেখা, ভোগ কৰা ।
शोभा देना । अच्छे जँचना । भोग करना ।

बिला—(अव्य) নহ'লে ।
बिना । बगैर ।

बिलाना— क्रि अ নষ্ট হোৱা, অদৃশ্য হোৱা ।
नष्ट होना । अदृश्य होना ।

बिलाव—(सं पु) বোন্দা মেকুৰী ।
नर बिल्ली ।

बिलैया—[सं स्त्री] মেকুৰী ।
बिल्ली ।

बिलोकना—[क्रि स] চোৱা, দেখা, পৰীক্ষা কৰা ।
देखना । जाँचना ।

बिलोचन—(सं पुं) চকু ।
आँख ।

बिलोड़ना-[क्रि स]গাখীৰ আদি মথা, খেলিমেলি কৰা, চেদেলিভেদেলি কৰা । दूध आदि मथना । अस्त व्यस्त करना ।

बिलोना-[क्रि स] গাখীৰ আদি মথা, ঢালি দিয়া ।
दूध आदि मथना । डालना, उँढ़ेलना ।

बिल्ला—[सं पुं] বোন্দা মেকুৰী, বেজ, কাপোৰেৰে তৈয়াৰী স্বয়ংসেৱক অথবা চাপৰাচী আদিয়ে ধাৰণ কৰা কাপোৰৰ চিন বিশেষ ।
बिल्ली का नर । कपड़े की वह पतली पट्टी या निशान जो कुछ स्वयंसेवक, चपरासी आदि अपनी पहचान के लिये लगाते है । (अंग्रेज)

बिल्ली—(सं स्त्री) মেকুৰী, দুৱাৰৰ শলখা বা চিতকনি ।
बिलैया । दरवाजे में लगाने की सिटकिनी ।

बिल्लौर—(सं पुं] মাৰ্বল শিল স্ফটিক ।
एक प्रकार का सफेद पारदर्शक पत्थर । स्फटिक ।

बिवाई—(सं स्त्री) ভোৰোকা বা ভবি তলুৱা ফটা বেমাৰ ।
पैर के तलवे फटने का रोग ।

बिसंभार (१)—(वि) শৰীৰৰ পিনে যাৰ কোনো উম-ঘাম নাই ।
जिसे अपने शरीर की सुध-बुध न हो ।

बिसनी—(वि) বিলাসী, বেশ্যা-সক্ত ।
व्यसनी । वेश्या गामी ।

बिसपना—[क्रि अ] সূৰ্য্য আদি অস্ত যোৱা ।
सूर्य आदि का डूबना ।

बिसमिल—(वि) জখই কৰা । हलाल, जखम होवा, आघात

प্রাপ্ত হোৱা ।
जबह् किया हुआ, जख्मी, घायल।

बिसरना—[क्रि अ] পাহৰি যোৱা ।
भूलना । (क्रि स — बिसराना)

बिसहर—(सं पुं) সাঁপ, বিষৰ শক্তি নাইকীয়া কৰোঁতা ।
साँप । विषका प्रभाव नष्ट करने वाला ।

बिसात—(सं स्त्री) শক্তি, জমা, সামৰ্থ্য, পাশা খেলৰ চালৰ কাপোৰ খন ।
हैसियत । जमा । सामर्थ्य । वह कपड़ा या दफ्ती जिसपर शतरंज या चौपड़ खेलते है ।

बिसाती—(वि) বেজি, কলম, পুতলা আদি বিক্ৰী কৰোঁতা ।
सूई, तागा, कलम, खिलौने आदि बेचनेवाला ।

बिसाना—(क्रि अ) থিতাপি লগোৱা, বিষৰ প্ৰভাব পৰা ।
बसाना, विषका असर होना ।

बिसायध—[वि] গেলা মাছৰ নিচিনা গোন্ধ ।
जिसमें सड़ी मछली सी गन्ध हो ।

बिसारना—[क्रि स] পাহৰি যোৱা ।
भूल जाना ।

बिसाहना—[क्रि स] কিনা, জানি শুনি বিপদ চপাই অনা ।
खरीदना । [विपत्ति, झंझट आदि] जानबूझकर अपने ऊपर लेना ।

बिसाहनी—[सं स्त्री] কিনি লোৱা বস্তু ।
मोल ली जानेवाली वस्तु ।

बिसूरना—(क्रि अ) মনত দুখ বা শোক কৰা, উচুপি কন্দা ।
मनमें खेद या दुख करना । सिसक सिसक कर रोना ।
[सं स्त्री] চিন্তা ।
चिन्ता ।

बिसेख, बिसेष, बिसेस—[वि] বিশেষ ।
विशेष ।

बिस्तर, बिस्तरा—(सं पुं) বিছনা ।
बिछावन ।

बिस्तरना—(क्रि अ.) বিস্তৃত হোৱা ।

विस्तृत होना ।
[क्रि स] বিয়পোৱা ।
फैलाना ।

बिस्तारना—(सं पुं) বিস্তাৰ কৰা, বঢ়োৱা ।
विस्तार करना । बढ़ाना ।

बिस्तुइया—(सं स्त्री) জেঠি ।
छिपकली ।

बिस्वा—[सं पुं] এবিঘা মাটিৰ কুৰি ভাগৰ এভাগ, এলেছা ।
एक बीघे का बीसवाँ भाग ।

बिहँसना—(क्रि अ) হঁহা ।
मुस्कराना । (क्रि स-बिहँसाना) ।

बिहग—(सं पुं) চৰাই ।
पक्षी ।

बिहरना—(क्रि अ) ভ্রমণ কৰা, ফটা ।
बिहार या सैर करना । फटना ।

बिहान-(सं पुं) ৰাতিপুৱা, কাইলৈ ।
सवेरा । आगामी कल ।

बिहाना—(क्रि स) এৰা ।
छोड़ना ।
(क्रि अ) অতীত হোৱা ।
व्यतीत होना ।

बिहाल—(वि) অচল হোৱা, ভাগৰি পৰা ।
विकल । थका हुआ ।

बिहिश्त—[सं पुं] স্বৰ্গ ।
स्वर्ग ।

बींधना—(क्रि अ) বান্ধত পৰা ।
फँसना ।
(क्रि स) বিন্ধা ।
विद्ध करना ।

बीघा—(सं पुं) বিঘা, মাটিৰ এক প্ৰকাৰৰ জোখ ।
जमीन की एक माप ।

बीच—(सं पुं) মাজ, পাৰ্থক্য, সময় ।
मध्य । अन्तर, फर्क । अवसर ।
(क्रि वि) ভিতৰত, ত ।
अन्दर । में ।
(सं स्त्री) ঢৌ ।
तरंग ।

बीचि (ी)—(सं स्त्री) ঢৌ ।
तरंग ।

बीचोबीच—(क्रि वि) ঠিক মাজতে ।
बिलकुल या ठीक बीच में ।

बीछू—(सं पुं) বিছা ।
बिच्छू । (सं स्त्री-बीछी)

बीज—(सं पुं) বীজ, মূল, কাৰণ বীৰ্য্য ।
बीया । जड़ । हेतु । वीर्य ।
(सं स्त्री) বিজুলী ।
बिजली ।

बीजक—(सं पुं) সূচী, তালিকা, কবীৰ দাসৰ পদ সংগ্ৰহৰ পুথি ।
सूची । तालिका । कबीर दास के पदों के एक संग्रह का नाम ।

बीज-मंत्र—(सं पुं) মূল মন্ত্ৰ, পদ্ধতি ।
मूल-मंत्र । गुर, पद्धति ।

बीजा—(वि) দ্বিতীয় ।
दूसरा ।

बीजी-(सं स्त्री) নাৰিকল আদিৰ ভিতৰৰ সাহ, আমঠি ।
नारियल आदि की गिरी । गुठली ।

बीजू—(वि) গুটিৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা ।
जो बीज बोने से उत्पन्न हुआ हो ।

बीट—(सं स्त्री) চৰাইৰ গু ।
चिड़ियों की विष्ठा या मल ।

बीड़ा—(सं पुं) ঠুৰীয়া তামোল । বাইনা দিয়া টকা ।
पान की गिलौरी । किसी काम के लिये पेशगी दिया जानेवाला धन ।

बीतना--(क्रि अ) অতীত হোৱা, ঘটা, সমাপ্ত হোৱা ।
गुजरना । घटित होना । समाप्त होना ।

बीन--(सं स्त्री) সাঁপ নচুৱা সকলে বজোৱা পেঁপাঁ । বীণা ।
सँपेरो के बजाने की तूमड़ी । वीणा ।

बीनना—(क्रि स) বাচিলোৱা লোৱা ।
चुनना । बुनना ।

बीमार--(वि) বেমাৰী ।
रोगी ।

बीमारी-[सं स्त्री] বেমাৰ, ব্যাধি, জঞ্জাল বেয়া অভ্যাস ।
रोग । व्याधि । झंझट । बुरी आदत ।

बीया—(वि) দ্বিতীয় ।
दूसरा ।
[सं पुं] বীজ ।
बीज ।

बीर—(सं पुं) ভাই।
भाई।
(सं स्त्री) সখী, কাণৰ এবিধ অলঙ্কাৰ, গো-চৰণীয়া পথাৰ।
सखी। कान का एक गहना।
गोचर भूमि।
[वि] বীৰ।
बहादुर।

बीरन—[सं पुं] ভাই।
भाई।

बीर-बहूटी—(सं स्त्री) ৰঙা ৰঙৰ এবিধ পোক। ইন্দ্ৰ বধূ।
गहरे लाल रंग का एक कीड़ा।
इन्द्रबधू।

बीरा—(सं पुं) টুৰীয়া তামোল। প্ৰসাদ হিচাবে পোৱা ফল-মূল আদি।
बीड़ा। देवता के प्रसाद रूप में मिलनेवाले फल-मूल आदि।

बील—[वि] ফোঁপোলা।
पोला। खोखला।
(सं पुं) দ মাটি, মন্ত্ৰ।
नीची भूमि। मंत्र।

बीस—[वि] আনতকৈ বেছি, অলপ ভাল, বিশ।
किसी से बढ़कर या कुछ अच्छा।

बीसी—(सं स्त्री) কুৰি বিধ বস্তুৰ সংগ্ৰহ।
बीस चीजों का समूह।

बीहड़—(वि) ওখৰা মোখোৰা, ওখ চাপৰ, গহীন।
जो सरल न हो। ऊँचा-नीचा, ऊबड़ खाबड़।

बुँदका—(सं पुं) কপালত ফোট হিচাবে ব্যবহাৰ কৰা তিলক, ঘূৰণীয়া আৰু ডাঙৰ দাগ।
भालेपर लगाया जानेवाला गोल टीका। गोल और बड़ा धब्बा।
(सं स्त्री—बुँदकी)

बुंदा—(सं पुं) কাণৰ এবিধ অলঙ্কাৰ। কপালত লগাই লোৱা ফোঁট।
कानमें पहनने का एक गहना।
माथेपर लगाने की बिंदी।
(सं स्त्री—बुंदी)

बुआ,बूआ—[सं स्त्री] পেহী।
पिताकी बहन।

बुकचा-[सं पुं] টোপোলা, বোজা।
गठरी।

बुकनी-[सं स्त्री] চূৰ্ণ, গুড়া।
चूर्ण।

बुखार—(सं पुं) জ্বৰ, তাপ। দুখ, ক্ৰোধ আদিৰ আৱেগ।

भाप। शरीर में होनेवाला ज्वर। दुख, क्रोध आदि का आवेग।

बुजदिल—(वि) কাপুৰুষ, ভয়াতুৰ।
कायर। डरपोक।

बुजुर्ग—(वि) বুঢ়া, ডাঙৰ, সম্মানী।
वृद्ध। बड़ा।
(सं पुं) বোপা-ককা, পূৰ্ব্বপুৰুষ।
बाप दादा। पूर्वज।

बुझना—(क्रि अ) জুই নুমোৱা, উৎসাহ আদি শিথিল হোৱা, বুজা।
अग्नि का जलना समाप्त होना। उत्साह आदि का मंद पड़ना। समझना। (क्रि स—बुझाना)

बुझौवल—[सं स्त्री] সাঁথৰ।
पहेली।

बुड़ना—[क्रि अ] ডুবা।
डूबना। (क्रि स—बुड़ाना)।

बुड्ढा, बुढ़वा—(वि) বৃদ্ধ, বুঢ়া।
वृद्ध।(सं स्त्री—बुढ़िया, बुड्ढी)

बुढ़ाना—(क्रि अ) বুঢ়া হোৱা।
वृद्ध होना।

बुढ़ापा, बुढ़ौती—[सं पुं] বৃদ্ধাৱস্থা বুঢ়াকাল।
वृद्धावस्था।

बुत—(सं पुं) মূৰ্ত্তি, প্ৰিয়তম।
मूर्ति। प्रियतम।

बुतना—(क्रि अ) নুমাই যোৱা।
बुझ जाना। (क्रि स—बुताना)

बुद्धिजीवी—[वि] বুদ্ধিজীৱি।
वह जो केवल बुद्धिबलसे जीविका उपार्जन करना हो।

बुद्धिमत्ता—(सं स्त्री) বুদ্ধিমত্তা, বুজাশক্তি।
समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्बुद—[सं पुं] পানীৰ বুৰবুৰণি।
पानी का बुलबुला।

बुध—[सं पुं] গ্ৰহ বিশেষ, বুধবাৰ। দেৱতা, বুধিয়ক আৰু বিদ্বান লোক।
एक ग्रह। एकबार। देवता। बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति।

बुनकर, बुनिया—(वि) তাঁতি।
जुलाहा।

बुनना—[क्रि स] কাপোৰ বোৱা।

सूतकी सहायता से करघे पर कपड़ा तैयार करना। हाथ या यंत्र से कुछ सूत ऊपर और कुछ नीचे निकालकर कोई चीज बनाना।

बुनाई—[सं स्त्री] বোৱা, বোৱাৰ বানচ।

बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बुनियाद—(सं स्त्री) বুনিয়াদ, ভেটি, যথাৰ্থতা।

जड़। नींव। वास्तविकता।

बुनियादी—(वि) সম্পৰ্কীয়, গুৰি-শকত।

बुनियाद या जड़ से सम्बन्ध रखने वाला। आधारिक।

बुभुक्षा—(वि) খাবৰ ইচ্ছা, ভোক। भूख। क्षुधा।

बुरका—(सं पुं) বোৰ্কা, মূৰৰ পৰা ভৰিলৈকে আবৰি থকা মুছলমান তিৰোতাই পিন্ধা পোচাক বিশেষ।

मुसलमानी महिलाओं के सब अंग ढँकनेका एक पहनावा।

बुरा—(वि) বেয়া।

निकृष्ट। खराब।

बुराई—[सं स्त्री] বেয়াভাব, আপত্তি, দ্বেষ।

बुरापन। अवगुण। शिकायत। द्वेष।

बुरादा—(सं पुं) কাঠৰ গুড়া।

लकड़ी चीरने पर निकलनेवाला उसका चूर्ण।

बुरुश—[सं पुं] বুৰুজ, ৰং দিয়া তুলি।

रंगने या सफाई करने की कूँची।

बुर्ज—[सं पुं] বুৰুজ, দুৰ্গৰ কামত কৰা ওখ গড বা ভেটি, মীনাৰৰ ওপৰৰ ভাগ।

किले आदि की दीवारों में वह ऊपरी स्थान जिसमें बैठने के लिये थोड़ी जगह होती है। मीनार का ऊपरी भाग।

बुलबुल—[सं स्त्री] বুলবুলী চৰাই।

एक छोटी चिड़िया।

बुलबुला, बुल्ला—(सं पुं) পানীৰ বুৰবুৰণি।

पानी का बुदबुद।

बुलाना—(क्रि स) মতা, আমন্ত্ৰণ কৰা।

किसी को पास आने के लिये

पुकार कर कहना। किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।

बुलावा, बुलौवा—[सं पुं] নিমন্ত্ৰণ। निमंत्रण।

बुलाहट—[सं स्त्री] নিমন্ত্ৰণ। निमंत्रण। बुलाना।

बुहारना, बोहारना—[क्रि स] ঝাড়নীৰে পৰিষ্কাৰ কৰা। झाड़ू से साफ करना।

बुहारी—(सं स्त्री) ঝাড়নী। झाड़ू।

बूँद—(सं स्त्री) পানীৰ কণিকা, বীৰ্য্য, বিন্দু, টোপাল। कतरा। टोप। वीर्य।

बूँदाबाँदी—(सं स्त्री) কিন্-কিনিয়া বৰষুণ। हलकी बूँदों की थोडी वर्षा।

बूँदी—(सं स्त्री) বেচন অথবা কলা মাহ বাটি ভজা বড়া। बेसन के तले हुए छोटे छोटे टुकड़े।

बू—[सं स्त्री] গন্ধ, দুৰ্গন্ধ। गंध। दुर्गंध।

बूकना—[क्रि स] মিহিকৈ বটা, নিজৰ যোগ্যতা দেখুৱাবলৈ তৰ্ক কৰা। महीन पीसना। केवल योग्यता दिखाने के लिये बातें करना।

बूचड़—(सं पुं) কচাই। कसाई।

बूचा—(वि) নাঙঠ, কাণকটা। कनकटा।

बूझ—[सं स्त्री] বুজনি, বুদ্ধি, সাঁথৰ। समझ। बुद्धि। पहेली।

बूझना—(क्रि स) সোধা, বুজা, সাঁথৰৰ উত্তৰ উলিওৱা। पूछना। समझना। पहेली का उत्तर निकालना।

बूट—[सं पुं] গজালি ওলোৱা বুট, গছ-গছনি। चने का हरा पौधा या दाना। पेड़ या पौधा।

बूटना—[क्रि अ] পলোৱা। भागना।

बूटा—[सं पुं] সৰু গছ। কাপোৰ আৰু বেৰ আদিত চিত্ৰিত কৰা চিত্ৰকলা। छोटा वृक्ष। कपड़ों, दीवारों आदि पर बने हुए फूलों या वृक्षों के आकार का चिह्न।

बूटी—[सं स्त्री] বনস্পতি, বনৌষধি, ভাং, কাপোৰত আঁকা সৰু সৰু ফুল আদি।
बनस्पति। जड़ी। भाग। छोटा बूटा।

बूड़ना, बूरना—(क्रि स) ডুবা।
डूबना।

बूढ़—(वि) বৃদ্ধ, বুঢ়া।
बुड्ढा।

बूढ़ा—[वि] বুঢ়া।
बुड्ढा।

बूता—[सं पुं] সামৰ্থ্য।
सामर्थ्य।

बूरा—[सं पुं] চেনি, গুড়ি।
शक्कर। चीनी।

बृहद्—[वि] বৰ ডাঙৰ।
बहुत बड़ा।

बेंट [ठ]—(सं स्त्री) কাঠৰ নাল।
औजारों में लगी हुई काठ की मूठ।

बेंड़ना, बेढ़ना—(क्रि स) বেৰ দিয়া, জেওৰা দিয়া।
वृक्षों आदि की रक्षा के लिये चारों ओर मेंड़ बनाकर उन्हें घेरना चौपायों को घेर कर हाँक ले जाना।

बेंड़ा—[वि] বেঁকা, বিকট, হেঙাৰ।
आड़ा। तिरछा। विकट।

बेंदो—[सं स्त्री] অলঙ্কাৰ বিশেষ, ফোঁট।
बिंदी, दावनी नाम का गहना।

बे—(अव्य) ৰহিত, হীন, গালি বিশেষ।
रहित, हीन। तिरस्कारपूर्ण सम्बोधन।

बे-अदब—[वि] উৎপতীয়া, বে-আদব।
उद्दंड।

बेआबरू, बे-इज्जत—(वि) অপমানিত, অসম্মানী।
अपमानित। अप्रतिष्ठित। जिसकी कोई इज्जत न हो।

बे-ईमान—[वि] অধৰ্মী, ধৰ্মৰ প্ৰতি লক্ষ্য নৰখা লোক।
जो ईमान या धर्म का विचार न करे।

बे-क़द्र—[वि] অসম্মান, অপমান।
बेइज्जत।

बेकरार—(वि) বিকল, অচল ।
विकल ।

बेकल—(वि) ব্যাকুল ।
व्याकुल ।

बेकली—(सं स्त्री) ভয়, ব্যাকুলতা।
घबराहट । व्याकुलता ।

बे-कसूर—[वि] নিৰপৰাধী ।
निरपराध ।

बे-कार्म—[वि] অকামিলা, নিৰ-ৰ্থক ।
निकम्मा । निरर्थक ।

बे-कायदा—[वि] নিয়মৰ বিৰুদ্ধ ।
कायदे या नियम के विरुद्ध ।

बेकार—(वि) নিবনুৱা, অকামিলা, নিৰৰ্থক ।
निकम्मा । निरर्थक । जिसके हाथ में जीविका-निर्वाह के लिये कोई काम धंधा न हो ।
(क्रि वि) ব্যৰ্থ ।
व्यर्थ ।

बेकारी—(सं स्त्री) নিবনুৱা-অৱস্থা ।
वह अवस्था, जिसमें जीविका-निर्वाह के लिये मनुष्य के हाथ में कोई काम-धंधा नहीं होता ।

बे-खटके—(क्रि वि) নিঃসংকোচ ।
निस्संकोच ।

बे-खबर—[वि] মূৰ্চ্ছা, অজ্ঞান, অচেতন ।
अनजान । बेहोश ।

बेगाना—(वि) অন্য, দ্বিতীয়, পৰৰ ।
गैर । दूसरा । पराया । अनजान ।

बेगार [ी]-(सं स्त्री) বানচ বা পাৰিশ্ৰমিক নিদিয়াকৈ বলপূৰ্ব্বক কৰোৱা কাম ।
बिना मजदूरी दिये जबर्दस्ती लिया जानेवाला काम ।

बेगि—(क्रि वि) ততাতৈয়াকৈ, তাৰাতাৰি ।
जल्दी से ।

बे-गुना—[वि] নিৰপৰাধী ।
निरपराध ।

बेचना—(क्रि स) বিক্ৰী কৰা, বেচা ।
विक्रय करना ।

बेची—(सं स्त्री) বিক্ৰী ।
विक्रय ।

बेचैन— [वि] অশান্ত, ব্যাকুল।
जिसे चैन न मिलता हो। व्याकुल।

बेजा—(वि) অনুচিত।
अनुचित।

बेजान—(वि) নিৰ্জীৱ, মৃত, মুক, দুৰ্ব্বল।
निर्जीव। मृतक। मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। बहुत दुर्बल या कमजोर।

बे-जाब्ता—[वि] নিয়মৰ বিৰোধী।
जाब्ते या नियम आदिके विरुद्ध।

बे-जोड़—(वि) অখণ্ড, অদ্বিতীয়।
अखंड। अद्वितीय।

बेटा—(सं पुं) পুত্ৰ, ল'ৰা।
पुत्र। लड़का।

बेठन—(सं पुं) কিতাপ আদি মেৰিয়াই থোৱা কাপোৰ।
वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियाँ, थान आदि बाँधे जाते हैं।

बे-ठिकाने—[वि] স্থানথিত নোহোৱা, অনুপযুক্ত।
जो अपनी ठीक जगह पर न हो। अनुपयुक्त। निरर्थक।

बेड़—(सं पुं) গছৰ চাৰিও ফালৰ চাপ।
वृक्ष के चारों ओर की मेंड़।

बेड़ा—(सं पुं) সাঁকো, নাৱ, জাহাজ অথবা বিমান আদিৰ সমূহ।
नदी को पार करने के लिये लट्ठो आदि से बनाया हुआ ढाँचा। बहुत सी नावों, जहाजों या हवाई जहाजों आदि का समूह या दल।
[वि] বেঁকা, বিকট।
तिरछा। कठिन, विकट।

बेड़ी—(सं स्त्री) কয়দীৰ ভৰিত পিন্ধোৱা শিকলি। সৰু নাৱ।
अपराधियों के पैरों में बाँधी जानेवाली जंजीर। छोटी नाव।

बे-डौल—(वि) বেয়া আকৃতিৰ, কুৰূচ।
भद्दी बनावट का।

बेढंगा—(वि) বেয়া, যাৰ ধৰণ-কৰণ ঠিক নহয়। অব্যৱস্থিত।
जिसका ढंग ठीक न हो। बे-सिलसिले। भद्दा।

बेढब— (वि) বেয়া।
बेढंगा। भद्दा।

बेतकल्लुफ—[बि] নিভাজ, নিজৰ মনৰ কথা খুলি কোৱা জন। অকৃত্ৰিম।
जो तकल्लुफ या बनावट न करता हो। अपने मन की बात साफ साफ कहने वाला।
[ক্ৰি বি] নিঃসংকোচ।
निःसकोच।

बे-तमीज—[বি] বদমাচ, বেইমান।
बेहूदा।

बे-तरह— [ক্ৰি বি] বেয়া ভাবে, অসাধাৰণ ৰূপে।
बुरी तरह से। असाधारण रूप से।
[বি] খুব বেছি।
बहुत अधिक।

बे-तहाशा—[ক্ৰি বি] বৰ বেগাই, ৰৰভয় খাই,নভবা নিচিন্তাকৈ।
बहुत तेजी से। बहुत घबरा कर और बिना सोचे समझे।

बेताब-(বি) দুৰ্ব্বল, ব্যাকুল।
अशक्त। व्याकुल।

बेताल—(সং পুং) প্ৰহৰা, দুৱৰী, ভাট। প্ৰেত বিশেষ।
द्वारपाल। एक प्रकार की भूत योनि। भाट।

[বি] সঙ্গীতৰ তালৰ প্ৰতি লক্ষ্য নৰখা। তাল কাটি যোৱা কাৰ্য্য।
(गाना बजाना) जिसमें ताल का ठीक और पूरा ध्यान न रहे।

बेतुका-(বি) য'ত কোনো সামঞ্জস্য অথবা মিল নাই। অমিল, খাপ নোখোৱা।
जिसमें कोई तुक या सामंजस्य न हो। बेढंगा।

बेदम—(বি) মৃতপ্ৰায়, জৰ্জ্জৰ।
मृत प्राय। जर्जर।

बेदर्द—(বি) কঠোৰ মনৰ, কাঠ-চিতীয়া।
कठोर हृदय।

बेदाग-[বি] পৰিষ্কাৰ, নিৰপৰাধ।
साफ। निरपराध।

बेधड़क—(ক্ৰি বি) নিঃসংকোচে, নিৰ্ভয় ভাবে।
निस्संकोच। निडर होकर।
[বি] নিৰ্দ্বন্দ্ব, নিৰ্ভীক, বিবোধ-হীন।
निर्द्वन्द्व। निडर।

बेधना—(ক্ৰি স) কুটা কৰা, বিন্ধা।
छेदना।

बेनी—(सं स्त्री) বেণী, চেলা গোঁঠা চুলি।
स्त्रियों की चोटी।

बे-परद—[वि] অনাবৃত, নাঙঠ।
अनावृत। नंगा।

बे-परवा(ह)—[वि] নিশ্চিন্ত, উদাৰ, কাকো কেৰেপ নকৰা।
बे-फिक्र। परम उदार।

बे-पेंदी—[वि] তলি নথকা।
जिसमें कोई पेंदा या तला न हो।

बे-फिक्र—[वि] নিশ্চিন্ত।
निश्चिन्त।

बेबस—[वि] উপায়হীন, পৰাধীন
लाचार। पराधीन।

बेबाक—[वि] পৰিশোধ কৰা, সুজা।
चुकाया हुआ। (ऋण,देन आदि)

बे-मुरव्वत—[वि]নিৰপেক্ষ, পক্ষপাত হীন।
जो पक्षपात न करे।

बेर—(सं पुं) বগৰী।
एक फल।
[सं स्त्री]বাৰ, (এবাৰ, দুবাৰ) পলম।
बार। दफा। विलम्ब।

बे-रहम—[वि] নির্দ্দয়, নিষ্ঠুৰ।
दया शून्य। निष्ठुर।

बे-रुख—(वि) উদাসীন, অসন্তুষ্ট।
उदासीन। अप्रसन्न।

बेल—[सं पुं] বেল, শ্ৰীফল বেলি ফুল, কোৰ।
श्री फल। बेले का फूल। एक प्रकार की कुदाली।
[सं स्त्री] লতা, সন্তান, বংশ, ডাৰ।
लता। संतान, वंश। नाव खेने का डांड।

बेलचा — (सं पुं) বেলচা বা কোটোনা।
कुदाल।

बेलज्जत—(वि) স্বাদহীন। সোৱাদ-নোহোৱা। जिसमें कोई लज्जत या स्वाद न हो।

बेलना— (सं पुं)বেলনা, ৰুটী আদি বেলা সজুলি।
वह उपकरण जिससे रोटी, पूरी आदि बेली जाता है।
[क्रि स] ৰুটী আদি বেলা কাৰ্য্য, নষ্ট কৰা।
रोटी, पूरी आदि बनाने के लिये बेलने से आटे की पेड़ी को बड़ा और पतला करना। चौपट या नष्ट करना।

बेलनी—(सं स्त्री) নেওঠনী।
कपास ओटने की चरखी।

बेला—[सं पुं] বেলি ফুল, বেহেলা,বাটি, পিয়লা।
सुगंधित फूलों वाला एक पौधा या उसका फूल। एक प्रकार का बाजा। प्याला।
(सं स्त्री) ঢৌ, সমুদ্ৰৰ তীৰৰ ভূমি।
तरंग। समुद्र का किनारा।
(उभय०)সময়, বেলা।
समय। वक्त।

बेलाग—[वि]নিৰাধাৰ, একেবাৰে পৃথক, অকপট ব্যৱহাৰ।
बिना आधार का। बिलकुल अलग। व्यवहार में सच्चा और साफ।

बेलि—(सं स्त्री) লতা।
लता।

बेलौस—(वि) নিৰপেক্ষ, আচল, শুদ্ধ।
पक्षपात न करने वाला। सच्चा।

बेवकूफ—(वि) মূৰ্খ, অবুজ।
मूर्ख। नासमझ।

बेवक्त—(क्रि वि) অসময়ত, কুসময়ত। कुसमय में।

बेवा—(सं स्त्री) বিধবা। বাঁৰী।
विधवा।

बेवाई—[सं स्त्री] ফটুৰা ফটা বেমাৰ।
पैर फटने की बीमारी।

बेशऊर—(वि) যি কাম কৰাৰ অঁাত ধৰিব নোৱাৰে অথবা ধৰণ-কৰণ নুবুজে।
जिसे कोई काम करने का शऊर न हो या ढंग न आता हो।

बेशक—[क्रि वि] নিঃসন্দেহ, অৱশ্যে।
निस्संदेह। अवश्य।

बेशरम—[वि] নিলাজ।
निर्लज्ज।

बेशुमार—(वि) অসংখ্য।
असंख्य।

बेसन—(सं पुं) বুটৰ গুড়া।
चने का चूर्ण या आटा।

बेसबरी—[सं स्त्री] অধীৰতা।
अधीरता।

बेसमझ—(वि) মূৰ্খ।
मूर्ख।

बेसाहना—[क्रि स] কিনা, জানি শুনি বিপদ চপাই লোৱা।

खरीदना। (वैर, विरोध, संकट आदि) जानबूझ कर अपने सिर लेना।

बेसुध—[वि] অজ্ঞান, অচেতন বেহুচ।
जिसे सुध या होश न हो।

बेहतर—(वि) যাৰ লগত বিজনি নাখাটে ইমান ভাল।
किसी की अपेक्षा अच्छा।

बेहद—(वि) খুব বেছি, অসীম।
असीम। बहुत अधिक।

बेहयाई—[सं स्त्री] নিৰ্লজ্জতা।
निर्लज्जता।

बेहरा—[वि] বেলেগ, পৃথক।
अलग। जुदा।
(सं पुं) বেহেৰা, লগুৱা।
बड़े आदमियों का निजी चपरासी या आदमी।

बेहरी—(सं स्त्री) চান্দা।
चन्दा।

बेहाल—(वि) যাৰ অৱস্থা ভাল নহয়, ব্যাকুল।
जिसकी दशा अच्छी न हो। व्याकुल।

बेहूदा—(वि) অশিষ্ট।
अशिष्ट।

बेहोश—(वि) অচেতন, মূৰ্চ্ছিত।
मूर्छित। बेसुध।

बैंगन—[सं पुं] বেঙেনা।
भंटा।

बैठक—(सं स्त्री) বৈঠক, অধিবেশন, চোতাল, বাটচ'ৰা।
बैठने का स्थान या आसन। चौपाल। सभा समितियों का अधिवेशन।

बैठना—(क्रि अ) বহা। বাবে বাবে বেযা হোৱা, ভামৰি যোৱা, কোনো বস্তুৰ মূঠ খৰচ। ঠিক লক্ষ্যত লগা।
आसन जमाना। स्थित या आसीन होना। (कोई चीज) पचक जाना। (कारबार) बिगड़ना। लागत आना। लक्ष्य या निशाने पर बैठना (क्रि स—बैठाना)

बैठारना [लना]—(क्रि स)বহুওৱা।
बैठाना।

बैताल—(सं पुं) প্ৰেত-যোনি বিশেষ।
एक कल्पित भूत योनि।

बैद—[सं पुं] বৈদ্য, আয়ুৰ্বেদিক চিকিৎসক।
वैद्य। आयुर्वेदिक चिकित्सक।

बैन—(सं पुं) कथा ।
वचन ।

बैनामा—(सं पुं)মাটি বাৰী বিক্ৰী কৰা দলিল ।
जमीन, मकान आदि का विक्रय-पत्र ।

बैरंग-(वि) টিকট নলগাই ডাকত দিয়া চিঠি, বেযাৰিং, বিফল ।
बिना टिकट लगाये भेजी हुई चिट्ठी । विफल ।

बैर—(सं पुं) শত্ৰুতা ।
शत्रुता । वैमनस्य ।

बैरक, बैरख-সেনানিবাস, ছাউনি ।
सैनिक- अड्डा ।

बैरागी–[सं पुं] বৈৰাগী ।
एक प्रकार के वैष्णव-साधु ।

बैरी—[वि] শত্ৰু ।
शत्रु ।

बैल—(सं पुं) বলধ । মূৰ্খ ।
बधिया किया हुआ गौ जाति का नर । मूर्ख ।

बैसना—(क्रि अ) বহা ।
बैठना ।

बैसवारा—[वि] যুৱক ।
जवान । युवक ।

बैसाखी—[सं स्त्री] খোৰাৰ লাখুটি ।
लँगड़े की लाठी । लाठी ।

बोआई—[सं स्त्री] শস্য সিচাঁৰ বানচ, অথবা কাৰ্য্য ।
बीज बोने की मजदूरी, काम या भाव ।

बोझ, बोझा—[सं पुं] বোজা, গধুৰ ভাৱ, কোনো কামৰ উত্তৰ-দায়িত্ব ।
भार । भारीपन । किसी काम का उत्तरदायित्व ।

बोझना–[क्रि स] বোজা জাপি দিয়া ।
बोझ लादना ।

बोझल, बोझिल—(वि) বেছি বোজা থকা, গধুৰ ।
भारी बोझ वाला । वजनी ।

बोटी—[सं स्त्री] মাংসৰ সৰু কটা টুকুৰা ।
मांसका छोटा कटा हुआ टुकड़ा ।

बोतल—(सं स्त्री) বটল ।
लम्बी गरदनवाली कांच का एक प्रसिद्ध पात्र ।

बोदा—[वि] मूर্খ, দুর্ব্বল, নিশ-কতীয়া।
मूर्ख। सुस्त। कमजोर।

बोध—(सं पुं) জ্ঞান, সান্ত্বনা, ধৈর্য্য।
ज्ञान। सांत्वना। धैर्य।

बोधन—(सं पुं) জ্ঞান দিয়া, বুজ দিয়া কার্য্য, জগোৱা কাৰ্য্য, দুর্গাপুজাৰ প্রথম দিনা দুর্গাক জাগৰণ কৰা কার্য্য, উদ্বোধন।
बोध या ज्ञान करना। जगाना।

बोधिसत्व—(सं पुं) বোধি সত্ত্ব, মহাত্মা বুদ্ধৰ নাম বিশেষ।
महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम।

बोना, बोवना—(वि) গুটি গিঁচা, কোনো কথাৰ সূত্রপাত কৰা।
खेत में बीज छिड़कना या बिखे-रना। किसी बात का सूत्रपात करना।

बोरना—(क्रि स) কলঙ্কিত অথবা বদনাম দি নষ্ট বা বেয়া কৰা, পানীত ডুবোৱা।
कलंकित या बदनाम करके नष्ट करना। पानी में डुबाना।

बोरसी—[सं स्त्री] জুইশাল।
अगीठी।

बोरा—[सं पुं] বস্তা, মৰাপাটৰ ডাঙৰ মোনা।
टाट का बड़ा थैला।

बोरी—(सं स्त्री) সৰু বস্তা।
छोटा बोरा।

बोल—(सं पुं) বচন, আক্ষেপ লগা কথা, ব্যংগবাণ।
वचन। उक्ति। आक्षेप पूर्ण बात, ताना या व्यंग।

बोलचाल, बोलाचाली-[सं स्त्री] কথা বতৰা।
बातचीत।

बोलती—[सं स्त्री] কথা কোৱাৰ শক্তি।
बोलने की शक्ति।

बोलना—[क्रि अ] কথা কোৱা।
बात कहना।
[क्रि स] কোৱা, কথা দিয়া, ঠাট্টা মস্কৰা কৰা।
कहना। बात पक्का करना। छेड़-छाड़ करना।

बोल-पट—(सं पुं) চিনেমা।
चित्रपट। सिनेमा।

बोली—(सं स्त्री) বাণী, অর্থযুক্ত শব্দ, নীলামৰ সময়ত দাম কৰা ধ্বনি। উপভাষা। ব্যংগ মূলক

अভিযোগ।
वाणी। सार्थक शब्द या बात। नीलाम के समय चिल्ला कर चीज का दाम लगाना। किसी स्थान के लोगों की बातचीत की भाषा। ताना।

बोहनी—(सं स्त्री) বহনি, পোণ প্ৰথমে হোৱা নগদ বিক্ৰী (পুৱা বা সন্ধ্যা সময়ত।)
किसी चीज या दिन की पहली बिक्री या उससे प्राप्त होनेवाला धन।

बोहित-(सं पुं) ডাঙৰ নাৱ।
बड़ी नाव।

बौंरना—[क्रि स]লতা, গছ আদিত ফুল ধৰা।
लता, पौधे आदि का फूलना।

बौखलाना—[क्रि अ] খঙৰ কোবত যেই সেই বা আবোল তাবোল বকা।
क्रोध में आकर अंड-बंड बातें कहना।

बौछार—[सं स्त्री] বৰষুণৰ ছাটি, কোনো বস্তু খুব বেছি আহিপৰা, একেবাহে হৈ থকা ব্যংগপূৰ্ণ অথবা কটু আলোচনা আদি।
हवा के झोंके से आनेवाली वर्षा की झड़ी। किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में आकर गिरना या पडना। लगातार कही जाने-वाली व्यंगपूर्ण या कटु आलोचना की बातें।

बौना—[सं पुं] বাওনা।
बहुत ठिगने या नाटे कद का मनुष्य।

बौर—(सं पुं) আমৰ মল।
आम की मंजरी।
[वि] পাগল।
बौरा। पागल।

बौरना—[क्रि अ] আমে মলিওৱা।
आमकी मंजरी निकलना।

बौरा—[वि] পাগল, উন্মাদ।
पागल। विक्षिप्त।

बौराना—[क्रि अ] পাগল হোৱা, পাগলৰ দৰে কাম কৰা অথবা কথা কোৱা।
पागल हो जाना। पागलों की तरह काम या बातें करना।

ब्याज—(सं पुं) সুত।
सूद।

ब्याजू—(वि) সুতৰ বাবে দিয়া ধন।

ब्याज या सूद पर दिया जाने-वाला धन।

ब्याधा—(सं पुं) চিকাৰী, চৰাই চিকাৰী।
शिकारी। चिड़ीमार।

ब्याना—(क्रि स) বিযন, প্ৰসৱ কৰা (পশুৰ)।
जनना। प्रसव करना (पशुओं के लिये)

ब्यालू—[सं पुं] জলপান।
संध्या समय या रात के पहले पहर किया जानेवाला भोजन।

ब्याह—(सं पुं) বিয়া।
विवाह।

ब्याहता—(वि) যাৰ সৈতে বিয়া হৈছে, বিয়া কৰাই অনা তিৰোতা।
जिसके साथ विवाह हुआ हो।

ब्योंड़ा—(सं पुं) দুৱাৰ দিয়া শলখা, দুৱাৰ দাং।
दरवाजा बन्द करने का अरगल।

ब्योंत—(सं स्त्री) আয় আৰু খৰচৰ হিচাপ ঠিককৈ ৰখা, কাম সম্পূৰ্ণ কৰাৰ যুক্তি অথবা ব্যৱস্থা, উপায়, পিন্ধা কাপোৰ সিবলৈ কৰা কটা-চিঙা।
आमदनी खर्च का हिसाब ठीक रखना। काम पूरा करने की युक्ति, उपाय या व्यवस्था। तरीका। पहनने के कपड़े बनाने के लिये कपड़े की काँट-छाँट।

ब्योंतना—(क्रि स) জুখি-মাখি কাপোৰ কটা।
पहनने का कपड़ा बनाने के लिये कपड़ा नाप कर उसे काटना-छाँटना।

ब्योरा—(सं पुं) বিৱৰণ, বৃত্তান্ত, পাৰ্থক্য।
विषय की हरेक बात का सविस्तार उल्लेख या कथन। विवरण। वृत्तांत। फरक।

ब्योरेवार—[क्रि वि] বহল ভাবে, বহলাই।
विस्तार के साथ।

ब्योहर—[सं पुं] টকা ধাৰে দিয়া কাম অথবা ব্যৱসায়।
रुपये उधार देने का काम या व्यापार।

ब्योहारना—(क्रि स) ব্যৱহাৰ কৰা বা আচৰণ কৰা।
व्यवहार या आचरण करना।

ब्राह्मपद—(सं पुं) मुक्ति।
मुक्ति।

ब्राह्म—(वि) ब्रह्म सम्बन्धीय।
ब्रह्म सम्बन्धी।

ब्राह्म मुहूर्त—(सं पुं) ब्रह्म मुहूर्त्त, दोक मोकालि।
सूर्योदय से दो घड़ी पहले का समय। प्रभात।

ब्रीड़ा—[सं स्त्री] लाज।
लज्जा।

ब्वौना—(क्रि स) बीज सिँचा।
बोना (बीज आदि)।

भ

भ—वर्णमालाव चब्बिश संख्याव आखव।
वर्णमाला का चौबासवाँ वर्ण।

भंग— (सं पुं) भङा, खण्डित होवा क्रिया अथवा ध्वंस, विनाश।
टूटने, खंडित होने या निर्धारित होने की क्रिया या भाव। ध्वंस, विनाश।. टेढ़ापन।

भंगड़, भंगेड़ी—(वि) भाङुवी।
बहुत या नित्य भांग पीनेवाला।

भंगना— (क्रि अ) भङा-छिङा, छेद पवा, भावि योवा।
टूटना। दबना।
(क्रि स) भङा, छिङा, ढबाई दिया।
तोड़ना। दबाना।

भंगार—(सं पुं) ववषुणव पानी जमा होवा गाँत।
बड़ा गड्ढा जिसमें बरसात का पानी इकट्ठा होता है।

भंगी—भाङोता, नष्ट कवोँता।
भंग करनेवाला। नष्ट करने वाला।
[सं पुं] हविजन, मेतव, भाङुवी।
मेहतरों की जाति। भंगेड़ी।
(सं स्त्री—भंगिन)

(सं स्त्री) नाৰীসকলৰ অঙ্গী-ভঙ্গী।
स्त्रियों की चेष्टाएँ। हाव-भाव।

भंगुर—(বি) ভঙ্গুৰ, নাশৱান, ঠুনুকা, বেঁকা।
नाशवान। जल्दी टूट जानेवाला। टेढ़ा।

भंजक—(বি) ভঙা-চিঙা কৰোঁতা-জন।
भंग करने या तोड़नेवाला।

भंजन—[सं पुं] ভঙা, চিঙা, নাশ।
भंग करना। तोड़ना। नाश।
(বি) ভঙা, নষ্ট কৰোঁতাজন।
तोड़ने, बिगाड़ने या नष्ट करने-वाला।

भँजना—(ক্রি অ) খণ্ডিত হোৱা, ভঙা, (টকা পইচা) ভঙোৱা, খুচুৰা কৰা, গদা, মুদ্‌গৰ আদি ঘুৰোৱা, কাগজৰ ভাজ দিয়া।
टुकड़े होना। (सिक्का आदि) भुनना। भाँजा जाना। कागज के तावों का कई परतों में मोड़ा जाना। (क्रि स-भंजना, भँजाना)

भंटा—(सं पुं) বেঙেনা।
बैंगन।

भंड—(सं पुं) বিদূষক, বহুৰা, মাটিৰ ডাঙৰ হাঁড়ি।
भाँड़।
(বি) ভণ্ড, বেয়া, অশ্লীল কথা কওঁতা, ধূৰ্ত্ত, পাষণ্ড।
भद्दी, गन्दी या अश्लील बातें करनेवाला। धूर्त। पाखण्डी।

भंडना—[ক্রি স] ক্ষতি কৰা, নষ্ট কৰা, ভঙা-চিঙা কৰা।
हानि पहुँचाना। बिगाड़ना। तोड़ना-फोड़ना।
(ক্রি অ) চাৰিওপিনে বদনাম কৰি ফুৰা।
चारों ओर बदनामी करते फिरना।

भंडा—(सं पुं) এবিধ ডাঙৰ বাচন, গোপন ৰহস্য।
एक प्रकार का बड़ा बरतन। भेद, रहस्य।

भंडा फूटना—ৰহস্য প্ৰকাশ হোৱা, [মেকুৰী জোলোঙাৰ পৰা ওলোৱা]।
रहस्य प्रकट होना।

भंडार—(सं पुं) ভাণ্ডাৰ, ভঁড়াল, খাদ্য বস্তু ৰখা ঠাই, পেট।
कोष, खजाना। खाने पीने की

चीजें रखने का स्थान । कोठार । उदर ।

भंडारा—[सं पुं] ভাণ্ডাৰ, সমূহ, সন্ত-মহন্তক দিয়া ভোজ-ভাত ।
भंडार । समूह । साधु-सन्तों का भोज ।

भंडारी—(सं पुं) ভঁৰালী, ৰান্ধনী, কোষাধ্যক্ষ ।
कोषाध्यक्ष । रसोइया ।

भँड़ैती—[सं स्त्री] বহুৱালি ।
भाँडों का काम या पेशा ।

भँड़ौआ— (सं पुं) হাস্যৰসৰ সাধাৰণ কবিতা ।
हास्यपूर्ण निम्न कोटि की कविता ।

भँवर—(सं पुं) ভ্ৰমৰ, চাকনৈয়া, গাঁত ।
भौंरा । नदी के बहाव का स्थान॰ जहाँ पानी चक्कर की तरह घूमता है । गड्ढा ।

भँवर-जाल—(सं पुं) সাংসাৰিক মায়া জাল, কাজিয়া-পেছাদ ।
सांसारिक झगड़े-बखेड़े । भ्रम-जाल ।

भँवरा—(सं पुं) ভোমোৰা, ভ্ৰমৰ ।
भौंरा । भ्रमर ।

भँवरी— (सं स्त्री) চাকনৈয়া, ভ্ৰমৰী ।
पानीका चक्कर । भंवर । भौंरी ।

भँवाना—(क्रि स) ঘুৰাই ফুৰোৱা, ফাঁকিত বা মিছা জালত পেলোৱা ।
घुमाना । धोखे में डालना ।

भइया,—(सं पुं) ভাই, সম-নীয়াৰ প্ৰতি কৰা সম্বোধন ।
भाई । भाई या बराबरवालों के लिये सम्बोधन ।

भक भकाना—(क्रि अ) জ্বলোতে ভক্‌ভকাই শব্দ কৰা ।
भक भक शब्द करके जलना ।

भकाऊँ—[सं पुं] ভয় লগা বস্তু । ল'ৰা-ছোৱালীক ভয় দেখুৱাবৰ কল্পনা কৰা কাণখোৱাৰ দৰে জীৱ বিশেষ ।
हौआ ।

भकुआ—[वि] মূৰ্খ ।
मूर्ख ।

भकुआना— [क्रि अ] আচৰিত হোৱা ।
भौचक्का होना ।
(क्रि स) মূৰ্খ কৰা ।
मूर्ख बनाना ।

भकोसना—(ক্রি স) ততাতৈযাকৈ অথবা বেয়া ভাবে খোৱা।
जल्दी जल्दी या भद्देपनसे खाना।

भक्त वत्सल—(वि) ভক্তবৎসল, ভক্তসকলৰ প্ৰতি কৃপা কৰোঁতা জন, ঈশ্বৰ।
भक्तोंपर कृपा रखनेवाला।

भक्षक, भक्षी—[वि] ভক্ষক, নিজৰ স্বাৰ্থৰ বাবে আনৰ সৰ্ব্বনাশ কৰোঁতা।
खानेवाला। अपने स्वार्थके लिये किसी का सर्वनाश करनेवाला।

भक्षण, भषना—[सं पुं] খোৱা।
खाना।

भग—[सं पुं] সূৰ্য্য, ধন সম্পত্তি, সৌভাগ্য।
सूर्य। धन सम्पत्ति। सौभाग्य।
(सं स्त्री) স্ত্ৰীৰ যোনি, জননেন্দ্ৰিয়।
स्त्री की योनि या जननेन्द्रिय।

भगत— (বি) ভক্ত, মাছ, মাংস নোখোৱা জন, নিৰামিষাভোগী।
भक्त। वह जो मांसादि न खाता हो।

भगति, भगती—(सं स्त्री) ভক্তি।
भक्ति।

भगदड़—[सं स्त्री] বহুত মানুহ একেলগে ইপিনে সিপিনে দৌৰা-দৌৰি কৰা।
बहुत से लोगों का एक साथ इधर उधर या किसी एक ओर को भागना।

भगना—(ক্রি अ) পলোৱা।
भागना। (ক্রি স-भगाना, भजाना)
(सं पुं) ভাগিন।
भानजा। बहन का बेटा।

भगिनी—(सं स्त्री) ভনী।
बहन।

भगोड़ा, भग्गू, भगौहाँ—(सं पुं) পলৰীয়া, কাপুৰুষ।
भागनेवाला। कायर।

भचकना—[ক্রি अ] (আচৰিত হৈ) স্তব্ধ হোৱা, হঠাতে লেঙুৰিয়াই যোৱা অথবা লেকেচাই খোজ কঢ়া।
आश्चर्य से स्तब्ध होकर रह जाना। अचानक लंगड़ाते हुए चलना।

भच्छना—(ক্রি स) খোৱা।
खाना।

भजना—[ক্রি अ] প্ৰাৰ্থনা কৰা, জোখ কৰা, ধাৱণ কৰা বা

লোৱা, পোৱা।
भजन करना। भोगना। धारण या वहन करना। प्राप्त होना।

भजनी[क]—[सं पुं] গায়ক, ভজন গায়ক।
भजन गानेवाला। गायक।

भट—(सं पुं) যুঁজাৰু, সৈনিক, পালোৱান।
योद्धा। सैनिक। पहलवान।

भटकना—(क्रि अ) বাট পাহৰি ইপিনে সিপিনে ঘূৰি ফুৰা, বাট পাহৰা, ভ্ৰান্তিত পৰা।
इधर उधर भूलकर घूमते फिरना। भ्रममें पड़ना। (क्रि स–भटकाना)

भट्टारक—(सं पु) ঋষি, পণ্ডিত, সূৰ্য্য, ৰজা, দেৱতা।
ऋषि। पंडित। सूर्य। राजा। देवता।
(वि) মাননীয়।
माननीय।

भट्ठा—(सं पुं) ডাঙৰ চৌকা, ইটা আদি তৈয়াৰ কৰিবৰ নিমিত্তে গঢ়া অগ্নিকুণ্ড বা ভাটা।
बड़ी भट्ठी। ईंट आदि पकाने का पजावा।

भट्ठी—(सं स्त्री) ইটা আদিৰে গঢ়া ডাঙৰ চৌকা, দেশীয় মদৰ দোকান।
ईंटों आदि का बड़ा चुल्हा। देशी शराब की दूकान।

भठियारा—[सं पुं] বঙলা অথবা চৰাই ঘৰত থকা আলহী সকলৰ থকা-মেলা, খোৱা-লোৱাৰ দিহা কৰোঁতা।
सराय की देखरेख और उसमें ठहरनेवालों के भोजन का प्रबंध करनेवाला।

भड़कदार, भड़कीला—[वि] ঠাট্ বাটৰে থকা, জাঁকজমকেৰে থকা।
तड़क-भड़क या चमक-दमक वाला।

भड़कना—(क्रि अ) জোৰেৰে বা বেগাই জ্বলি উঠা, হঠাতে চকিত হোৱা।
तेजी से जल उठना। अचानक चौंकना। (क्रि स—भड़काना)

भड़भड़ाना—(क्रि स) ভোৰ ভোৰোৱা।
भड़ भड़ शब्द उत्पन्न करना।

भड़भड़िया—(वि) বঢ়াই বঢ়াই অনৰ্থক কথা কোৱা, ওফাইদাং মাৰি কথা কোৱা।

बहुत बढ़ चढकर व्यर्थ बातें करनेवाला।

भड़भूँजा—[सं पुं] হিন্দু জাতি বিশেষ। ভজা বা পোৰা বস্তু বেহানি বিক্ৰী কৰা ব্যৱসায়ী জাতি।

भाड़में अन्न भूनने का काम करने वाली एक जाति।

भड़साँई—[सं स्त्री] চৌকা বিশেষ।

भाड़।

भड़ास—[सं स्त्री] মনতে গুজৰি গুমৰি থকা ভাব।

मनमें छिपा हुआ असन्तोष या क्रोध की अवस्था।

भड़ुआ-(सं पुं)বেশ্যাৰ দালাল।

वेश्याओं का दलाल।

भड्डर—(सं पुं) গণক জাতি।

सामुद्रिक आदि के द्वारा भविष्य बतानेवाला ब्राह्मण।

भणित—(वि) কোৱা, কথিত।

कहा हुआ। कथित।

भणिति—(सं स्त्री) ফকৰা, যোজনা।

लोकोक्ति। कहावत।

भतार, भरतार, भर्तार—(सं पुं)

ভতাৰ, স্বামী।

पति।

भतीजा—[सं पुं] ভতিজা।

भाई का लड़का।

भत्ता—(सं पुं) বানচ (কৰ্মচাৰীয়ে পোৱা অতিৰিক্ত মজুৰি বা খৰচ।

किसी कर्मचारीको मिलनेवाला अतिरिक्त व्यय।

भदंत—(वि) পূজনীয়, মাননীয়।

पूज्य। मान्य।

भदई—[सं स्त्री] ভদীয়া, ভাদ মাহত হোৱা ফচল।

भादों में तैयार होनेवाली फसल।

भद्दा—(वि) কুৰূপ, অশ্লীল।

कुरूप। अश्लील।

भद्रा—(सं स्त्री) গৰু, দুৰ্গা, পৃথিৱী,এটি নিষিদ্ধ যোগ, বাধা-বিঘিনি।

गाय। दुर्गा। पृथ्वी। ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग।

भनक–(सं स्त्री) উৰা বাতৰি, সৰু শব্দ ।
उड़ती हुई खबर । धीमा शब्द ।

भनकना, भनना–(ক্রি স) কোৱা ।
कहना ।

भभकना—(ক্রি অ) উতলা, বৰকৈ জ্বলি উঠা, খণ্ডত জ্বলি-পকি উঠা ।
उबलना । जोर से जलना । भड़कना (आगका) ।

भभका—(सं स्त्री) মিছা ধমক ।
झूठी धमकी ।

भभरना—(ক্রি অ) ভীত হোৱা, ভয় খোৱা, মিছা পাকত পৰা, একেবাৰে পৰি যোৱা ।
भयभीत होना । घबरा जाना । भ्रममें पड़ना । एकदमसे गिर पड़ना ।

भभूत—(सं स्त्री) ভস্ম ধুলি ।
वह भस्म जिसे शैव मस्तक और भुजाओं पर लगाते हैं ।

भयभीत,भयातुर—(বি) ভয়াতুৰ, ভীত হোৱা ।
डरा हुआ ।

भयावन[ा]—[বি] ভয় লগা, ভয়াবহ ।
डरावना ।

भयो—[स ं स्त्री] ভাই বোৱাৰী ।
छोटे भाई की स्त्री ।
(ক্রি অ) হ'ল ।
'हुआ' का एक रूप '

भर—[বি] সম্পূর্ণ, মুঠত, পুৰ হৈ থকা ।
कुल । पूरा । भरा हुआ या पूरा ।
(ক্রি বি) বলেৰে ।
बलसे ।
[स ं पु ं] বোজা, হিন্দু জাতি বিশেষ ।
बोझ । हिन्दुओं की एक जाति ।

भरकना—[ক্রি অ] জ্বলি উঠা, বান্ধি থোৱা লাৰু আদি ফাটি সিচঁৰতি হৈ যোৱা ।
भड़कना । बँधे हुए लड्डू आदि का फूटकर बिखर जाना ।

भरतखंड—(स ं पु) ভাৰতবৰ্ষ ।
भारत वर्ष ।

भरना—(ক্রি স) পুৰ্ণকৰা, ঢালি দিয়া, ধাৰ পৰিশোধ কৰা ।
সহ্য কৰা ।

पूर्ण करना। उँड़ेलना। ऋण चुकाना। निर्वाह करना। सहना।

(क्रि अ) পূৰ হোৱা, ঢলা, ধাৰ আদি পৰিশোধ হোৱা। হৃষ্ট-পুষ্ট হোৱা।

पूर्ण होना। उँड़ेला जाना। ऋण या देन चुकाया जाना। शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना। (क्रि स–भराना)

भरनी—(सं स्त्री) বাণি, পথাৰত পানী সিঁচা।

करघे की ढरकी। खेत में पानी भरने की क्रिया या भाव।

भरपाई—[सं स्त्री] পাবলগীয়া পূৰকৈ পোৱা, পাবলগীয়া পাই লিখি দিয়া ৰচিদ।

पूरा पूरा पावना, पा जाना। पावना पाकर लिखी जानेवाली रसीद।

भरपूर—(वि) ভৰপূৰ।

पूरी तरह से भरा हुआ। जिसमें कोई कमी न हो।

(क्रि वि) সম্পূর্ণ ভাবে।

पूरी तरह से।

भरभराना—(क्रि अ) ৰোমাঞ্চিত হোৱা, শৰীৰৰ নোম ডাল ডাল হোৱা, ভয় খোৱা।

शरीर के रोएँ खड़े होना। घबराना। अचानक नीचे आ गिरना।

भरमना—[क्रिअ] পকৰাই পোৱা, বাট ভুল কৰি ঘূৰি ফুৰা, মিছা কথা শুনি কাৰোবাৰ হাতত ঠগ খাই ঘূৰি ফুৰা।

भ्रममें पड़कर इधर उधर घूमना। मारा मारा फिरना। भटकना। किसी के धोखे में आना। [क्रि स–भरमाना]

(सं स्त्री) ভুল, ফাঁকি।

भूल। भ्रम। धोखा।

भरमार—(सं स्त्री) প্ৰচুৰতা।

प्रचुरता।

भर-सक—[क्रि वि] যথা সম্ভৱ, যথাশক্তি।

जहाँ तक हो सके। यथा शक्ति।

भरसाई—[सं स्त्री] চোকা বিশেষ।

भाड़।

भराई—(सं स्त्री) ভৰোৱা বা পুৰোৱা কাম বা তাৰ বাবে দিয়া মজুৰি।

भरने की क्रिया, भाव या मजदूरी

भरी—(सं स्त्री) ভৰি, এতোলাৰ ভাৰ বা ওজন।
तोले की तौल।

भरैया—[वि] ভৰোঁতা, পালক, পালনকৰ্ত্তা।
भरनेवाला। पालक।

भरोसा—(सं पुं) ভাৰসা, আশা, আশ্ৰয়, দৃঢ় বিশ্বাস।
आशा। सहारा। दृढ़ विश्वास।

भर्त्ता—[सं पुं] ভৰণ-পোষণ কৰোঁতা, অধিপতি, স্বামী, পতি।
भरण पोषण करनेवाला। अधिपति। स्वामी। पति।

भर्त्सना—(सं स्त्री) গালি-গালাজ, ভৰ্ৎসনা।
फटकार।

भर्राना—(क्रि अ) ভোৰ ভোৰোৱা।
भर्र भर्र शब्द होना। भर भराना।

भलमनसत [सी]—(सं स्त्री) সজ্জনতা, সৌজন্য।
सज्जनता। सौजन्य।

भला—(वि) উত্তম, ভাল, শ্ৰেষ্ঠ।
उत्तम, बढ़िया।
(सं पुं) মঙ্গল, লাভ।
कुशल। लाभ।
(अव्य) ভাল, কুশল।
अच्छा। खैर।

भलाई—(सं स्त्री) সজগুণ, উপকাৰ, মঙ্গল।
भलापन। उपकार। लाभ।

भले—(क्रि वि) ভালদৰে।
भली भाँति।
(अव्य) বৰকৈ।
खूब। वाह।

भव—(सं पुं) উৎপত্তি, শিৱ, মেঘ, সংসাৰ, কামদেৱ।
उत्पत्ति। शिव। बादल। संसार। कामदेव।
(वि) মঙ্গল, জন্ম।
शुभ। उत्पन्न।

भव-जाल—(सं पुं) সাংসাৰিক জঞ্জাল, মায়াজাল।
संसार का माया जाल। झंझट।

भवन—[सं पुं] ঘৰ, মহল, অট্টালিকা, জগৎ, সংসাৰ।
मकान। महल। इमारत। आश्रम या आधार का स्थान। जगत्, संसार।

भव-भय— (सं पुं) বাবে বাবে জন্মলৈ মৰণ বৰণ কৰা ভয়, সংসাৰচক্ৰৰ বাবে ভয়।
बार बार जन्म लेने और मरने का भय।

भवसागर—[सं पुं] সংসাৰ ৰূপী সাগৰ।
संसार रूपी सागर।

भवानी- (सं स्त्री) পাৰ্ব্বতী, দুৰ্গা।
पार्वती। दुर्गा।

भवितव्य—[सं पुं] হবলগীয়া, অৱশ্যম্ভাবী।
होनहार। भावी।

भवितव्यता—[सं स्त्री] যি হব-লগীয়া আছে, ভাগ্য।
भवितव्य।

भविष्यद् वक्ता, भविष्यवक्ता—[सं पुं] সৰ্ব্বজ্ঞান, জ্যোতিষী।
भविष्य में होनेवाली बात बताने वाला। ज्योतिषी।

भवेश— [सं पुं] মহাদেৱ।
महादेव।

भव्य— (वि) ভব্য, উপযুক্ত, সুন্দৰ, বৃহৎ, ডাঙৰ-দীঘল, বৰ শৰত, মঙ্গলময়, সত্য।
देखने में विशाल और सुन्दर। शुभ, मंगल कारक। सत्य।

भसना—[क्रि अ] সাঁতোৰা। ভাঁহি থকা। पानी पर तैरना।

भसाना—[क्रि स] পানীত ভহাই দিয়া, পানীত পেলাই দিয়া।
किसी चीज को पानी में तैरने के लिये छोडना। पानी में डुबाना या डालना।

भसींड—(सं स्त्री) পদুমৰ নলী।
कमल-नाल।

भसुंड— (सं पुं) হাতী, হাতীৰ শুঁৰ।
हाथी। हाथी की सूंड।
(वि) শকত-আৱত।
मोटा-ताजा।

भसुर—[सं पुं] ভাই শহুৰ, গিৰি-যেকৰ ককায়েক।
पति का बडा भाई।

भस्म—(सं पु) ভস্ম, ছাই।
राख। वैद्यक मे औषधिकी तरह काममे लानेके लिये धातुओ आदि का वह रूप जो उन्हे विशिष्ट क्रियाओ से फूँकने से प्राप्त होता है।

[वि] পুৰি ছাই হোৱা।
जो जलकर राख हो गया है ।

भस्मसात्,—[वि] পুৰি ছাই হোৱা। ভস্মীভূত।
जो जलकर राख हो गया हो।

भहराना—(क्रि अ) হঠাতে তলত পৰা, ভাঙি পৰা।
अचानक नीचे आ गिरना। टूट पड़ना।

भांग—[सं स्त्री] ভাঙৰ গছ, ভাং।
एक पौधा जिसकी पत्तियाँ लोग नशे के लिये पीसकर पीते हैं।

भाँजना—[क्रि स] তৰপ কৰা, জপা, মুদ্গৰ ঘূৰোৱা।
तह करना। मोड़ना। मुगदर आदि घुमाना।

भाँजा, भानजा—(सं पुं) ভাগিন।
भागिनेय। (सं स्त्री—भाँजी, भानजी)।

भाँड़—(सं पुं) विदूषक, বহুৱা, নষ্ট, বাচন, ৰহস্যোদ্ঘাটন।
विदूषक। विनाश। बरतन। रहस्योद्घाटन। उपद्रव।

भाँड़ा, भांड—(सं पुं) বাচন; ব্যৱসায়ৰ বস্তু।
बरतन। व्यापार की वस्तुएँ। माल।

भाँड़ना—(क्रि अ) মিচাকৈয়ে ঘূৰি-ফুৰা, চাৰিও পিনে আনৰ বদনাম ৰতি ফুৰা।
व्यर्थ इधर-उधर घूमना। चारों ओर किसी की निन्दा या बदनामी करते फिरना।
[क्रि स] নষ্ট কৰা।
बिगाड़ना। नष्ट करना।

भांडागार, भांडार—[सं पुं] ভঁৰাল।
भण्डार। कोश।

भाँति—(सं स्त्री) দৰে, নিচিনা, ৰীতি।
तरह। रीति।

भाँपना—(क्रि स) দূৰতে দেখি বুজি পোৱা, দেখা।
दूर से देख कर समझ लेना। देखना।

भाँवर—[सं स्त्री] চাৰিওপিনে ঘূৰা, বিয়াৰ সময়ত বৰ-কন্যা অগ্নিক প্ৰদক্ষিণ কৰা কাৰ্য্য।

चारो ओर घूमना। अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के अवसर पर वर और वधू करते हैं।

भा—(सं स्त्री) দীপ্তি, শোভা, কিৰণ, প্ৰকাশ, বিজুলি।
दीप्ति। शोभा। किरण। बिजली।
(अव्य) অথবা, বা, ইচ্ছা কৰিলে।
चाहे। या। वा।

भाई, भैया—(सं पुं) ভাই, লগৰীয়া বা সমনীয়াক কৰা সম্বোধন।
भ्राता। बराबर वालो के लिये आदर सूचक सम्बोधन।

भाईचारा—[सं पुं] ভাইৰ নিচিনা মৰমৰ ভাৱ আৰু ব্যৱহাৰ।
भाई के समान परम प्रिय होनेका भाव और व्यवहार।

भाई-दूज—[सं स्त्री] ভ্ৰাতৃ-দ্বিতীয়াৰ পৰ্ব্ব।
भैया दूज का पर्व।

भाईबन्द, भाईबन्धु—(सं पुं) একে বংশৰ বা গোত্ৰৰ লোক, ভাই, বন্ধু-বান্ধৱ আদি।
एक ही वंश या गोत्रके लोग। भाई और मित्र-बन्धु आदि।

भाई-बिरादरी—[सं स्त्री] জাতি অথবা একে সমাজৰ লোক।
जाति या समाज के लोग।

भाखना—[क्रि स] কোৱা।
कहना।

भाखा— [सं स्त्री] ভাষা, দেশীয় ভাষা
भाषा।

भाग—[सं पुं] অংশ, ফাল, ভাগ্য, কপাল সৌভাগ্য, ভাগ।

हिस्सा। अंश। तरफ। भाग्य। ललाट। सौभाग्य। किसी राशि या संख्या को कई अंशो में बाँटने की क्रिया।

भागदौड़—[सं स्त्री] লৰা-ঢপৰা, খৰ-খেদা, দৌৰি পলোৱা।
भगदड़। दौड़ धूप।

भागना—(क्रि अ) পলোৱা. কাম কৰিবলৈ ভয় কৰা বা পিছ হোহোকা।। দৌৰি পলোৱা।
पलायन करना। कोई काम करने से डरना या बचना। दौड़ना।

भागिनेय—[सं पुं] ভাগিন।
बहन का लड़का।

भागी—[सं पुं] ভাগী, অংশীদাৰ, অধিকাৰী।
हिस्सेदार। अधिकारी।

भाजन-(सं पुं) ভাগ কৰা কাৰ্য্য, বাচন, গ্ৰহণ কৰিবৰ যোগ্য ব্যক্তি।
भाग करने की क्रिया या भाव।
बरतन। कुछ लेने या पाने के योग्य पात्र।

भाजी-(सं स्त्री) ব্যঞ্জন বিশেষ, তৰকাৰী, ভজা আদি।
तरकारी, साग आदि के रूपमें खाने की वनस्पतियाँ या फल।

भाट—[सं पुं] চাৰণ, তোষামোদ কাৰী।
चारण। बन्दी। खुशामदी।

भाटक—[सं पुं] ভাৰা।
किराया।

भाटा—(सं पुं) ভাটা—(জোঁৱাৰৰ বিপৰীত গতি)
पानी का उतार।

भाड़—(सं पुं) চৌকা বিশেষ।
भड़भूँजों की अनाज भूनने की भट्ठी।

भाड़ा—(सं पुं) ভাৰা।
किराया।

भाण—[सं पुं] এক প্ৰকাৰৰ হাস্য প্ৰধান একাঙ্কীনাট। ছল
एक प्रकार की हास्य एकांकी। बहाना, मिस।

भाति—[सं स्त्री] শোভা, চমক
शोभा। चमक।

भाथी—[सं स्त्री] ভাতী, জুইত বতাহ দিয়া যতন।
भट्ठीकी आग सुलगानेकी धौंकनी।

भान—[सं पु] প্ৰকাশ, চমক, জ্ঞান, বিশ্বাস, ভুল ধাৰণা।
प्रकाश। चमक। ज्ञान। प्रतीति। कल्पित विचार या भ्रमपूर्ण धारणा।

भाना—[क्रि अ] জনা, বুজা। পছন্দ হোৱা।
भान होना। जान पड़ना। पसन्द आना। शोभा देना। घूमना।
(क्रि स)চমকোৱা ভঙা,ঘূৰোৱা।
चमकाना। तोड़ना। घुमना।

भानु—(सं पुं) সূৰ্য্য, ৰজা।
सूर्य। राजा।

भानुजा—(सं स्त्री) যমুনা।
यमुना।

भाप, भाफ—[सं स्त्री]ভাপ, বাষ্প।
वाष्प।

भाभर—(सं पुं) পাহাৰৰ নামনিৰ হাবি।
पहाड़ोंके नीचे तराई में का जङ्गल।

भाभी—[सं स्त्री] বৌ, নবৌ।
बड़े भाई की स्त्री।

भाम, भामा, भामिनी—(सं स्त्री) স্ত্ৰী, তিৰোতা।
स्त्री। औरत।

भायप— [सं पुं] ভাইৰ নিচিনা প্ৰেম সম্বন্ধ।
भाईचारा। भाई जैसा प्रेम सम्बन्ध।

भारती—(सं स्त्री) বচন, সৰস্বতী, বাণী।
वचन। सरस्वती। वाणी।

भार-वाह—(वि) ভাৰবাহী, যাৰ ওপৰত কোনো কাৰ্য্য বা পদৰ দায়িত্ব থাকে।
बोझ ढोनेवाला। जिसपर किसी कार्य या पद के कर्तव्यों का भार हो।

भारवाही—(वि) বোজা বা ভাৰ কঢ়িয়াওঁতা, ভাৰবাহী।
भार या बोझ ढोनेवाला।

भारिक— (वि) গধুৰ, ফিকা, উখহা, বোজা কাঢ়য়াওঁতাজন।
'भारी', सूजा हुआ,बोझ ढोनेवाला।

भारीपन—[सं पुं] গধুৰ হোৱাৰ ভাৱ।
भारी होनेका भाव।

भार्गव—[सं पुं] ভৃগুবংশত জন্ম হোৱা পুৰুষ, পৰশুৰাম।
भृगु के वंश या गोत्रमें उत्पन्न पुरुष। परशुराम।
(वि) ভৃগু সম্বন্ধীয়, ভৃগুৰ।
भृगु सम्बन्धी। भृगुका।

भार्या—(सं स्त्री) পত্নী।
पत्नी।

भाल—(सं पुं) কপাল।
कपाल। ललाट।

भाला—(सं पुं) বৰ্শা, যাঠী।
एक हथियार। बरछा।

भालू—[सं पुं] ভালুক।
रीछ।

भाव— [सं पुं] হোৱা–ক্ৰিয়া, অস্তিত্ব, ভাব, মনত জন্মা বিচাৰ

বা অভিপ্ৰায়। প্ৰেম, নিয়ম মূল্য।
होने की क्रिया या तत्व। अस्तित्व। मनमें उत्पन्न होनेवाला कोई विचार। अभिप्राय। मतलब। प्रेम। तरीका। दर। मूल्यमान।

भावह—(अव्य) ইচ্ছা যদি হয় তেন্তে।
इच्छा हो तो।

भावज—(सं स्त्री) ভাই-বোৱাৰী।
भाई की पत्नी।

भावता—(वि) প্ৰেম পাত্ৰ, প্ৰিয়, মৰমৰ।
प्रेमपात्र। प्रिय।

भावना—(सं स्त्री) ভাবনা, ইচ্ছা, কোনো কাম কৰাৰ মনোভাব।
मनमें उत्पन्न होनेवाला विकार। ध्यान। इच्छा। कोई काम करने का विचार।
[क्रि अ] ভবা, চিন্তা কৰা।
विचार करना। सोचना।
(वि) মৰমৰ।
प्यारा।

भावर[रि]—[सं स्त्री] পছন্দ হোৱা ক্ৰিয়া, অভিৰুচি।
भाने या पसन्द आने की क्रिया। अभिरुचि।

भावी—(सं स्त्री) ভৱিষ্যত, ভৱিষ্যতলৈ হবলগীয়া কথা, ভাগ্য।
भविष्यत् काल। भविष्यमें होने वाली बात। भाग्य।
[वि] ভৱিষ্যতে হবলগীয়া।
भविष्यमें आने या होनेवाला।

भावुक—(वि) ভাবুক, চিন্তাশীল।
भावना करने या सोचनेवाला। जिसके मनमें कोमल भावों की प्रबलता हो या जिसपर कोमल भावों का जल्दी और अधिक प्रभाव पड़ता हो। [सेंटिमेंटल]

भावुकता—[सं स्त्री] ভাবুক, অথবা চিন্তাশীল হোৱা ক্ৰিয়া বা ভাব।
भावुक, होनेकी क्रिया या भाव।

भावै—(अव्य) ইচ্ছা কৰিবলৈ।
चाहे।

भाषणा—[क्रि अ] ভাষণ দিয়া, বিবৃত্তি দিয়া, খোৱা।
बोलना। भोजन करना।

भाषित—[वि] কোৱা, কথিত।
कहा हुआ। कथित।

भास— [सं पुं] দীপ্তি, প্ৰকাশ, কিৰণ, ইচ্ছা ।
दीप्ति । प्रकाश । किरण । इच्छा।

भासना— [क्रि अ] উজ্জ্বল হোৱা, দেখা পোৱা, জনা, কোৱা ।
चमकना । दिखाई देना । जान पड़ना । कहना ।

भास्कर— [सं पुं] দিন, সূৰ্য্য ।
दिन । सूर्य ।

भिंजाना(जोना),भिगाना, भिगोना-(क्रि स) তিওঁওৱা ।
किसी चीज को पानी या तरल पदार्थ से तर करने के लिये उसमें डुबाना ।

भिक्षु - (सं पुं) ভিখাৰী, বৌদ্ধ সন্ন্যাসী ।
भिखमंगा । बौद्ध सन्यासी ।

भिखमंगा, भिखारी— (सं पुं) ভিখাৰী ।
भिक्षुक । (सं स्त्री—भिखारिणी भिखारिन ।)

भिजवाना—(क्रि स) পঠিওৱা ।
'भेजना' का प्रेरणार्थक ।

भिजाना—[क्रि स] তিওৱা, পঠিওৱা ।
भिगोना । भिजवाना ।

भिज्ञ—(वि) অভিজ্ঞ, জনা । जानकार ।

भिड़न्त—(सं स्त्री) মাল যুঁজৰ ক্ৰিয়া, মালযুঁজ ।
भिड़ने की क्रिया या भाव । मुठ-भेड़ ।

भिड़—[सं स्त्री] বৰল, এবিধ বিষাল শুং থকা পতঙ্গ ।
एक प्रकार का उड़नेवाला जह-रीला कीड़ा । बर्रे । ततैया ।

भिड़ना—[क्रि अ] খুন্দা খোৱা, প্ৰতিযোগিতালৈ আহি যুঁজ কৰা, লগত লাগি থকা ।
टक्कर खाना । मुकाबले में आकर लड़ना । साथ लगना ।

भितरिया—(सं पुं) ভিতৰুৱা, ভিতৰৰ ভাগত থকা, মনৰ ভাবক দমাই ৰাখোঁতা জন ।
भीतरी भागमें रहनेवाला । मन की भावना भीतर ही दबाये रखनेवाला ।
(वि) ভিতৰৰ ।
भीतरी । अन्दर का ।

भित्ति—[सं स्त्री] বেৰ, ভয় ।
दीवार । डर ।

भित्तिचित्र—[सं पुं] বেৰত অংকিত চিত্ৰাৱলী।
दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र ।

भिदना—[क्रि अ] ঘাইল হোৱা, আঘাত পোৱা, বিন্ধা খোৱা।
छेदा जाना । घायल होना ।

भिनकना—[क्रि अ] মাখিৰ ভন্ ভননি কৰা, মনত ঘৃণা ওপজা।
मक्खियों का भिनभिनाना। मनमें घृणा उत्पन्न होना ।

भिनभिनाना—(क्रि अ) ভন্ ভননি শব্দ কৰা ।
(मक्खियोंका) भिन भिन शब्द करना ।

भिनसार—[सं पुं] ৰাতিপুৱা । प्रात:काल ।

भिन्न—[वि] পৃথক, অন্য, দ্বিতীয়, অইন ধৰণৰ । ভগ্নাংশ
अलग। दूसरा । अन्य । और तरह का । भग्नांश ।

भिन्नाना—[क्रि अ] মূৰ ঘূৰোৱা, খঙত জলিপকি উঠা।
सिर चकराना । खिजलाना ।

भिलनी, भालनी—[सं स्त्री] ভীল জাতিৰ তিৰোতা ।
भील की स्त्री ।

भिश्त, भिस्त—(सं पुं) বেহেস্ত, স্বৰ্গ ।
बिहिस्त। (स्वर्ग)

भिश्ती—(सं पुं) চামৰাৰ পাত্ৰৰে পানী কাঢ়ওৱা লোক।
मशक में पानी ढोनेवाला व्यक्ति।

भींचना—[क्रि स] টনা । [চকুমুজা]
खींचना । मीचना ।

भीजना—(क्रि अ) তিতা, পুল-কিত অথবা আনন্দিত হোৱা। গা-ধোৱা, ভাল ভাবে ভিতৰত প্ৰবেশ কৰা ।
भीगना । पुलकित या गद्‌ गद्‌ होना । नहाना । अच्छी तरह किसी के अन्दर समाना ।

भींट—(सं स्त्री) সৰু সৰু হাফলু থকা মাটি ।
वह जमीन जिसपर छोटे छोटे टीले हों ।

भी—[अव्य] ও, কাৰো সৈতে বা অবিহনে, অৱশ্য, লৈ ।
किसीके साथ या सिवा, निश्चय पूर्वक या अवश्य। अधिक। तक ।

भीख—(सं स्त्री) ভিক্ষা ।
भिक्षा ।

भीगना—(क्रि स) তিতা, আর্দ্র হোৱা, ভিজা।
आर्द्र होना।

भीटा—[सं पुं] পাহাৰৰ টিলাৰ দৰে ওখ মাটি।
टीले की तरह कुछ ऊँची जमीन।

भीठा—(सं पुं) ৰবিশস্য-শাক-পাচলি হোৱা মাটি,ভেঁটি।
वह जमीन जिसपर केवल रबी की फसल होती है।

भीड़—(सं स्त्री) জন সমূহ, বিপদ, ভিৰ।
जनसमूह। किसी बात की अधिकता। संकट।

भीड़-भड़क्का—[सं पुं] দল-দোপ, হেন্দোল দোপ, মানুহৰ বেছি সমাগম।
भीड़ भाड़।

भीड़भाड़—[सं स्त्री] জনসমূহ, ভিৰ।
जनसमूह। भीड़।

भीत—[सं स्त्री] দেৱাল, বেৰ, ছাল, চাবি।
दीवार। चटाई। छत।

भीतर—[क्रि वि] ভিতৰ।
अन्दर।
[सं पुं] অন্তঃকৰণ, অন্তেঃপুৰ।
अन्तःकरण। अन्तःपुर।

भीतरी—(वि) ভিতৰৰ, লুকাই থকা।
अन्दरका। छिपा हुआ।

भीति—[सं स्त्री] ভয়, আশঙ্কা, বেৰ।
डर। आशंका। दीवार।

भीनना—(क्रि अ) কোনো বস্তুবে পূৰ হোৱা।
किसी वस्तुसे भर या युक्त हो जाना।

भीर—[सं स्त्री] ভিৰ, কষ্ট, বিপত্তি।
भीड़। कष्ट। विपत्ति।
[वि] ভীত, কাপুৰুষ।
डरा हुआ। भयभीत। कायर।

भीरु—(वि) ভীৰু, ভয়াতুৰ।
कायर। डरपोक।

भील—[सं पुं] জাতি বিশেষ।
एक जंगली जाति।

भुँइ—[सं स्त्री] ভূমি, পৃথিৱী।
पृथ्वी।

भुंइधरा (हरा)—(सं पुं) মাটিৰ তলত থকা আবাসদায়ক ঘৰ।
तहखाना।

भुँजना—(क्रि स) ভজা ।
भूना जाना ।
[स पुं] ভজা চাউল, বুট, বাদাম আদি ।
भूना हुआ चावल, चना आदि जो चबाकर खाया जाता है ।

भुँडा—(वि) লাওমূৰা, দুষ্ট ।
बिना सींग का । दुष्ट ।

भुअंगँ[म]भुजंग,।भुजग—(स पुं) সাপ ।
साँप । (सं स्त्री—भुजंगिनी, भुजगी ।)

भुकराँद [रायँध]— (स स्त्री) বন-জঙ্গল গেলি ওলোৱা দুৰ্গন্ধ ।
वनस्पतियो आदिके सड़ने की दुर्गन्ध ।

भुक्खड़—(स पुं) খকুৱা, পেটুক । কঙাল ।
पेटू । कंगाल ।

भुखमरा—[वि] ভোকত মৰা, ভোকাতুৰ ।
जो भूखों मरता हो । भुक्खड़ ।

भुखमरी—(स स्त्री) দুৰ্ভিক্ষ ।
दुर्भिक्ष ।

भुगतना—[क्रि स] ভোগকৰা । भोगना ।
[क्रि अ] সামৰা, কটোৱা, পৰিশোধ কৰা ।
निपटना । बीतना । चुकती होना (क्रि स-भुगताना)

भुगतान—[सं पुं] পৰিশোধ কৰা ক্ৰিয়া, মূল্য আদি দিয়া ।
भुगताने की क्रिया या भाव । मूल्य, देन आदि चुकाना या देना ।

भुच्च [ड़]—[वि] মূৰ্খ ।
मूर्ख ।

भुजंगा—(स पुं) ক'লা বৰণৰ চৰাই বিশেষ । সাপ ।
काले रंगकी एक चिड़िया । साँप ।

भुज— (सं पुं) বাহু, হাত, হাতীৰ শুড় ।
बाहु । बाँह । हाथ । हाथी का सूँड़ ।

भुजबंद—(सं पुं) বাজু, হাতৰ গহনা বিশেষ ।
बाजूबन्द ।

भुजा—[स स्त्री] বাহু ।
बाँह ।

भुजाली—[स स्त्री] নেপালীসকলে ব্যৱহাৰ কৰা খুকুৰী ।

नेपालियों की एक प्रकार की खुखडी।

भुनगा-(सं पुं) উৰি ফুৰা সৰু পোক।
एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

भुनना—[क्रि अ] ভজা।
भूना जाना।

भुनभुनाना— [क्रि अ] ভুন-ভুননি।
भुन भुन शब्द करना। बड़बडाना।

भुनाना—(क्रि स)ভজা (প্ৰেৰণাৰ্থক, টকা আধলি আদি খুচুৰা কৰা।
(भूनना) का प्रेरणार्थक। बड़े सिक्के आदिको छोटे सिक्कोंसे बदलना।

भुरकना-(क्रि अ) শুকাই কৰকৰীয়া হোৱা। পাহৰা।
सूखकर भुर भुरा हो जाना। भूलना।

भुरकस [कुस]— (सं पुं) নাডী ভুৰি ওলোৱা অৱস্থা, चूर्ण-विचूर्ण।
किसी वस्तु का वह रूप जो उसे खूब कुचलने या कूटने से प्राप्त होता है।

भुरता—(सं पुं) ভৰ্তা, ভাতত দিয়া বেঙেনা, আলু।
भरता। आलू, बैंगन आदिका चोखा।

भुरभुरा—(वि) মৰমৰীয়া, ঠুনুকা।
जरा सा आघात पर चूर चूर हो जानेवाला।

भुरभुराना- क्रि स) চটিওৱা, মৰমৰীয়া কৰা।
छिड़कना। भुर भुरा करना।

भुरहरे-[क्रि स । খুব ৰাতিপুৱাই, দোকমোকালিতে।
बड़े सबेरे।

भुलक्कड़- [वि] প্ৰায়ে পাহৰা ব্যক্তি।
प्रायः भूलनेवाला।

भुलना-(वि) সোনকালে পাহৰি যোৱা ব্যক্তি।
जल्दी भूल जानेवाला।

भुलवाना, भुलाना-[क्रि स]শংকিত পৰা। পাহৰোৱা।
भ्रममें डालना। 'भूलना' का प्रेरणार्थक।

भुलावा-(सं पुं) ফাঁকি।
धोखा।

भुवः-[सं पुं] অন্তৰীক্ষ লোক। অগ্নি।
अंतरिक्ष लोक।

भुवाल-[सं पु] ৰজা।
राजा।

भुस, भूसा-(सं पुं) ভুচি, পতান।
धान,गेहूँ आदि के डंठलों का महीन चूरा।(स स्त्री-भसी, भुसी]

भूँकना-(क्रि अ) কুকুৰৰ ভুক-ভুকনি, অনাহকত বকবক ৰব।।
[कुत्तों का] भूँ भूँ करना। व्यर्थ बकना।

भूँचाल, भूँडोल, भूकंप--[सं पुं] ভূমিকম্প।
पृथ्वी के ऊपरी भागका सहसा हिलना।

भू-(सं स्त्री) পৃথিবী, স্থান।
पृथ्वी। स्थान।

भूखंड-[सं पुं]ভূখণ্ড, মাটিৰ সৰু সৰু ভাগ।
पृथ्वी का कोई खंड। जमीनका छोटा टुकड़ा।

भूख-[सं स्त्री] ভোক, আৱশ্যকতা। উৎকট ইচ্ছা। क्षुधा। जरूरत (माल आदि खरीदनेकी)

भूख-हड़ताल-[सं स्त्री] অনশন।
अनशन।

भूखा—[वि] ক্ষুধিত, ইচ্ছুক, দৰিদ্ৰ।
क्षुधित। इच्छुक। दरिद्र।

भूगर्भ—(सं पुं) ভূগৰ্ভ, পৃথিৱীৰ ভিতৰৰ অংশ।
पृथ्वी का भीतरी भाग।

भू-चर—(सं पुं) ভূচৰ, পৃথিৱীৰ স্থল ভাগত থকা প্ৰাণী।
पृथ्वी पर चरनेवाले प्राणी।

भूत—(सं पुं) ভূত, সৃষ্টিৰ মূল তত্ত্ব, সৃষ্টিৰ জড় আৰু চেতন প্ৰাণী, অতীত কাল, প্ৰেত।
वे मूल द्रव्य जिससे सृष्टि की रचना हुई है। तत्व। सृष्टिके सभी जड़ और चेतन प्राणी। बीता हुआ समय। अतीत काल। प्रेत।
(वि) অতীত, সমান।
बीता हुआ। मिला हुआ। समान

भूतना—(सं पुं) ভূত।
भूत (सं स्त्री—भूतनी)।

भूति—[सं स्त्री] বৈভৱ, ধন, ছাই, উৎপত্তি, বৃদ্ধি।

वैभव । भस्म, राख । उत्पत्ति । वृद्धि ।

भू-देव, भूसुर—[सं पुं] ব্ৰাহ্মণ, বামুণ ।
ब्राह्मण ।

भूधर-(सं पुं) পাহাৰ, পৰ্ব্বত ।
पहाड़ । पर्वत ।

भूनना—[क्रि स] শুকান ভজা, বৰ কষ্ট দিয়া ।
जल की सहायता के बिना गरम करके पकाना । बहुत अधिक कष्ट देना ।

भूप—(सं पुं) ৰজা ।
राजा ।

भूमिज—(वि) মাটিৰ পৰা ওপজা ।
भूमि से उत्पन्न ।

भूमिधर—(सं पुं) খেতি বা মাটিৰ ওপৰত স্থায়ী অধিকাৰ পোৱা খেতিয়ক ।
वह खेतिहर जिसने भूमि या खेतपर स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो ।

भूमिया—(सं पुं) জমীদাৰ, গ্ৰামদেৱতা ।
जमींदार ; ग्राम देवता ।

भूमिसात्—[वि] ভূমিসাৎ, মাটিৰ লগত মিলি যোৱা ।
जो गिरकर भूमिके साथ मिल गया हो ।

भूमिहार—[सं पुं] বিহাৰ আৰু উত্তৰ প্ৰদেশৰ হিন্দু জাতি বিশেষ ।
बिहार और उत्तरप्रदेश की एक जाति ।

भूयसी—[वि] খুব বেছি ।
बहुत अधिक ।
(क्रि वि) বাৰে বাৰে ।
बार बार ।

भूरा—(सं पुं) খাকী ৰঙৰ, মাটি বৰণীয়া, চেনি ।
मिट्टी की तरह का या खाकी रंग । कच्ची चीनी । चीनी ।
[वि] মাটিৰ ৰঙৰ, খাকী ।
मटमैले रंगका । खाकी ।

भूरि—(सं पुं) ব্ৰহ্মা, সোণ ।
ब्रह्मा । सोना ।
(वि) বহুত ।
बहुत । भारी ।

भूल—(सं स्त्री) ভুল, দোষ, ত্ৰুটি ।

भूलने की अवस्था या भाव । गलती । चूक । कसूर ।

भूलना—(क्रि स) পাহৰা, মনত নৰখা ।
याद न रखना ।
[क्रि अ] মনত নথকা, ভুল হোৱা, দোষ হোৱা, আসক্ত হোৱা, অহঙ্কাৰী হোৱা ।
याद न रहना । गलती होना । आसक्त होना । घमण्डमें रहना ।
(वि) পাহৰা জন ।
भूलनेवाला ।

भूल-भुलैया—[सं स्त्री] ৰেখা আদিৰে সজা মেৰ পেচ থকা আকৃতি । বা নক্চা ।
चकाबू । रेखाओं आदि से बनाई हुई चक्करदार आकृति ।

भू-लोक—[सं पुं] পৃথিৱী, সংসাৰ ।
संसार ।

भूषण—(सं पुं) অলঙ্কাৰ ।
अलंकार । शोभा बढ़ानेवाली चीज ।

भूषा—(सं स्त्री) অলঙ্কাৰ, সজোৱাৰ বাবেসাম গ্ৰী, সাজোন-কাচোন ।
गहना । सजावट । सजाने की सामग्री ।

भूषित—[वि] অলঙ্কৃত, সজ্জিত ।
अलंकृत । सज्जित ।

भृंग—(सं पुं) ভোমোৰা ।
भौरा ।

भृंगराज-[सं पुं] বনস্পতি বিশেষ, এবিধ বৰল, পক্ষী বিশেষ ।
भंगरैया नामकी वनस्पति । काले रंगकी एक चिड़िया ।

भृंगी—(सं पुं) শিৱৰ এটি গণ ।
शिवजी का एक गण ।
(सं स्त्री) ভোমোৰা (পুং) চকুৰ মণি ।
भृंग या भौरे की मादा । आँखों की पुतली ।

भृकुटि—(सं स्त्री) চকুৰ চেলাউৰি ।
भौंह ।

भृत, भृत्य—[सं पुं] দাস, সেৱক ।
दास । सेवक ।

भृति—(सं स्त्री) সেৱা, বানচ, বেতন, দৰমহা, মূল্য, পালন

কৰা। ভৰণ-পোষণ কৰা।
सेवा। मजदूरी। वेतन। तनखाह। मूल्य। पालन करना। जीविका निर्वाह के लिये मिलने वाला धन।

भँगा—[सं पुं] কেঁৰা চকুৰা।
वह जिसकी आँखों की पुतलियाँ टेढ़ी-तिरछी चलती या रहती हों।

भेंट—[सं स्त्री] সাক্ষাৎ, উপহাৰ।
मिलना। उपहार।

भेंटना—(क्रि अ) সাক্ষাৎ কৰা।
मुलाकात करना। मिलना।
(क्रि स) আলিঙ্গন কৰা।
गले लगाना।

भेद [उ]—(सं पुं) ৰহস্য, মৰ্ম্ম।
रहस्य। मर्म।

भेक—[सं पुं] বেঙ, ভেকুলি।
मेंढक।

भेख, भेष, भेस— [सं पुं] বেশ, ভেশ।
वेष।

भेजना—(क्रि स) পঠিওৱা।
किसी को कहीं जाने के लिये चलने में प्रवृत्त करना। कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना। (प्रे० भेजवाना)

भेजा—[सं पुं] মূৰৰ ঘিউ, মগজু।
सिर के अन्दर का गूदा।

भेड़, भेड़ी—(सं स्त्री) ভেড়া।
बकरी की तरह का एक प्रसिद्ध चौपाया। मेष। [सं पुं-भेड़ा]

भेड़िया—[सं पुं] কুকুৰ নেচীয়া বাঘ।
कुत्ते की जाति का एक प्रसिद्ध जंगली हिंसक जन्तु।

भेद—[सं पुं] বিন্ধা কৰা, মৰ্ম, পাৰ্থক্য, শত্ৰুপক্ষৰ ৰহস্য ভেদ কৰা।
भेदने या छेदने की क्रिया। शत्रु पक्ष के लोगों को एक दूसरे का बिरोधी बनाकर कुछ लोगो को अपनी ओर मिलाना। रहस्य। मर्म। अन्तर। प्रकार।

भेदन— (सं पुं) বিন্ধা, ৰহস্য উদ্‌ঘাটন কৰা কাৰ্য্য।
भेदने की क्रिया या भाव। छेदना। भेद लेने की क्रिया या भाव।

भेदना—(क्रि स) বিন্ধা, ফুটা কৰা, কাৰো মনৰ কথা জানিবলৈ

তেওঁলৈ গম্ভীৰ ভাবে দৃষ্টিপাত কৰা।

बेधना। छेदना। किसी के मनका आशय जानने के लिये उसकी ओर गम्भीर दृष्टि से देखना।

भेद-बुद्धि, भेदमति— (सं स्त्री) ভেদ বুদ্ধি–পৃথককাৰী বুদ্ধি।

वह बुद्धि या विचार जिसके अनुसार प्रायः समानता रखने वाले मनुष्यों, पदार्थों आदि में भेद-भाव किया जाता है।

भेदिया, भेद-[सं पुं]চোৰাংচোৰা। जासूस। भेद या भीतरी रहस्य जाननेवाला।

भेदी—[सं पुं] চোৰাংচোৰা। भेदिया।

[वि] বিন্ধা বা ফুটা কৰোঁতা ব্যক্তি।

भेदन करनेवाला। छेद करने वाला।

भेरी—[सं स्त्री] দুন্দুভী, এবিধ ডাঙৰ নাগেৰা।

दुन्दुभी।

भेला—[सं पुं] সমুখা–সমুখিকৈ যুদ্ধ। সাক্ষাৎ, ভেল (নদী, নলা আদি পাৰ কৰিবৰ বাবে সজা)

भिड़न्त। मुलाकात। काठ, बाँस आदि जोड़कर निर्मित नदी आदि पार करने का ढाँचा।

भेली-(सं स्त्री) গুৰ আদিৰ ডোখৰা।

गुड़ आदिकी गोल बट्टी या पिंडी

भेव—[सं पुं] ৰহস্য।

रहस्य।

भेषज, भैषज—(सं पुं) ঔষধ।

औषध। दवा।

भैंस— (सं स्त्री) ম'হ (মাইকী) भैंसे की मादा [सं पुं भैंसा]

भैन [ा]— [सं स्त्री] ভনী।

बहन।

भैया—(सं पुं) ভাই, সমনীয়াক কৰা সম্বোধন।

भाई। बराबरवालों के लिये सम्बोधन का शब्द।

भैरव—(वि) ভীষণ শব্দ কৰোঁতা, ভয়ানক।

भीषण शब्दवाला। भयानक।

(सं पुं) শিৱৰ অনুচৰ, ৰাগ বিশেষ।

शिव के एक प्रकार के गण।
छः रागों में से एक।

भैरवी -[सं स्त्री]ভৈৰবী,এজনা দেৱীৰ নাম, ৰাতিপুৱা গোৱা ৰাগিণী বিশেষ, পুৱাৰ গীত বিশেষ।
एक देवी का नाम। सबेरे गायी जानेवाली एक रागिनी। सबेरे होनेवाला संगीत।
[वि] ভৈৰৱ সম্বন্ধীয়।
भैरव सम्बन्धी।

भैषज्य—[स पुं] চিকিৎসা, ঔষধ।
चिकित्सा। औषध।
[वि] ঔষধ অথবা চিকিৎসা সম্বন্ধীয়।
औषध या चिकित्सा सम्बन्धी।

भोंकना— (क्रि स) জোঙা বস্তু জোৰেৰে সুমাই দিয়া।
नुकीली चीज जोरसे घुसाना।

भोंडा— [वि] কুৰূপ, বেয়া।
কুৎসিত।
भद्दा। बदसूरत। कुरूप।

भोंदू—(वि) মূৰ্খ।
मूर्ख।

भोंपा (पू)— (सं पुं) পেঁপা, কল কাৰখানাৰ উকি।
फूंक कर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। कल कारखानों की सीटी।

भो—[क्रि अ] হোৱা।
हुआ।

भोक्ता— [वि] ভোক্তা, ভোগ কৰোঁতাজন।
भोग करने या भोगने वाला।

भोग—(सं पुं) ভোগ। সুখ, দুখ আদি অনুভৱ কৰা। ভাগ্য বা কপাল অধিকাৰ, নৈবেদ্য, মৈথুন (ৰতি)।
सुख दुख आदिका अनुभव करना। प्रारब्ध। अधिकार। खाना। नैवेद्य। मैथुन।

भोगना— [क्रि स] সুখ, দুখ আদি সহ্য কৰা।
सुख, दुख आदि सहना। भुगतना। (प्रे०—भोगवाना, भोगाना)

भोग-विलास— [सं पुं] ভোগ-বিলাস।
सुखपूर्वक अच्छी अच्छी वस्तुओं का उपभोग करना।

भोगी—[सं पुं] ভোগী।
भोगनेवाला।
(वि) ভোগী। [ইন্দ্ৰিয় সুখ] ভোগী।

भोगनेवाला। इन्द्रियों का सुख भोगने या चाहनेवाला।

भोग्य—(वि) ভোগত বা কামত লগাবৰ যোগ্য।
भोगने या काममें लाने के योग्य।

भोजी—[सं, पुं] খাওঁতা।
खानेवाला।

भोजू—[सं पुं] ভোজন।
भोजन।
(वि) কামত লগাবৰ উপযুক্ত।
काममें आने योग्य।

भोज्य—(सं पुं) খাদ্য পদাৰ্থ।
खाद्य पदार्थ।
[वि] খাব পৰা।
खाने योग्य।

भोट—(सं पुं) ভুটান ৰাজ্য।
भूटान देश।

भोटिया—(स पुं) ভুটীয়া, ভোট দেশৰ নিবাসী।
भोट या भूटान देशका निवासी।
[सं स्त्री] ভুটান দেশৰ ভাষা।
भूटान देश की भाषा।
(वि) ভুটান দেশৰ।
भूटान देश का।

भोथरा—(वि) ভোটা, কুণ্ঠিত।
जिसकी धार तेज न हो। कुंठित कुन्द (शस्त्र आदि)

भोर—(सं पुं) ৰাতিপুৱা।
तड़का।
[स पुं] ভুল, ফাঁকি।
भ्रम। धोखा।
[वि] আচৰিত, অজলা।
चकित। भौचक्का। भोला।

भोरना—(क्रि स) ফাঁকি দিয়া, ছল কৰা, ফুচলোৱা।
भ्रममें डालना। धोखा देना। बहकाना।

भोरहरा—[सं पुं] প্ৰত্যূষ, ৰাতিপুৱা।
भोर। (क्रि वि—भोरहरे)

भोराना—[क्रि स] ফাঁকি দিয়া, মিছা পাকত পেলোৱা।
भ्रममें डालना। भुलाना।
(क्रि अ) ফাঁকিত পৰা।
भ्रम या धोखे में आना।

भोलना—[क्रि स] ঠাট্টা-মস্কৰা কৰা, মিছাকৈ ফাঁকি দিয়া।
भुलावा देना। बहकाना।

भोला, भोलाभाला—[वि] সহজ, সৰল, অজলা।

मीघा सादा। सरल।

भौं, भौंह—[सं स्त्री] চকুৰ চেলাউৰি।
आँख के ऊपर का हड्डी पर के बाल। भृकुटि।

भौंकना—(क्रि अ) ভুক্ ভুকনি।
भूँकना।

भौंराना—(क्रि स) ঘূৰি ফুৰা, বিয়াৰ সময়ত যজ্ঞকুণ্ডৰ চাৰিওপিনে ঘূৰি ফুৰা।
चक्कर देना। घुमाना। विवाह के समय भाँवर दिलाना।
[क्रि अ] ঘূৰা।
चक्कर काटना। घूमना।

भौंरी—(सं स्त्री) নোমৰ চকৰী আদি।
पशुओ या मनुष्यो के शरीर के वे चक्करदारबाल जिनसे शुभ अशुभ का निर्णय करते हैं। भाँवर।

भौंचक—[वि] আশ্চৰ্য্য, আচৰিত হৰ লগীয়া।
हक्का बक्का। चकित।

भौजाई [जी]—(सं स्त्री) ভাই বোৱাৰী।
भावज। भाई की पत्नी।

भौतिक—[वि] ভৌতিক, পঞ্চ ভূতৰ লগত সম্বন্ধ থকা, পাৰ্থিব, শৰীৰ সম্বন্ধীয়।
पंच भूतसे सम्बन्ध रखनेवाला। पार्थिव। शरीर सम्बन्धी।

भौतिक विज्ञान—(सं पुं) পদাৰ্থ বিজ্ঞান।
पदार्थ विज्ञान (फिजिक्स)

भौम—[वि] ভূমি সম্বন্ধীয়, মাটিৰ পৰা ওপজা।
भूमि सम्बन्धी। भूमि या पृथ्वीसे उत्पन्न।
(सं पुं) মঙ্গল গ্ৰহ।
मंगल ग्रह।

भौमिक—[सं पुं] মাটিৰ গৰাকী।
भूमि का स्वामी।
(वि) মাটি সম্বন্ধীয়, মাটিৰ।
भूमि सम्बन्धी। भूमिका।

भ्रंश—(सं पुं) তলৰ পৰা, পতন, নাশ, ধ্বংশ।
नीचे गिरना। पतन। नाश। ध्वंस।

भ्रम—(सं पुं) ভ্ৰম, ভুল- ফাঁকি, মিছা জ্ঞান, সন্দেহ, অৰ্থালঙ্কাৰ বিশেষ।

मिथ्या ज्ञान। धोखा। सन्देह। एक अलंकार। मान (सं-भ्रम)

भ्रमना—(क्रि अ) घূৰি ফুৰা, সন্দেহত পৰা, ঠগ খোৱা।

चक्कर खाना या लगाना। भ्रम या सन्देह में पड़ना। धोखा खाना।

भ्रमात्मक—(वि) ভ্ৰমাত্মক, সন্দেহ জনক।

भ्रम मूलक। संदिग्ध।

भ्रष्ट--[वि] পতিত, দূষিত, দুশ্চৰিত্ৰ, নিন্দনীয়।

पतित। दूषित। दुश्चरित्र। निंदनीय आचरणवाला (सं स्त्री-भ्रष्टा)

भ्रष्टा चरण, भ्रष्टाचार-(सं पुं) ভ্ৰষ্টাচাৰ।

नीति पथ से गिरा हुआ और समाजमें बहुत बुरा माने जाने वाला आचरण या व्यवहार।

भ्रांत—[वि] ভ্ৰান্ত, বিস্মৃত, নিজক পাহৰা।

जिसे भ्रान्ति हुई हो। भ्रम या धोखे में पड़ा हुआ।

भ्रांति—(सं स्त्री) ভ্ৰান্তি, ভুল, সন্দেহ, পাগলামি।

भ्रम। सन्देह। पागलपन। भूल-चूक।

भ्राता--(सं पुं) ভাই।

भाई।

भ्रातृत्व—(सं पुं) ভ্ৰাতৃত্ব।

भाई होने का भाव या धर्म। भाई चारा।

भ्रामक—(वि) ভ্ৰামক, সন্দেহ-জনক।

भ्रम उत्पन्न करनेवाला।

भ्रू—[सं स्त्री] ভ্ৰূ, চেলাউৰি।

भौंह।

भ्रूण—[सं पुं] গৰ্ভত থকা সন্তান।

स्त्री का गर्भ। बालक के गर्भ में रहनेकी अवस्था।

भ्रूण हत्या--[सं स्त्री] গৰ্ভস্থ সন্তান হত্যা।

गर्भमें भ्रूण या बालक को मार डालना।

भ्रू विक्षेप—(सं पुं) দৃষ্টি নিক্ষেপ কৰা, চকু থিয় কৰা।

दृष्टि डालना। त्योरी चढ़ाना।

म

म—দেৱনাগৰা বৰ্ণমালাৰ পঁচিশ নং আখৰ।

वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन

मंगन—[सं पुं] ভিখাৰী।

भीख मांगनेवाला।

मंगनी—(स'स्त्री) খুজিলে কোনো বস্তু দিয়া, মাগন, নিজৰ কাম চলাবৰ বাবে আনৰ পৰা বস্তু খুজি লোৱা। বিয়াৰ বন্দোৱস্ত কৰা এক প্ৰকাৰৰ নিয়ম।

किसो के मांगने पर कोई चीज देना। अपना काम चलाने के लिये किसी से मागकर उसकी कोई चीज लेना-इस प्रकार की दी हुई चीज। विवाह में वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबध पक्का और त होता है।

मंगलकलश (घट)— [सं पुं] মঙ্গল ঘট, মাঙ্গলিক কলহ।

मङ्गल अवसरों पर पूजा के लिये या योंही रखा जानेवाला पानी का घडा।

मंगलपाठ, मंगलाचरण—[मं पुं] মঙ্গলাচৰণ, শুভকাৰ্য্য আৰম্ভণিৰ সময়ত গোৱা গীত বা মন্ত্ৰাদি।

वह पद्य जो शुभकार्य के पहले म'गलकी कामनामे पढा या कहा जाता है।

मंगल सूत्र— (सं पुं) দেৱতাৰ আশীৰ্ব্বাদ ৰূপে পিন্ধা মালা বা অলঙ্কাৰ বিশেষ (উত্তৰ ভাৰতৰ নিয়ম)

देवता के प्रसाद रूपमें कलाई पर बाँधा जानेवाला डोरा या नागा।

मंगाना—[क्रि स] আনক মাগিবলৈ পঠিওৱা, কাৰোবাক কোনো বস্তু আনিবলৈ কোৱা, বিয়াৰ বন্দোবস্ত কৰা।

मांगने का काम दूसरे से कराना। किसी से कोई चीज लाकर देनेके लिये कहना। मंगनी कराना।

मंगेतर—(वि) যাৰ লগত বিয়াৰ বন্দোবস্ত হৈছে।
जिनके साथ किसी की मंगनी हुई हो।

मंगोल— (सं पुं) মধ্য এচিয়াত বাস কৰা জাতি বিশেষ।
मध्य एशियामें बसनेवाली एक जाति।

मंच [क] —মঞ্চ, কাঠ বা বাঁহেৰে সজা ওখ চাং।
खाट। छोटी पीढ़ी। वह ऊँचा मंडप जिसपर बैठकर सर्वसाधारण के सामने कोई कार्य किया जाय।

मंजन— (सं पुं) মঞ্জন, দাঁত ঘঁহিবৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা চূৰ্ণ।
दाँत मांजनेका चूर्ण मा बुकनी।

मँजना—(क्रि अ) অভ্যাস হোৱা, পৰিষ্কাৰ কৰা।
मांजा जाना। अभ्यास होना।

मंजरित—(वि) মঞ্জৰিত, মঞ্জৰি লাগি থকা।
जिसमें मंजरी लगी हुई हो।

मंजरी—[सं स्त्री] নতুন কুঁহিপাত, লতা। (আমৰ) মল।
नयी कोंपल। आम आदिके सीके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह। लता।

मँजाई—[सं स्त्री] ঘঁহা, পৰিষ্কাৰ আদি কৰা ক্ৰিয়া বা তাৰ বাবে দিয়া মজুৰি।
मँजाने या माँजनेकी क्रिया, भाव या मजदूरी।

मंजिल—(सं स्त्री) বাহৰ, ঘৰৰ অংশ, লক্ষ্য।
पड़ाव। मकान का खण्ड।

मंजीर— [सं पुं] নূপুৰ, ভৰিৰ অলঙ্কাৰ।
नूपुर।

मंजु—[वि] সুন্দৰ।
सुन्दर।

मंजुल—(वि) সুন্দৰ, মধুৰ।
सुन्दर। मनोहर।

मंजूर—(वि) মঞ্জুৰ, গ্ৰাহ্য কৰা।
स्वीकृत।

मंजूरी—(सं स्त्री) স্বীকৃতি, মঞ্জুৰী।
स्वीकृति।

मंजूषा—(सं स्त्री) পেৰা, কাঠৰ বাকচ, হাতীৰ গাদী।

पिटारी। हाथीका हौदा। छोटा डिब्बा।

मंझधार-(सं स्त्री) নদীৰ মাজসোঁত, কোনো কামৰ মাজ ভাগ।
नदी या उसके प्रवाह का मध्य भाग। किसी काम का मध्य।

मंझला, मझोला—(वि)মাজু,
बीच का।

मंझा—(वि) মাজৰ।
बीचका।
(सं पुं) মধ্য, পালেং।
मध्य। पलंग।

मंझार[री]—[क्रि वि] মাজত।
बीच में।
(सं स्त्री) মধ্য।
मध्य।

मँझोला, मझोला—[वि] মাজু।
बीच का।

मँड़ई, मड़ैया—[सं स्त्री]জুপুৰী, পঁজা।
झोपड़ी।

मंडन—(सं पुं) সজোৱা, শোভাকাৰক, প্ৰমাণ দি কোনো কথা প্ৰমাণিত কৰা।
शृंगार करना। सजाना। प्रमाण देकर कोई बात सिद्ध करना।

मंडनी—[सं स्त्री] মৰণা মৰা।
खलिहान में रखे हुए फसल के डण्ठलों आदिमें से अनाज के दाने अलग करने की क्रिया।

मंडप, मँड़वा—(सं पुं) মণ্ডপ, মঞ্চ।
किसी उत्सव या मंगल कार्य के लिये छाकर बनाया हुआ स्थान। मंच।

मँडराना, मँडलाना—(क्रि अ) কোনো বস্তুৰ চাৰিও পিনে উৰি ফুৰা, কাৰো ওচৰত সকলো সময়ত উপস্থিত থকা।
किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। बराबर किसी के आस पास रहना।

मंडल—(सं पुं) পৰিধি, মণ্ডল, সূৰ্য্য অথবা চন্দ্ৰৰ চাৰিওকাষে দেখা ঘূৰণীয়া আকৃতি, বিভাগ, ঋগ্ বেদৰ খণ্ড।
परिधि। घेरा। सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई पड़नेवाला घेरा। जिला। विभाग। ऋग् वेद का कोई खण्ड।

मंडलाकार—(वि) গোলাকাৰ, ঘূৰণীয়া। गोल।

मंडली—(सं स्त्री) সমূহ, সমাজ, দল।
समूह। समाज। दल।
'[सं पुं] সূৰ্য্য।
सूर्य।

मंडा—[सं पुं] ডাঙৰ বজাৰ।
बडी मण्डी या बाजार। (सं स्त्री —मण्डी)

मंडित—(वि) অলঙ্কৃত, ভূষিত, ধুন লগোৱা।
सजाया हुआ। छाया हुआ। भरा हुआ।

मंडूक—[सं पुं] ভেকুলী।
मेंढक।

मंत्रणा—(सं स्त्री) পৰামৰ্শ, মন্তব্য মনে মনে কৰা আলচ।
परामर्श। मन्तव्य।

मंत्रद्रष्टा—(वि) বেদৰ মন্ত্র প্রকাশক, মন্ত্র দ্রষ্টা।
वेदों का मंत्र प्रकाश करनेवाला (ऋषि)

मंत्रपूत—(वि) মন্ত্রেৰে পৱিত্র কৰা।
मंत्र पढकर प्रवित्र किया हुआ।

मंत्रालय—(सं पुं) মন্ত্রালয়, মন্ত্রীসকলৰ অধীনস্থ কাৰ্য্যালয়।
मंत्रियों के अधीनस्थ विभाग (मिनिस्ट्री)

मंत्रित्व—(सं पुं) মন্ত্রীৰ কাৰ্য্য বা পদ, মন্ত্রীত্ব।
मन्त्री का कार्य या पद।

मंथन—(सं पुं) মথা বা ঘেঁটা কাৰ্য্য, গভীৰ ভাবে নিৰীক্ষণ কৰা, মথনী।
मथना। गहरी छान बीन। मथानी।

मंथर—(वि) ধীৰ, অলস।
धीमी गतिवाला। मन्द।

मंद—[वि] লেহেম, ধীৰ, মূৰ্খ, দুষ্ট।
धीमा। आलसी। मूर्ख। दुष्ट।

मंद-बुद्धि—[वि] মূৰ্খ।
मूर्ख।

मंदर—(सं पुं) পৰ্ব্বত বিশেষ (সমুদ্র মন্থনৰ সময়ত মথনী হিচাবে ব্যৱহাৰ কৰা) স্বৰ্গ, দৰ্পণ, গম্ভীৰ ধ্বনি।
एक पर्वत। स्वर्ग। दर्पण। गम्भीर ध्वनि या शब्द।
[वि] লেহেম, ধীৰ।
मंद। धीमा।

मंदा—(वि) কম মূল্যৰ, যাৰ দাম কমি গল, বেয়া, অশুভ।
कम मूल्यका। जिसका भाव या दाम उतर या गिर गया हो। घटिया। बुरा। अशुभ।

मंदाग्नि—(सं स्त्री) অজীৰ্ণতা, খোৱা বস্তু জীৰ্ণ যোৱা শক্তিৰ হ্ৰাস।
बद-हजमी।

मंदार—(सं पुं) স্বৰ্গৰ পাৰিজাত ফুলৰ গছ, মদাৰ গছ, স্বৰ্গ, হাতী, মন্দৰ পৰ্ব্বত।
स्वर्ग का एक पेड। आक या मदार का पेड़। स्वर्ग। हाथी। मंदर-पर्वत।

मंदी--(सं स्त्री) দাম কম হোৱা, সস্তা হোৱা, বজাৰত বিক্ৰী কমি যোৱা।
भाव कम होना। सस्ती। बाजार में बिक्री कम होना।

मंद्र—(वि) মনোৰম, প্ৰসন্ন, আনন্দিত, গভীৰ, লেহেম।
मनोहर। प्रसन्न। गंभीर। धीमा

मंशा—(सं स्त्री) ইচ্ছা, অভিপ্ৰায়।
इच्छा। आशय।

मँहगा, महंगा—[वि] দুৰ্মূল্য, দাম বাঢ়ি যোৱা, খুব পৰিশ্ৰম বা অৰ্থ ব্যয় কৰি পোৱা।
जिसका मूल्य अधिक हो। बहु-मूल्य। जो बहुत अधिक परिश्रम या व्यय से प्राप्त हो।

मकड़ी—[सं स्त्री] মকৰা।
एक कीड़ा जो जाल बुनकर कीड़ों को फँसाता है। ऊर्णनाभ। मर्कटक।

मकबरा—(सं पुं) কবৰ।
मजार।

मकरंद—[सं पुं] ফুলৰ মৌ, ফুলৰ ভিতৰত থকা সোৱাদ-ৰস।
पुष्प रस। फूलोंका केसर।

मकर—(सं पुं) মকৰ, মগৰ, ঘঁৰিয়াল, গঙ্গাদেৱীৰ বাহন, মাছ, জ্যোতিষৰ ৰাশি চক্ৰৰ দশম ৰাশি, ছলনা।
मगर या घड़ियाल नामक जल जन्तु। मछली। बारह राशियों में से दसवी राशि। छल। नखरा।

मकसूद—(सं पुं) অভিপ্ৰায়, উদ্দেশ্য।
अभिप्राय। उद्देश्य।

(বি) অভিপ্ৰেত, মনেৰে ভবা বা ইচ্ছা কৰা।
अभिप्रेत ।

মকান—[সং পুং] ঘৰ ।
गृह । घर ।

মকুনা—(সং পুং) মখনা।
बिना दाँतवाला छोटा हाथी।
[বি] চুটি-চাপৰ।
नाटा। छोटा।

মকোৰা—(সং পুং) সৰু কীট বা পৰুৱা।
छोटा कीड़ा।

মকোয়—(সং পুং) গছ বিশেষ আৰু তাৰ ফল ।
एक प्रकार का छोटा पौधा या उसका फल।

মক্কা—(সং পুং) গোমধান, মাকই, মুছলমানৰ তীৰ্থস্থান—হজৰত মহম্মদৰ জন্ম ঠাই।
ज्वार। मकई। मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थस्थान।
[সং স্ত্ৰী] এবিধ ঘাঁহ।
एक प्रकार की घास।

মক্কাৰ—[বি] ধূৰ্ত্ত, কপটীয়া।
धूर्त। कपटी।

মক্খন—(সং পুং) মাখন।
नवनीत।

মক্খী, মক্ষিকা—[সং স্ত্ৰী] মাখি, মৌ-মাখি।
एक प्रकार की पतंग। मधुमक्खी।

মক্খী-চুস— (সং পুং) কৃপণ, মাখিৰ মূৰৰ ঘিউ কঢ়া।
भारी कंजूस।

মখ—(সং পুং) যজ্ঞ।
यज्ञ।

মখমল—[সং স্ত্ৰী] মখমল-এবিধ চিকুণ বহুমূলীয়া কাপোৰ।
एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

মখৌল—(সং পুং) ঠাট্টামস্কৰা।
परिहास। हँसी ठट्ठा। [वि- मखौलिया]

মগ—[সং পুং] পথ, মগধ দেশ।
मार्ग। रास्ता। मगध देश।

মগজ—(সং পুং) মস্তিষ্ক, বীজৰ ভিতৰৰ সাহ।
मस्तिष्क। बीजों के अन्दर की गिरी।

মগজ-পচ্চী—(সং স্ত্ৰী) মূৰ-ঘমা।
सिर खपाना।

মগন—(বি) মগ্ন, অতিশয় আনন্দিত।
परम प्रसन्न।

मगर—(सं पुं) ঘঁৰিয়াল।
(अव्य) কিন্তু, পিছে।
लेकिन। पर।

मगर-मच्छ—(सं पुं) মগৰ বা ঘঁৰিয়াল নামৰ জলজন্তু, ডাঙৰ মাছ।
मगर या घड़ियाल नामक जल-जन्तु। बहुत बड़ी मछली।

मगरिब—[सं पुं] পশ্চিম দিশ।
पश्चिम दिशा। [वि-मगरिबी]

मगरूर—(वि) অভিমানী, অহঙ্কাৰী
अभिमानी। घमण्डी।

मगही—(वि) মগধ দেশৰ, মাগধী ভাষা।
मगध देश का।

मचकना—(क्रि अ क्रि स)মটমট শব্দ কৰি ভাঙিব লগা হোৱা, মট মট কৰা।
मच मच शब्द कर जरा सा टूटने को होना।

मचना—(क्रि अ) আৰম্ভ কৰা (গোলমাল) বিয়পি যোৱা। (যশ, কীৰ্ত্তি)।
(शोर आदि) आरंभ होना (धूम, यश आदि)छा जाना या फैलना। (क्रि स–मचाना)

मचमचाना—(क्रि अ क्रि स) এনে দৰে ভাঙ কৰা বা হেচা দিয়া যাতে মচমচ শব্দ হয়।
इस प्रकार दबाना या दबना कि मच मच शब्द हो।

मचलना—[क्रि अ] কোনো বস্তুৰ বাবে কেচুৱা বা তিৰোতাই কৰা জিদ।
किसी चीज के लिये बालकों या स्त्रियों की तरह हठ करना।

मचान--(सं स्त्री) কাঠ বাঁহেৰে বহিবৰ বাবে সজা ওখ চাং।
काठ और बाँस बाँधकर चौकी की भाँति बनाया हुआ बैठने का स्थान। मंच।

मचिया-(सं स्त्री) সৰু খাট। পিৰা।
छोटी चारपाई। पीढ़ी।

मच्छड़, मच्छर—(सं पुं) মহ।
एक खून चूसनेवाला व उड़नेवाला कीड़ा। मशक।

मच्छरदानी—(सं स्त्री) আঠুৱা।
मसहरी।

मच्छी, मछली—[सं स्त्री] মাছ।
मीन। मत्स्य।

मछुआ (वा)—[सं पुं] মাছুৱৈ, কৈবৰ্ত্ত। मछली मारनेवाला।

मजदूर, मजूर–[सं पुं] বনুৱা।
श्रमिक।

मजदूरी, मजूरी—[सं स्त्री] মজুৰী, বনুৱাৰ পাৰিশ্ৰমিক।
मजदूर का काम या भाव। मजदूर का पारिश्रमिक।

मजबूत– (वि) দৃঢ়, শকত, বলবান।
दृढ़। पक्का। बलवान।

मजबूर—(वि) বিবশ, বাধ্য।
विवश। लाचार।

मजबूरन—(क्रि वि) বাধ্য হৈ, বিবশ অৱস্থাত।
लाचारी की हालतमें।

मजमा—(सं पुं) ভীৰ।
भीड़-भाड़।

मजमून—(सं पुं) নিবন্ধ-প্ৰবন্ধ আদিৰ বিষয় বস্তু, নিবন্ধ, প্ৰবন্ধ, ৰচনা।
किसी लेख आदि का विषय। लेख।

मजलिस—(सं स्त्री) সভা, মজলিছ, (গান বাজনাৰ বা গোট খোৱা সমাজ)
महफिल। सभा।

मजहब—[सं पुं] পন্থ, মত, ধৰ্ম্ম।
धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।

मजाक—(सं पुं) হাঁহি-তামচা, ঠাট্টা-মস্কৰা।
हँसी, ठट्ठा।

मजार—(सं पुं) সমাধি, কবৰ।
समाधि। कब्र।

मजाल—(सं स्त्री) সামৰ্থ্য, শক্তি।
सामर्थ्य। शक्ति।

मजीठ–(सं स्त्री) মঞ্জিষ্ঠা, মজাঠি, এবিধ ৰঙা লতা।
एक प्रकार की लता। इस लता की जड़ और डण्ठलों से निकला हुआ लाल रङ्ग।

मजीरा—(सं पुं) মঞ্জীৰা, এবিধ নিচেই সৰু খুটি তাল।
ताल देने के लिये काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी।

मजेदार—(वि) সোৱাদ লগা, ভাল, মনোৰঞ্জক।
स्वादिष्ट। बढ़िया। मनोरंजक।

मज्जन—[सं पुं] স্নান, গা-ধোৱা।
स्नान। नहाना।

मज्जा—[सं स्त्री] হাড়ৰ মাজৰ বস্তু, মজ্জা।
हड्डी की नलीके अन्दरका गूदा।

मझार—[वि] মাজত।
बीचमें।

मझियारा—(वि) মাজৰ।
बीचका।

मटकना–[ক্রি অ] গা মেলাই ফুৰা, দুষ্টালি কৰি হাত অথবা চকুৰ ঠাৰ দিয়া। কেবাহীকৈ চোৰা।
लचक कर नखरे से चलना। नखरे से हाथ या आँखें नचाना। देखना।
[सं पुं] মাটিৰ সৰু বাচন।
छोटा मटका। मिट्टीका पुरवा।

मटका–(स पुं) মাটিৰ কলহ।
मिट्टीका घड़ा। (सं स्त्री-मटकी)

मटकना– (ক্রি স) দুষ্টালি কৰি তিৰোতাৰ দৰে আঙুলি, হাত, চকু আদি নচুৱা।
नखरे से स्त्रियों की तरह उँग-लियाँ,हाथ, आँख आदि नचाना।

मटर—(सं पुं) মটৰ মাহ।
एक अन्न जिसकी दाल और तरकारी बनती है।

मटर-गश्त—[सं पुं] ফুৰা-চকা।
सैर सपाटा (सं स्त्री—मटर गश्ती)

मटियाना—(ক্রি স) মাটিৰে ধোৱা, পৰিষ্কাৰ কৰা।
मिट्टी लगाकर मांजना। मिट्टी लगाना।

मटिया-मेट—(वि) নষ্ট কৰা।
विनष्ट।

मट्ठा—(सं पुं) ঘোল।
छाछ।

मठधारी, मठाधीश—(सं पुं) সত্ৰাধিকাৰ।
किसी मठका अधिकारी महन्त।

मठिया—(सं स्त्री) সৰু মঠ-মন্দিৰ।
छोटा मठ।

मड़क–[सं स्त्री] ৰহস্য পূৰ্ণ কথা, জটিল তথ্য।
ऐसा पेचीली बात जो जल्दी समझ में न आवे। भेद।

मढ़—(वि) জিদ কৰি একে ঠাইতে বহি থকা।
अड़कर बैठनेवाला।

मढ़ना—(ক্রি স) (চাৰিওফালে) মেৰিওৱা, বাদ্য যন্ত্ৰত চামৰা লগোৱা, কিতাপত বাকলি লগোৱা, অইনৰ ওপৰত দোষ জাপি দিয়া।
चारों ओर लगाना या लपेटना। बाजेके मुंहपर चमड़ा लगाना।

पुस्तकपर जिल्द लगाना। किसी के सिर काम या दोष थोपना।
(क्रि अ) আৰম্ভ হোৱা।
आरम्भ होना। मचना। अस्ति-त्वमें आना।

मढ़ी—(सं स्त्री) সৰু মঠ, সমাধি।
छोटा मठ। समाधि।

मणिधर—(सं पुं) সাপ।
साँप।

मणिबंध—(सं पुं) হাতৰ কজা।
মণিবন্ধ। कलाई।

मतंग (ज)—(सं पुं) হাতী, মেঘ।
हाथी। बादल।

मत—[सं पुं] মত, সম্পত্তি, ধৰ্ম্ম, পন্থ, ইচ্ছা, নিৰ্ব্বাচনৰ সময়ত দিয়া মত,ভোট।
सम्मति। विचार। धर्म। पंथ। आशय। निर्वाचन के समय किसी व्यक्ति के पक्षमें दी जानेवाली सम्मति। (वोट)
[क्रि वि] নহয়, নাই (নকাৰাত্মক)।
न। नहीं।

मत·दान—[सं पुं] মত দান।
मतदेनेकी क्रिया या भाव (वोटिंग)

मतलब—[सं पुं] ইচ্ছা, অভি-প্ৰায়, স্বাৰ্থ।
आशय। मानी। स्वार्थ। उद्देश्य। लगाव। (वि—मतलबी)

मतवाला—[वि] পাগল, মতলীয়া (নিচাত)
नशेमें चूर। मस्त। पागल। (स्त्री—मतवाली)

मतवाली— [सं स्त्री] মত্ততা অভিমান।
मत्तता। अभिमान।

मताधिकार--[सं पुं]ভোটাধিকাৰ।
मत। वोट देनेका अधिकार।

मतारी, महतारी— [सं स्त्री]
মাই। আই।
माता।

मति—[सं स्त्री] বুদ্ধি, বুজনি।
बुद्धि। समझ।

मति·भ्रम— (सं पुं) মতিভ্ৰম, কোনো কথা ভুলকৈ বুজা অৱস্থা।
बुद्धिमें होनेवाला वह विकार जिसके कारण मनुष्य कुछका कुछ

समझने या कोई निराधार बात मानने लगता है।

मति-मंद—[वि] কম বুধিযক, মূর্খ। कम बुद्धिवाला। मूर्ख।

मतिमान्--(वि) বুধিযক। बुद्धिमान।

मतैक्य--[सं पु] একমত হোৱা। किसी विषयमें सब या कुछ लोगो का विचार या मत एक होना।

मत्था--(सं पुं) মূৰ। माथा। सिर।

मत्थे--[क्रि वि] মূৰত, আশ্ৰযত। मस्तक या सिर पर। आसरे या भरोसे पर।

मत्सर—(सं पुं) ডাহ, ঈৰ্ষা, খং। डाह। ईर्ष्या। क्रोध।

मथना—(क्रि स) ঘোটা, মথা, খবৰ কৰা,ভালদৰে সিদ্ধান্ত কৰা। बिलोना। नष्ट करना। घूम घूम कर पता लगाना। अच्छी तरह विचार करना।

मथनियाँ, मथनी, मथानी—[सं स्त्री] মথনী, ঘেঁাটনী, ঘেঁাটা-মাৰি। दही मथनेका बर्तन या डण्डा।

मथित—[वि] মথা হোৱা। मथा हुआ।

मद—(सं पुं) নিচা, অহঙ্কাৰ, গৰ্ব্ব, মতলীয়া অৱস্থা, মত্তা মদ, লাওপানী। नशा। धन, बल, विद्या आदिका घमंड। मस्ती। मत्तता। आनंद। प्रसन्नता। मद्य, शराब।
(सं स्त्री) হিচাবৰ দফা, প্ৰকৰণ, ভাগ। विभाग। खाते। किसी लेखे या विषय विभाग का शीर्षक।

मदक—[सं स्त्री] মোদক। अफीम के सत्त से बननेवाला एक मादक पदार्थ।

मदद—(सं स्त्री) সহাযতা। सहायता।

मदन—(सं पुं) মদন, কামদেৱ, ভোমোৰা, প্ৰেম। कामदेव। भौरा। प्रेम।

मदपी—[वि] মদপী। शराबी।

मद-मत्त—[वि] মতলীয়া। मतवाला।

मदरसा—(सं पुं) মাদ্ৰাচা। पाठशाला।

मदांध—[वि] মদমত্ত।
मदोन्मत्त।

मदार-[सं पुं] মদাৰ।
आक।

मदारी-(सं पु) বাজীকৰ।
बाजीगर।

मदिर—[वि] মতলীয়া কৰা বস্তু, মত্ত।
मत्तता उत्पन्न करनेवाला। नशा लानेवाला। मत्त। मस्त।

मदिरा, मद्य—(सं स्त्री) মদ, লাওপানী।
शराब।

मदीय—(वि) মোৰ।
मेरा।

मदोद्धत, मदोन्मत्त—[सं पुं] মদোন্মত্ত, মদমত্ত।
वह जो मद्य आदिके नशेके कारण उन्मत्त हो। वह जो अधिकार आदिके कारण उन्मत्त हो रहा हो। जिसे घमंडके कारण भले बुरे का ज्ञान न हो।

मद्धिम—(वि) মধ্যম, খিমিক-ধামাক মজলীয়া।
मध्यम। कम अच्छा। कुछ खराब या घटकर। मन्द।

मद्यप—[वि] মদপী।
शराबी।

मधु—(सं पुं) মৌ, বসন্ত ঋতু, অমৃত, পানী মদ।
शहद। वसन्त ऋतु। अमृत। पानी, मदिरा। महुआ।
(वि) মিঠা, সোৱাদ লগা।
मीठा। स्वादिष्ट।

मधुकर—(सं पु) ভোমোৰা।
भ्रमर।

मधुकरी—(सं स्त्री) সাধু সন্ন্যাসীয়ে খোৱা লুচি, ভাত আদিৰ ভিক্ষা।
साधु-संन्यासियो की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ भोजन लिया जाता है।

मधुचक्र—[सं पुं] মৌ-চাক।
शहद की मक्खी का छत्ता।

मधुप— (वि) মৌ-খাওঁতা, ভোমোৰা।
मधु पीनेवाला।
(सं पुं)দেৱতা, ভোমোৰা।
देवता। भौरा।

मधुपर्क—(सं पुं) মধুপর্ক। দৈ, ঘিউ, পানী, চেনী আৰু মৌ মিহলি নৈবেদ্য।

देवताओं को चढ़ाने के लिये एक में मिलाया हुआ दही, घी, जल, चीनी और शहद ।

मधुमक्खी, मधुमक्षिका—(सं स्त्री) মৌ মাখি।
फूलोंका रस चूसकर मधु एकत्र करनेवाली मक्खी ।

मधुमास—[सं पुं]বসন্তকাল, চ'ত আৰু বহাগ মাহ ।
चैत और बैशाख के महीने ।

मधुमेह—[सं पुं] বহুমূত্ৰ ।
बढ़ा हुआ प्रमेह रोग ।

मधुरिमा— [सं स्त्री] মধুৰিমা, সুন্দৰতা ।
मधुरता । सुन्दरता ।

मधुशाला-[सं स्त्री]মদৰ দোকান।
शराब बनने और बिकने का स्थान ।

मधूक—(सं पुं) মহুৱা গছ আৰু ফল ।
महुआ । (पेड़ और फल)

मध्य—(सं पुं)মধ্য, মাজ, ককাল ।
बीचका भाग । कमर । अंतर ।
(वि) মাজত থকা ।
जो बीचमें हो ।

मध्यम वर्ग— (सं पुं) মধ্যবিত্ত বর্গ ।
समाज का बीचवाला वर्ग । मिडिल क्लास ।

मध्यस्थ—(वि) মধ্যস্থ ।
जो बीच में हो ।
[सं पुं]বুজা পৰা কৰি দিওঁতা।
आपस में मेल या समझौता करानेवाला । (सं स्त्री-मध्यस्थता)

मध्याह्न—(सं पुं) দুপৰীয়া ।
ठीक दोपहर ।

मनःपूत—(वि) মন:পূত, মনত লগা, যথেষ্ট ।
मन-चाहा । यथेष्ट । मनको प्रसन्न करनेवाला ।

मनका—[सं पुं] জপিবৰ বা ব্যৱহাৰ কৰা মালাৰ গুটি । মেৰুদণ্ডৰ ওপৰ খণ্ড ।
माला का दाना । गरदनके पीछे रीढ़ की सबसे ऊपरकी हड्डी ।

मन-गढ़ंत—[वि] মনে গঢ়া, মনে পতা ।
अपने मनसे गढ़ा हुआ । कपोल-कल्पित ।

मनचला—[वि] ৰসিক । সাহসী
साहसी । रसिक ।

মনখাহা—(বি) মনত লগা, যথেষ্ট।
इच्छित। यथेष्ट।

মনগঢ়া—(বি) মনে পতা, কাল্পনিক।
मनमें सोचा हुआ।

मनन—(सं पुं) মনন, চিন্তন, ভালদৰে ভাবি চিন্তি মনতে ঠাৱৰ কৰা কাৰ্য্য।
चिंतन। अच्छी तरह समझकर किया जानेवाला अध्ययनया विचार

मननशील—(वि) মননশীল, যি সদায় মনন কৰে।
जो बराबर मनन या चिन्तन करता रहता हो।

मनमाना—(वि) যি ভাল লাগে, ইচ্ছানুসৰি, মনত যি আছে।
जो अच्छा लगे। यथेष्ट। जो कुछ मनमें आवे।

मनमुटाव, मनमोटाव—[सं पुं] বৈমনস্য, মত-ভেদ হোৱা।
मन में होनेवाला वैमनस्य या विराग।

मनमोदक—[सं पुं] মনত সুখৰ কল্পনা কৰা অসম্ভৱ কথা।
मनमें सोची हुई सुखद, पर असम्भव बात।

मन-मौजी—(वि) কোনো চিন্তা নকৰি নিজ ইচ্ছা মতে কাম কৰা। স্বেচ্ছাচাৰী,
बिना किसी सोच विचार के मन माने काम करनेवाला। स्वेच्छा-चारी।

मनसब—(सं पुं) পদ, অধিকাৰ।
पद। अधिकार।

मनसा—[सं स्त्री] মনসা, দেবী বিশেষ।
एक देवी का नाम।
(क्रि वि) মনেৰে।
मनसे। इच्छा या विचार से।

मनसाना—(क्रि अ) উৎসাহ অথবা আবেগ পূৰ্ণ হোৱা।
उत्साह या उमंगमें आना।

मनसिज, मनोज, मनोभव-[सं पुं] কাম, কামদেৱ, চন্দ্ৰমা।
कामदेव।

मनसूबा—(सं पुं) যুক্তি, ৰীতি, ইচ্ছা, যোজনা।
युक्ति। ढंग। इरादा।

मनस्ताप—(सं पुं) মনো কষ্ট, মনতাপ, সন্তাপ।
मनमें होनेवाला कष्ट। पछतावा।

मनस्वी—(वि) মহামনা, প্ৰতিভা-শালী, বুদ্ধিমান।
बुद्धिमान।

मनहुँ—(अव्य) যেন।
मानो।

मनहूस—(वि) অশুভ, কদাকাৰ, সদাই দুখী, উদাসীন, আৰু নীৰৱে থকা।
अशुभ। देखनेमें कुरूप और अप्रिय। सदा दुःखी, चुप और उदास रहनेवाला।

मना—(वि) নিষিদ্ধ।
निषिद्ध।

मनाना—[क्रि स] সন্তুষ্ট কৰা, খং উঠা, লোকক বুজাই বৰাই সন্মত কৰা, প্ৰাৰ্থনা কৰা।
रुठे हुए को प्रसन्न करना। राजी करना। ईश्वर, देवता आदि से किसी काम या बात के लिये प्रार्थना करना।

मनावन—(सं पुं) খং অথবা অভিমান কৰি থকা সকলক সন্তুষ्ট কৰা ক্ৰিয়া অথবা ভাব।
रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव।

मनाही—[सं स्त्री] নিষেধ, বাধা।
निषेध। रोक।

मनियारा—(सं पुं) সোণ বেপাৰী, সোণ, মণি, মুক্তা আদিৰ ভাল বেয়া পৰীক্ষা কৰোতা।
जौहरी। मनिहार।

मनिहार—[सं पुं] এক প্ৰকাৰ চুৰি আদি অলঙ্কাৰ বিক্ৰেতা।
चुडी-हारा।(सं स्त्री-मनिहारिन)

मनीषा—[सं स्त्री] বুদ্ধি, মনীষা, জ্ঞান।
बुद्धि। अक्ल।

मनीषी—(वि) জ্ঞানী, পণ্ডিত, বুদ্ধিমন্ত। মনীষী।
पंडित। ज्ञानी। बुद्धिमान।

मनुआँ—(सं पुं) মন, মহুষ্য।
मन। मनुष्य।
(सं स्त्री) এবিধ কপাহ।
एक प्रकार की कपास।

मनुज—(सं पुं) মাহুহ।
आदमी।

मनुजाद—[सं पुं] নৰভক্ষী
নৰমংসভোগী।

वह जो मनुष्यों को अथवा मनुष्य का माँस खाता है।

मनुसाई—[सं स्त्री] পৰাক্ৰম, মনুষ্যতা ।
मनुष्यता । पराक्रम ।

मनुहार—(सं स्त्री) খোচামতি, কাবৌ-কোকালি, প্ৰাৰ্থনা, শান্ত ।
मनावन । खुशामद । प्रार्थना । आदर । शांति ।

मनोज्ञ—[वि] আকৰ্ষণীয়, সুন্দৰ, মনোজ্ঞ ।
मनोहर ।

मनोनिग्रह—(सं पुं) মনৰ ইচ্ছা, প্ৰবৃত্তি আদিক বশ কৰা ।
मनका निग्रह ।

मनोमय—(वि) মনোৰূপ, মানস, মানসিক ।
मनसे युक्त या पूर्ण । मानसिक ।

मनोविकार—(सं पुं) মনত উঠা, ভাববাজি ।
मनमें उठनेवाले भाव ।

मनौति (ती), मन्नत—(सं स्त्री) মানস, কোনো ইচ্ছা পূৰণৰ বাবে দেৱী, দেৱতালৈ আগ-বঢ়োৱা পূজা ।
किसी कामना की पूर्ति के लिये मानी हुई किसी देवताकी पूजा । मनौती ।

मम—(सर्व) মোৰ ।
मेरा ।

ममिया—[वि] মোমাৰ সম্বন্ধৰ লেখীয়া ।
सम्बन्धमें मामाके स्थान का ।

ममीरा—(सं पुं) বনৌষধি বিশেষ, চকুৰ অসুখৰ ঔষধ ।
एक पौधो की जड जो आँख के रोगों की दवा है ।

मयंक—(सं पुं) চন্দ্ৰ ।
चन्द्रमा ।

मय—(सं पुं) ময় নামৰ দানৱ, আমেৰিকাৰ এটি জাতি ।
एक असुर । अमेरिका की एक प्राचीन जाति ।

[प्रत्यय] তদ্ৰূপ, যুক্ত, প্ৰচুৰতা বোধক প্ৰত্যয় ।
तद्रूप, विकार और प्रचुरता का बोधक ।

मयस्सर—(वि) সুলভ, পোৱা ।
प्राप्त, सुलभ ।

मयूख—[सं पुं] কিৰণ, পোহৰ, শোভা, পৰ্ব্বত ।

किरण। दीप्ति। प्रकाश। शोभा। पर्वत।

मयूर–[सं पुं] ময়ুৰ, ম'ৰা চৰাই।
मोर।

मरकट—[वि] খুব, ক্ষীণ।
बहुत ही दुबला-पतला और क्षीण
[सं पुं] বান্দৰ।
मर्कट (बन्दर)

मरकत--[सं पुं] মৰকত মণি, পান্না।
पन्ना (रत्न)

मरगजा, मलगजा--[वि] পিছি বা ঘঁহি বিকৃত কৰি দিয়া, ঘহনি খোৱা।
जो मसलकर विकृत और विरूप कर दिया गया हो। रौंदा हुआ।

मरघट—(सं पुं) শ্মশান।
श्मशान।

मरज, मर्ज–(सं पुं) বেমাৰী, বেমাৰ।
रोग। बीमारी

मरजाद—(सं स्त्री) সীমা, প্ৰতিষ্ঠা, ৰীতি, মৰ্য্যাদা।
सीमा। प्रतिष्ठा। रीति।

मरजी, मर्जी–[सं स्त्री] ইচ্ছা, কৃপা, প্ৰসন্নতা, স্বীকৃতি।
इच्छा। कृपा। प्रसन्नता। स्वीकृति।

मरणासन्न—[वि] মৰণাসন্ন, মৰোঁ মৰো অৱস্থাত থকা।
जो मरने के बहुत समीप हो।

मरतबा—(सं पुं) পদ, বাৰ।
पद। बार।

मरदानगी—(सं स्त्री) পৌৰুষ, বীৰত্ব, সাহস।
पौरुष। शूरता। साहस।

मरदाना—(वि) পুৰুষ সম্বন্ধীয়, বীৰত্ব সূচক।
पुरुष-सम्बन्धी। वीरोचित।
(सं पुं) বীৰ।
वीर।

मरना—[क्रि अ] মৰা, মৃত্যু হোৱা, অকৰ্ম্মণ্য হৈ যোৱা।
शरीर से प्राण निकलना। कुम्हलाना। बेकाम हो जाना।

मरमराना-- (क्रि स क्रि अ)
মৰ মৰ শব্দ কৰা বা হোৱা।
मर मर शब्द होना या करना।

मरम्मत—(सं स्त्री) মেৰামতি, ঠিক কৰা, ভগা বটা কাৰ্য্য।
किसी वस्तु का टूटा फूटा या

बिगड़ा हुआ अंश ठीक करने का काम। दुरुस्ती।

मरहम, मलहम—(सं पुं) মলম, লিপি বা সানি দিয়া ঔষধ। घावपर लगाने का औषध का गढ़ा, चिकना लेप।

मरहम-पट्टी—[सं स्त्री] কোনো ঘা আদিত ঔষধ লগাই কাপোৰ বান্ধি দিয়া কাৰ্য্য। घावपर दवा लगाकर पट्टी बाँधने का काम।

मरातिब— (सं पुं) পদ, ঘৰৰ অংশ, পতকা। पद। मकान का खंड। तल्ला। मुगल बादशाहों का एक प्रकार बड़ा झण्डा।

मराल—[सं पुं] হাঁহ, ঘোঁৰা। हाती। हंस। घोड़ा। हाथी।

मरियल—[वि] বেমাৰী, দুৰ্ব্বল। बहुत दुर्बल।

मरीचि (का)—(सं स्त्री) মৰীচিকা, মৃগ-তৃষ্ণা, কিৰণ। किरण। प्रभा। मृग-तृष्णा।

मरीज—(सं पुं) বেমাৰা। रोगी।

मरुत्—[सं पुं] বায়ু, প্ৰাণ। वायु। प्राण।

मरूर—(सं पुं) কামোৰণি, কষ্ট, বেদনা। मरोड़। पीड़ा।

मरोड़ना, मरोरना—[क्रि स] বল প্ৰয়োগ কৰা, মোচৰা চকুৰে ইঙ্গিত দিয়া, নাক মুখ কোচোৰা, কষ্ট দিয়া। बल डालना। ऐंठना। आँख से इसारा करना। नाक भौंह चढ़ाना, पीड़ा देना।

मर्ग— (सं पुं) কাশ্মীৰৰ পশু চৰণীয়া পাহাৰী স্থান। काश्मीर में पहाड़के ऊपर वह छोटा मैदान जिसमें पशु चरतेहों।

मर्तबान—(सं पुं) আচাৰ, ঘিউ আদি ৰখা চীনামাটি অথবা মাটিৰ বাচন। अचार। घी आदि रखनेका चीनी मिट्टी या सादी मिट्टीका बरतन।

मर्द—[सं पुं] মানুহ, পুৰুষ, সাহসী আৰু ধৰ্ম্মীলোক, স্বামী। मनुष्य। पुरुष। साहसी और पुरुषार्थी व्यक्ति। पति।

मर्दन-[सं पुं] পিহা, চেপেটা কৰা, চেপা, নষ্ট কৰা।
कुचलना। रौंदना। मसलना। नाश।
[বি] মৰ্দ্দন, নাশ অথবা সংহাৰ কৰোতা।
मर्दन। नाश या संहार करने वाला।

मर्दना-(ক্রি স) পিহা, নষ্ট কৰা, মাৰিপেলোৱা, মৰ্দ্দন কৰা।
मर्दन करना। मसलना। नष्ट करना। मार डालना।

मर्दुम-शुमारी—[सं स्त्री] গণ-পিয়ল, জন পিয়ল।
जनगणना।

मर्दुमी— [सं स्त्री] পৌৰুষ।
पौरुष।

मर्मज्ञ- (वि) তত্বজ্ঞ।
तत्वज्ञ।

मर्मभेदी—[वि] মৰ্ম্মভেদী, হৃদয়-স্পৰ্শী, আন্তৰিক কষ্ট দিয়া।
हृदयमें चुभनेवाला। हार्दिक कष्ट पहुचानेवाला।

मर्मर— [सं पुं] পাতৰ মৰমৰণি (ধ্বনি) মৰ্ম্মৰ।
पत्तों आदिका मर मर शब्द।

मर्मवचन, मर्मवाक्य— (सं पुं) শ্ৰোতাৰ অন্তৰত কষ্ট দিয়া বাক্য বা কথা।
वह बात जिससे सुननेवाले का हृदय दुखे।

मर्मांतक (तिक)—[वि] হৃদয়-বিদাৰক, অন্তৰত বৰকৈ শোক দিয়া।
हृदयमें चुभनेवाला।

मर्मी—(वि) তত্বজ্ঞ।
तत्वज्ञ।

मर्यादित—[वि] সীমাযিত, মৰ্য্যা-দিত, যি নিজৰ সীমা বা মৰ্য্যদাৰ ভিতৰতে থাকে।
जिसकी सीमा या हद निश्चित हो। जो अपनी मर्यादा या सीमा के अन्दर हो।

मर्षण—[सं पुं] ক্ষমা, দায-জগৰ এৰা কাৰ্য্য। কষ্ট, অন্যায় আদি সহ্য কৰা কাৰ্য্য বা ভাব।
क्षमा। कष्ट, अन्याय, आघात आदि धैर्यपूर्वक या चुपचाप सहने की क्रिया या भाव।
(वि) নাশক, দূৰ কৰোঁতা।
नाशक। दूर करनेवाला।

मल—(সং পুং) গাৰ মলি, গু-মূত, ময়লা, পাপ, কলঙ্ক।
मैल। विष्ठा। विकार। पाप।

मलका—(सं स्त्री) মহাৰাণী।
महारानी।

मलना—(ক্রি স) মোচৰ, মোহাৰ, মান।
हाथ से घिसना या रगड़ना। मांजना। मालिश करना।

मलबा— (সং পুং) জাবৰ-জোথৰ, ভঙা ঘৰৰ ইটা, শিল আদিৰ দ'ম।
कूड़ा कर्कट। गिरी हुई इमारत की ईंटे, पत्थर आदि या उनका ढेर।

मलमास— (सं पुं) মলমাস, জ্যোতিষৰ সৌৰ আৰু চান্দ্ৰ দুয়ো মতৰ গণনাৰ মিল কৰিবলৈ প্ৰতি তিনি বছৰে বেচিকৈ লোৱা মাহ।
अधिक मास।

मलय— (সং পুং) দাক্ষিণাত্যৰ অঞ্চল বিশেষ, মালাবাৰ উপকূল, উক্ত অঞ্চল নিবাসী, বগা চন্দন।
दक्षिणका एक अंचल, मलाबार। उस अंचलके निवासी। सफेद चन्दन।

मलयज—(সং পুং) চন্দন।
चन्दन।
[वि] মলয়, পৰ্ব্বতত জন্মা বা ওপজা।
मलय पर्वत पर या से उत्पन्न।

मलयानिल—(সং পুং)মলয়া বাৰ, বসন্তৰ আৰম্ভণিতে দক্ষিণ দিশৰ পৰা বলা সুগন্ধি আৰু শীতল বতাহ।
मलय पर्वत की ओरसे आनेवाली वायु। वसन्त ऋतुकी सुखद और सुगंधित वायु।

मलाई— (सं स्त्री) খীৰ, ক্ষীৰ, সাৰতত্ত্ব।
देरतक गरम किये हुए दूधके ऊपर का जमा हुआ सार भाग। साढ़ी। सार। तत्त्व।

मलामत—(सं स्त्री) ডাবি-ধমকি, ময়লা।
डाँट। फटकार। मैल। गंदगी।

मलार, मल्लार— [সং পুং] মল্লাৰ, বসন্ত ঋতুত গোৱা একবিধ ৰাগ, বৰগীতৰ একবিধ ৰাগ, আৰ্য্য

सङ्गीतৰ এটা সুৰৰ নাম।
वर्षाऋतुमें गाया जानेवाला एक राग।

मल्लारी, मल्लारी—(सं स्त्री) ৰাগিনী বিশেষ।
वर्षाऋतुमें गायी जानेवाली एक रागिनी।

मलाल—(सं पुं) দুঃখ, শোক।
दुःख। रंज।

मलाह, मल्लाह—[सं पुं]ঘাটোৱাল।
केवट। माँझी।

मलाही, मल्लाही—(वि) ঘাটোৱাল সম্বন্ধীয়।
मल्लाह सम्बन्धी।
[सं स्त्री] ঘাটোৱালৰ কাৰ্য্য, সাতোৰ বিশেষ।
मल्लाह का कार्य, पद या भाव। एक विशेष प्रकार की तैराई। [ब्रेस स्ट्रोक]

मलिन— (वि) মলিয়ন, কুটিল, পাপী, ম্লান।
मैला। कपट-भरा। विकार युक्त। पापी। म्लान।

मलिया-मेट (मटिया-मेट)—(सं पुं) সৰ্ব্বনাশ, নষ্ট কৰা কাৰ্য্য।
सर्वनाश। बरबादी।

मलीदा—[सं पुं] মলিদা, মিহি ভাল উণৰ চাদৰ বিশেষ।
एक प्रकारका बढ़िया मुलायम ऊनी कपड़ा।

मलूक—(वि) সুন্দৰ, ধুনীয়া।
सुन्दर। मनोहर।

मल्ल—(सं पुं) মাল, পালোৱান।
पहलवानों की एक जाति। पहलवान।

मल्ल-युद्ध—[सं पुं] মাল-যুঁজ।
कुश्ती।

मलहाना—(क्रि स) চুমা খোৱা, নিচুকুৱা।
चुमकारना। पुचकारना।

मवाद—[सं पुं] পুঁজ, মল, আবৰ্জ্জনা, মছলা।
पीब। मल। गन्दगी।

मवास—(सं पुं) দুৰ্গ, আশ্ৰয়।
दुर्ग। शरण या रक्षा का स्थान।

मवेशी—(सं पुं) চতুষ্পদী জন্তু।
चौपाया।

मशक—(सं पुं) মহ, শৰীৰত থকা তিল, মাহ আদি।

मच्छड़। शरीर पर का मसा।
(স° স্ত্রী) পানী কাঢ়য়াবৰ বাবে চামৰাৰে তৈয়াৰী মোনা।
चमड़े का बना वह थैला जिसमें पानी भरकर लाते हैं।

মশাক্কত—[স° স্ত্রী] পৰিশ্ৰম, মেহনত।
परिश्रम। मेहनत।

মশহুৰ—(বি) প্ৰসিদ্ধ, বিখ্যাত,
प्रसिद्ध। विख्यात।

মশাল—[স° স্ত্রী] জেঁাৰ, আৰিয়া।
डण्डेमें चिथड़े लपेटकर बनाई हुई, जलाने की बहुत मोटी बत्ती जो हाथमें लेकर चलते हैं।

মশালচী–[স° পু°] আৰিয়া ধাৰী, আৰিয়া বা জেঁাৰ হাতত লৈ যাওঁতা জন।
मशाल हाथमें लेकर चलनेवाला।

মশীন্—[স° স্ত্রী] কল, যন্ত্ৰ।
कल। यंत्र।

মশ্ক—(স° পু°) অভ্যাস।
अभ्यास।
(স° স্ত্রী) পানী ভৰাবলৈ তৈয়াৰী চামৰাৰ মোনা।
पानी भरनेकी मशक।

মস—(স° স্ত্রী) চিয়াঁহী, গোঁফ ঠুটিওৱাৰ আগেয়ে গজা কোমল নোমবোৰ।
मसि। स्याही। मूँछे निकलने से पहले उसके स्थानपर होनेवाली रोमावली।

মসকত, মসক্কত—(স° স্ত্রী) পৰিশ্ৰম, মেহনত।
परिश्रम। मेहनत।

মসকনা—[ক্রি স ক্রি অ] ভাঙি বা ফাটি যোৱাকৈ হেচা বা দবোৱা।
इस प्रकार दवाना या दबना कि टूट या फट जाय।

মসখৰা-(স° পু°) বগুৱা, মস্কৰা।
परिहास करनेवाला। दिल्लगी बाज।

মসখৰী—(স° স্ত্রী) মস্কৰা কাৰ্য্য, বিদ্ৰূপ। পৰিহাস।
दिल्लगी। परिहास।

মসনদ—(স° স্ত্রী) ডাঙৰ গাৰু, সিংহাসন।
बड़ा तकिया। सिंहासन।

মসৰফ—[স° পু°] ব্যৱহাৰ, সুবিধা, কাণ।
व्यवहार। उद्योग।

मसल—(सं स्त्री) ফকৰা, পটন্তৰ। উদাহৰণ।
कहावत।

मसलन—[क्रि वि] উদাহৰণ হিচাবে।
उदाहरणार्थ।

मसलना—[क्रि स] কোনো বস্তু জোৰকৈ ঘঁহা, বা হেচুকি দিয়া।
दबाकर मलना, रगड़ना। [सं स्त्री-मसलन]

मसला—[सं पुं] ফকৰা, পটন্তৰ, সমস্যা, প্ৰশ্ন।
कहावत। लोकोक्ति। समस्या।

मसविदा, मसौदा—[सं पुं] প্ৰাৰূপ, খছৰা, মচাবিদা।
प्रालेख। युक्ति। तरकीब।

मसहरी—(सं स्त्री) আঁঠুৱা, মহৰি।
मच्छरदानी।

मसा, मस्सा—(सं पुं) শৰীৰত হোৱা তিল, মাহ আদি। অৰ্শ বেমাৰত ওলাই অহা মংস খণ্ড, মহ।
काले रंगका उभरा हुआ मांस का वह दाना जो शरीरपर कहीं कहीं निकलता है। बवासीरमें निकलनेवाला मांसका दाना। मच्छड़।

मसान—(सं पुं) শ্মশান।
मरघट। श्मशान।

मसालेदार—(वि) মচলা যুক্ত,
जिसमें मसाला मिला या पड़ा हो।

मसि—[सं स्त्री] চিয়াঁহী, কাজল।
स्याही। कागज। कालिख।

मसीत (द)—[म स्त्री] মচজিদ।
मसजिद।

मसीह (१)—(सं पुं) যীচু খৃষ্ট পয়গম্বৰ।
ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा। पैगम्बर।

मसीही—[सं पुं] খৃষ্টিয়ান।
ईसाई।

मसूढ़ा—[सं पुं] দাঁতক ধৰি থকা মুখৰ ভিতৰৰ মাংস খণ্ড, দাঁতৰ গুৰি।
मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें दाँत उगे होते हैं।

মসুৰ—[সং স্ত্ৰী] মচুৰ দালি, মাহ।
एक प्रकार की दाल।

মসৃণ—(বি) নিহি, চিকোণ।
चिकना।

মসোসনা—(ক্রি অ) মনোবেগ বোধ কৰা, মনতে দুঃখ কৰা।
किसी मनोवेग को रोकना। मनही मन खेद या दु:ख करना। कुढ़ना।
[ক্রি স] মোহৰা, চেপিউ-লিওৱা।
ऐंठना। निचोड़ना।

মস্ত—(বি) মতলীয়া, মত্ত, প্ৰসন্ন আৰু নিশ্চিন্ত, যৌৱনত মতলীয়া।
मतवाला। प्रसन्न और निश्चित। यौवन मद से भरा हुआ।

মস্ত-মৌলা—[বি]আপোন-ভোলা।
मनमौजी।

মস্তানা—(বি)মতলীয়াৰ নিচিনা, মত্ত।
मस्तों का सा। मस्त।
(ক্রি অ) মতলীয়া হোৱা।
मस्त होना।

মস্তিষ্ক—[সং পুং] মগজু, মানসিক শক্তি, বুদ্ধি।
मस्तक के अन्दर का गूदा। मानसिक शक्ति। बुद्धि।

মস্তী—(সং স্ত্ৰী) মতলীয়া গুণ, মদ।
मतवालापन। मद।

মস্তুল—(সং পুং) মাস্তুল, পাল আদি তৰিবৰ নিমিত্তে নাও বা জাহাজৰ ওপৰত থিয়কৈ লগোৱা ওখ খুটা।
बड़ी नावोंके बीचका वह लट्ठा जिसमें पाल बाँधते है।

মহঁ—(অব্য) "ত"। কবিতাত প্ৰযোগ হোৱা অধিকৰণ কাৰকৰ চিহ্ন। में।

মহঁগাই—(সং স্ত্ৰী) মহঙা, মহঙা হোৱা বাবে পোৱা বানচ।
महँगी। महँगीके कारण मिलने वाला भत्ता।

মহঁগী—(সং স্ত্ৰী) মৰগ, মহঙা হোৱা ভাব। দুৰ্ভিক্ষ।
महँगे होने का भाव या अवस्था। दुर्भिक्ष।

মহক, মহকান—[সং স্ত্ৰী] গোন্ধ।
गंध। बास।

महकना—(क्रि अ) গোন্ধোৱা।
गंध देना।

महकमा—(सं पुं) মহকুমা।
व्यवस्था करनेवाला विभाग। सरिश्ता।

महज—[वि] কেৱল, মাত্র।
केवल। सिर्फ।

महताब—(सं स्त्री) জোনাক।
चाँदनी। महताबी।

महताबी—(सं स्त्री) একপ্রকাৰৰ আতচবাজী, বাগিছাৰ মাজৰ ওখ বহা ঠাই।
एक प्रकार की आतिशबाजी। बाग के बीच का चबूतरा।

महती—[वि स्त्री] বৰ ডাঙৰ।
बहुत बड़ी।

महतो—(सं पुं) মুখিয়াল, গাঁৱ, সমাজ অথবা অনুষ্ঠানৰ মুখিয়াল।
कहार। प्रधान। गाँव, समाज, मण्डली आदिका मुखिया।

महत्ता—[सं स्त्री] মহত্ব।
महत्व।

महनीय—[वि] মাননীয়, পূজনীয়, মহান।
मान्य। पूज्य। महान।

महफिल—[सं स्त्री] সভা, সঙ্গীত সন্ধিয়া।
सभा। जलसा। नाच गानेका स्थान या जलसा।

महबूब—(सं पु) প্রিয়, প্রেমপাত্র, বন্ধু।
प्रिय। प्रेमपात्र। दोस्त।

मह-मह—[क्रि वि] সুগন্ধ যুক্ত।
सुगन्धि या खुशबू के साथ।

महर-[सं पुं] আদৰ সূচক শব্দ, পক্ষী বিশেষ। 'নিকাহ'ৰ সময়, বৰ পক্ষই কন্যাপক্ষক দিয়া উপঢৌকন, যৌতুক আদি।
बड़े आदमियों के लिये व्यवहृत एक आदर सूचक शब्द। एक प्रकार का पक्षी। मुसलमानों में वह धन जो विवाह के समय वर पक्ष से वधू पक्षको मिलता है।
(सं स्त्री) দয়া।
कृपा। दया।

महरम-(सं पुं) পৰম আত্মীয়।
परम आत्मीय।
(सं स्त्री) চোলা।
अँगिया। चोली।

महरा-(सं पुं) মুখিয়াল। পাল্কী কঢ়িওৱা এটি জাতি।
कहार। मुखिया। सरदार।

महरि(री)- [सं स्त्री] গৃহিণী, চাকৰণী ।
मालकिन । घरवाली । नौकरानी

महल—[सं पुं] প্ৰসাদ, অন্তঃপুৰ ।
प्रासाद । अन्त.पुर ।

महल्ला— (सं पुं) চুবুৰী (চহৰৰ) ।
शहरका वह विभाग जिसमे बहुत से मकान हो ।

महसूल—(सं पुं) মাচুল, ঘৰ ভাড়া, খাজনা ।
कर । किराया । जमीन की लगान ।

महसूस—(वि) অনুভৱ ।
जिसका ज्ञान या अनुभव हो । अनुभूत ।

महाकाय— (वि) মহাকায, শকত আৱত ।
जिसका शरीर बहुत बडा हो ।

महागति—(सं स्त्री) নিৰ্ব্বাণ, মোক্ষ ।
मोक्ष ।

महानिर्वाण—(सं पुं) মহানিৰ্ব্বাণ ।
বুদ্ধত্ব প্ৰাপ্ত হোৱা নিৰ্ব্বাণ ।
वह उच्च कोटिका निर्वाण जिसके अधिकारी अर्हत या बुद्ध होते हैं ।

महानुभाव—[सं पुं] মহানুভৱ, উদাৰ স্বভাৱযুক্ত, মহৎ ।
बडा और आदरणीय व्यक्ति ।

महापातर, महापात्र, महाब्राह्मण—[सं पुं] প্ৰেতকাৰ্য্য কৰোঁতা আৰু দান লওতা বামুণ। প্ৰধান মন্ত্ৰী । জগন্নাথৰ প্ৰধান পাণ্ডা ।
मृतक कर्मका दान लेनेवाला ब्राह्मण । महामन्त्री ।

महाप्रसाद—[सं पुं] দেৱতালৈ আগবঢ়োৱা নৈবেদ্য । জগন্নাথৰ প্ৰসাদ । মাংস, (ব্যঙ্গৰ্থত) ।
जगन्नाथ जी पर चढाया हुआ भात । मास (व्यंग) ।

महा-प्राज्ञ—(सं पुं) বৰ বিদ্বান ।
बहुत बडा विद्वान ।

महाबलाधिकृत—[सं पुं] গুপ্ত-যুগত সেনাধ্যক্ষৰ বাবে ব্যবহৃত উপাধি ।
गुप्तकालीन भारतमें साम्राज्य का वह सर्वप्रधान अधिकारी जिसके अधीन सारी सेना होती थी और जो सैनिक राजमंत्री होता था ।

महाभाग—(वि) মহাভাগ্যবান ।
भाग्यवान ।

महाभियोग—(सं पुं) মুখ্য প্ৰশাসক সকলৰ বিৰুদ্ধে অনা গুৰুতৰ অভিযোগ।
वह अभियोग जो बहुत बड़े अधिकारियों (राष्ट्रपति, महा प्रशासक आदि) पर कोई बहुत अनुचित या हानिकारक काम करने पर चलता हो (अं—इम्पचमेंट)

महामना—(वि) উদাৰ মনোবৃত্তিৰ, মহামতি।
बहुत उच्च और उदार मनवाला।

महामात्य—(सं पुं) প্ৰধান মন্ত্ৰী।
महामंत्री।

महामारी—[सं स्त्री] মহামাৰী, মাউৰ, সংক্ৰামক ৰোগ।
संक्रामक भीषण रोग।

महायान--[सं पुं] মহাযান সম্প্ৰদায়।
बौद्धों के तीन सम्प्रदायोंमें से एक

महारथ, महारथी—(सं पुं) বৰ বীৰ, ডাঙৰ যুঁজাৰু, যি অকলে দহ হাজাৰ ধনুৰ্দ্ধৰৰ লগত যুদ্ধ কৰিবলৈ পাৰগ আৰু অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ বিদ্যাত নিপুণ।
प्राचीन भारतमें वह बहुत बड़ा योद्धा जिसके अधीन अनेक रथी योद्धा रहते थे।

महाराज्ञी—[सं स्त्री] মহাৰাণী।
महारानी।

महार्घ—[सं पुं) মহাৰ্ঘ, মহত, বেচি দামী।
बहुत अधिक मूल्यका। महँगा।

महाल—[सं पुं] চুবুৰী, মাটিৰ বন্দোবস্তৰ বাবে কেবাখনো গাঁৱ মিলি কৰা একেটি গোট।
मुहल्ला। जमीन के बन्दोबस्त के विचार से कई गाँवोंका समूह।

महालया—[सं स्त्री] মহালয়া, চান্দ্ৰ আহিন মাহৰ আঁউসী, দুৰ্গা পূজাৰ আগৰ আঁউসী।
आश्विन कृष्ण अमावस्या जो पितृ पक्ष का अन्तिम और पितृ विसर्जन का दिन होता है।

महावट—(सं स्त्री) জাৰৰ দিনৰ বৰষুণ।
जाड़े की बर्षा।

महावत—[सं पुं] মাউত, হাতী চলাওঁতা।
हाथीवान।

महावर—(सं पुं) সধবা তিৰোতাই ভৰিত ঘহা ৰেঙুকা বোলৰ দৰে বং।
वह लालरङ्ग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने पैर रँगती हैं।

महासंधि, विग्रहिक—[सं पुं] গুপ্ত কালৰ যুদ্ধ আৰু সন্ধি সম্পৰ্কীয় উচ্চ অধিকাৰীৰ পদবী।
गुप्तकालीन भारतका वह उच्च अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों से सन्धि और विग्रह आदि करने का अधिकार होता था।

महि (ही)—পৃথিৱী।
पृथ्वी।

महिदेव, महिसुर—(सं पुं) বামুণ।
ब्राह्मण।

महिष—[सं पुं] মহ, মহিষাসুৰ।
भैंसा। राजा।

महिषी—[सं स्त्री] মাইকী মহ। ৰাণী।
भैंस। रानी।

महीन—(वि) পাতল, কোমল।
पतला। बारीक। झीना। कोमल (स्वर)

महीना—(सं पुं) মাহ, মাহেকীয়া বেতন, তিৰোতাৰ মাহেকীয়া ধৰ্ম্ম (চুৱা হোৱা)।
मास। मासिक वेतन। स्त्रियोंका मासिक धर्म।

महीप (ति)—(सं पुं) ৰজা।
राजा।

महुआ—(सं पुं) মহুৱা গছ।
मधूक वृक्ष।

महुअ—(सं पुं) মহুৱা, যষ্টিমধু, মৌ।
महुआ। मुलेठी। शहद।

महूरत—(सं पुं) মুহূৰ্ত্ত, শুভ-ক্ষণ।
मुहूर्त। शुभारम्भ।

महेश, महेस—[सं पुं] শিৱ।
शिव।

महोगनी—[सं पुं] মেহগেনি।
चीकू या स्पाट का वृक्ष।

महोच्च—(वि) বৰ ওখ।
बहुत ऊँचा।

महोदधि—[सं पुं] সাগৰ।
समुद्र।

माँ—[सं स्त्री] মাই, আই।
माता।

माँग—[सं स्त्री] মাগন, প্ৰাৰ্থনা, কপালৰ শিৰোভাগ।
मांगने की क्रिया या भाव। वह बात जिसके लिये किसी से याचना, प्रार्थना या आग्रह किया जाय। किसी बात की चाह या आवश्यकता होने की अवस्था या भाव। माथे का सीमन्त।

माँगना—[क्रि स] খোজা, কোনো বস্তু পাবৰ বাবে ইচ্ছা প্ৰকাশ কৰা, প্ৰাৰ্থনা কৰা।
किसी से कुछ लेने की इच्छा प्रकट करना। यह कहना कि यह करो या यह दो। प्रार्थना करना। चाहना।

मांगलिक—[वि] মঙ্গল সূচক, শুভ।
मंगल करनेवाला। शुभ।
[सं पुं] নাটকত মঙ্গল স্তোত্ৰ পাঠ কৰা পাত্ৰ।
नाटक में मङ्गल पाठ करने वाला पात्र।

मांगल्य—(वि) মাঙ্গল্য, মঙ্গল-সূচক।
शुभ। मङ्गल कारक।
(सं पुं) মঙ্গলৰ ভাব।
मङ्गल का भाव।

मांजना—(क्रि अ) ঘঁহ, মোহাৰ, মাজ, পৰিষ্কাৰ কৰ।
मैल छुड़ाने, चिकना करने या मजबूत बनाने के लिये किसी चीज को रगड़ना।
[क्रि स] অভ্যাস কৰা।
अभ्यास करना।

माँझ—(अव्य) ত।
में।
(सं पुं) পাৰ্থক্য, ভিতৰত।
अन्तर। फरक।

माँझा—(सं पुं) মাজুলী, পাগুৰিত পিন্ধা এক প্ৰকাৰ অলঙ্কাৰ।
দৰা কন্যাই পিন্ধা হালধীয়া কাপোৰ।
नदीमें का टापू। पगड़ीपर पहनने का एक प्रकार का आभूषण। विवाह के अवसर पर पहनने के लिये वर और वधूके पीले कपड़े।

माँझी-[सं पुं] নাৱৰীয়া, ঘাটোৱাল, মধ্যস্থ।
केवट। मध्यस्थ।

माँड़—[सं पुं] মাৰ, মাড়, ভাতৰ এঠা।
भात पकानेपर निकलनेवाला पानी।

माँड़ना—(क्रि स) ঘঁহা, পিহা, লিপা, বেগাই যোৱা, ধান আদিৰ নৰাৰ পৰা বীজ বা ফচল উলিওৱা।

मलना। गूँधना। लेप करना। फैलाना। जोरों से चलना। फसलों के डण्ठलों आदि में से अनाज के दाने अलग करना। रौंदना। सामने करना।

[क्रि अ] যোৱা।

गमन करना। चलना।

माँडलिक—[सं पुं]কোনো অঞ্চল বা ঠাইৰ প্ৰশাসক, কৰতলীয়া ৰজা।

किसी मण्डल या प्रान्त का शासक। किसी बड़े राजा को कर देनेवाला छोटा राजा।

माँडव, माँड़ौ, माँड्यौ-[सं पुं] মণ্ডপ, অতিথি শালা।

विवाह आदिका मण्डप। अतिथि शाला।

माँड़ा—(सं पुं) চকুৰ এক-প্ৰকাৰৰ বেমাৰ, মণ্ডপ, এবিধ পৰঠা (ভাঠ পুৰি)।

आँख की पुतली पर झिल्ली पड़ने का रोग। मण्डप। एक प्रकार की रोटी।

माँड़ी—[सं स्त्री] কাপোৰ সূতাত দিয়া মাৰ, ৰং।

कपड़े या सूतपर लगाया जाने वाला कलफ।

माँद—(वि) কান্তিহীন, উদাস, পৰাজিত, তুলনামূলক ভাবে বেয়া বা পাতল।

श्री-हीन। उदास। अपेक्षाकृत बुरा या हल्का। मात, पराजित।

(सं स्त्री) হিংস্ৰ জন্তুৰ গুহা বা থকা ঠাই।

हिंसक जन्तुओंके रहनेका बिल या गड्ढा। गुफा।

माँदा—[वि] বেমাৰী, পৰিশ্ৰান্ত, ভাগৰি পৰা।

थका हुआ। रोगी।

मांस—[सं पुं] মঙহ।

गोश्त।

मांसल—(वि) মাংসৰে ভৰা, শকত।

मांससे भरा हुआ। मोटा ताजा।

मांसाहारी—(सं पुं) মাংসাহাৰী, মাংস খাওঁতা।

मांस खानेवाला

माकुल—[वि] উচিত, ভাল, তৰ্কত পৰাস্ত, নিৰুত্তৰ।
उचित। अच्छा। तर्कमें परास्त। कायल।

माखना—(क्रि अ) অপ্ৰসন্ন অথবা অসন্তুষ্ট হোৱা, মনত দুঃখ অথবা ক্ষোভ হোৱা।
अप्रसन्न या नाराज होना। मन में खेद या दुःख करना।

माखी—[सं स्त्री] মাখি।
मक्खी।

मागध—[सं पुं] চাৰণ, ভাট।
भाट।
[वि] মগধ দেশৰ।
मगध देशका।

मागधी--[सं स्त्री] মাগধী ভাষা।
मगध देशमें प्रचलित पुराना प्राकृत भाषा।

माचा—[सं पुं] পালেং, খাট।
पलंग। खाट। मचान।

माजरा—(सं पुं) বিবৰণ, বৃত্তান্ত, ঘটনা।
विवरण। वृत्तान्त। हाल। घटना।

माटा—(सं पुं) ৰঙা পৰুৱা বিশেষ।
लाल बड़ी च्यूँटी।

माढ़ना—(क्रि स) সজোৱা, আদৰ কৰা, ধাৰণ কৰা, পিন্ধা।
सजाना। धारण करना। आदर करना।

मातंग—[सं पुं] হাতী, চণ্ডাল।
हाथी। चाडाल

मात-[सं स्त्री] পৰাজয়। पराजय।
(वि) পৰাজিত কৰোৱা, তুলনা হীন, উন্নত। पराजित। किसीकी तुलनामें फीका, मन्द या हीन, उन्मन, मस्त।

मातदिल—(वि) কুহুমীয়া, কমোৱা।
न बहुत ठण्डा, न बहुत गरम।

मातना—(क्रि अ) মতলীয়া হোৱা।
मस्त या मत्त होना। बहुत नशेमें हो जाना।

मातबर—[वि] বিশ্বাসী।
विश्वसनीय।

मातम— (सं पुं) মৃত্যু-শোক, নীৰৱতা মৃত্যুৰ পিছত)। किसी के शोकमें होनेवाला रोना-पीटना

मातमपुर्सी—(सं स्त्री) মৃতকৰ আপোন জনক সান্ত্বনা দিয়া।

मृतक के सम्बन्धियों के पास जा कर उन्हें सांत्वना देना।

মাতহত—[বি] অধীনস্থ।
किसी की अधीनता या देखरेख में काम करनेवाला।
(ক্রি বি) অধীনতা।
अधीनता। नीचे।

মাতা—[সং স্ত্রী] মাই, বসন্ত ৰোগ।
जननी। शीतला या चेचक नामक रोग।
(বি) মতলীয়া।
मतवाला।

মাতুল—(সং পুং) মোমাই।
मामा।

মাতৃক— [বি] মাতৃ সম্বন্ধীয়, মাইৰ বা আইৰ।
माता सम्बन्धी। माता का।

মাতৃকা—(সং স্ত্রী) আই, ধাই, দেৱীসকলৰ শ্রেণী বিশেষ।
माता। धाय। एक प्रकार की देवियों का वर्ग।

মাতৃকুল—[সং পুং] মাতুল বংশ।
माता अथवा नानाका वंश या कुल।

মাত্রা—[সং স্ত্রী] মাত্রা, পৰিমাণ, সুৰৰ স্থায়িত্ব কাল, আখৰৰ ওপৰত দিয়া সৰু আঁচ।
परिमाण। धन-राशि, रकम। स्वर की सूचक रेखा या चिह्न।

মাত্রিক— [বি] মাত্রা সম্বন্ধীয়, ছন্দ বিশেষ।
मात्रा सम्बन्धी। जिसमें मात्राओं की गणना या विचार हो।

মাথ, মাথা-[সং পুং] মূৰ।
मस्तक।

মাথনা-[ক্রি স] মথা বা ঘোঁটা কাৰ্য্য।
मथना।

মাথাপচ্চী—(সং স্ত্রী) মূৰ ঘমা।
ऐसा काम जिसमें मस्तिष्क की बहुत अधिक शक्ति व्यय हो।

মাথুৰ—(সং পুং) মথুৰা নিবাসী, কায়স্থ সকলৰ উপজাতি।
मथुराका निवासी। कायस्थों की एक जाति।

মাথে— (ক্রি বি) মূৰত, আশ্রয়ত।
मत्थे। सिर पर। भरोसे या आसरे पर।

मादक—(वि) মাদক, ৰাগীয়াল। नशीला।

मादन—[वि] ৰাগীয়াল, মতলীয়া কৰা।
मादक। मस्त करनेवाला।
(सं पुं) কামদেৱৰ পঞ্চবাণৰ এক বাণ।
कामदेव के पाँच बाणोंमें से एक।

मादर—(सं पुं) মাদল।
एक प्रकार का ढोल।

मादा-(सं स्त्री) স্ত্ৰী জাতিৰ জীৱ।
स्त्री जातिका जीव।

माद्दा—[सं पुं] মূল তত্ত্ব, যোগ্যতা, সামৰ্থ্য, পূঁজ।
मूल तत्त्व। योग्यता। सामर्थ्य।
मवाद, पीब।

माधुरी—[सं स्त्री] মাধুৰ্য্য, সুন্দৰতা, মদ, মাধুৰী।
माधुर्य। मिठास। सुन्दरता।
शराब।

मान—[सं पुं] পৰিমাণ, আকাৰ বা গধুৰতাৰ জোখ, বোহ, ঠেহ, গৰ্ব্ব, প্ৰতিষ্ঠা সম্মান। সামৰ্থ্য।
परिमाण। पैमाना। सीमा, महत्ता आदि सूचित करनेवाले क्रमिक विभाग। अभिमान। प्रतिष्ठा। इज्जत। रूठना। सामर्थ्य।

मानक—[सं पुं] মানদণ্ড।
मान दंड। सर्वमान्य मान या माप। (स्टैंडर्ड)

मानचित्र— (सं पुं) মানচিত্ৰ, মেপ।
नक्शा।

मानदेय—[सं पुं] অবৈতনিক লোকক দিয়া বঁটা বা পুৰস্কাৰ।
वह धन जो किसीके सम्मान पूर्ण पारिश्रमिक के रूपमें दिया जाता है। (अं—आनरेरियम)

मानना— [क्रि अ] সন্মত হোৱা, স্বীকাৰ কৰা, ৰাজী হোৱা, প্ৰসন্ন কৰা সম্ভ্ৰম কৰা, সন্মান কৰা।
सहमत होना। राजी होना।
प्रसन्न करना। कल्पना करना।
ठीक रास्ते पर आना। आदर भाव रखना। महत्त्व समझना।
(क्रि स) সন্মত হোৱা স্বীকাৰ কৰা, সহ্য কৰা।
अंगीकार करना। स्वीकार करना। सहन करना।

मानवशास्त्र—[सं पुं] মানৱ শাস্ত্ৰ, নৃতত্ত্ব বিদ্যা।

मानव की उत्पत्ति, विकास, विभेद आदि का विवेचन करने वाला शास्त्र। (अं—एन्थ्रोपोलॉजी)

मानवीय—[वि] মানবীয়, মনুষ্য সম্বন্ধীয়।
मानव सम्बन्धी।

मानस—[सं पुं] মন, হৃদয়, মান সৰোবৰ, ৰাম চৰিত মানস।
मन। हृदय। मान सरोवर। रामचरित मानस।
[वि] মনৰ পৰা ওপজা, মনত ভৰা, মন সম্বন্ধীয়।
मनसे उत्पन्न। मनमें सोचा हुआ। मन सम्बन्धी।
(क्रि वि) মনেৰে।
मनके द्वारा।

मान-हानि—(सं स्त्री) অপমান, মানহানি।
अपमान। बे-इज्जती।

मानहुँ—[अव्य] যেন।
मानो।

माना—(क्रि स) ওজন কৰা, পৰীক্ষা কৰা।
नापना या तौलना। जाँचना।
[क्रि अ] আঁটন, যিমান লাগে সিমান হোৱা।
'सयाना' या 'अमाना'

मानिंद—(वि) সমান।
समान। तुल्य।

मानिता—[सं स्त्री] গৌৰৱ।
गौरव। अभिमान।

मानी—[वि] অহঙ্কাৰী, সম্মানীয়।
अहंकारी। घमण्डी। मान या प्रतिष्ठा रखनेवाला।

मानुख, मानुस, मानुष—[वि] মানুহৰ।
मनुष्यका।
[सं पुं] মানুহ।
मनुष्य।

माने—(सं पुं) অৰ্থ।
अर्थ। मतलब।

मानो—(अव्य) যেন।
जैसे। गोया।

मान्यक—(वि) অবৈতনিক হিচাবে প্ৰতিষ্ঠিত পদত কাম কৰা ব্যক্তি।
बिना वेतन लिये प्रतिष्ठित पद पर काम करनेवाला।

मान्यता—(सं स्त्री) স্বীকৃতি, মান্যতা।
माना जाना। स्वीकृति।

माप—(सं स्त्री) জোখ, পৰিমাণ, দগা ।

मापने की क्रिया, भाव या नाप । वह मान जिससे कोई चीज मापी जाय ।

मापक—(सं पुं) জোখোঁতা, জোখা সামগ্ৰী, তুলাচনী ।

वह जिससे कुछ मापा जाय । वह जो मापता हो ।

मापना—[क्रि स] জোখা ।

मान या परिमाण निकालना । नापना ।

(क्रि स) মতলীয়া হোৱা । मतवाला होना ।

माफिक—[वि] অনুকূল, অনুসাৰ ।

अनुकूल । अनुसार ।

माफी—(सं स्त्री) ক্ষমা. নিষ্কৰ ভূমি ।

क्षमा । वह भूमि जिसका कर सरकार या राज्य ने माफ कर दिया हो ।

मामला—(सं पुं) বেপাৰ, কাজিয়া-পেচাল, মোকৰ্দ্দমা ।

व्यापार । लेनदेन, अदान-प्रदान आदि कार्य । झगड़ा विवाद, नालिश या मुकदमा ।

मामा—(सं पुं) মোমা ।

माता का भाई । [सं स्त्री-मामी]

मामूली—(वि)সাধাৰণ, নিয়মীয়া ।

नियमित । नियम । सामान्य ।

मायक—(वि) মায়াবী ।

मायावी ।

मायका—[सं पुं] মাকৰ ঘৰ, পিত্ৰালয় ।

स्त्रीके विचार से उसके माता पिताका घर । पीहर ।

माया—[सं स्त्री] মায়া, লক্ষ্মী, মহামায়া, ধন, ভ্ৰান্তি, মিছা জ্ঞান, অজ্ঞানতা, ছলনা, কপটতা যাদু, বাজী, প্ৰকৃতি, মোহ, মমতা ।

लक्ष्मी । धन । किसी प्रकार की मिथ्या धारणा या विचार । भ्रम । अज्ञान । छल, धोखा । जादू । प्रकृति ।

मायावी—(सं पुं) চালাক, ধূৰ্ত্ত বাজীকৰ, মায়াবী ।

चालाक । धूर्त । धोखेबाज । जादूगर ।

[वि] মায়া, বাজীকৰ।
माया। जादू आदिमे सम्बन्ध रखनेवाला।

मायिक—(वि) মায়াৰে সজা, যাদুৰ, সজা কথা, মায়াবী।
माया से बना हुआ। जादू का। बनावटी। मायावी।

मार—(सं पुं) কামদেৱ, বিষ।
कामदेव। विष।
[सं स्त्री] মাৰ, কিলা, আঘাত কৰা, লক্ষ্য।
मारने या पीटने की क्रिया या भाव। आघात, चोट। लक्ष्य। मार-पीट।

मारक—(वि) মাৰাত্মক, প্ৰাণ হানি কাৰক।
मार डालनेवाला। किसी का-प्रभाव दूर करनेवाला।

मारकाट—[सं स्त्री] কটা। মৰা, যুদ্ধ।
लड़ाई। युद्ध।

मारग—[सं पुं] মাৰ্গ, ৰাজ পথ।
मार्ग। रास्ता।

मारण—[सं पुं] মাৰি পেলোৱা, তান্ত্ৰিক ক্ৰিয়া বিশেষ।
मार डालना। एक तांत्रिक प्रयोग

मारतौल—[सं पुं] ডাঙৰ হাতুৰী।
एक प्रकारका बड़ा हथौड़ा।

मारना—(क्रि स) মাৰা, প্ৰহাৰ কৰা, কিলা, বধ কৰা, মনোবেগ আদি মাৰ নিওৱা, চিকাৰ কৰা, বিনা পৰিশ্ৰমে বহুত বেছি পোৱা, অন্যায় ভাবে দমাই ৰখা।
प्रहारकरना। पीटना। प्राणलेना। आवेग,मनोविकार आदि रोकना। शिकार या आखेट करना। बिना परिश्रमके या बहुत अधिक प्राप्ति करना या अनुचित रूपसे दबा रखना।

मार-पेच—(सं पुं) চালাকী, धूर्त्तता।
चालाकी। धूर्तता।

मारफत—(अव्य) হাতে, যোগে, মাৰফতে।
द्वारा। जरिये। से।

मारा—[वि] যাক মাৰা হৈছে, যিয়ে মাৰ খাইছে।

जो मार डाला गया हो। जिस पर मार पड़ी हो।

मारी—[सं स्त्री] মাউৰ।
महामारी।

मारुत—[सं पुं] বতাহ।
हवा।

मारुति—[सं स्त्री] হনুমান, ভীম।
हनुमान। भीम।

मारू—(वि) মাৰোঁতা, মৃত্যু ঘটাওতা।
मारनेवाला। जान मारनेवाला। हृदय-वेधक।
[सं पुं] যুদ্ধৰ সময়ত বজোৱা ধ্বনি আৰু গোৱা ৰাগিনী বিশেষ।
युद्धके समय बजाया और गाया जानेवाला एक राग।

मारे—(अव्य) কাৰণে।
वजह से।

मार्गण—(सं पुं) মাগন, খোজা, বিচৰা, অন্বেষণ।
मांगना। याचना। ढूंढ़ना। अन्वेषण।

मार्ग-दर्शक-(सं पुं) পথ প্ৰদৰ্শক।
पथ दिखानेवाला।

मार्गशीर्ष—[सं पुं] আঘোণ মাহ।
अगहन महीना।

मार्गी—[सं पुं] পথিক।
मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री।

मार्जन— [सं पुं] শুদ্ধ বা পবিত্ৰ কৰা, ভুল, দোষ, আদি নাই-কিয়া কৰা।
शुद्ध या पवित्र करना। भूल, दोष आदिका परिहार।

मार्जनी—(सं स्त्री) বাঢ়নি।
झाड़ू।

मार्जार—(सं पुं) মেকুৰী।
बिल्ली।

मार्जित—(वि) মাৰ্জিত, পৰিষ্কৃত।
जिसका मार्जन हुआ हो।

मार्तंड—[सं पुं] সূৰ্য্য।
सूर्य।

मार्दव—[स पुं] নিৰহঙ্কাৰ, কোমলতা, সহানুভূতি।
निरहंकार। कोमलता। सहानु-भूति। सरलता।

मार्मिक—[वि] মৰ্মস্পৰ্শী।
जिसका प्रभाव मर्मपर पड़े।

माल—[सं स्त्री] মালা, শাৰী।
माला। पंक्ति।
(सं पुं) পালোৱান, সম্পত্তি, মাল বস্তু, ভাল বস্তু।
पहलवान। सम्पत्ति। सामान। असबाब। कोई अच्छी और बढ़िया चीज। वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो।

मालखाना—[सं पुं] ভঁৰাল।
भंडार।

मालगुजारी— (सं स्त्री) মাটিৰ খাজনা বা কৰ।
भू-राजस्व। लगान।

मालदार—(वि) ধনী।
धनवान।

मालपूआ— (सं पुं) মালপোৱা, তেলত ভজা এবিধ পিঠা।
एक प्रकार का मीठा पकवान।

मालव— (सं पुं) মালৱ ৰাজ্য, মালৱ নিবাসী।
मालव नामका प्रदेश। मालवका निवासी।
(वि) মালৱ দেশ সম্বন্ধীয়।
मालव देश सम्बन्धी।

मालवीय—(वि) মালৱৰ।
मालवे का।
(सं पुं) মালৱ দেশ নিবাসী, ব্ৰাহ্মণ উপাধি বিশেষ।
मालव देश का निवासी।

मालामाल— (वि) বৰ ধনী বা সম্পন্ন।
बहुत सम्पन्न या धनी।

मालिकाना—[सं पुं] স্বামীত্ব।
स्वामीत्व।
[क्रि वि] গৰাকীৰ দৰে।
मालिकों का मा।

मालिनी—(सं स्त्री) মালী জাতিৰ তিৰোতা, ছন্দ বিশেষ।
माली जाति की स्त्री। 'सवैया' छन्द का एक नाम।

मालूम—[वि] জনা, বিদিত।
जाना हुआ। विदित।

माल्य—(सं पुं) ফুল, মালা।
फूल। माला।

मावस— (सं स्त्री) অমাবস্যা তিথি।
अमावस्या तिथि।

माशा—(सं पुं) আঠ ৰতিৰ সমান ওজন, মহা।
आठ रत्ती का मान या तौल।

माशूक—[सं पुं] প্ৰেমপাত্ৰ, প্ৰিয়।
प्रेमपात्र। प्रिय।

मास—(सं पुं) মাহ ।
महीना ।

मासिक--(वि) মাহৰ, মাহেকীয়া।
महीनेका । महीने महीने पर होनेवाला ।
[क्रि वि] মাহেকীয়া ।
प्रति मासके हिसाब से ।

माहवार— (क्रि वि) প্ৰতি মাহে, মাহিলী ।
प्रतिमास ।
[वि] মাহিলী ।
मासिक ।

माहवारी—(वि) প্ৰতিমাহৰ ।
हर महीनेका ।
(सं स्त्री)তিৰোতাৰ মাহেকীয়া ধৰ্ম্ম ।
स्त्रियो का मासिक धर्म ।

मांहि, माहीं—[अव्य] ভিতৰত, ত, সপ্তমী বিভক্তিৰ চিহ্ন হিচাবে ব্যৱহাৰ হয় ।
भीतर । अन्दर । 'में' या 'पर'

माही—(सं स्त्री) মাছ, মোগল বাদচাহ সকলৰ পতাকা ।
मछली । मुगल बादशाहों का एक प्रकार का झण्डा ।

माहुर—(सं पुं) বিষ ।
विष ।

मिडना— (क्रि अ) মিহলোৱা, লগোৱা, এঠা লগোৱা, লগ লগোৱা ।
मीडा या मिलाया जाना । लगाया, सटाया या चिपकाया जाना । साथ लगना या होना ।

मिंबर—(सं पुं) মচজিদৰ ভিতৰত মোল্লা আদিয়ে উপদেশ দিয়া ওখ ঠাই ।
ममजिद मे वह ऊँचा चबुतरा जिसपर बैठकर मुल्ला आदि नमाज पढवाने या उपदेश आदि करते हैं ।

मिकदार— (स स्त्री) পৰিমাণ, মাত্ৰা ।
परिमाण । मात्रा ।

मिचकाना—(क्रि स) বাৰে বাৰে চকু মেলা আৰু জপোৱা ।
बारबार आँखे खोलना और बन्द करना ।

मिचकी—(सं स्त्री) চকুৰ ইঙ্গিত, দোপনাৰ দোল ।
आँखे मिचकाने की क्रिया या

भाव। आँख का इशारा। छलांग। भूलेने की पेग।

मिचलना—[क्रि अ] বমি ভাব হোৱা।
कै आनेको होना। मिचली आना।

मिचली—[सं स्त्री] বমি কৰাৰ ইচ্ছা।
कै करने की इच्छा।

—**मिचौनी**-(सं स्त्री) কাণি মুণি খেল।
आंख मिचोनी का खेल।

मिजराब—[सं स्त्री] চেতাৰ আদি বজোৱা তাঁৰৰ জোঙা যন্ত্র বিশেষ।
सितार आदि वजाने का तार का नुकीला छल्ला।

मिजाज—(सं पुं) মেজাজ, স্বভাব, মনৰ গতি, অভিমান, অহঙ্কাৰ।
प्रकृति। स्वभाव। मनकी अवस्था। अभिमान। घमण्ड।

मिटना—(क्रि अ) (চিন আদি) নাইকীয়া কৰা, নষ্ট কৰা, মচা।
अंकित चिह्न आदि नष्ट होना। न रह जाना। (क्रि स-मिटाना)

मिट्टी—(सं स्त्री) মাটি, ধুলি, শৰীৰ। মৰা শ, শাৰীৰিক গঠন।
माटी। धूल। शरीर। मृत शरीर। शारीरिक गठन या बनावट।

मिट्ठू—(वि) নীৰৱে থাকোঁতা।
चुप रहनेवाला।
(सं पुं) মিঠা কথা কওঁতা, ভাটো।
मीठा बोलनेवाला। तोता।

मिठ-बोला—(सं पुं) মিষ্ট ভাষী, দেখুৱাবৰ বাবেহে মিঠা কথা কোৱা।
मधुर भाषी। वह जो केवल दिखावे के लिये मीठी मीठी बातें करता हो।

मिठास—[सं स्त्री] মাধুৰ্য্য, মাধুৰী।
माधुर्य। मीठा होनेका भाव।

मितभाषी—(सं पुं) কম কথা কওঁতা, মিত ভাষী।
कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय—(सं पुं) নিয়মিত ভাবে খৰচ কৰা, মিতব্যয়, আয় বুজি ব্যয় কৰা।
कम खर्च करना।

मिताई—[सं स्त्री] মিতিৰালি, মিত্ৰতা।
मित्रता।

मिति—[सं स्त्री] মান, সীমা, অৱধি।
मान। सीमा। अवधि।

मित्ति—(सं पुं) মিত্ৰ, বন্ধু।
मित्र।

मित्र—[सं पुं] বন্ধু, সখি, সূৰ্য্য।
दोस्त। बन्धु। सूर्य।

मित्रता—(सं स्त्री) বন্ধুতা।
दोस्ती।

मिथुन—(सं पुं) মুনিহ-তিৰোতা এযোৰ, মৈথুন, ৰাশি চক্ৰৰ তৃতীয় ৰাশি।
स्त्री-पुरुष का जोड़ा। समागम। बारह राशियों में एक।

मिथ्याचार—(सं पुं) কপট ব্যৱহাৰ
कपट पूर्ण व्यवहार।

मिनमिनाना—(क्रि अ) নাকেৰে মতা, মিন্ মিন শব্দ কৰা।
धीमें स्वरसे या नाकसे बोलना।

मिन्नत—(सं स्त्री) মিনতি, বিনয়।
विनती।

मिमियाना—(क्रि अ) ভেড়া বা ছাগলীৰ মাত।
भेड़ या बकरी का बोलना।

मियाद, मीयाद—(सं स्त्री) মিয়াদ, অৱধি।
किसी कार्यके लिये नियत समय। अवधि। [वि-मियादी, मीयादी]

मियाना—(सं पुं) এক প্ৰকাৰৰ পাস্কী বা দোলা।
एक प्रकार की पालकी।
[वि] মজলীয়াৰ আকাৰৰ।
मझोले आकारका।

मिरग—(सं पुं) মৃগ, হৰিণ।
मृग। हरिण।

मिरगी—[सं स्त्री] মৃগী, মূৰ্চ্ছা যোৱা এবিধ ৰোগ।
अपस्मार रोग।

मिरचा—[सं पुं] জলকীয়া।
लाल मिर्च।

मिरजई—[सं स्त्री] মিৰ্জাই চোলা, আগৰ দিনৰ মতা মানুহে পিন্ধা এবিধ হাত চুটি বুকু ফলা চোলা।
एक प्रकारका कुरता।

मिरदंग—[सं पुं] মৃদঙ্গ।
मृदंग। (सं स्त्री-मिरदंगी)

मिलनसार—(वि) সকলোৰে সৈতে মিলাপ্ৰীতিৰে থকা জন।
सबसे अच्छी तरह मिलने जुलने वाला।

मिलना—[क्रि अ] লগ লগা, সমূহত বা সমাজত এক হৈ যোৱা, মিহলা, সমতুল্য হোৱা, সাক্ষাৎ কৰা।
सम्मिलित या मिश्रित होकर एक होना। समुदाय या समूह में समा जाना। साथ लगना। बहुत कुछ समान होना। सामना, भेंट या मुलाकात करना।
(क्रि स) প্ৰাপ্ত কৰা উপাৰ্জন কৰা।
प्राप्त या हस्तगत होना। [प्रे—मिलवाना]

मिलान—(सं पुं) মিলোৱা কাৰ্য্য, তুলনা।
मिलाने की क्रिया या भाव। तुलना। मुकाबला।

मिलाना—(क्रि स) মিলোৱা, যোৱা লগোৱা তুলনা কৰা, সাক্ষাৎ কৰোৱা, সঙ্গী কৰোৱা, সুৰ ঠিক কৰোৱা।
सम्मिलित या मिश्रित करना। जोड़ना ; तुलना करना। भेंट या परिचय कराना। साथी बनाना। बजाने के पहले बाजों का सुर मिलाना।

मिलाप—(सं पुं) মিলনৰ ক্ৰিয়া, মিলন।
मिलने की क्रिया या भाव। मेल।

मिलावट—[सं स्त्री] মিহল, ভাল বস্তুত বেয়া বস্তু মিহলোৱা কাৰ্য্য, ভেজাল।
मिश्रण। बढ़िया चीजमें घटिया चीज का मिश्रण। खोट।

मिलिंद—[सं पुं] ভোমোৰা।
भौंरा।

मिल्कियत—[सं स्त्री] মালিকানা-স্বত্ব, ধন-সম্পত্তি।
मालिक या स्वामी होनेका अधिकार या भाव। वह वस्तु जिसपर स्वामीत्व का अधिकार हो। धन सम्पत्ति, जायदाद।

मिल्लत— [सं स्त्री] মিলাপ্ৰীতি, ধাৰ্ম্মিক সম্প্ৰদায়।
मेल जोल। मिलाप। मिलनसारी। धार्मिक सम्प्रदाय।

মিষ, মিস—(সং পুং) ছল, কপট, ভাও, ভুৱা, ফাঁকি।
छल। कपट। बहाना। पाखण्ड।

মিষ্ট-(বি) মধুৰ। মিঠা।
मीठा। मधुर।

মিষ্টান্ন—(সং পুং) মিষ্টান্ন, মিঠাই।
मिठाई।

মিসকীন, মিস্কীন—(বি) দীনতা, দৈন্য, নিৰ্ধন।
बेचारा। निर्धन।

মিসৰা-- (সং পুং) দুৱাৰ, উৰ্দ্দু কবিতাৰ এটি অংশ।
किवाड़। उर्दू-फारसी की कविता का कोई चरण या पद।

মিসৰী, মিস্ৰী—(সং স্ত্ৰী) মিচৰ দেশৰ ভাষা, মিছিৰি [পগাই পৰিষ্কাৰ আৰু গোটা কৰা চেনি]।
मिस्र देशकी भाषा। साफ करके जमाई हुई या रवेदार चीनी।
[বি] মিচৰ দেশৰ।
मिस्र देशका।
[সং পুং]মিচৰ দেশৰ অধিবাসী।
मिस्र देश का निवासी।

মিসাল—(সং স্ত্ৰী) উপমা, উদাহৰণ যোজনা।
उपमा। उदाहरण। कहावत।

মিসিল, মিস্ল—[বি] সমান।
समान। तुल्य।
[সং স্ত্ৰী] কোনো বিষয় বা মোকৰ্দ্দমা সম্পৰ্কীয় সকলো নথী-পত্ৰ।
किसी विषय या मुकदमें में रखने वाले सब कागज पत्रोकी नत्थी।

মিস্সী – (সং স্ত্ৰী) তিৰোতাই দাঁতত ঘঁহা এক প্ৰকাৰ মঁাজন, ক'লা ৰঙৰ ফল হোৱা বনৰীয়া গছ।
एक तरह का मंजन। काले फल वाला एक जंगली पौधा।

মিহিৰ—[সং পুং] সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ।
सूर्य। चन्द्रमा।

মীজনা—(ক্ৰি স) হাতেৰে ঘঁহা, মোহা।
हाथोंसे मलना। मसलना।

মীচ, মীচু—(সং স্ত্ৰী) মৃত্যু।
मौत।

মীচনা—(ক্ৰি স) চকু মুদা।
(आँखें) मूंदना।

मीज़ान—[सं स्त्री] যোগ।
संख्याओं का योग। जोड़।

मीटर—[सं पुं] দৈৰ্ঘ্য জোখা হিচাপ, নিটাৰ, বিজুলী আদিৰ গতি হিচাব ৰখা, জোখ।
बिजली आदि की गति आदि मापनेका एक यन्त्र। लम्बाई की एक नाप।

मीठा—[वि] মিঠা, মধুৰ, সোৱাদ-লগা, প্ৰিয়, ভাল।
मधुर। स्वादिष्ट। प्यारा। अच्छा। धीमा।
[सं पुं] মিঠাই।
मिठाई।

मीठी-छुरी—(सं स्त्री) বিশ্বাসঘাতক, কৃতঘ্ন।
विश्वास घातक।

मीत—(सं पुं) মিত্ৰ, পতি, প্ৰেমিক
मित्र। पति। प्रेमी।

मीन—(सं पुं) মাছ, মীন ৰাশি।
मछली। बारह राशियों की अन्तिम राशि।

मीन-मेख—(सं पुं) ভবা-চিন্তা, দ্বিধা, অইনৰ কামত দোষ খোচৰা।
सोच विचार। द्विविधा। दूसरों के लिये कामों में छोटे-मोटे दोष ढूँढना।

मीना—(सं पुं)ৰাজপুতৰ যুঁজাৰু জাতি বিশেষ। সোণৰূপৰ অলঙ্কাৰৰ ওপৰত ৰংবিৰঙৰ কাম কৰা [মিনা]।
राज पूताने की एक योद्धा जाति। चाँदी, सोनेपर किया जानेवाला एक प्रकारका रंग-बिरंगा काम।

मीनाकारी—[सं स्त्री] সোণ-ৰূপৰ অলঙ্কাৰ বা আভূষণত মিনা কৰা কাৰ্য্য।
चाँदी या सोनेपर होनेवाला मीना।

मीनाबाज़ार—(सं पुं) ধুনীয়াকৈ সজোৱা বজাৰ।
बहुत सुन्दर और सजा हुआ बढ़िया बाजार।

मीनार—[सं स्त्री] বৰ ওখ আৰু ঘূৰণীয়া স্তম্ভ, মীনাৰ।
बहुत ऊँचा और गोलाकार स्तंभ

मीमांसक—[सं पुं] ন্যায় কৰি দিওঁতা, ন্যায় শাস্ত্ৰত অভিজ্ঞ।
किसी बात की मीमांसा या विवे-

चन करनेवाला । मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता ।

मीमांसा—[सं स्त्री] গোচৰ আদিত বিচাৰ আৰু সুধি-পুচি কৰা নিষ্পত্তি। হিন্দুৰ ছখন দৰ্শন শাস্ত্ৰৰ দুখন। (পূৰ্ব্ব আৰু উত্তৰ মীমাংসা বা বেদান্ত-দৰ্শন)।
अनुमान और तर्कसे किसी विषय के निर्णय पर पहुँचना। छः-हिन्दू दर्शनों में से दो दर्शन।

मीरास—(सं स्त्री) উত্তৰাধিকাৰী সূত্ৰে পোৱা সম্পত্তি।
उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।

मीरासी—(सं पुं) মুছলমান জাতি বিশেষ।
एक मुसलमान जाति।

मील—[सं पुं] মাইল।
दूरी की एक माप।

मीलन—[सं पुं] বন্ধ কৰা, চকু মুদা।
बन्द करना। मूँदना।

मुँगरा—[सं पुं] ডাঙৰ হাতুৰী (কাঠৰ)।
काठ का बड़ा हथौड़ा।

मुंड—(सं पुं) লাওখোলা, মূৰ। কটা মূৰ।
खोपड़ी। सिर। कटा हुआ सिर।

मुंडन—(सं पुं) মূৰ খুৰোৱা, চুলি খুৰাই দিয়া, হিন্দুৰ সংস্কাৰ বিশেষ। চূড়াকৰণ।
उस्तरे से सिर या और किसी अंग के बाल साफ करना। हिन्दुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चोंका सिर मूँड़ा जाता है।

मुँड़ना—(क्रि अ) খুৰোৱা, ঠগ খোৱা।
मूँड़ा जाना। लूटा या ठगा जाना।

मुंड-माला—(सं स्त्री) কটা মূৰৰ মালা, মুণ্ড-মালা।
सिरो या खोपड़ियों की माला।

मुंडमालिनी—[सं स्त्री] কালী-দেৱী।
कालिका देवी।

मुंडा—(सं पुं) তপা, চুলি খুৰোৱা অনস্বৰ ব্যক্তি, সাধু বা যোগী, লাওমুৰা জন্তু, মহাজনী লিপি, ছোটনাগপুৰৰ জাতি বিশেষ।
जिसके सिरके बाल न हो या मूँड़े हुए हों। साधु या योगी। वह पशु जिसके सिरपर सींग न

हो। महाजनी लिपि। एक जाति (सं स्त्री) मुण्डा भाषा-भाषी जाति।
कुछ विशिष्ट अनार्य बोलियों का एक वर्ग।

मुँडाई (ड़ाई)—(सं स्त्री) चुलि खुৰোৱা কাৰ্য্য বা মজুৰি।
मूँडने या मुँडाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मुँड़ाना, मुड़ाना—[क्रि स] চুলি খুৰোৱা। मुंडन करना।
[क्रि अ] খুৰোৱা, ঠগ খাই টকা-পইচা নষ্ট কৰা, অধীনতা বা বশ্যতা স্বীকাৰ কৰা।
मूँडा जाना। धोखेमें आकर कुछ धन गँवाना। किसीकी अधीनता, शिष्यता आदि ग्रहण करना।

मुँड़ासा—(सं पुं) পাগুৰি।
पगड़ी। साफा।

मुँडेरा—(सं पुं) ছালৰ ওপৰত ওলাই থকা অংশ।
छतकी दीवारका ऊपरी उठा हुआ भाग।

मुँदना—(क्रि अ)মুদা,জপা, বন্ধকৰা।
खुली रहनेवाली या खुली हुई वस्तुका बन्द होना। छिपना।

मुँदरी—[सं स्त्री] আঙঠি।
अंगूठी।

मुंशी, मुनशी—(सं पुं) মুন্সী, হিচাব-পত্ৰ ৰখা বিষয়া।
लेख आदि लिखनेवाला। पंडित। विद्वान।

मुँह—(सं पुं) মুখ।
मुख।

—खुलना—(मु) বঢ়াই কোৱা অভ্যাস হোৱা।
बढ़ बढ़ कर बोलने की आदत पड़ना।

—भरना—(मु) কাকো ভেটা দিয়া।
किसी को घूस देना।

—में लगाम न होना—মুখত লেকাম নোহোৱা, নভবা নিচিন্তাকৈ যিহকে তিহকে কোৱা অভ্যাস।
बिना सोचे समझे बोलनेकी आदत होना।

—से फूल झड़ना—(मु) খুব প্ৰিয় কথা কোৱা।
मुँहसे बहुत प्रिय बातें बोलना।

—की खाना—(मु) অপমানিত বা লজ্জিত হোৱা।

अपमानित या लज्जित होना ।

—ताकना—(मु) আশা কৰি অপেক্ষা কৰা, আচৰিত হৈ কাৰো পিনে চাই থকা । আশা কৰা ।

आशा लगाकर या चकित होकर किसी की ओर देखना ।

—फुलाना—(मु) মুখ ওলোমা, অসন্তোষৰ ভাব দেখা ।

अप्रसन्नता प्रकट करनेवाली आकृति बनाना ।

मुँहकाला— (सं पुं) অপমান, বদনাম ।

बेइज्जती । बदनामी।

मुँहचोर— [वि] অইনৰ সমুখলৈ যাবলৈ ইতঃস্তত কৰা জন ।

जो औरों के सामने जानेमें हिचकता हो ।

मुँहजोर—(वि) মুখ চতুৰ, মুখাল । बकवादी ।

मुँह दिखरावनी, मुँह देखनी, मुँह दिखाई— [सं स्त्री] পোনপ্ৰথমে শহুৰেকৰ ঘৰলৈ অহাত কইনা চোৱা নিয়ম বিশেষ । উক্ত অবস্থাত কইনাক দিয়া উপহাৰ । पहले पहल ससुरालमें आनेपर नयी बधूके मुँह देखने की रस्म । उक्त अवसरपर बधूको दिये जाने वाला उपहार ।

मुँह-देखा—(वि) দেখা দেখি হ'লে সঙ্কোচ বশতঃ কৰা (ব্যৱহাৰ) । केवल सामना होनेपर संकोचवश होनेवाला (व्यवहार)

मुँह-फट—[वि]মুখ চোকা, অন্যায় বা কটু কথা কোৱাত নিঃসংকোচ ।

अनुचित या कटु बातें कहनेमें सकोच न करनेवाला ।

मुँह मांगा—[वि] মনৰ ইচ্ছামতে ।

मुँहसे मांगा हुआ । मनोनुकूल ।

मुँहासा—[सं पुं] শাল মইনা ।

मुँहपर के वे दाने जो युवावस्था में निकलते हैं।

मुअत्तल—(वि) অপৰাধ বা অভিযোগ কৰাৰ পিছত অন্তিম নিৰ্ণয় নোহোৱালৈকে পদ বা অধিকাৰৰ পৰা চ্যুত কৰা কাৰ্য্য সাময়িক ভাবে বৰখাস্ত কৰা কাৰ্য্য ।

अपराध या अभियोग लगनेपर जाँच या अन्तिम निर्णय के लिये जो अपने पद से हटा दिया गया हो [अं-ससपेंड]

मुआफिक—(वि) অনুকূল, মিচিনা ।
अनुकूल । सदृश ।

मुआयना—(सं पुं) নিৰীক্ষণ, পৰিদৰ্শন ।
निरीक्षण ।

मुआवजा—(सं पुं) প্ৰতিদান, ক্ষতিপূৰণ ।
बदला । हानि आदि के बदलेमें मिलनेवाला धन ।

मुकद्मा, मुकद्मा—(सं पुं) মোকৰ্দ্দমা, অভিযোগ ।
अभियोग । दावा । नालिश ।

मुकद्मेबाज—(वि) যি প্ৰায়ে মোকৰ্দ্দমা আদি খেলি থাকে ।
जो प्राय: मुकदमे लड़ता रहता हो । [भाव —मुकदमेबाजी]

मुकम्मल—(वि) পূৰ্ণ কৰা কাৰ্য্য ।
पूरा किया हुआ कार्य ।

मुकरना—(क्रि अ) কোনো কথা মানি লৈ অস্বীকাৰ কৰা বা পিছ হোহকা ।
कोई बात कहकर उससे इन्कार करना या पीछे हटना ।
(वि) কোনো কথা স্বীকাৰ কৰি পিছত অস্বীকাৰ কৰা ব্যক্তি ।
कोई बात कहकर उनसे इनकार कर जानेवाला ।

मुकर्रर—(वि) নিশ্চিত, নিযুক্ত ।
निश्चित । नियत । नियुक्त ।

मुकाबला—(सं पुं) বিৰোধ, যুঁজ, তুলনা ।
सामना । मुठभेड । तुलना । मिलान । विरोध ।

मुकाबिल—(क्रि वि) সমুখ ।
सम्मुख । सामने ।
[सं पुं] প্ৰতিদ্বন্দ্বী, শত্ৰু ।
प्रतिद्वन्द्वी । वैरी ।

मुकाम—(सं पुं) স্থান, বাহৰ, সুবিধা ।
स्थान । पड़ाव । अवसर । मौका ।

मुकुर—(सं पुं) দাপোণ, কলি ।
दर्पण । कली ।

मुकुल—[सं पुं] কলি, শৰীৰ, আত্মা ।
कली । शरीर । आत्मा ।

मुकुलित—[वि] কলি যুক্ত, ফুল, ঢোপা কলি ।
जिसमें कलियाँ निकली हों । कुछ खिली हुई कली ।

मुकेश, मुकैशा—(सं पुं) গুণা বচা কাপোৰ বিশেষ।
जरीका बना हुआ एक विशेष प्रकार का कपड़ा।

मुक्का—[सं पुं] ভুকু।
आघात या प्रहार के लिये बाँधी गयी मुट्ठी। घूँसा।

मुक्की—(सं स्त्री) ভুকু, মল্ল-যুদ্ধ, ভুকুৰা-ভুকি যুদ্ধ বা খেল।
घूँसा। मुक्केबाजी की लड़ाई।

मुक्केबाजी—(सं स्त्री) ভুকুৰা-ভুকি খেল।
घूँसेबाजी। (अं—बाक्सिंग)।

मुक्तक—[सं पुं] স্বতন্ত্ৰ কবিতা, ছন্দ বিশেষ।
फुटकर या कई प्रकारकी कविता

मुक्त-हस्त—(वि) মুকলি হাতেৰে উদাৰ ভাবে।
जो खुले हाथों और बहुत उदारतापूर्वक दान या व्यय करता हो।

मुख-चित्र—[सं पुं] বেটুপাতৰ চিত্ৰ।
किसी पुस्तक के मुख पृष्ठपर या बिलकुल आरम्भमें दिया हुआ चित्र।

मुखड़ा—(सं पु) মুখ, চেহেৰা।
मुख। चेहरा।

मुखतार, मुख्तार—(सं पुं) প্ৰতিনিধি।
प्रतिनिधि। एक प्रकारका कानूनी सलाहकार और कार्यकर्त्ता।
(सं स्त्री–मुखतारी)

मुख पत्र—(सं पुं) মুখ-পত্ৰ, যাৰ আঁৰত থাকি কোনো কাম কৰা হয়।
वह जिसकी आडमें रहकर कोई काम किया जाय।

मुखबंध—[सं पुं] পাতনি, ভূমিকা, প্ৰস্তাৱনা।
ग्रन्थ की प्रस्तावना।

मुखबिर—(सं स्त्री) চোৰাং চোৰা।
खबर देनेवाला जासूस। भेदिया।

मुखबिरी—[सं स्त्री] গোপনে ৰহস্যৰ কথা কৈ দিয়া।
गुप्तरूप से भेद देना।

मुखर—(वि) মুখৰা, দম্ভুৰা, ৰবকৈ কথা কোৱা.

अप्रिय या कटु बोलनेवाला।
बहुत बोलनेवाला।

मुखाग्र—(वि) মুখস্থ,
जो जबानी याद हो।

मुखापेक्षी—(सं पुं) মুখাপেক্ষী, কাৰো মুখলৈ চাই থকা।
जो दूसरे का मुँह ताकता हो।

मुखारी-[सं स्त्री] মুখৰ আকৃতি।
मुखाकृति। चेहरे की बनावट।

मुखालिफ—(वि) বিৰোধী শত্ৰু।
विरोधी। शत्रु प्रतिद्वन्द्वी।

मुखिया—(सं पुं) নেতা, মুখীয়াল।
नेता। अगुआ।

मुखौटा—[वि] মুখা, মুখত পিন্ধা, কোনো বিশেষ মুখৰ আকৃতিৰ ছাঁে, আকৃতি সলাবৰ অৰ্থে পিন্ধিবলৈ সজা মুখ।
धातु आदि का बना हुआ मुखके आकार का खण्ड। नकाब।

मुगदर—(सं पु) মুদ্গৰ।
मुद्गर। मुँगरीका भारी जोड़ा।

मुग्धा—(सं स्त्री) এক প্ৰকাৰৰ নায়িকা সৰল স্বভাবৰ যুৱতী নায়িকা।
साहित्य में एक प्रकारका नायिका भेद।

मुचना—[क्रि अ] মোচন হোৱা, মুক্ত কৰা।
मोचन होना।

मुचलका—[सं पुं] মুচলুকা, আদালতত জামীনৰ বাবে লিখি দিয়া অঙ্গীকাৰ পত্ৰ।
अदालत में जमानत के बारे में लिखित पत्र।

मुछंदर—(सं पुं) ডাঙৰ গোফ থকা ব্যক্তি মূৰ্খ।
बड़ी बड़ी मूँछोंवाला। मूर्ख। बुद्धू।

मुजरा—[सं पुं] কোনো টকা-পইচা কাটি ৰখা। সম্মানেৰে অভিবাদন কৰা,বেশ্যাই মজলিচত বহি গান গোৱা।
किसी रकम में से काटी हुई रकम अथवा कुछ रकम काटना। अभिवादन। वेश्या का बैठकर गाना।

मुजरिम—(सं स्त्री) অপৰাধী, দোষী।
जिसपर जुर्म लगा हो। अभि-युक्त।

मुझ—[सर्व] 'मैं' র বিভক্তি যুক্ত রূপ ।
मै का विभक्ति युक्त रूप ।

मुझे—(सर्व) মোক ।
मुझको ।

मुट्ठा—(सं पुं) আটি, কাগজ আদিৰ মুঠা ।
घास, फूस आदिका पूला । कागजों आदि का गोल लपेटा हुआ पुलिदा ।

मुट्ठी, मुठिका, मुठी—(सं पुं) মুঠি ।
हाथकी उँगलियाँ मोड़कर हथेली पर दबाने से बननेवाली मुद्रा या रूप । उतनी वस्तु जितनी ऐसे हाथमें आवे ।

मुठ-भेड़—(सं स्त्री) সংঘৰ্ষ, হতা-হতি ।
भिड़न्त । सामना ।

मुड़ना—(क्रि अ) ঘূৰা, ওলটা ।
घूम या बल खाकर किसी ओर फिरना । घूमना । लौटना ।

मुड़ला—(वि) চুলি খুৰোৱা মূৰৰ মানুহ ।
मुंडा । घुटे हुए सिरका ।

मुड़वाना—[क्रि स]মুণ্ডন কৰোৱা ।
मुण्डन कराना । किसीको मुंड़ने में प्रवृत्त करना ।

मुतलक—[क्रि वि] অলপো, অকণো ।
कुछ भी । तनिक भी ।
(वि) একেবাৰে, সম্পূৰ্ণ ।
बिलकुल । निपट । निरा ।

मुतसद्दी—(सं पुं) লেখক, মহৰী ।
लेखक । मुंशी । मुनीम ।

मुताबिक—(क्रि वि) অনুসাৰে ।
अनुसार ।
(वि) অনুকূল ।
अनुकूल ।

मुद—(सं पुं) হৰ্ষ, আনন্দ ।
हर्ष । आनन्द ।

मुदा—[अव्य] অৰ্থাৎ, আশয়,কিন্তু
तात्पर्य यह कि । मगर । लेकिन । परन्तु ।

मुदित—(वि) প্ৰসন্ন ।
प्रसन्न । खुश ।

मुद्दई—[सं स्त्री] গোচৰীয়া, বাদী, শত্ৰু ।
दावा दायर करने या अभियोग उपस्थित करनेवाला । वादी । शत्रु ।

मुद्दत—[सं स्त्री] সময়, বহুত দিন, অধিক কাল।

अवधि। बहुत दिन। अधिक समय।

मुद्दा—[सं पुं]অভিপ্ৰায়, উদ্দেশ্য।

अभिप्राय। आशय।

(ক্রি বি) তাৎপৰ্য্য।

तात्पर्य यह कि।

मुद्दालेह—(सं पुं) যাৰ ওপৰত দেৱানী মোকৰ্দ্দমা কৰা হয়, প্ৰতিবাদী।

वह जिसपर दीवानी दावा हो। प्रतिवादी।

मुद्धी—[सं स्त्री] ৰচীৰ পিছলা গাঁঠি। চোঁচনি গাঁঠি।

रस्सी की एक तरह की खिसकने वाली गाँठ।

मुद्रांकित -(वि) মুদ্ৰা বা মোহৰ যুক্ত।

जिसपर मुद्रा या मोहर लगी हुई हो।

मुद्रा—(सं स्त्री) মোহৰ, ধাতুৰ মুদ্ৰা, আঙঠি, ছাপ।

मोहर (सील)। सिक्का। अंगूठी छाप। सीसे के ढले हुए अक्षर।

मुद्रिका—(सं स्त्री) আঙঠি।

अगूठी।

मुद्रित—(वि) ছপা কৰা, মোহৰ মৰা, চাৰিও ফালৰ পৰা আবদ্ধ, মুদিত।

छपा हुआ। मोहर किया हुआ। चारो ओर से घिरा हुआ। मुँदा हुआ।

मुधा—(ক্রি বি) ব্যৰ্থ, বৃথা।

व्यर्थ। वृथा।

(বি) নিৰৰ্থক, মিথ্যা।

व्यर्थ का। मिथ्या।

मुनसिफ, मुन्सिफ— [सं पुं]

মুনচিফ, দেৱানী আদালতৰ তলৰ শ্ৰেণীৰ বিচাৰক।

वह जो न्याय या इन्साफ करता हो। न्याय विभागका एक अधिकारी।

मुनादी—[सं स्त्री] ঢোল বজাই কৰা ঘোষণা।

ढोल आदि पीटकर की जानेवाली घोषणा।

मुनाफा—(सं पुं) লাভ।

लाभ। नफा।

मुनासिब—[वि] উচিত।

उचित। वाजिब।

मुनीब, मुनीम— [सं पुं] আয-ব্যয়ৰ হিচাপ ৰখা কৰ্মচাৰী। মহৰী।
आय व्ययका हिसाब लिखनेवाला।

मुफलिस—[वि] নিৰ্ধন দৰিদ্ৰ।
निर्धन दरिद्र।

मुफलिसी—[सं स्त्री] নিৰ্ধনতা। গৰীবী।

मुफस्सल—(वि) বিতং ভাবে।
ब्योरेवार।
[सं पुं] কেন্দ্ৰীয় নগৰৰ ওচৰ কাষৰ ঠাই।
केन्द्रस्थ नगरके आसपासके स्थान।

मुफ्त—(वि) এনেয়ে পোৱা, বিনা-মূল্যে পোৱা।
जिसे प्राप्त करने मे कुछ धन न लगे या व्यय न हो।
(क्रि वि) ব্যৰ্থ, লাভহীন।
व्यर्थ। बे-फायदा।

मुफ्तखोर—[वि] বিনা পৰিশ্ৰমে ধন হজম কৰোঁতা।
बिना परिश्रम किये मुफ्तका माल खानेवाला।

मुबलिग-(सं पुं)ধনৰ সংখ্যা। ধন।
धन की संख्या। रकम।

मुबारक— [वि] শুভ, মঙ্গলময়।
जिसके कारण बरकत हो। शुभ। मंगलकारी।

मुमकिन- (वि) সম্ভৱপৰ।
जा हो सके। संभव।

मुमानियत—[सं स्त्री] বাধা। মনাহী।

मुमूक्षु— [वि] মুক্তিকামী। মুমুক্ষু।
मुक्ति की कामना या इच्छा करनेवाला।

मुमूर्षा—[सं स्त्री] মৃত্যু কামনা।
मरने की इच्छा।

मुमूर्षु— [वि] মৃতপ্ৰায়, মূৰ্চ্ছিত।
मृतप्राय। मूर्च्छित।

मुरकना—[क्रि अ] ঘূৰা, ফিৰা, দোধোৰমোৰ কৰা নষ্ট হোৱা।
मुडना। लौटना। मोच खाना। हिचकना। नष्ट होना।

मुरगा—[स पुं] কুকুৰা চৰাই।
कुक्कुट पक्षी (सं स्त्री-मुर्गी)

मुरगाबी—[सं स्त्री] কুকুৰা চৰাইৰ নিচিনা এবিধ জলপক্ষী।
मुरगे की तरह एक जल पक्षी।

मुरचंग-(सं पुं) মুখেৰে বজোৱা এবিধ বাদ্য যন্ত্ৰ।
मुँहसे बजाया जानेवाला एक बाजा।

मुरजन—(सं पुं) পাখোৱাজ, মৃদঙ্গ।
पखावज। मृदंग।

मुरझाना—(क्रि अ) মৰহি যোৱা, উদাস হোৱা।
कुम्हलाना। सुस्त या उदास होना।

मुरदा, मुर्दा—(सं पुं) মৰা শ। শব।
[वि] মৃত, মৰহি যোৱা।
मृत। बे-दम। मुरझाया या कुम्हलाया हुआ।

मुरदार—(वि) মৰা, অপবিত্ৰ।
मरा हुआ। अपवित्र। आसक्त।

मुरलिका, मुरली—(सं स्त्री) বাঁহী।
बाँसुरी।

मुरव्वत, मुरौवत—(सं स्त्री) শীল। সঙ্কোচ।
शील। संकोच। लिहाज।

मुरशिद—(सं पुं) গুৰু, বিশিষ্ট পূজ্য ব্যক্তি।
गुरु। कोई बड़ा और पूज्य व्यक्ति।

मुराद—(सं स्त्री) হাবিয়াস, মনৰ কামনা, অভিপ্ৰায়।
मनकी कामना या अभिलाषा। वासना। अभिप्राय।

मुरासिला—[सं पु] পত্ৰ, ৰাজকীয় পত্ৰ।
पत्र। राज दरबार से भेजा जानेवाला पत्र।

मुरीद—(सं पुं) শিষ্য, অনুগামী।
शिष्य। चेला।

मुरेठा—(सं पुं) পাগুৰী।
पगड़ी। साफा।

मुर्दनी—[सं स्त्री] মৃত্যুৰ লক্ষণ, শৱ-যাত্ৰা, উদাসীনতা।
चेहरे पर दिखाई देनेवाले मृत्युके लक्षण। शवकी अन्त्येष्टि क्रियाके लिये लोगोंका उसके साथ जाना। उदासी।

मुर्दाबादल—(सं पुं) এক প্ৰকাৰৰ সামুদ্ৰিক জীৱ, (স্পঞ্জ)।
एक समुद्री जीव। (इस्पंज)

मुल (१)—(अव्य) কিন্তু, তাৎপৰ্য্য।
मगर। लेकिन। तात्पर्य यह कि।

[सं स्त्री] मद ।
शराब ।

मुलजिम—(वि) অপৰাধী,দোষী ।
अभियुक्त ।

मुल्तबी मुलतबी—[सं स्त्री]
স্থগিত ।
स्थगित ।

मुलम्मा—(सं पुं) কলাই কৰা,
বাহ্যিক আড়ম্বৰ ।
कलई । ऊपरी तड़क-भड़क ।

मुलाकात—[सं स्त्री] দেখা-
সাক্ষাৎ, মিলন ।
भेंट । मिलन । जान पहचान या
मेल मिलाप ।

मुलाजिम—(सं पुं) চাকৰ,দাস ।
नौकर । सेवक ।

मुलायम—(वि) কোমল, নৰম,
মিহি ।
कोमल । नरम । हलका ।

मुलाहजा—[सं पुं] নিৰীক্ষণ,
সঙ্কোচ, ৰেহাই ।
निरीक्षण । शील संकोच ।
रियायत ।

मुलेठी—[सं स्त्री] জেঠী, মৌ ।
जेठी । मधु ।

मुल्क—(सं पुं) ৰাজ্য, প্ৰদেশ,
সংসাৰ ।
देश । प्रदेश । संसार ।

मुवक्किल—[सं पुं] মক্কেল ।
वह जो अपने कामके लिये वकील
नियुक्त करता है ।

मुशायरा—(सं पुं) উৰ্দূ কবি-
সম্মিলন ।
उर्दू कवि सम्मेलन ।

मुश्क—(सं पुं) কস্তুৰী, গান্ধ-
কলাই । সুগন্ধ ।
कस्तूरी । गन्ध ।
[सं स्त्री] বাহু ।
भुजा । बाँह ।

मुश्कें कसना या बाँधना—
(मु०) দুয়োখন হাত পিঠিৰ
পিনে বান্ধি থোৱা ।
दोनों भुजाओं को पीठकी ओर ले
जाकर रस्सी से बाँधना । (अपरा
धियों आदि की) ।

मुश्किल—[वि] মস্কিল, কঠিন,
টান ।
कठिन । दुष्कर ।
[सं स्त्री] কঠিনতা, বিপত্তি,
कठिनता । विपत्ति ।

मुश्त—(सं पुं) মুঠি।
मुट्ठी।

एकमुश्त--(पद) এককালীন।
एक साथ एक ही बारमें दिया जानेवाला (धन या देन)

मुष्टि (का)—(वि) মুঠি, ভুকু।
मुट्ठी। मुक्का।

मुसकान—(सं स्त्री) মিচিকীয়া হাঁহি।
मुस्कराहट।

मुसकाना -[क्रि अ] মিচিকীযা হাঁহি মৰা।
मुस्कराना।

मुसना—(क्रि अ)সৰ্বস্বান্ত হোৱা।
मूसा या लूटा जाना।

मुसम्मात—[वि] নামক তিৰোতা।
नाम धारिणी। नाम्नी।
(सं स्त्री) তিৰোতা।
स्त्री। औरत।

मुसम्मी—(वि) নামক।
नामक।
(सं स्त्री) কমলাৰ নিচিনা এবিধ মিঠা টেঙা।
एक प्रकार का वढ़िया नारंगी।

मुसल्लम—[वि] পূৰ্ণ।
पूरा।

मुसाफिर—[सं पुं] যাত্ৰী।
यात्री।

मुसाफिर-खाना—(सं पुं) জিৰণি ঘৰ। বিশ্ৰামালয়।

मुसाहब—(सं पुं) ধনী অথবা বজা সকলৰ লগুৱা।
धनवान या राजा आदि का पार्श्ववर्ती।

मुसीबत—(सं स्त्री) দুখ, কষ্ট, বিপত্তি।
तकलीफ। कष्ट। विपत्ति।

मुस्कराना, मुस्काना—[क्रि अ] মিচিকীযাই হঁহা।
बहुत ही मंद रूपसे या धीरे से हँसना।

मुस्कराहट—(सं स्त्री)মিচিকিয়া হাঁহি
मुस्करानेकी क्रिया या भाव।

मुस्टंडा—[वि] শকত আৱত, বদমাচ, লম্পট।
मोटा-ताजा। बदमाश। गुंडा।

मुस्तैद—[वि] তৎপৰ, কোনো বিষয় বা কাৰ্য্যত বৰকৈ চিন্তা কৰা বা মন লগোৱা।
तत्पर। अच्छी तरह और पूरा काम करनेवाला।

मुहब्बत—[सं स्त्री] প্ৰেম,প্ৰীতি, স্নেহ।
प्रीति। प्रेम। लगन।

मुहर्रिर—[सं पुं] মহৰী।
लेखक। मुनशी।

मुहल्ला—[सं पुं] চুবুৰী, বস্তি, পটি, হাটি।
महल्ला। बस्ती।

मुहाफिज—[वि] সংৰক্ষিত, ৰক্ষণাবেক্ষণকাৰী।
हिफाजत करनेवाला। रक्षक।

मुहाल—(वि) অসম্ভৱ, দুস্কৰ।
असम्भव। ना मुमकिन। दुष्कर।
[सं पुं] হাটি, পটি।
महाल। टोला

मुहावरा—[सं पुं] খণ্ড বাক্য, জতুৱা ঠাচ।
वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजना से निकलता हो। अभ्यास।

मुहावरेदार—(वि) খণ্ড বাক্য বা জতুৱা ঠাচ মিশ্ৰিত।
(भाषा)जिसमें मुहावरोंका प्रयोग ठीक ठीक हुआ हो।

मुहूर्त्त—(सं पुं) মুহূৰ্ত্ত, ক্ষণ, দিন ৰাতিৰ ত্ৰিশ ভাগৰ এক। নিৰ্দ্দিষ্ট ক্ষণ, জ্যোতিষৰ নিয়মানুসৰি গণি পিতি উলিওৱা শুভক্ষণ।
दिन रात का तीसवाँ भाग। निर्दिष्ट क्षण या समय। फलित ज्योतिष के अनुसार निकाला वह समय जब कोई शुभ काम किया जाय।

मुह्य,मुह्यमान--(वि) মোহজালত পৰা, মূৰ্চ্ছিত।
मोहमें पडा हुआ। बेहोश।

मूँग—[सं पुं] মগুমাহ।
एक अन्न जिसकी दाल बनती है।

मूँगफली—[सं स्त्री] বাদাম।
चिनिया बादाम।

मूँगर(।)- [सं पुं] কাঠৰ হাতুৰী।
काठका बना हथौड़ा।

मूँगा—[सं पुं] প্ৰবাল।
प्रवाल। विद्रुम।

मूँछ—[सं स्त्री] গোঁফ।
उपरी ओठपर के बाल जो केवल पुरुषों के होते हैं।

मूँज—[सं स्त्री] খৰাহি আদি সাজিব পৰা এজাতীয় বন বিশেষ, কুশ জাতীয় বন।
एक प्रकारका तृण जिससे दोने, टोकरियाँ आदि बुने जाते हैं।

मूँदना—(क्रि स) বন্ধ কৰা, জপোৰা, ঢাকি থোৱা, দুৱাৰ অথবা মুখত কিবা থৈ বন্ধ কৰা।
बंद करना। ढाँकना। द्वार मुँह आदि पर कुछ रखकर बन्द करना।

मूक-(वि) বোবা, আচৰিত, নিৰুপায়।
गूँगा। अवाक। लाचार।

मूठ—[सं स्त्री] মুঠি, যন্ত্ৰ পাতিৰ নাম, যাদু।
मुट्ठी। औजार या हथियारकी मुठिया। जादू टोना।

मूढ़- वि) মূৰ্খ, স্তব্ধ।
मूर्ख। बेवकूफ। स्तब्ध।

मूतना—[क्रि अ] পেচ্ছাব কৰা।
पेशाब करना।

मूर-(सं पुं) মূল, বনৌষধি, মূল নক্ষত্ৰ।
मूल। जड़ी बूटी। मूल नक्षत्र।

मूरि(री]—[सं स्त्री] বনৌষধি।
मूल। जड़ी बूटी।

मूर्छना—(सं स्त्री) মূৰ্চ্ছনা, সঙ্গীতৰ সপ্ত স্বৰৰ উঠা নমাৰ ক্ৰম বা বিধি।
संगीतमें नियमित रूपसे उतार-चढ़ाव का ध्यान रखते हुए नीचे स्वरसे ऊँचे स्वरपर जाने और ऊँचे स्वरसे नीचे स्वरमें आनेकी क्रिया या ऐसी क्रियामें गलेसे निकलने वाला स्वर।

मूर्त—(वि) সাকাৰ, মূৰ্ত্ত।
साकार। ठोस।

मूर्तिकार—(सं पुं] কাৰীগৰ, মূৰ্ত্তি গঢ়োঁতা বা সাজোঁতা।
मूर्तियाँ बनानेवाला।

मूर्त्ति-भंजक—(सं पुं) মূৰ্ত্তি ধ্বংশ-কাৰী।
वह जो मूर्त्तियोको व्यर्थ मानकर तोड़ता हो।

मूर्द्धा—(सं पुं) মূৰ।
सिर।

मूल-भूत—(वि) মূল ভূত। মূল তত্বৰে সম্বন্ধিত।
किसी वस्तुके मूल या तत्व से सम्बन्ध रखनेवाला।

मूली—(सं स्त्री) মূলা।
एक पौधे की जड़ जो मीठी और चरपरी होती है।

मूल्यांकन—(सं पुं) মূল্য নিৰ্দ্ধাৰণ কৰা, বস্তুৰ গুণানুযায়ী মূল্য ঠিক কৰা।

दाम आँकना। किसी वस्तुका गुण उपयोगिता या महत्व आँकना या समझना।

मूष (क)—(सं पुं) এন্দুৰ, নিগনি। चूहा।

मूसना— (क्रि स) কাৰো বস্তু কাটি নিয়া বা চুৰি কৰি নিয়া, লুট কৰা, ঠগা।
किसीका माल छीन या चुराकर ले लेना। लूटना। ठगना

मूसलचंद—(सं पुं) শকত-আৱত নিকৰ্ম্মা লোক।
हट्टाकट्टा पर निकम्मा मनुष्य।

मूसलधार, मूसलाधार— (क्रि वि) ধাৰাসাৰ, কলহৰ কাণে ঢলা (বৰষুণ)।
मूसलके समान मोटी धार से।

मूसा—[सं पुं] নিগনি। ইহুদী সকলৰ পয়গম্বৰ দেৱদূত।
चूहा। यहूदियोंके मूल पैगंबर।

मृग—(सं पुं) জন্তু, হৰিণ, মৃগশিৰা নক্ষত্ৰ, কামশাস্ত্ৰানুসৰি পুৰুষৰ এটা শ্ৰেণী।
पशु। हिरन। मृगशिरा नक्षत्र। काम शास्त्रमें चार प्रकारके पुरुषोंमें से एक। (सं स्त्री—मृगिनी मृगी),

मृग-चर्म—[सं पुं] হৰিণৰ ছাল।
हिरनकी खाल। (सं स्त्री—मृगछाला)।

मृग तृष्णा—(सं स्त्री) মৃগ-তৃষ্ণা, অসত্যক সত্য বুলি ভ্ৰম কৰা, মৰু ভূমিত সূৰ্য্যৰ কিৰণ পৰি পানীৰ দৰে প্ৰতীয়মান হোৱা। মৰীচিকা।
मरुभूमिमें जलकी भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली मरीचिका। मृग-मरीचिका।

मृग-नैनी, मृगलोचनी, मृगाक्षी—(सं स्त्री) মৃগ নয়নী, পহুৰ দৰে শুৱনী চকু থকা তিৰোতা, সুন্দৰী তিৰোতা।
मृगके समान सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्री।

मृगया—(सं स्त्री) মৃগয়া, পহু চিকাৰ।
शिकार। आखेट।

मृगांक—(सं पुं) চন্দ্ৰ।
चन्द्रमा।

मृणाल—[सं पुं] পদুম ফুলৰ গছৰ ডাঁঠি, পদুমৰ ডাঁঠি।
कमलनाल।

मृणालिनी—(सं स्त्री) কমলিনী, পদুম ।
कमलिनी ।

मृण्मय, मृन्मय—(वि) মাটিৰ, মাটিৰে সজা ।
मिट्टी का बना हुआ ।

मृत-प्राय—[वि] মৰাৰ তুল্য, মৃত প্ৰায় ।
मरे हुए के समान ।

मृत्तिका—(सं स्त्री) মাটি ।
मिट्टी ।

मृत्यु-लोक—(सं पुं) প্ৰেতলোক, যমপুৰী ।
यम लोक । मर्त्य लोक ;

मृदुल—(वि) কোমল, সুকুমাৰ ।
कोमल । कोमल हृदय । कृपालु । सुकुमार ।

मृषा—(अव्य) মিছা, ব্যৰ্থ ।
झूठ-मूठ । व्यर्थ ।
[वि] মিছা ।
असत्य । झूठ ।

में—[वि भ०] অধিকৰণ কাৰকৰ চিন, ত, ভিতৰত ।
अधिकरण कारकका चिह्न अन्दर । भीतर ।

मेंड़—[सं स्त्री] .খেতি পথাৰৰ আলি বা বান্ধ, সীমা ।
खेतों की सीमा का सूचक मिट्टी की ऊंची रेखा या बांध । सामा । मर्य्यादा ।

मेड़बंदी—(सं स्त्री) আলি বা বান্ধ বন্ধোৱা কাৰ্য্য ।
मेड़ बनानेका काम या भाव ।

मेंढक—(सं पुं) ভেকুলী ।
दर्दुर ।

मेंह, मेंहरा—(सं पुं) বৰ্ষা, মেঘ ।
वर्षा ।

मेख—[सं स्त्री] শলা, কাঠৰ-খুটা ।
कील । लकड़ी का खूँटा ।

मेखला—(सं स्त्री)মেখলা, অঞ্চল, পৰ্ব্বতৰ মধ্য ভাগ, সাধু-সন্ন্যাসীয়ে গলত লোৱা কাপোৰ বিশেষ ।
करधनी । मंडल । पर्वत का मध्य भाग । वह कपड़ा जो साधु लोग गलेमें डाले रहते हैं ।

मेघडम्बर, मेघाडम्बर—(सं पुं) মেঘৰ গৰজনি । বৰ ডাওৰ চামিয়ানা ।

बादल की गरज। बहुत बड़ा शामियाना।

मेचक—(वि) ক'লা, শ্যাম, এন্ধাৰ।
काला। श्याम। अन्धेरा
(सं पुं) ধোঁৱা, মেঘ।
धूँआ। बादल।

मेज—(सं स्त्री) মেজ।
पढ़ने लिखने आदिके लिये बनी ऊँची चौकी।

मेजबान—[सं पुं] গৃহস্থ, অতিথি আহি যাৰ ঘৰত থাকে বা আছে, অতিথি শুশ্ৰষা কৰোঁতা।
वह जिसके यहाँ कोई अतिथि आकर ठहरे। आतिथ्य करनेवाला। (भाव-मेजबानी)

मेट—(सं पुं) বনুৱাৰ চৰ্দ্দাৰ।
मजदूरों का सरदार।

मेटक, मेटनहारा—(वि) নাইকিয়া কৰোঁতা,মচোঁতা জন।
मिटानेवाला।

मेटना—(क्रि स) নাইকীয়া কৰা, নোহোৱা কৰা, মোচা।
मिटाना।

मेद—(सं पुं) চৰ্ব্বী, কস্তুৰী।
चरबी। कस्तूरी।

मेदा—(सं स्त्री) সুগন্ধি বনৌষধি বিশেষ।
एक प्रकार की सुगन्धित जड जो औषध के काम में आती है।
[सं पुं] পাকস্থলী।
पक्काशय।

मेदिनी—(सं स्त्री) পৃথিবী।
पृथ्वी।

मेदुर—[वि] মিহি, মোটা।
चिकना। मोटा या गाढ़ा।

मेध—(सं पुं) যজ্ঞ।
यज्ञ।

मेधा—[सं स्त्री] ধাৰণা শক্তি, বুদ্ধি, বুজিব পৰা শক্তি।
बातें समझने और स्मरण रखने की शक्ति।

मेधावी—[वि] মেধাবী, চোকা বুদ্ধিৰ, পণ্ডিত, বিদ্বান।
बुद्धिमान। पंडित। विद्वान।

मेध्य—(वि) যজ্ঞ সম্বন্ধীয়, পবিত্ৰ।
यज्ञ सम्बन्धी। पवित्र।
[सं पुं] পঠা ছাগল, যঁইৰ, যৱধান।
बकरा। जौ। खैर।

मेमना–(सं पुं) ভেড়াৰ পোৱালী, ভেঁড়াৰ জাতি বিশেষ।
· भेड़का बच्चा। घोड़ेकी एक जाति।

मेमार—(सं पुं) ঘৰ সজা মিস্ত্রী, ৰাজ। मकान बनाने वाला कारीगर। राज।

मेलन—[सं स्त्री] মিশ্রণ, মিহলি, ভেজাল।
· मिश्रण। मिलाई हुई चीज।

मेलना—(क्रि स) মিহলি কৰা।
मिलाना।

मेरा—(सर्व) মোৰ।
'मैं'के सम्बन्ध कारक का एक रूप।

मेरु—(सं पुं) সুমেৰু পৰ্ব্বত, দোলনা জৰী বন্ধা খুঁটা বা কাঠ।
सुमेरु पर्वत। हिंडोले की रस्सी बाँधनेवाली लकड़ी।

मेरु-दंड—[सं पुं] ৰাজহাড়, পৃথিবীৰ মাজৰ কল্পিত ৰেখা।
रीढ़। पृथ्वीके बीचकी कल्पित रेखा।

मेल—(सं पुं)মিল, মিলন, মিত্ৰতা, মিহলি, দৰে, ডাক, ডাকগাড়ী।
मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। आपस का सद्भाव। मित्रता। अनुरूपता। मिश्रण। ढंग। तरह। डाक। डाकगाड़ी।

मेलजोल, मेल-मिलाप—[सं पुं] ঘনিষ্ঠতা, মিল-জুল।
घनिष्ठता।

मेलान—[सं पुं] বাহৰ।
ठहराव। पड़ाव।

मेली—(वि) সঙ্গী যাৰ লগত মিল-জুল হৈছে। মিলি জুলি থাকিব খোজা ব্যক্তি।
जिससे मेल मिलाप हो। मिलनसार। साथी।

मेल्हना—[क्रि अ] বিফল হোৱা, ইতঃস্তত: কৰি সময় কটোৱা।
विकल होना। आना कानी करके समय बिताना।

मेवा—(सं पुं) কিচমিচ। মধুৰ ফল, মেৱা।
किशमिश, बादाम आदि सूखाये हुए बढ़िया फल।

मेवासा—[सं पुं] দুৰ্গ, সুৰক্ষিত স্থান, ঘৰ।
किला। सुरक्षित स्थान। घर

मेहँदी— (सं स्त्री) জেতুকা।
एक झाड़ी जिसकी पत्तियां पीस

कर स्त्रियां हथेली या तलवे रंगने के लिये लगाती है।

मेह—[सं पुं] মূত্ৰ, পেছাব, বহুমূত্ৰ বেমাৰ, মেঘ, বৰ্ষা।
मूत्र। प्रमेह रोग। मेघ। वर्षा।

मेहतर—[सं पुं]মেহতৰ, হৰিজন।
भंगी।

मेहनत-[सं स्त्री] পৰিশ্ৰম।
परिश्रम। (वि-मेहनती)

मेहनताना—(सं पुं)পাৰিশ্ৰমিক।
पारिश्रमिक।

मेहमान—(सं पुं) অতিথি।
अतिथि।

मेहमानी— [सं स्त्री] অতিথি সৎকাৰ।
अतिथि सत्कार।

मेहर—(सं स्त्री) কৃপা, দয়া পত্নী।
कृपा। दया। पत्नी।

मेहरबान—(वि) কৃপালু।
कृपालु।(सं स्त्री-मेहरबानी)

मेहरा—(सं पुं) তিৰোতাৰ দৰে অঙ্গী-ভঙ্গী কৰোঁতা, মেঘ।
स्त्रियों की सी चेष्टा या हाव-भाव करनेवाला। जनखा। मेघ। बादल।

मेहराना—(क्रि अ) মৰমৰীয়া বস্তু সেমেকি যোৱা।
कुरकुरी चीजोंका मुलायम पड़ जाना।

मेहराब—(सं स्त्री) দুৱাৰৰ ওপৰত ধেনু আকৃতিৰ সজ্জা, মচজিদৰ ইমাম থিয় হোৱা ঠাই।
द्वार आदि के ऊपरकी अर्द्ध मंडलाकार रचना।

मेहरारू, मेहरी— (सं स्त्री) স্ত্ৰী, পত্নী।
औरत। पत्नी।

मैं—(सर्व) মই।
उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद।

मैका—(सं पुं) মাকৰ ঘৰ।
मायका। पत्नीके पिता आदि का घर।

मैत्री—[सं स्त्री] মিত্ৰতা।
मित्रता।

मैथिल—(सं पुं) মিথিলা বাসী।
मिथिला का निवासी।

मैथुन—(सं पुं) সম্ভোগ, স্ত্ৰী-পুৰুষ সহবাস।
स्त्री के साथ पुरुषका समागम। संभोग।

मैदान—(सं पुं) পথাৰ, যুদ্ধক্ষেত্ৰ।
लम्बा चौड़ा खालीस्थान। युद्ध-क्षेत्र।

मैन—(सं पुं) কামদেৱ, ভোগ, বাসনা, মম।
कामदेव। भोग। शहदकी मक्खी का मोम। वासना।

मैना—[सं स्त्री] মইনা, পাৰ্ব্বতীৰ মাক, মেনকা।
सारिका। पार्वती की माता।

मैया—(सं स्त्री) মাই, আই।
माता।

मैल—(सं स्त्री) ময়লা, দোষ।
किसी चीजपर जमी हुई गर्द, धूल आदि। दोष। विकार।

मैला—[वि] মলিয়ন, দূষিত।
जिसपर मैल जमी हो। दूषित।
(सं पुं) বিষ্ঠা, গু, আবৰ্জ্জনা ফটা-ছিৰা।
विष्ठा। कूड़ा-कर्कट।

मैला-कुचैला—[वि] বৰ মলিয়ন, লেতেৰা।
बहुत मैल। गंदा।

मों—[अव्य] মই, কাব্য প্রয়োগ।
मैं।

मोंछ—(सं स्त्री) গোফ।
मूंछ।

मो—(सर्व) 'মোৰ'কবিতাৰ প্ৰয়োগ।
मेरा।

मोक्ष—(सं पुं) মোক্ষ, মুক্তি।
बंधन से मुक्त। मुक्ति।

मोघ— (वि) নিৰৰ্থক, এনেয়ে যোৱা, বাৰী।
निरर्थक व्यर्थ जानेवाला। बाड़ा। परकोटा।

मोच—(सं स्त्री) শৰীৰৰ কোনো অঙ্গ ইফাল সিফাল হোৱা, মোচোকা।
शरीरके किसी अंगके जोड़का कुछ इधर उधर हट जाना।

मोचन— [सं पुं] মুক্ত কৰা, দূৰ কৰা, কাঢ়ি অনা।
मुक्त करना। दूर करना। छीन लेना।

मोची—[सं पुं] মুচি।
जूता आदि बनानेवाला।
[वि] মুকলি কৰি দিওঁতা, এৰুৱাওঁতা।
छुड़ानेवाला। दूर करनेवाला।

मोट—(सं स्त्री) টোপোলা, মুঠ (বাশি) ।
गठरी । राशि ।
[सं पुं] খেতিত পানী সিচা চামৰাৰ ডাঙৰ মোনা ।
चमडेका बडा थैला, जिससे खेती सीचते है ।

मोटरी-(सं स्त्री) সৰু টোপোলা ।
छोटी गठरी ।

मोटाना—(क्रि अ) শকত হোৱা, ধনী হোৱা, অহঙ্কাৰী হোৱা ।
मोटा होना । धनी होना । घमंडी होना ।
[क्रि स] আনক শকত কৰা ।
दूसरे को मोटा करना ।

मोटा-मोटी—[क्रि वि] মোটা-মুটি, সংক্ষেপে, আনুমানিক ।
अनुमानत ।

मोटिया—(सं पुं) মুটিয়া, ভাৰ বা বোজা বোৱা মানুহ, খদ্দৰৰ নিচিনা ডাঠ কাপোৰ ।
बोझ ढोनेवाला मजदूर । खद्दर जैसा मोटा कपडा ।

मोड़—(सं पुं) ঘূৰণ, কেঁকুৰা, ভাঁজ (ৰাস্তা বা কাগজ আদিৰ)
किसी ओर मुड़नेकी क्रिया या भाव । रास्ते आदिका वह अंश या स्थान जहाँ से वह किसी ओर मुडता या घूमता है ।

मोड़ना—[क्रि स] ঘূৰা, ভাঁজ দিয়া, কুষ্ঠিত কৰা ।
किसी को मुडनेमे प्रवृत्त करना । कुछ अश उलट या समेटकर विस्तार कम करना । कुठित करना ।

मोतिया-बिंद—(सं पुं) চকুৰ বেমাৰ বিশেষ ।
आँख की एक बीमारी जिसमें पुतली के आगे झिल्ली पड जाती है । (अं -कैटेरेक्ट)

मोती—[सं पुं] মুক্তা ।
मौक्तिक । मुक्ता ।

मोतीझरा मोतीझिरा—(सं पुं) মুটি আই, সৰু বসন্ত ।
छोटी शीतला का रोग ।

मोद—(सं पुं) আনন্দ, প্ৰসন্নতা, সুগন্ধ ।
आनन्द । प्रसन्नता । सुगध ।

मोदक—(सं पुं) ভাঙৰ লাড়ু, ভাঙৰ গুৰিত চেনি, মচলা আদি মিহ-লাই পাক কৰা ঔষধ । মোদক ।
लड्डू ।

মোদী—[সং পুং] বেপাৰী।
बनिया।

মোনা—[ক্রি স] তিউৱা।
भिगोना।
[সং পুং] বাঁহৰ পাত্র, খৰাহী আদি।
पिटारा। झाबा।

মোমজামা—(সং পুং) মমৰ মাৰ লগোৱা কাপোৰ।
वह कपड़ा जिसपर मोम का रोगन चढ़ा हो।

মোয়ন—(সং পুং) আটা বা ময়দা মাৰিবৰ সময়ত দিয়া ঘিঁউ বা তেল।
गूंथे हुए आटेमें डाला जानेवाला घी या तेल जिसके कारण उससे बननेवाली चीजें खस खसी और मुलायम हो।

মোৰ—(সং পুং) ম'ৰা চৰাই।
मयूर पक्षी। (सं स्त्री–मोरनी)
(সৰ্ব) মোৰ।
मेरा।

মোৰ্চা—[সং পুং] মামৰ, দাপোনত বান্ধ খোৱা মলি, দুৰ্গৰ চাৰিওপিনে থকা খাবৈ, দুৰ্গ অথবা নগৰ ৰক্ষাৰ বাবে সৈন্য যি ঠাইত থাকে। যুদ্ধত সন্মুখীন হোৱা।
लोहे पर लगनेवाली जंग। शीशे या दर्पण पर जमी हुई मैल। वह गड्ढा जो किलेके चारों ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। वह स्थान जहाँ से गढ या नगर की रक्षा की जाती है। द्वन्द्व या प्रतियोगितामें होनेवाला सामना।

মোৰ্চা বন্দী—[সং স্ত্রী] শত্রুক আক্রমণ কৰিবলৈ বা আত্ম ৰক্ষাৰ বাবে কৰা সমৰ প্রস্তুতি।
शत्रुपर आक्रमण करने या अपनी रक्षा करनेके लिये मोर्चा बनाना।

মোৰছল, মোৰছল—[সং পুং]
ময়ুৰৰ পাখিৰে তৈয়াৰী চোঁৱৰ।
मोरके परोसे बना हुआ चँवर।

মোৰী—[সং স্ত্রী] লেতেৰা পানী বৈ যোৱা নৰ্দ্দমা, ময়ুৰী।
गदा पानी बहनेकी नाली। मोरनी

মোল—(সং পুং) মূল্য।
मूल्य।

মোলানা—[ক্রি স] দৰ দাম কৰা।
मूल्य तय करना या पूछना।

মোষ (ক্ষ)—(সং পুং) মোক্ষ।
मोक्ष।

मोहताज (**मुँहताज**)—[वि] দৰিদ্ৰ, কোনো বস্তুৰ বাবে আনৰ ওচৰত নির্ভৰশীল।

दरिद्र। विशेष कामना रखने वाला।

मोहना—(क्रि अ) মোহিত হোৱা, মূৰ্চ্ছা যোৱা।

मोहित होना। मूर्छित होना।

[क्रि स] মোহিত কৰা, আকৰ্ষিত কৰা।

मोहित करना। लुभाना। भ्रममें डालना।

मोहरा—[सं पुं] মুখ বা খোলা অংশ, সমুখৰ অংশ, সৈন্যৰ অগ্ৰগামী শাৰী, দবা খেলৰ গুটি বিশেষ। জহৰ-মহৰ

मुँह या खुला भाग। सामने का भाग। सेना की अगली पंक्ति। शतरंज की कोई गोटी। सिंगिया। विष : जहर। मोहरा।

मोहरी--[वि स्त्री] পায়জামাৰ তলৰ অংশ।

पाजामें का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं।

मोहलत—(सं स्त्री) সময়, ছুটি, অৱধি, মিয়াদ।

फुरसत। छुट्टी। अवधि

मौंहि—(सर्व) মোক (কবিতাতহে প্ৰয়োগ হয়)

मुझे।

मौका—(सं पुं) সুবিধা, সময়, ঘটনা ঘটিত হোৱা ঠাই।

किसी घटना के घटित होने का स्थान। अवसर। समय।

मौज—(सं स्त्री) ঢৌ, মনৰ হেন্দোলনি, সুখ, আৰাম।

लहर। तरंग। मनकी उमंग, सुख। मजा। [वि—मौजी]

मौजूद—[वि] উপস্থিত, থকা।

उपस्थित। जो सामने हो

मौजूदा—(वि) এই সময়ৰ। বৰ্ত্তমান।

इस समय का। वर्तमान

मौत—[सं स्त्री] মৃত্যু।

मृत्यु।

मौनी—[वि] মৌন ধাৰণ কৰোঁতা।

मौन धारण करनेवाला।

मौर—[सं पुं] বৰক পিন্ধোৱা মুকুট, শিৰোমণি, প্ৰধান, আমৰ

कुँहिपात, गलधन, मूर ।
विवाह के समय वरको पहनाया जानेवाला एक प्रकारका शिरो-भूषण । शिरोमणि । प्रधान । आमकी मंजरी । सिर । गरदन ।

मौरूसी—(वि) पैतृक धन सम्पत्ति ।
पैतृक (धन संपत्ति)

मौलसिरी—(सं स्त्री) बकुल फुल ।
बकुल फूल ।

मौला—(सं पुं) मित्र, सहायक, गराकी ईश्वर ।
मित्र । सहायक स्वामी । ईश्वर

मौलि—(सं पुं) टिकनि, मूर, किरीटी, जटा, मुखियाल ।
चोटी मस्तक । किरीट । जटा । मुखिया ।

मौली—[वि] जटाधारी, टिकनि-धारी ।
मौलि धारण करनेवाला।
(सं स्त्री) पूजा आदिर बाबे रं करा सूता ।
पूजा आदि के लिये रंगा हुआ सूत ।

मौसम, मौसिम—[सं पुं] ऋतु, बतर, फसल आदि लगार समय ।
ऋतु । आबो-हवा । वृक्षोंके फल आदि प्राप्ति का उपयुक्त समय ।

मौसा—[सं पुं] महा ।
मौसी का पति ।

मौसी—(सं स्त्री) माही ।
माताकी बहन ।

मौसेरा-(वि) माहीर सम्बन्ध ।
मौसीके सम्बन्ध का ।

म्यान—(सं पुं) खाप ।
वह खाना जिसमें तलवार आदिके फल रहते हैं ।

म्रियमान-(वि) म्रियमान, मृत तुल्य ।
मरे हुए के समान ।

म्लान—[वि] मान मलिन, दुर्बल ।
कुम्हलाया हुआ । दुर्बल । मलिन । (सं स्त्री—म्लानता)

म्हार—(सर्व) आमार ।
हमारा ।

য

য—দেৱনাগৰী বৰ্ণমালাৰ ছাব্বিশ সংখ্যাৰ আখৰ ।
वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर ।

यंत्रणा—[सं स्त्री] কষ্ট, যন্ত্ৰণা, বেদনা, পীড়া ।
कष्ट । तकलीफ । पीड़ा ।

यंत्र-मंत्र—(सं पुं) জাৰা-ফুকা, মন্ত্ৰ আদি, তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ ।
जादू-टोना ।

यंत्र-विद्या—[सं स्त्री] যন্ত্ৰ বিদ্যা, যন্ত্ৰ শাস্ত্ৰ । যন্ত্ৰ, কল আদি সজা বিদ্যা, [ইন্‌জিনিয়াৰিং] কল মিস্ত্ৰীৰ বিদ্যা ।
कलें या यंत्र चलाने या बनाने की विद्या । (अं—इंजिनियरिंग)

यंत्रिका—[सं स्त्री] তলা, সঁচাৰ ।
ताला ।

यंत्रित—(वि) যন্ত্ৰৰে বন্ধ কৰি অথবা থমাই থোৱা, তলা বন্ধ ।
यंत्र के द्वारा रोका या बन्द किया हुआ । ताले में बन्द ।

यंत्री—[सं पुं] যন্ত্ৰ বা কল চলাওঁতা, বাদ্য যন্ত্ৰ বজাওঁতা ।
यंत्र-मंत्र करनेवाला । बाजा बजानेवाला ।

यकायक—[क्रि वि] হঠাৎ ।
एकाएक । सहसा ।

यकीन—(सं पुं) বিশ্বাস ।
विश्वास ।

यक्ष, यच्छ—[सं पुं] যক্ষ, যখ, কুবেৰ ।
एक प्रकार के देवता । कुबेर ।

यजन—[सं पुं] যজ্ঞ কৰা ।
यज्ञ करना ।

यजना—[क्रि स] যজ্ঞ কৰা, পূজা কৰা, যাজনিক কৰা ।
यज्ञ करना । पूजा करना ।

यज्ञोपवीत—[सं पुं] লগুণ, উপনয়ন, যজ্ঞ সূত্ৰ ।
जनेऊ । उपनयन संस्कार ।

যতি (তী)—(সং পুং) সন্ন্যাসী, ব্রহ্মচাৰী।
संन्यासी। ब्रह्मचारी।
(সং স্ত্রী) পূর্ণ বিৰাম চিন।
छन्दोंके चरणोंका वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ विराम होता है।

যৎকিঞ্চিৎ—(ক্রি বি) যৎ কিঞ্চিত, অলপমান।
थोड़ा।

যত্র—(ক্রি বি) য'ত' যিঠাইত।
जहाँ। जिस जगह।

যত্র-তত্র—[ক্রি বি] য'তে-ত'তে, ঠায়ে-ঠায়ে।
जहाँ तहाँ। जगह-जगह।

যথাযথ—[ক্রি বি] যথাযোগ্য, যথাৰ্থে, যথোচিত, যেনে উচিত তেনে।
जैसा चाहिये वैसा।

যথাবৎ— (বি)যথাবৎ, যথাবিধি।
जैसा था, वैसाही। ठीक तरहका।

যথেচ্ছ—(অব্য) যথেচ্ছা, ইচ্ছা অনুসৰি, যিমান বা যিমান লাগে সিমান বা তেনে।
इच्छा के अनुसार। जितना या जैसा चाहिये उतना या वैसा।

যথেচ্ছাচার—[সং পুং] স্বেচ্ছাচাৰ, নিজ ইচ্ছা মতে চলা।
स्वेच्छाचार (वि स्वेच्छाचारी।)

যথেষ্ট—(বি) প্রচুৰ, যিমান লাগে সিমান হোৱা, জোৰাকৈ হোৱা। বহুত।
जितना चाहिये उतना।

যদপি, যদ্যপি—(অব্য) যদিও, যদিচ, এনে হলেও।
यदि ऐसा है ही। अगरचे। गो कि।

যদা-কদা—(অব্য) কদা কাচিত, কেতিয়াবা কেতিয়াবা।
कभी कभी।

যমক—[সং পুং] শব্দালঙ্কাৰ-বিশেষ।
शब्दालंकारों में एक भेद।

যমজ—[সং পুং] যঁজা, একে লগে জন্মা।
जुडवाँ बच्चे।

যম-যাতনা—(সং স্ত্রী) যমৰ যাতনা, মৃত্যু- কষ্ট।
मृत्यु कष्ट।

যবনিকা—(সং স্ত্রী) আঁৰ কাপোৰ, পৰ্দ্দা, নাট ঘৰত ব্যৱহাৰ কৰা আঁৰ কাপোৰ।
पर्दा। [रंगशाला का।]

यशस्वी, यशी—[वि] যশস্যা-
শালী, খ্যাতি থকা।
कीर्तिमान ।

यशुमति, यशोमति—[स स्त्री]
যশোদা, নন্দৰ ভাৰ্য্যা, কৃষ্ণৰ
পালিকা-মাক।
यशोदा ।

यष्टि (का) यष्टी-[सं स्त्री] লাখুটি।
छड़ी ।

यह—[सर्व] এই, ই [সৰ্ব্বনাম পদ।]
एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग
वक्ता और श्रोताके अतिरिक्त
निकटवर्ती सभी संज्ञाओं या
बातों के लिये होता है।

यहाँ-(ক্রি বি)ইয়াত, এই ঠাইত।
इस जगह ।

यहि—(सर्व, वि) ইয়াক ।
इसको। इसे।

यहीं—(ক্রি বি) এই ঠাইতে।
इसी स्थान पर ।

यही—(अव्य) এয়েই।
यह ही ।

यहूदी—[सं पुं] ইজৰাইলৰ
অধিবাসী জাতি বিশেষ, হিব্ৰু-
জাতি, ইহুদী।
इसराइलमें बसनेवाली एक जाति
[अं-ज्यू]
(বি) ইহুদী সকলৰ দেশ
সম্বন্ধীয়, ইহুদী।
यहूद देश सम्बन्धी। यहूद का।

यहै—[सर्व] এয়েই [কবিতাতহে
ব্যবহৃত।]
यही ।

या—(अव्य) অথবা, বা, নাইবা।
अथवा ।
(सर्व, वि) এই।
यह ।

याग, याज—(सं पुं) যজ্ঞ ।
यज्ञ ।

याचना-(सं स्त्री) খোজা, যাচ্ঞা।
मांगना ।
[क्रि स] খোজা, প্ৰাৰ্থনা
কৰা।
मांगना। प्रार्थना करना।

याचक, याजी-(सं पुं) যজ্ঞ
কৰোঁতা, যজ্ঞ কৰ্ত্তা।
यज्ञ करनेवाला।

याजन—[सं पुं] যজ্ঞ কৰা।
यज्ञ करना।

যাতনা—[স স্ত্রী] যন্ত্রণা, যাতনা, বেদনা, পীড়া।
कष्ट । पीड़ा ।

যাতুধান—(সং পুং) ৰাক্ষস।
राक्षस ।

যাদ—[সং স্ত্রী] স্মৰণ, স্মৃতি।
स्मरण । स्मृति ।

যাদগাৰ—(সং স্ত্রী) স্মৃতিচিহ্ন।
स्मृति चिह्न ।

যাদদাস্ত—[সং স্ত্রী] মনত ৰখা শক্তি, মনত ৰাখিব লগীয়া কথা, স্মৰণীয়।
स्मरण शक्ति । स्मरण रखने योग्य बात ।

যাদৃশ—[বি] যেনে, যেনে ধৰণৰ।
जिस तरहका ।

যানী, যানে—(অব্য) অৰ্থাৎ, মানে।
अर्थात् ।

যাম—[সং পুং] এক প্ৰহৰ, সময়।
पहर । काल । समय ।

[সং স্ত্রী] ৰাতি।
रात ।

যামিনী—(সং স্ত্রী)ৰাত্ৰি, ৰাতি।
रात ।

যাযাবৰ— [সং পুং] যাযাবৰ, অঘৰী, থিতাপি দি ঘৰ-বাৰী নথকা এজাতি মানুহ। সন্ন্যাসী
वह जो एक जगह टिककर न रहता हो । खानाबदोश । संन्यासी ।

যাৰ—(সং পুং) বন্ধু, উপপতি।
मित्र । किसी स्त्रीका उपपति ।

যাৰী—[সং স্ত্রী] বন্ধুতা। স্ত্রী আৰু পুৰুষৰ অবৈধ সম্বন্ধ।
यार या मित्र होने का भाव । मित्रता । स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध ।

যাবৎ-[অব্য]যেতিয়ালৈ। যি পৰ্য্যন্ত
जबतक । जहाँ तक ।

(বি) সকলো।
सब ।

যাহি—[সৰ্ব] ইয়াকে।
इसको ।

যুক্তি-যুক্ত—[বি] যুক্তিযুক্ত, উচিত, সঙ্গত।
तर्क संगत ।

যুগ—(সং পুং) যুগল, এজোৰ, বা বছৰ কাল, বৰ দীঘল কাল, সময়, কালৰ এটা প্ৰধান আৰু ডাঙৰ ভাগ।

जोड़ा। बारह वर्षका काल। इतिहास का कोई दीर्घ काल-मान। जमाना। पुराणानुसार कालके चार विभाग।

युग्म (क)—[सं पुं] যুগল, যোৰ, যুটা।
जोड़ा। द्वन्द्व।

युत— (वि) সংলগ্ন, একত্ৰ কৰা, লগ লগোৱা।
मिला हुआ। युक्त।

युवा—[वि] যুৱক।
जवान।

यूँ—[अव्य] এনে, এনে ধৰণৰ।
यों। ऐसे।

यूथ, यूह—(सं पुं) সমূহ, সৈন্য দল।
समूह। सेना।

यूथप (ति)—[सं पुं] দলৰ নেতা, সেনাপতি।
दलका सरदार।

यूप—[सं पुं] যুপ, যজ্ঞৰ জন্তু বলি দিয়া কাঠ।
यज्ञका वह खंभा जिसमें बलि चढ़ाये जानेवाले पशु का गला बाँधा जाता है।

ये—[सर्व] এইবোৰ।
'यह' का बहु वचन।

येतो— (वि) ইমান।
इतना।

येन-केन प्रकारेण— (क्रि स)
যিকোনো প্ৰকাৰে, যেনে তেনে।
जैसे तैसे।

येहू—[अव्य] এইটোও, এইও।
यह भी।

यों—[अव्य] এনেদৰে।
इस प्रकार।

योंही—[अव्य] এনেয়ে।
बिना किसी कार्य या कारणके।

योग-क्षेम—[सं पुं] যোগ-ক্ষেম, শান্তি আৰু সুব্যৱস্থা, অলব্ধ বস্তুৰ লাভ আৰু লব্ধ বস্তুৰ ৰক্ষণ।
जीवन-निर्वाह। कुशल-मंगल। शान्ति और सुव्यवस्था।

योगीन्द्र— [सं पुं] মহাযোগী, যোগেন্দ্ৰ।
बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वर—(सं पुं) শ্ৰীকৃষ্ণ, শিব, মহাযোগী।

श्रीकृष्ण। शिव। बहुत बडा योगी।

योजक—(বি) যোজক। লগ লগোৱা। পৰিকল্পনা কৰোতা, দুখণ্ড বহল ঠাইক সংযোগ কৰা, ভূমিভাগ। मिलाने या जोड़नेवाला। योजना करने या बनानेवाला।

योजन— [सं पुं] যোগ, যোৰা লগোৱা কাৰ্য্য, কামত লগোৱা চাৰি ক্ৰোশ (৮ মাইল)
योग। मिलान। किसी काममें लगाना। दूरी की एक माप।

योजना—[सं स्त्री] ব্যৱহাৰ, পৰিকল্পনা, নিযুক্তি, আযোজন, ৰচনা।
प्रयोग। मिलान। रचना। परि-कल्पना।

योनि—(सं स्त्री) উৎপত্তি, স্থান, আকৰ, তিৰোতা মানুহৰ গুপ্ত অঙ্গ। শৰীৰ।
उत्पत्ति स्थान। स्त्रियों का ज- नेन्द्रिय। देह।

योषिता—[सं स्त्री] স্ত্ৰী, তিৰোতা
स्त्री। औरत।

यौ—(सर्व) এই।
यह।

यौतक [तुक]—(सं पुं) যৌতু- গ' ধন।
दहेज।

यौधेय—(सं पुं) যোদ্ধা, প্ৰাচী- কালৰ এটি যুদ্ধ পাৰ্গত জাতি যুধিষ্ঠিৰৰ পুতেক এজনৰ নাম
योद्धा। एक प्राचीन देश त- उनके निवासियों का नाम।

यौन—(वि) যোনি সম্বন্ধীয়, স্ত্ৰী পুৰুষৰ সহবাস সম্বন্ধীয়, যৌন
योनि सम्बन्धी।

यौवराज्य—[सं पुं] যুৱৰাজ পদ।
युवराज का भाव या पद।

र

र—বৰ্ণমালাৰ সাতাইশ সংখ্যাৰ আখৰ।
वर्णमाला का सत्ताइसवां व्यंजन।

रंक—[वि] দৰিদ্ৰ, কৃপণ, দুখীয়া, নিঃকিন।
दरिद्र। कन्जूस।

रंग—[सं पुं] ৰং—ধেমালি, নৃত্য-গীত আদি। নাচঘৰ, যুদ্ধক্ষেত্ৰ, ৰং, শোভা, প্ৰভাব, অৱস্থা, আনন্দ, অনুৰাগ, যৌবন।
नाचना-गाना। नृत्य या अभिनय का स्थान। रण-क्षेत्र। वर्ण। वह पदार्थ जिससे कोई चीज रंगी जाती है। युवावस्था। शोभा। प्रभाव। आनन्द उत्सव। युद्ध। मौज। हालत। अनुराग।

रंगत—(सं स्त्री) ৰং, বৰণ, অৱস্থা।
रंग। वर्ण। अवस्था।

रंगना—(क्रि स) ৰঙেৰে বোলোৱা, সাঁচত ঢলা, নিজৰ অনুকূল কৰা।
किसी चीज पर रंग चढ़ाना। किसी को अपने अनुकूल करना। (क्रि अ) কাৰো প্ৰতি আসক্ত হোৱা।
किसीपर आसक्त होना।

रंग-बिरंग—(वि) ৰঙ-বেৰঙৰ, বহুতো ৰঙৰ।
अनेक रंगोंका। अनेक प्रकारका।

रंग-भूमि, रंग शाला—(सं स्त्री) নাচঘৰ, নাট্যশালা, যুদ্ধক্ষেত্ৰ।
नाट्य शाला। रण क्षेत्र।

रंग-मंच—[सं पुं] ৰঙ্গমঞ্চ, নাট্য-শালা।
नाट्यशाला का वह स्थान जिस पर अभिनेता अभिनय करते हैं।

रंग-महल—[सं पुं] ৰংঘৰ, ভোগ-বিলাসৰ স্থান।
भोग विलास करने का स्थान।

रंग-रली, रंगरेली—(सं स्त्री) খেল-ধেমালি, আমোদ প্ৰমোদ।
आमोद प्रमोद।

रंग-राता—(वि) ভোগ বিলাসতে লাগি থকা, অনুৰক্ত।
भोग विलासमें लगा हुआ। अनु-राग पूर्ण।

रंगरूट—(सं पुं) ন-শিকাৰু, নতুনকৈ ভৰ্ত্তি হোৱা সৈন্য বা চিপাহী।
नया भर्ती होनेवाला सिपाही। नौसिखुआ।

रंगरेज—(सं पुं) কাপোৰত ৰং বোলোৱা ব্যৱসায়ী।
कपड़े रंगने का व्यवसाय करने वाला। (सं स्त्री रंगरेजिन)

रंगसाज—(सं पुं) আচবাব পত্ৰ ৰং দিয়া লোক, ৰং তৈয়াৰ কৰোঁতা।
चीजों पर रंग चढ़ानेवाला। रंग बनानेवाला।

रंगाई—[सं स्त्री] ৰোল দিয়া কাৰ্য্য বা ভাৱ অথবা ইয়াৰ বাবে দিয়া বানচ।
रंगने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

रंगा-रंग—(वि) বিবিধ ৰঙৰ, নানা প্ৰকাৰ।
अनेक रंगोंका। तरह तरहका।

रंगावट—(सं स्त्री)ৰোলোৱা কাৰ্য্য, ৰং লগোৱা কাৰ্য্য।
रंगने की क्रिया या भाव।

रंगीन—[वि] ৰোলোৱা, ৰঙ্গান, বিলাসপ্ৰিয়, আমোদী।
रंगा हुआ। विलास प्रिय। मजेदार।

रँगीला-(वि) ৰঙিয়াল, ধেমেলীয়া, সুন্দৰ।
रंगीन। रसिक। सुन्दर।

रंच (क)—(वि) অলপ।
थोड़ा।

रंज—[सं पुं] দুঃখ, শোক।
दुःख। खेद। शोक।

रंजक—(वि) আনন্দ দিয়া, ৰঞ্জক।
रंगनेवाला। प्रसन्न करनेवाला।

रंजन—(सं पुं) ৰং লগাই শোভিত কৰা কাৰ্য্য, আনন্দ বা সন্তোষ দিয়া কাৰ্য্য।
रंगनेकी क्रिया या भाव। चित्त प्रसन्न करने की क्रिया।
(वि) আনন্দ দিওঁতা।
मन प्रसन्न करनेवाला।

रंजित—(वि) ৰং বা বৰণৰ দ্বাৰা শোভিত, আনন্দিত, অনুৰক্ত।
रंगा हुआ। आनन्दित। अनुरक्त।

रंजिश— (स ं स्त्री) মনোমালিন্য, মতভেদ।
मनमुटाव ।

रंजीदा—[वि] দুঃখিত, অসন্তুষ্ট, দুখ-যুক্ত।
दु:खित । अप्रसन्न ।

रंडापा— (स ं पु ं) বেশ্যা অথবা বিধবা হোৱা অৱস্থা, বৈধব্য।
रॉंड़ या विधवा होने का भाव या अवस्था । विधवा-पन ।

रंडी-[सं स्त्री] বেশ্যা, বিধবা।
वेश्या । विधवा ।

रंडुआ (वा)-(सं पु ं) বিপত্নীক।
विपत्नीक ।

रंदना-[क्रि स] ৰেন্দাৰে কাঠ নিমজ কৰা।
रंदेसे छीलकर लकड़ी चिकनी और साफ करना ।

रंदा-(सं पु ं) ৰেন্দা, কাঠ নিমজ কৰা যন্ত্ৰ বিশেষ।
लकड़ी छील कर चिकनी और साफ करने का ओजार ।

रंधन-(स ं पु ं) ৰন্ধন, ৰন্ধা কাৰ্য্য।
रसोई बनाना या पकाना ।

रंध्र-(स ं पु ं) বিন্ধা, ফুটা, কাঁট।
छिद्र ।

रंभण, रंभन- (स ं पु ं) সঙ্গম। আসক্তি, হেম্বেলনি।
आलिंगन । रंभाना ।

रंभना-- (क्रि अ) হেম্বেলিয়া, জোৰেৰে শব্দ কৰা।
जोर का शब्द करना । (गायका) रंभाना ।

रंभाना·-[क्रि अ] গাইগৰুৰ মাত আদিৰ দৰে শব্দ কৰা, হেম্বেলিয়া।
गायका शब्द करना ।

रँहट, रहट--(सं ·पु ं) নাদৰ পৰা পানী তুলিবলৈ সজা যন্ত্ৰ বিশেষ।
कुएँसे पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र जिसमें काठ का एक बड़ा चक्कर होता है ।

रँहटा, रहटा--[स ं पु ं] য ঁতৰ।
सूत कातने का चरखा ।

रई--(स ं स्त्री) মথনী, ঘেঁটিনী।
मथानी ।
(वि स्त्री) অনুৰক্ত. যুক্ত, নিমজ্জিত হোৱা।
डूबी या पगी हुई । अनुरक्त । युक्त ।

रईस—(सं स्त्री) धनी।
अमीर। बड़ा आदमी।

रउरे—[सर्व] আপুনি।
आप।

रकबा—(सं स्त्री) ক্ষেত্ৰফল।
क्षेत्रफल।

रकम—[सं स्त्री] ধন-সম্পত্তি, অলংকাৰ, ধনৰ পৰিমাণ, প্ৰকাৰ বা বিধ, ৰকম।
धन सम्पत्ति। गहना। धन की राशि (अं—एकाउण्ट)। प्रकार।

रकाब, रिकाब—(सं स्त्री) ঘোঁৰাৰ জীনত ভৰি দিবলৈ বান্ধি দিয়া লোহাৰ যতন বিশেষ।
सवारीके घोड़ेकी काठी या जीनमें लटकनेवाला पावदान।

रकाबी—(सं स्त्री) তৰাহি প্লেট।
तश्तरी।

रक्त—[सं पुं] তেজ, ৰঙা ৰং, সিন্দুৰ, চন্দন, পদুম
खून। कमल। सिंदूर। लालरंग।
[वि] ৰঙীন, ৰঙা
रंगा हुआ।

रक्तिमा—[सं स्त्री] ৰক্তময়, লালিমা।
लाली। सुरखी।

रक्तोत्पल—[सं पुं] ৰঙা পদুম।
लाल कमल।

रक्ष—(सं पुं) ৰখীয়া, ৰাক্ষস।
रक्षक। रक्षा। राक्षस।

रक्षा—(सं स्त्री) ৰক্ষা কাৰ্য্য, ভূত-প্ৰেত নাইবা বেমাৰ আজাৰৰ পৰা ৰক্ষা পৰিবলৈ মন্ত্ৰপূত কৰি বান্ধি দিয়া সুতাৰে গঁথা জৰী। মন্ত্ৰ-পূত জাপ।
बचाव। वह सूत्र या यंत्र जो बालकों को भूत-प्रेत, रोग-नजर आदि की बाधासे बचने के लिये बाँधा जाता है।

रक्षा-बंधन—(सं पुं) ৰক্ষাবন্ধন। উত্তৰ প্ৰদেশৰ উৎসৱ বিশেষ।
राखी बन्धन।

रक्षिता—(स स्त्री) পালিতা, উপপত্নী।
रखेली।

रखना—(क्रि अ) ৰখা, গতি বন্ধ কৰা, বচোৱা, হানি-বিঘিনিৰ পৰা ৰক্ষা কৰা, সাৱধান, বন্ধকত দিয়া, নিযুক্ত কৰা, পালন কৰা
स्थित करना। ठहराना। धरना। रक्षा करना। नष्ट न होने देना।

सौंपना। बन्धक में देना। नियुक्त करना। पालना।

रखनी, रखैल, रखेली—(सं स्त्री) পালিতা, উপপত্নী।
उपपत्नी।

रखवाना, रखाना—[क्रि स] ৰখোৱা।
'रखना' का प्रेरणार्थक। रक्षा करना।

रखवार, रखवाला—(सं पुं) ৰখীয়া পহৰীয়া, পহৰাৱালা।
रक्षा या रखवाली करनेवाला। पहरेदार।

रखवाली—(सं स्त्री) সাৱধানে চোৱাচেলা কৰা অথবা ৰক্ষা কৰা কাৰ্য্য। সাৱধানত।
रक्षा या देख भाल करनेकी क्रिया या भाव। हिफाजत।

रखाई—(सं स्त्री) ৰখাৰ ক্ৰিয়া বা কাৰ্য্য বা তাৰ বাবে দিয়া মজুৰী
रक्षा करने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

रग—[स स्त्री] ৰগ, নাড়ী, সিৰ, ৰেদ।
शरीरमें की नस। पत्तोंमें दिखाई पड़नेवाली नसें। हठ, जिद।

रगड़—(सं स्त्री) ঘঁহা কাৰ্য্য।
रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगड़ना—(क्रि स) ঘঁহা, পিহা, বৰ পৰিশ্ৰমেৰে ঘটা, বিৰক্ত কৰা।
घिसना। पीसना। किसीसे बहुत परिश्रम लेना। तंग करना।
[क्रि अ] বৰ পৰিশ্ৰম কৰা।
बहुत मेहनत करना।

रगड़ा—[सं पुं] ঘঁহা কাৰ্য্য, বৰ পৰিশ্ৰম কৰি থকা, কাজিয়া।
रगड़ने की क्रिया या भाव। अत्यन्त परिश्रम। झगड़ा।

रग-रेशा—(सं पुं) নাড়ী। কাৰো বাৰ সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম কথা।
नस। किसी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात।

रगेदना—(क्रि स) খেদা।
खदेड़ना।

रघुकुल, रघुवंश—(सं पुं) ৰঘু বংশ, ৰজা ৰঘুৰ বংশ
राजा, रघुका वंश।

रघुनाथ, रघुराई, रघुराज, रघुवर—(सं पुं) শ্ৰীৰামচন্দ্ৰ
श्री रामचन्द्र ।

रचक—(सं पुं) ৰচক, ৰচনা কৰোঁতা, লেখক
रचना करने या बनानेवाला ।

रचना— (सं स्त्री) ৰচা, নিৰ্ম্মাণ কৰা, সাজ, সজাৰ কৌশল, ৰচনা।
रचने की क्रिया या भाव । निर्माण । बनाने का ढंग या कौशल । साहित्यिक कृति ।
(क्रि स)লিখা, কিতাপ আদি লিখা, সজোৱা, বোলোৱা।
लिखना । ग्रन्थ आदि लिखना । सजाना । रगना ।
(क्रि अ) অনুৰক্ত হোৱা, ঠিক, যোগ্য বা সুন্দৰ হোৱা।
अनुरक्त होना । ठीक, उपयुक्त या सुन्दर होना ।

रचनात्मक— [वि] ৰচনাত্মক, গঠনমূলক ।
जो किसी प्रकार की रचना या निर्माण से सम्बन्ध रखता हो और उसमें सहायक हो (अं—क्रिएटिव)। किसी देश या समाज की उन्नति और सम्पन्नता में सहायक होनेवाला । (अ—कन्स्ट्रक्टिव)

रचाना–(क्रि स) লিখোৱা, সজোৱা, কোনো উৎসৱ আদি পতা।
'रचना' का प्रेरणार्थक। अनुष्ठान करना या कराना । रंगना।
(क्रि अ) হাত, ভৰিত হালধি বা জেতুকা নাইবা আলতা লগোৱা ।
हाथ, पैरों में मेंहदी, महावर आदि लगाना ।

रच्छा—[सं स्त्री] ৰক্ষা ।
रक्षा ।

रज—(सं पुं) তিৰোতাৰ মাহেকীয়া প্ৰাব, ফুলৰ পৰাগ, ৰজোগুণ ।
स्त्रियों की ऋतु । फूलोंका पराग। रजोगुण ।
(सं स्त्री) ধূলি ।
धूल ।

रजक—[सं पुं] ধোবা ।
धोबी ।

रजत—[सं स्त्री] ৰূপ।
चाँदी ।
(वि) বগা, ৰঙা।
सफेद । लाल।

रजत-पट—(सं पुं) কপালী পৰ্দ্দা চিনেমাৰ বাবে আঁৰি দিয়া পৰ্দ্দা। চিনেমা।
वह परदा जिसपर सिनेमा के चित्र दिखाये जाते है। सिनेमा।

रजनी—[सं स्त्री] ৰাতি।
रात।

रजनी-चर— [सं पुं] নিশাচৰ, ৰাক্ষস।
राक्षस।

रजनी-मुख—(सं पुं) সন্ধ্যা-বেলা।
संध्या का समय।

रजवाड़ा—(सं पुं) ৰাজ্য, ৰজা।
रियासत। राजा।

रजस्वला— (वि स्त्री) ৰজস্বলা, মাহেকীয়া স্রাব হোৱা, ঋতুমতী বা চুৱা হোৱা তিৰোতা।
वह स्त्री जिसका रज निकल रहा हो। ऋतुमती।

रजा—(सं स्त्री) ইচ্ছা, ছুটী, অনুমতি, আদেশ, স্বীকৃতি।
मरजी। इच्छा। छुट्टी। अनुमति। आज्ञा। स्वीकृति।

रजाइ-[सं स्त्री] আদেশ, অনুমতি।
आज्ञा। रजा।

रजाई—[सं स्त्री] লেপ, নিহালী, আদেশ।
ओढने का लिहाफ। आज्ञा।

रजामंद— (वि) সম্মত।
सहमत।

रजायसु—(सं स्त्री) ৰজাৰ আদেশ।
राजा की आज्ञा।

रजु, रज्जु—(सं स्त्री) জৰী।
रस्सी।

रजो दर्शन—[सं पुं] তিৰোতাৰ মাহেকীয়া স্রাব হোৱা কাৰ্য্য।
रजस्वला होना।

रटंत—[सं स्त्री]মুখস্থ কৰা কাৰ্য্য।
रटनेकी क्रिया या भाव।
(वि) মুখস্থ।
रटा हुआ।

रट(न)—(सं स्त्री) মুখস্থ কৰিবলৈ বাৰে বাৰে আওৰোৱা।
कोई शब्द या बात बार बार कहने की क्रिया या भाव।

रटना (क्रि स)বাৰে বাৰে কোৱা, মুখস্থ কৰিবলৈ বাৰে বাৰে পঢ়া।
कोई बात या शब्द बार बार कहना। कंठस्थ करने के लिये बार बार कहना या पढ़ना।

रण, रन—(सं पुं) युँज, जङ्गल ।
युद्ध । जंगल ।

रणक्षेत्र रणांगण—(सं पुं) युद्ध-क्षेत्र ।
लड़ाई का मैदान ।

रण-धीर—[वि] डाঙৰ যোদ্ধা বা বীব ।
युद्धमें धैर्यपूर्वक लड़नेवाला । बहुत बडा योद्धा या वीर ।

रणन—(सं पुं) বণ ৰণণি, শব্দ হোৱা ।
शब्द या गुंजार करना । बजना।

रणित, रनित—(वि) ধ্বনিত হোৱা ।
बजता हुआ ।

रत—[सं पुं] সম্ভোগ, প্ৰেমত পৰা, লিঙ্গ, যোনি ।
मैथुन । प्रीति ।
[वि] অনুৰক্ত, আসক্ত, लीन । अनुरक्त । आसक्त । (कार्य आदिमें) लगा हुआ ।

रतजगा--[सं पुं] উজাগৰ ।
रात भर जागने की क्रिया या भाव ।

रतनार(ा)--(वि) ৰঙীণ, অলপ ৰঙা ৰঙৰ ।
कुछ लाल । सुरखी लिये हुए ।

रति—(सं स्त्री) ৰতি, কামদেৱৰ ভাৰ্য্যা, আসক্তি, হেপাহ, শৃঙ্গাৰ, সম্ভোগ । শোভা
कामदेव की पत्नी । मैथुन । प्रीति । शोभा ।

रतिनाह, रतिपति, रतिराई, रतिराज-[स पुं] কামদেৱ ।
कामदेव ।

रतौंधी— (सं स्त्री) কুকুৰী-কণা, (গধূলি বা ৰাতি নেদেখা মানুহ)
एक बीमारी जिसमें रातके समय दिखाई नही पड़ता ।

रतौंहा—(वि) কাৰো প্ৰতি আসক্ত অনুৰক্ত হোৱাৰ হেপাহ থকা লোক । প্ৰেমী হ'বৰ হেপাহ থকা লোক ।
किसी की ओर रत या अनुरक्त होने का प्रवृत्ति रखनेवाला ।

रत्तल—(सं स्त्री) ওজন বিশেষ, প্ৰায় আধা সেৰ ওজন ।
आध सेरके लगभगका एक तोल ।

रत्ती—(सं स्त्री) এক প্ৰকাৰ ছভাগৰ জোখ, এটা লাটুমনিৰ জোখ, সম্ভোগ, অনুৰাগ ।
आठ चावल का एक तोला । शोभा । संभोग । अनुराग ।

रत्थी—(सं स्त्री) চাঙী, মৰা শ কঢ়িয়াবলৈ কৰা বাঁহৰ চাং।
अरथी।

रत्न-गर्भा—[सं स्त्री] ৰত্নগৰ্ভা, পৃথিবী।
पृथ्वी।
(वि स्त्री) যাৰ বুকুত ৰত্নৰ ভঁৰাল আছে।
जिसके गर्भमें अनेकों रत्न भरे हों।

रत्नाकर—(सं पुं) সাগৰ, খনি, समुद्र। खान।

रथी—(सं पुं) ৰথত উঠি যুদ্ধ কৰোঁতা নায়ক।
रथपर चढ़कर चलनेवाला या लड़नेवाला। बहुत बड़ा योद्धा।
(वि) ৰথত উঠি থকা।
रथपर चढ़ा हुआ।

रद—[सं पुं] দাঁত।
दांत।
(वि) ৰহিত কৰা, অগ্ৰাহ্য কৰা, পৰিবৰ্ত্তন কৰা।
रद्द। परिवर्तित।

रदच्छद, रद-छद—[सं पुं] ওঁঠ, সম্ভোগৰ সময়ত দাঁতেৰে কামোৰা চিন আদি।
होंठ। संयोग के समय अंगोंपर दांतों के गड़ने का चिह्न।

रदन—[सं पुं] দাঁত।
दांत।

रद्द—(वि) পৰিবৰ্ত্তন কৰা, ৰহিত কৰা, অকামিলা অথবা অজোখা-বিজোখা হোৱা।
बदला हुआ। परिवर्तित। खराब या निकम्मा ठहराया हुआ।
[सं स्त्री] বমি।
वमन। उल्टी।

रद्दी—(वि) অকামিলা, কোনো কামত নহা।
जो किसी काममें न आ सके। बेकार।
[सं स्त्री] পুৰণি আৰু কামত নলগা কাগজ।
पुराने और व्यर्थके कागज।

रनना—[क्रि अ] বাজি উঠা, শব্দ হোৱা।
झनकार होना। बजना।

रन-बंका (बाँकुरा)—(सं पुं) যোদ্ধা, যুঁজাৰু, বীৰ।
योद्धा। वीर।

रन-बास—[सं पुं] অন্তঃপুৰ।
अन्तः पुर।

ৰপট—[সং স্ত্ৰী] পিছ্লা; দৌৰ, পুলিচ থানাত দিয়া এজাহাৰ আদি।
फिसलना। दौड़। थानेमें दी जाने वाली किसी घटना की सूचना। (रिपोर्ट)

ৰপটনা—(ক্রি অ) পিছল খোৱা, বেগাই যোৱা।
फिसलना। तेजीसे चलना।

ৰফা— [বি] দমিত, শান্ত, দূৰ কৰা, নিষ্পত্তি, কোনো কাৰ্য্য বা মোকৰ্দ্দমাৰ শেষ।
दबा हुआ या शांत। मीमांसा या दूर किया हुआ।

ৰফু—(সং পুং) ফটা বা চিৰা কাপোৰৰ ফুটা বা বিন্ধা বোৱাৰ দৰে চিলাই কৰি ঠিক কৰা, এনেধৰণে বন্ধ কৰা ফুটা বা বিন্ধা।
फटे या कटे हुए कपड़ेके छेदमें बुनावट की तरह तागे भरकर उसे बन्द करना। इस प्रकार बन्द किया हुआ छेद।

ৰফু-চক্কৰ—(বি) পলাই যোৱা, নিৰুদ্দেশ, অন্তৰ্দ্ধান।
भाग जाना। गायब। अन्तर्द्धान।

ৰব ৰব্ব—(সং পুং), ঈশ্বৰ।
ईश्वर।

ৰবড়ী—[সং স্ত্ৰী] চেনি মিহলাই গাখীৰৰ লগত পগাই তৈয়াৰ কৰা ক্ষীৰ জাতীয় বস্তু।
बसौंधी। दूधको आगपर गाढ़ा कर बनायी जानेवाली स्वादिष्ट वस्तु।

ৰবাব—(সং পুং) বাদ্য বিশেষ, ৰুদ্ৰবীণা।
सारंगी की तरहका एक प्रकार का बाजा।

ৰবাবী—(বি) ৰবাব বাদ্য বজাওঁতা।
रबाब बजानेवाला।

ৰবী—(সং স্ত্ৰী) বসন্ত কাল, বসন্ত কালত হোৱা খেতিবাতিৰ ফচল।
वसन्त ऋतु। वसन्त ऋतुमें काटी जानेवाली फसल।

ৰব্ত—[সং পুং] অভ্যাস, মিলা-প্ৰীতি।
अभ्यास। मेल जोल।

ৰভস—[সং পুং] বেগ, প্ৰসন্নতা, উৎসাহ, দুখ।
वेग। प्रसन्नता। उमंग। खेद।

ৰমকনা—(ক্রি অ) ঝুলনিত ছাঁনা, গা হেলাই খোজ কঢ়া।
झूलेपर बैठकर झूलना। झूमते हुए चलना।

ৰমণ, ৰমন—[সং পুং] বিলাস সম্ভো। ফুৰা, স্বামী
विलास। मैथुन। विचरण। पति
[বি] সুন্দৰ, প্ৰিয়, বিলাস অথবা ক্রীডাৰ নায়ক, সম্ভোগ কৰোঁতা অথবা সুখ ভোগ কৰোঁতা।
सुन्दर। प्रिय। विलास का क्रीड़ा करनेवाला। किसीमें रमने या किसीका सुख भोगनेवाला।

ৰমণী, ৰমনী—(সং স্ত্ৰী) স্ত্ৰী, যুৱতী। তিৰোতা।
स्त्री। युवती।

ৰমণীকা, ৰমণীয়—(বি) সুন্দৰ, মনোহৰ।
सुन्दर। मनोहर।

ৰমতা—[বি] প্ৰায়েই ঘুৰি-ফুৰা লোক।
जो बराबर घूमता-फिरता हो।

ৰমনা—(ক্রি অ) ৰমণ কৰা, ভোগ-বিলাসৰ বাবে কোনো ঠাইত থকা বা বাস কৰা, আনন্দ কৰা, ব্যাপ্ত হোৱা, আসক্ত, লীন হোৱা, চলা-ফিৰা কৰা।
भोग विलासके लिये कहीं जाकर ठहरना या रहना। आनन्द करना। व्याप्त होना। अनुरक्त या लीन होना। घूमना-फिरना। चल देना।
(সং পুং)চৰণিয়া পথাৰ, বাগিচা, ৰমণীয় স্থান।
वह स्थान या घेरा जहाँ पाले हुए पशु चरने के लिये छोड़ दिये जाते है। बाग। कोई सुन्दर और रमणीक स्थान।

ৰমল—(সং পুং) জ্যোতিষৰ ভবিষ্য কব পৰা বিদ্যা বিশেষ।
पासे फेंककर शुभाशुभ फल या भविष्य बनानेवाली विद्या।

ৰমা—[সং স্ত্ৰী] লক্ষ্মী।
लक्ष्मी।

ৰমাকান্ত, ৰমণ, ৰমাপতি, ৰম—[সং পুং]—বিষ্ণু।
विष्णु।

ৰমানা—(ক্রি স) আসক্ত অথবা লীন হোৱা।
अनुरक्त या लीन करना।

रमित—[वि] সুগন্ধ, যাৰ মন কাৰো প্ৰতি আসক্ত হৈছে ।
जिसका मन किसीमें रमा हो ।

रमैनी–[सं स्त्री] কবীৰ দাসৰ পদাৱলীৰ বিশিষ্ট অংশৰ সংগ্ৰহ ।
दोहे चौपाइयों में कहे हुए कबीर दास के कुछ विशिष्ट वचन या उनका संग्रह ।

रम्य—[वि] ৰমণীয়, সুন্দৰ ।
मनोहर । रमणीय ।

रयन, रैन—[सं स्त्री] ৰাতি ।
रात ।

रय्यत—(सं स्त्री) প্ৰজা, ৰায়ত ।
प्रजा ।

रलना—(क्रि अ) লগ হোৱা, মিল হোৱা, পূৰ্ণ বা যুক্ত হোৱা ।
मिलना । पूर्ण होना । युक्त होना (क्रि स)–रलाना ।

रलिका, रली—(सं स्त्री) বিহাৰ, আনন্দ ।
बिहार । आनन्द ।

रव–[सं पुं] শব্দ, গুঞ্জন, ধ্বনি, গোলমাল, সূৰ্য্য ।
गुंजार । नाद । आवाज । शोर । सूर्य ।

रवा—[सं पुं] সৰু টুকুৰা, কণ, চুজি ।
बहुत छोटा । टुकड़ा । कण । सूजी ।
[वि] উচিত, ঠিক, প্ৰচলিত ।
उचित । प्रचलित ।

रवाज—[स स्त्री] প্ৰথা, নিয়ম, ৰীতি ।
प्रथा । परिपाटी ।

रवानगी—(सं स्त्री) প্ৰস্থান ।
प्रस्थान ।

रवाना—[वि] প্ৰহিত, যোৱা, পঠোৱা ।
जो कही से किसी जगहके लिये चल पड़ा हो । भेजा हुआ ।

रवानी—[सं स्त्री] গতি, নিৰ্ব্বাধ গতি ।
गति । ऐसी गति जिसमें बाधा न हो ।

रविश—(सं स्त्री) ধৰণ, প্ৰকাৰ, ফুলনিৰ মাজৰ সৰু সৰু বাট ।
चाल । तरीका । बागकी क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग ।

রবৈয়া—(স ं पु ं) চাল-চলন, ধৰণ ।
चालचलन । तरीका ।

রশক—(सं पु) ঈৰ্ষা. (ঈৰ্ষ্যা) খিয়াল ।
ईर्ष्या ।

রশিম—(स ं पु) কিৰণ, ৰশ্মি, ঘোঁৰাৰ লেকাম বা লেগাম ।
किरण । घोड़े की लगाम ।

রস—[स ं पु] আস্বাদ, সোৱাদ, তিতা-মিঠা আদি গুণ, হৰ্ষ বিষাদ আদি ভাৱ উৎপন্ন কৰিব পৰা কাব্য বা নাটকৰ গুণ, ফুল আদিৰ জোল, কোনো বস্তু চেপি উলিওৱা জোল, চৰ্ব্বত, প্ৰেম, ৰুচি, উৎসাহ ।
वनस्पतियों या उनके फूल पत्तोंमें रहनेवाला वह तरल पदार्थ जो दबाने, निचोडने आदि पर निकलता या निकल सकता है । निर्यास । शरबत । तत्व । खाने पीने की चीज मुँहमें पड़ने पर उससे जीभ को होनेवाला अनु-भव या स्वाद । काव्य का वह तत्व जिससे आनन्द की अनुभूति होती है । प्रेम । रुचि । उमंग ।

রসকেলি—[सं स्त्री] বিহাৰ, ৰং ধেমালীৰে ভ্ৰমণ কৰা, ক্ৰীড়া, হাঁহি-তামছা ।
बिहार । क्रीडा । दिल्लगी ।

রসজ্ঞ—(वि) ৰসজ্ঞ, ৰসগ্ৰাহী, কথা বা ৰচনাৰ সোৱাদ বুজা, কবিতা আদিৰ ৰস বা সৌন্দৰ্য্য উপ-লব্ধি কৰিব পৰা ।
रसको जाननेवाला । काव्य और साहित्य का मर्म और गुण सम-झनेवाला ।

রসদ—(वि) ৰস বা আনন্দ দিওঁতা, সোৱাদ লগা ।
रस या आनन्द देनेवाला । स्वादिष्ट ।
(सं स्त्री) ৰচদ । খাদ্য-বস্তু ।
कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो । भोज्य-वस्तु ।

রসনা—[सं स्त्री] জিভা, জিভাই পোৱা সোৱাদ, জৰী, লেগাম ।
जीभ । जीभसे मिलनेवाला स्वाद । रस्सी । लगाम ।
(क्रि अ) লাহে লাহে বৈ যোৱা বা টোপ টোপকৈ পৰা, কোনো বস্তু গলি টপটপকৈ পৰা, তন্ময় হোৱা, প্ৰেমাসক্ত হোৱা ।

धीरे धीरे बहना या टपकना।
किसी पदार्थका गीला होकर जल या रस छोड़ना या टपकाना, तन्मय या मग्न होना। स्वाद लेना। प्रेमासक्त होना।

रसम, रस्म—[सं स्त्री] ৰীতি, পুৰণি ৰীতি-নীতি, মিলাপ্ৰীতি।
पुरानी प्रथा। परिपाटी। मेल जोल या आपसदारीका सम्बन्ध।

रसरा—[सं पुं] ডাঙৰ জৰী।
मोटी ओर बड़ी रस्सी। (सं स्त्री –रसरी)

रसा—[सं स्त्री] পৃথিৱী, জিভা।
पृथ्वी। जीभ।
[सं पुं] আঞ্জাৰ জোল আদি।
पकी हुई तरकारी में का पानी वाला अंश। झोल। शोरबा।

रसाई—[सं स्त्री] দাখিল হোৱা, উপস্থিতি।
किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।

रसाना—(क्रि स) ৰসপূৰ্ণ, ৰসযুক্ত, আনন্দিত কৰা।
रससे युक्त या रस पूर्ण करना। प्रसन्न करना।
(क्रि अ) ৰসপূৰ্ণ হোৱা, আনন্দ উপভোগ কৰা।
रसयुक्त होना। आनन्द लूटना।

रसाभास—(सं पुं) সাহিত্য ৰসৰ পূৰ্ণ নিষ্পত্তি নহৈ আভাষ মাত্ৰ হোৱা—কাব্যৰ দোষ বিশেষ।
साहित्यमें रसके परिपाक या पूर्ण रूपके अभावमें दिखाई पड़ने वाला वक्त। आभास या छाया मात्र। ऐसी उक्ति या कथन जिसमें उक्त प्रकारके दोष हों।

रसाल—(सं पुं) কুঁহিয়াৰ, আম, ৰাজহ।
गन्ना। आम। राजस्व।
[वि] ৰসাল, ৰস থকা, মধুৰ।
रससे युक्त। रसिक। रसीला। मधुर।

रसाला, रिसाला— (सं पुं) অশ্বৰোহী সৈন্য, পষেকীয়া অথবা মাহেকীয়া আলোচনী।
घुड़सवार सेना। पाक्षिक या मासिक पत्र।

रसिया— [सं पुं] ৰসিক, ব্ৰজ অঞ্চলত গোৱা লোকগীত বিশেষ।
रसिक। एक प्रकारका गीत जो फागुनमें ब्रजमें गाया जाता है।

रसीद-(सं स्त्री)প্ৰাপ্তি পত্ৰ, ৰচিত, ৰচিদ ।
किसी चीजकी प्राप्ति या पहुँच । प्राप्ति का पत्र ।

रसीला— (वि) ৰসপূৰ্ণ, ৰসাল, সোৱাদ লগা, ৰসিক, সুন্দৰ ।
जिसमें रस हो । स्वादिष्ट । रसिक । सुन्दर ।

रसूल—(सं पुं) পয়গম্বৰ, ঈশ্বৰৰ দুত ।
ईश्वर का दूत । पैगम्बर ।

रसोइया, रसोईदार—(सं पुं) ৰান্ধনি ।
रसोई पकानेवाला आदमी ।

रसोई—(सं स्त्री) ৰন্ধা বস্তু, ৰান্ধনি শাল
पकायी हुई खाने की चीजें । भोजन बनाने की जगह ।

रस्मी—[वि] ৰীতি-নীতি সম্পৰ্কীয়, যি নিয়মানুসৰি হৈছে ।
रस्म या प्रथासे सम्बन्ध रखने वाला । जो नियमित रूपसे अथवा मान्य रीतिके अनुसार हो ।

रस्सा—(सं पुं) মোটা জৰী ।
बहुत मोटी रस्सी । (सं स्त्री-रस्सी

रहँचटा, रहचटा-[सं पुं] লালসা, নিচা ।
लालसा । चस्का ।

रहट,रहठ—(सं पुं) পথাৰত পানী সিচিবলৈ বলদে টনা যতন বিশেষ
खेतमें बैलोंकी सहायता से सिंचाई का एक यंत्र ।

रहन—[सं स्त्री]আচাৰ ব্যৱহাৰ । নিষ্ঠা । থকা কাৰ্য্য বা ভাব ।
रहने की अवस्था, क्रिया या भाव । लगन । आचार-व्यवहार ।

रहन-सहन— (सं स्त्री) থকা মেলাৰ ৰীতি, চাল চলন ।
जीवन बिताने और काम करने का ढंग ।

रहना—(क्रि स) ৰোৱা, বাস কৰা, থকা, সময় কটোৱা, [illegible]কৰি কৰা, জীয়াই থকা, বাকী থকা, বৈ যোৱা ।
ठहरना । थमना । निवास करना । विद्यमान होना । समय बिताना। नौकरी करना । जीवित रहना । बाकी बचाना । छूट जाना ।

ৰহনি—(সং স্ত্রী) প্রীতি, মৰম।
रहन । प्रीति ।

ৰহম—(সং পুং) করুণা, মৰম, দয়া, গর্ভাশয় ।
करुणा । दया । कृपा । गर्भाशय ।

ৰহম-দিল—[বি] দয়ালু, মৰমিয়াল ।
दयालु ।

ৰহমান--[সং পুং] ঈশ্বৰ ।
दयालु ईश्वर ।

ৰহস, ৰহসি=(সং পুং) ৰহস্য, গোপনীয় ৰহস্য, ক্রীড়া, আনন্দ, গোপনীয় স্থান, ৰতি,সাগৰ, স্বর্গ
रहस्य । गुप्त भेद । क्रीडा । आनन्द । गुप्त या एकान्त स्थान । रति । समुद्र । स्वर्ग ।

ৰহস্যবাদ—[সং পুং] মানুহে ঈশ্বৰৰ লগত প্রত্যক্ষ ৰূপে সম্বন্ধ স্থাপন কৰিবলৈ কৰা প্রচেষ্টাৰ মতি বা বৃত্তি, হিন্দী কাব্য সাহিত্যৰ প্রবৃত্তি বিশেষ ।
वह वृत्ति जिसमें मनुष्य प्रत्यक्ष रूपसे ईश्वरसे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करता है। (अं– मिस्टिसिज्म)

ৰহস্যবাদী—(স পুং) ৰহস্যবাদ সিদ্ধান্তৰ অনুসৰণ কাৰী ।
वह जो रहस्यवादके सिद्धान्तों का अनुयायी हो ।
[বি] ৰহস্যবাদ সম্বন্ধীয় ।
रहस्यवाद सम्बन्धी । रहस्य-वादका ।

ৰহাই—[সং স্ত্রী] থকা, সুখ, আৰাম ।
रहन । सुख । आराम ।

ৰহীম --(বি) কৃপালু, দয়ালু ।
कृपालु।
(সং পুং) ঈশ্বৰৰ নাম বিশেষ।
ईश्वर का एक नाम।

ৰাঁক, ৰাঁকা—(বি) দুখীয়া, নিংকিন ।
रंक । दरिद्र । बहुत ही दीन ।

ৰাঁগা—[সং পুং] বগী তাম । সীহৰ নিচিনা কোমল কিন্তু তাতকৈ বগা ধাতু, ৰাং ।
सीसेके रंगकी एक प्रसिद्ध मुला-यम धातु ।

ৰাঁজনা—(ক্রি স) ৰঙোৱা, বোলোৱা, আনন্দিত কৰা, চকুত কাজল লগোৱা, ফুটা বাচন আদিৰ জালি মৰা ।

रंजित करना। टीका लगाना। आँखमें काजल लगाना।

राँड़—(स स्त्री) বিধবা,বেশ্যা।
विधवा। वेश्या।

राँधना—(क्रि स) ৰন্ধা, আহাৰ সিজোৱা।
भोजन पकाना।

राआ, राइ--[सं पुं] ৰজা, সৰু ৰজা।
राजा। छोटा राजा।
[वि] সকলোতকৈ ডাঙৰ, উত্তম।
सबसे बढ़कर। उत्तम।

राई—(सं स्त्री) লাই-শাক, কম পৰিমাণ।
एक प्रकार की छोटी मरसों। बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

राउर--[सं पुं] অন্তেষপুৰ।
रनिवास।
[वि] আপোনাৰ।
श्रीमान का। आप का।

राका—(सं स्त्री) পূৰ্ণিমাৰ ৰাতি।
पूर्णिमा की रात।

राकेश—[सं पुं] চন্দ্ৰমা।
चन्द्रमा।

राख—(सं स्त्री) ভস্ম, ছাই।
भस्म।

राखी—[सं स्त्री] 'ৰক্ষা বন্ধন' উৎসৱৰ সময়ত হাতত পিন্ধোৱা জাপ।
रक्षा बंधनके समय कलाई पर बाँधने का डोरा।

रागना—[क्रि अ] অনুৰক্ত বা আসক্ত হোৱা, নিমগ্ন হোৱা।
अनुरक्त होना। रंगा जाना। निमग्न होना।
(क्रि स) গীত গোৱা
गीत गाना।

रागी—(सं पुं) অনুৰাগী, গায়ক।
अनुरागी। गवैया।
[वि] বোলোৱা, ৰঙা 'বিষয় বাসনাত লিপ্ত।
रंगा हुआ। लाल। विषय वासना में लिप्त।

राछ—[सं स्त्री] মিস্ত্ৰীৰ যতন বিশেষ, তাতশালৰ ৰ'াচ, সমদল।
कारीगरों का औजार। करघेमें का वह उपकरण जिससे तानेके तागे ऊपर नीचे होते रहते हैं। जुलूस।

राज—(सं पुं) ৰাজ্য, শাসন, প্ৰভুত্ব, শাসনৰ সময়, জমিদাৰী সম্পত্তি, ৰহস্য।

राज्य। शासन। प्रभुत्व। राज्य या शासन का काल। बड़ी जमीदारी और भू सम्पत्ति। रहस्य।

[वि] বৰ আদৰৰ, আদৰণীয়।

परम प्रिय और आदरणीय।

राजकीय—(वि) চৰকাৰী, ৰাজ্যৰ লগত বা চৰকাৰৰ লগত সম্বন্ধ থকা।

राजा या राज्य से सम्बन्ध रखनेवाला।

राजगद्दी—(सं स्त्री) ৰাজসিংহাসন।

राज सिंहासन। राज्याभिषेक।

राजगीर—[सं पुं] ঘৰ সজোৱা মিস্ত্ৰী।

मकान बनानेवाला कारीगर।

राजना—[क्रि अ] থকা, অলংকৃত হোৱা।

विद्यमान होना। शोभित होना।

राजन्य—(सं पुं) ক্ষত্ৰিয়, ৰজা।

क्षत्रिय। राजा।

राज प्रासाद—[सं पुं] ৰাজমহল।

राज महल।

राज महिषी—(सं स्त्री) পাটমাদৈ।

पटरानी।

राजस—(वि) ৰজো গুণ সম্পন্ন, ৰাজসিক গুণত গুণী।

रजो गुणसे उत्पन्न या युक्त। रजोगुणी।

(सं पुं) ৰাজসিক গুণ, খং, ৰাজপদ, বা সিংহাসন, ৰাজ্যাধিকাৰ।

रजोगुण। क्रोध। राजाका पद या सिंहासन। राज्याधिकार।

राजसूय—(सं पुं) ৰাজসূয়, শ্ৰেষ্ঠ ৰজা বুলি প্ৰতিপন্ন কৰিবলৈ কৰা যজ্ঞ বিশেষ।

एक यज्ञ जो सम्राट पदके अधिकारी राजा करते थे।

राजस्व—(सं पुं) ৰাজহ, খাজনা।

कर, शुल्क आदिके रूपमें राजा या राज्य को होनेवाली आय। (रेविन्यू)

राजाज्ञा—[सं स्त्री] ৰজাৰ আদেশ।

राजा या राजा की आज्ञा।

राजि—[सं स्त्री] শাৰী, শ্ৰেণী, ৰেখা, লাই।

पंक्ति। श्रेणी। लकीर। राई।

राजीव—(सं पुं) পদুম।
कमल।

राज्याभिषेक— (सं पुं) ৰজাক ৰাজ্যভাৰ দিয়া সম্পৰ্কে কৰা উৎসৱ কৃত্য।
किसी राजाके राजगद्दी पर बैठने के समय होनेवाला औपचारिक कृत्य या उत्सव।

राज्यारोहण—(सं पुं) ৰজা পোণ-প্ৰথমবাৰৰ বাবে সিংহাসনত বহা।
किसी राजाका पहले पहल राज-सिंहासन पर बैठकर राज्य का अधिकार प्राप्त करना।

राता—[वि] ৰঙা ৰঙৰ, বোলোৱা, কাৰো প্ৰেমত অনুৰক্ত, ব্যস্ত, ৰত, নিযুক্ত।
लाल रंगका। रंगा हुआ। किसी के प्रेममें अनुरक्त। किसी काम में लगा हुआ। रत।

राधन— [सं पुं] প্ৰসন্ন আৰু সন্তুষ্ট কৰা, আৰাধনা বা প্ৰাৰ্থনা কৰা।
प्रसन्न और सन्तुष्ट करना। आराधना करना।

रान—[सं स्त्री] কৰঙণ, উৰু।
जंघा।

राब—[सं स्त्री] কুঁহিয়াৰৰ গুৰ।
पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राम-दूत-(सं पुं) হনুমান।
हनुमानजी।

राम-बाण—[वि] অব্যৰ্থ, অমোঘ।
अचूक। अमोघ। तुरन्त लाभ करनेवाला (औषध)

राम-रस--(सं पुं) নিমখ।
नमक।

रामा—[सं स्त्री] সুন্দৰী তিৰোতা, নদী, লক্ষ্মী, সীতা, ৰাধা, স্ত্ৰী।
सुन्दर स्त्री। नदी। लक्ष्मी। सीता। राधा। पत्नी।

राय—(सं पुं) ৰজা, চৰ্দ্দাৰ, ৰাজ্য, চাৰণ সকলৰ উপাধি বিশেষ।
राजा। सरदार। राज्य। भाटों की उपाधि।
[वि] ডাঙৰ, ভাল।
बड़ा। बढ़िया।
[सं स्त्री] সন্মতি, পৰামৰ্শ।
सम्मति। सलाह।

रार—[सं स्त्री] কাজিয়া, বিবাদ।
झगडा। विवाद।

রারী—(বি) কাজিয়া কৰোঁতা।
झगडा या विवाद करनेवाला।

[सं स्त्री] কাজিয়া।
रार (झगड़ा)

রাল— (सं स्त्री) বৃক্ষ বিশেষ।
ধুনাৰ ৰস ওলোৱা গছ। লালটিণ
एक प्रकारका वृक्ष। इस वृक्षका निर्यास जो अपने सुगंधित धुँए के लिये जलाया जाता है।
धूना। लार।

রাবটী—[सं स्त्री] সৰু তামী ছুৰা, তম্বু।
छोटा तंबू। छोटा घर। बारह-दरी।

রাবত—(सं पुं) সৰু ৰজা, বীৰ, চৰ্দ্দাৰ।
छोटा राजा। वीर। सरदार।

রাবৰ (।), **রাবগো**—(सर्व)
আপোনাৰ।
आपका।

রাবল— [सं पुं] অন্তঃপুৰ, ৰাজপুতনাত প্ৰচলিত ৰজাৰ উপাধি।
रनिवास। राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि।

রাবলী—[सं स्त्री] অন্তঃপুৰ।
अंतःपुर।

রাশি—[सं स्त्री] ৰাশি, সমূহ, দম, উত্তৰাধিকাৰ, ৰাশি চক্র (জ্যোতিষ শাস্ত্রমতে)।
ढेर। उत्तराधिकार। क्रान्ति वृत्त में पडनेवाले तारोके बारह समूह।

রাষ্ট্র— (सं पुं) ৰাজ্য, দেশ, এক শাসনৰ অন্তৰ্গত দেশ, ৰাষ্ট্ৰ।
राज्य। देश। एक राज्यमें बसनेवाला जन समूह।

রাষ্ট্রিয় রাষ্ট্রীয়— (वि) জাতীয়, সমস্ত ৰাষ্ট্ৰ দেশ, সম্পৰ্কীয়।
राष्ट्र सम्बन्धी। राष्ट्रका।

রাস—(सं स्त्री ৰাস, কৃষ্ণই গোপী সকলৰ সৈতে কৰা আদি ৰসৰ ধেমালী, ঘোঁৰাৰ লেগাম, ধান আদিৰ দম, পোষ্য পুত্ৰ লোৱা কাৰ্য্য, সূত, পশুৰ দল।
श्रीकृष्ण की रासलीला या उसका अभिनय घोडे की लगाम। बाग डोर। खलिहानमें लगाया जाने वाला अन्नका ढेर। जोड़। गोद या दत्तक लेनेकी क्रिया या भाव।

सूद । चौपायों का झुण्ड ।
(त्रि) অনুকূল, উচিত ।
अनुकूल । वाजिब ।

रासक – [सं पुं] হাস্য ৰস প্ৰধান একাংকী নাটক ।
हास्य रसका एक प्रकार का एकांकी नाटक ।

रासभ — (सं पुं) গাধ, খচ্চৰ ।
गधा । खच्चर ।

रास-विलास — [सं पुं] ৰাসক্ৰীড়া ।
रास क्रीड़ा । आनन्द मंगल ।

रासो — (सं पुं) অপভ্ৰংশ বা পুৰণি হিন্দীত লিখা ৰজাসকলৰ বীৰত্ব-পূৰ্ণ যুদ্ধ-বিবৰণ দিয়া গ্ৰন্থ বিশেষ ।
किसी राजाके वीरतापूर्ण युद्धके विवरणों से युक्त पद्यमें लिखा जीवन-चरित्र ।

रास्त — (वि) উচিত, পোনপটীয়া, অনুকূল, ঠিক ।
सीधा । दुरुस्त । वाजिब । अनुकूल ।

राह - (सं स्त्री) ৰাস্তা, উপায় ।
रास्ता । तरकीब ।

राहगीर, राही — (सं पुं) পথিক ।
पथिक ।

राह-चलता — [सं पुं] পথিক । আলোচ্য বস্তুৰ লগত সম্বন্ধ নথকা ।
पथिक । जिसका प्रस्तुत विषयसे कोई सम्बन्ध न हो ।

राहत — (सं स्त्री) আৰাম, সুখ, অৱকাশ ।
आराम । सुख ।

रिंगना, रेंगना — [क्रि अ] চোঁচৰি যোৱা ।
पेट के बल चलना ।

रिंद — (सं पु)নাস্তিক, স্বেচ্ছাচাৰী ।
धार्मिक बन्धनों को व्यर्थ समझने या न माननेवाला । स्वेच्छाचारी और स्वच्छन्द पुरुष ।
(वि) মতলীয়া ।
मतवाला । मस्त ।

रिआयत — [सं स्त्री] অনুগ্ৰহ, ৰেহাই, মুকলি, দয়াপূৰ্ণ ব্যৱহাৰ, অভাব ।
कोमल और दयालुतापूर्ण व्यव-हार । अनुग्रह । छूट । कमी ।

रिआया — (सं स्त्री) প্ৰজা ।
प्रजा ।

रिक्त— (বি) শূণ্য, উদং, ডুখীয়া।
খালী। নির্ধন।

रिक्तता— [স' স্ত্রী] ৰিক্ততা, শূণ্যতা, খালী হোৱা ভাব।
रिक्त या खाली होनेकी अवस्था या भाव।

रिझावना, रिझाना—(ক্রি স) কাকো সন্তুষ্ট কৰা, আকর্ষিত কৰা।
किसीको अपने पर प्रसन्न या मोहित कर लेना।

रिझाव—(স' পু') আনন্দিত অথবা আকর্ষিত কৰা কার্য্য।
रीझने की क्रिया या भाव।

रित, रितु—(স' স্ত্রী) ঋতু।
ऋतु।

रिपु— (সং পু') শত্রু।
शत्रु।

रिम-झिम—[স' স্ত্রী] কিণ কিণিয়া ৰৰষুণ পৰা, কুঁৰলি পৰা।
बर्षाकी छोटी छोटी बूँदें गिरना। फुहार।
[ক্রিবি] কিণকিণিয়া ৰৰষুণ।
छोटी छोटी बूँदोंके रूपमें (वर्षा)

रियासत—(সং স্ত্রী) ৰাজ্য, দেশীয় ৰাজ্য, বৈভৱ।
राज्य। देशी राज्य। अमीरी। वैभव।

रियासती—(বি) ৰাজ্য সম্বন্ধীয়, ৰাজ্যৰ।
रियासत सम्बन्धी। रियासत का।

रिरना, रिरियाना—[ক্রি অ] দৈন্য প্রকাশ কৰা।
गिडगिड़ाना।

रिल-मिल—(স' স্ত্রী)মিলা-প্রীতি।
मेल-मिलाप।

रिवाज—(সং পু') ৰীতি, প্রথা।
प्रथा।

रिश्तेदार— [স' পু'] সম্বন্ধীয়, কুটুম্ব।
सम्बन्धी। नातेदार।

रिश्वत—(স' স্ত্রী) ভেটি।
घूस। उत्कोच।

रिश्वतखोर, रिश्वती—(বি) ভেটি-খোৰ,ভেটিখোৱা বা লোৱা লোক।
रिश्वत या घूस लेनेवाला।

रिष, रिषय, रिषि—[স' পু'] ঋষি।
ऋषि।

रिस, रिसानी—[সং স্ত্রী] খং।
क्रोध।

रिसाना, रिसिआना—(ক্রিঅ ক্রি স) খং উঠা বা খং তোলা।

क्रुद्ध होना या दूसरे को क्रुद्ध करना।

रिहा—(বি) মুকলি, মুক্ত।
बन्धन आदिसे छुटा हुआ। मुक्त।

रिहाई—[सं स्त्री] মুক্তি।
छुटकारा। मुक्ति।

रींधना—(क्रि स) ৰন্ধা, সিজোৱা।
रांधना। सिझाना।

रीछ—[सं पुं] ভালুক।
भालू।

रीझना— (क्रि अ) মুগ্ধ বা প্ৰসন্ন হোৱা।
किसीके रूप, गुण आदिके कारण उसपर प्रसन्न होना।

रीढ़—[सं स्त्री] ৰাজহাড়, মেৰুদণ্ড, মূল তত্ব বা বস্তু।
पीठके बीच की लम्बी हड्डी। मेरुदंड। वह तत्व या चीज जिसके आधार पर कोई चीज खड़ी रह सके।

रीत—(सं स्त्री) ৰীতি।
रीति।

रीतना—(क्रि अ क्रि स) শূন্য বা খালী হোৱা বা কৰা।
खाली या रिक्त होना या करना।

रीता—[वि] খালী, শূন্য ৰিক্ত।
खाली। रिक्त।

रीस — [सं स्त्री] ঈৰ্ষা, দাহ, প্ৰতি দ্বন্দ্বিতা।
ईर्ष्या। डाह। स्पर्धा।

रीसना—[क्रि अ] খং কৰা।
क्रोध करना।

रुंड—[सं पुं] কবন্ধ, মূৰ কটাৰ পিচত থকা গাৰি অংশ।
सिर कट जानेपर बाकी बचा हुआ धड़।

रुँधना—[क्रि स] পথত বাধা দিয়া, বাধা প্ৰাপ্ত হোৱা, আগুৰা, জঞ্জালত পৰা।
मार्ग रुकना या घिरना। उलझना। घेरा जाना।

रुकना—[क्रि अ] থমকা, বৈ যোৱা, আগ নবঢ়াকৈ থকা।
अवरुद्ध होना। अटकना। ठहर जाना।

रुकाव—[सं पुं] বাধা।
रुकावट।

रुकावट—(सं स्त्री) বাধাৰ ভাব, বাধা দিয়া-কথা বা বস্তু।
रुकने या रोके जाने की क्रिया या

भाव। अड़चन। बाधा। रोकने वाली बात या चीज।

रुक्का—[सं पुं] চিঠি।
पत्र। चिट्ठी।

रुक्ष—(वि) খহটা, কৰ্কশ, অনিমজ (গা) নীৰস আৰু টান (মাটি)।
जिसमें चिकनाहट न हो। खुरदरा। नीरस। शील रहित।

रुख—(सं पुं) মুখ, চেহেৰা, আকৃতি, মনোবৃত্তি, আগৰ অংশ।
मुँह। आकृति। चेहरे या आकृति से प्रकट होनेवाली मनकी इच्छा। सामने का भाग। पार्श्व।
(क्रि वि) পিনে, ফাল, সমুখত।
तरफ। सामने।

रुखसत—[सं स्त्री] ছুটী, অবকাশ।
छुट्टी। अवकाश।

रुखाई, रुखावट—(सं स्त्री)
কৰ্কশতা, নীৰস বা কটু ব্যৱহাৰ
रूखापन। व्यवहारमें संकोच या शील का अभाव।

रुखाना—(क्रि अ) নীৰস হোৱা, ক্ৰোধান্বিত হোৱা।
रूखा या नीरस होना या करना।

रुग्ण—(वि) বেমাৰ, বেমাৰী।
बीमार।

रुचना—[क्रि अ] ৰুচিকৰ হোৱা, ভাল লগা।
अच्छा लगना।

रुचिकर, रुचिकारक—(वि)
ৰুচিকৰ, ভাল লগা।
अच्छा लगनेवाला। रुचि उत्पन्न करनेवाला।

रुचिमान, रुचिर—[वि] সুন্দৰ, মধুৰ।
मनोहर। सुन्दर। मधुर।

रुचिरता, रुचिराई—(सं स्त्री)
সৌন্দৰ্য্য, ৰুচিকৰ।
रुचिर या सुन्दर होनेका भाव।

रुज—[सं पुं] ৰোগ, কষ্ট, ভাং।
रोग। कष्ट। भांग।

रुजा—(सं पु) বেমাৰী, কুষ্ঠ।
बीमारी। कोढ़।

रुजू—(वि) প্ৰবৃত্ত।
प्रवृत्ति।

रुझान—(सं पुं) প্ৰবৃত্ত হোৱাৰ ক্ৰিয়া বা ভাব, সাধাৰণ প্ৰবৃত্তি।
किसी ओर प्रवृत्त होनेकी क्रिया।

या भाव । साधारण या हलकी प्रवृत्ति

ৰুণিত, ৰুনিত—(বি) ধ্বনিত ।
बजता हुआ ।

ৰুতবা—[সং পুং] পদ, মৰ্য্যাদা ।
पद । ओहदा ।

ৰোদন—(সং পুং) কান্দোন ।
रोनेकी क्रिया।

ৰুদ্ৰাক্ষ—(সং পুং) এবিধ ওখ ডাঙৰ গছ আৰু তাৰ গুটি, ইয়াৰ মালা বিশেষকৈ শিৱৰ উপাসকে পিন্ধে ।
एक वृक्षके गोल बीज जिनसे माला बनती है ।

ৰুধিৰ—(সং পুং) তেজ ।
रक्त ।

ৰুপহলা—(বি) ৰূপালী, ৰূপৰ দৰে ।
चाँदीके रंगका । चाँदी का सा ।

ৰুৰনা—(ক্ৰি অ) ঢাকনি দিয়া, আচ্ছাদিত হোৱা ।
आच्छादित होना ।

ৰুৰুআ—(সং পুং) ডাঙৰ ফেঁচা বিশেষ ।
एक प्रकारका बड़ा उल्लू

ৰুলাই—[সং স্ত্ৰী] কান্দোন, কান্দোনৰ ইচ্ছা ।
रोनेकी क्रिया या भाव । रोनेकी प्रवृत्ति ।

ৰুলানা—[ক্ৰি স] কন্দোৱা, ঘুৰাবে ঘুৰাৰে বা ইনাই বিনাই ঘূৰি ফুৰিবলৈ দিয়া, অন্যায় কৰা ।
दूसरे को रोनेमें प्रवृत्त करना । इधर उधर मारामारा फिरने देना खराब करना ।

ৰুসনা, ৰূসনা -- [ক্ৰি স] অসন্তুষ্ট হোৱা, অভিমানত খং কৰা ।
नाराज या असन्तुष्ट होना ।

ৰুসবা—[বি] বদনাম ।
बदनाम ।

ৰুহ—(বি) উৎপন্ন, জন্ম ।
उत्पन्न । जात ।

ৰুঁধনা—[ক্ৰি স] কাঁটা আদিৰে কোনো ঠাই আগুৰা। বন্ধ কৰা, থমা ।
कँटीले पौधों आदिसे कोई स्थान घेरना । बन्द करना । रोकना ।

ৰুআ—[সং পুং] আঁহ ।
धूआ । किसी चीजका रोंआ ।

रूई—[सं स्त्री] শিমলু বা কপাহৰ তুলা।
कपास के या सेमलके डोडेमें का रेशेदार धूआ।

रूख—(सं पुं) গছ।
पेड़।

रूखा—[वि] খহটা, স্বাদহীন, নীৰস।
जो चिकना न हो। स्वाद रहित। नीरस।

रूखापन—(सं पुं) কৰ্কশতা।
रुखाई।

रूठना—[सं पुं] অসন্তুষ্ট, উদাসীন, পৃথক হৈ যোৱা। নিমাত হোৱা।
अप्रसन्न होकर उदासीन, चुप या अलग हो जाना।

रूढ़—[वि] ৰূঢ়, প্ৰসিদ্ধ, উৎপন্ন, মূৰ্খ, প্ৰচলিত, বেছিকৈ ভজা তৰকাৰী আদি।
चढ़ा हुआ। प्रसिद्ध। गँवार। प्रचलित। (तरकारी आदि) जिसमें बहुत कड़ापन आ गया हो।

रूढ़ि—(सं स्त्री) প্ৰসিদ্ধি বহুত দিনৰ পৰা চলি অহা প্ৰথা বা নীতি।
रूढ़का भाव। प्रसिद्धि। बहुत दिनोंसे चली आई प्रथा या चाल।

रूपक—(सं पुं) মূৰ্ত্তি, নাটক, অৰ্থালঙ্কাৰ বিশেষ।
मूर्ति। नाटक। एक अलंकार।

रूपकार—(सं पुं) মূৰ্ত্তি সাজোঁতা, কাৰিকৰ।
मूर्ति बनानेवाला।

रूप-रेखा—(सं स्त्री) ৰূপ, ৰেখা, খছৰা, মচা-বিদা, আঁচনি।
किसी बनाये जानेवाला रूप या किये जानेवाले काम का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार प्रकार आदिका परिचायक होता है। (अं-प्लान) किसी कार्यके सम्बन्ध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूपकी सूचक होती हैं। (अं—आउट लाइन) खाका।

रूपसी—[सं स्त्री] সুন্দৰী।
सुन्दरी।

रूपा—(सं पुं) ৰূপ, বগা ঘোঁৰা।
चाँदी। सफेद घोड़ा।

रूबरू—[क्रि वि] সন্মুখ।
सम्मुख। सामने।

रूरा—[वि] শ্ৰেষ্ঠ, উত্তম, বৰ ডাঙৰ।
उत्तम। श्रेष्ठ। बहुत बड़ा।

रूसी— (सं पुं) ৰাছিয়া দেশ নিবাসী।
रूस देशका निवासी।
[वि] ৰুছিয়া দেশসম্বন্ধীয়, ৰুছিয়া দেশৰ।
रूस देश सम्बन्धी। रूस देशका।
(सं स्त्री) ৰুছিয়া দেশৰ ভাষা উফি।
रूस देशकी भाषा। सिरके चमड़े की वह पतली झिल्ली जो बहुत छोटे टुकड़ोंके रूपमें फट या कट कर निकलती है।

रूह—[सं स्त्री] আত্মা, সৎ, আতৰ বিশেষ।
आत्मा सत्ता। एक प्रकार का इत्र।

रेंकना— (क्रि अ) গাধৰ মাত, বৰ বেয়া সুৰে গোৱা বা কথা কোৱা, গৰ্দ্দভ ৰাগিনী মৰা।
गधेका बोलना। बहुत भद्दे ढंगसे गाना या बोलना।

रेंड़—[सं पुं] এড়া, এৰাগছ।
एरंड।

रेंड़ी—(सं स्त्री) এৰী।
रेंड़के बीज।

रे—(अव्य) সম্বোধন বাচক অব্যয়, হেৰা।
छोटे या तुच्छ आदमियों के लिये एक सम्बोधन।

रेख—(सं स्त्री) ৰেখা, চিন, নতুনকৈ গজা গোফ।
लकीर। चिह्न। नयी निकलती हुई मूँछे।

रेग—(सं स्त्री) বালি।
बालू। रेत।

रेगिस्तान—(सं पुं) মৰুভূমি।
मरुस्थल।

रेचक—(वि) পেট চলোৱা ঔষধ।
(वह पदार्थ) जिसे खाने में दस्त आवे।
(सं पुं) এক নাকেদি মাথোন শৰীৰৰ ভিতৰত গোটোৱা বায়ু উলিয়াই দিয়া প্ৰাণায়াম যোগৰ কাৰ্য্য বিশেষ।
प्राणायाममें सांससे खींची हुई हवा बाहर निकालनेकी क्रिया।

रेचन—(सं पुं) ভেদ, পেট চলা কাৰ্য্য, জুলাপ। जुल्लाब।

रेज—(वि) অলপ, কিঞ্চিৎ।
बहुत थोड़ा, अल्प।

रेजगारी (गी)—[सं स्त्री] খুচুৰা।
টকাৰ-নিম্ন মুদ্ৰা, আধলি, সিকি অনা আদি।
छोटे फुटकर सिक्के। छोटे टुकड़े या कतरन आदि।

रेजा—[सं पुं] বৰ সৰু বস্তু।
बहुत छोटा टुकड़ा।

रेढ़ना—(क्रि स) বাগৰা।
लुढ़काना।

रेढ़ी—(सं स्त्री) গৰুগাড়ী।
छकड़ा। बैलगाड़ी।

रेणु, रेनु—[सं स्त्री] ধূলি, ধূলি-কণা।
धूल। कण।

रेत—[सं स्त्री] বালি।
बालू।

रेतना—(क्रि स) ৰেতীৰে ঘহা।
रेतीसे रगडना।

रेती—(सं स्त्री) বালিময় মাটি, মাজুলীৰ দৰে নদীৰ দ্বীপ, কোনো ধাতব বস্তু মিহি কৰিবৰ বা জোড়াবৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা লোৰ যতন বিশেষ, ৰেতী।
एक औजार जिसे किसी धातुपर रगड़नेसे उसके महीन कण कट कर गिरते हैं। रेतीली या बलुई भूमि।

रेतीला—[वि] বালিময়।
बालूवाला।

रेलना—(क्रि सं)ঠেকিয়া, ঠেকা মৰা।
ढकेलना।

रेल-पेल—(सं स्त्री) বৰ ভিৰ।
भारी भीड़। भर-मार।

रेला—[सं पुं] পানীৰ তীব্ৰ সোঁত, আক্ৰমণ, আৰোহণ কৰা, আধিক্য, শ্ৰেণী, সমূহ।
पानी का तेज बहाव। चढ़ाई। जन समूहका जोरोंसे आगे बढ़ना। अधिकता, समूह, पंक्ति।

रेवड़—(सं पुं) ভেড়া, ছাগলী আদিৰ জাক।
भेड़, बकरियों आदिका झुण्ड।

रेशम—(सं पुं) পাট।
एक प्रकार के कीड़ेसे तैयार किये हुए महीन, चमकीले और दृढ़ तंतु जिनसे कपड़े बनते हैं।

रेशा—(सं पुं) আঁহ।
तंतु।

रेह—(स ं स्त्री) খাৰ মিহলি মাটি, ৰেখা।
खाद मिली हुई वह मिट्टी जो ऊपरी मैदानमें पायी जाती है। रेखा।

रेहन—[स ं पु ं] বন্ধক।
बंधक।

रैन—(स ं स्त्री) ৰাতি।
रात्रि।

रैयत—(स ं स्त्री) ৰায়ত।
प्रजा।

रोंगटा, रोआँ— (स ं पु ं) লোম, নোম, আহ বা গুং।
शरीरपर के बहुत छोटे और पतले बाल। वनस्पति आदि पर के उक्त प्रकारके तंतु।

रोध—(सं पु ं) অবৰোধ, বাধা।
अवरोध। रोक।

रोना, रोवना—(क्रि अ) কন্দা।
रुदन करना।
(स ं पु ं) দুঃখ, কষ্ট।
दुःख। कष्ट।
(वि) অলপ কথাতে কান্দিব পৰা, নাকে কন্দা।
जरा सी बात पर रो पड़नेवाला।

रोपना--[क्रि स] (পুলি আদি) ৰোৱা, ৰখা, থমোৱা, বীজ গঁচা (হাত বা ভৰি) মেলি দিয়া।
(पौधे आदि) जमाना, लगाना या बैठाना। स्थित करना। ठहराना। बीज डालना। फैलाना (हाथ या पाँव) रोकना।

रोब—(सं पु ं) আতঙ্ক, ভয়, প্ৰতাপ।
आतंक। दबदबा।

रोम—[सं पु ं] লোম-নোম, ফুটা বা বিন্ধা, ঊল।
रोआं। लोम। छेद। ऊन।

रोमांच—(स ं पु ं) শিঁহৰণ, আচৰিত কথা শুনি বা কোনো আনন্দৰ দ্বাৰা গাৰ নোম শিঁয়ৰা বা থিয় হোৱা কাৰ্য্য।
आनन्द या भय से रोएं खड़े होना।

रोमिल—(वि) নোমাল।
रोएँदार।

रोर—[सं स्त्री] গণ্ডগোল, উপদ্ৰৱ।
कोलाहल। उपद्रव।
[वि] প্ৰচণ্ড, উপদ্ৰৱী।
प्रचंड। उपद्रवी।

(सं पुं) শিলগুটি, দাৰিদ্ৰ্য।
रोड़ा। निर्धनता।

रोरी, रोंरी—(सं स्त्री) দৌড়া-দৌড়ি, হালধি চূৰ্ণেৰে তৈয়াৰী ৰঙা ৰং।
चहल-पहल। रोली।
(वि) সুন্দৰ।
सुन्दर।

रोल—(सं स्त्री) ধ্বনি, শব্দ।
ध्वनि।
(सं पुं) পানীৰ ধাৰ।
पानी का बहाव।

रोला—[सं पुं] কোলাহল, হাই-উৰুমি, ভয়ানক যুদ্ধ, মাত্ৰিক ছন্দ বিশেষ।
कोलाहल। शोर (हल्ला)। घमासान युद्ध। एकमात्रिक छंद।

रोआसा (रुआँसा)— (वि) কান্দোন মুৱা।
रोनेको उद्यत।

रोएँदार—(वि) নোমাল, শুং আদি থকা।
जिसके शरीरपर बहुत अधिक रोएँ हों। जिसपर रोएँ की तरह सत-रेशे आदि हो।

रोक—[सं स्त्री] বাধা, প্ৰতিবন্ধক।
रोकने की क्रिया या भाव। अवरोध। मनाही। प्रतिबन्ध।
[क्रि] নগদ।
रुपये पैसे आदिके रूपमें। नगद।

रोक-टोक—[सं स्त्री] বাধা, নিষেধ।
मनाही। निषेध।

रोकड़—[सं स्त्री] নগদ টকা-পইচা আদি। জমা, ধন, পুঁজি।
नगद रुपया पैसा आदि। जमा। धन। पूंजी।

रोक-थाम—[सं स्त्री] বাধা-নিষেধ, रोक-टोक, अवरोध।

रोकना—(क्रि स) আগ বাঢ়বলৈ নিদিয়া, বাধা দিয়া, গতি বা চলি অহা প্ৰথা আদি বন্ধ কৰা।
किसीको आगे बढ़ने न देना। कहीं जाने या कोई काम करने से मना करना। चली आती हुई बात या प्रथा बन्द करना।

रोगन—(सं पुं) তেল, ঘিউ আদি। মিহি পদাৰ্থ, ৰহণ।
तेल घी आदि मसृण पदार्थ। वह चिकना लेप जो कोई वस्तु चमकाने के लिये उसपर लगाया जाता है। (अं—वारनिश)

रोचक—[वि] ভাল লগা, ৰুচিকৰ, মনোৰঞ্জক।
अच्छा लगनेवाला। मनोरंजक।

रोचन- [वि] শোভাকৰ, দীপ্তবান, ৰঙা।
रोचक। शोभा बढानेवाला। लाल।

(सं पुं) গোৰোচন, এবিধ হালধীয়া বস্তু (ফোঁট লোৱাত ব্যৱহৃত হয়)।
गोरोचन।

रोज—[सं पुं] দিন, সময়।
दिन। दिवस।

[अव्य] সদায়, দৈনিক।
प्रतिदिन। नित्य।

रोजगार— (सं पुं) জীৱিকা, ব্যৱসায়, ৰোজকাৰ।
व्यापार। तिजारत।

रोजगारी—(वि) বেপাৰী।
व्यापारी।

(सं स्त्री) ব্যৱসায়, আয়ৰ পথ।
व्यापार। आय का जरिया।

रोजनामचा—[सं पुं] ডায়েৰী, দিনলিপি।
दैनिक। (डायरी)

रोजमर्रा—(अव्य) সদায়।
नित्य।

(सं पुं) কথিত ভাষাৰ জতুৱা ঠাঁচ, ফকৰা আদি।
नित्य के व्यवहार में आनेवाला बोलचाल की भाषा का विशिष्ट प्रयोग।

रोट—[सं पुं] বৰ ডাঙৰ ৰুটী, চৰবৎ, মিঠা ৰুটী।
मोटी और बडी रोटी। मीठी रोटी या पूआ। शरबत।

रोटा—[वि] পিহাত গুৰি হোৱা।
जो पिसकर चूर हो गया हो।

(सं पुं) চূৰ্ণ, গুড়া, গুড়ি।
चूर्ण।

रोटी— [सं स्त्री] ৰুটী, খাদ্য, জীৱিকা।
चपाती। भोजन या रसोई। जीविका।

रोटी दाल चलाना(मु०)—সাধাৰণ ভাবে জীৱিকা নিৰ্ব্বাহ কৰা।
साधारण जीवन निर्वाह होना।

रोड़ा—(सं पुं) ইটা, শিলৰ টুকুৰা। আদি।
ईंट या पत्थर का बड़ा टुकड़ा।

रोड़ा अटकाना—(मु०)বাধা দিয়া। বিঘিনি ঘটোৱা।
विघ्न डालना।

रोदन—(सं पुं) কান্দোন।
रोना।

रोदा—(सं पुं) ধেনুৰ জোৰ বা গুণ।
धनुष की डोरी। चिल्ला।

रोशन—(वि) প্ৰজ্বলিত, প্ৰদীপ্ত, বিখ্যাত, প্ৰকাশ।
जलता हुआ। प्रदीप्त। प्रसिद्ध। जाहिर।

रोशन-चौकी—(सं स्त्री) চানাই, ক্যালিৰ নিচিনা মুখেৰে ফুঁদি বজোৱা এবিধ বাদ্য যন্ত্ৰ।
शहनाई।

रोशनदान—[सं पुं] খিৰিকী।
झरोखा।

रोशनाई—(सं स्त्री) চিয়াহী
स्याही।

रोशनी—(सं स्त्री) প্ৰকাশ, পোহৰ, চাকি।
उजाला। दीपक।

रोष, रोस—(सं पुं) খং, ৰাগ, শত্ৰুতা, যুঁজিবৰ বা কাজিয়া কৰিবৰ বাবে অহা আবেগ।
क्रोध। गुस्सा। चिढ़। कुढ़न। वैर बिरोध। लड़ने का आवेश।

रोहित-(वि) ৰঙা ৰঙৰ।
लाल रंग का।

(सं पुं) ৰঙা ৰং, কেশৰ, তেজ।
लाल रंग। केसर। खून।

रोही—[वि] আৰোহী।
चढ़नेवाला।

रौंदना—[क्रि स] ভৰিৰে গছকি নষ্ট-ভ্ৰষ্ট কৰা, গছকি বা পিহি পেলোৱা।
पैरों से कुचल या दबा कर नष्ट भ्रष्ट करना। मर्दित करना।

रौ—(क्रि स) গতি বেগ, ধাৰ (পানীৰ)।
गति। चाल। तेजी।

रौद्र—(वि) ৰুদ্ৰ সম্বন্ধীয়, ভীষণ, খঙাল। গৰম।
रुद्र सम्बन्धी। प्रचंड। क्रोधपूर्ण। गरमी।

रौनक—(सं स्त्री) চমকণি, প্ৰফুল্লতা, শোভা, সৌন্দৰ্য্য।
चमक दमक। प्रफुल्लता। शोभा। सुहावनापन।

रौरव—(वि) ভয়ঙ্কৰ ।
भयंकर ।
(सं पुं) নৰক বিশেষ ।
एक नरक का नाम ।

रौरे—(सर्व) আপুনি [সম্বোধন] ।
आप (संबोधन)

रौस—[सं स्त्री] চাল-চলণ, ধৰণ কৰণ, বাৰান্দা, পতাকা ।
तौर-तरीका । छज्जा या बरामदा । निशान ।

रौसली—(सं स्त्री) পলস ।
वह चिकनी मिट्टी जो बरसाती नदी अपने किनारों पर छोड़ जाती है ।

ल

ल— ব্যঞ্জন বৰ্ণমালাৰ একুৰি আঠ সংখ্যাৰ আখৰ ।
वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ वर्ण ।

लंक—[सं स्त्री] কঁকাল, সিংহল দ্বীপ ।
कमर । कटि । लंका द्वीप ।

लंग—[सं स्त्री] ধুতিৰ লেংটি, কাছোন ।
धोती का काछा ।
[सं पुं] খোৰা হোৱাৰ ভাব ।
लंगड़ापन ।

लँगड़ा, लंगी—(वि) খোৰা ।
जिसका एक पैर बेकाम हो या टूट गया हो ।
[सं पुं] আমৰ নাম বা জাতি বিশেষ ।
एक प्रकार का आम ।

लंगड़ाना-[क्रि अ] লেকেচিয়াই খোজ কড়া ।
लंगड़े होकर चलना ।

लंगर—(वि) দুষ্ট, জেদী ।
नटखट । दुष्ट । ढीठ ।

लंगर—[सं पुं] লঙ্গৰ, শিকলি লগাই দ পানীত পেলাই থোৱা নাও বা জাহাজত থকা লোৰ-সজুলি।
लोहे का वह बहुत बड़ा काँटा जिसे नदी या समुद्रमें गिरा देने पर नावें या जहाज एकही स्थान पर ठहरे रहते हैं। (अं—एनकर)

लंगूर—[सं पु] এবিধ ডাঙৰ বান্দৰ, বান্দৰৰ নেজ।
एक प्रकार का बड़ा बन्दर। बन्दर की दुम

लंगोट [ा]—[सं पुं] লেংটি, দুই তপিনাৰ মাজত সুমাই গুপ্তাঙ্গ মাথোন ঢাকি পিন্ধা ঠেক কাপোৰ।
• कमरपर बाँधने का वह पहनावा जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढँके रहते हैं। (सं स्त्री—लंगोटी)

लंघन—[सं पुं] লঙ্ঘন, অতিক্ৰমণ। লঙ্ঘন।
लाँघने की क्रिया या भाव। अतिक्रमण। उपवास। फाका।

लंघना—[क्रि स] জাঁপ মাৰি পাৰ হোৱা, ডেই যোৱা।
लाँघ जाना।

लंठ—(वि) মূৰ্খ, উদণ্ড।
मूर्ख। उद्दंड।

लंडूरा—[वि] নেজ খঁৰা [জন্তু]।
कटी पूँछवाला [पशु]

लंपट—[वि] পৰস্ত্ৰীত আসক্ত-লোক। ব্যভিচাৰী।
व्यभिचारी। बद चलन।

लंब—[सं पुं] লম্ব, এডাল ৰেখাৰ ওপৰত আন এডাল ৰেখা থিয় হৈ যদি তাৰ দুয়োফালৰ কোণ দুটা সমান হয়, তেন্তে সেই থিয় হৈ থকা ৰেখাটো।
किसी रेखापर सीधी आर खड़ी गिरनेवाली रेखा।
(वि) দীঘল।
लम्बा।

लंबाई, लंबान—(सं स्त्री) দৈৰ্ঘ্য।
लंबा होनेका भाव या अवस्था। लंबापन।

लंबित—(वि) দীঘলীয়া কৰা, কাৰ্য্য, স্থগিত।
लम्बा किया हुआ। विचार निश्चय आदि कुछ समय तक रोका या टाला हुआ। [अं—पेंडिंग]

लंबोतरा—(वि) দীঘল আকাৰৰ।
लम्बे आकारवाला।

लकड़बग्घा—(सं पुं) বাঘৰ নিচিনা জন্তু বিশেষ।
चीते की तरह का एक पशु। लग्घड़।

लकड़हारा—(सं पुं) খৰিকটীয়া। जंगल से लकड़ी काटकर बेचने वाला।

लकड़ी—(सं स्त्री) খৰি, লাঠি, কাঠ।
पेड़ का कटा हुआ कोई ठोस या स्थूल अंग। काठ। इन्धन। छड़ी या लाठी।

लकवा—[सं पुं]পক্ষাঘাত বেমাৰ।
पक्षाघात रोग।

लकीर—(सं स्त्री) ৰেখা, শ্ৰেণী, পুৰণি পৰম্পৰা বা মৰ্য্যাদা।
रेखा। परम्परा या मर्यादा। पंक्ति।

लकुटी—[सं स्त्री] লাঠি।
लाठी। छड़ी।

लक्कड़—(सं पुं) কাঠৰ টুকুৰা।
लकड़ी का टुकड़ा।

लक्ष—[वि] এলাখ।
एक लाख।

लक्षणा—[सं स्त्री] শব্দ বিলাকৰ পোন অৰ্থতকৈ বেলেগ ভাব বুজোৱা, শব্দ শাস্ত্ৰৰ বিধা বিশেষ।
शब्दकी तीन शक्तियोंमें एक।

लक्षित—(वि) দৃষ্ট, কোৱা, কৈ দিয়া লক্ষিত।
बतलाया हुआ। देखा हुआ।

लक्ष्मी पुत्र—(सं पुं) ধনী।
धनवान।

लखन—[सं पुं] লক্ষ্মণ।
लक्ष्मण।

लखना—(क्रि स) লক্ষণ দেখি বা চাই অনুমান কৰা বা বুজা, দেখা।
लक्षण देखकर अनुमान करना या समझना। देखना। [क्रि स—लखाना]

लखपति [ती]—[सं पुं] লক্ষপতি লাখপতি।
जिसके पास लाखों की सम्पत्ति हो।

लखेरा—[सं पुं] লাখ চুড়ি বিক্ৰী কৰোঁতা , হিন্দু উপজাতি বিশেষ ।
लाखकी चूड़ियाँ आदि बनाने वाला ।

लखौटा—(सं पुं) চন্দন, কেশৰ আদিৰে তৈয়াৰী সুগন্ধি লেপন বিশেষ, সিন্দুৰ থোৱা পাত্ৰ আদি ।
चन्दन, केसर आदि से बनाया जानेवाला उबटन । वह डिब्बा जिगमें स्त्रियाँ सिन्दूर आदि रखती है ।

लग—(अव्य) লৈ, ওচৰ, কাৰণে, সৈতে ।
तक । निकट । वास्ते । साथ ।
(स स्त्री] নিষ্ঠা, প্ৰেম ।
लगन । लौ ।

लगन—(सं स्त्री) নিষ্ঠাযুক্ত স্নেহ, লগ্ন, শুভক্ষণ [বিবাহৰ বাবে] ।
किसी व्यक्ति या कामकी ओर पूरी तरहसे ध्यान लगाना । स्नेह । हिन्दुओं में वे विशिष्ट दिन जिनमें विवाह होते हैं ।

लगना—[क्रि अ] লগ লগা, একত্ৰ কৰা, মিলা, খৰচ হোৱা, জ্বলা, জ্বলন আদিৰ অনুভৱ হোৱা, সম্বন্ধ লগা, আঘাত পোৱা, ব্যস্ত হোৱা, মনত প্ৰভাৱ পৰা, হাইকাজিয়া কৰা ।
सटना । जुड़ना । मिलना । व्यय होना । जान पड़ना । जलन, चुनचुनाहट आदि मालूम होना । सम्बन्ध या रिश्ते में कुछ होना । आघात या चोट पहुँचना । कार्य आदि में रत होना । मन पर किसी बात का प्रभाव या असर होना । छेड़छाड़ करना ।

लगभग—(क्रि वि) প্ৰায় ।
प्रायः । बहुत कुछ ।

लगवार—[सं पुं] উপপতি, স্নেহী, প্ৰেমী ।
उप-पति । यार ।

लगातार—[क्रि वि] নেৰা-নেপেৰা নিৰন্তৰ ।
बिना क्रम टूटे । निरंतर ।
(वि) একাদি ক্ৰমে ।
बराबर क्रम से होतो रहने वाला ।

लगान—(सं पुं) আকৰ্ষণৰ ভাব, খাজনা আদি ।

लगने की क्रिया या भाव। भूमि पर लगने वाला कर।

लगाना—(क्रि स) যোগ কৰা, সংযোগ কৰা, মিলা, বৰ্চা, আঘাত কৰা কামত লগোৱা, ঠিক ঠাইত বহোৱা, পৰিনিন্দা কৰা, স্পৰ্শ কৰা, বদনাম কৰা।
सटाना। सम्मिलित करना। जमाना। चुनना। आघात करना। काम में लाना। ठीक स्थान पर बैठना। चुगली खाना। कार्य में संलग्न करना। स्पर्श करना। दोष या अभियोग का आरोप करना। (प्रे.-लगवाना)

लगाम—[सं स्त्री] লেগাম।
घोडे की रास।

लगार—[सं स्त्री] নিযমিত ভাবে কাম কৰা, আকৰ্ষণ, প্ৰেম।
नियम पूर्वक नित्य या बराबर काम करना। लगाव। सिलसिला। लगन। प्रेम।
[वि] মিলা-প্ৰীতি, সম্বন্ধ ৰাখোঁতা।
मेल मिलाप या सम्बन्ध रखनेवाला

लगाव—(सं पुं) আকৰ্ষণ,সম্বন্ধ।
लगे होने का भाव। सम्बन्ध।

लगि—[अव्य] লৈ,ওচৰ, কাৰণে।
तक। समीप। वास्ते।

लगुड़—[सं पुं] লাঠি।
लाठी।

लग्गा—(सं पुं) আৰম্ভণি, জুৱাত দিয়া ধন ৰাশি বা দাৱ।
कार्य का आरम्भ या सूत्रपात। किसी दाँव पर जुआरी के सिवा दूसरे लोगो का लगने वाला धन या दाँव।

लग्घा—[सं पुं] দীঘল বাঁহ।
लम्बा बाँस।

लग्घी—(सं स्त्री) লগী. চৰি, নাও চলোৱা দীঘল বাঁহ।
वह बाँस जिसे नदी के तल तक पहुंचा कर उसके जोर से नाव चलाते है।

लघु—(वि) সৰু, পাতল, সামান্য, কম, অলপীয়া, চুটিকৈ উচ্চাৰণ কৰা।
छोटा। हलका। नि सार। कम। वह अक्षर या वर्ण जिसमें एक ही मात्रा हो।

लघुचेता—(सं पुं) কু-ভাবনাৰ লোক।
तुच्छ या बुरे विचारां वाला।

लघुता—[स स्त्री] লঘুতা ।
लघु या छोटा होने का भाव ।

लघु-शंका—(सं स्त्री) পেছাব কৰা কাৰ্য্য বা ইয়াৰ বেগ।
पेशाब करने की क्रिया या उसका वेग ।

लचकना, लचका—(क्रि स) হলা ফুলা কৰা, কোমল হোৱা বাবে বা ভাব ভঙ্গী দেখুৱাবৰ বাবে কঁকাল বা অইন অঙ্গ হালি যোৱা [স্ত্রী] ৰ।
मार पड़ने पर बीच से दबना या झुकना। कोमलता आदि के कारण या हाव-भाव के समय स्त्रियों की कमर या दूसरे अंग झुकना ।

लचपच--[वि] শিথিল, দুৰ্ব্বল, নিঃকিন।
ढीला ढाला। शिथिल। दुर्बल। हीन ।

लचारी--(सं स्त्री) উপহাৰ, লোকগীতি বিশেষ-লেছাৰি।
भेंट। उपहार। एक प्रकार का देहाती गीत ।

लचीला—(वि) কোমল, সহজে ভাঁজ আদি দিব পৰা।
नमनीय। जिसमें सहज में परिवर्तन, उतार चढ़ाव या कमी-बेशी हो सकती ही ।

लच्छन—[सं पुं] লক্ষণ।
लक्षण ।

लच्छमी, लच्छि, लछमी—
[सं स्त्री] লক্ষ্মী ।
लक्ष्मी ।

लच्छा · [सं पुं] কোঁছা, লেছা, [সূতাৰ] অলঙ্কাৰ বিশেষ।
गुच्छे के रूप में गूँथे हुए सूत या तार। एक गहना ।

लच्छित—[वि] লক্ষিত, দৃষ্ট।
देखा हुआ। अंकित ।

लच्छेदार—[वि] লেছা থকা, কোঁছা থকা, ৰসাল কথা।
जिसमें लच्छे बने हों। चिकनी चुपड़ी और मजेदार (बात)।

लजाना (**लजना**)—(**क्रि अ-**) **क्रि स**] লজ্জিত হোৱা, অথবা লাজ পোৱা বা দিয়া।
लज्जित या शरमिन्दा होना या करना। [प्रेरण.-लजवाना]

लजालु—(सं पुं) নিলাজী বন, আদৰ মালতী।

एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ या कुछ मुरझा सी जाती हो।

लजीला—[वि] লাজকুৰীয়া, লাজুৱা।
लज्जाशील। जिसे जल्दी लज्जा आती है।

लज्जत—[सं स्त्री] সোৱাদ।
स्वाद।

लट—(सं स्त्री) চুলিৰ কোঁচা, সিচৰিত হৈ থকা চুলি শিখা।
बालों का गुच्छा। उलझे हुए बाल। लपट।

लटक—(सं स्त्री) ওলমা, অঙ্গী-ভঙ্গী।
लटकने की क्रिया या भाव। अंग-भंगी।

लटकन—[सं पुं] ওলমি থকা বস্তু বা অঙ্গ, নাক চটা, সুন্দৰ আৰু সুগন্ধি বনৰীয়া গুটি বিশেষ।
लटकती हुई चीज या अंग। नाक में पहनने का एक गहना। एक प्रकार की वनस्पति के दाने जिनसे बढ़िया और सुगंधित बसन्ती रंग निकलता है।

लटकना—(क्रि अ) ওলমি থকা, কোনো কাম অসম্পূৰ্ণ হৈ ৰোৱা।
झूलना। काम का कुछ समय तक अधूरा पड़े रहना। (प्रे.-लटकाने)

लटका—(सं पुं) প্ৰকাৰ, ভাৱ-ভঙ্গী, চিকিৎসাৰ সৰু আৰু সৰল উপায়।
ढंग। हाव-भाव। उपचार आदि की छोटी और सहज युक्ति।

लटना—(क्रि अ) ভাগৰি অৱশ হোৱা, দুৰ্ব্বল হোৱা, লেৰেলি যোৱা, প্ৰেম বা লোভত পৰা, তৎপৰ হোৱা।
थककर बेकाम होना। दुबला और अशक्त होना। मुरझाना। क्षीण होना। चाह या लोभ में पड़ना। तत्पर या लीन होना।

लटपट—[सं स्त्री] লট্‌পট্‌, অস্থিৰতা, অসতী, চঞ্চল।
कुछ साधारण और आरंभिक पर अनुचित या बुरे उद्देश्यसे किया जानेवाला सम्बन्ध। लटापटी।

लटपटा—(वि) লেকেচিওৱা, থৰক বৰক হোৱা, ঢিলা, দুৰ্ব্বল, মধ্যমীয়া তৰল খাদ্য বস্তু।

लड़लड़ाता हुआ। ढीला ढाला। अस्त व्यस्त। अशक्त। जो न बहुत गाढ़ा हो और न बहुत पतला [खाद्य पदार्थ, रस आदि]।

लटपटाना—(क्रि अ) লেকেচিয়া, ঠিক ধৰণে কাম কৰিব নোৱাৰা মুগ্ধ বা অনুৰক্ত হোৱা।

लड़खड़ाना। ठीक तरह से कोई काम न कर सकना। मोहित होना। लीन या अनुरक्त होना।

लटापटी—(सं स्त्री) লট্‌পট্‌ কৰা কাৰ্য্য, কাজিয়া পেচালৰ ভাৱনা।

लटपट होनेकी दशा या भाव। किसीसे उलझने या लड़ने झगड़ने का भाव।

लट्टू—(सं पुं) লাট্টুম, বিজুলী বাতি।

एक प्रकार का गोल खिलौना जो जमीनपर फेंककर नचाया जाता है। शीशेका वह गोला जिसमें बिजली का प्रकाश होता है। (अं—बल्ब)

लट्ठ—[सं पुं] ডাঙৰ লাঠি। बड़ी लाठी।

लट्ठबाज - [वि] লাঠীৰে যুঁজ কৰোঁতা।

लाठी चलाने या उससे लड़ने वाला।

लट्ठ-मार—(वि) যুঁজাৰু, অপ্ৰিয় আৰু কৰ্কশ (কথা)।

लट्ठबाज। अप्रिय और कठोर (बात)

लट्ठा—[सं पुं] মাটি জোখা ডাঁৰ, ডাঠ কাপোৰ, চ'তি বা কাঠৰ ধাম।

लकड़ी का शहतीर। एक प्रकार का कपड़ा।

लठैत—[सं पुं] লাঠৈৰা, লাঠি চলাওঁতা।

लाठी चलानेवाला।

लड़—(सं पुं) শাৰী, শ্ৰেণী, ধাৰ, অতীত মালাৰ নিচিনাকৈ গঁথা মণি বা ফুলৰ শাৰী।

एकही तरह की चीजोंकी श्रेणी या माला। रस्सी या डोर के कई तारोमें एक तार। (सं स्त्री—लड़ी)

लड़कपन—(सं पुं) ল'ৰালি, লৰাৰ স্বভাৱ, অবুজন। बाल्यावस्था। नासमझी।

লড়কা—(সং পুং) ল'ৰা, পুতেক।
বালক। বেটা।

লড়কাই, লড়কানি, লড়কৈয়াঁ—
ল'ৰালি।
লড়কপন।

লড়কৌৰী—[বি] সন্তানৱতী (তিৰোতা)।
বচ্চেবালী (স্ত্ৰী)।

লড়খড়ানা—(ক্রি অ) খৰক-বৰক হোৱা, কঁপা।
ডগমগানা।

লড়না—[ক্রি অ] যুঁজা, কাজিয়া কৰা, তৰ্কাতৰ্কি কৰা, সফলতা লাভৰ বাবে কাৰো বিৰুদ্ধে চেষ্টা কৰা।
भिड़ना। झगड़ा या तकरार करना। बहस करना। टकराना। सफलता प्राप्त करने के लिये किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना।

লড়াই—(সং স্ত্ৰী) যুঁজ, কাজিয়া-পেছাল, বিৰোধ।
संग्राम। झगड़ा। वाद-विवाद। विरोध।

লড়াকা—[বি] যুঁজাৰু, কাজিয়া কৰা, মনোবৃত্তিৰ লোক।
योद्धा। झगडाल।

লড়ৈতা—[বি] মৰমৰ, চেনেহৰ, যুঁজাৰু।
दुलारा। प्रिय। योद्धा।

লড্ডু—[সং পুং] লাড়ু।
মাৰক।

লত—(সং স্ত্ৰী) বদ্ অভ্যাস।
অভ্যাস।
बुरी आदत। आदत।

লত-খোৰ—(বি) লাঠি খোৱা, দুৰ্দ্দশা ভোগ কৰিবলগীয়া লোক, নীচ।
प्राय: लात खाने या दुर्दशा भोगने वाला। नीच।

লত-খোৰা—(সং পুং) ভৰি মোছা কাপোৰ, নীচ, লাঠি খোৱা লোক।
पैर पोंछने का कपड़ा। लतखोर।

লত-মৰ্দ্দন—(সং স্ত্ৰী) ভৰিৰে মোহৰা।
पैरसे रौंदने की क्रिया या भाव।

লতৰ—(সং স্ত্ৰী) লতা।
लता।

লতাড়, লথাড়—[সং স্ত্ৰী] গমকি, ভৰিৰে গচ্ছকা।
लताड़ने की क्रिया या भाव। झिडकी।

লতাড়না—(ক্রি স) ভৰিৰে গছকা, বিৰক্ত কৰা, ধমকি দিয়া ।
पैरोंसे कुचलना । तंग करना । झिड़की देना ।

लतिका—[सं स्त्री] সৰু লতা, লতিকা ।
छोटी लता ।

लतियाना—(ক্রি স) লঠিওৱা, ভৰিৰে পিহা, লাঠি মাৰা ।
पैरोंसे दबाना । लात मारना ।

लतीफा—(सं पुं) হাস্যৰসৰ লঘু-কথা (সৰু গল্প)।
चुटकुला ।

लत्ता—(सं पुं) ফটা-চিটা কাপোৰ, ফটা কাণি ।
फटा पुराना कपड़ा या उसका चीथड़ा ।

लथ-पथ—(वि) তিতা, (বোকা আদিৰে)লুতুৰি-পুতুৰি ।
भीगा हुआ । [कीचड़ आदि से] सना हुआ ।

लथेड़ना—[ক্রি স] বোকা মাটি সানি লেতেৰা কৰা, মাটিত পেলাই লৈ মোহৰা বা পিহা, বিৰক্ত কৰা, ধমকি দিয়া ।
धूल मिट्टी लगाकर मैला या गंदा करना । जमीन पर पटक कर घसीटना । तंग करना । डाँटना ।

लदना—(ক্রি अ) বোজাই দিয়া ।
किसी पर माल आदि चीजें रखा या लादा जाना ;
(वि) ভাৰবাহী ।
बोझ ढोनेवाला ।

लदनी, लदान—(सं स्त्री) বোজাই, বোজাই দিয়া ।
लादने की क्रिया या भाव ।
वाहनोंपर माल लादना ।

लदनुआँ—(वि) ভাৰবাহী জন্তু, বোজাই দিওঁতা ।
माल, बोझ आदि लादनेवाला ।
(पशु) जिसपर बोझ लादा जाता हो ।

लदाई—(सं स्त्री) বোজাই, বোজাই দিয়া বাবে পোৱা পাৰিশ্ৰমিক ।
लादनेकी क्रिया भाव या मजदूरी ।

लद्दू—(वि) ভাৰবাহী জন্তু ।
जिसपर बोझ लादा जाय (पशु)

लपकना—[ক্রি अ] তৎক্ষণাৎ নাইবা বেগেৰে আগুৱা ।
झपटकर या तेजीसे आगे बढ़ना ।
भाव (लपक ।

लपका— [सं पुं] কু অভ্যাস ।
लत । चस्का ।

लपट—[सं स्त्री] জুই শিখা, গৰম বতাহ, গোন্ধ ।
अग्नि शिखा । गरम हवा का झोंका । गंध ।

लपटना—[क्रि अ] আলিঙ্গন কৰা, সূতা আদি লোৱা ।
लिपटना । (क्रि स—लपटाना)

लपना-(क्रि अ)লিকুলিকিয়া, একতীয়া হোৱা, হলা, পাতল হোৱা, বিৰক্ত হোৱা, অৱশ হোৱা ।
इधर उधर या ऊपर नीचे लचना या झुकना । लपकना । हैरान होना ।

लपलपाना-[क्रि अ] লিকুলিকোৱা, একতীয়া হোৱা, ছুৰী, তৰোৱাল আদি জিকমিক কৰা ।
लपना छुरी तलवार आदि का चमकना ।
[क्रि स] ছুৰী. তৰোৱাল আদি জিকমিকোৱা, জিভা লপলপ কৰা ।
छुरी, तलवार आदिका चमकाना । जीभ बाहर भीतर करना ।

लपसी—(सं स्त्री) অলপ ঘিউ দি তৈয়াৰ কৰা লেতেকা হালোৱা ।
एक प्रकारका पतला हलुआ ।

लपेट—[सं स्त्री] মেৰোৱা কাৰ্য্য, পাক, বেৰ, জঞ্জাল ।
लपेटने की क्रिया या भाव । ऐंठन । घेरा । उलझन ।

लपेटना—[क्रि स] মেৰোৱা, সূতা আদিৰ লেছা কৰা, জঞ্জাল আদিত কাকো দায়ী কৰি তেওঁক নিজৰ লগ লগোৱা—সাঙোৰা ।
घुमाते हुए चारों ओर लगाना । सूत आदि लच्छेके रूपमें करना । उलझन या झंझटके लिये किसी को उत्तरदायी बनाकर उसे अपने साथ लगाना ।

लफंगा—[वि] বদমাচ, লম্পট ।
लंपट । बदमाश ।

लफ्ज—[सं पुं] শব্দ ।
शब्द ।

लबादा—[सं पुं] চোলা ।
चोंगा (पहनावा)

लबार—(वि) মিছা, মিছলীয়া ।
झूठा । गप्पी ।

লবাৰী, লবালী—(সং স্ত্ৰী) মিছা আৰু ব্যৰ্থ কথাৰে বঢ়াই কোৱা।
व्यर्थ की झूठी और बहुत बढ़ चढ़कर बातें करना।

লবালব—[বি] চপচপীয়া মুখলৈকে পূৰ বা ভৰা, কাণৰ সমানলৈকে ভৰা।
ऊपर या किनारे तक भरा हुआ। छलकता हुआ।

লবেদ—(সং পুং) লোক প্ৰচলিত অশ্লীল কথা বা প্ৰথা।
लोकाचार की भद्दी या भोंडी बात या प्रथा।

লব্ধ-প্ৰতিষ্ঠ—[বি] লব্ধ প্ৰতিষ্ঠ, প্ৰতিষ্ঠিত।
प्रतिष्ठित।

লভ্য—(বি) পাবলগীয়া, পোৱাৰ যোগ্য, লভ্য।
जो मिल सके। मुनासिब।

লভ্যাংশ—[সং পুং] লাভ, লভ্যাংশ।
मुनाफा।

লমছড়—[বি] বৰ দীঘল।
बहुत लंबा।
(सं पुं) বৰ্শা, বল্লম।
भाला। बरछा।

লম-তড়ং (লম ধড়ং)—(বি) বৰ দীঘল বা ওখ।
बहुत लम्बा या ऊँचा।

লমধী—(সং পুং) বিয়েৰ দেউতাক। বিয়েৰ অইন বিয়েয়েক।
समधीका बाप। समधीका दूसरा समधी।

লমহা—(সং পুং) ক্ষণ, মুহূৰ্ত্ত।
क्षण।

লয়—(সং পুং) নাশ, লীন যোৱা, একে লগ হোৱা, প্ৰলয়, আশ্ৰয়, বিশ্ৰাম, সুৰ আৰু তালৰ সঙ্গতি, গীত-বাদ্যৰ তাল, মান আৰু নাচৰ পৰস্পৰ মিল।
विलीन होना। ध्यानमें लीन होना। प्रलय। विश्राम। रहने का स्थान। गाने की धुन। संगीत की तान।

লৰিকা—[সং পুং] ল'ৰা।
लड़का।

ললক (ন)—(সং স্ত্ৰী) বলবতী ইচ্ছা, গভীৰ কামনা, লালসা।
ललकने की क्रिया या भाव।

ললকনা— (ক্ৰি অ) বৰকৈ লালসা কৰা, প্ৰেমে পূৰ্ণ হোৱা, আবেগ পূৰ্ণ হোৱা।

बहुत अधिक लालसा करना। प्रेम या चाहसे भरना। उमंग या जोशमें आना।

ललकार—(सं स्त्री) যুঁজৰ বাবে জনোৱা আহ্বান।
ललकारने की क्रिया या भाव।

ललकारना—(क्रि स) যুঁজৰ বাবে প্ৰত্যাহ্বান জনোৱা, চিঞৰি যুঁজিবলৈ মতা বা নিমন্ত্ৰণ কৰা।
अपने साथ लड़ने या किसीपर आक्रमण करनेके लिये चिल्लाकर बुलाना या कहना।

ललचना—(क्रि अ) লোভ কৰা, লালচ কৰা।
लालच करना।

ललचाना—[क्रि स] কাৰো মনত লোভ বা লালচ জন্মোৱা।
किसीके मनमें लालच उत्पन्न करना।

ललन, लला—[सं पुं] মৰমৰ, বাছাধন, স্বামী বা নায়ক।
प्यारा, बच्चा। नायक या पति।

ललना—[सं स्त्री] সুন্দৰী তিৰোতা, ললনা।
सुन्दर स्त्री।

ललाई—(सं स्त्री) ৰঙা ৰং। ৰক্তিম।
लालिमा। लाली।

ललाट—[सं पुं] মূৰ, ভাগ্য।
मस्तक। भाग्य।

ललाम—(वि) ৰমণীয়, ৰঙা, শ্ৰেষ্ঠ।
रमणीय। लाल। श्रेष्ठ।

ललामी—[सं स्त्री] সুন্দৰতা, সৌন্দৰ্য্য। ৰক্তিম।
सुन्दरता। लाली।

ललित—[सं स्त्री] মনোৰম, সুন্দৰ, সুকোমল, এক অৰ্থালঙ্কাৰ।
सुन्दर। प्रिय। एक अलंकार। मनोहर अंग भंगी।

लली—(सं स्त्री) ছোৱালীক মৰমৰ সম্বোধন, নায়িকা, প্ৰেমিকা।
'लड़की' का वाचक प्यार का शब्द : नायिका। प्रेमिका।

लल्लो—[सं स्त्री] জিভা।
जीभ। जबान।

लल्लो-चप्पो—(सं स्त्री) চাটুকাৰী কথা, কুচুলনি পূৰ্ণ কথা।
चिकनी चुपड़ी और खुशामद की बातें।

लवंग—(सं पुं) লং।
लौंग (मसाला)

लव—[सं पुं] অলপ পৰিমাণৰ, ক্ষণমাত্ৰ।
बहुत छोटी मात्रा। क्षणभर का समय।

लवण (न)—[सं पुं] নিমখ।
नमक।

लवनी—[सं स्त्री] মাখন, পকা শস্য কটা কাৰ্য্য।
अनाज की पकी फसल काटने की क्रिया। मक्खन।

लवलीन—(वि) তন্ময়, মগ্ন।
तन्मय। मग्न।

लव-लेश—(सं पुं) লেশ, সংসৰ্গ, অকণমান।
बहुत थोड़ा अंश या संसर्ग।

लवा—[सं पुं] পক্ষী বিশেষ, ধান আদিৰ আখৈ।
तीतरकी जातिका एक पक्षी। धान आदिका लावा।
(वि) লগাওঁতা।
लगानेवाला।

लशकर (लश्कर)—[सं पुं] সৈন্য, সৈন্যৰ ছাউনি, শিবিৰ, সেনা-নিবাস। फौज। सेना की छावनी।

लशकर [लश्करी]—(वि) সেনা সম্বন্ধীয়।
लशकर सम्बन्धी। लशकर का।
(सं पुं) সৈনিক, জাহাজত কাম কৰা লোক।
वह जो लशकरमें काम करता हो।

लस—(सं पुं) চিকমিকীয়া, লাগি ধৰা গুণ, এঠা. লেপ-লেপীয়া, জেপেটীয়া, বিজুলীয়া।
लासा।

लसना—[क्रि स] লাগি ধৰা, ওপৰত থোৱা।
चिपकाना। ऊपर रखना।
(क्रि अ) এঠা লাগি ধৰা, শুৱনি হোৱা।
चिपकना। शोभित होना।

लसित—(वि) সুশোভিত।
सुशोभित।

लसी—[सं स्त्री] এঠা আদি, মন বহা, প্ৰাপ্তি অথবা লাভ যোগ, দৈবে তৈয়াৰী চৰ্ব্বত বিশেষ।
लस। मन लगनेकी बात। प्राप्ति या लाभ का योग। लगाव। लस्सी।

लसीका—(सं स्त्री) थु, थुइ। थूक। पीब।

लसीला—(वि धुनीया, জেপে-টীযা। জেপ জেপীযা। जिसमें लस हो। मनोहर।

लस्टम पस्टम—[क्रि वि] কোনো-মতে, যেনেতেনে। किसी तरहसे। जैसे तैसे।

लस्त-पस्त—[वि] বৰ ভাগবি পৰা, ক্লান্ত হোৱা। बहुत शिथिल या क्लान्त।

लस्सी—[सं स्त्री] দৈৰে তৈয়াৰী চৰ্ব্বত। मठा। दही घोलकर बनाया गया पेय।

लहँगा—(सं पुं) লহঙ্গা, ঘুৰী মেখেলা ফেৰমেলা। घाघरे की तरहका एक पहनावा। साया।

लहकना—(क्रि अ) জুই কুওৱা, বৈ বৈ লৰ চৰ কৰা। आग सुलगना। रह रहकर हिलना। [क्रि स—लहकाना] [क्रि स] পোৱা। प्राप्त करना।

लहना—[सं पुं] ধাৰ দিয়া বা পাবলগীয়া বাকী পইচা। उधार दिया हुआ या बाकी रुपया जो मिलने को हो।

लहर—(सं स्त्री) ঢৌ। বেমাৰ আদিত বৈ বৈ উক্ দিয়া গতি, আনন্দৰ আবেগ, বক্ৰৰেখা। तरंग। उमंग। रोग या पीड़ा आदिका रहरहकर होनेवाला वेग। आनन्द की उमङ्ग। टेढी तिरछी चाल या रेखा।

लहरना—(क्रि अ) তৰঙ্গিত হোৱা, ঢৌ খেলা। तरंगित होना।

लहरा—(सं पुं) ঢৌ, আনন্দ, নৃত্য-গীতৰ আগতে বজোৱা বাদ্য সঙ্গীত। लहर। आनन्द। नाच या गाना आरम्भ होने से पहले सारंगी, तबले आदि साजोंपर बजने वाली गत।

लहराना—(क्रि अ) ঢৌ খেলা, মনত ভাব উথলি উঠা, জুই জলি উঠি হোৱা ভুষিতা। लहरें खाना। तरंगे उठना। मनका उमंगमें होना। आग भड़कना या सुलगना। शोभित होना।

[ক্রি স] ঢৌৰ দৰে ইফালে সিফালে লৰ চৰ কৰা, বক্র-গতিৰে যোৱা বা লৈ যোৱা।
लहरों की तरह इधर उधर हिलाना। टेढ़ी चालसे चलाना या ले जाना।

লহৰী—(সং স্ত্রী) ঢৌ, স্বৰ-লহৰী।
तरंग। स्वर तरंग
(বি) আপোন-ভোলা, সদায় প্রসন্ন আৰু সুখ ভোগ কৰোঁতা।
मन मौजी। सदा प्रसन्न रहने और सुख भोग करनेवाला।

লহলহনা—[ক্রি অ] লহপহীয়া হোৱা, লহ লহকৈ বাঢ়ি অহা, আনন্দিত হোৱা।
हरी पत्तियोंसे युक्त या हरा भरा होना। प्रफुल्लित या प्रसन्न होना।

লহসুন—[সং পুং] নহৰু।
एक पौधा जिसकी जड़ मसाले के काममें आती है।

লহা-ছেহ—[স পুং] নাচৰ গতি বিশেষ। চঞ্চলতা।
नाचनेमें एक प्रकारकी गति। फुर्ती। चंचलता।

[বি] তীব্ৰ গতিৰ। চঞ্চল।
तीव्र गतिवाला। चंचल

লহু—(সং পুং) তেজ।
रक्त।

লহু-লুহান—(বি) তেজেৰে লুতুৰি-পুতুৰি, তেজে তুম্‌ৰলি হোৱা।
चोट आदिके कारण जिसका सारा शरीर लहूसे भर गया हो।

লাংঘনা—(ক্রি স) পাৰ হোৱা। [জপিয়াই বা সাঁতুৰি]।
इसपार से उसपार जाना। ऊपर से डाँकना।

লাংছন—[সং পুং] দোষ, চিন, দাগ, লাঞ্ছণ।
दोष। चिह्न। निशान। दाग।

লাই—[সং স্ত্রী] আথে, পৰনিন্দা।
खल या कूट। धानका लावा। चुगली

লাক্ষা—(সং স্ত্রী) লাখ, লা।
लाख। लाह।

লাক্ষাগৃহ—(সং পুং) পাণ্ডৱসকলক বধ কৰাৰ উদ্দেশ্যে দুৰ্য্যোধনে লাৰে সজোৱা ঘৰটো।
लाहका बना हुआ वह घर जो दुर्योधन ने पांडवों को जला डालने के लिये बनवाया था।

লা-খিৰাজ—[বি] নিকৰ মাটি, লাখেৰাজ।
जमीन जिसका खिराज या लगान न देना पड़े।

লাগ— (সং স্ত্ৰী) সম্পৰ্ক, মৰম, কাজিয়া লগা।
सम्पर्क। प्रीति। लगन। मुठभेड़।
(ক্রি বি) লৈ।
तक।
[অব্যয়] কাৰণে।
लिए। वास्ते।

লাগ-ভাঁট—(সং স্ত্ৰী) শত্ৰুতা, প্ৰতিযোগিতা।
शत्रुता। प्रतियोगिता।

লাগত—[সং স্ত্ৰী] মূল্য, খৰছেৰে।
किसी चीज की तैयारी या बनाने में होने या लगनेवाला व्यय।

লাগি— (অব্য) কাৰণে, ৰে।
कारण। वास्ते। से।
(ক্রি বি) পৰ্য্যন্ত, লৈ।
पर्यंत। तक।
[সং স্ত্ৰী] দীঘল কাঠ।
लम्बी लकड़ी।

লাগু—[বি] প্ৰযোজ্য, ব্যৱহাৰ, প্ৰয়োগ, যাক প্ৰয়োগ কৰা হয়, যাৰ হতুৱাই কোনো কাম কৰোৱা হয়।
जो कहीं लग सके या प्रयुक्त हो सके। जो कहीं प्रयुक्त किया या लगाया गया हो। जो कहीं लगाया जा सकता हो या लगाया जानेको हो।

লাঘৱ — (সং পুং) কম, লঘুতা, উপশম, হ্ৰাস, হাতৰ কৌশল।
लघुता। कमी। हस्त कौशल।

লাচাৰ— [বি] বিবুধি, নিৰুপায বাধ্য, অসমৰ্থ।
विवश। मजबूर। असमर्थ।
(ক্রি বি)নিৰুপায হৈ, বাধ্য হৈ।
विवश होकर।

লাচাৰী—(সং স্ত্ৰী) বিবশতা, দুৰ্ব্বলতা।
विवशता।

লা-জবাব— [বি] অনুপম, নিৰুত্তৰ।
अनुपम।

লাজা—(সং স্ত্ৰী) আখৈ, খৈ।
धान आदि का लावा।

লাজিম (মী)— [বি] আৱশ্যক, অনিবাৰ্য্য, উচিত।
आवश्यक। अनिवार्य। मुनासिब।

लाट— (सं स्त्री) ডাঙৰ আৰু ওখ শিল, ধাতু অথবা কাঠৰ খুটা নাইবা স্তম্ভ ।

मोटा, ऊँचा और बहुत बड़ खंभा या इस आकारकी कोई इमारत ।

लाड (ड़)—[सं पुं] মৰম, ল'ৰা-ছোৱালীৰ নিচুকনি ।

बच्चों के साथ किया जानेवाला प्रेमपूर्ण व्यवहार । दुलार ।

लाड़ला—[वि] মৰমৰ, চেনেহৰ ।

दुलारा ।

लात—(सं स्त्री) লাথি, গোৰ, ভৰিৰে কৰা আঘাত ।

पैर । पैर से किया जानेवाला आघात ।

लाद— (सं स्त्री) বোজাই দিয়া কাৰ্য্য, পেট, অন্ত্ৰ ।

लादने की क्रिया या भाव । पेट । आँत ।

लादना—(क्रि स) বোজাই দিয়া, দায়িত্ব গটোৱা, ভাৰ অৰ্পণ কৰা ।

किसी के ऊपर बहुत सी चीज रखना । बोझ आदि ले जाने के लिये वस्तुएँ ऊपर रखना या भरना । देन आदि का भार रखना ।

लानत—[सं स्त्री] ধিক্কাৰ, গালি-গালাজ ।

धिक्कार ।

लाना— (क्रि स) অনা, উপস্থিত কৰোৱা, লগ লগোৱা ।

कहीं से कुछ लेकर आना । उप-स्थित करना । जलाना । संलग्न करना ।

लाने—(अव्य) কাৰণে, নিমিত্তে ।

वास्ते । लिये ।

ला-पता –[वि] নিৰুদ্দেশ, হেৰোৱা, খবৰ নোহোৱা ।

जिसका पता न लगे या न हो ।

ला-परवाह—(वि) নিশ্চিন্ত, দায়িত্ব হীন ।

बे-फिक्र ।

लाम—(सं पुं) সেনা, দল, সমূহ ।

सेना । भीड़ । समूह ।

लायक— (वि) উচিত, ঠিক, সুযোগ্য, সমৰ্থ ।

उचित । ठीक । मुनासिब । सुयोग्य । सामर्थ्यवान ।

लार— [सं स्त्री] লাল, লালটি, লেলাৱটি, শ্ৰেণী, শাৰী ।

मुँह से निकलनेवाली पतली लस-
दार वस्तु । पंक्ति, कतार ।
(अव्य) সৈতে ।
संग । साथ ।
[ক্রি বি] সৈতে, পিছত ।
साथ । पीछे ।

लाल—[सं पुं] প্ৰিয়তম লোক, মৰমৰ সম্বোধন, ৰত্ন ।
बेटा । प्यारा लड़का या आदमी । किसी प्रिय व्यक्ति के लिये सम्बोधन । मानिक । रत्न
(वि) ৰঙাবৰণ, বৰ খং, খেলত প্ৰথম জয়ী হোৱা খেলুৱৈ ।
रक्त वर्ण का । बहुत क्रुद्ध । खेलमें पहले जीतनेवाला खिलाड़ी ।

लालच, लालस— (सं स्त्री) লালসা, লোভ, হেপাহ ।
कुछ पाने की बहुत अधिक और अनुचित इच्छा । लोभ ।

लालचा—(वि) লোভী ।
लोभी ।

लालटेन—(सं स्त्री) লেম্প, লণ্ঠন
कंदील।

लालबुझक्कड़—[सं पुं] অৰ্থ বুজাকৈ মূৰ্খ ভাবে কোনো কথাৰ অৰ্থ কৰা লোক, অগম্য কথাও বুজাবুলি দাবী কৰা লোক ।
बातोंका अटकल पच्चू और मूर्खतापूर्ण मतलब लगाने या अनुमान करनेवाला ।

लालसा—[सं स्त्री] লোভ, হেপাহ ।
कुछ पाने की बहुत अधिक इच्छा या चाह ।

लाला—[सं पुं] মহাশয়, সম্বোধন, ব্যবসায়ীলোক ।
महाशय । एक आदर सूचक सम्बोधन ।
(सं स्त्री) লাল, থুই ।
लार । थूक ।

लालायित—[वि] লালায়িত, ৰবকৈ হেপাহ কৰা ।
जिसे बहुत लालसा हो ।

लालित्य—[सं पुं] মধুৰতা, শুনিবলৈ শুৱলা গুণ, লালিত্য ।
सरसता पूर्ण । सुन्दरता ।

लालिमा—[सं स्त्री] ৰক্তিম, ৰঙা হোৱা । लाल होने का भाव ।

लाली—[सं स्त्री] ৰক্তিম, প্ৰতিষ্ঠা, গৌৰৱ।
लालपन। प्रतिष्ठा। गौरव।

लाले—[सं पुं] অভিলাষ, ইচ্ছা।
अभिलाषा।

लाले पड़ना(मु॰)—অভাৱহোৱা।
अभाव होना।

लावण्य—[सं पुं] নিমখীয়া, কোমলতাৰে পূৰ্ণ সৌন্দৰ্য্য।
'लवण' का भाव या धर्म। सरस सुन्दरता।

लावनी—(सं स्त्री) লোকগীত বিশেষ।
एक प्रकार का लोकगीत।

लाव-लश्कर—[सं पुं] সৈন্য-সামগ্ৰী।
सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।

लावा—[सं पुं] পক্ষী বিশেষ, আখৈ, ধান কটা বনুৱা।
लवा पक्षी। धान आदिकी खील। फसल काटनेवाला मजदूर।

ला-वारिस—(वि) উত্তৰাধিকাৰী নোহোৱা লোক, মালিক নোহোৱা, গৰাকী বিহীন, (বস্তু)।
जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो। (वस्तु) जिसका कोई मालिक न हो।

लाश—(सं स्त्री) মৰা শ।
मृत शरीर। शव।

लास, लास्य—(सं पुं) নৃত্য, লাহ, লাস, ৰস।
नृत्य। शृंगार आदि कोमल रसोंका उद्दीपन करनेवाला कोमल और स्त्रियों का सा नृत्य।

लासा—(सं पुं) লেপলেপীয়া, জেপেটীয়া বস্তু, ৰসথকা বস্তু।
कोई लसदार चीज। जिससे कागज आदि चिपकाया जाता है।

लाहु—(सं पुं) লাভ।
लाभ।

लिए—(अव्य) সম্প্ৰদান কাৰকৰ বিভক্তি, কাৰণে।
सम्प्रदान कारकका चिह्न। हेतु।

लिक्खाड़—[सं पुं] ডাঙৰ লেখক (ব্যঙ্গোক্তি)।
बहुत बड़ा लेखक। (व्यंग्य)

लिखना—(क्रि स) লিখা, চিত্ৰ আঁকা, কিতাপ, প্ৰবন্ধ, কাব্য আদি ৰচনা কৰা।

লিপিবদ্ধ করনা। চিত্র বনানা। গ্রংথ, লেখ, কাব্য আদিকী রচনা করনা। (প্রে০-লিখানা)

লিখা—(বি) লিখিব জনা। জিসে লিখনা আতা হো।
[সং পুং] লিখিত বচনা। লিখিত লেখ।

লিখাই - [সং স্ত্রী] লিখনি, চিত্র আদিৰ অঙ্কন কাৰ্য্য।
লিখনেকা কার্য, ভাব, ঢংগ যা পারিশ্রমিক। চিত্র অংকিত করনে কী ক্রিয়া যা ভাব।

লিখা-পঢ়ী—(সং স্ত্রী) লিখা-পঢ়া, চিঠি-পত্রৰ আদান প্রদান, কোনো কথা পকা বন্দোবস্ত কৰিবৰ বাবে সম্পাদিত হোৱা লিখিত কাৰ্য্য।
লিখনে ঔর পঢ়নেকা কাম। পত্র ব্যবহার। কিসী বাত যা ব্যবহার কা লিখকর নিশ্চিত ঔর পক্কা করনা যা হোনা।

লিখাবট—(সং স্ত্রী) আখৰ, লিখাৰ পদ্ধতি।
লিখনে কী ক্রিয়া ভাব যা ঢংগ।

লিটানা—[ক্রি স] শুৱাই দিয়া, মাটি-খাট আদিত দেহটো শুৱাই দিয়া।
লেটানা। কিসীকা শরীর মিট্টী যা চৌকী আদিপর ফৈলা দেনা।

লিট্ট—(সং পুং) জুইত বা অঙ্গাৰত সেকা ডাঙৰ ৰুটি।
আগপর সেঁককর পকাই হুই বড়ী ঔর মোটী রোটী। (সং স্ত্রী—লিট্টী)

লিপটানা—(ক্রি অ) আকোৱালী ধৰা, আলিঙ্গন কৰা, কামত সম্পূর্ণ মন লগোৱা।
চারো ওর সে ঘেরতে হুএ সটনা যা লগনা। আলিংগন করনা। কামমেঁ পূরী মেহনত সে লগনা। [ক্রি স—লিপটানা।]

লিপাই—(সং স্ত্রী) লিপা কাৰ্য্য, লিপন।
লীপনেকী ক্রিয়া, ভাব যা মজদূরী।

লিপ্সা—[সং স্ত্রী] পাবলৈ ইচ্ছা। পানে কী ইচ্ছা।

লিবাস—[সং পুং] পোছাক। পহননে কে কপড়ে। পোশাক।

লিয়াকত—[সং স্ত্রী] যোগ্যতা। যোগ্যতা।

লিলাট (ৰ) — (সং পুং) কপাল, ভাগ্য।
ললাট। কপাল।

लिवैया—(वि) লৈ যাওঁতা।
लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिहाज—[সং পুং] লাজ-সংকোচ, সম্মান, মৰ্য্যাদাৰ প্ৰতি লক্ষ্য, লাজ।
शील संकोच। सम्मान या मर्यादा का ध्यान। लज्जा।

लिहाड़ा—(वि) বেয়া(বস্তু), অপদাৰ্থ লোক।
खराब पदार्थ। वाहियात मनुष्य

लिहाफ—[সং পুং] লেপ, নিগালী।
भारी रजाई।

लीक—[सं स्त्री] ৰেখা, চলি অহা প্ৰথা, প্ৰতিটো, নিয়ম, সীমা, কলঙ্ক, মাটিৰ ওপৰত ৰহা গভীৰ চকাৰ লোৰ।
लकीर। रेखा। बँधी हुई मर्यादा या क्रम। प्रतिष्ठा। प्रथा। सीमा। कलंक।

लीख—[সং স্ত্ৰী] ওকণিৰ কণী।
जूँ का अंडा।

लीचड़— (वि) ঢিলা, নিকৰ্ম্মা, সহজে পিছ নেৰা লোক।
सुस्त। निकम्मा। जल्दी पीछा न छोड़नेवाला।

लीद—(সং স্ত্ৰী) জন্তু বা চৰাইৰ বিষ্ঠা।
घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीपना—(क्रि स) লিপা, লেও লোৱা বস্তু ঘঁহি লগোৱা।
गीली वस्तुका पतला लेप चढाना।

लीपा-पोती —(सं स्त्री) লিপা-পোচা, মাটি-বেৰা আদি লিপা কাৰ্য্য, দোষ, ভুল আদি লুকাবৰ বাবে কৰা প্ৰচেষ্টা, নাশ।
जमीन, दीवार आदि लीपने और पोतने का काम। दोष, भूल आदि छिपाने के लिये ऊपर से की जानेवाली या दिखोआ कार्रवाई। नाश।

लुंचन—[सं पुं]টানি চুলি উভলা।
चुटकी से बाल उखाड़ना

लुंज (१) —(वि)নিঃকলঙ্ক, আওভৰি মোহোৰা লোক, পাত আদি নোহোৱা গছ।
लंगड़ा, लूला। ठूँठ पेड़।

लुंठन—(সং পুং) মাটিত বাগৰা কাৰ্য্য, বলেৰে লোকৰ বস্তু অপহৰণ কৰি নিয়া কাৰ্য্য।
लुढ़कना। लूटना।

লুঁড়া--(বি) নেজ-পাখি নোহোৱা চৰাই, নেজৰ চোঁৱৰত নোম নথকা গৰু আদি।
पक्षी जिसकी दुम और पर झड़ गये हों।

লুআঠা-(সং পুং) আধাপোৰা খৰি।
जलती हुई लकड़ी। (सं स्त्री--लुआठी)।

লুআৰ--(সং পুং) এঠা।
लासा।

লুকনা--[ক্রি অ] লুকোৱা।
छिपना।

লুকানা--(ক্রি অ) লুকা-ভুমুকা।
लुकना-छिपना।
[ক্রি স] আঁৰত লুকোৱা।
आड़ में करना।

লুগদী--[সং স্ত্রী] সৰু পনীয়া পিণ্ড।
छोटा गीला पिंड।

লুগাই-(সং স্ত্রী)স্ত্রী, তিৰোতা, পত্নী।
स्त्री। औरत।

লুচ্চা--[বি] বদমাচ, নীচ, লুচ্ছা, কামুক।
नीच और पाजी। बदमाश।
[सं स्त्री--लुच्ची]

লুটনা--[ক্রি অ] লুণ্ঠিত হোৱা।
लूटा जाना।

লুটানা--(ক্রি স) লুটোৱা, অইনক লুটিবলৈ দিয়া, বৰ সস্তাত বিক্রী কৰা, অনাহকত খৰচ কৰা।
दूसरों को लूटने देना। बहुत सस्ते दाम पर बेचना। व्यर्थ बहुत अधिक व्यय करना।

লুটিয়া--(সং স্ত্রী) সৰু লোটা।
छोटा लोटा।

লুটেৰা, লুটক--(সং পুং) লুটিয়াৰ, ডকাইত।
लूटनेवाला।

লুঢ়কনা, লুঢ়না--[ক্রি অ] মাটিত বাগৰা।
ढुलकना।

লুনৰা--(বি টুটকীয়া, বদমাচ।
चुगल खोर। पाजी।

লুননা--(ক্রিস) পকা শস্য কটা।
खेत से पकी फसल काटना।
(सं स्त्री-लुनाई)

লুভানা--(ক্রি অ ক্রি স) মোহিত হোৱা,আকৰ্ষিত হোৱা, আনন্দিত হোৱা, লালচ দেখুৱা।
मोहित होना या करना। रीझना या रिझाना। ललचाना।

लुरकी—[सं स्त्री] কাণৰ বালা, কাণৰ ফুলৰ দৰে অলঙ্কাৰ বিশেষ ।

कान की बाली (गहना) ।

लुरना—[क्रि अ] ওলমা, ওলমি পৰা, মাটিত বাগৰা, হঠাতে আহি উপস্থিত হোৱা ।

झूलना । लटकना । ढल या झुक पडना । जमीन पर इधर उधर लोटना । अचानक आ पहुँचना ।

लुहार—[सं पुं] কমাৰ ।

लोहार ।

लू—(सं स्त्री) গৰম বতাহ ।

गरम और तेज हवा ।

लूक—(सं स्त्री) জুইৰ শিখা, আধা পোৰা কাঠ। উল্কা, গৰম বতাহ ।

आग की लपट । जलती हुई लकड़ी । उल्का । लू ।

लूट—[सं स्त्री] লুটপাত । লুটপাত কৰি অনা বস্তু ।

लूटने की क्रिया या भाव । लूटने से मिला हुआ माल ।

लूटखसोट—(सं स्त्री) লুটপাত কৰা, বলেৰে মালবস্তু কাঢ়ি অনা ।

लोगों को लूटना और उनका माल छीनना ।

लूटना—(क्रि स) ডাবি ধমকি দি বা মাৰধৰ কৰি ধন সম্পত্তি কাঢ়ি অনা, ঠগোৱা লুট কৰা ।

किसी को मार या डरा-धमका कर उसका धन ले लेना । ठगना ।

लूता—[सं स्त्री] মকৰা, স্ফুলিঙ্গ । জুইশিখা ।

मकड़ी । स्फुलिंग । लूका ।

लूम—[सं पुं] নেজ, ৰাগ বিশেষ ।

पूँछ । एक राग ।

लूला—[वि]হাত-কটা যোৱা মানুহ । অসমৰ্থ, দুৰ্ব্বল ।

जिसका हाथ कटा हो । असमर्थ ।

लेंड़ी—(सं स्त्री) ছাগলী উট আদিৰ লাদ ।

बंधे हुए मल की कंडी । बकरी या ऊँट की मेंगनी ।

लेंहड़ (I)-(सं पुं) জন্তু আদিৰ দল বা জাক ।

पशुओं का झुंड या दल ।

लेई—[सं स्त्री] লেই । আটাগুৰি সিজাই তৈয়াৰ কৰা কঁৰাল ।

गाढ़ा उबाला हुआ मैदा जो

कागज आदि चिपकाने के काम में आता है। अवलेह।

लेख-[सं पुं] ৰচনা, আখৰ, লিপি। मजमून। लिखावट। लिपि। [सं स्त्री] পকা কথা, ৰেখা (অমিট)। अमिट या पक्की बात।

लेखना—(क्रि स) লিখা, গণনা কৰা, চিন্তা কৰা। लिखना। कुछ समझना या गिनना। विचारना।

लेखनी-[सं स्त्री] কলম। कलम।

लेखा—(सं पुं) হিচাব, গণনা, বিৱৰণ। हिसाब। गणना। विवरण। (सं स्त्री) ৰচনা, চিত্ৰ, শাৰী, কিৰণ। लेख। चित्र। रेखा। पंक्ति। किरण।

लेखा-बही—(सं स्त्री) হিচাব লেখা বহী। वह बही जिसमें आय व्यय आदि का हिसाब लिखा जाता हो। (अं—एकाउंट-बुक)

लेटना—(क्रि अ) বাগৰা, মজিয়া আদিত পিঠি লগাই বাগৰি থকা। फर्श आदि से पीठ लगाकर सारा शरीर उसपर ठहराना। बगल की ओर झुक कर जमीन पर गिर जाना।

लेन—(सं पुं) লোৱা, পাবলগীয়া। लेने की क्रिया या भाव। वह धन जो किसी से लिया जाने को हो। भावना।

लेनदार—(सं पुं) ধন ধাৰে দিয়া বা পাওনা বাকী থকা। जिसका कुछ धन या पावना बाकी हो।

लेन-देन—[सं पुं] অনা নিয়া, বেচা-কিনা, কাৰবাৰ, সংসৰ্গ। लेने और देने का व्यवहार।

लेना-(क्रि स) লোৱা, গ্ৰহণ কৰা, ধৰা, দাম দি লোৱা, দায়িত্ব লোৱা। ग्रहण या प्राप्त करना। पकड़ना। मोल लेना। जिम्मे लेना।

लेप—(सं पुं) লেপ, লিপি দিয়া দৰব।

लीपने, पोतने या चुपड़ने की चीज ।

लेपना—[क्रि स] লেও লগোৱা ।
लेप लगाना ।

लेलिहान-[सं पुं] সাপ ।
साँप ।
(वि) ওলাই থকা, মেলি থকা, লেলিহান ।
बार बार चखने या चाटनेवाला ।
ललचाया हुआ ।

लेवा-[सं पुं] লেও, নিহালী ।
मिट्टी का वह लेप जो बर्तन को आग पर चढाने से पहले उसकी पेंदी में लगाते है । लेप । कंथा ।
[वि] লওঁতা ।
लेनेवाला ।

लेश-(सं पुं) অণু, অকণমানৰ, চিহ্ন, সম্বন্ধ, অলঙ্কাৰ বিশেষ ।
अणु । बहुत ही थोड़ा अंश । निशान । सम्बन्ध । एक अलंकार ।

लेह—[सं पुं] চেলেকি খোৱা ঔষধ, চাটনী ।
चाटकर खायी जानेवाली चीज । चटनी ।

लेहन—(स पुं) চেলেকি খোৱা কাৰ্য্য ।
चखने या चाटनेकी क्रिया या भाव ।

लेह्य—[वि] চেলেকি খোৱা খাদ্য, লেহ্য ।
जो चाटकर खाया जाता हो ।

लै—(अव्य) লৈ ।
तक ।

लैस—(वि) অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰৰে সজ্জিত । সকলো প্ৰকাৰে সাজু ।
हथियारों आदिसे सजा हुआ । सब तरह से तैयार ।
(सं पुं) কাপোৰত লগোৱা ফিটা ।
कपड़ेपर लगाने का फीता ।

लोंदा—[क्रि स] পনীয়া বস্তুৰ লাড ।
गीले पदार्थ का पिंड ।

लोई—[सं स्त्री] ৰুটীৰ বাবে তৈয়াৰী আটাৰ লাড় ।
गुँधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेल कर रोटी बनाई जाती है ।
[सं पुं] জন সমূহ ।
जन समुदाय ।

लोक—(सं पुं) লোক, সংসাৰ জনতা । ভুবন । পৃথিৱী, স্বৰ্গ, আৰু পাতাল এই তিনিৰ এটা ।
पृथ्वी के ऊपर नीचे कुछ कल्पित स्थान । संसार । जनता ।

लोक-तन्त्र—[सं पुं] গণ তন্ত্ৰ ।
गणतंत्र ।

लोकना—(क्रि स) ওপৰৰ পৰি যোৱা বস্তু হাতেৰে ধৰি ৰখা । মাজতে কাঢ়ি লোৱা ।
ऊपर से गिरती हुई चीज हाथोंमें रोकना । बीच में से ही उड़ा ले जाना ।

लोकमत—(सं पुं) জনমত ।
जन-मत ।

लोक-सत्ता—(सं स्त्री) জনস্বত্বা, জনতাৰ অধিকাৰ ।
जन सत्ता ।

लोकाचार—(सं पुं) লোকে বা কোনো ঠাইৰ মানুহে কৰা আচাৰ-ব্যবহাৰ ।
जनता में प्रचलित व्यवहार ।

लोकापवाद—[सं पुं] জনসমাজত হোৱা বদনাম ।
लोगों में होनेवाली बदनामी ।

लोकायत—[सं पुं] চাৰ্ব্বাক পন্থী, চাৰ্ব্বাক দৰ্শন ।
एक दर्शन जिसे चार्वाक ने चलाया था ।

लोकालोक—[सं पु] চক্ৰবাল, দিগ্বলয় ৰেখা, জগতক বেৰি থকা কাল্পনিক পৰ্ব্বত বিশেষ ।
ब्रह्माडं में फैले हुए अनन्त लोक । सातों समुद्रों को परिवेष्टित करने वाली पौराणिक पर्वत श्रेणी ।

लोकेश (श्वर)—(सं पुं) ঈশ্বৰ ।
सब लोकों का स्वामी, ईश्वर ।

लोकोक्ति—(सं स्त्री) ফকৰা ।
कहावत ।

लोकोत्तर—[वि] অলৌকিক ।
अलौकिक ।

लोग—(स पुं)জন সমূহ, লোক ।
जन-समूह ।

लोच—(सं स्त्री) ঢিলা, কোমল, অভিলাষা ।
लचक । कोमलतापूर्ण सौन्दर्य । अभिलाषा ।

लोचन—(सं पुं) চকু ।
आँख ।

लोटन—(वि) বাগৰা ।
लोटनेवाला ।

[सं स्त्री] बागৰা কার্য্য, কাঁইটীয়া জঙ্গল ।
लोटने की क्रिया या भाव ।
कँटीली झाड़ी ।

[सं पुं] মাটিত বাগৰা । এক প্ৰকাৰৰ পাৰ চৰাই। সাপ।
एक प्रकार का कबूतर जो जमीन पर लुढ़का देने से लोटने लगता है । साँप ।

लोटना—(क्रि स) বাগৰা ।
चित्त और पट होते हुए इधर उधर करना । लुढ़कना ।

लोट-पोट—[सं स्त्री] বাগৰা অথবা বিশ্রাম কৰা কার্য্য ।
लेटने या आराम करने की क्रिया या भाव ।

(वि) হাঁহি বা আনন্দত অধীৰ হোৱা,খুব বেচি আনন্দিত।
हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट जानेवाला । बहुत अधिक प्रसन्न ।

लोटा—(सं पुं) লোটা ।
पानी रखनेका एक गोल पात्र ।

लोढ़ना—(क्रि स) ফুল ছিঙা, নেওঠা ।
फूल चुनना या तोड़ना । ओटना ।

लोढ़ा—(सं पुं) পটা-গুটি, পতাত বস্তু পিহা গোটা শিল ।
सिल का बट्टा ।

लोथ—[सं स्त्री] মৰা শ ।
मृत शरीर । शव ।

लोथड़ा—[सं पुं] মাংস পিণ্ড ।
मांस-पिंड ।

लोना—(वि)নুণীয়া । লাৱণ্য যুক্ত ।
नमकीन । लावण्य युक्त ।
[क्रि स] ধান আদি কটা ।
फसल काटना ।

लोनाई (लुनाई)—[सं स्त्री]লাৱণ্য । মনোহৰ ।
लावण्य ।

लोम—[सं पुं] লোম, শিয়াল ।
रोआँ । लोमड़ी ।

लोमड़ी—(सं स्त्री) শিয়াল জাতীয় সৰু জঙ্গলী জন্তু ।
गीदड़ की तरह का एक जंगली छोटा पशु ।

लोम हर्षक—(वि) ভয়ানক, গাৰ নোম থিয় হোৱা বা শিয়ৰা কার্য ।
(ऐसा भीषण)जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जांये । भयानक ।

लोय—(सं पुं) লোক, মানুহ, জনতা, চকু।
लोग। आँख।
[सं स्त्री] চকু।
आँख।

लोर—(वि) চঞ্চল, আগ্ৰহী।
चंचल। उत्सुक।
[सं पुं] কাণৰ কুণ্ডল, চকু পানী।
कानका कुंडल। आँसू।

लोरी—(सं स्त्री) নিচুকনি গীত।
बच्चों को सुलाने के लिये गाया जानेवाला एक लोक गीत

लोल—(वि) লৰি-চৰি, হালি-জালি, পৰিবৰ্ত্তিত, আগ্ৰহী, চঞ্চল।
हिलता हुआ। बदलता हुआ। उत्सुक।
[सं पुं] বৰ ডাঙৰ আৰু ওখ ঢৌ।
बहुत बड़ी और ऊँची लहर।

लोलुप—[वि] লোভী-লালচী, উৎসুক, আগ্ৰহী।
लोभी। लालची। परम उत्सुक।

लोष्ठ—(सं पुं) শিল।
पत्थर। ढेला।

लोहसार—[सं पुं] ইস্পাত।
फौलाद।

लोहा—[सं पुं] লো। অস্ত্ৰ। অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ।
लोह धातु। अस्त्र। हथियार।

लोहा मानना—[मु०] প্ৰভুত্ব স্বীকাৰ কৰা।
(किसी का) प्रभुत्व स्वीकार करना।

लोहा लेना—(मु०) যুদ্ধ কৰা।
युद्ध करना। किसी प्रकार की लड़ाई लड़ना।

लोहार—[सं पुं] কমাৰ।
लोहे की चीजें बनानेवाली एक जाति।

लोहू—(सं पुं) তেজ।
लहू। रक्त।

लौं—(अव्य) লৈ, সমান।
तक। बराबर।

लौंग—(सं पुं) লং, গহনা বিশেষ।
मसाले और दवा के काम में आनेवाली एक झाड़ की कली। एक गहना।

लौंडा—[सं पुं] লৰা [তুচ্ছার্থে।]
लड़का (तुच्छार्थक)।

लौंडी (ड्री)—(सं स्त्री) দাসী, চাকৰণী ।
दासी ।

लौ— [सं स्त्री] জুই শিখা, দীপ-শিখা, মনোযোগ ।
आग की ज्वाला । दीप-शिखा । मन की सच्ची लगन ।

लौकना—(क्रि अ) দেখা ।
दिखाई देना ।

लौकी— [सं स्त्री] জাতি লাউ ।
कद्दू ।

लौटना—(क्रि अ) উভটি অহা, ঘূৰি অহা ।
वापस आना । मुड़ जाना ।

लौटाना—(क्रि स) ওলটাই দিয়া ।
(कोई वस्तु) वापस करना । उलटना ।

लौह—[सं पुं] লোহা ।
लोहा ।

लौहित्य—[वि] লোহাৰ, ৰঙা ৰঙৰ ।
लोहे का । लाल रंग का ।
(सं पुं) ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদ ।
ब्रह्मपुत्र नद ।

ल्याना (वना)—(क्रि स) অনা ।
लाना ।

व

व—বৰ্ণমালাৰ একুৰি ন সংখ্যাৰ ব্যঞ্জন বৰ্ণ ।
वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन वर्ण ।
[अव्य] আৰু ।
और ।

वंक, वंकिम—(वि) টেৰা, বেঁকা ।
टेढ़ा ।

वंचक—(वि) ধূৰ্ত্ত, ঠগ, বঞ্চক ।
धूर्त । ठग ।

वंचना—[सं स्त्री] ফাকি ।
धोखा ।

(क्रि स) फाकि दিয়া, ঠগা, পাঠ কৰা ।
ठगना । धोखा देना । पढ़ना (लेख आदि) ।

वंदन—[सं पुं] স্তুতি, প্ৰণাম ।
स्तुति । प्रणाम ।

वंदनीय—(वि) বন্দনা কৰাৰ যোগ্য, পূজনীয় ।
वन्दना करने योग्य ।

वंदी—(सं पुं) বন্দী, কয়দী, প্ৰশস্তি, গায়ক, চাৰণ, বৈতালিক ।
कैदी । चारण ।

वंशानुक्रम—[सं पुं] বংশানুক্ৰম, বংশ পৰম্পৰা ।
किसी वंशमें बराबर चलता रहने वाला क्रम या परंपरा ।

वंशावली—[सं स्त्री] বংশাৱলী, পুৰুষনামা ।
किसी वंशके लोगों की काल क्रम से बनी हुई सूची ।

वंशी—(सं स्त्री) বাঁহী ।
मुरली ।

वकालत—(सं स्त्री) ওকালতি, দূতৰ কাম ।
वकील का काम या पेशा । दूतका काम ।

वकील—[सं पुं] উকীল, দূত, প্ৰতিনিধি ।
दूत । प्रतिनिधि । दूसरे के पक्ष का समर्थन करनेवाला । वकालत करनेवाला ।

वक्त—(सं पुं) সময় ।
समय । अवकाश ।

वक्र—(वि) বেঁকা, টেৰা ।
टेढ़ा ।

वक्र-दृष्टि—(सं स्त्री) বক্ৰ দৃষ্টি, বেঁকা-চাৱনি ।
टेढ़ी दृष्टि ।

वक्रोक्ति—[सं पुं] শ্লেষ, কোৱা বা লিখিত কথাৰ ভিতৰত লুকাই থকা নিন্দাবাদ, কাব্যৰ অলঙ্কাৰ বিশেষ ।
परिहास, व्यंग्य आदिके लिये कही हुई ऐसी बात जिसमें श्लिष्ट शब्दो का प्रयोग हो । साहित्यमें एक अलंकार ।

वक्षः स्थल, वक्ष—[सं पुं] বক্ষ, হৃদয়, বুকু ।
छाती ।

বক্ষোজ,বক্ষোরুহ –(সং পুং) স্তন, পিয়াহ ।
स्तन ।

বগৈরহ—[अव्य] আদি, ইত্যাদি ।
आदि । इत्यादि ।

বজন—(সং পুং) ওজন, গধুৰতা, মাপ, গৌৰৱ ।
भारीपन । तौल । भार । गौरव ।

বজহ—[सं स्त्री] কাৰণ ।
कारण । हेतु ।

বজীফা—(সং পুং) জলপানী বৃত্তি, জপ অথবা পাঠ ।
वृत्ति । जप या पाठ ।

বজীৰ—(সং পুং) মন্ত্ৰী ।
मंत्री ।

বজীৰী—[सं स्त्री] মন্ত্ৰীত্ব ।
वजीर का भाव या पद ।

বজূ—(সং পুং) উজু, মুছলমানৰ নামাজৰ মন্ত্ৰ মাতি হাত ভৰি আদি ধোৱা কাৰ্য্য ।
मुसलमानों में नमाज पढ़ने से पहले हाथ पैर और मुँह धोनेकी क्रिया ।

বজূদ—[সং পুং] অস্তিত্ব,মজুত ।
अस्तित्व । मौजूदगी ।

বাবজূদ—(মু०) ইমান হলেও, হোৱা সত্বেও ।
इतना होने पर भी ।

বট—(সং পু) বট গছ ।
बरगद ।

বটিকা, বটী—(সং স্ত্ৰী) সৰু বড়ি ।
छोटी गोली या टिकिया ।

বটু (ক)–(সং পুং) ল'ৰা, ব্ৰহ্মচাৰী ।
बालक । ब्रह्मचारी ।

বণিক—(সং পুং) ব্যৱসায়ী, বেপাৰী ।
व्यापारी ।

বতন–[সং পুং] জন্ম ভূমি, মাতৃভূমি ।
जन्म-भूमि ।

বত্—(সং পুং) সমান, বৎ ।
समान । तुल्य ।

বৎস—[স পুং] দামুৰী, বোপা ।
गौका बच्चा । छोटोंके लिये प्यार सूचक संबोधन ।

বৎসল - [বি] সন্তানৰ প্ৰেমে পূৰ্ণ, স্নেহ আৰু দয়া কৰা লোক, দয়ালু ।
संतानके प्रेमसे भरा हुआ । छोटों से अत्यन्त स्नेह ओर उनपर कृपा रखनेवाला ।

বদন—[সং পুং] মুখ, মুখ মণ্ডল।
मुँह।

বদান্য–(বি) বৰ দানী, মিষ্টভাষী।
बहुत बड़ा दानी। मधुरभाषी।
[सं स्त्री—वदान्यता]।

বদি (দী)—[সং স্ত্ৰী] কৃষ্ণ পক্ষ।
कृष्ण पक्ष।

বধূ, বধূটী—(সং স্ত্ৰী) কইনা, বোৱাৰী।
दुलहन। पत्नी। पुत्र की बहू।

বন-মালা—[সং স্ত্ৰী] বন মালা, বন ফুলৰ মালা।
जंगली फूलोंकी माला।

বন-স্থলী—(সং স্ত্ৰী) বন ভূমি, জঙ্গল।
वन भूमि।

বনস্পতি—[সং স্ত্ৰী] অতি বৃহৎ গছ। ফল ধৰা ফুল নধৰা গছ, বনস্পতি।
पेड़ पौधे। बिना फूलोंका वृक्ष।

বনিতা—(সং স্ত্ৰী) তিৰোতা।
औरत।

বপন—[সং পুং] গুটি সিঁচা।
बीज बोना।

বপু—(সং পুং) শৰীৰ।
शरीर। देह।

ববাল—(সং পুং) বোজা, আপত্তি।
बोझ। आपत्ति।

বমন—(সং পুং) বমি কৰা, বমি।
कै करना। कै किया हुआ पदार्थ

বয়—(সং স্ত্ৰী) অৱস্থা, বয়স।
अवस्था। उम्र।

বয়স্য—(সং পুং) সখি।
सखा।

বয়োবৃদ্ধ—[বি]বয়োবৃদ্ধ, বয়সীয়াল।
বয়সত ডাঙৰ।
वृद्ध-अवस्था वाला।

বৰং, বৰন্—(অব্য)কিন্তু।
बल्कि। लेकिन।

বৰ—(সং পুং) দেৱতা আদিয়ে দিয়া সফল আশীৰ্ব্বাদ। দৰা, স্বামী, বৰ।
देवता आदि से मांगा हुआ मनो-रथ। वह जिसके साथ कन्या का विवाह निश्चित हो। पति।
(বি) শ্ৰেষ্ঠ, উত্তম, ভদ্ৰ।
श्रेष्ठ। उच्चकोटि का।

বৰক—(সং পুং) চিঠি, কিতাপৰ পৃষ্ঠা, ধাতব পদাৰ্থৰ পাতল পতা বা আঁহ।
पत्र। पुस्तकों का पन्ना या पृष्ठ। धातु का पतला पत्तर।

বৰণ—(सं पुं) মনোনয়ন, বিয়াৰ এটি বিশেষ সংস্কাৰ।
किसी को किसी कामके लिये चुनना। विवाह में वरको अंगीकार करने और विवाह पक्का करने की रीति।

বৰদী, বৰ্দী—[सं स्त्री] পোছাক।
पोशाक।

বৰনা—(क्रि स) বৰণ কৰা, অভ্যৰ্থনা কৰা।
वरण करना।
(सं पुं) উট।
ऊँट।
(अव्य) নহলে।
नहीं तो।

বৰাটিকা—(सं स्त्री) কড়ি।
कौड़ी।

বৰাননা-[सं स्त्री] সুন্দৰী তিৰোতা।
सुन्दर स्त्री।

বৰাহ—(सं पुं) গাহৰি।
सूअर।

বৰিষ্ঠ-[वि] শ্ৰেষ্ঠ, উত্তম।
श्रेष्ठ। उच्चकोटि का।

বৰুণালয়—[सं पुं] সাগৰ।
सागर।

বৰূথিনী—[सं स्त्री] সৈন্য।
सेना।

বৰেণ্য—(वि) প্ৰধান, পুজনীয়।
प्रधान। पूज्य।

বৰ্গ—[सं पुं] বৰ্গ, শ্ৰেণী, জাক, অধ্যায়, চাৰিচুকীয়া ঠাই।
श्रेणी। समूह। सभा। अध्याय। चौकोर क्षेत्र।

বৰ্গীকৰণ—[सं पुं] শ্ৰেণী-বিভাজন।
श्रेणी-विभाजन।

বৰ্চস্ব—[सं पुं] শক্তি, শ্ৰেষ্ঠতা
तेज। श्रेष्ठता। (वि-वर्चस्वी)

বৰ্ণ—[सं पुं] বৰ্ণ, ৰং, মানবজাতিৰ পাঁচ ভেদ, হিন্দুৰ চাৰি জাতি, প্ৰকাৰ, আখৰ, ৰূপ।
रंग। मानवजातिके पाँच भेद। हिन्दुओंके चार भेद। प्रकार। अक्षर। रूप।

বৰ্ণ-ভেদ—(सं पुं) জাতি ভেদ, শ্ৰেণী ভেদ।
जाति-भेद। श्रेणी-भेद।

বৰ্ণ-সংকৰ—(सं पुं) বৰ্ণসংকৰ, এজাতিৰ মতা আৰু আন এজাতিৰ তিৰোতাৰ পৰা হোৱা লোক। दोगला।

वर्ण्य— [वि] বৰ্ণনা কৰাৰ উপ-
যোগী । বৰ্ণনা কৰি থকা ।
वर्णन करने योग्य । जिसका
वर्णन हो रहा हो ।

वर्त्तन—[सं पुं] ব্যৱহাৰ, আচৰণ,
জীৱিকা বেতন, বাচন ।
बरताव । फेरना । पात्र । वेतन ।

वर्त्तिका—[सं स्त्री] কাপোৰ বা
কপাহৰ শলিতা । তুলিকা ।
पकडे, रूई आदि की वत्ती ।
रेखा चित्र बनाने के काममें आने
वाला पैंसिल की भाँति एक
उपकरण । तूलिका ।

वर्त्तुल— [वि] ঘুৰণীয়া ।
गोल ।

वर्त्म—(सं पुं) বাট, পথ, পাৰ,
চকুৰ পলক ।
मार्ग । किनारा । आँख की पलक।

वर्द्धक—[वि] বঢ়োৱা, বৰ্দ্ধক ।
बढाने वाला ।

वर्म—(सं पुं) কৱচ, ঘৰ, শৰীৰ
ৰক্ষা কৰা কৱচ । শোথ ।
कवच । बकतर । मकान । शोथ।

वर्मा—(सं पुं) বৰ্ম্মণ উপাধি,
ক্ষত্ৰিয় জাতিৰ উপাধি বিশেষ ।
क्षत्रियों की उपाधि ।

वर्ष— (सं पुं) বছৰ । পৃথিবীৰ
ন ভাগৰ এভাগ ।
साल । पृथ्वी का खंड ।

वर्षक—(वि) বৰষুণ দিওঁতা ।
वर्षा करनेवाला ।

वर्षा—[सं स्त्री] বৰষুণ । কোনো
বস্তু চাৰিওপিনৰ পৰা বেছিকৈ
অহা ।
बरसात । किसी वस्तु का बहुत
अधिक मात्रामें चारो ओर से
आना ।

वलय— (सं पुं) বলয়া । এডলীয়া
খাৰু । কঙ্কণ । দুই দুই
শাৰীৰ সৈন্যৰ অৱস্থান ।
मंडल । घेरा । कंकड़ । चूड़ी ।

वलाक—(सं पुं) বগলী, বকপংক্তি
बगला (सं स्त्री—वलाका)

वलाहक—(सं पुं) মেঘ, পাহাৰ ।
मेघ । पर्वत ।

वलित— [वि] পাক খোৱা, সাৱত
মাৰি থকা । মিলা । ঘূৰণীয়া ।
बल खाया या घूमा हुआ । लिपटा
हुआ । मिला हुआ ।

वल्ली—(सं स्त्री) শ্ৰেণী, ৰেখা,
সমূহ, শৈল ।
सिलवट । श्रेणी । रेखा । समूह।

(সং পুং) মালিক, সাধু, অভিভাবক, বলযুক্ত, বলবান।
मालिक। साधू। अभिभावक।

বল্কল—(বি) গছৰ ছাল। বাকলি
वृक्षकी छाल।

বল্দ— (সং পুং) পুত্ৰ।
बेटा।

বল্মীক—(সং পু) উই হাফলু, সাপৰ গাঁত।
दीमककी बाँबी। साँपका बिल।

বল্লভ—(বি) প্ৰিয়লোক, প্ৰিয়তম।
प्रियतम।
(স পুং)স্বামী, অধ্যক্ষ, মালিক।
पति। अध्यक्ष। मालिक

বল্লভা—[সং স্ত্ৰী] প্ৰেয়সী।
प्रेयसी।

বল্লৰী, বল্লী—(সং স্ত্ৰী) লতা।
लता।

বসতি [তী]—[সং স্ত্ৰী] নিবাস, ঘৰ, বসতি।
निवास। घर। बस्ती।

বসন—(সং পুং) কাপোৰ।
कपड़ा। निवास।

বসা—(সং স্ত্ৰী) চৰ্বী।
चरबी।

বসীয়ত—(সং স্ত্ৰী) মৃত্যুৰ পিছত উত্তৰাধিকাৰ সম্পৰ্কে ইচ্ছা-পত্ৰ বা দান-পত্ৰ।
मरनेके बाद सम्पत्तिके उत्तराधि-कार के बारेमें लिखना।

বসুংধৰা, বসুধা, বসুমতি–[সং স্ত্ৰী] পৃথিবী।
पृथ्वी।

বসু—[সং পুং] আঠজন দেৱতাৰ সমূহ, ৰত্ন, ধন, জুই, পানী, সোণ, সূৰ্য্য।
आठ वैदिक देवताओंका एक गण। रत्न। धन। अग्नि। जल। सोना। सूर्य।

বসুল—(বি) আদায় পোৱা।
प्राप्त। उगाहा हुआ।

বসুলী—[সং স্ত্ৰী] আদায় কৰা, সংগ্ৰহ কৰা।
लोगोंसे लेकर धन आदि इकट्ठा करना। उगाही।

বহ—[সৰ্ব] এই, এওঁ, সৰ্ব্বনাম পদৰ তৃতীয় পুৰুষৰ এক বচনৰ ৰূপ।
किसी अन्य मनुष्य या दूर के पदार्थका संकेत करनेवाला सर्व-

नाम या परोक्ष वस्तुओंका सूचक शब्द ।
[वि] বহন কৰোঁতা, বাহক ।
वहन करनेवाला । वाहक ।

वहम—(सं पुं) সন্দেহ, শঙ্কা, কল্পনা মিছা, ধাৰণা ।
मनमें होनेवाली मिथ्या धारणा या सन्देह । भ्रम ।

वहशत—(वि)পাগলামি, বলিয়ালি
वहशी होनेकी अवस्था या भाव । पागलपन ।

वहशी—(वि) জঙ্গলী, অসভ্য ।
जंगली । असभ्य ।

वहाँ—[अव्य] তাত ।
उस जगह ।

वहिरंग—(सं पुं) বাহিৰৰ অংশ ।
बाहरी या ऊपरी भाग ।
[वि] ওপৰৰ বা বাহিৰা ।
ऊपरी या बाहरी ।

वहीं—[अव्य] তাত ।
उसी स्थान पर ।

वही, वहै—[सर्व] সেযেই, তেৱেঁই।
वह ही ।

वह्नि—(स पुं) জুই ।
आग ।

वांछा—(सं स्त्री) অভিলাষ ।
अभिलाषा ।

वांछित—(वि) পাবলৈ কামনা কৰা, বাঞ্ছিত ।
चाहा हुआ।

वा - [अव्य] অথবা ।
अथवा
[सर्व] সেই ।
वह । उस ।

वाक्—(सं पुं) বাণী, কথা, সৰস্বতী ।
वाणी । सरस्वती ।

वाकई—(अव्य) সচাঁকৈয়ে ।
सचमुच ।

वाकिफ—[वि] জনা, পৰিচিত ।
ज्ञाता । परिचित ।

वागीश—[सं पुं] বৃহস্পতি, ব্ৰহ্মা কবি ।
बृहस्पति । ब्रह्मा । कवि ।
[वि] কথাকোৱাত পাৰ্গত লোক, সুবক্তা, বাকচতুৰ ।
अच्छा बोलनेवाला । सु-वक्ता ।

वागीश्वरी,वाग्देवी—[सं स्त्री] বাগ্দেবী, সৰস্বতী ।
सरस्वती ।

वाग्जाल—(सं पुं) কথাৰ মেৰ-পাচ ।
व्यर्थ बातोंका आडम्बर ।

वाग्दत्ता-(सं स्त्री) বাগদত্তা । দিম বুলি কথা দিয়া (ছোৱালী), মুখেৰে দিম বোলা ।
वह कन्या जिसके विवाहकी बात किसी के साथ पक्की का जा चुकी हो ।

वाग्मी—[स पुं] কথা কোৱাত পটু, বিদ্বান ।
अच्छा वक्ता । विद्वान ।

वाङ्मय—[सं पुं] সাহিত্য ।
साहित्य ।

वाचनालय—(सं पुं) পুঁথিভৰালত বাতৰি আদি পঢ়াৰ বাবে সুৰক্ষিত ঠাই ।
वह स्थान जहाँ लोगोंके पढ़ने के लिये अखबार आदि रखे रहते हैं।

वाचाल—(वि) বৰ কথকী, বাক পটু ।
बहुत बोलनेवाला । वाक्पटु ।

वाचिक—[वि] বাণী সম্বন্ধীয় ।
वाणी सम्बन्धी । वाणीसे कहा या किया हुआ ।

वाची—(वि) বোধক, সূচক ।
प्रकट करनेवाला । सूचक ।

वाजिब(ब)—(वि) উচিত । কৰ্তব্য
उचित । मुनासिब ।

वाजी—[सं पुं] ঘোঁৰা ।
घोड़ा ।

वाट—(सं पुं) বাট । পথ ।
मार्ग । रास्ता ।

वाटिका -(सं स्त्री) বাগিছা ।
बाग । बगीचा ।

वाड़वाग्नि— [सं स्त्री] সাগৰত জলি থকা জুই । বাড়বাগ্নি ।
वह कल्पित अग्नि जो समुद्र के अन्दर जलती हुई मानी गयी है ।

वाण—[सं पुं] কাঁড । শৰ ।
तीर ।

वाणिज्य—(सं पुं) বেহা । বেপাৰ ।
व्यापार ।

वाणी—[सं स्त्री] বাক্য । সৰস্বতী, বাণী ।
वचन । सरस्वती ।

वात—[सं पुं] বতাহ । বাত-বেমাৰ ।
वायु । शरीर में की वह वायु जिसके बिगड़ने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं ।

वातायन—(सं पुं) খিৰিকী ।
झरोखा । खिड़की ।

बातावरण–(सं पुं) পাৰিপাৰ্শ্বিকতা। পৰিবেশ। বাতাবৰণ।
वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है। परिवेश।

वातुल–(सं पुं) পাগল, বলিয়া। बावला। पागल।

वातुलता–(सं स्त्री) বলিযালি। पागलपन।

वात्या–(सं स्त्री) ধুমুহা। बवंडर।

वाद–[सं पुं]তৰ্ক বিতৰ্ক। শাস্ত্ৰাৰ্থ, মোকৰ্দ্দমা। বিবাদ।
शास्त्रार्थ। तत्वज्ञों द्वारा निश्चित तत्व या सिद्धान्त। विवाद। मुकदमा।

वादक–(सं पुं) বাদক। শাস্ত্ৰাৰ্থ কৰোতা।
बाजा बजानेवाला। वाद या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वादा–(सं पुं) কথা। প্ৰতিজ্ঞা। वचन। इकरार।

वादानुवाद–[सं पुं]तर्क-वितर्क। वाद-विवाद।

वाद्य–(सं पुं)বাদ্য যন্ত্ৰ। বাজনা। बाजा।

वानप्रस्थ–(सं पुं) বানপ্ৰস্থ। গৃহস্থী সুখ ভোগ কৰি পাছত ঈশ্বৰ চিন্তাৰ কাৰণে হাবিলৈ যোৱা ধৰ্ম্ম।
भारतीय जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसके अनुसार पचास वर्ष के होने पर लोगों के वन में जाकर रहने का विधान है।

वानर–(सं पुं) বান্দৰ। बन्दर।

वापस–(वि) উলটি অহা। নিজৰ ঠাইলৈ ওভটি অহা। ওভোটোৱা, ঘূৰাই দিয়া।
लौटकर फिर अपने स्थान पर आया हुआ। लौटने का कार्य।

वापसी–(वि) ফিৰি অহা। উলটি অহা।
लौटाया या फेरा हुआ। जिसमें वापस आने का परिव्यय भी जुड़ा हुआ हो।
[सं स्त्री] প্ৰত্যাবৰ্ত্তন।
लौटन या लौटाने की क्रिया या प्रत्यावर्तन।

वाम–[वि]বাওঁপিনে। প্ৰতিকূল, বাম। টেৰা। বেঁকা। বিৰুদ্ধ। बायाँ। प्रतिकूल। टेढ़ा।

वामन—(वि) বাওনা মানুহ। সৰু।
बौना। छोटा।
[सं पुं] বিষ্ণুৰ পঞ্চম অৱতাৰ।
विष्णु का एक अवतार।

वाम-मार्ग—[सं पुं] তান্ত্রিক মত অথবা ধৰ্ম্ম।
तान्त्रिक मत या धर्म।

वामा—(सं स्त्री) স্ত্রী। দুর্গা।
औरत। दुर्गा।

वामावर्त्त—[वि] বাওঁপিনে ঘুৰা।
बाईं ओर घूमता हुआ।

वायस—(सं पुं) কাউৰী।
कौआ।

वायु—(सं स्त्री) বতাহ।
हवा।

वार—(सं पुं) দুৱাৰ। বাধা। সময়। বাৰ। পাৰ। আঘাত। আক্রমণ।
द्वार। रुकावट। अवसर। सप्ताह का कोई दिन। किनारा। चोट। आक्रमण।
[प्रत्य] ক্রমানুসাৰে। ক্রমে। ক্রমাৎ।
क्रमसे। सिलसिलेवार। के अनुसार।

वारण—[सं पुं] বাৰণ। নিষেধ। হাতী।
निषेध। रुकावट। हाथी।

वारदात—[सं स्त्री] ভীষণ অথবা ভয়ানক দুর্ঘটনা। মাৰ ধৰ।
भीषण या विकट दुर्घटना। मार-पीट।

वारना—[क्रि स] সমৰ্পণ কৰা। গটাই দিয়া।
निछावर करना।
(सं पुं) উৎসর্গ। সমৰ্পণ।
निछावर। उत्सर्ग।

वार-नारी, वारवधु, वारांगना—[सं स्त्री] বেশ্যা।
वेश्या।

वारा न्यारा—[सं पुं] সমাধান। মীমাংসা। সম্পূর্ণ ৰূপে শেষ।
किसी बात का पूरी तरह से निपटारा।

वाराह—(सं पुं) বৰা। গাহৰি। বিষ্ণুৰ অৱতাৰ বিশেষ।
सूअर। विष्णु का अवतार।

वारि—(सं पुं) পানী।
पानी।

वारिचर—(सं पुं) মাছ।
मछली।

বাৰিজ—(সং পুং) পদুম। শঙ্খ। সোণ।
कमल। शंख। सोना।

বাৰিদ্—(সং পুং) মেঘ।
बादल।

বাৰিধি, বাৰীন্দ্ৰ (হশী)—(সং পুং) সাগৰ।
समुद्र।

বাৰিস—(সং পুং) উত্তৰাধিকাৰী।
उत्तराधिकारी।

বাৰুণী—[সং স্ত্ৰী] মদ।
मदिरा।

বাৰ্ত্তা—(সং স্ত্ৰী) বৃত্তান্ত, বিষয়, কথা, সূচনা।
वृत्तान्त। विषय। बात-चीत।

বাৰ্ত্তালাপ—(সং পুং) কথা-বতৰা।
बातचीत।

বালা—(প্ৰত্য) কৰ্তৃত্ব, স্বামীত্ব থকা আদি সূচক প্ৰত্যয়।
कर्तृत्व, स्वामित्व, सम्बन्ध आदि का सूचक प्रत्यय।

ৱালিদ্—(সং পুং) পিতা।
पिता।

ৱাবৈলা—[সং পুং] বিলাপ, হাহাকাৰ গোলমাল।
विलाप। कोलाहल।

বাষ্প—(সং পুং) ভাপ।
भाप।

বাস—[সং পুং] বাস, নিবাস, থকা ঘৰ।
रहना। स्थान। घर।
(সং স্ত্ৰী) গোন্ধ।
गंध। बू।

বাসক, বাসৰ—[স পু] দিন, দৰা কইনা প্ৰথম ৰাতি থকা কোঠালি। বাহক গছ অথবা ইয়াৰ গুটি।
दिन। वरवधू के सुहाग रात मनाने का कमरा। वासर। अडूसा नामक वृक्ष और उसका फल।

বাসৱ—[সং পু] ইন্দ্ৰ।
इन्द्र।

ৱাস্তা—[সং পু] সম্বন্ধ, আকৰ্ষণ।
संबंध। लगाव।

বাস্তু—(সং পুং) ঘৰ, অট্টালিকা।
घर। इमारत।

বাস্তুকলা—(সং স্ত্ৰী) ঘৰ, মহল আদি সজা কলা বা শিল্প।
वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला।

বাস্তুকার—(সং পুং) অট্টালিকা, বা পকী ঘৰ সাজোঁতা।
इमारतें आदि बनाने वाला।

বাস্তে—[অব্য] কাৰণে, নিমিত্তে।
लिये। निमित्त। कारण।

বাহ—[বি] বাহক।
वहन करने वाला।
[অব্য] প্ৰশংসা, আশ্চৰ্য্য, ঘৃণা অথবা তিৰস্কাৰ সূচক শব্দ।
प्रशंसा, आश्चर्य, घृणा या तिरस्कार सूचक शब्द।

বাহক—[বি] বাহক, কোনো বস্তু বৈ নিওঁতা।
बोझ ढोने या खींचने वाला।

বাহন—(সং পুং) যান-বাহন, মানুহ বা কোনো বস্তু কঢ়িওৱা যান বা জন্তু।
सवारी। वह चीज जिसके आधार पर कोई चीज कहीं पहुँची हो।

বাহ-বাহী—[সং স্ত্ৰী] প্ৰশংসা কৰা কাৰ্য্য।
साधुवाद। लोगों की प्रशंसा।

বাহিত—[বি] বহন কৰা, কটোৱা।
वहन किया हुआ। बिताया हुआ।

বাহিনী—(সং স্ত্ৰী) সেনা।
सेना।

বাহিয়াত—(বি) ব্যৰ্থ, অপদাৰ্থ, কামত নহা, বেয়া।
व्यर्थ। फिजूल। बुरा।

बिंदु (সং পুং) অতি ক্ষুদ্ৰ কণা বা টোপা, বিন্দু, অনুস্বাৰ। শূন্য।
तरल पदार्थ की बूँद। बिंदी। अनुस्वार। शून्य।

বি—(অব্য) উত্তম, নথকা, নানা, বিপৰীত, বেয়া, মন্দ, বিষম আদি সূচক উপসৰ্গ।
एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर विशेष, अनेक रूपता, निषेध या विपरीतता आदि अर्थ-सूचित करता है।

বিকচ--(বি) প্ৰস্ফুটিত, চুলি নথকা।
खिला हुआ। जिसके कच या बाल न हो।
(সং পুং) চুলিৰ কোছা।
बालों की लट।

বিকট—[বি] ভয়ঙ্কৰ, কঠিন, দুৰ্গম, দেখিলে ভয় লগা।
भयंकर। कठिन। दुर्गम।

বিকৰাল-(বি) ভীষণ, ভয়াবহ।
भीषण। 'डरावना।

विकर्षण - [सं पुं] আকর্ষণ, থাকিব নিদিয়া, বিকর্ষণ।
आकर्षण। खिंचाव। न रहने देना।

विकल—(वि) বিকল, ব্যাকুল, অশান্ত, অসম্পূর্ণ, বিকৃত।
जिसके मनमें शान्ति न हो। जिसमें 'कला' न हो। अधूरा।

विकलता—[सं स्त्री] ব্যাকুলতা, কলা-হীন অৱস্থা।
व्याकुलता। कला हीनता।

विकलांग—(वि) অঙ্গহীন, ঘূণীয়া।
खंडित अंग वाला।

विकल्प - (सं पुं) অইন এটা, বিকল্প।
एक कल्पना के बाद उसके विरुद्ध या उससे मिलती जुलती की जानेवाला दूसरी कल्पना। वह अवस्था जिसमें सामने आये हुए कई विषयों या बातों में से कोई एक विषय या बात अपने लिये चुनने का अधिकार रहता है।

विकसना—[क्रि अ] ফুলি মেল খোৱা, প্ৰস্ফুটিত হোৱা, আনন্দিত হোৱা।
विकसित होना। (कलियों आदि का) खिलना। प्रसन्न होना।

विकसित—(वि) প্ৰস্ফুটিত, মুকুলিত, আনন্দিত।
जिसका विकास हुआ हो। खिला हुआ।

विकार—(सं पुं) পৰিবৰ্ত্তন, সলনি হোৱা অৱস্থা, মনৰ অৱস্থা।
[वस्तु का] बिगड़ना। दोष। खराबी। मनमें उत्पन्न होने वाला कोई प्रबल भाव या वृत्ति।

विकारी—[वि] পৰিবৰ্ত্তনশীল, মায়াৰে আবৃত, বেযা।
जिसमें किसी प्रकार का विकार या बिगाड़ हुआ हो। खराब, जिसके मनमें राग द्वेष आदि विकार उत्पन्न हुए हो।

विकास—(सं पुं)প্ৰদৰ্শন, প্ৰকাশ, বিস্তাৰ, প্ৰসাৰ, কোনো বস্তু নিজৰ সাধাৰণ অৱস্থাৰ পৰা বাঢ়ি গৈ পূৰ্ণতা প্ৰাপ্ত হোৱা কাৰ্য্য। বিকাশ।
किसी वस्तु या बात का बढ़कर कुछ नया, बड़ा अथवा अधिक प्रभावक रूप धारण करना। फैलाव। वह प्रक्रिया जिससे कोई

वस्तु अपनी सामान्य अवस्था से बढ़ती हुई पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है ।

বিকিৰণ—[सं पुं] সিঁচৰতি হোৱা, মেলি দিয়া, কিৰণ সমূহক এক ঠাইত গোটোৱা ।
बहुत सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना या होना । बिखराने की क्रिया या भाव ।

বিকীর্ণ—(বি) চাৰিওপিনে সিঁচৰিত হৈ থকা,বিস্তৃত, প্ৰসিদ্ধ ।
चारों ओर बिखरा या फैला हुआ । प्रसिद्ध ।

বিকৃত—(বি)বিকৃত স্বভাৱ পৰিবৰ্ত্তন হোৱা, নতুন ৰূপ বা গুণ লোৱা ।
बिगड़ा हुआ । जिसका रूप बिगड़ गया हो ।

বিকৃতি—[सं स्त्री] বিকাৰ, বিকৃত ৰূপ, মনৰ ক্ষোভ ।
विकार । किसी वस्तुका बिगड़ा हुआ रूप । मन का क्षोभ ।

বিক্ৰম—(सं पुं) পৰাক্ৰম, প্ৰতাপ, শক্তি ।
पराक्रम । ताकत ।

বিক্ৰেতা—(सं पु) বেচোঁতা ।
बेचनेवाला ।

বিক্ষিপ্ত—(বি) বিক্ষিপ্ত, সিঁচৰতি হোৱা; বিয়পি থকা ।
फैला, बिखरा या छितराया हुआ ।
(सं पुं) পাগল ।
पागल ।

বিক্ষুব্ধ—[বি] অতিশয় ক্ষুব্ধ হোৱা জন, চঞ্চল, অস্থিৰ ।
जो विशेष रूपसे क्षुब्ध हुआ हो ।

বিক্ষেপ—(सं पुं) নিক্ষেপ, দলি মাৰি পেলোৱা কাৰ্য্য । মনৰ চঞ্চলতা ।
ऊपर या इधर फेंकना । मनका इधर उधर भटकना । विघ्न ।

বিক্ষোভ—[सं पुं] মনৰ চঞ্চলতা, অস্থিৰতা ।
मनकी चंचलता । उथल-पुथल ।

বিগত—[বি] অতীত, পাৰ হৈ যোৱা । ৰহিত । বঞ্চিত ।
बीता हुआ । रहित ।

বিগ্ৰহ—[सं पुं] দূৰ অথবা পৃথক কৰা । বিভাগ । কাজিয়া-পেছাল, আকৃতি । দেৱতাৰ মূৰ্ত্তি ।
दूर या अलग करना । विभाग । लड़ाई झगड़ा । आकृति । मूर्ति ।

বিঘটন-(सं पुं) ভাঙণ । চূর্ণ কৰণ ।
घटित करनेवाले या संयोजक

अंगोंको अलग अलग करना।
बिगाड़ना। नष्ट करना।

বিঘূর্ণন—[सं पुं] ঘূৰ ঘূৰোৱা।
ঘূৰণ খোৱা।
चक्कर खाना।

বিচক্ষণ—(वि) পাৰ্গত। সুন্দৰ।
উত্তম। দেদীপ্যমান।
चमकता हुआ। निपुण। पंडित।

বিচয়ন—(सं पुं)বিচৰা। তালাচ।
तलाश। खोज।

বিচৰণ—(सं पुं) ইফালে-সিফালে
ঘূৰা-ফিৰা কাৰ্য্য।
चलना। घूमना फिरना।

বিচৰনা—(क्रि अ) ফুৰা-চকা কৰা।
ফুৰা।
चलना फिरना। घूमना।

বিচলনা—[क्रि अ]বিচলিত হোৱা,
লৰচৰ হোৱা।
विचलित होना।

বিচাৰ—(सं पुं) অনুসন্ধান। সঁচা-
মিছাৰ বিবেচনা। সোধ।
মোকৰ্দ্দমাৰ সোধ আৰু নিৰ্ণয়।
संकल्प। भावना। किसी बातके
सब अंग देखना या सोचना-
समझना। मुकदमें की सुनवाई
और फैसला।

বিচাৰনা—(क्रि अ। क्रि स)বিচাৰ
কৰা। সোধা। খবৰ কৰা।
বিচাৰি অনা।
विचार करना। पूछना।
पता लगाना।

বিচাৰবান, বিচাৰশীল–(सं पुं)
ভালদৰে বিচাৰ কৰা শক্তি থকা
লোক। বিচাৰশীল।
जिसमें अच्छी तरह विचार करने
की शक्ति हो।

বিচাৰী—(सं पुं) বিচাৰক।
লম্পট। ঘূৰি-ফুৰোঁতা।
वह जो विचार करता हो। लंपट।
घूमने-फिरनेवाला।

বিচিকিৎসা-(सं स्त्री) সন্দেহ।
অনিশ্চিততা। ভুল।
सन्देह। अनिश्चय। भूल।

বিচেতন—[वि] মূৰ্চ্ছা। অজ্ঞান।
बेहोश।

বিচ্ছোহ—[सं पुं] বিয়োগ। বিৰহ।
वियोग। विरह।

বিজন—[वि] নিৰ্জ্জন। একান্ত।
जिसमें जन या मनुष्य न हों।
एकान्त।

বিজয়-যাত্ৰা–[সং স্ত্ৰী] জয়-যাত্ৰা। কাৰোবাক জয় কৰিবৰ বাবে কৰা যাত্ৰা।
किसी को जीतने के लिये की जानेवाली यात्रा।

বিজয়া—(সং স্ত্ৰী) দুৰ্গা। ছন্দ বিশেষ। বিজয়া দশমী। ভাং।
दुर्गा। एक छन्द। विजया दशमी। भांग।

বিজিত—[বি] পৰাজিত।
जीता हुआ।

বিজেতা—(বি) বিজয়ী।
विजयी

বিজ্ঞ—(বি) জ্ঞানী। জনা বুজা। নিপুণ।
जानकार। बुद्धिमान। विद्वान।

বিজ্ঞপ্তি–(সং স্ত্ৰী) সূচনা। জাননী। বিজ্ঞাপন।
सूचना। विज्ञापन।

বিজ্ঞাপিত-(বি) জাননী দিয়া হোৱা।
जिसकी सूचना दी गयी हो।

বিট—(সং পুং) কামুক। বেশ্যাসক্ত। চতুৰ। চৰাই-চিৰিকতিৰ বিষ্ঠা।
कामुक। चालाक। विष्ठा (पक्षियों की)

বিটপ—[সং পুং] গছ।
वृक्ष।

বিড়ম্বনা—(সং স্ত্ৰী) ছলনা। ভাও, ইতিকিং। ফাঁকি। উপহাস। নৈৰাশ। উলাই কৰা।
किसीको चिढ़ाने या उसको तुच्छ ठहराने के लिये की जानेवाली उसकी नकल। उपहास। दंभ।

বিড়ৰনা–[ক্রি স] সিঁচৰিত হৈ যোৱা। চেদেলি-ভেদেলি হোৱা পলোৱা।
तितर-बितर होना। भागना। (ক্রি স—বিড়াৰনা)

বিড়াল— [সং পু] মেকুৰী।
बिलाव।

বিতণ্ডা—(সং স্ত্ৰী) নিজৰ মত ৰাখিবলৈ কৰা মিছা তৰ্ক। গালি। তিৰস্কাৰ।
दूसरों की बातों की उपेक्षा करते हुए अपनी बात कहते चलना। व्यर्थ का विवाद।

বিত—[বি] জনা বুজা। চতুৰ।
जाननेवाला। चतुर।
[সং পুং] ধন। টকা।
वित्त।

বিততি—(সং স্ত্রী) বিস্তাৰ।
विस्तार ।

বিতনু—(বি) শৰীৰ হীন। অতি সূক্ষ্ম। নিঃসাৰ।
बिना तन या शरीर का। बहुत छोटा।
[সং পুং] কামদেৱ।
कामदेव।

বিতৰক—(সং পুং) বিলনীয়া।
बाँटनेवाला ।

বিতৰণ—[সং পুং] দিয়া। ভগাই দিয়া। বিলাই দিয়া।
देना। बाँटना।

বিতৰিত—(বি) ভগোৱা অথবা বিলোৱা হোৱা। বিতৰিত।
बाँटा हुआ।

বিতান—[সং পুং] বিস্তাৰ। ডাঙৰ তম্বু। যজ্ঞ।
विस्तार। बड़ा तम्बू या खेमा। यज्ञ।

বিতু—(সং পুং) ধন, টকা।
वित्त।

বিত্ত-[সং পুং] ধন সম্পত্তি। আৰ্থিক প্ৰবন্ধ। বিত্ত।
धन। सम्पत्ति। आर्थिक प्रबंध।

বিত্তীয়—(বি) অৰ্থ সম্বন্ধীয়।
वित्त सम्बन्धी।

বিথৰানা—[ক্রি স] বিয়পোৱা। সিঁচৰিত কৰা।
फैलाना। छितराना।

বিথা—(সং স্ত্রী) ব্যথা। দুঃখ।
व्यथा।

বিদগ্ধ—(সং পুং) ৰসিক। বিদ্বান। সাৱধান। অতিশয় পাৰ্গত। জঠৰাগ্নিৰে পকি উঠা। সুন্দৰ।
रसिक। विद्वान। होशियार। दक्ष। निपुण। जठराग्निसे पका हुआ। सुन्दर।

বিদৰনা—[ক্রি অ] ফলা। ছিৰা। ফাট মেলা।
फटना।
[ক্রি স] ফলা।
फाड़ना।

বিদলন—(সং পুং) দলা, পিহা অথবা দমন কৰা কাৰ্য্য, ফলা, নষ্ট কৰা।
रौंदने, मलने, दबाने आदि की क्रिया या भाव। फाड़ना। नष्ट करना।

বিদা—(সং স্ত্রী) প্ৰস্থান, বিদায়, যোৱাৰ অনুমতি।

प्रस्थान । जाने की अनुमति ।
(वि) विदाय, यात्रा ।
प्रस्थित । रवाना ।

বিদাই—[सं स्त्री] বিদায, যাবৰ সময়ত দিয়া টকা পইচা, যাত্ৰাৰ সময়ত শুভকামনা জনাবৰ বাবে মানুহ গোট খোৱা কাৰ্য্য ।

विदा होने की क्रिया या भाव । प्रस्थान करने के समय दिया जानेवाला धन । किसी के प्रस्थान करने के समय उसके प्रति शुभ कामना प्रकट करनेके लिये लोगो का एकत्र होना ।

বিদাৰক—(वि) বিদীৰ্ণ কৰোঁতা ।
फाड़नेवाला ।

বিদাৰনা—(क्रि स)বিদীৰ্ণ কৰা,ফলা ।
फाड़ना ।

বিদিত—(क्रि स) জ্ঞাত, জনা ।
ज्ञात ।

বিদীৰ্ণ—(वि) বিদাৰণ কৰা, ফলা, ছিৰা ।
फाड़ा हुआ ।

বিদুষী—(सं स्त्री)বিদুষী, শিক্ষিতা, বিদ্যাৱতী ।
विद्वान स्त्री ।

বিদূষক—[सं पुं] বহুৱা, মকৰা, বিদূষক ।
मसखरा ।

বিদ্—(वि) জনাবুজা লোক ।
जानकार ।

বিদ্ধ—(वि) বিন্ধা, আঘাত পোৱা, শৰবিদ্ধ ।
छेदा हुआ । घायल । सटा हुआ ।

বিদ্যুত্—(सं स्त्री)বিজুলী ।
बिजली ।

বিদ্রুম —[सं पुं] প্ৰবাল মুক্তা ।
मूँगा । प्रवाल ।

বিদ্বেষ—(सं पुं) শক্ৰতা, হিংসা ভাব, বিৰোধ ।
शत्रुता । वैर । विरोध

বিধনা—(सं स्त्री) হবলগীয়া, ভৱিতব্য, অদৃষ্ট, দৈব, ব্ৰহ্মা ।
विश्व का विधान करनेवाली शक्ति । होनी ।

বিধবা—(सं स्त्री) বিধবা ।
वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो ।

বিধান—(सं पुं) বিধি, নিয়ম, কাৰ্য্য কৰাৰ দিহা বা ব্যৱস্থা ।
किसी कार्य का आयोजन ।

अवस्था। प्रणाली। विधि। कानून।

विधायक—[वि] ব্যৱস্থাকাৰী, নিয়মকাৰী।

विधान करनेवाला। जिसके द्वारा कोई विधान या आज्ञा दी जाय।

विधि—[सं स्त्री] নিয়ম, ব্যবস্থা, কাৰ্য্যৰ প্ৰণালী, ব্যৱস্থা শাস্ত্ৰ, প্ৰকৃতি, নিয়তি, ঈশ্বৰ, আদেশার্থক ক্ৰিয়াৰ ৰূপ, অনুজ্ঞা।

प्रणाली। व्यवस्था। शास्त्रीय विधान। कानून। प्रकृति या नियति। भाँति। क्रिया का वह रूप जिसमें किसी को कोई काम करने का आदेश दिया जाता है। [सं पुं] ব্ৰহ্মা, বিধাতা। ब्रह्मा।

विधिज्ञ—(सं पुं) বিধি-বিধান জনা লোক, আইনজ্ঞ।

विधि का ज्ञाता। कानून जानने वाला।

विधिवत्—(অব্য) নিয়মানুসৰি, বিধিমতে।

विधि या नियम के अनुसार। उचित रूप से।

विधुंतुद—[सं पुं] চন্দ্ৰক ধৰোঁতা' গ্ৰাস কৰোঁতা, ৰাহু।

चन्द्रमा को पकड़नेवाला। राहु।

विधु—[सं पुं] চন্দ্ৰ, ব্ৰহ্মা।

चन्द्रमा। ब्रह्मा।

विधुर—[सं पुं] দুখী, ব্যাকুল, অসমৰ্থ, বিপত্নীক।

दुखी। व्याकुल। असमर्थ। वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो।

विधेय—(वि) নিয়ম অনুসৰি কৰিবলগীয়া, শাস্ত্ৰ সম্মতি, পাবলগীয়া।

किये जाने के योग्य। जिसका विधान होने को हो।

(सं पुं) কোনো বাক্যত 'কৰ্ত্তা' লৈ উদ্দেশ্য কৰি যি কথা কোৱা হয়।

वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाता है।

विधेयक— [सं पुं] আইনৰ মচাবিদা।

कानून का मसौदा। (अं-बिल)

ध्वंसक—(वि) নাশকৰ্ত্তা।

नाश करनेवाला।

বিনত—(বি) বিনম্র, বিনয়ী।
झुका हुआ। नम्र।

বিনম্র—(বি) বিনয়ী, নম্র, বিনীত।
बहुत विनीत या नम्र।

বিনয়—[सं स्त्री] নম্রতা, শিক্ষা, মিনতি।
नम्रता। शिक्षा। प्रार्थना। नीति।

বিনশ্বর—(বি) সদায় নথকা, অনিষ্ট, নাশবান।
नाशवान। अनित्य।

বিনসনা—(ক্রি অ) নষ্ট হোৱা- বা কৰা।
नष्ट होना।

বিনায়ক—(सं पुं) গণেশ।
गणेश।

বিনাশক—(বি) নাশ বা নষ্ট কৰোঁতা।
नष्ट करनेवाला।

বিনাশন—[सं पुं] ধ্বংস কৰা বা নষ্ট কৰা কার্য্য।
नष्ट करना। संहार करना।

বিনাসনা—(ক্রি স) নষ্ট কৰা। ধ্বংস কৰা। মাৰি পেলোৱা।
नष्ट करना। मार डालना।

বিনিময়—(বি) বদল। সলনি। বিনিময়।
एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन।

বিনিয়ংত্রণ— [सं पुं] নিয়ন্ত্রণ উঠাই লোৱা।
नियंत्रण हटाया या दूर किया जाना।

বিনিয়োগ- [सं पुं] নিয়োগ। উপ- য়োগ। বৈদিক ক্রিয়া কর্ম্মত মন্ত্রৰ প্রয়োগ। ধন খটোৱা।
किसी वस्तु का किसी काम में लाया या लगाया जाना। उप- योग। वैदिक कृत्योंमें होनेवाला मंत्र का प्रयोग। व्यापारमें पूँजी लगाना।

বিনিয়োজক-(বি)বিনিয়োগ কৰোঁতা, ব্যৱসায়ত ধন খটোৱা লোক।
विनियोग करनेवाला। व्यापारमें पूँजी लगानेवाला।

বিনিবর্তন-[सं पुं] দিয়া আদেশ বা বস্তু, পাছ কৰা প্রস্তাৱ অথবা প্রচলিত কোনো বস্তু উঠাই লোৱা বা ওভটাই দিয়া।
दी हुई वस्तु या आज्ञा, किया हुआ प्रस्ताव अथवा प्रचलित की हुई चीज लौटा देना।

विनिवर्तित—(वि) উঠাই লোৱা।
वापस लिया हुआ। (अं-विद्‌ड्रान)

विनोद—(सं पुं) ৰং ধেমালি।
আহ্লাদ। ৰহস্য। পৰিহাস।
নিন্দা। ধেমেলীয়া।
तमाशा। क्रीड़ा। परिहास।
प्रसन्नता।

विन्यास—[सं पुं] স্থাপন। যথা-
স্থানত ঠিক ভাবে ৰখা। ৰখা।
स्थापन। यथास्थान या ठीक
क्रमसे लगाना। जड़ना।

विपंची—(सं स्त्री) বীণা বিশেষ।
বাঁহী।
एक प्रकारकी वीणा। बाँसुरी।
[वि]সুৱদী মাত ওলোৱা বস্তু।
जिससे मनोहर शब्द निकले।

विपथ—(सं पुं) কুপথ। বিজুতি
বাট।
बुरा या खराब रास्ता।

विपन्न-[वि] বিপদত পৰা। আৰ্ত্ত।
दुःखी। आर्त्त।

विपर्यय-[सं पुं] বিৰুদ্ধ। ওলোটা।
অমিল। ব্যতিক্রম। বিপৰীত।
ভুল। দোষ। গোলমাল।
इधर उधर या आगे पीछे होना।
व्यतिक्रम। क्रम परिवर्तन भूल।
गलती। गड़बड़ी।

विपर्यस्त—[वि] বিপৰ্য্যয় হোৱা
লোক। উচিত বা মান্য বুলি
নেভাবি নাকচ কৰা কথা বা
বস্তু।
जिसका विपर्यय हुआ हो। जिसे
ठीक या मान्य न समझकर उलट
या रद्दकर दिया गया हो।

विपर्याय—(सं पुं) বিপৰীতাৰ্থক
শব্দ।
विरुद्धार्थक शब्द।

विपाक—[सं पुं] পৰিপক্ক হোৱা।
পূৰ্ণতা পোৱা, ফল, দুৰ্দ্দশা, সঙ্কট।
परिपक्क होना। पूरी अवस्था को
पहुँचना। फल। दुर्दशा।

विपिन—[सं पुं] বন। হাবি।
বাগিচা।
वन। जंगल। बाग।

विपुल—(वि) বিস্তৰ। অনেক।
অতিশয়। ডাঙৰ। বহল। বিপুল।
संख्या परिमाण आदिमें बहुत
अधिक।

विप्र—(सं पुं) বামুণ।
ब्राह्मण।

বিপ্ৰলম্ভ—(সং পুং) কাজিয়া। বিচ্ছেদ, বিৰহ। বিয়োগ শৃঙ্গাৰ, ফাকি। প্ৰতাৰণা।
प्रिय वस्तु या व्यक्ति का न मिलना। वियोग। वियोग शृंगार। धोखा।

বিপ্ৰলব্ধ—(বি) প্ৰতাৰিত। কামনা কৰি নোপোৱা বস্তু।
जिसे चाही हुई वस्तु न मिली हो।

বিবুধ—(সং পুং) চন্দ্ৰ। জোন। বিদ্বান। বুধিয়ক। দেৱতা।
चन्द्रमा। विद्वान। बुद्धिमान। देवता।

বিবুধাকৰ—[সং পুং] জোন।
चन्द्रमा।

বিবুধেশ—[সং পুং] ইন্দ্ৰ।
इन्द्र।

বিভক্ত—[বি] অংশ কৰা। ভাগ কৰা।
विभाजित। अलग किया हुआ।

বিভৱ—[সং পুং] ধন। ঐশ্বৰ্য্য—বিভূতি।
धन। सम्पत्ति। ऐश्वर्य। अधिकता।

বিভা—[সং স্ত্ৰী] দীপ্তি। প্ৰকাশ। জ্যোতি।
दीप्ति। चमक। प्रकाश।

বিভাকৰ—[সং পুং] সূৰ্য্য। জুই। ৰজা।
सूर्य। अग्नि। राजा।

বিভাজক—[বি] বিভাগ বা অংশ কৰোঁতা। বিলনীয়া।
विभाग या टुकड़े करनेवाला। बाँटनेवाला।

বিভাজন—[সং পুং] বিভাজন। ভাগ কৰা।
विभाग करना। बँटवारा।

বিভাৱ—(সংপুং) কোনো ব্যক্তিৰ অন্তৰত ৰতি, হাস্য আদি স্থায়ী ভাব জাগ্ৰত কৰা তত্ত্ব বা কথা। চিনালোক। শিৱ।
वे बातें जो किसी व्यक्तिमें रति, हास आदि स्थायी भावों को जाग्रत या उद्दीप्त करती है। परिचित व्यक्ति। शिव।

বিভাৱনা—(সং স্ত্ৰী) সঠিক বা দকৈ অনুভৱ কৰা। সাহিত্যৰ অৰ্থালঙ্কাৰ বিশেষ।
किसी बात या वस्तुकी विशिष्ट

रूपसे भावना या कल्पना करना। एक अर्थालंकार।

विभावरी—[सं स्त्री] ৰাতি।
रात।

विभीषिका—(स ं स्त्री) ভয। ভয জন্মোৱা বস্তু।
भयभीत करना। भयानक काड या दृश्य।

विभु-[वि] পৰমেশ্বৰ। সর্ব্বব্যাপী।
सर्व व्यापक। बहुत बड़ा,महान। सदा बना रहनेवाला।
[स ं पु ं] পৰমাত্মা। ঈশ্বৰ।
परमात्मा। ईश्वर।

विभुता, विभूति—(स ं स्त्री)বৈভৱ, ঐশ্বর্য্য। ঐশ্বৰিক শক্তি। সদাশিৱ আৰু সন্ন্যাসীয়ে গাত ঘহা ভস্ম। প্রভাৱ, লক্ষ্মী, সৃষ্টি।
अधिकता। वैभव। सम्पत्ति। दिव्य या अलौकिक शक्ति। महा पुरुष शिव या संन्यासियो के अगमें लगानेकी राख या भस्म। लक्ष्मी। सृष्टि।

विभूषण—[स ं पु ं] অলঙ্কাৰ, ধুন।
गहना। अलंकार।

विभेद—(स ं पु ं) প্রভেদ।
अन्तर। अनेक भेद। विशेष रूप से किया हुआ भेद या अलगाव। भेद न करना। छेदना या बेधना।

विभोर—(वि) বিভোল, মগ্ন, মুগ্ধ, নিজক পাহৰা।
विह्वल। मग्न। मस्त। मत्त।

विभ्रम—[स ं पु ं] ভ্রম, ভ্রান্তি, সন্দেহ।
भ्रांति। सन्देह। किसीके भावको भी भ्रमसे गलत समझना।

विमन—[वि] মন-মৰা, আনন্দ হীন, বিমর্ষ।
अनमना। उदास।

विमर्श (र्ष)—(सं पु ं) বিমন, মন মৰা, দুঃখিত, পৰীক্ষা, আলোচনা, পৰামর্শ।
विचार या विवेचन। आलोचना। परीक्षा। जाँच। परामर्श।

विमल—[स ं पु ं] নির্ম্মল, নিকা, পবিত্র, সুন্দৰ।
स्वच्छ। पवित्र। सुन्दर।

विमाता—(स ं स्त्री) মাহী আই।
सौतेली माँ।

विमान—[स ं पु ं] বায়ু-যান, আকাশীযান, মৰা মানুহ কঢ়ি-

য়াই নিয়া যতন।

वायुयान। मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी।

বিমানবেধী-(সং স্ত্রী) উৰন্ত আকাশী যানলৈ গুলী বা বোমা মাৰি পঠিয়াব পৰা কামান।

एक प्रकारकी तोप जो उड़ते हुए हवाई जहाजोंपर गोली चलाती हैं

বিমুক্ত—[বি] স্বতন্ত্র, মুকলি।

स्वतंत्र। स्वच्छन्द। बचा या छुटा हुआ। व्यक्त।

বিমুখ— [সং পুং] মুখহীন, বিৰত, পৰাঙ্মুখ, আস্থা নথকা, আন এফালে মুখ কৰা, নিৰাশ কৰি ওলোটাই পঠোৱা, অনুপস্থিত।

जिसे मुँह न हो। विरत। उदासीन। विरुद्ध। अप्रसन्न। निराश।

বিমোচন--(সং পুং) মুক্ত, মুকলি কৰা, মুকলি হোৱা।

बंधन आदिसे छूटा हुआ। मुक्त होना।

[বি] মুক্ত কৰোঁতা, নিবাৰণ কৰোঁতা।

मुक्त करनेवाला।

বিযুক্ত--(সং পুং) বিয়োগ হোৱা, পৃথক, বঞ্চিত।

जिसका किसीसे वियोग हुआ हो। अलग। रहित।

বিযোগ[সং পুং]বিয়োগ বিচ্ছেদ,বিৰহ, মৰমৰ লোকৰ পৰা আঁতৰ হৈ থকা অৱস্থা, কম কৰা, ঘটোৱা।

किसीसे बिछुड़ने या दूर होनेकी क्रिया, अवस्था या भाव। विरह। अलग होनेका दुःख। घटाया या कम किया जाना।

বিযোগান্ত-(বি) দুঃখপূৰ্ণ অন্ত যাৰ।

जिसका अन्त या पर्यवसान दुःखपूर्ण हो।

বিযোগী – (বি) বিৰহী।

विरही।

বিৰংচি—[সং পুং] ব্ৰহ্মা।

ब्रह्मा

বিৰক্ত—(বি) আসক্তি নথকা, উদাসীন। অপ্ৰসন্ন।

विमुख। उदासीन। अप्रसन्न।

বিৰক্তি—(সং স্ত্রী)বিৰক্তি। অনাসক্তি। নিস্পৃহা, বেজাৰ, আমনি।

विराग। वैराग्य। उदासीनता। अप्रसन्नता।

बिरचित—(बि) निৰ্মিত ।
निर्मित ।

बिरत—(बि) ক্ষান্ত ।
विमुख । निवृत्त ।

बिरति—[सं स्त्री] বিৰত হোৱা কাৰ্য্য ।
विरत होनेकी क्रिया या भाव । कार्य, पद, सेवा आदिसे अलग होना ।

बिरमना—(क्रि अ) মন লগোৱা, কাৰো সৈতে কৰবাত আসক্ত হোৱা । থমা ।
किसीसे या कहीं मन लगाना । सकना ।

बिरल—(बि) সেৰেঙাকৈ থকা, পাতলৈ টান, পাতল, নিজান ঠাই, দুৰ্লভ ।
दूर दूर पर का भाव । स्थित । दुर्लभ ।
कम । निर्जन।

बिरह—(सं पुं) বিয়োগ, প্ৰিয় জনৰ পৰা বিচ্ছেদ ।
किसी से अलग या रहित होने का भाव ।

बिरही—(बि) বিৰহী ।
वियोगी ।

बिराग—[सं पुं] উদাসীন ভাৱ, বৈৰাগ্য ।
रुचि या इच्छा का अभाव । वैराग्य ।

बिराजना—[क्रि स] ভূষিত হোৱা, বিৰাজ কৰা, বহা, বিদ্যমান ।
शोभित होना । बैठना । विद्यमान होना (आदर-सूचक).

बिराजमान—(बि) ভূষিত, উপস্থিত ।
शोभित । उपस्थित । बैठा हुआ ।

बिराम—(सं पुं) থমা । বিশ্ৰাম ।
रुकना । विश्राम ।

बिरासत—[सं स्त्री] উত্তৰাধিকাৰ ।
उत्तराधिकार ।

बिरुद—(सं पुं) যশবৰ্ণন, যশ । প্ৰশস্তি ।
यश-बर्णन । प्रशस्ति । यश ।

बिरुदावली—(सं स्त्री) প্ৰশংসা, গুণাৱলী ।
प्रशंसा । गुणावली ।

बिरेचन—[सं पुं] শৌচ কৰোৱা ঔষধ, জুলাপ, ওলোৱা ।
दस्त लानेवाली दवा । जुलाब । निकालना ।

विरोधाभास—(सं पुं) বিৰোধৰ আভাস থকা ।
दो बातोंमें दिखाई देनेवाला विरोध ।

विलंब—(सं पुं) পলম ।
देर ।

विलंबना—[क्रि अ] পলম কৰা, ওলমি থকা, আশ্রয় লোৱা, থমা ।
देर करना या लगाना । लटकाना । सहारा लेना, रुकना ।

विलक्षण—(वि)অদ্ভুত । অসাধাৰণ ।
अदभुत् । असाधारण।

विलग—[वि] বেলেগ, পৃথক ।
अलग ।

विलगाना—[क्रि अ क्रि स] বেলেগ হোৱা, পৃথক হোৱা বা কৰা ।
अलग या पृथक होना या करना।

विलय(न)—(सं पुं) বিলয়, ধ্বংশ, নাশ, লীন হোৱা, কোনো ৰাজ্য আন এখনৰ লগত লগ লগা ।
लय या लीन होना । एक वस्तु का दूसरी वस्तुमें मिलकर समा जाना । विघटित होना । किसी राज्यका दूसरे राज्यमें मिलकर एक हो जाना।

विलाप—(सं पुं) বিননি । বিলাপ ।
रो कर दु:ख प्रकट करना ।

विलीन—(सं पुं) অদৃশ্য । দ্রব হৈ মিহলি হোৱা । একে লগ হোৱা ।
अदृश्य । मिला या घुला हुआ । छिपा हुआ ।

विलोकना-[क्रि स] দেখা, চোৱা ।
देखना ।

विलोड़न—[सं पुं] আলোডন । মন্থন । সঞ্চালন ।
आलोडन । मथना ।

विलोम—[वि] বিপৰীত ।
विपरीत ।
[सं पुं] ওপৰৰ পৰা তললৈ অহা ক্রম ।
ऊपरसे नीचे आनेका क्रम ।

विवर—(सं पुं) ফুটা, বিন্ধা, কাঁট, গুহা । গাঁত ।
छिद्र । दरार । गुफा । कंदरा ।

विवर्तन-[सं पुं] পৰিক্ৰমা, চাৰিওপিনে ঘূৰা, ঘূৰা-ফিৰা । অৱস্থান্তৰ, পৰিবৰ্ত্তন, ক্ৰমবিকাশ ।

चक्कर लगाना। घूमना-फिरना।
परिवर्तित अवस्था।

বিবশা—[বি] বুদ্ধি হেৰোৱা, বিবুদ্ধি, বিবশ।
लाचार। लाचार किया हुआ (व्यक्ति)

বিবসন, বিবস্ত্ৰ—[বি] নাঙঠ।
नंगा।

বিবাদাস্পদ—(বি) বিবাদ যুক্ত, কাজিয়া লগা।
जिसके विषयमें विवाद हो। विवाद-युक्त।

বিবিক্ত—[বি] বিভক্ত। নিৰলে থকা বা নিজানত হোৱা। নিৰলে গোপনীয় ভাবে হোৱা
किसी से अलग या पृथक किया हुआ। एकान्तमें रहने या होने वाला। एकान्तमें कुछ गुप्त रूप से होनेवाला।

(সং পুং) অকলশৰীয়া। নিৰল নিজান স্থান।
अकेलापन। एकान्त स्थान।

বিবৃত—[বি] বিস্তাৰিত। মুক্ত। বিৱৰণ, ব্যাখ্যা আদিৰে স্পষ্ট কৰা।
विस्तृत। खुला हुआ। विवरण, व्याख्या आदिके द्वारा स्पष्ट किया हुआ।

বিবৃতি—(সং স্ত্ৰী) বিৱৃতি। বক্তব্য স্পষ্ট ৰূপে কোৱা কথা।
वह कथन या वक्तव्य जो अपने किसी कार्य या बातके स्पष्टी-करण के लिये हो।

বিবৃত্ত—[বি] ঘূৰণ খোৱা, উলটি অহা।
घूमता हुआ। लौटा हुआ।

বিবেকী(সং পুং)বিবেকী ন্যায়-অন্যায় বুজা। উচিত-অনুচিত বুজা। বুধিয়ক জ্ঞানী।
भले बुरे का ज्ञान रखनेवाला। बुद्धिमान। ज्ञानी। न्यायशील।

বিবেচন—(সং পুং) ভালকৈ ভাবি-চিন্তি চোৱা। ভাল বেয়াৰ বোধ। মীমাংসা।
भली भांति परीक्षा करना। विचारपूर्वक निर्णय करना। तर्क वितर्क।

বিশদ— [বি] স্পষ্ট। পৰিষ্কাৰ। ডাঙৰ দীঘল, বিস্তৃত ভাবে। সুন্দৰ।

लम्बा चौड़ा। विस्तृत रूपसे। स्वच्छ। स्पष्ट। सुन्दर।

बिशारद—[सं पुं] পণ্ডিত। জনা বুজা, পাৰ্গত।
पंडित। कुशल।

बिशिख—[सं पुं] শৰ, বাণ।
बाण। तीर।

बिशूचिका, बिसूचिका—(सं स्त्री) কলেৰা, হাইজা।
हैजा।

बिशृंखल—(वि) আউল-বাউল। শ্ৰেণী বা লানি ভগা। বিশৃঙ্খল।
जिसमें क्रम या शृंखला न हो।

बिशेषाधिकार—[सं पुं] বিশেষাধিকাৰ।
वह अधिकार जो साधारणत: सब लोगों को प्राप्त न हो, पर कुछ विशिष्ट अवस्थाओंमें किसी को विशेष रूपसे प्राप्त हो।

बिश्रंभ—[सं पुं] বিশ্বাস। প্ৰণয় কলহ। প্ৰেমালাপ। আত্মীয়তা। গোপনীয়। বধ। বিশ্ৰাম।
दृढ या पक्का विश्वास। प्रेमी और प्रेमिकामें संभोगके समय होने वाला विवाद या झगड़ा। प्रेमालाप। आत्मीयता। गोपनीय। वध। विश्राम।

विश्रब्ध—(वि) শান্ত। বিশ্বাসী। নিৰ্ভীক। বিনয়ী।
शान्त। विश्वास के योग्य। निडर। विनम्र।

विश्रांत—(वि) বিশ্ৰাম কৰি থকা। ক্লান্ত থকা। শান্ত। ক্লান্ত।
जो विश्राम करता हो। ठहरा या रुका हुआ। थका हुआ।

विश्रांति—(सं स्त्री) জিৰণি। ভাগৰ।
विश्राम। थकावट।

वि-श्री—(वि) শ্ৰীহীন। কুৰূপ। কুৎসিত।
श्री या कांति रहित या हीन। भद्दा।

विश्रुत—(वि) প্ৰসিদ্ধ। বিখ্যাত।
प्रसिद्ध। विख्यात।

विश्लिष्ट—(वि) বিশ্লেষণ কৰা। বিকশিত।
जिसका विश्लेषण हुआ हो। विकसित।

विश्वंभर—(सं पुं) ঈশ্বৰ। বিষ্ণু।
ईश्वर। विष्णु।

विश्व-कोष—(सं पुं) বিশ্ব কোষ। সকলো বিষয় অথবা কোনো

বিষয়ৰ সকলো অঙ্গ বিস্তৃত ভাবে বৰ্ণোৱা অভিধান।

वह ग्रन्थ जिसमें सभी विषयो या किसी विषय के सभी अंगो का विस्तार से वर्णन हो।

विश्व-व्यापी—(वि) বিশ্ব-ব্যাপী, সংসাৰ বিযপি।

सारे विश्वमें व्याप्त या फैला हुआ।

विश्वसनीय—[वि] বিশ্বাসী। বিশ্বস্ত।

जिसका विश्वास किया जा सके। विश्वस्त।

विषण्ण—[वि] বেজাৰমুৱা, বিমৰ্ষ। जिसे विषाद हुआ हो। दुःखी।

विषम—(वि) অসমান। কঠোৰ। টান। ভয়ঙ্কৰ। বেয়া ৰকমৰ। অৰ্থালঙ্কাৰ বিশেষ।

जो समान या बराबर न हो। बहुत कठिन। तीव्र। भयंकर। अलंकार विशेष।

विषय—[सं पुं] কোনো বৰ্ণনীয় কথা বা কাৰ্য্য। ইন্দ্ৰিয়ক সুখ দিয়া বস্তু। সম্পত্তি। স্ত্ৰী-সঙ্গম। সাংসাৰিক সুখ। বিষয়।

जिसके बारेमे कुछ कहा या विचार किया जाय। जिसका विवेचन करना हो। स्त्री-सभोग। सम्पत्ति। वह जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करे।

विषयासक्त—(वि) বিষয়াসক্ত। বিলাসী।

जो विषय या सासारिक भोग-विलासमे आसक्त हो। विलासी।

विषयासक्ति—[सं स्त्री] বিষয়াসক্তি। ইন্দ্ৰিয় ভোগৰ প্ৰতি অধিক আসক্তি।

सासारिक विषयो अर्थात भोग विलासकी ओर होनेवाली बहुत अधिक प्रवृत्ति।

विषयी—(सं पुं) বিষয়াসক্ত। বিলাসী। কামত আসক্ত। কামদেৱ। ধনী।

भोग विलासमें आसक्त रहनेवाला-विलासी। कामदेव। धनवान्।

विष वमन—[सं पुं] বৰ কটু বা তিক্ত কথা। অপ্ৰিয় কথা কোৱা।

बहुत ही कटु और अप्रिय लगती हुई बाते कहना।

বিষাণ— (সং পুং) শিঙা বাদ্য। গাহৰিৰ দাঁত ।
सींग । सूअर का दाँत । सींग का एक प्रकारका बाजा ।

বিষাদ--[সং পুং] মনৰ দুঃখ বা বেজাৰ। মন মৰা অৱস্থা। অসন্তোষ।
खेद या दुःख । जड़ता । निश्चेष्टता ।

বিষুব—(সং পুং) সূৰ্য্য বিষুব ৰেখাৰ ওপৰলৈ অহাত দিন ৰাতি সমান হোৱা কাল।
वह समय जब सूर्यके विषुवत् रेखापर पहुँचनेसे दिन और रात बराबर होते हैं ।

বিষুবৎ ৰেখা—[সং স্ত্ৰী] পৃথিবীৰ উত্তৰ আৰু দক্ষিণ মেৰুৰ পৰা সমান দূৰত পূবৰ পৰা পশ্চিমলৈ টনা কল্পিত আঁক।
वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तलके पूरे मानचित्र पर ठीक बीचों बीच गणनाके लिये पूर्व पश्चिम खींची गयी है ।

বিষ্ঠা—[সং স্ত্ৰী] মল, গু।
मल । मैला ।

বিসংবাদ-[সং পুং] সাদৃশ্য, একৰূপতা, মিল আদি নোহোৱা। প্ৰবঞ্চনা। ফাঁকি।
साद्दश्य, एकरूपता मेल आदिका अभाव । छल । धोखा ।

বিসদৃশ—(বি) বিপৰীত। ওলটা। অসমান। বিভিন্ন।
विपरीत । उलटा । असमान । विलक्षण ।

বিসৰ্গ—(সং পুং) দান। এৰা। বিসৰ্গ (ঃ)আখৰ। মোক্ষ মৃত্যু। প্ৰলয়।
दान । छोड़ना । वर्णमालामें एक चिह्न । मोक्ष । मृत्यु । प्रलय ।

বিসৰ্জন—(সং পুং) বিসৰ্জ্জন। পৰিত্যাগ। বিদায় দিয়া। ন্যায়ালয় সভা আদি ভঙ্গ কৰা বা সামৰণি মৰা। পূজাৰ শেষত দেৱতাক বিদায় দিয়া কাৰ্য্য।
परित्याग । विदा करना । न्याया· लयमें वाद आदिका रद्द या खारिज होना । आहूत देवताओं से जाने की प्रार्थना करना ।

বিস্তৰ—(বি) ডাঙৰ দীঘল। খুব বেচি। প্ৰচুৰ।
बड़ा और लम्बा चौड़ा । बहुत अधिक।
(সং পুং)ঢাৰি-পাটী। শয্যা। বিছনা। শেতেলী।
बिछावन ।

विस्तार—[सं पुं] বহু ঠাই জোৰা অৱস্থা । ডাঙৰদীঘল । ।বস্তাৰ ।
लम्बाई और चौड़ाई । फैलाव ।

विस्तीर्ण-[वि] বহল হৈ জুৰি থকা । বিস্তৃত । বহল ।
विस्तृत ।

विस्थापन—(सं पुं) নিজৰ ঠাইত থাকিব নিদিয়া । কোনো বাস কৰা ঠাইৰ পৰা বলপূৰ্ব্বক উচ্ছেদ কৰা ।
किसी को अपने स्थानपर न रहने देना । किसी स्थानपर बसे हुए लोगों को वहाँ से बलपूर्वक हटा देना ।

विस्थापित— (वि) বিস্থাপিত । নিজ বাসভুমিৰপৰা প্ৰতাড়িত ।
जो अपने स्थानसे हटा दिया गया हो । (अं—डिसप्लेस्ड)

विस्फारण—[सं पुं] (পাখি) মেলা । খোলা ।
खोलना । फाड़ना ।

विस्फारित—[सं पुं] ভালদৰে খোলা বা মেলা । চকু বহলাই বা মেলি । বিস্ফাৰিত ।
अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ । फाड़ा हुआ ।

विस्फोट— [सं पुं] ফোঁহোৰা । বিষযুক্ত ডাঙৰ খহু । বিস্ফোৰণ ।
अन्दर की गरमीसे बाहर उबल या फूट पडना । जहरीला और खराब फोड़ा ।

विस्फोटक— (सं पुं) বিষাক্ত ফোঁহোৰা । গৰমৰ বাবে ওলোৱা ফোঁহোৰা । বসন্ত ৰোগ । বিস্ফোৰক ।
जहरीला फोड़ा । गरमी या आघात के कारण भभक उठनेवाल पदार्थ । शीतला का रोग ।

विस्मरण—(सं पुं)পাহৰণ । বিস্মৰণ
भुलावा ।

विस्मित—[वि] আচৰিত ।
जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो ।

विस्मृत—(वि) পাহৰি যোৱা ।
भूला हुआ ।

विहंग—[सं पुं] পক্ষী । চৰাই । শৰ । মেঘ ।
पक्षी । बाण । मेघ ।
(वि) আকাশত বিচৰণ কৰোতা । স্বাধীন ভাবে ফুৰোতা ।

आकाशमें उड़नेवाला। स्वच्छन्द रूपसे विचरण करनेवाला।

बिहँसना—[क्रि अ] হঁহা।
हँसना।

बिहरना—(क्रि अ) বিহাৰ কৰা। ঘূৰা-ফুৰা।
बिहार करना। घूमना-फिरना।

बिहान—(सं पुं) ৰাতিপুৱা।
सबेरा।

बिहार—[सं पुं] ফুৰা। মনৰ আনন্দ আৰু সুখ আদিৰ বাবে কৰা ক্ৰীড়া বা কাৰ্য্য।
टहलना। मनोविनोद और सुख प्राप्ति के लिये होनेवाली क्रीड़ा। बौद्ध भिक्षुओं या साधुओं के रहनेका मठ।

बिहित—(वि) উচিত। উপযুক্ত। বিধান কৰা। বিহিত।
जिसका विधान हुआ या किया गया हो। विधान या कानून के रूपमें लाया हुआ। नियमों के अनुसार उचित या ठीक।

बिहीन—(वि) নথকা। শূন্য। হীন
रहित। त्यागा हुआ।

बीचि—[सं स्त्री] ঢৌ।
तरंग।

बीटक—(सं पुं) তামোলৰ গুৱা।
पान का बीड़ा।

बीतराग—[सं पुं] নিস্পৃহ। নিৰাসক্ত।
जिसने सांसारिक वस्तुओं और सुखोंके प्रति राग या आसक्ति बिलकुल छोड़ दी हो।

बीथी—(सं स्त्री) বাট। নাটকৰ এটি প্ৰকাৰ ভেদ।
मार्ग। नाटकों का एक भेद।

बीभत्स—[वि] অতিশয় কুৰূপ। ঘিণ লগা। নিষ্ঠুৰ। পাপী। ৰসৰসৰ ভিতৰত এক ৰস।
जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। क्रूर। पापी। साहित्य में नौ रसों में से एक।

बीर गति—(सं स्त्री) যুদ্ধ ক্ষেত্ৰত যুঁজি মৃত্যু বৰণ কৰা কাৰ্য্য।
युद्ध क्षेत्रमें वीरतापूर्वक लड़ते हुए मरनेपर प्राप्त होनेवाली गति।

बीर प्रसू—(वि स्त्री) বীৰৰ জন্মদায়িনী।
वीरोंको जन्म देनेवाली।

बीरान—[वि] জন-প্ৰাণী-হীন।
उजाड़।

বীৰুধ (ৎ)—(সং পুং) লতা। গছ। ডাল।
लता। पौधा।

বীৰ্য্য—[সং পুং] বল। পৰাক্ৰম। ধাতু। বীৰত্ব। বীৰ্য্য।
शुक्र। बल। पराक्रम।

বৃংত—(সং পুং) বেটু। ফুল বা ফলৰ চুপহি। সৰু ফল।
वह पतला डण्ठल जिसपर फूल या फल लगा रहता है। कच्चा और छोटा फल।

বৃংদ—(সং পুং) দল। বৃন্দ।
दल। झुण्ड।

বৃক—(সং পুং) শিয়াল। কুকুৰনেচীয়া বাঘ। চোৰ।
गीदड़। भेड़िया। चोर।

বৃত্ত—(সং পুং) বৃত্তান্ত। অৱস্থা। জীৱনৰ উপায়। ঘুৰণীয়া। ঘুৰণীয়া ক্ষেত্ৰ।
वृत्तान्त। हाल। जीवनका साधन। मण्डल। गोला। घेरा।

বৃত্তি— (সং স্ত্ৰী) জীৱিকা। ব্যৱসায়। স্বভাৱ। প্ৰকৃতি। ছাত্ৰবৃত্তি। জলপানী।
जीविका। पेशा। किसीके भरण पोषण आदि के लिये दिया जाने वाला धन। स्वभाव।

বৃত্ৰ—[সং পুং] অন্ধকাৰ, মেঘ, ধ্বনি, কাশ্যপৰ মহা-প্ৰতাপী পুতেক, এজন ভক্ত দৈত্য, দধীচি মুনিৰ অস্থিৰে নিৰ্ম্মাণ কৰা বজ্ৰেৰে ইয়াক বধ কৰে।
अंधेरा। मेघ। एक असुर।

বৃথা—(বি) নিৰৰ্থক।
व्यर्थ का।
(ক্ৰি বি) ব্যৰ্থ, নিষ্ফল।
व्यर्थ।

বৃদ্ধ—(সং পুং) বুঢ়া, বিদ্বান।
बुड्ढा। विद्वान।

বৃষ—(সং পুং) ষাঁড়, জ্যোতিষৰ দ্বিতীয় ৰাশি।
सांड। बारह राशियों में से एक।

বৃষল—(সং পুং) শূদ্ৰ, দুষ্কৰ্ম কৰোঁতা, নীচ।
शूद्र। दुष्कर्मी।

বে-(সৰ্ব) সিহঁত, তৃতীয় পুৰুষৰ [সৰ্ব্বনামৰ] বহুবচন।
'वह' का बहुवचन।

বেগ—[সং পুং] প্ৰবাহ, গতি, শীঘ্ৰতা, বেগ।
प्रवाह। जोर। तेजी। शीघ्रता।

वेणी—[सं स्त्री] চেলা, গোঁঠা চুলি, বেণী।
स्त्रियोंके सिर के बालों की गूँथी हुई चोटी।

वेणु—(सं पुं) বাঁহ, বাঁহী।
बाँस। बाँसुरी।

वेतन—(सं पुं) দৰমহা, কামৰ মজুৰী।
तनखाह।

वेताल—(सं पुं) মৰিশালিৰ ভূত, সাধনাৰ বলত বিক্রমাদিত্য নজাই পোৱা শিৱৰ এক ভূত।
शिव का एक गण। एक प्रकार की भूत योनि।

वेत्ता—[वि] জ্ঞাতা, জানোঁতা।
ज्ञाता।

वेदना—(सं स्त्री) যন্ত্রণা, বিষ, শৰীৰত হোৱা পীড়া।
पीड़ा। व्यथा।

वेधना—(क्रि स) ফুটা কৰা, দূৰবীক্ষণ যন্ত্রেৰে গ্রহনক্ষত্রৰ গতিবিধি লক্ষ্য কৰা।
छेदना। दूर दर्शक यंत्रों से ग्रह नक्षत्र आदि की गतिविधि देखना।

वेधशाला—(सं स्त्री) গ্রহনক্ষত্র আদিৰ গতিবিধি যন্ত্রৰ সহায়েৰে নিৰীক্ষণ কৰা ঠাই।
वह स्थान जहाँ ग्रहों, नक्षत्रों और तारों का वेध करने के यंत्र रहते हों। [अं-ऑबजर्वेटरी]

वेला—[सं स्त्री] সময়, সমুদ্রৰ ঢৌ, পাৰ, সীমা।
काल। समय। समुद्र की तरंग। तट। सीमा।

वेश—(सं पुं) সাজ, পোছাক
वस्त्र आदि पहनने का ढंग। पोशाक।

वेष्टन—[सं पुं] বেৰা কাৰ্য্য, কোনো বস্তু মেৰিয়াই দিয়া কাপোৰ।
घेरना या लपेटना। कोई चीज लपेटने का कपड़ा।

वै—[वि] সিহঁত, দুই।
वे। दो।
(प्रत्यय)ও, নিশ্চয়াৰ্থক প্রত্যয়।
भी। ही।

वैकल्पिक—[वि] একাঙ্গী, বৈকল্পিক, ইচ্ছানুযায়ী।
एकांगी। जो अपनी इच्छा के अनुसार चुन कर ग्रहण किया जा सके।

বৈখৰী—[স' স্ত্ৰী] বাণীৰ মুখৰিত ৰূপ, সৰস্বতী।
वाणी का व्यक्त रूप। वाग्देवी।

বৈচাৰিক—(বি) বিচাৰ সম্বন্ধীয়, ন্যায় বিভাগৰ লগতে সম্বন্ধ থকা।
विचार सम्बन्धी। न्याय विभाग और उसके विचार या व्यवहार-दर्शन से सम्बन्ध रखनेवाला।

বৈজয়ন্তী—(সং স্ত্ৰী) পতাকা, কণ্ঠৰ পৰা ভৰিলৈকে ওলমা বিষ্ণুৰ পাঁচ বৰণৰ মালা।
पताका। एक प्रकार की माला।

বৈতাল (লিক)—[সং পুং] বৈতালিক, গায়ন, স্তুতি পাঠক।
चारण।

বৈদেহী—(স' স্ত্ৰী) সীতা।
सीता।

বৈদ্য—(সং পুং) চিকিৎসক, বেজ, পণ্ডিত।
पण्डित। वैद्यक शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

বৈধ—(বি) বিধি সিদ্ধ বা আইন মতে কৰা, বৈধ।
कानून के अनुसार ठीक।

বৈধানিক—(বি) বিধান বা আইন আদিৰে সম্বন্ধিত, বিধান বা আইনৰ ৰূপত থকা।
विधान या संघटन के नियमों से सम्बन्ध रखनेवाला। जो विधान के रूप में हो।

বৈভৱ—[স' পু'] বিভূতি, ধন-সম্পত্তি, ঐশ্বৰ্য্য।
धन सम्पत्ति। ऐश्वर्य।

বৈমনস্য—(সং পুং) শত্ৰুতা।
शत्रुता।

বৈমাত্ৰ (ত্ৰেয়)—[বি] বিমাতা বা মাহী মাকৰ লৰা।
विमाता से उत्पन्न।

বৈয়ক্তিক—(বি) ব্যক্তিগত।
व्यक्तिगत।

বৈৰ—(সং পু') শত্ৰুতা।
शत्रुता।

বৈৰী—(সং পু') শত্ৰু।
शत्रु।

বৈসা—[বি] তেনে, তেনেধৰণৰ।
उस तरह का।

বৈসে—(ক্ৰি বি) তেনেধৰণৰ
उस तरह।

বোট—[সং পুং] মত, নির্ব্বাচনৰ সময়ত দিয়া মত।
· चुनाव में दी जानेवाली राय या मत।

ব্যংজক—[বি] ব্যক্ত বা প্ৰকট কৰোঁতা।
व्यक्त, प्रकट या सूचित करने वाला।

ব্যঁজনা—[সং স্ত্ৰী] প্ৰকাশ কৰা কাৰ্য্য ব্যঞ্জনা, শব্দ বা বাক্যৰ গূঢ় অৰ্থ প্ৰকাশ কৰিব পৰা শক্তি, শব্দ শক্তি বিশেষ।
व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया या भाव।
शब्द की तीन शक्तिओं में से एक।

ব্যক্ত—(বি) বিদিত, প্ৰকাশ কৰা বা হোৱা।
प्रकट। स्पष्ट।

ব্যক্তিত্ব—[সং পুং] কোনো ব্যক্তি বা মানুহৰ নিজত্ব। ব্যক্তিত্ব।
'व्यक्ति' का गुण या भाव। वे विशेष गुण जिसके द्वारा व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है।

ব্যগ্ৰ—(বি) উতল, ভীত, ব্যস্ত, কোনো বস্তু পাবলৈ বৰ আগ্ৰহ কৰা।
घबराया हुआ। डरा हुआ। व्यस्त।

ব্যতিৰেক—(সং পুং) বিনে। বাজে। সাহিত্যৰ অলঙ্কাৰ বিশেষ। বাহিৰে।
अभाव। अन्तर। एक अर्थालंकार।

ব্যতীত—(বি) অতীত।
बीता हुआ।

ব্যভিচাৰ—[সং পুং] অনাচাৰ। বেয়া আচৰণ। পৰৰ তিৰোতা বা পুৰুষৰ লৈতে সহবাস।
अनाचार। दुश्चरित्रता। छिनाला। (वि-व्यभिचारी)

ব্যৱধান—[সং পুং] আঁতৰ। দুটা বস্তুৰ মাজত থকা শূন্য ঠাই। বাধা। পৰ্দ্দা। বিভাগ।
ओट। परदा। रुकावट। विभाग।

ব্যৱস্থিত—(বি) ব্যৱস্থিত। নিয়মিত। ব্যৱস্থা বা নিয়ম থকা।
जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो।

व्यष्टि—(सं पुं) ব্যক্তি। সমষ্টিৰ একক।
'समष्टि' का विरुद्धार्थक । व्यक्ति।

व्यसन— (सं पुं) বিপত্তি। বিষয়-বাসনাৰ প্ৰতি আসক্তি। বেয়া অভ্যাস।
विपत्ति। विषयों के प्रति आसक्ति। कोई बुरा शौक या बुरी लत।

व्याख्यान— [सं पुं] ব্যাখ্যা। ভাষণ। বক্তৃতা।
व्याख्या या वर्णन करनेका काम। भाषण।

व्याघ्र—[सं पुं] বাঘ।
बाघ।

व्याज-(सं पुं) ছল। বাধা। পলম।
छल। बाधा। विलम्ब।

व्याध — (सं पुं) ব্যাধ।
চিকাৰী।
बहेलिया।

व्याधि - [सं स्त्री] বেমাৰ। বিপদ।
रोग। विपत्ति। बखेड़ा।

व्यापना—(क्रि अ) বিয়পি পৰা।
বিষপা।
किसी चीज के अन्दर व्याप्त होना या फैलना।

व्यामोह—(सं पुं) অজ্ঞান। মোহ। কিংকৰ্ত্তব্য বিমূঢ় অৱস্থা।
अज्ञान। मोह। किंकर्तव्य विमूढ़ता।

व्याल — (सं पुं)সাপ। বাঘ। ৰজা। বিষ্ণু।
साँप। बाघ। राजा। विष्णु।

व्यावर्तन—[सं पुं] চাৰিওপিনে আগুৰা বা ঘুৰা। সদায় হৈ থকা পৰিবৰ্ত্তন। পাৰ্থক্য।
चारों ओर से घेरना। चक्कर लगाना। घूमना। बराबर होता रहनेवाला परिवर्तन। अन्तर।

व्यास—(सं पुं) 'কথা' কওঁতা। বেদব্যাস। মহাভাৰতৰ লেখক। বিস্তাৰ। বৃত্তৰ কেন্দ্ৰইদি লোৱা পথালি জোখ।
कथा वाचक। वेदोंके सम्पादनकर्ता और महाभारत के रचयिता। विस्तार। फैलाव। वृत्तके केन्द्रसे होकर परिधि के दोनों ओर विस्तृत रेखा।

व्यासार्द्ध—(सं पुं) ব্যাসৰ আধা।
किसी वृत्तके व्यासका आधा भाग।

ব্যাহৃত—(বি)বর্জন কৰা। নিষিদ্ধ। ব্যৰ্থ। বিৰোধী।

वर्जित। निषिद्ध। व्यर्थ। परस्पर विरोधी।

ব্যুৎপত্তি—[সং স্ত্ৰী] উদ্‌গম বা উৎপত্তিস্থান। শব্দৰ মূল, শব্দৰ জন্ম কথা। জ্ঞান। নিপুণ জ্ঞান।

उद्‌गम या उत्पत्तिका स्थान। शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला या बना हुआ हो। शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञान।

ব্যূহ—(সং পুং) বেহু। নিৰ্মাণ, শৰীৰ, বেহু (যুদ্ধত)সৈন্যাবলাক ভাগ ভাগ কৈ ৰখাব প্ৰণালী।

समूह। निर्माण। शरीर। सेना। युद्धमें सेना विन्यास।

ব্যোম—[সং পুং] আকাশ, শৰীৰত থকা বায়ু।

आकाश। आकाश में व्याप्त पारदर्शी तत्व (अं—ईथर)

ব্যোমকেশ—[সং পুং] মহাদেৱ।

महादेव।

ব্যোমচাৰী—(সং পুং) আকাশ পথত বিচৰণকাৰী, দেৱতা, চৰাই।

वह जो आकाशमें विचरण करता हो। देवता। चिड़िया।

ব্যোমযান—[সং পুং] আকাশী জাহাজ। বিমান।

हवाई जहाज।

ব্ৰজন—(সং পুং) গমন, ভ্ৰমণ, অজামিলৰ এটি পুত্ৰ।

चलना। गमन। भ्रमण। अजामिलका एक पुत्र।

ব্ৰণ—[সং পুং] খহু কেঁাহা হোৱা

फोड़ा। घाव।

ব্ৰাত—(সং পুং) শাৰীৰিক পৰিশ্ৰম, মানুহ, দল, সমূহ, বৰযাত্ৰী।

शारीरिक श्रम। मनुष्य। झुण्ड। समूह।

ব্ৰাত্য—(সং পুং) উপনয়ন সংস্কাৰ নকৰা, সংস্কাৰ হীন, জাতিচ্যুত ব্ৰাহ্মণ, বৰ্ণ শঙ্কৰ।

यज्ञोपवीत संस्कार से हीन या रहित। वर्ण शंकर।

ব্ৰীড়া—[সং স্ত্ৰী] লাজ, চৰম।

लाज। शर्म।

ব্ৰীহি—[সং পুং] চাউল। ধান।

धान। चावल।

श

श—বৰ্ণমালাৰ একুৰি দহ সংখ্যাৰ ব্যঞ্জন বৰ্ণ।
वर्णमाला का तीसवाँ व्यंजन वर्ण।

शंक—[सं पुं] ভয়, শঙ্কা।
डर। शंका।

शंकर - [वि] মঙ্গল ময়।
मंगल कारक। [सं पुं] শিৱ।
शिव। (सं स्त्री—शंकरी)

शंपा—(सं स्त्री) বিজুলী, কঁকাল।
विद्युत। कमर।

शंबर—(सं पुं) এক ৰাক্ষস, পৰ্ব্বত, হৰিণৰ প্ৰকাৰ, যুদ্ধ, মায়াজাল, পানী। মেঘ। ধনসম্পত্তি
एक राक्षस। पर्वत। एक प्रकार का हिरन। युद्ध। इन्द्रजाल। जल। मेघ। धन-सम्पत्ति।

शंबु, शंबुक, शंबुक्क—(सं पुं)শামুক।
घोंघा।

शंभु—(सं पुं) মহাদেৱ।
शिव।

शऊर—(सं पुं)ভালদৰে কাম কৰাৰ যোগ্যতা বা প্ৰণালী, বুদ্ধি।
अच्छी तरह काम करनेकी योग्यता या ढंग। बुद्धि।

शक—[सं पुं] মধ্য এছিয়াৰ জাতিবিশেষ, শকাব্দ, শংকা, সন্দেহ।
एक प्राचीन अनार्य जाति। शकाब्द। शंका। सन्देह

शकट—(सं पुं) ৰথ, গৰুগাড়ী, रथ। बैलगाड़ी।

शकर, शक्कर—(सं स्त्री) চেনি।
चीनी। कच्ची चीनी।

शकरकन्द—[सं पुं] মিঠা আলু।
एक प्रकार का मीठा कन्द।

शकल, शक्ल—[सं स्त्री] মুখৰ চেহেৰা। চেহেৰা। আকৃতি।
मुखकी आकृति। चेहरा। मुखका भाव। बनावट।

शकुंत—(सं पुं) এবিধ চৰাই।
एक चिड़िया।

शकुन, शगुन—(सं पुं) শুভ বা অশুভ লক্ষণ, শুভমুহূৰ্ত্ত, শুভ ক্ষণত হোৱা কাৰ্য্য।

किसी विशेष कार्य के आरम्भ में दिखाई देनेवाले शुभ या अशुभ लक्षण। शुभ मुहूर्त। शुभ मुहूर्तमें होनेवाला कार्य।

शक्की—(वि) সন্দেহী লোক।
हर बातमें शक या सन्देह प्रकट करनेवाला।

शक्य · [वि] সাধ্য, সম্ভৱ,হবৰ যোগ্য
क्रियात्मकरूपसे हो सकने योग्य।

शक्र—(सं पुं) ইন্দ্ৰ।
इन्द्र।

शख्स—[सं पुं] ব্যক্তি, মানুহ।
व्यक्ति।

शगल—[सं पुं] ব্যৱসায, মনো-বিনোদ, ভগবানৰ ধ্যান।

व्यापार। काम धन्धा। मनो-विनोद।

शगूफा-(सं पुं)ক'লি। ফুলৰ ক'লি। আচৰিত কথা।

कली। फूल। कोई विलक्षण घटना या बात।

शठ—(वि) धूर्त्त, বঞ্চক, দুষ্ট, ফাঁকি দিয়া মানুহ।
धूर्त। लुच्चा। मूर्ख। पापी।

शत—[वि] এশ।
सौ।

शत-दल—[सं पुं] কমল, পদুম ফুল।
कमल।

शतधा—(अव्य) এশ প্ৰকাৰে, এ শ টুকুৰাত।
सैकड़ों बार। सैकड़ों प्रकारसे। सैकड़ों टुकड़ों में।

शतरंज—(सं पुं) খেল বিশেষ, পাশা খেল।
एक प्रकार का खेल।

शतशः—(वि) এশ গুণ, খুব বেছি।
सैकड़ों। सौगुना। बहुत अधिक।

शतायु—(वि) শতায়ু, এশ বছৰ বয়সীয়া।
सौ वर्षों की आयुवाला।

शनाख्त—(सं स्त्री) চিনাক্ত।
पहचान।

शनैः—[अव्य] লাহে, ধীৰে।
धीरे। आहिस्ता।

शपथ—(सं स्त्री) শপত, প্ৰতিজ্ঞা।
कसम। प्रतिज्ञा।

शबनम—[सं स्त्री] নিয়ৰ, বৰ পাতল মিহি কাপোৰ।

ओस। एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।

शबर—(सं पुं) ভাৰতবাসী-এটি প্ৰাচীন অনাৰ্য্য জাতি।

भारतमें बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति।

शबल (लित)—(वि) নানা ৰঙৰ, বহু ৰঙৰ, ৰং বিৰঙৰ, চিতৰা-পখৰা।

चितकबरा। रंग-बिरंगा।

शबीह—[सं स्त्री] চিত্ৰ।

चित्र।

शब्द-बेधी—[सं पुं] শব্দভেদী, শব্দশুনি দিক্‌নিৰ্ণয় কৰি শৰ নিক্ষেপ কৰোঁতা।

केवल सुने हुए शब्दसे दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को वाण से मारनेवाला।

शब्दशः—[क्रि अ] আখৰে আখৰে অনুকৰণ কৰা।

प्रत्येक शब्द के अनुसार या अनुकरण पर।

शब्दित—(वि) ধ্বনিত, বাদিত, শব্দ হোৱা।

जिसमें शब्द उत्पन्न होता हो। बोलता हुआ।

शम—(सं पुं) শান্তি, মোক্ষ, ইন্দ্ৰিয়ক বশত ৰখা, ক্ষমা।

शान्ति। मोक्ष। अन्तःकरण तथा इन्द्रियों को वशमें रखना। क्षमा।

शमन—(सं पुं) শান্ত, দোষ বিকাৰ আদি দমন কৰা, যম।

दोष, विकार आदि दबाना। शान्ति। यमराज।

शमशेर—(सं स्त्री) তৰোৱাল।

तलवार।

शमा—[सं स्त्री] মমবাঁতি, চাকি

मोमबत्ती।

शमादान—(सं पुं)মমবাঁতি জ্বলোৱা পাত্ৰ।

वह आधार जिमसे मोमबत्ती जलायी जाती है।

शयन—(सं पुं) শয়ন, শোৱা কাৰ্য্য, পালেং, বিচনা।

सोना। लेटना। पलंग। बिस्तर।

शयनागार, शयनालय—[सं पुं) শোৱা কোঠালি।

सोनेका कमरा।

शय्या—[सं स्त्री] বিচনা।

बिस्तर।

शार—(सं पुं) শৰ, বাণ, গাখীৰৰ সৰ।
वाण। दूध या दहीपरकी मलाई।

शारअ—(सं स्त्री) কোৰাণত লিখা নিয়ম, পৰিপাটী, মুছলমানৰ ধৰ্ম্মশাস্ত্ৰ।
कुरान में बतलाया हुआ विधान। परिपाटी। मुसलमानोंका धर्मं शास्त्र।

शारण—(सं स्त्री) শৰণ, আশ্ৰয়, ঘৰ।
आश्रय। बचाव की जगह। घर।

शारणागत-(वि)শৰণাগত, আশ্ৰয়ৰ নিমিত্তে ওচৰ চপা।
शरणमें आया हुआ।

शारतिया, शर्त्तिया—(क्रि वि) নিশ্চয়কৈ, নিশ্চিত ভাবে
निश्चयपूर्वक।
[वि] ঠিক, অব্যৰ্থ, বিনাচৰ্ত্তে
बिलकुल ठीक।

शारबती—[वि] চৰবতৰ ৰঙৰ,
शरबत के रंग का।

शारभ—(सं पु) উট, হাতীৰ পোৱালী, সিংহ, আঠ ভৰিৰ এটি কল্পিত জন্তু, পশু, বান্দৰৰ এটা জাতি, ছন্দ বিশেষ, কাকতিফৰিং
टिड्डी। हाथीका बच्चा। शेर। ऊँट। आठ पैरोंवाला एक कल्पित जन्तु। पशु। बानरों की एक जाति। एक प्रकार का छन्द।

शारम, शर्म—(सं स्त्री) লাজ, চৰম, সঙ্কোচ, প্ৰতিষ্ঠা।
लज्जा। लिहाज। संकोच। प्रतिष्ठा।

शारमाऊ, शारमीला—[वि] লাজ কুৰীয়া
जिसे जल्दी लज्जा या शरम आती हो। लज्जालु।

शारमाना—(क्रि अ)লজ্জিত হোৱা, লাজ কৰা।
लजाना। लज्जित होना।
[क्रि स] লাজ কৰা।
लज्जित करना।

शारमिंदा—(वि) লজ্জিত।
लज्जित।

शाराकत-(सं स्त्री)অংশীদাৰ। অংশ।
साझा।

शाराफत—(सं स्त्री) সজ্জনতা।
সাধুতা।
सज्जनता।

शाराब—[सं स्त्री] মদ।
मदिरा। (वि-शराबी)

শৰাবখোৰী[সং স্ত্ৰী] মদ খোৱা।
मद्य पान।
मदिरा-पान ।

শৰাবোৰ-(বি) একেবাৰে তিতি যোৱা, তিতি-বুৰি।
बिलकुल भींगा हुआ।

শৰাৰত—[সং স্ত্ৰী] দুষ্টতা ।
पाजीपन। दुष्टता।

শৰাসন—(সং পুং) ধেনু।
धनुष ।

শৰীক—(বি) উপস্থিত। সম্মিলিত।
किसी काम में साथ देनेवाला।
सम्मिलित ।
(সং পুং) সহায়ক। অংশীদাৰ।
साथी और सहायक। हिस्सेदार।

শৰীফ--[সং পুং] সৎলোক। সজ্জন।
भला आदमी। सज्जन।

শৰীফা—[সং পুং] আতেফল।
ফল বিশেষ। আতলস-কঁঠাল।
सीता-फल।

শৰীৰাংত—(সং পুং) মৃত্যু।
मृत्यु।

শৰ্ব—(সং পুং) শিৱ। বিষ্ণু।
शिव। विष्णु।

শৰ্বৰী—(সং স্ত্ৰী) ৰাতি। रात।

শলভ-[সং পুং]পতঙ্গ। কাকতিফৰিং।
फतिंगा। टिड्डी।

শলাকা—(সং স্ত্ৰী) শলা। কাঠ, বাঁহ, লো আদিৰ জোঙা গোটা কাঠী। শৰ।
सलाई। सींक। बाण।

শল্য-(সং পুং) হাড়। গালি, গঞ্জাল, শলা। মদ্ৰ দেশৰ ৰজা। পাণ্ডু-পত্নী মাদ্ৰীৰ ভায়েক।
हड्डी। गाली। मद्र देश के राजा। माद्री के भाई।

শল্যকৰ্ম—(সং পুং) চিকিৎসকে কৰা বেমাৰ আদিৰ কটা-চিঙা কাৰ্য্য। অস্ত্ৰোপচাৰ কাৰ্য্য।
फोड़ों, रोग युक्त अंगों आदि को चीरने-फाड़ने और टूटी हुई हड्डियाँ आदि जोड़ने या उखड़ी हुई हड्डियाँ आदि बैठाने की विद्या या काम। (अं-सर्जरी)

শল্য চিকিৎসা—(সং স্ত্ৰী) অস্ত্ৰোপচাৰ। শল্য কৰ্ম।

শৱ—(সং পুং) মৰা শ।
मृत्यु शरीर।

শাবৰ—(সং পুং) পুৰণি পাহাৰী জাতি বিশেষ।
एक प्राचीन जंगली जाति।

शश, शशा—(सं पुं) শহাপছু।
खरगोश।

शशक—[सं पुं] শহাপছু। চন্দ্ৰৰ কলঙ্ক।
खरगोश। चन्द्रमामें का कलक।

शशधर, शशांक, शशि—(सं पुं) চন্দ্ৰ। জোন।
चन्द्रमा।

शशिधर, शशिशेखर—(सं पुं) মহাদেৱ।
महादेव।

शस्त्रागार—[सं पुं] অস্ত্ৰাগাৰ।
शस्त्रों के रखने का स्थान।

शह—(वि) বঢ়া-বাঢ়। বঢ়া-চঢ়া।
बढ़ा-चढ़ा।
(सं स्त्री) উৎসাহ দিয়া বা প্ৰৰোচিত কৰা কাৰ্য্য। পাশা খেলৰ চাল বিশেষ।
बढावा देने या भड़काने की क्रिया या भाव। शतरंज के मोहरे की एक चाल।

शहजोर—(वि) বলবান। শক্তিমান।
बली। बलवान।

शहतीर—[सं पुं] অট্টালিকা আদিৰ গমবুজ।
(इमारत में) लकड़ी का बड़ा और लम्बा लट्ठा।

शहतूत—(सं पुं) মুনি গছ।
मझोले आकार का एक वृक्ष।

शहद—[सं पुं] মৌ, মধু।
मधु।

शहनाई—[सं स्त्री] চানাই। মুখেৰে ফুঁকোৱা এবিধ বাদ্য যন্ত্ৰ।
रोशन-चौकी।

शहबाला—[सं पुं] বিয়াৰ দিনা বৰৰ লগত সৰু ল'ৰা। [সাধাৰণতে বৰৰ ভায়েক।
विवाह के समय दूल्हे के साथ जानेवाला छोटा बालक।

शहराती-[वि] নগৰীয়া। নাগৰিক।
नागरिक।

शहरी—(वि) নগৰৰ।
शहर का।
(सं पुं) নগৰবাসী। নাগৰিক।
शहर में रहनेवाला।

शहादत—[सं स्त्री] সাক্ষী।
गवाही।

शाक–[सं पुं] তৰকাৰী। শাক ভজা।
भाजी। तरकारी।

[বি] শক জাতি সম্বন্ধীয়া।
शक जाति सम्बन्धी।

शाकाहार— [सं पुं] নিৰামিষ ভোজন। শাক-পাত আদিৰে কৰা ভোজন।
वनस्पति जन्य पदार्थों और अन्न का भोजन (वि-शाकाहारी)

शाक्त-[वि] শাক্ত। শক্তি সম্বন্ধীয়।
शक्ति सम्बन्धी।
(सं पुं) শক্তিৰ উপাসনা।
शक्ति या देवी की उपासना।

शाख (।)—(सं स्त्री) ডাল। ঠানি। শাখা। বিভাগ; অংশ। অধ্যায় সম্প্ৰদায়।
टहनी। डाल। किसी मूल वस्तु के अंग जो स्वतंत्र विभाग के रूप में विकसित हुए हो। किसी संस्था का अंग।

शाखा-मृग—(सं पुं) বান্দৰ।
बन्दर।

शागिर्द--[सं पुं] বিদ্যাৰ্থী। শিষ্য চেলা। शिष्य।

शाण—[सं पुं] শান। অস্ত্ৰ ধাঁহি চোকা কৰা এবিধ কোমল শিল। শিল, কষটি। পৰীক্ষা।
सान रखने का पत्थर। पत्थर। कसौटी।

शादी—(सं स्त्री)বিয়া। আনন্দোৎসৱ। আনন্দ।
विवाह। खुशी। आनन्दोत्सव।

शाद्वल (वि) মৰুস্থান।
रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती। (अं- ओएसिस)

शान—(सं स्त्री) দৰ্প। ভব্যতা। শক্তি। প্ৰতিষ্ঠা। ঠাট। জাঁক-জমক।
ठाट-बाट। दर्प। भव्यता। शक्ति। प्रतिष्ठा।

शान-शौकत—[सं स्त्री] ঠাট। ঐশ্বৰ্য্য। জাক জমক।
ठाट बाट। सजावट।

शाप—(सं पुं) শাও। লোকৰ অমঙ্গল কৰা বাক্য। গালি।
किसी की अनिष्ट-कामना से कहा हुआ वाक्य या शब्द। भर्त्सना।

शापना—[क्रि स] শাও দিয়া। শাপ দিয়া।
शाप देना।

शापित—[वि] শাপগ্ৰস্ত। শাওত পৰা। অভিশপ্ত। शाप-ग्रस्त।

শাব্দিক—(বি)শব্দ সম্বন্ধীয়। শব্দেৰে [কোৱা]। আখৰে আখৰে [অনুবাদ কৰা]।
शब्द सम्बन्धी। शब्दों में (कहा हुआ)। (अनुवाद में) प्रत्येक शब्द के विचार से ठीक और ज्यों का त्यों।

শাম—[সং স্ত্ৰী] সন্ধ্যা।
साँझ। संध्या।

শামত-(সং স্ত্ৰী) দুৰ্ভাগ্য। বিপদ।
दुर्भाग्य। विपत्ति।

শামিয়ানা— (সং পুং) তামীঘৰা। ডাঙৰ তম্বু।
एक प्रकार का बड़ा तम्बू या खेमा।

শামিল—(বি) সম্মিলিত। মিলিত।
सम्मिलित।

শায়ক—(সং পুং) বাণ, শৰ, তৰোৱাল।
वाण। खड्ग।

শায়দ-(অব্য)সম্ভৱতঃ, কদাচিত।
कदाचित। सम्भव है।

শায়ৰ—(সং পুং) কবি।
कवि।

শায়ৰী—[সং স্ত্ৰী] কবিতা লিখা কাৰ্য্য, কাব্য।
कविताएँ रचना। काव्य।

শাৰদ, শাৰদীয়—[বি] শৰৎ কালৰ।
शरद काल का।

শাৰদা—[সং স্ত্ৰী] সৰস্বতী।
सरस्वती।

শাৰ্গং—(সং পুং) ধেনু, ধনু, বিষ্ণুৰ ধনু।
धनुष। विष्णुका धनुष।

শাৰংগধৰ (পাণি)—[সং পুং] বিষ্ণু, শ্ৰীকৃষ্ণ।
विष्णु। श्रीकृष्ण।

শাৰ্দূল—[সং পুং] বাঘ, চৰাই বিশেষ, ৰাক্ষস।
बाघ। एक प्रकार की चिड़िया। राक्षस।
(বি) সৰ্ব্বশ্ৰেষ্ঠ।
सर्व श्रेष्ठ।

শালীন—(বি) বিনীত, নম্ৰ, সৎস্বভাৱৰ, দক্ষ, ধনী।
विनीत। नम्र। अच्छे आचार-विचारवाला। धनवान। दक्ष।

শাল্মলি-[সং পুং] শিমলু গছ, পৃথিবীৰ সাতোতা দ্বীপৰ এটা।

सेमल का वृक्ष। एक पौराणिक द्वीप।

শাবক–[স ং পু ং] পোৱালি, চলিব বা উৰিব পৰা জন্তু বা চৰাইৰ পোৱালি।
पशु या पक्षी का बच्चा।

শাশ্বত—(বি) চিৰকলীয়া, চিৰ-স্থায়ী, অবিনষ্ট।
जो सदा बना रहे।

শাহংশাহ—[স ং পু ং] ডাঙৰ ৰজা, সম্ৰাট।
बहुत बड़ा बादशाह।

শাহ—(স ং পু ং) মহাৰাজ, ৰজা, মুছলমান ফকীৰৰ উপাধি।
महाराज। बादशाह। मुसलमान फकीरों की उपाधि।
(বি) মহান।
बहुत बड़ा या महान।

শাহ খৰ্চ-(বি) বৰ খৰচী, বহুব্যয়ী।
बहुत खर्च करनेवाला

শাহজাদা—(স ং পু ং) ৰাজকুমাৰ।
बादशाह का लड़का।

শাহী—(বি) ৰাজকীয়, ৰজাৰ।
बादशाहों का।

শিঞ্জন—(স ং পু ং) মধু ধ্বনি, অল-ঙ্কাৰৰ শব্দ বা ধ্বনি।
मधुर ध्वनि। आभूषणोंकी झंकार।
(বি) মধুৰ শব্দ কৰোতা।
मधुर ध्वनि करनेवाला।

শিঞ্জিনী—(স ং স্ত্ৰী) নূপুৰ, আঙুঠি। ধনুৰ গুণ।
नूपुर। अंगूठी। धनुषकी डोरी।

শিকংজা—[স ং পু ং] কঠোৰ শাস্তি দিয়া এবিধ প্ৰাচীন যন্ত্ৰ, ছেপা-শাল।
दबाने, कसने आदिका यन्त्र। कठोर दंड देने के लिये एक प्राचीन यन्त्र।

শিকন—(স ং স্ত্ৰী) কোঁচ খোৱা, সঙ্কুচিত হোৱা, মোকোট, চাপ খাই ঠেক বা চুটি হোৱা অৱস্থা।
सिलवट।

শিকমী—(বি) পেটৰ, জন্মগত, আন্তৰিক।
पेट सम्बन्धी। किसीके अन्तर्गत रहनेवाला।

শিকস্ত—(স ং স্ত্ৰী) পৰাজয়।
पराजय।

শিকায়ত—(সং স্ত্ৰী) নিন্দা,আপাত্ত, দোষ বৰ্ণন, বেমাৰ ।
নিদা। চুগলী। উলাহনা। রোগ।

শিকাৰ—(সং পুং) চিকাৰ,মাংস।
आखेट। मांस।

শিখণ্ড—[সং পুং] ম'ৰা চৰাইৰ পাখি, টিকনি।
मोरकी पूँछ। चोटी।

শিখণ্ডী—[সং পুং] ম'ৰা চৰাই, শৰ, শিখা, টিকনি, দ্ৰুপদ ৰজাৰ কন্যা [জন্মত]। পাছত তপৰ বলত পুৰুষ হয়; এওঁক সন্মুখত ৰাখিয়েই অৰ্জ্জুনে ভীষ্মক কুৰু-ক্ষেত্ৰত পৰাজয় কৰে।
मोर। मुर्गा। वाण। शिखा।

শিখা—(সং স্ত্ৰী) টিকনি, জুইৰ আগ, চাকিৰ জুই-শিখা।
चोटी। दीपक की लौ। आग की लपट। नोक।

শিখি—(সং পুং) ম'ৰা চৰাই, কামদেৱ, অগ্নি বা জুই।
मोर। कामदेव। अग्नि।

শিখী—(বি) টিকনি থকালোক
शिखा या चोटीवाला।
[সং পুং] ম'ৰা চৰাই, কুকুৰা চৰাই, বলদ, ঘোঁৰা, জুই, শৰ।
मोर। मुर्गा। बैल। घोड़ा। अग्नि। वाण।

শিত—(বি) তীক্ষ্ণ, অস্ত্ৰৰধাৰ থকা।
धारदार।

শিতি—(বি) বগা, নীলা।
श्वेत। नीला।

শিতিকণ্ঠ—[সং পুং] মহাদেৱ, মৰ চৰাই।
महादेव। मोर (पक्षी)

শিথিল—(বি) শিথিল, ঢিলা লোলা, আঁত নোপোৱা।
ढीला। धीमा।

শিনাখ্ত—(সং স্ত্ৰী) চিনাক্ত।
पहचान।

শিফৰ—[সং পু] ঢাল।
ढाल।

শিৰমৌৰ—(বি) সৰ্ব্বশ্ৰেষ্ট, শিৰৰ ভূষণ।
सबमें श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

শিৰস্ত্ৰাণ—[সং পুং] যুজৰ সময়ত পিন্ধা লোহাৰ টুপী।
युद्धके समय सिरपर पहना जाने वाला लोहेका टोप।

शিৰোধাৰ্য—[বি] মানিব লগা, শিৰত তুলিব লগীয়া, শিৰোধাৰ্য্য।
आदरपूर्वक ग्रहण करने योग्य।

शिरोभूषण—(सं पुं) মুকুট।
मुकुट।
(वि) সৰ্ব্বশ্ৰেষ্ঠ।
सर्वश्रेष्ठ।

शिरोमणि—(सं पुं) মূৰৰ মণি বা মুকুট।
सिरपर पहनने का रत्न।
(वि) শ্ৰেষ্ঠলোক, চূড়ামণি।
सबसे अच्छा।

शिरोरुह—(सं पुं) মূৰৰ চুলি।
सिरके बाल।

शिला—(सं स्त्री) শিল, শিলৰ ডাঙৰ দীঘল টুকুৰা।
पत्थर की पटिया या बेड़ा। चौड़ा टुकड़ा।

शिलाजीत—[सं स्त्री] সূৰ্য্যৰ তাপত শিলৰ পৰা ওলোৱা ক'লা ৰস-চিকিৎসকৰ মতে শৰীৰৰ পুষ্টি সাধনকাৰী ঔষধ।
चट्टानोंसे निकलनेवाली एक पौष्टिक काली औषधि।

शिलान्यास, शिला रोपण—(सं पुं) ঘৰ আদিৰ পোণ প্ৰথমে বুনিয়াদ অথবা ভেটিৰ নিৰ্ম্মাণ কাৰ্য্য আৰম্ভ কৰা।
भवन आदि बनाने से पहले उसकी नीवका पत्थर रखा जाना।

शिलीमुख—[सं पुं] ভোমোৰা।
भौंरा।

शिवा—[स स्त्री] পাৰ্ব্বতী, শিয়ালী, মোক্ষ।
पार्वती। शृगाली। मोक्ष।

शिवालय, शिवाला—[सं पुं] শিৱৰ মন্দিৰ।
शिवका मंदिर।

शिविका—(स स्त्री) দোলা, পাল্কী।
पालकी।

शिविर—(सं पुं) শিবিৰ, বাহৰ, দুৰ্গ।
पड़ाव। खेमा। दुर्ग।

शिशिर—(सं पुं) শীত ঋতু।
शीत काल।

शिश्न—[सं पुं] জননেন্দ্ৰিয়, (পুৰুষৰ) লিঙ্গ।
जननेन्द्रिय।

शिष्ट—[सं पुं] ভদ্ৰ, সাধু, সুশীল।
भला आदमी। सभ्य।

শিষ্টতা—[স স্ত্ৰী] ভদ্ৰতা, সজ গুৰ্ণ বা আচৰণ।
सभ्यता। उत्तमता।

शिष्टमंडल—(सं पुं) প্ৰতিনিধি মণ্ডল।
प्रतिनिधि-मंडल।

शिस्त—[स स्त्री] লক্ষ্য, বৰসী।
निशाना।

शीत—[वि] শীত, চেচা, জাৰ, জাৰকালি।
ठण्डा। जाड़ा। जाड़ेके दिन।

शीतज्वर—[सं पुं] মেলেৰিয়া জ্বৰ।
मलेरिया बुखार।

शीतला—[सं स्त्री] বসন্ত ৰোগ। বসন্ত ৰোগ উপশম কৰা গোসানী।
चेचक रोग। इस रोगकी अधिष्ठात्री देवी।

शीरा—(सं पुं) চৰ্ব্বিত। কোনো বস্তু ঘুটি বা খুন্দি তৈয়াৰ কৰা পানীয় ৰস।
चाशनी।

शीर्ष—[सं पुं] মুৰ। উপবিভাগ। কপাল। শীৰ্ষক।
सिरा। चोटी। मस्तक। खाते आदि की मद या विभागका नाम।

शील—[सं पुं] স্বভাব। প্ৰবৃত্তি। চলন-ফুৰণ। সৎপ্ৰবৃত্তি। সংকোচ শাল।
स्वभाव की प्रवृत्ति या रुख। चाल-ढाल। सदवृत्ति। संकोच। [वि] প্ৰবৃত। নিযুক্ত। তৎপৰ। বৰ মনোযোগী।
प्रवृत्त। तत्पर।

शीश—(सं पुं) মূৰ।
मस्तक। शीर्ष।

शीशम—[सं पुं] চেগুণৰ লেখীয়া গছ এবিধ।
शिशपा का वृक्ष।

शुंड—[सं पुं] হাতীৰ শুঁৰ।
हाथीकी सूँड़।

शुंडी—[सं पुं] হাতী। মদ তৈয়াৰ কৰোঁতা আৰু বেচোঁতা।
हाथी। मद्य बनाने और बेचने वाला।

शुक—[सं पुं] ভাটৌ চৰাই।
तोता।

शुक्ति (क्ता)—(सं स्त्री) মুক্তা।
शामुक।
सीपी।

शुक्रिया—(सं पुं) ধন্যবাদ।
धन्यवाद।

शुक्ल—(वि) বগা। উজ্জ্বল।
सफेद। उजला।

शुचि—[सं स्त्री] পবিত্র স্বচ্ছতা।
पवित्रता। स्वच्छता।
(वि) শুদ্ধ। স্বচ্ছ।
शुद्ध। स्वच्छ।

शुचिता—[सं स्त्री] পবিত্রতা।
पवित्रता।

शुतुर—[सं पुं] উট।
ऊँट।

शुतुर्मुर्ग—(सं पुं) উট চৰাই।
ऊँट-पक्षी।

शुनासीर—(सं पुं) ইন্দ্ৰ।
इन्द्र।

शुबहा—(सं पुं) সন্দেহ।
सन्देह।

शुभचिंतक—(सं पुं) মঙ্গলাকাঙ্খী।
হিতৈষী।
हितैषी।

शुभमस्तु—(अव्य)শুভ হওক। মঙ্গল
হওক।
शुभ हो।

शुभा—(सं स्त्री) শোভা, পোহৰ।
জেউতি। দেৱতা সকলৰ সভা।
शोभा। कांति। देवसभा।

शुभ्र—[वि] বগা। উজ্জ্বল.
सफेद। उजला।

शुमार—(सं पुं) গণনা। হিচাব।
गिनती। हिसाब।

शुश्रूषा—(सं स्त्री) শুশ্ৰূষা, সেৱা।
বেমাৰীৰ পৰিচৰ্য্যা।
सेवा। रोगी की परिचर्या।

शूक—[सं पुं] জোঙ। আলপিন,
জোঙা সুঙ।
अन्न की बाल या सीका। जौ।
आलपीन।

शूकर—(सं पुं) গাহৰি।
सूअर।

शूर—[सं पुं] বীৰ। যুজাৰু।
वीर। योद्धा।

शूरता (ई)—(सं स्त्री) বীৰতা।
বীৰত্ব।
वीरता।

शूरवीर—(सं पुं) বীৰ যোদ্ধা।
अच्छा वीर और योद्धा।

शूरा—(सं पुं) বীৰ। সূৰ্য্য।
वीर। सूर्य।

शूल—[सं पुं]জোঙা অস্ত্ৰ। দোষীক
প্ৰাণ দণ্ড দিবলৈ পোতা জোঙা
শাল। পেটত খোচ মাৰি বা

চিকুট মাৰি ধৰা এবিধ বেমাৰ। কষ্ট। বেদনা।

एक अस्त्र। बड़ा लम्बा और नुकीला काँटा। वायुके प्रकोपसे पेट में होनेवाली एक प्रकार की प्रबल पीड़ा। दर्द।

শূলনা— (ক্রি অ) কঁটাৰ দৰে বিন্ধা। দুঃখ বা কষ্ট দিয়া।

काँटेकी तरह गड़ना। दुःख देना।

শূলী—(সং পুং) মহাদেৱ।

महादेव।

(সং স্ত্রী) দোষীক প্রাণ দণ্ড দিবলৈ পোতা লোহাৰ জোঙা শাল।

सूली। प्राण दण्ड देनेका लोहेका नुकीला डण्डा।

শৃংখল—[(সং স্ত্রী) শ্রেণী বদ্ধ। পৰিপাটীকৈ সজোৱা। শিকলি। শ্রেণী। ক্রমানুসাৰ।

एक दूसरे में पिरोई हुई बहुत सी कड़ियोंका समूह। क्रमसे आने या होनेवाली बहुत सी बातें, चीजें, घटनाएँ आदि। जंजीर। एकही प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदिका क्रम। कतार। सिलसिला।

শৃগ— (সং পুং) পৰ্ব্বতৰ টিং। জন্তুৰ শিং।

पर्वत की चोटी। सींग।

শৃংগাৰ—[সং পুং] ৰতি-ক্রীড়া। সহবাস। সাজোন-কাচোন। সাহিত্যৰ নব ৰসৰ শ্রেষ্ঠৰস।

सजावट। नौ रसोंमें से एक।

শৃংগাৰিক—(বি) শৃঙ্গাৰ সম্বন্ধীয়।

शृंगार सम्बन्धी।

শৃংগী—[সং পুং] হাতী। গছ। পৰ্ব্বত। শিং থকা জন্তু। শিঙা, মহাদেৱ।

हाथी। वृक्ष। पर्वत। सींगवाला पशु। सींगका बना हुआ एक प्रकार का बाजा। महादेव।

শৃগ, শৃগাল—[সং পুং] শিয়াল।

गीदड़।

শেখ-চিল্লী— (সং পুং) কাল্পনিক মহামূৰ্খ ব্যক্তি। আলাসত চাং পতা লোক।

एक कल्पित और महामूर्ख व्यक्ति। व्यर्थ बड़े बड़े मनसूबे बाँधनेवाला।

শেখী— (সং স্ত্রী) অভিমান। অহঙ্কাৰ। আত্ম প্রশংসা কৰা।

অতিশযোক্তি পুর্ণ বর্ণনা ।
अभिमान । घमंड । अकड़ । डींग।

शेर–[सं पुं] বাঘ। বৰ ডাঙৰ বীৰ। উর্দু কবিতা বিশেষ। এবিধ উর্দু ছন্দ।
बाघ । बहुत बड़ा वीर और साहसी व्यक्ति । उर्दू का एक प्रकारकी कविता या छन्द ।

शेरवानी—(सं स्त्री) এক প্রকাৰ দীঘল চোলাজাতীয় পোছাক।
एक प्रकारका अंगा या लम्बा पहनावा ।

शेषनाग—[सं पुं] অনন্ত নাগ। পুৰাণ অনুসৰি হেজাৰ ফণা থকা সাপ বিশেষ।
पुराणों के अनुसार हजार फन वाला एक नाग ।

शेषशायी—(स पु) বিষ্ণু।
विष्णु ।

शैतान--[सं पुं] চয়তান। বাই-বেল আৰু কোৰাণত লিখা মতে মানুহক পাপলৈ নিয়া এটা ভুত।
एक तमोगुणी देव जो मनुष्यों को ईश्वरके विरुद्ध चलाता और धर्म मार्गसे भ्रष्ट करता है ।

शैतानी-(सं स्त्री) দুষ্টতা। চযতানী
दुष्टता । पाजीपन ।
(वि) চয়তান সম্বন্ধীয়। চয়তানৰ। চযতানী।
शैतान सम्बन्धी । शैतान का दुष्टतापूर्ण ।

शैथिल्य-(सं पुं) শিথিলতা। ঢিলা অসাবধানতা।
शिथिलता ।

शैल्य-(सं पुं) পর্ব্বত।
पर्वत ।

शैल-कुमारी-[सं स्त्री] পাহাৰৰ ছোৱালী। পার্ব্বতী।
पहाड़ी देश की कन्या या कुमारी पार्वती ।

शैलजा, शैल-पुत्री, शैलात्मजा-(सं स्त्री) পার্ব্বতী।
पार्वती ।

शैली--[सं स्त्री]] চলন। ধৰণ প্রণালী। ৰীতি। বাক্যৰচনাৰ ৰীতি। শৈলী।
चाल । ढंग । प्रणाली । रीति

वाक्य रचना का विशिष्ट प्रकार, जो लेखक की भाषा सम्बन्धी निजी विशेषताओंका सूचक होता है। (अं—स्टाइल)। हाथ से बनाई जानेवाली वस्तुओं में ऐसी बातों का समूह जिसकी विशेषताओंमें उनके कर्ताओंकी मनोवृत्ति की एक रूपताके कारण साम्य हो।

शैलेन्द्र—[सं पुं] হিমালয়। গিৰিৰাজ।
हिमालय।

शैव—(वि) শৈৱ। শিৱসম্বন্ধীয়। শিৱৰ।
शिव सम्बन्धी। शिवका।
[सं पुं] শিৱৰ উপাসক সম্প্ৰদায়।
शिवका उपासक एक सम्प्रदाय।

शैवलिनी—[सं स्त्री] নদী।
नदी।

शैवाल—[सं पुं] শৈবাল। সাগৰৰ তলত থকা বন আদি।
सेवार।

शैशव—[वि] শৈশৱ। ল'ৰাকাল। শিশু অৱস্থা।
शिशु सम्बन्धी। बाल्यावस्था का।
(सं पुं) ল'ৰাকাল।
बचपन।

शोख—(वि) জেদী, দুষ্ট, চঞ্চল-গভীৰ, ৰঙচঙীয়া।
ढीठ। धृष्ट। पाजी। चंचल। गहरा और चमकदार। (रंग)

शोखी—(सं स्त्री) উদ্দণ্ডতা।
उद्दण्डता।

शोच—(सं पुं) দুঃখ, চিন্তা, অনুতাপ, আফচোচ।
दुःख। अफसोस। चिन्ता।

शोचनीय—[वि] শোক বা দুখ লগোৱা [অৱস্থা], দয়নীয়।
जिसकी दशा देखकर दुःख या चिन्ता हो। बहुत हीन या बुरा।

शोण—(सं पुं) ৰঙা ৰং, তেজ, শোন নামৰ নদী।
लाल रंग। रक्त। सोन नामक नद।

शोणित—(सं पुं) তেজ।
रक्त।
[वि] ৰঙা। लाल।

शोथ—[सं पुं] শোথ ৰোগ, শোৰ ৰোগ। सूजन।

शोध—[सं पुं] শুধ কৰা সংস্কাৰ, শুদ্ধ কৰা, পৰীক্ষা কৰা, অনুসন্ধান।

शुद्ध करनेवाला संस्कार। दुरुस्ती।
चुकता या अदा होना (ऋण)
जांच। खोज।

शोधक—[वि] শুদ্ধ কৰোঁতা, অন্বেষক। অনুসন্ধান কৰ্ত্তা, পৰিষ্কাৰ কৰোতা।
शोध करने, ढूँढ़ने या पता लगाने वाला। शुद्ध करनेवाला।

शोधन—[सं पुं] শোধন, নিৰ্ম্মল বা পবিত্ৰ কৰা কাৰ্য্য, তলাচ কৰা, ধাৰ আদি পৰিশোধ কৰা
शुद्ध या साफ करना। सुधारना। छान-बीन। तलाश करना। ऋण देन आदि चुकाना।

शोधना—[क्रि स] শোধিত বা শুদ্ধ কৰা।
शोधित करना।

शोभन—[वि] শোভা যুক্ত, সুন্দৰ, চকুত লগা, শোভা।
सुन्दर। सुहावन। उत्तम। शुभ।
[सं पुं] অলঙ্কাৰ, মঙ্গল, সৌন্দৰ্য্য।
गहना। मंगल। सुन्दरता।

शोभना—(सं स्त्री) সুন্দৰী তিৰোতা।
सुन्दरी स्त्री।

[क्रि अ] শোভা কৰা, ধুনীয়া লগা, ভাল লগা।
शोभा देना। भला लगना।

शोर—[सं पुं] হাহাকাৰ, গোলমাল, প্ৰসিদ্ধি, খ্যাতি।
कोलाहल। प्रसिद्धि।

शोरबा—[सं पुं] তৰকাৰী, মাংস আদিৰ জোল।
उबाली हुई तरकारी आदि का रस। अं-जूस।

शोला—[सं पुं] অগ্নি শিখা, জুইৰ শিখা।
अग्नि शिखा।

शोहदा—(सं पुं)ব্যভিচাৰী, লম্পট।
व्यभिचारी। आवारा।

शोहरत—(सं स्त्री) খ্যাতি, কিম্বদন্তী, উৰাবাতৰি।
प्रसिद्धि। किवदन्ती। अफवाह।

शौक—(सं पुं) বিলাস-বাসনা, নিচা, বেয়া অভ্যাস বা স্বভাৱ।
व्यसन। चस्का।

शौक-से (मु०)-আগ্ৰহেৰে,আনন্দৰে।
प्रसन्नतापूर्वक।

शौकत—(सं स्त्री) ঠাট, জাক-জমক, আড়ম্বৰ।
शान। अभिमान।

शौकिया—[क्रि वि] মনৰ আনন্দৰ বাবে, নিজ ইচ্ছাৰে, আগ্ৰহেৰে।
. शौकसे। दिल बहलावके लिये।

शौकीन—(सं पुं) চখ থকা, নিচা থকা, সদায় ঠাটত থকা।
वह जिसे किसी बातका बहुत शौक हो। सदा बना-ठना रहने वाला।

शौच—(सं पुं) শুদ্ধতা, শৌচ বা মলত্যাগ। বিষ্ঠা।
शुद्धता। पाखाने या टट्टी जाना।

शौर्य—(सं पुं)বীৰৰস গুণ, বীৰত্ব ধাৰ্য্য।
वीरता। बहादुरी।

शौहर—[सं पु] স্বামী, পতি।
स्त्रीका पति।

श्याम—(वि)শ্যাম বৰণৰ,কলা ৰঙৰ। সাঁও বৰণীয়া।
सांवला।
[सं पु] কৃষ্ণৰ এটি নাম।
कृष्णका एक नाम।

श्यामता—(स स्त्री) শ্যামল, কলা চানেকীয়, ক'লা-সেউজীয়া।
कालापन। सांवलापन।

श्यामा—(स स्त्री) ৰাধিকা, চৰাই এবিধ, ১৬ বছৰীয়া যুবতী, যমুনা নৈ, ৰাতি।
राधिका। एक पक्षी। सोलह वर्ष की युवती। यमुना नदी। रात।
(वि) শ্যাম ৰঙৰ তিৰোতা।
श्याम रंगवाली।

श्येन—(स पु) বাজ বা শেন চৰাই। হিংসুক চৰাই বিশেষ।
बाज (पक्षी)

श्रम-कण—(सं पुं) ঘাম কণা।
परिश्रम के कारण निकलनेवाली पसीने की बूँदें।

श्रम-जल, श्रमवारि, श्रम बिन्दु, श्रमसीकर—[सं पुं] ঘাম।
पसीना।

श्रमण—(सं पुं) বৌদ্ধ সন্ন্যাসী, মুনি।
बौद्ध सन्यासी। मुनि।

श्रमित—(वि) ক্লান্ত, ভাগৰি পৰা।
श्रम के कारण थका हुआ।

श्रवण—(सं पुं) কাণ, শুনা, ২২ নং নক্ষত্ৰ।
कान। सुनना। बाइसवाँ नक्षत्र।

श्रवना—[क्रि स] বৈ যোৱা, টোপ টোপকৈ পৰা।
बहना। टपकना। गिराना या बहाना।

श्रव्य—(वि) শুনিব পৰা বা লগা, নিজ কাণেৰে শুনিব পৰা, শ্ৰব্য।
जिसे कानसे सुन सकें। सुनने योग्य।

श्रान्त—(वि) ক্লান্ত।
थका हुआ।

श्रान्ति—(स स्त्री) পৰিশ্ৰম, ক্লান্তি, বিশ্ৰাম, ভাগৰ।
परिश्रम। परिश्रम के कारण होनेवाली थकावट। विश्राम।

श्राप—(सं पुं) অভিশাপ।
अभिशाप।

श्री—(सं स्त्री) লক্ষ্মী, সৰস্বতী, ধন সম্পত্তি, শোভা, নিজৰ বা আন মানুহৰ নামৰ আগত ব্যৱহাৰ কৰা সম্ভ্ৰম সূচক শব্দ।
लक्ष्मी। सरस्वती। धन-दौलत। शोभा। नामके पहले लगाया जानेवाला एक आदर सूचक शब्द।

श्रीखंड—(सं पुं) চন্দন, পেয় পদাৰ্থ বিশেষ।
हरि-चन्दन।

श्रीफल—(सं पुं) বেল, নাৰিকল।
बेल। नारियल।

श्रीरमण, श्रीश—(सं पुं) বিষ্ণু।
विष्णु।

श्रीहत—(वि) নিষ্প্ৰভ, নিস্তেজ হতশ্ৰী। সৌভাগ্য সম্পত্তি নাশ।
निष्प्रभ। निस्तेज।

श्रुत—[वि] শুনা, প্ৰসিদ্ধ,
सुना हुआ। प्रसिद्ध।

श्रुति-पथ—(सं पुं) কাণ। বেদৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্দিষ্ট পথ।
कान। वेद विहित मार्ग।

श्रुवा—(सं पुं) হোম বাৰি, হোমত ঘিউ দিয়া যতন বিশেষ।
काठकी वह कलछी जिससे हवन के लिये आगमें घी छोड़ा जाता है

श्रेय—[वि] অইনতকৈ ভাল, শ্ৰেষ্ঠ, উত্তম।
अधिक अच्छा। श्रेष्ठ। उत्तम।
[सं पुं] হিত, মঙ্গল জনক, সদাচাৰ, যশ।
अच्छापन। कल्याण। मंगल।

सदाचार। किसी कार्य के लिये मिलनेवाला यश।

श्रेयस्कर–[सं पुं]মঙ্গলকাৰী,কল্যাণ কৰ।
श्रेय देने या श्रेष्ठ बनानेवाला।

श्रेष्ठी-[सं पुं] মহাজন, সদাগৰ।
महाजन। सेठ।

श्रोत्र—(सं पुं) কাণ।
कान।

श्रोत्रिय—[सं पुं] বেদ জনা ব্ৰাহ্মণ, ব্ৰাহ্মণৰ সম্প্ৰদায় বিশেষ, বেদ অধ্যয়ন কৰ্ত্তা।
वेद वेदांगों का अच्छा ज्ञाता। ब्राह्मणों में एक जाति।

श्रौत—(वि) কাণ, কাণ সম্বন্ধীয় বেদোক্ত, বেদ সম্মত, বেদ অনুসৰি।
श्रुति सम्बन्धी। श्रवण सम्बन्धी। जो वेदों के अनुसार हो।

श्लथ—(वि) শিথিল, ঢিলা, দুৰ্ব্বল, সিচৰতি হৈ থকা।
शिथिल। ढीला। धीमा। कमजोर।

श्लाघनीय, श्लाघ्य-(वि) প্ৰশংসনীয়, উত্তম।
श्लाघा या प्रशंसाके योग्य। उत्तम।

श्लाघा—[सं स्त्री] প্ৰশংসা, আত্ম। প্ৰশংসা, কুটুৰা বা কাৰো কৰা। খোচামতি।
प्रशंसा। तारीफ। खुशामद।

श्लिष्ट—[त्रि] শ্লেষপুৰ্ণ,যুক্ত, সম্মিলিত, সংযুক্ত।
एक में मिला या जुड़ा हुआ। श्लेष युक्त।

श्लीपद-(सं पुं) ভৰিফুলা ৰোগ।
फीलपाँव (रोग)

श्लील-(वि) উত্তম, যি অশ্লীল নহয়, ভাল, শ্ৰেষ্ঠ।
उत्तम। शुभ।

श्लेष-(सं पुं) আলিঙ্গন, সংযোগ, আকৰ্ষণ, এটাতকৈ অধিক অৰ্থত একোটা শব্দৰ ব্যৱহাৰ, অৰ্থালংকাৰ বিশেষ।
संयोग। जुडना। एक शब्द के दो या अधिक अर्थ होनेकी अवस्था या भाव। साहित्यमें एक अलंकार।

श्लेष्मा—(सं पुं) কফ।
कफ।

श्वपच—[सं पुं] চণ্ডাল।
चांडाल।

श्वान—(सं पुं) কুকুৰ।
कुत्ता।

श्वापद्—(सं पुं) হিংস্র-চাৰি ঠেঙীয়া, জন্তু।
हिंसक पशु।

श्वास—(सं पुं) উশাহ, উদফাই ৰোগ।
साँस। दमा नामक रोग।

श्वेत—(वि) বগা, নিৰ্মল।
सफेद। निर्मल।

श्वेतांग—(वि) বগা বৰণৰ মানুহ।
जिसके अंगका वर्ण श्वेत हो।
(सं पुं) ফিৰিঙি।
गोरी जाति का कोई व्यक्ति।

ष

ष—বৰ্ণমালাৰ একুৰি এঘাৰ সংখ্যাৰ আখৰ।
वर्णमाला का इकतीसवाँ वर्ण।

षंड (ढ)—(सं पुं) নপুংসক।
नपुंसक।

षट्—(वि) ছয়।
छह।

षट्कोण—(सं पुं) ছয় কোণ যুক্ত।
छः कोणोंवाला।

षट्पद्—(वि) ছয় ঠেঙীয়া।
छ पदों या पैरोंवाला।
(सं पुं) ভোমোৰা।
भ्रमर।

षट्-राग—[सं पुं] সংগীতৰ ছয় ৰাগ, অনাহকত কৰা কাজিয়া।
संगीत के छः राग। व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

षड़ानन, षाण्मातुर—(सं पुं) কাৰ্ত্তিক।
कार्तिकेय।

षड्ज—(सं पुं) ভাৰতীয় সংগীতৰ সপ্তস্বৰৰ প্ৰথম স্বৰ।
संगीतके सात स्वरोंमें से पहला।

षड्रस—(सं पुं) মিঠা, তিতা, কেঁহা, জলা, টেঙা, খাৰ--এই ছবিধৰ আস্বাদ।

छः प्रकारके रस या स्वाद ।

षष्ठ—(वि) ছয় সংখ্যাৰ, ষষ্ঠ ।
छठा ।

षाड़व—(सं पुं) গান, ৰাগ বিশেষ ।
—য'ত কেৱল ছটি স্বৰ হে থাকে ।
वह राग जिसमें केवल छः स्वर लगते हों ।

षाड़व-औड़व—[सं पुं] সঙ্গীতৰ ৰাগ বিশেষ ।
(संगीतमें) एक राग ।

षाण्मासिक—(वि) ছমহীয়া ।
छठे महीने होने या पड़नेवाला ।

षोड़श-(वि) ষোল, ষোল সংখ্যাৰ ।
सोलह ।

षोड़शी—[सं स्त्री] ষোল বছৰীয়া-যুৱতী ।
सोलहवीं । सोलह सालकी युवती
—(सं स्त्री) প্ৰেত কৰ্ম বিশেষ ।
वह कृत्य जो किसी के मरने के दस या ग्यारहवें दिन होता है ।

षोड़शोपचार—(सं पुं) দেৱতা পূজাৰ ষোলটি অঙ্গ ।
पूजन के सोलह अंग ।

स

স—বৰ্ণমালাৰ বত্ৰিশ সংখ্যাৰ আখৰ ।
উপসৰ্গ ৰূপে যুক্ত হৈ, সৈতে, সহিতে, সমান, অভিন্ন, এক আদি অৰ্থ কৰে ।
वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन । उपसर्ग रूपमें लगकर-सहित, एक ही में का, पूर्वक आदि अर्थ देता है ।

सं—(अव्य) 'सम' ৰ সন্ধিগত ৰূপ । শোভা, সমান, উৎকৃষ্টতা আদি বুজাবৰ বাবে শব্দৰ আগত ব্যৱহৃত উপসৰ্গ ।
एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले शोभा, समानता, उत्कृष्टता आदि सूचित करने के लिये लगता है ।

संकट—(सं पुं) বিপত্তি, দুঃখ, আঘাত, ঠেক বাস্তা ।
विपत्ति । दुःख । दर्द । जल या स्थल के दो बड़े विभागों को बीच से जोड़नेवाला तंग रास्ता या संकीर्ण अंग ।

संकना—(क्रि अ) শঙ্কা অথবা সন্দেহ কৰা, ভয় কৰা ।
शंका या सन्देह करना । डरना ।

संकर—[सं पुं] মিশ্ৰণ, দুই জাতিৰ মিশ্ৰণ, এটাত মিহলি হোৱা ।
दो चीजोंका आपसमें मिलना या मिलकर एक हो जाना । दोगला ।
[वि] মহাদেৱ ।
शंकर ।

सँकरा—[वि] সংকীৰ্ণ, ঠেক ।
पतला और कम चौड़ा । तंग ।

संकर्षण—(सं पुं) টানি উলিওৱা, ওচৰলৈ অনা, হাল জোৰা ।
खींचना । हल जोतना ।

संकलन—[सं पुं] সংগ্ৰহ কৰা, সংগ্ৰহ, সম্বন্ধ, মিলন।
सं ग्रह या जमा करना। सं ग्रह। जोड़।

संकल्प—(सं पुं) ইচ্ছা, নিশ্চয়, প্ৰয়োজন, উদ্দেশ্য, প্ৰতিজ্ঞা, কল্পনা, দৈবকৰ্ম বা দান আদি দিওঁতে মন্ত্ৰোচ্চাৰ কৰি প্ৰতিজ্ঞা কৰা, এনে কাৰ্য্যৰ মন্ত্ৰ।
कोई कार्य करने का दृढ़ विचार। देव कार्य या दान आदि करने के समय विशिष्ट मंत्र पढ़ते हुए उसका दृढ़ निश्चय करना। इस प्रकार पढ़ा जानेवाला मंत्र।

संकल्पित—[वि] সংকল্পিত, সংকল্প কৰা।
जिसका सं कल्प किया गया हो।

संकाश—(वि) নিচিনা, সমান, ওচৰ।
सदृश। बराबर समीप।

संकीर्ण—(वि) সংকীৰ্ণ, ঠেক, ক্ষুদ্ৰ সৰু, উদাৰৰ, বিপৰীতাৰ্থক।
कम चौड़ा। सं कुचित। 'उदार' का विरुद्धार्थक। क्षुद्र। छोटा।

संकुचित—(वि)কোঁচখোৱা, চাপখোৱা, মন আগ নবঢ়া, ঠেক, কুণ্ঠিত, শঙ্কা যুক্ত।
जिसे सं कोच हो। सिकुड़ा हुआ। तंग। जो औरों के अच्छे विचार ग्रहण न करे।

संकुल—(वि) পৰিপূৰ্ণ, সমাকীৰ্ণ, যোগ থকা, ঠেক, সংকীৰ্ণ।
सं कीर्ण। परिपूर्ण। मिला हुआ।
(सं पुं) যুদ্ধ, দল, অসঙ্গত বাক্য।
युद्ध। समूह। भीड़। परस्पर विरोधी वाक्य (वि—सं कुचित)

संकेत—[सं पुं] সংকীৰ্ণ, বিপদ।
सं कट या कठिनता की अवस्था।

संकेत—(सं पुं) ইঙ্গিত, ঠাৰ, চিয়াৰ, কোনো কাৰ্য্য কৰাৰ ৰহস্য, কিটিপ, নিজান, শব্দৰ অভিধাৰ্থ।
इं गित। शब्द का अभिधा शक्ति से निकलनेवाला अर्थ। चिह्न। एकान्त स्थान।

संकेत-लिपि—(सं स्त्री) আখৰৰ সৰু আৰু সংক্ষিপ্ত চিন আদি।
अक्षरों के छोटे और सं क्षिप्त सं केत (अं—शार्टहैंड)

संकेतित—[सं पुं] সঙ্কেত কৰা, যাৰ বিষয়ে সঙ্কেত কৰা হৈছে।

जिसके सम्बन्धमें संकेत किया जाय

संकोच—(सं पुं) কোঁচ, চাপ খোৱা, আশঙ্কা, কুণ্ঠিত হোৱা, অলপ লাজ কৰা।

सिकुड़ने की क्रिया या भाव। आगा-पीछा। हल्की या थोड़ी लज्जा या शर्म।

संकोचन—(सं पुं) কোঁচ বা চাপ খোৱা।

सिकुड़ना।

संकोचो—[सं पुं]সংকোচ কৰা, লোক।

सिकुड़नेवाला। संकोच करने वाला।

संक्रमण—[सं पुं] পাৰ হোৱা কাৰ্য্য, ভ্ৰমণ, প্ৰৱেশ, আৰম্ভ, এটা অৱস্থাৰ পৰা আন অৱস্থালৈ যোৱা, গ্ৰহৰ এটাৰ পৰা আন এটা ৰাশিলৈ গমন।

जाना या चलना। एक अवस्थासे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना। एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकारमें जाना।

सक्षेपण—(सं पुं) সংক্ষিপ্ত ৰূপ তৈয়াৰ কৰা।

संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करना।

संखिया—(सं पुं) এবিধবৰ চোকা বিষ, উপধাতু বিশেষ।

एक सफेद उपधातु जो उत्कट विष है। (अं—आर्सेनिक)

संख्यान—[सं पुं] গণনা, হিচাব, চোৱা।

आय-व्यय या लेन-देनका लिखा हुआ हिसाब (एकाउंट)

संग—[सं पुं] লগ যোগ, মিলন, শিল।

मिलना साथ रहना। आसक्ति। पत्थर।

[क्रि वि] সৈতে।

साथ।

संगत—(वि) যুক্ত, উচিত।

ठीक बैठनेवाला या मेल खाने वाला।

[सं स्त्री] লগত থকা, কেৱলীয়া ভকত আদি থকা ঠাই, সংসৰ্গ। বাদ্য-যন্ত্ৰ আদিৰে সংগীতজ্ঞৰ সহায়তা কৰা কৰ্ম্ম।

संग रहना। सोहबत। उदासी या निरमले साधुओंके रहने का

मठ। संसर्ग। संगीतमें वाद्य आदि के द्वारा किसी कलाकार का किया जानेवाला साथ।

संगतरा—(सं पुं) সুমথিৰা, কমলা টেঙা।
संतरा। नारंगी।

संगतराश—[सं पुं] শিলৰ কাম কৰোঁতা, শিল কাটোঁতা অথবা শিলৰ মূৰ্ত্তি গঢ়োঁতা।
पत्थर काटने या गढ़नेवाला।

संग-दिल—[सं पुं] নিষ্ঠুৰ।
कठोर हृदय।

संगम—[सं पुं] মিলন, দুই বা অধিক নৈৰ মিলন স্থান, শৃঙ্গাৰ।
मिलाप। मेल। दो नदियों का मिलन स्थान। मैथुन।

संग-मरमर—[सं पुं] মাৰ্ব্বল পাথৰ।
एक प्रकार का चमकीला बढ़िया सफेद पत्थर।

संगर—(सं पुं) যুদ্ধ, বিপদ, নিয়ম, বেৰা, যুদ্ধৰ সময়ত সজা বেৰ বা খাবৈ আদি।
युद्ध। विपत्ति। नियम। मोरचा या खाई।

संगीन—[सं पुं] বন্দুকৰ আগত লগোৱা জোঙা তৰোৱাল।
वह बरछी जो बन्दूकके सिरेपर लगायी जाती है।
[वि] শিলেৰে তৈয়াৰী। টান। কঠিন। মজবুত। ভীষণ।
पत्थर का बना हुआ। मोटा या भारी। विकट। भीषण।

संग्रहणी—[सं स्त्री] গ্ৰহণী বেমাৰ।
एक रोग, जिसमें पतले दस्त आते हैं।

संग्रहालय—[सं पुं] যাদু ঘৰ।
সংগ্ৰহালয়।
जादू घर।

संग्राहक-(सं पुं)সংগ্ৰহ কৰোঁতা। গোটাওঁতা।
संग्रह करनेवाला।

संग्राह्य—(वि) সংগ্ৰহ কৰিবলগীয়া।
संग्रह करने योग्य।

संघट—(सं पुं) সমূহ। যুঁজ। মিলন।
समूह। युद्ध। मुठ-भेड़। मिलन।

संघात—(सं पुं) সমূহ। সমষ্টি। নিবিড় সংযোগ। আঘাত। হত্যা।

समूह। रहने की जगह। संग।
गहरी या भारी चोट। वध।

संघाती—(सं पुं) बन्धু। লগৰীয়া।
साथी। दोस्त।

संघारना—(क्रि स) নাশ কৰা।
হত্যা কৰা। সংহাৰ কৰা।
संहार या नाश करना। मार
डालना।

संचना—(क्रि स) জমা কৰা।
গোটোৱা।
इकट्ठा करना।

संचरना—[क्रि अ] গতিকৰা, লৰচৰ
কৰা। বিয়পি পৰা। প্ৰচলিত
হোৱা।
चलना या घूमना फिरना।
फैलना। प्रचलित होना। (क्रि स-
संचारना)

संचार—(सं पुं) গতি। গমন।
সূৰ্য্যৰ অইন ৰাশিত প্ৰৱেশ কৰা।
পথ।
गमन। फैलना। सूर्यका दूसरी
राशिमें प्रवेश। रास्ता।

संचारिका--(सं स्त्री)দূতী। টুটুকীয়া।
दूती। कुटनी।
(वि) সঞ্চাৰ কৰোঁতা (স্ত্ৰী)।
संचार करनेवाली।

संचारी—(सं पुं) সঙ্গীতৰ ৰাগ
বিশেষ। ৰসনিষ্পত্তিৰ বাবে
স্থায়ী ভাবৰ সহায়ক ভাব।
गीत के चार चरणोंमें से तीसरा।
स्थायी भावको पुष्ट करनेवाला
भाव।
(वि) গতিশীল। ভ্ৰমণকাৰী।
संचरण या संचार करनेवाला।

संचिका—[सं स्त्री] নথি গাঁঠি
দিয়া। नत्थी। (अं-फाइल)

संजात—[वि] উৎপন্ন। জন্ম।
उत्पन्न।

संजाफ - (सं स्त्री) কাপোৰৰ দহি
আদি। ওলমি থকা কাপোৰৰ
দহি।
कपड़े पर टंकी हुई झालर।

संजीवन—(वि) পুনৰ্জীবিত কৰা।
জীয়াই থকা। থকা। নৰক
বিশেষ।
जीवन शक्ति उत्पन्न करने या
देनेवाला।
[सं पुं] ভালদৰে জীৱন
কটোৱা। সৎজীৱন।
बहुत अच्छी तरह जीवन बिताना।
सद् जीवन।

संजीवनी—(वि) জীয়াই ৰখা ! প্ৰাণ ৰক্ষা কৰা ;
जीवन देनेवाला ।
[सं स्त्री] মৰা মানুহক জীৱিত কৰাব ঔষধ অথবা বিদ্যা।
मरे हुए मनुष्यों को जीवित करनेवाली एक औषधि या विद्या ।

संजोना—(क्रि स) সজোৱা, অলঙ্কৃত কৰা । জমা কৰা ।
अलकृत करना । सजाना । इकट्ठा या जमा करना ।

संज्ञा—[सं स्त्री] চেতনা । তত্ত্ব জ্ঞান । বুদ্ধি । নাম ।
चेतना शक्ति । बुद्धि । ज्ञान । नाम ।

संज्ञा-भाव—(सं पुं) বৌদ্ধ শাস্ত্ৰানুসৰি প্ৰাণীৰ সমাহিত অৱস্থা ।
बौद्ध शास्त्रों के अनुसार वह अवस्था जिसमें चित्त सदा समाहित रहता है ।

संज्ञा-हीन—[वि] সংজ্ঞাহীন । অজ্ঞান । মূৰ্চ্ছা যোৱা ।
बेहोश ।

सँझला-(वि) সন্ধিয়া । সৰু মাজু ।
संध्या । मँझले से छोटा ।

सँझवाती—[सं स्त्री] সন্ধিয়া জলোৱা চাকি । গাঁওৰীয়া গোৱা গীত ।
संध्या समय जलाया जानेवाला दीया । संध्या समय गाया जानेवाला गीत ।

संझा—(सं स्त्री) সন্ধ্যা ।
संध्या ।

संड-मुसंड—(वि) শকত-আৱত । हट्टा-कट्टा । मोटा—ताजा ।

सड़सना-(क्रि अ) ঠেক ৰাস্তাৰে গৈ বন্ধ হোৱা । বিপদত পৰা ।
तग जगहके बीचमें पड़कर फँसना । संकटमें पड़ना ।

सँड़सा-(सं पुं)চিমটা । চেপেনা ।
बड़ा चिमटा ।

सँड़ा-(वि) হৃষ্ট-পুষ্ট । শকত-আৱত।
हृष्ट-पुष्ट ।

सँडास—(सं पुं) পায়খানা ।
जमीनमें गहरा गड्ढा खोदकर बनाया हुआ पाखाना ।

संतत-(अव्य) সদায় । একাদিক্ৰমে ।
लगातार । हमेशा ।

संतति— (सं स्त्री) সন্তান ।
सन्तान ।

संतप्त—(वि) সন্তপ্ত। শোকাকুল।
সন্তাপ পোৱা।
अच्छी तरह या खूब तपा हुआ।
परम दुःखी।

संतरण-[सं पुं] সাঁতোৰ। সাঁতুৰি
পাৰ হোৱা।
अच्छी तरह तैरना या तैर कर
पार होना

संतरा—[सं पुं] সুমথিৰা। কমলা
টেঙা।
नारंगी।

संतरी—(सं पुं) ৰখীয়া। চন্তৰী।
পৰীয়া। প্ৰহৰী।
पहरेदार।

संताप—(स पुं)অন্তৰৰ দুখ। মনৰ
দুখ। শোক। বেজাৰ।
ताप। मानसिक कष्ट या दुख।

संतापना—(क्रि स) সন্তাপ দিয়া
सन्ताप या कष्ट देना।

संतुलन—[स पुं] সমান কৰা।
ভাৰসাম্য ৰখা। 'মান' আদি
স্থিৰ ৰখা। সমতা ৰখা।
अपेक्षित तौल या भार बराबर
और ठीक करना या होना। दो
पक्षो का बल बराबर रखना या
होना।

संतोषना—(क्रि स-क्रि अ) সন্তুষ্ট
কৰা বা হোৱা।
संतुष्ट करना। सन्तुष्ट होना।

संत्रस्त—[वि] ভীত। পীড়িত।
ব্যাকুল।
डरा हुआ। व्याकुल। पीडित।

संत्रास (सं पुं) ভয়
डर।

संदर्भ—[सं पुं] ৰচনা। প্ৰসঙ্গ।
প্ৰবন্ধ।
रचना। लेख। प्रसग

संदर्शन—(स पु ভালদৰে চোৱা।
अच्छी तरह देखना।

संदल—(सं पुं) চন্দন।
चन्दन।

संदीपन—[स पुं] উদ্দীপনা।
उद्दीपन।

संदूक—[सं पुं] চন্দুক। বাকচ।
আলমাৰী।
पेटी। आलमारी।

संदूकड़ी—(सं स्त्री) সৰু চন্দুক।
छोटा सन्दूक।

संदेश—(सं पुं) খবৰ। বাণী।
সন্দেশ (ছানাৰ মিঠাই বিশেষ)
समाचार। किसीके उद्देश्यसे कही

या कहलाई हुई कोई महत्वपूर्ण बात । (अं–मेसेज)। एक प्रकार की मिठाई ।

संदेसा—[सं पुं] মৌখিক খবৰ ।
जबानी कहलाया हुआ समाचार।

सँदेसी—[सं पुं] খবৰ লৈ যোৱা লোক । দূত ।
सन्देश ले जानेवाला । दूत ।

संदेहात्मक, संदेहास्पद – [वि] সন্দেহজনক ।
जिसमें या जिसके कारण सन्देह हो ।

संदोह—[सं पुं] গাখীৰ খীৱোৱা কাৰ্য্য । দ'ম, প্ৰাচুৰ্য্য ।
दूध दुहना । किसी वस्तु का समूचा मान या रूप । झुण्ड । ढेर ।

संधानना—(क्रि स) সন্ধান কৰা । লক্ষ্যভেদ কৰা । জোৰা-লগোৱা
सन्धान करना । निशाना लगाना । जोड़ना ।

संपत (ती)—[सं स्त्री] সম্পত্তি ।
सम्पत्ति ।

संपद्–[सं स्त्री] বৈভব। সৌভাগ্য, ধন সম্পত্তি ।
वैभव । पूँजी । सौभाग्य ।

संपदा—(सं स्त्री) ধন-সম্পত্তি । ঐশ্বৰ্য্য, বৈভব ।
धन दौलत । ऐश्वर्य । वैभव ।

संपन्न— (वि) ধনী । সিদ্ধ । যুক্ত । সৈতে ।
सिद्ध । युक्त, सहित । धनी ।

संपात—(सं पुं) সমাগম । বিজুলী পৰা । পতন । একেলগে পৰা বা মিলা । গমন । আঁতৰোৱা ।
समागम । गिरना विद्युत (आदि का) गमन । हटाया जाना

संपाद्य—(वि) সম্পাদন বা পৰিচালনা কৰিব লগীয়া [জ্যামিতি] । কোনো ৰেখা, কোণ বা ক্ষেত্ৰাদি আঁকিব লগীয়া প্ৰতিজ্ঞা ।
जिसका संपादन करना हो । वह बात या सिद्धान्त जिसे विचार-पूर्वक ठीक सिद्ध करने की आवश्यकता हो ।

संपुट—(सं पुं) অঁজলি । বাটি পात्र के आकार की कोई वस्तु । डिब्बा । अंजुली ।

संपुटी—(सं स्त्री) কাপ, পিয়লা ।
प्याली ।

संपृक्त—(वि) মিশ্রিত, সংযুক্ত, সম্বন্ধ।
जिसका या जिससे सम्पर्क हो।

सँपेरा—(सं पुं) সাঁপ নচুৱা মানুহ
सांप पालनेवाला। मदारी।

संपोला, संपोलिया—(सं पुं)
সাঁপৰ সৰু পোৱালী।
सांप का बहुत छोटा बच्चा।

संप्रति—(अव्य) বৰ্ত্তমানে, এতিয়া, সম্প্ৰতি।
इस समय। अभी।

संप्रद—(वि) দিওঁতা।
देनेवाला।

संप्रदान—(सं पुं) দান, সম্প্ৰদান দিয়া কাৰ্য্য।
दान देने की क्रिया या भाव।

संप्राप्त—(वि) উপস্থিত, প্ৰাপ্ত।
उपस्थित। प्राप्त। घटित।

संप्रेक्षण—[सं पुं] হিচাব আদি পৰীক্ষা কৰা কাৰ্য্য।

संप्रेक्षित—(वि) হিচাব পৰীক্ষা কৰা, হোৱা।
जिसकी जाँच हो चुकी हो। आय व्यय आदि का लेखा जाँचने का काम। (अं-आडिटिंग)

संबद्ध—[वि] সম্বন্ধ যুক্ত, সম্বন্ধিত, বন্ধা বা লগ লগোৱা।
जिससे सम्बन्ध हो या हुआ हो। बँधा या जुड़ा हुआ। सम्बन्ध युक्त।

संबोधना—(क्रि अ) সম্বোধন কৰা। বুজোৱা--বঢ়োৱা।
सम्बोधन करना। समझाना-बुझाना।

संभरण—[सं पुं] ভৰণ পোষণৰ ব্যৱস্থা অথবা সামগ্ৰী।
भरण पोषण आदि की व्यवस्था या सामग्री।

सँभरना, सँभलना, सम्हालना—(क्रि अ) কৰ্ত্তব্য নিৰ্ব্বাহ কৰা, বন্ধ কৰা, চম্ভালা, সাৱধান বা অধীনতা ৰাখি কাম কৰা।
किसी बोझ आदि का रोका या किसी कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना। किसी आधार या सहारे पर रुका रहना। सावधान होना। चंगा होना।

संभव—(सं पुं) ওপজা।
उत्पत्ति।
(वि) জন্মহোৱা, হ'ব পৰা, সম্ভৱ।

उत्पन्न जो हो सकता हो। मुमकिन।

संभार—(सं पुं) সামগ্ৰী, ভঁৰাল, তৈযাৰ হোৱা, সবাহৰ বস্তু, ধন সম্পত্তি, ভৰণ-পোষণ, চোৱা-মেলা, ব্যৱস্থা, চেতনা।

संचय। एकत्र करना। भण्डार। तैयारी। साज-सामान। सजावट। धन सम्पति। पालन-पोषण। देख रेख। इन्तजाम। चेतना।

संभारना—[क्रि स] চম্ভালা, স্মৰণ কৰা, সেৱা কৰা, খোৱা।

संभालना। स्मरण करना। सेवन करना।

संभालना—[क्रि स] দাযিত্ব লোৱা, দমন কৰা, বশ কৰা, পৰিব নিদিযা, ৰক্ষা কৰা, পালন পোষণ কৰা, দাযিত্ব নিৰ্বাহ কৰা।

भार ऊपर लेना। रोक कर वश में रखना। गिरने न देना। रक्षा करना। पालन-पोषण या देख रेख करना। ठीक तरह से किसी कार्यका निर्वाह करना।

सँभाला—[सं पुं] মৃত্যুৰ আগ-মুহূৰ্ত্তত অলপ চেতনা অহা।

मृत्यु के पहले कुछ चेतनता सी आना।

संभावित—(त्रि) সম্ভাব্য, হব পৰা, হোৱাৰ সম্ভাৱনা থকা, স্বাভিমানী।

जिसके होने की सम्भावना हो। स्वाभिमानी।

संभाव्य—(वि) হব পৰা, সম্ভাব্য।

जिसके होने की सम्भावना हो।

संभाषण—[सं पुं] কথন, মাত বোল কৰা কাৰ্য্য, কথোপকথন।

कथोप कथन। बात चीत।

संभूत—(वि) ওপজা, হোৱা, জন্ম, উৎপত্তি হোৱা।

एक साथ उत्पन्न होनेवाले। उत्पन्न। सहित।

संभूय—(अव्य) লগ লাগি, সহাযতাৰে। যুটীযা।

साझे में।

संभूय-समुत्थान—[सं पुं] অংশীদাৰী ব্যৱসাযৰ পৰা হোৱা আয।

साझे में होनेवाला रोजगार।

संभोग—(सं पुं) সুখ ভোগ, আস্বাদ গ্ৰহণ, মৈথুন, ৰতিক্ৰিয়া
अच्छी तरह होनेवाला भोग या व्यवहार। रति-क्रीड़ा, मैथुन।

संभ्रम—(सं पुं) আদৰ, ব্যাকুলতা লৰা ধপৰা সম্মান।
दौड़-धूप। व्याकुलता। गौरव।

संभ्रांत—(वि) মান্য, সন্মান পাবৰ যোগ্য। ভয় খোৱা।
भ्रम में पड़ा या घबराया हुआ। सम्मानित।

संयमन—[सं पुं] সংযমৰ ভাব বা ক্ৰিয়া, (মন আদিক) বাধা দি ৰখা।
सयम करने की क्रिया या भाव। (मन आदि) रोकना।

संयमित—(वि) সংযত, সংযম থকা, বশীভূত হোৱা।
जिस पर किसी प्रकार का संयम हो। संयम के द्वारा रोका हुआ।

संयुक्त कुटुम्ब, संयुक्त परिवार—[सं पुं] একান্নবৰ্তী পৰিয়াল, একেলগে থকা পৰিয়াল।
वह कुटुम्ब या परिवार जिसमें भाई भतीजे सब मिल कर रहते हों।

संयुत—[वि] যুক্ত থকা।
जुड़ा या लगा हुआ।

संयोग—[सं पुं] মিল, সম্বন্ধ, সংযোগ, যোগ।
मेल। सम्बन्ध। दो या कई बातों का अचानक एक साथ होना।

संयोजक—(सं पुं) মিলাওঁতা, যুক্ত কৰোঁতা। সভা,সমিতিৰ আহ্বায়ক।
जोड़ने या मिलानेवाला। सभा, समितियों का आह्वायक।

संरक्षक—[सं पुं] চোৱা-মিলা, ৰক্ষা কৰোঁতা, অভিভাৱক।
देख रेख या रक्षा करनेवाला। अभिभावक।

संरक्षण—[सं पुं] ৰক্ষা কৰা, (বিপত্তি, ক্ষতি আদিৰ পৰা) ৰক্ষা, চোৱা মেলা, অধিকাৰ।
हानि विपत्ति आदि से बचाना। हिफाजत। देख रेख। कब्जा।

संरक्षित—[वि] ৰক্ষিত, সংৰক্ষণত থকা।

सम्भाल कर रखा हुआ। अपनी देख-रेख या संरक्षण में लिया हुआ।

संलाप—[सं पुं] কথোপকথন।
बातचीत।

संलेख—(सं पुं) আইনতঃ প্ৰামাণিক চিঠি অথবা অইন কাগজ পত্ৰ।
वह पत्र या लेख जो कानून के क्षेत्र में प्रामाणिक माना जाता हो।

संवत्सर—(सं पुं) বছৰ।
वर्ष। साल।

संवरण—(सं पुं) নিৰ্ব্বাচন কৰা, দূৰ কৰা, সমাপ্ত বা শেষ কৰা, বিচাৰ বা ইচ্ছাক দমন কৰা। লুকোৱা।
चुनना। दूर करना। समाप्त या अन्त करना। विचार या इच्छा दबाना। छिपाना।

सँवरना—[क्रि अ] বেয়া বস্তু ভাল হোৱা, ঠিক হোৱা।
बिगड़ी हुई चीज का फिर से सुधरना, बनना या ठीक होना।
[क्रि स] মনত পেলোৱা।
स्मरण करना।

संवर्द्धन—[सं पुं] বঢ়া, বৃদ্ধি, হোৱা, পালন-পোষণ।
बढ़ना। पालना। बढ़ाना।

संवाद—(सं पुं) কথোপকথন, খবৰ, বিবৰণ, দাবী।
वार्त्तालाप। खबर। विवरण।

संवारना—(क्रि स) ভালকৈ সজোৱা, ঠিক কৰা, ভাল কৰা, ঠিক-ঠাককৈ ৰখা।
दुरुस्त या ठीक करके काममें लाने के योग्य बनाना। सजाना। काम बनाना।

संविदा—(वि स्त्री) ঠিকা, চৰ্ত্ত।
ठीका। शर्त। (अं—कंट्रेक्ट)

संवृत—(वि) গুপ্ত। ঢাকনি দি ৰখা। লুকাই ৰখা ৰক্ষিত। অস্পষ্ট।
ढका या छिपा हुआ। रक्षित।

संवेग—(सं पुं) তীব্ৰ উত্তেজনা, ক্ষোভ, তীব্ৰ গতি, উগ্ৰতা, প্ৰচণ্ডতা, শীঘ্ৰতা, আতুৰ অৱস্থা। মন অশান্ত কৰা আবেগ অথবা অৱস্থা।

तीव्र उत्तेजना, क्षोभ, भय, तीव्र वेग, जोर, उग्रता, प्रचण्डता, शीघ्रता, आतुरता, बेचैन करने वाली पीडा।

संवेदन—(सं पुं) জ্ঞান, অনুভূতি, জনোৱা, প্ৰকাশ কৰা।
ज्ञान। अनुभूति, सूचित करना, प्रकट करना।

संवेदना— (सं स्त्री) অনুভূতি, সহানুভূতি। প্ৰকাশ কৰা।
अनुभूति। सहानुभूति। प्रकट करना।

संशय—[सं पुं] আশংকা। সন্দেহ, ভয়।
आशंका। सन्देह।

संशयात्मक—(वि) আশঙ্কাজনক। সন্দেহাত্মক।
जिसमें कुछ संशय या सन्देह हो।

संशयात्मा—(सं स्त्री) সন্দেহযুক্ত আত্মা বা প্ৰাণ।
जिसके मनमें संशय या सन्देह बना हुआ हो।

संशयी—[वि] সন্দেহী মনোবৃত্তিৰ ব্যক্তি। সংশয়ী।
जो प्रायः संशय या सन्देह करता हो।

संश्लिष्ट—[वि]সংযুক্ত। সম্বন্ধযুক্ত।
मिला। सटा या लगा हुआ।

संश्लेषण—(सं पुं) লগ লগোৱা, মিলন ঘটোৱা, সংযুক্ত কৰা।
एकमें मिलाना, लगाना या सटाना। मिलान करना।

संसरण —[सं पुं] গমন। ভ্ৰমণ। পথ। পাৰ্থিৱ জীৱন। জন্ম আৰু পুনৰ্জন্ম।
चलना। रास्ता। पार्थिव जीवन। जन्म और पुनर्जन्म।

संसार-यात्रा—(सं स्त्री) জীৱন-নিৰ্ব্বাহ। জীৱন।
जीवन निर्वाह। जिन्दगी।

संसृति —(सं स्त्री) সংসাৰ। আবা-গমন কাৰ্য্য।
संसार।

संसृष्ट —[वि]সংজাত। (একেলগে জন্মা) সম্পৰ্কিত। সংশ্লিষ্ট থকা।
किसीके साथ मिला या लगा हुआ। किसीके अन्तर्गत आया हुआ।

संसृष्टि— [सं स्त्री] লগে লগে হোৱা সৃষ্টি বা উৎপত্তি।
मिलन। संयोग। निर्माण। সাহিত্যৰ অলঙ্কাৰ বিশেষ।

किसीके साथ होनेवाली सृष्टि, उत्पत्ति या आविर्भाव। लगाव। मिलावट। मेलजोल। साहित्यमें एक अलंकार।

संस्कार—(सं पुं) সংশোধন বা শুচি কাৰ্য্য। জাতকৰ্ম্মৰ পৰা অন্ত্যেষ্টি ক্রিয়ালৈ হিন্দুৰ ধাৰ্ম্মিক কৃত্য। পূৰ্ব্বজন্মৰ কৰ্ম্মৰ বাসনা বা ইচ্ছা। সংস্কাৰ।

सुधार। हिन्दुओं के कुछ विशिष्ट कृत्य। मृतक की अंत्येष्टि क्रिया। मन, रुचि आदि को परिष्कृत और उन्नत करने का कार्य। पूर्वजन्मों के कृत्य की वासना।

संस्कारी—[वि] কোনো প্ৰকাৰৰ সংস্কাৰ কৰোঁতা। সুসংস্কাৰ বা গুণ যুক্ত লোক।

वह जो किसी प्रकारका संस्कार करता हो। वह जो अच्छे संस्कारों या गुणोंसे युक्त हो।

संस्कृत—[वि] বিশুদ্ধ। নিৰ্ম্মল বা পবিত্ৰ কৰা। ভাল কৰা।

जिसका संस्कार किया गया हो। परिमार्जित। सुधारा और ठीक किया हुआ।

[सं स्त्री] ভাৰতবৰ্ষৰ আৰ্য্যজাতিৰ প্ৰাচীন সাহিত্যিক ভাষা।

भारत की प्राचीन आर्य भाषा।

संस्कृति—[सं स्त्री] বিদ্যা, শিক্ষা আদিৰ পৰা পোৱা উৎকৰ্ষ। কৃষ্টি। শুদ্ধি। সংস্কাৰ।

शुद्धि। संस्कार। किसी व्यक्ति या राष्ट्र की परम्परा से आयी हुई वे सब बातें जो उसके बौद्धिक विकास की सूचक होती है।

संस्था—(सं स्त्री)ব্যৱস্থা। উপায়। মৰ্য্যাদা। সমূহ। সমাজ। সমিতি। প্ৰতিষ্ঠান।

स्थिति। व्यवस्था। मर्यादा। समूह। संघटित समाज या मण्डल। प्रतिष्ठान।

संस्थान—(सं पुं) সংহতি। ভাল উপায়। আশ্ৰয়। অস্তিত্ব। দেশ। জমীদাৰী। সুকুমাৰ কলা আদিৰ উৎকৰ্ষৰ বাবে স্থাপিত সভা বা সমিতি।

स्थिति। स्थापन। अस्तित्व। देश। जागीर। कला आदि की उन्नतिके लिये स्थापित समाज।

संस्मरण—(सं पुं) কোনো ব্যক্তিৰ স্মৰণীয় ঘটনা বা তাৰ উল্লেখ

কৰা।
किसी व्यक्ति के सम्बन्ध की स्मरणीय घटनाएँ या उनका उल्लेख।

संहृत—(वि) সংযুক্ত। সঘন। সংগঠিত
खूब मिला या सटा हुआ। कड़ा। घना। मिलाकर एक किया हुआ। संगठित।

संहति-(सं स्त्री) একে লগে থকা। ৰাশি। দ'ম। একতা। সংঘতি। ভাল উপায়।
बहुतों को मिलाकर एक करना। राशि। घनता। एकता।

संहरना—(क्रि स क्रि अ) মষিমূৰ কৰা বা হোৱা। ধ্বংস কৰা।
संहार करना या होना।

संहारना—(क्रि स) ভাঙি-পিটি নাইকিয়া কৰা। সংহাৰ কৰা।
संहार या नाश करना। वध करना।

संहित—(वि) একে লগ কৰা বা হোৱা। বুটলি অনা। সঙ্কলিত।
इकट्ठा किया हुआ। बटोरा हुआ। संकलित।

संहिता—(सं स्त्री) সঙ্কলিত। মিলন। সন্ধি (ব্যাকৰণৰ)। বেদৰ মন্ত্ৰ সমষ্টি। মনু আদি ঋষিয়ে কৰা শাস্ত্ৰ। বেদৰ কৰ্ম্ম-কাণ্ডৰ বিৱৰণ থকা শাস্ত্ৰ। নিয়ম বা আইন আদিৰ সংগ্ৰহ।
संहित या मिले हुए होनेका भाव। मेल। व्याकरणमें संधि। वह ग्रन्थ जिसके पद-पाठ आदि क्रम परम्परासे एक निश्चित रूप में चला आ रहा हो। अधिकारिकी द्वारा किया हुआ नियमों, विधियों आदिका संग्रह। (अं-कोड)

सकत--[सं स्त्री] বল, শকতি, সম্পত্তি।
बल। ताकत। सम्पत्ति।
[क्रि वि] যিমান দূৰ সম্ভৱ, যথাশক্তি।
जहाँ तक हो सके। यथा शक्ति।
[सं पुं] শাক্ত।
शाक्त।

सकता—[सं पुं] মূৰ্চ্ছা ৰোগ (মৃগী), স্তব্ধতা, যতিভঙ্গ দোষ।
बेहोशी या उसकी बीमारी। स्तब्धता। (कवितामें) यति। यतिभंग का दोष।

सकना—(क्रि अ) সমৰ্থ হোৱা, যোগ্য হোৱা, সম্ভৱ হোৱা,

मनत भय आदि ভাৱ উপজা।

कुछ करनेमें समर्थ होना। कुछ करने के योग्य होना। मनमें डरना, घबराना या संकुचित होना। [प्रेरणा०-सकाना]

सकपकाना, सकबकाना—[ক্রি অ] ইতঃস্ততঃ কৰা। আচৰিত হৈ ইপিনে সিপিনে চোৱা।

सकपकाना आश्चर्य से इधर उधर देखना भौचक्का होना। चौंकना।

सकरना—(ক্রি অ) স্বীকাৰ কৰা। सकारा या माना जाना।

सकलाती (বি) উপহাৰৰ উপযোগী খুব ভাল, মখমলৰ।

उपहारमें देने योग्य। बहुत अच्छा।

सकसना [ক্রি অ] ভয়াৰ্ত হোৱা জালত পৰা, মেৰ পেচত পৰা।

भयभीत होना। अडना। फँसना।

सकाना—[ক্রি অ] সন্দেহ কৰা, ইতঃস্ততঃ কৰা, ভয় কৰা দুখী হোৱা।

सन्देह। करना। हिचकना। डरना। दुखी होना।

सकाम—(सं पुं) কামনা কৰি কৰা কাম, কামুক, প্ৰেমী।

वह जिसके मनमें कामना हो। वह जिसकी कामना पूरी हुई हो। कामुक।

सकारना—[ক্রি স] স্বীকাৰ কৰা, মঞ্জুৰ কৰা, মনা।

स्वीकार करना।

सकारात्मक-(বি) স্বীকৃতি অথবা সম্মতি সূচক।

स्वीकृति या सहमति सूचक।

सकारे—[ক্রি বি] ৰাতি পুৱা, ততাতৈয়াকৈ, তাৰাতাৰি।

सबेरे। जल्दी।

सकुचना—(ক্রি অ) লাজ বা সংকোচ কৰা, চাপ বা কোঁচ খোৱা, বন্ধ হোৱা।

लज्जा या सकोच करना। सिकुड़ना। बन्द होना।

सकुचाई—[सं स्त्री] সংকোচ, লাজ।

संकोच।

सकुचाना—[ক্রি অ] ৰ. ৰ.।

संकोच करना।

[ক্রি স] সংকুচিত কৰা, লজ্জিত কৰা।

सकुचित करना। लज्जित करना।

सकृत—[अव्य] এবা'ৰ ।
एकबार ।

सकेत—[सं पुं] সংকেত, ইঙ্গিত বিপদ ।
संकेत । विपत्ति ।
(वि) সঙ্কীৰ্ণ, সংকুচিত ।
तंग । संकुचित ।

सकेलना—(क्रि स) জমা কৰা, সামৰি লোৱা, একে লগ কৰা ।
जमा करना । समेटना । इकट्ठा करना ।

सकोचना—[क्रि अ] সংকোচ কৰা ।
संकोच करना ।
[क्रि स] কোঁচ খোৱা ।
सिकोड़ना ।

सक्का—(सं पुं) চামৰাৰে সজা মোনাৰে পানী কঢ়িয়াই বিতৰণ কৰোঁতা ।
मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाने या घर घर पहुँचानेवाला ।

सक्र—(सं पुं) ইন্দ্ৰ, মেঘ ।
इन्द्र । बादल ।

सखरा—(वि) পানীৰে সিজোৱা খাদ্য ।
जलके साथ पका हुआ भोजन (दाल, भात, रोटी आदि)

सखरी—[सं स्त्री] কেঁচা খাদ্য ।
दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई ।

सखुआ—(सं पुं) শাল গছ ।
शाखू या शाल नामक वृक्ष ।

सखुन—[सं पुं] কথন, বচন, উক্তি, কাব্য ।
कथन । उक्ति । काव्य ।

सखुन-तकिया—[सं पुं] মুদ্ৰা-দোষ সূচক শব্দ ।
वह शब्द जो बातचीत में कुछ लोगों के मुँहसे प्रायः निकला करता है ।

सख्त—(वि) টান, মুস্কিল, কঠিন ।
कठोर । मुश्किल । कठिन ।
(क्रि वि) খুব বেছি ।
बहुत अधिक ।

सख्य—(सं पुं) সখিত্ব, মিত্ৰতা, নৱধা ভক্তিৰ এটি বিভাগ ।
सखा का भाव । मित्रता । नवधा भक्ति में से एक भेद ।

सगबग—[वि] তিতি-বুৰি, ৰৱকৈ তিতি, দ্ৰবিত, পৰিপূৰ্ণ ।

ভীঁগ কর তরবতর। দ্রবিত।
परिपूर्ण।
[ক্রি বি] তাৰাতাৰিকৈ, তৎ-
ক্ষণাৎ।
जल्दी से। तुरन्त।

সগৰগানা—[ক্রি অ]বৰকৈ তিতা, চমকিত হোৱা।
बहुत भीगना। चकित होना।
(ক্রি স)পানীৰে বৰকৈ তিতা। আচৰিত হোৱা।
गीला या तर करना। चकित या भौचक्का करना।

সগৰা—(বি) সকলো।
सारा।
(সং পুং) পুখুৰী, হ্রদ, বিল।
तालाब। झील।

সগা-[বি] সহোদৰ,নিজ পৰিয়ালৰ।
सहोदर। अपने ही कुल या परि-
वार का।

সগাই-(সং স্ত্রী) ঘনিষ্ঠ পাৰিবাৰিক সম্বন্ধ, বিয়াৰ বন্দোবস্ত কৰা। বিধবা বা পৰিত্যক্তাৰ পুণ বিবাহ সম্বন্ধ।
घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध। विवाहका निश्चय, मंगनी। विधवा का पुनर्विवाह। रिश्ता।

সগুন—(সং পুং)শগুণ, শুভলক্ষণ।
शकुन।

সগুনিয়া—(সং পুং) শুভ লক্ষণ বা মুহূর্ত্ত আদি চাই দিওঁতা।
शकुन बतानेवाला।

সগুনৌতী—[সং স্ত্রী] মুহূর্ত্ত আদি চোৱা কাম বা ক্রিয়া,মঙ্গলাচৰণ।
शकुन विचारने की क्रिया या भाव। मंगलाचरण

সগোতী, সগোত্র, সগোত্রিয়—
(সং পুং)সগোত্র, একেই বংশত ওপজা।
जो एक ही पूर्वजसे उत्पन्न हुए हों।
एक ही गोत्रके लोग।

সগড়-(সং পুং) বোজা কঢ়িওৱা গাড়ী বিশেষ।
बोझ ढोनेकी एक प्रकारकी गाड़ी।

সঘন—(বি) সঘন, ঘন।
घना। ठोस।

সচ—[বি] সত্য, আচল,ঠিক।
सत्य। वास्तविक। ठीक।

সচনা—[ক্রি স] সঞ্চয় কৰা, সম্পূর্ণ কৰা, নির্ম্মাণ কৰা।
संचय या इकट्ठा करना। पूजा करना। निर्माण करना।

सचमुच—(अव्य) আচলতে, সঁচাকৈয়ে ।
वास्तव में । अवश्य ।

सचरना—(क्रि अ)সঞ্চাৰিত হোৱা, সিঁচৰতি হোৱা ।
संचरित होना । फैलना ।

सचराचर—(सं पुं) চৰ আৰু অচৰ সকলো প্ৰাণী অথবা বস্তু ।
संसारके चर और अचर सभी प्राणी और पदार्थ ।

सचल - (वि) লৰি-চৰি ফুৰা, চঞ্চল, গতিশীল ।
चलता हुआ । चंचल । जगम ।

सचाई—[सं स्त्री] সত্যতা, যথাৰ্থতা ।
सत्यता । यथार्थता ।

सचान -(सं पुं) বাজ অথবা শেন চৰাই ।
बाज पक्षी ।

सचित—(वि)চিন্তা যুক্ত, চিন্তিত ।
चिंता युक्त ।

सचु—(सं पुं) সুখ, আৰাম, প্ৰসন্নতা । সন্তোষ ।
सुख । आराम । प्रसन्नता । संतोष ।

सचेत—[वि] সাৱধান, চেতনা থকা ।
जो चेतना युक्त हो । सावधान ।

सच्चा—[वि] প্ৰকৃত, সত্যবাদী, আচল ।
सत्यवादी । यथार्थ । असली ।

सच्चाई—[सं स्त्री] সত্যতা ।
सत्यता ।

सज - [सं स्त्री] সজোৱা, শোভা, সৌন্দৰ্য্য ।
सजावट । बनावट । शोभा । सुन्दरता ।

सजग—[वि] জাগ্ৰত, জাগৰুক, সাৱধান ।
जाग्रत । सावधान ।

सजगता—(सं स्त्री) সতৰ্কতা, জাগৰুকতা ।
होशियारी । सतर्कता ।

सज-धज—[वि] সাজি কাচি, সাজোন-কাচোন ।
बनाव सिंगार । सजावट ।

सजन—(सं पुं) স্বামী, প্ৰিয়তম, पति । प्रियतम ।

सजना—(क्रि स क्रि अ) সজোৱা, সজ্জিত হোৱা ।
सज्जित होना या करना ।

सजल—(वि) পানী থকা । চকু-পানীৰে পূৰ্ণ ।
जलसे युक्त । आमूसे भरा ।

सजा—[स स्त्री] শাস্তি, দণ্ড, কাৰা-গাৰত বন্ধ কৰি থোৱা শাস্তি ।
दण्ड । कारागारमे बन्द रखने का दण्ड ।

सजाई—(सं स्त्री) সজোৱা কাৰ্য্য বা তাৰ বাবদ দিয়া বানচ ।
सजाने की क्रिया, भाव या मज दूरी ।

सजात—(वि)সহজাত, একেলগে জন্ম হোৱা ।
जो साथमे उत्पन्न हुआ हो ।

सजाति (तीय)—[वि]সজাতি, একে জাতিৰ,একেদলৰ,এক উদ্দেশ্যত মিলিত হৈ হোৱা এক-দলৰ ।
एक ही जाति या वर्ग के । एक ही प्रकृति, स्वरूप या प्रकार के ।

सजान—[स पुं] জনা, চতুৰ ।
जानकार । चतुर ।

सजाना—(क्रि स) সজোৱা বা অলংকৃত কৰা ।
सज्जित या अलंकृत करना ।

सजा-याफ़्ता—(वि) কাৰাগাৰৰ শাস্তি পোৱা লোক ।
जिसे कैदकी सजा मिल चुकी हो ।

सजावट—(सं स्त्री) সাজোন ।
सजे हुए होनेकी क्रिया या भाव ।

सजीला—(वि) তৰক-ভৰককৈ থাকোঁতা, সুন্দৰ ।
सज धजसे रहनेवाला । सुन्दर ।

सजीव—[वि] জীৱিত থকা জীৱ থকা, জীয়া ।
जिसमें जीवन या प्राण हो । जिसमें ओज या तेज हो ।

सटक—(सं स्त्री)লাহে লাহে গুচি যোৱা, পাতল বা সৰু লাঠি, হোকাৰ নলিচা ।
धीरेसे चल देना । पतली छड़ी । हुक्का पीनेकी लचीली नली ।

सटकना—[क्रि स] মনে মনে আঁতৰি যোৱা ।
चुपचाप या धीरेसे खिसक जाना ।

सटकाना—[क्रि स] লাঠি বা চাবুকেৰে মৰা ।
छड़ी,कोड़े आदि से मारना ।

सटकारा—[वि] মিহি আৰু দীঘল (চুলি)

चिकना, मुलायम और लम्बा (बाल)

सटकारी—[सं स्त्री] দীঘল পাতল লাঠি।
पतली लम्बी छड़ी।

सटना—(क्रि अ) লাগি থকা, মাৰপিট হোৱা এঠা লগোৱা।
चिपकना। मारपीट होना। बिलकुल लगे रहना। [प्रेरणा०—सटाना]

सट-पट—[सं स्त्री] অ'ৰ ত'ৰ অনাহকত কথা কোৱা, সংকোচ, ভয়।
इधर उधर की व्यर्थ की बातें या काम। संकोच। घबराहट।

सटर पटर—(सं स्त्री) সংকোচ, ভয়।
सट पट।
[वि] মিছাকৈয়ে, তুচ্ছ।
व्यर्थका, निकम्मा या तुच्छ।

सटीक—[वि] ব্যাখ্যাৰ সৈতে, একেবাৰে ঠিক, আচল।
टीका या व्याख्या सहित। बिलकुल ठीक।

सटोरिया, सट्टेबाज—[सं पुं] খুব লাভৰ আশাত বিপদৰ আশঙ্কা থকাতো বজাৰৰ বস্তু কিনোঁতা।
सट्टा करनेवाला।

सट्टा—(सं पुं) প্রতিজ্ঞা পত্র, চেযাৰ আদি, বিক্রী পত্র, কিনা-বেচাৰ এটি বিশেষ প্রক্রিয়া।
इकरार नामा। खरीद बिक्री का एक प्रकार।

सट्टा बट्टा—(सं पुं) মিল-জোল, চতুৰালী, দুষ্ট কৌশল, অন্যায়-সম্বন্ধ।
मेल मिलाप। चालबाजी। अनुचित सम्बन्ध।

सठियाना—(क्रि अ) সাঠি বছৰ হোৱা। বুঢ়া হোৱাৰ ফলিত বুদ্ধিহীন হোৱা।
साठ वर्षका होना। बुड्ढे हो जाने पर बुद्धिका ठीक काम न देना।

सड़न—[सं स्त्री] পঁচা বা গেলা।
सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ना—(क्रि अ) গেলি যোৱা, পঁচা উৰালি যোৱা, হীন অৱস্থাত পৰি থকা।
किसी चीजमें ऐसा विकार आना जिससे उसके अंग गलने लगें और उसमें दुर्गन्ध आने लगे। हीन

अवस्था में पड़ा रहना। [प्रेरणा०-सड़ाना]

सड़ायँध—[सं स्त्री] গেলা পঁচাৰ দুৰ্গন্ধ।
किसी चीजके सड़नेपर उसमें से आनेवाली दुर्गन्ध।

सड़ाव-(सं पुं) গেলা, পচা কাৰ্য্য।
सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ियल—[वि] গেলা, নিকৃষ্ট।
सड़ा हुआ। निकृष्ट।

सत्—(सं पुं) ব্ৰহ্ম, সৎ।
ब्रह्म।
[वि]সত্য, সজ্জন, নিত্য, শুদ্ধ।
सत्य। सज्जन। नित्य। शुद्ध।

संतत, सतत—(अव्य) সদায়, একেবাহে।
सदा। हमेशा। लगातार।

सत-फेरा—(सं पुं) সপ্তপদী, বিয়াত দৰা-কন্যাই সাত পাক একেলগে গমন কৰা কাৰ্য্য।
सप्तपदी। विवाहके अवसर पर सात भाँवर देना।

सतर—(सं स्त्री) ৰেখা, শ্ৰেণী, গুপ্তাঙ্গ (স্ত্ৰী পুৰুষৰ)। পৰদা।
रेखा। पंक्ति। स्त्री या पुरुषका गुप्त इन्द्रिय। ओट।
[वि] টেঁৰা, খঙাল।
टेढ़ा। क्रुद्ध।
(क्रि वि) তাৰাতাৰিকৈ।
शीघ्रता पूर्वक।

सतरौंहाँ—[वि] ক্ৰোধিত, খঙাল, খং ভাবৰ।
कुपित। कोप-सूचक।

सत-लड़ी-[सं स्त्री]সাতশৰী মালা।
सात लड़ों की माला।

सतह-[सं स्त्री]কোনো বস্তুৰ ওপৰ অংশ বা তল ভাগ।
किसी वस्तुका ऊपरी भाग या तल।

सताना, सतावना-(क्रि स) কষ্ট দিয়া, বিৰক্তি দিয়া।
पीड़ित करना।

सतुआ—(सं पुं) ভজা বুট-মটৰ আদি মাহৰ গুৰি।
सत्तू।

सतून—(सं पुं) স্তম্ভ।
खम्भा।

सतृष्ण—[वि] পিপাসা যুক্ত, তৃষ্ণা যুক্ত। तृष्णा से युक्त।

सतोगुण—(सं पुं) সাত্ত্বিক গুণ।
सत्व गुण।

सत्कार—[सं पुं] সেৱা শুশ্ৰূষা, সম্মান।
खातिरदारी। सेवा।

सत्त—(सं पुं) জীৱনী শক্তি, স্ত্ৰীৰ সতীত্ব, কোনো পদাৰ্থৰ পৰা ওলোৱা সাৰ ভাগ।
किसी पदार्थमें से निकाला हुआ उसका सार भाग। जीवनी शक्ति। स्त्रीका सतीत्व।

सत्ता—(सं स्त्री) অস্তিত্ব, স্থিতি, শক্তি, সামৰ্থ্য, অধিকাৰৰ শক্তি।
अस्तित्व। भाव। हस्ती। शक्ति। सामर्थ्य। वह शक्ति जो अधिकार बल या सामर्थ्यका उपयोग करके अपना काम करती हो। (अं—पावर)

सत्ताधारी—[सं पुं] অধিকাৰী, অধিকাৰৰ শক্তি থকা লোক।
जिसके हाथमें सत्ता हो।

सत्यता—[सं स्त्री] সত্যতা।
सचाई।

सत्य-प्रतिज्ञ—[वि] দৃঢ় প্ৰতিজ্ঞ।
अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहनेवाला।

सत्य-लोक—(सं पुं) সাতোখন স্বৰ্গৰ নিচেই ওপৰৰ খন, ব্ৰহ্ম, লোক।
सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्म रहता है।

सत्य-संध—(वि) সত্যপৰায়ণ।
अपने वचनका पालन करनेवाला।

सत्यानाश—(सं पुं) সৰ্ব্বনাশ।
सर्वनाश। बरबादी।

सत्यानाशी—(वि) সৰ্ব্বনাশ কৰোঁতা।
पूरी बरबादी करनेवाला

सत्यापन—(सं पुं) মিলাই চাই ঠিক বুলি কোৱা, সত্যভাষণ।
मिलान कर या जांचकर यह सिद्ध करना कि यह ठीक है। (अं—सर्टीफिकेशन, वेरीफिकेशन, एटेस्टेशन)

सत्र—(सं पुं) যজ্ঞ, ঘৰ, যি স্থানত দুখীয়া, ভিখাৰীক খাদ্যাদি দিয়া হয়। কাৰ্য্যকাল। নিৰ্দিষ্ট সময়।
यज्ञ। मकान। वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन बाँटा जाता है। वह नियत काल जिसमें कोई

कार्य एक बार आरम्भ होकर कुछ समय तक बराबर होता रहता है। [अं·सेसन]

सत्ব—[सं पुं] অস্তিত্ব, সাৰ, চেতনা, জীৱনী শক্তি, ভাল কাম।
सत्ता। अस्तित्व। सार। चैतन्य। जीवनी शक्ति। अच्छा काम।

सत्वर (ক্রি বি) শীঘ্রে, তৎক্ষণাৎ
शीघ्र।

सत्संगति—(सं स्त्री) সৎসঙ্গ, সাধু লোকৰ সঙ্গ।
सत्संग।

सथिया·[सं पुं] দুৱাৰ, কলহ আদিত অঁকা মাঙ্গলিক চিন।
स्वस्तिक चिह्न।

सद्—(वि) গছৰ ফল, ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰেক এজন।
वृक्ष का फल। धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सदन-(सं पुं) ঘৰ, ভৱন, বিধান সভা বহা ঠাই, বিধান সভাত উপস্থিত থকা সদস্য আদিৰ গোট।
घर। मकान। भवन। वह स्थान जहाँ विधान-सभा का अधिवेशन होता हो। विधान-सभा या उसमें उपस्थित लोगों का समूह।

सदमा-(सं पुं) আঘাত, দুঃখ, শোকৰ আঘাত।
किसी दुखद घटना का आघात या चोट।

सदय—(वि) দয়ালু।
दयालु।

सदर—[वि] প্ৰধান।
प्रधान।
(सं पुं) কেন্দ্ৰস্থান, সভাপতি।
केन्द्र स्थल। सभापति।

सदसद्विवेक—(सं पुं) ভাল বেয়াৰ পৰিচয়।
सद् और असद् या अच्छे और बुरे की पहचान या विवेक।

सदाचारी--[सं पुं] সৎ আচৰণ কৰোঁতা।
नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरण वाला मनुष्य।

सदा-बहार—(वि) সদায় সেউজীয়া হৈ থকা, সদায় আনন্দিত হৈ থকা।
सदा हरा रहनेवाला वृक्ष। हँस-मुख।

सदारत—(स स्त्री) সভাপতিত্ব।
सभापतित्व।

सदावर्त- (सं पुं) কঙালী ভোজনৰ স্থান अथवा খাদ্য।
वह स्थान जहाँ गरीबो को नित्य भोजन मिलता हो।

सदाशय—[वि] সজ্জন, শুভ ইচ্ছা-যুক্ত।
सज्जन। भला मानस।

सदा-सुहागिन—[सं स्त्री] বেশ্যা, (ব্যঙ্গাৰ্থ।)
वेश्या। [परिहास]

सदी—(सं स्त्री) শতাব্দী।
शताब्दी।

सदृश—(वि) সমান, निचिना।
समान। तुल्य।

सदेह—[क्रि वि] সশৰীৰে, প্ৰত্যক্ষ।
सशरीर। प्रत्यक्ष।

सदैव—(अव्य) সদায়।
सदा। हमेशा।

सद्गति—[सं स्त्री] আত্মাৰ মুক্তি বা উদ্ধাৰ।
मरने के बाद अच्छे लोक में जाना।

सद्भावना—(सं स्त्री) সদ্ভাৱনা সদিচ্ছা।
अच्छी और शुभ भावना। [अं-गुडविल]

सद्म—(सं पुं) ঘৰ যুদ্ধ।
घर। युद्ध।

सद्य (:)-(अव्य) আজি, এতিয়া, সম্প্ৰতি।
आज के दिन। अभी। तुरन्त।

सधना—[क्रि अ] কাৰ্য্য সিদ্ধ হোৱা, অৰ্থ উলিওৱা আৱশ্যকতানুসৰি সিদ্ধ হোৱা, লক্ষ্যভেদ কৰা।
कार्य सिद्ध होना। मतलब निकालना। प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। निशाना ठीक बैठना। [प्रेरणा०-सधाना]

सधवा—(सं स्त्री) সধৱা, স্বামী থকা তিৰী (তিৰোতা)।
वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।

सधुक्कड़ी—[वि] সাধুসকলৰ দৰে বা निचिना।
साधुओ का सा। साधुओं की तरह का।

[सं स्त्री] সাধুতা।
साधुता।

सन—(सं पुं) শণ।
एक पौधा जिसके रेशों से रस्सियां और टाट बनते हैं।
(सं स्त्री) জোৰেৰে বা বেগেৰে যোৱা বা ওলোৱা শব্দ।
वेग से चलने या निकलने का शब्द।
[प्रत्य०] সৈতে।
साथ।
(अव्य) ৰে।
से।

सनक—[सं स्त्री] পাগলৰ নিচা বা প্ৰবৃত্তি, মতলব।
पागलों की धुन, प्रवृत्ति या आचरण।

सनकना—(क्रि स) পাগল হোৱা, মতলবী হোৱা, পাগলৰ দৰে কথা কোৱা বা আচৰণ কৰা।
पागल होना। पागलों की सी बातें या आचरण करना।

सनद -(सं स्त्री) প্ৰমাণ, প্ৰমাণ পত্ৰ।
प्रमाण। प्रमाण पत्र।

सनना—(क्रि अ) গলি বা ভিজি বা তিতি মিহলি হোৱা, লয় বা লীন হোৱা।
गीला होकर किसी में मिलना। लीन होना।

सनम—(सं पुं) প্ৰিয় নায়ক, নায়িকা, প্ৰিয়তমা।
प्रिय नायक या नायिका।

सनसनी—(सं स्त्री) ভয়, আশ্চৰ্য্য আদিৰ পৰা হোৱা স্তব্ধতা বা উত্তেজনা,উত্তেজনাপূৰ্ণ পৰিবেশ।
झुन झुनी। किसी विकट घटना के कारण लोगों में फैलनेवाली स्तब्धता या उत्तेजना।

सनहक (की) –[सं स्त्री] মাটিৰ বাচন বিশেষ।
मिट्टी का एक प्रकार का बरतन।

सनाढ्य—[सं पुं] ব্ৰাহ্মণৰ উপাধি বিশেষ।
ब्राह्मणों की एक उपाधि।

सनातन-(सं पुं) সদায় থকা, চিৰকলীয়া, বহুকলীয়া, পুৰণি ধৰ্ম্মৰ বহুত দিনৰ পৰা চলি অহা পৰম্পৰা। সনাতন।
अत्यन्त प्राचीन काल। बहुत

दिनोंसे चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा। शाश्वत।

सनातनी–[वि] সনাতন ধৰ্মৰ অনুসৰণকাৰী দল।
सनातन धर्म का अनुयायी।

सनेस (।)—(सं पुं) খবৰ, জাননী।
सन्देश।

सनेह (रा)—[सं पुं] স্নেহ, মৰম।
स्नेह।

सनेही—(वि) প্ৰেমিক।
प्रेमी।

सन्न—(वि) সংজ্ঞাহীন, অচেতন, স্তব্ধ, ভয়তে নীৰৱ।
संज्ञा शून्य। निश्चेष्ट। स्तब्ध। डर से चुप।

सन्नद्ध—(वि সাজু, কামত ব্যস্ত বা মগ্নহৈ থকা।
तैयार। काम में पूरी तरह लगा हुआ।

सन्नाटा—[सं पुं] নীৰৱতা, নিস্তব্ধতা, নিৰ্জনতা।
नीरवता। निस्तब्धता। निर्जनता। पूरा मौन।
(वि) নিৰ্জন, নীৰৱ।
निर्जन। नीरव।

सन्निकट—(अव्य) ওচৰত।
पास।

सन्निधि—(सं स्त्री) ওচৰত, ওচৰত থকা, সন্নিধি।
आपस में आमने सामने होने की स्थिति। समीपता।

सन्निविष्ट—(वि) সুমোৱা, ভালকৈ প্ৰৱেশ কৰা।
किसी के अन्तर्गत आया या मिलाया हुआ।

सन्निवेश—[सं पुं] লগত বহা বা থকা, সুমোৱা, একে ঠাইত সংগ্ৰহ কৰা।
साथ बैठना या स्थित होना। अँटना या समाना। इकट्ठा होना।

सन्निहित–(वि) निकटवर्त्ती, ওচৰৰ, ওচৰত থকা।
साथ या पास रखा हुआ।
पास का।

सपत्नीक–[वि] পত্নীৰে সৈতে।
पत्नी के साथ।

सपना—[सं पुं] সপোন।
स्वप्न।

सपरना–(क्रि अ) কাম সম্পূৰ্ণ হোৱা, কাম হৈ পৰা।

काम का पूरा होना। काम का हो सकना। [क्रि स-सपराना]

सपाट—(वि) সমতল।
समतल। जो ऊबड़ खाबड़ न हो।

सपाटा—(सं पुं) বেগ, চাটি, দৌৰ।
चलने या दौड़ने का वेग। दौड़।

सपिंडी—(सं स्त्री) মৃতকৰ শ্ৰাদ্ধকীয়া শুদ্ধিৰ পাছ দিন কৰা কৃত্য-সপিণ্ডী।
मृतक के श्राद्धमें वह क्रिया जिसके अनसार वह दूसरे मृत पूर्वजोंके साथ मिलाया जाता है।

सपुर्द—[वि] সমৰ্পণ কৰা। গতোৱা। শোধাই দিয়া।
किसीको सौंपा हुआ। उचित कार्य या विचार आदिके लिये किसी अधिकारी के हाथ सौंपा हुआ।

सपूत—(सं पुं) সুপুত্ৰ। যোগ্য পুত্ৰ।
अच्छा और योग्य पुत्र।

सप्तक-(सं पुं) সপ্তক। একে ধৰণৰ সাতটি বস্তুৰ সমূহ। সংগীতৰ সপ্তস্বৰ।
एकही तरह की सात वस्तुओं, कृतियो आदिका समूह। संगीत में सातों स्वरोंका समूह।

सप्तपदी-(सं स्त्री) সপ্তপদী। বিয়াত দৰা কন্যাই সাতপাক একে লগে, গমন কৰা কাৰ্য্য।
विवाह के समय वर और वधूका अग्निकी सात परिक्रमाएँ करना।

सप्तशती—(सं स्त्री) সাত শ ছন্দৰ সমূহ।
सात सौ [छन्दों आदि] का समूह।

सफ—(सं स्त्री) শ্ৰেণী। তলোৱাৰ।
पंक्ति। तलवार।

सफर -[सं पुं] যাত্ৰা।
यात्रा।

सफरी-(वि) যাত্ৰা সম্বন্ধী। যাত্ৰাৰ উপযোগী।
सफरमें काम आनेवाला।
(सं स्त्री) পুঠি মাছ।
सौरी मछली।

सफलीभूत—[वि] সফলতা প্ৰাপ্ত কৰা।
जिसने सफलता प्राप्त कर ली हो।

सफा— [वि] পৰিষ্কাৰ।
साफ।

[सं पुं] কিতাপৰ পৃষ্ঠা।
पुस्तकका पृष्ठ ।

सफाई-[सं स्त्री]পৰিষ্কাৰ। কাজিয়া-পেছাল মীমাংসা কৰা,দোষীৰ নিজক নির্দ্দোষী প্রমাণিত কৰা।
'साफ' होने की क्रिया या भाव। लड़ाई झगड़े आदिका निबटारा। अभियुक्त का अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करना।

सफा-चट—[वि] একে বাৰে পৰিষ্কাৰ আৰু চিকমিকীয়া।
बिलकुल साफ या चिकना।

सफाया-[सं पुं] সমাপ্ত হোৱা। নাশ। সংহাৰ।
पूरा विनाश। समाप्ति।

सफेद—[वि] বগা বং। উজ্জ্বল।
उजला। श्वेत वर्णका।

सफेद-पोश— (सं पुं) বগা কাপোৰ পিন্ধোতা। সাধাৰণ গৃহস্থ, শিষ্ট কিন্তু দুখীয়া।
साफ कपड़े पहननेवाला। साधारण गृहस्थ, पर भला आदमी।

सफेदी-(सं स्त्री) শুভ্রতা। উজ্জ্বলতা। ঘৰ বেৰ আদিত চূণ দিয়া কার্য্য
श्वेतता। उजलापन। दीवारों आदि पर चूनेकी सफेद रंगकी पोताई।

सब—(वि) সকলো। সমগ্র।
समस्त। सारा।

सबक—[सं पुं] পাঠ। শিক্ষা।
पाठ। शिक्षा।

सबद—[सं पुं]শব্দ। সাধু মহাত্মাৰ বাণী। ধার্ম্মিক উপদেশ।
शब्द। किसी साधु महात्मा के वचन। धर्म नीति आदि की उपदेश पूर्ण बात।

सबब—(सं पुं) কাৰণ।
कारण।

सबर, सब्र— (सं पुं) সন্তোষ। ধৈর্য্য।
सन्तोष। धैर्य।

सबल—[वि] বলবান। সৈন্য লগত থকা। সৈন্যৰ সৈতে।
बलवान्। जिसके साथ सेना हो।

सबील—(सं स्त्री) যুক্তি। উপায়।
युक्ति। तरकीब।

सबुनाना—[क्रि स] কাপোৰ আদিত চাবোন দিয়া।
कपड़ों आदिमें साबुन लगाना।

सबूत—[सं पुं] প্ৰমাণ।
प्रमाण।
[वि] নভঙা। সম্পূৰ্ণ।
जो टूटा न हो। पूरा।

सबेरा-(सं पुं) ৰাতিপুৱা।
प्रभात।

सब्ज-(वि) সেউজীয়া ৰং। কেচা আৰু নতুন (ফল, ফুল আদি)। সুন্দৰ আৰু লহপহীয়া।
हरा [रंग]। कच्चा और ताजा [फल फूल आदि] सुन्दर और लहलहाता हुआ।

सब्ज-कदम—[सं पुं] অশুভ।
वह जिसका आना अशुभ सिद्ध हो। मनहूस।

सब्जी— (सं स्त्री) সেউজীয়া। শস্য-শ্যামলা। শাক-পাত।
हरापन। हरियाली। साग भाजी।

सभी—(वि) সকলো।
सब कोई।

सभीत—(वि) ভীত। ভয় খোৱা।
डरा हुआ।

सभ्य—(वि) সভ্য। শিষ্ট।
अच्छे आचार विचार रखने और भले आदमियों का सा व्यवहार करनेवाला। शिष्ट।
[सं पुं] কোনো সমিতি বা কমিটিৰ সদস্য। ভাল আৰু শিষ্ট লোক।
सभा का सदस्य। भला और शिष्ट आदमी।

समंदर—[सं पुं] সাগৰ। ডাঙৰ পুখুৰী অথবা হ্ৰদ।
सागर। बड़ा तालाब या झील।

सम—(वि) সম। যুগ্ম সংখ্যা।
जो आदिसे अन्त तक एक सा चला गया हो। युग्म संख्या।
(अव्य) সমান।
समान या बराबर।
[सं पुं] সঙ্গীতৰ গতিৰ 'সম' অৱস্থা। অৰ্থালঙ্কাৰ বিশেষ।
বিষ। শপত।
संगीत में वह स्थान जहाँ लयके विचार से गति की समाप्ति होती है। साहित्यमें एक अलंकार।
विष। शपथ। सौगन्ध।

सम-कक्ष—(वि) সমান। সমানৰ।
সমকক্ষ।
समान। बराबरी का।

समकालीन—[वि] সমসাময়িক।
একে কালতে থকা বা হোৱা।
जो एक ही समयमें हुए हों।

समक्ष—(अव्य) সমুখত। সম্মুখ।
सामने, सम्मुख।

समझ—(सं स्त्री) বুজনি। বুদ্ধি,
जानने और समझने की शक्ति।
अक्ल।

समझदार-[वि] বুধিয়ক।
बुद्धिमान।

समझदारी-(सं स्त्री) বুজনি, বুদ্ধি
बुद्धिमत्ता। अक्लमन्दी।

समझना—[क्रि स] বুজা। জনা।
कोई बात अच्छी तरह विचार
करके ध्यानमें लाना।

समझाना-[क्रि स] বুজোৱা। বুজনি
দিয়া।
ऐसी बात करना जिससे कोई
समझ जाय।

समझौता—(सं पुं) আপোচ্ কৰা।
আপোচ মীমাংসা কৰা। মিটি-
মাট কৰা।
लेन देन, व्यवहार, झगडे, विवाद
आदि के सम्बन्ध में, सब पक्षोंमें
आपसमें होनेवाला निपटारा।
[अं – एग्रीमेंट, कम्प्रोमाइज]

समतल—[त्रि] সমান। ওখচাপৰ
নথকা
जिसकी सतह या तल बराबर हो।

समता—(सं स्त्री) সমতা। সমান
বা একে প্ৰকাৰৰ হোৱা অৱস্থা।
बराबरी, तुल्यता।

समतूल, सम-तोल—[वि]সমকক্ষ।
সমান মহত্ত্ব।
महत्व आदिके विचारसे बराबर।

समदर्शी—[वि] সকলোকে সমান
দেখা। অপক্ষপাতী। সমদৰ্শী।
सबको एक सा समझनेवाला।

समधिक—(वि) বৰ বেছি। অনেক
অধিক।
बहुत अधिक।

समधी—(सं पुं) বিয়ৈ। জী বা
পোৰ শহুৰেক।
किसीके लड़के या लड़कीका ससुर।

समन्वय—[वि] মিলন। সম্বন্ধ।
কাৰ্য্য আৰু কাৰণৰ সঙ্গতি
ৰখা বা নিৰ্ব্বাহ কৰা।
मिलान। कार्य या कारण की
संगति या निर्वाह।

समय-सारिणी—(सं स्त्री) সময়
তালিকা বা সূচী।
किसी कार्य की समय-तालिका।

समर—[सं पुं] যুদ্ধ। কামদেৱ।
युद्ध। कामदेव।

सम-रस —[वि] একে প্ৰকাৰ ৰস থকা [বস্তু] সদায় একে ধৰণৰ।
एकही प्रकारके रसवाले [पदार्थ]। सदा एक सा रहनेवाला।

समरांगण—(स पुं) যুদ্ধ ক্ষেত্ৰ।
युद्ध क्षेत्र।

समर्थ—[वि] সক্ষম। পাৰগ, শক্তি থকা।
सामर्थ्य या शक्ति रखनेवाला। सक्षम।

सम-वयस्क—[वि] সমান বয়সৰ।
बराबर की उमर का।

समवेत--[वि] সম্মিলিত একেলগে উপস্থিত।
इकट्ठा या जमा किया हुआ

समष्टि—[सं स्त्री]মুঠ। সম্পূৰ্ণতা, সাধুসকলৰ ভোজ। বিধান সভাৰ সদস্যসকলৰ এলেকা। समष्टि।
जितने हों उन सबका समूह। साधुओं का भण्डारा।

समाँ—[सं पुं] সময়।
समय। वक्त।

समाँ-बँधना (मु०)—গান আৰু নৃত্যেৰে মানুহক প্ৰভাবিত কৰা
इतनी उत्तमता से सम्पन्न होना कि लोग स्तब्ध हो जांय।

समान्तर—[वि] সমান্তৰাল ৰেখা আদি।
रेखाएं आदि जो सदा समान अन्तर पर रहें।

समागत—(वि) উপস্থিত। আহি পোৱা।
कहीं से आया हुआ। उपस्थित या वर्तमान (समस्या आदि)

समागम—[सं पुं] অহা যোৱা। যাতায়াত। সাক্ষাৎ। মৈথুন। সঙ্গম।
आगमन। मिलना। इकट्ठा होना। मैथुन।

समाचार—(सं पुं) খবৰ। অৱস্থা।
खबर। हाल।

समादृत—(वि) সমাদৃত। আদৰ বা সম্মান পোৱা।
जिसका खूब आदर हुआ हो।

समाधि—(सं स्त्री) সমাধি। বাহ্য জ্ঞান এৰি ঈশ্বৰ চিন্তাত মগ্ন হৈ কৰা উপাসনা। ধ্যান। সাহিত্যৰ অলঙ্কাৰ বিশেষ।
ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। कब्रगाह। साहित्यमें एक अलंकार।

समाधिस्थ—[वि] সমাধিত মগ্ন হোৱা। ধ্যানত তন্ময় হোৱা।
समाधि में स्थित।

समाना—(क्रि अ) প্ৰৱেশ কৰা। পূৰ্ণ কৰা। ভৰোৱা। উপস্থিত হোৱা।
प्रविष्ट होना। भरना। पहुँचना।
[क्रि स] ভিতৰলৈ অনা। ভৰোৱা।
अन्दर करना। भरना।

समापन-(सं पुं) সম্পন্নকৰণ। সমাপ্ত বা সমাধা কৰা কাৰ্য্য। মাৰি শেষ কৰা। সমাপন।
कार्य समाप्त या पूरा करना। विवाद विचार आदि के समय उसका अन्त करने के कोई विशेष बात कहना। मार डालना।

समायोग—(सं पुं) সংযোগ। সম্বন্ধ। সাজু। যুক্ত কৰা। লক্ষ্য-ঠিক কৰা। উদ্দেশ্য। বহুত লোক গোটোৱা।
संयोग, सम्बन्ध, तैयारी, युक्त करना, निशाना ठीक करना, उद्देश्य, बहुत आदमियों को एकत्र करना।

समारंभ-(सं पु) আৰম্ভ। অনুষ্ঠান। সমাৰোহ।
अच्छी तरह आरम्भ या शुरू होना। समारोह।

समारोह—(सं पुं) জাক জমক। আড়ম্বৰ। উৎসৱ। ধুম-ধাম।
भारी आयोजन। धूम-धाम। धूम धामसे होनेवाला कोई उत्सव या बड़ा काम।

समावर्तन—[सं पुं] ওভটি অহা। পদবী দান বা সমাবৰ্ত্তন উৎসৱ।
वापस आना। पदवी-दान समारम्भ।

समावेश-[सं पु] সমাবেশ। একেলগ কৰা কাৰ্য্য।
एक साथ या एक जगह रहना। एक वस्तुका दूसरी वस्तुके अन्तर्गत होना।

समासीन-(वि) সম্যক ধৰণে বহা বা থকা।
अच्छी तरह बैठा हुआ।

समाहना--[क्रि अ] সম্মুখীন হোৱা।
सामना करना।
[क्रि स] ধৰা।
पकड़ना।

समाहरण—[सं पुं] সংযুক্ত কৰা। একত্র কৰা। একে লগ কৰা। চান্দা, ৰৰঙণি তোলা।

इकट्ठा करना। राशि। कर, चन्दा आदि उगाहना। मिलाना।

समाहार—(सं पुं) চুম্বক। সংক্ষেপ। এক প্রকাৰ দ্বন্দ্ব সমাস। সংগ্রহ। সমন্বয়।

एक प्रकार का द्वन्द्व समास। संग्रह। समन्वय। संक्षेप।

समाहित-(वि) একাগ্র। সমাহিত। সুন্দৰ ভাবে এঠাইত লগ লগোৱা। শান্ত। সমাপ্ত। স্বীকৃত

सुन्दर ढंगसे एक जगह इकट्ठा किया हुआ। शांत। समाप्त। स्वीकृत।

समिद्ध—(वि) প্রজ্বলিত। উত্তেজিত।

प्रज्वलित। उत्तेजित।

समिधा-(सं स्त्री)यज्ञ काष्ठ। সমিধ গছ।

हवन कुण्डमें जलानेकी लकड़ी।

समीकरण—(सं पुं) সমীকৰণ। কোনো নিৰূপত ৰাশিলৈ তেনেকুৱা কোনো আন ৰাশিৰ পৰিমাণ নির্ণয় কৰা কার্য্য। গণিতৰ নিয়ম বিশেষ।

दो या अधिक राशियों, वस्तुओं आदिको समान या बराबर करने की क्रिया या भाव। एक प्रसिद्ध गाणितिक क्रिया।

समीक्षक—(सं पुं) সমালোচক। আলোচক।

वह जो समीक्षा करता हो। समालोचक।

समीक्षा—(सं स्त्री) বিচাৰ। অন্বেষণ। সমালোচনা। সমীক্ষা।

छान बीन या जांच पड़ताल करने के लिये कोई वस्तु या बात अच्छी तरह देखना। समालोचना

समीचीन—(वि) যোগ্য। উপযুক্ত, সঙ্গত। যথার্থ।

उपयुक्त। उचित।

समीप—(वि) ওচৰ। নিকট।

निकट। पास।

समीर, समीरण—(सं पुं) বতাহ। বায়ু। সমীৰণ।

हवा।

समुंदर—(सं पुं) সমুদ্র। সাগৰ।

समुद्र।

समुंदर फेन—(सं पुं) সাগৰ ফেন। সাগৰত উৎপন্ন হোৱা ডাঠ ফেনৰ নিচিনা আৰু ভিতৰত অসংখ্য বিন্ধা থকা সোপোকা আৰু পানী শোহা গুণ থকা এবিধ বস্তু।
समुद्र के पानी पर तैरनेवाला फेन या झाग जिसे सुखाकर औषधिके रूपमें काममें लाते हैं।

समुचित—(वि) যুগুত। উচিত। উপযুক্ত।
उचित। जैसा चाहिये वैसा।

समुच्चय—(सं पुं) সমূহ। অৰ্থা লঙ্কাৰ বিশেষ।
कुछ वस्तुओंका एकमें मिलना। समूह। एक अलंकार।

समुज्वल—[वि] সমুজ্বল। বিশেষ ভাবে উজ্বল। চিকমিকীয়া।
विशेष रूपसे उज्वल या प्रकाश-मान। चमकीला।

समुत्थान— (सं पुं) উৎপত্তি। উদ্যোগ। আৰম্ভ।
उठने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति। आरम्भ।

समुत्सुक— [वि] বিশেষ ভাবে আগ্ৰহী।
विशेष रूपसे उत्सुक।

समुदाय(य)—[सं पुं] সমূহ। দল।
समूह। झुण्ड।
(वि) সকলো। সমস্ত। সব।
सब। कुल।

समुन्नत—(वि) অতি উন্নত।
भली भाति उन्नत।

समूचा—(वि) সকলো। গোটেই। অখণ্ড। সম্পূৰ্ণ।
सारा। कुल। अखण्ड। पूरा।

समूढ़—[वि]সঞ্চিত। একত্ৰিত কৰা। ঠিক। বিবাহিত। সদ্যজাত।
संचित। ठीक। जो अभी उत्पन्न हुआ हो। विवाहित।
(सं पुं) দ'ম। ভঁৰাল।
ढेर। भण्डार।

समूल—[वि] কাৰণ থকা।
जिसका मूल या हेतु हो।
(क्रि वि) মূলৰ সৈতে। গুৰিৰে পৰা।
जड़से।

समृद्ध—[वि] সমৃদ্ধ, সম্পন্ন, ধনী।
सम्पन्न। धनवान्।

समृद्धि—[सं स्त्री] সম্পত্তি, সমৃদ্ধি, বিভূতি, ঐশ্বৰ্য্য ।
सम्पन्नता ।

समेटना—[क्रि स] চম্ভালা, সিঁচ-বতি হৈ থকা বস্তু গোটোৱা ।
बिखरी या फैली हुई चीजें इकट्ठी करना ।

समेत-[वि] সংযুক্ত, লগ হোৱা ।
संयुक्त । मिला हुआ।
(अव्य) সৈতে ।
सहित । साथ ।

समोना-(क्रि अ) মগ্ন হোৱা, ডুব দিয়া ।
निमग्न होना । डूबना ।
[क्रि स] মিলোৱা ।
मिलाना ।

समोसा-(सं पुं) চিঙাৰা ।
एक प्रकार का पकवान ।

समौरिया-(वि) সম বয়সীয়া ।
समवयस्क ।

सम्मत—(वि) সম্মত ।
सहमत ।

सम्मति—[सं स्त्री] উপদেশ, আদেশ, অনুমতি, কোনো বিষয়ত এক-মত হোৱা ।
सलाह । आदेश । राय । किसी विषय में कुछ लोगोंका एकमत होना । अनुमति ।

सम्मन—[सं पुं] চমন, ন্যায়ালয়ৰ পৰা হাজিৰ হবলৈ দিয়া আজ্ঞা পত্ৰ ।
न्यायालय का आज्ञापत्र ।

सम्मानना—(क्रि स) সম্মান কৰা ।
सम्मान करना ।

सम्मार्जनी—(सं स्त्री) বাঢ়নী ।
झाड़ू ।

सम्मुख, सम्मुहाँ--(अव्य) সম্মুখত ।
सामने ।

सम्मोहन—[सं पुं] মোহ-জনক, মোহিত কৰা, মুগ্ধ কৰা, মদনৰ পাচ পাট শৰৰ এপাট ।
मोहित करनेकी क्रिया या भाव ।
कामदेव के पाँच बाणोंमें से एक ।
(वि) মুগ্ধ কৰোতা ।
मोहित करनेवाला ।

सम्यक—(वि) সম্পূৰ্ণ ।
पूरा ।
[क्रि वि] সম্পূৰ্ণৰূপে, তেনেই, ভালভাৱে ।
सब तरहसे । अच्छी तरह ।

सम्राज्ञी—[सं स्त्री] মহাৰাণী, সম্ৰাজ্ঞী ।
सम्राट की पत्नी । साम्राज्य की अधीश्वरी ।

सयानपन—[सं पुं] চতুৰালি, সাবালক হোৱা ।
'सयाना' होनेका भाव । चतुरता ।

सयाना—(सं पुं) প্ৰাপ্ত বয়স্ক, সাবালক, বুধিয়ক, চতুৰ, চালাক ।
वयस्क । बुद्धिमान । चतुर । चालाक ।

सरंजाम—[सं पुं] কামৰ সমাপ্তি, ব্যৱস্থা, সঁজুলি ।
कार्यकी समाप्ति । प्रबन्ध । सामान ।

सर—(सं पुं) পুখুৰী, মূৰ, শিৰ, শেষ সীমা, উপযুক্ত সময়, শৰ, সৰ ।
तालाब । सिर । सिरा । चरम सीमा । ऐसा अवसर जो किसी काम के लिये उपयुक्त न हो । बाण ।
[सं स्त्री] সমান ।
समानता ।
[वि] বলেৰে দমন কৰা, বিজিত, অভিভূত ।
बलपूर्वक दबाया हुआ । जीता हुआ । अभिभूत ।

सरकंडा [सं पुं] কুশ বা শণ জাতীয় ঘাঁহ ।
सरपत या सन जातिकी एक वनस्पति ।

सरक—[सं स्त्री] কাষৰ হোৱা ভাব, মদৰ গোলাপী নিচা, মদৰ পিয়লা ।
सरकने का भाव या प्रकार । शराबके नशेकी खुमारी । शराब-पीनेका प्याला ।

सरकना—[क्रि अ] কাষৰ হোৱা । खिसकना ।

सरकस—[सं पुं] চাৰকাচ, জন্তু বা মানুহৰ কলা কৌশল দেখুওৱা দল, এনেধৰণৰ খেল দেখুওৱা ঘূৰণীয়া কাঠ ।
पशुओं और कलाबाजी आदिका कौशल या ऐसा कौशल दिखलानेवालों की मण्डली ।

सरकार—(सं स्त्री) মালিক, চৰকাৰ ।
मालिक । देशका शासनक रनेवाली संस्था या सत्ता ।

সৰক্কত—[সং পুং] লেন-দেনৰ দলিল-পত্ৰ।
लेन देन आदिका दलील-पत्र।

সৰগনা—(সং পুং) চৰ্দ্দাৰ।
सरदार।

সৰগম—[সং পুং] সংগীতৰ সাতোটি স্বৰৰ সমূহ, স্বৰগম।
संगीतमें सातों स्वरोंका समूह।

সৰজনা—(ক্রি স) সৃষ্টি বা ৰচনা কৰা।
सृष्टि या रचना करना।

সৰজা—(সং পুং) চৰ্দ্দাৰ, সিংহ, শিৱাজীৰ উপাধি।
सरदार। सिंह।

সৰজোৰ-(বি) অৱজ্ঞাকাৰী, উদ্ধত, বিদ্রোহী, শক্তিশালী।
बलवान। उद्दण्ड। विद्रोही।

সৰণী, সৰনী—[সং স্ত্রী] পথ, উপায়, ৰেখা।
मार्ग। ढंग। लकीर।

সৰতাজ, সিৰতাজ—(সং পুং) মুকুট. শিৰোমণি, চৰ্দ্দাৰ।
मुकुट। शिरोमणि। सरदार।

সৰদ, সৰ্দ—(বি) ঠাণ্ডা, ঢিলা।
ठण्डा। सुस्त। धीमा।

সৰদিয়ানা—(ক্রি অ) শীতৰ কাৰণে ঠাণ্ডা হোৱা, আবেশ বা খং আদি শান্ত হোৱা।
सर्दी के कारण ठंडा होना। आवेश आदि शांत होना।

সৰদী, সৰ্দী—(সং স্ত্রী) শীতলতা, জাৰ, পানী লগা জ্বৰ, চৰ্দ্দি।
शीतलता। जाड़ा। जुकाम।

সৰন—(সং স্ত্রী) শৰণ।
शरण।

সৰনা—(ক্রি অ) চুঁচৰি যোৱা, হলা ডুলা কৰা, কাম চলা বা শেষ হোৱা, ব্যৱহাৰত লগা, কৰা, পৰস্পৰ সম্ভাৱ ৰখা।
सरकना। हिलना-डोलना। काम चलना या निकलना। किसी के उपयोगमें आना। किया जाना। आपसमें सद्भाव बना रहना।

সৰনাম—[বি] প্রসিদ্ধ, বিখ্যাত।
प्रसिद्ध।

সৰনামা, সিৰনামা—(সং পুং) শীৰ্ষক, ঠিকনা।
शीर्षक। पत्रों आदिके ऊपर लिखा जानेवाला पता।

सरपंच—(सं पुं) পঞ্চায়তৰ সভাপতি।
पंचायत का सभापति।

सरपट—(सं पुं) ঘোঁৰাৰ চাল বিশেষ।
घोड़ेकी एक प्रकारकी तेज चाल।
[क्रि वि]ঘোঁৰাৰ বেগেৰে দৌৰি।
उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए।

सरपत—(सं पुं) শণ বা কুশ আদিৰ দৰে ঘাঁহ।
सनकी भाँति एक प्रकारकी तृण।

सर-पेच—[सं पुं] পাগুৰী বা মুকুটত লগোৱা অলঙ্কাৰ বিশেষ।
पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ कलगी।

सरबरी—(सं स्त्री) ৰাতি।
शर्वरी। रात्रि।

सरमाया—(सं पुं) পুঁজি, সম্পত্তি।
पूँजी। सम्पत्ति।

सरली करण—[सं पुं] কঠিন বিষয় সৰল কৰা কাৰ্য্য।
किसी कठिन विषय को सरल बनाने की क्रिया या भाव।

सरवर—(सं पुं) চৰ্দ্দাৰ, সৰোবৰ।
सरोवर सरदार। अफसर।

सरसना—(क्रिअ)সেউজীয়া হোৱা, উন্নত হোৱা, শোভাযুক্ত হোৱা, ৰসপূৰ্ণ হোৱা।
हरा होना। उन्नत होना। शोभित होना। रसपूर्ण होना।

सरसराना-(क्रि अ) ৰতাহৰ সনসননি-হোঁহোৱনি। তাৰাতাৰিকৈ কোনো কাম কৰা।
वायुका सर सर करते हुए चलना। जल्दी जल्दी कोई काम करना।

सरसरी-(क्रि वि) ওপৰে ওপৰে। মোটামুটীকৈ।
अच्छी तरह ध्यान लगाकर नहीं, बल्कि जल्दी में। मोटे तौरपर।

सरसिज, सरसीरूह-(सं पुं)পদুম।
कमल।

सरसी—(सं स्त्री) সৰু সৰোবৰ, ছন্দ বিশেষ।
छोटा सरोवर। एक मात्रिक छन्द।

सरसों—(सं स्त्री) সৰিয়হ।
एक पौधा जिसके बीजोंसे तेल निकलता है।

সৰহদ—(স' স্ত্ৰী) সীমা, সীমা-ৰেখা।
सीमा । सीमा-रेखा ।

সৰহদী—(বি) সীমা সম্বন্ধীয়, সীমান্তত থকা।
सीमा सम्बन्धी । सीमा पर रहने वाला ।

সৰাপনা—[সং পুং] অভিশাপ দিয়া।
शाप देना ।

সৰাপা—[স' পু'] আপাদ মস্তক, নখচন্দ্ৰৰ পৰা কেশ চন্দ্ৰলৈ।
नख सिख ।

সৰাফ-(সং পু) সোণ-ৰূপৰ বেপাৰী।
सोने चाँदी का व्यापारी ।

সৰাফা—[স' পু'] সোণ-ৰূপৰ ব্যৱসায়, সোণ ৰূপৰ দোকানৰ বজাৰ।
सराफका काम या पेशा । सराफों का बाजार ।

সৰাবোৰ—(বি) একেবাৰে তিতা।
बिलकुल भीगा हुआ ।

সৰায়-(সং স্ত্ৰী)আলহী ঘৰ। চৰাই-খানা। मुसाफिरखाना ।

সৰাসৰ-(অব্য) একেবাৰে,প্ৰত্যক্ষ।
बिलकल । प्रत्यक्ष ।

সৰাহনা-(ক্রি স) প্ৰশংসা কৰা।
प्रशंसा या बड़ाई करना ।
[স' স্ত্ৰী] প্ৰশংসা।
प्रशंसा ।

সৰাহনীয়—(বি) প্ৰশংসনীয়।
प्रशंसा के योग्य ।

সৰি—[স' স্ত্ৰী] নদী, সমান, শৃঙ্খলা।
नदी । बराबरी । शृंखला ।
[বি] সমান, নিচিনা।
समान । तुल्य ।
(ক্রি বি) লৈ।
तक ।

সৰিতা—[স' স্ত্ৰী] নদী, প্ৰবাহ।
नदी । धारा ।

সৰিয়ানা—[ক্রি স] ক্ৰমানুসৰি ৰখা, মাৰপিট কৰা।
क्रमसे लगाकर चीजें यथास्थान रखना । मारना पीटना ।

সৰিস্তা—[স' পু'] কাৰ্য্যালয়, কাৰ্য্যালয়ৰ বিভাগ।
कार्यों अथवा कार्यालय का विभाग । कार्यालय ।

সৰিস—(বি) সদৃশ, সমান।
सदृश । समान ।

सरी-[सं स्त्री] সৰু পুখুৰা, নিজৰা
छोटा तालाब । झरना ।

सरीखा—[वि] সমান, নিচিনা ।
समान । तुल्य ।

सरूर—(सं पुं) গোলাপী নিচা ।
हल्का नशा ।

सरोकार—[सं पुं] সম্বন্ধ ।
आपस के व्यवहार का सम्बन्ध ।
वास्ता ।

सरोज, सरोरुह—[सं पुं] পদুম ।
कमल ।

सरोजिनी—(सं स्त्री) পদুমেৰে
ভৰা পুখুৰী, পদুম ।
कमलों से भरा हुआ तालाब ।
कमल ।

सरोद—(सं पुं) সৰোদ, বাদ্য
বিশেষ
एक प्रकार का बाजा ।

सरोवर—(सं पुं) সৰোবৰ, পুখুৰী
तालाब ।

सरोष—(वि) খঙাল । क्रुद्ध ।
क्रोध युक्त ।
[क्रि वि] ।, খঙেৰে ।
रोषपूर्वक ।

सरो-सामान—(सं पुं) সকলো
বস্তু বা সামগ্ৰী ।
सारी सामग्री या उपकरण ।

सर्ग—(सं पुं) সংসাৰ, সৃষ্টি,
প্ৰবাহ, প্ৰাণী, শিৱ, ৰুদ্ৰৰ
এটি পুত্ৰ, মহাকাব্যৰ অধ্যায়,
ত্যাগ, শৌচ কৰা ।
संसार । सृष्टि । प्रवाह । प्राणी ।
सन्तान । महाकाव्य का अध्याय ।
त्याग मल त्याग ।

सर्जन—[सं पुं] ত্যাগ, এৰা,
নিৰ্ম্মাণ, শৌচ কৰা, অৰ্পণ,
সেনাৰ পৃষ্ঠভাগ, শল্য চিকিৎসক ।
त्याग, छोड़ना, निर्माण, मल-
त्याग, अर्पण । सेना का पृष्ठ-
भाग । शल्योपचारक ।

सर्प—[सं पुं] সাঁপ ।
साँप ।

सर्पिल—(वि) গৈ থকা সাঁপৰ দৰে
এঁকা-বেঁকা, সৰ্পিল ।
साँप की तरह टेढ़ा या टेढ़ा-
तिरछा ।

सर्बस—[सं पुं] সৰ্ব্বস্ব ।
सर्वस्व ।

सर्व—(वि) সকলো, সৰ্ব্ব ।
सब । समस्त ।

সর্বজ্ঞ—(বি) সর্ব্বজ্ঞ, যিয়ে, সকলো কথা জানে, সৰ্বজ্ঞান।
सभी बातें जाननेवाला।

সর্বত:—(অব্য) চাৰিওপিনে, সকলো প্ৰকাৰে।
चारों ओर। सब प्रकार से।

সর্বতোভাৱ—[ক্রি বি] সকলো প্ৰকাৰে, ভাল ধৰণে, পুংখাণু পুংখভাবে।
सब तरह से। भली भाँति।

সর্বত্র-- (অব্য) সকলো ঠাইতে।
सब जगह।

সর্বথা—[অব্য]সকলো প্ৰকাৰে, একেবাৰে, সর্ব্বত্র।
सब प्रकार से। बिलकुल।

সর্বদা—(অব্য) সদায়।
हमेशा। सदा।

সর্ব-প্রিয়—(বি) সকলোৰে ভাল পোৱা লোক।
जो सबको प्रिय या अच्छा लगे।

সর্ব-মংগলা—(সং স্ত্রী)দুর্গা, লক্ষ্মী।
दुर्गा। लक्ष्मी।
[বি] সকলো প্ৰকাৰে মঙ্গল অথবা কল্যাণকাৰিণী।
सब प्रकार मंगल या कल्याण करनेवाली।

সর্বস্ব—[সং পুং] সর্ব্বস্ব, সকলো সম্পত্তি।
सारी सम्पत्ति या पूँजी।

সর্বাংগীণ—[বি] সম্পূর্ণ, সকলো অঙ্গৰে সম্বন্ধ থকা। সর্ব্বাঙ্গীণ।
सब अंगोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।
सब अंगों से युक्त।

সর্বাত্মা—(সং পুং) ব্রহ্ম।
ब्रह्म।

সর্বেশ (শ্বর)—(সং পুং) ঈশ্বৰ।
सब का स्वामी। ईश्वर।

সর্বেসর্বা—(বি) সর্ব্বে-সর্ব্বা, সকলো কামতে নিজৰ প্ৰভুত্ব কৰা।
पूरा अधिकारी या मालिक।

সর্বোপরি—(বি) সকলোৰে ওপৰত বা শ্ৰেষ্ঠ।
सबसे ऊपर या बढ़कर।

সল—[সং স্ত্রী] কোঁচ খোৱা, চেপা খোৱা, খলপ।
सिकुड़न।
(সং পুং) পানী, কুকুৰ, সৰল গছ।
पानी। कुत्ता, सरल वृक्ष।

সল্তনত-(সং স্ত্রী , ৰাজ্য, সুবিধা। ব্যৱস্থা।
राज्य। प्रबन्ध। सुभीता।

सलवार—(सं स्त्री) পায়জামা জাতীয় পোছাক বিশেষ, চেলোৱাৰ।
जाँघिया। एक प्रकार का पायजामा।

सलहज—[सं स्त्री] খুলশালিৰ ঘৈণীয়েক।
साले की स्त्री।

सलाई—[सं स्त्री] জুইশলা, শলা।
काठ या धातु का पतला छड़। दिया सलाई।

सलाद—[सं पुं]কেঁচা শাক পাত, নেমু ৰস আদিৰে তৈয়াৰী খাদ্য বিশেষ। এবিধ আলু।
एक प्रकार के कन्द। एक तरकारी

सलाम—[सं पुं] প্ৰণাম, নমস্কাৰ।
प्रणाम।

सलामत—(वि) কুশলে থকা, হানি বিঘিনিৰ পৰা ৰক্ষা পৰা, সুৰক্ষিত।
हानि या आपत्ति से बचा हुआ। सकुशल। कायम।

सलामी—(सं स्त्री) নমস্কাৰ, ঘৰ আদিৰ বাবত দিয়া আগধন বা চালামি, উপঢৌকণ।
सलाम करनेकी क्रिया या भाव। मकान आदि की पेशगी या पगड़ी।
(वि) অলপ হেলনীয়া (স্থান)
थोड़ा ढालुआँ (स्थान)।

सलाह—[सं स्त्री] সন্মতি, পৰামৰ্শ।
सम्मति। परामर्श।

सलिल—(सं पुं) পানী।
पानी।

सलीका—(सं पुं) ভাল ধৰণে কাম কৰা প্ৰক্ৰিয়া, শিষ্টতা।
अच्छी तरह काम करनेका ढंग। शिष्टता।

सलूक—(सं पुं) ভাল ব্যৱহাৰ। आपसदारीका अच्छा बरताव या व्यवहार। भलाई।

सलोना—(वि) নিমখীয়া, সুন্দৰ, লাৱণ্য যুক্ত।
नमकीन। सुन्दर।

सवर्ण—[वि] সমান, একেজাতিৰ।
समान। एक ही वर्ण या जाति के।

सवा—(वि) ছোৱা এক।
पूरे के साथ और एक चौथाई अधिक।

सवाई—(सं स्त्री) মূল ধনৰ ছোৱা (অংশ)
मूल धन का सवा (हिस्सा)

सवाब—(सं पुं) পুণ্য, উপকাৰ।
पुण्य। उपकार।

सवाया–[वि]ছোৱা গুণ, শ্ৰেষ্ঠতৰ, বেছি। सवा गुना। श्रेष्ठतर।

सवार—(सं पुं) আৰোহী।
वह जो किसी वाहन पर चढ़ा हो।

सवारी—(सं स्त्री) বাহন। দেৱমূৰ্ত্তি আদিৰ লগত ওলোৱা সমদল।
वाहन। देवमूर्ति आदि के साथ चलनेवाला जुलूस।

सवाल—(सं पुं) প্ৰশ্ন। দাবী।
प्रश्न। माग।

सवाल-जवाब–[सं पुं] তৰ্ক-বিতৰ্ক।
तर्क-वितर्क।

सविता—(सं पुं) ঈশ্বৰ। সূৰ্য্য। বাৰ সংখ্যা।
ईश्वर। सूर्य। बारहकी संख्या।

सवेरा—[सं पुं] ৰাতিপুৱা।
प्रातःकाल।

सवैया-(सं पुं) ছোৱা সেৰৰ ওজন। ছন্দ বিশেষ।
सवा सेरका बाट। एक छन्द।

सव्य— (वि) বাম। প্ৰতিকূল। সোঁফাল। বিষ্ণু। লগুণ। মৃতকৰ শৰীৰত সংযোগ কৰা অগ্নি।
बायाँ। प्रतिकूल। दाहिना। विष्णु। जनेऊ। किसी व्यक्ति की मृत्युके समय जलायी गयी अग्नि।

सव्यसाची—(सं पुं) অৰ্জ্জুন।
अर्जुन।

सशंक—(वि) শঙ্কান্বিত। ভীত।
भयभीत।

सशक्त—(वि) শক্তিশালী।
शक्तिशाली।

सशस्त्र—(वि) অস্ত্ৰধাৰী। সশস্ত্ৰ
शस्त्र सहित। शस्त्रसे युक्त।

ससक, ससा—(सं पुं) শহাপহু।
खरगोश।

ससहर, ससि, ससिधर, ससिहर, ससी—(सं पुं) চন্দ্ৰ। জোন।
चन्द्रमा।

ससुर—(सं पुं) শহুৰ।
स्त्री या पुरुषके विचारसे उसके पति या पत्नीका पिता।

ससुराल–[सं स्त्री] শহুৰৰ ঘৰ।
ससर का घर।

सस्ता– (वि) কম দামৰ। সুলভ।
कम मूल्यका। साधारण। जो बहुत थोड़े ही परिश्रम या व्ययसे या सहजमें मिल जाय।

सस्ती––(वि) সস্তা হোৱা। সকলো বস্তু সস্তাতে পোৱা সময়।
सस्तापन। वह समय जब सब चीजें सस्ती मिलती हों।

सस्मित—(वि) হাঁহি থকা।
मुस्कुराता हुआ।
[क्रि वि] হাঁহি।
मुस्कुरा कर।

सह–(अव्य) সৈতে।
सहित।
(वि) সহনশীল। সমর্থ। পাৰগ।
सहनशील। समर्थ।

सहकार— (सं पुं) আমগছ।
সহযোগ।
आमका वृक्ष सहयोग।

सह-गमन—[सं पुं] কাৰো লগত বা সঙ্গত যোৱা। সতী হোৱা।
किसीके साथ चलना या जाना।
सती हो जाना।

सह-गान–[सं पुं]বৃন্দ গান। সামূহিক গীত।
कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना। वह गाना जो इस प्रकार गाया जाय। (अं—कोरम)

सहचर–(सं पुं) সঙ্গী। অনুচৰ। অনুগামী। লগৰীয়া।
साथी सेवक। मित्रा।

सहचरी—(सं स्त्री) পত্নী। স্বামী।
पत्नी। सखी।

सहजबुद्धि—[सं स्त्री] স্বাভাবিক শক্তি বা জ্ঞান (জীব-জন্তুৰ)।
जीव जन्तुओं में होनेवाली वह स्वाभाविक शक्ति या ज्ञान।

सहज-समाधि—(सं स्त्री) গুৰুৰ পৰামর্শ মতে লগোৱা সমাধি বা ধ্যান। নাথ পন্থ আৰু যোগমাৰ্গৰ ক্রিয়া বিশেষ।
वह ध्यान या समाधि जो सद्गुरु के बतलाये हुए सहज या सरल रूपमें लगायी जाती है।

सहजात—(वि) একেলগে জন্মা বা উৎপন্ন। যঁজা।
साथ साथ जन्म लेने या उत्पन्न होनेवाला। यमज।
(सं पुं) সহোদৰ।
सहोदर।

सहधर्मिणी—(सं स्त्री) পত্নী।
पत्नी ।

सहनशील—(वि) সহনশীল। সহিব পৰা গুণ থকা।
सहने या बरदास्त करनेवाला ।

सहना—(क्रि स) সহ্য কৰা। ভাৰ বহন কৰা।
झेलना । बरदास्त करना । भार वहन करना ।

सहपाठी—[सं पुं] একেলগে পঢ়া।
जो किसीके साथ पढ़ा हो ।

सह बाला—[सं पुं] বিয়াৰ দিনা বৰৰা দৰাৰ লগত ঘোঁৰা অথবা পাল্কীত উঠি অহা ল'ৰা জন।
वह छोटा बालक जो विवाह के समय वरके साथ घोड़े या पालकी पर बैठकर उसके सखाके रूपमें जाता है ।

सह-भागी—(सं पुं) অংশীদাৰ।
हिस्सेदार ।

सहम—[सं पुं] ভয়। সঙ্কোচ। ইতঃস্তত।
भय । संकोच । हिचक ।

सहमत—[सं पुं] একমত। সম্মত
एक मत का ।

सहमति—(सं स्त्री) সম্মতি।
किसीके साथ एक मत होना ।

सहमना—(क्रि अ) ভয় কৰা।
डरना ।

सहलाना—[क्रि स]হাত ফুৰো বা মলি দিয়া।
किसी वस्तु या अंगपर धीरे धीरे हाथ फेरना। मलना ।

सहवास—[सं पुं] সংসৰ্গ। মৈথুন।
साथ रहना । मैथुन ।

सहसा—(अव्य) হঠাৎ। অকস্মাৎ।
अकस्मात् ।

सहसाक्षि, सहस्राक्षी—[सं पुं]
ইন্দ্ৰ।
इन्द्र ।

सहसानन, सहस्रफण—(सं पुं)
অনন্তনাগ।
शेषनाग ।

सहस्र—(सं पुं) হেজাৰ।
हजार ।

सहस्रदल—(सं पुं) পদুম।
कमल ।

सहायता— [सं स्त्री] সহায়তা।
সাহার্য্য।
मदद ।

सहारा—[सं पुं] আশ্রয়। সহায়।
ভাৰষা।
आश्रय। भरोसा। सहायता।

सहिक—[वि] উচিত ভাবি কোৱা, প্ৰকৃত। দৃঢ় আৰু নিশ্চিত। পোনপটীয়া। গণিতৰ সংখ্যা বিশেষ।
ठीक मानकर साफ कहा हुआ। वास्तविक। दृढ़ और निश्चित। सीधा। गणितमें 'धन' संख्या। (अं--पॉजिटिव)

सहिजन—[सं पुं] চজিনা।
एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियों की तरकारी बनती है।

सहिदानी [सं स्त्री] চিহ্ন। পৰিচয়।। স্মৃতি চিহ্ন।
निशानी। पहचान। स्मृति के लिये दी गयी वस्तु।

सहिष्णु—(वि) সহনশীল।
सहनशील।

सहिष्णुता—(सं स्त्री) সহনশীলতা।
सहन शीलता।

सही—(वि) সত্য। শুদ্ধ।
सत्य। शुद्ध।
(क्रि वि) সঁচাকৈয়ে। আচলতে।
सचमुच। वस्तुतः।
(सं स्त्री) দস্তখত। চহী।
हस्ताक्षर। दस्तखत।

सही-सलामत-(वि) ভালে কুশলে।
भला चंगा।
(क्रि वि) कुशलपूर्वक।
कुशल पूर्वक।

सहूलियत—(सं स्त्री) সুবিধা।
सुविधा।

सहेजना—[क्रि स] চম্ভালা। ভালকৈ ৰখা।
संभालना। ठीक करके रखना।

सहेली—[सं स्त्री] সখী।
सखी।

सहैया—[वि] সহনশীল।
सहनेवाला।
[सं पुं] সহায়ক।
सहायक।

सहोदर—(सं पुं) আপোন ভাই।
सगा, भाई।

साँई, साईं—(सं पुं) স্বামী। ঈশ্বৰ।
পতি। ফকিৰ।
स्वामी। ईश्वर। पति फकीर।

साँकरा—[वि] সঙ্কীৰ্ণ। ঠেক।
संकीर्ण। कम चौड़ा।

(সং পুং) কষ্ট। বিপদ। বিপদাবস্থা।
कष्ट। संकट। संकट की स्थिति।

सांख्य— (সং পুং) দর্শন বিশেষ। মহর্ষি কপিল রচিত সাংখ্য-দর্শন। সংখ্যা সম্বন্ধীয়।
छः दर्शनोंमें महर्षि कपिल कृत दर्शन।

सांख्यिकी—(স স্ত্রী) সংখ্যা আদির পরা কোনো বিষয়র নিষ্কর্ষ উলিওৱা বিদ্যা। সংখ্যা বিজ্ঞান।
किसी विषयकी संख्याएँ आदि एकत्र करके निष्कर्ष आदि निकालने की विद्या या पद्धति। (अं-स्टेटिस्टिक्स)

साँग—[সং স্ত্রী] এবিধ গাঠি। নকল বা ভেশছন কৰা।
एक प्रकार की बरछी। स्वांग या नकल।

सांग [वि] অঙ্গযুক্ত। সম্পূর্ণ।
सब अंगोंसे युक्त। पूरा।

सांगोपांग—[वि] সম্পূর্ণ। সম্পূর্ণাঙ্গ
सब अंगों आर उपांगोसे युक्त। सम्पूर्ण।

साँच—(বি, সং পুং) সঁচা, সত্য।
सच। सच्चा।

साँचना—(ক্রি স) সঞ্চয় কৰা।
संचित करना।

साँचा—(সং পুং) সাচ। নমুনা। কোনো বস্তু ঢালি প্রস্তুত কৰা সাধন।
ठप्पा। नमूना। वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज ढालकर उसीके आकार की दूसरी और चीजें बनाई जाती है।
(वि) সঁচা। প্রকৃত।
सच्चा।

साँझ—(সং স্ত্রী) সন্ধিয়া।
शाम। संध्या।

साँटी—(স স্ত্রী) সরু লাঠি।
छोटी पतली छड़ी।

साँठ-गाँठ—[সং স্ত্রী] ঘনিষ্ঠ, গুপ্ত সম্বন্ধ, ষড়যন্ত্র।
घनिष्ठ या गुप्त सम्बन्ध। षड़यंत्र।

साँढ़—(সং পুং) ষাড় গরু। উট।
केवल सन्तान उत्पन्न कराने के लिये पाला हुआ गौ का नर। नर ऊँट।

साँढ़नी—(সং স্ত্রী) উট (মাইকী।)
ऊँटनी।

साँढ़, साढ़ू—(सं पुं) শালপতি।
किसी की साली का पति।

सांत—(वि) অন্ত হব লগীয়া, প্ৰসন্ন, শান্ত।
जिसका अन्त अवश्य होता हो। शान्त।

साँप—(सं पुं) সাপ, বিষধৰ।
सर्प। भुजंग।

सांप्रत—(अव्य) সম্প্ৰতি, এতিয়া।
इस समय।

सांप्रतिक—(वि) বৰ্ত্তমানে চলি থকা, সাময়িক ভাবে উপযোগী।
जो इस समय चल रहा हो। जो समय की आवश्यकता को देखते हुए ठीक और उपयुक्त हो।

साँभर—[सं पुं] হৰিণৰ এক প্ৰকাৰ, ৰাজপুতনাৰ এটি হ্ৰদ।
एक प्रकार का हिरण। एक झील का नाम।

साँवर, साँवला—(वि) অলপ কলা, মাগুৰ বৰণীয়া।
कुछ कुछ काला।
[सं पुं] কৃষ্ণ, স্বামী, প্ৰেমিক।
कृष्ण। पति। प्रेमी।

साँस—(सं स्त्री) নিশ্বাস, জিবণি।
श्वास। दम। अवकाश।

साँसत—(सं स्त्री) যাতনা, শাস্তি।
यातना। सजा।

साँसा-(सं पुं) উশাহ, জিবণি, সন্দেহ, ভয়।
श्वास। जीवन, सन्देह। भय।

सा-(अव्य) সমান, নিচিনা-সূচক শব্দ।
समान। एक परिमाण सूचक शब्द।

साइत, सायत—(सं स्त्री) সময়, মুহূৰ্ত্ত, শুভক্ষণ।
पल। समय। मुहूर्त। शुभ समय।

साइयाँ—[सं पुं] ঈশ্বৰ।
साईं (ईश्वर)

साईस—(सं पुं) চহিচ, ঘোঁৰাৰ আলপৈচান ধৰোঁতা।
घोड़े की देख रेख करनेवाला।

साकत—[सं पुं] শাক্ত, দুষ্ট, বদমাচ।
शाक्त। दुष्ट। पाजी।

साकला, साकल्य— (सं पुं) তিল, ধান, চাউল আদি হোমৰ আহুতিত দিয়া সামগ্ৰী।

जौ, तिल आदि होममें हुवन की सामग्रियाँ।

साका—(सं पुं) সংবৎ, যশ, স্মারক, প্রসিদ্ধি, ঠাট।
संवत्। यश। स्मारक। प्रसिद्धि। धाक।

साकार—[वि] মূৰ্ত্তিমান।
रूप या आकारवाला। मूर्तिमान।
[सं पुं] ঈশ্বৰৰ মূৰ্ত্তিমন্ত ৰূপ।
ईश्वर का आकार युक्त रूप।

साकिन—(वि) নিবাসী।
निवासी।

साकेत—(सं पुं) বৈকুণ্ঠলোক, অযোধ্যা নগৰ।
वैकुंठ लोक। अयोध्या नगरी।

साख—[स स्त्री] ভেম, ঠাট, মৰ্য্যাদা, লেন-দেন কাৰ্য্যত প্ৰতিষ্ঠা। সাক্ষী।
धाक। मर्यादा। लेन-देन या व्यवहार के खरेपन की मान्यता।

साखी—[सं पुं]সাখী, পঞ্চায়ত, গছ।
गवाह। आपसी झगड़ों का निबटारा करनेवाला पंच। वृक्ष।
[सं स्त्री] সাক্ষী দিয়া।
गवाही।

साखू—(सं पुं) শাল গছ।
शाल नामक वृक्ष।

साग—(सं पुं) শাক, তৰকাৰী।
शाक। तरकारी।

साग्रह—(क्रि वि) আগ্ৰহেৰে।
आग्रह पूर्वक।

साज—[सं पुं] সাজোন, ঠাট, বাদ্য।
सजावट। ठाट-बाट। बाजा।
(वि) সাজোঁতা।
बनानेवाला।

साजन—(सं पुं) স্বামী, প্ৰেমিক, সজ্জন, সাধুলোক।
पति। प्रेमी। सज्जन।

साज-बाज—(सं पुं) ধুম-ধাম, মিল-জুল, সাজু হোৱা।
तैयारी। धूमधाम। मेल जोल।

साज-सामान—[सं पुं] সামগ্ৰী, ঠাট।
सामग्री। ठाट-बाट।

साजिश—[सस्त्री] ষড়যন্ত্ৰ।
बनावट। षड्यंत्र।

साझा—(सं पुं) অংশীদাৰী. অংশ।
हिस्सेदारी। भाग।

साझिया, साझी, साझेदार—
[सं पं] অংশীদাৰ।

किसी काम या रोजगारमें साझा रखनेवाला। हिस्सेदार।

साठ—(वि) ষাঠি।

साठा—(सं पुं) কুঁহিয়াৰ। ईख।

(वि)ষাঠি বছৰৰ।
साठ वर्ष का।

साढ़ी—(सं स्त्री) গাখীৰ সৰ। मलाई।

सात्विक—[वि]সাত্বিক গুণ, পবিত্র। सतोगुणी। पवित्र। सत्व गुणसे उत्पन्न।

साथ-(अव्य) সৈতে, প্রতি, দ্বাৰা। सहित। प्रति। द्वारा।

[सं पुं] সঙ্গী, মিল, গীত। साथी। मेल। संगीत।

साथी—(सं पुं) সঙ্গী, লগৰীয়া। संगी। मित्र।

सादगी—[सं स्त्री] নিষ্কপট ভাব। সহজ, সৰল ভাব।
सादापन। निष्कपटता।

सादा—[वि] সাধাৰণ, আড়ম্বৰ হীন, কপট নোহোৱা।
साधारण बनावट का। आडम्बर हीन। जो छल कपट न जानता हो।

सादृश्य-(सं पुं) সদৃশ্যতা তুল্যত, একে গুণৰ হোৱা অৱস্থা।
एक रूपता। तुलना।

साध—(सं स्त्री) অভিলাষা, ইচ্ছা, উৎকণ্ঠা।
अभिलाषा। उत्कंठा।

(सं पुं) সাধুলোক।
साधु। सज्जन।

[वि] উত্তম, ভাল।
उत्तम। अच्छा।

साधन-(सं पुं)সিদ্ধি কৰা, কাৰ্য্য নিৰ্ণয় বা আদেশ আদি পালন কৰা, উপকৰণ, উপায়।

कार्य आरम्भ करके पूर्ण करना। निर्णय, आज्ञा आदि पालन करना। कोई चीज तैयार करने का सामान। उपकरण। उपाय।

साधार—[वि] আধাৰ যুক্ত।
आधार युक्त।

साधारणी करण—[सं पुं]কাব্যৰ নায়ক আদিৰ লগত পাঠক বা শ্ৰোতাৰ মনৰ তাদাত্ম্য বা মিল হোৱা মানসিক স্থিতি।

वह मानसिक व्यापार जिसके द्वारा काव्य के नायकादि के साथ श्रोता या पाठक का तादात्म्य होता है।

साधिकार—(ক্রি বি) অধিকাৰৰ সৈতে, অধিকাৰ পূৰ্ব্বক।
अधिकार पूर्वक।

साधुवाद—[सं पुं]প্ৰশংসা কৰা, সম্মান কৰা।
प्रशंसा या आदर करना।

साध्वी—[वि]পতি ভক্তি-পৰায়ণা, সতী, পতিব্ৰতা স্ত্ৰী।
पतिव्रता। पवित्र आचरणवाली।

सानंद—(क्रि वि) আনন্দেৰে।
आनन्द पूर्वक।

सान—[सं पुं] শাণ শিল।
वह पत्थर जिस पर रगड़कर अस्त्रों आदि की धार तेज की जाती है।

सानना—(क्रि स) আটা আদি সনা, মিহলি কৰা, দোষ, অপৰাধ আদিত কাৰো সৈতে বিনা কাৰণে লেটিওৱা।
आटा आदि गूँथना। मिश्रित करना। दोष, अपराध आदि के लिये किसी के साथ अकारण दोषी या उत्तरदायी बनाना।

सानी—[सं स्त्री] দানা-পানী।
पानी में भिगोया हुआ गौ, भैंसों का चारा।
(वि) অইন, সমানৰ।
दूसरा, बराबरी का।

सानु—(सं पुं) পৰ্ব্বতৰ শিখৰ, পাথৰ, জঙ্গল, হাবি।
पर्वत का शिखर। पत्थर। जंगल।
(वि) ডাঙৰ দীঘল।
लम्बा चौड़ा। चौरस।

सानुकूल - (वि) অনুকূল।
अनुकूल।

सान्निध्य - (सं पुं)ওচৰ। সামীপ্য।
समीपता। निकटता।

सापना—(क्रि स) শাপ দিয়া।
शाप देना।

सापेक्ष—(वि) অপেক্ষা কৰা। নিৰ্ভৰ কৰা।
जिसमें किसीकी अपेक्षा हो। जो दूसरे पर अवलंबित हो।

साफ—(वि)স্বচ্ছ। নিৰ্ম্মল। পবিত্ৰ, নিৰ্দ্দোষ। উজ্জ্বল। পৰিষ্কাৰ।

स्वच्छ। निर्मल। पवित्र।
निर्दोष। उज्वल। निखरा हुआ।
निष्कपट। सादा।
[क्रि वि] দোষ, কলঙ্ক আদি
নোহোৱা।
बिना किसी दोष, कलंक या
हानि के।

साफा—[सं पुं] সৰু পাগুৰী।
छोटी पगड़ी।

साबिक-(वि) আগৰ। মৌলিক।
প্ৰাথমিক।
पहले का।

साबिका—(सं पुं) সম্বন্ধ।
सम्पर्क।

साबित—[वि] প্ৰমাণিত। সম্পূৰ্ণ।
পকা কৰা।
प्रमाणित। पूरा। पक्का।

साबुत, साबूत—(वि)অখণ্ড। নিৰ্ভে-
জাল।
जो खंडित न हुआ हो। सब।

साभार-(क्रि वि)কৃতজ্ঞতা পূৰ্ব্বক।
कृतज्ञता पूर्वक।

सामंजस्य—(सं पुं)অনুকূলতা।
পৰস্পৰৰ মিল। ঔচিত্য।.
अनुकूलता। एक-रसता।
औचित्य।

सामंत-[सं पुं] বীৰ। সামান্য বা
তলতীয়া ৰজা। কৰতলতীয়া
ৰজা।
वीर। अधीनस्थ राजा। कर
देनेवाला राजा।

साम—(सं पुं) গোৱা বেদমন্ত্ৰ।
সাম বেদ। ৰাজনীতিৰ প্ৰধান
চাৰিটা নীতিৰ এটা কলা।
তোষণ মিত্ৰতা।
गाये जानेवाले वेद मंत्र। साम-
वेद। राजनीति में शत्रुसे मीठी
बातें करके अपनी ओर मिलाने
की नीति। मित्रता। श्याम।

सामना—(सं पुं) সম্মুখীন হোৱা,
সাক্ষাৎ। দেখাদেখি। প্ৰতি-
যোগিতা।
समक्ष या सम्मुख होने की क्रिया
या भाव। मुलाकात। सामने या
आगेवाला भाग। मुकाबला।

सामने—[क्रि वि] সম্মুখ। আগত।
বিৰুদ্ধ। প্ৰতিযোগিতা।
सम्मुख। आगे। सीधे आगेकी
ओर। विरुद्ध। मुकाबले में।

सामरस्य—(सं पुं) সমৰসতা।
समरसता।

सामान-(सं पुं)সামগ্ৰী। আয়োজন।
আচবাব পত্ৰ।
सामग्री। आयोजन। घर गृहस्थी
आदि की या कोई काम चलाने
की सब चीजें।

सामान्य—(वि) সামান্য। সদায়
দেখা শুনা। বিশেষত্ব নথকা।
সাধাৰণ। ইতৰ।
जिसमें कोई विशेषता न हो।
मामूली। सार्वजनिक।

सामान्यत: [तया]—[क्रि वि]সামান্য
ধৰণে। সাধাৰণতে।
सामान्य रूपसे। साधारणत:।

सामासिक—(वि) সমাস সম্বন্ধীয়।
সামূহিক। সংক্ষিপ্ত। মিশ্ৰিত।
समास से सम्बन्ध रखनेवाला।
समास का। सामूहिक। संक्षिप्त।

सामिष—[वि] মাছ, মাংস থকা।
সামিষ।
मांस युक्त।

सामीप्य—(सं पुं) ওচৰ। নিকট।
निकटता।

सामुद्रिक [वि] সমুদ্ৰ সম্বন্ধীয়।
समुद्र सम्बन्धी।
(सं पुं) হস্ত ৰেখা বিদ্যা।
হাত চাব জনা লোক।
हस्तरेखा-विद्या। इस विद्याका
ज्ञाता।

साय—(सं पुं) সন্ধ্যা।
संध्या। शाम।
[वि] সন্ধিয়া হবলগীয়া।
संध्याके समय होनेवाला।

सायक—(सं पुं) শৰ। খড়গ।
बाण। खड्ग।

सायन—(सं पुं) সূৰ্য্য বিষুব ৰেখাত
স্থিত হোৱা সময়--যেতিয়া দিন
ৰাতি সমান হয়।
वर्षमें दो बार आनेवाला वह
समय जब सूर्य भू-मध्य रेखापर
पहुँचनेपर दिन और रात दोनों
बराबर होते हैं।

सायल—[सं पुं]প্ৰশ্ন কৰ্ত্তা। প্ৰাৰ্থী,
দাবী কৰোঁতা, খোজোঁতা।
सवाल या प्रश्न करनेवाला।
प्रार्थी। मांगनेवाला।

साया—[सं पुं] ছাঁয়া। প্ৰভাৱ।
তিৰোতাৰ পোছাক বিশেষ।

छाया । परछांई । प्रभाव । एक जनाना पहनावा ।

सायास—[ক্ৰি বি] পৰিশ্ৰমেৰে । आयास या परिश्रम पूर्वक ।

सायुज, सायुज्य—[सं पुं] পাঁচ-বিধ মুক্তিৰ এবিধ । পৰমেশ্বৰত লয় হৈ পোৱা মুক্তি ।
सम्पूर्ण मिलन । जीवात्मा का परमात्माके साथ पूर्ण मिलन ।

सारंग—(सं पुं) হৰিণ বিশেষ । কুলি চৰাই, হাঁহ । ম'ৰা চৰাই । পানীপিয়া চৰাই । হাতী । ঘোঁৰা । বাঘ । ভোমোৰা । পুখুৰী বাদ্য বিশেষ । সাৰেঙ্গী)
एक प्रकारका हिरन । कोयल । हंस । मोर । पपीहा । हाथी । घोड़ा । शेर । भौंरा । तालाब । सारंगी ।
[বি] ৰঞ্জিত । সুন্দৰ । ৰসাল । रंगा हुआ । सुन्दर । सरस ।

सारंगपाणि—(सं पुं) বিষ্ণু। শ্ৰীকৃষ্ণ । विष्णु ।

सारंगी— (सं स्त्री) চাৰেংদাৰ । বেহালাৰ নিচিনা এবিধ বাদ্যযন্ত্ৰ । एक प्रकारका तारोंवाला बाजा ।

सार [सं पुं] তত্ত্ব । মুখ্য । অৰ্থ, ফল। বল । মইনা । পালন-পোষণ । পালেং । ঘাই । খুলশালি ।
तत्व । तात्पर्य । अर्थ । परिणाम, फल । बल । मैना(पक्षी); पालन पोषण । पलंग । कपूर । मनमें खटकनेवाली बात । साला ।

सार-गर्भित—(वि) সাৰ কথা থকা । जिसमें सार हो ।

सार-ग्राही—(वि) সাৰ ভাগ গ্ৰহণ কৰিব পৰা । তাৎপৰ্য্য গ্ৰহণ কৰিব পৰা । সাৰগ্ৰাহী । वस्तुओं या विषयों का तत्व या सार ग्रहण करनेवाला ।

सारथी—(सं पुं) সাৰথি । ৰথ চলাওঁতা । रथ चलानेवाला ।

सारदा—[सं स्त्री] শাৰদা । সৰস্বতী দুৰ্গা । शारदा । दुर्गा । सरस्वती ।

सारना—[ক্ৰি अ] সম্পূৰ্ণ কৰা । সুন্দৰকৈ সজোৱা । সজোৱা । ৰক্ষা কৰা । মৰা । প্ৰহাৰ কৰা । [काम] पूरा या ठीक करना । सुन्दर बनाना । सजाना । रक्षा करना । प्रहार करना ।

সাৰথান—[সং পু] উটৰ চহিচ।
वह जो ऊँट चलाने या हाँकनेका काम करता है।

সারল্য—[সং পুং]সৰলতা।
सरलता।

সারস—(স পুং) এবিধ চৰাই। হাঁহ। জোন। পদুম।
एक प्रकारका पक्षी। हंस। चन्द्रमा। कमल।

সারিকা—(সং স্ত্রী)শালিকা। মইনা চৰাই।
मैना [पक्षी]।

সারিণী— (সং স্ত্রী) তালিকা, ফর্দ্দ, নির্ঘণ্ট, সূচী পত্র।
एक पृष्ठमें अलग अलग स्तंभों या खानोंके रूपमें दिये हुए शब्दों पदों, अंकों आदिका विन्यास। कोष्ठक। [अं--टेबुल]

সারী—[সং স্ত্রী] মইনা। জুৱা খেলৰ পাশা।
मैना। जुआ खेलनेका पासा।
(বি) সকলো।
समस्त।

সারূপ্য—(সং পু) পাঁচ বিধ মুক্তিৰ এবিধ। ইয়াত পৰমেশ্বৰৰ সৈতে একে ৰূপ বা গঢ় পায় বুলি কয়।
वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। सरूपता।

সার্থ—[বি] অর্থযুক্ত।
अर्थ सहित।

সার্থবাহ-[সং পুং]বণিক। দূৰ দেশলৈ বস্তু বিকিবলৈ যোৱা ব্যৱসায়ী।
वह व्यापारी जो अपना माल बेचने दूर तक जाता हो।

সার্ব কালিক—[বি]সকলো সময়ৰে উপযোগী। সকলো কালসম্বন্ধীয়।
सब कालोंमें उपयुक्त। सब काल सम्बन्धी।

সার্ব ভৌম—[স পুং] চক্রবর্তী ৰজা। সম্রাট। হাতী।
चक्रवर्ती राजा। हाथी।
[বি] পুৰাণ মতে পৃথিৱীক ধৰি থকা আঠ দিশৰ আঠোটা হাতীৰ উত্তৰ দিশৰ হাতীটো। বিশ্ববিখ্যাত। সকলো ভূমি সম্বন্ধীয়।
कुबेर का हाथी। विश्वविख्यात। सारी भूमि सम्बन्धी। सर्व-सत्ता सम्पन्न।

साल—(सं पु) বছৰ। সময়।
वर्ष। काल-मान।
(सं स्त्री) মনোকষ্ট। জখম। কাঁটা। বিন্ধা। শাল গছ।
मनमें होनेवाला कष्ट। लकड़ियाँ जोड़ने के लिये उनमें किया जाने वाला चौकोर छेद। सुराख। शाखू

साल- गिरह—[सं स्त्री] জন্ম বাৰ্ষিকী।
बरस-गाँठ।

सालना—(क्रि अ) মনত খুন্দুৰনি ওপজা। সোমোৱা
मनमें खटकना। चुभना।
[क्रि स] কষ্ট দিয়া, বিন্ধা কৰা। প্ৰবেশ কৰা।
दुःख पहुँचाना। छेद करना। प्रविष्ट करना।

साला—[सं पुं] খুলশালি।
किसीकी पत्नीका भाई।

सालाना—[वि] বছৰেকীয়া।
वार्षिक।

सालू—[सं पुं] ৰঙা কাপোৰ।
एक लाल कपड़ा।

सावधि—(वि) অবধি যুক্ত।
अवधि युक्त।

सावन—(सं पुं) শাওণ মাহ।
श्रावण का महीना।

सावनी—(वि) শাওণ মাহ সম্বন্ধীয়, শাওনত হোৱা।
सावन सम्बन्धी। सावन का। सावनमें होनेवाला।
(सं स्त्री) শাওন মাহত গোৱা লোকগীত বিশেষ।
सावनमें गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

सावित्री—(सं स्त्री) সূৰ্য্যৰ অধিষ্ঠাত্ৰী দেৱী, গায়ত্ৰী, সৰস্বতী, সধৱা, উপনয়নৰ সময়ত হোৱা সংস্কাৰ বিশেষ।
गायत्री। सरस्वती। सुहागिन। उपनयनके समय होनेवाला एक संस्कार।

साश्रु—(क्रि वि) চকু পানীৰে চলচলীয়া।
आँखोंमें आँसू भरकर।
[वि] অশ্ৰুপূৰ্ণ।
अश्रुपूर्ण।

साष्टांग—[क्रि वि]আঠ অংগেৰে। আঁঠু, ভৰি, হাত, বুকু, মূৰ দৃষ্টি, বুদ্ধি- বাক্য এই আঠ অঙ্গ

লগ লগাই।
आठो अंगोंसे।

सास—(सं स्त्री) শাহু।
स्त्री या पुरुषके विचारसे उसके
पति या पत्नी की माता।

सासना—(क्रि स) শাস্তি দিয়া, কষ্ট দিয়া।
दण्ड देना, अधिक कष्ट पहुँचाना।
[सं स्त्री] শাস্তি, শাৰীৰিক যাতনা।
सजा। बहुत अधिक शारीरिक कष्ट।

साह—(सं पुं) বেপাৰী, বাদছাহ।
साहूकार। बादशाह।

साहचर्य—(सं पुं) সঙ্গ, সৈতে, সহগমন, সঙ্গতি।
सहचर होनेका भाव। संग। साथ।

साहबी—(वि) চাহাব বা ইংৰাজৰ দৰে।
साहबों या अंग्रेजों का सा।
[सं स्त्री] ঐশ্বৰ্য্য, উচ্চ অধিকাৰ।
प्रभुता या ऐश्वर्यसे युक्त उच्च अधिकार।

साहस—[सं पुं] সাহস।
हिम्मत।

साहसी—(वि) সাহসী, সাহিয়াল।
हिम्मती।

साही—(सं पुं) ৰজা।
शाह। राजा।

साहिब—(सं पुं) চাহাব,ঈশ্বৰ।
साहब। ईश्वर

साहिल—(सं पुं) পাৰ, তীৰ।
किनारा।

साही—(सं स्त्री) বনৰীয়া জন্তু, পুৰণি তৰোৱাল।
एक जंगली जन्तु। पुराने ढंगकी तलवार।

साहु—(सं पुं) সজ্জন, বেপাৰী, মহাজন, ধাৰ্মিক।
सज्जन। सेठ। महाजन। बनिया। ईमानदार।

साहूकार—(सं पुं)ডাঙৰ মহাজন।
সদাগৰ।
बड़ा महाजन।

सिंगार—[सं पुं] শৃঙ্গাৰ, শোভা।
सजावट। शोभा।

सिंगारदान—[सं पुं] ফণি, আইনা আদি থোৱা সৰু পেটাৰী, চন্দুক।

शीशा, कंघी आदि रखनेकी छोटी सन्दूक।

सिंघ—(सं पुं) সিংহ।
सिंह।

सिंचाई—(स स्त्री) ছটিয়া, সিঞ্চন কৰা, ছটিওৱা, পানী সিঁচা, পানী সিঁচা বাবে দিয়া পাৰিশ্ৰমিক ।

सींचने या पानी छिड़कनेका काम या भाव। खेतीबारीके लिये खेतोंमें जल पहुँचाने की क्रिया, भाव या उसका पारिश्रमिक।

सिंचित—(वि) সিঞ্চিত, সিঁচা।
सींचा हुआ। भींगा हुआ।

सिंजित—(वि) ধ্বনি, শব্দ, ঝন্‌ঝননি থকা, ঝঙ্কৃত।
जिसमें ध्वनि, शब्द या झंकार हो।

सिंदूर—(सं पुं) সিন্দুৰ, সীহ বা পাৰাৰ পৰা তৈয়াৰ কৰা এবিধ ৰঙা বৰণীয়া গুৰি, সধবাই কোঁট লোৱা ৰঙাগুৰি।

एक प्रकारका लाल रंगका चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागिनें मांगमें भरती हैं।

सिंदूरी—[वि] সিন্দুৰীয়া।
सिन्दूर के रंगका।

सिंधु—(सं पुं) সিন্ধু নদ, সাগৰ।
नद। समुद्र।

सिंधुजा—(सं स्त्री) লক্ষ্মী।
लक्ष्मी।

सिंधूरा—[सं पुं] সংগীতৰ এটা ৰাগ।
संगीतका एक राग।

सिंधोरा—(सं पुं) তিৰোতা সকলৰ সিন্দুৰ ৰখা কাঠৰ কৌটা।
स्त्रियोंका सिंदूर रखनेका काठ का डिब्बा।

सिंह—(सं पुं) সিংহ, ডাঙৰ বীৰ, বাৰ ৰাশিৰ এটা [জ্যোতিষ]।
बबर शेर। बहुत बड़ा वीर। बारहं राशियोंमें से एक।

सिंह-द्वार—[सं पुं] প্ৰমুখ-দুৱাৰ, ৰজাৰ নগৰ বা টোললৈ সোমোৱা যাই দুৱাৰ।
सदर और बड़ा फाटक।

सिंहावलोकन—[सं पुं] সিংহৰ দৰে পিছলৈ চাই আগবঢ়া, সংক্ষেপতে অতীতৰ কথাৰ আলোচনা বা বৰ্ণনা কৰা।

सिंहकी तरङ्ग पीछे देखते हुए आगे बढ़ना : संक्षेपमें पिछली बातोंका दिग्दर्शन या वर्णन ।

सिंहिनी--(सं स्त्री) সিংহী ।
सिंह की मादा ।

सि- (वि स्त्री) সমান, নিচিনা ।
समान । तुल्य ।

सिकड़ी--(सं स्त्री) শিকলি, গহনা বিশেষ ।
जंजीर । एक गहना ।

सिकत, सिकता--(सं स्त्री) বালি, ধূলি, বালিচহীয়া মাটি, চেনি ।
बालू । रेतीली जमीन । चीनी ।

सिकली--(सं स्त्री) শিকলি, অস্ত্র-শস্ত্র আদি পৰিষ্কাৰ কৰা ।
सिकड़ी । अस्त्र आदि माँजकर साफ करनेकी क्रिया ।

सिकहर--(सं पुं) ছিকা ।
छीका ।

सिकुड़न--(सं स्त्री) কোঁচ খোৱা, চেপা খোৱা ।
सिकुड़ने के कारण पडा हुआ बल ।

सिकुड़ना--(क्रि अ) সংকুচিত হোৱা, কোঁচ খোৱা ।
संकुचित होना । बल या शिकन पड़ना । [क्रि स-सिकोड़ना]

सिक्का--(सं पुं) মুদ্ৰা, মোহৰ, টকা-পইচা আদি, অধিকাৰ, প্ৰভুত্ব ।
मुद्रा । मोहर । छाप । रुपया पैसा आदि । अधिकार । प्रभुत्व ।

सिक्ख, सिख--[सं पुं] শিষ্য, শিখজাতি ।
शिष्य । गुरुनानक के पंथ का अनुयायी ।
(सं स्त्री) শিক্ষা, শিখা -টিকনি
शिक्षा । शिखा या चोटी ।

सिक्त (वि) সিক্ত, ভিজা, তিতা ।
भीगा हुआ ।

सिखंड-[सं पुं] ম'ৰা চৰাই, মৰা চৰাইৰ পাখি ।
मोर । मोरका पंख ।

सिखाना--[क्रि स] শিক্ষা দিয়া, পাঠ পঢ়োৱা ।
शिक्षा देना ।

सिखापन (वन)-(सं पुं) উপদেশ ।
उपदेश ।

सिगरा, सिगरो--(वि) সম্পূৰ্ণ,
सम्पूर्ण । पूरा । सारा ।

सिजदा--[सं पुं] প্ৰণাম, নমস্কাৰ । प्रणाम ।

सिझाना—[क्रि स] কষ্ঠদিয়া, সিজোৱা।
आँचपर पकाकर गलाना। कष्ट देना।

सिटकिनी—[सं स्त्री] হুল কলা, দুৱাৰ আদি বন্ধ কৰা যতন।
किवाड़ बन्द करने के लिये लोहे या पीतल का एक विशेष उपकरण।

सिटपिटाना—[क्रि अ] ভয়ত চুপ হৈ থকা, দোমোজাত পৰা।
डरकर चुप हो जाना। दुविधामें पड़ जाना।

सिट्टी—(सं स्त्री) অতিশয়োক্তি পূৰ্ণ কথা কোৱা বাচালতা।
डींग मारना।

सिड़ी—[वि] পাগল, চেৰা বলিয়া।
पागल। सनकी।

सितकंठ—(सं पुं) নীলকণ্ঠ, মহাদেৱ, ম'ৰা চৰাই।
शितिकंठ। महादेव। मोर।

सितम—(सं पुं) অত্যাচাৰ। জুলুম
अत्याचार। जुल्म।

सितलाई—(सं स्त्री) শীতলতা।
शीतलता।

सितार— (सं पुं) চেতাৰ।
तारों का बना एक प्रकार का बाजा।

सितारा—(सं पुं) তৰা। ভাগ্য।
উজ্জ্বল (সোণ, ৰূপৰ পাতৰ)। টোপ।
आकाश का तारा। भाग्य।
चमकीले पत्तर की गाल बिन्दी।

सिथिलाई—(सं स्त्री) শিথিলতা।
शिथिलता।

सिद्ध-हस्त-[वि] দক্ষ। পাৰ্গত।
নিপুণ।
निपुण।

सिद्धाई—(सं स्त्री) সিদ্ধ অথবা মহাত্মা হোৱা অৱস্থা।
सिद्ध या महात्मा होने की दशा या भाव।

सिद्धासन—[सं पुं] যোগাসন বিশেষ
योगसाधन का एक प्रकार का आसन।

सिधाई—(सं स्त्री)সৰলতা। চিধা।
सीधापन। सरलता।

सिनकना—[क्रि अ] জোৰেৰে নিশ্বাস উলিয়াই নাকৰ মলি দূৰ কৰা।
जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

सिपर—(স স্ত্ৰী) ঢাল। বল্লম।
ढाल।

सिपह सालार—(সং পুং) সেনাপতি।
सेनापति ।

सिपाही—[সং পুং] চিপাহী। যোদ্ধা। সৈনিক। প্ৰহৰী। বীৰ।
योद्धा। सैनिक। पहरेदार। वीर।

सिफत - [সং স্ত্ৰী] বিশেষতা। গুণ।
विशेषता। गुण।

सिफर—(স পুং) শূন্য।
शून्य ।

सिफारिश—(সং স্ত্ৰী) কাৰো বিষয়ে ভাল ভাবে কোৱা। কাৰোবাৰ কোনো কাম কৰি দিবলৈ আনক অনুৰোধ। খোচামতি।
किसी के पक्षमें कुछ अनुकूल अनुरोध।

सिफारिशी - [বি] খোচামতি। অনুকূল অনুৰোধ থকা।
जिसमें सिफारिश हो। खुशामदी

सिमटना—[ক্রি অ] কোঁচা খোৱা। চেপা খোৱা। কাম শেষ হোৱা।
सिकुड़ना। बल या शिकन पड़ना, कार्य समाप्त होना।

सिय (।)— [সং স্ত্ৰী] সীতা। জানকী।
जानकी।

सियना—[ক্রি অ] ৰচনা।
रचना
(ক্রি স) চিলাই কৰা।
सीना।

सियार—[সং পুং] শিয়াল।
गीदड़।

सिर—[সং পুং] মূৰ। শীৰ্ষ।
मस्तक। माथा। चोटी।
(বি) মহান। উত্তম। ভাল।
महान। उत्तम। अच्छा।

सिरका—(সং পুং) ৰ'দত শুকাই টেঙা কৰা কুঁহিয়াৰ, আঙুৰ আদিৰ ৰস।
धूपमें पकाकर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस।

सिरजनहार—[সং পুং] সৃষ্টি কৰ্ত্তা। পৰমাত্মা।
सृष्टि रचनेवाला। परमात्मा।

सिरजना - [ক্রি স] ৰচনা। সৃষ্টি কৰা। উৎপন্ন কৰা বা সজা।
रचना। बनाना। उत्पन्न या तैयार करना।

सिरपच्ची—(সং স্ত্ৰী) মূৰ-ঘমোৱা।
सिर-खपाना। माथा पच्ची।

सिरपेच—(सं पुं) পাগুৰীত পিন্ধা অলঙ্কাৰ বিশেষ।
पगड़ी पर बांधने का एक गहना। कलगी।

सिरमौर—(सं पुं) শিৰৰ ভূষণ। শিৰোমণি।
सिरका मुकुट। शिरोमणि।

सिरहाना—(सं पुं) মূৰ শিতান।
सोने की जगह पर सिरकी ओर का भाग।

सिरा—(सं पुं)এমূৰ। ওপৰ অংশ। পাৰ। জোং।
छोर। ऊपरी भाग। किनारा। नोक।

सिराना—[क्रि अ] শীতল হোৱা। মন্দ হোৱা। অতীত হোৱা। বন্ধ হোৱা।
ठंडा होना। मंद पड़ना। बीतना। बंद होना।

सिरोरुह—(सं पुं) পদুম।
कमल।

सिरोही—[सं स्त्री] ক'লা চৰাই বিশেষ, তৰোৱাল।
एक प्रकार की काली चिड़िया। तलवार।

सिर्फ़—(वि) কেৱল।
केवल।

सिल—(सं स्त्री) শিল। পটা (মচলা বটা শিল)
शिला। पत्थरका टुकड़ा जिसपर मसाले आदि पीसते हैं।

सिलसिला—[सं पुं] ক্ৰম, শ্ৰেণী, ব্যৱস্থা।
क्रम बंधा हुआ तार। श्रेणी। व्यवस्था।

सिलसिलेवार—(वि) ক্ৰমানুসৰি।
सिलसिले से। क्रमानुसार।

सिलह—[सं पुं] অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ।
हथियार।

सिलाई—(सं स्त्री) চিলাইৰ কাম, পদ্ধতি অথবা তাৰ বাবে দিয়া বানচ।
'सीने' का काम, ढंग या मजदूरी।

सिलाह—(सं पुं) কবচ, অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ।
कवच। हथियार।

सिलिमुख—(सं पुं) শিলীমুখ, এবিধ বৰ চোকা কাঁড়, মৌ-মাখি, ভোমোৰা।
शिली मुख [भौंरा, बाण]

सिलौटा—(सं पुं) মচলা বটা পটা আৰু পটাগুটি।
सिल। सिल और उसका बट्टा।

सिल्ली—(सं स्त्री) শাণ পাথৰ, বৰফ আদিৰ টুকুৰা।
हथियार की धार तेज करने की सान। पत्थर, बर्फ आदि की पटिया।

सिवा [य]—(अव्य) অতিৰিক্ত, বাহিৰে।
अतिरिक्त। अलावा।

सिवान—(सं पुं) সীমা।
हद। सीमा।

सिवार—[सं स्त्री] শৈবাল, পানীত হোৱা দীঘল ঘাঁহ।
शैवाल। पानीमें होनेवाली एक तरह की लम्बी घास।

सिसकना—(क्रि अ) কেঁকুৰী কন্দা।
सिसकी भरकर रोना।

सिसकी—[सं स्त्री] উচুপি উচুপি কন্দা।
धीरे धीरे रोने का शब्द।

सिहरन, सिहरी—(सं स्त्री) শিঞৰা কাৰ্য্য।
सिहरने की क्रिया या भाव।

सिहरना—(क्रि अ) গা জিকাৰ খোৱা শিঞৰা।
शीत या भय से काँपना।

सिहाना—(क्रि अ) ঈৰ্ষা কৰা, লালায়িত হোৱা, মুগ্ধ, সন্তুষ্ট হোৱা।
ईर्ष्या करना। लालायित होना। मुग्ध होना। संतुष्ट होना।

सींक—(सं स्त्री) শলা-ঘাঁহ, খেৰ আদিৰ দীঘল, পাতল আৰু শুকান খৰিকা।
घास आदि का लम्बा, पतला, कड़ा डंठल। सरकंडा।

सींग—(सं पुं) শিং।
पशुओं के सिरपर के कठोर, लम्बे, नुकीले अवयव।

सींचना—(क्रि स) পানী সিঁচা। তিজোৱা।
खेतों आदिमें पानी देना। भिगोना।

सीकर—[सं पुं] পানীৰ কণ। বিন্দু।
जलकण। बूँद।

सीख—[सं स्त्री] শিক্ষা, উপদেশ, পৰামৰ্শ।
शिक्षा। उपदेश। परामर्श।

सीखचा-(सं पुं) লোৰ দীঘল মাৰি
लोहे का लम्बा छड़।

सीखना—[क्रि स] শিকনি পোৱা।
शिक्षा पाना।

सीझना-(क्रि अ) সিদ্ধ, হোৱা, সিজা কষ্ট সহ্য কৰা।
आंचपर पकना या गलना। कष्ट सहना।

सीटी-(सं स्त्री)সুহুৰি, বাদ্য বিশেষ।
होंठ सिकोड़ कर मुँह से किया जानेवाला तेज शब्द। एक प्रकार का बाजा।

सीठी--[सं स्त्री] ৰস চেপি উলিওৱা ফল মূলৰ সিটা বা শিটা, সাৰহীন বস্তু।
चूसे या रस निचोड़े हुए फल आदि का नीरस अंश। सार-हीन पदार्थ।

सीड़ (ढ़)—[सं स्त्री] জেঁকা।
सीली या तर जमीनके कारण होनेवाली नमी।

सीढ़ी—[सं स्त्रीं] জখলা। খটখটি
निसेनी। जीना।

सीताफल—(सं पुं) কোমোৰা।
আতলচ।
शरीफा। कुम्हड़ा।

सीदना— (क्रि अ क्रि स) দুঃখ পোৱা। নাশ হোৱা বা কৰা।
दुःख पाना या देना। नाश होना या करना।

सीध—(सं स्त्री) চিধা। পোণ ৰেখা। লক্ষ্য।
सीधापन। सीधी रेखा या दिशा। निशाना।

सीधा—[वि] সৰল। অজলা। শান্ত আৰু সৎস্বভাৱৰ।
सरल। भोला। शांत और सुशील। सहज।
(सं पुं) আগৰ অংশ। সিধা-বাদ্ধি খাবলৈ দিয়া চাউল, মাহ আদি খোৱা বস্তু। ভোজনী।
सामने का भाग। बिना पका हुआ अन्न (ब्राह्मण आदि को देनेका)

सीधे—(क्रि वि) সমুখৰ পিনে। শিষ্ট ব্যৱহাৰেৰে।
सामनेकी ओर। शिष्ट व्यवहारसे।

सीना—(क्रि अ) চিলাই কৰা।
सिलाई करना।
(सं पुं) বক্ষ।
छाती।

सीप—(सं पुं) বখলীয়া শামুক, সাগৰৰ শামুকৰ খোল।

कड़े आवरणमें रहनेवाला एक जल जंतु। समुद्री सीपका सफेद चमकीला आवरण।

सीपी—[सं स्त्री] শামুকৰ খোল। सीपका आवरण या सम्पुट।

सीमंत-(सं पुं)তিৰোতাৰ সেঁওতা। स्त्रियो के सिर की मांग।

सीमोल्लंघन—(सं पुं) মৰ্য্যাদাৰ বিৰুদ্ধে কাম কৰা সীমা অতিক্রম কৰি যোৱা। অইনৰ ৰাজ্যত প্ৰবেশ কৰা।
मर्यादाके विरुद्ध कार्य करना। किसी राज्यपर आक्रमण करने के लिये अपनी सीमा पार करके उसकी सीमामें पहुँचना।

सीय—[सं स्त्री] সীতা। जानकी।

सीर—(सं पुं) নাঙল। নাঙলত জুৰি দিয়া বলদ। সূৰ্য্য।
हल। सूर्य। हलमें जोता जानेवाला बैल।
[सं स्त्री] অংশ। আধিয়া, চুকানি আদি মাটিৰ বন্দোবস্তী ৰীতি।
साझा। किसी के साझे में जमीन जोतने-बोने की रीति।

सीरा—(सं पु) চাখি চোৱা বস্তু। নমুনাৰ বস্তু। সোৱাদ। মূৰ শিতান।
चाशनी। सिरहाना।
[वि] শান্ত, মৌন। শীতল।
ठंडा। शांत। मौन।

सील—(सं स्त्री)মাটিৰ জেকা গুণ। भूमि की आर्द्रता।

सीवन—[सं स्त्री] সিয়া কাম। ফাট বা বিন্ধা।
सीने का काम। सिलाई के टाँके। दरार।

सीस—(स पुं) মূৰ। सिर।

सुँघनी—[सं स्त्री] নস্য। নাচগুৰি। नस्य।

सुँघाना—[क्रि स] শুঙোৱা। किसीको सूँघने में प्रवृत्त करना।

सुंड, सुंडा—(सं पुं) শুঁৰ। सूँड़।

सुंदरताई, सुंदराई— [सं स्त्री] সুন্দৰতা। सुन्दरता।

सु—[उप॰] সুন্দৰ, শ্ৰেষ্ঠতা সূচক উপসৰ্গ

सुन्दर या श्रेष्ठ का वाचक एक उपसर्ग ।

(सर्व) সেই । তেওঁ বা 'স ।

सो । वह ।

(अव्य) তৃতীয়া, পঞ্চমী আৰু ষষ্ঠী বিভক্তি (হিন্দী) ।

तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्तियों का चिह्न ।

[वि] নিজা । সমান ।

स्व (अपना) । सम ।

सुअन--(सं पुं) পুত্ৰ ।

बेटा ।

सुआ—[सं पुं] ভাটৌ ।

तोता ।

सुआर—(सं पुं) বান্ধনি ।

रसोइया ।

सुकंठ—[वि] সুন্দৰ গল থকা, সুৱদী মাত থকা ।

जिसकी गरदन सुन्दर हो ।

जिसका स्वर मधुर हो ।

[सं पुं] সুগ্ৰীব ।

सुग्रीव ।

सुकर—[वि] সহজ, সুগম ।

जो सहज में किया जा सके ।

सुगम ।

सुकाल—[सं पुं] ভাল সময়, সস্তীয়া সময় ।

अच्छा समय । सस्तीका समय ।

सुकुआर, सुकुवार—(वि) নিচেই কোমল বগসৰ, সুকুমাৰ ।

सुकुमार ।

सुकुल—(सं पुं) উত্তম কুল, শুক্ল নামৰ উপাধি বিশেষ ।

उत्तम कुल । शुक्ल ।

सुकृत्—(वि) ধাৰ্ম্মিক, শুভ কাৰ্য্য কৰোঁতা ।

उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला ।

धार्मिक ।

सुकृत—(सं पुं) পুণ্য, সৎকৰ্ম্ম ।

पुण्य । सत्कर्म।

(वि) ভাগ্যবান, ধাৰ্ম্মিক ।

भाग्यवान । धर्मशील ।

सुकृति, सुकृती—(सं स्त्री) সুকৰ্ম্ম ।

अच्छा कार्य ।

[सं पुं] ভাল কাম কৰোঁতা ব্যক্তি ।

अच्छे काम करनेवाला व्यक्ति ।

सुखंडी—(सं स्त्री) পয়ালগা ।

बच्चोंका सूखा रोग ।

सुखद, सुखकर, सुखदाता, सुखदानि (नी), सुखदायी सुखदेव, सुखप्रद, सुखकर—(वि) সুখজনক, আনন্দ কৰ ।
सुख देनेवाला ।

सुखधाम—[सं पुं] সুখী-নিবাস, বৈকুণ্ঠ, স্বৰ্গ ।
सुख का घर । बैकुंठ । स्वर्ग ।

सुखमन, सुखमा—(स ं स्त्री)
ধুনীয়া, মনোৰম ।
सुषमा ।

सुखवंत, सुखवार—[स ं पुं] সুখী, আনন্দকৰ ।
सुखी । सुख दायक ।

सुखान्त—[स ं पुं] সুখ পূৰ্ণ অন্ত হোৱা (নাটক) ।
जिसका अंत सुखपूर्ण हो ।

सुखाना—(क्रि स) ৰ'দ বা জুইত শুকোৱা, দুৰ্ব্বল কৰা ।
धूपमें या आगपर रखकर आर्द्रता दूर करना । दुर्बल बनाना ।

सुखारा, सुखावह (री)—(वि) সুখদ, সহজ ।
सुखद । सहज ।

सुखेन—[क्रि वि] সুখেৰে ।
सुखपूर्वक ।

सुगत—[स पुं] মহাত্মা বুদ্ধৰ আন এটি নাম, বৌদ্ধ ।
महात्मा बुद्धका एक नाम । बौद्ध ।

सुगति—(स ं स्त्री) মোক্ষ, সদ্গতি ।
मोक्ष ।

सुगना, सुग्गा—(स ं पुं) ভাটৌ ।
तोता ।

सुगम—(वि) উজু , টিলা, সহজ, সহজে যাব পৰা ।
जिसमें जाना या पहुँचना कठिन न हो । सहज ।

सुगर—(वि) সুন্দৰ, সুগম ।
सुन्दर । सुकंठ । सुगम ।

सुघट—(वि) সুন্দৰ, সহজ ।
सुन्दर । सुगम ।

सुघड़, सुघर—(वि) সুন্দৰ, হাতৰ কামত পাৰগ ।
सुन्दर । हाथ के काम करने में निपुण ।

सुघरी—(स ं स्त्री) শুভ মুহূৰ্ত্ত ।
शुभ समय या साइत ।

सुचंद—[वि] উত্তম । ভাল ।
उत्तम । बढ़िया ।
(स ं पुं) পূৰ্ণিমাৰ জোন ।
पूर्णिमा का चन्द्रमा ।

सुचाल—(सं स्त्री) ভাল চাল-চলন। উত্তম ব্যৱহাৰ।
अच्छी चाल। उत्तम आचरण।

सुचाली—(वि) সদাচাৰী।
सदाचारी।

सुचिमत—(वि) সদাচাৰী।
सदाचारी।

सुचिमन—[बि]পবিত্ৰ মন থকা।
पवित्र मनवाला।

सुचिर—[वि] স্থায়ী। পুৰণি।
स्थायी। पुराना।

सुजन—(सं पुं) সজ্জনলোক। পৰিয়াল।
सज्जन पुरुष। परिवार के लोग।

सुजस—[सं पुं] সুযশ। যশস্যা।
सुयश।

सुजान—(वि) বুধিয়ক। সাৱধান। পাৰগ। সজ্জন।
बुद्धिमान। होशियार। निपुण। सज्जन।
(सं पुं) স্বামী। প্ৰেমিক। ঈশ্বৰ।
पति या प्रेमी। ईश्वर।

सुझाना—[क्रि स] আনক বুজোৱা বা দৃষ্টি গোচৰ কৰা।
दूसरे की सूझ या ध्यानमें लाना।

सुझाव—[सं पुं]দিহা, পৰামৰ্শ।
परामर्श। सुझाने की क्रिया या भाव।

सुटकुन—(सं स्त्री) বাঁহৰ সৰু লাঠি
छोटी पतली छड़ी।

सुटुकना—(क्रि अ) মনে মনে লাহে লাহে যোৱা।
चुपचाप या धीरे से चल देना।

सुठ, सुठि सुठैना, ' ठौन—[वि]
সুন্দৰ। ভাল। বহু।
सुन्दर। अच्छा। बहुत।
(अव्य) সম্পূৰ্ণ। একেবাৰে।
पूरा पूरा। बिलकुल।

सुठार—[वि] সুন্দৰ। হৃষ্ট-পুষ্ট।
सुडौल। सुन्दर।

सुडौल. सुढार—[वि] সুন্দৰ।
सुन्दर।

सुढर—[वि] দয়ালু। সুন্দৰ।
कृपालु। सुडौल।

सुत—(सं पुं) পুত্ৰ।
पुत्र।

সুতহর [হার], সুতার—[সং পুং] মিস্ত্রী। কাৰিগৰ। সুবিধা।
बढ़ई। कारीगर। सुविधा।
(বি) ভাল। শ্ৰেষ্ঠ।
अच्छा। उत्तम।

সুতীক্ষ্ণ, সুতীছন, সুতীছা—(বি) খুব চোকা। তীক্ষ্ণ। এজনা ঋষি।
बहुत तीक्षण या तीखा। एक ऋषि।

সুঁথনা—(সং স্ত্ৰী) আলু বিশেষ। তিৰোতাই পিন্ধা ঢিলা পায়জামা।
पिडालू। स्त्रियो के पहनने का ढीला पायजामा।

সুথৰা—(বি) স্বচ্ছ। পৰিষ্কাৰ।
स्वच्छ। साफ।

সুদৰসন, সুদৰ্শন—(সং পুং) বিষ্ণুৰ চক্ৰ। শিৱ।
विष्णु का चक्र। शिव।
(বি) দেখিবলৈ ধুনীয়া।
देखने में सुन्दर।

সুদি (দী)—[সং স্ত্ৰী] শুক্লপক্ষ।
शुक्ल पक्ष।

সুধ—(সং স্ত্ৰী) স্মৃতি। চেতনা। খবৰ।
स्मृति। चेतना। खबर या हाल। पता।

সুধৰনা—[ক্ৰি অ] বেয়া হোৱা বস্তু ভাল কৰা। দোষযুক্ত বস্তুক ঠিক কৰা।
बिगड़ी हुई या सदोष वस्तु का अच्छे या ठीक रूप में आना।

সুধাংশু, সুধাকৰ, সুধাধৰ, সুধাদীধিতি, সুধাকৰ—[সং পুং] জোন।
चन्द्रमा।

সুধা—(সং স্ত্ৰী) অমৃত। পানী। গাখীৰ। পৃথিৱী।
अमृत। जल। दूध। धरती।

সুধানিধি—(সং পুং) জোন, সাগৰ।
चन्द्रमा। समुद्र।

সুধাৰ—(সং পুং) সংস্কাৰ, কোনো বস্তুক আৰু বেছি ভাল কৰা।
संस्कार। किसी चीज को और अच्छा या उपयोगी बनाना।

সুধাৰক—(সং পুং) সংস্কাৰক।
दोषो या त्रुटियों का सुधार करनेवाला।

সুধাৰনা—(ক্ৰি স) দোষ ত্ৰুটি দূৰ কৰোৱা, গুচোৱা।

दोष या त्रुटि दूर करके ठीक करना।

सुधि—[सं स्त्री] স্মৃতি, চেতনা।
सुध। याद।

सुधी—[सं पुं] বুধিযক, জনাবুজা, বিদ্বান।
बुद्धिमान। समझदार। विद्वान।
(सं स्त्री) তীব্র বুদ্ধি।
अच्छी और तीव्र बुद्धि।

सुन-गुन—[सं स्त्री] অস্পষ্ট চৰ্চ্চা, উৰাবাতৰি, সন্তেদ পোৱা, ভুপোৱা।
वह भेद या पता जो इधर उधर से कोई बात सुनने से लगता हो।

सुनना—(क्रि स) শুনা, কাৰো কথা বা প্ৰাৰ্থনাৰ প্ৰতি লক্ষ্য কৰা।
श्रवण करना। किसी की बात या प्रार्थना पर ध्यान देना। [प्रे०-सुनाना]

सुनवाई, सुनाई—[सं स्त्री] শুনাৰ কাৰ্য্য, অভিযোগ আদিৰ শুনানী।
सुनने की क्रिया या भाव। अभियोग आदि का विचार के लिये सुना जाना।

सुनवैया—(वि) শুনোঁতা।
सुननेवाला।

सुनसान—[वि] নিজান, একান্ত।
निर्जन। एकान्त।
(सं पुं) নীৰৱ।
सन्नाटा।

सुनहरा (ला)—(वि) সোণালী বৰণৰ।
सोने के रंग का।

सुनार—[सं पुं] সোণাৰী।
सोने चाँदी के गहने आदि बनाने वाला। कारीगर।

सुन्न—(वि) স্পন্দনহীনস্ত। শূন্য। নিস্তেজ।
स्पन्दन हीन। निश्चेष्ट। शून्य।

सुपच—[सं पुं] সোনকালে হজম হোৱা, জাতি বিশেষ।
श्वपच। एक जाति।

सुपर्व—[सं पुं] দেৱতা।
देवता।

सुपास—[सं पुं] আৰাম, সুযোগ।
आराम। सुयोग।

सुप्त—(वि) নিদ্ৰিত, টোপনিত পৰি থকা।
निद्रित।

सुप्ति—(सं स्त्री) নিদ্ৰা।
निद्रा ।

सुप्रतिष्ठा—(सं स्त्री) ভালদৰে পোৱা সন্মান বা প্ৰতিষ্ঠা ।
अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत । [वि-सुप्रतिष्ठित]

सुबह—(स स्त्री) ৰাতিপুৱা ।
प्रात:काल ।

सुबास, सुवास—(सं स्त्री) সুগন্ধ ।
सुगंध ।
[सं पुं] ব্ৰহ্মলোক ।
ब्रह्मलोक ।

सुबोध—[वि] জানা-বুজা, সহজে বুজিব পৰা, সহজ বোধ্য ।
समझदार । [विवेचन आदि] जो सब लोग सहज में समझ सकें ।

सुभग—(वि ।) সুন্দৰ, ভাগ্যৱান, মৰমৰ, সুখকৰ ।
सुन्दर । भाग्यवान् । प्यारा । सुखद । (सं स्त्री—सुभगा)

सुभट—(सं पुं) ডাঙৰ যুজাৰু ।
बड़ा योद्धा ।

सुभाइ [ब]—[सं पुं] স্বভাৱ ।
स्वभाव ।
(क्रि वि) সহজ ভাৱেৰে, বৰ সহজে ।
सहज भाव से । बहुत सहज में ।

सुभाव, सुभाय—(सं पुं) স্বভাৱ ।
स्वभाव ।

सुभाषित—(वि) ভাল ভাৱে কোৱা, উপদেশ মূলক উক্তি ।
अच्छे ढंग से कहा हुआ (कथन आदि) । सूक्ति ।

सुभाषी—(वि) ভাল ভাৱে কব পৰা বা কওঁতা ।
अच्छा, सुन्दर, या मीठा बोलने वाला ।

सुभीता—[सं पुं] সুবিধা, সুগমতা, ভাল সময় ।
सुगमता । सहूलियत । सुअवसर ।

सुम—[सं पुं] গৰু-ঘোঁৰাৰ খুৰা ।
गौ, घोड़े आदि का खुर ।

सुमत, सुमति—(सं स्त्री) ভাল বুদ্ধি, সদ্‌বিবেক ।
अच्छी बुद्धि । सद् विवेक ।
(वि) বুধিয়ক ।
बुद्धिमान ।

सुमन [स]-(सं पुं) দেৱতা, ফুল, বিদ্বান ।
देवता । फूल । विद्वान ।

(বি) সহৃদয়, আনন্দমন।
सहृदय। प्रसन्न चित्त।

সুমরন—(সং পুং) স্মৰণ।
स्मरण।

সুমরনা, সুমিরনা—[ক্রি স] মনত পেলোৱা। (নাম) জপা।
स्मरण करना। (नाम) जपना।

সুমরনী—[সং স্ত্রী] জপ কৰিবৰ বাবে ব্যবহৃত মালা। জপমালা।
जपने की छोटी माला।

সুমুখ-(বি) সুন্দৰ মুখৰ।
सुन्दर मुखवाला।
[সং পুং] গণেশ। শিৱ। গৰুড়।
गणेश। शिव। गरुड़।

সুমুখী—[সং স্ত্রী] সুন্দৰ মুখৰ তিৰোতা। ছন্দ বিশেষ।
सुन्दर मुखवाली स्त्री। एक प्रकार का छन्द।

সুমেরু-(সং স্ত্রী) পুৰাণৰ মতে সুবর্ণ গিৰি পর্ব্বত। পৃথিবীৰ উত্তৰ কেন্দ্র বা মূৰ। জপমালৰ মাজৰ মাই গুটি। ছন্দ বিশেষ।
एक कल्पित पर्वत। उत्तरी ध्रुव। जप करने की माला में सबसे ऊपरवाला दाना। एक प्रकार छन्द।

[বি] সকলোতকৈ ভাল।
सबसे अच्छा।

সুযশ—(সং পুং) সুনাম। সুকীৰ্ত্তি।
अच्छी और बहुत कीर्ति या यश।

সুরংগ—(বি) সুন্দৰ বৰণৰ। বিচিত্র ৰং যুক্ত। ৰঙা ৰঙৰ।
अच्छे रंग का। लाल रंग का। रस पूर्ण। सुन्दर।
(সং স্ত্রী) মাটি, পানী বা পর্ব্বতৰ তলে তলে মাটি ভিতৰে কাটি উলিওৱা বাট। সমুদ্র গৰ্ভৰ পৰা ব্যৱহাৰ কৰিব পৰা আধুনিক মাৰণ অস্ত্র।
जमीन खोदकर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। एक आधुनिक यंत्र जिससे समुद्र में शत्रुओं के जहाजों को घायल करवाया जाता है। (अं-माइन)

সুর—[সং পুং] দেৱতা। সূৰ্য্য। স্বৰ। সুৰ। ঋষি।
देवता। सूर्य। ऋषि। स्वर।

সুৰকনা—[ক্রি স] কোনো তৰল বস্তু উশাহৰ লগত নাকেৰে উজাই নিয়া।

नाक या मुँह से धीरे धीरे सुड़-सुड़ शब्द करते हुए (तरल पदार्थ) ऊपर खींचना।

সুৰখাৰ—[স ͦ পু ͦ] চক্ৰবাক। চাকৈ-চকোৱা চৰাই।
चकवा [पक्षी]

সুৰখী— (সং স্ত্ৰী) ঘৰ আদি বান্ধিবৰ বাবে চূৰ্ণ, চিমেণ্ট আদিৰে তৈয়াৰ কৰা মছলা। নিবন্ধ, প্ৰবন্ধ আদিৰ শীৰ্ষক।
• इमारत के काम में आनेवाला एक प्रकार का लाल चूर्ण या मसाला। लाली। लेखों आदि का शीर्षक।

সুৰত—[স ͦ পু ͦ] ৰতিক্ৰিয়া। মৈথুন, সংভোগ। मैथुन।
(সং স্ত্ৰী) স্মৃতি। চেতনা। জ্ঞান।
सुधि। ज्ञान। ध्यान। लगन।

সুৰতি—(স ͦ স্ত্ৰী) ৰতিক্ৰিয়া।
रति। सूरत।

সুৰতী—(স ͦ স্ত্ৰী) ধপাতৰ গুৰি।
तम्बाकू के पत्तों का चूरा।

সুৰধাম, সুৰপুৰ, সুৰলোক—[স ͦ পু ͦ] স্বৰ্গ।
स्वर्ग।

সুৰধামিনী, সুৰধুনী, সুৰ-নদী, সুৰসৰি—[সং স্ত্ৰী] গঙ্গা।
गंगा।

সুৰধেনু—(সং স্ত্ৰী) কামধেনু।
कामधेनु।

সুৰনাথ, সুৰনাহ, সুৰপ [পতি], সুৰপাল [ক], সুৰৰাই, সুৰৰাজ, সুৰৰাব, সুৰসাইঁ, সুৰেন্দ্ৰ, সুৰেশ—(স ͦ পু ͦ) ইন্দ্ৰ।
इन्द्र।

সুৰ-বালা, সুৰবধু, সুৰ-সুন্দৰী—[সং স্ত্ৰী] দেৱতাৰ তিৰোতা।
देवी। अप्सरा। स्वर्ग की सुन्दरी। देवांगना।

সুৰভি—[সং স্ত্ৰী] পৃথিৱী। গাই। কামধেনু। সুৰভি। সুগন্ধ।
पृथ्वी। गौ। कामधेनु। सुगन्ध।
[বি] সুগন্ধিত। সুন্দৰ।
सुगंधित। सुन्दर। उत्तम।

সুৰভিত—[বি] সুগন্ধিত।
सुगंधित।

সুৰমঈ—[বি] পাতল নীলা ৰঙৰ।
हलके नीले रंग का।

সুৰমা—(স ͦ পু ͦ) চকুত লগোৱা [খনিজ পদাৰ্থৰ] কাজল বিশেষ।

एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण आँखो में अंजन की भाँति लगाते हैं।

सुरमीला—(वि) চকুত সুৰমা [কাজল] লগোৱা।
जिसमें सुरमा लगा हो।

सुरम्य—(वि) সুন্দৰ। ৰমণীয়। মনোহৰ।
अत्यन्त रम्य या मनोहर।

सुर सुराना—(क्रि अ) কীট পতঙ্গ আদি বগুৱা বাই যোৱা, সুৰ-সুৰণি উঠা, সাধাৰণ ভাবে খজুৱতি উঠা।
कीडो आदि का रेंगना। हलकी खुजली होना।
[क्रि स] সুৰসুৰণি তোলা।
हलकी खुजली उत्पन्न करना।

सुरसुरी-[सं स्त्री]সাধাৰণ খজুৱতি।
हलकी खुजली।

सुरा-[सं स्त्री] মদ।
मदिरा। शराब।

सुराग—(सं पुं) অপৰাধ, ষড়যন্ত্ৰ আদিৰ গোপন সম্ভেদ, সুন্দৰ ৰাগ।
अपराध, षड़यंत्र आदि का गुप्त रूपसे लगाया हुआ टोह। अच्छा राग।

सुरा-गाय-[सं स्त्री] বনৰীয়া গাই, (ইয়াৰ নেজৰ পৰা চোঁৱৰ কৰা হয়)
चमरी गाय।

सुरानीक—(सं स्त्री) দেৱ-সেনা।
देवताओ की सेना।

सुरापी—[वि] মদাহী।
मद्यप।

सुरारि—[सं पुं] ৰাক্ষস।
राक्षस।

सुरा-सार--[सं पुं] মদৰ সাৰ।
अ-अलकोहल।

सुराही—(सं स्त्री) কলহ।
जल रखने की मिट्टी, धातु आदि का एक प्रसिद्ध पात्र।

सुराहीदार-(वि) কলহৰ আকৃতিৰ।
सुराही के आकार की भाति।

सुरीला—[वि] সুৰদি মাতৰ।
मीठे स्वर वाला।

सुरुचि—(सं स्त्री) সুৰুচি, মাৰ্জিত প্ৰবৃত্তি।
उत्तम रुचि।

सुर्ख—(वि) ৰঙা ৰঙৰ।
रक्त वर्ण का।
[सं पुं] ডাঠ ৰঙা ৰঙ।
गहरा लाल रंग।

सुर्खरू—(वि) প্রতিষ্ঠিত। মুখত লালিমা থকা।
वह जिसके मुँह पर लाली हो।
कांतिवान। प्रतिष्ठित।

सुर्खी—(सं स्त्री) বক্তিম গুণ।
लाली।

सुलगना—(क्रि अ) জলোৱা, ফুউৱা, দুঃখ সন্তাপ আদি বেছি হোৱা।
[लकड़ी आदि का] जलना। अधिक दुःख या संताप से दुःखी होना। [क्रि स—सुलगाना]

सुलच्छन, सुलच्छ—(वि) সুলক্ষণ।
सुलक्षण।

सुलझन—(सं स्त्री) মীমাংসা কৰা, মিট মাট কৰা কাৰ্য্য।
सुलझने की क्रिया या भाव।

सुलझाना—(क्रि अ) জটিলতা দূৰ হোৱা বা কৰা।
उलझन या जटिलता दूर होना या हटना। (क्रि·स सुलझावा

सुलभ—[वि] সহজ লভ্য।
सहजमें प्राप्त होने या मिलनेवाला

सुलह—[सं स्त्री] মিল, সন্ধি, বুজা পৰা।
मेल। संधि। समझौता।

सुलहनामा—[सं पुं] সান্ধ পত্র।
संधि-पत्र।

सुव, सुवन—(सं पुं) পুত্র।
सुत। पुत्र।

सुवटा सुवा—[सं पुं] ভাটৌ।
तोता।

सुवर्ण—(सं पुं) সোণা।
सोना।
[वि] সুন্দৰ ৰঙৰ।
सुंदर वर्ण या रंग का।

सुवासित—[वि] সুগন্ধিত।
सुगंधित।

सुविज्ञ—(वि) সুবিজ্ঞ, বিজ্ঞ।
अच्छा ज्ञाता।

सुवेस—(वि) ভাল সাজ পাৰ, মনোহৰ।
जिसने अच्छा वेश धारण किया हो। मनोहर।

सुशील—[বি] বৰ শান্ত, শিষ্ট, নম্ৰ স্বভাৱৰ।
अच्छे शील या स्वभाववाला।

सुशोभन—(বি) সুন্দৰ, ধুনীয়া, মনোহৰ।
खूब शोभा देनेवाला। सुन्दर।

सुषमा—(सं स्त्री) দেখিবলৈ ধুনীয়া, মনোৰম।
बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता।

सुषुप्त-[वि] গভীৰ নিদ্ৰাত নিদ্ৰিত।
गहरी नींद में सोया हुआ।

सुषुप्ति—(सं स्त्री) গভীৰ টোপনি।
गहरी नींद।

सुषुम्ना-(सं स्त्री) ইডা আৰু পিঙ্গলা নাড়ীৰ মাজত থকা নাড়ী ডাল।
वैद्यक और हठ योग के अनुसार एक नाडी।

सुष्ठु—[বি] ভালে থকা অৱস্থা, সুন্দৰ।
उत्तम। सुन्दर।

सुसंगति—[सं स्त्री] ভাল মানুহৰ সাধুলোকৰ সঙ্গ।
अच्छे आदमियों की संगत।

सुसकना, सुसुकना—(ক্রি অ) উচুপি উচুপি কন্দা।
सिसक सिसक कर रोना।

सुस्त—[বি] উদাস, বলহীন, বেগ হীন, এলেহুৱা, ঢিলা।
उदास। जिसका बल या वेग घट गया हो। आलसी। मन्द। धीमा।

सुस्ताई, सुस्ती—(सं स्त्री) উদাসীনতা, আলস্য, শিথিলতা।
सुस्त होनेका भाव शिथिलता।

सुस्ताना—[ক্রি অ] কাম কৰি ভাগৰি পৰাত বিশ্ৰাম কৰা।
काम करने करते थक कर विश्राम करना।

सुस्वादु—[বি] বৰ সোৱাদ লগা, বৰ মিঠা।
बहुत स्वादिष्ट।

सुहाग, सोहाग—(सं पुं)আয়তী বা সধবা হৈ থকা অৱস্থা, সৌভাগ্য।
सधवा रहनेकी दशा। सौभाग्य।

सुहागरात—(स स्त्री) বিয়াৰ প্ৰথম ৰাতি। দ'ৰা কইনাৰ মিলনৰ প্ৰথম নিশা। ফুল শয্যাৰ ৰাতি।
विवाहके बादकी वह पहली रात

जिसमें वर और वधू का पहले पहल समागम होता है।

सुहागिन (ल), सोहागिन–[सं स्त्री] সৌভাগ্যৱতী, সধবা।
सौभाग्यवती। सधवा।

सुहाना—[क्रि अ] সুশোভিত হোৱা, ভাল লগা।
अच्छा या भला जान पड़ना। सुशोभित होना।

सुहावना, सुहावन—[वि] দেখিবলৈ সুন্দৰ।
देखने में भला और प्रिय जान पड़नेवाला।

सुहृद– (सं पुं) প্ৰিয়, ইষ্ট, বন্ধু।
अच्छे और शुद्ध हृदयवाला मनुष्य। सखा।

सुहेल—[सं पुं] এটি কল্পিত নক্ষত্ৰ।
एक कल्पित तारा।

सुहेलरा, सुहेला—(वि) সুন্দৰ, সুখকৰ, মনোৰম।
सुहावना। सुन्दर। सुख देनेवाला। (सं पुं) মাঙ্গলিক গীত, প্ৰাৰ্থনা, স্তুতি, বন্ধু, ইষ্ট।
मंगल गीत। स्तुति। मित्र। सखा।

सूँ—(अव्य) ৰে।
से।

सूँघना—[क्रि स] সুঙা, খোটা (সাঁপে)
नाकसे गंधका अनुभव करना। (सांप का) काटना।

सूँड़—[सं पुं] শুঁৰ।
हाथीका शुंड।

सूँस [सं स्त्री] গিহু।
एक जल जन्तु

सूअर, सूकर—(सं पुं) গাহৰি।
शूकर [जन्तु]।

सूआ—(सं पुं) ভাটৌ, ডাঙৰ বেজী।
तोता। बडी सूई।

सूई—(स स्त्री) বেজী, চিকিৎসকৰ বেজী যতন (ইন্‌জেকচন-চিৰিঞ্জ) তুলাচনিৰ কাঁটা।
लोहेका पतला उपकरण जिसके छेदमें धागा पिरोकर कपड़ा सीते है। किसी विशेष परिणाम, अंक, दिशा आदिका सूचक तार या काँटा। चिकित्सा क्षेत्रमें एक छोटा उपकरण जिसकी सहायता से कुछ तरल दवाएँ शरीर के

रगों या पुट्ठोंमें पहुंचाई जाती है।
[अं—सीरिंज]

सूक्त—(सं पुं) বৈদিক মন্ত্ৰ সমূহৰ সংগ্ৰহ।
वेदके मंत्रों या ऋचाओं का कोई संग्रह।

सूक्ति—(सं स्त्री) উপদেশ মূলক বাক্য, উক্তি।
उत्तम या सुन्दर उक्ति, पद, वाक्य आदि।

सूक्ष्म—(वि) অতি ক্ষুদ্ৰ, বৰ মিহি।
बहुत छोटा। पतला या थोड़ा।
[सं पुं] সাহিত্যৰ অলঙ্কাৰ বিশেষ।
साहित्य में एक अलंकार।

सूक्ष्मदर्शी—[वि] চোকা দৃষ্টি থকা, সূক্ষ্ম বিচাৰ কৰা, তীক্ষ্ম বুদ্ধি থকা।
बहुत ही सूक्ष्म या छोटी छोटी बातें तक सोच या समझ लेने वाला।

सूक्ष्मदृष्टि—(सं स्त्री) চোকা দৃষ্টি, তীক্ষ্ম দৃষ্টি।
छोटी छोटी बातें सहजमें समझ या देख लेनेवाली दृष्टि।

सूखना—[क्रि अ] ৰোগ, চিন্তাত দুৰ্ব্বল হোৱা, শুকুৱা।
शुष्क होना। रोग, चिन्ता आदि से दुबला होना।

सूखा—(वि) শুকান।
जिसमें जल या उसका कोई अंश न हो या न रह गया हो। जिसमें आर्द्रता या नमी न हो या न रह गयी हो। जिसमें कोमल गुणोंका अभाव हो। शुष्क।
(सं पुं) অনাবৃষ্টি, কফ বিশেষ।
अनावृष्टि। स्थल। एक प्रकार की खांसी।

सूचक—(वि) বোধক, বুজোৱা।
सूचना देनेवाला। बोधक।

सूचना—(सं स्त्री) সূচনা, কোনো কথা উলুকিওৱা, কোনো কথা বা বিষয়ৰ প্ৰস্তাৱনা, উত্থাপন, উল্লেখ।
वह बात जो किसी को किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिये कही जाय। विज्ञापन। दुर्घटना आदिके सम्बन्धमें अदालती या और किसी तरहकी कार्रवाई करने के पूर्व किसी उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल

कहना।

[क्रि स] जनोवा, उद्दुकिओवा।

सूचित करना। बतलाना।

सूचित—(वि) সূচিত, সূচনা, জাননী দিয়া।

जिसकी सूचना दी गयी हो।

सूची- (स स्त्री) বেজি,সূচী-পত্র।

सूई। अनुक्रमणिका।

सूजन—(सं स्त्री) উখহা।

सूजने की क्रिया या भाव।

सूजना—(क्रि अ) উখহি উঠা, ফুলি যোৱা, শোথ বেমাৰ, গোধা বেমাৰ।

शरीरके किसी अंगका पीड़ा लिये हुए फूलना। शोथ होना।

सूजाक—(सं पुं) গুপ্তাঙ্গৰ ৰোগ বিশেষ। গনোৰিয়া

मूत्रेन्द्रिय का एक रोग।

सूझ—[स स्त्री] বুজনি। দৃষ্টি। অদ্ভুত কল্পনা।

सूझनेका भाव। दृष्टि। अनोखा कल्पना।

सूझना—(क्रि अ) দেখা পোৱা। বুজি পোৱা।

दिखाई देना। ध्यानमें आना।

सूझ-बूझ—(सं स्त्री) দূৰদৰ্শিতা আৰু বুদ্ধিমত্তা।

दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता।

सूत—(सं पुं) সূতা। জাতি বিশেষ। চাৰণ। গায়ক। কথা বাচক।

धागा। डोरा। एक जाति। चारण। पौराणिक कथा कहने वाला।

(वि) উৎপন্ন। ভাল।

उत्पन्न। भला।

सूतक—(सं पुं) জন্ম বা মৃত্যুৰ অশৌচ।

घरमें सन्तान होने या किसी के मरनेपर परिवारवालो को लगने वाला अशौच।

सूतिका—[सं स्त्री] পোৱাতী। সদ্য সন্তান জন্ম দিয়া তিৰোতা।

वह स्त्री जिसे अभी हालमें बच्चा पैदा हुआ हो।

सूतिकागार[गृह]-(सं पुं) সূতিকাগৃহ, প্ৰসৱ হোৱা ঘৰ। प्रसव-गृह।

सूत्र—[सं पुं] সূতা। আঁহ। নিয়ম। ব্যৱস্থা। ঘটনা আদিৰ ৩ং। दर्शन,

ব্যাকৰণ আদি শাস্ত্ৰৰ সংক্ষেপ বাক্য। কথাৰ গুং। সূত্ৰ। তাগা। ডোরা। নিয়ম। व्यवस्था घटना आदिका संकेत या सुराग। वह सांकेतिक पद या शब्द जिसमें कोई वस्तु बनाने या कार्य करने के मूल सिद्धान्त, प्रक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो।

सूत्रकार—(सं पुं) সূত্ৰ ৰচনা কৰ্ত্তা। মিস্ত্ৰী। তাঁতী।
सूत्र-रचयिता। बढ़ई। जुलाहा।

सूत्रधर, सूत्रधार-[सं पुं] সূত্ৰধাৰ, মিস্ত্ৰী।
नाट्यशाला का प्रधान और नाटक की व्यवस्था करनेवाला नट। बढ़ई।

सूत्री—(वि) সূত্ৰ সম্বন্ধীয়। সূত্ৰৰ। সূত্ৰ যুক্ত।
सूत्र सम्बन्धी। सूत्र का। सूत्रों से युक्त।

सूदन—(वि) নাশ কৰোঁতা।
विनाश करनेवाला।
[सं पुं] হত্যা বা নাশ কৰা।
वध या विनाश करना।

सूना—[वि] নিৰ্জন। একান্ত।
निर्जन। एकान्त।
(सं पुं) নিজান ঠাই।
निर्जन स्थान।
[क्रि स] প্ৰসৱ কৰা।
प्रसव करना।
(सं स्त्री) ছোৱালী। হত্যা। কচাইখানা।
बेटी। कसाई खाना। हत्या।

सूप—(सं पुं) কুলা। তৰকাৰীৰ জোল। শৰ।
अनाज फटकने की छाज। रसेदार तरकारी। वाण।

सूपकार—(सं पुं) ৰান্ধনি।
रसोइया।

सूपकारिता—(सं स्त्री) ৰন্ধা-বঢ়া কৰা। পাক-শাস্ত্ৰ।
रसोई बनाना। पाक-शास्त्र।

सूफ—[सं पुं] উন।
ऊन।

सूफियाना-[वि] চুফী সকলৰ। চুফী সম্বন্ধীয়।
सूफियों का। सूफी सम्बन्धी।

सूफी—(सं पुं) চুফী। মুছলমানৰ ধাৰ্মিক সম্প্ৰদায়।
मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय।

सूबा—[सं पुं] ৰাজ্য। প্ৰদেশ।
राज्य। प्रदेश।

सूबेदार—[सं पुं] চুবেদাৰ। সৈন্য বিভাগৰ পদ।
किसी प्रान्त या सूबे का शासक। सेना विभाग का एक पद। इस पद पर रहनेवाला अधिकारी।

सूबेदारी—(सं स्त्री) চুবেদাৰৰ পদ বা কাম।
सूबेदार का पद या काम।

सूम—[सं पुं] কৃপণ।
कंजूस।

सूर—(सं पुं) সূৰ্য্য। আকণ। বিদ্বান। বীৰ। অন্ধ।
सूर्य। आक। विद्वान। वीर। अन्धा।

सूरज—(सं पुं) সূৰ্য্য।
सूर्य।

सूरत—[सं स्त्री] ৰূপ। শোভা। আকৃতি। অৱস্থা। কাৰ্য্যসিদ্ধি।
रूप। शोभा। चेहरा। अवस्था। कार्य सिद्धि का मार्ग। युक्ति।

सूरता (ई)—(सं स्त्री) বীৰত্ব।
शूरता। वीरता।

सूरन—(सं पुं) ওল।
जिमी कंद। ओल।

सूरमा—(सं पुं) বীৰ।
वीर।

सूराख—(सं पुं) বিন্ধা।
छेद।

सूरि—(सं पुं) সূৰ্য্য। পূজাৰী। বিদ্বান।
सूर्य। ऋत्विज। बड़ा विद्वान।

सूलना—(क्रि अ क्रि स) জোঙা বস্তুৰে বিন্ধা। শূলত দিয়া। কষ্ট দিয়া।
नुकीली चीजसे छेदना या छिदना कष्ट देना या पीड़ित होना।

सूली—(सं स्त्री) শূল। প্ৰাণদণ্ড।
लोहे का वह नुकीला डण्डा जिस पर बैठाकर प्राचीन काल में अपराधियों को प्राण-दंड दिया जाता था। प्राण-दण्ड।
(सं पुं) শিৱ।
शिव।

सृंगारना—[क्रि स] শৃঙ্গাৰ কৰা।
शृंगार करना।

सृक, सृग—(सं पुं) বৰ্শা। শৰ। বতাহ। মালা।
बरछा। वाण। हवा। माला।

सृजनहार—[सं पुं] সৃষ্টি কৰ্ত্তা
सृष्टि कर्ता।

सेकना-[क्रि स]সেকা। তাপ দিয়া।
आग पर या उसके सामने रखकर साधारण गरमी पहुँचाना।

सेत—[सं स्त्री] কোনো বস্তু পাওঁতে খৰচ কৰিব লগা নোহোৱা।
বিনামূল্যে, বিনাখৰচে।
कुछ खर्च न होना।

सेंत-मेंत-[क्रि वि] বিনামূল্যে।
এনেয়ে। ব্যৰ্থ।
मुफ्त में। व्यर्थ।

सेंदुर, सेंधुर—(सं पुं) সিন্দুৰ।
सिन्दूर।

सेंध—[सं स्त्री] সিন্ধি।
दीवार में किया हुआ वह छेद जिसमें से घुसकर चोर चोरी करते हैं।

सेंधा—[सं पुं] সৈন্ধৱ নিমখ।
सैंधव नामक नमक।

सेहुँड—(सं पुं)কাঁটা থকা জোপোহা গছ বিশেষ। শিজুগছ
थूहर नाम का कँटीला पौधा।

से—[विभ] 'ৰে'। কৰণ আৰু অপাদান কাৰকৰ চিহ্ন।
करण और अपादान कारक का चिह्न।

सेचक--(वि) ছটিয়াওঁতা। সিঁচোতা।
सींचनेवाला।

सेचन—(सं पुं) ছটিওৱা বা সিঁচা কাৰ্য্য। অভিষেক।
सिंचाई। छिड़काव। अभिषेक।

सेज—[स स्त्री] শয্যা। পালেং।
शय्या। पलंग।

सेठ -[सं पुं] মহাজন। সদাগৰ।
बड़ा साहूकार।

सेतु -(सं पुं) সাঁকো। দলং।
সীমা।
पुल। बाँध। सीमा।

सेना—[सं स्त्री] সেনা।
फौज।

सेनादार, सेनाध्यक्ष, सेना-नायक, सेनानी—(सं पुं) সেনাপতি।
सेनापति।

सेनावास—(सं पुं) সৈন্যৰ বাহৰ।
सेना की छावनी।

सेब—[सं पुं] আপেল।
नाशपाती की तरहका एक फल और उसका पेड़।

सेम-[सं स्त्री] লেছেৰা মাহ আৰু ওৰহি জাতীয় ছেঁই।
एक प्रकारकी फली जिसकी तरकारी बनती है।

सेमर, सेमल--(सं पुं) শিমলু গছ।
शाल्मली वृक्ष।

सेराना—[क्रि अ क्रि स]
শীতল কৰা, সমাপ্ত কৰা, বিস-
ৰ্জ্জন দিয়া, তৃপ্ত হোৱা বা কৰা।
ठंडा होना या करना मर जाना।
समाप्त होना या करना। मूर्ति
आदि जलमें प्रवाहित करना।
तृप्त होना या करना।

सेल--[सं पुं] বৰ্শা।
बरछा।

सेव—(सं पुं) বেচনেৰে তৈয়াৰী
খাদ্য বিশেষ, ভুজিয়া, আপেল।
बेसनका एक प्रकारका पकवान।
सेव नामक फल। सेवा।

सेवई-[सं स्त्री] ময়দাৰে তৈয়াৰী
ভুজিয়াৰ দৰে বস্তু। গাখীৰ বা
পানীৰে সিজাই খাব পাৰি।
गूँथे हुए मैदे से बनाये हुए पतले
लच्छे जो दूध या पानीमें पका
कर खाये जाते हैं।

सेवट(।)—(सं पुं) নদীৰ মোহনাত
দম হোৱা মাটি।
नदियों के मुहाने या संगम पर
जमा होनेवाली मिट्टी।

सेवती-(सं स्त्री) বগা গোলাপ।
सफेद गुलाब।

सेवन—[सं पुं] পৰিচৰ্য্যা, শুশ্ৰূষা,
ব্যৱহাৰ, উপাসনা।
परिचर्या। उपासना। इस्तेमाल।
उपभोग।

सेवनीय—(वि) সেব্য, পূজনীয়।
सेवन करने योग्य।

सेवा—(सं स्त्री) প্ৰণাম, নমস্কাৰ,
পৰিচৰ্য্যা, আলপৈচান, নিঃস্বাৰ্থ
ভাব লোক মঙ্গলৰ বাবে কৰা
কাম।
परिचर्या। नौकरी। लोकोपयोगी
विषयों के हितमें किया जानेवाला
स्वार्थ रहित काम। आश्रय।

सेवापंजी-(सं स्त्री) য'ত চাকৰি অথবা
সেৱা কাম সম্বন্ধীয় ৰেকৰ্ড পাতি
ৰখা বহী।
वह पंजी या पुस्तिका जिसमें
सेवा काल की कुछ मुख्य बातें
लिखी जाती है। (अं-सर्विस बुक)

सेवी—(वि) সেৱক।
सेवन करनेवाला। सेवा करने
वाला।

सेव्य—(वि) পূজনীয়, সেব্য।
जिसकी सेवा, पूजा या आराधना

हो या की जाय। सेवन करने योग्य।

(सं पुं) স্বামী, মালিক, গৰাকী।

स्वामी। मालिक।

सेहत—(सं स्त्री) স্বাস্থ্য।

स्वास्थ्य।

सेहरा—(सं पुं) বিয়াৰ সময় পিন্ধা মুকুট।

विवाह का मुकुट या मौर।

(सिर) सेहरा बँधना—(मु०) কোনো কথাত প্ৰশংসা পোৱা।

किसी बातका श्रेय मिलना।

सैं—(विभ०) ৰে।

से।

(অব্য) সমান।

समान।

सैकड़ा—[सं पुं] এশৰ সমূহ, শতকৰা, এশ।

सौ का समूह। एक सौ।

सैकड़ों—(वि) কেবা শ, বহু সংখ্যক।

कई सौ। गिनतीमें बहुत अधिक।

सै—(वि) এশ।

सौ।

(सं स्त्री) সাৰ, শক্তি, বুদ্ধি।

सत्व या सार बल। बुद्धि।

सैकत (तिक)—(वि) বালিময় স্থান। বালিৰে তৈয়াৰী।

रेतीला स्थान। रेत या बालू का बना हुआ (पदार्थ)।

सैद्धान्तिक—[सं पुं] সিদ্ধান্ত জনা লোক।

सिद्धान्त का ज्ञाता।

(वि) সিদ্ধান্ত সম্বন্ধীয়, সিদ্ধান্তৰ, সিদ্ধান্তত আশ্ৰিত।

सिद्धान्त सम्बन्धी। सिद्धान्त का। सिद्धांतके आधार पर आश्रित।

सैन—(सं स्त्री) সংকেত, চিন, পৰিচয়, লক্ষ্য সৈন্য।

संकेत। चिह्न। पहचान। निशानी। सेना।

सैनी—(सं पुं) নাপিত।

हज्जाम।

(सं स्त्री) শ্ৰেণী।

पंक्ति या कतार।

सैयाँ—(सं पुं) পতি, স্বামী।

पति।

सैर—[सं स्त्री] ভ্ৰমণ, মনোমোহা দৃশ্য, তামচা।

मन बहलाने के लिये कहीं जाना या घूमना-फिरना । मौज । मनो-रंजक दृश्य । तमाशा ।

सैल- (सं स्त्री) ভ্ৰমণ, নদীৰ বাঢ়নী পানী, পানীৰ ধাৰ ।

सैर । नद, नदी आदिकी बाढ़ । पानी का बहाव ।

[सं पुं] পৰ্ব্বত ।

शैल । पर्वत ।

सैलानी--(वि) ভ্ৰমণকাৰী ।

सैर सपाटा करने या मनमाना घूमनेवाला ।

सैलाव--(सं पुं) বানপানী ।

पानी की बाढ़ । (वि--सैलाबी)

सों, सौं--(अव्य) দ্বাৰা ।

द्वारा ।

(क्रि वि) সৈতে ।

संग । साथ ।

[वि] যেনে, নিচিনা ।

जैसा । सा ।

[सं स्त्री] শপত ।

सौंह । शपथ ।

सोंटा--[सं पुं] ডাঙৰ লাঠি ।

मोटा डण्डा । (सं स्त्री-सोंटी)

सोंठ--[सं स्त्री] শুকান আদা, শুঁঠ ।

सुखाया हुआ अदरक ।

सोंधा--[वि] সুগন্ধিত, প্ৰথম বৰষুণ হোৱাৰ পিছত মাটিৰ পৰা ওলোৱা, বুট ভজা বা বেচন আদি ভাজিলে ওলোৱা গোন্ধ । মহমহীয়া গোন্ধ ।

सुगंधित । मिट्टी पर वर्षा का पहला पानी पड़ने या भूने हुए चने, बेसन आदिसे निकलनेवाली सुगंध के समान ।

सो--[सर्व] সেই, তেওঁ, সি ।

वह ।

(अव्य) সেয়ে, এতেকে ।

इसलिये । अतः ।

[वि] নিচিনা, যেনে ।

सा । जैसा ।

सोइ [ई]--[सर्व] সেই ।

वही ।

[अव्य] তেনে ।

सो ।

सोऊ--(वि) নিদ্ৰিত ।

सोनेवाला ।

(सर्व) তেৱোঁ ।

वह भी ।

सोक, सोग—(सं पुं) শোক।
शोक। मातम।

सोखना—(क्रि स) পানী অথবা জেকা শুহি নিয়া, শোষণ কৰা।
जल या नमी चूसना। शोषण करना।

सोखू—(वि) শুহি নিওঁতা।
सोखनेवाला।

सोख्ता—[स पुं] ব্লটিং কাগজ।
स्याही सोखनेवाला कागज।

सोच—[सं पुं] চিন্তা, দুঃখ, অনুতাপ।
चिन्ता। दु:ख। पश्चाताप।

सोचना—(क्रि स) চিন্তা কৰা, দুঃখ কৰা।
मनमें विचार करना। चिन्ता करना। खेद या दु:ख करना। (प्रे० —सोचाना)

सोच-विचार—(सं पुं) ভবা, চিন্তা।
सोचने और समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।

सोझ (I)—[वि] পোন, চিধা।
सीधा।

सोत, सोता—[सं पुं] নিজৰা। উপনদী। খাল।
झरना। नदीकी शाखा। नहर।

सोती—(सं स्त्री)পানীৰ ক্ষুদ্ৰ প্ৰবাহ।
पानी का छोटा सोता।

सोधना—(क्रि स) শুদ্ধ কৰা। শুদ্ধতা পৰীক্ষা কৰা। শোধন কৰা। বিচৰা। ধাৰ পৰিশোধ কৰা। স্থিৰ কৰা।
शुद्ध करना। शुद्धताकी जाँचकी परीक्षा करना। दोष या भूल दूर करना। ढूँढना। ऋण चुकाना। निश्चित करना। (प्रे०-सोधाना)

सोन-चिरी—(सं स्त्री) নটী।
नटी।

सोन-जूही सोनजाइ, सोनजुही—[सं स्त्री] যুটী-জঁাইৰ দৰে ফুল। সোণালী ৰঙৰ সুগন্ধি ফুল।
स्वर्ण यूथिका। पीली चमेली।

सोनहार—[सं पुं] চৰাই বিশেষ (সোণালী ৰঙৰ)।
एक प्रकार की चिड़िया।

सोना—[सं पुं] সোণ। খুব ধুনীয়া আৰু বহুমূলীয়া বস্তু।
स्वर्ण। बहुत सुन्दर या बहुमूल्य पदार्थ।
(क्रि अ) শয়ন। শোৱা।
नींद लेना। शयन।

सोनार, सोनी—[सं पुं] সোণাৰী।
स्वर्णकार। सुनार।

सोपान—(सं पुं) জখলা।
सीढ़ी। जीना।

सोभ, सोभा—[सं स्त्री] শোভা।
शोभा।

सोभना—[क्रि अ] ভূষিত হোৱা।
शोभा देना।

सोम—[सं पुं] প্ৰাচীন বৈদিক দেৱতা। জোন। সোমবাৰ। অমৃত। পানী। লতা বিশেষ।
एक प्राचीन वैदिक देवता। चन्द्रमा। सोमवार। अमृत। जल। एक प्रकार की लता।

सोमपायी—(वि) সোমলতাৰ ৰস পান কৰোঁতা।
सोम लताका रस पीनेवाला।

सोमवंश—(वि) চন্দ্ৰ বংশ।
चन्द्र वंश।

सोय—(सर्व) সেই।
वही। सो।

सोर-[स स्त्री] গছৰ মুঢ়া বা শিপা।
पेड़ोंकी जड़।
[सं पुं] গোলমাল।
शोर। कोलाहल।

सोरठा—(सं पुं) ছন্দ বিশেষ।
एक प्रकार का छंद।

सोलह—(वि) ষোল।

सोला—(सं पुं) কুঁহিলা। কাণ-কুল্লা বা কুল্লা—ইয়াৰে টুপি আদি তৈয়াৰ কৰা হয়।
एक प्रकार का झाड़ जिसके छिलके से टोप बनता है।

सोल्लास—(क्रि वि) উল্লাসেৰে।
उल्लास पूर्वक।

सोवैया—[वि] শুই থকা লোক।
सोनेवाला।

सोहन—(वि) সুন্দৰ। শোভনীয়।
सुन्दर। सुहावना।
[सं पुं] সুন্দৰ পুৰুষ। নায়ক। চৰাই পক্ষী।
सुन्दर पुरुष। नायक। एक प्रकार का पक्षी।

सोहना—(क्रि अ) ভূষিত হোৱা। ৰুচিকৰ হোৱা।
शोभित होना। रुचिकर लगना।
(वि) সুন্দৰ।
सुन्दर।

सोहनी—[सं स्त्री] বাঢ়নি। ৰাগিণী বিশেষ।
झाड़ू। एक प्रकारकी रागिनी।
(वि स्त्री) सুন্দৰ।
सुन्दर।

सोहबत— (सं स्त्री) সংগতি। স্ত্ৰী প্ৰসংগ। ৰতি ক্ৰিয়া। মৈথুন।
संग-साथ। संगत। स्त्री प्रसंग।
संभोग।

सोहर—(सं पुं) ল'ৰা জন্ম হলে গোৱা লোকগীত।
बच्चा पैदा होनेके समय घरमें गाये जानेवाले गीत।

सोंहि—[क्रि वि] শপত।
सौह। शपथ।

सोंहो, सोहैं— (क्रि वि) সমুখত।
सामने।

सौंधा—[वि] ভাল। উত্তম। উচিত। সস্তা।
अच्छा। उत्तम। वाजिब।
सस्ता। (सं स्त्री—सौंधाई)

सौंचना—(क्रि स) শৌচ কৰা।
शौच कार्य करना।

सौंदना—[क्रि स] সনা। মাটিৰে ময়লা কৰা।
सानना। मिट्टी आदिके योग से गंदा या मैला करना।

सौंधना—(क्रि स) সুগন্ধিত কৰা।
सुगंधित करना।

सौंधा—[वि] ভাল লগা। মনোহৰ, উচিত। মহমহীয়া গোন্ধ থকা।
सोंधा। अच्छा लगनेवाला। मनोहर। उचित।
(सं पुं) সুগন্ধ।
सुगंध।

सौंपना—(क्रि स) সমৰ্পণ কৰা।
समर्पण या सुपर्द करना।

सौंफ—(सं स्त्री) গুৱা নৰি।
एक छोटा पौधा जिसके बीज दवा और मसाले के काममें आते हैं।

सौंरना—(क्रि अ) ভাল কৰা।
সজ্জিত কৰা। সজোৱা।
सँवारा जाना। अच्छा या ठीक किया जाना।
(क्रि स) সজোৱা। স্মৰণ কৰা।
सँवारना। स्मरण या याद करना।

सौंह, सौंहँ—[सं स्त्री] শপত।
शपथ। कसम।
(सं पुं) সমুখীন
सामना।

[क्रि वि] সমুখত।
सामने।

सौंहें—[क्रि वि] সমুখত।
सामने।

सौ—(वि) শ।
(अव्य) নিচিনা।
सा (समान)

सौकर्य—(सं पुं) সুবিধা। সুগম।
सुकरता। सुभीता।

सौकुमार्य—(सं पुं) সুকুমাৰতা।
যৌবন।
सुकुमारता। जवानी।

सौख्य—(सं पुं) সুখৰ ভাব।
বিশ্ৰাম। আৰাম।
सुख का भाव। आराम।

सौगंद (ध)—(सं स्त्री) শপত।
शपथ।

सौगात—[सं स्त्री] উপহাৰ।
भेंट। उपहार।

सौजन्य-(सं पुं) ভদ্ৰতা। সৌজন্য।
সদাচৰণ।
संज्जनता।

सौत, सौतन (तिन)—(सं स्त्री)
সতিনী।
सपत्नी।

सौतेला-(वि) সতিনীৰ পৰা ওপজা
সতীয়া। সতিনীৰ পক্ষৰে
সম্বন্ধিত।
सौतसे उत्पन्न। जिसका सम्बन्ध
किसी सौतके पक्षसे हो।

सौदा-[सं पुं] কিনা-বেচা কাৰ্য্য।
खरीदने और बेंचने की चीज।
खरीदनें बेचने या लेन देन की
बात-चीन या व्यवहार।
(सं स्त्री) পাগলামী।
पागलपन।

सौदागर- (सं पुं) সদাগৰ।
বেপাৰী।
व्यापारी।

सौदागरी-(सं स्त्री) ব্যবসায়। বনিজ
व्यापार

सौदामनी, सौदामिनी-(सं स्त्री)
বিজুলী।
बिजली।

सौदेबाजी—(सं स्त्री) খুব বুজি লৈ
লেন-দেন সম্পৰ্কে কথা-বতৰা
হোৱা।
खूब समझ बूझकर लेन देन या
व्यवहारके सम्बन्धमें की जाने
वाली बात चीत।

সৌধ—(স' পু') প্ৰাসাদ। মহল ৰূপ প্ৰাসাদ। চাঁদী।

সৌম্য—[বি] সোম ৰসেৰে সম্বন্ধিত। শান্ত। নম্ৰ। সুশীল। সুন্দৰ। সুদৃশ্য।

सोम या उसके रससे सम्बन्ध रखनेवाला। ठंढा और शांत। नम्र और सुशील। सुन्दर।

[স' পু'] বুধ। সোমযজ্ঞ। আঘোন মাহ।

बुध। सोमयज्ञ। अगहन का महीना।

সৌৰ—[বি] সূৰ্য্য সম্বন্ধায়। সূৰ্য্যৰ। সূৰ্য্যৰ মণ্ডল বা প্ৰভাৱৰ ভিতৰ। সূৰ্য্যৰ গতি অনুসাৰে গণনা কৰা।

सूर्य सम्बन्धी। सूर्यका। सूर्यके प्रभाव से होनेवाला।

(স' পু') সূৰ্য্যৰ উপাসক। সূৰ্য্য বংশী। শনি গ্ৰহ।

सूर्यका उपासक। सूर्यवंशी। शनि ग्रह।

সৌৰভ—(স' পু') ভাল গোন্ধ। সুগন্ধ। আম।

सुगंध। खुशबू। आम।

সৌৰী—(স' স্ত্ৰী) সূতিকা গ্ৰহ। প্ৰসৱৰ ঘৰ। মাছ বিশেষ।

सूतिका गार। जच्चा खाना। एक प्रकारकी मछली।

সৌৱৰ্ণ—(বি) সোণৰ।

सोनेका।

[স' পু'] সোণ।

सोना।

সৌষ্ঠৱ--[স' পু']সৌষ্ঠৱ। সৌন্দৰ্য্য।

'सुष्ठु' होनेका भाव। सौन्दर्य।

सौहार्द (र्द)—(सं पु) বন্ধুত্ব। আন্তৰীকতা।

'सुहृद' होनेका भाव। सज्जनता। मित्रता।

स्कंद—(স পু') ওলোৱা। নাশ। কাৰ্ত্তিক। শৰীৰ। পুৰাণ বিশেষ।

निकलना या बाहर आना। विनाश। कार्तिकेय। शरीर। एक पुराण।

स्कंध—[স' পু']কান্ধ। বাহুৰ ওপৰ আৰু ডিঙিৰ তলভাগ। শাখা। সমূহ। ভঁড়াল। কিতাপৰ অধ্যায়। যুদ্ধ। শৰীৰ।

कंधा। वृक्षके तनेका ऊपरी भाग। शाखा। समूह। भंडार। ग्रंथका विभाग। शरीर। युद्ध।

স্কংধাবাৰ—[সং পু] ৰজাৰ শিবিৰ। সৈন্যৰ বাহৰ। ছাওনী। সৈন্য।
राजाका शिविर। सेनाका पड़ाव। छावनी। सेना।

স্খলন—(সং পুং) সৰি পৰা। লৰা বা পিছলা কাৰ্য্য। পতন।
चीरना फाड़ना। हत्या गिराना।

স্খলিত—(বি) পতিত। পিছলি পৰা। বিচলিত।
गिरा हुआ। विचलित।

স্তম্ভ—[সং পুং] ওখ ডাঙৰ খুটা। অনুষ্ঠান, কাৰ্য্য আদিৰ মূল জন। আলোচনীৰ বিভাগ। গা-গছ। জড়তা। লৰচৰ কৰিব নোৱাৰা অৱস্থা। তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰেৰে কোনো শক্তি ৰোধ কৰা কাৰ্য্য।
खंभा। संस्था कार्य सिद्धान्त आदिका आधार। पत्र पत्रिकाओं का विशेष विभाग। पेड़का तना। अंगोंका शिथिल हो जाना। तंत्र में किसी शक्तिको रोकनेवाला प्रयोग।

স্তম্ভিত—(বি) নিস্তব্ধ। বন্ধ কৰা। আচৰিত হোৱা।
निःस्तब्ध। रुका या रोका हुआ। चकित।

স্থাৱৰ—[বি]আচল। একে ঠাইতে বহু কাল থকা। স্থানান্তৰিত কৰিব নোৱাৰা।
अचल। जो अपने स्थानसे न हट सके।

স্থাৱৰ-সংপত্তি—(সং স্ত্ৰী) অচল সম্পত্তি।
अचल। संपत्ति।

স্থিতপ্ৰজ্ঞ-(বি) স্থিত প্ৰজ্ঞ। বিষয় বাসনা এৰি আত্মাৰ চিন্তাতে মগ্ন। যি সুখত সুখ বোধ নকৰে আৰু দুখত দুখী নহয়।
जिसकी विवेक बुद्धि स्थिर हो।

স্থিৰ-স্থাপক—(বি) টানি, ভিৰাই বা মোকোটাই এৰি দিলে পুনৰ আগৰ অৱস্থা বা আকাৰ পোৱা গুণ থকা।
लचीला।

স্থিৰ-বুদ্ধি—(সং স্ত্ৰী) বুদ্ধি যাৰ স্থিৰ।
जिसकी बुद्धि स्थिर हो।

স্থূল—[বি]শকত। গা-ডাঙৰ, পুষ্ট। কম বুদ্ধিৰ লোক। ওপৰে ওপৰে হিচাব কৰি অনুমান কৰা।
मोटा। मोटा हिसाबसे अनुमान किया हुआ। मंदबुद्धि।

स्थूलता—[सं स्त्री] স্থূলতা।
मोटाई।

स्नात—[वि] স্নান কৰি উঠা।
नहाया हुआ।

स्नातक—[स पुं] স্নাতক। বিদ্যা শিক্ষাৰ শেষত যি ব্ৰহ্মচৰ্য্য সমাপন স্বৰূপ স্নান কৰিছে' কোনো বিশ্ববিদ্যালয়ৰ উপাধি পৰীক্ষা উত্তীৰ্ণ লোক।
वह जिसने विद्याध्ययन यां ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर लिया हो। वह जिसने किसी विश्व विद्यालय की कोई परीक्षा पासकी हो। (अं—ग्रेजुएट)

स्नान—(सं पुं।) গা ধোৱা।
नहाना।

स्निग्ध—[वि] সুখজনক। মিহি। পিছল। টিকুটিকীয়া। তেল থকা।
जिसमें स्नेह या प्रेम हो। जिसमें तेल हो या लगा हो।

स्नेह—[सं पुं] স্নেহ। মৰম। তেল আদি।
प्यार। तेल आदि चिकने पदार्थ।

स्तोत्र—[सं पुं] স্তুতি বাচক সংস্কৃত শ্লোক।
स्तुति।

स्तोम—[सं पुं] স্তুতি, সমূহ।
स्तुति। समूह। राशि।

स्त्री प्रसंग, स्त्री समागम - (सं पुं) সম্ভোগ, ৰতি ক্ৰিয়া, মৈথুন।
संभोग। मैथुन।

स्त्रैण—[वि] স্ত্ৰী প্ৰকৃতিৰ, তিৰোতা সেৰুৱা, তিৰোতাত অনুৰক্ত।
स्त्री सम्बन्धी स्त्रियों का। स्त्रियों का-सा। स्त्री या पत्नी के वश में रहनेवाला।

स्थ - [प्रत्य०] স্থিত, থকা, লীন।
स्थित, विद्यमान। लीन।

स्थगन - (सं पुं) স্থগিত ৰখা কাৰ্য্য।
कुछ समय तक स्थगित करना।

स्थल-जल-डमरू-मध्य—(सं पुं) যোজক।
दो बडे भू-खंडों को जोड़नेवाला जल से घिरा लम्बा संकरा भू-भाग।

स्थली—(सं स्त्री) ঠাই, মাটি।
जगह। जमीन।

स्थाणु—[সং পুং] স্তম্ভ, শাখাহীন বৃক্ষ, শিৱ।
खम्भा। ठूँठ। शिव।
(বি) অচল।
अचल।

स्थानापन्न—(সং পুং) প্ৰতিনিধিত্ব কৰা, আনৰ সলনি কাম কৰা, স্থানাপন্ন।
किसीके न रहने पर उसके स्थान पर बैठने या काम करनेवाला।

स्थापत्य—(সং পুং) ঘৰ আদি সজা কাম বা বিদ্যা স্থাপত্য।
वास्तु शास्त्र।

स्थायी भाव—(সং স্ত্ৰী) মানুহৰ মনৰ চিৰন্তন ভাৱ, সাহিত্যত ৰস উৎপত্তিৰ মূল। স্থায়ী-ভাৱ।
साहित्य में वे मूल तत्व या भाव जो मूलत: मानव मन में सदा निहित रहते हैं।

स्तन-- (সং পুং) তিৰোতাৰ পিয়াহ, ছুচু।
स्त्रियों या पशुओं का वह अंग जिसमे दूध रहता है।

स्तनन—[সং পুং] মেঘে গৰজা, আৰ্ত্তনাদ।
बादल का गरजना। आर्त्तनाद।

स्तनित—[সং পুং] মেঘৰ গৰজনি।
बादल की गरज।
(বি) গৰজনিৰ শব্দ।
गरजता या शब्द करता हुआ।

स्तन्य—(বি) স্তন সম্বন্ধীয়।
स्तन सम्बन्धी।
[সং পুং] গাখীৰ, পিয়াহ।
दूध।

स्तब्ध—(বি) স্তম্ভিত, দৃঢ়, মন্দ, লৰচৰ কৰিব নোৱাৰা।
स्तंभित। दृढ़। मन्द।

स्तब्धता—[সং স্ত্ৰী] তবধ, জড়তা, নীৰৱতা, স্তব্ধতা।
स्तब्ध होने की दशा या भाव।
जड़ता। भौंचक्कापन। सन्नाटा।

स्तरी-भूत—[বি] তৰপীয়া, তৰপ তৰপ হোৱা।
जो जमकर स्तर के रूपमें हो गया हो।

स्तव—(সং পুং) স্তুতি, প্ৰশংসা, প্ৰাৰ্থনা।
स्तुति। प्रशंसा।

स्तवन—(সং পুং) স্তুতি অথবা প্ৰশংসা কৰা।
स्तुति या प्रशंसा करना।

स्तिमित—[বি] নিশ্চল, ভিজা, তিতা।
निश्चल। गीला। तर।

स्तुत्य—[বি] প্ৰশংসনীয়।
प्रशंसनीय।

स्तेन—(सं पुं) চোৰ, চুৰি।
चोर। चोरी।

स्तेय, स्तैन्य—(सं पुं) চুৰি কাৰ্য্য।
चोरी।

स्तोता—[वि] স্তুতি কৰোঁতা।
स्तुति करनेवाला।

स्नेही—[वि] মৰমীয়াল, স্নেহশীল।
प्रेमी।

स्पंद—(सं पुं) স্পন্দন, কম্পন।
धीरे धीरे काँपना या हिलना।

स्पंदित—[वि] কম্পিত, কম্পায়মান, স্পন্দিত।
हिलता, काँपता या फड़कता हुआ।

स्पर्द्धा—(सं स्त्री) স্পৰ্দ্ধা, দুঃসাহস, ববাই।
होड़। सामर्थ्य या योग्यता से अधिक करने या पानेकी इच्छा।

स्पर्श—(सं पुं) স্পৰ্শ, ছোৱা কাৰ্য্য।
सटना या छूना।

स्पष्टतया—[क्रि वि] স্পষ্ট ভাবে।
सफासाफ।

स्पृहनीय—(वि) স্পৃহনীয়,বাঞ্ছনীয়, পাবলৈ ইচ্ছা কৰিবলগীয়া। ভাল।
जिसकी इच्छा या कामना करना उचित या योग्य हो। बहुत अच्छा।

स्पृहा—(स' स्त्री) বাঞ্ছা. হাবিয়াহ, পাবলৈ ইচ্ছা, স্পৃহা।
इच्छा। कामना।

स्फटिक—[स' पुं] ফটিক, এবিধ বগা চকমকীয়া শিল।
एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर।

स्फीत—(वि) উখহা, ফিকা, ফুলি উঠা, ওফন্দি উঠা, সমৃদ্ধ।
बढ़ा या फूला हुआ। समृद्ध।

स्फीति—(सं स्त्री) অস্বাভাবিক ৰূপে ফুলি উঠা।
अस्वाभाविक रूपसे बढ़ना या फूलना।

स्फुट—[वि] প্ৰস্ফুটিত, বিকশিত, খুটুৰা, দেখিবলৈ পোৱা।
दिखाई देनेवाला। विकसित। फुटकर।

स्फुटित—[वि] ফুলা, মেল খোৱা।
खिला हुआ।

स्फुलिंग—(सं पुं) ফিৰিঙতি।
चिनगारी।

स्फोट[न]—(सं पुं) ফুটা। গাঁৰ এবিধ ডাঙৰ খহু বা কোঁহোবা।
फूटना। फोड़ा, फुन्सी आदि।

स्मर—(सं पुं) কামদেৱ, স্মৃতি, স্মৰণ, প্ৰেম, সংগীতৰ ৰাগ বিশেষ।
कामदेव। स्मृति। स्मरण। प्रेम। एक राग।

स्मरण-पत्र, स्मृतिपत्र—(सं पुं) স্মৰণ পত্ৰ, কোনো কথা পুনৰ সোঁৱৰাই দিয়া চিঠি।
किसी को कोई बात याद दिलाने के लिये लिखा जानेवाला पत्र।

स्मरणीय—(वि) সুঁৱৰিব বা মনত ৰাখিবলগীয়া।
याद रखने योग्य।

स्मारक—[वि] সোঁৱৰণ, স্মৰণীয়।
स्मरण करनेवाला।
(सं पुं) সোঁৱৰণ, স্মৰণ।
यादगार।

स्मार्त—(सं पुं) স্মৃতি শাস্ত্ৰৰ পন্থ অনুশৰণ কৰোঁতা।
वह जो स्मृतियों का अनुयायी हो।
[वि] স্মৃতি শাস্ত্ৰ সম্বন্ধীয়।
स्मृति सम्बन्धी। स्मृति का।

स्मित—[सं पुं] মিচিকীয়া হাঁহি।
धीमी हँसी। मुस्कुराहट।
[सं स्त्री-स्मिति]
(वि) ফুলি উঠা, হাঁহি থকা।
खिला हुआ। मुस्कुराता हुआ।

स्मृति-(सं स्त्री)স্মৰণ, সোঁৱৰণ, পূৰ্ব্বৰাগ (প্ৰেমৰ) ৰ এটি অৱস্থা, ধৰ্ম্ম-সংহিতা, আচাৰ আদিৰ লগত সম্বন্ধ ৰখা হিন্দুৰ ব্যৱস্থা শাস্ত্ৰ। স্মৃতি-শাস্ত্ৰ।
याद। साहित्य में पूर्वराग की दस दशाओं में से एक। धर्म, दर्शन आचार-व्यवहार आदि से सम्बन्ध रखनेवाले हिन्दू-धर्म-शास्त्र।

स्यंदन—(स पुं) ৰথ।
रथ।

स्यात—(अव्य) সম্ভৱতঃ কদাচিত।
कदाचित 'शायद।

स्याना—(वि) চতুৰ, সাৱধান, সাবালক।

चतुर। होशियार। चालाक। बालिका।

(स पुं) वृद्ध, ওজা, চিকিৎসক। बड़ा बूढ़ा। ओझा। चिकित्सक।

स्यापा-[सं पुं] পঞ্জাব আদি ৰাজ্যত কাৰোবাৰ মৃত্যুত তিৰোতা-বিলাকে একে লগ লাগি কিছু-দিনলৈ শোক প্ৰকাশ কৰা প্ৰথা। मरे हुए व्यक्तिके शोकमें स्त्रियों का एकत्र होकर कुछ दिनों तक शोक प्रकट करना।

स्याह—(वि) কলা। काला।

[सं पुं]ঘোঁৰাৰ জাতিবিশেষ। घोड़ेकी एक जाति।

स्याही—(सं स्त्री) চিয়াঁহী, মহী। এলান্ধু। रोशनाई। कालापन। कालिख।

स्यों, स्यौं, स्यौ—(अव्य) সৈতে, ওচৰত। साथ। पास।

स्रवना—(क्रि अ-क्रि स) বৈ যোৱা, চিৰ চিৰ কৈ বৈ থকা। পৰা বা পেলোৱা। बहना या बहाना। टपकना या टपकाना। गिरना या गिराना।

स्रष्टा-[सं पुं] সৃষ্টি কৰ্ত্তা, ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু, শিব। सृष्टि बनानेवाले। ब्रह्मा। विष्णु। शिव।

(त्रि) সৃষ্টি কৰোঁতা। कोई चीज बनानेवाले।

स्रस्त-(वि) চ্যুত, শিথিল, পতিত, ওলমি থকা। अपने स्थान से गिरा हुआ। शिथिल।

स्राव-[सं पुं] ক্ষৰণ, বৈ পৰা, গৰ্ভপাত, স্ৰাৱ। क्षरण। गर्भ-पात। निर्यास।

स्रुवा—(सं स्त्री) স্ৰুৱ,স্ৰুচৰ তলত ৰাখি হোমৰ জুইত ঘিউ ঢলা কোষাৰ আকৃতিৰ দীঘলীয়া হেতা। আহুতি 'দয়া হেতা। लकड़ी की वह कलछी जिससे हवन के समय अग्निमें घी आदि की आहुति दी जाती है।

स्रोत—(सं पुं) সোঁত, গতি, নদী, নিজৰা, যাৰ সোঁত আছে, বাষ্পীয় বা জুলীয়া বস্তুৰ গতি। पानीका बहाव। नदी। झरना। वह आधार जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती रही।

স্রোতস্বিনী—(স ং স্ত্ৰী) নদী।
नदी।

স্ব—(বি) নিজৰ।
अपना।

স্বকীয়—(বি) নিজৰ।
अपना। निजका।

স্বকীয়া—(স ং স্ত্ৰী) পৰ পুৰুষৰ প্ৰতি আসক্ত নোহোৱা নায়িকা (সাহিত্য)।
साहित्यमें वह नायिका जो पर पुरुषका ध्यान न करती हो।

স্বগত-(ক্রি বি) স্বগত [নিজে]।
आपही आप। (कुछ कहना)।
[বি] আত্মগত, মনে মনে।
आत्मगत। मनोगत।

স্বচ্ছন্দ—(বি) স্বাধীন, অবাধ।
स्वाधीन। निरंकुश।
(ক্রি বি) কোনো নভবা নিচিন্তাকৈ।
बिना किसी सोच या विचार के।

স্বচ্ছ—(বি) নির্মল, জলকলীয়া, শুদ্ধ।
निर्मल। उज्वल। शुद्ध। (स ं स्त्री) स्वच्छता)।

স্বজন—[স ং পু ং] নিজৰ লগা ভগা মানুহ, সম্বন্ধীয় লোক বা আত্মীয় লোক।
अपने परिवारके लोग। संबंधी।

স্বতন্ত্ৰ—[বি] স্বাধীন, বেলেগ, পৃথক। নিয়ম আদিৰ পৰা বন্ধন হীন।
स्वाधीन। अलग। नियमों आदि के बन्धन से रहित।

স্বতন্ত্ৰতা—(স ং স্ত্ৰী) স্বাধীনতা, স্বতন্ত্ৰতা।
स्वाधीनता। आजादी।

স্বতঃ-(অব্য) আপোনা-আপুনি, স্বয়ং, নিজে নিজে।
आपही आप। खुद।

স্বতঃসিদ্ধ, স্বয়ংসিদ্ধ-(বি) আপোনা আপুনি প্ৰমাণ হোৱা, আপুনি সিদ্ধ হোৱা, স্বতঃসিদ্ধ।
जो किसी तर्क या प्रमाणके बिना आपही ठीक और सिद्ध हो। सर्व-मान्य।

স্বত্ব-(স ং পু ং) অধিকাৰ, স্বাৰ্থ, স্বত্ব।
'स्व' का भाव। अधिकार। हक। स्वार्थ।

स्वत्वाधिकारी–[সং পুং] স্বত্ব পোৱা বা থকা লোক, গৰাকী, স্বত্বাধিকাৰী।
वह जिसे स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो। मालिक।

स्वधा—[সং স্ত্রী] পিতৃ পুৰুষ সকলৰ উদ্দেশ্যে দিয়া আহাৰ।
पितरोंके उद्देश्यसे दिया जाने वाला भोजन।
(অব্য) স্বাহা, হোম বা যজ্ঞৰ সময়ত প্ৰয়োগ কৰা মন্ত্ৰ, অগ্নি দেৱতাৰ পত্নী।
एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञमें हवि देनेके समय होता है।

स्वन—(সং পুং) শব্দ, ধ্বনি।
शब्द। आवाज।

स्वप्निल—(বি) শুই থকা, সপোন দেখি থকা, সপোন সম্বন্ধীয়।
सोया हुआ। स्वप्न देखता हुआ। स्वप्न सम्बन्धी।

स्वयं–(অব্য)স্বয়ং, নিজে, আপোনা-আপুনি। आप। आपसे आप।

स्वयंपाकी—(সং পুং) নিজ হাতে ৰান্ধি বাঢ়ি খোৱা লোক।
जो स्वयं भोजन बनाता हो।

स्वयंभव, स्वयंभू(व)—(সং পুং) স্বয়ং বা আপোনা আপুনি জন্ম হোৱা, কামদেৱ, শিৱ।
ब्रह्मा। कामदेव। शिव।
[বি] লোকে সৃজন বা উৎপন্ন নকৰা, নিজে নিজে হোৱা জন্ম।
आपसे आप कुछ बन जानेवाला।

स्वयंवर—(সং পুং) স্বয়ম্বৰ, আগৰ দিনত কন্যাই বৰ বাছি লোৱা প্ৰথা।
प्राचीन भारत की एक प्रथा जिसमें कन्या अपने लिये आपही वर चुन लेती थी।

स्वयंवरा—(সং স্ত্রী) নিজৰ স্বামীৰ বাছি লোৱা কন্যা।
अपना पति आपही चुननेवाली कुमारी या स्त्री।

स्वयमेव–(ক্রি বি)নীজে, স্বয়মেৱ।
आपही।

स्वर-ग्राम—(সং পুং) সঙ্গীতৰ মূৰ্চ্ছনা তাক তানৰ মাজৰ পৰ্দ্দা বা বেৰ, স্বৰ-মলা। স্বৰ-গ্ৰাম।
संगीतमें सातो स्वरों का समूह। सप्तक।

स्वरित—[বি] স্বৰ বা ধ্বনি থকা।
जिसमें स्वर होता हो।

स्वरोदय—[सं पुं] স্বৰ অথবা উশাহ- নিশাহৰ দ্বাৰা শুভাশুভ জনা বিদ্যা।
स्वरों या श्वासो द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जानने की विद्या।

स्वर्गारोहण—(सं पुं) স্বৰ্গলৈ গমন কৰা, মৃত্যু।
स्वर्गकी ओर चढ़ना या जाना। मरना

स्वर्गिক—(বি) স্বৰ্গীয়।
स्वर्गीय।

स्वर्ण [सं पुं] সোণ।
सोना।

स्वर्ण-युग-[सं पुं] শ্ৰেষ্ঠ কাল। স্বৰ্ণ-যুগ।
सबसे अच्छा या श्रेष्ठ समय।

स्वर्णिम—(वि) সোণালী। সোণালী বৰণ।
सोने के रंग का। सुनहला।

स्वल्प—[वि] অলপ।
बहुत थोड़ा।

स्वस्ति—[অব্যয়] কল্যাণ বা মঙ্গল হওক (আশীৰ্ব্বাদ)।
कल्याण हो। (आशीर्वाद)
(सं स्त्री) কল্যাণ।
कल्याण।

स्वस्तिक—[सं पुं] মঙ্গল চিহ্ন।
एक प्रकार का प्राचीन मंगल चिह्न।

स्वस्तिवाचन—(सं पुं) মঙ্গলাচৰণ, পূজা আদি আৰম্ভ কৰোঁতে সেই কাৰ্য্যৰ সুসম্পন্নতাৰ অৰ্থে কৰা মঙ্গলাচৰণ।
मंगल-कार्य में मांगलिक मंत्रों का पाठ।

स्वस्थ-(वि) সুস্থ। নিৰোগী। সাৱধান।
नीरोग। चंगा। सावधान।

स्वाँग—(सं पुं) ভেশচন। নকল। আড়ম্বৰ।
बनावटी वेश या रूप। नकल। आडम्बर।

स्वाँगना—(क्रि स) ভেশচল কৰা।
स्वाँग बनाना।

स्वांत—[सं पुं] অন্তঃকৰণ। নিজৰ অন্ত বা নাশ। মৃত্যু। নিজ ৰাজ্য।
अंत:करण। अपना अन्त। मृत्यु। अपना राज्य।

स्वागत—[सं पुं] অভ্যৰ্থনা।
अभ्यर्थना।

स्वाति, स्वाती—(सं स्त्री) স্বাতী, পঞ্চদশ সংখ্যাৰ নক্ষত্ৰ বা তৰা।
एक नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी जाती है।

स्वादिष्ट (ष्ठ), स्वादु-(वि) সোৱাদ লগা।
जिसका स्वाद अच्छा हो।

स्वाध्याय—[सं पुं] বেদ-পাঠ। বেদ-পঢ়া কাৰ্য্য, অধ্যয়ন[নিজে]
वेदों का नियम पूर्वक, पूरा और ठीक अध्ययन। अध्ययन।

स्वाभिमान-(सं पुं)নিজৰ প্ৰতিষ্ঠা অথবা গৌৰবৰ অভিমান বা অহঙ্কাৰ। আত্মাভিমান।
अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान। (वि०-स्वाभिमानी)

स्वामित्व—(सं पुं)প্ৰভুত্ব। স্বামীত্ব
'स्वामी' होने का भाव। मालिक-पन।

स्वामिनी—(सं स्त्री) গৰাকিণী। গৃহিণী। গিৰিহঁতনী।
मालकिन। गृहिणी।

स्वायत्त-(वि) নিজৰ অধিকাৰ থকা। স্বায়ত্ত। নিজা কাৰ্য্য চলোৱা।
जिस पर अपना ही अधिकार हो। जो अपने कार्यों का संचालन अपने आप करता हो।

स्वाहा—(अव्य) যজ্ঞত ঘিউ দিবৰ সময়ত উচ্চাৰিত মন্ত্ৰ বা শব্দ। স্বাহা।
एक शब्द जिसका उच्चारण यज्ञ में हवि देते समय होता है।
(वि) পুৰি ছাই হৈ যোৱা। ধ্বংশ হোৱা।
जो जल कर राख हो गया हो। बरबाद।

स्वीकार्य—(वि) স্বীকাৰ কৰিব-লগীয়া। এনেই জানিব বা বুজিব লগা।
स्वीकृत या ग्रहण करने या मानने योग्य।

स्वीय—(वि) নিজৰ। নিজা।
अपना। निजका।

स्वेच्छया--[क्रि वि] নিজ ইচ্ছাৰে।
अपनी इच्छा से।

स्वेच्छाचार—[सं पुं] নিজ ইচ্ছা মতে চলা। নিজৰ মন অনুসাৰে কৰা আচৰণ, স্বেচ্ছাচাৰ।
यथेच्छाचार। [वि-स्वेच्छाचारी]

स्वेद —(सं पुं) ঘাম। ভাপ। মল।
पसीना। भाप।

स्वेद-कण—(सं पुं) ঘাম-কণা।
पसीने की बूँद।

स्वेदज—[सं पुं] মলি বা গেলা পচা বস্তুৰ পৰা ওপজা (মহ, উৰহ) আদি।
पसीने से उत्पन्न होनेवाले जीव।

स्वै-(वि) নিজা।
अपना।
[सर्व] সেই
सो। वह।

स्वैच्छिक—[वि] নিজৰ ইচ্ছা অনুসৰি নিজ। ইচ্ছাৰে কৰিব পৰা।
अपनी इच्छा से सम्बन्ध रखने वाला। अपनी इच्छा से किया जानेवाला।

स्वैर—(वि) স্বেচ্ছাচাৰী। স্বাধীন। শিথিল।
स्वेच्छाचारी। स्वतंत्र। धीमा। मनमाना।

स्वैराचार—(सं पुं) নিয়ম বা বান্ধোন নেমানি নিজৰ ইচ্ছা মতে কৰা আচৰণ।
नियमों या बन्धनों की उपेक्षा करके किया जानेवाला मनमाना आचरण।

स्वैराचारी—[वि] স্বেচ্ছাচাৰী। ব্যভিচাৰী।
मनमाना काम करनेवाला। व्यभिचारी।

स्वैरिणी—(सं स्त्री) ব্যভিচাৰিণী বা স্বেচ্ছাচাৰিণী।
व्यभिचारिणी।

ह

ह—বৰ্ণমালাৰ (ব্যঞ্জন বৰ্ণৰ) তেত্ৰিশ সংখ্যাৰ আখৰ ।
वर्णमालाका तैंतीसवाँ व्यंजन ।

हँकड़ना-(ক্রি অ) প্রত্যাহ্বান কৰা। ষাড় গৰুৱে ডাঙৰ ডাঙৰকৈ হোঁকৰা ।
ललकारना । चिल्लाना । साँड़ आदिका जोरसे बोलना ।

हँकवा—[স ं पु ं] সিংহ, বাঘ, হৰিণ আদিৰ চিকাৰৰ সময়ত গোলমাল কৰি বা বাদ্য আদি বজাই জন্তু বোৰ চিকাৰী ৰওচৰ চপাই অনা ।
बहुतसे लोगोंका शोर, चीते आदि को चारों ओरसे घेरकर शिकारी के सामने लाना ।

हँकाई—(स ं स्त्री) খেদা, গৰু আদি জুৰি দি খেদা কাৰ্য্য ।
हाँकनेकी क्रिया, भाव या मजदूरी

हँकाना—(ক্রি স) খেদা, মতা ।
हाँकना । पुकारना । हँकवाना ।

हंकारना-(ক্রি স) চিঞৰা, খেদা ।
पुकारना ।
[ক্রি অ] হুঙ্কাৰ মৰা ।
हुंकार करना ।

हँकारी--[स ं पु ं] দূত ।
दूत ।
(स ं स्त्री) নিমন্ত্ৰণ ।
बुलाहट ।

हंगामा—(स ं पु ं) উপদ্ৰৱ, হুলস্থূল, হেঁচা ঠেলা ।
उपद्रव । शोर-गुल । भीड़ भाड़ ।

हंडा—[स ं पु ं [হাড়ী, ডাঙৰ বাচন।
हाँड़ी जैसा बड़ा बरतन ।

हंडी—(सं स्त्री) হাড়ী ।
हाँड़ी ।

हंत—(अव्य) দুঃখ সূচক শব্দ ।
एक दुःख सूचक शब्द ।

हंता—[वि] হত্যা কৰোতা ।
हत्या या वध करनेवाला ।

हँफनी—[सं स्त्री] ফোপোৰা কাৰ্য্য।
हाँफनेकी क्रिया या भाव।

हंस—(सं पुं) হাঁহ, সূৰ্য্য, ব্ৰহ্ম, জীৱাত্মা প্ৰাণ, সন্ন্যাসী সকলৰ শ্ৰেণী বিশেষ, নূপুৰ, ঈশ্বৰ।
एक पक्षी। सूर्य। ब्रह्म। जीवात्मा। प्राण। सन्यासियोंका एक भेद। नूपुर। ईश्वर।

हँस-गति—[सं स्त्री] গহীন, ধীৰ খোজ। ব্ৰহ্মপ্ৰাপ্তি, মোক্ষ।
सायुज्य मुक्ति। हंस की सी मोहक गति।

हँसना—[क्रि अ] হঁহা।
हास करना।
[क्रि स] কাকো ঠাট্টা কৰা।
किसी की हँसी उड़ाना।

हँस-मुख-(वि) হাঁহি মুখ, আনন্দিত মুখ।
सदा हँसता रहनेवाला। विनोद शील।

हँसली, हँसुली—[सं स्त्री] গলৰ ওচৰৰ বুকুৰ দুয়োপিনে থকা হাড় দুডাল। গহনা বিশেষ।
गले के पासकी छातीकी दोनों उभरी हुई हड्डियाँ। एक गहना।

हँसाई—(सं स्त्री) সমাজত হোৱা বদনাম, নিন্দা।
लोकमें होनेवाली बदनामी या निन्दा।

हँसाना—[क्रि स] আনৰ হাঁহি তোলা, হঁহুৱা।
किसीको हँसनेमें प्रवृत्त करना।

हंसिनी, हंसी—[सं स्त्री] হাঁহ-মাইকী।
हंस पक्षी की मादा।

हँसिया, हँसुआ—[सं पुं] কাচি।
फसल, घास आदि काटनेका एक औजार।

हँसी—(सं स्त्री) হাঁহি।
हास।

हँसोड़—[वि] সদায় হাঁহি উঠা কথা কওঁতা, বহুৱা।
सदा हँसीकी बातें करनेवाला। दिल्लगीबाज।

हई—(क्रि अ) আছেই।
है ही।
[सं पुं] অশ্বাৰোহী।
घुड़ सवार।
[सं स्त्री] আশ্চৰ্য্য সূচক শব্দ-হেৰ,। ভয়।
आश्चर्य सूचक शब्द। डर।

हक—(वि) সত্য, উচিত।
सच। उचित। मुनासिब।
(सं पुं) अधिकাৰ, কৰ্ত্তব্য, অধিকাৰত্ব, দাবী, [ঈশ্বৰ] মুছলমান।
अधिकार। कर्तव्य। वह वस्तु जिसपर न्यायसे अधिकार प्राप्त हो। उचित या ठीक बात या पक्ष। ईश्वर (मुसलमान)

हकदार—[सं पुं] অধিকাৰী।
अधिकारी।

हक-नाहक—(अव्य) জোৰ জুলুম, অনাহকত।
जबरदस्ती। व्यर्थ।

हकबकाना—[क्रि स] বিবুধি হোৱা, ভয় খোৱা, থত মত খোৱা।
घबरा जाना।

हकलाना—(क्रि स) খোনা, কথা বজা, বোকোৰাৰ দৰে কথা বজা।
शब्दोंका ठीक तरहसे उच्चारण नकर सकने के कारण बीच बीच में कोई शब्द बहुत रुक रुककर बोलना।

हकीकत—(सं स्त्री) বাস্তৱিক তথ্য বা কথা, যথাৰ্থ, আচল।
वास्तविक तथ्य या बात। असलियत।

हकीम—(सं पुं) বিদ্বান, চিকিৎসক।
विद्वान। यूनानी रीतिसे चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। [वि सं स्त्री—हकीमी]

हकूमत, हुकूमत—[सं स्त्री]
শাসন, আধিপত্য।
शासन। आधिपत्य।

हक्का-बक्का—(वि) বৰ বিবুধিত পৰা। হতভম্ব। খুব ভয় খোৱা। ভেবালগা।
बहुत घबराया हुआ। भौचक्का।

हगना—[क्रि अ] হগা। মল ত্যাগ কৰা। শৌচ কৰা।
मल त्याग करना।
[क्रि स] বাধ্য হৈ ধাৰ পৰিশোধ কৰা বা দিয়া।
विवश होकर देन चुकाना या कुछ देना।

हचकना—(क्रि अ) হচ্ হচ শব্দ কৰি মাজতে বোৱা।

हच हच शब्द करते हुए बाचमें रुकना या झुकना।

हचकोला—(सं पुं) গাড়ী আদিৰ হেন্দোলনি।
गाड़ी आदिका धचका।

हजामत—[सं स्त्री] দাড়ি চুলি কটা কাৰ্য্য। ক্ষৌৰকৰ্ম্ম।
बाल काटने और दाढ़ी बनाने का काम। क्षौर।

हजार—[वि] এহেজাৰ।
दस सौ।
[क्रि वि] বহুতো।
बहुतेरा।

हजारों—(वि) কেবা হেজাৰ। বহুত বেছি।
कई हजार। बहुत अधिक।

हजूम— [सं पुं] ভিৰ।
भीड़।

हजूर, हुजूर—[सं पुं] হুজুৰ। কেছাৰী। দৰবাৰ।
किसी बड़े की सक्षमता। कचहरी। बहुत बड़ोको सम्बोधन करने का शब्द।
[क्रि वि] সমুখত। উপস্থিতি। (किसी बड़े के) सामने। समक्ष।

हजूरी, हुजूरी—(सं पुं) সেৱক। অনুচৰ।
सेवक।
(वि) হুজুৰৰ।
हजूर ,का।
—जी हजूरी करना— (मु०) খোচামতি কৰা।
चापलूसी या खुशामद करना।

हज्जाम—(सं पुं) নাপিত।
नाई।

हटकना—[क्रि स] নিষেধ কৰা। বাধা দিয়া। জন্তুক কোনো পিনে খেদা।
मना करना। रोकना। पशुओं को किसी ओर हाँकना।
[क्रि अ] বাধা দিয়াত মানি লোৱা বা থমা।
मना करनेपर मानना या रुकना।

हटना—[क्रि अ] কাষৰ হোৱা। আঁতৰ হোৱা। দিয়া কথা পালন নকৰা।
खिसकना। सामनेसे इधर उधर या दूर होना। टलना। वचन आदिका पालन न करना। (क्रि स—हटाना)।

हटा—(सं पुं) নিষেধ।
निषेध। मनाही।

हट्टा कट्टा-(वि) হৃষ্ট-পুষ্ট। বলবান।
हृष्ट पुष्ट। बलवान।

हठ—(सं पुं) জেদ। দৃঢ় প্ৰতিজ্ঞা।
जिस। दृढ़ प्रतिज्ञा। दुराग्रह।

हठ-धर्मी-(सं स्त्री)দুৰাগ্ৰহ। গোড়ামি।
दुराग्रह। कट्टरपन।
(वि) জেদী। দুৰাগ্ৰহী। গোড়া।
हठी। दुराग्रही। कट्टर।

हठयोग—(सं पुं) মুদ্ৰা বা যোগ আসনৰ দ্বাৰা ইন্দ্ৰিয়াদি সংযম কৰা বিধান। শাৰীৰিক কৌশলাত্মক যোগ বিশেষ।
योगका वह अंग जिसमें शरीर वशमें करनेके लिये कठिन मुद्राओं या आसनों का विधान है।

हठी—(वि) জেদী।
हठ करनेवाला। जिद्दी।

हठीला— [वि] জেদী। যুদ্ধত ধৈৰ্য্য ধৰি তিষ্ঠি থকা।
जिद्दी। लड़ाईमें धीरतापूर्वक जमा रहनेवाला।

हड़—(सं स्त्री) শিলিখা।
हर्रे। हरितकी।

हड़कंप,हड़कम · (सं पुं) আতঙ্ক।
तहलका।

हड़कना—[क्रि अ] উত্ৰাৱল হোৱা। পাগল হোৱা (কুকুৰ)।
बहुत व्याकुल होना। (कुत्तेका) पागल होना।

हड़कना—[क्रि स]বৰ বিৰক্ত কৰা। বৰ কষ্ট দিয়া। ঠেলি আঁতৰোৱা।
(किसी को) बहुत तंग करना। बहुत तरसाना। दूर हटाना।

हड़ताल— (सं स्त्री) ধৰ্ম্মঘট। বিক্ষোভ প্ৰদৰ্শনাৰ্থে দোকান-পোহাৰ বন্ধ ৰখা কাৰ্য্য।
दु:ख, विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिये सब कारबार दूकानें आदि बन्द कर देना। (अं-स्ट्राइक)

हड़ताली— (वि) ধৰ্ম্মঘটকাৰী। ধৰ্ম্মঘট সম্বন্ধীয়।
हड़ताल करनेवाला। हड़ताल सम्बन्धी।

हड़पना—[क्रिस] গিলি পেলোৱা। আত্মসাৎ কৰা।
निगल जाना। अनुचित रूपसे ले लेना।

हड़बड़ाना—[क्रि अ क्रि स] হাহা-কাৰ লগোৱা। তাৰাতাৰি লগোৱা।

जल्दी मचाना।

हड़बड़ी—(सं स्त्री) শীঘ্ৰতা। বেগা-বেগি। উত্ৰাৱল।

जल्दी। शीघ्रता। उतावली। घबराहट।

हड्डी—[सं स्त्री] হাড়। বংশ।

अस्थि। वंश।

हत—[वि]বধ হোৱা। প্ৰাণ যোৱা। নষ্ট।

जो मार डाला गया हो। रहित। नष्ट। बिगड़ा हुआ।

हतना—[क्रि स] মাৰি পেলোৱা। নেমানা। ভাঙি পেলোৱা।

मार डालना। न मानना। तोड़ना।

हत-प्रभ, हतश्री—(वि) শ্ৰীহীন। সুখ সম্পদ নষ্ট হোৱা। আয়ুস হানি হোৱা।

श्रीहीन।

हत-बुद्धि, हत-बोध—[वि] মূৰ্খ। বিবুদ্ধি। কিংকৰ্ত্তব্য বিমূঢ়।

मूर्ख। किंकर्तव्य विमूढ़।

हतो—[क्रि अ] আছিল।

था।

हतोत्साह—(वि) নিৰাশ।

जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो।

हत्थ—(सं पुं) হাত। हाथ।

हत्था—(सं पुं) যন্ত্ৰপাতিৰ মুঠিটো, যতন বিশেষ। (হাতুৰী লেখীয়া)

औजारका दस्ता या मूठ।

हत्थे—(क्रि वि) হাতত। হাতেৰে।

हाथमें। हाथसे।

हत्यारा—(वि) হত্যাকাৰী। বৰ পাপী।

हत्या करनेवाला। बहुत बड़ा पापी।

हथ—(सं पुं) হাত।

'हाथ' का संक्षिप्त रूप।

हथकंडा—(सं पुं) হাতৰ কৌশল ষড়যন্ত্ৰ।

हाथकी चालाकी। छिपी हुई चालबाजी।

हथकड़ी—[सं स्त्री] হাত-কেৰেয়া।

वह जंजीर जिससे कैदियोंके हाथ बाँधे जाते हैं।

हथ-गोला—(सं पुं) হাত বোমা।

वह गोला जो शत्रुओंपर हाथसे फेका जाता है।

हथ-फेर—[सं पुं] হাত বুলোৱা, কৌশলেৰে চুৰি কৰা।
प्यारसे किसीके शरीरपर हाथ फेरना। चालाकी से किसी का माल उड़ा लेना।

हथ-लेवा—[सं पुं] পাণিগ্ৰহণ। বিয়া কৰোৱা।
पाणिग्रहण।

हथिनी—[सं स्त्री] হাতী[মাইকী] হস্তিনী।
हाथी की मादा।

हथियाना--[क्रिस] নিজৰ হাতলৈ অনা। ফাকি দি হস্তগত কৰা।
अपने हाथमें करना। धोखे से लेना।

हथियार—(सं पुं) হাতিয়াৰ। হাতেৰে ব্যৱহাৰ কৰা অস্ত্ৰ—দা, কুঠাৰ, চাঁচ আদি।
औजार। हाथसे चलाया जाने वाला अस्त्र।

हथियार-बंद— (वि) সশস্ত্ৰ। অস্ত্ৰে-শস্ত্ৰে সুসজ্জিত।
सशस्त्र।

हथेरी, हथेली, हथोरी—(सं स्त्री) হাতৰ তলুৱা।
कर-तल।

हथौड़ा—[सं पुं] হাতুৰী।
वह औजार जिससे कारीगर कोई चीज तोड़ते, ठोकते या गढ़ते हैं। (सं स्त्री-हथौड़ी)

हद—(सं स्त्री) সীমা। মৰ্য্যাদা।
सीमा। मर्यादा।

हदस—(सं स्त्री) ভয়।
भय।

हदसना-(क्रि स)মনত ভয় ওপজা।
मनमें भय उत्पन्न होना। [क्रि स-हदसाना]

हनन—(सं पुं) মৰা। হত্যাকৰা। আঘাত কৰা। পূৰণ কৰা।
मार डालना। आघात करना। गुणा करना।

हनना—(क्रि स) হত্যা। (নাগেৰা আদি) বজোৱা। [অস্ত্ৰ]চলোৱা।
हनन। (नगाड़ा आदि) बजाना। (शस्त्र) चलाना।

हनु—[सं स्त्री] হনু। গালৰ ওপৰৰ আৰু চকুৰ তলৰ হাড়।
दाढ़की हड्डी। ठोढ़ी।

हफ्ता—[सं पुं] সপ্তাহ।
सप्ताह। सात दिन।

हबकना—(क्रि अ क्रि स) দাঁতেৰে কামুৰিবলৈ জপিওৱা। দাঁতেৰে কামোৰা।
(दाँतोंसे) काटने या खाने के लिये झपटना। दाँतोंसे काटना।

हबसी—(सं पुं) আফ্ৰিকাৰ হব্‌চ দেশ নিবাসী। নিগ্ৰো।
अफ्रीकाके हब्स देशका निवासी। निग्रो।

हबीब—(सं पुं) বন্ধু।
मित्र।

हम—[सर्व] আমি।
'मैं' का बहुवचन।
[सं पुं] অহঙ্কাৰ।
अहंकार।
(अव्य) সৈতে। সমান।
साथ। समान।

हमजोली—(सं पुं)সঙ্গী। লগৰীয়া।
साथी। संगी।

हमदर्द—(वि)সহানুভূতি ৰাখোঁতা।
सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी-(सं स्त्री)সহানুভূতি ৰাখোঁতা।
सहानुभूति रखनेवाला।

हमला, हम्मला-[सं पुं] আক্ৰমণ, আঘাত।
आक्रमण। प्रहार।

हमाम, हम्माम-[सं पु] গা-ধোৱা ঘৰ।
स्नानागार।

हमारा—(सर्व) আমাৰ।
'हम' का सम्बन्ध कारक रूप।

हमाहमी—[सं स्त्री] সকলোৰে মাজত নিজা নিজা লাভৰ বাবে হোৱা চেষ্টা। অহঙ্কাৰ।
सब लोगोंमें अपने अपने लाभ के लिये होनेवाला आतुर प्रयत्न। अहंकार।

हमें—(सर्व) আমাক।
हमको।

हमेशा—(अव्य) সদায়।
सदा।

हय—(सं पुं) ঘোঁৰা। ইন্দ্ৰ।
घोड़ा। इन्द्र।

हय-मेघ—(सं पुं) অশ্বমেধ যজ্ঞ।
अश्वमेध [यज्ञ]

हया—(सं स्त्री) লাজ। চৰম।
लज्जा। शर्म।

हर-[वि] হৰণ কৰোঁতা। লৈ যাওঁতা। হত্যাকাৰী। প্ৰত্যেক।
हरण करनेवाला। ले जानेवाला। वध करनेवाला प्रत्येक। एक एक।

[प्रत्य०] दুৰ কৰোঁতা । খবৰলৈ যাওঁতা-দূত । ঘৰ, ঠাই আদি ।
दूर करनेवाला । सन्देश ले जाने वाला । घर, स्थान आदि ।
[सं पुं] শিৱ । ভাজক ।
शिव । भाजक ।

हरकत—[सं स्त्री] চেষ্টা । হলা-জলা ।
हिलना डोलना । चेष्टा ।

हरकना—[क्रि स] গুচোৱা । বৈ থকা ।
हटाना । रोकना ।

हरकारा—(सं पुं) ডাকোৱালা দূত ।
दूत । डाकिया । डाक ढोनेवाला ।

हरज, हर्ज—[सं पुं]বাধা । লোক-চান
रुकावट । नुकसान ।

हरजाई--(वि) এনেয়ে ঘুৰিফুৰা লোক । বজৰুৱা ।
हर जगह व्यर्थ घूमनेवाला । आवारा ।
[सं स्त्री]ব্যভিচাৰিণী । कुलटा व्यभिचारिणी स्त्री ।

हरजाना, हर्जाना--[सं पुं] ক্ষতি-পূৰণ ।
क्षति-मूल्य ।

हरण-(सं पुं) হৰণ । বলেৰে লৈ যোৱা । নাইকিয়া কৰা । হৰণ কৰা (গণিতৰ) ।
बलपूर्वक ले लेना । मिटाना । ले जाना । भाग देना [गणित] ।

हरद, हरदी, हलदी, हल्दी—
[सं स्त्री] হালধি ।
एक पौधेकी पीली जड़ जो रँगाई और मसालेके काममें आती है ।

हरना--(क्रि स) হৰণ কৰা । চুৰি কৰা ।
हरण करना ।

हरफ—[सं पुं] আখৰ ।
अक्षर ।

हरबा-- [सं पुं] হাতিয়াৰ । সা-সঁজুলি ।
हथियार ।

हरम – (सं पुं) অন্তেষপুৰ ।
अंतःपूर ।

हरवाह, हलवाहा--(सं पुं) হাল বওঁতা । খেতিয়ক ।
हल चलानेवाला । किसान ।

हरषना-(क्रि अ) আনান্দিত হোৱা ।
हर्षित या प्रसन्न होना ।

হৰষানা--[ক্রি অ ক্রি স] আনন্দিত হোৱা বা কৰা।
हर्षित या प्रसन्न होना या करना।

হৰ-সিগাৰ-(সং পুং) এবিধ সুগন্ধি ফুলৰ গছ। শেৱালি।
एक पेड़ जिसमें छोटे सुगंधित फूल लगते हैं।

হৰাঁস-- (সং স্ত্রী) ভয়। দুঃখ ভাগৰ।
भय। दुःख। थकावट। हरारत।

হৰা--(বি) সেউজীয়া। প্রসন্ন। নতুন। সতেজ। ৰহিত।
हरित। सब्ज। प्रसन्न। ताजा। रहित।
[সং পুং] সেউজীয়া ৰঙৰ।
हरित वर्ण।

হৰানা--[ক্রি স] পৰাজিত কৰা। ভাগৰ লগোৱা।
पराजित करना। थकाना।

হৰাম-(বি) নিষিদ্ধ। বেয়া।
निषिद्ध। बुरा।
(সং পুং)অধৰ্ম। পাপ। ব্যভিচাৰ।
अधर्म। पाप। व्यभिचार।

হৰাম-খোৰ— [সং পুং] অসৎ উপায়েৰে খাওঁতা। হাৰামী।
मुफ्तका माल खानेवाला।

হৰামজাদা, হৰামী— [সং পুং] নীচৰ সন্তান। দুষ্ট। হাৰামজাদা।
वर्ण शंकर। परम दुष्ट।

হৰাৰত—(সং স্ত্রী) গৰম। সামান্য জ্বৰ।
गरमी। हलका ज्वर।

হৰাশ—[সং পুং] ভয়। আশঙ্কা। দুঃখ।
भय। आशंका। दुःख।

হৰি-জন—[সং পুং] ঈশ্বৰৰ ভক্ত। অনুন্নত শ্রেণীৰ লোক [মহাত্মা গান্ধীয়ে দিয়া নাম]।
ईश्वरका भक्त। पद दलित या अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम।

হৰিতাভ—(বি) সেউজীয়া ৰঙৰ আভা যুক্ত।
जिसमें हरे रंगकी आभा हो।

হৰিদ্রা—(সং স্ত্রী) হালধি।
हलदी।

হৰিয়ানা-(ক্রি অ-ক্রি স) গছ-গছনি সেউজীয়া হোৱা। প্রসন্ন হোৱা। পঞ্জাবৰ অঞ্চল বিশেষ।

पेड़ पौधोंका हरा होना या पेड़ पोधोंको हरा भरा करना । प्रसन्न होना या करना ।

हरियाली—[सं स्त्री]সেউজীয়া। সেউজীয়া বনস্পতি সমূহ। সেউজীয়া বং।
हरे भरे पेड़ पौधोंका समूह या विस्तार ।

हरिस—(सं स्त्री)ঈহমাৰি। নাঙলৰ ডিলা।
हलका वह लट्ठा जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी और दूसरे पर जुआ रहता है ।

हरीतिमा—(सं स्त्री) সেউজীয়া। শ্যামলা।
हरियाली ।

हरीरा—[सं पु] গাখীৰত মা-মছলা দি তৈয়াৰ কৰা খাদ্য বিশেষ।
दूधमें मेवे-मसाले डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ ।
(वि) সেউজীয়া। আনন্দিত।
हरा । हर्षित ।

हरुआना—[क्रि अ]পাতল হোৱা, আনন্দ কৰা, খৰধৰ লগোৱা।
हलका होना । फुरती करना । जल्दी मचाना ।

हरेक—(वि) প্ৰত্যেক ।
हर एक । प्रत्येक ।

हरेवा—[सं पु] সেউজীয়া ৰঙৰ এবিধ চৰাই।
हरे रंग की एक चिड़िया ।

हर्रे—(सं स्त्री) শিলিখা।
हरीतकी ।

हर्ष—[सं पु] আনন্দ, প্ৰসন্নতা।
रोमांच । प्रसन्नता ।

हर्षित—[वि] প্ৰসন্ন, হৰ্ষিত, আনন্দিত।
प्रसन्न ।

हल—(सं पुं) নাঙল, হিচাব কৰা, সমস্যাৰ সমাধান ।
जमीन जोतने का एक उपकरण । हिसाब लगाना । समस्या का निराकरण ।

हलक—[सं पुं] গলৰ নলী, কুটা।
गले की नली ।
(सं स्त्री) ঢৌ ।
तरंग ।

हलकना—(क्रि अ) বাছনত পানী ভৰি বাগৰি পৰা শব্দ, ঢৌ খেলা। হলা-জলা
बरतन में भरे हुए जल का हिलने

से शब्द करना। हलराना। हिलना।

हलका—[वि] পাতল, বাম, মধ্যম ধৰণৰ, কম, সহজ, পাগল (কুকুৰ, শিয়াল)।
जो भारी न हो। जो गहरा न हो। कम अच्छा। कम। ओछा। सहज, प्रसन्न। पागल (कुत्ते, गीदड़ आदि के लिये)
(सं पुं) ঢৌ, বৃত্ত, ঘেৰ, মণ্ডলী, অঞ্চল।
तरंग। वृत्त। घेरा। मंडली। अंचल।

हलकापन—(सं पुं) পাতল ভাৱ, তুচ্ছতা, প্ৰতিষ্ঠা নোহোৱা।
'हलका' होने का भाव या गुण। ओछापन। तुच्छता। अप्रतिष्ठा।

हलकोरा—[सं पुं] ঢৌ।
तरंग।

हल-चल—(सं स्त्री) হাহাকাৰ, হুলস্থূল।
हिलने डुलने की क्रिया या भाव। खलबली।
(वि) খৰক-বৰক হোৱা বা হালি-জালি পৰা।
डगमगाता या हिलता हुआ।

हलफ—(सं पुं) শপত।
कसम। शपथ।
[सं स्त्री] ঢৌ।
लहर। तरंग।

हलराना—(क्रि अ क्रि स) ইপিনে সিপিনে লৰ চৰ কৰা, হাতৰ তলুৱাত লৈ ল'ৰা ছোৱালীক দিগ্ দিগ্ দিয়া।
इधर उधर हिलना-डोलना या [बच्चों को] हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना।

हलवा, हलुआ, हलुवा—[सं पुं] হালোৱা, চুজি পগাই কৰা মোহন ভোগ।
एक मीठा खाद्य-पदार्थ। मोहन-भोग।

हलवाई—(सं पुं) মিঠাই বিকোঁতা।
मिठाई, पूरी आदि बनाने और बेचनेवाला।

हलाक—(वि) মাৰি পেলোৱা।
जो मार डाला गया हो।

हलाकन—(वि) বিৰক্ত।
परेशान। तंग।

हलाल—(वि) ধৰ্ম্ম সম্মত, উচিত, মুছলমানৰ ধৰ্ম্মমতে কৰা পশু

বা প্ৰাণী নিধন ।
धर्म सम्मत । जायज ।

हलालका—(पद) ন্যায় সঙ্গত ভাবে অৰ্জ্জা ।
ईमानदारी से कमाया या लिया हुआ ।

हलाहल— (सं पुं) বিষ । হলাহল ।
कालकूट विष ।
(वि) সম্পূৰ্ণ ।
पूरा पूरा ।

हल्ला—(सं पुं) গোলমাল, যুদ্ধৰ হাহাকাৰ ধ্বনি, আক্ৰমণ ।
शोरगुल । युद्ध के समय का कोलाहल । आक्रमण ।

हवन (सं पुं) হোম ।
होम ।

हवस, हविस—[सं स्त्री] লালসা, বাসনা, তৃষ্ণা, পিয়াহ ।
लालसा । वासना । तृष्णा । दिल का अरमान ।

हवा—[सं स्त्री] বায়ু, ভূত-প্ৰেত, কীৰ্ত্তি । গৌৰৱ ।
वायु । भूत-प्रेत । कीर्ति । साख ।

हवाई—[वि] আকাশী ।
हवा का । हवा सम्बन्धी । हवा में चलनेवाला ।

हवाई-अड्डा—(सं पुं) বিমান কোঠ । আকাশী জাহাজৰ ঘাটি ।
वह स्थान जहाँ हवाई जहाज यात्रियों को उतारने चढ़ाने के लिये आकर ठहरते हैं ।

हवाई-जहाज—[सं पुं] আকাশী জাহাজ, বিমান ।
वायुयान ।

हवा-दार—[वि] বতাহ আহিব পৰা দুৱাৰ খিৰিকী থকা ।
जिसमें हवा आने जाने के लिये खिड़कियां, द्वार आदि हों ।

हवा-पानी[सं पुं] জলবায়ু ।
जल-वायु ।

हवाल -(सं पुं) অৱস্থা, পৰিণাম, বিবৰণ ।
हाल । परिणाम । वृत्तान्त ।

हवाला—[सं पुं] উদাহৰণ, দায়িত্ব, প্ৰমাণৰ উল্লেখ ।
प्रमाण का उल्लेख । दृष्टांत । जिम्मेदारी ।

हवालात—(सं स्त्री) হাজোত, ৰক্ষণাবেক্ষণ নহৰা দি ৰখা, বিচাৰ শেষ নোহোৱা লৈকে দোষীক ৰখা ঠাই ।

पहरे में रखा जाना। वह स्थान जहाँ बिचार होने तक अभियुक्त पहरे में रखा जाता है।

हवास—(सं पुं) ইন্দ্রিয়, চেতনা, জ্ঞান।
इन्द्रियाँ। चेतना। होश।

हवि—[सं पुं] ঘিউ, যজ্ঞ-সামগ্ৰী।
आहुति देने की वस्तु।

हविष्य—(वि) যজ্ঞৰ কাৰণে উপযোগী, ঘিউ মিহলি চাউল।
हवन करने योग्य। घी मिला हुआ चावल।
(सं पुं) হোমৰ জুইত দিয়া ঘিউ মিহলোৱা বস্তু।
अग्नि में डाली जानेवाली हवि।

हवेली—(सं स्त्री) ডাঙৰ ঘৰ, পত্নী, ঘৈণী।
बड़ा मकान। पत्नी।

हव्य—(सं पुं) যজ্ঞৰ হোমৰ বস্তু।
हवन की वस्तु।

हसरत—(सं स्त्री) দুঃখ, আন্তৰিক কামনা। दुःख। हार्दिक कामना।

हसित—(वि) হাস্যাস্পদ, ফুলি উঠা, হাঁহি থকা।
हास्यास्पद। हँसता हुआ। खिला हुआ।
[सं पुं] হাঁহি, উপহাস।
हास्य। उपहास।

हसीन—(वि) খুব ধুনীয়া (লোক)। बहुत सुन्दर [व्यक्ति]

हस्त—(सं पुं) হাত,জোখ বিশেষ, এটা নক্ষত্ৰ, শুঁৰ।
हाथ। एक माप। एक नक्षत्र, हाथी की सूँड़।

हस्त-कौशल—[सं पुं] হাতৰ কৌশল—কাৰুকাৰ্য্য।
हाथ की कारीगरी।

हस्त-लाघव—(सं पुं) হাতৰ চতুৰালি-কৌশল।
हाथ की चालाकी या सफाई।

हस्तांतरण—[सं पुं] এজনৰ অধিকাৰৰ বা হাতৰ বস্তু আন এজনক দিয়া কাৰ্য্য।
[सम्पत्ति, स्वत्व आदि का] एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना।

हस्तांतरित—(वि) হস্তান্তৰ কৰা।
जिसका हस्तांतरण हुआ हो।

हस्ती—(सं पुं) হাতী।
हाथी।
(सं स्त्री) অস্তিত্ব, ব্যক্তিত্ব।
अस्तित्व। व्यक्तित्व।

हाँ—[अव्य] অঁ, সমৰ্থন, স্বীকৃতি সূচক শব্দ।
स्वीकृति, समर्थन आदि सूचक शब्द ।

हाँक—(सं स्त्री) মতা, চিঞৰা, আগবঢ়াই খেদা।
पुकार। ललकार। बढ़ावा ।

हाँकना—(क्रि स) গৰু আদি খেদা, গাড়ী আদি চলোৱা, জোৰেৰে চিঞৰা, অতিশয়োক্তি পূৰ্ণ কথা কোৱা, বিচনীৰে বিচা ।
जानवरों को चलाने या हटाने के लिये आगे बढ़ना या इधर उधर करना। गाड़ी, रथ आदि चलाना। जोर से पुकारना या बुलाना। हुंकार करना। डींग मारना। पंखे से हवा करना।

हाँका—(सं पुं) গৰজনি, চিকাৰৰ বাবে জন্তু আদি খেদি নিয়া কাৰ্য্য, মতা কাৰ্য্য।
जंगली जानवरों को हाँक कर ऐसी जगह ले जाना जहाँ सहज में उनका शिकार हो सके। पुकार। गरज ।

हाँड़ी—(सं स्त्री) হাড়ী।
हँड़िया ।

हाँपना—(क्रि अ) কোঁপনি উঠা।
जोर जोर से साँस लेना ।

हाँसी—(सं स्त्री) হঁহা। হাঁহি।
हँसी ।

हा—(अव्य) দুঃখ, শোক আনন্দ, আদি সূচক শব্দ।
दुःख, शोक आदि सूचक शब्द। आनन्द या प्रसन्नता का सूचक शब्द ।

हाऊ—(सं पुं) কাল্পনিক জীব।
एक कल्पित जीव।

हाकिम—(सं पुं) বিচাৰক, হাকিম উচ্চ কৰ্ম্মচাৰী।
शासक। बड़ा अधिकारी।

हाजत—(सं स्त्री) আৱশ্যকতা, ইচ্ছা, হাজৎ, হাজোত।
आवश्यकता। चाह। पहरेमें रखा जाना। हवालात।

हाजमा—(सं पुं) হজমী, হজম কৰা শক্তি।
भोजन पचानेकी क्रिया या भाव।

हाजिर—(वि) উপস্থিত ।
उपस्थित । मौजूद ।

হাজিৰী—(स ं स्त्री) উপস্থিতি।
उपस्थिति।

হাজী—(स ं पु ं) হজ যাত্ৰা কৰি অহা। হাজি।
वह जो हजकर आया हो। (मुसलमान)

হাট—(स ं स्त्री) দোকান, বজাৰ।
दूकान। बाजार।

হাটক—(स ं पु ं) সোণ।
सोना।

হাথ—(सं पु) হাত।
हस्त।

হাথা—[स ं पु ं] যন্ত্ৰ পাতিৰ মুঠি বা নাল।
हत्था। औजारों आदिकी मूठ।

হাথাপাই—(सं स्त्री) হতাহতি, কিলা-কিলি।
हाथ पैरसे खींचने और ढकेलने की लड़ाई।

হাথী—(सं पु ं) হাতী।
गज।

হাফিজ—(स ं पु ं) কোৰাণ মুখস্থ থকা লোক।
जिसे कुरान कंठस्थ हो।
[वि] ৰক্ষক।
हिफाजत करनेवाला। रक्षक।

হামী—(स ं स्त्री) স্বীকাৰ কৰা, স্বীকৃতি।
'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति।

হাৰ—(स ं स्त्री) পৰাজয়, শিথিলতা।
हार। शिथिलता। हानि।
[स ं पु ं] সোণৰ বা হীৰা মুকুতাৰ মালা-মণি, হাৰি।
गलेमें पहननेकी सोने, चाँदी, मोतियों, फूलों आदि की माला।
जगल।
(वि) লৈ যাওঁতা, হৰণ কৰোঁতা
वहन करने या ले जानेवाला।

হাৰনা—[क्रि अ] পৰাজিত হোৱা, ভাগৰি পৰা, চেষ্টা কৰি বিফল হোৱা।
पराजित होना। थक जाना। प्रयत्नमें विफल होना।
(क्रि स) প্ৰতিযোগিতাত অসফল বা বিফল হোৱা।
प्रतियोगिता में सफल न होकर गँवाना।

হাৰী—[वि] হৰণ কৰোঁতা।
हरण करनेवाला।

(সং স্ত্ৰী) পৰাজয় ।
पराजय । हार ।

হাৰীত—(সং পুং) চোৰ, ডকাইত ।
चोर । डाकू ।

হাল—[সং পুং] অৱস্থা, পৰিস্থিতি, বাতৰি, বিবৰণ ।
दशा । परिस्थिति । समाचार । विवरण ।
(বি) বৰ্ত্তমান ।
वर्तमान ।
(অব্য) এতিয়া, তুৰন্তে ।
अभी । तुरन्त ।
[সং স্ত্ৰী] হলা বা কঁপা কাৰ্য্য, গৰু বা ম'হৰ গাড়ীৰ চকাৰ ওপৰত মেৰাই দিয়া লোৰপাত ।
हिलनेकी क्रिया या भाव । कंप । काठके पहिये पर चढ़ाया जाने वाला लोहेका गोल बंद ।

হালত—(সং স্ত্ৰী) দশা, অৱস্থা, আৰ্থিক অৱস্থা ।
दशा । अवस्था । आर्थिक स्थिति । परिस्थिति ।

হালৰী—[সং স্ত্ৰী] লোকগীত বিশেষ ।
लोरी ।

হালাঁকি—(অব্য) যদিও ।
यद्यपि ।

হালা—(সং স্ত্ৰী) মদ ।
शराब ।

হালাহল—(সং পুং) হলাহল বিষ ।
हलाहल । कालकूट विष ।

হালৈ—(অব্য) এই সময়, এতিয়া, তৎক্ষণাত ।
इसी समय । अभी । तुरन्त ।

হাৱ—(সং পুং) আহ্বান, প্ৰেম ভাব উদয় হোৱাৰ ফলত নায়কক আকৃষ্ট কৰিবলৈ নায়িকাই কৰা অঙ্গীভঙ্গী ।
(नायिका की) नायकको मोहित करने अथवा उसपर मिलनकी इच्छा प्रकट करनेके लिये की जानेवाली स्वाभाविक चेष्टाएँ ।

হাৱন-দস্তা—(সং পুং) হামুদস্তা, কবিৰাজী ঔষধ আদি তৈয়াৰ কৰিবৰ বাবে ব্যৱস্থা কৰা পাত্ৰ
खरलके आकारका धातुका बना हुआ एक प्रकारका पात्र । इमाम-दस्ता ।

হাৱ-ভাৱ—(সং পুং) পুৰুষক আকৰ্ষিত কৰিবলৈ নাৰীয়ে কৰা চেষ্টা বা অঙ্গী ভঙ্গী ।

पुरुषोंको मोहित करने के लिये स्त्रियोंकी मनोहर चेष्टाएँ ।

हाशिया—(सं पुं) আঁচল, লিখাৰ সময়ত নিলিখাকৈ ৰখা কাগজৰ ঠাই। টীকা-টিপ্পনী কৰা।

किनारा । गोट । लिखनेके समय कागजके किनारे खाली छोड़ी हुई जगह । किसी बातपर की हुई टीका-टिप्पणी ।

हास—(सं पुं) হাঁহি, বিনোদ ।

हँसनेकी क्रिया या भाव । दिल्लगी।

हासिल—(वि) পোৱা ।

पाया या मिला हुआ ।

(सं पुं) মাটিৰ খাজনা আদি ।

जमीन का लगान । जमा । कर आदि ।

हास्य—(वि) হাঁহিব লগীয়া, উপহাসৰ যোগ্য ।

हँसनेके योग्य । उपहासके योग्य ।

[सं पुं] হাঁহি, ঠাট্টা· মস্কৰা ।

हँसनेकी क्रिया का भाव । दिल्लगी । मजाक ।

हास्यास्पद—[वि]ठाট্টা বা উপহাসৰ পাত্ৰ, নিন্দা ভাজন ।

जिसके बेढंगेपन की लोग हँसी उड़ावें । हँसी उत्पन्न करनेवाला ।

हा हंत—[अव्य] হে ঈশ্বৰ-ই কি হ'ল ?

हे ईश्वर, यह क्या हो गया ।

हाहा—(सं स्त्री) কোনো বস্তু পাবলৈ ওপজা ব্যগ্ৰতা ।

किसी वस्तु की प्राप्तिके लिये व्यग्रता ।

(वि) অত্যন্ত-লোভী ।

अत्यन्त लोभी ।

हिंगु—(सं पुं) হিং ।

हींग ।

हिंडोरना, हिंडोरा, हिंडोल, हिंडोला—(सं पुं) দোলা, দোলনা ।

কবিতাৰ শ্ৰেণী বিশেষ ।

पालना । झूला । वह कविता जिसमें हिंडोलेमें झूलनेका वर्णनहो ।

हिंदवी, हिंदी—(वि) হিন্দুস্থানৰ, ভাৰতৰ ।

हिन्दुस्तान का ।

(सं पुं) হিন্দুস্থান নিবাসী, ভাৰত বাসী ।

हिन्दुस्तान का निवासी ।

[सं स्त्री] হিন্দুস্থানৰ ভাষা,

ভাৰতৰ ভাষা।
हिन्दुस्तान की भाषा।

हिन्दुस्तान—[सं पुं] ভাৰতবৰ্ষ।
भारतवर्ष।

हिन्दुस्तानी-(वि)ভাৰতীয়, হিন্দুস্থান সম্বন্ধীয়।

हिन्दुस्तानका ; हिन्दुस्तान संबंधी।
[सं पुं] ভাৰতবাসী।
भारतवासी।

(सं स्त्री) হিন্দুস্থানৰ ভাষা।
हिन्दुस्तान का भाषा।

हिंसक—[वि] হিংস্ৰ। ঘাতক।
(पशु) जो पशुओं को मार कर उनका मांस खाता हो।

[सं पुं] হিংস্ৰ পশু। হিংস্ৰ। হিংসাকুৰীয়া। শত্ৰু। তান্ত্ৰিক ব্ৰাহ্মণ।
हिंसा करने या मार डालनेवाला। खूंखार जानवर। शत्रु। तांत्रिक। ब्राह्मण।

हिंस्र [क]—(वि) হিংস্ৰ। হিংসা কৰোঁতা।
हिंसा करनेवाला।

हि—(अव्य) নিশ্চয়।
ही।

हिआ (া)—(सं पुं) সাহস।
साहस।

हिकमत—[सं स्त्री] বুদ্ধিমানী। চতুৰালি। যুক্তি। উপায়। চিকিৎসা কাৰ্য্য।
कोई नयी बात ढूँढ़ निकालने की युक्ति। तरकीब। हकीमी।

हिक्का—(सं पुं) হেঁকতি। হিকটি অহা বেমাৰ।
हिचकी। हिचकी का रोग।

हिचक-(सं स्त्री)ইতঃস্তত:। সংকোচ
आगा पीछा।

हिचकना— (क्रि अ) ইতঃস্তত: কৰা। সংকোচ কৰা। হিকটি অহা।
आगा-पीछा करना। हिचकियाँ लेना।

हिचकिचाना—(क्रि स) সংকোচ কৰা। থমা।
हिचकना। रुकना।

हिचकी—(सं स्त्री) হেঁকতি।
वह शारीरिक व्यापार जिसमें पेट या फेफड़े की वायु कुछ रुक कर गले के रास्ते निकलने का प्रयत्न करती है।

হিজড়া—[স ় পু ়] নপুংসক।
नपुंसक ।

হিজরী—(স ় পু ়) মুছলমান সকলৰ বছৰ গণনা। [৬২৫ খৃঃৰ পৰা বছৰ গণনা]।
मुसलमानी सन्।

হিজ্জে—[স ় পু ়] বানান।
वर्त्तनी ।

হিত— (স ় পু ়) হিত। কল্যাণ। মঙ্গল। লাভ স্নেহ।
कल्याण। भलाई। लाभ। प्रेम। स्नेह।
(অব্য) কাৰণে। নিমিত্তে।
लिये। वास्ते। निमित्त।

হিতকৰ (কাৰক), হিতকাৰী—[বি] মঙ্গলকৰ। লাভদায়ক।
हित या भलाई करनेवाला।
लाभ दायक।

হিতচিন্তক - (স ় পু ়) হিতৈষী।
भला चाहनेवाला।

হিত-চিন্তন— [স ় পু ়] মঙ্গল আকাঙ্ক্ষা।
किसी की भलाई की बातें सोचना।

হিতাই— [স ় স্ত্ৰী] সম্বন্ধীয়। মঙ্গল চিন্তা কৰা। মিল-জুল।
रिश्तेदारी। हित चिन्तक।
मेल-जोल।

হিতাহিত—[স ় পু ়] ভাল বেয়া। লাভ লোকচান। হিতাহিত।
भलाई और बुराई। लाभ और हानि।

হিতু, হিতুকৰ—(বি)হিতৈষী।
हित कारक। हितैषी।

হিতেচ্ছু, হিতৈষী—[বি] শুভাকাঙ্ক্ষী
हित-चिन्तक।

হিদায়ত—[স ় স্ত্ৰী] নিৰ্দ্দেশ। জাননী।
अभि सूचना। निर्देश।

হিনহিনানা—[ক্ৰি অ] ঘোঁৰাৰ মাতৰ শব্দ-হিঁ হিঁ হিঁ। হেঁহনি
घोड़े का हिन हिन शब्द करना।

হিনা— (স ় স্ত্ৰী) জেতুকা।
मेंहदी।

হিফাজত— (স ় স্ত্ৰী) ৰক্ষা। সাৱধানে ৰক্ষা কৰা।
रक्षा। रखवाली।

হিম—(স ় পু ়) বৰফ। শীত। জাৰকালি। জোন। কপুৰ।
तुषार। शीत। जाड़े का मौसम।
चन्द्रमा। कपूर।

[वि] শীতল বা ঠাণ্ডা।
ठंडा या शीतल।

हिम-कण—(सं पुं)নিয়ৰ কণা।
ओस की बूँदे।

हिमकर, हिमभानु, हिमांशु,—
(सं पुं) জোন।
चन्द्रमा।

हिमांक— [सं पुं] কপূৰ। পানী বৰফ হোৱা অৱস্থা সূচক চিহ্ন। তাপ (মাপক যন্ত্ৰৰ)।
कपूर। तापमापक यंत्र में वह अंक या स्थान जो ऐसे शीत का सूचक होता है जिसमें कोई द्रव पदार्थ विशेषतः जल, जमने लगता है।

हिमाचल, हिमाद्रि— (सं पुं)
হিমালয়।
हिमालय।

हिमानी—(सं पुं) তুষাৰ, বৰফ।
হিমালয়।
तुषार। बरफ। हिमालय।

हिमायत--(सं स्त्री) পক্ষপাতীত্ব।
पक्षपात।

हिम्मत—(सं स्त्री) সাহস।
साहस।

हिय (रा)—(सं पुं) হৃদয়। সাহস
हृदय। साहस।

हिया—[सं पुं]অন্তঃকৰণ। বুকু।
সাহস।
हृदय। वक्षःस्थल। साहस।

हियाव—[सं पुं] সাহস।
साहस।

हिरण, हिरन-- [सं पुं] হৰিণ।
পহু।
मृग।

हिरणमय—(वि)সোণালী। সোণৰ।
सोने का। सुनहला।

हिरण्य—[सं पुं] সোণ।
सोना।

हिरना—(सं पुं) হৰিণ।
हिरन।

हिरनौटा—(सं पुं) পহু পোৱালী
हिरन का बच्चा।

हिराना, हेराना—[क्रि अ-क्रि स]
হেৰোৱা। লুপ্ত হোৱা। কাৰো সমুখত ম্লান হৈ পৰা। ভ্ৰমিত হোৱা।
पास से निकल या खो जाना। लुप्त हो जाना। किसी के सामने फीका या मन्द पड़ना। सुध-बुध

मूलना। कोई चीज खोना।

हिरासत— [सं स्त्री।] হাজোত, আবদ্ধ কৰা। ৰখীয়া ৰখা।
किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला पहरा या चौकी। हवालात।

हिलकना—(क्रि स) হিকটি ধৰা। উচুপা।
हिचकी लेना। सिसकना।

हिलकोर (1)—(सं पुं) ঢৌ।
हिलोर। तरंग।

हिलगना-(क्रि अ) লাগি ধৰা। মিলি যোৱা।
अटकना। उलझना। हिलना-मिलना। सटना।

हिलना— [क्रि अ] হলা। কম্পিত হোৱা। ঢৌ খেলা। দৃঢ় হৈ নথকা। পানীত প্ৰবেশ কৰা। চঞ্চল হোৱা। মিলি যোৱা।
अपने स्थान से कुछ इधर उधर होना। कम्पित या चलाय मान होना। लहराना। जमा या दृढ न रहना। (पानी में) पैठना। [मन का] चंचल होना। हेल-मेल में आना।

हिलोर— (सं स्त्री) পানীৰ ঢৌ।
पानी की तरंग।

हिलोरना—(क्रि स)ঢৌ উঠা। ঢৌ খেলা।
पानीमें लहरें उठाना। लहराना।

हिल्लोल—(सं पुं) পানীৰ ঢৌ। আনন্দৰ ঢৌ, উত্তম।
पानी की लहर। आनन्द की तरंग। उमंग।

हिसना—[क्रि अ] ক্ষীণ হোৱা।
कम या क्षीण होना।

हिसाब— [सं पुं] হিচাব। উপায়। মিতব্যয়িতা। দৰ।
लेखा। तरीका। भाव। किफायत।

हिसाबी—[सं पुं] হিচাব বা অঙ্ক শাস্ত্ৰত অভিজ্ঞ।
हिसाब या गणित का जानकार।
(वि) হিচাব সম্বন্ধীয়।
हिसाब का। हिसाब सम्बन्धी।

हिस्सा—(सं पुं) অংশ, অঙ্গ, টুকুৰা, ভাগ, ব্যৱসায়ৰ অংশ।
अवयव। अंग। टुकड़ा। भाग। व्यापार आदि में होनेवाला साझा। अंश।

हिस्सेदार—[सं पुं] অংশীদাৰ।
साझेदार। सह-भागी।

हिस्सेदारी—[सं स्त्री] অংশীদাৰী
हिस्सेदार होने की अवस्था या भाव ।

हींग—(सं स्त्री) হিং ।
एक पौधे का जमाया हुआ गोंद ।

ही—(अव्य) নিশ্চয়, কেৱল, হীনতা বা উপেক্ষা সূচক অব্যয় ।
एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय, केवल, हीनता या उपेक्षा, किसी बात पर जोर देने के लिये आदि अर्थों में होता है ।
(क्रि अ) আছিল ।
थी ।

हीजड़ा (सं पुं) নপুংসক ।
नपुंसक ।

हीन—(वि) ৰহিত, নিকৃষ্ট, তুচ্ছ বা নগণ্য, তুলনাত কম ।
रहित । निकृष्ट । बहुत छोटा, तुच्छ या नगण्य । औरों या बहुतों की अपेक्षा घट कर । अपेक्षाकृत हलका ।

हीनक भावना, हीन-भावना—
(सं स्त्री) নীচাত্মিকা ভাৱ ।
मनमें बैठी हुई यह भावना कि हम अमुक अथवा औरों को अपेक्षा हीन हैं ।

हीन-बुद्धि—(वि) মূৰ্খ ।
मूर्ख ।

हीनयान—(सं पुं) বৌদ্ধ ধৰ্মৰ মূল আৰু পুৰণি শাখা ।
बौद्ध धर्म की मूल और प्राचीन शाखा ।

हीय (I)—[सं पुं] হৃদয়, বুকু ।
हृदय ।

हीर—[सं पुं] সাৰ, গছৰ সাৰ ভাগ, বীৰ্য্য, শক্তি, হীৰা ।
किसी वस्तुके अन्दर का भाग । इमारती लकड़ीके अन्दरका भाग। धातु या वीर्य । शक्ति । हीरा ।

हीरक, हीरा—(सं पुं) বহুমূলীয়া বস্তু । হীৰা ।
एक बहुमूल्य रत्न ।
(वि) হীৰাৰ নিচিনা চিক্মিকীয়া আৰু বহুমূলীয়া ।
हीरेके समान स्वच्छ, उज्वल और बहुमूल्य ।

हीला—[सं पुं] ভাও, নিমিত্তে ।
बहाना । निमित्त ।

हुंकार—(सं पुं) গোজৰণি, আহ্বান, হুঙ্কাৰ ।

भयभीत करने के लिये जोर से किया जानेवाला शब्द । गर्जन । ललकार ।

हुंकारना—(क्रि अ) ভয় দেখুৱাবৰ বাবে শব্দ কৰা, গোজৰণি মৰা । डराने के लिये जोरका शब्द करना । गरजना ।

हुंडी—[स स्त्री] টকা দিবলৈ দিয়া আদেশ-পত্ৰ। এঠাইত ধন বা তাৰ মূল্য আগতে লৈ সেই ধন আন এঠাইৰ পৰা ঘূৰাই পাবলৈ দিয়া ক্ষমতা পত্ৰ । হুণ্ডী ।
पुराने ढंगका एक प्रकारका ऋण पत्र ।

हुँत—(प्रव्य)-ৰে, নিমিত্তে, কাৰণে । से । लिये । वास्ते ।

हु—[अव्य] ও ।
भी ।

हुक—(सं पु) বেকা গজাল, ডুৱাৰ খিৰিকীৰ হাকোটা ।
टेढ़ी कील । अंकुशी ।
[सं स्त्री] ৰোগ বিশেষ । शरीरमें होनेवाला एक प्रकार का दर्द ।

हुकुम, हुक्म—[सं पु] আদেশ । आदेश ।

हुक्का—[सं पु] হোকা-খোৱা খোৱা ।
तम्बाकू पीनेका एक प्रकार का उपकरण ।

हुक्का-पानी—(सं पु) হোকাপানী, একে সমাজত হোকা পানী আদিৰ ব্যৱহাৰ থকা। সামাজিক সম্বন্ধ ।
एक बिरादरी के लोगोंका आपस में जल, हुक्का आदि पीने-पिलाने का व्यवहार ।

हुक्काम—[सं पु] হাকিমৰ বহুবচন । 'हाकिम' का बहुवचन ।

हुक्मी--(वि) আজ্ঞা পালক, পৰাধীন, অব্যৰ্থ ।
आज्ञा पालक । पराधीन । अचूक।

हुचकना—(क्रि अ) হিকটি ধৰা । हिचकियाँ लेना ।

हुज्जत—(सं स्त्री) অনাহকত কৰা কাজিয়া । কাজিয়া ।
व्यर्थका विवाद । तकरार । (वि—हुज्जती)

हुड़कना—(क्रि अ) কাৰো বিয়োগত দুখী হোৱা । ভীত আৰু চিন্তিত হোৱা । উদ্‌গ্ৰীৱ হোৱা ।

वियोगके कारण बहुत दुखीहो ना। भयभीत और चिन्तित होना। तरमना।

हुड़दंग—(सं पुं) উপদ্ৰৱী। লাফা-লাফি।
उपद्रव-युक्त उछल कूद।

हुत—(वि) আহুতি হিচাবে দিয়া।
आहुतिके रूपमें दिया हुआ।
[क्रि अ] আছিল।
था।
[अव्य] দ্বাৰা। ৰে।
द्वारा। से।

हुताशन—[सं पुं] জুই।
अग्नि।

हुते, हुतो—(सं पुं) ৰে, দ্বাৰা, পিনৰ পৰা।
से। द्वारा। तरफ।
(क्रि अ) আছিল।
थे। (बहुवचन)।

हुनर—[सं पुं] কলা, কাৰিগৰী, কৌশল।
कला। कारीगरी। कोई काम करने का कौशल।

हुनरमंद—(वि) কলাবিদ্, নিপুণ, পাৰগ।
कलाविद्। निपण।

हुमचना, हुमसना—(क्रि अ) কোনো বস্তুৰ ওপৰত উঠি হেচা, জপিওৱা।
किसी चीजपर चढकर उसे बार-बार जोरसे नीचे दबाना। उछलना। कूदना।

हुमसाना—(क्रि स) জপিওৱা, বঢ়োৱা, উত্তেজিত কৰা, মনত ইচ্ছা আদি জগোৱা।
उछालना। बढाना। उत्तेजित करना मनमें कामना, इच्छा, विचार आदि उठाना।

हुमा—(सं स्त्री) কাল্পনিক চৰাই।
एक कल्पित पक्षी।

हुलरना—[क्रि अ] হলা।
हिलना।

हुलराना—(क्रि स) হলোৱা।
हिलाना।

हुलसना—[क्रि अ] খুব সুখী হোৱা, উথলি উঠা।
बहुत प्रसन्न होना। उभरना। उमड़ना। [क्रि स—हुलसाना]
(क्रि स) আনন্দিত কৰা।
आनन्दित या प्रसन्न करना।

हुलसित—[वि] উল্লসিত, অতিশয় আনন্দিত। परम प्रसन्न।

हुलसी--(स स्त्री) উল্লাস, তুলসী দাসৰ মাকৰ নাম।
उल्लास। तुलसीदास की माता का नाम।

हुलास-(स पु) উল্লাস উৎসাহ।
उल्लास। उत्साह।
(स स्त्री) নস্য।
सूँघनी।

हुलिया—(स पु) ৰূপ, আকৃতি, কোনো লোকৰ পৰিচয় পাবলৈ দিয়া বিৱৰণ।
रूप। आकृति। किसी आदमीके रूप, रंग आदिका ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान हो सके।

हुल्लड़—(स पु) কোলাহল, উপদ্ৰৱ, গোলমাল।
कोलाहल। उपद्रव।

हुल्लड़बाजी—[सं स्त्री] কোলাহল, হৈ চৈ বা হাহাকাৰ অথবা উপদ্ৰৱ কৰা কাৰ্য্য।
हो हल्ला या शोर गुल मचाने या उपद्रव करने की क्रिया।

हुस्न— [स पु] সৌন্দৰ্য্য।
सौन्दर्य।

हूँ—(अव्य) হয়, ও।
हाँ। भी।
[क्रि अ] হওঁ।
'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक उत्तम पुरुष एक वचन रूप।
[सर्व] মই।
हौं [मैं]

हूँकना—(क्रि अ) হুকৰি দিয়া।
हुँकार करना।

हूँसना-[क्रि स] দৃষ্টি ৰখা। ধমকি দি থকা। শাপ দিয়া।
नजर लगाना। बराबर डाँट सुनाते रहना। कोसना।

हू—[अव्य] ও।
भी

हूक— (स स्त्री) হৃদয বেদনা। আশঙ্কা।
हृदयकी पीड़ा। आशंका।

हूकना— [क्रि अ] পীড়া বা কষ্ট পোৱা
पीड़ा या कसक होना।

हूठना—[क्रि अ]কাৰো খং তুলিবলৈ তেওঁৰ ভাৱভঙ্গী নকল কৰি দেখুৱা। ভেঙুছালি কৰা।
किसीको चिढ़ाने के लिये उसकी भाव भंगी, मुद्रा आदि की नकल करना।

हूठा—(स पु) बुगा आঙুলী দেখুৱা অশিষ্ট আচৰণ। কুৰূপ আৰু অশ্লীল আচৰণ অথবা ভঙ্গী
अगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। भद्दी या अश्लील चेष्टा।

हूण—(सं पु)নিষ্ঠুৰ মঙ্গোল জাতি, হুণ জাতি।
एक प्राचीन बर्बर मंगोल जाति।

हूत—(सं पुं) নিমন্ত্রিত।
बुलाया हुआ।

हू-बहू—(क्रि स) অবিকল। হুবহু। ঠিক তেনে। একে ৰকমৰ।
ज्यों का त्यों। (किसीके) बिलकुल अनुरूप या समान।

हूरना-(क्रि स) ভুৰি ভোজন কৰা। মাৰা।
बहुत अधिक भोजन करना। मारना।

हूह-- (सं स्त्री) হুঙ্কাৰ।
हुँकार।

हृत—(वि) চুৰি কৰা। অপহৃত।
हरण किया हुआ।

हृत्कंप- [सं पुं]হৃদয়ৰ কঁপনি। বুকুৰ কঁপনি।
हृदयकी धड़कन।

हृत्तल, हृत्पिंड—(स पुं) অন্তৰ। হৃদয়। দিল।

हृदयंगम— (वि) মনত লগা। বুজি পোৱা। হৃদয়ঙ্গম।
अच्छी तरह समझमें आया हुआ।

हृदयग्राही-(सं पुं) অন্তৰত তৃপ্তি দিয়া। মনোমোহা।
मनको आकृष्ट करनेवाला।

हृदयविदारक-(वि) অন্তৰ বিদীর্ণ কৰা। বৰ দুঃখ দিয়া।
मनको बहुत अधिक कष्ट पहुँचानेवाला।

हृदयहारी (वि) মনোহৰ। সুন্দৰ
मनोहर।

हृदयेश श्वर) -(सं पुं) প্রিয়তম, স্বামী।
प्रियतम। पति।

हृद्गत—[वि] হৃদয়স্থ। মনোগত।
हृदयमें का।

हृद्य-(वि) মনোগত। প্রণয়ী। অন্তৰৰ।
हृदयसे सम्बन्ध रखनेवाला हृदय का।

हृषिकेश— (सं पुं) মানুহৰ মন বুদ্ধিৰ গৰাকী। বিষ্ণু। কৃষ্ণ।
विष्णु। कृष्ण।

হৃষ্ট—[বি] আনন্দিত। প্ৰফুল্ল।
প্ৰসন্ন।

হৃষ্ট পুষ্ট-[বি]নোদোকা। মোটা, হৃষ্ট পুষ্ট।
मोटा-ताजा।

হেঁগা—(সং পুং) খেতিৰ মাটি সমান কৰা যতন। মৈ।
खेतमें मिट्टी चूर करने का एक उपकरण।

হেকড়, হৈকড়—[বি] নোদোকা। প্ৰবল। অঁকৰা।
हृष्ट पुष्ट। प्रबल। अक्खड।

হেকড়ী, হৈকড়ী-(সং স্ত্ৰী) অঁকৰামি, আকোৰ গোঁজালি।
अक्खड़पन। औद्धत्य।

হেয়—[বি] তুচ্ছ। নীহ।
तुच्छ। हीन।

হেট—[ক্রি বি] তলত।
नीचे।

হেঠা—(বি)তলত। পাতল। তুচ্ছ।
नीचा। हलका। तुच्छ।

হেঠী—[বি]অহঙ্কাৰ। অপ্ৰতিষ্ঠা।
घमंड। अप्रतिष्ठा।

হেত—[সং পুং] প্ৰেম।
प्रेम।

হেতু—[সং পুং]হেতু। কাৰণ। অভি-প্ৰায়। যুক্তি। সাধক।
अभिप्राय। वजह। दलील। साधक।

হেতুবাদ— [সং পুং] তৰ্কশাস্ত্ৰ। কুতৰ্ক। কুযুক্তি। নাস্তিকতা।
तर्क शास्त्र। ओछी दलील।

হেমন্ত—[সং পুং] হেমন্ত কাল। আঘোণপু-হ মাহৰ ঋতু।
अगहन-पूसकी ऋतु।

হেম—[সং পুং] বৰফ। ধতুৰা। সোণ।
हिम। सोना। धतूरा।

হেমাদ্ৰি—[সং পুং] সুমেৰু পৰ্ব্বত।
सुमेरु पर्वत।

হেমাভ – [বি] সোণালী।
सुनहला।

হেয়—[বি] হেয়। ত্যাগৰ উপযুক্ত। এৰি পেলাব লগীয়া। ঘৃণনীয়। তুচ্ছ।
त्याज्य। बुरा। तुच्छ।

হেৰম্ব—[সং পুং] গণেশ।
गणेश।

হেৰেনা—[ক্রি স] বিচৰা। দেখা। পৰীক্ষা কৰি চোৱা। হেৰোৱা কটোৱা।

ढूँढना। देखना। परखना। खोना। बिताना।

हेर-फेर–[सं पुं] হেৰ ফেৰ। অলপ লৰ-চৰ বা কম-বেছি হোৱা অৱস্থা। অদল-বদল।

घुमाव-फिराव। चक्कर। दाँव-पेंच। अदल-बदल।

हेरा–(सं पुं) মানুহক সম্বোধন কৰি মতা মাত। তল্লাচ।

किसी को पुकारने या बुलाने का शब्द। तलाश।

हेराना–(क्रि अ) লুপ্ত হোৱা। হেৰোৱা। জ্ঞান শূণ্য হোৱা।

खो जाना। लुप्त हो जाना। सुध-बुध भूलना।

(क्रि अ) কোনো বস্তু হেৰোৱা। कोई चीज खोना।

हेरा-फेरी–[सं स्त्री] অদল-বদল। বাৰেবাৰে অহা যোৱা।

अदल बदल। बराबर जाना आना।

हेलना–[क्रि अ]খেল ধেমালি কৰা, মন আনন্দিত কৰা। পানীত নমা, সাঁতোৰা।

क्रीड़ा या मनोविनोद करना। मन बहलाव। पानीमें पैठना। तैरना।

[क्रि स] হেয় অথবা তুচ্ছ জ্ঞান কৰা।

हेय ता तुच्छ समझना।

हेलमेल–[सं पुं] মিলা-প্ৰীতি, মিল-জুল।

मेल-जोल।

हेला–(सं स्त्री) হেলা, অসম্মান, অৱজ্ঞা, তিৰস্কাৰ, আওহেলা।

तुच्छ या उपेक्ष्य समझना। तिर-स्कार। खिलवाड़।

[सं पुं] মতা, চিঞৰ, ঢকা, হৰিজন।

पुकार। भीड़ या धक्का। भंगी या मेहतर।

हेली-मेली–(वि) যিহেতু মিলা-প্ৰীতি থকা।

जिससे हेल-मेल हो।

है–(क्रि अ) আছে।

'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक बहुवचन रूप।

(अव्य) আশ্চৰ্য্য-অসম্মতি সূচক অব্যয়।

आश्चर्य, असम्मति सूचक एक अव्यय।

है—(क्रि अ) হয় বা আছে, (বৰ্ত্তমান কালৰ একবচনৰ ৰূপ)।
'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप।

हैजा—(স পু) কলেৰা, হাইজা।
विशूचिका रोग। [अं-कॉलेरा]।

हैफ—[অব্যয়] বৰ দুঃখ সূচক শব্দ।
'परम दुःखकी बात है', का सूचक,

हैम—[বি] সোণেৰে তৈয়াৰী, সোণালী ৰঙৰ, বৰফৰ, শীতকালত হোৱা।
सोने का बना हुआ। सोनेके रंग का। हिम या बरफ का। जाड़ेमें होनेवाला।

हैरान—[বি] হাবাথাব্রি, হাইৰাণ, আচৰিত।
चकित। परेशान।

हैवान—[সং পু] পশু।
पशु।

हैसियत—[স স্ত্রী] সামৰ্থ্য, শক্তি, আৰ্থিক শক্তি, ধন সম্পত্তি।
सामर्थ्य। शक्ति। आर्थिक योग्यता। धन-सम्पत्ति।

होंठ—(স পু) ওঠ।
अधर।

होड़, होड़ाबाजी, होड़ाहोड़ी—(স স্ত্রী) চৰ্ত্ত, প্ৰতিযোগিতা জেদ।
शर्त। बाजी। प्रतियोगिता। हठ।

होता—[স পু] যজ্ঞ কৰ্ত্তা, হোতা।
यज्ञमें आहुति देनेवाला।

होनहार—(বি) হবলগীয়া, সুলক্ষণা
जो अवश्य होने को हो। होनी। अच्छे लक्षणोंवाला।

होना—(ক্রি অ) হোৱা। অস্তিত্ব, উপস্থিতি সূচক ক্ৰিয়া, বিদ্যমান, পৰিবৰ্ত্তিত হোৱা, সজা, বেমাৰ আদিৰ লক্ষণ প্ৰকট হোৱা, জন্ম হোৱা।

सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करनेवाली क्रिया। अस्तित्व में आना या वर्तमान रहना। पहला रूप छोड़कर दूसरे नये रूपमें आना। बनाया या तैयार किया जाना। रोग आदिका अपना रूप प्रकट करना। जन्म लेना।

होनी—(স স্ত্রী) হোৱা, ভৱিত-, ব্যতা ভাগ্য।

होने की क्रिया या भाव। भावी या भवितव्यता।

होम—[क्रि स] হোম। যজ্ঞ।
हवन। यज्ञ।

होमना—[क्रि स] হোম বা যজ্ঞ কৰা, নষ্ট কৰা। होम या हवन करना। नष्ट करना।

होरा—[स स्त्री] এঘণ্টাৰ সমান সময়, কোষ্ঠি, জন্ম পত্ৰিকা।
दिन रातका चौबीसवाँ भाग। जन्म-कुण्डली।

होरिल [ा]—(सं पुं) কেচুৱা।
बहुत छोटा बच्चा।

होलिका होली, होरी,—[सं स्त्री] ফাগুণ মাহৰ পূৰ্ণিমাত হোৱা উৎসৱ, ফাকুৱা উৎসৱ, হোলীৰ সময়ত গোৱা গীত। হোলীত জলোৱা খৰি আদিৰ দ'ম।
फालगुनकी पूर्णिमाको होनेवाला हिन्दुओंका एक प्रसिद्ध त्योहार। लकड़ियों आदिका वह ढेर जो उसदिन जलाया जाता है। उन-दिनों गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

होश--(सं पुं) চেতনা, বুদ্ধি, বুজনী, হুঁচ, গম।
चेतना। बुद्धि। समझ।

होश-हवास—(सं स्त्री) বুদ্ধি আৰু চেতনা।
बुद्धि और चेतना।

होशियार—(वि) সাৱধান। দক্ষ। তপৰৈয়াৰ। চতুৰ।
समझदार। कुशल। सावधान। सयाना। चालाक।

होस—[सं पुं] হুঁচ। চেতনা। গম।
होश।

हौं—(सर्व) মই।
मैं।
(क्रि अ) হওঁ।
हूँ।

हौंस—(सं स्त्री) কামনা, ইচ্ছা। উৎসাহ।
कामना। चाह। उत्साह।

हौआ [सं पुं] সোপাধৰা জাতীয় কল্পিত প্ৰাণী [ল'ৰা ছোৱালীক ভয় দেখুৱাবৰ বাবে]।
बच्चोंको डरानेके लिये एक कल्पित जीव।

हौदा —(सं पुं) সৰু পুখুৰী বা কুণ্ড।
पानीका छोटा कुण्ड।

—(सं पुं) হাতীৰ গাদী।
हाथीकी अम्बारी।

हौदी—(सं स्त्री) সৰু গাদী।
সৰু চৌবাচ্চা, ঘৰৰ মৰলা পানী জমা হোৱা ঠাই।
छोटा हौदा। छोटा हौज। वह छोटा गड्ढा जिसमें मकान का सारा गंदा पानी आकर जमा होता हो।

हौन—(सं पुं) নিজস্ব। হোম।
अपनापन। हवन।

हौरा—[सं पुं]গোলমাল। কোলাহল।
कोलाहल।

हौल—[सं पुं] ভয়।
डर।

हौलदिल—(सं पुं) হৃদকম্পন ৰোগ।
कलेजा धड़कने का रोग।

हौली—(सं स्त्री) দেশীয় মদ বিক্ৰী কৰা ঠাই।
देशी शराब बिकने की जगह।

हौले—(क्रि वि) লাহে লাহে।
आहिस्ते।

हौवा—(सं स्त्री)প্ৰথম স্ত্ৰী। আদমৰ পৈণীয়েক।
आदमकी पत्नी।

हौस—(सं स्त्री) উৎসাহ।
कामना। उत्साह।

हौसला—[सं पुं] উৎকণ্ঠা। উৎসাহ।
कोई काम करने का उमंग। उत्कंठा। उत्साह।

ह्याँ—[अव्य] ইয়াত।
यहाँ।

ह्रस्व— (वि) হ্ৰস্ব। সৰু। কম।
छोटा। नाटा। थोड़ा। नीचा।

ह्रास—(सं पुं) হ্ৰাস, কম হোৱা।
किसी वस्तुके गुणों, तत्वों आदि में कमी होना। कमी। उतार।

ह्वाँ—(अव्य) তাত।
वहाँ।

ह्वै—[पूर्व कालिक] হৈ।
होकर।

শুদ্ধি-পত্র

পৃষ্ঠ	কলম	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
1	1	13	শিলগুটী	শিলগুটি ।
9	1	19	বীজ	বীজ ।
42	2	21	ভৰষা	ভাবনা
48	2	4	ষড়যহ	ষড়যন্ত্র
53	2	15	ডুবাৰ দাং	ডুবাৰ ডাং
78	2	2	গুৰীৰে পৰা	গুৰিৰে পৰা
81	2	11	ভুমুকি	ভুমুকি
97	2	3	ডাঠপোৰৰ'	ডাঠ কাপোৰৰ
97	2	1	কানমলা	কাণমলা
100	1	3	ববয়ুণ	ববযুণ
102	1	2	চুড়া	চূড়া
105	1	1	লুচ	লোচ
108	1	1	আমোল	আমূল
144	2	7	আকাঙ্খা	আকাঙ্ক্ষা
147	2	25	বিহবাসঘাত	বিহবাস ঘাতক
152	2	26	বা	বালা
156	1	2	টুঁডে	গুঁডে
157	2	5	কাই কুটি	কাইকুতি
157	2	6	ভাকুট কুনি	ভাকুটকুটনি
165	1	15	গাঁবত	গাঁৰত
168	2	20	ধণু	ধনু

পৃষ্ঠা	কলাম	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
174	1	12	খন	ঘন
178	1	10	হ্যনতা	ন্যূনতা
180	1	1	খেবিধবা	যেবিধবা
182	2	14	যেবীধবা	যেবিধবা
191	2	25	নেদ	মেদ
197	2	19	খিড়চিড়া	চিড়চিড়া
206	2	20	খঁটা	খুঁটা
216	1	22	বিয়াপি পাই	বিয়পাই
224	1	16	দন্ডকারণ্য	দণ্ডকারণ্য
272	1	4	ঝুগুবা	যুগুবা
272	1	10	লুনীয়া	লুণীয়া
279	2	24	ভলা	ডাল
284	2	16	ঢখন	ঢকন
294	2	25	আজিত	আদিত
301	1	8	বৃক্তি	বৃত্তি
307	2	16	যাতো	যাতে
311	1	1	বশীভূত	বশীভুত
340	2	14	বাপতি সাহন,	বাপতি সাহোন
355	2		বিচনা	বিছুনা
385	1	21	বহব	বহল
395	1	12	থকা বাধা	হকা-বধা
398	2	11	খান	খীণ
401	2	3	বংচণ্ডিয়া	বংচণ্ডীয়া
406	2	12	অন্তরণি	অন্তবনি
426		19	শণ্য	শন্য

পৃষ্ঠ	কলম	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
448	2	2	মুকলি মুৰীয়া	মুকলিমুৰীয়া
453	2	24	প্ৰাণশূণ্য	প্ৰাণশূন্য
455	2	16	বুৎপত্তি	ব্যুৎপত্তি
465	1	19	কৰ	কৰা
465	2	1	নুপুৰ	নূপুৰ
469	2	12	সেবন	সেবক
470	1	20	বজোৰা	বজোৰা
477	2	12	সিদ্ধি	সিদ্ধ
494	2	10	চুকুৰা	টুকুৰা
516	2	3	সঁজলি	সঁজুলি
525	2	7	কৰনা	পীড়াকৰনা
537	2	16	পিঠা	পিঠি
546	1	17	টকা	চকা
549	2	7	জামীনদাৰ	জামিন
549	2	10	জামিনদাৰ	জামিনৰ
552	1	3	গুণ	গুণ
557	2	26	বলকণি	বলকনি
558	1	1	কহীঁ	কহী
558	1	45	চুক্তিমানা	চুক্তিনামা
558	2	23	প্ৰবাহমান	প্ৰবহমান
559	2	12	প্ৰসংসণীয়	প্ৰশংসনীয়
560	1	6	বাচ	বীজ
561	1	5	জৰীয়তে	জৰিয়তে
563	1	21	পুবদিশৰ	পুবদিশৰ

পৃষ্ঠ	কলম	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
570	2	20	পপঞ্চ	প্ৰবন্ধ
580	2	16	অঁাচোবা	অঁাচোৰা
591	2	7	শ্ৰেষ্ঠ	শ্ৰেষ্ঠ
609	1	24	লেগাণ	লেগাম
612	1	19	বায়ুৰ	বায়ুৰ
643	1	19	ফুৰাবদাং	ফুৰাবভাং
658	2	15	ভৃগু	ভৃগু
669	1	16	বস্তু	বস্তু
680	1	22	বা	বাবে
686	1	5	কাপ্পনিক	কাল্পনিক
695	1	2	পটন্ত	পটন্তৰ
719	2	20	নোহোৰাকৈ	নোহোৰালৈকে
723	2	23	শক্ৰ	শত্ৰু
733	1	13	শুশ্ৰষা	শুশ্ৰূষা
736	1	2	বস্ত	বস্তু
740	2	18	মান	ম্লান
745	2	15	অলঙ্ক	অলব্ধ
752	2	13	বক্ষা	বক্ষা
754	2	2	শৃঙ্গাৰ	শৃঙ্গাৰ
754	2	10	নেদীখা	নেদেখা
754	2	11	সনয	সময
755	1	24	ওঁঠ,	ওঁঠত
757	2	9	চবণিয়া	চৰণীয়া
758	2	14	প্ৰহিত	প্ৰথিত
759	2	16	বস্ত	বস্তু

পৃষ্ঠ	কॉলম	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
766	1	8	ঘূনা	খুনা
766	1	8	লনাম	লগ্নাম
766	2	23	লালটিণ	লালটি
768	1	1	শূণ্য	শূন্য
768	2	4	শূণ্যতা	শূন্যতা
768	1	17	শক্র	শত্রু
774	1	27	বেতী	বেতী
775	1	8	রন	রৈন
776	1	3	রোথী	রৌকী
779	2	14	কড়া	কঢ়া
782	1	1	ছড়ি	চুৰি
782	2	24	হোতা	হোতে
785	2	20	চঞল	চঞ্চল
791	2	6	ৰমনীয়	ৰমণীয়
793	1	14	খোলকর	ঘোলকর
793	2	21	জলি উঠি হোবা ভুষিতা-	জলি উঠা, ভুষিত হোবা
794	2	14	লাঞ্ছণ	লাঞ্ছন
796	1	21	দায়িত্ব	দায়িত্ব
799	2	10	সম্পুর্ণ	সম্পূর্ণ
800	1	16	গভীব	গাড়ীব
845	2	2	বিমুঢ়	বিমূঢ়

পৃষ্ঠা	কলম	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
849	2	25	বিচনা	বিছনা
856	2	20	ভুষণ	ভুষণ
857	1	8	মুবব মণি	মুবব মণি
862	2	15	সোন	সোণ
866	2	1	হলাথা	হলাঘা
869	1	19	বান্থা	বান্তা
879	1	1	সুখ	সুখ
.881	1	1	তর	তীর
887	2	20	সাজান	সাজোন
915	1	2	ভাববা	ভাবসা
919	1	19	নিস্কপট	নিষ্কপট
945	1	7	ঘুণীয়া	ঘুনীয়া
947	1	23	তীক্ষ	তীক্ষ্ণ